

د نوميالي تاريخپوه
پوهاند محمد حسن كاکړ
تاريخي - علمي نيكات (ميراث) ته كتنه



ليکوال
محمد اقبال وزير

Ketabton.com

د نوميالي تاريخپوه
پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ
تاريخي- علمي نيکات (ميراث) ته کتنه

ليکوال: محمد اقبال وزيری

هالنډ، دوردریخت، ۲۰۲۱



دا کتاب د پښتون ژغورنې غورځنگ (PTM) مشر ډاکټر منظور
احمد پښتین ته ډالی کوم.



د نوميالي تاريخپوه پوهاند ډاکټر محمد حسن
کاکړ تاريخي- علمي نيکات (ميراث) ته کتنه

ليکوال: محمد اقبال وزيری

چاپ کال: ۲۰۲۱ ز/ ۱۴۰۰

خپرندوی: پښتانه مترقي ليکوال

چاپ شمېر: ۱۰۰۰ توکله

ډيزاين: سپين سهار

سرليکونه

20	يادونه.....
23	سريزه.....
36	لومړی ټوک.....
36	پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ او د افغانستان تاريخ.....
37	لومړی څپرکی.....
37	د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ لنډه پېژندګلوي.....
42	کاکړ او د تاريخ ليکنې علمي ميتود.....
48	اي. ايچ. کار (E. H. Carr) «تاريخ څه ته وايي؟».....
49	ټولنه او فرد.....
52	تاريخ، ساينس او اخلاق.....
54	په تاريخ کې علت ميندنه.....
54	په تاريخ کې جبر او تصادف:.....
55	تاريخ د ترقۍ په حيث.....
58	پراخېدونکې غاړې.....
61	دوهم څپرکی.....
61	کاکړ او د وطن تاريخ ليکنه.....
66	کاکړ او د غبار «افغانستان در مسير تاريخ».....
72	کاکړ او د محمدصديق فرهنگ کتاب «افغانستان در پنج قرن اخير».....
82	درېم څپرکی.....
82	کاکړ او د افغانستان لرغونی تاريخ.....
83	اړيايان او د دوی ټاټوبی.....
85	ساکا او سېتيان بيل تېرونه وو.....
86	ساکا او هخامنشي امپراتوري.....
87	اړيانا او ايران:.....
88	زرتېست او اوستا اوپه اوستايي دوره کې د پښتنو څرک.....
96	ستر سکندر او پښتانه.....
100	پارتيا.....

100.....	د اريايانو دوهم ستر لېږد.....
102.....	خلورم څپرکی.....
102.....	کاکړ او د تاريخ په بهير کې د پښتنو نومونه.....
102.....	پښتون:.....
104.....	د پښتنو اصل.....
107.....	۱- د تاريخ له اړخه:.....
110.....	۲- د ژبو د اصل او پرتله کولو له اړخه.....
113.....	۳- د نسب پوهنې له اړخه.....
114.....	کاکړ او د پښتنو شجره.....
116.....	افغان.....
119.....	پټان:.....
120.....	پنځم څپرکی.....
120.....	کاکړ او د تاريخ په بهير کې د پښتنو د ټاټوبي نومونه.....
120.....	اريانا:.....
123.....	خراسان:.....
124.....	افغانستان:.....
128.....	پښتونخوا:.....
129.....	روه:.....
131.....	کابل، کافو:.....
132.....	پوروشاپورا يا پېښور.....
134.....	شپږم څپرکی.....
134.....	په هند کې د افغانانو امپراتورۍ.....
134.....	۱: د لوديانو امپراتوري.....
137.....	۲: په هند کې د سوريانو امپراتوري.....
142.....	په ختيځ هند کې د کرلاني پښتنو سلطنت.....
146.....	اوم څپرکی.....
146.....	افغانان او مغول.....
146.....	لومړۍ مرحله: په افغانستان کې د بابر په وړاندې د پښتنو مقاومت.....
148.....	دوهمه مرحله: د روښانيانو ملي ازادي غوښتونکي غورځنگ.....

151.....	درېمه مرحله: د خوشال خټک او ایمل خان مومند مبارزې.....
151.....	د خوشال خان خټک مبارزې.....
152.....	د ایمل خان مومند مبارزې.....
154.....	د پښتنو د دغه ملي غورځنگ د ناکامۍ لاملونه.....
155.....	اتم څپرکی.....
155.....	کاکړ: درانیان او په کندهار کې صفوي دولت.....
159.....	نهم څپرکی.....
159.....	په کندهار کې د غلزیانو لومړی دولت.....
160.....	میرویس نیکه.....
164.....	په فارس باندې د افغانانو واکمني.....
164.....	د شاه محمود هوتک واکمني.....
169.....	د شاه اشرف هوتک واکمني.....
175.....	په کندهار کې د شاه حسین هوتک واکمني.....
177.....	هوتکیان او پښتو ژبه.....
182.....	لسم څپرکی.....
182.....	د درانیانو په وخت کې افغان امپراتوري.....
183.....	احمدشاه بابا.....
185.....	د احمدشاه بابا دوهمه جکره:.....
186.....	د احمدشاه بابا دریمه جکره.....
187.....	د احمدشاه بابا څلورمه جکره:.....
188.....	د احمدشاه بابا پنځمه جکره:.....
189.....	د احمدشاه بابا شپږمه جکره:.....
189.....	د احمدشاه بابا اوومه جکره:.....
191.....	د احمدشاه بابا اتمه جکره یا د پاني پت جکره:.....
195.....	د احمدشاه بابا نهمه جکره:.....
195.....	د احمدشاه بابا لسمه جکره:.....
.....	د احمدشاهي پوځ جوړښت:.....
193	
202.....	تیمورشاه.....

205.....	د عبدالخالق خان پاڅون.....
205.....	د پېښور پاڅون.....
206.....	زمان شاه.....
209.....	د شاه محمود سدوزي واکمني.....
210.....	د شاه شجاع لومړی واکمني.....
214.....	د شاه محمود دوهم ځل واکمني.....
217.....	پایله.....
219.....	یوولسم څپرکی.....
219.....	د محمد زبو واکمني.....
220.....	د امیر دوست محمد خان لومړی واکمني.....
223.....	د هرات کلابندي.....
227.....	د افغان- انګلیس لومړی جګړه.....
228.....	د غزني جګړه.....
231.....	نیواک.....
232.....	د کوهستان پاڅون او د بخارا نه د امیر دوست محمد خان راستنېدل.....
234.....	د پاڅون زړي.....
235.....	د کابل پاڅون.....
238.....	د بي بي مهرو وروستی جګړه.....
240.....	سیاسي څپرې.....
247.....	وروستی عمل.....
252.....	دولسم څپرکی.....
252.....	کاکړ او د امیر دوست محمد خان دوهمه واکمني.....
258.....	دیارلسم څپرکی.....
258.....	کاکړ او د امیر شیرعلي خان لومړنی واکمني.....
260.....	کاکړ او د امیر شیرعلي خان دوهمه واکمني.....
264.....	کاکړ او د افغان- انګلیس دوهمه جګړه.....
268.....	د امیر محمد یعقوب خان واکمني او د ګندمک تړون.....
269.....	د امیر محمد یعقوب خان اقدامات.....
270.....	د انګلیس پوځي حکومت.....

270.....	د لیتن له لوري د افغانستان د ټوټه کولو پلان
271.....	د دسمبر عمومي پاڅون.....
273.....	وطن ته د سردار عبدالرحمن راتګ.....
277.....	د زمې غونډه.....
279.....	د میوند تاریخي جګړه.....
281.....	۱- د انګرېزي پوځ شمېر:.....
282.....	۲- د افغان پوځ شمېر:.....
283.....	د جګړې جریان.....
289.....	د نوي نظم د طرحې ناکامي.....
	په کندهار کې د امیر عبدالرحمن خان او غازي محمد ایوب خان ترمنځ پرېکنده جګړه او
291.....	د افغانستان بیا یووالی.....
294.....	څورلسم څپرکی.....
294.....	کاکړ او د امیر عبدالرحمن واکمني.....
298.....	امیر عبدالرحمن او د ختیځ افغانستان ارامښت.....
299.....	مومند.....
300.....	د کنړ پاچا.....
302.....	شینواري.....
304.....	اسمار.....
304.....	باجور، دیر او سوات.....
305.....	د غلجیو ستر پاڅون او د هغه ځپل.....
309.....	د سردار محمد اسحاق خان بلوا او د هغه ځپل.....
313.....	امیر عبدالرحمن او په شمالي افغانستان کې د سرحدی ولسوالیو ارامښت.....
313.....	میمنه.....
315.....	شغنان او روشن.....
319.....	واخان.....
321.....	امیر عبدالرحمن خان او د هزاره گانو ارامښت.....
321.....	د هزاره گانو اصل.....
324.....	تاریخي لرلید.....
326.....	د هزاره گانو پاڅون.....

328.....	د هزاره گانو ميشتهېدل
329.....	د پخواني کافرستان فتح کول
331.....	جوړ جاری او اسلام ته اوښتنه.....
332.....	د برتانوي هند د حکومت سره د امير عبدالرحمن اړيکې.....
336.....	د افغانستان د پولو ټاکنه.....
341.....	د ډېورنډ هوکړه ليک.....
349.....	امير عبدالرحمن خان او د روسيې سره اړيکې.....
350.....	د روسيې له خوا د پنجدې نيول.....
351.....	امير عبدالرحمن او د پارس سره اړيکې.....
353.....	امير عبدالرحمن خان او د ترکيې سره اړيکې.....
354.....	خپل زوي حبيب الله خان ته د امير عبدالرحمن خان سپارښتې.....
355.....	پايله
359.....	پنځلسم څپرکی
359.....	د امير حبيب الله خان واکمني.....
366.....	شپاړلسم څپرکی.....
366.....	کاکړ او د امير امان الله خان واکمني.....
369.....	د افغان- انگليس دريمه جگړه
372.....	د خيبر جبهې عمليات.....
374.....	د چترال جبهه
375.....	د پکتيا جبهه
377.....	د کندهار جبهه
379.....	د سوېلي ترون.....
380.....	د ترون انگليسي متن:.....
382.....	د ترون متن ژباړه:.....
386.....	امير امان الله خان او د هېواد بهرنی اړيکې.....
387.....	امير امان الله او منځنی اسيا.....
392.....	امير امان الله خان او په افغانستان کې د شوروي روسيې کړنې.....
404.....	د پاچا امان الله خان لومړني سمونونه.....
408.....	سياسي ډلگۍ او دسيسې.....

- 410..... د خوست بلوا.....
- 413..... بهر ته د پاچا امان الله سفر.....
- 414..... د پاچا امان الله وروستي سمونونه.....
- 420..... له برتانويانو سره د پاچا امان الله اړيکې.....
- 422..... د پاچا امان الله نسکورېدل او د وطن نه وتل.....
- 424..... حبيب الله کلکاني او په کابل د هغه بريد.....
- 428..... د کابل ښار استحکامات او د پاچا ناڅاپي استعفا.....
- 436..... د پاچا امان الله ځينې مهې تېروتنې.....
- 440..... ايا د امير امان الله په نسکورېدو کې انگرېزانو رول درلود؟.....
- 447..... پايلیک.....
- 448..... حبيب الله کلکاني يا د سقاو زوی واکمني.....
- 454..... پکتيا ته د فرانسې نه د نادر خان راستنېدل او د هېواد خلاصون.....
- 458..... اولسم څپرکی.....
- 458..... د نادرشاه واکمني.....
- 459..... د نادرشاه بهرنی سياست.....
- 461..... د نادرشاه کورنی سياست.....
- 4664..... د واک پر سر د نادرشاه پر ضد د امان الله خان مبارزه.....
- 473..... د شامي پير پېښه.....
- 475..... د «امان الله خان» او «تبت» عمليات.....
- 478..... اتلسم څپرکی.....
- 478..... د محمدظاهر شاه واکمني.....
- 479..... د رهبري شوي اقتصاد پيل.....
- 480..... د هند وېش او د پښتونستان موضوع.....
- 492..... پښتونستان او د ابي فقير.....
- 493..... حاجي ميرزا علي خان د ابي فقير.....
- 496..... په واکمنې کورنۍ کې ترېوري.....
- 502..... نولسم څپرکی.....
- 502..... کاکړ او د چنگاښ کودتا.....
- 502..... د چنگاښ کودتا.....
- 505..... د افغانستان لومړی کودتايي حکومت.....

- 507..... د ميوندوال پر ضد دسيسه.....
- 511..... محمد داود او اسلامي بنسټ پالان.....
- 512..... د محمد داود په کورني او بهرني سياست کې بدلون.....
- 512..... ۱- کورني سياست.....
- 515..... ۲- بهرني سياست.....
- 515..... شوروي اتحاد ته د محمد داود سفر.....
- 517..... پاکستان ته د محمد داود سفر.....
- 520..... ايران ته د محمد داود سفر.....
- 521..... د امريکا سره د محمد داود اړيکې.....
- 523..... د محمد داود تېروتنې.....
- 524..... کاکړ او د پاچا محمدظاهر او محمد داود پرتلنه.....
- 528..... شلم څپرکي.....
- 528..... کاکړ او د ثور کودتا.....
- 530..... د ثور کودتا.....
- 531..... د مير اکبر خيبر ترور.....
- 533..... د افغانستان لومړي ايډيالوژيک حکومت.....
- 538..... د نور محمد تره کي واکمني.....
- 540..... د سور بيرغ په اړه فرمان.....
- 541..... د کروي په اړه فرمان.....
- 542..... د بنڅو او ودونو په اړه فرمان.....
- 543..... د ځمکو د وېش فرمان.....
- 545..... د ليک او لوست کورسونه.....
- 546..... بندي توب او جزاکانې.....
- 547..... اکسا او اسدالله سروري.....
- 550..... د حکومت پر ضد لومړني اعتراضونه.....
- 551..... د خلقي دولت پر ضد د خلکو پاڅونونه.....
- 552..... د هرات پاڅون.....
- 552..... د تره کي- امين دښمني او د اندروپوف شيطاني.....
- 553..... په کرېملن کې خلقي او شوروي لويان.....

- 555..... د تره کي- امين د اختلاف پيل.....
- 557..... په افغانستان کې د شوروي اتحاد ځانگړي پلاوي.....
- 558..... تره کي په هاوانا کې.....
- 559..... تره کي په مسکو کې.....
- 560..... وطن ته د تره کي بېرته راتگ او د هغه پای.....
- 566..... يوويشتم څپرکی.....
- 566..... د حفيظ الله امين سل او درې ورځې واکمني.....
- 569..... له شوروي اتحاد سره اړيکې.....
- 571..... له امريکې سره اړيکې.....
- 574..... د پاکستان سره اړيکې.....
- 579..... دوه ويشتم څپرکی.....
- 579..... په افغانستان باندې د شوروي اتحاد وسله وال يرغل.....
- 582..... په افغانستان باندې د شوروي د يرغل پرېکړه.....
- 585..... شوروي اتحاد د وسله وال يرغل په درشل کې.....
- 585..... د امين پر ضد د کې جې بي ناکامه کودتا.....
- 587..... په افغانستان باندې د شوروي وسله وال يرغل.....
- 592..... د خلقي لويانو تېروتنې.....
- 597..... د شوروي تيري په وړاندې غبرگونونه.....
- 602..... د شوروي يرغل په وړاندې د افغانانو لومړني غبرگونونه.....
- 607..... د افغانستان ډموکراتيک جمهوريت يا د کارمل واکمني.....
- 610..... د شوروي يرغل او پاکستان.....
- 613..... د پېښور ممثله جرگه.....
- 614..... د پېښين جرگه.....
- 616..... درويشتم څپرکی.....
- 616..... د افغان- شوروي جگړه.....
- 616..... د شوروي اتحاد پوځ.....
- 618..... د کابل د رژيم پوځ.....
- 620..... د افغان مقاومت بنسټ.....
- 624..... قوماندان مولوي جلال الدين حقاني.....

626.....	قوماندان عبدالحق
629.....	قوماندان احمد شاه مسعود.....
634.....	کابل د جگړې په حال کې.....
635.....	د جگړې مرحلې.....
637.....	د مجاهدينو تاکتيکي عمليات.....
640.....	د پنجشیر په دره کې پوځي عمليات
642.....	د خوست ژورې لومړي لوی عمليات.....
644.....	د خوست د ژورې دوهم لوی عمليات.....
647.....	د سټي د کنډو لوی عمليات.....
649.....	د کاسکد عمليات او د شوروي پټه استخباراتي جگړه.....
652.....	د گارباچوف بيا جوړونه او سمونونه.....
653.....	د کارمل ليرې کول.....
655.....	د ژينو خبرې.....
657.....	کور دوويز او د ژينو خبرې.....
667.....	د نجيب الله لنډه واکمني.....
668.....	د جنرال نني کودتا.....
671.....	د نجيب الله د واکمنۍ پای.....
674.....	خلورويشتم څپرکی
674.....	کاکړ او افغان اسلامي تنظيمونه.....
675.....	د اسلامي گوندونو تاريخچه.....
680.....	افغان اسلامي تنظيمونه او پاکستان.....
684.....	د تنظيم واکۍ پيل.....
689.....	پنځويشتم څپرکی.....
689.....	کاکړ او اسلامي بنسټ پالنه.....
689.....	اسلامي سلفي غورځنگ.....
690.....	ابن تيميه (۱۲۶۸-۱۳۲۸).....
691.....	محمد بن عبدالوهاب (۱۷۰۳-۱۷۹۱).....
692.....	په نولسمه پيړۍ کې مسلمانان نړۍ.....
693.....	سيد جمالدين افغان.....

695.....	محمد عبده (۱۸۴۹-۱۹۰۵).....
696.....	د شلې پېړۍ نيمايي او اسلامي نړۍ
697.....	حسن البنا (۱۹۰۶-۱۹۴۹).....
699.....	ابوالعلي مودودي (۱۹۰۳-۱۹۷۹).....
700.....	سيد قطب (۱۹۰۶-۱۹۶۶).....
702.....	اسامه بن لادن، القاعده او افغان ملي جهاد.....
703.....	په افغان جهاد کې د اسامه بن لادن ونډه
706.....	القاعده.....
709.....	اسامه بن لادن په سوډان کې ۱۹۹۲-۱۹۹۶
711.....	افغانستان او بن لادن
715.....	د امارت د مشرانو او د بن لادن اړيکې.....
716.....	اسامه بن لادن د نړۍ والې کشالې زړۍ
723.....	شپږويشتم څپرکۍ.....
723.....	کاکړ او طالبان
724.....	ملا محمد عمر
725.....	د افغانستان اسلامي امارت.....
726.....	اميرالمومنين.....
727.....	امارت په عمل کې
730.....	د طالبانو د مشرانو سره د کاکړ خبرې.....
731.....	د امريکې چاودنې او د امارت پای
733.....	پايلیک.....
736.....	دوهم ټوک.....
736.....	کاکړ او نور موضوعات.....
737.....	اوويشتم څپرکۍ
737.....	کاکړ او پښتو ژبه.....
750.....	اته ويشتم څپرکۍ
750.....	جان ستوارت مل په نوي دقيقو کې.....
750.....	د ازادۍ فلسفه، تجربي فلسفه، د کټورتوب فلسفه
752.....	۱- د ازادۍ فلسفه.....

- ۲- د امپريزم فلسفه..... 753
- ۳- د کټورتوب فلسفه..... 754
- نويښتم څپرکي..... 761
- جگړه او زموږ نړۍ..... 761
- دېرشم څپرکي..... 770
- د ډموکراسۍ واقعي نړۍ..... 770
- د ډموکراسۍ زاړې او نوې پولې..... 771
- د غير لبرال ډموکراسۍ کمونيسي څانگه..... 774
- په پرمختلونکو هېوادو کې د غير لبرال ډموکراسۍ څانگه..... 776
- لبرال ډموکراسۍ د قدرت د سيستم په څېر..... 778
- وروستۍ کچې ته د رسولو افسانه..... 779
- يو دېرشم څپرکي..... 782
- کاکړ او لرغونۍ يونان..... 782
- د لرغونو يونانيانو دين..... 783
- پوليس يا ښاري دولت..... 783
- د سپارټا ښاري دولت..... 785
- د اتن ښاري دولت..... 786
- د پلي پونيز جگړه..... 788
- يونان د پلي پونيز د جگړې نه وروسته..... 789
- دوه دېرشم څپرکي..... 791
- د سوکرات، اپلاتون، ارستو، اپيکور او زينو په نظر ښه انسان..... 791
- سوکرات- کلاسيک ښه انسان..... 793
- اپلاتون (۳۴۷-۳۸۴)..... 795
- ارستو (۳۲۲-۳۸۴)..... 797
- اپيکور (۲۷۰-۳۴۳)..... 799
- زينو (اتکل ۳۳۶-۳۶۴)..... 800
- د ښه انسان د شخصيت ځانگړتياوې..... 800
- ۱- اعتدال (temperance)..... 800
- ۲- زړه وړتيا يا مېرانه (andria)..... 802

- 803..... ۳- لور همتي
- 804..... ۴- مدني وفا پالي (Peitharchia)
- 805..... ۵- عدالت (Dikiosyne)
- 809..... ۶- عقلمني (Sophia)
- 810..... پايلىک
- 811..... مور ولى بايد اخلاقي واوسو؟
- 812..... درې دېرشم څپرکي
- 812..... د انسانتوب په اړه د اخلاق پوهنې پرنسيپونه
- 812..... د اخلاق پوهنې موضوع
- 813..... مثبت او معياري علوم
- 813..... بڼه او بد
- 814..... اخلاقي بڼه توب
- 814..... انساني کرڼه (عمل)
- 816..... جبر او اختيار
- 816..... ازاده اراده:
- 817..... جبر (Determinism):
- 818..... د انتخاب شته والي ازادي
- 819..... هغه اغېزونه چې عقلي قوه اغېزمنه کوي
- 820..... هغه لاملونه چې اراده اغېزمنه کوي
- 821..... اخلاقيات جوړيږي يا موندل (کشف) کيږي؟
- 821..... د اخلاقياتو معيارونه
- 822..... لومړی ډله:
- 823..... دوهمه ډله: نېغ درک پالنه
- 823..... د طبيعت پالنې ناسم توب
- 823..... د اخلاقي مفهوم تيوري
- 824..... دريمه ډله:
- 825..... د ټولنيز تړون تيوري گانې
- 826..... د پياوړي انسان اراده:
- 826..... ټولنيز فشار (عام نظر)

826.....	د هسک څښتن اراده:
827.....	څلورمه ډله
827.....	د عالمي توب پرنسپ:.....
828.....	خوندپالنه (Hedonism):.....
829.....	د کټورتوب فلسفه (Utilitarianism):.....
830.....	د ځان پېژندنې تيوري کانې
830.....	د بالقوه استعدادونو بشپړتوب
831.....	اپلاتون
831.....	ارستو
832.....	سان توماس اکويناس
833.....	د حالت اخلاقپوهنه (Situation ethics):.....
834.....	د اخلاقياتو د نورم د کتنې لنډيز
835.....	انساني طبيعت او تاريخ
836.....	له نورم سره د انساني عمل پرتله کول
837.....	د دوه گون اغېز پرنسپ:.....
838.....	اخلاقي قانون
838.....	د قانون مفهوم:.....
838.....	د مثبتپال ځواب:.....
839.....	د وروستۍ موخې ځواب:.....
839.....	په تاريخ کې د طبيعي قانون ايديا:.....
840.....	د انسان په طبيعت کې د اخلاقي قانون موندل
841.....	مثبت قانون:.....
842.....	د طبيعي قانون بدلون موندل يا بدلون نه موندل:
843.....	د طبيعي قانون پوهه:.....
844.....	د طبيعي قانون بندېزونه (تحریمونه):.....
844.....	حقوق
844.....	بشري حقونه:.....
845.....	د حقونو جوړښت:.....
846.....	اخلاقي قضاوت- وجدان.....

د نوميالي تاريخپوه پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ تاريخي- علمي نیکات (ميراث) ته کتنه

- 847..... د وجداني قضاوت سم توب:
- 848..... د اخلاقو عندي معيار
- 848..... د وجدان ازادي.
- 850..... اخځونه.

يادونه

زما سره پخوا دا فکر پيدا شوی و چې د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ ژوند ليک وکارم او د ده اندونه خپلو وطنوالو ته د کتاب په بڼه وړاندې کړم. خو د يوه علمي شخصيت ژوند ليک د ده د ماشوم توب نه نيولې د ژوند تر وروستۍ سلگۍ پورې د ده کره وړه، د ده د نږدې خپلوانو او انديوالانو سره اړيکې، د ده د زده کړې چاپيريال، د ده اثار، د ده په افکارو کې بدلون او ودې يون او نور څېړل کيږي تر څو د ده هر اړخيز شخصيت وسپړل شي او علمي پنځونې يې سې وازرول شي.

د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ ژوند ليک دا ډول څېړل د مهاجرت په شرايطو کې زما د وس نه وتلې خبره ده. له دې کبله زه د محترم کاکړ ژوند ليک د بلې زاوې نه څېرم هغه دا چې دی تر ټولو د مخه يو تاريخ پوه دی او د افغانستان او په ځانگړې توگه د افغانستان د معاصر تاريخ په اړه يې په زړه پورې څېړنې کړې دي. نوموړي د افغانستان تاريخ د تاريخ ليکنې د علمي ميتود سره سم په يوه سيستم کې راوستلی دی. زه به د کاکړ هغه اثار چې زما په لاس کې دي د تاريخي پېښو د کروڼولوژۍ پر بنسټ وڅېرم او دا به د افغانستان سياسي تاريخ هم شي. «سياسي تاريخ په واقع کې د ټولنې د ... فعالو خلکو د کړو او ټولنيزو پېښو او واقعيتونو بيان دی.»^۱ خو محترم کاکړ صاحب يو هر اړخيز علمي شخصيت دی او ده په نورو موضوعاتو هم ليکنې کړې او هم يې ژباړې کړې دي نو دا موضوعات به هم وڅېړل شي. په دې ترتيب به دا ليکنه دوې برخې ولري چې يوه به لومړۍ ټوک «کاکړ او د افغانستان تاريخ» او بله به يې دوهم ټوک «کاکړ او نور موضوعات» په غېږ کې ونيسي.

کاکړ يو نامتو تاريخ پوه دی چې نه يوازې په افغانستان، سيمه بلکې په نړۍ کې يې هم نوم ايستلی دی. محمد حسن کاکړ ته د يوې خوا طبيعيت ښه وړتيا او استعداد ورکړی او د بلې خوا ټولنيز چاپيريال هم د ده د ښوونې او روزنې له پاره تر يوې اندازې برابر و. خو که د ده له پاره هر اړخيز ټولنيز چاپيريال موجود وای نو د ده تاريخي- علمي نیکات به لا بډای وای. خو د بده مرغه په مورنۍ ژبې د لوړو زده کړو، په پوهنتون کې په مورنۍ ژبه د درس ورکولو نه يې برخې او په رسمي او دولتي چارو کې د نورو پېښو غوندې زيات وخت يې مورنۍ ژبه کارولی نه شوه يا لږه کارولی شوه. دی وايي چې «په دې برخه کې به خپله تجربه بيان کړم. زه اوس هم په انگرېزي يا فارسي ځان هغسې افاده کولی نه شم لکه په

پښتو کې چې کولی شم که څه هم په انگرېزي کې مې بې شمېره کتابونه لوستلي، څېړنې مې په کې کړې او يو شمېر کتابونه مې په کې کښلي دي، کله چې په پښتو کې څه ليکم کليمات، افادې او اصطلاح گانې د رضاکارو غونډې رامخته کېږي په داسې حال کې چې په انگرېزي کې زه ورپسې گرځم. دا ځکه چې پښتو زما اولنی، مورنی او زما د شخصیت د تشکل د وختونو ژبه ده که ما تحصیلات او مکالمات په خپلې مورنی ژبه کړي وای ملکاتو به مې تر دې ډېر انکشاف کړی وای. په پښتو مطالعاتو کې زما د درک اندازه تر هغو نه چې په انگرېزي يا دري کې ده ډېره ده نو د خپلې تجربې نه ویلی شم چې ... د پښتنو حال به همدغسې وي، په داسې حال کې چې شمېر يې په خپل ملک کې تر نورو ډېر دی نه په خپلې ژبې کې لوړ تحصیلات کولی شي او نه يې ژبه دفتري شوې ده. دا يوه غټه بې عدالتي ده د دغې بېعدالتی په سبب د افغانستان اکثره خلک نه شي کولی خپلو استعدادونو ته هغسې انکشاف ورکړي، لکه هغه وخت يې چې ورکولی شي چې عالي تحصیلات په خپلې ژبې کې سرته ورسوي او په رسمي او دولتي چارو کې په خپله مورنی ژبه وگړيږي او ليکنې پرې وکړي.»^۲ زه فکر کوم چې کاکړ د تحلیلي- تعميمي طرز فکر لري. همدغه د ده فکري طرز دی چې دی يې د پېښو ژور تحليل او د لوړې کچې تعميم ور گرځولی دی.

د دې ليکنې اصلي موخه دا ده چې لوستونکي د هېواد د نامتو او بې جوړې تاريخ پوه نوموړي د خپلو زده کړو او علمي څېړنو له مخې پيدا کړي او بيا يې د قلم په څوکه خپلو هېوادوالو ته په دې هيله په نیکات (میراث) پرې ايښي دي چې د هغو په مرسته خپله ټولنه وپېژني، هېواد د اوسنۍ پېچلې او ستونزمنې وضعې نه وباسي او د پرمختگ او ودې په لوري يې بوزي تر څو د نورو پرمختللو هېوادو د سيالی جوگه شي.

دا ليکنه به د کاکړ پېژندنې په لاره کې لومړۍ او نيمگړې هڅه وي. خو زه باور لرم چې د دې ليکنې په مټ د کاکړ پېژندنې بنسټ پوخ ايښودل شوی او هيله من يم چې وطنوال به يې په راتلونکې کې د کاکړ پېژندنې ماڼۍ ورباندې ودانه کړي.

د محترم ډاکټر عبدالمحمد درمانگر نه ډېره مننه کوم چې د ډېرو بوختياوو سره سره يې زما ليکنه ولوسته، سرينه يې ورباندې وکښله، چې په هغې کې يې د انسان پېژندنې په اړه نوي ژور مالومات وړاندې کړي او د دې کتاب منځپانگه يې لا نوره بډايه کړله، او هم يې کتورې مشورې راکړې. د انجنر محمد ظاهر، زروالي افرېدي، ډاکټر قادر زماني نه مننه کوم چې زما ليکنه يې ولوستله او کتورې مشورې يې راکړې. د علي شاه احمدزي نه ډېره مننه کوم چې دوه مهم کتابونه: د ډاکټر علي احمد جلالي «د افغانستان پوځي تاريخ» او د

رحمت ربي زيرکيار «د ناپوهۍ تيارې او د پرمختگ ډېوې د افغاني کلتور په چوکاټ کې له عبدالرحمن نه تر اشرف غني احمدزي ۱۸۸۰ تر ۲۰۱۵» يې د کابل نه راولپړل او ما ورڅخه ډېره استفاده وکړه. د جنرال محمد ولي نه هم ډېره مننه کوم چې خپل دوه کتابونه: د قاضي عطاء لله خان «د پښتنو تاريخ»، او د غبار د «افغانستان در مسير تاريخ» دوهم ټوک يې ماته د استفادې له پاره راولپړل. د شپرولي ورين نه ډېره مننه کوم چې ماته يې دوه کتابونه: د نصرالله سوبمن «پښتانه په هند کې» او د تيخونوف «نبرد افغاني استالين» د گټې اخېستې له پاره راکړل. همدارنگه د کاکړ د لور «خواره کاکړ» نه ډېره مننه کوم چې د کابل نه يې د کاکړ کتاب «د امير عبد الرحمن په واکمني کې حکومت او ټولنه» راولپړه. په پای کې د بريالي وزير او ننګيالي وزيرې نه مننه کوم چې د کتاب مالي لگښت يې په غاړه واخيست.

محمد اقبال وزېري

ډاکټر درمانگر

۲۰۲۰ - ۹ - ۱۴

سويتزرلند

سريزه

که څه هم په دې شانته کتاب باندې، چې د پندونو، درسونو او پوهې څرگنده خزانه ده، سريزه ليکنه، د سياست، ټولنيزو علومو او تاريخ پوهانو له قلم سره زبې؛ دا چې د کتاب ليکوال، زما دوست او محترم ملگری محمد اقبال وزيرې، د دې سريزې ليکنه په ما غونډې عادي انسان پيرزوينه کړې ده؛ زه يې د دې احسان له امله ځان پوروری بولم.

ليکوال د خپلو څېړنو په رڼا کې، د واقعيتونو په هکله، د نوميالي تاريخپوه پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ هغو علمي کارونو ته چې د دې کتاب له موضوعاتو سره اړخ لکوي په ډېره امانت داری او عالمانه احتياط اشارې کړې دي. ده د تېرې زمانې خوالي او ناخوالي د نورو عالمانو، سياسي لارښوونکو په شان، تېرلر شانته بارجامه کې د حال زمانې انگر ته راکش کړی او دلته يې په غور سره د عقلي قوت، دغه تر ټولو ستر قوت، او په فکر باندې د فکر کولو د تخنيک په مرسته حالات چن کړي، او د راتلونکې زمانې د مهندسي کولو، نبض پېژندلو او پوهېدلو په پېچلي کار کې يې مرسته کړې ده.

پېژندنه د يوې ستونزې نيمايي حل جوړوي. پوهه يوه توانايي ده چې د هغې په برکت د ښو او بدو د بيلولو کار، چې اخلاق نوميږي، اسانه کيږي. له همدې لارو انسان کولی شي هغه سپارښتنه په ځای کړي چې وايي: ته پرهبز له بدو وکړه څو دې لاس رسېږي ښه کړه په دغه راز اخلاقو ښايسته شوي انسان ته د ازادۍ نعمت، چې د ټولو نورو نعمتونو په سر کې ځای لري، ور په برخه کيږي؛ په دې شرط چې د بل چا د ازادۍ انگر ته په زور ور د ننه نه شي. د ازادۍ لنډ تعريف هم نورو ته ضرر نه رسول جوړوي.

د دې کتاب په لوستلو سره زموږ د خلکو په ژوند کې د خوښيو، غمونو، رحمانې او شيطاني پېښو په هکله داسې هر اړخېزه خبرتيا تر لاسه کيږي، چې تر اوسه له سترگو پټ پاته وو، او په نورو څېړونو کې يې چندانې څرک نه ليدل کيږي. په کتاب کې زموږ په هېواد باندې د بهرنيانو وحشتناکه خونړيو يرغلونو له لاسه، د وطن کنډو کنډو کېدو تر بريده، په خلکو باندې له ظلمونو نه پرده لرې شوې ده. دې زهرجن واقعيت ته هم اشاره شوې ده چې «موږ د بهرنيانو د ظلمونو په پرتله له خپلو ناپوهيو او تېروتنو نه زيات کړيدلي يو».

که له يوې خوا «په يوه حکمرانه سيستم کې د فساد او ازار او ستم پایلې د بشر په تاريخ کې ښکاره دي او هر عاقل انسان کولی شي د نوموړي سيستم د پرزېدو او رسوايي وړاندېدنه وکړي.»^۱ له بلې خوا د پوهې کار ته شا اړول او په وار وار سره د تېروتنو تکرارول هم يوه لويه گناه ده چې په اسانه سره د بښلو وړ نه گرزې. له ډېرې پخوا زمانې راهيسې تر دا نن ورځې پورې فساد، ازار او ستم له ناپوهی او تېروتنو سره يوځای په وحدت کې ميشته شوي دي.

په دې کتاب کې نغښتو مطالبو ته له پاملرنې سرېره لوستونکي ته د فکر کولو ضرورت هم مخې ته درېږي او د انسان د لا نورې پېژندنې اړتيا ته يې پام اوړي. ليکوال له لوستونکي سره د مرستې په توگه د هېواد او نړۍ د ځينو رڼو فکرونو خاوندانو او پخواني يونان د ځينو نامتو فيلسوفانو د فکري زېرمو د خزانو يو شمېر مهم مطالب راغونډ کړي دي، او له دې لارې د پوهېدلو نه مېرېدونکې لوړه نوره هم زياتوي.

د يوويشتمې پېړۍ انسان د يوه داسې نوي تمدن په جوړېدو لگيا دی چې سل کاله پخوا يې په خوب و خيال کې هم ځای نه شو لرلی. ۲۰۰ په دې تمدن کې هر څه په ډېره چټکۍ سره داسې مخ په وړاندې روان دي چې هر ډول پر ځای هيلې او اميد لرلو او پاللو ته يې د رسېدو شونتيا په يقين بدله کړې ده. په نولسمه پېړۍ کې د يوې نجلی منځنۍ عمر ۳۶ کاله و. خو اوس د اوسنۍ پېړۍ په پيل کې د زېږېدلو نيمايي شمېر تر سلو کلونو پورې عمر کولی شي. د دې پېړۍ په بهير کې به د عمر منځنۍ اندازه ۱۵۰ کلونو او د ځوانۍ کچه به ۵۵ کلونو ته لوړه شي، سپورمۍ او نورو ستورو ته به اوسېدونکي او سيلانيان تگ او راتگ کوي او مخکې سره د ورته کولو کارونو په پايله کې به هلته د هستوگنې امکانات ترلاسه شي. په دې توگه به د مخکې په سر، چې يوازې د درې ميليارده وگړو د ميشته کېدو ظرفيت لري، د وگړو د له اوسني ظرفيت نه ډېر لوړ اوه ميليارده شمېر او په خطرناکه توگه د دغه شمېر د لا زياتېدو عمليه، چې مخکه يې د شنېدو او انسان د باساره کېدو له هيبت سره مخامخ کړی دی، يو څه مهار شي. تر اتو راتلونکو کلونو پورې د انسان د سر ماغزو ته، د موبایل ټيليفون د چارجولو په شان، د مصنوعي عقل، هونښيارتوب د ور د ننه کولو امکانات برابر شوي دي او په دې توگه به د نورو شيانو د بازارونو په څنګ کې يو بل سوداگر بازار ورگډ شي. اوس تر زرو کلونو پورې د انسان د عمر د اوږدولو علمي او تخنيکي ستونزې حل شوې او يوازې د پوره پيسو نشتواله په دې لاره کې خنډ جوړ کړی دی. داسې روايت شته چې د هغه له رويه نوح عليه السلام ۹۵۰ کاله عمر وکړ.

د دې ټولو ذکر شويو او ذکر نه پاته شويو پرمختګونو سره سره له ۲۰۱۵ کال نه را

په دېخوا ځينې فيلسوفان او د طبيعيت پوهان ان تر دا نږدې ۲۰۳۰م کاله پورې د اوسني تمدن د مانۍ د نښو خبرې کوي او د collapsology (نږدېنې) په نامه د پېښېدو له پاره دلايل راوړي:

-د انرژي هغه ځمکنۍ زېرمې چې د ټول بشريت مالکيت بلل کېږي، او د ۵، ۳ ميليارده کلونو په اوږدې مودې کې راټولې شوې دي، يوازې د تېر شوی څه کم دوه سوه کلونو په مهال د خودسره مصرف له امله مخ په تمامېدو دي.

-د نولسمې پېړۍ په پيل کې د نړۍ د وگړو شمېر يو ميليارده ته ورسېد. يواځې د تېرو دوه سوه کلونو په ترڅ کې دغه شمېر اوه ميليارده ته لوړ شو او تر ۲۰۵۰م کاله پورې به ۹ ميليارده ته ورسېږي. مخکې يواځې د درې ميليارده خلکو له پاره د ژوند کولو ظرفيت لري او د سر ساحه يې د اقليمي بدلون او له دې لارې د سمندرونو د اوبو د ناچو (سطحو) د لوړېدو له امله د تنکېدو په حال کې ده. ځکه نو نږدې راتلونکو مهالونو کې به د اجباري مهاجرت کچه په لوړېدو شي. په افريقا کې داسې په مخ روانې ډلې لېدلې شوې دي چې ويل يې «مور خواريو په سر اخيستي يو او نه پوهېږو چې چېرته څو، او کوم ځای ته به رسېږو». پوهنيز فقر، جگړې، د نفوسو زياتېدنه، وچکالي او د پيسو غير عادلانه وېش د روانو بدمرغيو ملامتي په غاړه لري.

-تر ټولو خطرناک عاقبت د ارادې او په زيات احتمال، د تصادف، غفلت او تېروتنې له امله د اتني جگړې د اور بلول دي. که پرون په هيروشيما باندې (۱۹۴۵ کال د اگست د مياشتې پنځمه نېټه) د امريکا له خوا د اتم بم د گزار له لاسه په لومړيو نهو ثانيو کې دوه لکه جاپانيان ووژل شول، نو د نن ورځې اتني بمونه، چې د هيروشيما د بم پرتله سلگونه چنده زيات وژونکي او ورانونکي دي، خدای مکره، د استعمال په صورت کې د مخکې په سر د ژوندانه د بشپړې تباھۍ لامل گرځېدلی شي.

-د ۱۹۷۹ کال دسمبر مياشتې په ۲۷ نېټه د شوروي اتحاد سرو لښکرو په افغانستان باندې ناڅاپه نه اعلان شوې جگړې له لارې پوځي تيری سر ته ورساوه. د شوروي مشرانو د جگړې پرېکړه په داسې حال کې وکړه چې بريژنيف، حزبي او دولتي سرواکدار له زړېدوې برسېره د الکولو د اعتياد، سفليس، زړه، رگونو، بڼې او معدې په ناروغيو اخته و، يواځې د اتو دقيقو له پاره يې د اورولو او اورېدلو وسه درلوده. ۳ اندروپوف د بډوډو په ناعلاجې ناروغي اخته و، چرننکو د خپلې ديارلسو مياشتو واکدارۍ په مهال نهه مياشتې په روغتون کې پروت و. د جگړې ټولې پلغې يواځې ښکرو دروغونه وو. سالم عقل په سالم بدن کې ځای لرلی شي دغه پوځي تيری د ناسالم عقل له رويه سرته ورسېد. امريکايانو د

هغه په مقابله کې، د نړيوالو انرجي منابعو ځانته ساتلو له پاره، داسې له افراطه ډک عکس العمل وښود، چې د هغه له امله د شوروي امپراتورۍ د پرزولو تر څنګ د نړيوال اسلامي جهاد بنسټ هم کېښودل شو. شورويانو د خپل پوځ تر شا را روان، بېرک کارمل، دغه په الکولو او فحشا روږدی کس، په افغانستان کې د حزب او دولت بېواکه واکدار مقرر که. د شورويانو له لاسه افغانستان د يوې، تر اوسه ناپايه، جګړې په اور کې کېښوت. افغانانو ته زيات ځاني او مالي تاوان ورسېد. دولتي مشران، نورمحمد تره کی، حفيظ الله امين او ډاکټر نجيب الله د دوی په مستقیمه او غير مستقیمه لارښوونه شهيدان شول.

د ۲۰۰۱ کال د اکتوبر د مياشتې په اوومه نېټه د امريکا په مشرۍ د ناتو غړو هېوادونو په افغانستان باندې د طالبانو او د تروريزم د ختمولو، د هېواد ابادولو او دموکراتيک نظام پېنو درولو په پلمه پوځي تيری سر ته ورساوه. جورج ډبليو بوش د تيري په مهال د امريکې جمهور رئيس په الکولو معتاد کس، اما د ده په وينا، له الکولو توبه کار شوی او له الکولو بدتره په يوه دماغي خلل کې ښکېل و چې ويل به يې د خپلو پرېکړو الهام له اسمانه اخلي، په افغانستان د پوځي بريد پرېکړه همدغه راز کس وکړه. په ۲۰۰۳ کال همدغه خللي انسان د انگلستان صدراعظم توني بلير په ځان پسې راکش او د عراق په هېواد باندې يې پوځي يرغل سر ته ورساوه. عراق د وړاندېدو علاوه په داسې بحران کې ډوب شو چې د راوتلو لاره ترې ورکه ده.

په ۲۰۱۱ کال کې د امريکې رئيس جمهور اوباما د فرانسې جمهور رئيس نیکولاۍ سرکوزي او انگلستان صدراعظم ډيويد کامرون په ځان پسې روان کرل او د ليبيا هېواد يې د پترولو ذخايرو د لرلو په «ګناه» داسې وړان ويجاړ کړ چې اوس يې د بيا په پښو درولو چارې په سترگو نه ليدل کېږي.

د روسې واکداري چې له ډېرې مودې راهيسې د پوتين په منګلو کې برتمه ده، د کرجستان هېواد يې د خپلو پوځي متو په زور کښو کښو که. په اوکراين کې يې، د بدلون د بحران څخه په ګټه اخېستلو سره، د کریميا له بيلولو ورپسې اوس لکيا دی چې د دغه هېواد ختيځه برخه تر خپلې واکدارۍ لاندې راوړي.

-چينايي واکداران چې د خپل چټک اقتصادي او ټولنيز پرمختګ له برکته په نړيوال نظم او ژوندانه د اصولو په ټاکلو کې د چينايي عناصرو په شاملولو ټينګار کوي، او وايي چې د نورو هېوادونو په کورنيو چارو کې لاس نه وهي او د ملتونو تر منځ د کېدو مرستو او سوله يز ژوند غوښتونکی دی. اما چينايي مشرانو د پاکستان په هکله د ټکی برکي کرناړه

غوره کړې ده، ټولې دنيا ته ښکاره ده چې د پاکستان دولت د نړيوال تروريزم د پالنې او روزنې دنده په غاړه اخيستې ده. د اتومي وسلو د نه جوړولو او نه خپرونو په هکله يې نړيواله زمه واري تر پښو لاندې کړې ده. د اتومي وسلو د رمزونو په خرڅولو يې پيسې کتلې او په افغان هېواد کې د اوسنيو روانو جگړو په ختمولو کې تر ټولو مهم خنډ دی. له دې ټولو سره سره هم چينايي مشران پاکستان خپل اسرائيل بولي او په پاکستان باندې تيري ته په خپلو ځانونو باندې د تيري په سترگو کوري. دغه راز چال چلن حيرانونکی دی. د نړۍ د اوسنيو زبرواکانو کړو وړو ته په کتلو سره د collapsology (نړېدنې) د نظر خاوندانو څرگندونې د پام وړ کړي.

د تاريخي يادونو د يادونې په مهال د خوړو يادونو په پرتله ترخه يادونه په زياته پيمانه د انسان مخې ته دريږي. علت دا دی چې د سل زرو کلونو نه زيات تېر شوي مهال کې زموږ تېرو نسلونو د ژوند په چاپېريال کې د تيارو نعمتونو له شته والي سره تړلی و. دوی د خوراک ځکاک او خپل مصونيت او دفاع په برابرولو کې له ډېرو ستونزو او خطرونو سره مخامخ کېدل. د ناخوالو تکرار، لکه هر بل تکرار چې معجزه جوړوي، د دې لامل شول چې تر ننه پورې زموږ پام د خوړو پر ځای ترخو يادونو ته ډېر تمايل پيدا کړي. د ښو او بدو پېښو په پېښېدلو کې، د طبيعت تر څنګه، اساسي لوبغاړی انسان دی.

دلته به د انسان په باره کې د هغو واقعيتونو يوه کمه، ولې مهمه برخه، د دې کتاب له گرانو لوستونکو سره شريکه کړم چې د علمي څېړنو له امله نور نو د شک او اېهام په تروپميو کې پټ پاتې نه دي: که څه هم ژوند له نن نه ۵، ۳ ميليارده کاله پخوا پيل شوی دی، خو د انسان تر ټولو پخوانيو نيکونو د ژوند پل، په اوس کې، د ۵۰۰ ميليونه کاله پخوا تر زمانې پورې وهل شوی ده، او په هرو تخميناً ۱۰۰ ميليونه ورپسې کلونو کې له تيب پوره جگ پور ته ورختلی دی. ۱۵۰۰۰۰ کاله کېرې چې بدني جوړښت يې د قواري او هيکل له مخې اوسني انسان ته ورته شوی، چې د HomoSapien يا عقل لرونکي انسان، په نامه ياديږي. ۵۰۰۰۰ کاله پخوا مودې راهيسې يې د سر د مغزو استوانه يې بڼه په پلنه کلچه يې بڼه واوښته او په همدې مهال ده چې د فکر کولو توان يې لا نوره وده وکړه، د سيمبوليک فکر کارول، د مرو خښول، د خواريکي شيانو او ښکار کولو په کارونو کې د وسايلو اغېزمنتوب لوړول او نورې فکري توانمندي تر لاسه کول د دې علت شول چې له نن نه ۱۵۰۰۰ کاله پخوا راهيسې انسان د مالدارۍ او کرنې پوهه پيدا کړه. تر دې ۱۲۰۰۰ کاله وروسته د خط او کتابت په اختراع کولو بريالی شو، او دا ده د پنځه زره کلونو راهيسې ډېرو لوړو او ژورو له تېرېدلو وروسته په ډېره لوړه تکنالوژۍ سنبال د يوويشتمې

پېړۍ تمدن يې په پښو ودراره. ۴

که د انسان ځينې ځانگړتياوې لکه د سر وېښتانو، سترگو او څرمنې رنگونه د څو نسلونو په تېرېدو سره بدلون نه پيدا کوي، اما د سر د ماغزو کړنې او جوړښت يې له بيولوژيکي هستې سره يوځای، چې د ده د تفکر، تجربو او چاپېريال د اعمالو محصول دی، ثبات نه مني او په دوامداره توگه د بدلون په حال کې دی. هغه مهال چې د مخکې په مخ د وگړو شمېر لږ او خوراکي نعمتونه پرېمانه وو يو شمېر انسانانو به له مړېدو وروسته د ښکار کولو او خوراکي موادو په راټولولو او خوړلو کې دمه کوله او د دمې کولو په وخت کې به د خپل نسل د زياتولو په اعمالو لگيا شول. دوی په خوراک کې د سپما او قناعت له برکته راتلونکو نسلونو ته د ژوندانه د دوام امکانات برابرول. دغه ډله انسانان په بيالوجيکي ادبياتو کې د endostatics په نامه يادېږي چې د قناعت او چاپېريال ته د پاملرنې له کبله نېکمرغي هم ور په برخه وه. د دوی په راتلونکو نسلونو کې د محافظه کارۍ، قناعت او روحانيت بهير وده وکړه او د معنويت فکري عقيدتي بهير زني په همدې مهال کې رامنځ ته شول. د دغه راز انسانانو تر څنگه يو بل شمېر داسې انسانان موجود وو، چې له مړېدو وروسته به هم په خوراک کولو لگيا وو تر څو په خپلو ځانو کې د ضرورت له رويه خوراکي ذخيرې جوړې او له دې لارې د قحطيو او طبيعي افاتو په مهال د خپل نسل د ژوندانه د دوام امکانات برابر کړي. دوی په بيالوجيکي ادبياتو کې د exostatics په نامه يادېږي. ۵. په چټکه د شتمنيو زياتول، د پرمختگ سره لېوانۍ مينه لرل، مادي پرستي د همدغو انسانانو نه راپاتې ميراث دی چې د ماديت فکري بهير زني يې وکړل.

په دا وروسته مهالونو کې چې انسانانو د کرنې، مالدارۍ، پرېماني راوستلو او انگرېنو کې د خوراکي موادو د ساتلو پوهه پيدا کړه، له مړېدو وروسته خوراک کولو، د ضرورت پر ځای، د خوند اخېستلو بڼه ونيوله چې په اوس کې د ژوندانه نورو اړخونو ته هم ورننوتله. سپورتي لوبې، موزيک، گډا، ادبي او کلتوري غونډې، سياحت، جنسي سوداگري، نشې او داسې نور هغه واقعيتونه دي چې خوند ترېنه اخېستل يې ډېره مهمه برخه جوړوي.

د معنويت بهير په ډېره پراخه پېمانه څېړل شوې او څلور مليارده پالونکي ملاتړي لري. دوی د پخوا تېر شوو مهالونو د برم ساتنه په غاړه اخېستې او د اوسنيو مهالونو په پرتله په ډېرو ښېگڼو کې د نغېستو مهالونو په سترگو ورته کوي. د دوی په مقابل کې د ماديت بهير پالونکي ولاړ دي چې د مادي شتمنيو د زياتولو په ضرورت ټينگار کوي او حرص و

طمع په سر اخیستی، راتلونکو مهالونو ته یې پام اړولی او هغو ته د گټونکو او بایلونکو انسانانو د ازموینې د میدان په سترگو کوري. دوی د انسان برم، عزت او خوشحالي د مادي ژوند په غنا کې لټوي.

د ذکر شویو دوه گونو فکري بهیرونو تر منځ د نه تېرېدو پوله نشته. دوی د خپلمنځي خونړیو دښمنیو تر څنګ، د یرغلونو په مهال، یو د بل لاسنیوی هم کوي. له پخوا نه تر اوسه پورې یرغلګرو د خپلو او پرديو خلکو د غولولو له پاره خپلې څېرې په رنگ رنگ ډولونو سینګار کړې او په دې توګه یې خپل اصلي مرامونه چې د کمزورو خلکو د وینو زبېښل او مادي کتو تامینول دي پټ ساتلي دي. تر پرونه پورې یې د ادیانو او تمدنونو د خپرولو په پلمه، په دا نږدې تېر وخت کې د کمونیزم او پانګوال سیستم له منکولو نه د بشریت د ژغورنې په پلمه او نن یې د اسلامي تروریزم د نابودولو په پلمه، تاوتریخوالی او جګړې، چې د وسلو جوړولو او خرڅلاو له پاره لنگه غوا ده، په ټول بشریت باندې تپلی دی. د اوسنیو درې گونو زېرواکو قدرتونو دولتي سروالان د بې ځایه غرور او کبر په لومه کې راکړ پاته دي، او خپل ځانونه تر نورو لوړ او د ټول بشریت د هستی مالکان بولي. د دغه راز غرور او کبر د ماتولو کار د غفلت د خوبه پاڅېدل او د ژوندانه او انسان طبیعت ته پاملرنه کول غواړي: هغه طبیعت چې له پېله بیا تر اوسه پورې د بدلون په حال کې دی او په راتلونکې زمانه کې به هم حیرانونکي او نه پېژندونکي بدلونونه وويني. دلته د حضرت مولانا جلال الدین بلخي له مثنوی نه دا شعرونه د یادولو وړ بولم چې وايي ۶:

امده اول به اقلیم جماد

وزجمادی در نباتاتی او فتاد

سألها اندر نباتاتی عمر کرد

وزجمادی یاد ناورد از نبرد

وز نباتاتی چون به حیوان او فتاد

نامدش حال نباتاتی هېچ یاد

باز از حیوان سوی انسانیش

می کشدان ان خالق که دانیش

همچنين اقليم تا اقليم رفت
تا شد اکنون عاقل و دانا و رفت

په ياد شوي شعر کې د بدلون او ارتقا مسله باندې، د ډاروين له نظر نه څو سوه کاله د مخه، په ډېره بنياسته صوفيانه توگه رڼا اچول شوې ده. نوموړي د انسان عقلي ارتقا ته هم دا لاندې مهېې اشارې کړې دي:

عقل های اولينش ياد نيست
هم ازين عقلش تحول کرد نيست

تا رهد زين عقل پر حرص و طلب
صد هزاران عقل بيند بوالعجب

په دې بل شعر کې مولانا، دغه صوفي، متفکر او عالم، انساني ارتقا او اصل ته مخ راوړنه داسې بيانوي:

از جمادی مردم و نامی شدم
از نما مردم به حيوان سر زدم

مردم از حیوانی و ادم شدم
پس چه ترسم کسی ز مردن گم شدم

حمله ديگری بميـرم از بشر
تا بر ارم از ملا یک بال و پر

بار ديگر از ملک پيران شوم
انچه اندر وهم نايـد ان شوم

که څه هم «حقيقت د گړنگ په تل کې پروت دی او گړنگ تل نه لري»، د واقعيتونو په هکله د مولانا علمي او مستند بيانات حقيقت ته د نږدې کېدلو له هلو ځلو سره ډېره مرسته کولای شي. ده د معنويت فکري بهير ته داسې بنياست وربښلی دی چې انساني مينه

په کې څلیري او د روحي ارامتیا تنده ماتوي.

۵۰۰۰ کاله پخوا کله چې د انسان دماغي کړنو وده وموندله، خپلو فکري توانمنديو ته په پاملرنې سره، له حيرت سره مخامخ شو او د همدې حيرت له امله د خپل ځان په پېژندلو کې پاتې راغی. له حيرت نه د راوتلو هڅو په پايله کې دا باور ورته پيدا شو چې انسان د بدن په نامه له يوې مادې او روح (اروا) په نامه له يوې غير مادي برخو جوړ شوی موجود دی. کتاب لرونکو اديانو لکه يهوديت تر ميلاده ۶۰۰ کاله د مخه، عيسويت له ميلاده راهيسې او اسلام ۵۵۰ کاله د ميلاده وروسته روح (اروا) دغه تر بدن نه ۱۰۰۰۰ کاله کشرې هستی موجوديت او استقلال ته قايل شول. دوی روح ته په بدن کې د ځای پر ځای شوي هويت او بدن باندې د څارنې د مسؤل په سترگو وکتل. د دوی د باور له مخې که چېرې روح د بدن د څارنې چارې په ښه توگه سر ته ورسوي، له مړينې وروسته به، چې د بدن څخه جلا کيږي، د جنت په راحت کې ځای ولري. او که چېرې د بدن هوسونو او نارواوو ته تسليم شوی وي له مړينې وروسته به د دوزخ په لمبو، مارانو اولرمانو په انگر کې ژوند کوي.

په شلمه پېړۍ کې د بيالوژي او سايکالوجي (اروايي) علومو هم د روح (اروا) موجوديت او استقلال ومانه. دا ځکه چې بدني هيکل د بيالوجي د وراثتي قواعدو له مخې جوړيږي او د فزيکي قوانينو په مرسته د اندازه کولو او پېژندلو وړ کړي. حال دا چې روح (اروا) پراخه ورشو لري، په چټکۍ سره بدلېږي او د وراثتي او فزيکي قوانينو ته غاړه نه ږدي. ځکه نو غير مادي او د مستقل هويت خاونده ده. د يوويشتمې پېړۍ په سلگونو علمي څېړنو د شلمې پېړۍ بيولوجي متحجر او ثابت خصلت ته خوځېدونکی او دوام داره توگه بدلېدونکی خصلت ور په برخه کړ چې د روح (اروا) له خواصو سره، پرته له دې چې غير مادي او مستقل هويت يې تر پوښتنې لاندې راولي، اړخ لگوي. د يوويشتمې پېړۍ د بيولوژي له رويه د روح د زېږېدلو پته (ادرس) د بدن د سر په ماغزو کې ځای لري، او په نورو حيواناتو کې هم د نباتاتو په شمول، موجود دی.

ماضي پرستان او محافظه کاران په نشه اي موادو روږدي (معتاد) کسان د ارادې په کمزورتيا او روح په خلل اخته شوي گنهکاران او مجرمان بولي. حال دا چې په لابراتواري تجربو کې مړو (غټو مورککو) ته د هپروينو په ورکولو سره د دې حيواناتو، لکه د انسانانو غونډې، لس سلنه برخه په هپروينو روږدي شول. د نشه اي موادو معتادينو د سرونو په ماغزو کې د مضر کارونو د نه تکرارولو ميکانيزم په ناغېږی او خلل اخته شوی وي. ځکه نو په هره ستونزه کې روح ته ملامتي په غاړه کې اچول مناسب نه برېښي. د ښځو

په وړاندې د نارینه وو، د تور پوستو په وړاندې د سپين پوستو، خوارانو په وړاندې د بديانو او نورو ژونديو موجوداتو په وړاندې د انسانانو توپيري چلن د پوهې په فقر او روحي دنيا په ناوره تعبير پورې تړلی چلن دی.

د Manus په نامه د ارام سمندر په جنوب او نوې کيڼې په شمال کې يوه جزيره پراته ده چې د Anthropology (انسان پېژندنې) د پوهانو او زده کونکو د ډېر پام وړ گرځېدلې ده. د دې جزيرې خلکو د لوېديز تمدن ټولې برخې په يو واري او چټکه توگه په خپلو غېږو کې راوښولې او يواځې د يوه نسل د ژوندانه په اوږدو کې وتوانېدل چې له ډبرينې زمانې نه د شلمې پېړۍ زمانې ته توپ ووهي. Margret Mead دغه توپ وهنه د کلتوري ځان عيارونې يوه رښتینه معجزه بولي او د هغې تاريخ يې «نوی ژوند د زاړه پر ځای» تر عنوان لاندې په خپل ليکلي څېړنيز اثر کې بيان کړی دی. نوموړې داسې باور لري چې د بدوي او شا ته پاتو خلکو له پاره لوېديز تمدن ته د رسېدو په هيله د دغه تمدن جوړې شوې برخې په جلا جلا يو په بل پسې هغه هم په کراه کراره توگه هضمول له ستونزو ډک کار دی. دوی د نوموړي تمدن ټول اړخونه يو ځای او په بېره سره د فکر او عمل ميدان ته له د ننه کولو پرته بله چاره نه لري. ليکوالې په دې لاره کې د نوي او زاړه کلتور تر منځ د ټکرونو رامنځ ته کېدل يوه ناچارې بللې ده.

زموږ په هېواد کې هم د نوښت پال پاچا امان الله خان او د خلقيانو رژيمونو د هغه وخت لوېديز او ختيځ تمدنونو قدمونو باندې د چټک تگ د پرمختللو اراده لرله. دوی د ماديت فکري بهير سره روا مينې په سر اخيستي وو. د غفلت او ناپوهۍ عموميت، د وطن پلورونکو جاسوسانو او ځينو روحانيونو هلې ځلې، د انگرېزانو، شورويانو او امريکايانو استعماري موخې او لاسوهنې د دې لامل شول چې د معنويت فکري بهير له دواړو رژيمونو سره د مقابله او نه پخلاينې خونړۍ لاره غوره کړي. د امان الله پاچا د سلطنت د نسکورېدو پسې د معنويت فکري بهير په جامه کې، يو نهه مياشتينې له وحشت نه ډک رژيم او د خلقيانو د رژيم له نسکورولو پسې، د ماديت فکري بهير په جامه کې، يو نهه کلن له شرم او زلت نه ډک بلواک رژيم، د لوبو د اصلي لوبغاړو له خوا په پښو ودرول شول. د ۱۹۹۲ کال د اپرېل د مياشتې له اته ويشتمې نېټې نه را په دې خوا يو ځل بيا د معنويت فکري واکداري پيل شوه تر څو چې له يوه لاس نه بل لاس ته د پرېوتلو وروسته د ۲۰۰۱ کال د اکتوبر د مياشتې په اوومه نېټه د نړيوال پوځي تيري د بريدونو له امله رانسکوره او يوه بله، دا ځلې د ماديت او معنويت له خواوو پخلا شوې شاتنه، واکداري واک ته ورسول شوه. خدای خبر دی چې د دې واکدارۍ له امله را پيدا شوې د جگړو او غمونو

لری به تر کله پورې روانه وي.

که څه هم د معنویت او مادیت فکري بهیرونو د علمي او معنوي ژوند په برخو کې دېرې نېکمرغې انساني ژوند ته ور په برخه کړي؛ په دا اوس کې د دواړو په انګړونو کې خطرناکو افراطي باورونو او جنون تورو هوسونو هم ځای نیولی دی. د امریکا په ځینو ایالاتو کې د ټولنیزو څېړنو پر مهال ډېر شمېر پوښتل شوو کسانو ویلي چې د الله اکبر کلیسې د مرګ په امریکا معنی لري. د اوزون حاجي په نامه د شمالي قفقاز د نقشبنديانو یو پیر په خپله یوه اعلامیه کې پر اسلامي شریعت ولاړ یو خلافت د جوړولو اعلان کړی دی، او وایي چې زه رسی (تناو) تاووم او ټول انجنران، محصلین او په عمومي ډول ټول هغه کسان غرغره کوم چې له چپ څخه بنی خوا ته لیکل کوي. (باري جهاني)

په اوسني وخت کې د معاصرو تعلیمي زده کړو کمبود او نیمګړتیا او همدارنګه د پیسو او وسلو واکداريو، د بشریت یوه مهمه برخه، د مادي او معنوي فقر له ستونزې سره مخامخ کړي ده. فقر د ازادۍ تر ټولو ستر دښمن او یوه داسې کرونده ده چې په هغې کې د نظر او عمل د افراط زني کرل کېږي. افراط، د خصلت له رویه په ښېکڼو مین، انسانان له غمونو سره مخامخ کوي. د نظرونو افراط د ذهني کېږو او په روایت کې د درایت د نشتوالي محصول دی. بهودان ځانونه تر نورو لوړ بولي، ځکه چې د دوی په قوم کې ډېر پیغمبران تېر شوي دي. سپین پوستي اروپایان ځکه ټول بشریت د ځانونو پوروی بولي چې د تمدن او نوي ژوند د لارو مهندسي یې کړي ده. عربان له دې امله مغروره او په نورو ځانونه لوړ بولي چې خدای تعالی (ج) خپل پیغمبر حضرت محمد (ص) د دوی له تېر څېنې غوره کړی دی او قران عظیم الشان یې په عربي ژبه رانازل کړی دی.

هغه لږ شمېر کسان چې د پیسو د فاروني کنج او تباہ کوونکو وسلو مالکان دي ځانونه تر نورو لوړ کڼي او د دولتي واکداريو د جوړولو او نړولو تر کچې پورې لاس خلاصی دي. دوی د جګړې د اورونو په بلولو او خپلو پیسو د لا زیاتولو په کارونو کې له هېڅ ډول افراطه مخ نه اړوي. دوی ټول د انسان د ژوندون مزاج او طبیعت ته چې له پیله بیا تر اوسه پورې د بدلون په حال کې دی او په راتلونکې زمانه کې به هم حیرانونکي، او په دا اوس کې، نه پېژندونکي بدلونونه وویني، پوره پاملرنه نه کوي. د همدې غفلت له لاسه ځانونه تر نورو لوړ او د کامل عقل خاوندان کڼي. که د لوړتوب د قضاوت زمينه د مخکې په سر دا لس میلیونو ژونديو موجوداتو ته برابره شي، هر یو به ځان د تر ټولو لوړ مقام لرونکی وبولي. یوه بکتريا په څو ورځو کې له نوي چاپېریال سره ځان عیارولی شي. حال دا چې انسان د زرګونو کلونو په موده کې وشو کړلای چې له نوي چاپېریال سره ځان اعیار

کړي. يوه ونه په مستقله توگه د لمر د وړانگو په کارولو سره د خان جوړونې او چاپېريال ته د کتورتوب او ښکلا وربښلو په کارونو لگيا ده او د انسان په پرتله د قد و قامت او عمر د اوږدوالي له رويه برلاسې ده. د مځکې په سر د ژوندۍ کتلې ۸۲ سلنه له ونو او بوتو، ۱۳ سلنه د بکترياوو، دوه سلنه له مرخپړيو، ۵، ۰ سلنه له حيواناتو او يواځې ۰، ۱ سلنه دا اوس شمېر له ۷ ميلياردو انسانانو نه جوړه ده. ۸.۵ د انسان د لورتوب رمز د ده په علم او تخنيک کې ځای لري. دلته په اسلامي فکر کې دا روايت د يادولو وړ بولم چې وايي: شرافت الانسان با لعلم والادب، لا بالمال والنسب.

د خوشحال خټک هم دا فکر د پام وړ دی چې وايي:

نامرد فخر په نسب که

مرد نه مور لري نه پلار

معاصر انسان مجبور نه دی لکه د ۱۵۰۰۰ کلونو پخوا انسان په شان، چې تنها صورته ژوند يې درلود، او مجبور و چې د خپل ځکاک، خوراک او دفاع بندوبست په خپله وکړي. د ټولنيز ژوند پرمختگ او کارونو د وېش له برکته د اوسني انسان دماغي پېټې لږ شوې او په ماغزو کې يې د حجم له رويه درې تر څلور سلنه، او د وزن له رويه ۱۵۰ کرامه کموالی راغلی دی. د سر ماغزه د انسان د بدن دوه سلنه برخه جوړوي. مگر د ټولې هغې انرجي چې وجود يې د خوارکي موادو د هضمولو په مرسته تر لاسه کوي شل سلنه برخه د سر د مغزو له خوا په مصرف رسېږي. د حجم او وزن په حساب کم شوي ماغزه د ۱۵۰۰۰ کاله پخواني انسان د مغزو په پرتله، لږه انرجي مصرفوي. د نن ورځې انسان دا سپما شوې انرجي د اختراعاتو، نوښتونو او فکرونو د لا نورې پياوړتيا په مقصد کارولی شي. ۹.

د اوسنيو، په افراط کې ښکېلو، مادي او معنوي فکري بهیرونو تر منځ د اعتدال منځپاله (interstatic) فکري بهير غوره کول، چې د خیرالامور اوسطها له اصل سره اړخ لکوي؛ په روانو جکړو باندې د سوې غلبه کول؛ ټولنيز ژوند کې د مادي او معنوي عدالت تامينول؛ په ټولنه کې د ابرو او عزت لرلو معيار د بشر د حقوقو او خیرالناس ما ینفع الناس د اصولو له رويه ټاکل؛ د اقليم او چاپېريال ته د زبان رسولو د روانې لړۍ مهارول؛ د عقلانيت په مرسته د وگړو د خود سره او خطرناکه زياتېدلو ته د منلو وړ نظم ورکول، د انسان دماغ، دغه د فکرونو، هیلو او هوسونو د جوړولو ماشين ته د اوسني پنځه سلنه د ظرفيت د لوړولو په لاره کې د خندونو له منځه وړل؛ د دې اړت ناپاڼه جهان د ننۍ

پنځه سلنې پېژندلو ته پراختيا ورکول؛ د خدای تعالی لور مقام ته درناوی، انساني اصولو ته احترام او په دولت باندې د اختيار لرلو مالکیت، د څو محدودو عقیدتي او سياسي دلو د انحصار پر ځای د ټول بشریت مشروع حق گڼل؛ هغه کارونه او فکرونه دي چې کولی شي انسانان په خوشاليو ماره او يوويشتمې پېړۍ ته د نېکمرغه پېړۍ نوم وکړي. د استاد اقبال کور دې ودان او عمر ډېر وي چې د خپل دې ليکلي کتاب په لوستو يې فکر کولو ته وهڅولم او دا ده «چې تيار هغه د يار» او خپلې ډېرې محدودې او په هېڅ کې حساب پوهې په بنياد مې دا سرريزه وليکله خدای دې وکړي چې د دې کتاب د ارزښتونو سره د غبرکېدو لياقت ولري.

په درناوي

لن ليکونه:

۱- علامه پوهاند حبيبي، شل مقالې دولسمه برخه ۱۴۸ مخ

2-Homobiologicus Piervincenzo Piazza. Editions Albin Michal 2019 Page

11

۳- گرباچوف: د يوې پولنډۍ او روسۍ ژورنالستانو تاريخ او حقوق پوهانو مستند

فلم

۴- Homobiologicus، ۳۳مخ

۵- همدا اثر ۲۰۵ مخ

۶- علامه پوهان حبيبي، شل مقالې دولسمه برخه ۱۵۷ مخ

7-Alvin Toffler; Le Choc du future Editions Denoil 415 page

۸- Homobiologicus، ۲۳۵مخ

۴-۱۹/۹۰۷ Le cerveau

لومړۍ ټوک

پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ

اود افغانستان تاریخ

لومړی څپرکی

د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ لنډه پېژندګلوي

محمد حسن کاکړ په ۱۹۲۹ زېږديز کال کې د لغمان د ښکلي ولايت د اليشنګ درې د پلوتې په کلي کې د ميرزا فضل الحق کاکړ په کور کې زېږېدلی دی. د کاکړ په وينا د لغمان پخوانی نوم لمپاکا دی. لغمان له دوو پراخو درو څخه، چې يوه يې اليشنګ او بله يې الينګار نومېږي، جوړ دی. د لغمان په منځ کې دواړه درې په يوې پراخې درې بدلېږي او له دواړو راوتلي سيندونه سره يوځای کېږي او بيا له کابل سيند سره يوځای کېږي. په لغمان کې هر لغمانی په پښتو او دري پوهېږي خو «شاعري او تنګ ټکور او عمومي کلتور د پښتو دی.» ۳

دی زياتوي چې پلوته د لغمان يو پخوانی کلی دی. د پلوتې بل نوم ډېوه دی. دا دواړه پخواني نومونه دي. د يوه روايت له مخې پروت (Parwat) تر اسلام نه د مخه د کلي مشر و. ډېوه (Deva) چې په سانسکرت کې څلېدونکي او په پښتو کې څراغ ته وايي د لرغونو وختو په اسطوره کې د رنا او خوبنی رب و. په هر حال پخوا له پلوتې نه يو ټينګ دېوال چاپېر و او يو لوی ور يې لاره. پلوته اوس د ورو ځمکه والو، بزګرو، کسبګرو او غريبکارو کلی دی.

د دې ماشوم لا کال نه و پوره شوی چې پلار يې مړ شو او د خپلې پتمنې او مهربانې مور «خاتمه نيازي» په غېږ کې لويده. دی تنکی ځوان و چې خپلې خوږې مور يې د فاني نړۍ نه سترګې پټې کړې او د مورنۍ مينې نه هم بې برخې شو.

دغه يتيم ماشوم خپلې زده کړې د تېرګريو په لوی جومات کې پيل او بيا يې د قلعه السراج په ښوونځي کې چې د کلي نه ليري پروت و دوام ورکړ. ده تر نهم ټولګي پورې زده کړې په لغمان کې پای ته ورسولې او بيا کندهار ته لاړ او هلته يې يو کال خپلې زده کړې د احمدشاه بابا په لېسې کې وکړې او د خپل نيایي ارواښاد عبدالمقيم نيازي په کور کې اوسېده. کاکړ دوه کاله خپلې زده کړې د کابل په دارالمعلمين کې وکړې او په ۱۹۵۰ کال کې د غازي لېسې نه په لومړۍ درجه بريالی شو. نوموړی په ۱۹۵۳ کال کې د کابل پوهنتون د ادبياتو په پوهنځي کې شامل او په ۱۹۵۷ کال کې د دې پوهنځي د تاريخ د څانګې نه فارغ او

په لومړۍ درجه بريالی شو. کاکړ د ادبياتو د پوهنځي د فارغېدو وروسته په پښتو ټولنه کې مسلکي غړی او د کابل مجلې چلوونکی وټاکل شو. برسېره پردې ده د ادبياتو په پوهنځي کې زده کړيالو ته درس هم ورکاوه.

محمد حسن کاکړ لا زده کړيال و چې د مايکل سټيوارټ کتاب «د بریتانې سياسي سيستم» يې د انگليسي ژبې نه په پښتو وژباړه چې د دغه خدمت په خاطر په ۱۹۵۷ کال کې د ابن سینا جايزه ورکړل شوه. ده د «ماکسيم گورکي د ادبياتو په اړه» کتاب د انگليسي نه په پښتو وژباړه چې پښتو ټولني له خوا په ۱۹۶۹ کال کې خپور شو. کاکړ په ۱۹۵۸ کال کې د يوه رسمي پلاوي د غړي په توگه شوروي اتحاد او په بل کال امريکې ته سفرونه وکړل. نوموړی په ۱۹۶۱ کال کې د ډاکټر علي احمد پوپل په پاملرنې د لوړو زده کړو له پاره لندن ته واستول شو. هلته يې لومړی د کابل پوهنتون شهادتنامه د لندن د پوهنتون د لسانس انډوله کړه او بيا يې د امير عبدالرحمن واکمني وڅېړله او ماسټري ډيپلوم يې لاسته راوړ چې په ۱۹۷۱ کال کې «د افغانستان نني سياسي انکشافات» په نوم په لاهور کې چاپ شو.

محمد حسن کاکړ په ۱۹۶۸ کال کې د لندن نه هېواد ته راستون او د کابل په پوهنتون کې د تاريخ د استاد په توگه دنده پيل کړه. ده د تدريس په جريان کې دوه کتابونه: «دموکراسی در جهان امروز» او «تاريخ څه ته وايي؟» د انگليسي نه په ترتيب سره په فارسي او پښتو وژباړل چې وروستی يې د کابل پوهنتون له خوا په ۱۹۷۰ کال کې خپور شو. نوموړي همدارنگه د سدني پينټر کتاب چې «د منځنيو پېړيو اروپا» نومېږي وژباړه چې تر اوسه چاپ شوی نه دی.

کاکړ په ۱۹۷۲ کال کې د نورو زده کړو له پاره د فولبرايت په سکالرشپ د امريکا متحده ايالاتو ته لاړ او د پرېنستون په پوهنتون کې يې د امير عبدالرحمن په دورې نوره څېړنه پيل کړه او په ۱۹۷۵ کال کې يې هغه د هارورډ په پوهنتون کې بشپړه کړه چې په ۱۹۷۹ کال کې د ډاکټري تېزس «د امير عبد الرحمن په واکمني کې حکومت او ټولنه» د امريکې د تکراس د پوهنتون له خوا خپور شو. نوموړي په دغه اثر سره د لندن د پوهنتون نه د ډاکټري شهادتنامه تر لاسه کړه او په ۱۹۷۶ کال کې وطن ته راستون او د کابل په پوهنتون کې د تاريخ د استاد په توگه خپلې دندې ته دوام ورکړ. نوموړی په ۱۹۸۱ کال کې د پوهاند درجې ته ورسېد. په ۱۹۷۸ کال کې د کابل پوهنتون له خوا د ده څېړنيز اثر «افغان، افغانستان و مختصرې از کوشش های افغان برای تاسيس دولت در هندوستان، ايران و افغانستان» خپور شو. دغه اثر دوه ځله د وفا له خوا خپور شوی دی.

پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ په افغانستان باندې د شوروي اتحاد د يرغل وروسته د شورويانو او پرچمي رژيم پر ضد د سياسي فعاليت له کبله بندي شو چې د نړيوال فشار په وړاندې د کابل رژيم اړ شو چې د پنځه کاله بند وروسته نوموړی ايله کړي. دی د بند نه د ايله کېدو وروسته بېرته په پوهنتون کې استاد شو، خو د همدغه کال په پای کې له خپلې کورنۍ سره پېښور ته لاړ او هلته يې د افغانانو په جهاد کې خپل قلعي ځواک په ډېر قوت سره وکاراوه. په ۱۹۸۹ کال کې دی د خپلې کورنۍ سره يوځای د امريکا متحده ايالاتو ته لاړ او د کاليفورنيا د ايالت په کانکرډ ښار کې يې ژوند کاوه.

پوهاند ډاکټر کاکړ په ۱۹۹۰ کال کې د هغه غورځنگ غړی او بيا مشر شو چې موخه يې د لويې جرگې له لارې د افغانستان د مسلې هوارۍ و. ده د نړۍ په گوټ گوټ کې د افغانستان د لانجې په اړه په غونډو کې لکه د استانبول، توکيو، اسلامي اسيا، يونسکو، اوس او تاشکند په کنفرانسونو کې کېدون وکړ او بيانې يې ورکړې. ده د استانبول په سيمينار کې چې د ۲۰۰۷ کال د جولایي د مياشتې د ۱۱-۱۳ نېټه دایر شوی و او د افغان مطالعاتو امريکايي موسسې او د پاکستان د مطالعاتو امريکايي موسسې له خوا تنظيم شوی و خپله وينا «د ډېورنډ کرښه، تاريخ، پایلې او راتلونکې» تر سر ليک لاندې وړاندې کړه. ده د توکيو په کنفرانس کې چې د جاپان د بهرنیو چارو وزارت له خوا د افغانستان په اړه جوړ شوی و وينا وکړه. کاکړ د اسلامي اسيا په کنفرانس کې چې په ۱۹۹۵ د اګست په مياشت کې د امريکې د جنګ د پوهنځي د بين المللي مطالعاتو او ستراتيژيک پروګرام له خوا جوړ شوی و خپله وينا «عرقی او نور ټکرونه» تر سرليک لاندې وړاندې کړه. کاکړ د يونسکو په کنفرانس کې چې په کابل کې په ۱۹۷۱ کال کې د کوشاني دورې په اړه جوړ شوی و خپله وينا واورله. ده د ډنمارک د اوس د ښار په کنفرانس کې د هندوکش د کلتور په اړه چې د موزگارډ موزيم له خوا دایر شوی و برخه واخېسته. ده په ۱۹۵۸ کال کې د تاشکند «د افريقايي او اسيایي کنفرانس» کې ونډه واخېسته. ده همدارنگه د هېواد نه د باندې په افغاني او نورو خپرونو کې د افغانستان د کشالې په اړه ډېرې ليکنې وکړې.

د کاکړ بل اثر چې «افغانستان، د داخلي سياسي انکشافاتو بيان، ۱۸۸۶-۱۸۸۰» نومېږي په ۱۹۷۱ کال کې د لاهور عرفاني موسسې له خوا په انگليسي ژبه خپور شو. د نوموړي بل اثر چې «د افغانستان په باب د ژينو جوړه» نومېږي په ۱۹۸۸ کال کې د وفا له خوا په پېښور کې چاپ شو. د کاکړ بل کتاب چې «جنګ دوم افغان- انگليس» نومېږي د افغانستان اسلامي ملي محاذ له خوا په ۱۹۸۹ کال کې په پېښور کې چاپ شو. دغه اثر د سيد تنظيم سيدي او مجيب الرحمن اميري له خوا په پښتو اړول شوی او په لندن کې د

افغان ليکوالو کلتوري ټولني له خوا په ۲۰۰۸ کال کې خپور شو. ده په ۱۹۹۰ کال کې «افغانان د شپږ شپتم کال په پسرلي کې له روسانو سره د جنگ په حال کې» ليکلی چې د سپين غر د کتاب چاپولو ټولني له خوا په جرمني کې خپور شو.

کاکړ په ۱۹۹۵ کال کې په انگليسي ژبه «افغانستان، شوروي يرغل او د افغانو خواب» کتاب بشپړ کړ چې د کاليفورنيا پوهنتون له خوا خپور شو. نوموړي وروسته يو بل اثر چې «رنا او دفاع» نومېږي تدوين کړ چې په ۱۹۹۹ کې د ساپي د پښتو څېړنو او پراختيا مرکز له خوا په پېښور کې چاپ شو او د ده د ليکنو برسېره د يو شمېر نورو ليکوالو ليکنې هم په کې خوندي دي. ده په ۲۰۰۵ کال «طالبان او اسلامي بنسټ پالنه» او بيا د «باچا امان الله واکمنۍ ته يوه نوې کتنه» کتابونه وليکل چې د افغانستان کلتوري ټولني له خوا چاپ شول. په ۲۰۰۶ کال کې د ده يو بل مهم اثر «د افغانستان سياسي او ډيپلوماټيکي تاريخ» په انگليسي ژبه په هالنډ کې خپور شو چې محترم سليبي په پښتو ژباړلی او د چاپ لاندې دی.

په ۲۰۰۷ کال کې د کاکړ له خوا د هومر بالابانس ليکنه: «د سقراط، افلاتون، ارسطو، اپيکور او زينو په نظر ښه انسان» د انگليسي نه په پښتو ژباړله او د افغانستان د کلتوري ټولني له خوا چاپ شوه. همدارنگه ده د انگليسي نه د محمود طرزي خاطرې په پښتو ژباړلي چې د افغانستان د کلتوري ټولني له خوا خپرې شوې.

په ۲۰۰۹ کال کې د ده بل اثر «د سرطان کودتا د افغانستان د اوږدې بې ثباتۍ پيلامه» د افغانستان کلتوري ټولني له خوا خپور شو. په ۲۰۱۰ کال کې د کاکړ دوه نور اثار: «زما غوره ليکنې» او «د ثور کودتا او د هغې ژورې پايلې» د افغانستان د کلتوري ټولني له خوا خپاره شول. د نوموړي بل کتاب چې «پښتون، افغان، افغانستان» نومېږي په ۲۰۱۱ کال کې د افغانستان د کلتوري ټولني له خوا چاپ شو.

د پوهاند ډاکټر کاکړ بل اثر چې «د افغان- شوروي جگړه» نومېږي د «کاکړ تاريخي- علمي بنسټ» له خوا په ۲۰۱۵ کال کې خپور شو. د نوموړي دوې ژباړې: «جنگ او زموږ نړۍ» د جان کيکن ليکنه او «د انسانتوب په اړه د اخلاقپوهنې پرنسيپونه» د واراکا ليکنه د کاکړ تاريخي- علمي بنسټ له خوا په ۲۰۱۵ کال کې خپاره شوي دي.

د کاکړ يو لړ مقالې چې په انگرېزي ژبه ليکل شوې او په بيلو بيلو خپرونو کې چاپ شوې دي.

کاکړ څلور لنډې ليکنې: د افغان- شوروي جنگ، د معاصر افغانستان لنډ تاريخ، طالبان او کابل په نومونو په انگليسي کېښلې دي چې د معاصرې نړۍ د اکسفورډ

دايرة المعارف په لومړي، څلورم او اووم ټوکونو کې د اکسفورډ پوهنتون په ۲۰۰۸ کال کې خپرې کړې دي.

د کاکړ بله لیکنه چې د افغانستان د اساسي قانون تاريخ نومېږي په ۱۹۹۲ کال کې د ايرانیکا دايرة المعارف په لومړي ټوک کې د کولمبيا پوهنتون په نیویارک کې خپره کړې ده. د کاکړ بله لیکنه چې «منځنۍ اسيا، د يوې سرپټې سيمې پرانېستل کېدلو پيل» په نوم يادېږي په انګليسي کېښلې او په ۱۹۹۳ کال کې د وفا له خوا خپره شوه.

د نوموړي بله لیکنه چې «ايا دوی د افغانستان کښاله هوارولی شي؟» په ۱۹۸۸ کال کې په نیویارک کې په وال سټريټ ژورنال کې نشر شوه. د ده بله لیکنه چې «په ۱۹۷۳ کې د افغان پاچايي نسکورېدل» نومېږي په ۱۹۷۸ کال کې د منځني ختيځ د مطالعاتو بين المللي ژورنال په نهمه شماره کې خپره شوې ده. بله مقاله يې چې «د افغانستان د هزاره گانو ايلېدل» نومېږي په ۱۹۷۳ کال کې په نیویارک کې د اسيا ټولنې له خوا خپره شوه. د ده بله لیکنه چې «د معاصر افغانستان د تاريخ ميلانونه» نومېږي د لويې دوېرې او لنين البرت له خوا په تنظيم شوي کتاب کې «افغانستان په ۱۹۷۰ لسيزې کې» د پريکړ موسسې له خوا په ۱۹۷۳ کال کې خپره شوه.

د افغانستان بېرته متحد کېدل ۱۸۸۰-۱۸۸۴ په نوم د ده لیکنه په ۱۹۷۰ کال کې د افغانستان د تاريخ ټولنې د افغانستان مجله کې خپره کړه.

کاکړ د ننه په هېواد کې او هم د هېواد نه د باندې په پښتو او پارسو کې د افغان چلوونکو په ورځپاڼو او مجلو کې د روانو او تاريخي موضوع گانو په اړه ډېرې ليکنې خپرې شوې دي چې يو شمېر يې د ده په هغه کتاب کې چې «زما غوره ليکنې» نومېږي راغونډې شوې دي او يو شمېر يې راټولې شوې نه دي بايد راټولې او د يوه کتاب په بڼه خپرې شي. د ده څلور مهې مقالې چې «د ډېورنډ کرښه بايد ډېر د مخه باطله اعلان شوی وای»، افغانستان، پاکستان او پښتونستان د هغو مقالو په ټولګه کې چې د «ډيورنډ، د واحد ملت د بيلتون کرښه» نومېږي خپرې شوې دي. دا مقالې د «لپه» په نوم درې مياشتنۍ مجلې کې هم خپرې شوې دي.

نوموړی يو شمېر غير اکادميک فعاليتونه کړي چې د ځينو نه يې لنډه يادونه کوو:

کاکړ د ۱۹۹۹ راهيسې د افغان کلتوري ټولني غړی و.

د ۱۹۹۰-۱۹۹۴ د افغانستان له پاره د يوه تمثيلي حکومت حرکت، چې په لاس

انجلس کې جوړ شوی و، موسس غړی و.

۱۹۸۲-۱۹۸۷ کې د څرخي پله په بنديتون کې د بندي کېدو له کبله د بين المللي عفوې

د سازمان له خوا «د وجدان بندي» اعلان شو.

نوموړی د افغانستان د استادانو او محصلانو د اتحادیې موسس غړی و چې د شوروي د يرغل نه تر ۱۹۸۲ کال پورې په کابل کې د شورويانو او د کارمل مزدور حکومت پر ضد پټه مبارزه پر مخ بيوله.

ده د ازاد ژورنالېست، څېړونکي او ويناکونکي په توگه د بي بي سي راډيو له پاره په پښتو او پارسي کې ليکني او ويناوې برابرولې چې هغه بيا په افغانستان راډيو کې خپرېدې. په دغه لړ کې ده د انگرېزي ژبې د زده کړې له پاره ۱۵۰ درسونه په پارسي تيار کړل چې د ۱۹۶۵-۱۹۶۸ په لندن کې خپاره شوي و.

د ۱۹۵۲-۱۹۵۰ په کابل کې د امريکې د کتابتون معلوماتي سرويس د چلوونکي مرستيال و او په دغه مهال يې انگرېزي ژبې کورسونو کې افغان زده کړيالو ته انگليسي درسونه ورکول.

په دې توگه پوهاند کاکړ د خپل ژوند زياته برخه د يوه پرهېزگار او اصولي شخصيت په توگه د وطن او خلکو چوپړ ته وقف کړی او داسې اثار يې ليکلي او ژباړلي دي او په هغو کې يې داسې ژور علمي فکرونه وړاندې کړي چې افغانان به د هغو په مرسته خپل تېر مهال وپېژني، د هېواد اوسنی حالت به په خلاصو سترگو وويني او د هېواد راتلونکې ودې له پاره به د دوی لاره رڼا کړي.

پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ د ۲۰۱۷ کال د جنوري د مياشتې په ۵مه نېټه د ۸۸ کالو په منگ د امريکا په کاليفورنيا ايالت کې د ورپېښې ناروغۍ له امله د فاني نړۍ نه سترگې پټې کړې اروا دې ښاده وي. کاکړ په لغمان کې د درندو مراسمو په ترڅ کې په خپلې پلرنۍ هديرې کې خاورو ته وسپارل شو. د کاکړ مېرمنې اغلې مریم کاکړ ما ته په تليفون کې وويل چې فکر يې تر پايه کار کاوه او وروستی خبرې يې دا وې چې اوس افغانستان ته تر ټولو لوی گواښ د پاکستان له لوري متوجې دی.

ميرمن مریم کاکړ خپل خاوند ته د کورني هوسا او ښه چاپيريال په برابرولو سره د ده په علمي ليکنو کې مرستندويه وه. کاکړ دوه زامن او درې لوڼه لري. مشر زوی يې کاوون او کشر زوی يې سباوون نومېږي. د کاکړ لوڼه پلوشه، وږمه او خواږه نومېږي.

کاکړ او د تاريخ ليکني علمي ميتود

کاکړ وايي چې تاريخ خلک د دې له پاره لولي چې د خپلو تېرو شويو د حالاتو نه خبر شي تر څو خپل هويت يا خپل ځان د تاريخ په رڼا کې وپېژني. خو تاريخ ليکل يو ډېر گران

کار دی.

تاريخ ځينې ځانگړتياوې او اصول لري چې د تاريخ ليکلو او پوهېدلو کې د سرې سره مرسته کولی شي. د کاکړ په وينا «د تاريخ ستره ځانگړتيا دا ده چې له هغو انساني ډله يزو پېښو سره سروکار لري چې واقع شوې وي.» ۴ په باسواده ټولنو کې افراد د يادښت په اخېستلو باندې روږدي دي. شخصي او سوداگرې موسسې او په تېره حکومتونه په هره سويه چې وي خپلې پرېکړې ليکي او د کره تاريخ ليکني له پاره زمينه برابروي.

خو زموږ په هېواد افغانستان کې د ليکلو او يادښت کولو دود نه شته يا په لومړني حال کې دی. دلته د سياسي جنجالونو په اړه څه کوې ان د زېږېدو، ودونو، د مړينې او نورو پېښو په اړه کتابي يادښتونه نه وي يا ډېر لږ وي. نو په داسې ټولني کې چې اساسي مالومات شتون ونه لري د تاريخ ليکل يې او د هغې په تاريخ پوهېدل بيا گران شي.

د کاکړ په وينا د تاريخ ليکلو شرط هرو مرو دا دی چې د کره او سمو مالوماتو پر بنسټ وکېدل شي. له دې امله د تاريخ پوه دنده دا ده چې کره او سم مالومات راټول کړي او بيا هغه داسې بيان کړي چې شخصي، قومي، ملي او سياسي کتنې په کې شاملې نه کړي تر څو خپل ځان د تاريخ نه گوښه وساتي. خو ځنگه چې تاريخ او تاريخ کښل اوږده مخينه لري او زرگونه کاله د مخه د يونان نامتو تاريخ پوه هېرودت نه پيل کېږي نو د تاريخ ليکلو هنر او شپوه ډېره کره شوې ده.

په دې ترتيب هغه کسان کره، افابي او علمي تاريخ ليکلی شي چې د تاريخ ليکلو په هنر کې ځانگړي مالومات ولري او په خپله پرهېڅکار او اصولي شخصيتونه وي ياني هغه څوک چې د تاريخ ليکلو په فن کې وارد وي او عمل پرې وکړي او له تاريخ نه يوازې او يوازې د رښتيا د رابرسېره کولو او د رښتيا د بيانولو له پاره گټه پورته کړي. يوازې د دغسې تاريخ او دغسې تاريخ پوهانو له لازې کېدای شي چې انسانان خپل تېر مهال هغسې چې واقع شوی وي وپېژني او د دغې پېژندنې په رڼا کې خپل ژوند اعيار کړي. کوم ملت يا خلک چې د خپل تاريخ نه په واقعي ډول خبر نه وي هغه تېروتنې بيا بيا کوي او د تاريخ نه زده کړه نه کوي.

کاکړ وايي چې تاريخ په ظاهر کې اسان ښکاري. خو ځنگه چې تاريخ کره معيارونه لري په اصل کې يو گران مضمون دی. تاريخ بايد هغه ډله يزې انساني پېښې چې واقع شوې وې بيا د سره په کليمو کې راژوندي کړي چې دا کار د شوونتيا د پولو نه وتلی دی. تېر مهال لکه ځنگه چې د تل له پاره تېر شوی دی او هېڅ ځواک نه شي کولی په بشپړ ډول يې بيان کړي. له دې کبله تاريخ پوه اړ دی چې تېرې شوې پېښې چې په بېلو بېلو بڼو او يا په مادي شواهدو کې په انتخابي توگه ثبت وي د هغو نه هغه پېښې وټاکي چې زيات اهميت ولري او

د ډېرو انسانانو پر ژوند يې اغېز شيندلی وي. دغه دوهمه عمليه د پېښو ټاکنه لا تنگوي. د بېلگې په توگه لومړۍ عمليه هغه وه چې د تاريخ پلار هېرودت په خپل تاريخ کې هغه پېښې انتخاب او ثبت کړې چې د ده په اند مهمې وې. خو يو افغان تاريخ پوه چې د هېرودت د تاريخ نه د خپل تاريخ د ليکنې له پاره پېښې انتخابوي دا دوهمه عمليه ده. افغان تاريخ پوهانو له پاره د هېرودت د تاريخ هغه پېښې مهمې دي چې د دوی سره د افغانستان د تاريخ ليکنې په برخه کې مرسته کوي. برسېره پردې د تاريخپوه ذوق، سويه، نړۍ ليد او قضاوت هم اغېز لري. خو تاريخ پوه چې هر ډول پېښې ټاکي بايد واقعي وي او په تېر وخت کې پېښې شوې وي او جعلي نه وي. د واقعي پېښو ټاکنه د تاريخ پوه اساسي فرض دي. تاريخ پوه چې هر ذوق، سويه، نړۍ ليد، ټولنيز دريځ او شخصي قضاوت ولري مکلف دی چې يوازې واقعي پېښې روښانه او بيان کړي او يوازې د واقعيتونو پر بنسټ تعبير او قضاوت وکړي. کاکړ وايي چې تاريخ پوه هغه څوک دی چې تاريخ په کره شېبه سره داسې بيان کړي چې يوازې په واقعيتونو ولاړ وي.

د تاريخ موضوع انسان دی او انسان په بيلو بيلو دورو کې تر بيلو فشارونو لاندې ژوند کوي او تاريخ يې هم ورسره بدلون کوي. نو تاريخ په اصل کې بدلون او پرمختګ دی. کاکړ د تاريخ پوه هرېر فيلد د نظر له مخې وايي چې د تاريخ سرچينه اول د خدايانو او د اتلانو کيسې دي چې د يوه پښت نه بل ته سينه په سينه ورل شوي او د لېږد په بهير کې يې د افسانې د دود بڼه نيولې ده. هرېر فيلد ليکي: «تاريخ ته ډېر نږدې څيز ممکن هغه عنعنې وي چې په دربارونو او په واکمنو کړيو کې او په هر حال په واکمنو او اشرافي کورنيو کې انتقال کوي.»^۵ د همدغه انتقال په بهير کې خلکو ته د تېرو زمانو فکر پيدا شو او هغه وروسته د ليک په پيدايښت سره تثبيت او عمومي شو.

عمومي عقیده ده چې يونانيان لومړني خلک وو چې له پېښو سره يې علمي سلوک وکړ او په دې وپوهېدل چې پېښې يا واقعيتونه بايد د څېړنې اصلي موضوع وي. کاکړ ليکي: «د دغه فکر مخکښ تر څه حده د تاريخ پلار هېرودت او تر ډېره حده تاسيدايډز (Thucydides) و چې لومړني د تاريخ په نامه او وروستي د پولي پونيز جنګ په نامه اثر سره دغه فکر تثبيت کړ.»^۶

په لوېديځې اروپا کې د اتلسې پېړۍ په پای او د نولسمې پېړۍ په بهير کې تاريخي څېړنه کره او دقيقه شوه او انتقادي تاريخ ليکنه واقعي شوه. د دغې تاريخ ليکنې د ښوونځي مخکښ جرمني تاريخ پوه ليوپولد فان رانکې (Leopold Fan Ranke) و. د رانکې په نظر «تاريخ پوه ته حتي ده چې پېښو ته په دغسې حال کې نظر وکړي چې ځان يې د له موجودو

تعصبونو نه پوره ازاد کړی او د تېرې زمانې پېښې هغسې بيان کړي چې په واقع کې پېښې شوي وي.»^۷

د دغسې تاريخ ليکنې له پاره هغې سيانسي شېبې لاره پرانېسته چې د ۱۵۵۰ نه تر ۱۷۰۰ پورې نامتو سيانس پوهانو لکه ن. کوپرنیک، و. کلبېرک، ج. کېلېر، ک. کالېلې، ر. ديکارت، ا. نيوتن او نورو ايستلي او د بشریت د فکري ودې له پاره يې ډېره مرسته وکړه. په پای کې فرد د رنسانس او ريفارمېشن يا مذهبي سمونونو له برکته د عقيدې ازادي تر لاسه کړه او دولت د دين نه جلا شو، فرد د دغسې انتقادي او تجربوي شېبې څښتن شو چې د رېنسيا موندلو ډېره ښه لار کښل کېږي. د دغو ټولو پرمختګونو له برکته فرد اوس په لوېديځې نړۍ کې يوازې د قانون تابع دی او په نورو ساحو کې له هر ډول بنديز نه ازاد دی. په اصل کې د همدغې ازادۍ له برکته ده چې لوېديځوال په حيرانوونکي ډول پرمخ تللي او تاريخ يې وده کړې ده.

خو تاريخ په اسلامي هېوادونو کې چې افغانستان يې يوه برخه ده د لوېديځ غوندې پرمختګ نه دی کړی. د کاکړ په اند لامل يې «شاید دا وي چې فرد دلته تر بنديزونو لاندې ژوند کوي چې يو يې ديني بنديز دی او هغه پر فرد باندې ژوره اغېزه لرلې ده.»^۸ دی وايي چې د دې اغېزې دليلونه دوه دي:

يو خو دا چې عربانو د اسلام نه د مخه تاريخي شعور نه درلود، که څه هم د نسبي شجرو رواج يې ټينګ و دوهم دا چې په اسلامي دوره کې د تاريخ پوه دنده د قران مجيد او د حضرت محمد ص د حديثو مطالعه شوه او د حديثو د تصنيف او ټولولو طريقو د قال قال ياني روايتي لړۍ له مخې په کې رواج ومونده. په دې ډول په دوی کې تاريخ ليکنه د اسلامي دورې د پيل سره د دين په چوکاټ کې محدوده شوه او دغه محدوديت دوام وکړ ځکه چې اسلام هم دين او هم دولت وګڼل شو.

په نهې پېړۍ کې د عربو لومړي تاريخ پوه محمد بن جرير الطبري خپل اثار په همدغې شېبې وليکل او په ځانګړي ډول د «الرسول والملوک» په نوم د هغه عمومي تاريخ او په قران مجيد باندې تبصرې يې د پېړيو پېړيو له پاره سرمشق وګرځېدې.

په څورلسې پېړۍ کې ابن خلدون د طبري په لار روان شو. دی که څه هم تر تاريخ پوه نه زيات د تاريخ فيلسوف و چې په خپل لوی اثر «مقدمه» کې يې د ټولنې او مدنيت په اړه نوي او ژور بصيرتونه وړاندې کړي دي. په دغه اثر کې هغه عرب د مدنيت دښمنان وګڼل. هغه ليکي چې عربان «يو بدوي ملت دی او له بدوي توب او له هغو څيزونو سره چې د دغو څيزونو مسبب کېږي، پوره روږدي شوي دي. بدوي توب د دوی ځانګړتيا او

طبعیت ګرځېدلې دی. دوی ترې نه خوند اخلي ځکه چې مانا یې د واک له مقام نه خپلواکي او مشري ته غاړه نه ایښودل دي. دغسې میلان د مدنیت منافي او د هغه پر ضد دی. «۹ کاکړ د دې له پاره چې افغان تاریخ پوهان د تاریخ لیکنې د میتود سره ښه بلد او د هغه نه په تاریخ لیکنه کې ښه ګټه پورته کړي نو د اي. ايچ. کار اثر چې «تاریخ څه ته وايي؟» نومېږي په پښتو وژباړه چې د کابل پوهنتون له خوا په ۱۹۷۰ کال کې خپور شو. کاکړ د دغه اثر په ژباړې سره خپلو هېواد والو ته لوی خدمت وکړ او هم یې د پښتو په علمي کولو کې مهم ګام واخېست. اوس به د دغه مهم اثر اساسي ټکي لوستونکو ته وړاندې کړم. دا کتاب په اصل کې د اي. ايچ. کار پنځه لېکچرونه دي چې کاکړ ژباړلي او هم یې سریزه ورباندې کښلې ده. زه به لومړی د کاکړ د سریزې او ورپسې به د ښاغلي کار د پنځو لېکچرونو مهم ټکي په ګوته کړم.

کاکړ په خپله سریزه کې وايي چې د هرې ټولنې که تېره وي که اوسنۍ وي د سې پیژندنې له پاره د پلټنې د ځانګړو شېبو پر بنسټ ژوره او پرله پسې مطالعه اړینه ده. لیکوال باید د خپلې لیکنې د موضوع په اړه فلسفي نظر ولري. چېرته چې د نظریاتو د ظهور له پاره کوښښ کېږي هلته نظر او علم ښه پرمخ ځي. د متضادو او بیلو بیلو افکارو له ټکر نه نوي څه راوړي او وړاندې تک دوام کوي. په اروپا کې په عمومي توګه او په انګلستان کې په ځانګړې توګه د تاریخ د ماهیت او فلسفې په اړه پرمختګ شوی دی.

کار وايي چې د ټولنې او فرد وده اوږه پر اوږه وړاندې ځي او یو پر بل اغېز کوي. دی د همدغه فکر په اساس د فرد په دینامیزم او نوښتي او اخلاقي ارادې باور لري او په دې اړه د مارکس دغه نظر تاییدوي چې وايي «تاریخ هېڅ نه کوي، هغه زیاته شتمني په تصرف کې نه لري، هېڅ جنګونه نه کوي. دغه انسان، حقيقي ژوندی انسان دی چې هر څه کوي، تملک کوي او جنګونه کوي.» ۱۰ خو دغه «حقيقي ژوندی انسان» په خپله د ټولنې زیږنده او په ټولنه کې داخل دی.

کاکړ په خپلې سریزې کې د پوهاند کار د جبر او ترقی په مفکورې رڼا اچولې او وايي چې د چانس او جبر په اړه دوه ټکي مهم ښکاري. لومړی دا چې ټولنیزې پېښې ولې پېښېږي؟ یا په نورو ټکو انسان په خپلو کړو کې څومره او څنګه ازادي لري؟ دا پوښتنه یوازې د تاریخ په فلسفې اړه نه لري بلکې د ټول انساني کردار سوال دی او د فلسفې مهمه موضوع جوړوي. پوهاند کار یوازې تر هغې اندازې د جبر په عقیدې دی چې وايي «... هر هغه څه چې پېښېږي علت یا علتونه لري او په بل ډول به پېښې شوي نه وای تر څو چې یې په علت یا علتونو کې یو بل څه پېښ شوي نه وای.» ۱۱

دوهم ټکی په تاريخ پورې اړه لري هغه دا چې مور د تاريخ نه څنگه خبرېږو؟ څنگه چې د تاريخي حقايقو ثبوت او د هغو تعبير کول مور ته د تېر (ماضي) طرح او د حرکت لورې رانښي له دې امله ثبوتونکی او تاريخپوه د تېر په معرفي کولو کې اساسي اهميت لري. کاکړ وايي چې په دې کې شک نه شته چې د تېر وخت (ماضي) په اړه ټول تاريخي حقايق لاس ته راتلی نه شي او هغه څه چې لاس ته راتلی شي د ځانگړي نظر په رڼا کې ثبت شوي دي يانې عندي دي او عيني نه دي.

کاکړ زياتوي چې دغه محدوديت په تاريخ کې هر وخت ليدل کېږي. خو د پورته پوښتنې ځواب د دغه سوال په ځواب کې موندل کېدای شي چې په دغسې حال کې د مورخ دنده څه ده؟ مورخ د حقايقو د تعبير او توجيه نه وړاندې دا دنده لري چې د تاريخ ليکنې د عصري ميتود په رڼا کې هغه سورې ډکې کړي چې د نيمگرو او محدودو حقايقو له امله پيدا شوي دي او دغه کار د نورو ټولنيزو علومو په مرسته وکړي. په دغه حساب يو مورخ بايد:

۱- د تاريخ ليکنې يو منظم او کره شپوه او ميتود تعقيب کړي.

۲- د تاريخ د ماهيت او فلسفې په اړه د يوه منسجم او منطقي نظر خاوند وي.

۳- د نورو بشري او ان تر څه اندازې د ساينسي علومو په اړه لږ تر لږه عمومي مالومات ولري.

۴- ذهين او نوبتي وي او د پايلو ايستلو پوره ځواک ولري.

پوهاند کار د ترقي په عقيدې ټينگ ولاړ دی. دی په دنيايي او انساني چارو کې د عقل د پرله پسې او پراخېدونکي رول په اړه خوشبين دی او د نورو پام هم ورته اړوي. دا يو ستر او بېجوړې بدلون دی چې په دوو لورو يانې د ژورتوب او افق په لور روان دی. د ژورتوب په لور د تحول ممثل مفکران هيگل، مارکس او فرويد دي چې هر يوه يې د عقل برخه ډېره کړې ده. انسان اوس زيار باسي چې د لومړي ځل له پاره هر څه، خپل کره او ټولنه د عقل په رڼا کې په شعوري ډول له سره تنظيم کړي.

افقي بدلون د نړۍ مخ اوښتي بڼه ده. مانا يې د ختيځ په لور د تمدن وړل دي. په ختيځ کې د بشر ډېر گڼ ولسونه پراته دي چې د لوېديځ تخنيک او ساينس په برکت د لومړي ځل له پاره په پراخه کچه په تفکر او سوچ کولو پيل کوي، سياسي شعور په کې پيدا او پياوړی کېږي، په تاريخ کې ننوزي او د نړۍ مخ اړوي. پوهاند کار دغه انتقال د ودې په لور ترقي او پرمختگ گڼي.

کاکړ هيله لري چې د دې کتاب په ژباړې سره به مرسته وکړي چې افغان تاريخ ليکونکي

تاريخي نظريات د نورو مفهومونو په جمله کې طرح او تعميم کړي او دا واضحه کړي چې هغه يوازې په تتبع او د ځانگړو او مستندو حقايقو په بنا په استقرابي ډول قايم کړي. اوس به د پوهاند کار د پنځو لکچرونو مهم ټکي وړاندې شي.

اي. ايچ. کار (E. H. Carr) «تاريخ څه ته وايي؟»

د دې کتاب لومړی موضوع «مورخ او د هغه حقايق» نومېږي. زه دلته يوازې د يو څو تاريخ پوهانو نظرونو په څرگندولو بسنه کوم چې ما ته مهم مالوم شول. پوهاند کار وايي چې تاسې لومړی تاريخ پوه مطالعه کړی او بيا حقايق مطالعه کړی. تاريخ د تعبير مفهوم لري. پوهاند بره کلف (Barracough) وايي «که ښه څير شو، هغه تاريخ چې مور يې لولو، که څه هم په حقايقو مستند دی، حقيقي نه دی، بلکې د منل شويو قضاوتونو يو لړ دی.» ۱۲ د ايټالوي تاريخ پوه کروي (B. Croce) په عقیده ټول تاريخ «معاصر تاريخ» دی. مانا يې دا چې تاريخ په خپل اساس کې د اوس په سترگو او د اوسنيو مسابو په رڼا کې د تېرې زمانې د ليکلو نه جوړ دی. د تاريخپوه دنده دا نه ده چې ثبت وکړي، بلکې ارزيايي يې وکړي، ځکه چې که دی ارزيايي ونه کړي، مور به ځنگه پوه شو چې څه شيان د ثبتولو وړ دي. ۱۳

کالينگ وود (Colling Wood) ليکي چې ټول تاريخ د فکر تاريخ دی او «تاريخ د مورخ په ذهن کې د هغه فکر بيا ژوندي کول دي د کوم تاريخ چې دی لولي.» ۱۴ د بيا تشکيلولو عمليه د حقايقو په غوره کولو او توجيه کولو کې اغېزمنه ده. په حقيقت کې همدغه عمليه ده چې له هغوی نه تاريخي حقايق جوړوي.

بل ټکی دا دی چې د تاريخ ليکل تر هغه شوني نه دي چې تر څو تاريخپوه د هغو خلکو له ذهن سره چې د هغه په اړه ليکل کوي يو ډول تماس پيدا نه کړي.

دریم ټکی دا دی چې مور تېره زمانه د اوس په سترگه ليدلې او د هغې په اړه خپل پوهاوي ته پرې رسېدای شو. تاريخپوه په تېره زمانه پورې نه، بلکې په اوس پورې اړه لري. تاريخپوه بايد تېره زمانه د اوس د پېژندلو له پاره د يوې کيلې په حيث وپېژني او حاکميت پرې وکړي.

په پای کې اي. ايچ. کار وايي چې تاريخ د تاريخپوه او د هغه د حقايقو تر منځ د دوه اړخيز اغېز يوه پرله پسې عمليه او د اوس او تېرې زمانې تر منځ يوه نه تمامېدونکې مکلمه ده.

ټولنه او فرد

د اي ايچ کار بل لېکچر ټولنه او فرد جوړوي. کار وايي چې ټولنه او فرد سره نه بيلېدونکي دي يو بل ته اړين او يو بل بشپړوي. دا چې مور وزيرو چار چاپره نړۍ په مور عمليه پيل کوي. د بيالوژيکي واحدونو نه مو په ټولنيزو واحدونو اړوي. هغه ژبه چې په کومه دی کيرپي فردي ميراث نه، بلکې د هغې ډلې نه چې دی په کې ژوند کوي، يو ټولنيز اکتساب دی. ژبه او چاپريال دواړه د هغه د سچي او فکر په ټاکلو کې رول لري. لومړني نظريات يې له نورو اخيستل کيږي. فرد به د ټولني پرته نه ژبه او نه فکر ولري. د فرد او ټولني وده لاس په لاس پرمخ ځي او يو پر بل اغېز کوي.

متمدن انسان هم د لومړني انسان غوندې د ټولني له خوا هغومره په اغېزمن ډول بڼه او صورت غوره کوي لکه څومره چې ټولنه د هغه له خوا بڼه او صورت غوره کوي. کار (Carr) وايي چې د فرد د لمانځني ايبن د رنسانس نه پيل شوی دی. وروسته دغه ايبن د پانگوالی د اصل او د پروټېستانت د ظهور او د صنعتي انقلاب د پيل او د لیسې فر يا ازاد مارکېټ له نظرياتو سره تړاو وموند. د انسان او مدني افرادو حقونه چې د فرانسې انقلاب اعلام کړل د فرد حقوق وو. د فردي لمانځلو اصل د اولسې پېړۍ د سترې فلسفې ياني د کټي د فلسفې د اصل بنسټ و.

مورلي (J. Morley) د فرديت اصل او د کټي اصل د «انسان د نېکمرغۍ او سوکالی مذهب» وباله. د کار په نظر زياتېدونکی فردي کېدل چې د معاصرې نړۍ له ظهور سره ملگری و د مدنيت په بيلو بيلو مرحلو کې يوه طبيعي عمليه وه. ټولنيز انقلاب نوې ټولنيزې ډلې د ځواک ډگرونو ته هسکې کړې. دغه انقلاب د تل په شان د افرادو په وسيله او د فردي ودې په لور د نويو دريځونو په موندلو سره کار وکړ او څنگه چې د سرمايه داري د اصل په لومړيو پوړونو کې د توليد او وېش واحدونه په زياتې اندازې د واحدو افرادو په لاس کې وو، په ټولنيز نظم کې د نوي ټولنيز نظم ايډيالوژي په فردي نوښت ډېر زور واچوه. خو دا ټوله عمليه يوه ټولنيزه عمليه وه چې په تاريخي ودې کې يې هوه ځانگړې مرحله ښووله. دا مرحله د ټولني په وړاندې د افرادو په پاڅون يا د ټولنيزو بنديزونو نه د فرد په ازادۍ تعبيرېدلی شي.

هغه ايډيالوژي چې دغې گټورې دورې زېږولې ده تر اوسه هم په لوېديځې اروپا او انگرېزي ويونکو هېوادو کې يو برلاسی ځواک دی. کله چې مور د ازادۍ او برابری يا د فردي ازادۍ او ټولنيزې برابری تر منځ خپرېتياوې وينو دا له ياده باسو چې مجرد افکار په خپل

منځ کې سره جگړه نه کوي، دا د افرادو او ټولني تر منځ جگړه نه ده، بلکې د ټولني د افرادو او ډلو تر منځ جگړه ده، داسې چې هره ډله زيار باسي هغه ټولنيز سياستونه پرمخ يوسي چې په گټه يې وي او هغسې ټولنيز سياستونه شنند کړي چې په تاوان يې وي. اوس به وگورو چې تاريخپوهان څومره شخصي افراد او څومره د ټولني محصول دي؟

د کار په نظر تاريخپوه يو فردي انسان دی. د نورو افرادو غوندې دی هم يوه ټولنيزه پېښه ده. دی هم د هغې ټولني چې ورپورې اړه لري محصول دی، هم د هغې شعوري يا غيرشعوري وياند دی. دی په همدې حيث سره د تاريخ د تېر وخت حقايقو ته وړاندې کبري او څېري يې. تاريخپوه د يوه فرد په حيث په ټولنه کې يون کوي. څنگه چې ټولنه په مخ درومي او ورسره ورسره مورخ حرکت کوي، د ليد نوي کنجونه پرله پسې رانکاره کبري. مورخ د تاريخ يوه برخه ده د ټولني هغه برخه چې دی په کې ځان مومي، د تېر وخت په اړه د ده د ليد زاويه ټاکي.

دا بسکاره حقيقت د هغه عصر په اړه هم پوره رښتيني دی چې مورخ يې څېري او د ده د خپل عصر څخه ليري دی. ستر تاريخ هغه وخت ليکل کبري چې د تېرې زمانې په اړه د تاريخپوه ليد او خيال د حاضر و مسلو په ليدونو سره روڼ شي.

اي. ايچ. کار غواړي چې وښيي چې د يوه تاريخپوه اثر د هغې ټولني چې دی په کې ژوند کوي څومره نږدې انعکاس کوي. يوازې پېښې په پرله پسې توگه بدلون نه کوي، بلکې په خپله مورخ هم په بدلون کې دی. يو مورخ د خپلې ټولني محصول دی. پخوا له دې چې د مورخ کتاب مطالعه کړی، د هغه ټولنيز او د تاريخ چاپيريال وڅېړئ په دې چې مورخ هم د يوه فرد په حيث د تاريخ او ټولني محصول دی. د تاريخ زده کړيال بايد دا زده کړي چې مورخ په دغه دوه اړخيزه رڼا کې وپېژني.

ويچوود (C. r. Wedg wood) ليکي «ما ته د افرادو په حيث د انسانانو سلوک نظر د ډلو او طبقاتو سلوک ته ډېر په زړه پورې دی. دا يو کوشښ دی چې څرگنده شي چې دغو کسانو څنگه احساس وکړ او ولې يې په خپل اټکل سره هغسې وکړه لکه څنگه يې چې وکړه.» ۱۵

ويچوود دوي فرضيې سره يوځای کوي. لومړی فرضيه دا ده چې د افرادو په حيث د انسانانو چلند د هغه چلند سره چې يې د ډلو او طبقاتو په حيث کوي، سره بيل دي او مورخ ته اجازه ده چې په خپلې خوښې سره يوه غوره کړي. دوهمه فرضيه دا ده چې د افرادو په حيث د انسانانو د سلوک څېړنه د دوی د کړو د شعوري محرکاتو له مطالعې نه جوړه ده. نهضتونه د لږه کيو له لوري پيل کبري، ټول اغېزمن غورځنگونه يو څو مشران

او ډېر پيروان لري. خو دا دا مانا نه لري چې ډېروالی د هغو د برياليتوب له پاره اساسي نه دی. عددونه په تاريخ کې اهميت لري.

د تاريخ حقيقتونه په واقعيت کې د افرادو په اړه حقيقتونه دي. خو دا حقيقتونه د افرادو د هغو کړو په اړه نه دي چې په مجرد ډول سره اجرا شوي وي، داسې هم دا حقيقتونه د هغو محرکاتو - حقيقي وي يا خيالي په اړه نه دي چې افراد خيال کوي، چې کواکې دوی دا کړنه د هغو له مخې کړې ده. دا حقيقتونه د افرادو د مناسباتو په اړه دي، چې دوی يې په ټولنه کې يو د بله سره لري او همدا راز د هغو ټولنيزو ځواکونو په اړه دي، چې دوی يې په ټولنه کې چې د افرادو له کړو څخه پايلې راوباسي کوم چې زياتره يې له هغو پايو څخه مختلف او يا کله کله د هغو په ضد وي، چې افرادو يې ورته نيت کړی وي.

داسې ټولنه نه شته چې گرد سره متجانسه وي، هره ټولنه د ټولنيزو مخالفتونو يوه صحنه ده او هغه افراد چې د موجودې واکمنۍ په وړاندې پاڅون کوي، هغومره د هغې ټولني مخالفان دي، لکه څومره چې پلويان يې دي. ستر کسان په تاريخ کې خپل رول د خپلو ډېرو پلويانو مرهون کښي. ستر کس تل يا د موجودو ځواکونو نماينده وي او يا د هغو ځواکونو نماينده وي چې د واکمن قوت په ضد له جوړېدو سره مرسته کوي. کرومول او لينن د نويو ځواکونو د تشکيل سره مرسته وکړه او همدغو قوتونو دوی ستروټوب ته ورسول. کار وايي چې «مور په ستر کس کې دغسې يو وتلی کس پېژنو چې هغه هم د تاريخي عمليې محصول او نماينده وي او هم د ټولنيزو قوتونو ممثل او جوړونکی وي کوم چې د نړۍ بڼې او د انسانانو فکر ته بدلون ورکوي.» ۱۶ دی زياتوي چې په دې ډول تاريخ د کليې په دواړو مفهومونو سره يانې هغه پلټنه چې د تاريخپوه له خوا کېږي او د تېرې زمانې هغه حقيقتونه چې دی په کې پلټنه کوي يوه ټولنيزه عمليه ده داسې عمليه چې په هغې کې افراد د ټولنيزو موجوداتو په حيث شامل وي. د مورخ او د هغه د حقيقتونو تر منځ د دوه اړخيز عمل متقابل عمليه کومه چې هغه د تېرې زمانې او اوس تر منځ مکالمه بللې وه د نننۍ او پروني ټولني تر منځ مکالمه ده. خو د گوښه شويو افرادو تر منځ مکلمه نه ده. تاريخ د هغه څه ثبت کوي چې يو عصر يې په بل عصر کې د ثبت کولو لايق مومي. تېره زمانه يوازې د اوس په رڼا کې د پوهېدلو وړ ده او مور يوازې د تېر وخت په رڼا کې په اوس پوره پوهېدلی شو. دا د تاريخ هغه دوه اړخيزه دنده ده چې انسان په دې قادروي چې تېر وخت وپېژني او په اوسنۍ ټولني کې خپل ځواک زيات کړي.

تاريخ، ساينس او اخلاق

د کار بل لېکچر « تاريخ، ساينس او اخلاق » نومېږي. کار وايي چې ډارويني انقلاب په ساينس کې تکامل، په تاريخ کې ترقي تاييده او بشپړه کړله. سره له دې داسې پېښ نه شول چې د تاريخي ميتود استقرايي نظريه وړوي ياني دا چې لومړی خپل حقيقتونه راغونډ کړي، بيا يې توجيه کړي.

د اتلسې پېړۍ په پای کې ساينس هم د نړۍ، د انسان د پوهې او هم د هغه د طبيعي ځانگړتياوو د پوهې په اړه په ډېر برياليتوب سره مرستې کړې وې، دا پوښتنې پيل شوې چې ايا ساينس د ټولې په اړه هم د هغه پوهه زياته کړې ده او که نه؟ د ټولنيزو علومو مفهوم چې په هغو کې تاريخ هم شامل و، د نولسې پېړۍ په دوران کې ورو ورو وده وکړه او هغه ميتود چې په هغه سره ساينس د طبيعت نړۍ څېړله د بشري چارو د څېړلو له پاره هم په کار ولويد.

د دغه عصر په لومړۍ برخې کې د نيوتن د قانون له مخې ټولنه د طبيعت د نړۍ په څېر د يوه مېکانيزم په څېر وگڼله شوه. د ډاروین د انقلاب وروسته ټولنپوهانو ټولنه د يوه عضويت په څېر گڼله. تاريخ د تحول او ودې له عمليې سره علاقه من شو. سوسيالوژي هم بايد د تاريخ په شان د خاص او عمومي له مناسباتو سره سروکار ولري.

اوسني فزيک پوهان مور ته وايي چې هغه څه چې دوی يې پلتي حقيقتونه نه دي، بلکې پېښې دي. په اتلسې او نولسې پېړۍ کې پوهانو داسې گڼله چې د طبيعت قوانين: د نيوتن د حرکت قوانين، د جاذبې قانون، د تکامل قانون او نور لوڅ شوي او په غوڅ ډول تثبيت شوي دي. د يوه ساينسپوه دنده دا ده چې د استقرا په عمليې سره له مشاهده شويو حقيقتونو څخه داسې قانونونه لوڅ او تثبيت کړي. ټولنپوهانو هم په شعوري يا غير شعوري ډول هڅه کوله چې خپلو څېړنو ته د ساينس حيثيت ورکړي. د سياسي اقتصاد په ډگر کې د گريشم (Gresham) په قانون او د بازار په اړه د ادم سميت په قوانينو سره تر نورو رومي وو.

هنري پوانکره (Henri Poincare) فرانسوي رياضي پوه تيزس دا و چې عمومي قضيې چې ساينسپوهانو ايستلې دي فرضيې دي او هغه په دې غرض طرحه شوې دي چې تفکر نور هم پسې قطعي او متشکل کړي او په خپله د بدلون، پلټنې او ترديد تابع دي. په دورو د تاريخ وېشل، کوم حقيقت نه دی، بلکې يوه اړينه فرضيه يا د فکر اله ده، او تر هغو د اعتبار وړ وي چې روڼول کوي او د خپل اعتبار دپاره په بدلون ډډه لگوي.

تاريخ په تعميماتو وده کوي. هغه څه چې مورخ د تاريخي حقيقتونو له ټولونکي نه بيلوي، هغه تعميم دی. تاريخ د بيجورې او عمومي تر منځ له مناسباتو سره سروکار لري. د تعميم بله مسله دا ده چې مور په هغې سره زيار باسو د تاريخ نه زده کړه وکړو او د يو لړ پېښو نه اخیستل شوی درس او عبرت په نورو پېښو پلي کړو. د تېر وخت په رڼا کې د اوس په اړه زده کول د دې مانا لري چې د اوس په رڼا کې د تېر وخت په اړه هم زده کړه کيږي. د تاريخ دنده دا ده چې د تېر او اوس په اړه ژور پوهاوی د هغوی د يو تر بله د مناسباتو له لارې پراخ او ډېر کړي.

درېم ټکی په تاريخ کې د وړاندوينې رول دی. کانت وايي چې د ساينس دنده وړاندوينه ده او د وړاندوينې دنده عمل دی. تاريخپوه اړ وي چې تعميم وکړي او د تعميم په کولو سره د راتلونکي عمل دپاره عمومي لارښوونې تيارې کړي چې سې او گټورې وي.

څلورم ټکی دا دی چې د ټولنيزو علومو او ساينسي علومو تر منځ د بيلتون د کرښې ايستل دي. په ټولنيزو علومو کې فاعل او موضوع دواړه د يوه ډول څخه دي او يو پر بل متقابل اغېز لري. ټولنيز علوم په دې قانع نه دي چې يوازې د طبيعي علومو غوندې خپل طبيعي جوړښت او غبرگونونه وڅېړي، بلکې د انساني کړو په دغسې بڼو کې ننوزي چېرته چې د ده اراده فعاله ده او دا مالومه کړي چې انسانان چې د ده د څېړنې موضوع ده ولې د دغسې عمل کولو له پاره اراده کوي، لکه څنگه به چې کوي. د مشاهد او هغه چا تر منځ چې تر مشاهدې لاندې نيول کيږي دغسې يو نسبت تاسيس کوي چې يوازې تاريخ او ټولنيزو علومو ته ځانگړی وي. تاريخ ټول په نسبيت سره کښل کيږي. کار وايي چې «هغه کسان چې د تاريخ د شرح کولو په بهانه د قاضيانو په حيث ننداره جوړوي، دلته محکومول کوي او هلته تېره کول کوي او دا په دې دليل چې د دوی په فکر دا د تاريخ دفتر دی.... دوی په عمومي او کلي ډول له تاريخي مفهوم نه بې بهرې دي.» ۱۷ دی زياتوي چې روسان، انگرېزان او امريکايان په ستالين، چمبرلين، يا مکارټي باندې د شخصي حملو په کولو سره غواړي چې په خپلو ډله ييزو بدو پرده وغوروي.

تاريخ يو يون دی او يون پرته کول غواړي. همدغه علت دی چې تاريخپوهان هڅه کوي چې خپل اخلاقي قضاوتونه په مقابلسوي الفاظو کې لکه ښه او بد، مترقي او ارتجاعي، بيان کړي. جدي مورخ هغه څوک دی چې د ټولو ارزښتونو تاريخي ځانگړتياوې پېژني. هغه عقيدې چې مور يې پيروي کوي او د قضاوت هغه معيارونه چې مور يې طرح کوي، د تاريخ يوه برخه ده. هغه هغومره د تاريخي پلټنې تابع دی، څومره چې د بشري چلند هر اړخ د پلټنې تابع دی. تاريخپوه د بل هر ساينسپوه غوندې پرله پسې پوښتي چې ولې؟

په تاريخ کې علت ميندنه

د تاريخ مطالعه د علتونو مطالعه ده. ستر متفکر هغه څوک دی چې د نويو شيانو او قرينو په اړه د «ولې؟» پوښتنه کوي.

هرودت د تاريخ پلار د خپل اثر په سرينزي کې خپل مقصد داسې بيان کړ چې هغه د يونانيانو او بربريانو تر منځ د يادونو ساتل، «او په تېره بيا د هر بل شي برسېره، د دوی يو تر بله جنګ کولو د علتونو ښوول دي.» ۱۸ په اتلسمې پېړۍ کې مونټېسکو په خپل اثر «د رومانيانو د ستړتوب علتونه او د هغوی د ظهور او انحطاط په اړه فکرونه» کې وايي «عمومي علتونه اخلاقي يا فزيکي موجود وي چې په هرې پاچايي کې عمل کوي، هسکوي يې، ساتي يې او ړنگوي يې» يا دا چې «هر څه چې پېښېږي د همدغو علتونو تابع دي.» ۱۹ دوه سوه کاله کېږي چې مورخان، د تاريخ فيلوسوفان په دې بوخت دي چې د بشر د تېر مهال تجربې تنظيم کړي او دا کار د هغو تاريخي پېښو د علتونو او قوانينو په موندلو سره سرته رسوي چې دغه پېښې اداره کوي. علتونه او قوانين کله په ميخانيکي، کله په ميتافزيکي، کله په اقتصادي، کله په اروايي نومونو ياد شوي خو دا منلې شوې نظريه ده چې تاريخ د تېر وخت د پېښو د علت او معلول په يوه منظم لړ او تسلسل کې ترتيبول و.

د تاريخ پوه د ميتود لومړی ځانګړتيا دا ده چې دی شايد همغې يوې پېښې ته په ګډه څو علتونه منسوب کړي. د تاريخ پوه د ميتود دوهمه ځانګړتيا دا ده چې کله حقيقي تاريخپوه د خپل تاليف د علتونو د لست سره مخامخ شي اړ کېږي چې په علتونو کې نظم پيدا کړي، د علتونو سلسله مراتب تثبیت کړي، شونې ده چې دا پرېکړه وکړي چې کوم علت د علتونو علت وګڼل شي.

تاريخپوه د دې دپاره چې په تېر مهال پوه شي، په همغه وخت کې د ساينسپوه په شان اړ دی چې د ځوابونو زيات شمېر ساده کړي، يو ځواب د بل ځواب تابع وګرځوي او د پېښو د ځانګړو علتونو په ګډوډۍ کې نظم او اتحاد راوړي.

په تاريخ کې جبر او تصادف:

سر ايسيا برلين (Sir Isaih Berlin) وايي «د مارکس او هيګل «هيسټوريزم» په دې د اعتراض وړ دی چې په علمي ميتود سره د انساني کړنو شرح کول د انسان د ازادې ارادې د انکار مفهوم لري.» ۲۰ جبر- هر څه چې واقع کېږي علت لري او په بل ډول به پېښ شوي نه وای چې تر څو يې په علت يا علتونو کې کوم شي بدلون نه وای موندلی. دا قاعده چې هر

شی یو علت لري، زموږ د وړتیا هغه شرط دی چې په هغه سره په هغو شیانو پوهېږو چې زموږ په چاپېر کې پېښېږي. یو وخت خلکو دا کفر گانه چې د طبیعي پېښو په علتونو کې پلټنې وکړي او د هغو اداره یې په ښکاره د اسماني ارادې په واک کې گڼله. خو کړنې د انسانانو د ارادې زېږنده دي. علت او اخلاقي مسؤلیت بیل ډولونه دي.

د نیوکې هغه بله سرچینه هغه تیوري ده چې وایي تاریخ په عمومي ډول د پېښو یو لړ دی چې ناڅاپي (تصادفي) پېښو ټاکلی دی او یوازې ډېرو ناڅاپي علتونو ته منسوب کېدلی شي. مونتسکو وایي «که د یوې جگړې د تصادفي پایلې په څېر، یو دولت یوه ځانگړي علت تیا کړی وي هلته به یو عمومي علت موجود وي چې د دې سبب شوی دی چې دغه دولت دې په یوې جگړې کې نسکور شي.» ۲۱

په رومي پړاو کې مو ولیدل چې تاریخ د مورخ له خوا د حقیقتونو په غوره کولو او ترتیبولو سره پیل کېږي تر څو چې په تاریخي حقیقتونو بدل شي. د مورخ په شېبه کې د علتونو د میندلو دپاره یو راز ورته عملیه کار کوي. علتونه د تاریخپوه د تاریخي عملې توجیې ټاکي او د هغه توجیه د هغه د علتونو انتخاب او ترکیب معینوي. د علتونو سلسله مراتب، د یوه یا بل یا یوه درجن علتونو نسبي اهمیت د مورخ د توجیې او تعبیر شپږه او جوهر تشکيلوي او دا په تاریخ کې د تصادف د مسلې له پاره یو کيلې برابرېږي. د لینن مړینه هغه تصادف و چې د تاریخ جریان یې واړاوه. له تصادفي پېښو څخه تعمیم جوړېدلی نه شي. ځنګه چې دوی بې جوړې او ځانگړي دي له هغوی څخه عبرتونه او درسونه اخیستل کېدای نه شي او پایلې هم ترې ایستل کېدای نه شي. تعبیر په تاریخ کې تل د ارزښت له قضاوتونو سره تړلی دی او علیت له تعبیر سره تړلی دی. ځنګه چې تېره او اوس زمانه د وخت د اوږدوالي یوه ټاکلې برخه جوړوي، د تېرې او راتلونکې زمانې په اړه علایق او تړاو یو د بل سره تړلی دي. تاریخ د دودونو په نقل کولو سره پیل کېږي او دودونه له تېرې زمانې نه راتلونکې ته د عادتونو او درسونو د انتقال مانا لري. د تېر وخت پېښې د راتلونکو نسلونو د فایده دپاره خوندي کېږي. هالنډي تاریخ پوه هوزینګا (Huizinga) وایي «تاریخي تفکر تل غایي وي.» ۲۲

تاریخ د ترقی په حیث

مورخ د ولې؟ د پوښتنې نه برسېره تل دا پوښتنه هم کوي په کوم لور! کار وایي «تصوف زما په فکر هغه نظر ته وایه شي چې د تاریخ مفهوم د ټولنې نه چېرته بهر ... د الهیاتو یا د اخرت په قلمروونو کې لټوي.» ۲۳ د شکاکیت د فلسفې په نظر تاریخ هېڅ

مفهوم نه لري، يا سم او ناسم مفهومونه په برابر ډول لري. يا دغسې مفهوم لري چې مور يې په خپل واک او اختيار ورته ټاکو.

کار وايي چې د اسيا د پخوانيو دولتونو په څېر، د يونان او روم مدنيت اساساً غېر تاريخي و. هېرودت د تاريخ پلار يوازې يو څو پيروان درلودل. پخواني ليکوالان د تېرې او راتلونکې دواړو په اړه لږ علاقه من وو. تاسيدايډز په دغې عقيدې و، چې پخوا له هغو پېښو څخه چې ده بيان کړلې، هېڅ مهم شې پېښې شوي نه وو، او د دې شونتيا نه شته چې هېڅ مهمه پېښه دې وشي. لوکري تيس (Lucretius) هم د راتلونکې په اړه او هم د تېرې زمانې په اړه بې توپيره و. شعري الهامونو هم د طلايي دور ماضي ته رجوع وکړه.

دا بيا يهودان او وروسته بيا عيسويان وو چې تاريخ ته يې يو پوره نوی توکي ور په برخه کړ. دوی د تاريخ دپاره موخه وټاکله، چې تاريخي عمليه د هغه په لور په حرکت کې وه. دا د تاريخ غايي نظر دی. تاريخ په دغه ډول مفهوم او مقصد وموند. خو دنيايي ځانگړتيا يې وپايلله. د تاريخ وهدف ته رسېدل په اتوماتيک ډول د تاريخ د ختمېدو مانا پيدا کړله. تاريخ په خپله د بشر د وجود په مقابل کې د لوی څښتن دفاع وگرځېد. د روښانتيا دورې د عقل د اصل پيروانو يا د عصري تاريخ ليکنې موسسانو د يهودي- عيسويت غايي نظر وساته، خو غايه يې ورته دنيايي کړله. په دغه ډول دوی وکړای شول چې په خپله د تاريخي عمليې عقلي ځانگړتيا بيا راژوندی کړي. تاريخ د مخکې په سر د انسان د درارې د مقصودو کمال ته ترقي وگرځېده. کيبېن (Gibben) د روښانتيا د دورې تر ټولو ستر تاريخپوه وايي «هغه ښه ايسېدونکې پايله چې د نړۍ هر عصر د انساني نژاد حقيقي شتمني، ښکمرغي، علم او شايد نيکي ډېره کړې، او لا يې ډېره کوي.» ۲۴ د ترقي د لمانځنې ايين هغه وخت خپل هسک ته ورسېد چې د برېتانيا شتمني، ځواک او په ځان باور خپل هسک ته ورسېدل او برتانوي ليکوالان او مورخان يې تر ټولو جدي پلويان شول. اکتون (J. D. Acton) تاريخ «يو مترقي ساينس بللی» دی. کار وايي چې روايت دی چې لومړي نيکولای په يوه فرمان سره د «ترقي» د کلييې کارول منع کړ. په دغو وختو کې د لوېديځې اروپا او ان امريکايي فيلوسوفانو له ډېرې مودې وروسته د هغو سره سر وڅوځاوه. د ترقي فرضيه باطله وکتل شوه.

۱- تاريخ له يوه نسل نه وبل ته د اکتسابي مهارتونو په انتقال سره ترقي ده.

۲- مدنيت چې مور د هغه پيل د خپلې ترقي د پيل ټکی حسابوو د ودې يې پايه عمليه ده. اکتون تاريخ داسې وگاڼه چې د ترقي په حيث د ازادۍ په لور د پېښو جريان وي او د ازادۍ د پوهېدلو په لور د ترقي په حيث د همدغو پېښو ثبت دی. دواړه عمليې اوږه پر اوږه په مخ درومي.

۳- ترقی په سیخه کرښه نه ځي. دا ښکاره ده چې د وړاندې تگ او په شا تگ عصرونه شته دي. هغه ډله چې په یوه عصر کې د مدنیت په مخ بیولو کې ستره ونډه لري، گومان نه کوم چې په بل عصر کې به ورته ونډه ولري. په دې چې دغه ډول به د پخواني عصر په دودونو، گټو، ایډیالوژي گانو کې دومره ډوبه وي چې وبه نه شي کړای د بل عصر د غوښتنو او شرایطو سره ځان ته سمون وکړي.

۴- د ترقی اساسي منځپانگه د تاریخي عمل په تړاو سره، څه شی دی؟ ترقی په تاریخ کې د اکتسابي شتمنیو په انتقال استناد لري. دا شتمني هم مادي ملکیتونه په ځان کې شامل کي او هم هغه وړتیاوې په ځان کې شاملې کي چې په هغو سره د یو چا چاپیریال اړوي، ترې گټه اخلي او پرې حاکمیت کوي. دا دواړه عاملونه یو پر بل اغېز کوي. ۲۵

کار وایي چې مارکس انساني کار ته د ټولې مانۍ د اساس په حیث قایل دی. دغه قاعده هغه وخت د منلو وړ ښکاره کیږي چې «کار» ته په پوره اندازه پراخ مفهوم ورکړل شي. د سرچینو غونډول به هغه وخت گټور ثابت شي چې له ځان سره نه یوازې تخنیکي او ټولنیز علم او تجربه ملکري وي، بلکې په پراخ مفهوم سره د انسان په چاپیریال باندې اضافه شوی حاکمیت ورسره مل وي. فکر نه کوم چې اوس به د یو شمېر کسانو پرته د مادي سرچینو او علمي پوهې په تخنیکي مفهوم سره په چاپیریال باندې د حاکمیت د ترقی د رښتینوالی په اړه شک وکړي. خو دا پوښتنه چې د ټولنیز موجود په حیث د انسان وده د تکنالوژیکي ترقی نه بېرته پاتې شوې نه ده؟ سمه ده؟

تاریخ ډېر گرځوونکي ټکي لرلي دي، چې په هغو کې مشرتابه او نوښت د یوې ډلې، او د نړۍ له یوې برخې نه وبلې ته انتقال کړی دی. د عصري دولت د ظهور دوره، له مدیترانې نه لوېدیځې اروپا ته د ځواک د مرکز انتقال او د فرانسې انقلاب یې ښکاره نمونې دي. «د راتلونکي نسل له پاره د دندې مسولیت د ترقی د مفکورې نېغه پایله ده.» ۲۶ د تاریخ ټول حقیقتونه افایي کېدلی نه شي په دې چې هغه یوازې د هغه اهمیت له امله چې تاریخپوه یې ور په برخه کوي، تاریخي حقیقتونه گرځي. د دې دپاره چې د مهمو او ناڅاپي پېښو تر منځ توپیر وکړي، د اهمیت یوه معیار ته، چې هغه یې د افاقیت معیار هم دی، اړه لري. دی همدغه معیار یوازې خپل هدف ته چې دی یې په نظر کې لري، د اړیکې په لرلو سره میندلی شي. خو دا په لازمي ډول مخ په ودې موخه ده. هیكل په تېره زمانه کې د پرله پسې ودې عملیه وپېژندله خو د هغې شتون ته په راتلونکي کې قایل نه شو او ترې منکر شو. نامیر وایي تاریخپوهان «د ماضي تصور کوي او راتلونکي په یاد لري.» ۲۷ یوازې راتلونکي د تېرې زمانې د تاویل دپاره کیلي برابرولی شي او یوازې په دغه مفهوم سره ده چې مور په تاریخ کې

له نهبایي افاقیت څخه غږېدلی شو. د تاریخ حقانیت او شرح ده چې تېره زمانه په راتلونکې او راتلونکې په تېره زمانه رڼا اچوي.

د یوه مورخ افاقي توب یوازې په دې کې نه دی چې دی خپل حقیقتونه سم تهیه کوي، بلکې په دې کې دی چې دی د سمو حقیقتونو انتخاب کوي. کار وایي کله چې مورخ یو مورخ ته افاقي وایو زما په نظر پوره دوه شیان کوو. لومړی دا چې مورخ وایو چې دی داسې وړتیا لري چې په تاریخ او ټولنې کې د خپل محدود لید او نظر له دریځ نه پورته خپري. د پوره افاقیت ناشونتوب وپېژني. دوهم دا چې مورخ داسې وړتیا لري چې د راتلونکې او تېرې زمانې په اړه یې خپل لید او نظر ژور وي.

پراخېدونکې غاړې

کار وایي چې تاریخ مې د یوې پرله پسې خوځېدونکې عملې په حیث چې مورخ ورسره خوځېږي ښوولی و. د شلې پېړۍ په نیمايي کې بدلون د هغه بل بدلون نه ډېر ژور او پراخ دی کوم چې زموږ په نړۍ کې وروسته له هغې چې د منځنیو پېړیو نړۍ ښکته شوه او په پنځلسې پېړۍ کې د معاصرې نړۍ تادا و کېښودل شو، پېښ شوی دی. بدلون یا تحول په پای کې د علمي موندنو او اختراعاتو زېږنده دی، داسې چې د پلي کېدو ډگر یې لا هم پراخ دی. ټولنیز انقلاب د دغه بدلون خورا څرګند اړخ دی. دا انقلاب د هغه انقلاب سره د پرتلې وړ دی چې په ۱۵مې او ۱۶مې پېړیو کې پېښ شو او دغسې نوې طبقه یې منځ ته راوستله چې لومړی په مالي او سوداګري او وروسته په صنعت بنا وه. دغه تحول دوه اړخونه لري چې یو یې د ژورتیا بدلون او بل یې د جغرافیایي پراختیا بدلون بولم.

تاریخ هغه وخت پیل کېږي چې انسانان یو لړ ځانګړو پېښو په اساس فکر کوي چې انسانان په هغو کې په شعوري ډول داخل وي او پرې اغېز کولی شي. برکهاردت (Burckhardt) وایي چې تاریخ «له طبیعت سره پرېکون دی چې علت یې د شعور وپښتیا ده» ۲۸ تاریخ د انسان د اوږدې مبارزې داستان دی. دغه داستان د ده د عقل په تمرین سره لاسته راځي او موخه یې دا وي چې انسان خپل چاپېریال وپېژني او عمل پرې اجرا کړي. خو اوس انسان په دې لټه کې دی چې نه یوازې خپل چاپېریال، بلکې خپل ځان هم وپېژني او په هغه عمل اجرا کړي. اوسنی عصر د تاریخي ذهنیت له مخې تر هر بل عصر نه ډېر ویني او پیاوړی دی. عصري انسان له خپل ځان نه خبر او په دغه ډول له تاریخ نه خبر دی. دی په مینه او شوق سره هغه شفق ته بېرته نظر کوي له کوم نه چې دی راوتلی دی، هیله او اسره یې ورنه دا وي چې د هغه نړۍ رڼا به هغه ترورمي روښانه کړي په کومو کې

چې دی خوځېږي. تېر وخت، اوس او راتلونکې ټول د تاريخ په بې پايه کړۍ سره تړلي دي. د عصري نړۍ بدلون يا تحول چې د خپل ځان په اړه د انسان د شعور له ودې نه جوړ دی، شايد له دکارت (De Cart) نه پيل شوی وي. ده د لومړي ځل له پاره د انسان مقام د يوه داسې موجود په حيث ثبت کړ چې نه يوازې سوچ کولی شي، بلکې د خپل سوچ په اړه هم سوچ کولی شي. دی د مشاهدې د کولو په وخت کې خپل ځان هم مشاهده کولی شي. په دې ډول انسان په عين وخت کې د تفکر او مشاهدې فاعل او موضوع هم کېدلی شي. بيا روسو (Rousseau) د انسان د ځان پېژندنې او د ځان د خپرېدو په اړه د ژورنيا نوي تل پراښست او د طبيعت د نړۍ او دوديز مدنيت په اړه يې انسان ته يو نوی ليد وښولو. د اکټن او هيگل په نظر ازادې او عقل هېڅکله سره بيل نه وو. لينکن (Linken) وايي «۸۷ کاله وړاندې زموږ پلرونو په دغې وچې کې يو ملت جوړ کړ چې په ازادۍ بنا او په دغه اصل گروهېدلی و چې ټول انسانان برابر شته شوي دي.» ۲۹

په تاريخ کې ترقي، د ازادۍ د مفکورې په لور د ودې مانا پيدا کړله. مارکس وايي فيلوسوفانو نړۍ يوازې په مختلف ډول تعبير کړې ده خو مطلب دا دی چې بدلون ورته ورکړل شي. نور د عقل لومړۍ دنده دا نه وه چې يوازې هغه افراطي قانونونه درک کړي، کوم چې په ټولنه کې د انسان کره تنظيموي، بلکې دنده يې دا شوله چې ټولنه او افراد په شعوري عمل سره له سره تنظيم شي.

هغه بل ستر متفکر چې زموږ په عصر کې يې عقل ته يو نوی بعد ورزيات کړ فرويد (S. Freud) دی. هغه څه چې فرويد وکړل دا و چې زموږ د پوهې او پېژندنې پولې يې ارتې کړې او هغه د دغې لارې وکړای شول چې د انساني کړو غير شعوري رېښې او وېلې د عقلي او شعوري پلټنې دپاره رابرسېره کړي. دا په واقعيت کې د عقل د ساحې پراخول او د انساني قوت ډېرول و چې ځان وپېژني او اداره يې کړي او په دغه ډول چاپېريال هم وپېژني او تنظيم يې کړي.

د مارکس او فرويد د ليکنو وروسته مورخ څه پلمه نه لري چې خپل ځان د کوم کوبڼه شوي فرد په حيث وکني چې د ټولني او تاريخ نه د باندې واقع وي. دا د ځان نه د خپرېدو وخت دی. کار وايي «وهغه جهان ته چې ما اوسنی جهان نومولی دی تېرېدنه ياني نويو ساحو ته د عقل د ځواک او دندې پراخوالی لا تر اوسه بشپړ شوی نه دی. دا د انقلابي تحول يوه برخه ده چې شلمه پېړۍ د هغه نه تېرېږي.» ۳۰

د کار په اند په شعوري زيار سره د ټولنيزو سمونونو په شونتيا عقیده لرل د اروپايي ذهن مسلط جريان دی. انسان د خپل اقتصادي موخې د تنظيم او اداره کولو وړتيا لري

او هغه په شعوري عمل سره اجرا کوي. د ده په فکر د پرمختګ تمثيل کوي. دغه پرمختګ په انساني چارو کې د عقل پلي کول او د ځان او چاپېريال د پېژندلو او په هغه د حاکميت کولو په غرض د انسان زياته شوې وړتيا ښيي. مهمه ليا دا ده چې د عقل په شعوري تمرين سره انسان په دې پيل کړی دی چې نه يوازې خپل چاپېريال، بلکې خپل ځان ته هم بدلون ورکړي.

کار وايي چې د انساني ځواک دغه هسک شوی شعور چې د عقلي عمليو له لارې د خپلو ټولنيزو، اقتصادي او سياسي چارو تنظيم کول اصلاح کړي، د ده په اند د شلې پېړۍ د انقلاب يو مهم اړخ دی. د صنعتي انقلاب ټوليزه او ژوره ټولنيزه پايله شايد دا شوې وي چې د هغو کسانو شمېر يې په مترقي ډول ډېر کړی دی چې دوی سوچ کول زده کوي او عقل په کار اچوي. د دغه انقلاب دوهم اړخ د نړۍ بدله شوې بڼه ده.

دوهم څپرکی

کاکړ او د وطن تاريخ ليکنه

تاريخ په اسلامي افغانستان کې تر زياتې اندازې انساني پېښو ته ځانگړی شوی دی. د بېلگې په توگه د سيفي هروي «تاريخنامه هرات» دی چې د ابن خلدون په وخت کې يې په هرات کې د کرتانو د واکمنۍ په وخت کې ليکلې دی. د کاکړ په وينا د سيفي د اثر کره توب يو لامل دا دی چې دی هم د طبري او ابن خلدون غوندې پوه او ليکوال و. دوهم دا چې سيفي دا اثر په زياته اندازه د رسمي پاڼو او سندونو له مخې کښل شوی چې ويل کيږي د غياث الدين کرت په دستور ورته ورکړل شوي وو. کاکړ زياتوي چې سيفي په دې ډول لکه رانکې (Ranke) چې پنځه پېړۍ وروسته د ارشيفي پاڼو په استفادې ټينگار کړی، د عصري تاريخ يو اساسي شرط پر ځای کړی دی. سيفي همدارنگه له نورو تاريخي اثارو نه په انتقادي ډول گټه پورته کړې ده. په دې ترتيب د سيفي په وخت کې په هرات کې تاريخ ليکنه لوړې سوېې ته رسېدلې وه.

د معاصر افغانستان تاريخ پوهان د خپلو تېرو تاريخ پوهانو په لاره لاړل. خو په دې نوې دوره کې داسې مهم اووښتونونه منځ ته راغلل چې په تاريخ ليکنې باندې يې ژور اغېز شيندلی دی. اساسي بدلون د احمدشاه بابا په مشرۍ د اباسين او امو تر منځ د لوی افغانستان منځ ته راتگ و. په دغه هېواد کې افغان خپلواک دولت تنظيم شو، دراني امپراتوري په کې تاسيس او افغانان د خپلواک ژوند څښتنان شول. د دغې نوې دورې په پيل سره د افغانانو هويت سيمه والو او نړيوالو ته وپېژندل شو. بله موضوع چې په افغانانو يې ژوره اغېزه وکړه په نولسمې پېړۍ کې د انگرېزانو د ځواک سره درې ځلې جگړه او بيا د شلمې پېړۍ په پای کې د روسانو سره د افغانانو مقابله وه. د انگرېزي پوځي ځواک سره د ننه په افغانستان کې د افغانانو لومړۍ مقابله چې د دوی په پوره بري تمامه شوه، په افغانانو کې د وطنپالنې، اسلام پالنې او د خپلواکۍ روحيه پياوړې کړه. که څه هم تر هغه د مخه د افغانانو مذهبي روحيه نرمه او د نورو دينونو په وړاندې په زغم ولاړه وه. د افغان- انگليس په دوهمې جگړې او بيا د سرحدي پښتنو په غزاگانو سره دا حساسيت نور هم غښتلی شو. دغو جگړو د افغانانو ملي پېوستون د پښتنو او تاجکو په اتحاد سره

ټينګ کړ «خو که د دوی په يو موټي کېدلو سره افغان نېشنلزم هسک شو باندینیو ته دا موقع برابره شوه چې د هغه په تخريب زور واچوي. دغه حال د دواړو خواوو په تاريخونو کې انعکاس وکړ.» ۳۱

انګرېزانو د نولسمې پېړۍ په بهير کې د افغانستان د جغرافيو، تاريخي، ټولنيز، اقتصادي او قومي وضعې په اړه دومره ډېرې ليکنې کړې دي چې باندینیو په بله هېڅ پېړۍ کې نه دي کړې. د مقدونې سکندر د وخت نه وروسته دا دوهم ځل و چې افغانستان د اروپا د ليکوالو د پاملرنې وړ هېواد شو. د سکندر د يرغل نه وروسته هم اروپايي تاريخ پوهانو په لرغوني افغانستان باندې کتابونه وليکل په تېره بيا چې په افغانستان کې د باختريانو او يونيانو په ګډ کېدلو سره يو نوی مدنيت هسک شو چې اريانا په هغه سره د زرو هېوادونو ښار وبلل شو چې بيا د نولسمې پېړۍ د پوهانو له خوا «باختر د لرغونې نړۍ تر ټولو ښه هېواد وګڼل شو.» ۳۲ خو په نولسمې پېړۍ کې د افغان انګليس پوځي مخامختيا نه د مخه د افغانستان په اړه د انګرېزي ليکوالو اثار افياقي او مالوماتي وو چې «د کابل سلطنت بيان» په نامه د الفنسټون اثر په افياقي توب او کره توب کې جوړه نه لري. «د افغان جنګ» په نامه د جان کي اثر سره له دې چې د افغان- انګليس د جګړې نه وروسته ليکل شوی په افياقي توب کې د کابل سلطنت د بيان سره سيالي کوي. خو د نورو انګرېزي ليکوالو اثار چې بيخي ډېر دي هغسې نه دي.

د افغانستان د تاريخ په اړه بله لويه سرچينه د برتانوي هند هغه ناخپړې شوې ارشيفې پانې دي چې هغه د ډيلي په ملي ارشيف او هم په لندن کې د بریتانيې په کتابتون کې خوندي دي. د تزارې روسې، د پخواني شوروي اتحاد او اوسنې روسې ليکوالو ليکنې او ارشيفې پانې او همدارنګه د امريکا په متحده ايالاتو او نورو اروپايي هېوادونو او د نړۍ په ګوټ ګوټ کې هم د افغانستان په اړه ليکنې او ارشيفې پانې کېدای شي چې د افغانستان دخلکو د ژوند په بيلو اړخونو باندې د ژورو ليکنو له پاره پوره مرسته وکړي.

د کاکړ په وينا د سدوزيو د واکمنۍ په اړه د هغه وخت افغانانو د يادونې وړ اثر نه دي ليکلي. تاريخ احمدشاهي چې د ستر احمدشاه واکمنۍ ته ځانګړی شوی محمود الحسيني کښلی دی چې د پارسي خراسان له جام نه و. د شجاع الملک واقعات شاه شجاع اثر د هغه د خپلې واکمنۍ پېښې بيانوي، خو د دغه اثر دريمه برخه د محمد حسين هراتي په قلم ليکل شوې چې دغه برخه د تاريخ پوه احمد علي کهزاد په نظر شايد د انګليسانو په فرمايش ليکل شوې وي. داسې هم انګرېزي مقاماتو وروسته هم د افغانانو تاريخ يا جعل کړی يا مسخ کړی چې غټ مثالونه يې د تاج التواريخ دوهم ټوک او «له داړه ماری نه

پاچايي پورې زما ژوند» د امير حبيب الله کلاکاني اثر دي.

کاکړ وايي چې تاج التواريخ امير عبدالرحمن ته منسوب، خو تنظيموونکی او انگرېزي کونکی يې د هغه سرمنشي سلطان محمد و. لومړی ټوک يې د افغانستان د داخلي انکشافاتو په اړه او دوهم ټوک يې په ډېره اندازه د باندنيو اړيکو او په ځانگړې توگه د سرحدونو د ټاکل کېدلو په اړه دی. د کتاب فارسي ژباړه کې نه د ژباړونکي نوم، نه د خپرونکي نوم او نه هم د سلطان محمد نوم ياد شوی دی. په دوهم ټوک کې دومره ويل شوي چې «بفرمايش عاليجناب مجدت انتساب شيخ الهبيخش و محمد جلال الدين صاحبان لاهوريسلمهما الله تعالی تاجران کتب بازار کشمير لاهور بزبور طبع اراسته کرديد.» ۳۳ دغه دوه تاجران څوک وو، مالومه نه ده. دا هم مالومه نه ده چې دوی دغه ژباړه په خپل نوښت يا د چا يا مقام په سپارښتنه او لگښت چاپ کړې ده. دغو سوداگرو څه علاقه درلوده چې دغه کتاب په ډېر شمېر چاپ کړي، په دغومره ډېر شمېر چې په افغانستان کې تر دې نږدې وخت پورې په دوکانونو کې ليدل کېده. دا خو به هر چا ته مالومه نه وي چې هغه په يوه وخت په لاهور، بمبيي او په مشهد کې بازارو ته عرضه شوی و.

کاکړ ليکي: «د تاج التواريخ د جعلتوب کيسه دا ده، چې منشي سلطان محمد د هغه انگرېزي لومړی متن، په لندن کې، جان ميري خپروونکي موسسې ته د چاپ له پاره وسپاره او په خپله پنجاب ته ستون شو، چې اصلي استوگنځی يې و. په لندن کې حکومتي برتانويانو په دغه وخت کې خپل خاص مطالب د هغه په دوهم ټوک کې ځای کړل. ما دغه جعليتوب په لندن کې، د ډاکټري شهادتنامې ته د څېړنې په مهال کشف کړ. دغه کشف هغه وخت ښه يقيني شو، چې ما د برتانوي هند حکومت د پوځ اعلى قوماندان، مشهور لارډ کچنر، هغه راپور وموند، چې په کال ۱۹۰۳ کې يې ويسرای لارډ کرزن ته استولی او په کې ويلي و چې «د هغه وروستی برخه په انگلستان کې جعل شوې ده.» د «وروستی برخه» نه د هغه مطلب د امير عبدالرحمن خان زما ژوند دوهم ټوک دی، چې د تاج التواريخ دوهم ټوک کېږي. په دې اړه ما نور تاييدي نوتونه وموندل، چې هغه ټول مې په خپل تبسس کې راوړي.» ۳۴ دا تبسس «د امير عبدالرحمن په واکمني کې د افغانستان ټولنه او حکومت» نومېږي چې په ۱۹۷۹ کال کې د امريکې د تڪساس دولتي پوهنتون خپور کړ. د امير حبيب الله کلاکاني اثر «له داړه مارۍ نه پاچايي پورې زما ژوند» د جعلتوب په اړه به وروسته مالومات وړاندې شي.

د افغانستان تاريخ ليکونکو د افغانستان تاريخ په اړه د نولسمې پېړۍ په دوهمه

نيمایي کې يو څو اثر کښلي دي لکه د ميرزا عظامحمد «نواى معارک»، د ميرزا يعقوب علي خافي «پادشاهان متاخر افغانستان»، د نورمحمد نوري «گلشن امارت» او د سلطان محمد «تاريخ سلطاني» دي. دغه تاريخونه په عمومي ډول سياسي پېښې بيانوي خو په تاييد کې يې ايتونه، حديثونه، نظمونه او لنډې ويناوې نه راوړي يا يې ډېرې کمې راوړي. سلطان محمد دراني، د تاريخ پوه سيږي په شان، خپل ماخذونه ښوولي چې هغه د واقعات شاه شجاع او د فرشته تاريخ په گډون چاپ شوي اثار دي. د هغه بله سرچينه هغه دراني لويان او پوهان دي چې د حکومتي لورو مقامونو په لرلو سره د مالوماتو خاوندان وو. ده د خپلو سرچينو نه په انتقادي ډول کار اخېستی دی. سلطاني تاريخ په هندوستان کې د لوديانو او سوريانو، په پارس کې د هوتکو او په افغانستان کې د درانيو واکمنۍ او د امير دوست محمد خان واکمني تر پايه چې په ۱۸۶۳ کال کې د هرات په نيولو سره توتې شوی افغانستان د پېښور پرته يو موټی کړ بيانوي. سلطاني تاريخ د اوسني افغانستان د لومړي عمومي تاريخ په توگه د تاريخ د معيارونو پر بنسټ په انتقادي ډول ليکل شوی او د سراج التواريخ ليکونکي فيض محمد به لومړی افغان تاريخپوه وي چې د هغه نه يې په پراخ ډول گټه پورته کړې ده.

په شلمې پېړۍ کې افغان تاريخ ليکونکو ډېر اثرونه کښلي او تاريخ ليکنې ښه وده وکړه او د انساني پېښو بيان ته ځانگړې شوه. کاکړ وايي چې دغه پېړۍ د تاريخ ليکنې له مخې څو مرحلې لري. يوه يې هغه ده چې حکومت د اساسي قانون په نشتوالي سره د واکمن په فکر چلېده او افغانان د مدني حقونو نه بې برخې وو. سره له دې د سراج التواريخ غوندې تاريخ او د سراج الاخبار په شان اخبار په کې راووتل. د سراج التواريخ ليکونکی فيض محمد دی چې د غزني د ناهور خواجه محمد هزاره و او د نامتو عالم محمدسرور اسحق زي په سپارښتنه د سردار حبيب الله په دربار کې د محرر په توگه ومنل شو. نوموړی د امير حبيب الله خان له خوا د سراج التواريخ په ليکلو گومارل شوی او لومړی او دوهم توک يې د نورو تاريخونو له مخې او دريم توک يې د رسمي سندونو پر بنسټ ليکلی دی. دا هم ويل کېږي چې فيض محمد د سراج التواريخ څلورم توک د امير حبيب الله واکمنۍ ته وقف کړی، خو دغه اثر تر اوسه ليدل شوی نه دی.

کاکړ وايي چې فيض محمد يو رښتینی او محتاط تاريخ پوه و. ده د امير عبدالرحمن خان زېره او وپروونکي چلندونه په نرمو او مستعارو کليمو کې بيان کړي دي. د هزاره جات جگړه يې په اوږده ډول بيان کړې ده. د سراج التواريخ دريم توک چې رسمي تاريخ دی برسېره پردې چې نيمگړی دی، انتخابي دی. هغه پېښې چې امير عبدالرحمن په کې ښه نه

بنسکاري حذف شوې يا په لنډ ډول بيان شوې دي. خو بيا نورې پېښې په کې په اوږده ډول بيان شوې دي. د باندنيو اړيکو په اړه لږ مالومات ورکوي خو کورنۍ پېښې بيا په اوږده ډول بيانوي. کاکړ دا هم زياتوي چې نوموړی د پاچايي لور سياست په اړه چوپ دی او پر ځای يې پېښې هغسې بيان کړي چې څنگه د عمل په ډگر کې پېښې شوې وي. دا شايد د سراج التواريخ ډېره غټه ځانگړتيا وي چې لوستونکو ته د دې وس ورکوي چې له پېښو نه منطقي طرحې جوړې کړي او عمومي حکمونه وکړي نه دا چې لور سياستونه په سندونو کې ولولي.

کاکړ وايي چې په شلمه پېړۍ کې د تاريخ ليکني بله مرحله د پاچا محمد نادر په واکمن کېدو سره پيل کېږي او د ثور په کودتا سره پای ته رسېږي. په دغې دورې کې چې په عمومي ډول امنيت خوندي و، هڅه دا وه چې د افغانانو هويت د يوه ملت په توگه تثبیت شي. د دغې موخې د پلي کولو له پاره د تاريخ ټولنه جوړه شوه او د اريانا او افغانستان په نومونو مجلې د تاريخي ليکنو له پاره ځانگړې شوې. ارکيالوجيکي کندنې د فرانسويانو په مرسته پيل شوې، د کابل په پوهنتون کې د تاريخ څانگه پرانېستل شوه او د پوهنې په ودې او د تعليمي منځنۍ طبقې په هسکېدو سره د تاريخ مينه وال او لوستونکي ډېر شول. برسېره پردې د قانوني پاچايي په وخت کې د ملي ارشيف مرکز هم په کابل کې پرانېستل شو. د دوهمې نړيوالې جگړې او په ځانگړې توگه د ملگرو ملتو د جوړېدو وروسته د حکومت زير چلند يو څه نرم شو او په وطن په تېره په کابل کې د بيان ازادي او ډموکراسۍ تر څه اندازې لار وموندله. په دغه وخت کې ځينو کسانو لکه خليل الله خليلي، نجيب الله توروايانا، سيد قاسم رښتيا، محمد عثمان صديقي، مير محمد صديق فرهنگ او نورو يو وخت او بل وخت د تاريخ ليکلو شوق وکړ. خو په دوی کې يوازې عزيزالدين وکيلي پوپلزي د سدوزي واکمنو په اړه په عمومي توگه د دولتي فرمانونو او سندونو له مخې پڼ کتابونه وليکل.

خو درې تنه وتلي تاريخ پوهان چې خپل ټول بالغ عمر يې تاريخ ليکني ته ځانگړی کړ او په خپلو اثارو يې د افغانستان تاريخ وسپړلو او د افغانانو هويت يې په تاريخ کې تثبیت کړ احمد علي کهزاد، عبدالحی حبيبي او مير غلام محمد غبار دي. د دوی اساسي اثارونه عمومي تاريخونه دي لکه د کهزاد د پخواني افغانستان تاريخ، د حبيبي تاريخ مختصر افغانستان او د غبار افغانستان در مسير تاريخ.

د کاکړ په وينا د دغو درو وتليو تاريخ پوهانو غټه ځانگړتيا دا ده چې د دوی زياتره اثارونه د دغسو موضوع گانو په اړه دي چې د هغو په اړه تر دوی د مخه افغانانو هېڅ نه

وو ليکلي. کاکړ ليکي: «په ټوليز ډول دوی د افغانستان هغه تاريخپوهان دي چې په خپلو اثارونو سره يې د لومړي ځل له پاره د افغانستان اوږد تاريخ او د تاريخ په اوږدو کې د افغانانو هويت د يوه ولس په توگه تثبیت او بيان کړی او په دغه ډول يې خپلو وطنوالو ته تلپاتې فرهنگي خدمت کړی دی. دوی په خپلو دغو فرهنگي خدمتونو سره دغه استحقاق خپل کړی چې د افغانستان فرهنگي موسسې او حتی ځايونه د دوی په نومونو ياد شي.» ۳۵

دوی خپلې ليکې په خپل فکر کړې او د دوی په وخت کې په تاريخ ليکې باندې د مذهب دوديز اغېز هم لږ شوی او دوی اړ نه وو چې خپلې ليکې د پخوانيو تاريخپوهانو غوندې په مذهبي حکمونو او نظمونو سره تاييد کړي.

خو کاکړ د تاريخ ليکې د علمي ميتود په نظر کې نيولو سره د دغو درو وتليو تاريخ پوهانو په ليکنو کې ځينو نيمکړتياوو ته اشاره کوي چې د هغه وخت د شرايطو زيربنده وې. د دوی د ليکې سرچينې خپاره شوي کتابونه او يو څه لاسي ليکې او فرمانونه دي. په داسې حال کې چې تاريخي ليکې بايد ناخپرې شوې پانې او حکومتي سندونه وي. په دې ترتيب دوی خپل اثارونه د اصلي سرچينو له مخې نه دي کينلي نو ځکه ژور نه دي. برسېره پردې د دوی څېړنيزې اسانتياوې لږې وې. د دوی زده کړې د هغه وخت د شرايطو په نظر کې نيولو سره اکاډيمیکې نه وې. د دوی نه يوازې احمد علي کهزاد بکلوريا پاس و. دوی هر يو په شخصي کونښتونو ځانونه رسولي وو. دوی د خپلو سرچينو نه «په نېغه اخېستنه نه ده کړې او د خپلو سرچينو معالومات يا واقعيتونه يې په خپله ژبه او زياتره په ازاد ډول افاده کړي چې په دې ډول يې خپل اثر هم په کې دخپل کړی او د خپلو ليکنو دقيق توب او افافي توب [يې] زيانمن کړی دی.» ۳۶

کاکړ د ځينو تاريخ پوهانو او ليکوالو اثارو ته کتنه کړې چې دلته يې د مير غلام محمد غبار «افغانستان در مسير تاريخ» او محمد صديق فرهنگ «افغانستان در پنج قرن گذشته» څخه يادونه کيږي

کاکړ او د غبار «افغانستان در مسير تاريخ»

پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ د مير غلام محمد غبار په کتاب افغانستان در مسير تاريخ په اړه خپل نظر داسې وړاندې کوي:

غبار شل کلن نه و چې د امير حبيب الله خان د واکمنۍ د پای په کلونو کې په سياسي فعاليت لاس پورې کړ او د «جوانان افغان» غړی شو چې د غبار په وينا «مرام تندتر و

جنبه دست چپی داشت». غبار د پاچا امان الله خان په وخت کې په مسکو، پاريس او د ننه په هېواد کې په هرات، بدخشان او جبل السراج کې اداري او اخباري چارې ترسره کړې او په ۱۹۲۹ کال کې د پغمان په لويه جرگه کې د غړي په توگه گډون وکړ. د پاچا محمدنادر په وخت کې په برلين کې د افغانستان د سفارت غړی و. يو کال وروسته يې خان گوښه کړ او په کابل کې د ادبي انجمن غړی شو. په ۱۹۳۳ کال کې د هغه ترور په اړوند چې محمد عظيم نومي افغان د انگليس په سفارت کې وکړ، غبار دوه کاله بندي او وروسته د اوو کلونو په مودې کې اول د فراه په بالابلوک د گنج اباد په کلي کې او بيا د کندهار په بنار کې د خپلې کورنۍ سره پرار شو. په دې توگه غبار د محمد هاشم خان په صدراعظمۍ کې په کراوونو واوښت او د ژوند تر پايه پورې له حکومت سره مخالف پاتې شو. غبار اتيا کاله ژوند وکړ، عصري منظمه زده کړه يې نه ده کړې، که څه هم په کابل کې زېږېدلی و. نوموړي د خپلې ښې وړتيا او استعداد له امله په شخصي زده کړې سره په تېره په تاريخ کې ځان رسولی و. کورنۍ ژبه يې فارسي وه او په عربي هم پوهېده خو پښتو يې نه وه زده کړې که څه هم اوه کاله يې په فراه او کندهار کې تېر کړي و. کاکړ دا هم وايي چې غبار د خپل فکر، خپل پرنسيب او خپل وجدان له مخې د خطرونو په منلو سره د خلکو د ازادۍ په پلوي او د زورواکو په وړاندې مبارزه کړې ده.

غبار په ملي سياست کې د صدراعظم شاه محمود خان په وخت کې په درو برخو کې ښه وځلېد. لومړی دا چې نوموړی په ملي شورا کې د نورو ډېرو همفکره وکيلانو سره په حکومت انتقادي شو. دوهم دا چې دی د وطن په نامه سياسي گوند کې هم ښه وځلېد، چې دی يې مشر او نور بنسټ اېښودونکي او غړي يې زياتره د کابل تعليم کړي او لوړپوړي حکومتي مامورين او پېژندل شوي کسان وو. د مرام مهم ټکي يې د ډموکراسۍ عمومي کول، د درې گونو قواوو بيلتون او پلان شوی اقتصاد ښودل شوی و. دريم دا چې د «وطن» په نامه د خپل گوند په جريده کې وځلېد، چې په خپلو انتقادي او پخو ليکنو سره يې له نورو جريدو لکه ولس، انکار او ندای خلق سره په گډه د کابل سياسي فضا توده کړې وه.

خو څنگه چې حکومت د وېشو ځلميانو گوند، د وطن گوند او نور گوندونه تر خپل اغېز لاندې راوستلی نه شول نو يې د هغوی د فعاليتونو د محدودولو له پاره د ملي شورا د راتلونکې اتني دورې په ټاکنو باندې پخوا تر پخوا بنديزونه ولکول. د دغو بنديزونو په وړاندې په کابل کې مظاهري وشوې او مظاهره کوونکو ارگ ته نږدې د پاچا محمد ظاهر نه د بنديزونو لغوه کول وغوښتل. حکومت د هغو په خپلو پيل وکړ او غبار هم د يو

شمېر نور کسانو په گډون بندي شو. غبار دا ځل څلور کاله په بند کې پاتې شو. د بند نه د ازادېدلو وروسته د صدر اعظم داود بلنه چې د حکومت سره همکاري وکړي ونه منله. غبار د خلق ډموکراتيک گوند د جوړېدو نه د مخه په دوو غونډو کې گډون وکړ او بيا يې د کارمل په دسيسې سره پرېښود. په دغه وخت کې نږدې اويا کلن غبار چې د بند، پړار او ناکامو سياسي فعاليتونو په پايله کې ستړی شوی، خواشینی شوی او ان ناهیلې شوی، په خپل کور کې شعله يانو يا ماويستانو ته د مارکسيزم درس ورکاوه او هم يې تاريخي ليکنو ته زور ورکړ چې پايله يې «افغانستان در مسير تاريخ» په نامه دوه ټوکونه شول.

غبار وايي چې د ده ليکنې چې د څو دېرشو کلونو په جريان کې کړې ناقصې او معيوبې دي په دې چې د حکومت اړوندو ادارو په هغو کې تحريف او بدلون کاوه. له دې کبله د غبار د دغو ليکنو نه بايد په احتياط کار واخېستل شي. خو افغانستان در مسير تاريخ د غبار يوازينی اثر دی چې د قانوني پاچايي په ازادې فضا کې د خپل فکر پر بنسټ په ازاد ډول ليکلی او بې له کوم بدلون او تحريف نه چاپ شوی دی. دغه اثر د افغانستان عمومي سياسي تاريخ دی او زياتره يې کورنيو پېښو ته ځانگړی شوی دی. لومړی ټوک يې له اوښتايي دورې نه پيل کېږي او د پاچا امان الله تر واکمنۍ پورې رسېږي. زياتره برخه يې له هوتکي دورې نه را په دې خوا د معاصر افغانستان په اړه ده. کاکړ وايي چې د غبار دغه اثر لکه چې د هغه د سياسي مبارزې يوه بڼه وي. غبار وايي «ما تاريخ گذشته خود را برای اين مطالعه می نماييم که اوضاع امروزی خود را صحيحتر درک نماييم تا مبارزين جوان افغانستان در حرکت به پيش خط درست اگاهانه اختيار نماين.» ۳۷ ژباړه «مور تېر تاريخ د دې له پاره وايو چې د نن ورځې وضعه په سمه توگه درک کړو تر څو د افغانستان ځوان مبارزان د خپل مخته تگ ليکه سمه او په شعوري ډول غوره کړي.» په دغه ډول غبار ته تاريخ عملي او مبارزه ييز اهميت لري او د دې له پاره نه دی چې پېښې هغسې چې په واقع کې شوې وي د کره مالوماتو پر بنسټ له سره ژوندی او بيان کړي، پرته له دې چې خپل نظرونه په کې ځای کړي. غبار هم انسان تاريخ جوړونکی کښي، خو هغسې چې د ټولنيزو شرايطو محکوم وي نه هغسې انسان چې په خپل ټينگ شخصيت سره يې ټولنيز شرايط اړولي وي.

کاکړ وايي چې غبار په خپل دغه اثر کې پېښې تر څه اندازې د طبقاتي فکر له مخې بيان کړې دي او فيوداليزم او فيودالان يې ډېر ياد کړي ان تردې چې د دراني دولت هسکېدنه يې د فيوداليزم پايله ښوولې او ويلي يې دي چې «سیر تکامل فيوداليزم در بين اهالی قندهار و مبارزه دوامدار مردم عليه استیلاي خارجی زمينه تشکيل یک دولت

مرکزي قوی را در افغانستان مهيا کرده بود. «۳۸ ژباړه» د کندهار په خلکو کې د فيوداليزم د ودې لوری او بهرنی سلطې پر ضد پرله پسې مبارزې په افغانستان کې د يوه پياوړي مرکزي دولت زمينه جوړه کړې وه. «که دغه حکم پر واقعيت بنا وای اول بايد ميرويس نيکه او تر هغه د مخه ایمل خان مومند او روښانيانو يو پياوړی مرکزي حکومت تاسيس کړی وای. احمدشاه بابا چې د خپل غوره کېدو وروسته يو پياوړی مرکزي حکومت تنظيم کړ سمدلاسه يې په هغو شل ميليونو روپيو نغد او جنس سره تنظيم کړ چې له هندوستان نه نادر افشار ته وړل کېدلې او په کندهار کې د ده لاس ته ورغلې. برسېره پردې له غبار پرته به بل کوم تاريخ پوه ووايي چې د فيوداليزم وده د پياوړي مرکزي حکومت د تشکيل له پاره ډگر هواروي؟ د غبار دغه حکم هم پرځای نه دی چې د امير عبدالرحمن واکمني يې د فيودالي سلطنت تمرکز بللی دی. د دغه حکم مانا دا کېږي چې له احمدشاه بابا نه تر امير عبدالرحمن پورې د افغانستان حکومتونه فيودالي وو. په داسې حال کې چې نه د سدوزو واکمنه کورنۍ او نه د محمدزي واکمنه کورنۍ د پراخو مخکو خاونده وه او د دوی تکیه په دولت او دولتي عوايدو وه چې د هغه له امله زیاتره وخت له لویو مخکو والو سره په مجادله کې وه. امير عبدالرحمن خان د دې پرځای چې له هغو سره جوړه وکړي او د غبار په وينا فيوداليزم متمرکز کړي لوی مخکه وال يې وټکول يا پرار ته اړ کړل او په مخکو باندې يې د درندو مالياتو په وضع کولو سره هغوی کمزوري او مرکزي حکومت پياوړی او صناعتی کېدو له پاره برابر کړ. کاکړ وايي چې «په اصل کې د معاصر افغانستان د سياسي تاريخ ستر اړخونه د زورواکو په تېره بيا د حکومتي زورواکو د زورواکۍ په مقابل کې ولسي پاڅونونه، د واکمنو کورنيو د غرو تر مېنځ د واک په سر جگړې او د وطن او اسلام په خاطر له يرغلگرو سره جنگونه دي.» ۳۹

غبار د باندنيو يرغلگرو په وړاندې په تېره د انگرېزانو په وړاندې يې د افغانانو جگړې ښې بيان کړې، سره له دې چې د يرغلگرو په وړاندې يې د ځينو لږه کيو غير ملي رول له پام نه غورځولی او د ځينو نورو يې له واقع نه ډېر کښلی او د پښتنو يې نيمگړی ښوولی دی، بيا هم غبار د افغانانو د پېوستون او د خپلواکۍ د روحيې د پياوړتيا په لار کې يې غټ فکري او قلعي خدمت کړی دی. د ده په دغه اثر کې د افغان د خپلواکۍ روحیه او د افغان هويت ځلا کوي. د دغه اثر بله ځانگړتيا دا ده چې هغه د زورواکۍ، د حکومتونو د خپل سرې او د ټولنيزې بېعدالتۍ په وړاندې تر هر بل اثر نه ډېر انتقادي دی. «په افغانستان کې دا لومړنی انتقادي تاريخي اثر دی، خو غبار په خپل فکر سره يو دلته محکوم کړی او بل هلته تېره کړی او په خپلو دغو حکمونو سره يې له ځان نه داسې

قاضي جور کړی چې قضاوت يې د خپل وخت د ارزښتونو له مخې کړی نه د هغه وخت د معيارونو له مخې چې پېښې په کې شوي دي.» ۴۰ په دې ډول په دغه اثر کې د غبار نفوذ پوره څرگند دی. ده هم د ځينو تاريخ پوهانو په شان ښودلې چې تاريخ په اصل کې معاصر تاريخ دی او افراطي کېدلی يا پوره افراطي کېدلی نه شي.

کاکړ وايي چې د غبار قاضي توب د هغه د تاريخ په دوهم ټوک کې لا څرگند دی. د دغه اثر په کره توب کې شک دی. په زيات گومان سره چې په هغه کې به لاس وهل شوی وي. د غبار د کتاب دوهم ټوک د لومړي ټوک په دوام د حبيب الله کلکاني له امير کېدلو نه پيل کېږي او د شاه محمود د صدراعظمۍ تر پايه پورې رسېږي. کاکړ وايي چې غبار د صدراعظم محمد داود دوره، د قانوني پاچايي دوره او د لومړي جمهوريت دوره په کې نه دي ښوولي. په دې چې په دغې مودې کې د پراخو سمونونو په پايله کې افغانستان پرمختگ وکړ او د لبرال اساسي قانون پر بنسټ د ډموکراسۍ او ازادۍ خاوند شو. د همدغه پرمختگ او داسې هم د امنيت د خوندي کېدلو له امله و چې د افغانستان نړيوال حيثيت لوړ شو. غبار به په دې هم له دغو دورو له بيان نه ډډه کړې وي چې بيا اړ کېده هغه اساسي او پراخ سمونونه بيان کړي چې د واکمنې کورنۍ د غرو په نوبت او سروالۍ پلي شوي وو. بيا نو ده نه شو کولی چې هغه ترخې نيوکې وکړي چې په محمد هاشم خان يې کړې وې. دغه دوره په رښتيا ځپونکې او وېره ونکې وه، خو ښه اړخونه يې هم لرل چې هغه د پوهنې راژوندي کول او پراختيا او د سرتاسري امنيت خوندي کول وو چې د هغو په پايله کې د هېواد وروستي پرمختگونه شوني شول. يو تاريخپوه هېڅکله يو اړخيز نه وي ځکه چې يوه تاريخي دوره نه ټوله سپينه، نه ټوله توره، نه ټوله ښه او نه ټوله بده وي. خو غبار دلته پوره يواړخيز شوی او د مشروطه غوښتونکو د وروستي غړي په توگه يې د تاريخ نه د غچ اخېستلو له پاره گټه پورته کړې ده.

کاکړ وايي چې ده د ايټي په مجاله کې په دغه اثر اوږد بحث کړی چې له بده مرغه زما سره نشته چې مهم ټکي يې لوستونکو ته وړاندې کړم. خو علاقه من کولی شي په اینه کې يې ولولي. زه به دلته يوازې هغو مهمو ټکو ته د لوستونکو پام واړوم چې غبار د پښتنو په اړه څرگند کړي او کاکړ ورته کتنه کړې ده.

غبار د ډېورنډ د کرښې د دواړو خواوو پښتانه دولس ميليونه ښوولي چې د هغه په فکر شپږ ميليونه په پښتونخوا او شپږ ميليونه يې په افغانستان کې اوسېدل. د غبار دغه وينا رښتيني نه ده. د پښتونخوا پښتانه د افغانستان د پښتنو په پرتله نږدې دوه برابره دي چې لس کاله د مخه د رسمي سرشمېرنې له مخې ۲۳ ميليونه وو. غبار د افغانستان پښتانه

هم لږ ښوولي دي. د غبار شپږ ميليونه پښتانه په ۱۹۶۲ کال کې چې د رسمي سرشمېرنې له مخې د افغانستان نفوس پنځلس ميليونه ښودل شوی په سلو کې څلوېښت کيږي. اول خو په دغه کال کې په افغانستان کې سرشمېرنه نه ده شوې او نه د افغانستان نفوس پنځلس ميليونه و. بله دا چې په دغه شپږ ميليونه کې کوچيان هم راځي چې غبار پوره او نيم کوچيان دوه نيم ميليونه ښوولي دي. په دوی کې پوره کوچيان چې کړی کال يې کوچي توب کاوه دوه ميليونه وو چې هغوی ټول پښتانه يا نږدې ټول پښتانه وو. په دې حساب د غبار د ليکنې له مخې په ټول افغانستان کې ميشته پښتانه نږدې څلور ميليونه کيږي. غبار د ځينو پښتنو لويانو په اړه هم دغسې بې بنسټه ليکنې کړي چې ډېر څرکند مثال يې محمد گل خان مومند دی چې هغه يې د پانگورو په ډله کې ميليون ښوولي دي. رشتيا دا دي چې مومند په ۱۹۴۰ کال کې د گوښه کېدو وروسته ۲۴ کاله ژوند وکړ. که څه هم د هغه د فکرونو او کړو سره به هر څوک موافق نه وي، خو په دې کې شک نه شته چې هغه له يوې ناکرارې دورې نه وروسته د امنيت په خوندي کولو کې ټاکونکی رول لوبولی او د نامحدودو اختياراتو سره سره يې ژوند په تقوه سره تېر کړی او په پای کې په يوه کړايي کور کې وفات شوی دی.

غبار د پښتو ژبې سره هم داسې چلند کړی دی. د غبار د ليکنې له مخې پښتو «در ولايات شرقی، جنوبی و جنوب غربی کشور بیشتر تکلم ميشود» ۴۱ ژباړه «په ختيځو، سويلي او د هېواد په سوويلي لوېديځو ولايتونو کې زياته ويل کيږي» د غبار د ليکنې له مخې د کابل په ښار، کوهدامن، غوربند، تکاو، ميدان، وردگو او بگراميو کې پښتو نه ويله کيدله او د گردېز د ښار نه برسېره د لويې پکتيا په نورو سيمو کې له پښتو نه غير نورې ژبې هم ويل کېدلې. غبار د دغو ليکنو سرچينې نه دي ښوولي، ځکه چې دغسې سرچينې نه شته چې د هغه ارقام تاييد کړي. سره له دې دغه بې بنسټه ارقام د مير محمد صديق فرهنگ او ټولو هغو له پاره سرمشق شوي چې گوښن کوي د پښتنو په لږ ښوولو سره سياسي گټه وکړي او په دې ډول ملي پېوستون ټپي کړي.

د افغانستان د قومونو په اړه چې تر اوسه څېړنه شوې هغه د انجنر محمد انعام په زيار شوې چې د هغې له پاره د ننه په وطن او د باندې افغانانو شپږ کاله څېړنې کړې دي. د هغه د «قومي جوړښت» په اثر کې پښتانه د نسب په لحاظ په سلو کې څه باندې دوه شپېته او د ژبې له مخې پنځه پنځوس دي. ۴۲ د افغانستان ستونزه په دې نه حل کيږي چې يو قوم کم وښودل شي او بل لوی وښودل شي خو رښتين والي ته بايد هر ورو مرو درناوی وشي.

څنگه چې افغانستان د ټولو افغانانو گډ کور دی او دوی د اساسي قانون او حقوقي منشورو له مخې برابر حقونه لري او مکلف دي چې دوی د دغو حقونو درناوی وکړي. حکومت باید د ولسي جرگې له لارې داسې مقررې وېاسي چې د هغې له مخې هر هغه څوک چې کوم قوم ته سپکاوی کوي جزا وويني. کاکړ په پای کې وايي چې دا په ځانگړې توگه د هر افغان تاريخ پوه دنده ده چې تاريخ ته د قوم، ژبې، مذهب، سياست او ايډيالوژۍ د نظر نه ونه گوري او د «ران کي» په شان کوبښنې وکړي، پېښې هغسې چې په واقع کې شوې وي بيان کړي او په خپل بيان کې ځان ونه ښيي. تعبيرونه، حکمونه او نظرونه يې باید د شواهدو پر بنسټ وي. خو غبار په دوهم ټوک کې په دې برخه کې پاتې راغلی دی. همدارنگه کاکړ د محمد صديق فرهنگ کتاب ته چې «افغانستان په وروستيو پنځه پېړيو کې» نومېږي هم کتنه کړې ده.

کاکړ او د محمد صديق فرهنگ کتاب «افغانستان در پنج قرن اخير»

کاکړ که څه هم په نظر کې درلودل چې د فرهنگ په یاد شوي کتاب رساله وکارې خو د بده مرغه ژوند ورسره ياري ونه کړه او دا کار پاتې شو. زه به يوازې د کاکړ د مقالې چې « افغانستان په وروستيو پنځه پېړيو کې » په کتاب يو نظر نومېږي، په ځينو مهمو ټکو رڼا واچوم. کاکړ وايي چې د ليکوال پېژندنه د هغه د اثر په پېژندلو کې زياته مرسته کوي په دې چې د ليکوال او د هغه د اثر تر منځ رښتيني اړيکه شتون لري.

کاکړ وايي چې د ډېرو رواياتو له مخې محمد صديق فرهنگ په اصل کې د جاغوري د هزاره گانو د ميرانو څخه دی چې د استقلال د لېسې نه خلاص شوی، خو لوړې تخصصي زده کړې يې نه دي کړې. پلار يې سيد حبيب نومېده چې د وطن د نامتو مستوفيانو څخه و. د فرهنگ ورور سيد قاسم رښتيا هم يو مشهور شخص او ليکوال و. که څه هم د دغې کورنۍ وتلي کسان د مير او سيد القاب لري خو په روحاني چارو بوخت نه، بلکې په هېوادنۍ چارو بوخت وو. دوی په ځانگړې توگه د مشروطه شاهي دورې په دولت کې په لوړو چارو او عملي سياسي ژوند کې فعاله ونډه درلوده.

کاکړ وايي تر هغه ځايه چې فرهنگ ورته مالوم دی د ده شخصيت او نړۍ ليد د هغو مقالو نه جوتېږي چې نوموړي د ورځيني او په ځانگړې توگه د اقتصادي چارو په اړه د روزگار په اونيزې جريدې کې، چې د مشروطه شاهي دورې کې چې د بيان ازادي او خپرونې په افغانستان کې لوړې درجې ته رسېدلې وې، خپرولې. فرهنگ په دغو مقالو کې پېښې د مارکسسټي لور ليد له مخې تحليل کولې. د بېرک کارمل په مشرۍ يې د خلک ډموکراتيک

ګوند د پرچم اړخ ته ميلان درلود. د دغه ميلان له مخې و چې کله شوروي اتحاد بېرک کارمل په واک کې فرهنگ د بېرک کارمل مشاور چې په ظاهر کې د بېرک په خدمت کې و ولې په نانېغ ډول د شوروي روسې په خدمت کې واقع شو. خو د فرهنگ تر ټولو مهم اثر « افغانستان په وروستيو پنځه پېړيو کې » دی.

کاکړ وايي چې لومړی په خپله د کتاب نوم ناسم دی په دې چې په هغه کې د پنځو پېړيو تاريخ ځای شوی نه دی، بلکې د درې وروستيو پېړيو تاريخ په کې راغلی دی. دوه پېړۍ شپاړسمه او اولسمه په څو پاڼو کې راغلې دي او دا برخه د هغه څه نه ډېره لږه ده چې مولف د افغانستان د لرغوني تاريخ زردبښت نه تر دغه وخته پورې ورته ځانګړې کړې ده. د ليکوال دغه ادعا هم سمه نه ده چې د (ج) په مخ کې وايي «د کتاب په تاليف مې په افغانستان کې په اسلامي دوره کې د وروستيو پنځو پېړيو په تکیه يانې د هغه مهال نه چې د اروپايانو پښه د ختيځ په لور خلاصه او د دې سيمې (کومې سيمې؟) په تاريخ کې نوې دوره پرانېستله.»، پيل کولو ته اقدام وکړ. ۴۳

افغانستان په واقعيت کې د نولسمې پېړۍ په پيل سره او نه د هغې نه د مخه د اروپا د تاريخ او اروپايانو نه اغېزمن شوی دی. که څه هم يو څو تنه ګرځندويان په دوو پېړيو کې د افغانستان نه تېر شوي خو هغوی ملي سياست په هېڅ ډول اغېزمن کړی نه دی. فرهنگ له يوې خوا تاريخي څېړنه په اساس کې علمي کار بولي او د بلې خوا د تاريخ په اړه وايي چې د تاريخ مانۍ په قطعياتو نه بلکې په شونتياوو ولاړه ده. کاکړ وايي چې تاريخي څېړنه يا ليکنه علم نه بلکې يو ميتود، شېوه او د څېړنې فن دی. علم او پوهه او ميتود دوه مقولې دي. علم په اساس کې د پديدو تر منځ د اړيکو نه منځ ته راځي. د بېلګې په توګه د طبيعي علومو په ساحه کې حقيقتونه د لابراتواري تجربو پر بنسټ منځ ته راځي. خو د ټولنيزو علومو د تاريخ په ګډون مادي او معنوي شواهد د بيلو بيلو او متضادو سرچينو نه لاسته راځي او ليکنه په دواړو ساحو کې د کره مهمو اړوندو حقيقتونو په کره ميتود سره ارزيايي کېږي. له هغه نه حکم يا کليه لاس ته راځي. په دې توګه د حکم، علم او تيوري بنسټ حقيقتونه دي. د څو کلياتو او حکمونو نه علم منځ ته راځي او تيوري هم په دغو کلياتو او احکامو جوړه ده. که په دغو حقايقو کې بدلون راغی او يا نوي حقيقتونه پيدا شول عمل او تيوري هم بدلون کوي.

کاکړ دا هم وايي چې فرهنگ که څه هم د مارکسستانو په شان خلک د تاريخ جوړوونکي ګڼي خو هغه هم خپل کتاب د نورو غوندې دولتي شخصيتونو او وتليو کسانو ته ځانګړی کړی دی. برسېره پر دې د ده سرچينې هم نږدې ټولې د دوهم لاس دي. د هغو

نه اقتباس يې هم تحريف کړی دی. د بېلگې په توګه فرهنگ خپل ماخذونه په منظم لست کې نه دي ښوولي چې د علمي اثر حتي توګی دی، بلکې د ځينو نومونه يې هم ناسم ورکړي دي. د کاکړ له کتاب نه يې د خپلې ليکنې دپاره ډېره استفاده کړې خو ريفرنسونه يې لږ ورکړي، يوازې په متن کې يې په غلط نوم «افغانستان در دوره پادشاهي امير عبدالرحمن خان» قيد کړی دی. په داسې حال کې چې د کتاب نوم «افغانستان، تحقيق در باره انکشافات سياسي داخلي ۱۸۸۰-۱۸۹۶» دی. کاکړ وايي چې فرهنگ د ده د کتاب د نوم په ژباړه کې څلور غلطۍ کړې دي. لومړۍ دا چې لکه چې د مخه مو ياده کړه د کتاب نوم غلط ژباړل شوی دی. دوهمه دا چې نوموړي د پادشاه او امير په اصطلاحاتو کې په توپير نه دی پوه شوی. دريمه دا چې کتاب د امير عبدالرحمن ټوله دوره په غېږ کې نه نيسي لکه چې د فرهنگ د ژباړې نه ښکاري، بلکې د هغه د ۲۱ کلني سلطې نه ۱۶ کاله دربر نيسي. څلورم دا چې دا کتاب د افغانستان ټولې موضوع گانې نه بيانوي لکه چې د فرهنگ د ژباړې نه ښکاري، بلکې کورنۍ سياسي پېښې بيانوي.

بل دی تاريخي دورې په خپله وينا د اساسي ټولنيزو او فرهنگي بدلونونو له مخې په درو اساسي برخو وېشي:

۱- لرغوني دوره د زردنبت د پيدايښت نه د اسلام د منځ ته راتلو پورې

۲- دوهمه دوره د اسلام د ظهور نه د افغانستان د خپلواکۍ تر اعلامه پورې

۳- معاصره دوره د خپلواکۍ د اعلان نه وروسته

خو د ده د تاريخي دورې دغه وېش هم بې بنسټه دی. لکه چې يې له ياده وتلي وي چې ده په خپل کتاب کې لکه چې د مخه مو يادونه وکړه چې فرهنگ د ختيځې نړۍ مخکو ته د اروپايانو راتګ د دغې سيمې په تاريخ کې نوې دوره بللې ده چې طبيعي ده چې افغانستان د هغې برخه ده. ۴۴

کاکړ وايي چې بل مهم ټکی دا دی چې فرهنگ د افغان، پښتون، غلزي او افغانستان د کليمو په اړه هم ليکې لري. دی ليکي: «اسلامي تاريخ ليکونکي او جغرافيه ليکونکي، د زبردې د لسمې پېړۍ راهيسې پښتانه د افغان په نوم ياد کړي او د دوی ژبه يې افغاني بللې ده.» ۴۵ بيا ليکي چې درې واړه نومونو پښتون، افغان او پتان د شپاړسمې پېړۍ نه وروسته کتابونو ته لاره موندلې او په يوه مانا سره کارول شوي دي. دا چې د پښتون نوم په ډېرو پخوانيو زمانو کې ثبت شوی فرهنگ هغه په شک او تردد سره ياد کړی او ليکي: «ځيني مولفين اولاف کيرو او بهادرشاه ظفر کاکاخېل د پښتون کليمه د پکتويکه د کليمې سره چې د يونان د نوميالي تاريخپوه هېرودت په تاريخ کې د هغه قوم د نوم سره تړلې چې د سند

د سین په حدودو کې میشت و او ادعا کوي چې ننني پښتانه د هخامنشي داریوش د وخت د پکتیوکانو بقایا دي» ۴۶ ورپسې فرهنگ خپل شک او تردید لا په ټینګو عباراتو څرګندوي او لیکي چې «هر څومره چې د داریوش د عصر او د پښتون د کلیې د پیداېښت تر منځ چې د اولسې زیږدې پېړۍ د لیکوالو په اثارو کې شته، د دوو زرو کلونو نه زیات و اټن موجود دی، په دې اړه شک پیدا کوي» ۴۷ او ځینو (فرهنگ) دا پوښتنه کړې چې بیا نوموړی قوم په دغه موده کې چېرې و چې په دې سیمه کې د اسلام د مخه او وروسته د تاریخ او جغرافې په زیاتو اثارو کې چې لیکل شوي دي یاد شوی نه دی. فرهنگ د خپل تردد ځواب په خپله په سستو او نېښناکه توګه وايي او لیکي چې «دا شک په دې ډول رفع کېدای شي چې پښتانه همدلته د سیند په چاپېر کې موجود وو، خو په خپله ژبه کې یې خط او لیکل نه وو هغو مولفینو چې له دوی نه یې یادونه کړې ده د پښتون د کلیې پر ځای د افغان کلیمه چې په فارسي ژبو کې رواج وه کارولې او د پښتون کلیمه یې د قلم نه غورځولې» ۴۸» ۴۸

کاکړ وايي چې فرهنگ په دغې لیکنې سره غواړي دا ښکاره کړي لومړی دا چې د افغان نوم د اولسې پېړۍ نه وروسته په اثارو او کتابي سرچینو کې ثبت شوی او د هغه نه د مخه د افغان کلیمه په کتابونو کې نه ده لیکل شوې. دوهم دا چې نورو پښتانه د افغان په نوم یاد کړي دي. څنګه چې پښتانه د خط او کتابت خلک نه وو همدغه نوم (افغان) په کتابي اثارو کې د پښتون ځای ونیو. دریم دا چې د اسلام نه مخکې دورو کې او د اسلام وروسته د پښتنو نه یادونه نه ده شوې او وروسته نورو د پښتنو نه د اجيرو سپاهیانو په حیث ګټه پورته کړې ده. څلورم دا چې د فرهنگ په فکر پښتانه د اسلام د ظهور نه د مخه او وروسته دورو کې د سیند په چاپېر کې اوسېدل یانې په خراسان کې نه وو، که څه هم د خپل کتاب په یو بل ځای کې پښتانه د خراسان په اوسېدونکو کې یادوي.

لومړی د افغان کلیمه تر هغه ډېره پخوانۍ ده چې د فرهنگ په تاریخ کې ثبت شوې ده. د البېروني په وینا د افغان نوم د هغې کلیې سره تړاو لري چې په مهاباراته کې د اسواکا (Asvaka) په نامه د ګندهارا په سیمه پورې اړه لري او مانا یې اس سواره دي یاده کړې ده. مهاباراته نږدې په ۱۲۰۰ کاله مخزېږدې کې منځ ته راغلی دی. احمدعلي کهزاد په خپل وروستي اثر کې «افغانستان په شاهنامه کې» وايي چې د افغان کلیمه د اسواګانه (Asva-ghana) د کلیې د جوړښت نه چې لومړۍ برخه یې اسوه یا د پښتو اس او د پارسو اسپ او دوهمه برخه یې ګان یې ځای او وطن دی. په دې ترتیب اسواکا یا اسواګانا او وروسته افغان د «سوارو وطن» کېږي.

د هغه وروسته افغان د ابکان او اوگان په بڼو د نقش رستم په معبد کې په پرسي پوليس کې ليدل کېږي. د دغې کتیبې پر بنسټ پوهاند شپرنګلینګ وايي چې کونداډر ابکان رازمود نه اخیستل شوی دی چې په دا کتیبه کې د اول شاهپور ساساني په امر په پارتي، منځني پارسو او يوناني ژبو ليکل شوي ده. دی وايي د ابکان او اوگان له پاره د افغان نه بڼه کلیمه پيدا کولی نه شو. اولاف کپرو هم په خپل «پتان» کې وايي چې د اپکان او ابکان نه د افغان کلیمې وده طبيعي مالومېږي.

په شپږمې زېږدې پېړۍ کې يو هندي ستوری پېژندونکی وراهاميرا په خپل اثر «برهت سمهتا» کې د اوکان (Avagana) کلیمه د نورو کلیمو په څنګ کې د دې خلکو له پاره کاروي. يوه پېړۍ وروسته نامتو چيني ګرځندوی هیون شانګ افغان د اپوکين په بڼه ثبت کړی دی. کننگهم په ځانګړې توګه وايي چې دی پر دې باوري دی چې د شون چونګ موخه د اپوکين د کلیمې نه افغان دی. د لسې پېړۍ نه وروسته د افغان نوم د لومړي ځل له پاره په حدود العالم په کتاب کې ياد شوی دی. له دې وروسته د ابکان او اوگان نوم د پارسو او عربي اثارو کې نه شته خو د افغان نوم دومره زیات ياد شوی دی چې يادولو ته يې اړتيا نه شته.

دوهم د تاريخپوه غبار او ژبپوه مارکن سټرن په نظر د پښتون کلیمه د افغان د کلیمې نه پخوانۍ ده. د پښتون کلیمه د لومړي ځل دپاره د ويدا په لرغوني مذهبي کتاب کې د پکتاس (Pakthas) په بڼه راغلې ده. هيرودت د تاريخ پلار د مخزېږدې نه پنځه پېړۍ د مخه د پکتیان (Paktian) په بڼه او هېواد يې د پکتیوکا (Paktiyca) په بڼه ياد کړی دی. که څه هم مارکن سټرن وايي چې د پښتون کلیمه د پرسوانا نه جوړه ده خو اولاف کپرو د مارکن سټرن نظر ردوي او وايي چې پرسوانا د پارس کلیمې ته ډېره نږدې ده.

بل فرهنگ پکتیکا او کندهارا نه يادوي او هغه يوازې د سيند سيمې يا د سيند دواړه خواوې يادوي. اولاف کپرو د اورال شتاین د ليکنې له مخې پکتیکا د کابل او سيند تر منځ سيمه بولي. بيلو د کندهارا يا پکتیکا سيمه لا نوره پراخه يادوي چې دا سيمه د سند او هلمند تر منځ پراته وه. کاکړ وايي چې نورې سرچينې هم څرګندوي چې پښتانه د ميلاد نه دوه پېړۍ د مخه او همدارنګه په اولسې زېږدې پېړۍ کې په غزني، غور او شونې ده په بلخ کې اوسېدل. کهزاد «افغانستان په شاهنامه کې» وايي چې د کوشانيانو لومړی پاچا کوچولو کد فېزس چې د مخزېږدې دوهمې پېړۍ په نيمايي کې کوفن (کابل) او کي پن (کاپيسا) ونيول د غزني په سووېلي سيمو کې د بوتونو په نامه د خلکو سره مخامخ شو چې دغه خلک فرانسوي واله دو پوسن پختو يا پوختو وبلل چې پښتانه دي. د اوومې زېږدې

پېړۍ د شون چونگ د ليکنې نه هم ښکاري چې پښتانه په اوومه زېږدې پېړۍ کې په غزني کې اوسېدل. د شون چونگ د ليکنې پر بنسټ دې پايلې ته رسېږي چې د غزني خلک پښتانه وو. شون چونگ ليکي چې الفبا او د دې خلکو ژبه د نورو نه توپير درلود. د دې ليکنې له مخې ښکاره ده چې پښتنو الفبا درلودل او د فرهنگ د ادعا پر خلاف دوی بېسواده نه وو. ځنگه چې شونگ چونگ د ترکي او هندي ژبو سره بلد و نو کنگهم د ده د ليکنې نه دې پايلې ته ورسېد چې د غزني چاپېره خلک پښتانه وو. کنگهم زياتوي چې «زه د پايلې ته رسېدلی يم چې په زيات گومان د دې خلکو ژبه پښتو وه.» له دې وروسته د سلطان محمود غزنوي په وخت کې زيات شمېر پښتانه په دې سيمه کې اوسېدل او د ده په خدمت کې ځينې ملکان شامل وو. دوی د هندوستان په نيولو کې د سلطان سره مرسته وکړه او د ده د امپراتورۍ شمزۍ جوړوله. د فرهنگ د ليکنې برخلاف د يونان د لرغونو ليکوالو نه برسېره تر اوومې ميلادي پېړۍ پورې د پښتون او پښتو نوم ثبت شوی دی.

د غزني برسېره غور د پښتنو د اوسېدلو ځای و. د غبار په وينا غور په اصل کې د پښتو د کليې غر نه جوړ شوی چې د وخت په تېرېدو سره په غرج او غرش باندې بدل شو او دا نوم د اسلام په دوره کې په غرجستان، غرستان او غرسستان باندې واوښت. غبار دا هم وايي چې د غور پخوانو اوسېدونکو په زيات گومان سره د سوېل- ختيځ په کومه اريايي ژبه خبرې کولې خو دغه ژبه د غزنويانو په دربار کې د فارسي ژبې سره توپير درلود. دغه پخوانۍ اريايي ژبه او د يونان او هند نورې ژبې چې هلته يې نفوذ کړی وو کام په کام د منځه لاړې او ځای يې محلي لهجې پښتو ونيو.

دغه مهال ته نږدې فردوسي په خپلو شعرونو کې د افغانانو د جنګي ځواک نه ډېر ځله يادونه کړې ده. د نوموړي د شعرونو ښکاري چې افغانانو په فراه کې هم ژوند کاوه او هلته يې د مرياد د غره پر سر استوګن او د کهزاد په وينا د هغه ځای کلا د زورور او ډېرو ځواکمنو افغان جنګياليو ډکه وه.

د فردوسي شعر:

یکی قلعه بالای ان کوه بود

که ان حصن از مردم انبوه بود

مران حصن را نام مریاد بود

ازو جان نابخردان شاد بود

بدژ در يکيبدکنش جای داشت
که در رزم با اژدها پای داشت
نژادش زافغان سپاهش هزار
همه ناوک انداز و ژوبین گذار

دوراننش بمانندران پيــــل
که رزم جوشان تر از رود نیل

به نپرو جدا کردی از که کمر
گریزان زورش بدی شیر نر

ورا نام بودی کک کوه زاد
بکیتی بسی رزم بودش بیاد ۴۹

د افغانانو د زورتیا نه د تاریخ پلار هېرودت داسې یادونه کوي: «د نړۍ د هغې برخې تر ټول زورور خلک دي.» ۵۰

ډورن وايي چې پښتانه له کوم بل ملک نه افغانستان ته نه دي تللي بلکې لکه چې سر جونز ويليم وايي «د لرغوني پاروپاميزاد (ياني مرکزي افغانستان او شاوخوا سيمو) اصلي او ځايي اوسېدونکي دي.» ۵۱ ډورن وايي چې «تاريخ دا ثابتې کړې ده چې د غزني سلطان محمود د واکدارۍ په وخت کې او د هغه نه ډېر پخوا دوی (افغانان) په هغو کلاوو کې اباد وو چې تر اوسه په کې ميشته دي.» ۵۲

پوهاند ډاکټر حبيب الله تربي د خپل کتاب «پښتانه» څلورم څپرکي: پښتانه پخوا چېرې اوسېدل؟ موضوع ته ځانگړی کړی دی. نوموړي پښتانه په پکتيا او د هغې چاپېر سيمو کې، پښتانه په غزني کې، پښتانه د کابل په سيمو کې، پښتانه په پخواني افغانستان کې، پښتانه په سند کې څېړلي دي چې د دې موضوع مينه وال کولی شي دا مهم کتاب ولولي. فرهنگ د غلجيو په اړه وايي: «پس از سقوط دولت خلجي در دهلی و شعبه ديگر ان در مالوه اين کليمه در هند از رواج افتاد و بجای ان در خراسان قبيله ای بنام خلجي ظهور کرد که یکی از شاخه های مهم ملت پشتون يا افغان بود... که در اثر معاشرت به پشتون ها زبان و فرهنگ آنان را پذيرفته و با تحريف نام از خلجي به صفت یکی از شاخه

های پښتون شناخته شده اند» ۵۳ ژباړه «دغه کلیمه په ډیلي کې او د هغوی بله څانګه په مالوه کې د خلجي دولت د نسکورېدو وروسته په هند کې د رواج نه ولوېده او د هغې په ځای په خراسان کې د خلجي په نوم یوه قبيله را څرګنده شوه چې د پښتون یا افغان ملت یو مهمه څانګه شوه... چې د پښتنو سره په ژوند کولو کې یې د دوی ژبه او کلتور ومانه او د خپل نوم خلجي په تحریفولو سره د پښتون د یوې څانګې په شان وپېژندل شو.» فرهنگ مطلق حکم کوي چې غلجیان په اصل کې ترک دي. کاکړ وايي چې فرهنگ د یوه انګلیسي لیکوال لارنس لاکهارت په کتاب چې د صفوي کورنۍ نسکورېدل او په پارس باندې د افغانانو بری نومېږي، حواله ورکوي. کاکړ وايي تر هغه ځایه چې لیکوال ته مالومه ده لاکهارت په خپل کتاب کې دا مطلب ځای کړی دی چې د خلج په نامه د ترکانو یو قوم د زیږدې په اومې پېړۍ کې په کومه سیمه کې ورک شو او په لسمه پېړۍ کې د غزني په چاپېر کې څرګند شو خو هغه وخت د کاوندیو پښتنو سره د ګډېدو وروسته غلزي پښتانه شول.

فرهنگ د دغه روایت په منلو سره خپله پخوانۍ خبره ردوي چې ویلي یې و چې پښتانه د اسلام نه د مخه او وروسته د سند په چاپېر کې اوسېدل یانې په غزني کې نه وو. خو دغه روایت د تاریخي، ژبني او انټروپولوژۍ د زاویې له مخې ناسم دی.

په تاریخي لحاظ په دې ناسم دی چې کله یو قوم د کسپین نه د غزني چاپېر ته مهاجرت کوي باید دا مهاجرت په دومره اوږده واټن سره چې پخوا دا واټن وهل شوې نه وي ډېر وخت نیسي او د لارې په اوږدو کې د نورو قومونو او ولسونو سره تماس او ان تکر کوي او دغه پېښې په یوې او یا څو سرچینو کې باید ثبت شوې وي. شونې نه ده چې داسې لویې پېښې چې واقع شوې وي د تاریخ لیکونکو، جغرافیه لیکونکو او پېښو لیکونکو نه هغه په داسې عصر کې چې کتابت او پېښې لیکني په سیمه کې دود وي، پټ پاتې شي.

د ژبې د نظره چې یو قوم په بل کې ګډ شي شونې نه ده چې ژبه یې تر دې کچې له منځه لاړه شي چې لږ تر لږه یې څو پېړۍ اثر پاتې نه شي. په افغانستان کې یو شمېر قومونو د نږدې قومونو سره د ګډېدو له کبله خپله ژبه له لاسه ورکړې ده، خو نه په بشپړه توګه لږ تر لږه زیات شمېر لغات د منحل شوي قوم دوهې اکتسابي ژبې کې لیدل کېږي. هزاره یې ښه بېلګه کېدای شي چې هزاره کې لهجه د پارسو د لهجې سره زیات توپیر لري. خو د غلزيو په پښتو کې نه د ترکي خلجي قوم کلیمې لیدل کېږي او نه د غلزيانو پښتو د نورو پښتنو د ژبې سره اساسي توپیر لري.

د انټروپولوژۍ له نظره شونې نه ده چې د ترکو د خلج غوندې قوم چې په اصل کې یې

قوي قومي موسسې درلودې د دوو يا دريو پېړيو په جريان کې يو قوم په بل قوم کې تر دې کچې گډ شي چې د خپلو نیکو اړوند ټول خويونه، رسوم، عقيدې او کيسې يا په يوه کليمه ټول کلتور له لاسه ورکړي.

همدارنگه محمد صديق فرهنگ د تعصب له مخې د غلزيانو په اړه دا افسانه چې د خلجي قبيلې د نوم په اړه تراشل شوې ده په خپل کتاب افغانستان در پنج قرن اخير کې راوړې ده چې گويا د غلزيانو نوم غلزوی دی. په دې چې د بېټ نيکه لور متو د غور له يوه شاه زوی سره د دوی په کور کې اوسېدلې، پته مينه درلوده او د مخه تر دې چې د دوی شرعي واده وشي په متو کې د اميندواری نېنې ښکاره شوې. بيا دوی نکاح وتړله. هغه مهال چې د متو زوی وزيريد د غلزي (د غلا زوی) نوم يې ورباندې کېښود. د دغه نوم افسانه «لومړی ځل په مخزن افغاني کې ليکل شوې او ورپسې نورو تاريخونو لکه خلاصه الانصاب، تاريخ مرصع، پښتانه د تاريخ په رڼا کې، د پښتنو تاريخ ... کې نقل شوې ده» ۵۴ د دغې افسانې په اړه به اوس دومره ووايم چې پوهان د نويو څېړنو له مخې په يوه خوله وايي چې دا نوم غززی يا د غرو خلک دی. د غززي کليمه ورو ورو په غلزي، غلجي او خلجي اوسېتې ده.

فرهنگ دا هم وايي چې د پښتو ژبو د شمېر په اړه بيل بيل ارقام وړاندې شوي دي. غبار يې په سلو کې څلوېښت او کريگوريان يې په سلو کې پنځه پنځوس ياد کړي دي. دی دا هم زياتوي چې ډېرو ليکوالو د دولت د رسمي ارقامو له مخې کوچيان دوه ميليونه گڼلي او هغه يې ټول پښتانه بللي دي. په داسې حال کې چې د ۱۹۷۸ کال د نمونه يي شمېرنې له مخې د يوه ميليون څخه نه زياتېږي. له دې کبله ويلی شو چې څلوېښت په سلو کې ارقام سم دي.

کاکړ وايي چې فرهنگ د کوچيانو د ميشته کولو عمليه د تعصب له امله د نظر نه غورځولې ده. د کوچيانو د ميشته کولو عمليه پخوا روانه وه خو په شلمې پېړۍ کې نظر نورو نه ډېره چټکه وه. ناصر، سلېمانخېل، کاکړ او نور په کوهدامن، هلمند، کندوز کې ځمکې ترلاسه او په زيات شمېر ميشته شول. دغه د ميشته کېدو عمليې د کوچيانو شمېر لږ او د ميشته پښتنو شمېر زيات کړ چې عمومي شمېر يې ثابت پاتې کېږي. له دې کبله د پښتنو شمېر په سلو کې څلوېښت ته نه دی راتپت شوی او د فرهنگ پايله يې مانا ده. برسېره پردې چې په ۱۹۷۸ کال کې احصايه اخېستل کېده ټول کوچيان د پاکستان نه افغانستان ته راستانه شوي نه وو په دې چې دوی د شپږم نمبر فرمان له مخې چې په هغه سره سود او کروي د منځه تللي وو او په هزاره جاتو کې د کوچيانو په تاوان تمام شوی وو.

کاکړ د لوستونکو پام دې ټکي ته هم اړوي چې فرهنگ د پښتنو پر ځای پښتو ژبې يادوي. د کاکړ په نظر که څه هم ځيني معتصب ليکوالان د افغانستان د نورو قومونو لکه هزاره، ازبک، ترکمن، بلوچ او نور د ژبې پر بنسټ نه شمېري خو يوازې د تعصب له مخې هغوی پښتانه چې خپله مورنۍ ژبه يې د لاسه ورکړې ده د پښتنو په شمېر کې نه روالي خو واقعيت د دوی د ذهن نه د باندې په عيني توگه وجود لري. د واک د فونډېشن د شمېرنې له مخې په افغانستان کې پښتانه د نسب له مخې په سلو کې درې شپته او د ژبې په لحاظ په سلو کې د پنځه پنځوس نه زيات دي. کاکړ دې ټکي ته هم د لوستونکو پام اړوي چې د فرهنگ دا خبره چې نورو ټول کوچيان پښتانه بللي دي، د دې دا مانا کېږي چې په کوچيانو کې غير پښتانه عنصر شته چې دا واقعيت نه لري او که وي دومره لږ دي چې په نشت حسابېږي.

دریم څپرکی

کاکړ او د افغانستان لرغونی تاریخ

زه د کاکړ د تاريخي اثارو څېړنه د هغه اثر نه چې د هېواد لرغوني تاريخ ته وقف شوی دی او «پښتون، افغان، افغانستان» نومېږي، پيلوم. دا کتاب د لرغوني افغانستان د تاريخ يوه لنډه سروې ده چې موخه يې د افغانستان په لرغوني تاريخ کې د پښتنو څرک پيدا کول دي. کاکړ د تاريخ ليکنې د علمي ميتود له مخې سمه خبره کوي هغه دا چې «د اريانه په تېره د لومړي مهالونو تاريخ کښل گران څه، چې تر ډېره حده ناشونی کار دی.» ۵۵ نوموړی اساسي ستونزه دا کي چې د لرغونې اريانا په اړه شواهد لږ او ان د نشت په حال کې دي او دا خو ښکاره ده چې «چېرته شواهد نه وي، هلته تاريخ نه وي.» ۵۶ ځکه د اريانا ويدي دوره او په ځانگړې توگه د پاراداتا يا پيشداديانو دوره افسانه ييز ماهيت لري.

خو د اريانا اوستايي دوره په نسبي ډول د زردښت د اوستا او د هېرودت د تاريخ د شته والي له امله او بيا د لوی سکندر د يرغلونو وروسته د هغې په اړه تاريخ پوهانو ډېر کتابونه کښلي چې د هغو له برکته دا دوره تر زياتې اندازې روښانه شوې ده.

دا چې پښتون څه وخت پيدا شوی ښکاره نه ده په خپله د انسان پيداښت يوه ډېره پېچلې او لانجمنه مسله ده. د دې مسلې په اړه انسانان په دوو ډلو وېشل شوي دي. ځيني وايي چې ټول ژوي او په هغه جمله کې انسان لوی څښتن پيدا کړي دي خو ځيني نور بيا وايي چې ژوند او د انسان پيداښت د تکاملې عملي پایله ده.

زيات ساينس پوهان د دې نظريې پلوي دي چې: «د کایناتو پيداښت ديارلس عشاريه اوه ميليارده کاله پخوا د يوه غټ ټکر يا چاودنې (The Big Bang)» ۵۷ پایله وه. د مخکې کره چې زموږ د لمريز نظام يوه سياره ده د دغې غټې چاودنې په پایله کې منځ ته راغلې او لومړی د اور د کرې په څېر وه. د مخکې دا کره ورو ورو پخېدله او په پای کې دوو لاملونو د ژوند په منځ ته راتلو کې ډېر مهم رول ولوباوه. لومړې دا چې د مخکې د کرې پر چاپېر د اتموسفير تشکيلېدل او بل د مخکې د کرې پر مخ د اوبو منځ ته راتگ و.

پوهان د انسان د پيداښت لومړی ځانگو د هغه مهال د انسانانو د هډوکو د موندنې او سپړنې (تحليل) پر بنسټ افريقا بولي. «له دغو انسانانو نه ځينو يې اټکل سل زره کاله

د مخه سویل- لوېديځې اسيا ته او بيا له دغو سيمو نه د اسيا- اروپا پراخو تودو سيمو ته مهاجرت وکړ. «۵۸»

دا هم مالومه نه ده چې انساني نژادونه څه وخت منځ ته راغلي او څرگند شول. انسانان په څلورو توکمیزو يا نژادي ډلو ویشل شوي دي چې سپين پوټکي، زېر پوټکي، تور پوټکي او سور پوټکي دي. دا توکمیزې ډلې په نسبي توګه د ثابتو پيدايښتي ځانګړتياوو: لکه رنگ، وېښته، مخ او بدني جسامت له مخې يو د بل نه توپير لري. اوس د DNA د کتنو په برکت د نژادو توپير په کره توګه کيږي. سپين پوټکي هم په دوو ځانګړو وېشل کيږي چې يوه يې سامي او بله يې اريايان دي. خو څرنګه چې پښتانه په اصل کې اريايان دي نو له دې کبله به د اريايانو او د هغوی د ټاټوبي په اړه لنډه يادونه وکړم.

اريايان او د دوی ټاټوبی

اريايان د سپين توکم يوه څانګه ده چې د هندو- اروپايي خلکو نيکونه دي. د اريايانو د ټاټوبي په اړه پوهان يوه خوله نه دي. ځينې پوهان لکه احمدعلي کهزاد، عبدالحی حبيبي، ماکس ميولر، ظفر کاکا خيل، دوست شينواری او نور د اريايانو ټاټوبی د اکسوس او سردريا تر منځ سيمه بولی خو ځينې نور بيا د اروپا بېلې بېلې سيمې لکه جرمني، سکندونيا او د مديترانې سيمې د اريايانو لومړی ټاټوبی ګڼي. ګوردن چايلد وايي چې د اريايانو لومړی ټاټوبی به «سوويلي روسيه يا سکندونيا» ۵۹ نه يو وي. خو دی د سوويلي روسيې د ګڼې [فرضيې] شونتيا پياوړې ويني. پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ وايي چې «دغه نظريه په دې هم قوي ده، چې له سوويلي روسيې نه د اريايانو لومړی لېږد څرګند دی.» ۶۰ دی زياتوي چې «دغه سيمه د اروپا- اسيا هغه پراخه برخه ده چې د هنګري له ختيځو څنګلونو نه د مانچوريا تر شنو وړشوکانو او د سايبيريا د جنوبي څنډو نه د تبت تر لورو سطحو پورې د نړۍ دريمه برخه ځمکه په غېږ کې نيسي او منځنی اسيا يې زری جوړوي.» ۶۱ د اريايانو دا لومړی لېږد د دې سيمې نه څلور زره کاله د مخه اټکل شوی دی.

د اريايانو دا لومړی لېږد پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ داسې بيانوي: «دغه خلک د خپل لېږد په بهير کې چې پېړۍ پېړۍ يې نيولې په دوو برخو ووېشل شول ... لوېديځه برخه [يې] ... د تور سمندرګي له شمال نه د بالقان او باسفورس په لار وړې اسيا (Minor Asia) يا نننۍ ترکيې ته ننوتل او د هغې له ځاي خلکو سره له ګډېدلو نه وروسته پرې لاس بري شوه او د هيتايټ (Hittite) په نامه سلطنت يې جوړ کړ.

د هندو- ايراني په نامه د اريايانو بله ډله د کسپين د سمندرګي په غاړه د ختيځ خوا ته

تاو شوه او بيا دوه برخې شوه. يوه برخه يې له قفقاز نه واوښته د فرات په لور لاړه او هلته له ځايي خلکو هوريانو (Hurrians) سره ميشته شوه او وروسته يې د ميتاني (Mittani) په نوم دولت جوړ کړو. بله برخه يې چې تر هغې بلې نه دېره لويه وه او په هندو- اروپايي څانگې ياده شوه، د ختيځ په لور لاړه، له سردريا او امو نه واوښته په باختر کې ميشته شوه او بيا د پنجشېر او کابل پر سينونو ورسکته شوه.» ۶۲

په سوويلي روسيه کې د اريايانو د عمومي لېږد نه وروسته د سيميريانو (Cimmerians)، ستيانو (Seythians) او سرماتيانو (Sarmatians) واکمنۍ مالومې دي، چې تر زيږدې دريځې پېړۍ پورې يو په بل پسې يې کړې دي. ستيانو د سيميريانو واکمنۍ ته د پای ټکي کېښود. ستيان چې له منځنۍ اسيا نه را ولاړ شوي وو، د هېرودت په وينا واکمني يې د دون له سين نه د دانيوب تر سين پورې جاري وه او په سوويلي روسيه کې يو پياوړی دولت په پښو درولي و، چې درې پېړۍ وپايېده او په پای کې سارماتيانو مات او واکمني يې خپله کړه.

دی دا هم وايي چې د اريايانو د دغې ډلې نه يوه برخه يې چې د سويل په لور تله د هغو اريايانو د ډلې له لوري د خند سره مخامخ شوه چې د دوی نه د مخه هلته تللي او ميشته وو. بيا دوی د لوبديځ په لور لاړل او ننني ايران کې ميشته شول. خو په دوی کې مادانو د نني ايران په شمال لوبديځ کې د مخزېږدې اومې پېړۍ په نيمايي کې د ميديا په نامه امپراتوري جوړه کړه چې يوه پېړۍ اوږده شوه او پارسا يې هم لاندې کړې وه او مرکز يې ننی همدان و. پارسوانو د مخزېږدې شپږمې پېړۍ په نيمايي کې مادانو ته ماته ورکړه او خپله امپراتوري يې جوړه کړه. دوی خپله مينه پارسه، پاچايي تېر يې بازارگادی او پاچايي کورنۍ يې هخامنشي ونوموله او په دې توگه پارسانو د باخترې اريايانو نه ځانونه بېل کړل. سيروس او ځای ناستو يې له مصر نه تر اباسين پورې امپراتوري جوړه کړه، خو لاس لاندې سيمې يې نيمه خپلواکو واليانو (Satraps) اداره کولې.

د اريايانو بله ډله د مخزېږدې نه څلور سوه کاله دمخه له اباسين نه تېره شوه او د هغه ځای اوسېدونکي درای ویديان يې لاندې کړل. دوی خپل هېواد بهاراته ورته ونوموه او په دې توگه دوی هم د پارسا غوندې ځانونه د باخترې اريايانو نه بيل کړل.

د اريايانو نورې ډلې لکه سورماتيان، ساکا، يوچيان او هفتاليان د منځنۍ اسيا په پراخو مخکو کې ميشته وو. اريايان له همدې ځايه نورو سيمو ته خوره شول او سورماتيان لومړی اريايي تېر دی چې اروپا ته تللي دي. خو څرنگه چې پښتانه په اريايانو کې د ساکا د لوی تېر سره د قوم والی او هم د ژبې له کبله نږدې دي او شايد په اصل کې سره

يو وي. نو لازمه کښم چې لږ غوندې د ساکا په اړه وغږېږم.

ساکا لکه چې مو د مخه یادونه وکړه د سپين پوتکو اريايانو لوی ټبر دی چې د هخامنشي امپراتورۍ پر مهال «د لوېديځ کاشغر، ختيځ کسپين او سردريا يا جيحون تر منځ سيمو کې کوچيانې ژوند لاره» ۶۳ اريانا ته د سکندر تر راتگ د مخه د ساکا ډېرې خانکې د اريانا په ډېرو سيمو کې خورې وې.

نايسا د کوفن (کابل) او اباسين تر منځ ښار کې اوسېدل. د کاکړ په وينا نياسايان په تاريخي لحاظ همغه نسل و لکه ساکای چې په هغه وخت کې په بدخشان او گاونډيو سيمو کې اباد وو. د نياسايانو هېواد لږ و ډېر د هېرودت له پکتیک سره سر خوري چې د پکتیانو يانې پښتنو هېواد و.

د ساکا بله لويه سيمه باختر او د هغه چاپېر سيمې وې. په بخدي کې د دهای قوم اوسېده چې د ساکا د لوی ټبر خانگه ده. ساکا د سکندر تر راتگ د مخه په سيستان کې هم اباد وو. په دې ترتيب داسې ښکاري «چې ساکا څلور زره کاله د مخه د اريايانو په لومړي لېږد کې په سغديانه، بکټريا (بخدي)، پامپرونو، سيستان، نای سا، پکتويک، کونړ او سوات کې اباد شوي وو.» ۶۴ د سکندر د راتگ او د اريايانو د دوهم ستر لېږد سره په دې سيمه کې ستر بدلونونه رامنځ ته شول.

ساکا او ستیان بيل ټبرونه وو

کاکړ وايي چې دې موضوع، چې ستیان او ساکا دواړه يو قوم او اريايي دي، د ډېرو پوهانو ليکنې بې گډې وډې کړې دي. په داسې حال کې چې دوی په واقعيت کې سره بيل قومونه دي او ستیان لا اريايي نه دي. خو دا دواړه قومونه د هېرودت د وخت نه راهيسې يو قوم گڼل شوي دي په دې چې هغه مهال د پارس خلکو ستیان ساکا بلل. د هېرودت په وينا «ساکا (Sacaе) چې ستیان (Seythian) دي لورې مخروطي ډوله جگې خولۍ په سر کوي. دوی پرتوگونه اغوندي او ځايي ليندې او چرکې او پر هغو برسېره تېرکي گرزوي، چې دوی يې ساگاريس (Sagaris) بولي. دوی اميرکايان (Amyrgian) ستیان وو، خو ساکا ورته ويل کېده ځکه چې پارسووان ساکا ته ستیان وايي.» ۶۵

دا چې ستیان او ساکا بيل ټبرونه وو، دوی په بيلو بيلو سيمو کې خوره وو او د ژوند لارې يې سره بيلې وې، د شلمې پېړۍ په پای کې د قبرونو په لوڅېدو سره تثبیت شوي دي. دوو انسان پېژندونکو گوردن چايلد او کېمبال دغه واقعيت تثبیت کړی او د لرغوني يونان جغرافيه پوه سترابو ستیان په اروپا کې په نښه کړي، په داسې حال کې چې د ساکا خلکو لومړنۍ مينه د لوېديځې التای غرونو او د کسپين تر منځ سيمې وې او د دغو دواړو

تېرونو ژوند لارې او کلتور سره توپير درلود.

د مخه مو يادونه وکړه چې ستیانو د روسيې په سوويل کې د سيميريانو دولت ړنگ او وروسته اريايي قوم سارماتيانو مات کړل او دوی د لوېديځ په لور لاړل. گوردن چايلډ د ارکيالوژي شواهدو له مخې وايي چې ستیان له ختيځ نه بلغارې، هنکري او ختيځ جرمني ته د يرغلګرو په توګه ننوتل. نامتو جغرافيه پوه سټرابو د لوېديځې اروپا په راین (Rhine) او برېتانيې ته نږدې د ستیانو يادونه کوي. دا به د اتلانتيک سمندر و چې ستیان يې په پای کې پر ځای ودرول، چې څو پېړۍ له منګوليا نه د لوېديځ په لور د کوچيانو په توګه خوځېدلي او په زيردې لومړۍ پېړۍ کې يې له خپلو کورنيو سره ځانونه لوېديځې اروپا ته ورسول او بيا ورک شول.

د چايلډ په وينا د ستیانو په اړه ژبني شواهد دومره لږ دي چې د هغو له مخې د دوی په اړه هېڅ ډول حکم کېدای نه شي. هنر يې د اريايانو له هنر نه اغېزمن و، خو د ستیانو د مړو د خېنولو دودونه د اريايانو او هندوانو نه بيل وو. د مشر په ګور باندې به د هغه مېرمنې او نوکران وژل کېدل او د وير کوټې چاپېر به اسونه سوري کېدل او نېغ درول کېدل. دغه دودونه د لوړې اسيا په غير اريايي کوچيانو کې په ټولو دورونو کې د مينيانو (Minns) غونډې ليدل شوي دي. د دغو ځانګړتياوو له مخې گوردن چايلډ «ستیان د هونانو، تاتارانو او پېشنګزانو (Peschenegs) مخکېنان» کښي. او په دې کې هېڅ شک نه کوي. ۶۶ د مري په سر دغه روايت د هېرودت روايت دی.

کاکړ وايي چې له دې شرحې نه جوته ده، چې ستیان نه يوازې ساکا، بلکه اريايي نه وو، د پښتنو سره په چم ګاونډ کې هم نه اوسېدل.

ساکا او هخامنشي امپراتوري

کاکړ وايي چې د ساکا اړيکې له هخامنشيانو سره له پيل نه ترخه وو. سيروس غوښتل چې د اراکسيس (Araxes) سيند يا سر دريا (جيحون) د هغه د امپراتورۍ پوله وي. دا د مساکيت ساکا سيمه وه او د هغو واکمني توميريس (Tomyris) ورته ځواب واستوه چې د دوی د هېواد د لاندې کولو تکل ونه کړي. د هېرودت په وينا سيروس هغې ته د واده وړانديز وکړ، خو هغه پوهېدله چې دی غواړي په دې پلمه د دوی هېواد لاندې کړي. بيا نو سيروس او توميريس تر منځ جګړه ونښته او هخامنشيانو ماته وخوړه. همدا چې مساکيتانو دښمن لاندې کړ او ډوډۍ او واين يې وخورل ویده شول. پارسيانو ناڅاپه په پټه پرې ودانګل، دېر يې ترېنه ووژل او نور يې ترېنه يرغمل کړل، چې په هغو کې د

مساکیتانو قوماندان سپاراگه پایسس (Sparagapises) د واکمنې تومیریس زوی هم و. هغې بیا د سیروس نه د یوه پیغام په ترڅ کې وغوښتل چې «مشوره درکوم چې زوی مې همدا اوس راکړه او زموږ د ملک څخه ووځه. که دغسې ونه کړي د مساکیتانو په خدای کوټي لمر باندې قسم کوم چې ... په درته سبق درکړم.» ۶۷ خو سیروس دا خبره ونه منله او د ملکي زوی چې د پارسیانو سره یرغل و، ځان وواژه. بیا نو تومیریس خپل ټول پوځونه غوندې کړل او په پارسیانو یې برید وکړ. دوی لومړی یو پر بل د غشيو کوزارونه کول، تر څو چې خبره لاس په لاس د چرکیو او نېزو جنګ ته ورسېده. د هېرودت په وینا «د پارسیانو ټول پوځ له منځه لاړ، چې په هغو کې په خپله سیروس هم و، چې له نهه ویش کلونو واکمنۍ نه وروسته [په مخزیردې ۵۳۰] له منځه لاړ.» ۶۸ هېرودت دغه جنګ تر نور ډېر سخت کني او وايي، چې ملکي تومیریس بیا د سیروس جسد ته په خطاب کې وویل، چې «زه ژوندی او سوېمنه یم، خو تا سره له دې هم په چل ول سره له خپل زوی نه په محرومولو سره بریاده کړې یم.» ۶۹

اریانا او ایران:

لرغونی افغانستان چې د ویلسن په وینا د هند او پارس تر منځ پروت و لرغونو یونانیانو د اریانا، په لرغوني پارس کې ایریا یا ایریانا، په سانسکرت کې اریا ورته یا ورشه او په زند کې اریاني ویجو په نوم یادېده. دا کلیمه او همدارنگه د اریا کلیمه چې د هرات د سیهې له پاره کارول شوی د سانسکرت اریا کلیمې نه راوتلې او د لوړ مانا لري. په دې ترتیب د اریانا مانا (لوړ هېواد او محترم (قدرمن) خلک) کېږي.

د اریانا کلیمه د یونیم زرو کلونو په یون کې د اوپستا له دورې (نږدې زر کاله مخزیردې) تر پنځمې زېږدې پېړۍ پورې دود وه. خو د یونان کلاسیکو لیکوالو د هغې نه یادونه نه ده کړې. اریانا د هغو یونانیانو د لیکوالو او جغرافیه پوهانو او په ځانګړې توګه سترابو له خوا یې یادونه شوې ده، چې د سکندر هم مهاله او یا د ده وروسته را څرګند شوي دي.

د ایران کلیمه پهلوي ده او په اصل کې د اریانا د کلیمې نه اخیستل شوې ده. دا کلیمه په زیات ګومان په ساساني دورې کې منځ ته راغلې ده. ایران د ساساني دولت اصلي زری جوړه او چې د عربو په تاریخي او جغرافیایي سرچینو کې د ایرانشهر په بڼه راغلی دی. ساسانیانو هغه مهال چې د کوشانیانو په دوره کې د افغانستان په زیاته برخه واکمن شول افغانستان د کوشانشهر په نوم یادوه. خو د ایران کلیمې په اسلامي دوره کې خپله

سياسي مانا له لاسه ورکړه او پر ځای يې د فارس کلیمه دود شوه چې په لرغونو سرچينو کې د يوې اريايي قبيلې پارسو د نوم نه راوتلی نوم دی. وروسته عربو د فارس له پاره د العجم کلیمه وکاروله. د ايران کلیمه د زيږدې يوولسمې پېړۍ راهيسې د شاهنامې په ذريعه را ژوندی شوه. خو د فارس اوسني هېواد له پاره هغه نه ده کارول شوې. دا په شلمه پېړۍ کې په ۱۹۳۵ کال کې رضاشاه پهلوي په رسمي توگه د بهرنيانو نه وغوښتل چې د فارس کليمې پر ځای د ايران کليمه وکاروي. په دې توگه د ۱۹۳۵ کال راهيسې زموږ لوېديځ کاوندي هېواد نوم په رسمي توگه ايران شو.

زرتشت او اوستا اوپه اوستايي دوره کې د پښتنو څرک

د محترم لطيف جان بابي يو نوي اثر «زردشت او اوستا» نومېږي چې کاکړ ورباندې ليکنه کړې او په هغې کې يې د زردشت هسکېدنه او تعليمات چې د اوستا په کتاب کې ټول شوي دي د تاريخ په رڼا کې بيان کړي دي تر څو په اوستايي دورې کې د پښتنو څرک ومومي. زموږ لرغونې ټاټوبی اريانا يو بسيا او ښېرازه هېواد و دا ځکه چې د يوې خوا د امو د رود چاپېر مخکې د غنمو په موندلو سره د کرنې وړ شوې چې په پايله کې يې کليوالي او ښاري ژوند منځ ته راغی او د بلې خوا د گاونډيو هېوادو «د سوداگرو، گرځندويانو، سوبمنو او کډوالی لويه لار کرزېدلې وه ... بيا په ورېښمې لارې (Silk Road) باندې يادې شوې، چې په پای کې يې چين، هند، پارس، او اروپا سره ونښلول.» ۷۰ او زموږ د هېواد د شتمنی سرچينه يې جوړوله. دغه لاملونه وو چې زموږ په هېواد کې مدنيتونه او دينونه منځ ته راغلل. «اريانه د ويدي مدنيت لومړنۍ ځانگه او د اوستايي مدنيت اصلي ټاټوبی و.» ۷۱ زموږ په لرغوني هېواد کې د نورو هېوادونو څخه مدنيتونه او دينونه هم خپاره شول. د يونان او هند څخه د کريک او بوديک مدنيتونه راغلل چې «بيا دلته د افغانستان د هنرمندانو په لاس اخته شوی، ترکيب شوی او همدلته يې روزنه شوې وه» ۷۲ او د کريک-بوديک مدنيت وغورځېد چې د دواړو مدنيتونو او هم يې زموږ د هېواد د مدنيت ځانگړتياوې درلودې او بيا د اسلام مدنيت په کې خپور شو.

لومړني انسانان د طبيعي قوتونو په وړاندې ناتوانه او بې وسه وو او د دې وېره او ډار ورسره وو چې د دغو طبيعي پېښو د پېښېدو له امله تباه او زيانمن نه شي. همدارنگه د دوی د پوهې کچه ډېره ټيټه وه او د دغو پېښو د پېښېدو په لاملونو باندې نه پوهېدل. دوی له دې امله د ځان ژغورنه دغو طبيعي قوتونو ته په عبادت کې لیده او دغه قوتونه يې خدايان بلل. لکه چې پاس مو يادونه وکړه زموږ په لرغوني هېواد کې هم دينونه منځ ته

راغلل. «په ويدي دوره کې ژغورنه طبيعي قوتونه ته په عبادت کې لټول کېده. په دې ډول هر طبيعي قوې ته په خدای لرلو باندې عقیده عامه وه او د خدایانو شمېر هم ډېر کڼل کېده.» ۷۳ په اوستايي دوره کې د زردبښتي دين بېنسټ ايښودونکی زردبښت «په نړۍ کې لمړنی مصلح يا د يو څو هغو مصلحانو څخه دی، چې د لومړي ځل له پاره يې د لوی څښتن د يوتوب عقیده وړاندې کړه او نړۍ يې د بدۍ او نېکۍ د قوتونو د مقابلې دغسې ډگر وگاڼه، چې په هغه کې د نېکۍ رب، اهورا مزدا، د بدۍ په رب اهریمن باندې غلبه کوي. د هغه په عقیده په اهورا مزدا باندې تکیه کول او د هغه دستورونه پرځای کول د انسان د ژغورنې سبب کېږي.» ۷۴

د اوستا په کتاب کې چې په زرگونو څرمنو ليکل شوی و، د زرتښت هسکېدنه او تعليمات په کې راټول شوي و. دا څرمنې په سمرکند او پرسي پوليس کې خوندي وې او د لوی سکندر په وخت کې سوزېدلې يا د منځه تللې دي. د زرتښت تعليمات د هغه د پيروانو په سينو کې د يوه نسل نه بل نسل ته ورل شوي دي. په پای کې د ساسانيانو په وخت کې غونډ او تاليف شول. د زرتښت دين هم د ساسانيانو او تر هغه د مخه د هخامنشيانو په وخت کې رسمي دين و.

د اوستا مرکزي موضوعات زردبښت او د هغه تعليمات دي. د زردبښت د زيږېدو ځای او مهال د مخزېږدې د ۶۰۰ او ۱۰۰۰ کلونو تر منځ اټکل شوی دی. دی د سپيتاماگانو (spitamas) په کورنۍ کې پيدا شوی دی. د اوستا په يوه کتابکوټي يشت (Yasht) کې دی د سپيتاما زرتښت (Spitama- Zarathushtra) په نامه ياد شوی دی:

«چې د هغه په زيږېدو او د هغه په لوېدو سره

اوبو او بوټو خونې وښووله

چې د هغه په زيږېدو او د هغه په لوېدو سره

اوبه او بوټي ډېر شول

چې د هغه په زيږېدو او د هغه په لوېدو سره

هرکلی ووايه

د سپېڅلي واحد ټولو هست شويو

هرکلی دې وي چې زموږ د پاره پيدا شوی

مذهبي لارښود

سپي تاما زرتښت» ۷۵

د زردبښت پلار پورا شاسپه ښودل شوی او اسپه کورنۍ ته منسوب و. د زردبښت د

زېږېدو ځای کره مالوم نه دی. ویل کېږي چې هغه به د فارس ختیځه خوا کې د بلخ یا باختر کومه سیمه وي. دا چې په اوستا کې د دغې سیمې نومونه په کراتو راغلي دغه اټکل تاییدوي. بله خبره دا ده چې د زردنېست دین د اوومې پېړۍ تر نیمایي یانې د اسلام تر خورېدو پورې د پخواني افغانستان یا اریانا او د پارس د خلکو دین و. بلخ ته د زردنېست د منسوبېدو بل دلیل دا دی چې اریایان د میلاد نه د مخه د یو او دوه زره کلونو تر منځ په بلخ کې اباد وو چې لرغونو یونانیانو د بکټریا یا باختر په نوم یادوه. همدارنګه د فارس او هند په مذهبي لیکنو کې د سیندونو او ځایونو عمومي یادونې څرګندوي چې افغانستان د دغه ستر لېږد وروستی پړاو چې هلته د اریایانو دغه دوه ډلې سره یو ځای شوې، یوه ډله یې په بلخ یا باختر کې پاتې شوه او بله یې له هندوکش نه واوښته او د هند په هوارو سیمو باندې میشته شوه. په هر حال زردنېست په بلخ کې د ویشتاسپه پاچا (king- Vishataspa) دربار ته لار پیدا کړه او دربار یې د پاچا په ګډون په خپل دین واړوه او له هغې وروسته د هغه دین په ټوله اریانا کې خپور شو. خو په پخواني افغانستان کې د زردنېستي دین تر څنګه بودايي دین ورو ورو رواج وموند چې د هغه بنسټ ایښودونکی بودا و. د هغه اصلي نوم (سه درتا ګواتما) و او وروسته په بودا باندې یاد شو چې په سانسکرټ کې د «رون شوي» مانا لري. دی د مخزېږدې ۵۲۳ کال په شمالي هند کې په یوې واکمنې کورنۍ کې پیدا شوی و. په بامیانو کې دوه غټې مجسمې او د هغو په چاپېر کې څو زره سمڅې د بودیزم څرګندې نښې دي. هندویزم خو د دغه دواړو دینونو نه د مخه هغه مهال چې د اریایانو نه یوه ډله د هند په هوارو جلګو باندې میشته شوه، بشپړ شوی و. د همدغو دینونو او هم په چین کې د کنفیو سیوس د دین او په لوېدیځې اسیا کې د موسویت او عیسویت او وروسته د اسلام دین د هسکېدو له امله ده چې دیني او اخلاقي ارزښتونه د ختیځ د ولسونو د کلتورونو مهم توکي جوړوي او هغه دوی د نړۍ د نورو ولسونو نه توپیروي. اسیا د نړۍ تر ټولو سترو دینونو وچه ده.

د زردنېست دین یا که په کره توګه ووايو د هغه فکري او عقیدوي سیستم د لرغونو اریایانو یانې د ویدي دورې د اریایانو له عقیدو نه اغېزمن و، چې پیل یې د څلورو ویداکانو په جمله کې د ریګویدا نه کېږي. د مخه مو یادونه وکړه چې د زردنېست تعلیمات د اوستا په کتاب کې ټول شوي دي. همدارنګه اوستا یا زند هغې ژبې ته هم راجع کېږي چې د هغو تعلیمات په کې بیان شوي دي. د اوستا کلیمه په زیات ګومان د وید (vid) د فعل نه اخیستل شوی وي چې مانا یې «پوهېدل» دي. په دې ډول د اوستا مانا پوهه یا عقل کېږي. د وید کلیمه چې د سانسکرټ کلیمه ده او مانا یې «پوهه» هم د وید له کلیمې نه جوړه

شوي ده.

د اوستا ژبه د سانسکرت سره نږدې ده. لومړی یې د لرغونې اریانا او دوهمه یې د لرغونې هند ژبه وه. د اوستا کلیمه د لومړي ځل له پاره په پهلوي ژبه کې د اوستاک- و- زند (Avistak-u- Zand) په بڼه راغلې چې هغه په پارس کې له زردبښت نه پنځلس پېړۍ وروسته منځ ته راغلې ده. زند په پهلوي کې د تفسیر مانا لري. په دې ډول زند د اوستا تفسیر کېږي. اوستا د څلورو ورو توکو ټولګه ده چې نومونه یې یثنا (Yasna)، و سپرید (Vispered)، یشتونه (Yashts) او ونیدیداد (Vindidad) دي. مهم یې یثنا دي او کاتاکان (Gaths) د هغه لرغونې برخه ده چې د ویدي دورې د لیکنو سره ورته والی لري. کاتاکان د اوستا تر ټولو مهمه برخه ده چې له نورو نه د ژبې، شپې او وزن په لحاظ توپیر لري. د دغې برخې اصلي اهمیت په دې کې دی چې هغه د زردبښت د تعلیماتو، وعظونو او الهامونو ټولګه ده او هغه په عمومي توګه د اهورا مزدا او اهریمن تر منځ جګړه، له دغې جګړې سره د انسان اړیکه او د بدبو په ځواکونو باندې د نېکۍ د ځواکونو له وروستي بري نه غږېږي. یثنا چې کاتاکان د هغه یوه برخه ده د زردبښت د دین بنسټ جوړوي چې هغه د نېکۍ او بدۍ د مقابلې په نامه خلاصه کېږي. زردبښت په یثنا کې وايي «هغه دوه لومړني ارواح چې هغوی خپل ځانونه د غبرګوني په بڼه په عمل کې ونښودل د بدۍ او نېکۍ فکر، قول او عمل دي او د دوی تر منځ عاقلان پوه شول چې نېکۍ به غوره کوي او احمقان به هغسې نه کوي» ۷۶ په دې ډول اخلاقیات د زردبښت د تعلیماتو بنسټ دی. تر زردبښت د مخه د دوو ډولو ارباب النوع اهوراگان او دیوان عبادت رواج درلود. څنګه چې هغه وخت انسان د طبیعت سره نږدې ژوند کاوه هغه د خپل ژوند له پاره د خپل چاپېر په طبیعي قواو باندې ډېره ډډه لکوله. دی زر په دې فکر شو چې کټه یې په دې کې ده چې هغه پټ قوتونه له ځان نه راضي وساتي چې د طبیعي لوري لارښونه او اداره کوي.

ده فکر وکړ چې لاندې اوبه، مځکه، ونې او فصلونه دي. د پاسه لمر، ستوري، سپوږمۍ او ورېځې دي. دا د اهوراگانو یا نه لیدونکو خاوندانو په قدرت کې دي. له یوه نه یې مننه وکړه چې د ورځې له خوا نړۍ روښانه کوي او تودوي، بل یې ولمانځه چې په فصلونو باندې یې د باران نعمت اوږوي او دی قادر کوي چې ښه حاصلات ټول کړي، او بل ته یې د دعا لاسونه پورته کړل چې ده ته روغتیا ورکوي. په دې ډول انسان سوکه سوکه په لوړو نه لیدونکو ارواحو او د هغوی د ورکړې او بخشش په قدرت باندې عقیدتمن شو. څنګه چې هغوی د ده په فکر په ده باندې ډېرې لورېښې کړې ځان یې موظف کړ چې د هغو عبادت وکړي او په جشنونو او ځانګړو ورځو کې د ډوډۍ او پخو

غوښو خيراتونه ور وړاندې کړي.

خو تجربو زړ وښودله چې د اهوراگانو قدرت مطلق نه دی. څه وخت چې سختې سيلې پرې راغلې او بېلې پرې واورېدلې، څه وخت چې سرو ورېږدواوه او تودوښيو وربراوه او هغه وخت چې وبا او طاعون ووهه او توپانونو او زلزلو ټکان ورکړ دی دې پایلې ته ورسېد چې بدکاره ارواح به هلته هم اوسي چې له ښو ارواحو سره مقابله کوي. په دې ډول تخليقي تصور طبيعي نړۍ د يو لړ بدکارو قواو ځای هم وباله چې هغوی د خیر رسولو د ملایکو سره تل جگړه کوي. انسان د دغو ملایکو دښمنان د خپل ځان دښمنان هم وبلل. خپل خیر یې په دې کې وگاڼه چې په نېکو قواو باندې په ټینګه عقیدتمن وي او له هغو سره د گډو دښمنانو په وړاندې مرسته وکړي. دغه عقیده خپره شوه چې انسان کولی شي د قربانیو په وړاندې کولو او د ځانګړو مراسمو په اجرا کولو سره له دیوانو سره په جگړه کې اهوراگان پیاوړي کړي.

ویل کیږي چې زردښت په هغې کلیوالي کرونده کړې کورنۍ کې زېږېدلې و چې یوازې یې د اهوراگانو عبادت کاوه. نو د هغه د تعلیماتو مرکزي ټکی دا شو چې د اهورا مزدا یا عقلمن خدای د کایناتو یوازینی پیدا کوونکی دی او د دېوانو عبادت د بدی عبادت دی. د هغه په عقیده امیښا- سپیتاګان (Amesha-Spetamas) اوه اسماني موجودات دي چې د اهورا مزدا د استازو په حیث دنده اجرا کوي. د هغو په وړاندې خبیثه ارواح چې تر ټولو مهم یې انګرا مین یو (Angra main u) دی چې د دوی د استازي په حیث د امیښاسپیتاګانو په وړاندې نېغ ولاړ دی.

د زردښت په عقیده دغه نړۍ د دوی د جګړو ډګر دی چې په هغې کې سپیتا من یو د نیکۍ کارونه کوي او انګري من یو د بدۍ کارونه کوي. خو دا د اهورا مزدا حکم دی چې رښتین توب به په پای کې بریالی کیږي او زړه نړۍ به په اور سره له منځه ځي او نوې نړۍ به د هغې په ځای منځ ته راځي. اهورا مزدا خپل مطلق قدرت له لاسه ورکوي او له سپیتا من یو سره یو ګڼل کیږي، په داسې حال کې چې انګري من یو چې د اهریمن استازی دی له هغه سره مخالفت کوي. اهریمن د بدۍ ګانو رب د اهورا مزدا یا د نېکی خدای سیال او مخالف دی.

د زردښت دین د وحدانیت په لور روان دین دی ځکه چې د هغه په فکر وروسته له هغه چې اهورا مزدا به د خپلو استازو د مجادلې په پایله کې د اهریمن استازی له منځه وړي. په پای کې به په کایناتو کې یوازې یو خدای یاني اهورا مزدا پاتې کیږي او وحدانیت به په دې ډول حقیقي کیږي. کوم هغه اخلاقیات چې زردښت تبلیغول د کرونده کړی په

ټولنيز ژوند ولاړ و. د هغو له مخې ښه سړی هغه څوک دی چې د سولې او ښه کاونډیتوب په روحیه سره خپلې رمې پیاوړې او کرښه کوي. دی باید د دېوانو له اطاعت نه سر وغړوي په دې چې هغوی د خبیثه ارواحو سره په گډه د اهورا مزدا مخالفت کوي او د کرونده کړی ژوند له گواښ سره مخامخ کوي. دی د کرونده کړي کسب د شیطانت او خیانت له منځه وړونکی او پرخلاف د پرېمانۍ او نېکمرغی راوړونکی بولي. دغه فکر په ونډیداد کې داسې بیان شوی دی:

«په رښتیا ده بدمرغه هغه مخکه چې د ډېر وخت د پاره د بند[ز]کړ له خوا شاري پاتي کيږي او هغه یوه ښه کرونده کړ ته ضرورت لري.

حتی د یوې ښکلې پیغلې په شان
چې تر ډېره وخته یې ماشومه وي
او یوه ښه مېړه ته ضرورت لري
سپي تامار زرتښته! هر هغه څوک چې مخکه کړي
په کین لاس او په ښي سره
په ښي لاس او په کین سره
هغه ته راوړي هغه په پرېمانۍ سره» ۷۷

دغه فکرونه شاید د زردښت د وخت او د هېواد د ټولنيز ژوند انعکاس وي چې هغه له پوښوونده توب نه کرونده کړي ته د اوښتني مرحله وه. زردښت کرونده کړ په ډول ډول ستایلي دي. هغه یې څارو او خواریکښ ښوولي چې لږ خوب او ډېر کار کوي، د سباوون په څرک سره له کوره وځي او د تیارو په خوړېدو سره په کور ننوزي، دی ټوله ورځ په مخکه کار کوي او په دې ډول د انسان نېکمرغي ډېروي.

زردښت په خپلې عقیدې کې بل غټ مقام اور ته قایل شوی دی. اور یې د اهورا مزدا زوی گڼلې چې هغه مزدینتيايي کورونه روڼوي. د زردښت د پاره د کور نغری د محراب په شان و چې کورنیو یې په چاپېر عبادت کاوه. په دغه دین کې نغری دومره اهمیت لري چې د هغه په څلېدو او هغه ته د قربانی په ورکولو سره د کورنیو د تللیو کسانو ارواح حاضرېوي. د دغې عقیدې له مخې کورونو ته د مرو د ارواحونو ورتگ او د کورنیو له خوا د هغوی په نومونو خیراتونه ورکول تر اوسه یو پیاوړی دود دی.

زردښت شاید لومړی لارښود وي چې د دوه گونتوب فکر یې د اخلاقو په بنسټ بیان کړی دی. شونې ده چې د همدغه اخلاقي قوت له امله وي چې دغه عقیده چې د اریانا وای

جاه په خاوره کې د کيانونو په دوره کې د وشتاسپه پاچا په واکمنۍ کې هسکه شوې وه، وروسته د پارس د هخامنشيانو، د يونان او باخترې او ساسانيانو په دورو کې د اوومې پېړۍ تر نيمايي يانې د اسلام تر خورېدو پورې يې د نړۍ د يوې برخې انسانانو په زړونو او دماغونو باندې حاکميت وکړ او د هغوی ژوند يې د خپلو اصولو له مخې تنظيم کړ، په دې چې اخلاقي بنسټ په اصل کې ډېر ټينگ بنسټ وي لکه چې يوه امريکايي متفکره اين رېند (Ayn Rand) وايي «د اخلاقياتو قوت د ټولو عقلائي قوتونو په ډله کې تر ټولو ستر قوت دی.» ۷۸ د زردبښت دغه دوه گون فکر د بدۍ او نېکۍ په نومونو په ولسي کيسو او روايتونو کې دوام کړی دی.

د دوه گونتوب فکر د څوگونتوب د فکر په پرتله په پای کې نيمگړی فکر دی. په دې چې هم په فکر او هم په واقع کې د ضدينو تر منځ نور فکرونه او نور انتخابونه شته لکه د انقلاب او ضد انقلاب تر منځ اعتدال يا تدریج. د زردبښت د اخلاقي دوه گونتوب په اړه بل مهم ټکی دا دی چې اخلاقي مفهومونه مهالونو، ځايونو او کلتورونو ته منسوب وي، خو هغه به په ټولو مهالونو، ځايونو او کلتورونو کې په هم هغه مفهوم وجود ونه لري. د زردبښت د بدۍ او نېکۍ مفهومونه په مطلق ډول په هر ځای، هر مهال او هر کلتور کې موجود وي خو د هغه منځپانگه د يوه ځای نه بل ته، د يوه مهال نه بل ته او د يوه کلتور نه بل ته توپير لري.

زردبښت په اصل کې د تاريخ له نظره ډېر مهم دی. اوستا د بخدي دورې اريانا وای جاه د لومړي ځل له پاره د تاريخ رڼا ته سپارلی دی. د ويدي دورې په اړه مالومات د نشت په حال کې دي خو د اوستايي دورې په اړه هم يوناني سرچينو، د فرديوسي شاهنامې، عربي او پارسي سرچينې او ميخي خطونه مالومات ورکوي خو دا ټول ډېر لږ، ډېر تيت او دوهم لاس سرچينې دي. يوازې اوستا د کياني دورې په پای کې د وېشتاسپه پاچا په عصر کې د بخدي اريانا وای جاه په اړه تر ټولو سرچينو نه په کراتو زيات مالومات ورکوي. اوستا يوه بې جوړې ځايي سرچينه ده او بې جوړې به وي.

که څه هم ايرانيانو او ځينو باندنيو زرتښت او اوستا په ايرانيانو پورې تړی خو تاريخي حقايق دا کار ناسم گڼي.

کاکړ وايي چې په اوستا کې د ايران او ايرانيانو نومونه نه شته. په هغه خاوره کې چې له ۱۹۳۵ راهيسې د ايران په نامه يادېږي په هغه مهال کې کوم پېژندل شوی سياسي نظم منځ ته نه و راغلی. د کياني دورې نه وروسته د مخزېږدې نه د مخه د اوومې پېړۍ په نيمايي کې د اوسني ايران په شمال ختيځ کې مادانو د ميديا په نامه امپراتوري جوړه کړه

چې يوه پېړۍ اوږده شوه او پارسا يې هم لاندې کړې وه او مرکز يې ننی همدان و. بيا د مخزېږدې نه د مخه په ۵۵۸ کې د سيروس په سروالی سره په پارس کې د هخامنشي واکمني پيل شوه. دغه امپراتوري ورو ورو له اباسين نه تر مصره پورې پراخه شوه، تر څو په ۳۳۰ مخزېږدې کې لوی سکندر له منځه يووړه. هېرودت په خپل تاريخ نومي اثر کې د مخزېږدې پنځمې پېړۍ کې دغه کورنۍ هخامنشي، هېواد يې پارس او اوسېدونکي يې پارسيان ياد کړي، نه ايران او ايرانيان يا ان اريايان. د ايران کليمه چې پهلوي ده او له اريانا څخه راوتلې ده شونې ده د لومړي ځل له پاره د ساسانيانو په دوره کې رامنځ ته شوې وي. د ساسانيانو واکمني په ۲۲۶ زېږدې کې ارتخ شير پاپه کان پيل کړه او په ۶۵۱ زېږدې کې عربانو له منځه يووړه. په اسلامي دوره کې عربانو پارس د العجم په نامه ياد کړ. د ايران کليمه د يولسمې پېړۍ نه وروسته په شاهنامه سره بيا دود شوه. خو دغه کليمه د پارس پر ځای تر نولسمې پېړۍ نه د مخه کارول شوې نه ده. د ايران کليمه د ۱۹۳۵ کال کې د پارس په ځای د دغه ملک رسمي نوم شو. په دغه کال کې رضاشاه پهلوي له باندینيو نه وغوښتل چې د پارس په ځای د ايران کليمه وکاروي.

د زردبنت په وخت کې بلخ يا بخدي د کيانانو د واکمنۍ منځی و. اسپه يې واکمنه کورنۍ او اوسېدونکي يې اريايان وو. دوی خپل هېواد د اريانا وای جاه په نامه يادوه. هنري وېلسن په خپل کتاب «لرغوني اريانا» کې د يونان او باختري پاچايانو د هغو سکو له مخې کښلی چې يوه انگرېز گرځندوی چارلېز ميسن د نولسمې پېړۍ په درېيمې لسيزې کې د خپل سفر په موده کې په افغانستان او بلوچستان کې ټولې کړې وې. تاريخپوه وېلسن د دغو سکو له مخې ثابته کړه چې اريانا د هغه هېواد نوم و چې د پارس او هند تر منځ پروت و. دغه اريانا د يونان او باختري دورې اريانا وه چې د لوی سکندر د مړينې وروسته منځ ته راغلې وه. د يونان او باختري دورې د پيل نه د مخه هخامنشي امپراتوري د سکندر په سوبو سره د منځه تللې وه. پارس موجود و خو د برمه لوبدلې و. دا چې د يونان او باختري قلمرو په دغه مهال کې د اريانا په نامه يادېده څرگندوي چې لږ تر لږه په دغه دوره کې د ويدي دورې اريانا وای جاه يوازې د اريانا په نامه يادېده. ۷۹

د ويدي دورې او بلخ په اړه تاريخپوه احمدعلي کهزاد وايي چې «پکت يا پښت يا بخت يوه ريښه ته گرځي او د اريايانو باختري تر ټولو پخوانيو ويدي قبيلې دي چې د مهاجرت په مهال دوې برخې شوې او يوه برخه يې په بخدي کې پاتې شوه.» د هغې بلې ډلې د خلکو په اړه بيا ليکي چې «هېرودت د پکتي يا پکتيس يا پکتويس د قوم او د هغوی د اوسېدلو ځای پکتیکا يا پکتيا چې د دغو نومونو په ريښه کې د بخد يا بخدي کليمه ساتل شوې ياده

شوی ده.» د دغو وروستيو په اړه د هېرودت خپل عبارت دا دي: «هلته نور هنديان شته چې د پکتیک (Pactic) خلک گاوندیان دي او دوی د هند په شمال کې اوسېږي.» دی دا هم وایي چې دغه پکتیان د «باختریانو (Bactarian) په شان ژوند کوي.» ورپسې وایي چې «د هنديانو په ډله کې دوی تر ټولو ډېر جنگیالي دي.» ۸۰ د جارج مارکسټرن د اریایي ژبو کارپوه د پښتو په اړه دا نظر چې پښتو ژبه د اوستا له کاتانو نه راوتلې بولي په دې ډول چې د کاتاگانو په سندرو پورې اړه لري، چې د اوستا ډېره پخوانۍ برخه ده، دا پورته خبره توجیه کوي. که څه هم پښتو د اوستا نه پخوا منځ ته راغلې ده.

د ویدي د پکت یا پکتیک او د اوستا د بخدي یا بکتريا تر څنګ بله موضوع دا وه چې د هغه اوسېدونکو ځانله کوم سیاسي نظام درلود یا نه؟ شواهد ښيي چې دوی په بخدي کې د اوستا په دوره کې او په ځانګړي ډول د سکندر تر راتګ نه د مخه ځانله سیاسي نظام درلود، لکه چې د اریا یا هرات خلکو او د اراکوزیا یا کندهار خلکو سیاسي مشران او په زیات کومان واکمني کورنۍ درلودې، خو په دغه مهال کې هغه ټولې د هخامنشي واکمنو تر اغېز لاندې وې.

اریایانو د کیاني افسانوي دورې وروسته د بخدي سلطنت جوړ کړو. د بخدي سلطنت تر ټولو مهم سلطنت و. هلته د اسپه کورنۍ واکمنه وه. د بخدي نوميالی واکمنان دلهراسپه، وشتاسپه، ګرشاسپه، اروت اسپه، په نومونو یاد شوی دی. د وشتاسپه لوی وزیر د جم اسپه او زرتښت پلار د پوروشاسپه په نومونو پیژندل شوي دي. اسپه په اوبستا کې د اس په مانا کلیمه ده. اسپه چې د اس مونث دی او په همدغه بڼه تر اوسه په پښتو کې ژوندی ده. په دې حساب د اسپه کورنۍ پښتنه او واکمنان یې پښتانه کېږي.» ۸۱ میر غلام محمد غبار، احمدعلي کهزاد، یعقوب حسن خان او عبدالرحمن پژواک لا د مخه دا نظر وړاندې کړی وو چې «... د بکتريا (بخدي) لرغونی هېواد د افغانستان لومړنۍ پاچایي ده. ځکه چې د پښتون کلیمه له بکتريا نه راوتلې ده.» ۸۲ دا چې د افغان او ځینو نورو پښتني نومونه د اس له کلیمې نه راوتلي دي همدغه نظر پیاوړی کوي چې د اسپه کورنۍ پښتنه وه.

ستر سکندر او پښتانه

سکندر د خپل پلار فیلیپ د مړینې وروسته یونان یو موتی کړ او ویې پتيله چې اسیایي یونان د هخامنشي واکمنۍ نه ازاد کړي. ده د لوېدیځ له خوا په هخامنشي امپراتورۍ یرغل وکړ او د یوې وړې نښتې په ترڅ کې پاچایي کورنۍ د سکندر لاسته ورغله، چې هغه په

عزت سره ورسره چلند وکړ. داريوش سکندر ته وړاندېز وکړ چې له لور سره يې واده وکړي او په ولور کې يې له فرات نه تر لوېديځ پورې د امپراتورۍ سيمې ومني، خو سکندر دغه وړانديز رد کړ. سکندر د فارس امپراتور داريوش ته په څو جگړو کې ماتې ورکړه. سکندر د هخامنشيانو پلازمينې ته اور واچاوه او د اوستا نامتو اثر چې د غوايي په زرگونو څرمنو ليکل شوی و د منځه لاړ او يوازې يوه کوچنۍ برخه يې پاتې شوه. وروسته داريوش چې د سکندر له لاسه يې څو ځله ماتې کړې وه د بخدي والي بېسوس له خوا ووژل شو او په خپله بېسوس خان پاچا اعلان کړ. خو سکندر د هخامنشي فارس د ښکولو وروسته په باختر کې د لويو ستونزو سره مخامخ شو. باختريانو لومړی د بېسوس او د هغه د مړينې وروسته «د پېنتون سپتامنز (Spitamenes) په سروالي له ځايي خلکو له دغسې مقاومت سره مخامخ شوی، چې د هخامنشيانو په امپراتوري کې له دغسې ټينگ مقاومت سره مخامخ شوی نه و.» ۸۳ سپتامنز له سکندر سره کلکې جگړې وکړې چې نږدې دوه کاله اوږدې شوې. سکندر په پای کې د خپل هوډ نه، چې د امو د رود اخوا سيمې لاندې کړي، واوويست او هند ته د تگ په فکر کې شو. ده په باختر کې شپږ پوځي چوڼۍ چې د سکندر يې پنامه ياديري جوړې کړې چې وروسته په ښارونو بدلې شوې. ده د باختر د سيمه يز واکمن اوکسيارتز د لور رخشانې سره واده وکړ او وروسته د هغه ځای ناستي سلوکوس نيکاتور د سپتامنز د لور اپامه سره واده وکړ او د کاکړ په وينا وروسته د دوی زوی د لومړي انتيوکوس په نامه پاچا شو. سکندر بيا د هندوکش نه رااوويست او بگرام ته راغی. سکندر د بگرام نه د نني جلال اباد په لوري وخوځېد. د جلال اباد د ښار بنسټ په ۱۵۷۰ کې د مغولو امپراتور جلال الدين اکبر ايښی دی. جلال اباد د خپل موقعيت له مخې يو مهم ښار دی چې د کابل او پېښور تر منځ د سوداگرۍ مرکز دی. جلال اباد د لوی ننګرهار حکومتي مرکز هم و. د امير حبيب الله خان، پاچا امان الله او باچا خان مزارونه هم په جلال اباد کې دي. هلته د سکندر لښکرې دوه برخې شوې چې يوه برخه يې د خيبر د درې له لارې اباسين ته روانه شوه او بله يې د کنړ لاره ونيوله چې په خپله دی هم ورسره مل و. په کنړ، باجور او سوات کې د پېښنو د کلک مقاومت سره مخامخ او ټپي هم شو. سکندر بيا د هند په لور لاړ، د اباسين نه واوويست او جيلم ته ورسېد چې بيا يې پوځ د وړاندې تک نه ډډه وکړه او د بلوچستان له لارې يونان ته د تگ په لاره کې بابل ته ورسېد او هلته د درې دېرشو کالو په عمر مړ شو. په دې توګه سکندر «په خپلو بې جوړو نظامي بريو سره په ټولې مالومې نړۍ کې د لوی سکندر په نامه ياد شو. هغه نه يوازې ټول يونان لاندې کړو، بلکې د هخامنشي پراخه امپراتوري يې [هم] لاندې کړه او...د ده امپراتوري له يونان

نه تر اباسين نه اخوا پورې غخبېدلې وه.» ۸۴

سکندر که څه هم په اريانا کې څلور کاله تم شو خو اغېزې يې ژورې او تلپاتې شوې. ډېر غټ ميراث يې د يونان باختري دولت و، چې په مخزېږدې ۲۵۶ کال کې د يودوتس په مشرۍ پيل شو او څه باندې يوه پېړۍ وروسته له منځه لاړ. د يونان باختري دولت په وخت کې به د يونانيانو شمېر زيات وو، چې څه باندې يوه پېړۍ يې واکمني وکړه. سکندر په باختر کې ډېر يونانيان گومارلي وو، چې د باختر دېرش زره ځوان په پوځي چارو کې وروزي. د يونانيانو او ځايي خلکو تر منځ اړيکې تر دې کچې ښې وې چې د نولسمې پېړۍ تاريخپوهانو «... د ټولو لرغونو مدنيتونو ښه توب په باختر کې وليد» يانې چېرته چې يونانيانو ځايي خلک «... کتور سياسي او اجتماعي ملکري وگرځول.» ۸۵ په دغې دورې کې د اريانا اقتصاد دومره ډېره وده وکړه، چې اريانا د زرو ښارونو د هېواد په نامه ياد شو. واکمن نيکاتور په ۳۰۰ مخزېږدې کې د آي خانم ښار جوړ کړی و، چې د اتن د ښار په شان د يوې جگې غونډۍ په چاپېر کې حکومتي او شخصي ودانۍ لرلې او يونانيانو له هغه ښار نه واکمني کوله. دغه ښار په ۱۹۶۴ کال کې فرانسوي لرغون پوهانو لوڅ کړ، چې څرک يې پاچا محمد ظاهر ورکړی و. په اريانا کې د يونان د باختري واکمنۍ پر مهال د سپينو زرو سکې دومره ډېرې په چلند کې وې، چې د نولسمې پېړۍ په دريښ لسيزې کې د چارلز ميسن په نامه يوه انکليس گرځندوی ډېرې سکې ترلاسه کړې او بيا پوهاند ولسن د هغو پر بنسټ د لرغوني اريانا په نوم يو مستند اثر وکيښ. ۸۶

په اصل کې سوداگرۍ د اريانا په شتمن کېدلو کې ستر اغېز درلود. مهمه دا ده چې د اريانا خلکو لږ و ډېر د اتنيانو غونډې هغه فکرونه منل چې ورته معقول ښکارېدل. دوی د انگرېزانو تر لومړي يرغل پورې ښه پراخ نظره وو، تنگ نظره نه وو. د نولسمې پېړۍ د ټولو باندنيو گرځندويانو په نظر هغومره چې افغانان ازاد فکره وو، د اسيا بل هېڅ ولس هغسې ازاد فکره نه و.

په افغانستان کې د يونانيانو تلپاتې ميراث شايد نورستانيان وي، چې په عام نظر د سکندر د پوځ نه پاتې دي. دوی د سکندر د پوځ نه پاتې نه دي. ځکه چې سکندر د ۳۲۷ مخزېږدې کال د نومبر نه د بل کال تر فبروري پورې څلور مياشتې په کونړ، باجوړ او اسپه سيو (اوسنيو يوسفزيو) له ډېر سخت مقاومت سره مخامخ او تپي هم شو. هلته چې ده د کلک مقاومت نه وروسته دنکې کلاکانې ونيولې ټول اوسېدونکي يې له تبغ نه تېر کړل. دوی او يوسفزي يو د بل سخت دښمنان شول او د يونانيانو د پوځ د کومې برخې د پاتې کېدو شونتيا يې د منځ نه يوره. د هغه په اړه اټرونو کې هم د دې يادونه نه شته چې هغه به هلته

خپل سرتيري پرې ايښي وي. خو د نورستانيانو او يونانيانو تر منځ داسې گډې ځانگړتياوې شته چې د هغې له مخې شونې ده ډېر نورستانيان په اصل کې يونانيان وي. دا شايد له دې امله وي چې باختري يونانيان د ساکانو او يوچيانو له لاسه له باختر نه ووتل او په لغمان، باجوړ او بلورستان ته هغه وخت پناه وړې وي. دوی په يولسمه پېړۍ کې د سلطان محمود له خوا تر فشار لاندې ونيول شول، چې مسلمان شي او دوی مسلماني نه غوښته. وروسته دا بلورستان د «کافرستان» په نامه ياد شو. تاريخپوه غلام محمد غبار ليکي: وروسته له دې چې يونانيان د تل له پاره نسکور شول، په باختر باندې د تخاريانو په هم هغو لومړيو جگړو کې د ماتې له امله يو شمېر مدني باختریان د بلورستان درو ته پناه يوره او د ځای د خلکو سره د گډېدو په حال کې يو شمېر د باختري مدنيت خپل دودونه او خوښونه يې هغوی ته يوړل.» ۸۷

کاکړ وايي چې دغه «مدني باختریان» هماغه يوناني اصله باختریان وو، چې د دين، دود او رواج او د ژوند د شېبې له مخې له گاونډيانو نه بېل او اتنيانو ته ورته وو. دوی هم د يونانيانو غوندې په يو لړ خدايانو معتقد وو، چې امرا يا يمرا په نامه خدای يې تر ټولو مشر و. د اوتاه په نامه يوه روحاني يې مذهبي دودونه پرځای کول. دوی هم ښځينه خدايانې د ديازاني، کروماتي او نېرمالي په نومونو هم درلودې. په دوی کې هم مريتوب دود و. په دواړو کې مريان کسبگر وو. د امير عبدالرحمن په وخت کې چې «کافرستان» ونيول شو، ډېرې لرکينې مجسې ترېنه ټولې شوې، چې په کابل کې ورکې شوې. دوی هم د يونان د کسبي مريانو غوندې د کار پر مهال په څوکۍ يا لرکين کتکي باندې کېناستل. دغه څوکۍ په اصل کې د يونانيانو موندنه وه. په مصر او منځني ختيځ کې له هغې نه گټه نه اخېستل کېده، خو په کافرستان کې له هغه نه کار اخېستل عام و. بله ځانگړتيا چې يوازې په يونان او کافرستان کې يې څرک ليدل شوی، د ټولني نه د نامطلوبه کسانو شړل وو. په اتن کې هر هغه څوک، چې فکر کېده دولت ته به زيان ورسوي، د شورا په پرېکړې سره به لس کاله تبعيدېده. په کاپرستان کې يو قاتل د قومي شورا (Vrey) له خوا له ټولني تر هغه شړل کېده، چې ورباندې ايښودل شوې جریمه چې درنده به وه، ادا کړي.

د يونانيانو سره د افغانانو په تېره د پښتنو گډ ټکي هم لږ نه دي. يوه بېلگه يې د ناموس کلیمه ده. ناموس افغانانو ته د يو دوديز قانون غوندې ارزښت لري. په يوناني ژبه کې هم «ناموس هم د عرف يا قانون مانا ورکوي». په يونان کې «ناموس اول په عنعني او وروسته په قانوني ډول تثبیت شو» سوکرات به ويل چې «د ښار د ناموس [قانون] اطاعت وکړئ. دا د ښه عمل کولو لار ده.» ۸۸ څنگه چې پښتو او يوناني دواړه اريايي ژبې دي،

شونې ده چې د ناموس کلیمه د اول نه په دواړو ژبو کې دود شوې وي، لکه چې په پښتو او انګلیسي کې اوس هم ډېرې کلیمې په یو ډول یا نږدې په یو ډول ویلې کېږي: تندر (Thunder)، وله (Willow)، دربول (Drub) او ټبر (Tribe). د سکندر بل میراث د هغه نوم دی، چې په افغانانو کې عام دی.

پارتیا

کهزاد وایي چې د پکتیانو یوه څانګه د هغو مهاجرینو سره چې د لوېدیځ خوا ته لاړل د هریرود د هغې خوا نه د خزر تر سواحلو پورې نږدې ځایونه ونيول او د پارتیا په نوم یاد شو. پارتیان د دهایی ساکا د پرنای څانګې خلک دي.

پارتیانو دوه کاله وروسته له هغې چې د یونان- باخترې دولت په بلخ کې د یودتس په مشرۍ واک ته رسېدلی و د یونان- باختر په لوېدیځ کې د پارت دولت بنسټ د ارساس په سروالی کېښود. «پارتیه د دامغان، شاه رود، جوین، سوزار، نیشاپور، طوس، ترشیز له سیمو او د هریرود له حوضې نه جوړه وه.» ۸۹ د میرداتس په پاچایي کې د پارتیا واکمني په امپراتورۍ واوښته چې په اروپا کې د روم د امپراتورۍ سیاله شوه او پنځه پېړۍ یې په پارسانو واک وچلاوه. وروسته د ساساني پاچا اردشېر د پارتیا وروستي پاچا ارته بانوس ته ماتې ورکړه او د پارتیا امپراتوري ته یې د پای ټکی کېښود. اردشیر پارتیا د خراسان په نوم ونوموله تر څو د پارتیا هویت له منځه یوسي. زموږ ځینې افغان وروڼه چې د خراسان نارې وهي ښه به دا وای چې د ایران نه یې د پارتیا د بېرته تر لاسه کولو نارې وهلی او پارسي خراسان یې بېرته پارتیا نومولې وای.

د اریایانو دوهم ستر لېږد

هغه مهال چې د چین دېوال جوړ شو او چینایانو د هغه په مرسته وکولی شول چې د مغولو د یرغل نه ځان وژغوري نو مغولو د لوېدیځ په لور یرغل وکړ او د دغه یرغل په پایله کې د دغو ولسونو دوهم ستر لېږد پیل شو. دوه زره دوه سوه کاله د مخه د مغولو د یرغل په پایله کې یوچیان او یفتالیان هم مهاجرت ته اړ شول. نو بیا دغو یوچیانو، یفتالیانو او نورو تر فشار لاندې د ساکا څو څانګې له سغدیانې نه ښکته شوې، باختر یې ونيو او بیا د هغو په فشار له بخدي نه سیستان ته واوښتل او هلته میشته شول. دوی خپله مېنه په ساکستانه او بیا په سیستان یاده کړه چې د ګوندو فارس په مشرۍ یې یوه

امپراتوري جوړ کړه.

«پوهاند فرای د سيستان ساکا د پښتنو لور نيکونه کني او وايي چې د اسلامي پراختيا په برابر کې د زنبيلانو ټينگ مقاومت يو دليل په يقين سره هغه جنکيالي قومي خلک، د افغانانو يا پټانانو نيکونه وو، چې د يرغلګرو سره [د] جنگ له پاره يې مېړونه ورکول.» ۹۰

څلورم څپرکي

کاکړ او د تاريخ په بهير کې د پښتنو نومونه

د مخه مو يادونه وکړه چې کاکړ خپل اثر «پښتون، افغان، افغانستان» په دې موخه ليکلی چې په لرغوني تاريخ کې د پښتنو څرک ومومي. دی په دغه کتاب کې د پښتنو او د دوی د ټاټوبي په نومونو هم غږیږي. برسېره پر دې هغه پخوا يوه بله ليکنه د «افغانستان و افغانها و تشکيل دولت در هندوستان، فارس و افغانستان» په نامه هم کښلې وه تر څو په تاريخ کې د افغانانو هويت تثبیت کړي.

دغه وروستی لنډه ليکنه دوه څپرکي لري چې لومړی يې د افغانانو او د دوی د ټاټوبي نومونه ته، چې د افغانانو د تاريخي پېژاند (هويت) سره اړه لري، او دوهم يې د پنځلسې پېړۍ د دوهمې نيمايي نه را دې خوا ته د افغانانو هغو تشکيلوونکو هغو ته ځانگړی شوی چې دوی د خپل سياسي ژوند او په هندوستان، فارس او افغانستان کې د دولت د تنظيمولو له پاره کړي دي. دا ليکنه دوې موخې لري:

لومړی موخه يې دا ده چې د اوسني بحراني حالت نه د تېرو تاريخي تجربو څخه د زده کړې پر مهال څنگه وتلی شو يانې پخوا افغانانو د ملي بحرانونو په مهال او په ځانگړې توگه چې د پرديو د تېريو او يرغلونو په پايله کې منځ ته راغلي وو، چې د هغو له امله د هېواد شته نظم گډ و شوی و، څنگه په هېواد کې دولت د سره بيا تنظيمولو.

دوهمه موخه يې دا ده چې په اوسني بحراني وضعه کې د هغو وړانکارو کړيو او شخصيتونو چې د بهرنيو دښمنو کړيو په لمسونه د منل شويو تاريخي مفهومونو، چې د افغانانو او افغانستان تاريخي پېژاند (هويت) تمثيل کړی مغشوش کړي، د روښانولو او لارښوونې ته ځانگړې شوې ده. اوس به د کاکړ د پاسو يادو شوو دوو اثارو او هم د پوهاند ډاکټر حبيب الله تري «پښتانه» له کتاب او د نورو اثارو نه په گټه اخېستلو سره د تاريخ په بهير کې د پښتنو نومونه وړاندې کړي.

پښتون:

د پښتون نوم لکه چې د مخه مو يادونه کړې ده د لومړي ځل له پاره په ويدي سرودونو کې د پکتاس (Pakthas) په نامه ياد شوی دی چې د خپل قوم پاچا ښودل شوی

او بل پاچا يې توريانا ياد شوی دی. پوهاند کاکړ د گرفت د ليکنې له مخې چې د پکتاس پاچا يې توروایانا ښوولی وایي چې د گرفت توروایانا شايد هماغه د ويدي سرودونو توريانا وي.

د پښتون نوم د مخزېږدې نه څه د باندې څلورسوه کاله د مخه د تاريخ پلار هېرودت په خپل «تاريخ» نومي اثر کې د پختويس يا پکتويس او د پښتنو ټاټوبی يې چې هم همدومره زور دی ده په خپل همدې کتاب کې د پکتیکا يا پکتويک په بڼه ياد کړی دی. لئونتال ليکي: «پختويس پوستينونه اغوستي و او وطني ليندې او تورې يې گرځولې» ۹۱ او بيا د هېرودت په دې عباراتو استناد کوي: «داریوش دوه تنه د دې خبرې د معلومولو د پاره وکومارل چې اباسين چېرته په سمندر ورگډېږي. دغو دوو تنو خپل کار د کسپتېروس له ښاره او د پکتیکا له هېواده شروع کړ». ۹۲

د پوهاند حبيب الله ټبري په وينا هنري بيلو، هنري لئونتال، اولاف کيرو او جورج کريسن د هېرودت په پورته عباراتو کې د «پکتیکا» او «پختويس» الفاظ په ترتيب سره د ننني پښتونخوا او د پښتون د کليمو انډول کښي.

ارزاني چې د هېواد مل په زيات گومان ديوان يې د اخوند دروېزه د مخزن نه څو کاله وړاندې ليکل شوی دی د پښتون کليمه کارولې ده:

د دې افغاني درونو

ارزاني پښتون حکاک دی ۹۳

همدارنگه دولت لواني هم په خپل ديوان کې پښتون کارولی دی:

تل تر تله وفايي به ځيني مومي

دا پښتو خبره پند که، که پښتون يې ۹۴

د پښتون کليمه د اخوند دروېزه په مخزن الاسلام کې بيا بيا راغلې ده. دروېزه د روښان پير د زوی جلال الدين په اړه ليکي: «دغه لاپه، په خوله کړه چې پادشاه د پښتنو يم؛... پښتنو ټولی پرې وکړ... ولی دی هم پښتونخوا لره بلا شه». ۹۵

کاکړ په خپل اثر «پښتون، افغان، افغانستان» کې د پښتنو د اصل په اړه هم اوږدې خبرې لري او ما په خپل اثر «پښتو د تاريخ په بهير کې» د کاکړ نظر هم منعکس کړی او د نورو ليکوالو نظرونه هم راوړل شوي او اوس به يې دلته هم بيان کړم.

د پښتنو اصل

د پښتنو د اصل او نسب په هکله راز راز روايتونه او افسانې شته. پښتانه چا يهود، قبطيان، ارمنيان، تاتاران، هپتاليان، ساکا بللي او ځينو نورو بيا په مغولو، راجپوتانو، برهمنانو، جتانو، يونيانانو، ترکانو، عربانو او نورو سره گډ کړي دي.

د پښتنو په اړه ډېر پخوانی او عمومي روايت چې د يوې افسانې پرته بل څه نه دي دا دی چې پښتانه بني اسراييل دي. د پوهاند ډاکټر حبيب الله تږي په وينا تر ټولو پخوانی ليکلی سند چې پښتانه په بني اسراييل پورې تړي د ابو الفضل «اين اکبري» دی چې وايي: «افغانان څانونه د اسراييلو اولاده گڼي» ۹۶ ابوالفضل دا هم وايي چې پښتانه په دې باور دي چې د دوی ډېر ليرې نيکه «افغان» نومېده، هغه درې زامن درلودل چې هغه سپړين، غرغشت او بټن وو. دی زياتوي چې غلځي، لودي او نيازي د يوه دوديز روايت له مخې د يوې بلې پښې دي.

اځوند دروېزه هم افغانان د مهتر يعقوب اولاده گڼي او وايي چې د اسراييلو د لوی مشر طالوت د دوو زامنو نه يو افغان نومېده او د همدې افغان اولاده ننني افغانان دي چې د اسراييلو د خپلو په وخت کې غور ته تللي او هلته ميشته شوي دي. خو څرنګه چې دوی د سليمان په غره کې اوسېدل نو په عربستان کې سليمان بلل کيږي.

بل هغه کتاب چې د پښتنو د نسب په اړه روايت يې په اوږده توګه بيان کړی دی د نعمت الله هېروي «تاريخ خان جهاني و مخزن افغاني» دی چې لنډيز يې حبيب الله تږي په لاندې ډول بيانوي: «ملک طالوت د اسراييلو پاچا و، خو د مخه له خپل مرګ نه يې د سلطنت امور مهتر داود ته وروسپارل. دی خپله وروسته له اوه څلوېښت کاله سلطنت نه په يوه جګړه کې ووژل شو. ملک طالوت دوه ښځې لرلې او د مرګ په وخت کې يې دواړه اميندواړې وې. وروسته له څه مودې نه د دواړو کره زامن وشول. مهتر داود د يوې د زوی نوم برخيا او د بلې ارميا کېښود. کله چې د ارميا کره زوی وشو د هغه نوم يې افغنه کېښود.

وروسته له مهتر داود نه مهتر سليمان د اسراييلو پاچا شو. ده د ملک د چارو نظم کار اصف او افغنه ته وسپاره. ...وروسته د مهتر سليمان له مرګ نه د اسراييلو ورځ بده شوه. بخت نصر شام ونيو؛ بيت المقدس يې وران کړ او د اصف او افغنه د اولادې دوه د سر سړي عزيز او دانيال يې له خپلو پيروانو سره بنديان کړل. بخت نصر وروسته د اسراييلو دولس زره مهم خلک ووژل او پاتې يې له اصف او افغنه سره غور، غزني، کابل، فيروز

کوه او د کندهار شاوخوا سيمو ته فرار کړل. د افغانه اولاده په دغو سيمو کې ميشته شوه.

کله چې خالد بن وليد مسلمان شو نو دغو خلکو ته مکتوب ورولپړه ... او د اسلام منلو ته يې وروبلل. کله چې د افغنه اولادې ته د خالد مکتوب ورسېد، يو شمېر مشران يې مديني ته روان شول. په دغو مشرانو کې د بني افغان تر ټولو نه ستر مشر قيص نومېده چې د نسب سلسله يې ملک طالوت او ابراهيم خليل الله ته رسېده. خالد دغه خلک د پيغمبر حضور ته وروستل.

آنحضرت له هر يوه نه د نامه پوښتنه وکړه. د بني افغان مشر ورته وويل چې د ده نوم قيص دی. حضرت پيغمبر ورته وويل: «قيص عبراني نوم دی. څرنگه چې مور عرب يو نو ستا نوم به وروسته له دې عربي او عبدالرشيد وي.»

عبدالرشيد د خالد سره يو ځای په يو شمېر جگړو کې په مېرانه وجنگېد او خالد حضرت پيغمبر ته د هغه د مېراني په باره کې معلومات ورکړل. حضرت پيغمبر عبدالرشيد ته د بتان لقب ورکړ. بتان چې وروسته پتهان شو، هغه تير ته وايي چې بېړۍ پرې تکیه وي. حضرت پيغمبر وروسته عبدالرشيد خپل حضور ته وباله؛ د خير دعا يې ورته وکړه او له خپل يوه صحابي او يو شمېر انصارو سره يې بېرته غور ته ولپړه چې په خلکو کې د اسلام تبليغ وکړي. له قيص عبدالرشيد نه چې په کال ۴۰ هجري کې په اوه اتيا کلنۍ مړ شو، درې زامن پاتې شول. يو سړی، بل بېټی او بل غرغشت.

نعمت الله هروي په پای کې وايي، پرته د کرلانو نه، د نورو ټولو پښتنو اقوامو د نسب سلسله همدغو درې وو تنو ته رسېږي او ټول د همدوی اولاده جوړوي» ۹۷ بيا افضل خان خټک، حافظ رحمت خان او قاضي اعطاءالله خان پښتانه اسراييل بللي دي.

په بهرنيو ليکوالو کې لومړی پوه سر وليم جونز دی چې د پښتنو دوديز روايت ته يې د لوېديز پام واراوه او په يوه لنډه ليکنه کې يې داسې وښوده چې کېدای شي چې پښتانه د يهودو د نسب څخه وې. نوموړي لوېديزووالو ته دا سپارښتنه هم وکړه چې د پښتو ژبې او ادبياتو څېړنې ته کلک پام وکړي. برسېره پر دې دغه ستر پوه په يوه ليکنه کې د لاتين او جرمانیکو ژبو خپلوي د سانسكریت سره ثابته کړه.

د جونز د سپارښتې له مخې دېرو لوېديزووالو د پښتو ژبې او ادبياتو څېړنې ته پوره پام وکړ او دېرو لوېديزو پوهانو هڅې وکړې چې دا ثابته کړي چې پښتانه د نسب له مخې يهودان دي. په دغو ليکوالو کې لومړی سړی الکساندر برنس دی چې د افغان- انگليس د لومړۍ جگړې پر مهال په هغه پاڅون کې ووژل شو چې د کابل خلکو د وزير محمد اکبر

خان په مشرۍ د انگرېزانو پر ضد کړی و. دی په خپل اثر کې چې «د بخارا سفر» نومېږي په کابل کې د افغانانو نه د پوښتنو او گروپونو پر بنسټ دې پایلې ته رسېدلې چې پښتانه بني اسرائيل دي. برنس په کابل کې د خلکو او ان د امير دوست محمد خان سره په دې اړه غږېدلې او امير هم دا ښودلې چې پښتانه د يهودو د نسله دي. په برنس پسې مور گرافت د اپريدو په اړه وايي چې دوی دېرې دنګې ونې لري او څېرې يې کټ مټ د يهودانو دي او چارليز ميسن په خپل سفرليک کې پښتانه بني اسرائيل بللي دي. جورج روز د پښتنو او يهودو د نسب په اړه ځانګړی کتاب چې «افغانان، لس قبيلې او د ختيځ سلطانان» نومېږي وليکه. دی په خپل کتاب کې وايي چې د يهودو لس ورکې شوې قبيلې افغانستان ته تللي او پښتانه د همدغو لسو قبيلو اولاده ده. دی دا هم وايي چې دوی [پښتانه] د فارس سلطانان وو او په کلونو کلونو يې په هند واکمني کړې ده. ۹۸.

بل انګرېز چې د پښتنو او يهودو د اصل په اړه يې ليکې کړې دي والټر بيلو دی چې پښتانه اسرائيل کښي. خو بيلو برسېره پر دې چې هغه دوديز روايت چې پښتانه له اصله اسرائيل کښي مني ځينې پښتانه په نورو نسبي ډلو پورې لکه برهمنان، راجپوتان، جتان، يونيانان، هفتاليان، ساکان، مغول، ترکان، عربان، ارمنيان او نورو ورګډوي.

جورج راورټي هم د پخواني روايت له مخې پښتانه له دې امله د يهودو د نسله کښي چې خپله پښتانه خپل ځانونه د يهودانو له نسله بولي او زياتوي چې د پښتنو د يهوديت مسله د سدوزو قبيلو په تاريخ کې چې «تذکرة الملوک» نومېږي په ډېر ښه ډول بيان شوې ده. په پای کې دې پایلې ته رسېدلې «چې افغانان د يهودانو د [لسو] قبيلو بقايا دي.» ۹۹

د تربي په وينا د يهودانو په دايرة المعارف کې هم راغلي دي چې پښتانه د خپل دود له مخې ځانونه يهودان کښي.

په ځينو اثارو کې بيا پښتانه قبطيان او د فرعونانو له نسل نه ګڼل شوي دي. د تربي په وينا ابوالفضل په ايین اکبري کې د دې موضوع يادونه کړې خو هغه يې په خپله بې اساسه ګڼلې او يوه خيالي افسانه يې بللې ده.

فرشته بيا دا خبره د يوه بل اثر په حواله په خپل تاريخ کې ياده کړې ده: «ما په «مطلع الانوار» کې چې يوه منلي مولف ليکلی او ما ته د دکن د کانديش په يوه ښارګوټي کې لاس ته راغی، لوستي دي چې افغانان فرعون الاصله قبطيان دي. کله چې موسی پېغمبر هغه کافر (فرعون) ته ماته ورکړه او په سره بحيره کې غرق شو، ډېرو قبطيانو د يهوده دين ومانه. خو نورو يې چې سرتنډه او خودرايه وو، رښتيني دين ونه مانه او له خپل ملکه ولېږدېدل هندوستان ته ولاړل. په نهايت کې د سليمان په غرونو کې ميشته او د افغانانو په نامه ياد

شول. ۱۰۰ ځينو ليکوالو بيا پښتانه د مغولو او ترکو سره گډ کړي دي. د بېلگې په توگه د محمود کتبي «تاريخ ال مظفر» کې راغلي چې «افغان او جرما مغولانو د ولايت په شاوخوا کې بغاوت او چور پيل کړی دی.» ۱۰۱ خو عبدالرزاق سمرقندي بيا څو څو ځايه افغان او جرميان له ترکانو سره گډ کړی دي. «امير مبارزالدين مظفر په دې فکر چې بسايي اوغان او جرمايي اتراک به د هغه د مظفرانه بيرغ لاندې راتول شي، د بم په لاره ولاړ او د جيرف په دښته کې يې واورول.» ۱۰۲ ځينې اروپايان لکه کرونسکي د ارمنيانو په يوه دوديز روايت پسې تللي او افغانان يې د ارمنيانو سره گډ کړی دي. کرونسکي چې په اصل کې پولنډی دی او د ۱۷۲۰ نه تر ۱۷۲۵ پورې په اصفهان کې اوسېده او هلته يې د پښتنو بری او د شاه محمود هوتک په لاس د صفوي دولت نسکورېدل په خپلو سترگو ليدلي او هغه يې ليکلي دي. د مخه مو وليدل چې دا نظريات يوازې د پښتنو په دوديز روايت او په ساده کتنو ولاړ او هېڅ تاريخي او علمي بنسټ نه لري. په دې اړه د نولسمې پېړۍ په پيل کې لوېديځ پېژندونکو د هندو- اروپايي قومونو د تاريخ او ژبو د علمي څېړنو او په هغه جمله کې د پښتنو او پښتو ژبې د علمي څېړنو په پايله کې پورتي روايات او ساده کتنې رد کړې. اوس به په لنډ ډول د تاريخي، د ژبې د اصل او پرتلني او د وينې د خپلوی پر بنسټ د يادو نظرياتو بې بنسټ توب په گوته کړم او دا به ښکاره کړم چې پښتانه د توکم يا نسب له مخې اريايان او پښتو يوه لرغونې اريايي ژبه ده.

۱-د تاريخ له اړخه:

د تاريخ له اړخه به اوس وگورو چې پښتانه په اصل کې اريايان او د اوږدې مودې راهيسې په همدغه وطن کې ژوند کوي.

پښتون د لومړی ځل له پاره په ويدي سرودونو کې د پکتاس (pakthas) په نوم ياد شوی چې د خپل قوم پاچا ښودل شوی او بل پاچا يې تورايانا ياد شوی دی. کاکړ د گرفت د ليکنې له مخې چې د پکتاس پاچا يې تورايانا ښوولی وايي چې د گرفت تورايانا شايد هماغه د ويدي سرودونو ياد شوی تورايانا وي.

په اوستايي دورې کې د يونان نامتو تاريخ پوه هېرودت د نورو اريايي قومونو په لړ کې پکتيس يادوی د کاکړ په وينا نږدې ټول تاريخ پوهان په يوه خوله وايي چې د هېرودتس پکتيان همدغه نني پښتانه دي.

په اريانا کې د ويدي دورې په تېرونو کې پکتيان هم پاتې شول. احمدعلي کهزاد وايي چې پکتيان د باختر نه د تېرونو د لېږد په مهال دوې برخې شول: يوه څانگه يې د نورو قبيلو

او کورنيو سره د هندوکش سووېل ته ښکته شوه او د سووېل ختيځو سيمو او غرونو کې ميشته شوه چې د پکتیانو د استوګنځي په نوم مشهور شو. بله څانګه يې په باختر کې پاتې شوه چې ويدي او اوستايي مدنيت يې د نورو تېرونو غوندې هلته تېر کړ. دوی د کياني افسانوي دورې وروسته د بخدي سلطنت جوړ کړو.

د مخه مو يادونه وکړه چې د بخدي سلطنت تر ټولو مهم سلطنت و. هلته د اسپه کورنۍ واکمنه کورنۍ وه. د بخدي نوميالی واکمنان دلهراسپه، وشتاسپه، کرشاسپه، اروت اسپه، په نومونو ياد شوی دی. د وشتاسپه لوی وزير د جم اسپه او زرتښت پلار د پوروشاسپه په نومونو پېژندل شوي دي. اسپه په اوستا کې د اس په مانا کليمه ده. اسپه چې د اس مونث دی او په همدغه بڼه تر اوسه په پښتو کې ژوندی ده. په دې حساب د اسپه کورنۍ پښتنه او واکمنان يې پښتانه وو. ۱۰۳

کهزاد زياتوي چې د هېرودت د ليکني له مخې د پکتیانو يوه کوچنۍ څانګه د لوېديځ لور ته مخته تللې او د ارمنستان په لوېديځ کې ميشته شوې چې هلته په خپله د پکتيس يا پکتوويس په نامه او خپل ټاټوبی يې د پکتیکا په نامه مشهور شو. داسې ښکاري چې د پکتیانو دا کوچنۍ څانګه به په ځايي خلکو کې حل شوې وي. که د پکتیانو د ارمنيانو او کورجيانو سره د ژبې يا نورو نښو په بنسټ کوم ورته والی وي هغه به د دې له امله وي چې پکتیان د دوی په ګاونډ کې ميشته وو او بيا په کې حل شوي دي نه دا چې دوی ګواکې د يوه نسب نه دي.

هېرودت د پکتیک د هېواد پکتیان څلور ډلې خلک په ګوته کوي چې ګنداري، سته کيدای، اېه ريتای او دادیکا دي چې د پوهانو په نظر په ترتيب سره کندهاري، خټک، ايريدی او ډېګان دي. بيليو، احمدعلي کهزاد، غبار او کاکړ د هېرودت دادیکا د پښتنو څانګه ګڼي. کاکړ دا هم وايي چې «ډېګان په ټولو ليکنو کې کليوال ياد شوي، ... او ځيني يې پښتو ژبې هم وو او ... په اسلامي دوره کې تاجک شوي» ۱۰۴ دي.

لومړی لوېديځ پوه م. الفنسټون دی چې په خپل بې جوړې کتاب «د کابل سلطنت» کې چې په ۱۸۱۴ کال کې يې ليکلی او نامتو تاريخپوه پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ په پښتو ژباړلی دی د پښتنو د اصل او نسب په اړه يې د پښتنو هغه دوديز روايت رد کړ چې خپل ځانونه بني اسراييل ګڼي. دی وايي چې د دې روايت لومړی ټکی د سپېڅلي کتاب تورات سره بېخي اړخ نه لګوي او دوهم ټکی يې منطق نه مني ځکه يوازې اوه ډېرش پښته شپاړس سوه کاله نه کيږي. الفنسټون دا نظريه هم ردوي چې پښتانه په اصل کې قفقازيان دي. دی وايي «زه د دې له پاره هېڅ دليل نه وينم چې افغانان د غربي قفقازيانو سره وترم.» ۱۰۵

پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ په خپل څېړنيز اثر «پښتون، افغان، افغانستان» کې د هنري پرېستلي په حواله چې «حيات افغاني» يې په انگرېزي ژباړلی وايي: «د ساوول پښت په غلطه له جودا (يهودا) څخه بنودل شوی دی. په داسې حال کې چې د تورات (Old Testament) له مخې هغه د بنجامن ټبر ته منسوب و. د تورات په هېڅ ځای کې د دې ذکر نه شته چې افسانوي اړخيا او ارميا به د ساوول د زوزات څخه وي... نه د ارميا او نه د افغان نوم او يا هغه ته ورته بل نوم د حضرت داود د نومياليو کسانو په ډله کې ليدل کېږي» ۱۰۶

کاکړ دا روايت، چې گواکې خالد بن وليد د قيس په مشري د غور افغانان مدينې ته بللي وي، هم بې بنسټه بولي. دی وايي چې خالد بن وليد دغسې تاريخي شخص و چې کرښې يې په ډېرو کتابونو کې ثبت شوې دي. د دغو کتابونو له مخې خالد بن وليد يهود نه و، بلکې د عربو د قريشو د لوی ټبر د مخزوم د خانکې نه و. نوموړی په ۶۲۵ هجري کال د احد په جنگ کې د پېغمبر (ص) پر ضد جگړه کې برخه اخېستې چې د هغې په پايله کې مسلمانان په زياته اندازه د ده په قوماندنۍ مات شوي وو. خالد بن وليد تر ۶۲۹ هجري کال پورې د پېغمبر (ص) او اسلام مخالف و. په همدې کال ده د عمر بن العاص سره د حضرت محمد (ص) پېغمبري ومنله. بل کال (۶۳۰) مسلمانانو په جنگ سره مکه ونيوله. کاکړ زياتوي چې په دغه حال کې مسلمان خالد ته شونې نه وه چې په دومره لنډې مودې کې افغانان مکې ته حاضر کړي. برسېره پر دې که خالد او ملکري يې يهودان وای، هغوی به ولې له حضرت محمد (ص) سره د مکې په نيولو کې مرسته کړې وای، ځکه چې د ده په امر سره د مدينې يهودان ځپل شوي وو.

جان ملکم هم د فارس په تاريخ کې د پښتنو د اصل او نسب په اړه د دوی خپل دوديز روايت ردوي او ليکي: «هېڅ داسې کومه کتبيبه نه ده پيدا شوې چې دا عقیده تاييد کړي چې پښتانه د يهودانو له نسله څخه دي. او د دوی دا خپل مهم دود په داسې يوه موضوع کې د مسلم حقيقت په حيث نه شي منل کېدلی.» ۱۰۷ بل ستر پوه او ختيځ پېژندونکی ب. ډورن دی چې د پښتنو د تاريخ او ژبې په اړه يې کره او ژورې څېړنې کړې دي. نوموړي د پښتنو دوديز روايتونه ناسم بللي او ليکي: «دا چې د فارسي ژبې مؤرخين پښتانه د يهودو له نسله کني دا پرته له يوې خبرې نه د کوم بل شي ثبوت نه شي کېدای او هغه دا چې دا ليکوالان روايات، پرته له دې چې ماهيت يې معلوم کړي، د خپل دود په اساس، د مسلمو حقايقو په توگه ثبتوي.» ۱۰۸

دغه راز ډورن وايي «دا چې د افغانانو او يهودانو نومونه سره يو شی دي د دې دليل

دا دی چې افغانان مسلمانان دي. د مسلمانانو او يهودانو ډېر نومونه مشترکه تاريخي او قومي منبع لري، دا چې د افغانانو څېرې بېخي يهودانو ته ورته دي دا هم د دې دليل نه شي کېدی چې پښتانه د يهودانو له نسله دي. ډورن د دې خبرې د تاييد دپاره د جان ملکم دا عبارت را اخلي چې «که د دوو ولسونو د څېرو سره ورته والی د [دې] دليل کېدای شي چې هغوی دې د عين نسل نه وي، هلته نو بيا کېدی شي چې کشميريان هم د خپلو څېرو له امله د يهودانو له نسله وبلل شي، ځکه [چې] يو شمېر غربيان کشميريان هم، کت مټ يهودانو ته ورته بولي.» ۱۰۹

ډورن وايي چې «پښتانه له کوم بل ملک نه افغانستان ته نه دي تللي، بلکه لکه څنگه چې سر ويليم جونز وايي «د لرغوني پاروپاميزاد (يعني مرکري افغانستان او شاوخوا سيمو) اصلي او ځايي اوسېدونکي دي.» ۱۱۰ ډورن وايي چې «تاريخ ثابته کړې ده چې د غزنوي سلطان محمود د واکدارۍ په وخت کې او تر هغه نه ډېر پخوا دوی (افغانان) په هغو کلاوو کې اباد وو چې تر اوسه په کې ميشته دي.» ۱۱۱ ډورن دا روايت هم ردوي چې ارمني اغوانان او پښتانه يو شی دی. دوی دوه بېخي سره جلا ولسونه بولي. ډورن د خپلو څېړنو له مخې دې پایلې ته رسي چې پښتانه د هندو- اروپايي د ولسونو د سترې کورنۍ غړي او هم ځانته يو لرغونی ولس دی.

په دې ترتيب تاريخي حقايق دا ثابتوي چې پښتانه په اصل کې اريايان او د لرغونو زمانو نه په همدغه وطن کې اوسي.

۲- د ژبو د اصل او پرتله کولو له اړخه

د پښتو ژبې د اصل او د نورو ژبو سره د پرتله کولو له اړخه د علمي څېړنو پایلې په ډاګه کړې چې پښتو د افغانستان لرغونې ژبه او د ژبو په اريايي کهول پورې اړه لري.

د پښتو ژبې د اصل او ريښې په اړه د نظرياتو توپير هم ډېر دی. پښتو چا د ديوانو ژبه بللې ده، ځينو سامي، ځينو اريايي او ځينو بيا د اريايي ژبو په بيلو بيلو څانګو پورې تړلې ده.

د «تذکرة الملوك» ليکوال وايي چې «ځينې روايتونه وايي چې افغانانو خپله ژبه له دېوانو نه زده کړه» ۱۱۲

سر ويليم جونز پښتو له سامي ژبو سره ورته بللې ده هنري راورتي هم وايي: «پښتو زما په خيال د سامي ژبو په کورنۍ پورې اړه لري» ۱۱۳

کلا پروټ لومړنی وتلی ختيځ پېژندونکی دی چې دا نظريه يې رد کړه چې پښتو له سامي

ژبو سره تړلې ده. دی لیکي چې «د پښتو او سامي ژبو تر منځ نه په کلیماتو کې اندکترین شباهت شته او نه په گرامري جوړښت کې.» ۱۱۴

م. الفنسټون هم په ۱۸۱۴ کې د ویلیم جونز دا نظریه چې د پښتو او عبري ژبو تر منځ ورته والی شته رد کړه. نوموړي د پښتو دوه سوه اتلس کلیمې د یو شمېر نورو ژبو د انډولو کلیمو سره پر تله کړې خو له دغو کلیمو نه یوې هم له عبراني او یا کلداني سره ډېر لږ ورته والی نه درلود. ۱۱۵

جان مالکم هم الفنسټون ته ورته نظر لري او وايي «چې د عبري او پښتو یا د افغانانو د معاصرې ژبې تر منځ د نږدې والي هېڅ څرک نه لکيږي» ۱۱۶

برنارډ ډورن د خپلو ژورو او علمي څېړونو له مخې دې پایلې ته رسېږي چې پښتو له هېڅ سامي ژبو سره څه اړیکه نه لري.

دې پوهانو نه یوازې دا نظریه چې پښتو ژبه د سامي ژبو د کورنۍ څخه ده په کلکه رد کړه بلکې دا یې هم په ډاگه کړه چې پښتو یوه هندو- اروپایي ژبه ده چې د هندو- اریایي ژبو په ختیځه څانګه پورې اړه لري.

په دغو پوهانو کې بیا هم کلا پروټ لومړی لوېدیځ څېړونکی دی چې دې پایلې ته ورسېد چې «پښتو یې شکه د هندو، جرمانیک ژبو د سترې ډلې یوه څانګه ده.» ۱۱۷

ژبنيو څېړنو لوی عالم پات هم پښتو په ټینګه د هندو- اروپایي ژبو په لیکه کې ودروله. همدارنګه ډورن پښتو یوه سوچه اریایي ژبه وبلله او وايي چې پښتو د هندو فارسي ژبو په لویه کورنۍ پورې اړه لري. ۱۱۸

خو چې څومره د ژبو پرتلیزې څېړنې د علم بڼه نیوله د ژبو څېړنه هم کره کېدله. د پښتو څېړونکي دې ته هم پوره ځیر شول چې دا جوته کړي چې پښتو د اریایي ژبو په کومه څانګه پورې اړه لري.

لومړی لوېدیځ لیکول رابرت لیچ دی چې د پښتو او سنسکرت د اوازونو د پرتلې وروسته په ټینګار دې پایلې ته ورسېد چې پښتو د سنسکرت بڼه لري. بل پوه رودولف هورنل دی چې د خپلې تاريخي- پرتلیزې څېړنې په پایله کې پښتو د هندو اریایي ژبو له هندي څانګې اړونده وبلله. هورنل برسېره پر دې له ځینو ګاډي ژبو سره د پښتو او نورستاني ژبو سره ځینې ګډې څانګونې په ګوته کړې او وېي لیکل: «چې مګاډي پراکرت او پښتو او کافري ژبې په لرغونې زمانه کې بېخي سره نژدې وې او حتی یوه ژبه یې جوړوله.» ۱۱۹

په پښتو کې د هندي اریایي ژبو څانګړتیاوې دومره جوتې او ښکاره دي چې فرانسوي لوی ختیځ پوه ډارمستیر په لومړي سر کې هم پښتو د هندو- اریایي ژبو په هندي څانګې

پورې وتړله. پوهان په دې نظر دي چې پښتو ژبې ته د هندي ژبې زياتې ځانگړتياوې ننوتل د موریا د واکمنۍ اغېز کني چې نږدې سل کاله اوږده شوه. برسېره پردې پښتانه د هندوستان سره گاونډي وو او د دوی تر منځ تماسونه هم د دې لامل شو چې د دوی ژبې يو پر بل اغېز وشيندي. دا هم بايد ياده کړو چې زيات شمېر پښتانه هندوستان ته تللي او هلته يې واکمني کړې او دغو پښتنو د روه سره تک راتک درلود. دغو ټولو د ژبو اغېزې يو پر بل درلودې.

لومړی پوه چې پښتو يې د هندو- ايراني ژبو له ايراني څانگې پورې وتړله شيلي ډيور دی. ده په خپل اثر «د مقاييسوي فيلولوژۍ اجمال» کې وايي چې د افغانستان ژبه ياني پښتو د ايراني ژبو په څانگه پورې اړه لري خو ځانته يې په يوه ځانگړې او نويستي لاره وده ورکړې ده. ۱۲۰

ماکس ميولر بيا پښتو د ايراني ژبو په ختيځې ډلې پورې وتړله او په دې ترتيب يې له «زند» سره ونښلوله

خو ډاکټر ارنست ترومپ، پوهاند ادلينگ، شيلي ډيور، او نور پښتو د هندي او ايراني ژبو تر منځ يوه خپلواکه او مستقلة ژبه بولي.

خو ډارمستېر په تفصيل سره پښتو او زند سره پرتله کړې او دې پایلې ته ورسېد چې پښتو د زند سره دومره نږدې تړاو لري لکه نوې فارسي يې چې د زړې فارسي سره لري.

د اريايي ژبو نامتو ژبپوه مارکن سټېرن د ډارمستېر نظر په بشپړه توگه مني خو په همدغه ان کې دی پښتو په ختيځو ايراني ژبو کې د ساکانو لرغونې ژبې ته دومره نږدې بولي او وايي چې پښتو په اصل کې د ساکا يوه لهجه ده. د مارکن سټرن په نظر «پښتو يې له دې چې له ساکي ژبې سره وتړله شي بل کېدون نه لري.» ۱۲۱ د نوموړي په اند پښتو په اصل کې د اريايي د هغې شمال ختيځې ژبې ډلې يوه برخه ده، چې د پاميرې ژبې او د سرخ کوتل د ډبرينې ليکنې بخدي ژبې د هغه اوسني تمثيل کوونکي دي. د کاکړ په وينا پښتانه چې د کرنې ډلې په توگه هر وخت له اريايي تېر نه بېل شوي دي ممکن اول په بخدي کې څرگند شوی وي. په هر حال، له پاميرې غرنيو خلکو او له دادیکا سره د دوی په گاونډيتوب کې پوښتنه او شک نه پيدا کېږي. د مخه مو وويل چې په مخزيردې پنځمې پېړۍ کې بخدي د هخامنشيانو د واکمنۍ لاندې و خو پښتو د ژبې په توگه تر هغه د مخه هسکه شوې وه چې تاريخي بېلگې يې دا دي: زرينه او تنی. کاکړ وايي چې «که ساکي ژبه پاتې وای په دې اړه به څرگند حکم شوی وای خو د نالوستو او پوونده ژبه نه ده راپاتې. راپاتې کليې يې د گوتو په شمار دي. دوه يې هغه دي، چې اوس هم په پښتو کې هغسې ويلې کېږي، چې دوه نيم زره

کاله د مخه په ساکاوو کې ويل کېدلې. زرينه او تنی (Tanais). زرينه (Zarina) د ساکا د کومې ځانګې واکمنه يا ملکه وه او هغه په خپلو خلکو دومره کرانه وه، چې له مړينې وروسته يې [وطنوالو] د سرو زرو مجسمه ودروله... تنی د ساکاوو په وخت کې د منځنۍ اسيا د اوسني سردريا نوم و او اوس د افغانستان په پکتيا کې د يوه پښتون ټبر نوم دی. «۱۲۲ دی دا هم وايي چې د امو نوم هم د ساکا د هاما ورګه لندپه بڼه ده.

په دې ترتيب سره پوهانو د نويو څېړنو له مخې ثابته کړه چې پښتو د سامي او عبراني ژبو سره تړاو نه لري بلکې يوه لرغونې اريايي ژبه ده چې د هندو- اريايي ژبو په ختيځه څانګه پورې اړه لري.

۳-د نسب پوهنې له اړخه

د دې اړخه سيانس پوهان د وينو د نمونو د لابراتواري معاینو له مخې د بېلو بېلو قومونو نسبي نږدېوالی ثابتولی شي. د ښه مرغه د پښتنو پخواني افسانوي روايت د (DNA) لابراتواري معاینو له مخې هم بې بنسټه وخت. په دې اړه څېړونکي ښاغلي نثار احمد صمد په خپله څېړنيزه ليکنه کې پښتانه اصلاً څوک دي؟ چې د لر او بر سايت کې خپاره شوي ده په دې اړه مهم مالومات راټول کړي دي چې لنډيز يې لوستونکو ته وړاندې کوم:

برتانوي پوهاند تيودر پرفيټ په ۲۰۰۸ او ۲۰۰۹ کلو کې د يو شمېر پښتنو پر (DNA) يو لړ لابراتواري معاینې تر سره کړې خو دا يې ثابته نه کړه چې پښتانه د بني اسراييلو سره د وينې تړاو لري.

همدارنګه په ۲۰۱۰ کال کې د هندوستان د ارثي علومو ماهرې شهنازعلي د مليح اباد په سيمه کې چې هلته ګڼ شمېر اږيډي اوسېږي د زياتو پښتنو د وينو نمونې د اسراييلو د ټکنالوجي په انستيتوت کې د کره کتنې او څېړنې لاندې ونيوې چې په پايله کې دا ښکاره شوه چې پښتانه د اسراييلو سره د وينې تړاو نه لري.

په اسراييلو کې د يورشليم د پوهنتون د بشر پېژندنې د څانګې يوې څېړونکې مېرمن شيلوا نييل وايي چې که څه هم پښتانه د روايتي او شفاهي تاريخ له مخې ځانونه په وياړ سره بني اسراييل بولي خو د (DNA) څېړنې د دوی د وينې تړاو د يهوديانو سره نه باوري کوي.

د لکپو د پوهنتون يو استاد نورس اږيډي هم د پرله پسې زيار سره سره ونه کړای شول چې د وينو د نمونو د څېړنو له مخې د پښتنو تړاو د يهودو سره وښيي.

په دې اړه وروستی لابراتواري کتنې د امریکا د حکومت وارثي شورا له خوا په ۲۰۱۲ کال تر سره شوې. دغه ټیم د افغانستان او پښتونخوا د څو سوو پښتنو د وینې نمونې واخېستې او د یو لړ کره لابراتواري کتنو پایلې د ۲۰۱۲ کال د مارچ په اته ویستمه اعلان کړې او وویل چې ننني پښتانه د پخواني اسراییلو سره د نسب تړاو نه لري، بلکې اوسني پښتانه د پنځو زرو کلو راهیسې دلته اوسېږي. دا بې هم زیاته کړه چې پښتو ژبه نه سامي ده نه خارجي، بلکې د اریایي څانګې څخه ده چې په هندو- اروپایي کېول پورې اړه لري.

اوس به دا موضوع د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ په دغو ټکو پای ته ورسوو: «د دغو واقعیتونو په رڼا کې دغه روایت چې پښتانه په اصل او نسب کې بهود دي، یوازې د ذهن او بد نیت زېږنده کېږي، نه تاریخي واقعیت. اوس که یو څوک سره له دې هم پښتانه د دغه جعلی روایت پر بنسټ بني اسراییل گڼي هغه به په اصل کې د لوستونکو، تاریخ، [ژبپوهنې، نسب پوهنې] او رښتینتوب پروا نه لري.» ۱۲۳

کاکړ او د پښتنو شجره

د پښتنو د شجرې په اړه کاکړ یوه لنډه لیکنه «پښتانه په جامعه کې» نومېږي چې لنډیز یې په لاندې ډول وړاندې کېږي:

کاکړ وايي چې پښتانه د سېحې د نورو قومونو غوندې، د زرگونو کلونو تاریخ لري، خو دوی په پخوانیو مهالونو کې د نورو قومونو د لیکوالو له خوا په نامنسجم ډول ثبت شوي دي. دوی په خپله د اسلام نه د مخه دورو په اړه کره او منظمې لیکنې نه لري.

هغه تالیفونه چې پښتانه په نسبي توګه په کې په منظم ډول بیان شوي دي په اسلامي دورې پورې اړه لري لکه د ابوالفضل اکبرنامه، د سلیمان ماکو تاریخ اولیا او پته خرانه، د نعمت الله مخزن افغاني، او وروسته د پښتنو شجرې په حیات افغاني نوې کتاب کې په اوږده ډول بیان شوي دي. خو دغه ټولې لیکنې د دودیزو روایتونو ټولګې دي او په کره تاریخي شواهدو بنا نه دي.

نو له دې کبله د پښتنو شجره لکه د نورو قومونو د شجرو غوندې له اول نه تر پایه پورې په منظم ډول مالومه نه ده. خو پښتانه په پای کې د دغو دودیزو روایتونو له مخې درې نیکونو یانې بېټني، غرغښت او سرېن ته رسېږي. خو دا اساسي ډله د پښتنو یوازینی ډله نه ده بلکې نور ډلې پښتانه هم موجود وو.

د پښتنو سترې ډلې چې په لیکنو کې راغلې او خپلونه ترې جوړ شوي تر اوسه پاتې دي، شرخبون، خرشبون، بیټن، غرغښت او کرن دي.

د شرخبون څخه شیراني، ترين، میانه، برېڅ او اورمر هسک شوي دي. د دغو خېلو ډېر نوميالي ترين دي چې په اودال، سپين ترين او تورترين وېشل شوي دي. اودال چې احمدشاه بابا د دراني په نامه یاد کړل په زيرک او پنج پا وېشل کېږي. زيرک يې الکوزي، پوپلزي، اڅکزي او بارکزي دي. سدوزي د پوپلزيو او محمديزي د بارکزيو پښې دي چې پاچايان او اميران ور څخه هسک شوي دي چې د هغی ډېر نوميالی د اوسني افغانستان بنسټ ايښودونکی احمدشاه ابدالي دی. په پنج پا کې ماکو، خوکياني، اسحق زي، نورزي او عليزي دي.

د خرشبون نه کاسي، زمند، کند او خاخي يا خاشي دي چې بيا د کاسي نه شينواري، د زمند نه د کاسور قومونه، د کند نه غوري يا غورياخېل، مهمند، خليل او ځمکني او له خاخي نه ترکلاني، گيکياني، يوسفزي او د منډن قومونه هسک شوي دي.

د بېټن له وېش نه ورسپون، کاجن او د بي بي متو اولاد پاتې دی. د بي بي متو يا ماتي قومونو نه سرواني، لودي او غلزي راوتلي دي. په دوی کې لوديان او غلزيان نامتو وختل. لوديانو په څورلسې پېړۍ کې په هندوستان کې امپراتوري جوړه کړه چې وروسته بابر په ۱۵۲۵ کې نسکوره کړه. لوديانو تر هغه وروسته ورو ورو خپله ژبه او قومي عادتونه هېر کړل او تر زياته بريده د هندوستان په خلکو کې حل شول.

د غلزيانو خېلونه سلېمان خېل، هوتک، توخي، اندر، تره کي، ناصر او خروتي دي. د هوتکو نه ميروېس نيکه هسک شوی چې د اتلسې پېړۍ په سر کې يې د پارس د صفوي نيواک نه کندهار وژغوره او په ننني افغانستان کې د ملي خپلواک دولت تاداو کېښود. د مرغښت په لوی وېش کې مانډو، بابي او ډني راځي چې ډني خېلونه کاکړ، ناغر، پاني او داوي دي.

په پای کې د کړن په لوی وېش کې کودې او کاخي راځي. په کودې کې دلازاک، وردک، اورکزي او د منگل قومونه راځي او په کاخي کې اپريدي، خټک، ځدران، اتمان خېل، خوکياني، ځاخي او توري راځي. د دوی فرعي وېشونه ډاري، بنوڅي او خوستوال دي. پښتانه اوس د ايران له خراسان ياني مشهد نه د شمالي هندوستان تر هوارو پورې چېرته په گن او چېرته په لږ شمېر چېرته سوچه او چېرته په اوسني بڼه پراته دي. د دوی د دغو پراخو سيمو په څنډو او ښاري مرکزونو کې تر دې حده د نورو قومونو تر تاثير لاندې راغلي دي چې ان خپله ژبه او پښتونوالي يې هم لږ و ډېر د ياده ايستلي دي. د دغې سيمې په منځنيو برخو په تېره بيا په ازادو قبایلو کې پښتو او پښتونوالي په قوت سره پاتې دي.

د پښتنو لويه ځانگړتيا پښتو او پښتونوالي ده او بله لويه ځانگړتيا يې تربوري، سيالي او دښمنۍ گانې دي. په دې ډول په دوی کې د پيوستون او هم د بيلتون ځانگړتياوې په قوت سره موجودې دي. که د يوې خوا گډ نسب، گډ تاريخ، گډه ژبه او گډه پښتونوالي دوی سره يو کوي او يو پراخ ملت ترې جوړوي، نو د بلې خوا تربوري، سيالي، گوندیماري چې پایلې يې تېرېدونکې يا پرله پسې دښمنۍ او جگړې دي، دوی په ډله يزه توگه سره دښمن گرځوي. د پښتون د نوم، د پښتنو د اصل او شجرې د څېړنې وروسته د پښتنو بل نوم افغان څېرو.

افغان

د افغان کليمه هم پخوانۍ ده خو د پښتون نوم تر افغان ډېر لرغونی دی. پښتانه په خپله هر چېرې ځانونه پښتانه بولي خو زموږ گاونډيانو لکه چې دود دی پښتانه په نورو نومونو ياد کړي دي. په لرغونو زمانو کې د پارس خلکو پښتانه د ابگان (Abgan) او د هند خلکو د اسواکا (Asvaka) يا د اسواغانه (Asvaghana) په نومونو يادول. خو دا چې دا نوم نورو هېوادو ته خپور شو لامل يې دادی چې پښتانه د ليک او لوست ډگر کې وروسته پاتې و او دوی د نورو ليکوالو له خوا په غير منظم ډول لږ لږ ياد شوي دي. پوهاند کاکړ وايي چې افغان د ويدې دورې نوم دی چې په مهاباراته (Mahabarata) کې د اسواکا (Asvaka) په نوم ياد شوی دی. «دغه اسواکا د کندهارا په سيمه کې وو، ... او دوی په هغو غرو او رغو کې اوسېدل چې په اسلامي دورې کې د سليمان په غرو ياد شوي دي... د سليمان غرونه په واقع کې د کسبي غرونه دي، چې له هندوکش نه د بلوچستان تر پولې پراته دي او اباسين يې ختيځه پوله» ۱۲۴ جوړوي. د کاکړ په وينا اسواکا په دغې سيمې کې د مهاباراته د رامنځ ته کېدلو په وخت کې اوسېدل. مهاباراته چې د هندوانو ستر حماسي اثر دی د ښوونکو په بهير کې سل شاعرانو کښلی او زر سندرغاړو په قالب کې اچولی تر څو چې د کوپتا واکمنو په دوره کې برهمنانو خپل مذهبي او اخلاقي فکرونه په کې ځای کړل او اوسنۍ بڼه يې ونيوله.

د افغان کليمه د هند لرغوني ستوري پېژندونکي «وراهه مهيرا» په خپل اثر کې چې «برات سنهيتا» نومېږي او د شپږمې زېږدې په لومړيو کې کښلی دی د «اوگانه» په بڼه ياده کړې ده. دی ليکي: «دا لاندې د لکی لرونکي ستوري په قلمرو کې شامل دي: غرني سنګرونه، پهلويان، څويتان، هونان، کولان، افغانان... او غير عادل او جاه طلبه خلک.» ۱۲۵

ايچ کرن نوموړی اثر په ۱۸۶۹ کې په انگرېزي ژباړلی او د «اوکاڼه» کلیمه يې د افغان په بڼه ليکلې ده. پوهاند حبيب الله تری وايي چې کرن په دې پوره باور درلود چې د وراهه مېړا د اوکاڼه کلیمه او د افغان نوم کت مت سره يو شی دي. جورج گريسن هم وايي چې د وراهه مېړا د اوکاڼه کلیمه په زبات باور د افغان د کلیمې سره يو شان ده.

د ساسانیانو په دوره کې د اوکاڼه نوم په پرسي پولیس کې د رستم نقش په ډبرینې ليکني کې ثبت شوی دی. پوهاند شپرنګلینګ وايي چې د افغان نوم د گوندافر ابکان رازماد (Gondafar Abgan Razmad) له خاص نوم نه راوتلی دی چې د رستم نقش په کتيبه کې د ساساني پاچا اول شاهپور (۲۴۱-۲۷۲ م) په دستور په پارټي، منځنی پارسو او يوناني ژبو کښل شوی دی. نوموړی وايي چې «د ابکان (Abgan) او اوکان (Avgan) له پاره زه له اوسني افغان نه پرته بله بڼه کلیمه پیدا کولی نه شم.» ۱۲۶

د اوومې زېږدې پېړۍ په لومړۍ نيمايي کې چيني زيارت کوونکی هون خانګ «اوپوکين» يوازې يو ځل یاد کړی او د هغه ځای يې د فلانه (بنو) او غزني تر منځ د بنو شمال-لوېديځ او د غزني سووېل-لوېديځ ته ښودلی دی. ۱۲۷

د افغان نوم لږ تر لږه زر کاله پخوا په همدا نننۍ بڼه په حدود العالم کې یاد شوی او بيا اسلامي ليکوالو په پر له پسې ډول یاد کړی دی. وروسته محمد بن عبدالجبار عتي په يمني تاريخ کې د سبکتکين او د هغه د اولاد د وخت د پېښو په ليکنو کې ډېر ځل یاد شوی دی. له دې وروسته د افغان نوم د هغو ټولو ليکوالو له خوا چې د دغې سيمې په اړه يې په پارسو او عربي ليکني کړې دي یاد شوی دی.

ازرقي هيروي د پنځمې هجري پېړۍ د لومړۍ نيمايي شاعر او د سلجوقيانو د کورنۍ ستاينونکی چې د ارسلان محمد سلجوقي د زوی طغانشاه په ستاينه کې ليکلې ده وايي:

زهری گر سوی افغان شوی ای باد شمال

باز گوی زهری پېش ملک صورت حال ۱۲۸

تاريخي شواهد داسې ښيي چې د افغانستان ناپېښتانه اوسېدونکي هم له ډېر پخوا نه دغه ګډ کور ته منسوب او د افغانانو په نامه یاد شوي دي. تری وايي چې ځينې مورخينو لکه محمود کتي، برهان الدين مير خواند، عبدالرازق سمرقندي او نورو په څورلسې او پنځلسې زېږدې پېړيو کې د «افغانستان» ترکان او مغول هم بيا بيا افغاني ترکان او افغاني مغول بللي او هزاره ګان يې په مکرر ډول «افغاني هزاره» په نامه یاد کړي دي. د سيفي هراوي د هرات تاريخنامې له ځينو عباراتو او بيانونو نه داسې ښکاري چې د

څورلسې پېړۍ په اوله نيمايي کې هم د هغه وخت د «افغانستان» غير پښتانه اوسېدونکي «افغانان» بلل شوي دي. د بېلگې په ډول کله چې سيفي د خپل وخت «افغانستان» د پېښو په اړه غږېږي د دغه ملک کردان په څرگنده د افغانانو جز بولي. دی يو ځای د هغه وخت د «افغانستان» د واکمن ملک «شاهنشاه» له خوږې ليکي: «... افغانان سخت بې پروا، غله، خوني، فتنه انگيز او مېړني خلک دي، په تېره بيا دا کردان چې زما په خدمت کې دي او هر يو يې له رستم دستان او سام نریمان سره ډغرې وهي او راپرزوي يې...» ۱۲۹

پښتنو ليکوالو هم چې اول يې د افغان نوم نه يادوه وروسته يې په خپلو ليکنو کې يادوه. خان جهان لودي شايد لومړی مشر او ليکوال وي چې د افغان نوم يې ياد کړی دی. د هغه وروسته خوشال خټک د افغان نوم په وياړ سره يادوه.

د افغان په نوم مې وتړله توره

د ننگيالی د زمانې خوشال خټک يم

احمدشاه دراني په خپل ليک کې چې عثماني سلطان دريم مصطفی ته يې استولی و د «قوم جليل افغان» يادونه کړې ده. سره له دې د افغان نوم د ودې پر حال کې و. د افغان نوم د همدغې پېړۍ په اوله نيمايي کې په انگرېزي ليکنو کې زيات يادېده او افغانان د يوه ملت په توگه او افغانستان د يوه هېواد په توگه نړيوالو ته وپېژندل شو. د افغان- انگليس لومړۍ جگړې د افغان نوم ملي مانا نوره پياوړې کړه. ليډي سيل (Lady Sale) په خپل ژورنال او ليکوال جان کي (John Kaye) په خپل اثر «په افغانستان کې د جنگ تاريخ» د افغان نوم ډېر ياد کړی دی. جان کي د افغان نوم د يوه ملت په توگه ډېر ياد کړی او وايي چې «افغانان يو توپاني او سرکښه خلک دي، ډېر لږ متمایل دي، چې واک ته تسليم شي او خپل نارضايت په شديدل ډول ښيي» ۱۳۰

الفنستون کله چې افغانستان ته د انگرېزي پوځ د استولو نه خبر شو، خپل حکومت ته يې څرگنده کړه چې تاسې به د انگرېزي پوځ په زور شاه شجاع د افغانستان په تخت کېښوئ خو په دغه خوار ملک کې او د سرکښه افغانانو په منځ کې به د هغه ساتنه ناهيليتوب راوړي.

د افغان- انگليس په دوهم جنگ سره د افغان نوم په ملي مفهوم سره نور هم خپور او وپېژندل شو «او ان تر دې چې د هندوستان وایسرای هم افغانان د يوه ملت په توگه تعريف کړل». کاکړ وايي چې د نولسې پېړۍ په دوهمه نيمايي کې د افغان نوم هم په ملي

او هم په مذهبي مفهوم د افغانستان د اوسېدونکو معرف وگرځېد او افغان نېشنلېزم واقعې شو.

دلته مهم ټکی دا دی چې نظام او ټولنه د ملي کېدلو او مدني کېدلو په لور روانه وه. د ملي کېدلو دغه يون د امير عبدالرحمن په يوويشت کلنه واکمني کې نور هم پياوړی شو او نوموړي د هېواد بېلو بېلو سيمو ته د خلکو په پرارولو سره د افغان قومونو دوديز کوبنه توب د منځه يووړ او د ملي پېوستون او ملي دولت پياوړي کېدو ته لار هواره شوه. دغه يون د امان الله په واکمني کې ځواکمن شو او د افغانستان ټول خلک د لومړي ليکلي اساسي قانون له مخې افغانان وبلل شول: «هر کسی که در افغانستان سکونت دارد از هر مذهب و فرقه که باشد و هر کار و صنعت و خدمتيکه ميکند، تماماً افغان گفته ميشوند.» ۱۳۱

وروسته د افغانستان په ټولو اساسي قانونو کې افغانان په دغه حقوقي مفهوم سره ياد شول او ټول د برابرې حقوقي څېستنې وگنل شول او د اوسني قانون د څلورمې مادې له مخې د افغان کلیمه د افغانستان د ملت په هر فرد اطلاق کېږي.

پټان:

د مخه مو يادونه وکړه چې افغانان چې د افغانستان په جوړېدو او پراخوالي کې بنسټيز رول لوبولی په درې نومونو پېښتون، افغان او پټان ياد شوی دی. د پټان نوم په نسبي توګه نوی دی او په اړه يې ځينې روايتونه شته. د فرشته په وينا هغه مهال چې افغانان د غور د غرونو نه وکوچېدل او د هند د بهار ولايت په پټنه کې ميشته شول هندوانو د نوي استوګنځي له امله د پټان په نوم ياد کړل. مورګن سټرن د ژبپوهنې له مخې وايي چې د پټان کلیمه د پښتان او پښتانه د کلیمو نه راوتلی دی خو کاکړ وايي چې د دې کلیمې فيلولوجي تعبير کمزوری ښکاري ځکه چې دا نوم د زيردې دولسمې پېړۍ د مخه په تاريخي سرچينو کې نه دی ليدل شوی. د پټان نوم په لومړي سر کې په ظاهري توګه هغو افغانانو ته چې د هند د سند د رود په ختيځه برخه کې ميشته و، ورکړ شوی و او وروسته يې هغه افغانان هم په غېږ کې ونيول چې د سليمان غرونو په لمنو کې اوسېدل. بيا انگليسي ليکوالو يوازې د هغو پښتنو له پاره وکاروه چې په هند او هغه ته په ګاونډ کې اوسېدل.

پنځم څپرکي

کاکړ او د تاريخ په بهير کې د پښتنو د ټاټوبي نومونه

اريانا:

افغانستان يو داسې هېواد دی چې د لرغونې زمانې نه انسانان په کې اوسېدل له دې کبله دوی او د دوی مينه او ټاټوبی په څو څو نومو يادېده. د افغانستان پخواني اوسېدونکي په باوري توگه مالوم نه دي خو د ويدي دورې اوسېدونکي يې اريايان دي. دا چې اريايان څه مهال په لرغوني افغانستان کې ميشته شول مالومه نه ده خو د کهزاد په وينا کله چې دوی د هندوکش په دواړو خواوو سيمو کې اوسېدل د ځان له پاره يې د «اريا» نوم غوره کړ او د دوی ټاټوبی د اريانا په نوم يادېده.

د کاکړ په وينا اريانا هېڅ کله ټاکلې پولې نه درلودې. هغه مهال د اريانا اوسېدونکي زياتره پوونده وو او ډېر لږ يې ميشته وو او پولې يې تل بدلېدې. برسېره پردې اريانا له دغسې سيمو نه جوړه وه چې هره يوه يې د يوه هېواد په شان وه. دا واقعيت په اوستايي دورې کې پوره څرگند و. کاکړ ليکي چې: «د زرتشت په قول د نېکې خدای اهورا مزدا شپاړس هېوادونه يا ملکونه (Lands) خلق کړل چې اريانا وايجو (Airyana Vaego) يې تر ټولو ښکلې هېواد و.» ۱۳۲ دی زياتوي چې مهمه دا ده چې دغه هېوادونه سره بيل وو او اهورا مزدا د دې له پاره پيدا کړل چې ښکلې اريانا وايجو د دوی د شر نه په امان وي. د اريانا وايجو ځای هم ناڅرگند دی. کهزاد يې د امو د رود د سرچينې چاپېر سيمه يا د امو او سر دريا پاسنۍ مجرا کې د فرغانې په سيمه کې بولي. خو نامتو انسان پېژندونکی کورډن چاپلډ وايي چې د هلمند د موندنو نه ښکاري، چې سيستان به اريانا وايجو وي. ۱۳۳ بخدي يا باختر په ختيځ کې يو مهم هېواد و چې بلخ يا زراسپه يې پلازمينه وه او

يونانيانو بکتريا او بيا عربانو د ام البلاد (د بنارونو مور) په نوم ياد کړ. بلخ په اوستا کې د لورو بيرغونو درلودونکي بنسکلی بخدي په نوم ياد شوی او هم د اريايي پاچاهانو لومړی مرکز هم ياد شوی دی.

د کاکړ په وينا د اريانا پولې تل د بدلون په حال کې وې او ولايتونه يې د سياسي وضعې له امله لږ او ډېر کېدل. د يونان جغرافيه پوه بطليموس د ليکنې له مخې په دويمې زېږدي پېړۍ کې د اريانا ولايتونه دا وو: مرجيانه (د مرغاب حوزه)، بکتريا (بلخ او بدخشان)، اريا (هرات)، پاراپاميزوس (هزاره جات او کابل تر اباسين پورې)، درانجيهانه (سيستان او کندهار)، اراکوزيه (غزني) او د کسي غرونه تر اباسين پورې او جدروزه يا گبروزه (کج او مکران يا بلوچستان). دې ته مو هم بايد پام وي چې دا ولايتونه د اوستايي دورې د شپاړسو هېوادو نه لږ دي. دا هم نه ده څرگنده چې په اريانا کې به داسې نظام يا حکومت و، چې حکم به يې په ټولو ولايتونو چلېده.

ځينې ولايتونه يې لا دومره مهم وو چې په خپل ځواک سره په امپراتورۍ بدل شوو. د بېلگې په توگه درانجيهانه (سيستان او کندهار) د ساکا د واکمنۍ پر مهال د کوندوفارس په مشرۍ په امپراتورۍ واوښت. د غبار په وينا دغه پاچا د سويلي اريانا او په ختيځ کې تر سند او پنجاب پورې واکمن و او مرکز يې د ارغنداب په سيمه کې و او په کابل کې يې د يونان او باختري واکمنۍ ته د پای ټکی کېښود. ۱۳۴

کاکړ وايي چې اريانا په اصل کې يوه جغرافيايي اصطلاح وه، نه سياسي. په زيات کومان اول اريا د خلکو او بيا اريانا د اريايانو د مينې په مانا دود شوی وي. اريايان چې د هندوکش دواړو خواوو په سيمو کې ميشته شول ځانونه يې د نجيب په مانا اريا وبلل. په دې ډول اريا د ويدي دورې نوم کېږي او دوی به ځکه دا نوم غوره کړی وي، چې ځانونه له تور پوتکو درايويديانو (Dravidians) څخه جلا وښيي چې د شمالي هند په موهنجه دارو او هراپا کې يې مدني او بشري ژوند درلود او چې اريايانو لاندې کړل، د داسيو په سپک نوم يې ياد کړل.

اريانا، اريانا وايجو او اريا درې واړه د اريايانو يا د لرغوني افغانستان د لومړنيو مالومو اوسېدونکو د هېواد په مانا دي. د کاکړ په وينا «داسې ښکاري چې اريانم وايجو او اريا ورته د دوی د هېواد لومړني نومونه وو، چې وروسته (څومره وروسته معلومه نه ده) اريانه شو، په دې ډول چې د وايجو او ورته وروستاري چې د ورشو او ځای په مانا دي، ورو ورو ترک شول او اريانه يې ځای ونيو.» ۱۳۵ کاکړ دا هم وايي چې «اريانا به په اصل کې اريانه وه، چې د وښيانه په شان د پښتو نوم کېږي ... چې [په کې] د ساکا ډېرې ځانگې ابادې

وې چې ژبه يې ساکي يا پښتو وه، ... ډېر اوسېدونکي يې ساکا ياني پښتانه يا د هغو وروڼه وو.» ۱۳۶

د اريانا پولې د لومړي ځل له پاره د لرغوني يونان ايراسټينيز د مخزيردې دريښ پېړۍ په نيمايي کې ثبت کړې دي. ده په دې اړه خپل مالومات د يونانيانو نه اخېستي او يونانيانو بيا هغه د ځايي خلکو نه تر لاسه کړي وو. سټرابو د اريانا پولې په ختيځ کې اباسين، په سوويل کې د هند سمندر، په شمال کې د پاراپاميزاد غرونه چې تر شمالي هند پورې غزيرې، پوله جوړوي او په لوېديځ کې يې يوه فرضي کرښه ښوولې چې له کسپين نه تر کرمانيا غزېدلې او په بل ځای کې يې دغسې ليکه ښودلې، چې پارتيان له ميديا نه او کرمان له پارای تکين نه بېلوي. خو د سټرابو نيمگړتيا پوهاند ويلسن سمه کړې او د اپولو ډورس (Apollodorus) په حواله ليکلي چې په اريانا کې د پارس او ماد ځينې برخې او په شمال کې بخدي او سغديانه په کې شامل دي، په داسې حال کې چې بخدي د هغې اصلي برخه جوړوي ۱۳۷

د اريانا دغه پولې دومره پراخې سيمې په غېږ کې نيسي چې يوې کورنۍ يا يوه حکومت نه شوې اداره کولی. په دې توگه دا يو سياسي واحد نه، بلکې يو جغرافيوې اوژبنی واحد دی. کاکړ وايي چې که اريانا سياسي واحد وای، يو ځانگړی نظام به يې درلودای، هم به يې جوړښت مالوم وای او هم به يې اوسېدونکو د باندني يرغل په وړاندې گډ غبرگون ښودلی، خو واقعيت دغسې نه و. د بېلگې په توگه د هند د موريا دولت تر هندوکشه پورې د اريانا ختيځه سيمه د خپلې امپراتورۍ برخه وگرځوله، بې له دې چې د اريايانو د گډ غبرگون سره مخامخ شي. همدارنگه د سيستان ساکي کورنۍ د گوندوفارس په واکمني کې شمالي هند د خپلې واکمنۍ برخه وگرځوله، بې له دې چې دغه بری يې د نورو سيمو په مرسته تر لاسه کړي وي. په دې توگه اريانا د اريايانو د ژوند سيمه وه، نه د يوه حکومت لاندې سيمه. دا واقعيت د اهورا مزدا شپارس هېوادونه هم په گوته کوي چې هر ځانگړی هېواد يې د خپلو واکمنو له خوا په خپلواک ډول اداره کېده.

د مخه مو يادونه وکړه چې پارسيانو او هندي اريايانو خپلې مينې د اريانا په نوم يادې نه کړې او د ايران نوم چې په شاهنامه کې وار وار ياد شوی دی له هغه نه مطلب اريانا دی. دا په شلې پېړۍ کې و چې پارس د ايران په نوم ياد شو. دا هم بايد ووايو چې د اهورا مزدا په شپارسو هېوادونو کې پارس د هېواد په توگه نه دی ياد شوی. له همدې امله به و چې هخامنشيانو د اريانا د نوم د يادولو نه ډډه کوله. وروسته ساسانيانو د پارتيا نوم په خراسان بدل کړ تر څو د پارتيا هويت له منځه يوسي.

خراسان:

د مخه مو يادونه وکړه چې پارتیانو د پارس په يوې برخې پنځه پېړۍ واکمني وکړه. د ساساني واکمنۍ بنسټ ايښودونکي اردشير پارتيا نسکوره کړه او هغه يې خراسان ونوموله، يانې هغه هېواد چې د فارس په ختيځ کې پروت و. پارسيانو د پارتیانو واکمني پردې گڼله. بل د دوی تر منځ د عقيدې توپير و. ساکانو د لمر نمانځنه کوله او پارسيان زردشتي وو. د دوی تر منځ بل توپير د خراسان نوم و چې ساسانيانو پارتيا د دې له پاره خراسان ونوموله چې د ساکا هويت له منځه يوسي. د خراسان نوم جغرافيايي مانا لري په داسې حال کې چې پارتيا د ساکا د خلکو هېواد پېژندل شوی و او پارسيانو ورته اشکانيان ويل. برسېره پر دې خراسان خپلواک هېواد نه، بلکې د ساسانيانو تر لاس لاندې و. همدارنگه خراسان ورو ورو پراخ شوی او د پېړيو په بهير کې يې نور ملکونه په غېږ کې نيولي دي. د ساسانيانو په وخت کې د پارتيا پلازمينه سټېسيفون هم پرېښودل شو او د خراسان والي خپل مرکز زياتره وخت نيشاپور غوره کاوه او د عربو د يرغل په وخت کې د خراسان مرکز د مروه ښار و، چې هغه په ټول ختيځ کې د عربو په ستر منځي بدل شو. خراسان په واقعيت کې هغو سيمو ته ويل کېده چې د پارس په ختيځ کې پراتې وې او د هغه تر لاس لاندې به نه وې. د بېلگې په توگه د ساساني وروستي پاچا يزدگرد په مهال سيستان د ځايي واکمنو زنبيلانو چې په اصل کې ساکا وو، له خوا اداره کېده. کله چې په ۶۴۰ زيږدې کې يزدگرد په نهاوند کې د عربي پوځ نه مات شو د مرستې له پاره سيستان ته لاړ چې زنبيلانو د ده سره د مرستې نه ډډه وکړه او د خراسان منځي مروه ته لاړ او هلته د والي ماهوي سوري له خوا د خسرو نومي ژرنده گري په لاس ووژل شو او ساساني واکمني پای ته ورسېده.

د ساسانيانو د واکمنۍ په مهال کې د خراسان ټولې ناڅرگندې وې. دومره ښکاره وه چې پارتيا او مروه د خراسان په نامه يادېدې او مروه د ساسانيانو پوځي مرکز و. کاکړ وايي چې مروه «په زړه پارسو کې د مارگو (Margu) په نامه يادېده، خو د نيشاپور، هرات او بلخ درې لوی ښارونه د مروه تر لاس لاندې نه و. دوه وروستي يې زياتره وخت د يفتاليانو تر لاس لاندې او په دې ډول حتی د ايرانشهر د واکمنۍ نه د باندې و. کله کله د ساسانيانو واکمني په بلخ باندې چلېده، خو د عربانو د يرغلونو په وخت کې هلته لا هم کوشاني باختري ژبه ليکل کېده، په همدغه وخت کې و، چې فارسي په بلخ کې ننوته.» ۱۳۸ کاکړ د فراي د اثر په حواله چې «د پارس طلايي دوره» نوميږي وايي چې په عمومي ډول مالومه نه

ده چې د عربانو د راتګ په وخت کې څومره سيبې د ساسانيانو او څومره د ځايي واکمنو او په ځانګړې توګه د يفتاليانو په لاس کې وې. ۱۳۹ د فرای پورتنی وينا د غبار دا وينا بې باوره کوي چې وايي: «کلمه خراسان و خراسانيان دوره اسلامي از قرون اوليه هجري تا اين اواخر در جای اسم اريانا و ارياناى قديم و افغانستان و افغان امروز مستعمل و در السنه و اثار مذکور و مسطور بوده است.» ۱۴۰

عربانو د مروې نه د بخارا، سمرقند يا پخوانۍ سغديانې د لاندې کولو په موخه يرغلونه کول او له هر يرغل نه وروسته به بېرته مرو ته ګرځېدل. د خراسان د نومېدې پنځه پېړۍ وروسته په ۷۳۷ زيږدې کې اسد بن عبدالله د سمرقند پاچا غورک د مړينې وروسته خپله پلازمينه د مرو نه بلخ ته يوره. د دې سره عربانو د نن ورځې افغانستان ټول لاندې نه شو کړای. عربو لا د اومې پېړۍ په پای کې په سيستان کې د زنبيل پاچا له لاسه کلکه ماتې کړې وه چې د مولف کنيدي په نظر په اريانا او په ځانګړې توګه په سيستان کې د عربو سوبو ته يې د پای ټکی کېښود. د دې سره سره عربي قوماندانانو به له بلخ نه کله کله يرغلونه کول. په دغه وخت کې ډېرې سيبې خپلواکې يا نيمه خپلواکې وې، لکه هريوا، تخار، سيستان، زابل او غور. عربانو دغه مهال د امو نه پورته سيبې د ماوراالنهر په نامه يادولې. خو دا د ځايي کورنيو د واکمنۍ او په ځانګړې توګه د «سفاريانو او غزنويانو په وخت کې و چې په ټول خراسان يا د خراسان په ډېرو برخو کې يوه کورنۍ د واکمنې کورنۍ په شان هسکه شوه او لوړ واکمن يې د عباسي خليفه کانو له خوا په رسمي ډول د خراسان والي وپېژندل شول، خو د طاهريانو، صفاريانو، سامانيانو، سلجوقيانو، غزنويانو او غوريانو د حاکميت سيبې سره ډيرې متفاوتې وې او مرو د پخوا په شان اصلي خراسان ګڼل کېده. په هر حال خراسان اوس بېرته د هغه لومړنۍ سيبې يوې وړې برخې طوس او نيشاپور ته ويل کېږي، چې د ايران يو ولايت دی.

افغانستان:

دا مالومه نه ده چې د لومړي ځل له پاره د افغانستان نوم کله او د چا له خوا کارول شوی دی. د افغانستان نوم د افغان او ستان نه جوړ شوی ترکيبي نوم دی چې د افغان هېواد مانا لري. کاکړ وايي چې سيبې هروي شايد لومړی مؤلف وي، چې په خپل اثر (تاريخنامه هرات) کې يې د افغانستان نوم ۳۴ ګوته ياد کړی دی. د دې نه دا ګوته ښکاري چې افغانستان نوم د پخوا نه شتون درلود او د ده په وخت کې عام و. په دې توګه سيبې د ډيارلسې پېړۍ په سر کې ياني د چنګېز خان د تاراګونو په وخت کې د افغانستان نوم

يادوي چې «از حدود خراسان و نواحي جبال ترکستان و شبورغان تا افغانستان قرب پنجاه هزار مرد از پياده و سوار بهرات آمدند.» ۱۴۱

د کاکړ په وينا مؤلف زمجي اسفزاري هم افغانستان د يوه بيل هېواد په توگه يادوي او وايي چې «کشور هرات با ولايات ان از دريای امو تا شرقي ترين نقطه افغانستان به وی [غياث الدين] داده شود.» ۱۴۲ داسې ښکاري چې د سيفي او اسفزاري دغه افغانستان جلا او خپلواک هېواد و او د ځايي واکمنو له خوا اداره کېده. «د سيفي د اثر نه دا هم ښکاري چې دغه ځايي واکمنان په ټينگو او لوړو حصارونو کې اوسېدل. او د ساچي په نامه حصار يې دغومره لوی و، چې: در انجا هزار مرد افغان جلد مبارز متوطن است و از عهد يزد جرد تا امروز هيچ بادشاه و ملک و حاکم کردن نه نهاده اند. په نورو حصارونو کې ان تر دوه زرو سواره سرتيري هم ځای پر ځای وو.» ۱۴۳ سيفي د افغان دغه ځايي واکمنان واليان بولي. د بېلکې په توگه سندان د سندان ولايت والي، جمال الدين سام افغان د غور والي او همدارنگه د مستونگ والي يادوي.

مستونگ د کوټې پخوانی نوم و. کوټبه د کلات په کېدون د احمدشاه بابا له وخته د امير شيرعلي خان د باچايي تر ۱۸۷۶ کال پورې په افغانستان پورې تړلې سيمه وه. امير شيرعلي خان غوښتل د مکران په څنډه کې گوادر د کراچۍ غونډې بحري بندر وگرزوي، خو انگرېزانو کوټبه په ۱۸۷۶ کې په سياسي او نظامي لحاظ بيله کړه.

د افغانستان دغه واليان د چنگېزخان د تاراگونو وروسته هم خپلواک وو، خو په څورلسمې پېړۍ کې د کرتانو په وخت کې تابع وگرځول شول. له دغو ځايي واکمنانو نه ميران شاه دومره مهم و چې د سيفي په وينا «ميران شاه اتلس کاله په افغانستان او د هندوستان په پولو کې لښکر کشي کړې وه، څو کلاکانې او حصارونه يې لاسته راوړي او په نارينتوب او مېرانه او په ډېر جوش د جگړې په ورځ د دوو ویشتمو نامي سرو سره مقابله وکړه.» ۱۴۴

د کاکړ په وينا سيفي افغانستان د ختيځ په لور د اباسين تر حده پورې هېواد ښوولې، چې هغه د کسي يا سليمان غرونو سمسورې درې کيرې، چې له کندهار، قلات او غزني نه د ختيځ پورې غزبدلی او پېښور او کوټبه يا مستونگ يې مهم ښارگوټي وو. دا سيمه لږ و ډېر د هېرودت د پکتیک، گندارا او د پښتنو د پښتونخوا او روه سره سمون خوري او پښتانه د لرغوني مهال نه په کې اوسي او کوچيان يې تر اوسه په کې کوچيتوب کوي. دا وخت و چې د پښتنو دغه هېواد د نورو له خوا په نورو نومو لکه «جبال الافغانيه» يا «جبال الافغانه»، «کشور افغان»، «مرز افغانيان»، «افغان» او روه ياد

شوی دی.

د تېري په وينا تر هغه ځايه چې ده ته مالومه ده ابوريحان بيروني د اسلامي دورې لومړۍ مؤلف دی چې د «جبال الافغانيه» يادونه کوي. بيروني په خپل نامتو اثر «د هند تاريخ»، کې چې په ۴۲۱ کې ليکل پای ته رسېدلي دي د لرغوني هند د لوېديځې پولې په غرنۍ سيمه کې افغانان ميشته کني او ليکي چې د دوی بيلې بيلې پرکړي د سند تر کاونده خپارې دي. ۱۴۵ بيروني وروسته بيا په يوه بل اثر «صيدنه» کې چې د ۱۰۵۰ زېږدي کال په شاوخوا کې ليکل شوی دی دا سيمه دوه واړه د جبال الافغانيه په نامه يادوي:

«يو ځای د اسطوخودوس د توضيح په ضمن کې ليکي چې «بهترين ډول يې هغه دی چې شې پانې لري ... دا نوع د دهک خوا ته ، د هند د خاورې د پرشاور [پېنسور] او د جبال الافغانيه تر منځ شنه کپړي» ۱۴۶ په همدې اثر کې يو بل ځای د زيتون د معرفي په ترڅ کې ليکي: «وحشي زيتون چې جبال الافغانيه کې ... شين کپړي، ورې دانې لري.» ۱۴۷

د تېري په وينا شيخ ربوه دغه سيمه جبال الافغانه بولي او ليکي چې: «دريم اقليم د چين له شمال ختيځه ... او له جبال الافغانه او ملتان نه تر سنده پورې امتداد لري.» ۱۴۸

د غزويانو د دورې ستر قصيده ليکونکی مسعود سعد سليمان د افغانانو ملک د کښور افغان په نوم ياد کړی دی:

شکسته گشت به تيغ تو لشکر کفار

خراب شد به سپاه تو کشور افغان ۱۴۹

تېری زياتوي چې د شاهنامې ورک نومي شاعر چې د ژوند وخت يې شپږمه هجري پېړۍ ټاکل شوې ده د افغانانو ملک د مرز افغان په نوم يادوي:

همه مرز افغان به هم برز نم

بدین دژ زکین آتش اندر ز نم ۱۵۰

محمد بن محمود بن احمد طوسي په «عجایب المخلوقات» کې ليکي چې: «د افغانانو په حد کې د زغیو ځنگل دی چې په هغه کې داسې يوه ونه ده چې اوږوالی يې اووه لس ارشه دی ... دا د برهمن ونه بلل کپړي او افغانان سجده ورته کوي.» ۱۵۱

ارزقي هروي په خپله قصيده کې چې دطغانشاه په ستاينه کې ويلې ده وايي:

زهري گر سوی افغان شوی ای باد شمال

باز گوی زهري پېش ملک صورت حال

په دې توګه د افغانانو ملک د سوونو کلونو را دې خوا د جبال الافغانیه، کشور افغان، مرز افغان، حد افغانیان او افغان په نامه یاد شوې دی. خو دا نومونه یوازې د افغانانو د مینې په مانا کارېدلي دي نه د سیاسي پولو په مانا.

بابرشاه هم په خپله بابرنامه کې کله چې کابل یادوي، افغانستان د هغه په سوویل کې ښي او حتیڅه پوله یې تر پېښور پورې رسوي، خو له هغه وروسته د اسفزاری نه غیر د افغانستان نوم په نظر نه راځي. کاکړ وايي چې دلیل یې شاید دا وي، چې د مغولي هند په هسکېدو سره د هغه وخت افغانستان په هند کې ونيول شو. د هند د مغولي واکمنۍ نه د دې سیمې د ازادۍ له پاره پښتنو د روښان پیر، د هغه زامنو او لمسیانو په مشرۍ کلکې مبارزې وکړې چې نږدې یوه پېړۍ اوږدې شوې. ورپسې خوشال خټک او ایمل خان مومند د روښانیانو غونډې یوسفزي، مومند، اړیدي او نور قومونه د مغولو په وړاندې جګ کړل چې په پای کې ټول ناکام شول. خو د دوی دا ملي ازادې بڅښونکي غورځنګ د خپلې ناکامۍ سره سره دوی مهې پایلې درلودې. لومړۍ پایله یې دا وه چې اورنگ زېب اړ شو چې پښتني قومونو ته کورنۍ ازادې ومني او دوهمه پایله یې دا شوه چې په پښتنو کې د خپلواکۍ شعور غښتلی شو. برسېره پردې په دغه مهال کې د افغانستان لوېدیځه برخه د صفویانو او شمالي برخه د شیباني ازبکانو تر لاس لاندې وې. په دغه مهال کې په وېشل شوي افغانستان کې افغانان د ګډ سیاسي ژوند نه بې برخې وو. دا لامل و چې نه یوازې د افغانستان نوم بلکې د پښتونخوا او روه نومونه هم شاته غورځول شوي وو. دا ستر میروېس نیکه و چې په خپل پاڅه تدبیر او ټینګ هوډ یې د کندهار، فراه، پښین او کوپټي خلک پوره خپلواک کړل.

هنري والتر بیلېو وايي چې په نوي عصر کې د افغانستان نوم ایرانیانو راپستلی دی. دی وايي کله چې نادر افشار دا سیمه «د فارس په قلمرو کې داخله کړه، لومړی شخص و چې [د دې ساحې] شمالي برخه یې د هغې د اوسېدونکو د اکثریت له امله افغانستان وبلله او جنوبي برخه یې په همدې دلیل د بلوچستان په نامه یاده کړه.» ۱۵۲

بیا ستر احمدشاه بابا د اوسني افغانستان بنسټ ایښودونکي لومړی د امو نه تر اباسینه خپل هېواد د پردیو د ښکېلاک نه وژغوره او وروسته یې د پنجاب، کشمیر، سند، بلوچستان، ډیلي او د فارسي خراسان په لاندې کولو سره د لرغوني افغانستان د نورو سوبمنو غونډې، یوه امپراتوري جوړه کړه. خو د تیمورشاه د واکمنۍ پر مهال د هېواد د خورتیا شرایط برابر شول. د تیمورشاه د مړینې وروسته د هغه زامن، چې د بیلو بیلو میندو نه وو، د واک پر سر په شخړو او ناندربو بوخت شول. د دغو بې اتفاقو په

پایله کې د احمدشاه بابا غښتلی امپراتوري «د هغه د لمسیانو په وخت کې په اصل کې له دې امله مخ په خوري او بیا په ۱۸۱۸ کې ټوټه ټوټه شوه، چې چلوونکو یې نه شو کولی تر لاس لاندې سیمو نه باج تر لاسه کړي.» ۱۵۳

امیر دوست محمد خان، چې په ۱۸۱۸ کال کې د سدوزو د پرزېدو وروسته د یوې اورېدې مودې د کورنۍ جگړې په یون کې د محمدزو د واکمنۍ بنسټ کېښود، په ۱۸۲۶ کې د قزلباشانو په مرسته واکمن شو. خو د افغان-انګلیس د لومړۍ جگړې په بهیر کې انګرېزانو ته تسلیم شو او هندوستان ته یې پرار کړو. بیا کله چې په دغه جنگ کې د انګرېزانو ۱۶۵۰۰ پوځ، چې د هغه نه د شپږو نه تر شپږ نیم زره انګرېزي منظم پوځ و، نور یې هندي مستخدمان یا عمله او فعله وه، تباہ شو نو دوی په ۱۸۴۳ کې امیر دوست محمد خان بېرته هېواد ته راستون کړ او خپلواک امیر شو او تر ۱۸۶۳ کال پورې یې ټوټې شوی افغانستان د پېښور پرته یو موټی کړ.

پښتونخوا:

د پښتونخوا نوم هم د پښتون نوم غوندې لرغونی دی. د مخه مو یادونه وکړه چې د تاریخ پلار هیرودت په خپل تاریخ نومي اثر کې د پښتنو ټاټوبی د پکتیکا یا پکتویک په نوم یاد کړی او هنزي بیلو، هنزي ليوونټال، اولاف کيرو او جورج کريسن د هيرودت د «پکتیکا» کلیمه د نننۍ پښتونخوا د کلیمې انډول کښي. د ځینو لاملونو له کبله د پښتونخوا نوم کارول ځنډول شوی خو خپله پښتنو زیات وخت په خپلو لیکنو کې د پښتونخوا نوم د افغانانو یا پښتنو د ټاټوبی له پاره کارولی دی.

د اخوند دروېزه په مخزن الاسلام کې ډېر ځله د پښتونخوا کلیمه راغلې ده. دی د روښان پیر د بیان په ترڅ کې د سید علي ترميزي یادونه کوي اولیکي: «حضرت سید علي ترميزي و په بهیر کې، پښتونخوا په مثال شپه وه دی ډېوه وه په اندهیر کې. دی نېکخواه د پښتونخوا و ساتندویه په دنیا و.» ۱۵۴

بل ځای د مغولو سره د روښان پیر د زوی د جلال الدین د ډغرو وهلو د بیان په ترڅ کې لیکي چې جلال الدین: «دغه لاپه، په خوله کړه چې پادشاه د پښتنو یم ... پښتنو ټولو پرې وکړ: ولې دی هم پښتونخوا لره بلا شه.» ۱۵۵

د هېواد مل په وینا د احمدشاه بابا د دیوان په هغه قلعي نسخه کې، چې د ښاغلي سلیحي کندهاري سره شته او د احمدشاه بابا د لمسي شاه زمان سدوزي له پاره لیکل شوې وه، په یوه غزل کې هم د پښتونخوا کلیمه راغلې ده:

د ډيلي تخت هېرومه چې را ياد کړم
زما د ښکلي پښتونخوا د غرو سرونه

د احمدشاه بابا د مهال نامتو پوه او شاعر پيرمحمد کاکړ هم د پښتونخوا کليمه په خپل شعر کې راوړې ده:

لکه شعر دی د ده په پښتونخوا کې

بل به کم وي په دا وخت د افغان شعر ۱۵۶

په باندینيو ليکوالو کې ډاکټر ليدن نږدې دوه پېړۍ د مخه په هغه مضمون کې چې د روښان پير په اړه ليکلی د پښتونخوا کليمه کارولې ده: «بازيد چې د ننګرهار نه روان شو پښتنخا يا د کليمې په خاصه معنا افغانستان ته يې مخه کړه.» ۱۵۷ وروسته لوېديځو ليکوالو د پښتونخوا کليمه زياته کارولې ده او فرانسوي ستر پوه ډارمستېر د پښتنو ولسي سنډري ټولګه، چې په کوزه پښتونخوا کې راټولې کړې او بيا يې د «پښتونخوا هار و بهار» په نامه خپرې کړې.

زموږ د وخت پښتانه له امو نه تر اباسينه او له هراته تر کشميره پورې سيمه د پښتونخوا په نامه يادوي. دوی دا ساحه د لويې پښتونخوا په نوم هم يادوي او په لره او بره پښتونخوا يې وېشلې ده. لره پښتونخوا يې هغه سيمه بللې ده چې له خيبره تر اباسينه پراته ده او بره پښتونخوا يې هغه سيمه بللې ده چې له خيبر نه د امو د سيند تر غاړې پراته ده.

په دې ترتيب پښتونخوا د پښتنو د ملک له پاره کارول شوې او «زموږ د وخت پښتنو د پښتونخوا نوم، عموماً د هغې ساحې په مفهوم استعمال کړی دی چې له امو نه تر اباسينده او له هراته تر کشميره امتداد لري.» ۱۵۸

روه:

يو بل نوم چې د پښتنو د ملک له پاره کارول شوی دی روه دی. د تېري په وينا: «تر ټولو پخوانی تحريري اثر چې ما د روه نوم په کې ليدلی دی هغه تاريخ داودي دی.» عبدالله ليکي: «کله چې سلطان بهلول سلطنت ته ورسېد، له روه نه يې چې د افغانانو ټاټوبی دی، ډېر افغانان راوغوښتل... د فرید نيکه چې ابراهيم نيکه و، له روه نه هندوستان ته راغی.» ۱۵۹ د هند د مغلو د واکمنۍ د مهال ليکوال عباس سرواني په خپل اثر تاريخ شېرشاهي کې روه د افغانانو د ملک په نامه څو ځلې ياده کړې ده او يو ځای د بهلول د هغه فرمان نه

يادونه کوي چې هند ته د پښتنو د رابللو په اړه يې روه ته لېرلی و او ليکي: «کله چې دا فرمان ورورسېد افغانان ... د روه له ټولو برخو نه ډله ډله [هندوستان] ته ... راغلل.» ۱۶۰

خواجه نظام احمد په طبقات اکبري کې هم روه يادوي او ليکي: «کله چې سلطان بهلول قدرت ته ورسېد ډېر زيات شمېر افغانان يې له روه نه چې د افغانانو ملک دی، راوغوښتل...» ۱۶۱

په تاريخ فرشته کې هم ډېر ځلې د روه نوم ياد شوی او يو ځای ليکي: «د سوريانو د کورنۍ يو غړی ... د روه په افغانانو کې ميشت شو.» ۱۶۲

خواجه نعمت الله هروي هم د روه نوم بيا بيا کارولی او کله چې د سلطان شهاب الدين د برياوو د بيان په ترڅ کې ليکي: «درېم وار يې د افغانانو د قبایلو دولس زره ... سواره له خان سره راوستل ... سلطان شهاب الدين دا خلک د روه په غرنۍ سيمه کې ان د ملتان تر سرحده آباد کړل.» ۱۶۳

د پښتو ژبې پخوانيو شاعرانو هم په خپلو شعرونو کې د روه نوم ياد کړی دی چې د کاظم خان شيدا او اشرف خان هجري د شعرونو لاندې بيتونه يې ښې بېلگې دي:

کاظم خان شيدا

په زره مې گرځي د غرونو څوکي
حملې د بازو د زرکو کوکي
ووايه څه کا د روه نسيمه
گيـرا منگـولي زيبـا مشـوکي

اشرف خان هجري

د زره باز يې تل د روه پر ځمکه گرځي
که هجري په دکن ناست خالي بدن دی

دروه د سيمې په اړه عبدالله په خپل اثر تاريخ داودي کې ليکي: «د روه اوږدوالی له سواد بجور [سوات باجور] نه د سيوی تر قصبې پورې چې له بکېر له توابعو نه ده، رسيږي او سور يې له حسن ابدال نه تر کابل او قندهاره پورې دی او هر څه چې پدا منځ کې دي هغه ته روه وايي.» ۱۶۴

د تربي په وينا د نظام الدين په طبقات اکبري، د محمد قاسم په تاريخ فرشته او د

نعمت الله هروي په مخزن افغاني کې هم د روه سيمه د تاريخ داودي ته ورته ياده کړې ده. خو نواب محبت خان پرېڅي په رياض المحبت کې روه يو ستر ملک بولي: «د شرق په لور تر کشميره او د غرب په لور تر هېرمنده چې د دوه نيمو مياشتو منزل دی، امتداد لري؛ د شمال په لور تر کاشغره او د جنوب په لور تر بلوچستانه امتداد لري؛ [دا] د افغانانو هېواد دی او افغانان په کې هست دي.» ۱۶۵ کاکړ همدارنگه په خپل اثر «افغانستان و افغانها و تشکيل دولت در هندوستان، فارس و افغانستان» کې د کافو يا کابل او پوروشاپورا يا پېښور په اړه هم يادونه کړې ده چې لنډيز يې د لاندې وړاندې کيږي.

کابل، کافو:

کابل يو پخوانی نوم دی چې په سانسکرت کې د (کوېها) په نوم ياد شوی، د يونان لرغونو ليکوالو کوفن يا کوفس او کووا ياد کړی، د پارس خلکو او ارستو د خوسپس په نوم بللی او په اوومه مخزېږدې کې شون چونک د کافو په نوم ياد کړی دی. د کاکړ په وينا دا نوم لومړی د کابل رود ته ورکړل شوی دی. د وخت په تېرېدو سره د کابل وادي ته د سوويلي هندوکش نه د سند تر رود پورې د کابل او کابلستان په نوم يادېده. د کابل ښار هم په دې نوم يادېږي خو ښکاره نه ده چې دا ښار کله او د چا له خوا منځ ته راغلی دی. د کابل وادي درې د کرنې وړ ځمکې لري او د پخوا نه خلک په کې استوګن دي. کابل د ابو د لارو د موندلې نه وړاندې د هند، چين، منځنۍ اسيا او پارس تر منځ د سوداګرۍ لويه لار وه. په کابل کې لويې واکمنۍ منځ ته راغلې چې لوی کوشانيان او کابل شاهان يې ډېر مشهور دي.

کابل د زېږدې نه څو پېړۍ وړاندې او وروسته په لوېديځ کې تر باميانو او کندهار، په سوويل کې د بولان تر کوتله سيمه وه او په لسو برخو وېشل شوې وه چې کاپيسا يې منځی و او د کابل علاقې، باميان، غزني، ننگرهار، سوات، پېښور، اپوکين، بنو او بولر يې تر لاس لاندې وې. په دې ترتيب کابلستان ټول افغانستان په غېږ کې نيولی و. کابل د الکزاندر کنينګېم د سپړنې له مخې د چيني ليکنو پر بنسټ شايد د يوچي د پنځو قبيلو نه د يوې نوم وي. ويل کيږي چې کله دې قبيلې د مخزېږدې دوهمه پېړۍ کې کابل ونيو نو د خپلې قبيلې نوم يې ورباندې کېښود. کاکړ وايي چې دا ليکنه ځکه سمه ښکاري چې د هغې دورې نه د مخه د سکندر د مهال تاريخ پوهانو د کابل نوم نه دی ياد کړی. دوی د ارتوسپانه د ښار په نوم ياد کړی چې د لور ځای مانا لري او دا کلیمه د سانسکرت د اردهستانه د ترکيبي نوم سره سر خوري چې همغه مانا لري او د کابل له پاره کارېده. وروسته په دوهمه زېږدې پېړۍ کې

بطلیموس دا ښار د کابورا په نوم یاد کړی چې د پاراپامیزاد منځی و. داسې ښکاري چې ارتوسپانه د سیهې اصلي مرکز و چې د یونانیانو د واکمنۍ نه وروسته یې ځای سکندرې و نیو تر څو وروسته د هندو- ساک شاهزاده گانو بیا ژوندی کړ. دا ښار د اوولسې پېړۍ نه د مخه چې اویبان د کاپیسا منځی شو پرېښودل شو او دا حالت د چنگېز تر تارکونو پور دوام وکړ تر څو چې اویبان ړنگ او کابل سوکه سوکه د منځي حیثیت وموند او په ځانگړې توگه چې په ۱۷۷۶ کې د درانیانو د امپراتورۍ منځی شو. الفلستون د نولسې پېړۍ په پیل کې د کابل د سلطنت په نوم یاد کړ. د دراني امپراتورۍ د ړنگېدو وروسته تر یوه مهاله د کابل امارت په نوم یادېده. د ۱۸۹۳ کال وروسته د هغه نه ډېرې سیهې بیلې شوې او په دې توگه د کابل پراخوالی کم او لږ شو.

پوروشاپورا یا پېښور

د پېښور ښار ډېر لرغونی دی. لرغونی نوم یې پوروشاپورا و چې د کندارا مرکز و. کندارا د ویدي دورې نوم دی چې ډېر وخت دپاره د اباسین او ایلمن تر منځ پرتې سیهې ته ویل کېده. دا هغه سیمه وه چې وروسته د «روه» په نامه یاده شوه. د سلېمان غرونه او درې چې په پښتو کې د کسي غرونه نومېږي هم په همدغې سیهې کې واقع دي. د سلېمان غرونه او درې په عمده ډول د پښتنو ټاټوبی دی. افغانستان د مستونک په گډون په اصل کې د همدغې سیهې (اباسین- ایلمن) نوم دی، چې وروسته پراخ شو او د امیر عبدالرحمن په وخت کې په اوسني افغانستان باندې په رسمي ډول هم یاد شو. له همدغې سیهې او په ځانگړي ډول له پېښور او کندهار نه د پښتو د ثقافت او شعر او ادب پلوشې څلېدلې دي. پېښور د درانیو په واکمنۍ کې د واکمنو د ژمي پلازمینه وه. په پېښور کې افغاني ثقافت ښه وده کړې ده.

اوس مهال نږدې ټول پېښوریان او د هغه چاپېر خلک د افغانستان نه راغلي او هر وخت چې په افغانستان کوم مصیبت راغلی او مصیبت څپلي د پېښور په لوري مخه کړي ده. په ۱۸۸۸ کې یوازې له غازي محمد ایوب خان سره اته سوه افغانان کېوال لارل او په لاهور او راولپنډۍ کې میشته شول. غازي محمد ایوب خان مړی د پېښور په حبیب هدیره کې ښخ دی. د امیر عبدالرحمن په واکمنۍ کې په سلگونو نور افغان مشران هم پېښور او هم نورو ځایونو ته واوښتل. تر دې نږدې وختونو نږدې دوه میلیونه افغانان پوونو له سیند نه تر هزاره جاتو پورې په تک کې وو. د پوونو سوداگر به د سند نه تر بنکاله او برما او له کابلستان نه تر بخارا پورې تلل راتلل. کاکړ وايي چې «په دې ډول د پېښور ځایي خلکو او

اوسنیو افغاني کډوالو علايق د بشري، تاريخي، ژبنيو او قومي واقعیتونو په عمومي ډول د کډ ژوند طرز او نړۍ ليد انعکاس دی. «۱۶۶ له دې امله د پېښور او کونډې پښتانه د خپل نسب رېښې په افغانستان کې لتوي. نو ځکه دوی افغانستان خپل هېواد او اوسېدونکي يې د خپلو وروڼو په شان گڼي.

شپږم څپرکی

په هند کې د افغانانو امپراتوری

۱: د لودیانو امپراتوري

پښتانه په دوهمه هجري پېړۍ کې د کسي غره له لمې نه د اباسين لوېديځ لوري ته ورو ورو ننوتل. همدغو پښتنو د خپلې جنګي وړتيا او زورتوب له کبله د واکمنو هندي راجاکانو سره د تفاهم له مخې د څلورمې هجري پېړۍ په دوران کې د هندوستان په يوه څنډه کې لومړۍ پښتني حکومت د شيخ حميد لودي په مشرۍ جوړ کړ چې د ملتان نه نيولې تر لغمانه پورې سيمې يې تر واک لاندې وې. دا واکمنه کورنۍ د ملتان لوديان وو.

د لودیانو د لومړۍ دورې واکمنۍ نه وروسته چې د حميد لودي په مشرۍ د ملتانه تر لغمانه غزېدلې وه، پښتانه ورو ورو هندوستان ته ننوتل. فخر مدير مبارک شاه چې د غوري پاچاهانو له منشيانو څخه و، په خپل کتاب «اداب الحرب و الشجاعه» کې وايي چې «ان په هند باندې د سلطان محمود غزنوي د لښکرکښيو د مخه افغانان په پنجاب کې ميشته وو.» ۱۶۷

تاريخ کښونکی العتبی وايي چې سلطان محمود غزنوي په پوځي برخه کې د افغانانو نه د جنکياليو سرتېرو په توګه کټه پورته کوله او د غزنوي پاچايانو په لښکرو کې پښتنو ځانګړی ځای درلود. ۱۶۸ «پښتانه په ډله يزه توګه د سلطان محمود غزنوي په لښکرو کې هند ته تللي دي.» ۱۶۹ له دې وروسته افغانانو په هند کې د مسلمانولو په جګړو او د اسونو او تورو سوداګرۍ ته زيات پام واړاوه. پښتانه د چنګيز او د هغه د ځای ناستو د يرغلونو نه هم هند ته شپوه شوي دي. همدارنګه اقتدار حسين صديقي په خپله ليکنه «په هند کې د واکمنو نخبه گانو په توګه د افغانانو څرګندېدنه» کې ليکي چې افغانان هند ته د ننوتو په لومړۍ مرحله کې د خپلو قبيلو په دودونو او ادابو ټينګ ولاړ وو، خو د هغوی وروستي نسلونو د مسلمانانو د نخبه گانو اشرافي سلوک سوکه سوکه ومانه. دوی د ډيلي د سلطانانو ځينو پوځي او اداري سيستم مقامونو ته ورو ورو جګېدل چې د هند په اسلامي ټولنه کې د دوی مدني او کلتوري ودې ته لاره پرانېسته.

په دې توګه دوی په دربار کې د اشرافي کلتور سره ځان ته سمون ورکړ او د وخت په

تېرېدو سره دوی متمدن خلک شول او خپل ځان يې په هند کې د واکمنۍ دپاره تيار کړ او واکمني ته ورسېدل. ۱۷۰۰ زيات شمېر افغانان چې ناپوځي کسبونه يې کول په زيات شمېر سره په ډيلي کې ميشته شوي وو او د ډيلي د اوسېدونکو غوندې يې د ډيلي د کلتور سره خوی ونيو.

افغانانو سوکه سوکه د ډيلي د واکمنو په نظامي او اداري سيستم کې مهم مقامونه ونيول او د غلځيانو په واکمن کېدو سره د دوی پرمختگ گړندی شو. غلځي سلطانانو په مهمو مقامونو د غوره کولو له پاره د ورتيا اصل په نظر کې نيوه. د سلطان علاوالدين خلجي په انتخاب شويو افرادو کې د اختيار الدين افغان مل نوم موندلی شو. دغه د ښه نوم سړي د سلطان محمد بن تعلق تر زمانې پورې مهم مقامونه نيولي و. د هغه کوچني ورور افغان مل هم د غلځيانو په زمانه کې مهم مقامونه نيولي و.

دغه مهال يو تن افغان چې ملک شاهو لودي نومېده په ۱۳۳۴ زېږدې کې د ملتان د نايب الحکومه بهزاد په وړاندې جگ شو او د هغه د وژلو نه وروسته پاچاهۍ ته ورسېد. د ملک شاهو لودي پاڅون دومره پراخ شو چې په خپله د ډيلي سلطان د ملتان په لور وخوځېد. په پايله کې د سلطان سره د مقابلې پرته د خپلو کړو له امله د سلطان نه بخښنه وغوښته او د خپلو کسانو سره افغانستان ته لاړ. نور مهم کسان چې دا مهال يې مهم پوستونه درلودل ملک خطاب افغان، قاضي جلال الدين افغان، ملک ماخ افغان او نور وو. برسېره پر ډيلي افغانانو په گجرات او بنګال کې هم ژوند کاوه.

څنگه چې افغانان د افسرۍ او ځمکو څښتنان شول بهلول لودي په هندوستان کې د پښتنو د امپراتورۍ او د لوديانو د کورنۍ بنسټ ايښودونکی په سرهند کې واک ته ورسېد. نوموړي لومړی د سلطان محمدشاه چې د ۱۴۴۵-۱۴۱۴ د ډهلي د سلطنت او د سيد کورنۍ نه و په ملاتړ د سلطان محمود خلجي پر ضد چې په مالوا کې واکمن و د شل زره پوځ مرسته وکړه. بيا په ۱۴۵۱ کې يې د سيد کورنۍ رانسکوره کړه او په خپله سلطان بهلول د واک واکې په لاس کې ونيولې او يوه پراخه امپراتوري يې جوړه کړه. د ده امپراتوري د پنجاب نه تر بهار ايالت تر يوې غزېدلې وه چې د ډيلي په شمول ډېر ښارونه په کې شامل و. بهلول د خپلو متو د ټينګولو په موخه خپل استازي روه ته ولېږل او د يوه شاهي فرمان په ترڅ کې يې د دې سيمې پښتنو قبيلو ته هند ته د راتلو بلنه ورکړه. دی ليکي: «ما ته خدای پاک د هندوستان حکومت راګړی دی. ولې په هندوستان هغه سړی حکومت کولی شي چې هغه د قام او قبيلې خاوند وي. په دې بنا ټولو پښتنو ته په کار دي چې هند ته راشي. فوځي ملازمت اختيار کړي او يو طرف ته جاګير حاصل کړي او د ارام او هوسايي

ژوند تېر کړي او بل طرف ته د خپل قامي حکومت د حفاظت په لړ کې د مضبوطو دښمنانو دپاره يو مضبوط دېوال اوکړزي.» ۱۷۱ د دې فرمان پر بنسټ لودي، لوهاني، نيازي، مروت، بېتني، سربني او کرلاني قبيلې هند ته روانې شوې. په دې ترتيب ډېر پښتانه هند ته شيوه شول او هلته بهلول لودي د ده له خوا نيول شوي ايالتونه د دوی تر منځ ووېشل او هر يو مشر ته يې د امير نوم ورکړ.

په دې ډول د نوموړي د واکمنۍ په مهال هند ته د پښتنو قبيلو نه زيات شمېر پښتانه هند ته شيوه شول. هند ته د پښتنو د زيات شمېر تک دوه لاملونه د يادونې وړ دي؛ لومړی لامل يې دا دی چې په پښتونخوا کې د دوی د ژوند شرايط خراب وو دوهم سلطان بهلول غوښتل چې په هند کې خپل حاکميت ټينگ کړي. په دې ترتيب سلطان بهلول په هند کې د خپلې مړينې وړاندې د پښتنو يو ډول اتحاديه جوړه کړه او د خپلې امپراتورۍ ايالتونه يې د دوی تر منځ ووېشل او هر يوه ته يې د امير لقب ورکړ. د ده د کارنامو نه د ډيلي د سلطنت ژوندي کول، د هغه د پولو پراخوالی او د ډېر وخت وروسته د هغه د حيثيت ا عاده کول و.

د بهلول لودي د مړينې وروسته سکندر لودي واک ته ورسېد. سکندر لودي يو غښتلی او مقتدر شخصيت او د غټ تدبير څښتن و. د ده د سلطنت په مهال په ټول هند کې د امن برسېره ښېرازي او پرېماني هم وه. د ده د واکمنۍ په دېرش کلني مودې کې د ادب، هنر او علم په برخه کې ډېر پرمختگ وشو.

د سکندر لودي د مړينې وروسته ابراهيم لودي د واک په گدی کېناست. هغه لومړی د خلکو او خپلو اميرانو سره ښه رويه وکړه خو کله يې چې پښې ټينگې شوې نو په خپلو اميرانو پسې يې راواخېسته. د ابراهيم لودي دا ناوړه رويه د دې لامل شوه چې د پاچا او پښتنو اميرانو تر منځ بې باوري زياته او بې اتفاقي منځ ته راشي. د دغې بې باوري پايله دا شوه چې د پاچا په ژوند کې د بهار ايالت دريا خان لوهاني زوی چې د بهار حاکم و پاڅون وکړ او د ډيلي نه بيل شو. د ابراهيم لودي او پښتنو اميرانو مخالفت تر دې پورې ورسېد چې ځينو اميرانو د پاچا د منځه وړلو له پاره ان غدارۍ ته لاس واچاوه. د بېلکې په توگه دولت خان لودي چې د ابراهيم لودي په وخت کې د پنجاب د ولايت والي او يو نوميالی سپاسالار و او ابراهيم لودي د هغه د منځه وړلو پسې مټي رانغښتې وې غدارۍ ته لاس واچاوه. دولت خان لودي د ابراهيم لودي د تره علاءالدين عالم خان سره چې دا مهال په کجرات کې د ابراهيم لودي د لاسه پناه اخېستې وه اړيکه ټينگه کړه او پنجاب ته يې راوباله. دولت خان لودي د ابراهيم لودي تره کابل ته واستولو تر څو باير مغول د ابراهيم

لودي پر ضد وهڅوي چې په هندوستان برید وکړي.

بابر په ۱۵۲۶ کال کې ابراهيم لودي ته د پاني پت په جگړه کې ماتې ورکړه. په دغه جگړه کې ابراهيم لودي د يوه پښتون په لاس ووژل شو. په دې توگه د لوديانو واکمني چې ۷۵ کاله اوږده شوه، په هند کې پای ته ورسېده او بابر د هند د مغولي واکمنۍ بنسټ کېښود.

۲: په هند کې د سوريانو امپراتوري

د مخه تر دې چې په هند کې د سوريانو امپراتوري وڅېړو لازمه گڼم چې لږ غوندې په سوريانو رڼا واچوم. هغه مهال چې د هندوکش د هغې خوا نه د اريايانو د قبيلو مهاجرت د هندوکش سوويل ته پيل شوی ځينې د دوی نه د سوويل لوېديځ لوري ته مهاجر او په غور کې استوگن شول. د الفنسټون په وينا «ټولې سرچينې په دې موافق دي چې په لرغونو زمانو کې د غور اوسېدونکي پښتانه وو.» ۱۷۲ دی دا هم وايي چې «دا خبره بېخي يقيني ده چې د غور پاچايان پښتانه او د سوري قبيلې غړي وو.» ۱۷۳ مير غلام محمد غبار هم «شاهان محلي غور افغانستان (منسوب به سلسله سوري های پښتانه)» ۱۷۴ نه يادونه کوي.

د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ په وينا د غور يا غر کلیمه پښتو ده چې د وخت په تېرېدو غرچ او غرش باندې واوونست او د اسلام په دوره کې په غرجستان، غرچستان او غرشپستان باندې ياد شو. غور په تاريخ او افسانه کې د اريايي قبيلو د مهاجرت له وخت نه چې د هندوکش د هغې خوا نه د هند په لوري کېده مشهور شو. د دغه مهاجرت په يون کې د هغوی نه ځينې اول د لوېديځ په لور (باميان او غرجستان) او بيا د سوويل- لوېديځ په لور يانې په غور کې تيت شول. ۱۷۵

سوريان د غور د پښتنو يو ټبر دی چې لرغوني افسانوي شخصيت ته منسوب دي چې فردوسي ضحاک او پښتنو د «تاريخ سوري» په حواله سهاک بللی دی. د ضحاک يا سهاک له اولاده دوه وروڼه وو چې مشر يې سور او کشر يې سام نومېده چې لومړی پاچا او دوهم د لښکر مشر و. داسې ښکاري چې د اسلام د مخه د زور قبيلې دين د لمر نمانځنه وه. کاکړ وايي «د سيستان ساکا د عربو د يرغل په وخت کې نه زردشتي او نه بودايي وو. دوی په ځانله محلي خدای زون (Zun) معتقد وو.» ۱۷۶ د اسلام د مخه د دوی کورنۍ په غور پاچاهي کوله. د دوی يو مشر چې ماهوي سوري نومېده د اسلام په لومړيو کې د مروې مشر و. ماهوي سوري د ساسانيانو وروستي پاچا دريم يزدگر دخسرو نومي ژندرکړي په

ذريعه چې د عربي سوبمنو نه تېښتېده په مروه کې وواژه. ماهوي سوري د حضرت علي (رض) له خوا په کوفه کې د مروې په پاچاهي ومنل شو.

د عبدالحي حبيبي په وينا د غور د سوريانو کورنۍ هغه وخت چې واکمن يې امير پولاد د شنسب زوی او د واکمنۍ پلاز يې منديش و د عباسي کورنۍ په واکمن کېدو کې يې خپلې ټولې لښکرې د ابو مسلم خراساني په ملاتړ ودرولې. امير پولاد د ابومسلم سره يوځای په هغه مهلمستيا کې کېدون درلود چې ابوالعباس سفاح د بين اميه سره د جگړې کولو په مهال جوړه کړې وه. غوريانو د شنسب له وخته بيا تر سلطان محمود غزنوي او سلطان مسعود تر وختو پورې په غور کې د سوري کورنۍ امارت درلود.

کله چې غزنويانو د لويکانو نه غزني ونيو نو دلته يې د خپلې واکمنۍ بنسټ کېښود. سيکتکين د غزنوي واکمنۍ بنسټ ايښودونکی د زابل د پښتنو د يوه مشر د لور سره واده وکړ او د همدې خپلوی پر بنسټ يې د دغو پښتنو ملاتړ تر لاسه کړ او خپلې واکمنۍ په ټينگتيا کې يې کار ورنه واخېست. د امير سوري د واکمنۍ په مهال يې په غور بريد وکړ خو سوري کورنۍ خپله واکمني وساتله بيا کله چې سلطان محمود غزنوي چې مور يې همدغه پښتنه وه، په غزني کې پاچا شو او د دغو پښتنو په مرسته يې په غور بريد وکړ او امير محمد سوري يې د اهنکران په کلا کې کلابند کړ او د بېساري مقاومت وروسته يې ونيوه. نوموړي بيا په لاره کې زهر وخوړل او د پردو په لاس بنديتوب نه يې مرگ ښه وباله. وروسته کله چې علاءالدين حسبن په فيروز کوه کې پر تخت کېناست نو خپلې لښکرې يې راتولې کړې او په غزني باندې د يرغل په موخه په هغه لوري وخوځېد. د غزني پاچا سلطان بهرام شاه هم د غزني او هندوستان د لښکرو سره د علاءالدين مخې ته ورووت. په دې جگړه کې د بهرام شاه لښکرې ماته وکړه او د غور واکمن غزني ونيو او وېي سوځاوه او په تاريخ کې د جهانسوز په نوم ياد شو.

علاءالدين لومړی پښتون سلطان و چې د افغانستان هېواد يې د يوې ادارې لاندې راووست او د فيروز کوه په پلازمينه پورې وتاړه. تر هغه وروسته سلطان غياث الدين غوري د غور د لويو پاچاهانو نه دی چې بيا يې هېواد ته مرکزيت ورکړ چې منځنی اسيا د مروې نه نيولې تر هندوستانه او عراقه پورې سيمه يې د غور د فيروزکوه د بيرغ لاندې راوسته. دغه مهال نوموړی د افغانستان ستر او يواځيني امپراتور گڼل کېده. د ده په وخت کې د بغداد د خليفه سفير پيروزکوه ته راغی او د غور سفير بغداد ته لاړ شو او ديبولوماتيکې اړيکې د دواړو هېوادو تر منځ ټينگې شوې. سلطان غياث الدين د ۶۳ کالو په منک د هرات په ښار کې مړ او د هرات په جامع جومات کې چې په خپله يې جوړ کړی و

خاورو ته وسپارل شو.

سلطان غياث الدين کله چې د فيروز کوه سلطان شو نو خپل سکني ورور محمد، چې بيا په سلطان شهاب الدين غوري نامتو شو، د هندوستان پراخ ملک نيولو ته وگوماره. د سلطان غياث الدين وروسته سلطان مغزالدین غوري چې په سلطان شهاب الدين باندې مشهور دی، پاچا شو دی یو مدبر شخصیت و او د خپل ورور شاهنشاهي يې وساتله. د سلطان شهاب الدين د سلطنت دوره ۳۳ کاله وه. د سوبمن د څېړنيز اثر «پښتانه په هند کې» له مخې سلطان شهاب الدين يوولس ځله هند ته تللی دوه ځله يې ماته خوړلې او نهه ځله بريالی شوی دی. ۱۷۷۷ سلطان شهاب الدين غوري د پښتنو له برمه ډکه يوه ستره امپراتوري جوړه کړه چې د شمال پوله يې د امو سین، لوېديځه پوله تر مروې، طوس او سرخس، د سوويل پوله د هند تر سمندر او ختيځ پوله يې د هندوستان تر وروستۍ ختيځې څنډې ته غځېدلې وه... او په منځنۍ اسيا کې يې د پام وړ اغېز پرې ايښی دی. ۱۷۸۰ سوبمن د پوهاند جيب د هند تاريخ کښونکي له خوږې وايي چې د اند خوی، تارين او انډيلوارا له درې گونو ماتو سره سره سلطان په منځنيو پېړيو کې ستره امپراتوري جوړه کړه او په دې برخه کې دی تر محمود وړاندې دی. ۱۷۹۰ د سلطان شهاب الدين د شهادت نه وروسته د غور شاهنشاهي ټوټې ټوټې شوه. د هېواد شمالي ولايتونه، غور او هرات خوارزم شاهيانو ونيول، سيستان د سيمه یزو ملکانو لاسته ورغی او د غزني ولايت، کابل او ختيځې سيمې تر سينده پورې د غوريانو د دربار خدمتگار (تاج الدين يلدوز) ونيولې. په پای کې د مغولو تاراکونو د غوريانو واکمني پای ته ورسوله. د هرات جامع جومات، د غور د جام ځلی او د ډهلي قطب منار د دوی تلپاتې یادگارونه دي.

د سلطان شهاب الدين د مړينې وروسته غلام قطب الدين ايبيک په ۱۲۰۶ کال کې د غور د دربار په اجازه د خپل قلمرو (هندوستان) خپلواک حکومت اعلان کړ. له دغې نېټې راهيسې تر ۱۵۲۶ کال پورې چې سلطان ابراهيم لودي ته بابر د پاني پت په جگړه کې ماتې ورکړه دغه دوره د «ديلي سلطنت» په نامه يادېږي. د ديلي سلطنت دوره چې ۳۲۰ کاله اوږده شوه ډېرې کورنۍ لکه د قطب الدين ايبيک کورنۍ، د غلام التمش کورنۍ، د غلام بلبن کورنۍ، د تعلق شاهانو کورنۍ، د گلجيانو کورنۍ، د سيدانو کورنۍ او د لوديانو کورنۍ يو پر بل پسې واکمني شوې.

د لودي کورنۍ د واکمنۍ نسکورېدل په هند کې د افغانانو د واکمنۍ پای نه و. د لودي کورنۍ د نسکورېدو وروسته پښتانه د فريد خان په مشرۍ چې د سوري شيرشاه په نوم نامتو شو په هند کې د سوريانو امپراتوري جوړه کړه. د مخه مو يادونه وکړه چې سوريان

په اصل کې د غور اوسېدونکي وو. خو د شیرشاه نیکه ابراهیم سوري د پهلوی لودي د واکمنۍ پر مهال له شیرگرد نه چې د گوملې رود ته نږدې پروت دی، هند ته مهاجرت وکړ او د هند په روتاس کې استوګن شو او په هغه ځای کې مخکې ورکړل شوې. د بابر د مړینې وروسته کله چې همایون د خپلو وروڼو سره په مبارزه بوخت و د هند پښتانه په هند کې د خپلې واکمنۍ د ژوندي کولو په موخه د فریدخان په چاپېر راټول شول او د ده په مشرۍ یې بنګال، بهار او رهتاس چې د بهار تر ټولو ټینګه کلا وه، ونیول. همایون د شیرشاه د کواښ په وړاندې مقابله ته ملا وتړله خو د څو جګړو وروسته چې د ده او شیرشاه تر منځ وشوې همایون ماته وکړه او د ۱۲۵۳ کال کې د پنجاب، سند او بلوچستان له لارې فارس ته وتښتېد. شیرشاه له دې وروسته د شاه لقب اختیار کړ او د خپلې واکمنۍ پراختیا ته یې پام وکړ او یو زیات شمېر ځایي واکمن چې تر دې مهاله خپلواک وو، د خپل واک تابع کړل. نوموړی په ۱۵۴۸ کال کې د کالینجر د کلا د نیولو پر مهال د باروتو د چاودنې له کبله د دې نړۍ نه سترګې پټې کړې. د کاکړ په وینا شیرشاه په نسبي توګه د واکمنۍ مرکزي سیستم او اغېزمنه اداره جوړ او تنظیم کړل چې د مخه لودیانو پیل کړي و. په دې برخه کې هغه د مالي او قضا په ادارې کې سمون راوست. شیرشاه په خپلې لنډې واکمنۍ کې د هند په تاریخ کې یو داسې لوړ اداري سیستم منځ ته راوړ چې وروسته د گورګانې ادارې بنسټ وګرځېد. خو د شیرشاه د مړینې وروسته د پښتنو د بې اتفاقي په پایله کې د کورنیو جګړو له کبله د ده امپراتوري تجزیه شوه.

شیرشاه سوري د خپلې مړینې نه د مخه خپل مشر زوی عادل خان خپل ځای ناستی ټاکلی و. خو د شیرشاه د دربار لویانو د خپل مشر د هیلې پر خلاف غوښتل چې د خپلې خوښې یو څوک پر تخت کښېښوي. د دربار لویانو په دې اړه سره جرګه شول او عیسی خان حجاب چې د شیرشاه تر ټولو لوی امیر او ډېر نږدې سړی و د شیرشاه د کشر زوی جلال خان په پلوی ودرېد. ده د جرګې غړو ته د دواړو وروڼو د خوښوونو د پرتله کولو په ترڅ کې د جلال خان په وړتیا ټینګار وکړ. په دې توګه جلال خان د اسلام شاه سوري په نوم د هندوستان پاچا شو. اسلام شاه خپل مشر ورور عادل خان اکره ته راوغوښت چې پاچاهي ورته وسپاري. هغه ووېرېد خو وروسته د امیرانو د تسلی له مخې خپل ورور ته راغی. خو ځنګه چې یو عیاش سړی و نو د پاچاهۍ پر ځای د یوه جاکېر په اڅېستلو قانع شو او (بیانه) په جاکېر کې ورکړه شوه او هغې خواته لاړ.

اسلام شاه سوري له یوې خوا یو زړور، هوښیار او د ټینګې ارادې څښتن و او په خپله نهه کلنه واکمني کې یې ښه کارونه تر سره کړل. د بلې خوا هغه یو بد کومانه سړی و

او خپل نږدې او د ده خیر غوښتونکي امیران یې ووژل او په دې توګه یې د پلار امپراتوري کمزورې او د پښتنو امیرانو په منځ کې د بې اتفاقۍ سبب شو.

اسلام شاه که څه هم یو زورواک پاچا و خو نوموړي نه یوازې د خپل پلار شیر شاه اداري سیستم وساته بلکې هغه ته یې پراختیا ورکړه. اسلام شاه د علم او ادب سره مینه درلوده او په خپله عالم او شاعر و. ده د پوهانو او ادیبانو سره مباحثې او مجلسونه جوړول او د علم د پرمختګ دپاره یې هڅې کولې. دی د خپلې امپراتورۍ د خلکو د ترقی او سوکالی دېر لېوال و. نوموړي د خپل پلار د ۱۷۰۰ مسافر خانو برسېره ۳۴۰۰ مسافرخانې جوړې کړې. پوستي سیستم یې په بې ساري توګه تنظیم کړی و. ۱۸۰

د اسلام شاه د مړینې وروسته په هند کې د پښتنو امپراتوري چې شېرشاه جوړه کړې وه د اسلام شاه ځای ناستو د بې کفایتۍ او د پښتنو امیرانو د بې اتفاقۍ له کبله ښکته شوه.

د اسلام شاه د مړینې وروسته د ده ۱۳ کلن زوی فیروز د پلار د وصیت سره سم پر تخت کېناست. تاج خان کرلانی د شیرشاه جنرال او د اسلام شاه باوري او پوه امیر د هغه سرپرست وټاکل شو. تاج خان کرلانی د یوه مدبر او هوښیار امیر په توګه په ډېر ښه ډول د پاچاهۍ چارې سنبال کړې. هغه لور امیران چې د اسلام شاه له لاسه درېدلې وو د تاج خان په سرپرستۍ راضي نه وو.

د بده مرغه د تاریخ هندوستان په حواله درې ورځې تېرې نه وې چې د شیرشاه وراره مبارز خان، چې د سلیم شاه د وېرې یې ځان په لېونتوب اچولی و، فیروز یې د مور د زاریو سره سره وواژه چې د تخت کېښولولو وروسته یې د عادل شاه لقب غوره کړ. عادل شاه د پاچاهۍ وړتیا نه درلوده او د اسلام شاه په څېر یې د مشرانو په رټلو پیل وکړ. دا یو بې کفایته سړی و او په پیل کې یې ځینې امیران ووژل او ځینې نور یې بندیان کړل. تاج خان کرلانی د خپلې پوهې په برکت ځان کولیار ته ورساوه. دغه رڼا یې پاچا خپل اوښي ابراهیم خان سوري ته هم بد نیت درلود او نوموړی بیاني ته وټښتېد. په دې توګه د عادل شاه په پاچاهۍ کې بې نظمي پیل شوه.

د لوی شیرشاه وزیرانو ابراهیم سوري او احمد خان سوري چې د عادل شاه د تره زامن وو د ده په وړاندې پورته کړل. تاج خان کرلانی په سوویلي بهار کې پاڅون وکړ او محمد خان سوري په بنگال کې د پاچاهۍ اعلان وکړ. د دغو بې اتفاقیو له کبله کورګانینانو د همایون په مشرۍ بیا د هند د نیولو تکل وکړ.

د بابر زوی همایون د پښتنو د بې اتفاقۍ نه ګټه پورته کړه او د خپل تکره ترکي جنرال

بیرام خان په مرسته یې په ۱۵۵۵ کال کې په سرهند کې پښتنو ته ماتې ورکړه او د خپلې کورنۍ واکمني یې راژوندی کړه. وروسته پښتنوپه ۱۵۵۶ کال کې د پاني پت په ډگر کې د مغلو د پوځ په وړاندې ماتې وخوړه او په دغه تاريخي جنگ سره شمالي هندوستان د پښتنو له لاسه ووت، خو په بهار او بنګال کې بیا هم د دوی قدرت ټینګ و.

د مخه مو یادونه وکړه چې محمد خان سور په ۱۳۵۳ کې په بنګال کې پاچاهي اعلان کړه او په ۱۳۵۵ کې یې بهار او جونپور لاندې کړل او یوه لویه پاچاهي یې جوړه کړه. خو محمدشاه د عادل شاه د پوځ سره د هیمو په قوماندنۍ په جګړه کې ووژل شو او د ده د سلطنت ټولې سیمې عادل شاه ته پاتې شوې.

د وژل شوي محمدشاه امیرانو د ده زوی حضر خان خپل واکمن وټاکه او د بهادرشاه لقب یې ورکړ. بهادرشاه په بنګال برید وکړ او دا ځای یې د عادل شاه نه ونيو. بهادرشاه بیا بهار ونيو او تاج خان یې د بهار والي وټاکه. د بهادرشاه د مړینې وروسته د ده ورور جلال خان چې یو ډېر ځیرک او هوښیار سړی و د جلال شاه په نوم پر تخت کېښاست. خو د بده مرغه دغه عقلمن پښتون پاچا ژر له فاني نړۍ نه سترګې پټې کړې. د ده په مړینې سره په بنګال کې اله گوله پیدا شوه او په پایله کې تاج خان کرلاني چې د بهار والي و، په بنګال یرغل وکړ او وې نیو. په دې توګه تاج خان کرلاني په بهار او بنګال کې د کرلاني پښتنو د واکمنۍ بنسټ کېښود.

په ختیځ هند کې د کرلاني پښتنو سلطنت

د سید بهادر شاه ظفر کاکاخېل په وینا د کرلانو قبیلې د سوریانو په دوره کې ډېر شهرت وموند. د دوی د شهرت لامل د دې قبیلې دوه غړي تاج خان او سلیمان خان وو. دوی د جمال خان کرلاني زامن وو. د پښتنو په تاریخ کې د لومړي ځل له پاره د تاج خان او سلیمان نومونه د شیرشاه د جنرالانو په حیث د قنوج په حکمرانه کې لیدلې شو. په دې جګړه کې شیرشاه همایون ته ماتې ورکړې وه. شیرشاه دغو دوو وروڼو ته په خواص پور، ټانډه او سوویلي بهار کې جايدادونه ورکړي و. شیرشاه تاج خان د خپلې ورتیا له مخې د خپل زوی جلال خان سرپرست ټاکلی و چې وروسته د اسلام شاه په نامه د هغه ځای ناستی شو.

د اسلام شاه په وخت کې تاج خان د ډېر قدرت خاوند و او دی یوازینی امیر و چې اسلام شاه پوره باور ورباندې درلود. له دې کبله اسلام شاه هم تاج خان د خپل نابالغ زوی فیروزشاه سرپرست وټاکلو.

د مخه مو یادونه وکړه چې تاج خان په بنګال او بهار کې د کرلاني پښتنو د سلطنت

بنسټ کېښود. تاج خان کرلانی مدبر مشر او پوځي سياستمن و. دی پوهېده چې مغول د بنګال نیولو ته ډېر لېوال دي. ځکه نوموړي د خپلې واکمنۍ په لومړي سر کې دا پالیسي غوره کړه چې له مغولو سره د زور په ځای دوستانه اړیکې ټینګې کړي. دا سیاست د قواوو د انډول له مخې ډېر پر ځای سیاست و. ده د مغولي حکومت د ختیځو صوبو د حاکم سره ډېر ښه چلند غوره کړ. خو دغه مدابر واکمن زر مړ شو. ټول مورخینو دا پښتون واکمن ډېر لایق، پوه او فاضل انسان گڼلی دی.

د تاج خان د مړینې وروسته د نوموړي ورور سلیمان کرلانی، چې د خپل ورور غونډې د شیرشاه جنرال و پر تخت کېښناست. د سلیمان کرلانی واکمني په ختیځ هندوستان کې یوه ځلانده تاریخي دوره ده. سلیمان شاه د خپل ورور په شان هوښیار، مدبر او لوی سیاستپوه و. نوموړي د پښتنو د سلطنت په ټینګتیا کې بریالي گامونه پورته کړل. یو دا چې ده هغه ښه اداري پالیسي چې تاج خان غوره کړې وه پرمخ بوتله او هغې ته یې نوره پراختیا ورکړه. ده د مغولي حاکم خان زمان سره خپلې اړیکې نورې هم ښې کړې په دې چې د اکبر مغولي واکمن ته دا موقع په لاس ورته کړي چې د بنګال په لور را د مخه شي. دا د سلیمان کرلانی دپاره لوی بری و.

بل دا چې سلیمان شاه د ټولو تیت او پرک پښتنو د راغونډولو له پاره بنګال او بهار په یوه خوندي ځای بدل کړل او د دوی په راتګ سره د سلیمان کرلانی ځواک نور هم زیات شو. د سوبمن په وینا د سلیمان کرلانی پاچایي د شیرشاه د واکمنۍ په شان د پښتنو له پاره د ښکمرغی زمانه وه.

سلیمان کرلانی یو پرهېزګار، علم پالونکی او عادل واکمن و. نوموړی د بهار په یوه کتیبه کې د خپلې پرهېزګارۍ له امله د سلیمان ثاني په نامه یاد شوی دی. ۱۸۱

د سلیمان کرلانی د واکمنۍ پر مهال ابراهیم سوري د پرله پسې ماتو له کبله د اورپسې د سیمې هندي راجا ته پناه وړې وه. د راجا موخه دا وه چې د ابراهیم سوري نه د بهار او بنګال د نیولو له پاره کټه پورته کړي. اکبر پاچا هم د ابراهیم خان سوري نه همدا ډول هیله درلوده چې د بنګال نیولو ته یې وپاروي. سلیمان کرلانی د دې سیاسي لوبو نه ښه خبر و. هغه مهال چې اکبر پاچا د چتور په پوځي یرغلونو بوخت و، نو د دې موقع نه په کټه اخیستلو سره سلیمان شاه اورسیه ونيوله او په خپل سلطنت کې یې شامله کړه. سلیمان کرلانی هېڅکله ځان ته پاچا نه وایه په دې چې اکبر پاچا خوښ وساتي چې گویا د مغلو امپراتورۍ اطاعت کوي. ده سرکښو پښتنو امیرانو ته دا موقع نه ورکوله چې د مغولو سره لاس په ګرېوان شي. په دې ډول دې مدبر او هوښیار پښتون سلیمان کرلانی

په ختيځ هندوستان کې د پښتنو سلطنت د ژوند تر وروستۍ سلگۍ پورې ټينګ وساته. له بده مرغه د دغه پښتون پاچا د واکمنۍ ورځې شپې لنډې وې او له اوه کلو پاچاهۍ وروسته په ۱۵۷۲ زېږدي کال کې مړ شو.

د سليمان شاه د مړينې وروسته د هغه مشر زوی بايزيد پر تخت کښېناست. نوموړی خپلسری، لنډ فکره او په سياست نه پوهېده. د خپل پلار سياسي لار يې پرېښودله، خطبه او سکه يې په خپل نوم جاري کړه. بده يې لا دا وه چې نوموړي په پښتنو اميرانو پسې راواخېسته. هغوی د ځان د وېرې له امله دی د قتلو خان لوهاني په مشرۍ د واک په اتلسمه ورځ وواژه.

د بايزيد وژنې د پښتنو تر منځ قبيلوي کيڼې او تعصبونه بيا راژوندي کړل او هغه حالت بيا منځ ته راغی چې د اسلام شاه د مړينې نه وروسته منځ ته راغلی و. اميران په خپل منځ کې ډلې ډلې شول او د تخت دپاره درې تنه دعوه لرونکي ودرېدل. په پای کې د وزير لودي په وړتيا او وفادارۍ د سليمان دوهم زوی داود کرلاني د پاچا په حيث ومنل شو.

لودي يو ډېر وړ او لايق انسان و او د ده له پاره د پښتنو يووالي تر هر څه ډېر ارزښت درلود. دغه لامل و چې هغه په خپل تدبير او وړتيا سره په پښتنو کې يووالي ټينګ کړ. داود په لومړي سر کې د خپل وړ او پوه وزير په مشورو او لارښوونو عمل کاوه. خو دا حالت ډېر اوږد نه شو.

داود چې د ځوانۍ په جوش کې و د احتياط او لرليد پاليسي پرېښوده او د خپل پلار د سياست پر خلاف ځان ته د پاچا خطاب غوره کړو، خطبه او سکه يې په خپل نوم جاري کړه او د مغولو د حکومت په شان يې خپلو اميرانو وزيرانو ته خطابونه ورکول پيل کړل. داود کرلاني په دې توګه اکبر ته بهانه په لاس ورکړه چې په بنګال بريد وکړي. داود د ځينو اميرانو په لمسونه لومړی د تاج خان زوی يوسف خان وواژه او بيا د قتلو خان لوهاني، کجرخان کرلاني او سري هاري هندو په لمسونه يو ستر پښتون لودي چې د پښتنو يووالي يې ټينګ کړی و، وواژه. د لودي په وژلو سره په پښتنو کې بيا لويه بې اتفاقي منځ ته راغله.

ابو الفضل وايي چې دا د شاهنشاه اکبر خوش قسمتي وه چې داود په خپله هغه کار ترسره کړ چې د شاهنشاه نوکرانو د خپلو بهرنيو کوشنسونو سره سره ترسره نه شو کړای. ۱۸۲ د ابو الفضل دا وينا د لودي د شخصيت د لوړتيا، لياقت او سياسي لرليد روښانه ثبوت دی. قتلو خان او سري هاري نه يواځې دا غداري وکړه بلکې وروسته يې د مغولو سره د داود په وړاندې سازش وکړو.

د مخه مې يادونه وکړه چې داود کرلاني اکبر پاچا ته پلمه په لاس ورکړه چې پر وړاندې

يې جدي گامونه پورته کړي. اکبر سمدلاسه خپل مغول واپسره منعمن خان ته لارښوونه وکړه چې په بنګال بريد وکړي. منعمن خان د يوه لوی پوځ سره په بهار بريد وکړ. داود پټني ته په شا شو او په کلا کې کلابند شو. کلابندي اوږده شوه او په پای کې په ۱۵۷۲ کې اکبر پاچا د لوی پوځ سره راغی او پښتنو د کلا خالي کول ومنل او داود بنګال ته وتښتېد. تر ۱۵۷۴ پورې پښتنو د سراج کړ، منيکر، بهاکلپور، کل کنګ او نورې سيمې له لاسه ورکړې.

په ۱۵۷۵ کال د مغولو او پښتنو تر منځ د توکاري په مقام درنه او خونړی جګړه وشوه. دا ځل ميدان پښتنو وگټلو. خو د دې پر ځای چې پوره برياليتوب پورې دښمن وځي په لوت بوخت شول. مغولو چې وليدل چې پښتانه په لوت بوخت دي بېرته راوگرځېدل او بريد يې پرې وکړ او وېې ځغلول او د سر او مال دروند زيان يې ورواړاوه. د راج محل جګړه د مغولو او پښتنو تر منځ وروستی جګړه وه چې په هغه کې پښتنو ماتې وخوړه او داود د مغولو د جنرال خان جهان په امر ووژل شو. په دې ډول په هند کې د پښتنو سلطنت پای ته ورسېد.

کاکړ وايي چې په بنګال او اوريسه کې ددوی ماتې پښتانه اړ کړل چې د مغولو واکمني ومني. په هند کې د مغولو په وړاندې د پښتنو وروستی او ډېر غښتلی پاڅون د خان جهان لودي په مشرۍ چې د شاه جهان په پوځ کې افسر و، د شاه جهان پر ضد وشو او د بده مرغه په دغه جګړه کې چې کالينجر ته نږدې وشوه هغه ووژل شو. د هغه د مړينې وروسته پښتنو چې د هند په ځينو برخو کې خپلواک وو، خپل نظامي تشکيلات او سياسي واک له لاسه ورکړ. د اتلسمې پېړۍ په پای او د نولسمې پېړۍ په پيل کې په منځني هند کې پښتنو پاڅون وکړ. دغه مهال د هند مغولي واکمني مخ په ځور وه او د انګرېزانو د ختيځ هند کمپنۍ د هند سيمې يو پر بل پسې نيولې او د ۱۸۱۷ کال په نومبر کې انګرېزانو د دغو پښتنو سره اتحاد وکړ او د دوی مشر امير خان يې د ټونک (Tonk) د نواب په توګه په رسميت وپېژاند. ۱۸۳

افغانان او مغول

په افغانستان او هندوستان کې د مغولو د واکمنۍ په دوره کې چې بابر شاه پیل کړه افغانانو خپل مقاومت ورسره پیل کړ. کاکړ دا مقاومت په درې مرحلې ویشي:

لومړۍ مرحله: په افغانستان کې د بابر په وړاندې د پښتنو مقاومت

ترې وايي چې بابر کابل په ۱۵۰۴ کال کې ونيو خو کله چې په ۱۵۰۵ کال د جون په میاشت کې د کابل نه د هندوستان د سفر په نیت وزی له پښتنو سره یې د مخامخ کېدو او جگړو گذرشونه پیل کېږي چې د ده په خپل کتاب بابرنامه کې بیان شوي دي. د بابر دغه سفر د جګدک له لارې پیل کېږي او په گرم چشې کې لومړی ځل د پښتنو سره مخامخ کېږي. بابر وايي چې په همدې ځای کې «د کیکیانو یو مشر، فاجي، ظاهرآ، له خپل کاروان سره راوستل شو. مور هغه راسره بوته چې لار راوښيي.» ۱۸۴

بابر په دغه سفر کې له خيبر نه اوري او جم ته رسيږي او د هغه ځایه کوهات په لور خوځيږي او په کوهات کې ډېرې زیاتې د غویو گلې او مېنې د ده لوتمارو پوځیانو لاس ته ورځي او بیا د کوهات نه د هنکو په لار بنګشو ته روانيږي او په لاره کې په افغانانو له هرې خوا برید کوي او د ځینو سرونه پرې کوي او سل دوه سوه نیسي او بیا سرونه ورڅخه پرېکوي او له سرونه یې په خپل کمپ کې ځلی جوړوي. بیا په هنکو کې د افغانانو د سرو نه ځلی جوړوي او بیا تل ته ځي او له هغه وروسته په بنو يرغل کوي او هلته د افغانانو د سرو نه ځلی جوړوي. د بنو نه وروسته دشت ته ځي او په عیسي خېلو باندې بریدونه کوي او د بابر لوتمارانو ته د مېرې رمې او د غویو گلې په لاس ورځي او همدارنګه د سوداګرو افغانانو نه چې په لاره کې ورسره مخامخ شوي وو، سپین رخت، خوشبویه رښې، بوره او د خرڅلاو له پاره روزل شوي اسونه لاس ته راوړي. د هغه ځای نه د غزني له لارې کابل ته ځي او په لاره کې د سيمې پر افغانانو بریدونه کوي، وژني یې او مالونه یې لوتوي. دا ځل بابر نیت وکړ چې د غلجيو په کلات برید وکړي. دی د کلات په کلا کې د جګړې په مهال د ځینو نامتو مېرونو د وژل کېدو له بیان نه وروسته لیکي چې «جګړه تر

مازديگره روانه وه او په داسې حال کې چې زموږ جنګي مېړونه جګړې او کار له پښو وغورځول، د کلا د ننه خلکو د سولې غوښتنه وکړه او تسليم شول. «۱۸۵ بابر د کلات په سوويل کې د سواسنگ او الاتاغ په پښتنو يرغل وکړ او بيا کابل ته ستون شو.

بابر په ۱۵۰۷ کال د می په مياشت کې په غلځيو باندې د يرغل په نيت خوځېږي او د کتواز د دښتې نه تېرېږي او د غلځيو نه بې شمېره مېړې او پسونه لوټوي او د افغانانو د ککړيو نه ځلی جوړوي او ليکي چې له هغوی نه يې «يو لک مېړې او پسونه بوتلل. «۱۸۶ بابر د ۱۵۰۷ کال د دسمبر په مياشت کې يو ځل بيا د کابل نه د هند په نيت روانېږي او د خپل سفر په پيل کې د پښتنو د بيلو بيلو قبيلو او په ځانګړې توګه د جګدک او د لغمان تر منځ د پښتنو سره خپل ټکرونه بيانوي. بابر دا ځل تر کټره پورې ځي، د هندوستان د تګ نه لاس اخلي او بېرته کابل ته راستنېږي.

بابر په ۱۵۱۹ کال کې د باجوړ په کلا يرغل کوي او نيسي يې. د کلا د اوسېدونکو ټولوژنه ترسره کوي. دی د دې له پاره چې د يوسفزو ولس خپل کړي د شاه منصور د لور بي بي مبارکې سره واده کوي او بېرته کابل ته خوځېږي.

بابر په ۱۵۲۳ کې بيا د هند په لور د خپل پوځ سره وخوځېد او لاهور يې د پښتنو نه ونيو او ميرزا عبدالعزيز ته يې وسپاره او راستون شو. د ۱۵۲۵ کال په دسمبر کې د هند په لور وخوځېد او کابل يې خپل زوی ميرزا کامران ته پرېښود. نوموړي په ۱۵۲۶ کال د اپرېل په مياشت کې د پاني پت په جګړه کې ابراهيم لودي ته ماتې ورکړه او په هند کې يې د مغولي واکمنۍ بنسټ کېښود.

په دې توګه بابر شاه د خپلې واکمنۍ په لومړيو پنځلسو کلونو کې هڅه وکړه چې د کابل د سيمې افغانان د ده سلطې ته سر کېږدي. د دې موخې د لاسته راوړلو له پاره يې زيات پوځي بريدونه ترسره کړل. ځينې وختونه يې افغانان خپل اطاعت ته اړ کړل او ماليات به يې په جنس ورکول. خو په عمومي توګه تر هغه مهاله چې بابر شاه په ۱۵۲۶ کې ديلي ونيو افغانانو خپله خپلواکي وساتله او يوازې يې هغه وخت ماليات ورکړل چې دوی اړويستل شول. ځنګه چې بابر ونه کړای شول چې منظم ماليات راټول کړي چې پر هغې دولت تنظيم کړي او لوی اردو جوړ کړي. له دې کبله يې کابل، چې زياته مينه يې ورسره درلوده، پرېښود او په هندوستان يې يرغل وکړ. سره له دې هغه د افغانستان حاکميت خپلو زامنو ته په ميراث پرېښود او د مصلحت او په ځواک ډډه لګولو د تاکتيک نه يې کار اخېسته. خو دا کوچنی برياليتوب هم د ده د مړينې نه وروسته په هېڅ بدل شو ځکه چې افغانانو د همایون پر ضد د شاه زوی کامران ملاتړ وکړ. د لودې کورنۍ د واکمنۍ

نسکورېدل په هند کې د افغانانو د واکمنۍ پای نه و. د لودي کورنۍ د نسکورېدو وروسته پښتانه د فرید خان په مشرۍ چې د سوري شيرشاه په نوم نامتو شو په هند کې د سوريانو امپراتوري جوړه کړه چې د مخه مو بيان کړې ده..

دوهمه مرحله: د روښانيانو ملي ازادي غوښتونکي غورځنگ

د هند د مغولو پر وړاندې، چې د هېواد ختيځه برخه يې لاندې کړې وه، د افغانانو د ملي ازادي بڅښونکي غورځنگ دوهمه مرحله د روښان پير په مشرۍ پيل شوه. بايزيد روښان د شيخ عبدالله زوی و. شيخ عبدالله د سويلي وزيرستان د کاني کرم اوسېدونکی او اورمړ افغان و. بايزيد روښان په يوه علمي کورنۍ کې د هند په جلندر کې زېږېدلی دی. نوموړی لا د اوو کالو ماشوم و چې د لوديانو واکمني د مغولي بابر په لاس رانسکوره شوه. دغه وخت د شيخ عبدالله کورنۍ بېرته کانيکرم ته راستانه شوه.

بايزيد لومړی زده کړې چې هغه مهال دود وې د خپل پلار او پاينده نه ترسره کړې او راز راز دينونه يې مطالعه کړل او بيا يې توران او هندوستان ته سفرونه وکړل او ځينې وختونه يې د اسانو سوداگري هم کوله. په هند کې د شيرشاه سوري سره اشنا او په هند کې يې د شيرشاه سوري د مهال شان او پرتم ليدلی و.

روښان پير چې په کندهار کې په کندهاريانو د مغولو د انسانيت نه وتلي زور زياتي راپارولی و، د هند دمغولي واکمنو په ضد د مبارزې بيرغ پورته کړ لکه چې وروسته ميرويس خان هوتک هم په کندهاريانو باندې د گورگين ظلمونو راپارولی و. روښان پير د وزيرستان په کاني کرم کې د عرفان او تصوف له لارې يو فکري نهضت پيل کړ او خپل مريدان يې راټول کړل. ده د مغولو د ظلم په وړاندې خلکو ته دا تبليغ کاوه چې مذهب افغانانو ته دا اجازه ورکوي چې د دغو ظالمانو د ظلم نه ځان ازاد او وژغوري لکه چې وروسته ميرويس نيکه د گورگين د ظلمونو په وړاندې د مکې معظې د ديني عالمانو نه فتوه واخېسته چې دغې فتوې د پرديو د ظلم په وړاندې د ازادۍ په لاره کې د افغانانو مبارزه روا وگنله. روښان پير د خپلو پلويانو په زياتېدو سره د يوې خوا خپل مذهبي اغېز ته دوام ورکاوه او د بلې خوا يې سياسي اغېز غښتلی کېده.

جان ليدن وايي چې د روښان پير د پلويانو په زياتېدو سره د مذهبي اړخ تر څنگ سياسي اړخ هم غښتلی کېده. دی زياتوي چې «روښاني نهضت چې د خپل بنسټ ايښودونکي د ستر نېوځ او استعداد نه برخوردار په دوو اساسي ستونو يعني مذهبي او ملي اصولو ولاړ و، نږدې يوه پېړۍ د مغلو د امپراتورۍ تر ټولو نه ښېرازه او اباده دوره کې د

نفوذ نیلی وزغلاوه او سره له دې چې د اکبر مغل د واکدارۍ له ابتدا نه بیا د شاه جهان تر وخته پورې یې، د خپلو دپاره بېدریغه هڅې وشوې، روښاني عقیدې خپلې ودې او ارتقا ته دوام ورکړ. «۱۸۷

روښان پیر د پښتنو د خپلواک دولت د جوړېدو اړتیا ته پام شو. ده نه یوازې دا اړتیا په گوته کره بلکې د هغه د پلي کولو له پاره یې عملي گامونه واخېستل. ده او د ده کورنۍ په دې لاره کې دومره سترې سربښندنې ورکړې چې د پوهاند ډاکټر کاکړ په وینا «په شپاړسمه پېړۍ کې د میا روښان کورنۍ یانې په خپله هغه، د هغه زامنو او د هغه لمسیانو چې د خپلواکۍ په لار کې کومې قربانۍ ورکړې، شاید په نړۍ کې بلې کورنۍ د خپلواکۍ په لار کې دغومره قربانۍ نه وي ورکړې.» ۱۸۸

روښان پیر د دې سترې موخې د تر سره کولو له پاره د افغانانو په منځ کې یو ساده خو د قبیلو د کچې نه لوړ سازمان جوړ کړ او عشر یې د خراج په نامه په خپلو پلویانو وضع کړو او د جگړې د غنیمتونو پنځمه برخه یې هم اخېسته. په دې توگه یې یو بیت المال منځ ته راوړ چې د هغه په مرسته خپل پوځي ټولکي تمویل کړي او هم د بې وزلو او غازیانو سره مرسته وکړي.

بایزید روښان همدارنگه د څو زرو سوارو او پلویو اردو جوړ کړ او اعلان یې وکړ چې «هند به فتح کړم هر څوک چې اس لری راځي دې د اکبر پاچاهي زموږ ده.» ۱۸۹

روښان پیر د خپلو فکرونو د خپروي په موخه د خپل ټاټوبي نه تیراه ته ولاړ او هلته ډېر اړینې، اورکزي، بنکښ او تیراهي د ده د لارې مله شول. بیا پېښور ته ولاړ او هلته یې ډېر خلک مړیدان شول. روښان پیر په جلال اباد باندې د جگړې پر مهال چې پوځي ډلې یې ماته وکړه جل وواکه او مړ شو. خو د روښان پیر د مړینې وروسته د ده په لاس د ایښودل شوي ملي ازادې بڅښوونکي غورځنګ بله شوې ډېوه د ده زامنو او لمسیو روښانه وساتله. د روښان پیر د مړینې وروسته «د ده زامنو چې هر یوه یې ځان د پښتنو پاچا اعلان کړی و د پاڅون بیرغ رپانده وساته. جلال الدین روښان، وروسته له دې چې ټول مشر وروڼه یې په مبارزه کې له لاسه ورکړي وو، په څوارلس کلنۍ کې د پلار په مسند کېښاست. جلال الدین روښان د نړۍ د ډېرو فعالو مشرانو په ډله کې راځي. پېروان یې له کابل نه تر پېښور پورې فعال وو، یواځې یوسفزي ۲۳ ځله د مغولو پر ضد ولاړ شول. روښانیانو په مختلفو وختونو کې پېښور محاصره کړ او له کابل او غزني څخه یې حاکمان وشړل، خو په پای کې ټول ناکام شول.» ۱۹۰ په ۱۵۸۶ کال کې مومند د مغولو په وړاندې جګ شول او پېښور یې کلابند کړ او مغولي جنرال مان سنگ چې د پېښور د

کلابندی د ماتولو او ازادي غوښتونکو د خپلو په موخه استول شوی و هم خيبر پر مخ تړلی وليد او مات شو. په ۱۵۸۷ کال کې زين خان صوبه دار سوات او باجوړ ته لښکر وايست خو د يوسفزيو له خوا مات شو او په دغه جگړه کې د جلال الدين مشاور راجا بربیل د اتو زرو مغولي جنګياليو سره د کرپه په تنګي کې ووژل شو. په ۱۶۲۰ کې د مغولو يوه لويه قوه تېراه ته ننوتله چې کلکه ماته يې وکړه. پوهاند کاکړ د روښاني غورځنګ د ناکامۍ درې لاملونه په ګوته کړي دي:

لومړی لامل يې دادی چې غير روښانيانو (حمزه ملک، د تيراه اوسېدونکي او نور) د خپلو مالونو د لاسه ورکولو له امله د روښاني غورځنګ پر ضد ودرېدل او د مغولو لوری يې ونيو او همکاري يې ورسره وکړه.

دوهم لامل يې دا دی چې پيرانو، او عالمانو د اخوند درويزه او سيدعلي ترميزي، چې په پير بابا نامتو و، په مشرۍ د مغولو واکمنو د ملاتړ او هم د نظرونو د توپيرونو له کبله د بايزيد روښان پر ضد تبليغ کاوه. دوی بايزيد د «پير تاريخ» په نوم يادوه. خو بايزيد د خپلو پلويانو له خوا د روښان پير په نوم يادېده. د روښان پير د پلويانو او مخالفينو له خوا ديني مشاجري چې د اسلام په چوکاټ کې کېدې نوي نظريات منځ ته راوړل او څنګه چې دا مشاجري په پښتو ژبه کېدې د هغې د ودې سبب شوې.

درېم او مهم لامل يې دا و چې مغولو د روښاني غورځنګ پر ضد پوځي ځواک يو موټی کړ. څنګه چې روښاني غورځنګ په داسې مهال کې د مغولو د امپراتورۍ سره د پښتنو د ازادۍ له پاره دغري وهلې چې د جلال الدين اکبر، جهانګير او شاه جهان تر مشرۍ د ځواک لورې څوکې ته رسېدلې وه.

دغو امپراتورانو د روښانيانو د غورځنګ پر ضد پوځي ځپونکي کوزارونه او کله کله سوله ييز اقدامونه کول. د بېلګې په توګه اکبر په پښتنو هېڅکله ماليه نه ده تپلې خو د روښانيانو پر ضد داسې مهال لښکر واستولو چې د روښان پير زوی جلال الدين په ځورلس کلنۍ کې وروسته له هغې چې ټول مشر وروڼه يې په جګړو کې د لاسه ورکړي وو، واک ته رسېدلی او ځان يې د پښتنو پاچا اعلان کړی و. روښانيانو په بېلو بېلو وختونو کې پېښور کلابند کړ او د کابل او غزني نه يې مغولي حاکمان وشړل. د کرپې په تنګي کې يې راجا بربيل وواژه او نږدې ۸۰۰۰ د امپراتورۍ پوځيان ووژل شول. روښانيانو د مغلو ژر يو بل لښکر د سيد حميد په مشرۍ بکرام (Bikram) ته نږدې مات کړ. په پای کې د مغولو پوځ چې د روښانيانو د لښکر نه څو ځله زيات او منظم و د جلال الدين او وروسته د ده ځای ناستي احدات عبدالقادر او کریم داد په مشرۍ ټول پاڅونونه وځپل. په دې ترتيب تر

۱۶۳۰ کال پورې روښاني غورځنگ په سياسي توگه د منځه لاړ او يوازې په مذهبي توگه پاتې شو.

دریمه مرحله: د خوشال خټک او ایمل خان مومند مبارزې د خوشال خان خټک مبارزې

د مغولو د واکمنۍ پر ضد د پښتنو د ملي ازادي غوښتونکي غورځنگ دریمه او وروستی مرحله د خوشال خان خټک شاعر او جنګیالی په مشرۍ پیل شوه. خوشال بابا د خپلې مبارزې په جریان او خپلو شعرونو کې دا نظر څرګند کړ چې پښتانه سره له دې چې په بېلو بیلو قبیلو سره وېشلي دي بیا هم د خپلو علايقو په لرلو سره یو واحد ملت جوړوي. خوشال خان خپل دا نظر د خپل شعر په لاندې بیت کې فرمول بندي کړ:

د افغان په ننگ مې وتړله توره

ننګیالی د زمانې خوشحال خټک یم

خوشال خان د خپل پلار شاهباز خان د مړینې وروسته د خپل پلار پر ځای د خټکو د قبیلې خان وټاکل شو. ده د مغولو د واکمنو سره د خپل پلار غوندې همکاري پیل او خپله دنده یې په امانت داری سره تر سره کوله. خو خوشال خان د کابل صوبه دار له خوا د یوې دسیسې په ترڅ کې ونیول شو لومړی په ډیلي کې بندي و او د هغه ځایه د رنتپور بندیتون ته یووړل شو او دوه نیم کاله د رنتپور په بندیتون کې ډېر کړاوونه وګالل. دی بیا د رنتپور د بندیتون نه وایستل شو او اکړې ته یووړل شو او هلته له بنده ایله شو او په ډیلي کې نظر بند وساتل شو او وروسته پښتونخوا ته راستون شو او د مغلي واکمنۍ پر ضد یې مبارزه پیل کړه لکه چې وايي:

پس له بنده دی دا عزم

د خوشال د خاطر جزم

یا نیولی مخ مکې ته

یا مغولو سره رزم

خوشال بابا د مغولو پر وړاندې د خلکو د پارولو، د لښکرو د ټولولو له پاره د پښتنو بېلو سیمو ته ډېرې دورې وکړې او ټول پښتانه یې د ملت په توگه د مغولو پر ضد مبارزې ته رابلل.

په دې ترتيب د هند د مغولو پر ضد د پښتنو د مقاومت وروستی مرحلې تمثیلونکی د پښتون ناسیونالیزم پلار او د اوسني پښتو ژبې بنسټ ایښودونکی ستر شاعر او مبارز خوشال خان خټک دی. د ده سره په دغه مبارزه کې ایمل خان مومند او دریا خان اپریدی ملګري وو.

دا مرحله په رښتیا سره د یوسفزو په پاڅون سره پیل شوه. دوی په ۱۶۶۷ کال کې ان د اباسین د رود د هغې غاړې د مغولو پوځي موقعیتونه ونیول. د خوشال خان خټک په وخت کې یوسفزي، مومند او اپریدی د مغولو د حاکمیت پر ضد تر پخوا لا ټینګ ودرېدل.

د ایمل خان مومند مبارزې

ایمل خان مومند د خپلواکۍ په لار کې هغه جګړه کلونه کلونه توده وساتله چې د روښان پیر، د هغه زامنو او لمسیانو نږدې یوه پېړۍ د مغولو په وړاندې پرمخ بیولې وه. ایمل خان مومند اپریدی او مومند سره یو موټی کړل. کاکړ وایي چې د دغو قومونو ستراتیژیکي اهمیت په دې کې دی چې منځنۍ اسیا له سوویلي اسیا سره په لنډ ډول سره نښلوي. مغولي واکمنو ته د خیبردره نه یوازې د سیاسي او سوداګرۍ له امله ځانګړی اهمیت درلود بلکې په روحي لحاظ هم مهمه وه چې دوی د دې لارې د خپل پلرني ټاټوبي فرغانې سره اړیکې درلودی شوي.

د خیبر دره چې د ډکې نه تر جمروډ پورې غزېدلې ده د اپریدو سیمه ده. اپریدی هغه خلک دي چې په زیات کومان د تاریخ پلار هېرودت د اېه ریتای په نوم یاد کړي دي. مومند د اپریدو کاونډیان دي چې د کامې او پېښور تر منځ سیمې کې اوسېږي.

ایمل خان مومند د دریاخان اپریدی په ملګرتیا دغه دواړه قومونه یو موټی کړل او د مغولو امپراتوري یې وننګوله. د هند د تاریخ پوه سرکار په وینا ایمل خان په اصل کې یو ذاتي جنرال و، پاچایي یې اعلام کړه، سکه یې په خپل نامه ووهله او ټول پښتانه قومونه یې په دغه ملي غورځنګ کې د ګډون له پاره وبلل. ۱۹۱۱ په ۱۶۷۲ کال مومند او اپریدی د ایمل خان مومند په مشرۍ د مغولو په وړاندې پاڅېدل او د کابل مغولي صوبه دار محمد امین خان ته چې د یوه لوی پوځ په مشرۍ یې غوښتل د خیبر دره پرانیزي کلکه ماته ورکړه. د برتانوي هند د حکومت د جغرافیایي سیند له مخې امین خان ټول پوځ چې شمېر یې څلوېښت زرو ته رسېده د پوځي وسلو او سامانونو سره د لاسه ورکړ. پښتنو هم په دې جګړې کې ډېر جنګیالي له لاسه ورکړل. کاکړ وایي چې په نړۍ کې به دغسې جګړه کمه وي چې دغومره انسانان به یې وژل شوي وي. په ۱۶۷۳ کال کې اپریدو په ګنداو کې د مغولو

دوهم لښکر مات کړ او يو کال وروسته يې په ۱۶۷۴ کال کې د مغولو دريم پوځ په خاپش کې مات کړ. ۱۹۲

د دغو ماتو له امله پاچا اورنگ زب ار شو چې ډيلي پرېږدي او په ابدال حسن کې ديره شي. اورنگ زب د حسن ابدال نه د پښتنو پر ضد د جگړې لارښوونه کوله او د ۱۶۷۴ کال نه د يو نيم کال په بهير کې د خپلو وتلو جنرالانو اضغر خان او شجاعت خان په قوماندانۍ د پښتنو د خپلو له پاره پوځونه واستول. خو دغو جنرالانو لږ بري او زياته ماتې وخوړه او په خپله شجاعت خان په يوه جگړه کې ووژل شو. په پای کې اورنگ زب پرته له دې چې په پوځي ډگر کې بريالی شي بېرته ډيلي ته ستون شو.

اورنگ زب پوه شو چې د جگړې له لارې نه شي کولی چې خپلې موخې ته ورسېږي نو بيا يې د ډپلوماسۍ لار ونيوله. ده پښتنو ته د سوغاتونو، تنخواگانو او جاگيردارونو په ورکولو پيل وکړ. ده پښتنو ته د ننۍ خپلواکي ومنله تر هغو چې په څرگند ډول ياغي نه وي. نوموړې دغو قومونو ته د هندوستان او منځنۍ اسيا تر منځ د کاروانونو د ازاد تګ راتګ له پاره په کال کې شپږ لکه روپۍ ومنلې. برسېره پر دې هغه اږيدو، مومندو، شينواریو، يوسفزو، او خټکو ته په کاروانونو باندې د لارې د تېرېدو مالي اېڅستل ومنل. په دې توګه مغولي حکومت په تجربې سره پوه شو چې د پوځي زور پر ځای رشوت ورکول ارزانه تمامېږي. په پای کې يوسفزي، بنګين، د تېراه قومونه او ان د خوشال خټک يو زوی ورو ورو مغولي حکومت ته تسليم شول او د پېړۍ تر پايه پور ټول پاڅونونه آرام شول. ۱۹۳

په دې توګه ختيځ پښتانه د خپلواک دولت په جوړولو کې نابريالي شول. لامل يې دا و چې خپلواک دولت لرلو له پاره لازمه ده چې د زياتي کرنيز حاصل نه ماليه ورکړل شي او هم تر يوې اندازې د دولت په ګټه د خپلې ازادۍ نه تېر شي. خو د کاکړ په وينا «دوی لومړنی نه درلود او د دوهم ورکولو ته حاضر نه وو.» ۱۹۴ ميا روښان چې غوښتل يې دولت د غنيمت له لارې تنظيم کړي په خپلو کوښښونو کې پاتې راغی. په پای کې ختيځو پښتنو د خپلواک دولت په جوړولو کې پاتې راغلل او دوی تر اوسه خپلواک دولت نه لري. خو د ختيځو پښتنو جگړو په لوېديځو پښتنو لوی اغېز وشينده. لوېديځو پښتنو د بلې پېړۍ يانې د اتلسمې پېړۍ په پيل کې د ميروېس نيکه په مشرۍ په کندهار کې د افغان خپلواک دولت بنسټ کېښود او بيا د احمدشاه بابا په مشرۍ د امو نه تر اټکه خپلواک ملي دولت جوړ کړ. د کاکړ په وينا «د احمدشاهي دولت په رامنځ ته کېدو کې د ختيځو پښتنو ونډه اساسي وه. په دې ډول چې دوی په خپلو جگړو سره نه يوازې د احمدشاه له

پاره ډگر هوار کړی و، بلکې له هغه سره يې د ملکونو په نيولو او د امپراتورۍ په جوړولو کې هم مرسته کړې ده.» ۱۹۵

د پښتنو د دغه ملي غورځنگ د ناکامۍ لاملونه

د دغه ملي غورځنگ د ناکامۍ بنسټيز او اصلي لامل دا و چې د دوی په وطن کې زياتي کرنيز حاصلات نه وو. په دغو قبيلو کې، چې په خپل منځ کې يې نږدې برابر حيثيت درلود او يوې بلې ته سر نه ټيټه او ان په خپلو کې يې مخالفتونه او دښمنۍ درلودې، د قبيلو د کچې نه د لور تنظيم جوړول دا غوښتنه کوله چې دوی بايد زياتي محصولات راټول کړي او يو څه د خپلو ازادۍ نه تېر شي. دوی زياتي محصولات نه لرل او د يو څه ازادۍ نه نه تېرېدل. دا لامل و چې بايزيد روښان هڅه وکړه چې خپل تنظيم که څه هم ساده و د غنيمتونو د لاسته راوړلو له لارې جوړ کړو. دې کار سمدلاسه د مغولي دولت او غير روښانيانو تر منځ ضدیت منځ ته راوړ او دوی د ديني عالمانو په گډون روښاني غورځنگ په خپله په هېواد کې کمزوری کړ.

د دې سره سره پښتنو د بې وزلۍ او لومړنۍ ساده وسلې په لرلو او د يوه ساده تشکيل سره نږدې يوه نيمه پېړۍ د هغه مهال د لويې امپراتورۍ د لوی او منظم اردو په وړاندې چې بې اندازې سرچينې يې درلودې وجنگېدل. که څه هم په دې کې هېڅ شک نشته چې پښتانه د هند د مغولو د دولت د واکمنۍ پر ضد وو دوی د راتلونکې له پاره ځانگړی پلان نه درلود. کاکړ وايي چې په زيات گومان هغه څه چې دوی غوښتل لاسته راوړل چې هغه مالي امتيازونه او کورنۍ ازادې وه. خو د دوی مبارزې پراخ اهميت درلود:

۱- د هند مغولي دولت د افغانانو سره د مقابلې له کبله دکن د لښکرو نه تش کړ او دې کار ياغي هندوانو ته دا موقع په لاس ورکړه چې د خپل نامتو مشر په لارښوونې سره جگړه وکړي او په ځانگړې توگه د ۱۶۷۶ کال نه وروسته يې ځينې برياليتوبونه تر لاسه کړل.

۲- د هند د مغولي امپراتورانو د دغه ارمان په وړاندې چې د هندوکش هغې خواته د توران مخکې لاندې کړي افغانان لوی خنډ شول. د ازبکو واکمنو او په ځانگړې توگه عبدالله خان افغانانو ته مرستې ورکړلې.

۳- د دې جگړو ليرې پایلې دا شوې چې احمدشاه بابا کله چې په ۱۷۴۷ کې د پاچا په توگه وټاکل شو د مغولي هند د دولت استازي د کوم جنگ پرته د افغانستان نه وشړل.

کاکړ: درانيان او په کندهار کې صفوي دولت

کاکړ وايي چې په ختيځ کې د پښتنو د ناکامۍ وروسته د پښتنو دوي ستري قبيلې درانيان اوغلزيان د پرديو د واکمنۍ پر وړاندې په لوبديځ کې را پورته شول چې د دوی د هغو او کونښنونو په پايله کې يو خپلواک افغانستان منځ ته راغی او يوه لويه امپراتوري يې جوړه کړه.

درانيان د ۱۷۴۷ نه د مخه ابداليان نومېدل. د ابداليانو نوم د هغې سپين پوتکې اريايي قبيلې سره تړاو لري چې په تاريخ کې د اپتل يا هفتل په نامه ياده شوې ده او اروپايانو دغه هپتاليان سپين هونان بللي دي. دغه د (هون) اوسني بڼه اوس په پښتو ژبه کې (خان) ده. د اپتل قبيلې چې د مغولو د فشار له مخې د منځني اسيا نه باختر ته راکوزې شوې اټکل د ۴۰۰ زېږدي کې په باختر او تخارستان کې يو پياوړی دولت جوړ کړ. هپتاليانو د ساسانيانو سره جگړې کړې او کتيبي يې د کندهار په شمال او ارزگان کې موندل شوې دي. ۱۹۶ عربو دغه قبيله هياطله بللې ده. دغه سپين پوتکي اريايان د پکتیانو سره ګډ شوي دي. ستر احمدشاه بابا ابداليان د درانيانو په نامه ياد کړل. په اصل کې درانيان د کسي غره په سيمه کې د سليمان د تخت په ګاونډ کې اوسېدل. له هغه ځايه د کلونو په اوږدو کې ګام په ګام د کندهار ختيځې خوا ارغستان ته راغلل او په اساسي توګه د کوچيانو په بڼه په کېږدو کې اوسېدل او د شپاړسمې پېړۍ تر نيمايي د يوې اساسي ډلې په توګه هلته پاتې شول. له دې وروسته دوی هغه شني هوارې مخکې چې د غلزيو، بلوچو او کاکړو تر منځ په ژوب کې پرته وې، په زور د نورو نه ونيولې. درانيان د هغو سره د څړ ځايونو، اوبو او کرنيزو مخکو پر سر تل په جنجال کې وو. په ځانګړې توګه د دوی مخالفت د غلزيانو سره زيات وو ځکه چې غلزيان د شمېر او ځواک له مخې د دوی سره برابر وو. ولې د ۱۶۲۴ زېږدي په شاوخوا کې د پښتنو دا دوي اساسي قبيلې په دې سره سلا شوې چې د خپلو مشرانو سلطان ملخي توخي او سلطان خودکي دراني په مشرۍ د دواړو قبيلو تر منځ کډه پوله وټاکل شوه. د دغه تړون پر بنسټ د گرم آب د وادی شمال ختيځ سيمې په غلزيانو پورې اړه ولرله او د سوويل لوبديځ سيمې د درانيانو شوې. په دې ډول د

دغو دوو قومونو تر منځ د شخړو مخه ونيول شوه. د دغې پولې د ټاکلو وروسته درانيان د لوېديځ په لور مخه کړه او د کندهار ښار ته نږدې يې شهر صفا جوړ کړ. په دې توگه درانيان د فارس د صفوي دولت د قلمرو برخه شوه او د صفويانو يوه والي له خوا واکمني پرې کېده. خو د صفوي پاچا له خوا والي ته لارښوونه شوې وه چې درانيان په خپلو چارو کې ازاد پرېږدي. د دغه امتياز ورکول په واقعيت کې يو پخوانی دود و. د هغه مهال راهيسې چې کندهار د اولسمې پېړۍ په لومړۍ څلوريزه کې د صفوي امپراتورۍ برخه شوه شاه عباس صفوي درانيان او گلجيان په خپلو کورنيو چارو کې ازاد پرېښودلي وو او د دوی سره نرمه شيوه غوره کړې وه. دا لامل و چې دغه قومونه سره له دې چې د صفويانو سره يې مذهبي توپير درلود د هند د مغولو د دولت په انډول يې صفويان ښه بلل. د درانيانو مشرانو چې د مالي په راتولولو کې يې د والي سره مرسته کوله د دولت په چارو کې رول لوباوه او خپل ځواک يې زياتوه. صفويانو د درانيانو مشرانو ته د دغو امتيازاتو د ورکولو لامل د صفوي او د هند مغولي امپراتوريو تر منځ د کندهار پر سر سيالي وه. د دغې سيالي په پايله کې کندهار څو ځله د دوی تر منځ لاس په لاس شوی و.

د کاکړ په وينا په دغسې وضع کې د درانيانو مشرانو د امپراتوريو تر منځ په سياست کې برخه اخېسته او راز راز لقبونه يې لاسته راوړل. د بېلگې په توگه شېر خان سدوزي ته شاه جهان د شاه زوی «شهبزاده» لقب ورکړ او صفوي پاچا د «ميرزا» لقب چې د شاه زوی انډول دی شاه حسين ته ورکړ. د درانيانو په منځ کې هم د نورو پښتنو قومونو غوندې دښمنې ډلې موجودې وې خو د دوی دود دا و چې د قوم مشري د سدو خان په اولادو يانې سدوزو پورې اړه درلوده. دغه دود د شاه عباس د وخت نه چې سدو خان يې د ابداليانو د ريس په توگه ټاکلی و، موجود و. که څه هم سدوزي د پوپلزيو د قبيلې يوه کوچنۍ څانگه وه خو ابداليانو دومره درناوی ورته درلود چې د سدوزيو مشري يې منلې او تر يوې اندازې يې ميراثي بڼه غوره کړې وه. د اولسمې پېړۍ په پای کې ابداليانو دومره ځواک موندلی و چې والي غوښتل د دوی سره خپلوي وکړي. خو د هغه وړانديز داسې و چې د ابداليانو د دود سره يې ډډه نه لکوله. دوی د والي وړانديز ځان ته سپکاوی وگاڼه او د والي نماينده گان او ورسره لښکر يې ووژل. د دې سره سره شاه حسين صفوي نه غوښتل چې درانيان لا نور ولسول شي. ده خپل نوي والي گورکين ته لارښوونه وکړه چې د دوی سره نرم چلند وکړي.

په کندهار کې د گورکين ټاکل د صفويانو او د سييې د قومونو تر منځ د اړيکو کېدلېچ دی. د گورکين د ټاکلو لامل دا و چې کندهار د هند مغولو له خوا د خطر سره مخامخ و.

هندي دولت د کندهار د غوښتنې رسمي اعلان کړی و او د هغه د بېرته لاسته راوړلو له پاره د عملي کام اخېستلو شونتیا وه. دا لامل و چې کورکین د زیات واک او لوی شل زریز اردو سره د کندهار اداره په لاس کې ونيوله. له دې کبله کورکین هڅه وکړه چې د دغه بهرني گواښ په وړاندې د افغانانو کورنۍ دودیزه ازادې له منځه یوسي او ټول واک په خپل لاس کې ونیسي او د بلې خوا په همدې وخت کې په خپله په فارس کې د فارس د رسمي شیعیه مذهب د خوړېدو او غښتلي کېدو کوښښونه روان وو. سني مذهب افغانان د امپراتورۍ د ننه تر زیات فشار لاندې ونيول شول. که څه هم کورکین په لومړي سر کې د درانیانو سره نرم چلند کاوه. خو سوکه سوکه یې د درانیانو یوه ډله د بلې په وړاندې کاروله.

پوهاند ډاکټر کاکړ وايي چې دغه مهال د درانیانو او هم د غلزیانو مشران نه یوازې په ولسي چارو کې بلکې په نړیوال سیاست کې او په ځانگړې توگه د کندهار په سر د دواړو امپراتوریو په سیالیو او جنگونو کې د تجربې خاوندان شول. د سلطان خودکي سروالي د صفوي حکومت او دسلطان توخي سروالي د هند مغولي حکومت منلې وه.

د کورکین د راتگ وروسته په کندهار کې سترې پېښې یو پر بل پسې وشوې. دغه مهال د صفوي واکمنو رسمي سیاست دا و چې شیعیه گان وهڅوي او سنيان وځي. د دغه سیاست پر بنسټ کورکین د کندهار سنيان تر فشار لاندې ونيول او د یاغیانو په څېر یې ورسره چلند کاوه. دوی غوښتل چې د ابدالیانو او غلزیانو دودیزې خپلواکۍ ته د پای ټکی کېږدي. برسېره پردې یې غوښتل چې د مغولو په وړاندې ټینګ مورچل جوړ کړي چې کندهار د دوی لاس ته ونه لویږي.

کورکین د دې پلان د پلي کولو له پاره لومړی د ابدالي مشرانو پر ضد دسیسې وکړې. لومړی یې د دولت خان د سدوزو ځواکمن مشر د منځه وړلو په پلان کې بریالی نه شو بیا یې د پښتنو د هغه کمزوري ټکي نه گټه پورته کړه چې هغه د دوی ځان غوښتنه ده. د کورکین لښکر یوه شپه د عزت خان سدوزي او اتل خان سدوزي په مرسته او لارښوونه په ښار صفا کې ناڅاپه د دولت خان ابدالي په کلا برید وکړ او دولت خان یې د خپل زوی نظر محمد او فقیر نومي نوکر سره ووژل. د دولت خان د مړینې وروسته د ده زوی رستم خان د قوم مشر شو. بیا یې رستم خان بندي او وواژه او د ده د مړینې وروسته یې د ده غښتلي ډله وځپله او بیا یې د هغه مخالفه ډله د عزت خان سدوزي او اتل سدوزي په مشرۍ اړه کړه چې ارغستان پرېږدي او د کندهار په ختیځه خوا کې میشته شي. لږ مهال وروسته یې ناڅاپه پرې ودانگل، ډېر یې ترېنه ووژل، ډېر لویان یې کرمان ته ورڅخه وشړل

د نوميالي تاريخپوه پوهانده داکټر محمد حسن کاکړ تاريخي- علمي نیکات (ميراث) ته کتنه

او پاتې ابداليان د شورواوک چاپر دشتو او غرو ته وکوچېدل. په دې توگه گورکين ابداليان وځپل او غوښتل يې چې د دې وروسته هوتکيان هم وځپي.

نهم څپرکی

په کندهار کې د غلزيانو لومړی دولت

د مخه مو يادونه وکړه چې د هېواد لويديځه برخه تر کندهار پورې د صفوي واکمنو تر واک لاندې وه. د کاکړ په وينا کندهار چې کوټه، ژوب او بلوچستان يې برخې وې او له کلات نه تر فراه پورې پراته سيمه وه دغه مهال هم تر زياتې اندازې يې خپل تاريخي اهميت ساتلی و. د کندهار ډېرې سيمې د هلمند، ارغنداو او ترنک د رودونو او د معتدلې هوا په لرلو سره تل ښېرازه او ابادې وې. دا ښار د ترانزيقي سوداګرۍ مرکز دی. د کندهار زور ښار د هستوکې لرغونی مرکز دی. په دې نږدې وختونو کې برتانوي لرغون پېژندونکو ثبوت کړې، چې کندهار د تاريخ نه د مخه دورې نه را په دې خوا د انسانانو هستوکښی شوی دی. ۱۹۷ وروسته په هلمند او ارغنداو کې ميشتو کندهاريو په هلمند کې د کندهارا په نوم ښار جوړ کړ چې د کندهار اوسنی ښار د دغو ښارونو په لړ کې وروستی ښار دی. د کندهار نوم په زيات گومان د کندارا او رېدلې بڼه ده چې د ويدي دورې نوم دي. کندهار د زېږدې نه د مخه په څلورمې پېړۍ کې ستر سکندر لاندې کړ. سکندر کندهار ته نږدې د سکندريې په نامه د بل ښار بنسټ کېښود. لکه چې د مخه يې په هرات کې او بيا بگرام ته نږدې د داسې ښارونو بنسټ کېښود. له سکندر نه وروسته د کندهار پر ځای اراکوزيه نوم دود شو، چې په زيات گومان د ارغنداب يوناني شوې بڼه وي. په نوي دور کې ميرويس نيکه کندهار د صفوي پارس د واکمنۍ نه وژغوره او په کندهار کې يې د افغان خپلواک دولت بنسټ کېښود. په کندهار کې د حضرت محمد خرقه خوندي شوې، چې د بخارا پاچا احمدشاه بابا ته د سوغات په توګه ورکړې وه. احمدشاه بابا په ۱۷۴۷ کال کې د کندهار د شېر سرخ د جرګې نه وروسته ټول افغانستان يو موټی کړ او يوه امپراتوري يې جوړه کړه. د کندهار په مېوند کې د افغان- انگليس د دوهمې جګړې په يون کې غازي محمد ايوب خان انګرېزانو ته سخته ماته ورکړه چې د هغې په پايله کې د لپټن له خوا د افغانسان د وېشلو پلان ناکام شو. په دې ډول کندهار د افغانانو په ملي او سياسي ژوند کې اساسي رول لوبولی دی.

ميرويس نيکه

د مغلو او صفويانو د واکمنۍ په مهال په کندهار کې د ابداليانو ټول خېلونه، د غلزيانو څه خېلونه، د دوی په څنګ کې تاجکان، ملتانيان او نور او د ښار د باندې ايرانيان پراته وو. په عمومي توګه د غلزيو خېلونه له کلاته تر کابله پورې د مغولو د کابل د واکمن او ابداليان د کندهار د صفوي واکمن تر لاس لاندې وو. «خو دواړه قومونه په خپلو کورنيو چارو کې خپلواک وو او چارې يې خپلو مشرانو ورننويولې. دغه مشران په اصل کې وروسته له هغه د زيات واک څښتنان شول چې ولسونه يې ميشته شول او کلي او ښارونه يې ودان کړل.» ۱۹۸

د ابداليانو د خپلو وروسته په کندهار کې غلجيان د يوه ستر قوم په توګه پاتې شول چې مشر يې ميرويس خان هوتک و. ميرويس خان د ښالم خان هوتک زوی او د خپلې مور نازو انا له خوا د سلطان ملخي توخي لمسی او د خپلې ماندنيې له لوري د سدوزو زوم و. د ده ميرمن خانزاده د جعفرخان سدوزي لور وه چې د سدوزو د کامران خپلو په څانګه يې اړه درلوده. کامران خان د سدو زوی و چې د خپلو وروڼو په منځ کې يو پوه او عالم سړی و او د «کلید کامراني» په نوم د اثر ليکوال دی چې په پښتو ژبه يې ليکلی دی.

د ابداليانو د خپلو وروسته کورګين د هوتکو د خپلو نيت وکړ. په دې منظور کورګين د هوتکو مشر ميرويس خان هوتک ته مخ واراوه چې د دوستي په پلمه د ده قوم هم وځي. خو ميرويس د تېرو پېښو نه عبرت اخېستی و او دې ته يې پوره پام و چې کورګين يې تېر نه باسي. ده د خپلواکۍ غورځنګ د همکارۍ په جامه کې په پټه پيل کړ او د کندهار د ښار د کلانترۍ منصب يې ومانه.

خو کله چې کورګين د ميرويس خان د نفوذ د زياتېدو نه په وېره کې شو نو هغه يې اصفهان ته وشړه او له شاه حسين نه يې وغوښتل چې د کندهار د امنيت په خاطر دې دی هلته وساتل شي. ميرويس خان ته په اصفهان کې پاچايي دربار ته په لار پيدا کولو سره مالومه شوه چې درباريان په مخالفو ډلو سره وېشل شوي دي او همدارنګه د پارس شيعه کان او سنيان په ټينګه سره مخالف شوي دي. ده ته دا هم ښکاره شوه چې په خپله پاچا يو کمزوری واکمن دی او د پارس امپراتوري مخ په ښکته روانه ده. تاريخ پوهان په دې ټکي سره يوه خوله دي چې ميرويس د سوغاتونو په ورکولو، او په خپلې ځانګړې وړتيا، څېرې او روانه وينا سره د کورګين په اړه شاه حسين او د هغه درباريان شکمن کړل او خپل ځان يې د پارس دوست په حيث وروپېژانده. په يوه پردي هېواد کې د ميرويس دغه کره ساری نه لري. په دې توګه ميرويس خان د خپلې پوهې او څېرې له کبله د دربار

خواکمن کسان د خان پلويان کړل او د حج د ادا کولو نه وروسته يې چې د عربستان د عالمانو نه يې د خپلې خوښې سره سم اخېستې فتوا ورسره وه د صدراعظم اعتماد دوله له لارې اجازه تر لاسه کړه چې په کندهار کې د گورکين د مشاور په توگه کار وکړي. د دوسرسو فرانسوي په وينا ميروېس خان د پارس د دربار «د ټولو وزيرانو نه په يوازې توگه ډېر هوښيار و.» ۱۹۹

ميروېس خان د پخوا غونډې د گورکين سره همکاري پيل کړه خو گورکين پرې ډاډه نه و نو ده د خپل زوی له پاره د ميروېس خان لور په نکاح وغوښتله. ميروېس خان د دې موضوع له پاره د کوکران جرگه راوغوښته. جرگې پرېکړه وکړه چې د گورکين د غافلولو له پاره د ميروېس خپله وينځه د لور په نامه په نکاح ورکړي. ميروېس خان د جرگې د پرېکړې سره سم خپله وينځه د لور په نامه په نکاح ورکړه او په دې ډول يې گورکين غافل او د خان دوست کړ. د ميروېس په وړاندې اصلي مسله د خپلواکۍ وه. خو د کاکړ په وينا د دې موخې د سر ته رسولو له پاره نه تنظيم و، نه وسله او نه پوځ او نه د وسله والې مقابلې توان. خو گورکين نه يوازې شل زريز پوځ درلود بلکې شاه ته يې يوه لويه امپراتوري ولاړه وه. ميروېس خان د خپل پلان د عملي کولو له پاره د مانجې تاريخي جرگه راوغوښته چې قومي مشران او روحانيون په کې شامل وو. د دې جرگې د غړو يادونه د پښتو ژبې په لومړۍ شاهنامه (محمودنامه) کې ريډي خان مومند کړې ده او دغه کسان په کې شامل وو: سيدال خان ناصر، بابوجان بابي، بهادرخان انډر، ملا پيرمحمد مياجي، عزيزخان نورزی، يوسف خان هوتک، گل خان بابېر، نورخان بړيڅ، نورخان الکوزی، يحي خان هوتک، حاجي نورمحمد هوتک، چې په حاجي انگو مشهور دی. يونس کاکړ او نور. ده د دې جرگې له لارې وکړای شول چې د کندهار ولسونه د کډ عمل له پاره چمتو کړي. ميروېس خان پلان درلود چې د گورکين پوځ په حساس وخت کې برخې برخې کړي او د يوې برخې په لاندې کولو سره به د هغې د وسلې نه د نورو برخو په وړاندې کار اخلي.

جرگې د ميروېس خان پلان تاييد کړ او پرېکړه يې وکړه چې د بلوڅو، کاکړو او ترينو خانان به خپل ولسونه وهڅوي چې د ماليې د ورکولو نه سر وغړوي تر څو گورکين اړ شي چې د خپلو پوځونو يوه برخه هلته واستوي او دوی يې هلته د منځه يوسي. جرگه والو دغه راز پټ وساته او په خپلې پرېکړې يې عمل وکړ.

گورکين چې خبر شو نو د کاکړ په وينا ده شپږ نيم زره سرتېري د ميرزا سندل په قوماندنۍ د ياغيانو د ټکولو په موخه واستول او په خپله د زرو تنو ځانگړو جنگياليو سره ورپسې روان شو او د ميروېس نه يې هم وغوښتل چې د خپلو ايله جاريو سره د

ارغستان په ده شېخ کې ور سره يو ځای شي. په دې توگه د ميروېس د پلان لومړۍ برخه پلې شوه هغه دا چې د گورگين پوځ په څو برخو ووېشي. په ده شېخ کې اوه سوه ناصرو او هوتکو د ميروېس په قوماندنۍ د گورگين په زر کسيز پوځ د شپې په ترورېمې کې ناڅاپه برید وکړ او له منځه یې يووړ. په دې گام سره د ميروېس د پلان دوهمه برخه پلې شوه هغه دا چې د يوې برخې نه وسله واخلي او د نورو برخو د خپلو له پاره یې وکاروي. ميروېس خان د مخه درې نيم زره قومي ځوانان په وړو ټوليو کې منظم کړي او دنده ورکړ شوې وه چې د ښار اړيکه د بهر سره وڅاري تر څو پارسيان د پېښې نه خبر نه شي. په خپله ميروېس او د هغه ملګري چې د گورگين او د هغه د پوځيانو جامې يې اغوستې وې او د هغوی په وسلې يې ځانونه سمبال کړي وو د شپې په تياره کې ښار ته ننوتل او په بې ساري چټکۍ سره يې پارسيان تباہ کړل. وروسته يې د هغو دوه نيم زره پوځيانو نه چې د بلوچستان نه کندهار ته راستانه شول څه يې له منځه يووړل او نور يې په منډه د تباہۍ خبر اصفهان ته ورسوه.

ميروېس خان د ايران د دولت د غافلولو له پاره يو ليک د پارس د پاچا په نامه اصفهان ته ولېږه او بل ليک يې د هند مغولي پاچا ته ولېږه. په وروستي ليک کې ويل شوي و چې د کندهار خلکو د صفوي دولت پر ضد بريالی پاڅون کړی او خپلواکي يې گټلې ده. که چېرې د پارس پاچا د کندهار د خلکو پر ضد پوځ راواستوي او مور اړ شو چې له تاسو مرسته وغواړو نو تاسو به مرسته وکړی که نه؟ د هند پاچا په ظاهري توگه د کندهار خپلواکي په رسميت وپېژانده خو په پټه يې صفوي دولت ته پېغام ولېږه چې د دې پېښې مخه زه ونيسي تر څو د دې پاڅون لمبې د هند لمبې ته پراخې نه شي چې بيا د پښتنو تېر برم ياني د غوريانو، غلجيانو، سوريانو او لوديانو خاطرې را ژوندۍ نه شي.

ميروېس خان دا اټکل هم وکړ چې پارسيان به د دې پېښې د غچ اخبستلو له پاره اړين گامونه پورته کړي نو سمدلاسه يې د کورنيو سمونونو په څنګ کې په دفاعي تدبيرونو لاس پورې کړ. ميروېس خان په لنډ وخت کې پوځ منظم او د پارسيانو نه يې په نيولو وسلو سمبال کړ او يو منظم توپچي قوه يې هم جوړه کړه. ده د کورنيو سمونونو په څنګ کې د نوي هېواد بهرني سياست ته پوره پام وکړ.

صفويانو لومړی محمد جامي نومي سړی د گواښ له پاره راولېږه چې د ميروېس په امر بندي شو. بيا يې د هرات حاکم محمدخان چې د حج په سفر کې د ميروېس ملګری و راواستوه چې د ميروېس په امر د يوه درانه مهلمه په توگه په کندهار کې وساتل شو. کله چې صفوي واکمنان خبر شول نو په کندهار باندې يې د پوځي يرغل ترتيبات ونيول.

صفوي دولت په هرات کې ميشته پوځ ته امر وکړ چې په کندهار يرغل وکړي. ميرويس هم د پنځه زريز ازادي غوښتونکي پوځ سره ورووت او سخته ماته يې ورکړه.

بيا د پارسيانو منظم پوځ د اتلسو مياشتو په جريان کې څلور ځله يرغلونه وکړل او ماتې يې وکړه. د دې وروسته صفوي واکمنو د خسرو خان په قوماندانۍ يودېرش زره پوځ کندهار ته واستوه چې دې پوځ کندهار څو مياشتو کلانېد کړ خو وروسته د ميرويس خان د زورو جنگياليو له خوا کلانېدي ماته او د خسرو پوځ د ده په شمول تباه شول. دوه کاله وروسته د رستم خان په مشرۍ پارسيانو پر کندهار يو بل يرغل وکړ چې هغه هم ناکام شو.

ميرويس خان چې له دې گواښونو نه هېواد وژغوره نو د خپلو نورو پلانونو د پلي کولو ته يې خپل پام واړاوه. خو د بده مرغه هغه څه چې دښمن د جگړې له لارې ونشو کړای چې ميرويس خان د خپلې لارې ايسته کړي نو دا کار يې بيا زمور افغانانو د هغې کمزورۍ له لارې تر سره کړ چې هغه د پښتنو خان غوښتنه ده. د دې کار د پلي کولو له پاره يې د ميرويس ورور عبدالعزيز ولساوه چې په خپله پاچا او پاچاهي يې په کورنۍ کې نيکاتي شي. عبدالعزيز خپل مدبر، هونبیار او ځيرک ورور ملي مشر ميرويس خان ته د پارس د دربار په لمسون زهر ورکړل او د ۴۱ کالو په منگ د دې نړۍ نه سترگې پټې کړې اروا دې ښاده وي. د عبدالعزيز له خوا ميرويس خان ته د زهر وروکولو پېښه د محمد معصوم هوتک په وينا عبدالغفار هوتک په خپل تاريخ کې چې هوتکنامه نومېږي او لطيف جان بابي په سپارښت او لکښت حبيب الله رفيع چاپ کړی دی بيان شوی دی. د دې پېښې تفصيل د هوتکنامې د ۱۳۶ بيت نه تر ۲۲۸ بيت پورې راغلی دی. عبدالغفار هوتک وايي:

په زهر وې شېهد حاجي مير خان که

حکومت يې برادر بيا عزيز خان که ۲۰۰

د ده د مړينې وروسته د ميرويس ورور عبدالعزيز د جرگې له خوا د ميرويس پرځای وټاکل شو.

عبدالعزيز چې د ولس په مشورې د ميرويس نيکه پر ځای وټاکل شو د خپل ورور په شان نه تورزن، نه پوه، نه مدبر او نه د درايت خاوند و. ده په لومړي سر کې د قوم مشران راوبلل او دوی ته يې د پارس د دولت پياوړتيا او ځواکمنتوب او د خان د ناتوانۍ په اړه خبرې وکړې خو د ولس د مشرانو د سخت غبرگون سره مخامخ شو او ده ته يې گواښ

وکړ چې دا خبرې بايد کرد سره په خوله رانه وري که نه بل چا ته به ځای پرېږدي. خو مير عبدالعزیز چې خپل ورور يې د پارسيانو سره د پټ جور جاري په پایله کې په زهرو وژلی و د قوم مشرانو د مشورې پرته خپل وړاندیزونه د پارس حکومت ته وړاندې کړل. دا وړاندیزونه دادی:

«له افغانانو دې باج نه اخیستل کيږي؛

کندهار ته صفوي عسکر نه راځي؛

د افغانانو پاچاهي دې د عبدالعزیز په کورنۍ کې میراثي ومنل شي.» ۲۰۱
د عبدالعزیز دغه دريځ ته د ولس مشرانو په کرکه وکتل او د ولس په مشوره عبدالعزیز د میرویس د مشر زوی محمود له خوا ووژل شو او ټول په دې سلا شول او په یوه خوله او یوه اواز یې د شاه محمود هوتک پاچاهي ومنله.

په فارس باندې د افغانانو واکمني

د شاه محمود هوتک واکمني

د مخه مو یادونه وکړه چې شاه محمود خپل تره عبدالعزیز په دې وواژه چې د پارس د صفوي دولت سره یې سازش کړی و. که څه هم شاه محمود هوتک د خپل پلار باوري و او په ټولو جگړو کې د برخې اخیستو له امله په پوځي چارو کې زیاتې تجربې ترلاسه کړې وې خو بیا هم د دغې وژنې له مخې واک تر لاسه کول د میرویس خان په کورنۍ کې ژور چاودون رامنځ ته کړ چې وروسته د دې کورنۍ د نسکورېدو د لاملونو نه یو لامل شو.

شاه محمود هوتک په خلکو کران او یو زره ور او مېړنی جنرال و. خو ځنګه چې یو تنکی ځوان و دومره سیاسي پوهه او تجربه یې نه درلوده چې د سیاست په ډګر کې یو بریالی مشر وي. نوموړی د مخه تر دې چې د خپل هېواد یووالی را منځ ته کړي د پارس د نیولو په فکر کې شو. د هغه وخت د تاریخ لیکوالان دا وایي چې د اصفهان نیول یې د پلار وصیت و. دا سمه ده چې پلار یې د ځنګدن په مهال د اصفهان د نیولو خبره کړې ده. خو پلار یې ولې د خپلو اتو کالو په واکمنۍ کې دې کار ته اقدام نه کاوه؟ فکر کوم چې دې کار د پلي کېدو له پاره شرایط چمتو نه و. هغه دا چې د دې کار له پاره تر ټولو د مخه د پښتنو هېواد د امو نه تر اباسینه پورې باید یو موټی شوی وی او د دې له پاره د ټولو پښتنو قبیلو او په تېره بیا د غلزیانو او ابدالیانو د قبیلو یوالی اړین و.

شاه محمود د ۱۷۱۷ نه تر ۱۷۲۵ پورې واکمن و. په دغه لنډه موده کې نوموړي ډېرې جگړې وکړې. د ده او درانيانو تر منځ لومړۍ جگړه د فراه په دلارام کې پېښه شوه چې په هغې کې د درانيانو مشر اسدالله سدوزايي ووژل شو. د دې پېښې نه وروسته شاه محمود پارس ته پام واړاوه.

شاه محمود هوتک د اصفهان د نيولو نه د مخه د کرمان د خلکو په غوښتنه هغې خواته روان شو. شاه محمود په دغه خطرناکې چارې کې نه يوازې د خپل قوم ملاتړ تر لاسه کړ، بلکې د امامي هزاره گانو او بلوچو ملاتړ هم ترلاسه کړ. شاه محمود هوتک د ۱۷۲۰ کال د اوړي په پای کې يو لښکر چې شمېر يې ۱۱۰۰۰ ته رسېده تيار کړ چې د سيستان په ريگستان کې د خوارکي موادو، غلې او وښو د نشتوالي له امله د سر او مال زيات زيان ورورسېد. خو د دې سره سره هغه کرمان ته ورسېد او د کرمان خلک په خپله خوښه ده ته تسليم شول. ده د همدغه کال په پای کې د کرمان د ښار زياتره برخه د زردشتيانو په مرسته د جگړې پرته ونيوله. خو دوی دغه ښار د پارس د يو غټ لښکر د بريالۍ مقابلې له امله چې لطف علي خان يې مشري کوله پرېښود. خو په دغه مهال په کندهار کې بيجن سلطان لکزي د ملک جعفر خان په ملتيا چې بندي و، د کندهار د نورو پارسيانو په مرسته پاڅون وکړ تر څو کندهار بيا د پرديو تر ولکې لاندې راولي. شاه محمود د کندهار د اړدور د خپلو له پاره کندهار ته راستون شو. خو د ده تر رسېدو د مخه اړدور کوونکي د ده د کشر ورور مير حسين هوتک له خوا خپل شوي او زندی شوي وو.

څنگه چې د اصفهان په دربار کې بې اتفاقي وه نو د اصفهان درباريانو د لوی مجتهد په مرسته شاه حسين صفوي د اعتماد الدوله (صدراعظم) او د هغه د زوم لطف علي خان چې دا اوس يې په کرمان کې افغانانو ته ماته ورکړې وه، په وړاندې ولساوه. درباريانو په دوی باندې د پاڅون تور ولکاوه خو هغوی چې دواړه سنيان او باکفایته سړي وو د پاچا نږدې کسان وو. د پاچا په امر صدراعظم روند او لطف علي خان بندي شو. له دې کبله په کرمان کې صفوي لښکر تجزيه او په داغستان کې د لرکي خلکو پاڅون وکړ.

افغانان چې خبر شول د ۱۷۲۱ کال په ژمي کې زر کرمان ته ورسېدل او هغه ښار يې د حصاران پرته ونيو. په دغه وخت کې شاه محمود هوتک ته خبر راوړسېد چې د اصفهان حکومت نه شي کولی چې په ژمي کې د ده په وړاندې لوی پوځ تيار کړي. له دې کبله شاه محمود هوتک خپل لښکر د اصفهان په لوري روان کړ. که څه هم تر دې مهاله شاه محمود هوتک د اصفهان د نيولو نيت نه درلود، بلکې غوښتل يې چې صفوي حکومت ونه

کړای شي د لوی لښکر دپاره خوراکي توکي او نور اړين شيان زيرمه کړي. د شاه محمود لښکر د بيلو بيلو سيمو تر شيرازه، لورستان او اصفهانه پورې د خپل پوځ دپاره خوراکي توکي او واښه ترلاسه کړل. د صفويانو دولت په بيره سره د يوه لښکر په تنظيمولو بوخت شو. نوی لښکر د پارسيانو، گرجستانيانو او عربو نه جوړ و چې نوي صدراعظم رستم علي خان او د سنيانو خان اهوز يې مشري کوله. د صفويانو لښکر چې د افغانانو د لښکر نه زيات او هم يې د افغانانو پرتله ډېر ښه توپونه درلودل په گلناباد کې سنکر ونيو. خو افغانان د تشکيلاتو په لحاظ او هم د مشرانو او قوماندانو له مخې پر پارسيانو برتري درلوده. دغه دواړه لښکرې د ۱۷۲۲ کال د مارچ په اتمه نېټه په گلناباد کې سره مخامخ شولې. لومړی رستم خان د شاهي غلامانو قوماندان په بريالي ډول په افغانانو بريد وکړ او نږدې و چې د افغانانو مرکزي لښکر چې په خپله شاه محمود يې مشري کوله په شا شي، خو د افغان لښکرو د کين او ښي اړخ قوماندانانو امان الله او نصرالله په دغه وخت کې ډېره ميرانه وښوده او د افغان پوځ روحيه لوړه شوه. په همدغه وخت کې د افغان پوځ يوه ټولګي د صفويانو په هغه پوځ بريد وکړ چې بې کفايته صدراعظم يې مشري کوله. صدراعظم وټيښتېد او ورپسې د عربو لښکر وټيښتېد. وروسته کله چې د صفويانو د توپچي ټولګي قوماندان ووژل شو د صفويانو ټول پوځ په شا شو. د صفويانو د پوځ شمېر ۴۲۰۰۰ تنه و او افغانان د دوی تر نيمايي هم لږ وو. افغانانو په گلناباد کې د خپل تاريخ يوه تر ټولو ستره جګړه وکټله. دغې جګړې شل کلن شاه محمود د زمانې د تر ټولو ځوانو سوبمنو په ليکه کې ودراره.

شاه محمود هوتک د گلناباد د بري وروسته په ښکاره د اصفهان د نيولو په فکر کې نه و. په دې چې د ده پوځ د ډېرو اولجو د لاسته راوړلو وروسته غوښتل چې خپل وطن ته ستون شي. خو د پارس خلک او حکومت دومره ورخطا شوي وو چې شاه محمود پرېکړه وکړه چې اصفهان ونيسي او په پارس واکمني وکړي. ځکه ده هغه سوله چې د صفويانو د پاچا له خوا يې وړانديز شوی و، په دې شرط پورې وپرتله چې بايد د پارس پاچا هغه ته خپله لور په نکاح کړي. خو پاچا دغه کار ته حاضر نه و. وروسته له دې شاه محمود په اصفهان چې ۶۵۰۰۰ نفوس يې درلود مارش وکړ. خو د سيخ بريد پر ځای يې ښار کلابند کړ او هيله من و چې ښار به د جګړې پرته تسليم شي. پاچا په ماڼۍ کې ځان کلابند کړ او د هغه پوځي قوماندانانو په هغو خلکو چې د امن په خاطر د ده ماڼۍ ته راتلل څو ځله کولی ووارولې او ډېر يې ووژل. د ښار کلابندو ته د ځايي واکمنو مرسته ونه رسېده. د گرجستان والي د مرستې د ورکولو نه بڅښنه وغوښته. د اصفهان ارمنيانو سوداګر چې د

خپلو شتمنيو د ساتلو په فکر کې وو د افغانانو لاس نيوی وکړ او د هغوی په غوښتنه يې دېرش پېغلې ورواستولې. سني کوردان په دې پلمه چې د عثماني ترکيې د تيري په وړاندې مقابله کوي د ښار نه د باندې ووتل. دا کار دوی د افغانانو په موافقه وکړ. د سنيانو خان اهوز چې د ننه په ښار کې مهم سړی و د افغانانو سره اتحاد وکړ. خو هغه څه چې په پای کې يې د کلابندو روحیه ماته کړه د خوراکي موادو کمۍ او د ناروغيو خورېدل وو. په ښار کې پوره خوراکي توکي زېرمه شوي نه وو. قحطي پيل شوه. لومړی د اوسانو، اسانو او خرو غوښه په لوړه بيه پلورل کېده. خو دا زېرمه زر ختم شوه او خلکو د پيشوگانو او سپو په غوښه تر هغه چې په اصفهان کې ميندل کېده خورله. خلک د ښار په کوڅو کې تبت شول. پېغلې او واده شوې ښځې چې تر دې مهاله په ستر او د جوهر او مرواريدو په گانو سينگار شوي وې په کوڅې کې هسې په ډوډۍ پسې گرځېدې، په دې چې هېچا د دوی گانې نه غوښتلې ځکه چې د هغې په بدل کې يې ډوډۍ نه شوه ورکولې. په پای کې دوی سترې شوې او په ژاره په مخکه لوېدلې او مړېدلې. ځينو بډايو او اشرافو چې وليدل نوره ډوډۍ نه شي ورکولی خپلو خپلوانو ته يې زهر ورکول. د هغو کسانو شمېر چې د قحطي نه مړه شوي شمېر يې هرو مرو سل زرو ته رسېږي. ۲۰۲

شاه محمود چې له دې نه خبر شو خپل لښکر يې لږ د ښار نه د باندې وايست چې ښار د بشپړې وړانولو نه په امان کې شي او خپلو افسرانو ته يې امر وکړ چې په خلکو بريد ونه کړي. د پارس پاچا په پای کې تسليم شو. لومړی يې خپله يوه لور شاه محمود ته د ښځې په توگه ورواستوله. وروسته له هغې په خپله د ۱۷۲۲ کال د اکتوبر په ۲۳ مه نېټه په فتح اباد کې د شاه محمود په گټه استعفا وکړه. هغه خپل تاج د محمود پر سر کېښود او وويل «نور زه پاچا نه يم او هغه وخت رارسېدلی چې تاسو د پارس په تخت کېښئ زه په پوره اخلاص او صميميت امپراتوري تاسو ته پرېږدم» ۲۰۳

په دې توگه شاه محمود هوتک د پارس پښتون امپراتور په ډېر شان او شوکت سره اصفهان ته ننوت او امر يې وکړ چې د اردوځای نه ښار ته خوراکي توکي راوړي. زر قحطي ورکه او پرېماني شوه. شاه محمود په حکومت کې مهم بدلونه رانه وستل. لږې شوی پاچا يې مشاور وټاکه او په هر وزارت کې يو افغان کتونکی وټاکه او د ديوان بيگي دفتر يې يوه افغان ته وسپارلو چې هغه «د خپل صلاحيت نه په داسې عدالت او نرمۍ سره کار واخېست چې د پارس ټولو خلکو د هغه ستاينه کوله» ۲۰۴ خو افغان افسرانو او سرتېرو زياتې پيسې په لاس راوړې.

پارسيانو په ۱۷۲۳ د جنوري په اتمه په قزوین کې د شپې له خوا په افغان پوځي

ټولکي چې يو ځای او بل ځای تیت او پرک وو برید وکړ او ۴۰۰۰ افغان سرتیري يې ووژل. د دې پېښې له کبله په اصفهان کې غچ اخیستنه پیل شوه او «ټول هغه کسان چې وسله يې اخیستلی شوه ووژل شول او اشرافیان او نجیبیان د شتمنی نه بې برخې شول.» ۲۰۵ لیرې شوی پاچا بندي او زیات شمېر شهزاده گان ووژل شول. برسېره پر دې شاه محمود د پارس د ملت او بیلو بیلو قومونو په منځ کې شپږ ټولنیزې درجې جوړې کړې چې وروستی درجه د پارس خلکو او اول ځای افغانانو ته ورکړ.

د درکه زین خلک په اردو کې ونیول شول. دوه ځله د کندهار نه مرسته ورورسېده او د ۱۳۲۵ کال تر جنوري پورې د ه د خپلو تکړه جنرالانو امان الله او نصرالله په مرسته شیراز، گل پایکان، کاشان او نور ځایونه د ځان تابع کړل. یوازې په یزد کې د ستونزو سره مخامخ شو.

د یزد د پېښې نه وروسته شاه محمود سمدلاسه په ریاضت پیل وکړ. د دود په ډول ده شاید ۴۰ ورځې ځله بندي (ریاضت) کړې وي. په هغه وخت کې هغه یوازې د لمر لوېدو یاني ماښام وچه ډوډی د اوبو سره خواړه. له دې ښکاري چې په ځله (ریاضت) کې ده روژه نیوله. په زیات گومان سره د شاه محمود د ځله بندي نه د هسک څښتن نه د هغې وینو تویولو له کبله بخښنه غوښتل وي چې د ده په امر سره تویې شوې وي.

شاه محمود د ځله بندي وروسته په دوست او دښمن شکمن شو. داسې فکر يې کاوه چې هر څوک د ده دښمن دی. داسې مرحله راورسېده چې په خپل ځان يې خوله لکوله.

د ۱۷۲۵ کال د اپرېل د میاشتې په ۲۶مه نېټه افغان مشران سره جرگه شول او اشرف هوتک د شاه محمود د تره زوی يې د پاچا په توگه وټاکه.

په دې توگه زلي مشر د یو باکفایته جنرال په توگه د گلناباد د تاریخي جگړې په پایله کې اصفهان ونيو او د پارسیانو نه يې د پښتنو په وړاندې د ظلمونو غچ واخېست. خو د سیاسي مشر په توگه د دې هېواد د ادارې په سمبالولو کې پاتې راغی. د دې دورې څېړونکي نږدې ټول یوه خوله دي چې ځینې پېښې د دې سبب شوې چې د ده دماغي توازن د منځه ولاړ شي او په پایله کې ووژل شو. خو ماته دا فکر هم پیدا شو چې د دې پېښو د منفي اغېز تر څنګ شاید د داسې زهرو په ذریعه دی مسموم شوی وي چې سوکه سوکه اغېز شیندي. دا گومان ما ته له دې نه پیدا شو چې یو د ده او د ده د صدر اعظم امان الله مېرمنې سره خویندې او د شاه حسېن صفوي لونه وې او د دوی تر منځ د نفاق تخم هم د دغو خونديو د فعالیت محصول دی او دغې موضوع ته اعظم سیستانی د کروئسکي د

ليکني په حواله داسې اشاره کوي. امان الله د شاه محمود هوتک نه د خفه کېدو نه وروسته په ظاهر کې «د خپلو قواوو سره د اصفهان نه د کندهار په نيت ووتو. امان الله هم د سلطان حسين د يوې لور سره واده کړی و او له دې اړخه هم د شاه محمود د ډېرو نږدې کسانو نه شمېرل کېده. کروښکي د امان الله دا کام د شاهزديکي، د امان الله د مېرمنې د لمسون پر بنسټ بولي چې د خپل مېړه او شاه محمود تر منځ د مخالفت نه خبره وه.» ۲۰۶ برسېره پردې دا چې ده به کله خپل خان ته خوله اچوله دا هم شايد د زهرو اغېز وي. دا چې پارسيانو د دې توان درلود چې ميروېس خان په خپل کور کې د خپل ورور په ذريعه په زهرو د منځه يوسي نو په اصفهان کې به دا کار دومره گران نه و چې د شاه حسين لونه يې د پلار غچ وانه خلی. په هر صورت شاه محمود د اشرف له خوا ووژل شو او د ده د مړينې وروسته د ميروېس وراره او د عبدالعزیز زوی اشرف د شاه محمود په ځای په اصفهان کې پاچا شو.

د شاه اشرف هوتک واکمني

د معصوم هوتک په وينا شاه اشرف د عبدالعزیز زوی چې د يوې خوا د محمود نه د خپل پلار د وژلو له امله مایېجن و او د بلې خوا د خپل پلار د ملي ضد دريځ پلوي نه و څه خوابدی و. له دې امله د هوتکو مشران د اشرف په کور کې سره راټول شول چې د شاهي کورنۍ خپل منځي خوابدي ليرې کړي. دواړو خواو جرگې ته واک ورکړ چې دا ستونزه د پښتني دود سره سم هواره کړي. جرگې د دوی تر منځ زړه بدگي پای ته ورساوه او اشرف يې د پوځ د يوې برخې قوماندان وټاکه. اشرف چې د يوې خوا زړه ور قوماندان و او د بلې خوا د خپل تره ميروېس بابا پوهه، څيرکي او دپلوماسي هم په کې راټوله شوې وه، د کورنيو تړبوري او ان د پښتنو د قبيلوي تفکر نه يې د فکر کچه ډېره لوړه وه. ده د شاه محمود سره يو ځای د اصفهان په نيولو کې تورې ووهلې.

شاه اشرف د شاه محمود د وژلو وروسته د ۱۷۲۷ کال د اپرېل د مياشتې په ۲۶ نېټه د شپږويشتو کالو په منگ د اصفهان پر تخت کېښناست. شاه اشرف تر پاچا کېدو وروسته ډېر زيار وکښ چې د شاه محمود د وروستيو وختو د کړو وړو نه خورېدلي خلک دلاسا او پخلا کړي او په دې برخه کې پوره بريالی شو. شاه اشرف په خانگړې توگه د ليرې شوي پاچا د زړه ښه کولو هڅه وکړه. په همېغه وخت کې د هغه د يوې لور سره واده وکړ، د بند نه يې ايله کړ، د مانۍ د چارو ناظر يې وټاکه او د قم په مذهبي ښار کې د دوديزو مراسمو سره سم د ټولو صفوي شاه زويانو د ښخولو امر يې وکړ چې د شاه محمود په

امر وژل شوي وو. همدارنگه پاچا اشرف د تذکرة الملوک په نامه د کتاب د ليکلو امر وکړ چې نن ورځ د پارس په اړه يوه مهمه سرچينه ده.

پاچا اشرف په دغه وخت کې اړ شو چې د بهرنيو سترو خطرونو سره مقابله وکړي. روسي او عثماني ترکيې د شاه محمود د پاچايي پر مهال په ۱۷۲۴ کال کې يو د بل سره تړون کړی و چې د هغه له مخې روسي د کسپين د سمندرګي ټولې لوبديځې سيمې ونيولي او ترکيې ګرجستان، ارمنستان او د ازربايجان يوه برخه ونيوله. احمد پاشا د بغداد عثماني والي ان د همدان هغه ځايونه هم ونيول چې د اصفهان نه يې يوازې درې ورځې واټن درلود. پاچا اشرف په دغه پېچلې وضع کې مهمو ډپلوماتيکو او پوځي فعاليتونو لاس پورې کړ. د ۱۷۲۵ کال په پای کې پاچا اشرف يو پلاوی د عبدالعزيز په مشرۍ قسطنطنيه ته ولېږه چې د خان سره يې د ترکيې مشرانو ته د افغان شاهنشاه اشرف ليکونه وړل. دغه پلاوی ناکام بېرته راستون شو.

احمد پاشا د يوه لوی پوځ سره چې شمېر يې له اویا نه تر اتيا زره رسېده بيا همدان ته نږدې سيمې ونيولې. افغان شاهنشاه اشرف د ۱۷۲۶ کال په نومبر کې د ۳۲۰۰۰ لښکر سره چې د افغانانو، پارسيانو او درګه زينيانو نه جوړ و د عثماني پوځ په وړاندې ځای ونيو. پاچا اشرف د ميانچي (د افغان عالمانو مشر) په مشوره د عالمانو يو پلاوی د احمد پاشا کمپ ته واستوه. دغه پلاوي په خپلو ويناوو سره عثماني سرتيري دومره د اغېز لاندې راوستل چې احمد پاشا «د خيانت کومان وکړ» ۲۰۷ کله چې افغان پلاوی رخصت شو د کوردانو پوځي ټولګي او نورو عثماني لښکر پرېښود او د افغانانو سره يو ځای شول. احمد پاشا د دې وېرې له مخې چې مبادا په عثماني لښکر کې د افغانانو په پلوي احساسات خپاره نه شي د سملاسي مقابلي غوښتونکی شو او بريد يې پيل کړ. خو کله چې د احمد پاشا مخکنی پوځي ټولګی چې شمېر يې شپږ زره تنه وو د افغانانو له خوا د منځه ولاړ ډېر خفه شو. وروسته د هغه لوی بريد له هرې خوا د افغانانو له لوري په شا وتمبول شو او دولس زره مړي او زيات شيان ورنه پاتې شول. خو پاچا اشرف ښه پوهېده چې په پارس کې د خپل دريځ د پياوړي کولو دپاره د ترکيې ښه نيت ته اړتيا لري نو يې نه غوښتل چې احمد پاشا تر دې ډېر سپک شي. که څه هم احمد پاشا د تېښتې په حال کې و چې پاچا اشرف د سولې پيغام ورولېږه او په هغه کې يې د بنديانو د تبادلې وړانديز وکړ او دا يې هم ورته وليکل چې «څنگه چې ما قانوني واکمن په توګه خپله خاوره ونيوه له دې کبله مناسبه نه ګڼم چې د يوه لار وھونکي په توګه عمل وکړم او د خپلو وروڼو مالونه خپل کړم» ۲۰۸

ترکانو د ځينو ستونزو له امله او په ځانگړې توگه د روسانو سره لاس او گړېوان وو، اړ شول چې د پاچا اشرف سره سوله وکړي. په پايله کې په ۱۷۲۷ کال په همدان کې د دواړو لورو ترمنځ د سولې تړون لاسليک شو. د دغه تړون له مخې ترکانو شاه اشرف هوتک د پارس قانوني پاچا په توگه وپېژندلو او شاه اشرف په پارس کې د ترکانو سولې په رسميت وپېژندلې او عثماني سلطان يې د خليفه واقعي ځای ناستی او د مسلمانو د مشر په توگه ومانه.

کله چې پاچا اشرف د ترکانو د دوستۍ او ښه نيت څخه ډاډه شو د روسانو د يرغل په وړاندې افغان نوميالی جنرال سيدال خان ناصر ولېږه. افغان پوځ د خپل پياوړي قوماندان سيدال خان ناصر په مشرۍ د درېنډ په سيمه کې د تماجان په چاپېر کې روسي لښکر ته ماته ورکړه. په دغه جگړه کې د روسانو د پوځ قوماندان جنرال ارلوف و. جنرال ارلوف د خپلې ماتې وروسته د فرانسې په منځگړيتوب سولې ته راضي شو. دې سولې دغه تړون د درشت په ښار کې لاسليک شو.

دلته لازمه گڼم چې د شاه اشرف د پخې ډپلوماسۍ د روښانولو له پاره د روسيې د حکومت او د پښتون شاه اشرف د نماينده گانو تر منځ د سولې تړون چې د گيلان د رشت په ښار کې د ۱۷۲۸ کال د فبروري د مياشتې په ديارلسمه نېټه لاسليک شو د سريزې او متن لنډيز چې د لينينگراد د ارشيف د روسي متن نه محمد ولي ځلې تېهه کړی دی لوستونکو ته وړاندې کړم.

«د لوی او بڅبونکي خدای په نامه دا لاندې موافقتنامه اعلانېږي:-»

د اعليحضرت دوهم پېتر چې د ټولې روسيې امپراتور او د خزر د سمندر په غاړه ايالاتو مالک دی له خپل مقابل لوري اعليحضرت شاه اشرف چې د ايران [پارس] پاچا او د ډېرو مخکو خاوند دی د سولې دا تړون کېږي. څنگه چې مور گاونډيان يو او غواړو چې د نظامي شخړو د حل دپاره د وسلې پر ځای له خبرو څخه کار واخلو. د خبرو د اعليحضرت دوهم پېتر د ټولې روسيې له خوا علي جناب ستر جنرال واسيلي ليوچوف د سنت الکزاندر د نښان درلودونکی او د خزر سمندر ساحلي ولاياتو لکه گيلان، مازندران او استر اباد د ټولو روسي قواوو قوماندان او د اعليحضرت شاه اشرف د ايران [پارس] ستر پاچا او د ډېرو مخکو خاوند له خوا د افغاني اردو ستر سپاسالار او ډېر محترم سيدال خان بيگلر بيگي او ډېر درانه عالی جنابان مستوفي عالی خاصه ميرزا محمد، اسمعيل عمر سلطان او حاجي محمد ابراهيم وټاکل سول، چې د دې سترو دولتو او د هغو د اتباعو له خوا يې په اتفاق سره سوله د دواړه خواوو تر منځ گټوره بللې ده او دايعي او حقيقي يووالی لازم

بولي، د دوستی دايهي تړون يې منلی دی.

۱- ټولې هغه مخکې او ښارونه له ټولو متعلقاتو سره يې چې په ايران [پارس] کې له طرفينو سره ضميمه دي، هغه ځايونه چې پخوا يې سرحد ټاکل شوی، څه هغه ځايونه چې اوس يې سرحد ټاکل شوی، د دريمې مادې سره سم تر ابده پورې له طرفينو سره تړلي دي.

۲- اعليحضرت د ټولې روسيې امپراتور د خپل دولت له خوا اراده کړې ده چې د استر اباد، کيلان او مازندران ولايتونه چې ساحلي ولايتونه دي، د هغې زړې دوستی له کبله چې امپراتور يې له ايران [پارس] سره لري، ايران [پارس] ته ورپرېږدي په دې شرط چې دا ولايات به په هېڅ ډول بل دولت ته نه پرېښودل کېږي او که له دې شرط سره يې اعتنايي وشوه نو ياد شوي ولايتونه به سره له ټولو متعلقاتو يې د دوهم ځل له پاره روسيه تصرف کوي او تر ابده پورې به د روسيې نه بېلېدونکې برخې وگرځي او دا تړون به لغوه بلل کېږي.

۳- د دواړو خواو سرحدونه به په دې ډول وي (چې په تفصيل ذکر سوي او مور ځيني تېرېږو).

۴- له معمول سره سم سفيران او مختار وزيران او هغه کسان چې د طرفينو له خوا لېږل کېږي تر هغه څه د مخه به نظامي قوماندانانو ته خبر ورکول کېږي چې له معمولو تشریفاتو سره د دوی درناوی او ساتنه وکړي او د ورسپارل سوو وظيفو تر پايه به يې حفاظت کوي.

۵- په هغو دوستانه ليکونو کې چې طرفين معظمين يې يو بل ته لېږي دغه موجود القاب او عناوين معتبر دي، که دا مالکين او معظمين له دواړو خواوو څخه په خپلو القابو کې د څه زياتوالي اراده وکړي، بايد باوري اساس ولري هېڅ يو اړخ حق نه لري، هغه مخکې چې وېش يې سوی دی په خپلو القابو کې راوړي او يا نوې سکته ووي.

۶- هغه دعوي او شخړې چې د سرحدي علاقه او د سرحدي اوسېدونکو تر منځ پېښېږي بايد سرحدي قوماندانان يې په ښه توګه حل او فصل کړي، څو زموږ سوی اتحاد له هر ډول اختلافونو څخه خوندي پاتې سي، په دې کار کې طرفين بشپړ واک لري.

۷- که د طرفينو له سيمو څخه څوک له يوې خوا څخه بلې ته وروتنې- تنښدلی سړی بايد له خپلې دارايي سره بېرته خپلې خواته وسپارل سي، هېڅ خوا حق نه لري چې تنښدلي خلک تر خپلې حمايي لاندې ونيسي.

۸- د دواړو خواوو د سوداګرو د ګټې په غرض هر ډول مالونه په ازاده توګه يو د بل

علاقو ته په وچه او څه په سمندر وړ لارو راوړل کيږي او له پخواني معمول سره سم به محصول ځيني اخبستل کيږي د دواړو هېوادونو اتباع حق لري يو د بل په وطن کې د خپلو مالونو د خوندي کولو له پاره کاروان سرايونه جوړ کړي، يو د بل په ملک کې چې وغواړي ازاد سفر وکړي او هم يو د بل له ملکه په ازاده توگه دريم هېواد ته مالونه تېر کړي، او هم يو د بل رعایا، يو د بل په ملک کې استوگنه غوره کړي.

۹- که چيرې د طرفينو په هېواد کې د يو بل سوداگر مړ سي، مال او دارايي يې پاته سي بايد مال او دارايي يې خوندي وساتل سي، تر څو چې قانوني وارث يې يا دربار ورمعرفي کړي يا يو د بل مملکت قانوني سند ورکړي، بيا يې قانوني وارث ته يې زياته وسپاري.

۱۰- دا غوره تړون چې خدای تعالیٰ په هغه خوښ دی او ښه اتحاد يې راوستی دی، د دې دپاره چې تر اېده خوندي پاته سي، د دواړو خواوو په مېړونو ښکل [ی] کړای سي او دوې نسخې به په يوه ډول کښلې کيږي، د دې ټاکلو واکمنو استاخو له خوا چې بشپړ اختيارات لري مېر او لاسليک تصديق کيږي او يو بل ته سپارل کيږي.

کيلان- درشت ښار ۱۷۲۸ فبروري ۱۳ «۲۰۹»

په دې توگه شاه اشرف وکولی شول چې د خپل جنکي مهارت او پخې ډپلوماسۍ له مخې د پارس د خاورې د ساتنې په منظور روسيه او ترکيه دواړه په خپل ځای کښېښوي.

د مخه مو يادونه وکړه چې پاچا اشرف داسې مهال واک ته ورسېد چې پارس د روسانو او ترکانو د سيخ يرغل سره مخامخ و. همدارنگه نوموړی د پارس د کورنيو مخالفينو لکه شاه زوی ميرزا طهماسب او نادر افشار سره مخامخ و. برسېره پر دې د شاه محمود وژل په کندهار کې د شاه حسين هوتک له خوا د عبدالعزیز د غچ اخبستلو په بڼه وکښل شو او د کندهاره هم ورسره مرسته نه کېده.

شاه اشرف د واکمن کېدو په لومړی وخت کې هڅه وکړه چې ميرزا طهماسب ونيسي خو په دې کار کې بريالی نه شو. ميرزا طهماسب د يو لړ شمېر کسانو سره د مازنداران غرو ته وتښتېد.

په خراسان کې له هغه وخته چې اصفهان د افغانانو لاس ته ورغی ځايي مشران د واک د اخبستلو له پاره هڅې کولې. ابداليان په هرات کې پورته شوي وو، ملک محمود سيستاني مشهد نيولی و. فتح علي خان قاجار په استرآباد کې فعاليت کولو او ازبکو زيات وخت په خراسان بريدونه کول. په دغې کېدو کې د لاروهونکو ډلې يو او بل ځای فعالې وې. د دغو ډلو په منځ کې نادرقلي افشار هم شامل و چې تر يوه وخته د خراسان د والي سره د ازبکانو په شړلو کې ملگری شوی و. خو د ۱۷۲۲ کال راهيسې په خپله د يوې بيبي

ډلې خاوند و او د هرات د ابداليانو سره يې د مقابلې له امله يې نوم گټلی و. نادر قلي تر هغه وخته پورې چې شاه زوی طهماسب مازنداران ته پناه ورې وه ډېر ځواک پيدا کړی و خو هغه تر اوسه يو ياغي و. خو پرعکس شاه زوی طهماسب چې د پارس د تخت قانوني وارث و واقعي ځواک نه درلود. نادر قلي په دې هيله چې شايد د تاج د قانوني وارث د سيوري لاندې به يوه ورځ قدرت ته ورسي د فتح علي خان په سپارښتنه د شاه زوی طهماسب په خدمت کې د يوه جنرال په حيث شامل شو او شاه زوی د ده گناهونه وبخښل. نادر قلي ډېر ژر د شاه زوی طهماسب په اجازه فتح علي خان چې خپل سيال يې گڼلو په دې پلمه وواژه چې د شاه زوی په وړاندې يې د خيانت خيال درلود. په دې توگه شاه زوی يوازې په نادر قلي ډډه ولکوله او په دې فکر و چې څنگه د دوی کورنۍ په اول کې د افشار ترکمنو په مرسته واک ته رسېدلې وه اوس به د زړه له کومې د ده سره مرسته وکړي. په هر صورت په جگړو کې په بري پسې بری د نادر قلي په برخه شو او تردې چې د ۱۷۲۸ کال په پای کې د اتلس زره پوځ په مرسته مشهد ونيو. د مشهد نيول د صفويانو د واکمنۍ په ژوندي کولو کې لومړی کام شمېرل کېدو. شاه زوی طهماسب د دغه خدمت په وړاندې طهماسب قلي خان ونوماوه. له دې وروسته طهماسب قلي ټول خراسان ونيو.

شاه اشرف د سولې د تړونونو د کړلو وروسته د خپل حکومت ټينگوالي ته پام واراوه او په همدې وخت کې يې يزد، کرمان او نور ځايونه د ځان تابع کړل.

شاه اشرف د ۱۷۲۹ کال د سپتمبر په لومړيو کې دېرش زره پوځ چې د غلځيو، هزاره کانو او درگه زينيانو نه جوړ و د خراسان په لوري روان شو. خو د اشرف پوځ په واقعيت کې قوي نه و. په دې چې دی د پارس د خلکو په وړاندې خارجي بلل کېده او په کندهار کې د ده د تره زوی دی خپل دښمن گانه. شاه اشرف د خپلو جنرالانو په ټينگار د ۱۷۲۹ کال د اکتوبر په ۲مه نېټه د طهماسب قلي خان په لښکر بريد وکړ خو په هغه يې اغېز ونه کړ. بيا شاه اشرف خپل لښکر په څلورو برخو ووېشه او له څلورو خوا يې سخت بريد پرې وکړ خو د قلي خان لښکر په پرله پسې ډول په بشپړ نظم سره دفع کړ بيا يې په خپله متقابل بريد وکړ او بريالی شو او افغانانو د اصفهان په لورې شاته شول. د ۱۷۳۰ کال تر لومړيو د افغانانو پوځ تجزيه شو.

شاه اشرف د روسيې او ترکيې سره په جگړو کې زيات افغانان د لاسه ورکړل او په پوځ کې پردې خلک زيات وو نو په پای کې يې ماتې وخوړه او د بلوچستان په لور روان شو او هلته دابراهيم بلوچ له خوا د دېرشو کالو په منک ووژل شو او په پارس کې د پښتنو واک پای ته ورسېد.

په کندهار کې د شاه حسين هوتک واکمني

شاه محمود هوتک کله چې په ۱۱۳۸ کې د پارس د نيولو په موخه د کندهار نه روان شو نو د کندهار تخت يې خپل کشر ورور شاه حسين هوتک ته وسپاره. دغه مېړني، پوهنپال او ادبپال پاچا له غزني نه تر سيستان او هراته د ژوب، کومل او دېره جاتو پورې په عدل او انصاف او پوهنپالنې او ادبپالنې واک وچلوه. نادر افشار د تاج په سرکولو نه څو مياشتې وروسته جدي تياري ونيو چې په افغانستان يرغل وکړي او کندهار ونيسي چې د هغه ځای نه شپاړس کاله د مخه د پارس د نيولو له پاره افغان پوځ خوځېدلی و. نادر د ۱۷۳۶ کال په نومبر کې د اصفهان نه د ۸۰۰۰۰ او ۱۰۰۰۰۰ تر منځ پوځ سره په افغانستان باندې د يرغل په نيت روان شو. دغه وخت لکه چې د مخه مو يادونه وکړه د اصفهان د سويمن شاه محمود هوتک کشر ورور شاه حسين تر ادارې لاندې و. شاه حسين هوتک د ۱۷۲۵ کال راهيسې چې مشر ورور يې په اصفهان کې ووژل شو د کندهار خپلواک واکمن و. شاه حسين د کندهار نه د ساتنې په موخه تر ۳۰۰۰۰ زيات پوځ تنظيم کړ او په کندهار کې يې د اړينو توکو لويه زېرمه جوړه کړه چې د ښار د اوږدې کلابندۍ اړتياوې پوره کړي. د کندهار په لوېديځ کې د لومړۍ جکړې وروسته د پارس زيات شمېر پوځ د افغان پلازمينه کلابنده کړه چې تر يوه کال زياته اوږده شوه. په دغه موده کې د پارس پوځ د باندې او د ننه نه د افغان پوځ د بريدونو لاندې و او نادر يې اړ کړو چې د خپل کمپ په چاپېر دېوالونه او دفاعي برجونه جوړ کړي.

په پای کې د ۱۷۳۸ کال د مارچ په ۲۴ مه نېټه د جمعي په ورځ د پارس پوځ د ښار ساتونکي حيران کړل چې په يوه برج وروختل او ښار ته ورتوی شول. کله چې په دېوال بريالي شول نادر د خپل پوځ زيات سرتيري ښار ته ورننه ايستل. شاه حسين اړ شو چې بالاحصار ته حرکت وکړي چې د توپو د درنو کوزارونو لاندې نيول شوی و. بله ورځ افغان مشر نادر ته د تسليمېدو شرايط وړاندې کړل: «هغه به ښار تسليم کړي او د هغه پوځ به د هغو سرتېرو سره جليپري چې د مانی په ساتلو کې يې زوروتوب ښودلی دی» ۲۰۹ الف او تسليم شو. نادر چې د افغانستان جنکياليو زوروتيا او متانت اغېزمن کړی و هغه ۱۶۰۰۰ افغان سوارو قوه جوړه کړه چې په هغې کې ۱۲۰۰۰ ابداليان او ۴۰۰۰ غلزيان شامل وو. دا قوه لسو قوماندانانو قومانده کوله چې د هغو نه اته تنه ابدالي او دوه تنه غلزي افسران وو. دغه قوه د نادر د پوځ تر ټولو باوري قطعه وه چې د هغه په ټولو پوځي برياوو کې د هغه سره خدمت کړی دی.

د کندهار کمپاين د نادر له پاره د ډېرو زياتو سرچينو، وخت او کوشنبنو په بيه تمام شو او د هغه پوځي شهرت يې ډېر زيانمن کړ. نادر د يوه پوځي په توگه په دې کې پاتې راغی چې د يوه ښار دفاع چې درې ځلې د ده د قواوو نه لږ ځواک کوله په لږ وخت کې ماته کړي. د ښار کلاندي چې د يوه کال نه زياته شوه، دی يې په دې کې ناکامه کړو چې د کلانديو خلکو روحيه ماته کړي او هغه اړ شو چې په برج د ختو عمليات په کار يوسي. د کندهار نيولو پارسيانو ته يو روحي پيغام ولېږه چې په پای کې د افغانانو نه د اصفهان د تباهی چې ۱۶ کاله د مخه پېښه شوې وه، غچ واخېستلو.

د شاه حسين مېړنتوب د نادر د نيواک گرو پوځونو سره د کندهار په ساتنه کې چې د يوه کال نه يې زيات وخت ونيو په ډاگه شو او تلپاتې نوم يې وکاته. دی چې د ملا يارمحمد نه زده کړې کړې وې د پوهني، شعر او ادب سره يې ډېره مينه درلوده. ده د خپلې پاچاهۍ په دوران کې د نارنج په ماني کې د پوهانو، شاعرانو او اديبانو غونډې رابللې او يو کتابتون يې جوړ کړی و. د ده په لارښونه د پټې خزاني ارزښتناک کتاب او نور اثار وليکل شول. د ده په امر پېښور ته کاتبان ولېږل شول چې د رحمان بابا له دېوان نه څو نسخې تيارې او کندهار ته يې راوړي. دی په خپله شاعر و او يو مرتب او بشپړ دېوان يې درلود. د کندهار د نسکورېدو سره شاه حسين هوتک چې د يوه کال مقاومت نه وروسته نادر افشار ته تسليم شو، د نادر افشار له خوا دی او د هوتکيانو نور نامتو کسان پارس ته ولېږل شول او هلته د نادر افشار په امر په زهرو ووژل شو. روح د ښاد وي. په دې توگه د هوتکيانو دېرش کلنه وکمني پای ته ورسېده. د شاه حسين هوتک د شعر نمونه:

بېلتانه دې د غمو په چپاو چور کړم
په تيارو کې د هجران يې له تادور کړم

بېلتانه دې هسې اوښکې راخپړې کړې
ستا د فکر په گرداب کې تل عبور کړم
د فراق پری مې کېښوت و مری ته
په جهان کې يې رسوا لکه منصور کړم

په وصال دې هم نابشاد يمه دلبرې!
د بېلتون فکر په زړه کې ناصبور کړم

د بانو غښی مې وخور په خگر کې
غمازانو په غمزو غمزو مهجور کړم

خلق یاد زما، د عشق په لېونو کې
زه «حسین» محبت هسې مشهور کړم. ۲۱۰

هوتکیان او پښتو ژبه

میر وېس نیکه، شاه محمود هوتک، شاه حسین هوتک او شاه اشرف هوتک د پښتو ژبې او پښتو ادب ودې ته پام اړولی وو. د دې دورې لوړو شخصیتونو لکه لوی جنرال سیدال ناصر، بابو جان بابي، ملا زعفران، بهادر خان، ملا پیرمحمد میاجي، داودخان هوتک، مېرمن زبیه او نورو په پښتو ژبه لیکني او شاعري کوله. هوتکیانو د خپلې دېرش کلنې واکمنۍ پر مهال پښتو ژبې ته ډېر څه کړي دي.

هوتک بابا او د هغه زوی ملکيار شاعران وو. د هوتکو په تېر کې د پښتو ژبې نامتو شاعره او پوهه ښځه د میر وېس خان مور د سلطان ملخي توخي لور نازو انا وه. نازو انا یو د شعر دېوان درلود چې دوه زره بیتونه لري او لاندې رباعي یې په پته خزانه کې خوندي ده:

سحرکه وه، د نرگس لیمه لاندې
څاڅکي څاڅکي یې له سترگو څڅېده

ما ویل څه دي، کنډلی گلې ولې ژاړې
ده ویل ژوند مې دئ یوه خوله خندېده ۲۱۱

محمد هوتک د شاه حسین د دربار ادبي لیکوال و چې د شاه حسین په امر او لارښوونه یې د پټې خزانې نامتو کتاب ولیکه. نوموړي د پټې خزانې برسېره درې کتابونه (خلاصه فصاحت)، (خلاصه الطب) او د شعر دیوان لیکلي دي. د ده د شعر بېلگه دا

ده:

ساقی پاڅه د سرو ملو ډک یو جام را
ستا له غمه نارام یم آرام را
بېله میو د بهار نندارې څه کړم؟

پسرلی سو د خوبنی بڼه پیغام را

نه نشاط سته، نه مستي سته، نه رندي سته

«محمد» ته د اور ډک یو هسي جام را ۲۱۲

ريدي خان مومند د هوتکي دورې له لويو ادیبانو او پوهانو نه و. دی د ميروېس خان نردي ملگری و. ده په پښتو ژبه کې لومړی شاهنامه (محمودنامه) وليکله چې څلور زره بيتونه يې درلودل چې شاه حسين يو زر طلاوې د انعام په توګه ورکړې او بيا ورکه شوه. خو د هغې ځينې برخې په پټه خزانه کې خوندي دي. ريدي خان مومند د محمودنامې برسېره د غزلو، مثنوي او رباعياتو يو بشپړ ديوان هم درلود. د شعر بېلګه يې دا ده:

چې ميرخان تلل اصفهان ته و نه

مخ يې مکې د پاک سبجان ته و نه

پاچا تې عرض کړ ټول احوال د پښتون

د ګرګين ظلم بد احوال د پښتون ۲۱۳

با بو جان بابي نه يوازې د تورې سرې و بلکې د پښتو ژبې شاعر هم و. ده په ۱۱۲۹ کال کې د (شېا او کلان) نامتو کيسه د «قصص العاشقين» په نامه په پښتو نظم کړه د ده د شعر بېلګه:

عشق يو هسي تور يالی دی

چې پر هر ځای يې بری دی

د عشق اور هسي سوزان دی

چې سوځلی يې جهان دی

زړه بې عشقه کله زړه دی

چه بې عشقه زړه د مړه دی ۲۱۴

پيرمحمد مياجي د هوتکي دورې نامتو پوه او روحاني شخصيت و او د ميروېس خان له خوا د لومړي جوړې شوې ملي جرګې غړی هم و او د ميروېس خان په ټولو هڅو کې ګډ و. دی په اصفهان کې د شاه محمود هوتک او بيا د شاه اشرف هوتک مرشد او مشاور و. دی شاعر او ليکوال هم و چې د (افضل الطريق) او (الفرايض في رد الروافض) کتابونه په پښتو کې يې بل کتاب يې نظم دی. د شعر بېلګه يې دا ده:

شـيخ مـتي جـي خـليـلي و
دی لـه آره لـوی والـي و ۲۱۵

بي بي زينب د ميرويس خان پوهه او ادبيه لور وه. نوموړې له خپل کورني ښوونکي ملا نورمحمد نه زده کړې وکړې او بيا يې په خپله د کورنۍ د خلکو د ښوونکې دنده په غاړه واخېسته. دې د خپل پلار د مړينې وروسته د هېواد په چارو کې د خپلو وروڼو سره په گډه لويه ونډه واخېسته دې به د خپل پوهې خوښوونکي او ادبپال ورور شاه حسين سره تل د هېواد د ستونزو په هوارولو کې خپل رايه ورکوله. د نادر افشار له خوا د کندهار د محاصرې په مهال د خپل ورور سره اوږه پر اوږه د ښار ساتنه کوله. د کندهار د محاصرې د پای ته رسېدو وروسته مېرمن زينب د يو شمېر مشرانو سره يو ځای د نادرافشار سره د سولې په خبرو اترو کې برخه واخېسته. برسېره پردې د پښتو ژبې شاعره هم وه. د شعر بېلگه يې دا ده:

ږغ سو جـي ورور تـېر لـه دنـيا سـونا
قنـدهار وـاړه پـه ژـا سـونا

زړه مـې پـه وـير کـې مـيتـلا سـونا
جـي شـاه مـحمـود لـه مـا جـلا سـونا
دا روڼ جـهان راتـه تـورتم دى نـا
زړه د بـيلتـون پـه تـيغ کـېرم دى نـا

هو تـک غـمـجن پـه دـېر مـاتم دى نـا
د پاچـاهـى تـاج مـو بـرهم دى نـا

جـي شـاه مـحمـود تـېر لـه دنـيا سـونا
کنـدهار وـاړه پـه ژـاړه سـونا ۲۱۶

ملا زعفران تره کي د هوتکو د دورې يو ستر پوه و چې د شاه حسين د دربار سياسي مشاور او هم د شاه حسين د زوی محمد استاد و. نوموړي په طب او حکمت کې د (کلدسته زعفران) په نوم کتاب ليکلی دی. دی د شاه حسين د سفير په توگه نادرافشار ته د سفير په توگه لېږل شوی و چې د دواړو خواوو بنديان سره تبادله کړي. په دې ترتيب ملا

زعفران يو سياسي شخصيت هم و. دی برسېره پردې د پښتو ژبې شاعر هم و چې بېلگه يې دا ده:

د حسين بادشاه د بخت ننداره گورئ
چې يې فتح په لښکرو ژوب او شال کا
چې دا زيری يې راوړی دی حضور ته
نو زعفران انعام پر سر زعفراني شال کا ۲۱۷

د هوتکي دورې نامتو سياسالار سيدال خان ناصر و چې د هوتکو د دورې د ازادۍ بخوښونکي نهضت د پيل نه د هوتکيانو د شاهنشاهی او واکمنۍ تر نسکورېدو پورې يې د تېري کوونکو سره په زورتيا جگړې کړې دي. ده د کندهار د کلابندی په مهال د شاه حسين د زوی محمد سره يو ځای د کلات د کلا د ساتلو دنده په غاړه درلوده چې په پای کې د نادر افشار له خوا دواړه ونيول شول او سيدال خان ناصر يې د دواړو سترگو د ليدو د خواړو نه بې برخې کړ. په دې ترتيب د سترگو د ړندولو دود د پارس نه مور ته راغی لکه چې د مخه د مغولو نه راغلی و. دی برسېره پردې د پښتو ژبې شاعر هم و. د شعر بېلگه يې دا ده:

يار ماله هسې گران سو
را تېر تر ټول جهان سو
نور نه وي ننم په سترگو
جهان ټول راته جانان سو ۲۱۸

همدارنگه محمد صديق پوپلزی، بهادر خان، داود خان هوتک، الله يار اپريدی، باز توخي، محمد اياز نيازی، نصرالله اندر او نور د هوتکيانو د دورې سياسي شخصيتونه او شاعران وو چې د دوی د شعرونو نمونې په پټه خزانه کې خوندي دي.
د پښتو ژبې دوهمه شاهنامه چې «جگړه د محمود افغان، نيول د اصفهان» په نامه يادېږي محمد امين سرپرېکړي په پښتو نثر ليکلې چې د پېښې بيان په پښتو رغونو او نارو بدرگه کيږي. د ده د کتاب په اړه د ده زوی حافظ نورمحمد ليکلي دي: «ده مبارک چې حال د دې جگړې په خپله ليدلی و، نو وروکې کتاب په ژبه خواره د پښتو کې په حال د دې

جگړې ليکلی و او نوم د دې کتاب (جگړه د محمود افغان، نيول د اصفهان) دی. حق دا دی چې ډېر رښتيني بيان دی او دا کتاب په زينو د پښتنو له جهته د بدلو د قومو قيمتي دی او نر و ښخې او کم او لوی يې خواهشي دي.» ۲۱۹ برسېره پردې محمد حافظ واعظ بارکزی د هوتکي دورې د پوهانو او واعظانو نه و. ده په پښتو ژبه شعر وايه او يو کتاب يې د (تخفه واعظ) په نامه په پښتو ژبه ليکلی دی.

همدارنگه عبداللطيف اخکزی د شاه حسين د مهال وتلی پوه او شاعر و چې د «سوی او اوبښ» کيسه يې په شعر ليکلې او په پټې خزانه کې خوندي ده. نورمحمد توخي د ملا يار محمد خان زوی هم د هوتکي دورې د نامتو پوهانو او ښوونکو نه و. پنځه کاله د هوتکو په شاهي کورنۍ کې خصوصي ښوونکی و. د شاهي کورنۍ ښځو، زامنو او نجونو ته يې سبق وايه. يو کتاب يې د (نافع المسلمین) په نامه ليکلی او د پښتو ژبې شاعر هم و. محمدظاهر جمریانی هم د هوتکو د دورې پښتون شاعر و. همدارنگه محمدعادل بړيخ د هوتکو د دورې د پوهانو نه و چې د (محاسن الصلوات) په نوم يې کتاب ليکلی و. دی برسېره پردې شاعر هم و. بل سړی محمدفاضل بړيخ د هوتکو د دورې له پوهانو څخه و چې د «روضه رباني» په نامه کتاب لري. محمدنور بړيخ هم د هوتکو د دورې له پوهانو څخه و او هوتک وايي چې د پښتو ژبې شاعر هم و. همدارنگه محمدیونس توخي د کندهار د جامع جومات ملا امام او د (جامع الفرائض) په نامه کتاب لري چې په پښتو ژبه يې ليکلی دی. يارمحمد هوتک د هوتکو د دورې له پوهانو او ښوونکو نه و. د شاه حسين هوتک استاد و شاه حسين هوتک به ده ته خپل شعرونه ورکول چې نيمکړتياوې يې په گوته او سې کړي. بل کتاب چې د هوتکو په دوران پورې اړه لري د حافظ نورمحمد عشقي کيسه ده چې (قصه د برېښنا يا خدی) نومېږي، چې د خپل پلار په پله رهي شوی، په ۱۲۰۴ هـ ق کې ليکلې ده چې خطي نسخه يې حبيب الله رفيع سره خوندي ده. په دې توگه د هوتکو واکمنو په پښتو ويناوې او ليکنې کولې او د هوتکو دولت د پښتو ودې او پراختيا ته د قدر وړ چوپړ کړی دی. د هوتکو په دوره کې پښتو د دربار ژبه وه.

لسم څپرکی

د درانيانو په وخت کې افغان امپراتوري

کله چې دا جوته او ښکاره شوه چې د صفويانو حکومت نور د دې وس او توان نه لري چې د ميروېس نه کندهار ونيسي نو درانيانو که څه هم په لومړۍ مرحله کې د صفويانو سره همکاري کړې وه په هرات کې د خپلواکۍ جندا پورته کړه او د صفوي دولت د واک پلي کوونکي يې د ښار نه وشړل. ورپسې په ټول ولايت مسلط شول او په غوريان، بالامرغاب، بادغيس او اوبه کې يې خپل حاکمان وټاکل. دوی هم د غلزيانو غوندې چې په کندهار کې د افغان دولت بنسټ ايښی و په هرات کې خپل دولت جوړ کړو. دغه مهال د درانيانو مشر اسدالله خان سدوزی و. لکه چې د مخه مو يادونه وکړه چې په ۱۷۲۰ کال کې د فراه پر سر د غلزيانو او درانيانو تر منځ په دلارام کې جگړه وشوه او په هغې کې اسدالله سدوزی ووژل شو. درانيانو بيا مشهد ته پام وکړ خو د هغه په نيولو کې بريالي نه شول. په ۱۷۳۰ کال کې نادرشاه افشار پرېکړه وکړه چې درانيان وځپي او د ۱۷۳۱ کال د مارچ په مياشت کې د يو شمېر بريو وروسته د هرات په لوري روان شو. دغه مهال د درانيانو مشر ذوالفقار سدوزی و چې د خپلو سيالانو لکه الله يارخان او نورو پرعکس د نادرقلي سره د هر ډول پخلاينې مخالف و. د ښار فارسي ژبي او غلزيان چې د سيدال خان ناصر په مشرۍ شاه حسين هوتک د درانيانو مرستې ته ورلېږلي وو د ذوالفقار ټينگ ملاتړ وکړ خو د ښار اماميان يا شيعيه گانو او تيمانيانو د نادرقلي په خوا ودرېدل. د دې سره سره نادرقلي ونه کړای شو چې د خپلو کمزورو توپونو چې اغېزمن نه وو د هرات غښتلي او کلک ښار ته ننوزي. هرات يوولس مياشتې کلابند و او د ۱۷۳۲ کال د فبروري په مياشت کې نادرقلي هرات ته ننوت. نادرقلي د درانيانو د کلک مقاومت سره سره د دوی د ټول وژنې نه لاس واخېسته او يوازې يې ځينې مشران بنديان کړل او نور يې د مشهد او سمنان په منځ کې ميشته کړل.

هغه درانيان چې د نادرقلي سره وو د عبدالغني خان الکوزي په مشرۍ د دامغان د پاڅون کوونکو لکزيانو پر ضد او همدارنگه د دجلی د رود په کاوند کې د عثماني اردو په وړاندې د نادر په کټه ښه جنګېدلي وو. نادرقلي د دوی د دغو خدمتونو له امله د دوی

بنديان د بند نه ايله کړل او ژبه يې ورسره وکړه چې د غلزيانو نه د کندهار نيولو وروسته به يې دوی ته وسپاري. کله چې نادرشاه افشار په ۱۷۳۸ کال کې کندهار د درانيو په مرسته ونيو درانيانو ته يې اجازه ورکړه چې کندهار او هرات ته بېرته راوگرځي او هغه مخکې چې يو وخت د دوی ملکيت و بېرته ورکړي. دا مخکې د نادرشاه په امر د عبدالغني خان له خوا د درانيانو په غټو خانکو ووېشلي. ارغنداب الکوزيو، زمينداور عليزو، ارغستان اخکزيو او نورې سيمې بارکزيو او نورو ته ورکړې. د عبدالغني خان الکوزي د مړينې وروسته هم دراني مشرانو د پخوا په شان د نادرشاه افشار تر وژنې پورې د ده په لښکر کشيو کې د نورمحمد خان عليزايي په مشرۍ برخه اخېسته.

د مخه مو يادونه وکړه چې نادر د درانيانو په مرسته د کندهار د نيولو وروسته درانيانو ته اجازه ورکړه چې بېرته هرات او کندهار ته راوگرځي. دوی د نادرشاه د وژنې پورې د مشهد د چاپېر سيمو نه هرات او کندهار ته راکرځېدلي وو. د درانيانو هغه مشران چې د نادر په پوځ کې يې خدمت کاوه د پارس په خېوشان کې د ده د وژنې وروسته کندهار ته راوگرځېدل او د درانيانو نور مشران ورسره يوځای شول. دوی د يوې خوا د پارس د ولکې نه په خپل وطن کې د خپلواک هېواد جوړول او د بلې خوا د غلزيانو د مخالفت له کبله يوه غښتلي حکومت جوړولو ته اړتيا درلوده. د درانيانو هغه مشران چې د نادرشاه په خدمت کې وو د هېواد د ادارې او په ځانگړې توگه په پوځي چارو کې زياته تجربه درلوده. له دې کبله د درانيانو د لويو قبيلو مشران لکه جمال خان بارکزي، نورمحمد خان عليزاي، نصرالله خان نورزاي، مهابت خان پوپلزي، موسی خان اسحقزي، احمدخان سدوزی او نور په ۱۷۴۷ کال کې د شير سرخ په زيارت کې نادر اباد ته نږدې سره جرگه شول او احمد خان سدوزی يې د افغانستان د پاچا په توگه وټاکه.

احمدشاه بابا

د مخه مو يادونه وکړه چې درانيانو هغه مهال، چې په کندهار کې د ميرويس خان هوتک په مشرۍ د لومړي افغان دولت بنسټ کېښودل شو، په هرات کې ابدالي دولت جوړ کړو چې وروسته دواړه دولتونه د نادر افشار له خوا ړنک شول او ټول افغانستان يې تر خپلې واکمنۍ لاندې راوست. خو کله چې نادر افشار د پارس په خېوشان کې ووژل شو

نو احمد خان چې د نادر افشار د کارډ قوماندان و د نادر افشار د کورنۍ عزت يې د پارسيانو د تېري نه وژغوره. د نادر افشار مېرمنې د احمد خان د دې کارنامې د قدردانۍ په خاطر د «کوه نور» په نامه د نړۍ تر ټولو نامتو الماس ده ته ورکړ. محمد اعظم سيستاني د انجنر کهکدای د ليکنې پر بنسټ وايي چې دغه د کوه نور الماس مغولي بابر د ابراهيم لودي د مېرمنې او مور نه په زور اخېستی و. ۲۲۰ او بيا نادر افشار د مغول واکمن محمدشاه گورکاني نه واخېست او لکه چې د مخه مې يادونه وکړه د نادر افشار مېرمنې احمد خان ابدالي ته وبخښه چې وروسته د شاه شجاع نه رنجيت سنگ او د رنجيت سنگ نه انگرېزانو لاسته راوړ چې اوس د انگلستان مالکې تاج پرې ښکلی شوی دی.

د نادرشاه افشار د وژلو وروسته احمد خان او د هغه دراني او غلزي اردو چې د نادر د دربار د باور وړ شپاړس زريزه قطعه وه د پارسيانو د کمپ نه په جگړې سره ووتله او د کندهار په لور روانه شوه. احمد خان بېرته د خپلو ملگرو سره کندهار ته راوگرځېد. دلته پښتنو مشرانو چې د نادر افشار په واکمنۍ کې يې پوره سياسي تجربه تر لاسه کړې وه پرېکړه وکړه چې خپل هېواد خپلواک کړي. دوی په ۱۷۴۷ کال کې د کندهار په شير سرخ کې سره جرگه شول او د هېو ورځو نه وروسته د صابر شا پير په وړانديز احمد خان د افغانستان د پاچا په توگه وټاکل شو. په دې ترتيب د نوي افغانستان بنسټ کېښودل شو. احمدشاه بابا بيگي خان باميزايي په شاه والي خان اشرف الوزراء لقب ونازوه او د صدراعظم په توگه يې وټاکه. همدارنگه سردار جهان خان پوپلزای يې خان خانان ونوموه او د سپاسالار رتبه يې ورکړه او ميرزن يې وټاکه.

د احمدشاه بابا لومړی موخه دا وه چې د امو نه تر اباسينه خپلواک افغانستان جوړ کړي. د دې موخې د لاسته راوړلو له پاره غښتلي پوځ جوړولو ته اړتيا وه چې زيات لگښت پرته يې د جوړېدو شونتيا نه وه. هغه مهال د بې وزلي پښتنو نه دومره پيسې نه وې چې دا د اړتيا وړ ماليه ور څخه راټوله کړي. خو د ښه مرغه هغه خزانه چې د هند نه پارس ته روانه وه احمدشاه بابا خپله کړه او ده ته يې د دې توان ورکړ چې يو غښتلی پوځ تنظيم کړي.

د علي احمد جلالي د څېړنې له مخې د دولت جوړښت چې دراني امپراتورۍ ومانه متضاد و چې بنسټ يې د نامتمرکز قومي او سيمه ييز پوځي، اداري او اقتصادي موسسو په مرکزي کنټرول باندې جوړ و. په تاريخي لحاظ داسې يو سيستم په هېواد کې يوازې د يوه پياوړي او جذاب مشرتابه لاندې کار ورکوي چې ملت د کډې داعي په روحیه لکه د بهرني تيري په وړاندې جگړه يا ايډيالوژيکي جگړه د پرمخ بيولو له پاره چمتو کاوه. احمدشاه دراني وکولی شول چې ټولنيز يووالي چمتو کړي تر څو د امو او اباسين تر منځ د

وطن د خپلواکۍ، د امپراتورۍ د جوړولو چې په دایمي ډول د ۶.۴ میلیونو پښتنو او نورو قومونو چې د امو او اباسین تر منځ سیمې کې اوسېږي، وطن وساتي. برسېره پر دې هغه د افغان مسلمانانو دا اسلامي دنده وگټله چې په هند کې د ستم لاندې مسلمانان وژغوري او هغه د ډیلي تخت باندې د افغانانو د میراثي حق ادعا وکړه. ۲۲۱ د افغانانو واکمن د قومونو یووالی چمتو او وساته او دوی ته یې دا موقع په لاس ورکړه چې خپل هېواد چې لږې سرچینې لري وساتي او بهرني هېوادونه چې بډایې سرچینې لري فتح کړي.

احمد شاه دراني په کندهار کې د چارو د تنظیم نه وروسته غزني ته روان شو او د هغه ځای حاکم ته چې نادر افشار ټاکلی و ماتې ورکړه هلته یې خپل باوري کس وټاکه او کابل ته روان شو. د کابل حاکم ناصرخان په خپل ځان کې د مقابلې توان ونه لید او د پېښور په لوري وتښتېد. احمدشاه بابا د کابل ارگ ته ننوت او په کابل کې د چارو د تنظیمولو وروسته د پېښور په لور وخوځېد چې هلته ناصر خان وټکوي. کله چې د احمدشاه بابا لښکر پېښور ته نږدې شو ناصر خان د هغه ځایه وټښتېد او د اټک له لارې د هزاره چچ سیمې ته یې پناه یووړه. احمدشاه بابا د جکړې پرته پېښور ته ننوت او د پېښور او چاپیر سیمو مشرانو د احمدشاه بابا حضور ته ورغلل او د خپل ژغورونکي د ټینګ ملاتړ ژمنه یې وکړه. احمدشاه بابا په ناصر خان پسې ستر جنرال سردار جهان خان ولږه او په خپله د پېښور چارو په تنظیمولو بوخت شو. سردار جهان خان د هزاره چچ په لور روان او د اټک نه تېر شو او د ناصر خان پټې هلته هم ټینګه نه شوې او لاهور ته وتښتېد. د هغه مال د جهان خان په لاس کې ولوېد او بېرته پېښور ته راستون شو او د شاهي پوځ سره یوځای شو. احمدشاه بابا په دغه برید کې د هغه ولایتو په نیولو باندې بسنه وکړه چې نادرشاه افشار د هند نه بیل کړي وو او د خپل ملک سره یې یوځای کړي وو. ده د دې ټولو ولایتونو چارې تنظیم کړې او هلته یې خپل باوري کسان وټاکل او د اړتیا وړ لښکر یې په کې ځای په ځای کړ او د پاتې پوځ سره بهر ته کندهار ته راستون شو. ۲۲۲

د احمد شاه بابا دوهمه جگړه:

په کندهار کې د چارو د نور تنظیم وروسته احمدشاه بابا د لاهور او هند د نیولو په موخه په ۱۱۶۱ هـ کال کې د دیرش زره پوځ سره د کابل او پېښور له لارې په هغه لوري وخوځېد او هغه مهال چې د اټک او جیلیم له رودونو نه واوښت د لاهور سیمو ته ورسېد. د لاهور حاکم شهنوارخان د احمدشاه بابا د مقابلې توان په ځان کې ونه لید او شاه جهان اباد ته وتښتېد او احمدشاه بابا لاهور ته ننوت او د پنجاب ټول راجه گان د احمدشاه بابا

حضور ته راغلل.

دغه مهال محمدشاه کورگاني د شهنواز خان په غوښتنه يو لوی لښکر د خپل زوی احمدشاه، د خپل وزير الممالک قمرالدين اعتماد الدوله او نواب صفدر جنگ په مشرۍ شاه جهان اباد ته د احمدشاه بابا د پوځ سره د مقابلي په موخه ولېږه. احمدشاه بابا د لودياني له لارې د کورگاني پوځ نه په ځنګ تېر شو او سهرند ته ننوت او ډېرې اولجې يې لاسته راوړې. کورگاني پوځ هم د سهرند په لور د افغان پوځ سره د جگړې په نيت د ستلج د نهر له ځنګ نه تېر شو او دواړه پوځونه د يو او بل په وړاندې مورچلونه ونيول. سره له دې چې قمرالدين وزيرالممالک د جمعې د ورځې د لمانځه په وخت کې د توپ په کولۍ ووژل شو او راجا کسري سنگ د اجمير د نورو راجاکانو سره د دوولس زره پوځ سره خپلو ځايونو ته بېرته ستانه شول د کورگاني شاه زوی ټينګ مقاومت وکړ. د بلې خوا د احمدشاه بابا په لښکر کې يوه پېښه وشوه چې د لاهور نه يې يوڅو بانونه (راکتونه) لاسته راوړي وو، چې له باروتو به ډکېدل او بيا به د دښمن په لوري ويشتل کېدل، د دغه بانونو نه د جگړې په وخت کې د کوم چا د خيانت او ورتيا د نه لرلو له مخې په خپلو پوځيانو دزې وکړې او خپل ملګري يې مړه او ټپيان کړل. که څه هم د افغان پوځ بری څرګند و خو د دې پېښې وروسته احمدشاه بابا پوه شو چې کوم کار يې د لاسه نه کيږي، سوله يې اختيار کړه او د جگړې نه يې لاس واخېست او د سند نهر د دواړو دولتونو تر منځ پوله ومنل شوه او د پېښور او کابل له لارې بېرته کندهار ته راستون شو.

محمدشاه کورگاني ميرمنو معين الملک ته چې په دې جگړه کې زړه ورتيا او متانت نبودلی و لاهور او ملتان صوبه داري وسپارله. محمد شاه کورگاني د دې سولې نه وروسته مړ شو او شاه زوی احمدشاه چې شاه جهان اباد ته د تلو په وخت کې د پلار د مړينې نه خبر شو او په غمجن زړه شاه جهان اباد ته ننوت او د پلار د تعزيت نه وروسته په تخت کېښناست او صفدر جنگ يې د خپل وزير په توګه وټاکه.

د احمدشاه بابا دريمه جگړه

احمدشاه بابا د ۱۱۶۲ هـ کال کې يو ځل بيا د مير منو سره د جگړې په نيت لاهور ته روان شو. د ميرمنو سره د يوې سپکې جگړې نه وروسته سوله وشوه او احمدشاه بابا په هغو مځکو بسنه وکړه چې نادر افشار نيولې وې. د سيالکوټ، گجرات، اورنگ اباد او امرتسر ماليه ميرمنو په غاړه واخېسته او په خپله کندهار ته راستون شو. کندهار ته د رسېدو وروسته يو شمېر امرانو لکه نورمحمد خان عليزای، مير افغان، گدو خان او

محبت خان پوپلزايان او عثمان خان توپچي باشي او نورو د احمدشاه بابا د وژلو نيت وکړ، ونيول او د پيلانو د پښو لاندې وغورځول او ووژل شول او يوازې عثمان خان چې پيل په خپل خرطوم ليرې وغورځاوه او د مرگ نه خلاص شو. دا پتنه په دې ډول پای ته ورسېده.

د احمدشاه بابا څلورمه جگړه:

کله چې نادرشاه افشار ووژل شو د ده لمسی چې د سلطان حسين لور زيرولی و د ځانگړو او عامو خلکو سره د ښه چلند له امله ښه نوم درلود د خلکو له خوا ده ته د سلطنت وړ کس په نظر کتل. خو د سيد محمد په نوم يو سړی، چې پلار يې سيد داود نومېده چې يو پارسا او د سلطان ميرزا د خور مېړه و، د پاچاهي په فکر کې شو. سيد محمد شيعه کان ولسول چې شاهرخ ميرزا سني دی او شيعه کانو شورش پيل کړ او شاهرخ د مخه تر دې چې خپل لښکر راغونډ کړي بندي او سمدلاسه روند او بندي کړل شو او سيد محمد ته د سليمان لقب ورکړل شو او پاچا وبلل شو. خو سيد محمد د مخه تر دې چې په حکومت پيل وکړي يوسف علي خان، چې د شاهرخ ميرزا د پوځ يو باوري سردار و، سيد محمد ته ماتې ورکړه او وپي واژه، شاهرخ ميرزا يې د بند نه ايله او پر تخت کښېناوه او په خپله يې د چارو واکي په لاس کې ونيوې. خو دوو تنو نورو اميرانو لکه د کوردانو مشر جعفر خان او د عربو مشر ميرعالم خان د يوسف خان په وړاندې يو لاس شول او هغه يې وواژه او شاهرخ ميرزا يې بېرته زندان ته واچولو او څو ورځې وروسته دغه دوه تنه سره مخالف شول او د ښار د باندې يو د بل په وړاندې په جگړې لاس پورې کړ او بری د امير علم خان په برخه شو امير عالم خان هرات ته راغی او په حکومت يې پيل وکړ.

احمدشاه بابا د خراسان د اميرانو د جگړو او د شاهرخ ميرزا د بندي کېدو نه خبر شو د خراسان په لور په دې نيت روان شو چې هرات د خپل ملک سره بېرته يوځای کړي او هم د خراسان اميران وگواښي او شاهرخ ميرزا د بند نه ايله او په تخت کښېښوي. احمدشاه بابا هرات څلور مياشتې کلابند کړ. امير علم خان مقاومت وکړ تر څو ووژل شو. هرات د احمدشاه بابا لاسته ورغی احمدشاه بابا هرات درویش علي خان هزاره ته وسپاره او د خپل لښکر سره د مشهد په لور روان شو. مشهد کلابند شو او دا کلابندې څلور مياشتې اوږده شوه او بيا دواړې خواوې سوږې ته راضي شوې. احمدشاه بابا خپله مېرمن او زوی تيمور چې د نادرشاه افشار د وخت نه تر دې دمه په مشهد کې وو د زياتو

پيسو په بدل کې تر لاسه او شاهرخ ميرزا يې د بند نه ايله او د حکومت واکې په لاس کې ونيوې او په خپله نيشاپور ته روان شو. په نيشاپور کې عباس قلي خان بيات چې هلته يې د حکومت په وړاندې پاڅون کړی و د بنار دفاع يې ټينگه او د احمدشاه بابا سره يې د سولې خبرې ته برتري ورکړه. خو هغه يوازې غوښتل چې وخت وکټي تر څو ژمی راشي واوره واوريزي او د پيڅ له کبله د احمدشاه بابا پوځ تباه شي. احمدشاه بابا هم پوه شو او د نيشاپور نه يې خپل پوځ د هرات په لور روان کړو. خو بيا هم د سخت ساربه له امله يې اته زره کسان مړه شول او په ډېرو ستونزو سره هرات ته راستون شو. په هرات کې يې درویش علي خان هزاره د خيانت له امله د دندې گوښه او يو باوري کس يې د هرات د واکمن په توگه وټاکه او کندهار ته راستون شو او د قلي خان ته جزا ورکولو په موخه يې د لښکر په جوړولو پيل وکړ.

د احمدشاه بابا پنځمه جگړه:

احمدشاه بابا دوهم ځل په ۱۱۶۴ هـ کال کې د لښکر د تنظيمولو وروسته د نيشاپور په لور وخوځېد. احمدشاه بابا چې نيشاپور ته ورسېد عباس قلي خان د زاری لار ونيوله او د احمدشاه بابا نه يې بڅښنه وغوښته او اطاعت ته يې غاړه کېښوده. احمدشاه بابا عباس قلي خان وبڅښه او د پخوا په شان د نيشاپور حاکم وټاکه. سردار جهان خان او نصير خان بلوچ يې په علميردان خان زنگويي د ځپلو دپاره چې د طون او طبس حاکم و ولېږل او په خپله مشهد ته لاړ. جهان خان او نصير خان په کاخک او کناباد کې د علميردان سره مخامخ او د يوې سختې جگړې وروسته علميردان ووژل شو. سردار جهان خان او نصير خان هلته د نظم د برابرولو وروسته بېرته د شاهي پوځ سره يوځای شول. احمدشاه بابا مشهد شپږ مياشتې کلابند کړ. په پای کې شاهرخ ميرزا دواړه زامن د سيدانو او عالمانو سره د احمدشاه بابا حضور ته واستول او دواړه خواوې سولې ته راضي شول. د مشهد لوري ومنله چې سکه او خطبه به د اعلحضرت احمدشاه بابا په نوم او مهر، ارقام او حکمونه به د شاهرخ په نوم وي او د شاهرخي ولاياتونو نه جام، خرز، تربت، حيدرپه، خواف او ترشيز چې د مشهد او هرات تر منځ پراته و، په افغانستان پورې وتړل شول. احمدشاه بابا هرات ته راستون شو او وزير شاه ولي خان يې د ترکستان په نيولو وگوماره.

وزير شاه ولي خان د ترکستان د نيولو په موخه د هرات نه روان شو او احمدشاه بابا کندهار ته لاړ. وزير شاه ولي خان د مروې له لارې ترکستان ته ننوت او د جگړې پرته يې

ميمنه، اندخوی، شبرغان، بلخ، باميان، قطعن او بدخشان ونيول او په هر ولايت کې يې حاکمان وټاکل او د کابل له لارې بېرته کندهار ته راستون شو او خرکه شريفه يې هم د خان سره کندهار ته راوړه. احمدشاه بابا د دغې سترې سوېې له امله شاه ولي خان د علی ديوان د وزارت په منصب ونازوه.

د احمدشاه بابا شپږمه جگړه:

احمدشاه بابا ۱۱۶۵ کال د کندهار نه د لاهور په نيت وخوځېد. مير منو معين الملک د لاهور د ساتنې په موخه د افغان پوځ په وړاندې را د مخه شو او دا جگړه څلور مياشتې اوږده شوه. په پای کې د ميرمنو او د هغه د دوو باوري کسانو ادين بېگ او کورامل تر منځ بې اتفاقي د دې لامل شوه چې ميرمنو د احمدشاه بابا نه بڅېښه وغواړي. احمدشاه بابا هغه وبڅېښه او د لاهور د حاکم په توگه يې وټاکه او په خپله د کابل له لارې کندهار ته راستون شو.

د احمدشاه بابا اوومه جگړه:

ميرمنو د ۱۱۶۷ کال پورې په رشتينوالی سره چوپړ کاوه. له دې وروسته دغه نمک حرام احمدشاه گورگاني د خپلې مور سره رانده کړل او په خپله په همدې کال د اس نه ولوېد او مړ شو. د ده له مړينې وروسته احمدشاه بابا د يوه فرمان په ترڅ کې چې د کندهار نه يې لېږلی و، د ده کوچنی زوی مير مومن د لاهور حاکم وټاکه. څنگه چې مير مومن کوچنی و واک يې مور «مغلايي بېگم» په لاس کې واخېست. مغلايي بېگم د لاهور د حکومت چاري د خپل مېړه مير منو د چارو باوري طره باز خان په مرسته ترسره کولې. ټول اميران د مغلايي بېگم د کار د شېبې نه خوښ نه وو او په ځانگړې توگه د خان رستم جنک د سلوک نه چې د ټولو چارو اختيار ورسره و. لږ وخت وروسته د مغلايي بېگم کوچنی زوی مير مومن مړ شو او د ميرمنو زوم خواجه موسای احراري معين الملک د مير مو من په ځای حکومت کاوه. رستم جنک په دې نيت چې د لاهور حکومت په لاس راوړي په طره باز خان يې تور ولگاوه چې ميرمنو يې په زهر وژلی بندې او بيا ووژلو. مغلايي بېگم د رستم د دې کار نه چې خبره شوه هغه يې راوغوښت او خپلو وينځو ته يې امر وکړو چې په لرگيو يې دومره ووهي چې سا يې ووزي. هغه په دې توگه ووژل شو. څه وخت وروسته عبدالله خان مغلايي بېگم بندي کړه او د لاهور د حکومت واک يې د يوه ليک له مخې د احمدشاه بابا نه وغوښت خو احمدشاه بابا د ده د غوښتنې پر خلاف د سردار جهان خان

ورور امان خان لاهور ته واستوه. خواجه عبدالله وتښتېد او د لاهور حکومت د پخوا غونډې د بېکم مغلايي په لاس کې و.

دغه وخت احمدشاه بابا ايشک اقا سي عبدالله خان د کشمير د نيولو له پاره کشمير ته ولېږه او کشمير يې د عالمکبر ثاني له لاسه وايستلو او سيکجون هندو چې په کابل کې اوسېده د کشمير حاکم وټاکه او زين خان مومند د سپرند حاکم وټاکل شو. عبدالله خان بېرته کندهار ته راستون شو.

بيا په لاهور کې مير شهاب الدين عماد الملک مغلايي بېکم له واکه ليرې او ادينه بېک يې د هغې په ځای واکمن کړ او سيکجون هم په کشمير کې سرغړونه وکړه او د افغان پوځ سردار يې ووژه. احمدشاه بابا پرېکړه وکړه چې د لاهور او کشمير د ياغيانو د خپلو په نيت د لاهور او هندوستان په لور روان شو.

احمدشاه بابا په ۱۱۷۰ هـ کال کې بيا له کندهار نه د کابل له لارې د لاهور خوا ته روان شو. د لاهور نه ادينه بېک وتښتېد او احمدشاه بابا لاهور ته ننوت او هلته د نظم د راوستلو وروسته د ډيلي په لور روان شو په لاره کې نواب نجيب الدوله د ده حضور ته ورغی او ډيلي ته ننوت او د ډيلي د پاچا دوهم عالم کير سره يې وکتل. دغه وخت احمدشاه بابا د عزيز الدين د دوهم علم کير د سکه ورور لور تيمور ته په نکاح کړه او ډيلي يې دوهم عالمکير ته پرېښود او نواب نجيب الدوله يې د وزير په توگه وټاکه. احمدشاه بابا د محمدشاه لور ځانته په نکاح کړه او افغانستان ته د راستنېدو په لاره کې سروند ته ننوت او عبدالصمد اشغري محمدزايي يې د هغه ځای حاکم وټاکه او لاهور ته ننوت. هلته يې شاه زوی تيمور د لاهور، ملتان، تنه، کشمير، جمو او د پنجاب د نورو ولايتونو واکمن په توگه وټاکه او سردار جهان خان يې د هغه سپرست وټاکه او په خپله کندهار ته راستون شو.

وروسته له دې چې احمدشاه بابا کندهار ته راستون شو سردار جهان خان په ۱۱۷۱ کال کې ادينه بېک، چې د مخه په يوه ځنکل کې پټ و، په دوايه کې وټاکه. شاه زوی تيمور هغه خپل حضور ته راوغوښت خو هغه رانه غلو او بېرته ځنکل ته وتښتېد. شاه زوی تيمور په دوايه کې مراد خان د حاکم په توگه او بلند خان او سرفراز خان يې د هغه د مرستيالانو په توگه وټاکل. ادينه بېک په غرونو کې سيکان په ځان راغوند او شورش يې پيل کړ. دوی په دوايه بريد وکړ بلند خان ووژل شو او مراد خان او سرفراز خان لاهور ته وتښتېدل. دغه وخت د دکن نه يو لوی پوځ د بالاجي ورونيو په مشرۍ د شمالي هند د نيولو دپاره روان و او د شاه جهان اباد چاپېر ته رارسېدلی و، ماراتان په ډيلي ورتوی شول

او هغه افسران يې وشړل چې احمدشاه بابا ټاکلي وو. ماراتانو ته ادينه بېگ پنجاب ته بلنه ورکړه. دا پوځ چې په ۱۷۵۸ کې پنجاب ته راوړسېد د ادينه بېگ سره يې په لاهور بريد وکړ. سردار جهان خان د قواوو انډول د دښمن په گټه وليده او شو چې د شاه زوی ژوند وژغوري، پېښور ته راغی او بيا کندهار ته راستون شو او د احمدشاه بابا سره يوځای شو. دغه وخت د مرهټيانو د ظلم په وړاندې شجاع الدوله، نجيب الدوله د نورو راجه گانو سره يوځای احمدشاه بابا ته ليکونه ولېږل چې د دوی مرسته وکړي.

د احمدشاه بابا اتمه جگړه يا د پاني پت جگړه:

دا يادونه بايد وکړم چې د احمدشاه بابا جگړې مې د سراج التواريخ له مخې چې فيض محمد کاتب ليکلی دی په لنډ ډول بيان کړې دي. خو د پاني پت جگړه مې د علي احمد جلالي د کتاب له مخې چې «د افغانستان پوځي تاريخ» نومېږي کښلې ده. احمدشاه بابا په ۱۱۷۳ کال کې بيا د هند په لور روان شو. د اټک د نهر سره يوې کوچنې نښتې وروسته د لاهور والي، او د دوايه او سهرند حاکمان د ډيلي په لور وتښتېدل. احمدشاه بابا د لاهور نه د ډيلي په لور وخوځېد. کله چې احمدشاه بابا سهرند ته ورسېد سعدالله خان، نجيب الدوله، احمد خان بنکين، رحمت خان او دوندي خان، چې وطنوال يې وو، د ده حضور ته راغلل او د ده سره يو ځای شول. احمدشاه بابا د پنجاب برسېره د ډيلي په چاپېر کې برياليتوبونه ترلاسه کړل. په پنجاب او د ډيلي په چاپېر کې ماتو مراتيانو او په شمالي هند کې د دوی ملاتړو د خپل مشر پيشوا (صدراعظم) نه وغوښتل چې دوی ته يو لوی پوځ راوېږي چې افغانان د هېواد نه وباسي او اجازه ورکړي چې د هند اسلامي واکمني رانسکوره کړي. د دوی مشر په ۱۷۶۰ په پسرلي کې تش په نامه د خپل ځوان زوی د ويسواسراو (Viswasrao) په قوماندانۍ خو د راو هېاو (Rao Bhaoo) په واقعي قوماندانۍ يو لوی پوځ تنظيم کړ چې درې لکه غبرجنګي خلکو يې ملګرتيا کوله شمالي هندوستان ته راوېږل او د ۱۷۶۰ کال د اګست په اوله نېټه د ډيلي چاپېر ته راوړسېدل. دوی نور هم د شمال خوا ته حرکت کاوه تر څو افغان پوځ سره مقابله وکړي. پنځه مياشتې وروسته په سرنوشت ټاکونکې جگړه کې په پاني پت کې سره مخامخ شول.

دغه دواړه پوځونه تر دوې مياشتې زيات په پاني پت کې، چې په هندوستان کې يو لرغونی ښار او نږدې ۶۰ ميله د ډيلي په شمال کې پروت دی، يو د بل په وړاندې ولاړ وو. د دغو دواړو پوځونو نه هر يوه کوشنې کاوه چې د بل لوري د اړينو توکو د زيرمو کولو لارې پرې کړي. هر لوري هاند کاوه چې دښمن په داسې حالت کې جگړې ته وهڅوي چې شرايط

بې په گټه نه وي. مرهټانو غوښتل چې افغان پوځ ته د زيرمو کولو لارې کې ستونزې جوړې کړي او اړ شي چې د دوی په کمپ برید وکړي په دې چې دوی د کمپ په ټينگو مورچلونو کې پراته وو او افغانانو ته يې د دوی په کمپ باندې د برید په حال کې د درنو توپکو په ذریعه دروند گوزار ورکولی شو. خو احمدشاه بابا بیره نه درلوده. هغه خپل د هند افغاني متحدین چې په پرله پسې ډول يې د ده نه د مرهټانو په کمپ د برید غوښتنه کوله، مشوره ورکوله چې تر هغه صبر وکړي تر څو کټوره موقعه راوړسېږي تر څو ټکر مو برياليتوب ته بوزي. مرهټانو هڅه کوله چې د افغانانو د زيرمه کولو لارې پرې کړي. خو افغان پوځ په ښه ځای کې پروت و. افغان پوځ د دښمن د زيرمو کولو په لارو ولاړ و او هم يې کولی شول چې په اسانۍ سره د خپلو افغان متحدینو سرچینو د جمناسر تر سره څخه برابرې کړي. د مارهټانو د پوځ د زيرمو لومړۍ سرچینه ډيلي و. دوی خپلې زيرمې د پوښ نه تر ډيلي پورې په غزبدلې لارې بشپړولې. د دوی د زيرمو بله سرچینه په خپله د ډيلي چاپېر ولسوالۍ وې. دراني پوځ په ډېر مهم ځای کې پروت و او د دښمن د اکمالاتو دواړه لارې يې پرې کولی شوې. برسېره پردې احمدشاه بابا دښمن تل تر فشار لاندې نیولی و. د سوارو يوې پنځه زيرزې لوا به د دوی په اړخونو او د شا نه بریدونه کول. هره ورځ به د سوارو يوې پنځه زيرزې لوا د ماښام نه تر سباوون پورې د دوی څارنه کوله. د افغانانو د سورو دوې نورې پنځه زيرزې لواگانې به د دوی د زيرمه کولو لارې څارلې او نه يې پرېښودل چې دوی ته مواد ورسېږي.

د مرهټانو سترو پوځي ځواکونو او غیر نظامي ځواکونو تمرکز په يوه کمپ کې چې شپږ ميله اوږد او دوه ميله سور يې درلود دوی ته ډېر پرابلمونه او روغتيايي ستونزې پيدا کړې وې چې د پوځ په روحیه يې ناوړه اغېز شينده. د ۱۷۶۱ کال د جنوري په لومړۍ اوونۍ کې زياتې قحطۍ د مرهټا کمپ تر پوزې راوستلی و. د مرهټا د پوځ قوماندانانو په بهاو زور اچولو چې په افغان پوځ سملاسي برید وکړي.

د ۱۷۶۱ کال د جنوري په ۱۳ مه نېټه د مرهټه مشرانو پرېکړه وکړه چې د ډيلي لور ته لاړ شي، هلته به ښې زيرمې برابرې او د افغان پوځ په وړاندې به غښتلی موقعیت ولري. د دې له پاره چې ډيلي ته د تگ په وخت کې د حرکت د لیکو نه جگړې ته تيار وي، د مرهټه ځواکونه د پياده مربع (infantry square) په بڼه تنظيم شوي. د علي احمد جلالي په وينا د «پياده مربع» يوه پوځي اصطلاح ده او د جگړې يوه بڼه ده چې د لرغوني زمانې نه به د پياده ځواکونو له لوري چې د سوارو له خوا به تر گواښ لاندې وو، کاروله. د جگړې دا بڼه لرغونيو رومانيانو د کاراهايي په جگړې کې په ۵۳ مخزيردې کې د پارتيانو په وړاندې کارولې

وه. د مرهټه دا پياده مربع ډېره پراخه وه، چې د جگړه یزو ځواکونو نه جوړه وه. د دغې پراخې پياده مربع د ننه غیر جنکي خلک او کورنۍ روان وو، چې د هغوی چاپېر جگړه یزو قواوو یې ساتنه کوله. دوی نیت درلود چې په دغه بڼه به د سووېل ختیځ په لور د ډگر د یو سر نه تر بله سره مخامخ جمنارود ته، چې اتلس میله لرې و، روان او بیا به د رود د بڼې غاړې به ډیلي ته لاړ شي.

د ۱۷۶۱ کال د جنوري په ۱۴ نېټه سهار وختي د افغانانو جاسوسي شبکه د دوی د پلان نه خبره شوه. افغان پوځ ته حکم وشو چې د دښمن د تلو مخه بنده کړي. د مرهټه د پوځ لیکې چې سووېل ختیځ لوري ته روانې وې چې اوه میله اوږدوالی او دوه میله ژورې وې، اړ شول چې دوی خپل د تېرې شپې پلان پرېږدي او د افغان پوځ په کین اړخ برید وکړي. په دې توګه د ۱۷۶۱ کال د جنوري په ۱۴ مه د پاني پت سرنوشت ټاکونکې جگړه پیل شوه. د علي احمد جلالی د څېړنې له مخې د مرهټه د پوځ شمېر ۷۹۰۰۰ سواره، ۱۵۰۰۰ پیاده او د غیرجنکي کسانو شمېر یې اټکل نیم میلیون ته رسېده. د افغان پوځ شمېر ۴۱۸۰۰ سواره، ۳۸۰۰۰ پلي او نږدې ۷۰ تر ۸۰ پورې توپونه وو. د غیر جنکي کسانو شمېر یې د جنکي پوځ د شمېر شاید څلور برابره و.

د ۱۷۶۱ کال د جنوري په ۱۴ مه نېټه اته ساعته جگړه د مرهټه د توپونو، موسکېټو او راکټو مخکینۍ لیکې د افغان پوځ په بڼې اړخ وروړاندې شوه. مرهټانو د نږدې جگړې د کولو په نیت د افغانانو بڼې اړخ په شا وتمبوه خو د دوی په لیکو کې په ننوتو کې ناکامه شول. څنګه چې د افغان پوځ بڼې اړخ د ابراهیم کاردی د قوماندانۍ لاندې د مرهټه د بادسپلینه منظم پوځ سره په درانده جگړه لګیا و، د مرهټه د مرکز قواوو د بهاو او ویسواسراو په مشرۍ د افغان پوځ په مرکز چې د شاه ولي خان تر قوماندې لاندې و، برید وکړ. د افغان د مرکز د قواوو یوه لیکه چې لس زره سوارو، ۷۰۰۰ پارسي موسکېټ لرونکي او زر په اوبسانو بار زمبورکو نه جوړه وه، ماته کړه. خو د افغان پوځ کین اړخ د نجیب الدوله په مشرۍ چې اته زره پلي او شپږ زره سوار یې درلودل د مرهټه د بڼې اړخ سره چې د جانکوچي سندیا تر قوماندې لاندې و، سخته جگړه پیل کړه. کله چې د دښمن د لیکې اړخونه د افغان پوځ د مسکېټو او راکټو د اغېز اندازې لاندې راغلې د نجیب الدوله فرقې په یوه وخت کې دوه زره ډزې کولې، چې نه یوازې یې د وېرېدونکي اوازونو نه اسان ډرېدل، بلکې دومره زیات مرګ وشو چې د هغو دښمن نه شو کولی چې وړاندې لاړ شي.

نږدې د غرمې په مهال احمدشاه بابا پرېکړه وکړه چې خپل زېرمه شوي پوځ د مرکزي

او بڼي اړخ د تيکاو له پاره وکاروي، چې د مرهټه د ځواکونو د فشار لاندې وو. هغه څلور زره قوه ته حرکت ورکړ چې بڼي اړخ سره مرسته وکړي او لس زره قوه يې مرکز شاه ولي خان ته واستوله چې په دښمن يې د نږدې نه سخته حمله وکړي. احمدشاه بابا نجيب الدوله او شاه پسند خان ته هم لارښونه وکړه چې دوی هم په يو وخت کې د دښمن په اړخونو کلکه حمله وکړي. نږدې يوه بجه د احمدشاه بابا د زېرمې پوځونه په جگره کې شامل شول. وزير شاه ولي خان د هغه پوځ سره په جگره بوخت و، چې په خپله به او قومانده ورکوله. نجيب الدوله د دښمن په اړخونو غوڅ او اغېزمن گوزارونه کول. په مرکز کې جگړې د يو ساعت له پاره داسې دوام وکړ چې په جريان کې يې دواړو لورو د نږو، تورو، د تېرونو- جنگ او ان په چارو جگره کوله.

زر د دوو بجو وروسته ويسواسراو ووژل شو، يو نيم ساعت وروسته به او درې ځلې د اسانو د مړينې له امله ولوېد خو بيا هم جنګېده. نږدې درې بجې وې چې د جگړې سرونه پېښه شو، کله چې د مرهټه ټول پوځ خپل مخونه په شاه وروړ او په کړنډيتوب سره يې تېښته پيل کړه. افغان پوځ په هر لوري دوی د ۲۵ نه تر ۳۰ ميلو پورې تعقيب کړل. د دوی د تېښتې په جريان کې تر يوه لک پورې کسان ووژل شول او څلوېښت زره بنديان شول چې هغوی ټول د افغان پوځ له خوا ووژل شول. په بنديانو کې جانکوچي، سينديا او ابراهيم کاردې هم شامل وو چې په افغان کمپ کې زندی شول.

افغان پوځ او د دوی متحدينو ته د ميليونونو روپو او خزانو پرته پنځوس زره اسان، دوه لکه غوايان، په زرگونو اوشان او پنځه سوه پيلان لاسته ورغلل. دا جگره چې د پاني پت په دريمه جگره نامتو ده، يوه د نړۍ د غوڅې جگړې په توګه ګڼل کېږي. افغانانو شمالي هند ته د مرهټانو پراختيا ودروله او د دغې نېغې وچې ستر ځايي ځواک يې مات کړ او د هند تاريخ يې د تل له پاره بدل کړ. پنځوس کاله وروسته يې د انګرېزانو برياليتوب اسانه کړ.

احمدشاه بابا د دغې سترې سوېې وروسته د ډيلي حکومت شاه زوی شاه علم ته وسپاره، شجاع الدوله يې د هغه د وزير او نجيب الدوله يې د لښکر امير وټاکلو. په لاهور کې يې د حکومت واکي زين خان مومند ته په لاس ورکړې او د کابل له لارې کندهار ته راستون شو. د احمدشاه بابا له پاره دا جگره يوه حماسه شوه. دغې جگړې د دراني امپراتورۍ تصوير د هند او پارس د پولو نه د باندې لور کړ. خو د جلالي په وينا دې جگړې د دراني دولت د ختيځو پولو امنيت ټينګ نه کړ چې د دې جگړې اساسي موخه يې جوړوله. دراني دولت ته خطر په پنجاب کې سيکانو جوړولو او د مرهټه مرکز ۱۵۰۰ ميله

لرې و. د مرهتانو د ماتولو نه وروسته سيکان په ځای پاتې شول. د سيکانو وده موندونکي دال خالصة پوځ بيا زر لاهور ونيو.

د احمدشاه بابا نهمه جگړه:

د مخه مويادونه وکړه چې د پاني پت جگړې د دراني دولت د ختيځو پولو امنيت ټينگ نه کړ چې د دې جگړې اساسي موخه يې جوړوله. دراني دولت ته خطر په پنجاب کې سيکانو جوړولو. د مرهتانو د ماتولو نه وروسته سيکان په ځای پاتې شول. د سيکانو وده موندونکي دال خالصة پوځ بيا زر لاهور ونيو. احمدشاه بابا چې د دې پېښې نه خبر شو د خپل پوځ سره د پنجاب او هند په لور وخوځېد. په ۱۱۷۵ کال کې د سيکانو سره جگړه وکړه چې د فيض محمد کاتب په وينا په دغه جگړه کې نږدې ۲۰۰۰۰ سيکان ووژل شول او ډېر اولجې د افغان پوځ په نصيب شوې. احمد شاه بابا لاهور ته ننوت او نورالدين د شاه ولي خان د تره زوی يې د يوه پوځ سره کشمير ته ولېږه تر څو سکجیون د کشمير نه وشري او هلته افغان حکومت بېرته ودروي. نورالدين سکجیون ته ماته ورکړه او کشمير بيا د دراني امپراتورۍ برخه شوه. احمدشاه بابا د لاهور د تنظيم وروسته کندهار ته راستون شو.

د احمدشاه بابا لسمه جگړه:

دا ځل بيا سيکانو امرتسر ونيو او په پنجاب کې بيا شورش وشو. احمدشاه بابا چې خبر شو بيا په ۱۱۷۹ کال کې د پنجاب او هند په لور وخوځېد. د لاهور د نيولو او سيکانو د ځپلو وروسته کندهار ته راستون شو. په ۱۱۸۲ کال کې احمدشاه بابا وزير شاه ولي خان د شپږ زره سوارو سره بلخ او بدخشان ته ولېږه چې د هغه ځای سرغړوونکي وځي. کله چې د بخارا امير د دغې موضوع نه خبر شو د سرغړوونکو ملاتړ يې وکړ. شاه ولي خان احمد شاه بابا ته ليک واستوه او د بخارا د امير د دريځ نه يې خبر کړ. احمدشاه بابا د خپل لښکر سره د کندهار نه د هرات له لارې بخارا ته روان شو. احمدشاه بابا د مروې د رود نه تېرشو او په ميمنه، بلخ، اندخوی او شبرغان کې يې نظم راوستو. شاه ولي خان يې کندوز او بدخشان ته ولېږه او په خپله بخارا ته لاړ. احمدشاه بابا د بخارا د امير سره سوله وکړه او د امروود د دوی تر منځ پوله ومنل شوه او بېرته کندهار ته راستون شو.

د احمدشاهي پوځ جوړښت

د جلالي د څېړنې له مخې د دراني امپراتورۍ پوځ د دولت د سياسي جوړښت په کرښه جوړ شو. کله چې به د دولت پولې پراخېدې او زيات خلک به يې تر خپلې سلطې لاندې راوستل پوځ به د شمېر له مخې وده کوله. دلته د امپراتورۍ د پراخوالي او د پوځ د ډېرښت تر منځ نږدې اړيکې شتون درلود. د امپراتورۍ پراخوالي د لوی پوځ د اړتيا غوښتنه کوله او د لوی پوځ ساتلو ډېره پانگه غوښته چې بايد د نورو شتمنو سيمو نه برابره شوې وای چې په عمومي توگه هغه په شتمنو هېوادو باندې د تيري له لارې لاسته راتلاى شوه. نو د امپراتورۍ پراخوالي د لوی پوځ د جوړولو اړتيا غوښته. برسېره پردې د فتح شويو هېوادو کنټرول ډېر پوځ او زياتو زېرمو غوښتنه کوله. په دې توگه هغه امپراتوري چې بنسټ يې احمدشاه دراني ايښى و په زياته اندازه په پوځي ځواک ولاړه وه. د دراني پوځ د جوړښت يو منظم حرفوي توکي درلود چې د «نظام پوځ» نومېده او بل توکي يې غير منظم پوځ و چې د قومونو او سيمه ييزو مشرانو له خوا د اړتيا په صورت کې برابرېده. منظم پوځ دايې خدمت کاوه چې په هغه کې شاهي خاص اشرافي گارد چې شاهي رساله نومېده، شامله وه. فرانسوي تورن «جين لا» چې په ۱۷۵۸ کال کې يې د ديپلي ملاقات کاوه افغان پوځ داسې توصيفوي: هغه وويل چې «افغان اردو د يوه لوړ دسپلين درلودونکې قوه ده چې په ډلگيو وېشل شوې چې هر يو يې زر سواره لري.» هره ډلگۍ د خوالې په ذريعه سره توپيري چې بيل بيل رنگونه لري او د يوه مشر له خوا قوماندنه کيږي چې هغوى هره ورځ دوه ځلې [احمد شاه] ابدالي ته راپور ورکوي. ابدالي قواوې په ښه حالت کې دي، په دوى کې داسې ټولگي شته چې په نورو لوړ والى لري. کله چې احمدشاه جگړې ته لاس اچوي د ۱۲ څخه تر ۱۵ ټولگيو پورې جلا ساتي او د غوڅ کوزار له پاره په کار وړل کيږي. ۲۲۳

احمدشاه بابا د ۱۷۷۳ کال د جوزا په مياشت کې د ورپېښې ناروغۍ له کبله د پنځوسو کالو په عمر د دې نړۍ نه سترگې پټې کړې اروا د ښاده وي.

احمدشاه بابا د پنځوښتو کلونو د واکمنۍ په جريان کې يوه پراخه امپراتوري افغانانو ته په نيکات پرېښوده چې په ختيځ کې له ديپلي نه په لوېديځ کې تر نيشاپور پورې او په شمال کې د امو د رود نه او په سوويل کې د عرب سمندرکي پورې غزېدلې وه.

په دې توگه احمد شاه بابا وکړاى شول چې د امو او اباسين تر منځ د هېواد خاوره د پارس د صفويانو، د هند د مغلو او ازبکانو له منگلو خلاصه او خپلواک افغانستان جوړ کړي او بيا د خپلو نورو لښکرکشيو په پايله کې په کشمير، پنجاب، سند، بلوچستان او پارسي خراسان يا پخوانۍ پارتیه کې د واک په خپرولو سره امپراتوري تاسيسه کړي.

احمد شاه دراني د ننه په هېواد کې خپلواک دولت تنظيم کړ چې په خپله د پاچا په

توکه يې مشر شو. ايالتي اداره يې ولسي خانانو او مشرانو ته پرېښوده او دوی په کورنيو چارو کې ازاد وو. ځکه د ده د واکمنۍ په مهال د افغانستان په هېڅ سيمه کې د ده په وړاندې خلک پورته نه شول خو بيا هم ځينو جزالانو غوښتل چې د ده په نشتوالي کې کډوډی رامنځ ته کړي چې ځينې يې وځپل شول او ځينې پخلا کړای شول. د نور محمد خان عليزي، گډو خان او محبت خان پوپلزي دسيسه، د عبدالغني خان چې د احمدشاه بابا ماما و او د هغه د ملګرو دسيسه، په کندهار کې د سلطنت نايب لقمان خان د احمدشاه بابا وراړه دسيسه، د هرات د والي دروېش خان هزاره دسيسه او د نصير خان بلوچ سرغرونه يې نمونې دي.

په دې ترتيب دی د پورته يادو شوو سترو کارونو په پايله کې د خپلو خلکو له خوا د بابا په نوم ياديري او تلپاتې درناوی يې وکاته.

خو لکه څنګه چې هره پدیده مثبت او منفي اړخونه لري نو د ده د سترو ميراثونو په څنګ کې چې مور ته يې پرې ايښي دي ځينې تېروتنې هم وکړې چې د ده له خوا جوړې شوې امپراتورۍ او هم په خپله افغانستان ته يې ناوړه پایلې هم درلودې.

زما په فکر لومړۍ تېروتنه يې دا وه چې ده د پارس نه سياسي ازادي وکتله خو کلتوري ازادي يې ونه کتله. ده پارسي دفتري ژبه کړه او پارسيوان يې دفتري مامورين کړل. کله چې په ۱۱۶۷ کې احمدشاه بابا مشهد ته ننووت د محمد تقی شيرازي نه غوښتي و چې د ميرزا مهدي استرايادي غوندې يو تکړه تاريخ ليکونکی او د غونډې گذارش ليکونکی ورته ومومي. نوموړي احمدشاه بابا ته محمود حسيني جامي ور وپېژاند. محمود حسيني جامي چې د لوبديځ خراسان د جام نه و د نادر افشار په دودمان کې د منشي توب دنده درلوده او د شاه رخ ميرزا نږدې کسانو نه و. همدارنګه ميرزا هادي خان قزلباش يې د دارالانشا مشر ميرزا علي خان رضاخان قزلباش د اعلى ديوان مستوفي او د ټولې خزاني مشر يې هندو التفات خان وټاکل. په دې توګه پارسو په افغانستان کې د دربار او هم د اقتصاد د ژبې په توګه پاتې شوه. په دې ترتيب لکه چې مې د مخه هم يادونه وکړه لرغونو روميانو به ويل، چې په يوه هېواد کې هغه څوک حاکم دی، چې ژبه يې حاکمه وي.

بله تېروتنه يې دا وه چې ده منظم پوځ د غېرپېښتنو او په ځانګړې توګه د پارس د قزلباشانو نه جوړ کړ چې زما په اند په کلتوري لحاظ ايراني شوي شاه زوی تيمور په واک راوستلو کې يې شايد ټاکونکی رول لوبولی وي. په دې ترتيب د پارس فرهنگي ښکېلاک يقيني شو او تر ننه دوام لري.

احمدشاه بابا لکه چې د مخه مې يادونه وکړه خپل ساتونکی ګارد چې غلام خانه

نومېده د نادر افشار په دود چې خپل ساتونکی گارډ يې د غير پارسي قبيلو لکه افغانانو، بلوچو، ترکمنو او ازبکانو نه جوړ و، د غير پښتنو او په ځانگړې توگه د ايران د قزلباشانو چې د افغانستان په مهمو ښارو کې د نادر افشار له خوا ځای په ځای شوي وو، جوړ کړ. د پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ په وينا احمدشاه بابا «د حکومت چارې غير دراني قومونو ته وسپارلې. منظم پوځ يې له غير دراني قومونو يانې قزلباشانو نه جوړ و، دري يې د دفتر ژبه کړه او دري ويونکي افغانان يې دفتري ماموران شول.» ۲۲۴ همدارنگه محمداعظم سيستاني ليکي چې «همچنانکه پادشاه افشار برای دسته جات کارد محافظ خود از قبایل غير ايراني مثل افغان، بلوچ، و ازبک استفاده مېکرد. احمدشاه بابا نيز دسته غلامخانه را از عنصر غير پشتون تشکيل داد و سپاهيان تعليم يافته و جنگ ديده قزلباش را که نادر افشار در کابل و پنجاب گذاشته بود، در ان داخل نمود.» ۲۲۵ که نادر افشار خپل ساتونکی گارډ د غير پارسي قبيلو نه جوړ و نو لامل يې دا و چې نادر افشار ترکمن و او ترکمنو په پارس کې د خلکو لږه کې جوړولو او د پارسيانو د وېرې نه يې دا کار کړی و. خو احمد شاه بابا پښتون او پښتانه په افغانستان کې د خلکو ډېره کې جوړولو او خپل ساتونکی گارډ يې بايد په زياته اندازه د پښتنو او نورو افغانانو نه جوړ کړی وای.

احمدشاه بابا د شاه محمود هوتک او شاه اشرف هوتک او په هند کې افغان امپراتورانو پرعکس خپل ځان د ځواک د اصلي مرکز نه بيل نه کړ. ځنگه به يې چې د برياليتوبونو موخې تر لاسه شوې خپل مرکز ته به راگرځېدو. په نورو تکو هغه څه چې احمدشاه بابا د تېر مهال افغان سوبمنو لکه په هند او پارس کې توپراوه دا دی چې هغه نيت کړی و چې نور هېوادونه د دې له پاره فتح کړي چې په خپل هېواد کې پياوړی دولت جوړ کړي نه لکه د پخوانيو افغان واکمنو غوندې چې په بهرنيو هېوادو کې يې د امپراتوريو واکمني کوله. په دې توگه د احمدشاه بابا سوېې د دې له پاره وې چې د امو او اباسين تر منځ خپلواک افغانستان او دولت جوړ کړي. احمدشاه بابا سره له دې چې هغه مهال داسې شرايط موجود و چې خپله امپراتوري هرې خوا ته نوره پراخه کړي، نه غوښتل چې په شمال کې د امو د رود هغې خوا ته، په لوېديځ کې د مشهد هغې خوا ته او په ختيځ کې تر شمالي هندوستان هغې خوا ته ژور لاړ شي.

احمدشاه بابا داسې مهال واک ته ورسېد چې عمر يې پنځه ويشت کاله و. ده په پنځويشت کلنه واکمني کې لکه چې د مخه مې يادونه وکړه داسې ستر کارونه وکړل چې نه يوازې افغانان بلکې نړيوال هم ورته گوته په غاښ دي. دغو سترو کارونو وخت غوښته.

احمدشاه بابا د هېواد ابادی او د کلتوري پخو بنسټونو جوړولو ته پوره وخت ونه موند. احمدشاه بابا په ۱۱۷۴ کال کې د کندهار ښار بنسټ کېښود. احمدشاه بابا که څه هم پارسو رسعي ژبه کړه خو بیا هم د خپلې مورنۍ ژبې پښتو ته یې توپیره نه و. نوموړي شاعر و او د خپل نیکه کامران خان غوندې چې کلید کامراني کتاب یې په پښتو لیکلی و خپل شعر په پښتو ژبه ووايه او نن یې خپلو پښتنو ته د شعر دیوان په نیکات پرابښی دی. د شعر نمونه یې دا ده:

د پېرزوان لسه پټه تابه يم بې هوش
د سرو شونډو لسه شرابه يم بې هوش

چې په خوب کې د خپل یار صورت ووينم
چې راوین شم بیا له خوابه يم بې هوش

چې دې بوی د کاکل راغی تر دماغه
ځکه همې مست خرابه يم بې هوش

ستا د حسن په گلزار کې مخمور ناست يم
زه بلبل د دې کلابه يم بې هوش

چې نسیم په سهار بوی د زلفو راوړي
عندلیب غوندې بې تابه يم بې هوش

د بورا په څېر پر بوی د کلو راغلام
د خزان لسه پېچ و تابه يم بې هوش

«احمدشاه» چې مې ځان وليده حيران سوم
په خپل ځان کې له دې بابه يم بې هوش ۲۲۶

بل د شیر سرخ د جرگې د پرېکړې له مخې چې د قضايي چارو د تنظيم په منظور دې شرعي قانون جوړ شي د کتاب په بڼه چې «فتوای احمدشاهي» نومېږي په پښتو ژبه وليکل

شو او اوس هم شته. همدارنگه خان علوم قاضي محمدغوث په پښتو ژبه پر تصوف رسالې وکښلې.

برسېره پردې احمدشاه بابا د پښتو ژبې شاعران په ځان راټول او د شعر ويلو مجلسونه به جوړېدل او په دربار کې پښتو ژبه ويل کېده. ده هند ته د خپلو لښکر کشيو په مهال د پښتو ژبې شاعر حافظ گل محمد مرغزي ته دنده سپارلې وه چې د پښتو ژبې دريمه شاهنامه يانې احمد شاهي شاهنامه وليکي.

چې فرمان د شـهـرپـيار وه

چې زبـيا بـنـکـلی گفـتـار وه

چې حـافـظ د شـاهـنـامـه کـړه

په جـهـان دې دا نـامـه کـړه

د بادشاه مې حال بيان که

دا چې سـير يـې د جـهـان که

هـاـدـر دى شـهـر افـگـن

تـيـغ يـې تـبـر شـه تـر دـکـن ۲۲۷

حافظ گل محمد مرغزی چې د احمدشاه بابا په لښکرو کې شامل و، احمدشاهي شاهنامه وليکله چې يو ځل په جنګ کې د منځه لاړه او بيا يې د سره وليکله چې يوازینی مالومه خطي نسخه يې اوس په برېتېش موزيم کې خوندي ده.

په زبـان درانـي

بـه بـيان دى افـغـاني

د احمدشاه دران

پکې حال مې کړه بيان

چې کتاب مې شه تيار

په تحرير زما نکار

په لښکر کې د سردار

په تاراچ شه د کفار

په خو وړ خو و م خاموش

بیا مې شعر راغی په جوش

مثنوي مې شاهنامه شهوه

بیاتازه مې دا خامه شهوه ۲۲۸

بل سړی چې په دې مهال یې اثار ایجاد کړي دي میا شرف الکوزی ننګرهاری دی. میا شرف د پاني پت په جگره کې حاضر و. د ده دیوان ورک دی یوازې یې یوه قصیده او څو غزلې لاسته راغلې دي. برسېره پردې د ده یو بل منظوم اثر د «برده قصیدې» پښتو منظومه ژباړه شته. دی یو بل منثور کتاب لري چې «پښتو عروض» نومېږي او خطي نسخه یې ارواښاد مولانا ابوالوفا صاحب افغاني له حیدر اباد دکن نه پښتو ټولني ته راستولې دی. د کلام نمونه یې دا ده:

سور گل چې سحر وخت په جمال ستا کر نسیم خور

ښایست د دې گل بل کر د بلبل په لمن اور ۲۲۹

بل سړی علي اکبر اورکزی دی چې د دیوان یوازینی خطي نسخه یې د ارمنستان د پلازمینې ایروان په ماتینا داران کې خوندي ده چې معتمد شینواري او عبدالله بختاني هلته موندلې ده.

احمدشاه بابا ملا پیرمحمد کاکړ په خپله د پاچاهي کورنۍ د غړو د ښوونې او روزنې په دنده گومارلی و. ملا پیرمحمد کاکړ د پښتو ژبې د زده کړې (درسي) لومړنی کتاب چې «معرفته الافغاني» نومېږي لیکلی دی. ملا پیرمحمد کاکړ دا کتاب خپل شاکرد شهزاده سلېمان ته د لنډې دوه میاشتني واکمنۍ (۱۱۸۶) په دوره کې وړاندې کړی و.

د اکادمیسین کانديد محمد صديق روهي په وینا «د دې له پاره دا کتاب د پاچا حضور ته وړاندې شوی دی، چې د یوه داسې کتاب په توګه یې پر هغو حاکمانو، مامورانو او درباریانو ولولې چې پښتو یې مورنۍ ژبه نه ده، .. او مجبور دي چې د ورځینو اړتیاوو درفع کولو له پاره پښتو زده کړي.» ۲۳۰ ښاغلی حبیب الله رفیع هم وايي چې «دا اثر د دې له پاره لیکل شوی و، چې درباریان، منشیان او میرزایان د پښتو جملو جوړول او لیکل زده کړي

او بيا د همدې اثر په مرسته د دفتر او دربار ټولې چارې په پښتو راواړوي خو پښتو د دفتر او ديوان ژبه شي او لکه د نورو ژبو غوندې د دربار په ملاتړ او حمايت پراختيا او پرمختگ وکړي. ۲۳۱ پوهاند عبدالحی حبيبي وايي چې په دې عصر کې دا فکر پيدا شو چې د بېلو بېلو علومو نه دې کتابونه په پښتو وژباړل شي. ۲۳۲

تيمورشاه

تيمور په ۱۷۴۷ کال د جنوري په مياشت کې د خراسان د مازنداران ولايت کې زېږېدلی دی. تيمور د ستر احمدشاه دوهم زوی دی او مور يې د سامانيانو نه ده. الفنسټون وايي چې «دوی [سامانيان] لږ تر لږه له هغه وخت نه وروسته هلته [په افغانستان کې] استوګن شوي وي، چې د سامانيانو يوې عربي کورنۍ په بخارا باندې حکمراني کوله.» د الفنسټون په وينا «د سامانيانو شمېر په افغانستان کې کېدای شي دوه زره کورنۍ وي چې ځينو يې د کابل د بالاحصار د چاونۍ يوه برخه تشکيلوله او پاتې يې د کابل او پېښور تر منځ په جلال اباد کې اوسېدل. دغه وروستۍ يې خانله د يوه بېل مشر تر ادارې لاندې ده او دوی دومره د عزت خاوند دي، چې د ده تېرو پلرونو لور د احمدشاه بنځه د تيمورشاه مور ده.» ۲۳۳

د الفنسټون پورتنۍ تېروتنه چې سامانيان يې عرب بللي پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ سمه کړې او سامانيان عرب نه بلکې اريايان دي. احمدشاه بابا اته زامن درلودل چې د بيلو بيلو ميندو نه وو. مشر يې سليمان او دوهم زوی يې تيمور نومېده او نور يې سکندر، پروېز، شهاب، سنجر او داراب تاريخ ثبت کړي دي. تيمور چې مور يې د سامانيانو د يوې بانفوذ کورنۍ نه وه خپل زوی يې د احمدشاه بابا د پاچاهۍ ځای ناستی کانه او دې مېرمنې په خپل مېړه باندې هم زيات نفوذ درلود او هغه هم دې ټکي ته تيار و چې د دې زوی د خپل ځای ناستي په توګه ومني. د دې تر شا شايد نورو غښتلو لاسونو هم کار کاوه. داسې ښکاري چې د تيمور مور يوه غښتلي مېرمن وه چې دعزيزالدين وکيلي پوليزي په وينا «والده تيمورشاه شهر هرات را مجدداً مرکز بزرگ نظامي و سياسي افغانستان قرار داد و پسر يکنيم ساله خود تيمورشاه را بادشاه ان مملکت موروث اعلان نمود و خود زمام امور سلطنت و حکومت را در دست گرفت... مسکوکات نقره يي عليشاه افشار را از نو گداخته بنام پسر خود تيمورشاه مسکوک نمود.» ۲۳۴

په هر صورت تاريخ پوهان په دې باور دي چې احمدشاه بابا تيمور خپل ځای ناستي

په توگه ټاکلی و. خو په دربار کې د احمدشاه بابا د مشر زوی سلیمان په پلوی ډېر کسان د صدراعظم شاه ولي خان په مشرۍ چې د سلیمان خسر و، ولاړ وو. شاه ولي خان د ستر احمدشاه بابا بنی لاس و چې په ۱۷۴۹ کې د ده په قوماندنۍ دشمال ټول ولایتونه یې له جګړې احمدشاهي مرکز ته تابع شول. ۲۳۵ او خرغه شریفه یې هم د خان سره راوړه.

د ابراهیم عطایي په وینا تیمور عیاش، سرزوری او بې پروا سړی و خو په زیاترو چارو کې تدبیر او زړورتیا شول. که څه هم د استحقاق له مخې دا مقام د سلیمان حق و خو احمدشاه بابا د تیمور لیاقت ته ترجیح ورکړه او په ۱۷۷۳ م کې یې د دولت د لویو مشرانو په غونډه کې خپل ځای ناستی وټاکه.

په ۱۷۷۲ کال کې تیمور وروستی ځل د احمدشاه سره وکتل او بیا هرات ته ستون شو. عزیز الدین وکیلې وایي چې په دغه مهال احمدشاه بابا وصیت لیک وکړ او په هغه کې یې د تیمور د وراثت حق ښکاره کړ. خو وکیلې دغه سند چې په وینا یې د برخوردار خان اڅکزي د اولادې سره شته په خپله لیکنه کې نه دی وړاندې کړی.

داسې ښکاري چې احمدشاه بابا د خپلو نورو زامنو د پوهنې او روزنې چارې په شعوري توگه پرمحمد کاکړ ته سپارلې وې. سلیمان د خپل استاد له خوا دې ته چمتو شوی و چې ملي ژبه پښتو په درباریانو زده او بیا د هېواد رسمي ژبه شي. لکه چې د مخه مې یادونه وکړه په دربار کې پټه جګړه د واکمنۍ پر سر روانه وه. په دې مبارزه کې یوه لوري ته د احمدشاه بابا صدراعظم شاه ولي خان چې په اڅکزي وخت کې احمدشاه بابا هم ورسره سر وخواوه او د هغه ملګري ولاړ و او د بلې خوا د هغه مخالفین لکه عبدالله خان پوپلزی (دیوان بیګي) او د پارس دولت د فرهنګي ښکېلاک پلویان چې د تیمورشاه د پاچا کېدو په وجود کې یې د پارس اوږدمهاله کټي ساتلی شوې، ولاړ وو. چې د بده مرغه د شاه ولي خان پلویانو ماته وکړه او تیمورشاه واک ته ورسېد او د پارس فرهنګي ښکېلاک یقیني شو چې تر ننه دوام لري او د پښتنو سیاسي خپلواکي یې هم ټکي کړې ده. نو د افضل خان لالا دا خبره، چې ما په خپله څو ځله ور څخه اورېدلې ده، سمه ده چې وایي چې پښتنو د پارسیانو نه د افغانستان سیاسي خپلواکي وکتله خو کلتوري او فرهنګي ازادي یې تر لاسه نه کړه او یو وروکې لږه کي د ډېره کي په نامه په پښتنو واک چلوي. ۲۳۶

په دې ترتیب داسې ښکاري چې په پای کې احمدشاه بابا د خپل مدبر وزیر شاه ولي خان دا خبره ومنله چې د تیمور د پاچا کولو سره مخالفت وکړي. دا مخالفت هغه مهال ښکاره شو چې تیمور د هرات نه د خپل رنځور پلار لیدو ته را روان و او احمدشاه بابا لیک ورواستاوه چې بېرته هرات ته وګرځي. محمد اعظم سیستانی لیکي چې تیمور «هنوز والي

هرات بود که بيماري احمدشاه شدت گرفت و به کوه های توبه که هوای سردتر داشت، رفت. تیمورشاه باری به عزم دیدار پدر تا حوالی هلمند رسید، مگر بفرمان احمدشاه دوباره مجبور شد بدون عیادت و دیدار پدر به هرات برگردد.» ۲۳۷

سید جمالدین افغان د تیمور خپلې خبرې داسې بیانوي: «پلار زه په خپل ژوند کې د خان ولیعهد ټاکلی وم مگر وزیر یې د ځنکدن پر وخت دی واپراوه سلیمان یې زما پر ځای په ده ولیعهد وټاکه، لکه چې اوس د پاچهي ډول په کندهار کې د ده په نامه وهل کيږي ځان یې مروچ کړی دی په تاسو کې څوک سته چې زما سره مرسته وکړي خو له هغه معتصبه څخه خپل حق واخلم.» ۲۳۸

د احمدشاه بابا د مړینې وروسته لوی وزیر شاولي خان د احمدشاه بابا د وروستي وصیت سره سم سلیمان پاچا اعلان کړ. په دې کار د دربار مشران دوې ډلې شول. په دغه جریان کې عبدالله خان دېوان بیګي د تیمور په پلوي ودرېد. د ابراهیم عطایي په وینا عبدالله خان دیوان بیګي شاولي خان او د هغه زامن نیول او لاس تړلي یې تیمور ته واستول او د فراه په یوه سیمه کې یې ووژل. ۲۳۹ داسې ښکاري چې عبدالله خان دیوان بیګي د احمدشاه بابا د ګارد په مرسته چې د پارس د قزلباشانو نه جوړ و کودتا وکړه. دا هغه توره ورځ ده چې د احمدشاه بابا د امپراتورۍ، د اصلي افغانستان او په ځانګړې توګه د پښتنو د زوال د پیل ټکی شو چې تر ننه دوام لري.

د تیمور د بري یو لامل دا دی چې احمدشاه بابا د خپلې واکمنۍ د ساتلو تکیه په قزلباشانو کړې وه. دوهم دا چې احمدشاه بابا هم د امیر شیرعلي خان غوندې دومره د تیمورشاه د مور تر اغېز لاندې و چې تر زیاته وخته یې تیمور ته برتري ورکوله. دریم د تیمور تر شا شاید نورو غښتلیو لاسو کار کاوه. تیمورشاه چې په مشهد کې زیږدلی او ناپښتاني چاپېریال کې لوی شوی او روزل شوی و، د دراني مشرانو د وېرې د کندهار نه مرکز کابل ته انتقال کړ او لوړ دولتي پوستونه یې غیر دراني کسانو ته ورکړل او په ښاري لږه کیو یې ډډه ولګوله.

په دې ترتیب تیمورشاه د درانیو مشران چې زیاته سیاسي تجربه ترلاسه کړې وه د منځه یوړل او ان د احمدشاه بابا د جنګ وزیر جهان خان چې یو لوی شخصیت و هم د نظره واچاوه. د پښتنو بانفوذ کسان یې د واک نه لیرې وساتل او تیمورشاه شیخ عبدالطیف جامي هروي خپل وزیر وټاکه. د خزانو چارې یې الطاف خان هندي ته وسپارلې او په دربار کې یې هم د پښتو پرځای فارسي رواج کړه.

تیمورشاه دولس زره عسکر (غلام خانه) د محمد خان بیات تر قوماندنۍ لاندې

ورکړل چې د ده امنيت وساتي. ده قاضي فيض الله خان دولت شاهي خپل مشاور وټاکه ولې پوره باور يې پرې نه کاوه. د تيمورشاه دغه گامونه د دې لامل شول چې درانی او نور پښتانه د ده پر ضد پاڅونونه وکړي چې مهم يې دا دي:

د عبدالخالق خان پاڅون

د تيمورشاه پر ضد د احمدشاه د تره عبدالخالق خان پاڅون د درانيو او نورو پښتنو لومړی څرگندونکی دی. د عبدالخالق خان د سنگر ملگرو سردار پاينده خان او سردار دلاور خان اسحقزي د جگړې د پيل نه د مخه د ده نه جلا او د تيمور په پلوي ودرېدل. دغو سردرانو شايد د تيمورشاه له خوا نه د زياتو امتيازاتو په منلو سره خپل دريځ بدل کړی وي. سردار پاينده خان يوه مېرمن قزلباشه او د امير دوست محمد خان مور وه. د دې شونتيا شته چې تيمورشاه پاينده خان د خپل اخشي جوانشیر په مرسته تطميع کړی وي لکه چې وروسته سردار پاينده خان د شاه زمان پر ضد کودتا کې د خپل اخشي جوانشیر سره يو ځای کېدون درلود. خو ځنگه چې سردار پاينده خان د تيمورشاه په برياليتوب کې ټاکونکی رول ولوباوه نو «تيمورشاه سردار پاينده خان د «سرفراز خان» او سردار دلاور خان يې د «مدد خان» په لقبونو ونازول.» ۲۴۰

د پېښور پاڅون

فيض الله خان په ۱۷۷۶ کال په ژمي کې چې تيمورشاه په پېښور کې و د ده د رانسکورېدو او پر ځای يې د احمدشاه بابا زوی سکندر، چې د پېښور والي و، واک ته رسولو په موخه د صاحب زاده ځمکني په سلا او ارسلا خان مومند په همکارۍ يو پلان جوړ کړ. په دې وخت کې سيکانو سرغړونه پيل کړې وه. فيض الله خان د پاچا نه د سيکانو دټکولو له پاره د لښکر د جوړولو اجازه واخېسته. هغه مهال چې لښکر جوړ شو فيض الله په دې پلمه لښکر د پېښور د ارگ په لور روان کړو چې تيمورشاه يې وگوري. فيض الله د ارگ ساتونکی گارډ د منځه يووړ او په ارگ يې بريد وکړ او نږدې و چې د تيمور کار پای ته ورسوي خو په دغه وخت کې تيمور په بېره د مانی لور پور ته ځان ورساوه او خپلو ساتونکو ته يې د مقاومت امر وکړ. د تيمور ساتونکو چې د قزلباشانو د منظم پوځ نه جوړ و، په جگړې لاس پورې کړ او د فيض الله نامنظم لښکر ته يې زيات د سر زيان واړولو او ماتې ورکړه. فيض الله خان او زوی يې ووژل او وروسته يې ارسلا خان مومند

هم زندی کړ.

تیمورشاه په پای کې دا پاڅونونه د بهرنیو تیریو په شمول وځپل. خو د افغانستان امپراتوري چې د زوال تېره یې په خپل لاس ایښې وه د ده د زمانو په وخت کې تجزیه او د نولسمې پېړۍ په پیل کې واکمني محمدزو کورنۍ ته واوښته

«تیمورشاه په فارسي کې د شعر یو کتاب خپور کړی دی، ستاینه یې ډېره کيږي، خو ویل کيږي چې د هغه د دربار یو نامتو شاعر فروغي هغه سم او اصلاح کړی دی.» ۲۴۱

په احمدشاهي دولت کې دراني سردارانو زیات پوځي، سیاسي او مالي امتیازات لاس ته راوړل او برسېره پر دې د جګړو پر مهال د زیات مال خاوندان کېدل چې په عمومي توګه یې د احمدشاهي دولت د شمزۍ تېر جوړاوه او د دربار یوه بډایه اشرافي ممتازه طبقه جوړوله. د دغو سردارانو نه ډېرو یې د تیمورشاه په وړاندې د هغه د مشر سیال ورور سلیمان ملاتړ کاوه. تیمورشاه د دغه ګواښ د بې اغېزې کولو له پاره پلازمینه د کندهار نه کابل ته یووړه، لور دولتي منصبونه یې غیر دراني کسانو ته ورکړل او په لږکیو یې ډډه ولکوله. تیمورشاه په ۱۷۹۳ کال کې مړ او په کابل کې خاورو ته وسپارل شو.

زمان شاه

د علي احمد جلالي په وینا تیمورشاه د لسو ښځو نه چې د بیلو بیلو قومونو څخه وې ۳۶ اولادونه پرېښودل. کله چې دی په ۱۷۹۳ کال کې مړ شو زیات شاه زویان د ولایتونو والیان وو چې د تخت او تاج نشه یې په سر کې وه. ځنګه چې د ځای ناستي یو ټاکلی پرنسیب شتون نه درلود نو د واک لاس ته راوړلو له پاره د جنجالونو لاره پرانیستې وه. یوه اوږده موده د قدرت په سر جګړه روانه وه چې په دوو لسیزو کې واک څلور ځله لاس په لاس شو.

د تیمورشاه په زمانو کې شاه زوی زمان د دې وړ و چې د پلار د ځای ناستي په توګه وټاکل شي. په دې ټکي سردار پاینده خان، قاضي فیض الله خان او ملا عبدالغفار خان چې د تیمورشاه پوه وزیران وو، ښه پوهېدل. دوی د پاچا مړینه پټه وساتله او شاه زوی زمان یې چې تر ټولو وروڼو هوبښیار، پوه او باکفایته و د پاچا په توګه وټاکه. خو د دوی د ټولو هلو ځلو سره سره په کابل او ولایتونو کې ستونزې پیدا شوې.

په کابل کې میشته شاه زویان د شاه زوی عباس په کور کې راغونډ شول او دی یې د خان له خوا پاچا کړ، خو وزیرانو د شاه زوی زمان پلوي وکړه او د ده وروڼه یې اړ کړل چې د زمان شاه بیعت او اطاعت وکړي. همایون او محمود چې په هرات کې د زمان شاه د

پاچاهي نه خبر شول، دواړه راوپارېدل. زمان شاه د پلازميني د چارو د سمبالولو وروسته همایون ته په يوه فرمان کې د خپلې پاچاهي د منلو بلنه ورکړه خو همایون چې تر ټولو مشر و، ځان يې د پلاز ور گاته، د زمان شاه خبره ونه منله. له دې امله د دواړو ورونو ځواکونه کندهار ته نږدې د «بېرو بن» سيمه کې سره مخامخ شول. د همایون د ځواکونو بالندوی (قوماندان) مير اخور مهر علي خان او د زمان شاه د ځواکونو بولندی سردار پاینده خان و. د پاینده خان په پوهه مهرعلي خان د جنگ نه لاس واخېست او همایون کندهار ته او له هغه ځايه بلوچستان ته وتښتېد او نصير خان بلوچ ته يې پناه يوره. دې برياليتوب د زمان شاه واکمني ټينگه کړه. زمان شاه د کندهار د چارو د سنبالښت وروسته خپل اوه کلن زوی شاه زوی قيصر د عبدالله خان نورزي په مرستياي د کندهار واکمن کړ او په خپله هرات ته لاړ او د چارو د سمون وروسته کابل ته راستون شو او له دې ځايه پېښور ته لاړ او په هند کې د بړيو د نقشې د جوړولو په سوچ کې شو.

همدغه مهال همایون د بلوچستان نه د کندهار په لور وخوځېد. ويل کيږي چې زمان شاه د کابل نه پېښور ته د تک د مخه د همایون له حرکت نه خبر و. خو هغه شېرمحمد خان اشرف الوزرا او خدايداد خان ورلېږي وو چې همایون پوه کړي او رايې ولي. خو خدايداد خان د دې پر ځای چې همایون د خپل هوډ نه واريو د همایون سره سلا شو او د لښکر د جوړولو وروسته يې په کندهار بريد وکړ، قيصر يې بندي کړ او عبدالله خان نورزي زمان شاه ته چې په پېښور کې و، ورغی او همایون په کندهار کې د پاچايي بيرغ اوچت کړ ځان يې پاچا اعلان کړ او په خپل نامه يې سکه ووهله.

زمان شاه اړ شو چې د پېښور نه کندهار ته راستون شي او د همایون سره خپلې چارې يو مخيزې کړي. د زمان شاه او همایون لښکرې د کندهار په څلوېښت کروي کې سره مخامخ شوې. دا ځل بيا د پاینده خان په تدبير جگړه د وینو تويولو پرته پای ته ورسېده او احمد خان نورزی د همایون د لښکر بولندی د پاینده خان سره زمان شاه ته راغی او سلامي شو او همایون بيا ماته وخواره. همایون له فراه نه بلوچستان او له هغه ځايه ځان د سيند څنډې ته ورساوه. هلته د زمان شاه د کومارليو کسانو له خوا ونيول شو او د زمان شاه په امر يې په غبرگو سترگو روند کړ، کابل ته يې راووست او بندي شو. په دې توگه زمان شاه د ورونو د شخړو نه بې غمه شو که څه هم ورونو يې موقع ته کتل. د علي احمد کهزاد په وينا زمان شاه چې د ورونو د شخړو نه بې غمه شو ورو ورو يې په خپل چلن کې بدلون راووست. دغه وخت زمان شاه رحمت الله خان سدوزی (وفادارخان) چې يو لنډ فکری او ځان غوښتونکی سړی و، د وزير په توگه وټاکه. وفادار

خان پاچا ته دومره ځان نږدې کړ چې د علي احمد کهزاد په وينا «يو گوداگي يې ترې جوړ و» ۲۴۲ کهزاد وايي چې که څه هم تاريخوال د سدوزيو او بارکزيو د مخالفت مورينه چې افغانستان او افغانانو ته يې نه راستنېدونکي زيانونه ورسول له بل ځايه گڼي خو اصلي زړی يې د زمان شاه همدا تېروتنه وه چې وفادارخان يې د وزارت څوکي ته ورساوه. «داسې چلن بې غبرگونه پاتې نه شو او د پاچا پر ضد پټې ډلې جوړې شوې او په پای کې پنځو کسو د نورو له خوا پټه غونډه وکړه. همدې غونډې د زمان شاه د گوښه کولو، د وفادارخان د وژنې او د شاه زوی شجاع د پاچا کولو پرېکړې هم وکړې. خو دا پټه غونډه د وفادارخان د څرکيو له خوا جوته او د غونډې د يوه غړي له خوا وزير او پاچا ته ورسېده.» ۲۴۳ زمان شاه د ځان ژغورنې په تکل خپل ساتندويان بدل کړل او ځينې يې په پيسو او څوکيو په ورکولو د ځان کړل او د اولس مشران لکه پاينده خان يې يو يو د مشورې په پلمه راوغوښتل او له تيغه يې تېر کړل. د پاينده خان په وژنې سره يو ستره غميزه او ناورين پيل شو، چې د افغان- انگليس د دوهمې جگړې تر پايه نږدې يوه پېړۍ روان و، د افغانستان ملي جوړښت، اداري ادانې او ځمکنۍ پولې ته په کې سخت زيانونه ورسېدل.

زمان شاه د نيمگړتياوو سره سره وکولی شول ټول پنجاب د خپلې واکمنۍ د يوې برخې په توگه وساتي. خو دا مهال محمود چې يو څه وخت غلی و بيا سر راپورته کړ. د بارکزيو مخالفتونه د فتح خان په کړو کې راڅرگند شول. په ختيځ کې انگرېزانو رنجيت سنگ پياوړی کاوه چې سرغړونه وکړي او خپلواکي وغواړي. په لوېديځ کې قاجاري پاچايانو اقامحمد خان او فتح علي شاه خراسان ته سترگې نيولې وې او خپلو موخو ته درسېدو له پاره يې محمود ته په «ترشيز» کې د جاگېر په ورکولو هغه لاسوهنې ته وهڅاوه.

زمان شاه به د نننيو او بهرنيو ستونزو سره سره د هرات او لاهور تر منځ تگ راتگ کاوه او د دواړو خواوو يې د خپلې خاورې بشپړتيا او خپلې واکمنۍ ساتنه کوله. په ۱۲۱۶ ه ق کې شاه زمان په کندهار کې و، چې ورور يې شاه زوی شجاع د پېښور واکمن ورته ليک ولېږه او د رنجيت سنگ د پاڅون نه يې خبر کړ. زمان شاه د کندهار نه د يوه ستر لښکر سره د پېښور او پنجاب په لور وخوځېد.

په دغه وخت کې فتح خان د شاه زوی محمود سره لاس يو کړ او د سيستان له لارې په کندهار د يرغل تکل وکړ او د ۴۲ ورځو کلابندۍ وروسته يې کندهار ونيو. زمان شاه اړ شو چې په پنجاب کې د رنجيت سنگ پر ضد د اقداماتو لاس په سر شي او د کابل په لور روان شي. زمان شاه د محمود او فتح خان د تمبولو له پاره احمد خان نورزی او خپل

زوی ناصر د دوولس زره لښکر سره کندهار ته واستول. د کلات او مقر تر منځ «سراسپ» نومي سيمه کې نورزی محمود او فتح خان ته سلامي شو او د زمان شاه زوی پر شاتګ ته اړ شو. زمان شاه د غزني نه کابل ته ستون شو چې نوی ځواک برابر کړي. خو ښار ته له رارسېدو سره هغه ورسره پوځيان هم خواره شول. پاچا د جلال اباد په لور وخوځېد، شجاع ورور ته يې چې په پېښور کې و وليکل چې خيبريان يې مرستې ته ولېږي. د شپې پاچا د جکدې په لار د ملا عاشق نومي شينواري په کلا کې پناه واخېسته. عاشق يې هرکلی وکړ، خو چې خبر شو چې محمود کابل ونيو نو له وېرې يې د کلا دروازه وتړله او د زمانو په خوله يې شاه محمود ته پيغام واستوه چې د بندي په نيولو او بيولو پسې څوک راولېږي. زمان شاه او ملګرو يې چې هر څه وکړل د کلا نه په وتلو بريالي نه شول او زمان شاه خپله د سلطنتي غميو غوټه چې د «کوه نور» نامتو الماس هم په کې و د دېوال په يوه سوره کې پټه کېښوده. د کابل نه د فتح خان ورور اسدالله خان د يوه جراح سره راورسېدل دواړه سترګې يې ورنه وايستې، کابل ته يې بوت او بندي شو، وفادارخان او نور ملګري يې د تيغه تېر کړل.

د عاشق شينواري دا ستر جنايت يې ځوابه پاتې نه شو او درې کاله وروسته چې د شاه محمود لومړی واکمني د شاه شجاع له خوا ړنګه شوه لومړی کار يې دا و چې ملا عاشق شينواري يې زندی کړ او د غميو غوټه هم په لاس ورغله.

د شاه محمود سدوزي واکمني

د زمان شاه د ړندولو وروسته د تيمورشاه زوی شاه محمود د کابل په تخت کېناست. دا وخت دراني امپراتوري د هرات او غور نه نيولې د کشمير تر پورو غاړو پورې، اټک، بلوچستان او د اټک د نامتو کلا پورې خواره وه. يوازې په پنجاب کې رنجيت سنگ د انګرېزانو په لمسون سرغړاوی کړی و. د شاه زويانو او مخورو خپلمنځي جګړو او ناندريو د دې مخه ونيوله چې د پښتنو او سيکانو خبره سپينه شي.

د زمان شاه د ړندولو وروسته شاه زوی شجاع چې هغه مهال د پېښور واکمن و، يوه شېبه يې هم مرکزي حکومت په ارام پرې نه ښود. شاه شجاع په ختيځ کې ځان پاچا اعلان کړ. د شاه شجاع او شاه محمود تر منځ لومړی جګړه د ننګرهار په باسول کې وشوه چې شاه شجاع ماتې وکړه او د سپين غره په کڅونو کې پټ شو. پېښور د شاه محمود زوی کامران له خوا ونيول شو. کامران له دې امله د کندهار واکمن وټاکل شو. شاه شجاع بيا په پېښور بريد وکړ خو ماته يې وکړه. بل ځل شاه شجاع او کامران تر منځ د کندهار په

ارغستان کې نښته وشوه چې په پای کې شاه شجاع کاکړو ته په شا شو. دا ځل شاه شجاع خپل لښکر راټول کړ او یوه برخه یې د شاه زوی قیصر، مدد خان میر اخور باشي په مشرۍ د کامران مقابلې ته ولېږله او بله برخه یې په خپله د کابل په لور روانه کړه. په کابل کې د شاه محمود نه خلک ناراضه وو او په هغه یې زور راوړ او په بالاحصار کې یې ایسار کړ. د دغې وضعې نه شاه شجاع کټه پورته کړه په بېره د زرملي او التیمور له لارې کابل ته ننوت، بالاحصار یې ونیو او شاه محمود یې بندي کړ.

د شاه شجاع لومړی واکمني

شاه شجاع د شاه محمود د بندي کولو وروسته د کابل پر تخت کېناست. شیرمحمد خان بامیزای د پاچا وزیر و او د شاه شجاع په لومړۍ واکمني کې یې لور مقام او درناوی درلود. د بامیزو بل ځواکمن سړي محمد اکرم (امین الملک) هم د پاچا په دربار کې ډېر درنښت وموند او د وزارت کچې ته ورسید.

دغه وخت د کشمیر واکمن عبدالله خان الکوزي د ماليې د ورکولو نه غاړه غړوله او له دې امله شاه شجاع خپل وزیر شیرمحمد خان کشمیر ته ولېږه او د کشمیر څارن او حاکم یې وټاکه. وزیر شیرمحمد خان خپله دنده په بریالیتوب سره ترسره کړه او هیله یې درلوده چې د دغه خدمت په مقابل کې د کشمیر ناظم پاتې شي. خو د علي احمد کهزاد په اند پاچا له یوې خوا ده ته ارتیا درلوده او د بلې خوا دا وېره هم ورسره وه چې په راتلونکې کې ځواکمن نه شي او غاړه ونه غړوي. له دې امله چې شېرمحمد خان خپه نه شي د هغه زوی عطا محمد خان یې د کشمیر واکمن کړ او په خپله شېرمحمد یې راوغوښت.

دا کړی چې شاه شجاع په پېښور او وزیر شېرمحمد خان په کشمیر کې و، شاه زوی کامران او فتح خان په کندهار برید وکړ او له شاه زوی قیصر نه یې ونیو. شاه شجاع په بېره کابل ته ځان ورساوه او د دې خطر د تمبولو په موخه کندهار ته رهي شو. شیرمحمد خان د پاچا امر ونه مانه او پاچا یې د شاه زوی کامران او فتح خان زورورې مقابلې ته یوازې پرېښود. شیرمحمد بیا هغه وخت کابل ته راغی چې پاچا د ارغنداب په سیمه کې و. په کابل کې شیرمحمد بامیزې د پاچا وراره قیصر، چې نوی د کابل واکمن شوی و، د خپل تره په وړاندې ولساوه او دواړو په سند او کندهار کې د شاه شجاع د ناوزگارټیاوو کټه پورته کړه او خواجه محمد خان پولیزې یې د پېښور نیولو ته واستوه او پېښور یې د پاچا له واکمن گلستان خان اڅکزي نه په ډېره اسانۍ ونیو.

په کندهار کې شاه شجاع ډېره هڅه وکړه فتح خان او وروڼه یې پخلا کړي. هغه په

کندهار کې ورسره وليدل او فتح خان ته يې د سردارانو سردار لقب ورکړ او سردار دوست محمد خان ته يې يوه جوړه گران بيه پاچايي جامې، يو اس او يو لک روپۍ وروبخښلې او د پاچا او محمد اکرم امين الملک سره يو ځای د ماليو په راتولولو پسې سند ته لاړل. په سند کې د ماليې د تولولو په شېبه فتح خان د پاچا نه خپه شو خو شاه شجاع په خپله تېروتنه پوه شو او له سردار فتح خان نه يې بخښنه وغوښته او دوست محمد خان دويم ځل د خپل مشر ورور او خان د مرستې وړانديز پاچا ته وکړ او ټول د شاه زوی قيصر او وزير شېرمحمد خان تمبولو ته پام واراوه. په اسماعيل خان دېره کې فتح خان او ورور يې بيا خپل مخالفت څرگند کړ او کندهار ته رهي شول. شاه شجاع په منډه ځان کوهات ته ورسوه او له هغه ځايه پېښور ته لاړ او پېښور يې ونيو.

دا وخت د شاه شجاع پخوانی وزير شېرمحمد له شاه زوی قيصر سره له کابل نه پېښور ته خان رسولی و. په پېښور کې د شېرمحمد خان او پاچا د ځواکونو تر منځ جگړه وشوه، شېرمحمد خان ووژل شو، شاه زوی قيصر کابل ته وتښتېد او پېښور د شاه شجاع لاسته ورغی.

دا وخت شاه محمود د بالاحصار د بنديتون نه وتښتېد او فراه ته لاړ. فتح خان د اسماعيل خان دېرې نه کندهار ته راغی. فتح خان په کندهار کې شاه زوی محمد يونس د خان پلوي کړ او د خپل نايب ميرعلم خان نه يې ليرې کړ. فتح خان شاه محمود د فراه نه کندهار ته راوغوښت. ميرعلم خان د دغه پټ راز نه خبر شو او کابل ته لاړ او شاه شجاع يې له موضوع څخه خبر کړ. شاه محمود او فتح خان په کندهار کې د لښکر په تيارولو پيل وکړ. د کابل نه شاه شجاع د خپل لښکر سره د کندهار په لور وخوځېد. شاه محمود او د فتح خان لښکر د بېرو بڼې ځای پر ځای شو چې د شاه شجاع د لښکر نه يو گروه واټن درلود. دغه وخت د شاه محمود د لښکر نه نور محمد بادوزايي د خپلو پلويانو سره د شاه شجاع خوا ونيوله او د شاه محمود او فتح خان خوا کمزورې شوه او شاه شجاع کندهار ته په بري سره ننوت. شاه شجاع بېرته کابل ته ستون شو او د هغه ځايه پېښور ته لاړ. دا هغه وخت و چې د الفنسټون په مشرۍ د انگرېزانو پلاوی کوهات ته رسېدلی و او شاه شجاع ورته خبر شوی و. الفنسټون په پېښور کې د شاه شجاع سره وکتل او يو تړون يې ورسره لاسليک کړ.

کاکړ د دراني امپراتورۍ په اړه د مونتسټوارټ الفنسټون (Mountstuart Elphinstone) بې جوړې پند کتاب «د کابل سلطنت بيان» چې دوه ټوکه لري ژباړلی او سریزه يې نصرالله سوبمن ژباړلی ده. کاکړ د دغه مهم اثر په ژباړې سره د خپلې مورنۍ ژبې

د شتمنولو برسېره د پښتنو د تاريخ د پوهاوي دپاره لوی چوپړ کړی دی. الفنسټون په ۱۷۷۹ کال کې په سکات لنډ کې زيږيدلی او په ۱۷۹۶ کال کې د ختيځ هند په شرکت کې وټاکل شو. ده د خپل ماموریت زیاته برخه په بمبېي او پونه کې تېره کړې ده. الفنسټون په ۱۸۰۸ کال کې په دې مامور شو چې د افغانستان له واکمن شاه شجاع سره یو تړون لاسلیک کړي.

دا مهال داسې پېښې وشوې چې انگرېزان په انډېشنه کې شول چې ښايي ناپليون د روسانو په همکاري د پارس او افغانستان له لارې په هند يرغل وکړي. د ناپليون پلان دا و چې د عثماني ترکيې، قاجاري پارس په مرسته هندوستان ونيسي. ناپليون د دې موخې دپاره په ۱۸۰۷ کال کې جنرال کارډن د پارس پاچا ته ولېږه. جنرال کارډن ته لارښوونه شوې وه چې لومړی دا مالومه کړي چې هندوستان ته د شلو زرو فرانسوي لښکرو د لېږلو په صورت کې به د پارس د مرستيالو لښکرو شمېر څومره وي، د هغه د ځای په ځای کولو او د وړاندې تګ لارې، د اړينو موادو او اوبو ځايونه او د هغوی د تګ موسم مالومول و. دوهم دا چې دی باید د مرهټه وو سره هم لار ولري او د هغوی د ملاتړ درجه مالومه کړي. دريم دا چې نوموړی د فرانسې، عثماني ترکيې او فارس تر منځ درې گوني اتحاد جوړ کړي. کاکړ وايي چې که څه هم د دغه پلان پلي کول ناشوني و خو بيا هم انگرېزان د هندوستان د خلکو نه په وېره کې وو، د دغه پلان په ضد يې په متقابلو دفاعي ترتيباتو لاس پورې کړ. د دغو ترتيباتو نه يو هم ډپلوماتيک فعاليتونه وو، چې د هغو پر بنسټ سياسي پلاوي د پنجاب د سيکانو پاچا رنجيت سنگ، د افغانستان د واکمن شاه شجاع او د پارس قاجاري دربار تهران ته واستول. د دغو پلاوو موخه يوه وه او هغه دا چې د دغو ملکونو د واکمنو په مرسته او اتحاد د فرانسې د شوني خطر مخه ونيسي. دغه مهال په افغانستان کې کورنۍ شخړې گړندی روانې وې. د پاينده خان زامنو د وزير فتح خان د وژنې وروسته د سدوزيو د پاچايي د ړنگولو دپاره هلې ځلې کولې.

دې انډېشنې د انگرېزانو له پاره د افغانستان اهميت نور هم لوړ کړ او د افغانانو سره يې د يوه داسې تړون لاسلیک ته اړتيا وليدله چې د هغې پر بنسټ افغانان هېڅ بهرنی ځواک پرې نه ږدي چې د افغانستان له لارې په هندوستان بريد وکړي. نو الفنسټون د يوه لوی ډپلوماتيک پلاوي په مشرۍ د ۱۸۰۹ کال په پسرلي کې پېښور ته چې د درانيو پاچاهانو د ژمي پلازمينه وه، ورسېد او د مارچ په پنځلسمه يې له شاه شجاع سره د هغه په دربار کې وليدل او د ښايسته خبرو اترو وروسته د شاه شجاع او الفنسټون تر منځ تړون لاسلیک شو. کاکړ وايي چې په دغه تړون کې هم لکه په وروستيو نورو تړونونو کې چې د

بریتانې او افغان واکمنو تر منځ لاسلیک شوي وو، افغاني واکمن تیرایستل شول. دغه تړون په یوې ناسې جملې پیل شوی، چې گواکې فرانسه او پارس د افغانستان پر ضد سره یو شوي دي، خو دغه رښتیا نه و. په دغه تړون کې بریتانې د افغانستان سره ژمنه وکړه چې د دغسې اتحاد د مخنیوي له پاره به په کلکو اقداماتو لاس پورې کړي. برتانې ژمنه وکړه، چې د دغه کار د ترسره کولو دپاره مالي لگښت تر خپلې وسې پورې په خپله غاړه واخلي. په تړون کې دا هم ویل شوي و چې «ښایي د بیلټون دیوال د دوی تر منځ لرې شي او دوی ښایي په هېڅ شان د یو او بل په چارو کې کوټې ونه وهي او ښایي د کابل پاچا هېڅ فرانسوي ته اجازه ور نه کړي، چې د ده په قلمرو کې ننوځي.» ۲۴۴. درې ورځې وروسته دغه تړون په کلکته کې د گورنر جنرال له خوا لاسلیک شو، خو د هغه د قلم رنگ لا وچ شوی نه و، چې شاه شجاع په نمله کې ماتې وخوړه او واکمني یې خپل ورور شاه محمود ته بایلووه. د دې پېښې سره د پېښور تړون د تل دپاره د اعتبار نه ولوېد، خو د دغه دپلوماتیک سفر تلپاتې پایله دغه کتاب دی چې لنډه رڼا ورباندې اچول کېږي...

د الفنستون په پلاوي کې ملکي مامورین، انجنران، د سروې چارپوهان او پوځي افسران شامل وو. د سورو او پیاده سرتېرو سره یې ټول شمېر څلور سوه ته رسېده. دا پلاوی په دې دومره لوی و چې لومړی انگرېزانو غوښتل چې د افغانستان پاچا تر اغېز لاندې راوړي. دوهم دا چې د دغه پلاوي له لارې دوی د افغانستان د حکومت او ولسونو په اړه مالومات ترلاسه کړي. دغه پلاوي په پېښور کې شپږ میاشتې تېرې کړې. د الفنستون د مالوماتو سرچینې بیلې بیلې وې. د ده د مالوماتو لومړی سرچینه شخصي کتنې وې. په پېښور کې د هر قوم او ولس عادي او لوړ خلک اوسېدل او الفنستون په خپله د دغو کسانو سره اوږدې لیدنې کتنې وکړې. د ده د مالوماتو دوهمه سرچینه دراني سرداران وو، چې له دوی سره یې په رسمي او ځانګړي ډول مجلسونه او مرکې وکړې. د نوموړي د مالوماتو دریمه سرچینه جاسوسان وو. ده د افغانستان لرې او نږدې سیمو ته د کافرستان او هزاره جاتو په ګډون راپورچیان واستول. د ده د مالوماتو څلورمه سرچینه لیکلي کتابونه وو. د راغونډو شویو مالوماتو پر بنسټ ده حکومت ته یو اوږد راپور برابر کړ او بل یې «د کابل سلطنت بیان» کتاب دی.

کاکړ وايي چې الفنستون په دغه کتاب کې د یوه کره پوه په توګه د خپلو مالوماتو کره توب ته څیر شوی، ټول یې چاڼ کړي او هغه یې تېرته غوره کړي، چې د ده په نظر ورته سم ښکاره شوي دي. په دې ډول ده هغه څه ته چې د هر علمي اثر بنسټ جوړوي، پام کړی او خپل اثر یې باوري او مستند کړی دی. هغه شرایط چې الفنستون د هغو په رڼا کې

دغه کتاب ليکلی، د ده د ليکنو له افاقي توب سره يې مرسته کړې ده. په هغه وخت کې د افغانانو او انگرېزانو تر منځ ټکرونه پېښ شوي نه وو، دواړه ولسونه د يو او بل نه لرې پراته وو او د دوی حکومتونو د بيلو بيلو دليلونو له مخې يو د بل سره دوستي غوښته او انگرېزي حکومت دې ته اړتيا درلوده چې په راتلونکې کې د افغانانو سره د بريالي چلند د کولو له پاره د افغانستان ټولنه، ولسونه، دولتي جوړښت او کلتور چې څنگه وو، هغسې وپېژني. د ده کتاب انتقادي او متوازن دی.

کاکړ وايي چې د دې کتاب بله ځانگړتيا دا ده چې دا کتاب جامع دی. په دغه کتاب کې حکومتي تشکيلات، د ټولني ټولې ډلې لکه د دربار اشراف او سرداران، خانان، ځمکه وال، بزگران، اجوره کاران، شپانه، ښځې او کسبگر، د دوی د سلوکونو، لوبو، کورونو، ژبو، کلتورونو او تاريخ سره بيان کړي دي. د افغانستان ولسونه په قومي لحاظ هم شرح شوي دي. په دغه اثر کې د افغانستان د سدوزيو د دورې سياسي، اقتصادي، ټولنيز او کلتوري عمومي انځور په داسې جامع ډول کښل شوی دی چې په هېڅ ژبې کې د ننني افغانستان او په ځانگړې توگه د ختيځ افغانستان په اړه په داسې جامع ډول نه دی کښل شوی. دغه کتاب لومړی اثر دی چې افغانستان يې لوېديځې نړۍ ته ورپېژندلی دی.

دا مهال چې الفنسټون د پېښور نه روان شو په کندهار کې ميرعلم خان د شاه محمود او فتح خان په لوري واوښت او هغوی ته يې بلنه ورکړه چې کندهار ته ورشي. شاه محمود او فتح خان د ميرعلم خان په مرسته کندهار ونيو. شاه محمود فتح خان د خپل وزير په توگه او ملا محمد سعيد يې د قاضي القضاات په توگه وټاکل. شاه محمود او فتح خان کابل ونيو او د پېښور د نيولو په نيت هغې خوا ته وخوځېدل او په نمله کې يې شاه شجاع ته ماتې ورکړه او شاه شجاع د اټک په لور وتښتېد او پېښور د شاه محمود په لاس ورغی.

د شاه محمود دوهم ځل واکمني

شاه محمود دوهم ځل د کابل پر تخت کېناست او وزير فتح خان ته يې د هېواد مهمې چارې وسپارلې او د ټولو چارو اختيار يې ورکړ. هغه د خپل وزارت کار د خپلې پوهې له برکته او د شاه محمود له بې خبرۍ د امارت سټې ته ورساوه. هغه خپل وروڼه د هېواد په بيلو بيلو ولايتونو کې په مهمو دولتي دندو وگومارل. سردار محمد اعظم خان يې د پېښور او نواب جبار خان يې د دېره جاتو واکمنان کړل. په غزني، کندهار، جلال اباد، لغمان، کابل او کوهستان کې يې نور وروڼه په مهمو دندو وگومارل.

دغه وخت بلوچ خان اخکزی، يعی خان باميزای، دلاسه خان اسحقزای او نور راولپنډی ته شاه شجاع ته ورغلل او هغه د دېره جاتو د نيولو نيت وکړ. خو د شېر محمد خان باميزي زوی چې د خپل ورور اعطا محمد خان د کشمير واکمن نه خپه و، شاه شجاع ته ورغی او شاه شجاع يې خوشاله کړ او زر سواره يې له کشمير نه راوغوښتل او د شاه شجاع د لښکر سره يو ځای شو. شاه شجاع د دېره جاتو پر ځای د پېښور په لور روان شو او پېښور يې ونيو او سردار محمد اعظم کابل ته وتښتېد.

په کابل کې شاه محمود سردار محمد اعظم بيا د پېښور د نيولو په موخه د يوه لښکر سره ولېږه. سردار محمد اعظم خان په نکال کې د شاه شجاع ځواکونو ته ماته ورکړه او شاه شجاع بېرته راولپنډی ته وتښتېد او سردار محمد اعظم پېښور ته ننوت. څه وخت وروسته ناراضه خانانو شاه شجاع وهڅاوه چې په پېښور بريد وکړي خو هغه ناکام بېرته راولپنډی ته ستون شو. يو کال وروسته بيا ناراضه خانانو د شاه شجاع نه وغوښتل چې په پېښور بريد وکړي. شاه شجاع دا ځل بريالی شو او پېښور يې ونيو او سردار محمد اعظم خان د کوهابټ له لارې کابل ته وتښتېد.

شاه شجاع غوښتل چې کابل ته لاړ شي خو په پېښور کې اعطا محمد خان د کشمير ناظم د کسانو د يوې دسيسې په ترڅ کې بندي او کشمير ته يوړل شو او هلته بندي شو. شاه محمود وزير فتح خان د دېرش زره پوځ سره کشمير ته ولېږه چې له اعطا محمد د بند نه شاه شجاع ايله کړي تر څو په لاهور کې د خپلې کورنۍ سره واوسي.

وزير فتح خان پېښور ته لاړ او د هغه ځايه پنجاب ته لاړ او د رنجيت سره يې هوکړه وکړه چې رنجيت سنگ به د فتح خان ملاتړ په پوځ سره کوي او په بدل کې به ده ته د کشمير د مالي دريمه برخه ورکوي. وزير فتح خان د خپل لښکر برسېره د رنجيت سنگ نه هم د پوځ مرسته ترلاسه کړه او د اعطا محمد نه يې کشمير ونيو. هلته يې نظم راوست او خپل ورور سردار محمد اعظم يې د کشمير د واکمن په توگه وټاکه او شاه شجاع لاهور ته لاړ چې هلته د خپلې کورنۍ سره يوځای شو.

څه وخت وروسته سردار محمد اعظم د کشمير د مالي له ورکولو نه سرغړونه وکړه. دا ځل بيا وزير فتح خان د خپل لښکر سره کشمير ته لاړ او هلته يې د ورور سره موضوع هواره کړه. سردار محمد اعظم د کشمير د واکمن په توگه پاتې شو او وزير فتح خان د کشمير د مالي سره کابل ته راستون شو.

وزير فتح خان چې کابل ته راستون شو نو شاه محمود دنده ورکړه چې هرات ته د يوه لښکر سره لاړ شي. خبره داسې وه چې فيروزالدين خپل زوی شاه زوی ملک حسين د خپل

ناظر حسن خان سره له هرات نه کابل ته ولېږه چې د شاه محمود نه مرسته وغواړي تر څو غوريان د ايران د لاسه خلاص او هم د دې وروسته د هرات مالیه د ايران پاچا ته ورنه کړي. شاه محمود چې د هرات د نيولو په فکر کې و دا موقع ښه وگڼله او د ۱۲۳۲ کال په پای کې وزير فتح خان د دېرش زره سوارو سره هرات ته ولېږه. وزير فتح خان چې فراه ته ورسېد حاجي فيروزالدين هرات ته د هغه ورتگ اړين ونه ليدو او د هغه د ښه راغلاست له پاره د ښار نه د باندې راغی او د غوريان نيول يې لومړيتوب وگاڼه. وزير فتح خان څو ورځې وروسته چې خلک يې د پيسو په ورکولو سره خپل کړل حاجي فيروزالدين يې په دې پلمه د ښار نه د باندې راوغوښت چې ورسره مشوره کوي. کله چې فيروزالدين د خپلو يو شمېر مشرانو سره راغی هغه يې ونيو. خپل وروڼه سردار دوست محمد خان او سردار کهندل خان يې ښار ته ولېږل چې د فيروزالدين خزانه او شتمني ترلاسه کړي. د فيروزالدين زوی شاه زوی قاسم د مال نه لاس ومنيځه او وتښتېد. وروسته له هغې چې د فيروزالدين او د هغه د زوی ټوله شتمني ضبط شوه شاه زوی جگړې ته راوړاندې شو، څو ځايه ټپي او بيا ونيول شو. وروسته وزير فتح خان د هرات ښار ته ننوت او حاجي فيروزالدين يې د خپلو ښځو او اولادونو سره کندهار ته ولېږه. سردار کهندل خان يې د غوريانو د نيولو له پاره وټاکه. شاه محمود او کامران چې د هرات د نيولو نه خبر شول د کابل نه د هرات په لور وخوځېدل. سردار دوست محمد خان د فتح خان د وېرې محمد اعظم خان ته کشمير ته لار په دې چې هغه د فيروزالدين د کورنۍ گانې پټې کړې وې او هم يې د حرم د ښځو سره بد چلن کړی و. کله چې دوست محمد خان کشمير ته ورسېد هلته محمد اعظم خان بندي کړ.

د مخه مو يادونه وکړه چې وزير فتح خان سردار کهندل خان يې د غوريانو د نيولو له پاره وگوماره او په خپله يې د ايران د نيولو پرېکړه وکړه. کله چې د ايران پاچا فتح علي شاه ته دا خبر ورسېد هغه سمدلاسه د لښکر په برابرولو لاس پورې کړ او شاه زوی حسن علي ميرزايي يې د وزير فتح خان د مقابلې له پاره واستوه. د وزير فتح خان او حسن علي ميرزايي لښکرې په کهسان کې سره مخامخ شوې او سخته جگړه وشوه. د ايران پوځ د افغان جنکيالو په وړاندې مقاومت ونه کړای شو او د تېښتې لار يې ونيوه. په دې وخت کې ناڅاپه د وزير فتح خان په شونډې او خوله باندې گولی ولگېده او ټپي شو. فتح خان بېرته هرات ته راوگرځېد او غوښتل يې چې لښکر تهيه کړي او ايران ونيسي. خو په هرات کې داسې يوه بدمرغه پېښه وشوه چې هر څه يې بدل کړل.

د مخه مو يادونه وکړه چې شاه محمود او کامران د کابل نه هرات ته وخوځېدل. شاه

محمود خپل زوی کامران ته امر وکړ چې مخته لاړ شي او خان هرات ته ورسوي او په خپله شاه محمود د سيستان د وضعې د سمون په موخه يو څه وخت په فراه کې پاتې شو او بيا هرات ته لاړ. خو کامران د مخه تر دې چې پلار يې هرات ته ورسېږي شاه زوی حسن علي ميرزايي ته پيغام واستوه چې وزير فتح خان د دولت د اجازې پرته د تاسو سره جگړه کړې ده. شازوی د کامران استازی ستايلی او ورته يې ويلي چې وزير فتح خان دې مشهد ته ورولېږي يا دې په خپله د هغه سترکې وباسي. کامران چې د وزير فتح خان سره کينه درلوده هغه يې روند او بندي کړ. د فتح خان وروڼه سردار شيردل خان او سردار کهندل خان کندهار ته وتښتېدل او د فتح خان وروڼو د خپل ورور د غچ اخېستلو په نيت ملاوې وتړلې.

سردار محمد اعظم خان د کشمير واکمن د خپل ورور د غچ د اخېستو په نيت د کشمير نه د پېښور د نيولو په نيت هغې خوا ته وخوځېد. سردار محمد اعظم خان پېښور ونيو او د پېښور نه د کابل په لور وخوځېد. خو سردار دوست محمد خان لا د مخه کابل ونيو. شاه محمود او کامران د کابل د نيولو له پاره د کندهار نه د کابل په لور وخوځېدل. دوی په غزني کې وزير فتح خان په ډېر بد حالت سره وواژه او هلته خاورو ته وسپارل شو. د شاه محمود دېرش زره سواره په چاراسيا کې واورول. خو د هغه ځينو مهمو کسانو د دوست محمد خان خوا ته واوښتل. شاه محمود او کامران په پټه د شپې وتښتېدل او په سهار يې پوځيان په غير منظم ډول پسې وتښتېدل. شاه محمود او کامران غوښتل کندهار ته لاړ شي خو هلته د فتح خان وروڼو سردار شيردل خان او سردار کهندل خان کندهار نيولی وو. شاه محمود او کامران چې د کندهار د نيولو نه خبر شول د دهاود له لارې هرات ته وتښتېدل. په دې ترتيب د هرات پرته ټول افغانستان د فتح خان د وروڼو په لاس کې ولوېد.

پايله

کاکړ وايي چې په احمدشاهي دولت کې خپله د پاچا احمدشاه بابا شخصيت د عمومي انډول په ساتلو کې تر هر څه ډېر اغېزمن و، له دې امله د ده د واکمنۍ په وخت کې د څو دسيسو پرته د هغه پر ضد پاڅون ونه شو. خو د ده ځای ناستو دغه انډول ونه شو ساتلی او د دې په پايله کې احمدشاهي دولت ولړزېد. همدارنگه لکه چې د مخه مو يادونه وکړه په احمدشاهي دولت کې دراني سردران د زياتو جنګي، سياسي او مالي امتيازاتو په ترلاسه کولو سره په يوه ممتازه شتمنه اشرافي درباري طبقه بدل شول او دومره ځواکمن

شول چې دولت يې گواښه. دا گواښ هغه وخت ښکاره شو چې دراني سردران خيټي د تيمور او خيټي د سليمان په خوا ودرېدل. که څه هم تيمورشاه د درانيو سردرانو او نورو پښتنو پاڅونونه د بهرنيو تېريو په گډون وځپل خو د امپراتورۍ دولت د ده د واکمنۍ پر مهال د زوال په لور روان او د ده د زامنو په وخت کې توتې او د سدوزو کورنۍ د نولسې پېړۍ په لومړۍ څلورمه کې نسکوره شوه. بل دا چې پاچايانو د ډېرو ښځو نه زيات زامن درلودل او دغو وروڼو به په خپلو منځو کې د واک پر سر جگړې کولې او د ځای ناستي کوم ټاکلی پرنسيپ شتون نه درلود او د جگړو له پاره لار پرانېستې وه.

د کاکړ په وينا د دراني دولت د ستونزو يو بل لامل دا و چې احمدشاه بابا له ټول درايټ سره سره ونه شو کړای د دولت له پاره پوره عايدونه تهيه کړي او لکه چې د مخه مويادونه وکړه د دولت لگښتونه د جگړو د اولجو او باجونو نه برابرېدل چې د امپراتورۍ د سيمو نه لاس ته راتلل. ځنگه چې د افغانستان مالي سرچينې کافي نه وې او د امپراتورۍ د سيمو نه نامنظمې او لږ دوامه وې دغې وضعې د احمدشاهي دولت بنسټ لږز اوډه او هغه سوکه سوکه احساس شو. د ده د اسلافو په وخت کې د امپراتورۍ سيمې په ځانگړې توگه پنجاب او کشمير چې د هغو نه زيات عايد لاس ته راتلل د پرديو په لاس کې ولويدل او افغانستان د سختې مالي ستونزې سره مخامخ شو. دا لامل و چې د احمدشاه بابا نه وروسته ښارونو وده ونه کړه. برسېره پر دې د بهرنيو هېوادو فشارونو په ځانگړې توگه د نولسې پېړۍ په پيل سره وړانوونکې اغېزې وشيندلې چې په پای کې د احمدشاهي کورنۍ واکمني په ۱۸۱۸ کې د منځه لاړه.

يوولسم څپرکی

د محمد زيواکمني

د افغانستان په ختيځ کې د پنجاب د سيکانو دولت او د افغانستان په لوېديځ کې د پارس د قاجاريانو دولت د افغانستان په وضع کلک اغېز وشينده. د نولسمې پېړۍ په پيل کې انگرېزانو د شمال لوېديځ په لور د نفوذ سيمې ته پراخوالی ورکړ او د ستلج رود غاړې ته راوړسېدل او خپله پوله يې د سند او پنجاب سره ولگوله.

د افغانستان په چارو کې د انگرېزانو لاسوهنه د اتلسمې پېړۍ په پای کې د زمان شاه د واکمنۍ پر مهال پيل شوه کله چې د هند مسلمانو واکمنو د مغولو د امپراتور په گډون د ده نه غوښتنه کوله چې د مرهټه وو په وړاندې د دوی سره مرسته وکړي.

زمان شاه نيت درلود د خپل نيکه غونډې په هند بريد وکړي. انگرېزانو دغه وخت د ناپليون له خوا د پارس او افغانستان تر منځ د اتحاد په پايله کې په هند باندې د بريد نه وېره درلوده. د دغه گواښ په وړاندې انگرېزانو تدبيرونه ونيول. لومړی تدبير دا و چې د پارس سره اتحاد وکړي چې له مخې يې په هند باندې د ناپليون د يرغل مخه ونيسي، دوهم دا چې د افغان پاچا له خوا د هند د نيولو د پروژې مخنيوی وکړي. د پارس دولت سره دوستۍ ته رسېدل دغو دواړو موخو ته په رسېدلو کې اساسي رول درلود.

د پارس له لوري گواښ د هند په لور د زمان شاه پلان له ناکامۍ سره مخامخ کړ. د پارس حکومت د زمان شاه ورور شازوی محمود لمساوه چې د زمان شاه پر ضد پورته شي.

د زمان شاه د نسکورېدو وروسته د لنډ مهال له پاره د برتانوي هند تسلط ته گواښ له منځه ولاړ. خو کله چې ناپليون د مصر له لارې په خپل پرمختگ کې ناکامه شو، زر هغه د پارس او افغانستان سره د اتحاد له لارې په هند باندې د بريد پلان تر لاس لاندې ونيو. همدا وخت و چې برېتانيا په ۱۸۰۹ کال کې د پارس، افغانستان او پنجاب سره د تړونونو په لاسليک کولو سره د فرانسې د يرغل گواښ د لنډ مهال له پاره د منځه يووړ. په ۱۸۱۲ کال کې په روسيې د ناپليون يرغل او د هغه ماتې د تل له پاره په هند کې د برتانيې تسلط ته گواښ د منځه يووړ. خو برتانوي هند ته دغه گواښ د نولسمې پېړۍ په پيل سره د روسيې له لوري د پراختيا له امله د اوږدې مودې په گواښ بدل شو. دغه گواښ لومړی په پارس

کې د روسيې د نفوذ له امله او وروسته په منځني اسيا کې په خاناتو د روسيې د تسلط له امله واقعي شو چې په هند کې يې د بریتانيې د تسلط په لوري سترگې نيولې وې. په ۱۸۱۳ کال کې د روسيې او پارس تر منځ د گلستان تړون له مخې ننني اذربايجان، داغستان او گرجستان د روسيې په امپراتوري کې شامل شول. بریتانيې په ۱۸۱۴ کال کې د پارس سره تړون وکړ او ژمنه يې وکړه چې په پارس باندې د کوم اروپايي هېواد د يرغل په صورت کې به پارس ته پوځ لېږي يا به دوه لکه تومانه سبسيدي ورکوي. خو کله چې روسيې په ۱۸۲۶ کال کې په پارس يرغل وکړ چې دوه کاله اوږد شو او پارس ماته وخورله او روسيې د ترکمانچي د تړون له مخې ارمنستان او ناخچيوان ترلاسه کړل، بریتانيې د ۱۸۱۴ کال د تړون له مخې خپلې ژمنې پوره نه کړې او کمزوری پارس يې د روسيې د يرغل په وړاندې يوازې پرېښود.

بریتانوي هند ته گواښ د دوو لارو، چې يوه لار يې د امو د رود نه د تېرېدلو د بلخ، کابل او پېښور نه او بله يې د هرات او کندهار نه چې د افغانستان نه تېرې شوې دي، شونې و. دغه وخت انگرېزانو د سند د اميرانو سره بڼې اړيکې ټينگې کړې وې، د بهاولپور خان سره يې د زره له کومې اړيکې درلودې. د پنجاب غښتلي رنجت سنگ څلورېست زره روزل شوی پوځ او ښه لويه توپخانه په واک کې درلوده. په افغانستان کې هغه وخت چې هېواد د واک په ورو توتو وېشل شوی و امير دوست محمد خان غښتلی دريځ درلود. امير دوست محمد خان په ۱۸۳۴ کال کې شاه شجاع ته په کندهار کې په ماتې ورکولو سره خپل دريځ ټينگ کړ. خو سيکانو د شاه شجاع په وړاندې کندهار ته د امير دوست محمد خان د دغه تک نه گټه پورته کړه او پېښور يې ونيو. انگرېزانو دغه وخت کوښښ کاوه چې خپل گاونډي هېوادونه يو د بل سره په ټکر کې وساتي.

د امير دوست محمد خان لومړی واکمني

امير دوست محمد خان د دې له پاره چې د پېښور د نيولو له پاره د خلکو ملاتړ ترلاسه کړي خان يې اميرالمومنين اعلان کړ. امير لس زره لښکر د پېښور د نيولو په نيت هغه لور ته ولېږه او سيکانو هم نه غوښتل چې د قهرجنو غازيانو په وړاندې ودرېږي نو يو امريکايي يې د منځگړي په توگه د دې مسلې د سوله يز حل له پاره وړاندې کړ. په دې وخت کې رنجيت سنگ په دې بريالی شو چې د امير يو ناسکه دښمن ورور سلطان محمد خان ته رشوت ورکړي او د کابل پوځ يې تس نس کړو او امير په مات زره کابل ته راستون شو.

په ۱۸۳۶ کال په پای کې جنرال هریسنګ د یوه برید په ترڅ کې د خیبر په سوویلي خوله کې یو وروکی، خو ستراتیژیک کلی جمرود ونیو. د ۱۸۳۷ کال د اپریل په ۳۰مه افغان پوځ د سردار محمد اکبر تر مشرۍ لاندې سیکانو ته ماتې ورکړه او جنرال هری سنګ یې وواژه. خو کله چې د سیکانو مرستې ته نور پوځ راورسېد افغان پوځ ونه کړای شول چې د پېښور په لور پرمختګ وکړي او بېرته راوګرځېد. دوه کاله وروسته رنجیت سنګ مړ شو او سیکانو د واک پر سر یو د بل سره مخالفت پیل کړ چې په پایله کې پنجاب په ۱۸۴۹ کال کې د انګرېزانو لاس ته ورغی.

په ۱۸۳۰ کلونو کې د پارسیانو پلان چې د روسیې له خوا یې ملاتړ کېده دا و چې د ختیځ په لوري پراختیا ومومي. په دې کې شک نه شته چې روسانو د شاه په پرېکړه کې نفوذ درلود چې په خراسان یرغل وکړي او د هرات په لور پرمخ ولاړ شي. دوی پارسیان هڅول چې خپلې مخکې چې روسانو ورڅخه نیولې وې په خراسان او هرات باندې د یرغل له لارې تلافی کړي.

په ۱۸۳۵ کال کې د برتانې د بهرنیو چارو وزیر پالمرسټون د خپل نماینده سر هنري ایلز له لارې د پارس پاچا ته خبرداری ورکړ چې د افغانستان په وړاندې جګړه ونه کړي. خو دغه خبرداری له لږ پام ونه شو. ځینو روسي امپریالستانو هغه مهال پارس هڅاوه او ملاتړ یې کاوه چې د ختیځ لوري ته خپلې مخکې پراخي کړي او دا کار یې په ستره لویه کې د یوې موقع په توګه کتلو. پارسیانو د روسیې په ملاتړ په افغانستان یرغل وکړ او هرات یې کلابند کړ. د روسي افسرانو د وینا سره سم د پاچا د لښکر شمېر څلوېښت زره تنو ته رسېده چې ۶۰ ماشینګن یې درلودل. په دغه لښکر کې د روسانو یو کنډک چې په پارس کې د روسي مهاجرینو له خوا جوړ شوی و هم شتون درلود. ۲۴۵

په هرات کې افغانان د پارس د یرغل په وړاندې ټینګ ودېدل. وزیر یارمحمد خان د پارس پاچا غوښتنې ته چې تسلیم شي غوڅ ځواب ورکړ. پاچا د هرات کمپاین د ۱۸۳۶ کال تر پسرلي پورې وځنډاوه په دې چې ده هیله درلوده چې دا مسئله به په سوله یز ډول د خبرو له لارې هواره شي.

په دغه بحراني حالت کې چې افغانستان د دواړو خواوو نه د زیات فشار لاندې و افغان شاه زویان د دې پرځای چې د ګواښ په وړاندې کد درېځ ونیسي په دې هڅه کې شول چې دوی بیل بیل د بهرنیو قوتونو سره یو د بل په زیان اړیکې ټینګې کړي. په ختیځ کې سلطان محمد خان څو ځله د سیکانو سره معامله وکړه چې په کابل کې د خپل ورور امیر دوست محمد خان ځواک کمزوری کړي. په کندهار کې کنډل خان او د هغه سکه ورونو

د امير دوست محمد خان مشري نه منله. په لوېديځ کې د واک نه لرې شوی سدوزاېې کامران د احمد شاه بابا لمسی د بارکزي واکمن يو زور دښمن پاتې شو.

د افغانستان دغې وضعې د دوو سيالو امپراتوريو د ستراتيژۍ په جوړولو باندې اغېز درلود. د هند برتانوي حکومت هرات د خپلې ساتنې د باندینې پولې په څېر ګاڼه او خان يې اړ کتلو چې بايد په سياسي توګه او که اړينه شوه په پوځي توګه ورته ساتنه وکړي. په هرات باندې د روسيې- پارس يرغل په هند کې د برتانوي کټې ګواښلې. له دې امله د برتانوي حکومت د برنس پلاوی کابل ته واستوه چې د امير دوست محمد خان سره جدي خبرې وکړي.

په ۱۸۳۶ کال کې امير دوست محمد خان اوکلند ته چې نوی د هند ګورنر جنرال ټاکل شوی و د مبارکې پېغام واستوه او دا شکايت يې وکړو چې سيکانو د افغانستان په سيمو يرغل کړی او د اوکلند نه يې وغوښتل چې د دې مسلې په هوارېدو کې لاس وهنه وکړي. هغه اوکلند ته دا هم جوته کړه چې د سند رود به زموږ او سيکانو تر منځ پوله وي او د هغو سيمو په بدل کې چې موږ ته يې راپرېږدي موږ به په کشمير باندې د دوی واکمني په رسميت وپېژنو. اوکلند په ځواب کې وليکل چې د برتانوي هند حکومت د خپلواکو هېوادو په کورنيو چارو کې لاسوهنه نه کوي. خو درې کاله وروسته اوکلند په خپله په دغې پالېسۍ تېرې وکړ او وېې غوښتل چې يو نسکور شوی شاه زوی شاه شجاع د امير په ځای وټومي. ګورنر جنرال امير دوست محمد خان ته وليکل چې دی يو پلاوی درلېږي چې د تاسو سره د دوه اړخيزو سوداګريزو اړيکو په اړه خبرې وکړي. د پلاوي مشر الکساندر برنس و چې د مخه يې د خپل څلور کلن سفر په مهال کابل ليدلی و او د کابل د اشرافو سره يې ښې اړيکې جوړې کړې وې. که څه هم د ده ماموريت سوداګريز ښودل شوی دی خو د ده ماموريت سياسي و چې د هېڅ شي د کړلو واک ورکړ شوی نه و. برنس په ۱۸۳۷ کال د سپتمبر په ۲۰ مه نېټه کابل ته راورسېد چې د امير، د هغه د وزيرانو او د هغه د ورور عبدالجبار خان له خوا يې تود هرکلی وشو. د برنس د ماموريت ناکامي مخکې له مخکې جوته وه په دې چې ګورنر جنرال برنس ته دا واک نه و ورکړی چې هېڅ ډول سياسي پرېکړه وکړي، د هر شي غوښتنه وکړي، خو د هېڅ شي ژمنه کړای نه شي.

امير دوست محمد خان او د هغه وزيرانو د لومړي پيل نه انګرېز مامور ته دا ښکاره کړه چې د هر ډول خبرو اترو موضوع پېښور و. د افغانانو غوښتنه دا وه چې د پارس د تېرې په وړاندې د کابل او کندهار د ساتنې په موخه دې برتانيا ژمنه وکړي او د سيکانو نه دې پېښور بېرته افغانستان ته ورکړل شي. د برنس د اوو مياشتو د اوسېدو په يون کې

امير هره شونې هڅه وکړه چې د گورنر جنرال باور ترلاسه کړي او د برتانيې د امن پالېسۍ کلک ملاتړ د دې لارې وکړي چې د پارس حکومت او د روسيې د نماينده سره هر ډول اتحاد رد کړي. هغه د کابل د امير په حيث د انگلستان له خوا د ده د حکومت په رسميت پېژندنې او سېسېدي په بدل کې ژمنه وکړه چې د هرات د خلاصون له پاره به يو پوځ ولېږي او د انگلستان يو وفادار او ټينگ متحد به پاتې شي.

په دې وخت کې درې اسامي پرمختگونو د افغانستان د امير او د برتانيې د حکومت تر منځ په ډپلوماتيکو تماسونو يو اوږد سيوري وغور او چې برتانيا يې په افغانستان کې د رژيم د بدلون د ملاتړ له پاره په افغانستان باندې تيري ته بوتله. لومړی دا چې په هرات باندې د روسيې په مرسته د پارس يرغل، دوهم دا چې د روسيې ډپلوماتيک پلان چې افغانستان د روسيې- پارس کمپ ته کښې کړي، دريم دا چې په افغانستان کې د رژيم د بدلون په اړه د برتانيې د پالېسۍ بدلون.

د هرات کلابندي

سره له دې چې په تهران کې د برتانيې وزير په افغانستان باندې د يرغل کلک مخالفت کاوه د ۱۸۳۷ کال په اوږو کې د پارس پاچا محمدشاه قاجار د روسيې په ملاتړ د هرات د نيولو په موخه خپل ۳۰ زره پوځ واستوه. په هرات کې کامران او د هغه وزير يارمحمد خان امر وکړ چې د هرات د چاپېر سيمو نه دې ټول فصل، غله او واښه راټول او ښار ته راوړل شي او پاتې برخه يې د منځه يوړل شي داسې چې په چاپېرو بڼو کې د مېوې ونې پرې کړی شي په دې چې د اوږدې کلابندۍ په موده کې دښمن د ځايي زېرمو نه بې برخې شي. د غوريانو د نيولو وروسته د پارس پوځ په درې ليکو کې هرات ته روان شو. د پارس پوځ او د هغه د ملاتړي تر منځ د همغږي او په خپله د پارس د پوځ په ليکو کې پېوستون شتون نه درلود. خو د افغانانو دفاع فعاله وه. په واقعيت کې د نومبر په ۲۳ مه د هرات کلابندي پيل شوه چې زر په پوره اندازه د عملياتو کچې ته پورته شوه داسې چې د ورځې به د پارس توپچي قواوو د هرات د ښار په دفاع د توپو کوزارونه کول او د شپې له خوا به هراتي سوارو د ښار په چاپېر د دښمن په ليکو بريدونه کول. د پارس په وړاندې د مرستې په موخه د کامران په غوښتنه د هزاره گانو او ازبکو يو پوځ د ميمې، شبرغان او سرپل نه هرات ته راغی او په دښمن يې بريد وکړ.

دا وخت يو انگرېز جگړن پوتينجر چې د برتانيې پټ نماينده و او د منځني اسيا په سفر روان و هرات ته ورسېد. نوموړي په هرات کې افغان مشرتابه ته ځان وروپېژانده او

خپل خدمت يې ورته وړاندې کړ. د پوتینجر نوم د هرات د بريالی دفاع سره تړل شوی دی. د ۱۸۳۸ کال په اپرېل کې جان نیل په تهران کې د برتانيې سفیر د شاه کمپ ته ورسېد چې د پارسیانو او افغانانو تر منځ د سولې منځگړیتوب وکړي. جان نیل د هرات په ښار کې د کامران او وزیر یارمحمدخان سره وکتل او بیا د پارس کمپ ته ستون شو. په دې وخت کې د روسيې سفیر کونت سیمونیچ د پارس کمپ ته راغی. دغه وخت محمدشاه قاجار د خپلو ژمنو نه په شا شو چې سولې ته یوه موقع ورکړي. د روسيې سفیر د سرتېرو په منځ کې پیسې وپشلې او خپلو کسانو او پارسیانو ته یې لارښوونه کوله چې زیاتې فعالې توپچې بطری د ښار په وړاندې ځای په ځای کړي. په همدې وخت کې د پارسیانو د وزیرانو له خوا د برتانيې د سفیر سره ناوړه چلند کېده او هغه د پارس سره د جون په میاشت کې اړیکې پرې کړې او د کمپ نه لاړ.

د ۱۸۲۸ کال د جون په ۲۴ مه نېټه په هرات باندې د روسي جنرال له خوا تنظیم شوی يرغل د پارس د ټولو قواوو له خوا پیل شو. يرغل د پارس د توپچې بطريو په درانده اور سره پیل شو چې د ښار څلورو خواوو ته ځای په ځای شوې وې. کله چې د توپچې غبرونه غلي شول پارسیانو د ښار په پنځو نقطو سخت برید پیل کړ. په څلورو نقطو کې د پارس پوځ په شا وتمبول شو خو په پنځمه نقطه کې سرتیري چې د خپلو افسرانو له خوا یې لارښوونه کېده په مېراني سره په دېوالو ختل او د افغان په دفاع یې فشار اچاوه. په دغه نقطه کې جکرن پوتینجر یو قهرمانه مشرتوب په ډاگه کړ او بې روحيې شوي افغان سرتیري یې د وزیر یارمحمدخان سره په کډه وهڅول چې پر دښمن یو دروند کوزار وکړي او دښمن یې په شا وتمبوه. افغانانو د پارس يرغل په شا وهلو سره هرات وژغوره او پارسیان په بده توگه وځپل شول. روسي جنرال بوروفسکي چې د روسي قطعې مشري یې کوله ووژل شو او سامسون چې روسي داوطلبانو قوماندې یې کوله تپي شو. دغې ماتې د پارس د سرتېرو مورال ډېر راټیټ کړ. په دې وخت کې برتانيې د پارس په خلیج کې د خارک ټاپو ونیو او په پارس یې د برید گواښ وکړ. محمدشاه قاجار چې په هرات کې یې د وروستي يرغل په پایله کې سخته ماته خوړلې وه د هرات کلابندي پرېښوده او تهران ته ستون شو. په دې وخت کې برنس لا په کابل کې و او د افغان وزیرانو سره په خبرو لکيا و چې روسي تورن ویتکوویچ د ۱۹۳۷ کال د دسمبر په ۱۹ مه نېټه کابل ته راوړسېد چې په تهران کې د روسيې د سفیر کونت سیمونیچ، د پارس د پاچا او روسي تزار لیکونه ورسره وو. ویتکوویچ لومړی کندهار ته راغی او د کندهاري ورونو سره یې تړون وکړ چې د هرات پر ضد د پارسیانو او روسانو سره همکاري وکړي. امیر دوست محمد خان د ویتکوویچ سره

سور چلند وکړ په دې چې هغه د برنس سره په جدي خبرو اخته و. خو د ۱۸۳۸ کال په جنوري په پای کې برنس ته د گورنر جنرال له خوا لارښوونه وشوه چې د امير هيلې يې د سيکانو او افغانستان تر منځ د برتانيې د منځگړيتوب په اړه ورپژولې. برنس امير ته اطلاع ورکړه چې هغه دې د پېښور د ادعا نه تېر شي او په دې د راضي شي چې رنجيت سنگ ميل لري چې د سلطان محمد خان سره اړيکې ولري. بله خبره چې د کابل امير يې حيران کړ دا وه چې گورنر جنرال د امير نه وغوښتل چې «د بل هر دولت سره د اړيکو نه خان وساتي او ژمنه يې وکړه چې د دغه تجريد بيه به دا وي چې دوی به رنجيت سنگ پرې نه ږدي چې د افغانانو د تسلط پر نورو سيمو بريد وکړي» ۲۴۶ دې خبرې په کابل کې د برنس ماموريت پای ته ورسوه او د ۱۸۳۸ کال د اپرېل په ۲۶ نېټه نابريالی هېواد ته بېرته ستون شو او د روسي نماينده ته ښه موقع په لاس ورغله.

کله چې برنس د کابل نه د تللو تياری نيوه سردار مهردل خان کابل ته راوړسېد چې امير د پارس اتحاد ته وهڅوي. د روسي نماينده د هر هغه څه ژمنه کوله چې امير غوښتل. ويتکوويچ کابل د هرات په موخه په داسې حال کې پرېښود چې سردار مهردل خان او د امير نماينده يې ملتيا کوله. د روسي ژمني ثابتې شوې چې دروغجنې وې او د کابل سره د ملگرتيا نه د برتانيا انکار امير او د هغه پاچاهي ته په زبان تمام شو.

په دغه وخت کې د برتانيې د حکومت پاليسي د کابل د رژيم د بدلولو په لور بدله شوه په دې چې د يوې خوا د روسي- پارس له خوا د هرات کلابندي او د بلې خوا په افغانستان کې د روسي او پارس نمايندگان فعال وو. د دغې پالېسي په بدلون کې بل لامل دا و چې د برتانيې په سياست جوړونکې کړی کې شاه شجاع پلوه او سيک پلوه کسانو شتون درلود. ټول هغه اطلاعات چې برنس گورنر جنرال ته لېږل شاه شجاع پلوه او سيک پلوه «کلاوډ وادي» ته رسېدل. دوی په اسنادو کې لاس وهلو. دغه دروغجن او ناسم اسناد د کابل نه د برنس د وتلو په کېدون د برتانيې په پارلمان کې تر بحث لاندې ونيول شول او يو کال وروسته د هغو پر بنسټ يوه ناسمه پاليسي غوره شوه. د ۱۸۳۸ کال په لومړيو کې کله چې هرات کلابند و کلاوډ وادي وړانديز وکړ چې امير دوست محمدخان تل د پېښور د غوښتنې په فکر کې دی خو د انګلستان گټې دا غوښتنه کوي چې مور بېرته شاه شجاع واک ته ورسوه ځکه چې شاه شجاع پېښور سيکانو ته پرېږدي او د برتانويانو سره دوستي غواړي.

له دې کبله په ۱۸۳۸ کال کې کله چې د برنس ماموريت نابريالی شو او د روسي نماينده په کابل او کندهار کې په فعاليت بوخت و د برتانيې حکومت پرېکړه وکړه چې تر

ټولو بڼه دا ده چې په کابل کې يو شاه زوی کېښنوو چې د لاهور او برتانيې سره مخالف نه وي. د دې له پاره شاه شجاع ډېر مناسب و.

د راتلونکې افغان- انګلیس د جګړې له پاره سياسي چوکات د انګلستان، سيکانو او شاه شجاع تر منځ هغه درې گون تړون جوړاوه چې د ۱۸۳۸ کال د جون د مياشتې په ۲۶ مه نېټه لاسليک شو. په دغه تړون کې راغلي چې د هر يوه ملګري او دښمنان د درې واړو ملګري او دښمنان دي. د دغه تړون له مخې پېښور او د سند د رود د دې غاړې ټولې سيمې چې رنجیت سنگ نیولې وې د هغه د قلمرو برخه وګڼل شوې. سيکانو ژمنه وکړه چې د اړتيا په صورت کې پنځه زره سرتیري به په پېښور کې د يوه مسلمان تر قوماندې لاندې د شاه شجاع د مرستې دپاره تياروي او د دغه پوځ لګښت به انګرېزان د شاه شجاع دپاره په غاړه اخلي چې په کال کې دوه لکه روپۍ کيږي.

شاه شجاع دا ومنله چې بهرنی سياست به يې د انګرېزانو له خوا چلېږي او د دوی د خونې پرته به د هېڅ هېواد سره اړیکې نه ټینګوي او خپل وراره کامران به په هرات کې تر برید لاندې نیسي. شاه شجاع د سند نه هم د يو څو پیسو په بدل کې چې، شمېر به يې برتانيا ټاکي، تېر شو.

په کابل کې د رژیم د بدلون پلان د دوو لارو نه پلي کېده لومړی دا چې په کندهار باید د سند نه د بولان له لارې او دوهم دا چې د پېښور او جلال اباد له لارې په کابل د رنجیت سنگ پوځ برید وکړي. خو دا پلان هغه وخت بدل شو چې برنس او د هغه ملګرو دا پوښتنه پورته کړه چې شاه شجاع پخوا هم د کندهار په نیولو کې پاتې راغلی و او هغه نه شي کولی چې د افغانستان د قبایلي مشرانو ملاتړ ترلاسه کړي. د سيکانو زیات کډون به افغانان نور هم وپاروي. له دې کبله برتانوي پوځ د دغه پلان په پلي کولو کې باید اساسي دنده په غاړه واخلي.

لارډ اوکلنډ د درې اړخیز تړون نه لږو ډېر يوه میاشت وروسته له دې چې شاه شجاع پوره بادسپلینه قوه جوړه نه شوی کړای، دې پایلې ته ورسېد چې برتانيا باید يوه قوه کابل ته ولېږي چې شاه شجاع په تخت کېښوي. په دې توګه د دغه پلان د پلي کولو اساسي لوبغاړی باید د انګلیس پوځ وي او د شاه شجاع او د سيکانو قواوې ملاتړ کوونکی رول ولوبوي. د دې پوځ اندازه باید زیاته وي چې د کندهار د نیولو وروسته يوه فرقه چې پنځه زره جنګي مېړونه ولري هرات ته ولېږي.

نږدې دوې میاشتې وروسته پارسيانو د هرات کلابندې پرېښوده او برتانوي هند ته د روسيې- پارس گواښ لږې شو خو بیا هم اوکلنډ کابل ته د پوځ د استولو پرېکړه وکړه تر

خو دوهمه موخه چې د يوه لاسپوڅي په کېښنولو سره افغانستان کنترول کړي پلې کړي. ويليم مکناتن يې د شاه شجاع په دربار کې د سفير په توگه او الکزاندر برنس يې د خپلواک سياسي افسر په توگه وټاکل چې د مکناتن سره به همکاري کوي. افغانستان ته د پوځ د لېرلو درې لارې وې. لومړی د شمال لوېديځ لوري ته د اټک، پېښور، کابل تر ټولو لنډه لاره وه. خو سيکان د برتانيې د لوی پوځ د تېرېدو سره مخالف وو. دوهم لوری د اسماعيل خان دېرې نه د گوملې له لارې د غزني په سوويل- لوېديځ کې د افغانستان زړه ته نږدې لاره ده. خو په دغه وخت کې د لارو خرابی او د واورو له کبله د پوځ د لېرلو دپاره کتوره نه وه. دريم لوری د سند شيکارپور، بولان، کوپټه، کندهار کږه دورانې لاره وه اوکلند دريمه لار وټاکله.

د افغان- انگلیس لومړی جگړه

د افغان-انگلیس لومړی حکړه مې په زیاته اندازه د علي احمد جلالی له کتاب نه چې «د افغانستان پوځي تاریخ» نومېږي، کېښلې ده. اوکلند د ۱۸۳۸ کال د اکتوبر په لومړی نېټه په سمله کې په افغانستان باندې د یرغل پرېکړه اعلان کړه. د یرغل پوځونه د ایندوس په نوم یاد شول. د ایندوس پوځ د بنګال او بمبې پوځونو، د شاه شجاع پوځي ټولګي او د سيکانو او شاه زوی تیمور د کډ لښکر نه جوړ و چې د جنګي سرتېرو شمېر يې پنځه پنځوس زرو ته رسېده او د خدماتو عمله او د کمپونو کسان زرګونو ته رسېدل. د بمبې د پوځ قوماندان «سر جان کین» او د بنګال د پوځ قوماندان برید جنرال «سر ویلوبي کین» وټاکل شول.

د یوې اوږدې کورنۍ جگړې او د افغانستان د امپراتورۍ د منځه تلو نه یواځې د افغانستان پوځي ماشین مات او د پوځ اندازه لږه کړه بلکې د هغه مسلکي وړتیا او د عملیاتو اغېز يې ړنګ کړل. د امیر دوست محمد خان په وخت کې د جنګي مېړونو کمې نه و خو د کافي پیسو نه شتون د لوی پوځ د جوړولو مخه نیولې وه. د علي احمد جلالی د څېړنې له مخې د هغه وخت د وزیرانو د راپور په اساس د هغو ولایتونو ټول عاید چې د امیر دوست محمدخان تر واکمنۍ لاندې و، دوه نیم میلیونه روپۍ کېدل چې دوه لکه شپږویش زره دوه سوه څلور نوي پونډو انډول و. ۲۴۷ د الکزاندر برنس د اټکل له مخې د امیر دوست محمدخان پوځ د ۱۲۰۰۰ نه تر ۱۳۰۰۰ سوارو چې ۱۰۰۰ تنه يې قزلباش وو جوړ و. ۲۵۰۰ پلي موسکټر، ۵۰ توپونه او ۲۰۰ په اوشانو بار زمبورک وو.

د انگلیس پوځ د ۱۸۳۹ کال د فبروري په ۲۳ مه د شيکارپور نه کوپټې ته روان شو. د

اپرېل په ۱۴ مه د کوژک د کوتل نه تېر شو. په عين وخت کې د انگرېزانو جاسوسي ادارې د پوځ د روانېدو د مخه د جاسوسانو يوه پراخه شبکه جوړه کړې وه. موهن لال يو جاسوس افسر د برتانوي هند د کمپنۍ په چوپړ کې و، هغه يو شمېر مهم کسان لکه حاجي خان کاکړ، محمد طاهر، عبدالمجيد خان، اخوندزاده غلام او ملا ناسو په کندهار کې او سردار عبدالرشيدخان د امير دوست محمد خان يو خوربې په غزني کې تنظيم کړي وو. د کندهار قومي مشرانو پرېکړه وکړه چې د فتح الله خان کلا سره چې ۵۴ ميله د کندهار په سوويل کې پراته ده د دښمن د پرمختگ مخه ونيسي. خو حاجي خان کاکړ خپله ژمنه ماته کړه او د شاه شجاع کمپ ته واوښت او د فتح الله خان کلا بريد پلى نه شو. د کندهار سرداران کهندل خان، رحمدل خان او شهردل خان بېرته کندهار ته راستانه شول. دوى نيت درلود چې د کندهار د ننه او د باندې نه په دښمن گوزارونه وکړي خو ملا ناسو چې په پټه بې د شاه شجاع سره اړيکې ټينگې کړې وې دوى ته مشوره ورکړه چې جگړه بې کټې ده او بايد تسليم شي. کندهاري سرداران گرځک ته وتښتېدل او د کندهار دروازې يې دښمن ته خلاصې پرېښودې. د کندهار قومي مشران د حاجي دوست محمد خان اسحقزي، حبيب الله خان سرکاني، فيض طلب خان نورزايي، رمضان خان عليزايي، اختر خان عليزايي، اسحق خان اسحقزي او نورو په گډون سمدلاسه شاه شجاع ته لاس په نامه شول او هر يوه خپل قومي سواره د خان سره واخېستل چې پاچا ته خدمت وکړي.

د ۱۸۳۹ کال د اپرېل په ۲۵ مه شاه شجاع په بريالۍ توگه کندهار ته ننوت او د ۱۸۳۹ کال د مې په ۸ مه د رسمي مراسمو په ترڅ کې د افغانستان د پاچا په توگه وټاکل شو. پنځه ورځې وروسته يوه گډه قوه چې شمېر يې ۱۷۰۰ تنه و گرځک ته روانه شوه چې کندهاري سرداران وځپي خو هغوى پارس ته وتښتېدل.

شاه شجاع خپل زوى تيمور ميرزا د کندهار د واکمن په توگه وټاکه او د جون په اوويشتمه نېټه د ايندوس پوځ د غزني په لور وخوځېد او تر غزني پورې د مقاومت سره مخامخ نه شو که څه هم دوو غلزيو مشرانو عبدالرحمن ۱۵۰۰ سواره او لښکر او گل محمد ۳۰۰۰ غرني مېړونه درلودل چې زياتره يې توخي او هوتک وو د انگرېزانو د پوځ لښکرې څارلې او يوې مناسې موقع ته سترگې په لاره وو چې خپل گوزار پرې وکړي.

د غزني جگړه

په غزني کې د ۲۵۰۰ نه تر ۳۰۰۰ پورې قواوې د امير د زوى غلام حيدر خان تر

قوماندانی لاندې پراتې وې. برسېره پر دې د امير بل زوی محمد افضل خان د ښار د باندې و چې د سوارو يو کنډک او د زرمټ او شولکر غلزي قومي کسان ورسره وو چې ټول شمېر يې دوه زره سوارو او زرو پلي کسانو ته رسېده. ۲۴۸

د اوړي په گرمه ورځ د جون په اتلسمه د ايندوس پوځ غزني ته راوړسېد. کله چې د انگرېزانو د پوځ ليکې چې توپچي قواوې ښي اړخ ته او پلي پوځ کښ اړخ ته د غزني په چاپېر کې روان و غازيانو د مېوو او انکورو باغونو نه په انگرېزانو بريد وکړ. د انگرېزانو پلي قواوې په غازيانو متقابلې ډزې پيل کړې او هغه يې په شا وتمبول. پوځ د ښار په سوويل- لويديځ کې کمپونه ووهل خو دغه کمپونه د پوځي کلا نه د توپچي اور لاندې راتلل نو ځکه انگرېزانو د توپچي اور د ساچې نه د باندې ۷ ميلي کې گړد حرکت کاوه تر څو د کابل له لور په ښار راتاو شول، کمپ يې ولگوه او د کابل نه يې د امير دوست محمد خان د مرستې لاره بنده کړه.

دا وخت د افغان کارنيزون نه د موهن لال له خوا جذب شوی د امير دوست محمد خان خوريي عبدالرشيد خان د کلا نه د برتانيې کمپ ته وتښتېد او برتانوي قوماندانی ته يې د کلا د کمزورې نقطې په اړه ارزښتناک مالومات ورکړل. ده راپور ورکړ چې د ښار ټولې دروازې د شا له خوا په خښتو بندې شوې او يوازې د کابل دروازه بنده نه ده. که دغه دروازه په باروتو والوزول شي نو ښار به ونيول شي.

د کابل د دروازې د الوولو او په کلا باندې د بريد پلان پيل شو. توند باد د غزني کارنيزون د بريد د تياری نه د بې خبری لامل شو. نيمه شپه په تياره کې توپچي قوه سوکه سوکه چې د کلا نه يې ۴۰۰ گزه واټن درلود د کابل دروازې ښي لوري ته ځای په ځای شوه. د جولايي په ۲۳ مه نږدې درې بجې د بمې د استحکام او مين اېښودونکو يو گروپ انجنران چې د تورن «پيټ» تر قوماندانی لاندې و دروازې ته حرکت وکړ. «ډپورنډ» د چاودېدونکو توکو د گروپ قوماندان و. ډپورنډ خپل گروپ ته قوماندې ورکړه. دوی به ۱۵۰ گزه پرمخ تللي وي چې په کارنيزون کې شور جوړ شو او يو ډز وشو. دې مور ته ښودله چې کارنيزون د گروپ نه خبر شو او سمدلاسه د کارنيزون نه د گواښ اعلان وشو.

د پيټ گروپ مخامخ بريد وکړ او د ډپورنډ کسانو د چاودېدونکو پوډرو بوجی چې درې سوه سېره (پونډه) وزن يې درلود دروازې ته ځای په ځای کړل او په بېره يې د فيوزز مزی وغواړه او اور يې ورکړ او چاودېدونکو توکو دروازه والوزوله. د «ډيټي» قواوو بريد وکړ او د دروازې په تونل کې د انگرېزانو او افغانانو تر منځ په نيمه تياره کې کلکه لاس په لاس جگړه پيل شوه. د کلا افغان ساتونکي چې د کلا نه راکوز شول په خپلو تورو يې په

مېرانه په انگرېزي پوځ گوزارونه کول. د جگړې په پای کې د انگرېزانو د مرو او تېپانو شمېر دوو سوو ته رسېده او پنځه سوه افغانان مړه او ۱۶۰۰ بنديان وو چې سردار غلام حیدرخان هم په کې شامل و. يوه اوونۍ وروسته د ۱۸۳۹ کال د جولای په دریمه جنرال کین د غزني نه د کابل په لور روان شو.

د غزني د نسکورېدو وروسته کله چې برتانوي قواوې د کابل په لور حرکت وکړ امیر دوست محمد خان وموندله چې دی د سوویل او هم د ختیځ لوري نه د یرغل لاندې راځي نو یوه قوه یې د محمد اکبرخان تر قوماندانۍ لاندې هدې ته واستوله. ده نیت درلود چې محمد اکبرخان به اړیدي وپاروي چې د انگرېزانو او سیکانو په وړاندې د خیر په دره کې مقاومت وکړي او د محمد اکبرخان قواوې به په هده کې انتظار باسي.

امیر دوست محمدخان زر د درې خواو نه د گواښ لاندې راځي. ده د غزني د نسکورېدو وروسته محمد اکبرخان د هدې نه بېرته راوغوښت. له دې کبله د ختیځ خوا د کلاوډ وادې او سیکانو لس زریز پوځ ته خلاصه پاتې شوه او د کلاوډ وادې او سیکانو قواوې د خیر نه د مقاومت پرته راتېرې شوې.

د کابل شمال ته په کوهدامن او کوهستان کې برتانوي جاسوس موهن لال د امیر دوست محمد خان پر ضد پاڅون تنظیم کړ. موهن لال لا د مخه کله چې د برنس د پلاوي غړی و په کابل کې یوه جاسوسي شبکه جوړه کړې وه. د دوی په منځ کې غلام خان پوپلزي مهم رول ولوباوه. موهن لال د کندهار د لوېدو وروسته څلوربښت زره روپۍ غلام خان پوپلزي ته واستولې او له هغه نه یې وغوښتل چې د پلازمینې په شمال کې د امیر په ضد نارامی جوړه کړي. غلام خان پوپلزي د انگرېزانو په پیسو د نجراږ، پنجشیر، غوربند، کوهستان او کوهدامن مشران راوښول چې د شاه شجاع د داعي ملاتړ وکړي او د امیر پر ضد راپورته شي.

امیر دوست محمد خان په کابل کې جرگه جوړه کړه او د کابل د خلکو نه یې د پرڼکیانو پر ضد د ملاتړ غوښتنه وکړه. خو د خلکو ملاتړ یې ترلاسه نه کړ. د سدوزیانو نفوذمنو کسانو د امیر د سرتېرو د روحیې په کمزوري کولو کې مهم رول ولوباوه. سرتیري د پوځ نه په ډله یزه توگه تښتېدل. امیر د شپږ زره کسانو سره د محمد اکبرخان سره یوځای شو او ارغندې ته یې حرکت وکړ چې هلته د انگرېزانو په وړاندې وجنگېږي. افغانانو فکر کاوه چې محمد اکبرخان ته زهر ورکړ شوي دي او سخت ناروغ و.

د امیر دوست محمدخان ستراتیژیک موقعیت ډېر زر کمزوری شو. هغه خپل ورور جبارخان د خبرو له پاره مکناتین ته ولېږه. جبارخان مکناتین ته وویل چې امیر دوست

محمدخان به په دوو شرطو تسليم شي لومړی دا چې دی به د شاه شجاع لاندې د وزیر په توګه دنده تر سره کوي دوهم دا چې د ده زوی غلام حیدرخان به بېرته په غزني کې حاکم ټاکي. خو د جبارخان سره په کمپ کې سور چلند وشو، سپک شو او بېرته خپه راستون شو. انګرېزانو وړاندیز وکړ چې امير دې تسليم شي او په هند کې به عزتمنه پناه ورکړل شي. بیا نو امير پرېکړه وکړه چې د باميانو له لارې شمال ته وتېښي. امير په مزار کې غوښتل چې پارس ته لاړ شي خو د بخارا امير استازی ورواستوه چې بخارا ته ورشي. کله چې امير بخارا ته لاړ هلته یې د ذلت ژوند په برخه شو.

درې ورځې وروسته غلام خان پوپلزی د خپلو ملکرو سره کابل ته ننووت. په کابل کې نفوذمنو کسانو پرېکړه وکړه چې د انګرېزانو او شاه شجاع نه اطاعت وکړي. په دغو کسانو کې عبدالله خان اڅکزی، عزیزخان غلزابی، امین الله خان لوګري او خان شریڼ خان قزلباش شامل وو. ۲۴۹ په دې توګه شاه شجاع د ۱۸۳۹ کال د اګست په اوومه نېټه دېرش کاله وروسته چې د واک نه لوېدلی و، د انګرېزانو د ایندوس پوځ په ملګرتیا کابل ته ننووت. د ختیځ نه د کرنیل کلاود وادي او شاه زوی تیمور قواوي د ۱۸۳۹ کال د دسمبر په ۳مه نېټه کابل ته راوړسېدې.

په دې توګه د کابل په نیولو او د شاه شجاع په تخت کېنولو سره انګرېزان خپلې دوهمې موخې ته ورسېدل. اوس هیله کېده چې برتانوي پوځ به بېرته کور ته ستون شي. د شاه شجاع واک د کندهار، غزني او کابل په ښارونو محدود و.

په دغه وخت کې روسانو په اورنبورګ کې ځواکونه غونډول چې په خېوا یرغل وکړي او په هرات کې هم وضعه یې باوره وه. له دې امله د انګرېزانو په فکر دوی په هندوستان کې ګواښ احساساوه.

لارډ اوکلنډ مکناتین ته وړاندیز وکړ چې په افغانستان کې د شاه شجاع د قواوو سره د انګرېزانو یوه پیاوړې لوی ځای په ځای شي بسنه به وکړي چې هېواد وساتي. خو مکناتین د روسانو حرکت ته په جدي سترګه کتل او په نابریالۍ توګه یې جنرال کین باوري کاوه چې بخارا ته یوه قوه واستوي او د نږدې نه د روس حرکتونه وڅاري. خو مکناتین د اوکلنډ رضایت ترلاسه کړ چې په افغانستان کې د بنګال ټوله فرقه پاتې شي چې تر اتو زرو زیات جنګي مېړونه یې درلودل او یوه لویه د کمپ عمله یې درلوده چې شمېر یې زرګونو ته رسېده.

نیواک

د نيوک د لومړي کال په جريان کې د برتانوي واکمنو له پاره اساسي پوښتنه دا وه چې په افغانستان کې د څومره مودې له پاره اوڅومره اندازه پوځي ځواکونو ته د پاتې کېدو اړتيا ده چې باوري شي چې لاسپوځي پاچا په واک کې پاتې شي. دا مهال پارسيان د هرات نه تللي وو او له هغې خوا کوم واقعي گواښ شتون نه لاره. خو د روسانو له خوا خپوا ته حرکت چې بخارا ته يې هم گواښ پېښوه د برتانيا په سياسي کړيو کې يې اندېښنې پيدا کړې. همدارنگه شاه شجاع په خلکو کې ملاتړ نه درلود. په دغو شرايطو کې د برتانيې يوه ادامه لرونکي شتون ته اړتيا وه چې په افغانستان کې د ليدو وړ ځواکونه وساتي. شاه شجاع هم چې خپل واک ته يې کورني او باندیني گواښونه ليدل د برتانوي ځواکونو د سملاسي وتلو سره سر نه خوځاوه.

د انگرېزانو د اړتيا وړ پوځي ځواکونه او د شاه شجاع قواوې په کابل، جلال اباد، غزني، کندهار، کرشک، قلات، کوپته او باميانو کې ځای په ځای شول او د بنکال د پوځ پاتې برخه د اکتوبر د يولسم نه تر شپاړسم پورې د پېښور له لارې برتانوي هند ته روانې شوې. د مې پوځ د سپتمبر په ۱۸ مه د غزني نه د کوپته له لارې برتانوي هند ته حرکت وکړ. په دې توگه د دغو څو ښارونو په مرکزونو کې د برتانيې او شاه شجاع پوځونو په کډه کنټرول کاوه خو د لويو ښارونو چاپېر سيمې د خپلو ځايي مشرانو په کنټرول کې وې. دا نازکه سوله په نيول شوي هيواد کې په ماتېدو وه.

د ۱۸۳۹ کال په پای کې کرنل هېرينگ د غلزيانو له خوا غزني ته نږدې ووژل شو چې د کندهار نه يې خزانه لېږدوله. په کنړ کې يو ځايي روحاني سيد هاشم پاڅون وکړ. غلزيانو د نيواکگرو په وړاندې هره موقع چې د دوی لاسته ورتله بریدونه کول. د ۱۸۳۹ کال په مې کې يوه برتانوي قطعه د اوسرام په قوماندني زرمته ته ولېږل شوه. هغو د غلزيانو کورونه ړنګ کړل او د ژوند وسايل يې ورته برباد کړل. د ۱۸۴۰ کال په مې کې د قلات غلزيان جګ شول او جنرال نابت يې اړ کړ چې د اندرسن په مشرۍ ۱۲۰۰ کډ پوځ سيمې ته ولېږي. غلزيانو په تازي کې چې دوه زره جنګي مېړونه درلودل د اندرسن د ځواکونو سره جګړه وکړه. نابت کلا ونيوله او د کندهار او غزني تر منځ تړاو يې ټينګ کړ. انگرېزانو د پيسو په ورکولو سره دغه قومونه ارام کړل.

د کوهستان پاڅون او د بخارا نه د امير دوست محمد خان راستنېدل

د نيوک د لومړي کال په زره پورې پېښه د بخارا نه د امير دوست محمد خان راستنېدل و چې د انگرېزانو د نيوک په وړاندې ډگر ته راووت. د ۱۸۴۰ کال په اوږو کې د

بخارا امير مظفر امير دوست محمد خان ته اجازه ورکړه چې بخارا پرېږدي. خو د بخارا امير داسې پلان درلود چې امير دوست محمد خان هغه مهال ووژني چې د امو د رود نه تېرېږي. امير دوست محمد خان د دسيسې نه خبر شو او د يوه کاروان سره يې تېښته وکړه. کله چې کاروان خلم ته ورسېد امير دوست محمد خان ته د والي له خوا هرکلی وشو. امير هلته د ځايي ازبکو نه شپږ زره پوځ جوړ کړ او د سپتمبر په لومړيو کې باميان ته وخوځېد. په باميانو کې د امير لښکر ماتې وکړه او بېرته خلم ته په شا شو. د خلم والي د انگرېزانو سره ژمنه وکړه چې د امير ملاتړ نه لاس اخلي. خو ورځې وروسته امير په کوهستان کې رابښکاره شو چې په کوهستان کې د انگرېزانو ضد پاڅون لارښوونه وکړي. ثابتو شويو راپورونو ښوول چې نونهار سنگ د پنجاب واکمن چې د رنجيت سنگ په ځای ټاکل شوی و د امير دوست محمد خان سره اړيکې ټينگې کړې وې. په کابل کې د برتانيا واکمنو پرېکړه وکړه چې د کوهستان پاڅون غلی کړي. دوی شاه زوی تيمور د څو سوه افغان لښکر چې د يوه اروپايي او دوو هندي غونډونو نه جوړ و د ډگروال سيل تر قوماندې لاندې ملکرتيا کوله ولېږه. د هغه سره برنس او موهن لال هم ملکري وو. دغه مهال امير د نجر او پروان په منځ کې تک راتک کاوه او ځای او وخت ته سترگې په لاره و چې په دښمن گوزار وکړي. ډگروال سيل هم د پاڅون د مشرانو په وړاندې جدي کمپاين پر مخ بيوه. دوی د سرغړونکو مشرانو ته جزا ورکوله د دوی کلاگانې او کلي يې ړنکول، د امير ځايي ملاتړ يې کمه، برنس او موهن لال پيسې شيندلې چې ځايي اغېزمن مشران راوښيي او يو د بل پر ضد يې وپاروي. دوی يو ځل بيا د حاجي خان پوپلزي خدمتونه په دغه پټ کار کې ترلاسه کړل چې هغه د مير مسجدي خان او يو زيات شمېر مشرانو سنکرونه ونړول خو د هغوی په نيولو کې پاتې راغلل.

امير دوست محمد خان د برياليتوب په وخت کې د برتانوي حکومت د ځواک په وړاندې ناهيلي شو او پرېکړه يې وکړه چې دښمن ته تسليم شي. امير دوست محمد خان د ۱۸۴۰ کال د نومبر په ۱۲ مه هند ته ولېږل شو، په لوديانه کې د خپلې کورنۍ سره يوځای شو او بيا کلکته ته يوړل شو. د امير دوست محمد خان جلا وطني يوه د سولې مرحله تېره کړه.

د امير د تسليمېدو او خېوا ته د روسانو د خوځېدو ناکامي د انگرېزانو د وتلو شرايط برابر کړل. خو شاه شجاع په دې کې پاتې راغی چې د نفوذمنو مشرانو ملاتړ او د عادي خلکو روغ نيتي ترلاسه کړي. په ټول هېواد کې ځايي پاڅونونه پيل شول.

يو د ناراضي مشرانو نه اخترخان عليزای و چې د هغه سره د زمينداور ژمنه شوې وه

خو دوکه کړای شو. هغه خپل خپل پورته کړ او د دوولسو سوو نه تر پنځلسو سوو پورې سواره يې د هلمند د رود په لوبديځ کې ځای په ځای کړل. د ۱۸۴۱ کال د جنوري په دريمه برتانوي ځواکونو د فرينکتون تر قوماندانۍ لاندې ده ته ماته ورکړه خو هغه د نورو دراني مشرانو سره په گډه مبارزې ته دوام ورکړ. همدغه وخت غلزيانو هم مبارزه کوله چې د مخه يې يادونه وشوه.

د اگست په پای کې د برتانيې توري کوند ټاکنې وکتلې او د روبرټ پيل نوي مشر د حکومت لگښتونه کم کړل. د افغان جگړې يو ميليون او دوه سوه پنځوس زره پونډه لگښت درلود. برسېره پردې هغه د کشتيو يو ټولې ساتلو چې د سند په رود کې گرځېدې او لگښت يو ميليون پونډه و. ۲۵۰ لارډ ايلبورو چې د اوکلند پرځای نوی ټاکل شوی و پرېکړه وکړه چې دغه جگړه افغاني کړي او د شاه شجاع ځواکونه دوه برابره زيات کړي او برتانوي ځواکونه لږ او د افغانانو سبسيدي لږه کړي. انگرېزانو د غلزيانو، کوهستانيانو، مومندو او قزلباشو مشرانو تنخواه لږه کړه نو ځکه دوی پرېکړه وکړه چې د نيواک په وړاندې د افغانستان د محافظه کارو خلکو د غزا احساسات وپاروي.

د پاڅون زري

نيواک يو شمېر سياسي، امنيتي، اداري، اقتصادي او ټولنيزې اندېښنې پيدا کړې چې د خلکو خپګان يې پاروه او د پاڅون لامل کېدو. په سياسي لحاظ د پاچا د واک او برتانوي نماينده د واک تر منځ ترينګلتيا وه. شاه شجاع تش په نوم خپلواک واکمن و، خو رښتيني واک د انګليس د نماينده په لاس کې و. د دې له پاره چې دغه ټکر پخلا کړي مکناتن د دغه تش په نوم پاچا ته د عايدو د حل، ټولولو، او منظورولو او د جنایي قضا د واک د کارولو په گډون دندې ورکړې. خو هغه په کورنيو او بهرنيو چارو باندې د واک انحصار وساته او د پاڅون کوونکو قومونو پر ضد د پوځ د قطعاتو د استولو واک، او د هغو د اندازې ټاکلو او د عملياتو د کړلو پرېکړه په ده پورې اړه درلوده.

دوه اړخيزه اداره نه يوازې ناکامه شوه چې ترينګلتيا لږه کړي بلکې دغه ټکر يې نور هم زياتوه. د شاه شجاع په چارو کې لاسوهنه کېده. دغه وضعه د متقابلې بې باورۍ، پارونې او ان د دښمنۍ سبب کېده. د شاه شجاع مشر وزير ملا شکور چې د انگرېزانو ضد احساسات يې درلودل د انگرېزانو نه خوښېده.

د امنيت په منظور د مکناتن پرېکړه چې د دوديز سيستم بڼه بدله کړي يوه خطرناکه تشه رامنځ ته کړه. په دوديزه توګه افغان پاچاهانو چې د مشرانو ملاتړ ترلاسه کړي دوی

به د اشرافو د ځواک د انډول له لارې د دوی سره بيلې بيلې معاملې کولې په دې چې دې مشرانو په ټينگه سره کولی شول چې پرکني د پاچا پر ضد پورته کړي. دا د افغانستان د اشرافيت د سيستم يوه ځانگړتيا وه. پخوا د قوي واکمنو له خوا داسې کونښونونه شوي وو چې د قومونو د مشرانو ځواک د غير قومي مسلکي ځواک په ذريعه لږ کړي. دغسې يو سيستم ځواکمنو پاچاهانو جوړولی شو او زياتره وخت په قومي او ځايي مليشو سره بشپړېده چې د دوی مشرانو جوړې کړې وې. د برتانيا نماينده هڅې چې په زور امنيتي سيستم کې سمون راوړي، ملېشواوې او جنکي ډلې لکه خيبري، جانباز، جازيلي او کوهستاني جوړې کړې چې د شاهي خزانه نه به تنخوا ورکول کېږي خو مشري به يې انگرېزي افسران کوي چې د قومي مشرانو په وړاندې ور انډول منځ ته راوړي ناکامه شوې. داسې چلند شاه شجاع ځوراوه او خلک ناهيلي کېدل.

په اقتصادي لحاظ د برتانيا له لوري د غلې، د حيواناتو، غوښو او نورو موادو سپمه کولو تقاضا نرخونه لوړ کړل او د عامو خلکو بېوزلي يې زياته کړه. د مهمو شيانو په وارداتو د پاچا د ادارې د رضايتموړتيا په محصول لږ شو چې دا د برتانيا د سوداگرو په کټه او د افغان سوداگرو په زيان و. ټولنيز اړخ يې د ښځو بې عزتي او د عيسوي مذهب تبليغ خلک نور هم وپارول.

د اکتوبر په لومړيو کې د ډکروال سيل لوا چې په افغانستان کې يې دنده پای ته رسېدلې وه هند ته روانه شوه چې په لاره کې هغه قواوې هم ورسره يوځای شوې چې د زرمتم نه روانې وې دوی په لاره کې تر گندمک پورې د غلزيانو د بريدونو لاندې راغلې چې ۱۲۰ تنه د سر زيان يې وکاله، سيل هم تپي شو. دوی کله چې گندمک ته ورسېدل په کابل کې د وضعې د خرابېدو له امله سيل ته د جنرال الفنسټون له خوا خبر ورسېد چې بېرته دې کابل ته راستون شي. سيل په گندمک کې د جنکي شورا غونډه جوړه کړه چې راز راز نظرونه په کې څرگند شول. خو سيل پرېکړه وکړه چې جلال اباد ته لاړ شي. سيل د نومبر په ۱۱ مه د گندمک نه جلال اباد ته روان شو، په لاره يې جگړه هم کوله او د نومبر په ۱۴ يې جلال اباد ونيو.

د کابل پاڅون

د ۱۸۴۱ کال د نومبر په دوهمه نېټه سهار وختي کابل دغه خبر ولېرزاوه چې د ننه په ښار کې د الکزاندر برنس کور تر بريد لاندې راغلی او يو شمېر خلکو کور کلابند کړی دی. الکزاندر برنس د کړکې نه هڅه کوله چې خلک چوپټيا ته راوبولي خو خلکو په کور بريد

وکر. د سهار په اتو بجو يې الکزاندر برنس، د هغه ورور تورن برنس، او تورن بريد روت او د دوی ساتونکي ووژل او بيا د تورن جانسن په خزانه چې ۱۷ زره پونډه وه او په گاونډي کور کې ساتل کېده، بريد وکر.

د موهن لال په وينا برنس د شاه شجاع وزير عثمان خان ته وړانديز وکر چې دی په امن بالاحصار ته بدرگه کړي خو دا وړانديز رد شو. وروسته هغه يو يادښت مکتاښ ته د مرستې دپاره ولېږه چې دا مرسته هېڅکله راونه رسېده. د برنس پيغام چې د پاڅون کوونکو مشرانو عبدالله خان اخکزي، امين الله خان لوکري، سکندر خان او عبدالسلام خان چې په صحنه کې وو، خبرې وکړي رد شو.

د نومبر د دوهمې نېټې پاڅون په غور سره تنظيم شوی و. سر الکزاندر ته خپلو پتو جاسوسانو يوه شپه د مخه خبرداري ورکړی و. د سيل د لوا د تللو له امله د برتانوي پوځ کمزوري کېدل، د غلزيانو پاڅون او په کوهستان کې زياتېدونکې نارامي د دې لامل شوه چې مشران د پاڅون نوښت وکړي. دغه وخت دوي مهې څېرې عبدالله خان اخکزی او مير مسجدي خان وو.

شاه شجاع چې د موضوع نه خبر شو د خپل هندوستاني لښکر يو کنډک يې صحې ته واستوه چې وضعه کنترول کړي. دغه وخت ډگروال شېلټن ته چې په سياسنگ کې و چې د انگرېزي پوځ د پندغالي نه يو نيم ميل په واټن کې پروت و، امر وشو چې د يوه اروپايي پلي ټولي، د هندي پلې قوي يوه قطعه او د شاه شجاع د پوځ نه يو کنډک او شپږو ماشينگرو سره بالاحصار ته حرکت وکړي. د سياسنگ پاتې قواوو ته امر وشو چې پندغالي ته لاړې شي. ۲۵۱ ډگروال شېلټن يوازې دومره وکړای شول چې د صحې نه د کمپل بند شوی کنډک وتل پوشش کړي. انگرېزانو د وضعې د کنترول دپاره نور غوڅ کړه ونه کړل.

د برتانيې پوځ دغه وخت د ښار په شمال کې (اوسني عسکري کلوب) پروت و. دې پندغالي زر گزه اوږدوالی او شپږ سوه گزه سور درلود. د دې ادې يا پندغالي کرد چاپېره کلاگانې پراتې وې چې نه نيول شوې، نه ړنکې شوې وې چې پندغالی په امن کې شي. د بي بي مېرو غونډی پرې حاکمه وه او د هغې نه په برتانوي پوځ پرله پسې د جزايو کولی اوږېدې. د برتانوي پوځ دپاره بل بې گټې شی دا و چې د پندغالي له پاره زېرمې په يوه بله کوچنۍ کلا کې پراتې وې چې د پندغالي نه د باندې په يوه څه واټن کې پراته وه. دا اډه يا پندغالی د بلاحصار نه د کابل د رود په ذريعه بيل شوی و. جنرال الفنسټون چې د واټرلو په کېدون د اروپا په جگړو کې برخه اخېستې وه په ۱۸۴۱ کال کې يې د برتانوي ځواکونو قوماندنه په لاس کې واخېسته. هغه د هند په جگړو کې لږه تجربه درلوده، روغتيا يې ښه نه وه، د

توري د روماتيزم شديدې اوږدمهاله ناروغي يې درلوده. له دې کبله دغه وخت په غوڅو کړو کې پاتې راغی. ډکروال شېلټن يو غښتلی سړی و خو څنگه چې په قوماندې کې د يوه کمزوري جنرال لاندې دوهم سړی و هغه د خپلواکو کړو ازادې نه درلوده.

د افغانستان لوري د پوځي قوماندې جوړښت او د کنټرول سيستم نه درلود. د افغانستان د مقاومت قواوې چې د برتانويانو او شاه شجاع دواړو واک يې ننکوه، د قومي مشرانو او نورو نفوذمنو له خوا يې لارښوونه کېده او په نامتمرکز ډول يې عمل کاوه. د مقاومت د قواوو د ښه لوژستيکي سيستم نشتوالي د دوی تاکتيکي مانور او جگړه زياتره وخت لنډه وه.

د کابل پاڅون د انگرېزانو د کابل کارنيزون د دوو ننکونو سره مخامخ کړ چې يوه يې پوځي او بله يې سياسي وه. په پوځي لحاظ د زېرمه کولو د ستونزو له کبله د پندغالي بيلتون پوځ د لوړې سره مخامخ کړ. په سياسي لحاظ انگرېزانو د افغانانو سره خبرې د کمزوري دريځ نه کولې. ۲۵۲

د مخه مو وويل چې برتانوي قوماندانې په کابل کې د خپل کارنيزون د بياوړي کولو په موخه ډکروال سيل ته امر وکړ چې د گندمک نه کابل ته راوگرځي خو هغه امر ونه مانه. په کندهار کې جنرال نابت ته هم امر وشو چې د کندهار نه يوه لږ کابل ته راوستوي. هغه لږا چې د کندهار نه را روانه وه د مخه تردې چې غزني ته ورسېږي د ساړه او د واورو د اورېدو له امله بېرته ستانه شوه.

په کابل کې افغانانو په برتانوي پوستو بريدونه کول. غازيانو د نومبر د ۳ نه تر ۹ مه پورې ټولې هغه کلاکانې ونيولې چې د پند غالي په چاپېر کې پرته وې او پندغالي کلابند شو. د نومبر په پنځمه افغانانو په کميساري کلا چې يوه لويه زېرمه يې درلوده بريد وکړ او زياته زېرمه د افغانانو لاس ته ورغله. دا په نيمه وري پندغالي يو لوی گوزار و. په چاريکارو کې د شاه شجاع گورکه کنډک چې پوتينجر يې سياسي نماينده و، د منځه لاړ او پوتينجر او بريدمن هوتن دواړه ټپيان او د نومبر په ۱۵ مه پندغالي ته راوړسېدل. د شپږ اباد کارنيزون چې د کابل او غزني تر منځ يې د اړيکو په موخه ځای په ځای شوی و، د ځايي خلکو د بريد په پايله کې په ډله بزه توکه ووژل شو.

د نومبر په ۱۳ مه د غازيانو د پليو او سوارو لويې ډلې د بي بي مهرو په لورو دوي ماشينگرې ځای په ځای کړې او په پندغالي يې ډزې پيل کړې چې نښې يې بېخي سيځې وېشتې. برتانوي قوماندانې د ډکروال شېلټن په مشرۍ يو شمېر قواو ته امر وکړ چې په غونډۍ بريد وکړي او ماشينگرې ترېنه ونيسي. که څه هم افغان قواوې چې د غونډۍ د

کين اړخ نه پر دښمن ورتوی شول د برتانيا قواوې يې په خټ د غونډۍ لمنې ته پورې وهلې خو د دښمن توپيې افغانان اړ کړل چې په شا شي. په دې وخت کې انگرېزانو د افغانانو يو ماشين ترلاسه او پندغالي ته يې يووړ. د ورځې په پای کې افغان سواره بېرته راوگرځېدل او په برتانوي قواوې يې بريدونه پيل کړل. د برتانوي قواوې ليکې يې ماتې کړې او په غير منظمه توگه يې د کلا تر دروازې پورې تعقيب کړې.

د بي بي مېرو وروستی جگړه

د بي بي مېرو په غونډۍ د نومبر په ۲۳ مه سخته جگړه وشوه چې د لومړي افغان-انگليس جنگ بدلېدونکې ټکي شو او د کابل د قواوو سرنوشت يې وټاکه. د کميساري کلا د پرېوتو وروسته برتانوي قواوو خپل اکمالات د بي بي مېرو د کلي نه کول. دا کلي د پاڅون کونکو له خوا گواښل کېده په دې چې د پرنگيانو سره مرسته کوي. د نومبر په ۲۲ مه د کوهستان نه راغلي خلک د بي بي مېرو د کلي د نيولو په نيت روان شول. دا هغه ورځ وه چې محمد اکبرخان کابل ته راوړسېد او د افغان مقاومت مشري يې په کړو کې کوله. د نومبر په ۲۲ مه انگرېزانو د بي بي مېرو د نيولو دپاره قواوې ولېرلې خو غوڅه جگړه يې ونه کړه او بېرته پندغالي ته راوبلل شوې. ليډي سيل ليکي: «قواوې پرته له دې چې څه يې کړي وي بېرته راستنې شوې» ۲۵۳ مکناتن د جنګي شورا د وړانديز له مخې امر وکړ چې يوه غښتلې قوه د بي بي مېرو کلي ته ولېرې او کلي ونيسي او کوهستانيان ورنه وباسي. يوه لويه قوه چې د پنځو اروپايي پلي ټوليو، او دوولسو هندي پلو ټوليو، دوو سوارو قوې او يوه ماشينگر نه جوړه وه د نومبر په ۲۳ مه نېټه امر وشو چې په بريد سره کلي ونيسي او هم د بي بي مېرو غونډۍ د را روانو پاڅون کونکو په وړاندې ونيسي.

برتانوي قواوې د شپې په دوو بجو په تياره کې د پندغالي د کوهستاني دروازې نه په بشپړه چوپټيا سره ووتلې چې دښمن حيران کړي. کله چې د غونډۍ تنګي ته قواوې ورسېدې غونډۍ ته وختې. دوی کوشن کولو چې ماشينگر د غونډۍ څوکه ته جگ کړي. کله چې قواوې په ژی کې وې ټوله قوه د غونډۍ په شمال ختيځ اړخ پورته حرکت وکړ چې د بي بي مېرو په کلي حاکم و. ماشين گر ځای په ځای شو او د کوهستانيانو په هدفونو د گولی باران وشو. کوهستانيانو د کورونو او د کلا د تمکو نه د جزايو په دزو متقابل ځواب وايه او د لومړي سباوون په رڼا کې دوی په بېرته سره د برتانوي گولی د ساحې نه د باندې موقعيت نيولو. برتانوي قواوو هغه موقع د لاسه ورکړه چې د حيرانوونکي دروند بمبارد په وخت کې چې کوهستانيان يې بې نظمه کړي وو، په کلي بريد وکړي. دغه وخت په کلي کې

خلوبښت کوهستانيان او نور د کلي خلک وو. برتانويان د کلا په نيولو کې پاتې راغلل په دې چې مېجر سوين اساسي دروازه غلظه کړه او هلته په يوه مورچل ورغی او د کلک مقاومت سره مخامخ شو. د افغانانو رسا گوليو دښمن ته زيات د سر زيان واراوه او مېجر سوين هم په غاړه ولگېد. د نيم ساعت وروسته ډکروال شېلټن برتانوي قواوې بېرته وغوښتې.

دغه وخت انگرېزانو ولېدل چې ډېر جنګيالي او سواره د ښار نه د غونډۍ په لور را روان وو. زر د بي بي مېرو د غونډۍ لوبډيځې غاړې لورې او لاندې هواره د غازيانو نه ډکې شوې چې شمېر يې نږدې لسو زرو ته رسېده. کله چې شېلټن د لوبډيځ نه د بريد سره مخامخ شو هغه د بي بي مېرو د غونډۍ د پوښنې له پاره درې ټولي چې د غونډۍ د پاسه پراته وو او يوه د سوارو قطعه د هوارې لوبډيځ ته ولېږل چې د کلي په لور او د کلي نه د دښمن حرکت پرې کړي.

په دې توګه جګړه بلې مرحلې ته ننوته. ده يوازينی ماشينګر نږدې تنګي ته ځای په ځای کړ او پلي يې په دوو مربع گانو کې يو د بل تر شا دوه سوه کزه کې بيل د سوارو سره د شا له خوا ځای په ځای کړل. افغانانو د برتانوي قوه لومړی مربع د خپلو اوږدو واټن جزايلو په رسا ډزو سره وپشته. د برتانوي د لنډ واټن جزايل اغېزمن نه وو. د کي په وينا افغان جزايلو زموږ سړي د وښو غونډې رېبل ۲۵۴ د برتانوي قواوو د پلې لومړی مربع د سر دروند زيان وکاله. دا وضع تر لسو بجو اوږده شوه. کله چې افغان غرنیو کسانو د شېلټن د قواوو بڼي اړخ تر گواښ لاندې ونيو. شېلټن د بڼي اړخ نه د والکر د سوارو ټولګی راوللو چې بېخي د منځه لاړ نه شي. افغان سوارو وکړای شول چې د مخکينې ليکې پرته د برتانيا پوځونه په ټولو نقطو کې کلابند کړي. د برتانويانو يوازيني ماشينګر په مخامخ غونډۍ کې تر هغه د فشار لاندې ونيول تر څو د کار نه ولوېد. د غازيانو څپو د برتانوي پوځ لومړی ليکه په شا وتمبوله. د برتانويانو په پلي پوځ کې وېره پيدا شوه او د خپلو قوماندانانو امر يې ونه مانه، د دوی ليکې ماتې شوې او وتښتېدل.

د لاندې په هواره کې افغانان د ویر سره مخامخ شول. د دوی يو نامتو مشر عبدالله خان اڅکزی سخت ټپي او د جګړې د ډګر نه يوړل شو. دغه خبر په افغان جنګيالي بد اغېز وکړ او خپل کړه يې ورو او د لنډ وخت له پاره شا ته شول. د دغې ارامۍ په جريان کې برتانوي قواوو بېرته پخوانی موقعيت ونيو. نږدې وه چې برتانويان خپل بری ولمانځي خو دوی دا موقع د لاسه ورکړه چې دښمن تعقيب کړي او برتانوي سواره يې ونه کارول. برتانوي قومانداني په دې کې هم پاتې راغله چې د پندغالي جنګي ليکه پياوړې کړي.

د لسو او يوولسو بجو په منځ کې د افغان د پليو جنگياليو لويه ډله د شاهي بن له لوري راغله، د هوارې نه تېره شوه او د غونډۍ ښې غاړې ته ورسېده.

د غرمې په شاوخوا کې وضيت بدلون وموند په دې چې د افغانانو د جنگياليو د پياوړي کېدو له پاره د افغانانو نورې ډلې په غونډيو راوختلې او د خپلو اوږده واټن د جزاييلو په رسا کوليو يې دښمنان په نښه کړل، چې زياتره برتانوي توپچيان يې ووژل. جگړه وروستۍ مرحلې ته ننوته. ډکروال شېلټن پرېکړه وکړه چې يوه نوي موقعيت ته په شا شي. دغه کار افغانان زړه ور کړل، خپل فشار يې چټک کړ، خپل گوزارونه يې جاري وساتل او په دښمن يې زور راوړ چې لار ورکړي. د غازيانو لويه ډله زر د تنکي نه راووته او په انگرېزانو ورتوی شول. شېلټن جگړن کرشواو ته امر وکړ چې د غونډۍ د څوکې نه د ده مرستې ته ودانگي. خو د مخه تر دې چې شېلټن وکړای شي ذخيره قواوې په نوي موقعيت کې ځای په ځای کړي غازيانو بريد وکړ او مربع يې په بشپړه توگه ماته کړه. د برتانويانو نظم پرې شو او سره له دې چې د پندغالي نه د توپو د گوليو باران اوږده برتانوي قواوې ماتې شوې. پندغالي ځکه روغ پاتې شو چې سردار عثمان خان خپلو سړو ته امر وکړ چې د پندغالي دروازه کې ودريري او غازيان پندغالي ته د ننوتو نه منع کړي. ۲۵۵

برتانوي قواوو د سر زيات زيان وگاله او نږدې درې سوه مرگ ژوبله ورواويسته. د بي بي مهرو جگړه د برتانويانو دپاره يوه د ډېرو مهمو او وړانونکو جگړو نه شمېرل کېږي چې د افغان- انگليس لومړۍ جگړې بدلېدونکې ټکي گڼل کېږي.

سياسي خبرې

د نومبر د ۲۳ مې پوځي ماتې برتانوي واکمن اړ کړل چې د ستونزمنې وضعې سره چې په افغانستان کې د دوی قواوې ورسره مخامخ شوې جدې سياسي حل تر کتنې لاندې ونيسي. افغان مشرانو غوښتل چې برتانوي پوځونه دې د افغانستان ټولو نيول شوي ښارونه لکه کندهار، غزني، کابل او جلال اباد پرېږدي. سردار محمد اکبرخان او نور بارکزيي مشران د امير دوست محمدخان او د هغه کورنۍ په امن سره د هند نه د راستنېدو په فکر کې وو. شاه شجاع د افغان مشرانو له پاره کومه جدي موضوع نه وه.

انگرېزانو د اکمالاتو د برابرولو او جلال اباد ته په امن کې د وتلو ضمانت غوښته. د برتانيې نماينده غوښتل چې د افغان مشرانو سره په سياسي لحاظ تر ټولو ښه شونې معامله وکړي. ده هيله درلوده چې د افغانستان نيواک به د قبايلي مشرانو سره د پوځي کړو او سياسي معاملو له لارې تامين کړي. مکناتن د بارکزيو، غلځيو او د قزلباشانو

مشرانو سره په بيله توگه په خبرو بوخت و او پيسې يې شيندلې چې خان ته ملاتړ پيدا کړي. مکناتن هڅه کوله چې د افغان مشرانو تر منځ بې باوري رامنځ ته کړي. همدارنگه ده د موهن لال له لارې پراخه جاسوسي شبکه په کار اچولې وه چې د افغان مشرانو د ترور په گډون دسيسې جوړې کړي. موهن لال د دوو وتلو افغان مشرانو عبدالله خان اخکزي او مير مسجدي خان د ترور مسوليت لري. داسې ښکاري چې عبدالله خان اخکزي د نومبر په ۲۳ مه نېټه د يوه ترورېست په کولۍ سخت ټپي او څو ورځې وروسته مړ شو. په همغه وخت کې مير مسجدي خان په جادويي ډول د جگړې د ډگر نه بې درکه شو چې ده په کې مهم رول لوباوه. بریدمن کونولي د مکناتن زوم او د شاه شجاع په دربار کې د هغه باوري نماينده موهن لال ته واک ورکړ چې د پاڅون مهم مشران ترور کړي. جان کونولي ليکي چې « لس زره روپۍ د پاڅون د هر مشر په سر » کېښودې شوې. زر د پاڅون دوه مشران په جادويي ډول مړه شول او د دوی د سر د پيسو ادعا وشوه.

د بې بې مهرو په جگړه کې د انگرېزانو ماتې په خبرو کې د برتانيا دريځ کمزوری کړ. افغانانو د نومبر په ۵ مه د مکناتن نه په خبرو کې وغوښتل چې شاه شجاع دې د خپلې کورنۍ سره تسليم شي، ډگروال سيل به جلال اباد پرېږدي او پېښور ته به لار شي، په کابل کې به د برتانيا کارنيزون ټوله وسله او کارتوس راوړي او ټول اروپايي افسران به د خپلو کورنيو سره تسليم شي او تر هغه به زموږ سره د برتمه په توگه ساتل کېږي تر څو د برتانيا پوځ په بشپړه توگه د افغانستان نه ووځي. د دغو شرايطو په منلو سره به افغان مشران ژمنه وکړي چې د برتانيې پوځ پرېږدي چې هندوستان ته ستون شي. څنگه چې دا شرطونه مکناتن خائنه سپکاوی وگاڼه رد کړل او خبرې پرې شوې.

د برتانيا پوځيانو په هغه صورت کې چې خبرې کومې پایلې ته ونه رسېږي دوی لارې په نظر کې ونيولې. لومړی لار دا وه چې خپلې قواوې د پندغالي نه بالاحصار ته بوزي چې هلته تر پسرلي پورې ساتل کېدای شي او دا وړانديز د شاه شجاع له خوا تاييد شو. دوهمه لاره چې ډگروال شېلټن يې ملاتړ وکړ دا وه چې د ختيځ په لور مارش وکړي او په لاره کې د جگړې په زور ځانونه جلال اباد ته ورسوي. لومړۍ لاره هغه وخت ناشونې شوه چې غازيانو د دسمبر په پنځمه هغه پل والوزوه چې پندغالی يې د بالاحصار سره نښلوه. د يو څو ورځو په جريان کې يو پر بل بريدونو دوام درلود تر څو چې برتانوي نماينده د خپلو پوځيانو تر فشار لاندې د دسمبر په ۱۵ مه د يوې کتنې په جريان کې افغان مشرانو ته يو د سولې پلان وړاندې کړ. د مکناتن پلان دا و چې د برتانيا قواوې به هند ته ووځي، د دوی اکمالات به کېږي او د دوی د وتلو امنيت به برابريږي. په تړون کې دا خبره هم وه چې امير

دوست محمد خان به هغه وخت بېرته خپل وطن ته راستنېږي چې برتانوي پوځ د افغانستان نه ووځي. دواړو خواوو پلان ومانه او د پوځ وتل بايد د سمبر په ۱۵ مه پيل شي. خو وتنه وځنډېده په دې چې اکمالات په خپل وخت بشپړ شوي نه و او غلزيانو دا ژمنه نه کوله چې د دوی د پوځ مارش به د غرونو په اوږدو کې په امن کې وي.

د دسمبر په ۱۳ مه برتانوي قواوې چې افغانانو يې بدرکه کوله د بالاحصار نه پنډغالي ته لاړې چې د خان سره يې څه غله خپلو وړو ملگرو ته يووړه. په تړون کې دا هم و چې شاه شجاع دې هند ته لاړ شي او د هغه د منلو وروسته زر افغان مشرانو وړانديز وکړ چې هغه دې په دې شرط پاتې شي چې خپلې لونه د مقاومت مشرانو ته واده کړي. شاه شجاع په لومړيو کې دا ومنله خو څو ورځې وروسته يې انکار وکړ. افغان مشران په انگرېزانو شکمن شول او دوی ته يې وويل چې اکمالات به هغه وخت در کوو چې قواوې په وتلو پيل وکړي. مکناتېن بله ورځ ۱۲۷م هندي کنډک ته چې په غزني کې پروت و امر وکړ چې د زرمتم او اسماعيل خان دېرې له لارې هند ته لاړ شي.

د دسمبر په ۲۱ مه مکناتېن او افغان مشرانو سردار محمد اکبرخان او محمدعثمان خان په يوه تړون موافقه وکړه چې څلور برتانوي افسران به افغانانو ته د برتمه په توگه سپارل کېږي چې په هغو کې تورن کونولي، او اېرې هم شامل وو. د افغانانو دا غوښتنه چې د برتمه کسانو په گروپ کې دې ډگروال شېلېن شامل شي رد شوه. د نومبر ۲۲ مه د دوی د وتلو نېټه وټاکل شوه. په همدغه ورځ مکناتېن خپله توپانچه محمد اکبرخان ته د ډالۍ په توگه واستوله. خو مکناتېن لا اوس هم په دې هيله و چې د افغانانو تر منځ د نفاق اچولو له لارې وضعيت ښه کړي. هغه موهن لال کړو ته هڅاوه چې په پټه د مقاومت مهمو مشرانو ترور ته دوام ورکړي. هغه د بارکزيو مشرانو سره تړون درلود. هغه د غلزيانو او قزلباشانو مشرانو ته د زياتو پيسو وړانديز وکړ چې د شاه شجاع او د هغه برتانوي متحدينو له پاره د دوی ملاتړ وکړي. هغه برسېره پر دې د نواب زمان خان، سردار عثمان خان او نايب امين الله لوگري هر يو سره گونې گونې خبرې پيل کړې پرته له دې چې يو مشر د بل د خبرو نه خبر وي.

کله چې افغان مشران د مکناتېن د دسيسه يزو مانورو نه خبر شول هغه ته يې يوه لومه کېښوده چې په ډېره اسانۍ سره په کې ولويد. اکبرخان افغان مشران راوغوښتل چې د برتانوي نماينده د دسيسې نه يې خبر کړي چې افغان مشران يو د بل په ضد ودروي تر څو خپلې موخې ته ورسېږي. د دې له پاره چې د برتانوي نماينده بې لوزي نورو افغان مشرانو ته ثابته شي هغه د نورو مشرانو سره په پوهاوي يو تېر ايستونکی پلان جوړ کړ

چې د نماينده اخلاص وازمايي. د دسمبر په ۲۲ مه سردار محمد اکبرخان مکناتن ته د باور نه وړ سخاوتمند پلان مسوده ولېرله چې شاه شجاع دې د پاچا په توګه پاتې شي او محمد اکبرخان به د وزير په توګه چارې پرمخ بيايي او د برتانيې قواوې دې نورې اته مياشتې د اړينو اکمالاتو د برابرولو له پاره په بالاحصار کې پاتې شي او بيا دې په خپله اراده ووزي. د دې په بدل کې به برتانوي لوري اکبرخان ته درې ميليونه روپۍ ورکوي او هر کال به څلور لکه روپۍ شېبسيډي ورکوي. د دې د ثبوت له پاره به امين الله خان لوګری چې يو له هغو مشرانو نه دی چې انقلاب يې پيل کړی و، بندي او تاسو ته وسپارل شي. مکناتن تړون لاسليک کړ او بله ورځ يې د اکبرخان سره د کتنې موافقه وکړه.

مکناتن په دغه ازموڼ کې پاتې راغی. مکناتن ته خپلو ملګرو خبرداري ورکړې و چې د افغانانو پلان يوه دسيسه ده او مشوره يې ورکړې وه چې دا ګام نه واخلي. مکناتن ويل چې «دا خطرناک دی، خو که دغه بريالی شي، دا د ټولو خطرونو ارزښت لري: پاڅون کوونکي د دې تړون يوه ماده هم نه پلې کوي؛ او زه پر هغو باور نه لرم؛ او که پر دې مور خپل عزت ساتلی شو، ډېر به ښه وي. په هر صورت زه به د دې له پاره چې وروستی شپږ اوونۍ ژوندي پاتې شو يو سل مرګونه وزغمم.» ۲۵۶

سر ويليم مکناتن د دسمبر په ۲۳ مه د غرمې په شاوخوا کې د تورنانو لاورنس، تريور او مکزي په ملګرتيا د پندغالي د ختيځې دروازې نه ووتلو چې د اکبرخان او د هغه د ملګرو سره وويي. د دوی ليدنه په هغه هواره کې کېده چې د ننني محمود خان پله او مکرويانو پله تر منځ واقع وه. دا ځای د پندغالي د ختيځ ډېوال نه د څلور سوه کزو په واټن کې پروت و. مکناتن اکبرخان ته د ښه نيت د څرګندولو له مخې اس د ډالی په توګه چې په ۳۰۰۰ روپۍ يې اخېستی و، وړاندې کړ چې هغه په خوشالی سره ومانه او هم يې د هغې تپانچې له امله مننه ترېنه وکړه چې تېره ورځ يې د ډالی په توګه وړلېرلې وه. خبرې اتري هغه وخت پيل شوې چې اکبرخان، سلطان جان او محمدشاه خان غلزايي د مکناتن او د هغه سره درې تنو تورنانو مخامخ کېناستل او نور افغان مشران د اکبرخان شا ته ولاړ وو. د مکناتن د امن لس کسيزه ډله ۲۰ کزه ليرې ولاړه وه.

غونډه اول په ارامه پيل شوه خو زر ګډه وډه شوه او اکبرخان مکناتن په دې تورن کړ چې د افغان مشرانو په منځ کې د بې اتفاقي تخم کړي او هغه ژمني د نظر نه باسي چې کړې دي. وروسته له دې چې خبرې پنځلس دقيقې اوږدې شوې وې محمدشاه خان اکبرخان ته په پښتو وويل چې وخت تېرېږي او اکبرخان سمدلاسه خپلو ملګرو ته امر وکړ چې مکناتن او د ده ملګري ونيسي. مکناتن د اکبرخان او سلطان جان سره چې غوښتل يې

ژوندی یې ونیسي او ښار ته یې د برمه په توگه بوزي په مبارزه بوخت و. خو کله چې مکناتن د اس سپرولو نه ډډه وکړه اکبرخان دی په هغه توپانچه وویشت چې یوه ورځ د مخه یې په خپله د ډالی په توگه ورکړې وه. محمدشاه خان او غلام محی الدین خان لاورنس او میکزي خلاص کړل او په خپلو اسونو یې سپاره او محمودخان کلا ته یوړل، خو تریور چې د محمدشاه خان د ورور شا ته ناست و په مخکه ولوېده او سمدلاسه د غازیانو له خوا ټوټه ټوټه شو. تورن میکزي چې په خپله په دغو خبرو اترو کې کېدون کړی و لیکي: «د عادي روغېر نه وروسته اکبرخان د راکړې ورکړې په اړه خبرې پیل کړې او د نماینده نه یې وپوښتل چې دی پوره تیار دی چې د تېرې شپې وړاندیزونه پلي کړي؟ نماینده ځواب ورکړ چې «ولې نه؟» وروسته له څه وخت نه کیتان چې د یوه افغان سره په خبرو لکيا و هغه سمدلاسه د محمد اکبرخان غږ واورېد «بکیر! بکیر!» (ویي نیسه!، ویي نیسه!) او چې مخ یې راواړوه ما هغه ولید چې نماینده یې د کین لاس نه نیولی او مخ یې د ډېر قهر نه سور ښکارېده. فکر کوم چې دا سلطان جان و چې نماینده یې د ښي لاس نه نیولی و. دوی هغه د کوچنی غونډی نه په ځور کښوه. یوازینی کلیمه چې د بې وزلې سر ویلیم نه مې واورېده دا وه «از برای خدا!» (د خدای دپاره!) خو بیا هم ما د هغه مخ ولیده او د وېرې او حیرانتیا نه ډک و. «۲۵۷»

کیتان لاورنس هم ورته بیان کوي. د مکناتن سر د هغه د تنې نه بیل و او د نواب زمان خان کور ته یې چې د پاڅونوالو تش په نامه پاچا و وړلو. د هغه تنه یې لرې ځکوله او بیا په بازار کې د عامو خلکو په وړاندې وڅړېده. ۲۵۸

د نماینده وژنه په کابل کې د برتانوي پوځ د پای نښه ښودله. ډگرمن پوتینجر د مشر سیاسي افسر په توگه د خبرو مزی په لاس کې واخېست. د کړېسمس په درشل کې د یوه ترون نوې مسودې په اړه د برتانيا د کمپ سره خبرې وکړې. افغان مشرانو د یوې خوا د مکناتن فریب ورکونکی چلند وغنده او د بلې خوا یې د هغه په وحشیانه وژنې پښماني وښوده. نوې غوښتې وړاندې شوې چې د هغه پیسو تادیه چې د مخه د معاملې د ملاتړ د خدمتونو له امله مشرانو ته نماینده منلې وې، د څلورو نور برمه تسلیمول چې د مخکینیو دوو کسانو سره چې اوس د افغانانو په لاس کې دي یو ځای شي، او د شپږو ماشینګرو پرته د ټولو توپونو تسلیمول په کې شامل و. هلته د برتانوي په پندغالي کې د برتانویانو توده غونډه روانه وه چې د افغانانو د غرور نه ډکو غوښتنو ته ځنګه غبرګون وښايي. په غونډه کې پوتینجر کلک دریځ غوره کړ او دغه د شرم نه ډکو غوښتنو منل یې سپکاوی او لویه تېروتنه ګڼله. د هغو پېغامونو نه چې د جلال اباد او پېښور نه رارسېدل،

بنسکارېده چې د دوی د ملاتړ دپاره د هند نه قواوې راروانې دي. هغه وړاندیز کاوه چې يا بالاخصار ونيسو او خپله وضعه ټينگه کړو يا به په لاره کې د درو نه په جگړې سره تېرېږو، جلال اباد ته به ځو. خو پرېکړه داسې وشوه چې د افغانانو د غوښتنو منل تر ټولو ښه شونې نظر دی. د راتلونکو ورځو په جريان کې پوټينجر پرته د څلورو برمه کسانو تسليمول چې ښځې او کوچنيان لري د افغانانو ټول شرطونه ومنل. په تړون کې هغه کسان چې ناروغ يا يې د تک وس نه درلود ښار ته د دوو جراحنو په ملگرتيا ولېږل شول. تړون د مشرانو له خوا تاييد او د ۱۸۴۲ نوي کال په ورځ پندغالي ته ولېږل شو. د دغه تړون له مخې به برتانوي پوځ وروسته له دې چې دوی ترانسپورت تر لاسه کړي د افغانانو د ساتنې لاندې وځي. د جلال اباد او غزني قواوې پېښور او د کندهار قواوې به هند ته د افغانانو د ساتنې لاندې ځي. برتانوي واکمن شکمن وو چې افغانان به خپلې ژمنې چې مشرانو يې کړې دي پوره نه کړي.

د ۱۹۴۲ کال د جنوري په ۶مه برتانوي قواوې د کابل نه جلال اباد ته د پندغالي نه نږدې ۹ بجې روانې شوې چې ۶۹۰ اروپايان، ۲۸۴۰ هندي قواوې، ۹۷۰ هندي اسونه، ۲۰۰۰ اوبسان او کچرې او شپږ توپونه د ۱۲۰۰۰ غير جنکي پرسونل د ښځو او کوچنيانو په گډون روانې شوې. دوی بل سهار په ۱۲ بجو لومړي تم ځای ته ورسېدل. کله چې پوځ تېريده غازيان او نور لاروونکي د دوی پر پله تلل او د شا او اړخونو له لوري يې پرې ډزې کولې، د کمپ امله يې ويشتل او بارونه يې چورول. نيمايي لښکر د جگړې وړتيا د لاسه ورکړې وه چې دوه توپونو ته د پند غالي نه د وړلو اجازه ور نه کړه شوه، دوه يې د بگرامی او بتخاک تر منځ د کار نه ولوبدل او د شاه شجاع د پوځ ځنې ټولگي په دوهمه ورځ وتښتېدل.

په بتخاک کې اکبرخان بيا راښکاره شو قطار يې ودراره او ژمنه يې وکړه چې تر بل سهار پورې به قطار تر جلال اباد پورې بدرگه کړي. هغه د نورو کسانو د برمه کولو غوښتنه هم وکړه او مېجر پوټينجر، تورنان لاورنس او مېکزي يې د ځان سره واخېستل داسې چې دا قوه به د تېزين نه هغه خوا حرکت نه کوي تر څو چې ده د جلال اباد نه د سېل لوا د وتلو خبر ترلاسه کړی نه وي. وروسته يې ۱۵۰۰۰ روپۍ سېسېډي ترلاسه کړه او افغان مشر بيا ورک شو. په دوو ورځو کې قطار لس ميله لاړ او د سريزات زبان او بار يې د لاسه ورکړ.

په قطار باندې ډېر ويجاړونکي گوزارونه هغه وخت وشول چې د درې درو نه تېريده. دا ۳ درې خورد کابل، تېزين او جگدکک وې. خورد کابل ته په رسېدو سره د جنوري په

۸مه نېټه د غلزيو وسله والو ډلو تنگی بند کړ او د اړخونو نه يې په قطار د جزایلو ډزې کولې. قطار هغه وخت بيا حرکت وکړ چې يوې قطعې د تنګي په خوله کې يو حاکم ځای ونيو. په دې دره کې نږدې ۵۰۰ سرتېري او ۲۵۰۰ د کمپ عمله ووژل شول. ونسېنت اير چې په دې قطار کې و وایي چې اکبرخان او نورو مشرانو هڅه کوله چې غلجيان د بريد نه منع کړي خو په هغوی د چا زور نه رسېد. ۲۵۹ د جنوري په ۹مه قطار چې ټوله شپه واوره اوږده بيا حرکت پيل کړ. د يو ميل تګ نه وروسته اکبرخان بيا قطار ودراره او غوښتنه يې وکړه چې ټولې ښځې او کوچنيان دې د ده د ساتنې لاندې ورکړل شي. ما ليکوال ته دا فکر پيدا شو چې اکبرخان شايد دا کار په دې کړی وي چې د تباهی نه د دوی ژوند وژغوري. الفنسټون هم رضایت ونيو چې دوی د ساره، لوړې او ستريا د بېوزلۍ نه خلاص شي.

د جنوري په لسم دا کوچنی شوی قطار روان شو او مخکینی ساتونکې قوه د ۴۴م کنډک او د سوارو د يوه ټولې نه جوړه وه چې يو توپ ورسره و. دوه ميله مخته لاړ خو کله چې د تور تنګي خوله ته ورسېد چې نږدې لس فوټه پراخوالی يې درلود د لوړو سرو نه د جزایلو د درندو ډزو لاندې راغی او ډېر سړي يې له لاسه ورکړل. تنګی لنډ و کله چې مخکینی قواه چې د قطار نه ۵ ميله وړاندې وه په خاک جبار کې ودرېده. دوی هلته د قطار اساسي برخې راتلو ته سترګې په لاره و چې هېڅکله ور ونه رسېده. د قطار دغه اساسي وروستی برخه په تنګي کې د غلجيانو د بريد لاندې راغله او ټول يې له يوه سره ووژل. هغه تیت او پرک کسان چې کمپ ته راورسېدل د خان سره يې بورنونکي خبرونه راوړل. د قطار شمېر زرو تنو ته راټیټ شوی و. اکبرخان د الفنسټون د دې خبرې په اړه چې تاسو خو د امن ضمانت کړی و، بخښنه وغوښته او وويل چې موږ ونه شو کولی چې د غلجيانو مخه ونيسو. هغه ورته وويل چې زه د هغو اروپايي افسرانو ضمانت کوم چې وسله په مخکه کېږدي او زما د ساتنې لاندې راشي.

افسرانو د اکبرخان وړاندیز رد کړ او دوی خپل حرکت د تېزین د درې په لور پيل کړ او د هفت کوتل درې نه چې درې ميله اوږده وه په لاره کې يې جکره کوله په بري سره تېر شول په دې چې د ډکروال شېلټن کونښنونو چې د قطار چاپېر يې ساته د غلجيانو بريدونه يې اغېزې کړل. په دې توګه دا قوه د منځه تلو نه وساتل شوه او په څلورو بجو تېزین ته ورسېده. تر دې ځايه قطار ۱۲۰۰۰ سرتېري او عمله له لاسه ورکړي وو.

د اکبرخان د يوې اغېزمنې ساتنې نه ناهیلی قطار جګدکک ته چې شل ميله هغې خوا ته پروت و په تېزۍ سره ټوله شپه په دې هيله خپل تګ ته دوام ورکړ چې دوی به يې د مخه

تر دې چې دښمن هلته ورسېږي ونيسي. د شپې تگ د عملې د ډار له امله پرې شو او د دغه ناوختوالي له امله مخکيني کار د جنوري په يولسم په سباوون کې کتارسنگ ته ورسېد چې لا لس ميله واټن جگدک ته پاتې وو. دوی د قومي خلکو له خوا چې جگو ځايو ته ختلي وو، گواښېدل. دا دښمن د پرله پسې گواښ لاندې په وينو لړلي قطار جگدک ته په درې بجې ورسېد. دلته د اکبرخان سره په يوه کتنه کې الفنسټون، ډگروال شېلټن او تورن جانسن هم د برمه په توگه د محمد اکبرخان سره تر هغه د ساتنې لاندې ونيول شول تر څو د جلال اباد نه برتانوي قواوې وتلې نه وي. د دوی سره ښه چلند شوی وو. سردار همدارنگه دا ژمنه هم کړې وه چې سمدلاسه به ورو سرتهرو ته دوډی چمتو کوي چې دوی په امن کې جلال اباد ته ورسېږي. خو کله چې دوی حرکت وکړ د جگدک په تنکي کې غلزيانو دزې وکړې او په دغو ډزو سره يې خپل نيت ښکاره کړ. دغه وخت په قطار کې د څلور څلوېښتم غونډ ۱۲۰ تنه او د توپچيانو نه ۲۵ تنه پاتې وو. په دغه تنکي کې غلزيانو په انگرېزانو له هرې خوا د گوليو باران جوړ کړ، دولس افسران په کې مړه شول او چې سباوون کېده دا پاتې کسان گندمک ته چې د جلال اباد په سوويل لويديځ په ۳۵ ميله واټن کې پروت دی ورسېدل، چې هلته عامو خلکو د غزا د نارو په ويلو سره يې دوی کلابند کړل. دوی د يو څو تنو پرته چې نيول شوي وو، په بشپړې ناهيلی کې د وروستي تن پورې وجنگېدل. يوازې شپږ تنه چې تورنان بيليو، کولير، هوپکينز، بريدمن برې او ډاکټران هاربر او برايډن وو فتح اباد ته ورسېدل چې د جلال اباد په ۱۶ ميلي کې پروت دی. په فتح اباد کې ځينو بزگرانو دوی ته دوډی ورکړه خو زر يو شمېر د کلي اوسېدونکو پر دوی بريد وکړ بيليو او برې يې ځای په ځای ووژل، پاتې څلور تنه يې په لارې روان کړل چې درې تنه يې ور څخه ووژل او يو تن ډاکټر برايډن يوازینی کس و چې ټپي او په نيم ژوندي حالت کې د جلال اباد دېوال ته نږدې راښکاره شو. په دې توگه ۴۵۰۰ جنگيالي، ۱۲۰۰۰ د کمپ عمله په اتو ورځو کې په ۵۵ ميله واټن کې له منځه لاړل. د غلزيانو د جزايو په پرتله، يخ، يخ وهنې، واورو او لوړې د زيات شمېر کسانو ژوند واخېست.

وروستی عمل

د کابل گارنيزون د منځه تللو خبرونه هندوستان ته ورسېدل. برتانوي واکمن د گران انتخاب سره مخامخ شول. دلته تر اوسه مهم ځايونه د کندهار، کلات، غزني او جلال اباد په کېدون د برتانوي نيواک په لاس کې وو چې په زياته اندازه د افغان ناسيونالستانو له خوا تر زياتېدونکي گواښ لاندې وو. دلته د برتانوي واکمنی د حيثيت د اعادي خبره وه. دې

ماتې د برتانيې پرستېز ته ستر زيان اړولی و. په پای کې د برتانيې دولت او په هند کې د هغه وایسرا ار شول چې د افغان پالېسي په اړه نوی نظر وکړي او یوه نوې ستراتيژي جوړه کړي چې د شرایطو د بدلون سره سمون وکړي.

په افغانستان کې د برتانيې پاتې کارنيزونو د غزني د کارنيزون پرته وکړای شول چې د هند نه د قواوو تر رسېدو پورې ځانونه وساتي. په جلال اباد کې ډگروال سيل پرېکړه وکړه چې تر هغه ښار ونيسي چې قواوې ژوندی وساتي. هغه د ښار دېوالونه ترميم کړل او د ښار نه يې د جزایلو د کنډک د څو سوو افغان سرتېرو په کېدون ۲۰۰۰ اوسېدونکي وایستل په دې چې خپل امن تامین کړي. که څه هم په اپرېل کې خبرونه راورسېدل چې د جنرال پالک په مشرۍ مرستندويه قواوې د خیبر د درې نه په تېرېدو کې نابریالی شوې خو جنرال سيل د اکبرخان په کمپ په زوروتیا سره برید وکړ او هغه يې په شا وتمبوه او لغمان ته په شا شو.

په کندهار کې هم انگرېزانو هڅه کوله تر هغه پورې چې مرستندويه قواوې رارسېږي خپل ځانونه ژوندي وساتي. د فبروري په ۲۰ نېټه دوی ته د الفندستون او پوتینجر لارښوونه ورسېده چې کندهار او کلات خوشي کړي. نابت او د هغه سياسي افسر راولینسن پرېکړه وکړه چې ځان ټينگ کړي. افغانانو دوی هم گواښول چې ښار پرېږدي. د جنوري په ۲۸ مه کندهار ته د برتانوي واکمنو رسمي لیک راورسېد چې په هغه کې يې امر کړی و چې د کندهار نیواک ته دوام ورکړي. کارنيزون د مارچ په درېمه د ښار نه ۵۰۰۰ اوسېدونکي وایستل او څو ورځې وروسته يې د یوه برید په ترڅ کې دراني جنګیالي ليرې پورې وهل. د جنرال انگلنډ قواوې د می په لسمه نېټه د کوبټي نه راورسېدې.

د غزني د کارنيزون ۴۰۰ قواوې چې د کرنل پالمتر قوماندې لاندې وې ژوندی پاتې نه شوې. افغانانو هغه تړون مات کړ چې د کارنيزون سره يې کړای و. افغانانو ژمنه کړې وه چې دا قواوې تر پېښوره بدرکه کړي. برتانوي قواوې چې د درانده فشار لاندې وې د مارچ په دوهمه په بالاحصار کې تسليم شوې او بیا تر وروستي کس پورې ووژل شول. د کلات کارنيزون لکه چې د مخه مو یادونه وکړه د کندهار نه یوې قوې خلاص کړ او کندهار ته یورل شو.

محمد اکبرخان چې د مکناتن د وژنې وروسته تر ټولو نفوذمنه څېره شوه د شاه شجاع نه وغوښتل چې د ده سره په جلال اباد کې په ګډه وجنګېږي. شاه شجاع زیات زړه نازره و خو وروسته يې پرېکړه وکړه چې غاړه کېږدي. شاه شجاع وروسته له دې چې خپل زوی شاه پور يې په کابل کې د وایسرا په توګه وټاکه د جلال اباد د جګړې نه دوی ورځې

مخه د اپرېل په پنځمه نېټه د بالاحصار نه ووت. هغه غوښتل په سياستگ کې د خپلو قواوو سره يوځای شي خو په لاره کې د ده په ډولې باندې د زمان خان د زوی شجاع الدوله له خوا بريد وشو او ځای په ځای ووژل شو.

د برتانوي مرستندويه قواوو په راتگ سره په افغانستان کې د قواوو د وتلو له پاره د دوی پخواني حکمونه لغوه شول. د برمه شويو د ازادولو، د امپراتورۍ د پرستېز د بېرته په ځای کولو او افغانانو ته سيمبوليکه جزا ورکولو له پاره د کابل د بيا نيولو اړتيا وه. د ۱۸۴۲ کال د جولای په لومړيو کې د هند کورنر جنرال په جلال اباد کې جنرال پالک او په کندهار کې جنرال نابت ته امر وکړ چې د کابل په لور وخوځېږي او د برتانوي پوځ د ډله ييزې وژنې غچ واخلي او د پېښور له لارې بېرته هند ته راستانه شي.

محمد اکبرخان د جلال اباد د ماتې وروسته لغمان ته په شا شو او برمه شوي يې د ځان سره بوتلل. د اپرېل په ۱۱ مه يې برمه شوي د لغمان نه تېږن ته يوړل چې هلته د اپرېل په ۱۳ مه جنرال الفنسټون مړ شو. د می په ۲۲ مه اکبرخان احساس وکړ چې بنديان په امن کې نه دي او دوی يې شيواکي ته ولېږل. درې مياشتې وروسته چې برتانوي قواوې د جلال اباد او کندهار نه د کابل په لور وخوځېدې محمد اکبرخان برمه شوي د ټينگې بدرکې په مټ باميانو ته ورسول.

جنرال پالک د سپټمبر په ۷ مه د ۸۰۰۰ پوځ سره کابل ته وخوځېد. په جگدک کې انگرېزانو د غلزيانو مقاومت مات کړ او د دسمبر په ۱۱ تېږن ته ورسېدل. د اکبرخان قواوې په تېږن کې د برتانوي قواوو سره سخته جگړه وکړه او غوربند ته په شا شو. جنرال پالک د جنرال نابت نه دوې ورځې د مخه کابل ته ورسېد.

جنرال نابت د اگست په ۹ مه د کندهار نه د دوو اروپايي او پنځه هندي پلي کنډکونو او يو څه سوارو سره حرکت وکړ هغه په غزني کې د والي شمس الدين له خوا د سخت مقاومت وروسته د غزني کلا ښکته کړه او د سلطان محمود غزنوي د مقبرې دروازه يې د کورنر جنرال په لارښوونه د ځان سره واخېسته. دوی په تېروتنې سره دا کومان کاوه چې کوياد هغه د سومانات دروازه ده چې سلطان محمود غزنوي د هند نه د ځان سره راوړې وه. البېرو غوښتل چې په دې هندوان احساساتي کړي چې کوياد دوی يو مذهبي سيمبول يې بېرته راوگرځاوه. جنرال نابت پنځه ميله لرې خپل کمپ ودراره په دې چې د ده د مخه جنرال پالک کابل ته ننوتلی و.

افغانستان ته د برتانوي د نويو ځواکونو د رارسېدو او د افغان مشرانو د ماتې وروسته د برمه شويو د خلاصون له پاره شرايط برابر شول. د سپټمبر په ۱۶ برمه

شوي د باميان نه کابل ته روان شول. د دوی د بدرکې دپاره د جنرال پالک منشي رېچموند شکسپير د ۶۰۰ قزلباشو سوارو سره ولېږل شو. د سپتمبر په ۲۰ مه برمه شوي په امن سره ارغندي ته راورسېدل چې د جنرال سيل له خوا يې هرکلی وشو او دی د خپلې مېرمنې ليدي سيل سره چې د برمه شويو په ډله کې وه يوځای شو.

د سپتمبر په ۱۶ مه جنرال پالک په فورماليټي ډول کابل بيا ونيو او د برتانيې بيرغ يې د بالاحصار په کلا ودراره او د شاه شجاع زوی فتح جنک يې په تخت کېناوه چې بيا د کابل نه وتښتېد او په گندمک کې د جنرال پالک سره يو ځای شو ترڅو د هغه سره هند ته لاړ شي او هلته سياسي پناه وغواړي.

د مقاومت زياتره مشران د کابل په چاپېر کې وځړول شول. يو شمېر يې د امين الله لوکري او سردار محمد اکبرخان په گډون کوهدامن ته وتښتېدل.

د دې له پاره چې برتانوي پوځونه هند ته د تگ په مهال د مقاومت سره مخامخ نه شي جنرال پالک يوه گړندی پوځي ډله، چې د قزلباشانو مشر خان شيرين خان او د شاه شجاع زوی شاه پور ورسره مله وو، کوهدامن ته واستوله چې بيا پورته شوې دښمنې قواوې وځي. په استالف کې د امين الله خان لوکري قرارگاه پراته وه. د انکرېزانو ځواکونو دا د استراحت بنسکلی کلی د خاورو سره برابر کړ، د هغه ځای د انکورو بڼونه يې تباه او د خلکو دېره برخه يې بې ځايه کړه. دا د ويجارې چارې يې تر چارېکاره پورې ورسېدې.

په کابل کې يې د مقاومت د مشرانو کورونه هم ړنگ کړل. جنرال پالک د برتانوي پوځ د وتلو نه درې ورځې د مخه خپلو استحکام چيانو ته امر وکړ چې د چار چې بازار ړنگ کړي چې افغانانو هلته د مکناتن تنه ځورنده کړي وه. برتانوي سرتېرو کورونه او هټي چورولې. د دوی قزلباش دوستان او سوله يز هندوان چې د چنداول په گاوند کې پراته وو، هم د دغه چور او چپاول نه په امن کې پاتې نه شول. د جنرال نابت سرتېرو د کابل چاپېر کلي لکه چاردهي، ده دانا او افشار لوټ کړل.

د ۱۸۴۲ کال د اکتوبر په ۱۲ مه د برتانيا گډو ځواکونو د جلال اباد په نيت کابل پرېښود. دوی روند شاه زمان، د شاه شجاع کورنی او خپل برمه کسان چې خوشي شوي وو د ځان سره بوتلل. دوی په لاره کې د غچ اخېستنې موقع له لاسه نه ورکوله. په جلال اباد کې کله چې ټولې فرقې سره يوځای شوې جنرال پالک د جلال اباد د کلاکانو د ړنگولو امر وکړ. بيا برتانوي قواوې د خيبر درې له لارې وطن ته ستې شوې. په کابل کې اکبرخان پلازمينې ته خپلې قواوې د ننه کړې او شاهپور لاسپوڅی شاه يې لرې کړ، نواب زمان خان د جلال اباد د والي په توگه، شمس الدين خان د غزني د والي په توگه او سلطان جان د

کندهار د والي په توګه وټاکل شول.

د لارډ اولکنډ له خوا په افغانستان باندې د رژيم د بدلون په نيت د جګړې د اعلان نه څلور کاله وروسته د هغه ځايناستي النرو د افغانستان نه برتانوي پوځ وايست او افغانان يې پرېښودل چې د خپلې خوښې حکومت جوړ کړي.

برتانويانو امير دوست محمد خان چې په ۱۸۴۰ کال کې دوی ته تسليم شوی او هند ته يې لېږلی و خلاص کړ او د ۱۸۴۳ کال په لومړيو کې وطن ته راستون او د خپل زوی او نورو افغان مشرانو له خوا يې د افغانستان د امير په توګه تود هرکلی وشو.

په دې توګه د افغان- انګلیس لومړۍ جګړه پای ته ورسېده. انګرېزانو ته دا جګړه په لوړه بيه تمامه شوه پرته له دې چې د جګړې موخې ته، چې په کابل کې د برتانيې پلوي رژيم ودروي، ورسېږي. په دې جګړې کې لس زره جنګيالي ووژل شول، په لسګونو زره د کمپ عمله تباه شوه او ۱۰۰۰۰ ميليونه پونډه لګښت يې وشو. افغان لوری چې د يرغل قرباني و، ډېر جنګيالي له لاسه ورکړل، زيات ښارونه، کلي او موسسې او د ژوند وسايل يې وېجاړ او برباد شول.

دولسم څپرکی

کاکړ او د امير دوست محمد خان دوهمه واکمني

د مخه مو يادونه وکړه چې امير دوست محمد خان په ۱۸۱۸ کې د سدوزو د واکمنۍ د پرزېدو وروسته د يوې اوږدې مودې د کورنۍ جگړې په يون کې د محمدزو د واکمنۍ بنسټ کېښود. امير دوست محمد خان د سردار پاينده خان د يوويشتو زامنو نه د خپل سکه ورور محمد امين نه پرته تر ټولو کشر او مشر يې وزير فتح خان وو. وزير فتح خان يو زور او مدبر سړی و او د وزير په توگه يې خپل ټول ورونه په لوړو څوکيو وگومارل. کله چې په وحشيانه توگه ووژل شو نو د هغه د مړينې وروسته د پاينده خان زامنو لومړی د واکمن کېدو له پاره مبارزه پيل کړه تر څو په پای کې په دې بريالي شول چې واک د سدوزو نه محمدزو ته ولېږدوي. خو د واک د لېږد وروسته د دوی تر منځ د کورنۍ جگړې اور بل شو. امير دوست محمد خان چې د خپلو ورونو په منځ کې څيرک او هوبسيار و په ۱۸۲۶ کې د قزلباشانو په مرسته د کابل د والي په توگه واک راتول کړو او په پای کې واکمن شو. د افغان- انگليس د لومړۍ جگړې په جريان کې انگرېزانو ته تسليم شو او دوی هندوستان ته پرار کړو. خو بيا کله چې په دغه جنگ کې د وزير محمد اکبرخان په مشرۍ د افغان جنکياليو له خوا د انگرېزانو ۱۶۵۰۰ پوځ تباہ شو نو دوی په ۱۸۴۳ کې امير دوست محمد خان بېرته راستون کړ او يو خپلواک امير شو.

دغه مهال چې امير دوست محمد خان افغانستان ته راستون شو په کابل کې د حکومت، منظم اردو او دفتر نښې نه وې. په کندهار کې د امير ناسکه ورونو چې د کندهاري ورونو په نامه مشهور وو د پارس نه کندهار ته راستانه شول او هلته يې واکمني درلوده. هرات دا مهال د سدوزو شاهانو د واکمنۍ د لاسه وتلی و او يارمحمد الکوزي خپلواکه واکمني په کې کوله. د هندوکش په شمال کې د ميمڼې نه نيولې تر بدخشانه پورې ځايي بيگانو او ميرانو خپلواک حکومت کولو. برسېره پر دې د پارس قاجارانو هرات تر کواښ لاندې نيولی او په کندهار کې يې خپل نفوذ پراخ کړی وو، په ختيځ کې پېښور چې د سدوزايي شاهانو د ژمي پلازمينه وه د سکانو د واکمن په لاس کې وه او په هند کې انگليسانو د خپل حاکميت د پراخوالي له پاره د لوېديځ په لور د پرمختگ هيله درلوده.

په لومړيو څو کلونو کې د امير دوست محمد خان تخت د نواب زمان خان، سلطان

جان، محمدشاه خان بابکرخېل او د امير زوی محمد اکبرخان په گډون د واقعي او په خپل ستايل د جگړې اتلانو ننګوه. امير ار شو چې د دوی د خوشالولو دپاره هغوی ته ولايتي حکومتونه او نور لوړ مقامونه ورکړي. اکبرخان د وزير په توګه وټاکل شو. خو بيا هم ده زيات وخت په خپل زړه کړنې ترسره کولې.

په امير دوست محمد خان باندې د جگړې تجربو او په برتانوي هند کې درې کلن تبعيد د ليدو وړ اغېز کړی و. هغه اوس په ډېرې هوښيارۍ سره کورنی او بهرنی سياست پرمخ بيوه او خپلې شونتياوې او محدوديتونه يې په واقعي توګه ليدل. د بلې خوا جگړې د هغه زوی اکبرخان او ملګرو نه داسې سړي جوړ کړي وو چې د افغان امپراتورۍ د لاسه تللې مخکې د بېرته ترلاسه کولو له پاره چې برتانوي هند د پراختيا غوښتنې له مخې يو په يو د واک لاندې راوستي وې لوړ خوښونه ليدل. د اکبرخان انگليسي ضد احساساتو دی هڅاوه چې د بدیلو ځواکونو سره د اتحاد په لټه کې شي. هغه يو ځل د يارمحمد سره په ګډه غوښتل چې د پارس د دربار نه مرسته وغواړي چې د ايندوس په دره کې د انگليسي د وده موندنکې پراختيا مخنيوی وکړي. خو امير دوست محمد خان د دې سره مخالف و په دې چې د دې کار پلي کېدل اړين وسایل او مناسبې موقعې غواړي او اوس د دوی شونتياوې محدودې وې. د امير او د ده د زوی جاه طلبۍ د دوی ترمنځ د باور او همغږۍ چاودون پيدا کړو او د مانۍ نه يې د ځوان وزير وتل ګرځېدلې کړل اوځان يې د خپلو قزلباشو کنډکونو او غلزايي ملاتړو په منځ کې وموند. هغه په خپلو پلانو دومره ټينګ ودرېد چې د پلار تخت يې ننګوه. خو د مخه تر دې چې کوم مخالف ګام پورته کړي په مرموزه توګه د ۳۱ کالو په منک مړ شو او شونې ده چې زهر ورکړل شوي وي. ۲۶۰

په دغه وضعه کې امير دوست محمد خان د خپل هېواد چې د افغان- انگليسي د لومړۍ جگړې په پایله کې کمزوری شوی او په ولايتونو وېشل شوی و په سياسي لحاظ يو کولو ته ملا وتړله. امير د خپلې واکمنۍ په لومړيو کلونو کې حکومت تنظيم او اردو جوړ کړ او مرکز ته ګاونډی او نږدې سيمې يې د ځان تابع کړې. ورپسې يې د هزاره جاتو سيمې، تګاو، غزني، کوهستان، لغمان او ننګرهار په کابل پورې وتړل او د هر يوه اداره يې خپلو زامنو ته وسپارله. په دې ترتيب امير دوست محمد خان په کابلستان خپله واکمني بېرته ټينګه کړه چېرې چې د افغان- انگليسي لومړۍ جگړې نه د مخه هلته واکمن و. نوموړي د دې وروسته نورو ولايتونو ته پام واړاوه.

د امير لومړۍ هڅه د ختيځ په لور وه. په ۱۸۳۹ کال کې د مهاراجه رنجيت سنگ د مړينې وروسته د پنجاب د سيکانو دولت کې اختلافونه رامنځ ته شول او په وضعه باندې

لا پوره مسلط شوی نه و چې په ۱۸۴۵ کال کې د مهاراجه دلپ سنگ په مشرۍ د برتانوي هند استعماري او پراخ غوښتونکي حکومت سره مقابلې ته اړ شو. د سيکانو واکمن په ۱۸۴۶ کې اړ شو چې يو شمېر سيمې د لاهور د ترون پر بنسټ انگليسانو ته پرېږدي، خو سيکانو په ۱۸۴۸ کال کې د انگليس پر ضد پاڅون وکړ. خالصه حکومت د امير دوست محمد خان نه پوځي مرسته وغوښته او ژمنه يې وکړه چې د پوځي مرستې په بدل کې به دوی د پېښور، ديره گانو او د پنجاب ځينې هغه ځايونه چې پخوا د افغانستان په واکمنۍ کې وې بېرته افغانستان ته وسپاري. امير دوست محمد خان د سيکانو دا غوښتنه په خوشالي سره ومنله او د سپارو يوه قوه يې د خپل زوی محمداکرم خان په مشرۍ د دوی مرستې ته ولېږله او په خپله تر پېښوره پورې ورسره ولاړ. خو هغه جگړه چې په ۱۸۴۹ کال کې په گجرات کې وشوه سيکانو کلکه ماتې وکړه او محمداکرم خان د يوې لنډې او ناکامې جگړې وروسته په شا تگ وکړ او د خيبر درې له لارې کابل ته راستون شو. پنجاب او پېښور د انگليسانو لاس ته ورغلل او وروستی تر ننه د افغانستان د حاکمیت نه بهر ووت. انگرېزانو د پېښور په نيولو د افغانستان دروازې ته ودرېدل او دا دوه حکومتونه د لومړي ځل له پاره د گډې پولې په لرلو سره گاونډيان شول.

په ۱۸۵۵ کال کې د امير دوست محمد خان او د هند برتانوي حکومت تر منځ ترون وشو. د دغه ترون له مخې امير په ضمني ډول د پېښور د ادعا نه لاس په سر شو. «امير د [دې] ترون په دريمه ماده کې ژمنه وکړه چې د هند د ختيځې کمپنۍ سيمو ته به درناوی کوي او په هغه کې هېڅ ډول لاسوهنه نه کوي.» ۲۶۱ کاکړ وايي کله چې وروسته د هند په ټوله نيمه وچه کې د انگليسانو پر ضد پاڅون وشو او د برتانوي هند وايي کله حاضر و چې پېښور بېرته افغانستان ته ورکړي خو امير په دې اړه هېڅ گام پورته نه کړ. ولي خان وايي چې د افغان- انگليس د لومړۍ جگړې تر اغېز لاندې په ۱۸۵۷ کال کې د هندوستان د ازادۍ د لومړۍ جگړې په پايله کې داسې شرايط منځ ته راغل چې امير دوست محمد خان کولی شول خپله د لاسه وتلې خاوره بېرته ترلاسه کړي. «وايي چې د ديلي حکومت د پنجاب حاکم ته ووې چې د اباسين نه پورې علاقه امير دوست محمد خان ته پرېږده. ته خپل طاقت راپورې باسه چې په هندوستان د ننه د پاڅون مخنيوی وشي. هغه ورته ليکلي و چې هسې خو يې وربخښلی نه شم. ولي که هغه وغوښتله نو ورته به يې پرېږدم. خو امير صاحب د پيرانکي د سلطنت د پراختيا، پوځي قوت او سمندري بېړيو نه دومره وېرېدلی و چې هغه تشه دخولې وينا يې هم د خپلې خاورې د حق ونه کړله.» ۲۶۲

امير دوست محمد خان تر دې وروسته ترکستان او ميمې ته پام واړاوه. ده په ۱۸۴۸

کال کې خپل زوی سردار محمد اکرم خان د يوه غښتلي پوځ سره چې د درانيانو، غلجيو او قزلباشانو نه جوړ و، شمال ته واستولو. نوموړي د بدخشان او قطعن نه پرته د شمال د ټولو سيمو بېگان او ميران د ځان تابع کړل او سپکه ماليه يې ور باندې کېښوده. خو د دغو سيمو خلک د سردار محمد اکرم خان د مړينې وروسته سرغړونه وکړه او امير دوست محمد خان خپل تکړه زوی محمد افضل خان د دوی د ټکولو له پاره شمال ته ولېږه او هغه په همغه کال کې خپله دنده په برياليتوب سره تر سره کړه او د ۲۵۰۰۰ پوځ سره په مزار کې پاتې شو. افضل خان وروسته د خپل زوی عبدالرحمن او خپل ورور محمد اعظم خان په مرسته د شمال ختيځ افغانستان پاتې سيمې د ځان تابع کړې او په وروستيو کلونو کې يې قطعن او بدخشان هم تابع کړل. په دې توگه د امو رود د بخارا او افغانستان تر منځ بيا گډه پوله شوه.

امير دوست محمد خان د هندوکش نه شمال سيمو د تابع کولو وروسته کندهار ته چې د ۱۸۱۸ کال راهيسې د کندهاري سردارانو له خوا د کابل نه جلا په خپلواکه توگه اداره کېده پاملرنه واوروله. امير دوست محمد خان په ۱۸۵۴ کال کې د غلزيو کلات چې د کندهار برخه وه د يوې پوځي قوې په ذريعه ونيو او کندهار يې تر گواښ لاندې ونيولو. د پارس قاچار پاچا د سردار کهندل خان کندهاري په غوښتنه د امير له خوا د کلات په نيولو اعتراض وکړ او ويل کېدل چې د پارس پاچا د کهندل خان کندهاري سره په دې شرط د مرستې ژمنه وکړه چې د کندهار د نيولو وروسته به سردار د ده سره يو ځای کيږي او د هغه تبعيت به مني. ولې په ۱۸۵۵ کال کې سردار کهندل خان او د هغه ورور سردار مهردل خان مړه شول او د نورو سردارانو تر منځ د واکمنۍ او د ماليې د وېش پر سر اختلافات منځ ته راغلل. دوی د سردار رحمدل خان په غوښتنه د ميانځگړي له پاره امير دوست محمد خان راوغوښت چې د دوی تر منځ سوله وکړي. امير د هغه تړون په بنسټ چې د همغه کال په پيل کې يې د برتانوي هند سره کړی و په گټې اخېستې سره د يوې پوځي قوې سره کندهار ته لاړ او هغه يې د جگړې پرته ونيو او خپل زوی سردار غلام حيدر خان يې د هغه ځای واکمن وټاکه او په دې ترتيب يې کندهار د کابل سره وتړلو. د کندهار نه وروسته امير هرات ته خپل پام واراوه.

هرات د ۱۸۰۳ نه تر ۱۸۱۸ پورې يوازې په نامه د کابل تابع و او د هغه نه وروسته شاه محمود سدوزي تر ۱۸۲۹ کال پورې او بيا پاچا کامران تر ۱۸۴۲ کال پورې په هرات کې خپلواکه واکمني کړې ده تر څو په همغه کال کې وزير يارمحمد الکوزي کامران ته ماتې ورکړه او په خپله يې د هرات واکي په لاس کې ونيوله. خو د يار محمد الکوزي د مړينې

وروسته په ۱۸۵۱ کال کې په هرات کې د نامني دوره پيل شوه.

د پارس واکمنو په هرات دعوی درلوده او د همدغې پېړۍ په اوږدو کې يې څو ځله د هغه په لور خپل پوځونه استولي وو. دا ځل يې هم د هرات ښار کلابند کړ او د هغه کال په اکتوبر کې يې ونيو. دغه مهال د پارس دربار د تزاري روسيې تر نفوذ لاندې و او د هرات نيول د روسيې په لمسونه وشو. د پارس د دغه کړنې په وړاندې برتانوي هند او امير دوست محمد خان مقابل کړه وره پيل کړل. پارس د برتانوي هند حکومت د پاریس د غونډې او د ۱۸۵۳ کال د تړون نه چې د تهران سره يې لاسليک کړی و سرغړونه وکړه چې د افغانستان په کورنيو چارو کې به لاسوهنه نه کوي. له دې کبله د برتانيې حکومت د پارس دولت پر ضد اعتراض وکړ خو کله چې دغه اعتراض کتبه ونه کړه نو برتانوي هند د پارس سره جگړه اعلان کړه او د ابوشېر بندر يې ترې لاندې کړ. د پارس پاچا ناصرالدين چې دا خبر واورېد پارس يې په خطر کې وليد او سمدلاسه يې هرات پرېښود. همدارنگه برتانوي هند د روسيې د مخنيوي له پاره چې د پارس له لارې او د هغه په ذريعه يې ورسره دښمني کوله د امير دوست محمد خان د واکمنۍ د پوځي غښتلتيا له پاره هوډ وکړ. له دې کبله لويې بریتانيا د امير دوست محمد خان تر منځ په ۱۸۵۷ کال د جنوري په ۲۶ نېټه په پېښور کې تړون لاسليک شو. د دغه تړون موخه لکه چې د هغه په لومړۍ ماده کې راغلي چې بریتانيا د امير دوست محمد خان سره د پارس په وړاندې په بلخ، کندهار او کابل کې د خپلو ملکیتونو د ساتنې له پاره مرسته کوي. د دې تړون له مخې افغان لوري ته تر هغه پورې د مياشتې سل زره روپۍ ورکول کيږي تر څو جگړه پای ته نه وي رسېدلې. امير دوست محمد خان په دغو پيسو پلي او سوارو اردو تنظيم کړ. امير ومنله چې په افغانستان کې به انګليسي پوځي چارپوهانو ته اجازه ورکوي چې په اردو باندې د پيسو په لګښت څارنه وکړي. امير ته د پيسو برسېره ۴۰۰۰ نور پخواني زاره ټوپک ورکړل شول او دا هم ومنل شو چې د امير يو استازی به په پېښور کې د وکیل په توګه وټاکل شي. انګليسانو امير د هرات نيولو ته هم وهڅاوه.

امير دوست محمد خان د انګليسانو د مرستې له مخې د اردو په تنظيم او غښتلتيا پيل وکړ. دغه وخت سردار سلطان احمد خان چې په سلطان جان مشهور و په هرات کې د پارس پاچا په مرسته وروسته له دې چې هرات يې پرېښود واکمنۍ ته ورسېد. سلطان جان د سردار محمد اعظم خان زوی او د امير دوست محمد خان زوم و. نوموړي د سردار مير افضل خان چې په کندهاري سردارانو پورې اړه درلوده په لمسونه په فراه باندې چې د امير دوست محمد خان تر ولکې لاندې وه يرغل وکړ. امير دوست محمد خان

په فراه باندې د سلطان جان تېری د خپلې واکمنۍ له پاره خطر وباله او د یوه ستر پوځ په ملګرتیا په هغه لوري روان شو او د ده سره زیاتره خپل زامن، سرداران، اعیان، د درانیو، غلزیو او نورو قومونو مشران ملګري وو. سردار سلطان جان فراه ایله کړه او د خپل خسر سره د مقابلې له پاره هرات ته ستون شو. امیر دوست محمد خان په ډېر شان او شوکت سره هرات ته ننوت او هغه یې کلابند کړ خو پر هغه باندې یې د پوځي برید نه ډډه وکړه ځکه چې دی پوهېده چې سلطان جان د پارس او انګلیس د مرستې پرته نه شي کولی زیات وخت مقاومت وکړي نو هرات به د وینې د توپدو پرته تر لاسه شي. د هرات د کلابندی په پای کې د امیر دوست محمد خان لور او زوم د دې نړۍ نه سترګې پټې کړې او د هغې وروسته د هرات ښار تسلیم شو او هرات بیا د افغانستان د مرکز کابل د واکمنۍ لاندې راغی. امیر دوست محمد خان د ۱۸۶۳ کال د جون د میاشتې په نهمه نېټه د ۷۰ کلونو په منګ د دې نړۍ نه سترګې پټې کړې او د پېښور پرته یې د احمدشاه بابا افغانستان افغانانو ته په نیکات(میراث) پرېښود.

کاکړ وايي چې د امیر دوست محمد خان په دوهمې واکمني کې د نایب امین الله لوکري او محمدشاه بابکر خپل لښماني نه پرته بل مهم کس له منځه وړل شوی نه دی. امیر دوست محمد په ولسي ډوله اداره سره په ډېر ښه نوم یادېده. که چا ظلم او تېری کاوه، ورته به ویل کېده، چې د امیر دوست محمد له عدالت نه خبر نه یې. دی به په اس سور له خپل منشي سره د کابل په کوڅو کې ګرځېده، د عارض شکایت ته به یې په ځیر غور نیوه او په اړه به یې منشي ته لارښوونې کولې. امیر دوست محمد خان په لږو حکومتي عوایدو او له تشدد نه پرته، په ښې ادارې سره او د ټوټه شوي هېواد، په بیا متحد کولو سره غټ خدمتونه وکړل. خو افغانانو د هغه د خدمتونو درناوی نه دی کړی او د هغه وخت شرایط یې په نظر کې نیولي نه دي.

ديارلسم څپرکي

کاکړ او د امير شيرعلي خان لومړنی واکمني

امير دوست محمد خان د شپاړسو ښځو نه اوه ويشت زامن او پنځه ويشت لونه درلودې چې د ده د مړينې وروسته يې د واک پر سر لوی غوښل او شخړې جوړې کړې چې د هېواد راتلونکې يې کلکه زمانه کړه. د مخه مو يادونه وکړه چې امير دوست محمد خان د امير کېدو له پاره د نني افغانستان د نورو پاچاهانو په څېر د پوځي ځواک نه کار اخېستی دی. په دغو جگړو کې هغه د خپلو زامنو نه کار اخېستی او بيا يې په لوړو دندو گومارلي دي. د دې کار په پايله کې د امير زامن په پوځي چارو کې زياتې تجربې تر لاسه کړې او د ولايتونو په ادارو کې د زيات واک په لرلو سره يې د واک غوښتنې احساس غښتلی کېده او حاضر نه وو د يوه ورور واک ته سر کېږدي. برسېره پردې امير دوست محمد خان د خپلو وتلو زامنو محمد اکبرخان او غلام حيدر خان د مړينې وروسته د دوی سکه ورور شيرعلي خان چې د ناسکه وروڼو محمد افضل خان او محمد اعظم خان نه کشر و په ۱۸۵۸ کې خپل ځای ناستی نومولی و او د خپلو مشرو زامنو حق يې په نظر کې ونه نيو. امير دوست محمد خان د خپلې مړينې نه د مخه شيرعلي خان په هرات کې خپل ځای ناستی وټاکه. محمود طرزی ليکي: «امير د مړينې په ورځ (۱۸۶۳) چې سرداران او لويان هم ورسره وو، په شيرعلي خان باندې غږ وکړ چې خواته يې ورشي. په لړزېدونکو لاسونو يې خپله توره د شيرعلي خان تر ملا وتړله او په خپل نري اواز يې پاچا اعلام کړ، ښه يې ونازوه او د برياليتوب له پاره يې ورته دعا وکړې، خو همدا چې د جنازې او فاتحې مراسم پای ته ورسېدل، هر زوی يې له خپل پوځ سره د خپل ولايت په لور روان شو او د حيراني ځای دی، چې هر يوه يې ځان امير وباله.» ۲۶۳

د امير شيرعلي خان مهم سيالان خپل ناسکه مشر وروڼه سردار محمد افضل خان او محمد اعظم خان وو چې په ترتيب سره په ترکستان او کرمه کې واکمن وو. د هغه خپل کوچني سکه وروڼه سردار محمد امين خان او سردار شريف خان چې لومړی يې د کندهار او دوهم يې د فراه واکمن و، د خپل ورور واک ته سر نه کېښود.

د امير شيرعلي خان د واکمنۍ په لومړي سر کې د ۱۸۶۴ کال تر پسرلي پورې په هېواد

کې په نسبي توګه ارامي وه او د ژمي سرې هوا د پاڅونو مخنيوی کاوه. که څه هم سردار محمد اعظم خان د ژمي په پيل کې سرغړونه وکړه چې ژر وځپل شو او د ۱۸۶۳ کال په می میاشت کې د برتانوي هند حکومت ته پناه يووړه. ولې د دغه کال په پسرلي کې سردار محمدافضل خان د محمداعظم خان په لمسونه په ترکستان کې لوی پاڅون وکړ. د هغه پاڅون ځکه جدي و چې هغه ۲۵۰۰۰ منظم اردو درلود او د لسو کلونو راهيسې د ترکستان واکمن و. خو په باميان کې د دوی تر منځ د يوې سپکې جګړې وروسته د يوې سوېلې په پايله کې محمدافضل خان د ترکستان حاکم او شيرعلي خان د افغانستان د امير په توګه وپېژندل شو. خو دغه سوله اوږده نه شوه، په ترکستان کې امير په خپل ورور بدګومانه شو او هغه يې د ۱۸۶۴ کال د نومبر په میاشت کې کابل ته د بندي په توګه د خان سره راوړ.

بل کال امير شيرعلي خان اړ شو چې د يوه لوی پوځ په ملګرتيا کندهار ته لاړ شي. دا ځل د ده کشر ورور سردار محمد امين خان په کندهار کې سرغړونه وکړه او د خپل سکه ورور د فراه د حاکم سردار شريف خان سره يې ايتلاف وکړ. د دواړو خواو تر منځ د ۱۸۶۵ کال د جون په میاشت کې د غلزيو قلات ته نږدې جګړه ونېسته چې په پايله کې يې د امير شيرعلي خان سکه ورور محمدامين خان او زوی سردار محمدعلي خان دواړه ووژل شول. د دغه ورور او زوی مړينې په امير شيرعلي خان دومره بده اغېزه وکړه چې د هېواد د چارو سره يې مينه لږه شوه او نږدې و چې د خپل امارت نه لاس په سر شي.

خو په همدغه وخت کې سردار محمداعظم خان د هندوستان نه او سردار عبدالرحمن د بخارا نه افغانستان ته راغلل او د هغه لښکر سره چې نوی يې تنظيم کړی وو کابل ته ننوتل او هغه يې د امير د بې کفايته زوی سردار ابراهيم خان نه د جګړې پرته ونيو. امير شيرعلي خان کله چې د دې پېښې نه خبر شو سمدلاسه يې د اردو په تنظيم لاس پورې کړ خو هغه د خپل وراره سردار عبدالرحمن خان نه د ۱۸۶۶ کال د می په میاشت کې په شيخ اباد کې، د ۱۸۶۷ کال د جنوري په میاشت کې د غلجيو په کلات کې او د همدې کال په سپتمبر کې د الله داد کوهستاني په کلا کې ماتې وکړه او هرات ته لاړ شو او هغه يې د خپلو وروڼو په وړاندې په مرکز باندې بدل کړ.

په کابل کې سردار محمدافضل خان او د هغه د مړينې وروسته سردار محمداعظم خان د ۱۸۶۶ د می نه تر ۱۸۶۸ کال د اکتوبر تر میاشتي پورې د امير په نومونو په کابل کې واکمن شول خو امير شيرعلي خان هم ځان امير باله. په ترکستان کې د امير بل ورور سردار فيض محمد خان د کابل سره په مخالفت کې خپلواکه واکمني چلوله. په دې توګه

په لنډه موده کې درې حکمرانان يو مهال په هېواد کې واکمن وو.

امير شيرعلي خان د خپل زوی سردار محمد يعقوب خان په مشرۍ د ۱۸۶۸ کال د اگست په مياشت کې په کندهار بريد وکړ او هغه يې د امير محمداعظم خان د زامنو نه چې د کندهار خلک د دوی د زور زياتي نه تر پوزې راغلي وو ونيو. امير شيرعلي خان هم د هرات نه کندهار ته راغی. په دغه وخت کې سردار محمداعظم خان د امير شيرعلي خان سره د ډغرو وهلو له پاره غزني ته راغی. دغه وخت په کابل کې يو شمېر سردارانو د سردار محمدامين د زوی په مشرۍ د سردار محمداعظم خان پر ضد پورته شول او کابل يې د امير شيرعلي خان په نوم ونيو. امير محمداعظم خان په غزني کې د يوه لږ مقاومت وروسته د زرمټو له لارې ترکستان ته وتښتيد او هلته د خپل وراره سردار عبدالرحمن سره يو ځای شو. امير شيرعلي خان د ۱۸۶۸ کال په اکتوبر کې کابل ته راغی او په ۱۸۶۹ کال کې د سردار محمد اعظم خان او سردار عبدالرحمن وروستی مقاومت د امير شيرعلي په بري پای ته ورسېد او محمداعظم خان او عبدالرحمن د غزني، زرمټ، وزيرستان، بلوچستان، سيستان د لارې د ۱۹۶۹ کال د جولایي په مياشت کې مشهد ته ورسېدل او سردار محمداعظم خان تهران ته د تک په لار کې مړ او سردار عبدالرحمن سمرقند ته لاړ او هلته يې يوولس کاله په تبعيد کې تېر کړل. په دې توگه د امير شيرعلي خان د واکمنۍ لومړۍ دوره د خپلو وروڼو او ترونو سره په شخړو کې تېره شوه او د لنډې مودې له پاره د واک نه ولوېد. دغه جگړې چې څلور کاله اوږدې شوې په پای کې امير شيرعلي خان بريالی شو او دوهم ځل واکمن شو.

کاکړ او د امير شيرعلي خان دوهمه واکمني

امير شيرعلي خان د دوهمې واکمنۍ د لسيزې په جريان کې د خپل قدرت د ټينگښت په وړاندې د کورنيو ستونزو او د بهر نه د امنيت د ننکونو سره مخامخ و. په بخارا کې د ده سيالانو سردار عبدالرحمن خان او سردار اسحق خان د بخارا د امير مظفر او روسي نيواک گرو سره د امير پر ضد په دسيسو بوخت وو. د ۱۸۶۹ کال په جولایي کې سردار اسحق خان د يوه لښکر سره د امير د رود نه راتېر شو او په اچچه يې بريد وکړ او بيا د بلخ په لور وړاندې لاړ خو د امير د گورنر له لوري يې ماته وکړه او په منډه د امير د رود نه واوښت.

دا وخت د امير شيرعلي خان د پلان په وړاندې چې خپل کشر زوی عبدالله جان خپل ځای ناستی کړي د هغه مشر زوی محمد يعقوب خان پاڅون وکړ. هغه په ۱۸۷۱ کال کې د

خپل سکه کشر ورور محمد ايوب خان سره يوځای هرات په خپل لاس کې ونيو. خو منځگړو پلار او زوی سره پخلا کړل او امير خپل زوی محمد يعقوب خان د هرات د والي په توگه وټاکه. خو هغه بيا دوه کالا ورسته پاڅون وکړ کله چې امير شيرعلي خان عبدالله جان د خپل ځای ناسي په توگه وټاکه. هغه په خپل پاڅون کې پاتې راغی او کابل ته راوغوښتل شو او هلته امير بندي کړو چې پوره پنځه کاله يې په بند کې تېر کړل. د برتانيا گورنر جنرال لارډ لاورنس هڅه وکړه چې امير او زوی سره پخلا کړي خو دا هڅه ناکامه شوه چې د امير په احساساتو يې منفي اغېز وکړ. زما په اند دا د امير تېروتنه وه چې د خپلو زامنو په حق يې سترگې پټې کړي او يوه کورنۍ ناندري يې په خپلو ستونزو وزياته کړه.

کاکړ وايي چې امير شيرعلي خان د ځای ناستي په ټاکلو کې چې د افغانستان په سياست کې اساسي موضوع ده لويه تېروتنه وکړه. دغې تېروتنې د افغانستان تماميت ته زيان وراوه او د ده د کورنۍ واکمنۍ د نسکورېدو زمينه يې برابره کړه. امير شيرعلي خان په ۱۸۷۲ کال کې خپل کوچنی زوی شاه زوی عبدالله جان چې دا مهال لس کلن و د عامو د غوښتنې، د افغانستان د سياسي واقعيتونو او د خپل مشر زوی محمد يعقوب خان د کارنامو، چې د مصيبت په وخت کې ترسره کړي وې د په نظر کې نيولو پرته خپل ځای ناستی وټاکه. ده دغه واقعيت په نظر کې ونه نيو چې په هم دغې موضوع د ده امارت ته ننکونه (چلنج) ورکړ شوې وه. ښکاره ده چې امير په دې موضوع کې د خپلې ځوانې محمدزايې مېرمنې يې بي عايشې تر اغېز لاندې تللی و.

په دغه وخت کې چې د امير دوست محمد خان زامن او لمسيان په خپل منځي شخړو بوخت وو روسي په منځنۍ اسيا کې ډېر پرمختگ وکړ او د ترکمنو د ځينو سيمو پرته د افغانستان پولې ته راورسېدل. امير شيرعلي خان ته دا پرځای وېره پيدا شوه چې د روسيې د بل بريد موخه به د ده هېواد وي. نوموړي امير د دغه گواښ د مخنيوي له پاره وپتېيله چې له يوې خوا د کور د ننه خپل دولت ټينگ او غښتلی کړي او د بلې خوا د هند د برتانوي حکومت ملاتړ ترلاسه کړي. له دې امله په ۱۸۶۹ کال په لومړيو کې امير شيرعلي خان په رسمي توگه برتانوي هند ته سفر وکړ او په امبله کې يې د ويسرا لارډ مايو سره وکتل چې تود هرکلی يې وشو خو لارډ مايو د روسيې له لوري د امير پر ځای وېره سمه ونه بلله. لارډ مايو امير ته ډاډ ورکړ چې افغانستان ته د روسيې له لوري گواښ نه شته. هغه امير ته وسلې ورکړې او د پوځ د روزنې له پاره يې يو شمېر چارپوهان هم ورکړل. امير چې بېرته وطن ته راستون شو د لارډ مايو د دغه ډاډ له امله يې په عصري بڼه په پراخو سمونونو لاس پورې کړ.

امير شيرعلي خان لومړی په عصري بڼه دايي او منظم اردو تنظيم کړ چې د خپلې واکمنۍ په پای کې شمېر ۵۶۰۰۰ ته ورسېد چې د پلي، سوارو او توپچي څانگې يې درلودې. جنرال ف. رابرتس چې په کابل کې د انگليس د نيواکگر پوځ قوماندان و ليکي: «افغان توپچي قوې نږدې درې سوه توپونه درلودل.» ۲۶۴

امير شيرعلي خان د مشورې پخوانی دود بيا را ژوندی کړ او د احمدشاه دراني وروسته دی لومړی واکمن و چې يوه مشوراتي شوری يې د پوځي افسرانو او ملکي مشرانو نه جوړه کړه چې دوولس غړي يې درلودل. دا شوری يوازې مشوراتي وه خو په بهرني سياست کې يې د دې شوری سره مشوره نه کوله.

امير شيرعلي خان رسمي اداره پراخه کړه او د دود پرخلاف يې لور منصبونه غېر خانداني کسانو ته ورکړل. امير شيرعلي خان سيد نورمحمد شاه کندهاری د لوی مختار ياني صدراعظم، حبيب الله وردگ د مالي وزير، عصمت الله جبارخېل د کورنيو چارو وزير، ارسلان خان جبارخېل د بهرنيو چارو وزير، په توگه وټاکل او ملا شاه محمد کتب خېل، او قاضي عبدالقادر يوسفزی يې هم د کابينې غړي وو.

د امير شيرعلي خان بل مهم سمون دا و چې پښتو يې د لومړي ځل له پاره د هېواد ملي او رسمي ژبه اعلان کړه. لکه چې د مخه مو يادونه وکړه امير شيرعلي خان يو منظم او دايي اردو جوړ کړ چې شمېر يې شپږ پنځوس زرو ته رسېده چې د محمدزايي سردارانو ځای پښتو ويونکو غېر محمدزايي پښتنو ونيو. په دې توگه د ملکي او نظامي چارو د اغېزمن چلند له پاره پښتو ته اړتيا پيدا شوه. پوهاند کاکړ کړد سره سم وايي چې امير شيرعلي خان د نورو سمونونو په څنگ کې د پښتو د رسمي کولو له پاره کونښن دا څرگندوي چې د ده ملي شعور ډېر غښتلی او پياوړی و. پښتو ته د دغې اړتيا او په خپله د امير نوي ملي شعور د دې لامل و چې غوښتل يې پښتو د يوې رښتيني ملي ژبې په توگه وده او پرمختگ وکړي او د فارسي ځای ونيسي. د دغه مقصد له پاره د پښتو کتابونو ليکل او ژباړل پيل شول، د پښتو سيند (قاموس) د لارښود په توگه حتمي شو، عسکري تعليم نامې په پښتو ژبه برابرې شوې، واره او لوی ماموران په القابو وويارل شول او په پای کې د پښتو بولی (قوماندې) د افغان جنکياليو د گڼو صنفونو له پاره جوړې شوې. ليتوگرافي مطبوعه په کابل کې په کار ولېږدېده او د شمس النهار اخبار په همدغې مطبعې کې چاپ شو. د قاضي عبدالقادر له خوا «قواعد پلټن پياده» په پښتو وژباړل شو چې تشرېحات يې په پارسو وو. علم قواعد لښکر د دريا خان نيازي له خوا، قواعد عسکري د محمد ابراهيم له خوا وليکل شول. «دغه مشکور واکمن ځان ژر په داسې حال کې وموند چې ادعا وکړي

چې پښتو د هغه د هېواد والو ملي ژبه شوې وه. د دغه امير په نظر فارسي امانتي بڼکې وې. «۲۶۵ د غوث خيبري په اند د امير شيرعلي خان له خوا د پښتو ژبې د رسمي کولو اصلي موخه د ايران د فرهنگي ښکېلاک د ماتولو په لور يو اغېزمن گام و. ۲۶۶

د کاکړ په وينا هغه سړی چې د امير شيرعلي خان سره يې د سمونونو په تېره د پښتو د رسمي کولو په اړه اساسي مرسته وکړه هغه قاضي عبدالقادر يوسفزی و چې يو عالم، شاعر، ليکوال او ژباړونکی و. کهکدای ليکي چې قاضي عبدالقادر داسې کتابونه تأليف کړل چې د درې گونو پوځي ټولگيو يانې سپرو، پياده او توپچي له پاره بولي گانې وضع شوې او پوځي قوماندې د انگرېزي نه وژباړل شوې او په پارسو کې تشرېح شوې وې. د ده يوه ژباړه قواعد عسکري لسان افغاني نومېږي او ۳۸۲ مخه لري. ۲۶۷ برسېره پردې امير شيرعلي خان د ښوونځيو پرانېستل، د شمس النهار د جريدې خپرول او نور سمونونه يادولی شو. د کاکړ په وينا دا چې ځينې کسان وايي چې امير شيرعلي خان سمونونه د هغه پلان له مخې پلي کړل چې سيد جمال الدين افغان ورته تههيه کړی و، رښتيا نه دي. رښتيا دا دي چې امير شيرعلي خان د مخه تر دې چې د سمونونو په پلي کېدو پيل وکړي سيد جمال الدين د ۱۸۶۸ کال د سپتمبر په دولسمه نېټه د کندهار د چمن له لارې هندوستان ته شړلی و. شيرعلي خان لا هغه وخت د خپل پلار سره ملگری و چې پلار يې په برتانوي هند کې پراري و او هغه وخت يې د انگرېزانو پرمختگ په خپلو سترگو ليدلی و او هلته د خپل هېواد د پرمختگ او عصري کولو فکر ورسره پيدا شوی و. امير شيرعلي خان امبالې ته د لارډ مايو د کتنې نه د راستنېدو پر مهال نه يوازې د برتانوي هند نه د سمونونو زياتې طرحې وطن ته راوړې، بلکې د ځان سره يې يو شمېر کارپوهان راوستل. بيليو وايي چې «امير شيرعلي خان ډېرې زياتې د سمونونو طرحې هم له ځان سره وطن ته يووړې.» ۲۶۸ امير شيرعلي خان نيت درلود چې سيستان چې پارسيانو نيولی و بيا د افغانستان سره يوځای کړي او هغه هېواد ته يې د جگړې گواښ وکړ. خو انگرېزانو د جگړې د مخنيوي له پاره د سيستان د موضوع د هوارۍ په موخه د دواړو هېوادو تر منځ د منځگړيتوب وړانديز وکړ چې د دواړو لورو له خوا ومنل شو. د انگلستان پلاوی د بريد جنرال گولډ سميت په مشرۍ سيستان ته راغی. د ايران له لوري ميرزا معصوم خان او د افغانستان له خوا سيد نورمحمد شاه نماينده گان ټاکل شوي وو. که څه هم سيستان له جغرافيوې او تاريخي نظره د افغانستان خاوره وه او ساکا هم د لرغوني افغانستان خلک وو، خو د سيستان په خاوره د پارسيانو ادعا د ژبې له نظره وه او د هغه تاريخي وياړونه يې د ځان بلل. انگرېزانو د افغاني سيستان يوه برخه د گولډ سميت د ناعادلانه منځگړيتوب په اساس

ايران ته ورکړه.

امير شيرعلي خان په دې پرېکړه له انگرېزانو نه بېزاره شو او د انگرېزانو سره يې اړيکې ديري خرابې شوې چې بيا هېڅکله بڼې نه شوې. د بيلو په وينا انگرېزانو وروسته له دې امير شيرعلي خان ته د هرشي خواست وکړ هغه رد کړ په پای کې خبره دې ځای ته ورسېده چې په ۱۸۷۸ کال کې د افغانستان او انگليس دوهمه جگړه پيل شوه.

کاکړ او د افغان- انگليس دوهمه جگړه

لکه چې د مخه مو يادونه وکړه امير شيرعلي خان داسې مهال واکمن شو چې د لومړي ځل له پاره دوې سترې نيواککړې امپراتورۍ يانې لويه برېتانيا او تزاري روسيه زمور کاونديانې شوې. زمور هېواد وروسته له دې چې لويه برېتانيا په ۱۸۴۹ کال کې کله چې په پنجاب کې دسيکانو خالصه حکومت نسکور شو د ختيځ له لوري او روسيه د ۱۸۶۰ په لسيزه کې چې تزاري روسې په منځنۍ اسيا کې لوی پرمختگ وکړ د شمال له لوري همپوله شوه او د دغو امپراتوريو د حکومتونو تر فشار لاندې شو. د فارس قاچاري دولت په هرات او سيستان باندې پر خپلې ادعا ټينگار کاوه. امير شيرعلي خان د دغو دوو امپراتوريو د سياست قرباني شو او افغانستان د ده په واکمني کې د برېتانيې د بريد لاندې راغی او د ده نوی نيمه عصري حکومت نسکور شو او د ملي مقاومت يوه اوږده دوره پيل شوه.

د ۱۸۷۷ کال وروسته د برېتانيا د توري گوند د بنجامين ډيزرايلي په مشرۍ په منځنۍ اسيا کې د روسې د پرمختگ په وړاندې دښمنانه دريځ غوره کړ، په دغه وخت کې روسيه د عثماني ترکيې سره په جگړه بوخته وه او ان د ترکيې پلازمينه قسطنطنيه يې گواښوله. برېتانيا د ترکيې ملاتړ کاوه ځکه چې هندوستان ته د برېتانيې د اوبو لار په خطر کې وه. له دې امله انگلستان حکومت اعلان وکړ چې د روسې له خوا د قسطنطنيه د نيولو په صورت کې به برېتانيا د فارس خليج ته پوځونه واستوي تر څو روسيه په اسيا کې د بريد لاندې ونيول شي او روسان د منځنۍ اسيا نه بېرته دکسپين سمندرگي ته وشړي. برېتانيا په دې منظور لارډ ليتن د دې سياست د پلي کولو له پاره هند ته د نوي ويسرا په توگه ولېږه.

ليټن په دې باور و چې د دې موخې د پلي کولو له پاره او د هند د ساتنې له پاره يوې دفاعي کرښې ايستلو ته اړتيا شته. د ده په اند هغه پوځي او ستراتېژيکه ليکه چې بايد د برتانوي هند په لاس کې وي له پاميره تر باميانه د هندوکش په امتداد او د هغه ځايه تر

سوېل د هلمند، گرشک، کندهار تر عربي سمندرگي پورې امتداد ولري وايستل شي. دا يې د داخلي ليکې په نوم ياده کړه. بهرنی ليکه يې د امو رود ياد کړ. ځنکه چې دا پروژه په افغانستان کې پلې کېده نو دا د دوو لارو بايد شوی وای. لومړۍ لاره دا وه چې افغانستان ته مراجعه وشي او د هغوی سره موافقه ته رسېدل او يا د افغانستان د امير سره اتحاد کول، د ځينو امتيازاتو په ورکولو لکه د خاندانۍ واکمنۍ ضمانت، د بهرني تيري په وړاندې د افغانستان ساتنه، د سنجول شوو پيسو ورکول او د بهرنۍ خپلواکۍ سلبول. دوهمه لار دا وه چې که امير د لومړۍ لارې سره مخالفت وکړي نو نوموړی بايد د واک نه ليرې شي او يو بل سړی چې د دوی شرايطو منلو ته تيار وي د هغه په ځای واک ته ورسوو.

د ليتن د شپوې اساسي ټکي چې د لندن په لارښوونه د افغانستان په اړه په ښکاره ټکو کې بيان شول د ليتن د تېزس په نوم ياد شو. په دې روحیه د هند برتانوي حکومت د امير شيرعلي خان سره چلند اختيار کړ پرته له دې چې د افغانستان د خلکو ارزښتونه او د دې هېواد واقعيتونه په نظر کې ونيسي.

هند ته د ليتن د راتگ وروسته د امير سره د خبرو اترو موضوع د يو شمېر ليکونو په ذريعه تعقيب شوه چې په پای کې د جنوري د دېرشمې نه د مارچ تر پايه نړيواله غونډه د امير د استازي سيد نورمحمد شاه او د ليتن استازي سر لوی پېلې تر منځ په پېښور کې جوړه شوه. د غونډې موضوع کانې د ليتن د ليکونو په روحیه ټاکل شوې چې مهم ټکي يې دا وو: د امير سره د يوه تيري کونکي او دفاعي تړون کول، د کورني او بهرني تيري په وړاندې ضمانت او د خانداني واکمنۍ ساتنه، د تنخواه ورکول، د شاه زوی عبدالله جان ځای ناستی په رسميت پېژندل او د شمالي پولو ټينگښت په کې شامل وو. د دې په بدل کې د امير نه انگليسانو غوښتل اصلي انگرېزان په سرحدي سيمو او په ځانگړي توگه هرات کې ومني او په بهرنيو چارو کې د برتانوي هند په مشوره عمل وکړي او د روسې سره هېڅ ډول مراده ونه کړي. د امير استازي سيد نورمحمد شاه د ليتن د دې وړانديزونو سره سر خوځولی نه شو خو په پای کې يې څرگنده کړه چې د دغو شرايطو د ردولو او يا منلو په اړه ځانگړي لارښوونه ورته نه ده شوې. ليتن د مارچ په پنځلسمه نېټه غوښتنه وکړه چې کابل د اتحادي تړون غوښتونکی دی که نه؟ څرنگه چې د نورمحمد شاه له لوري يې د قناعت وړ ځواب تر لاسه نه کړ خپل استازي يې له غونډې وايستلو بيا د مارچ په شپږويشتمه نېټه سيد نورمحمد شاه د دې نړۍ نه سترگې پټې کړې او ليتن د نورمحمد شاه د مړينې په پلمه غونډه په رسمي توگه پای ته ورسوله سره له دې چې د امير بل استازی حبيب الله

وردگ پېښور ته روان و او «دغه استازي واک درلود چې په پای کې د بریتانیا د حکومت ټول شرایط ومي.» ۲۶۹

د پېښور د غونډې د ناکامۍ نه وروسته د لیټن چلند د امیر سره نور هم سخت شو. هغه خپل هندي استازی غلام حسین د کابل نه بېرته وغوښت او نور حاضر نه و چې د امیر سره خبرې بیا د سره پیل کړي خو یوازې په یوه شرط چې امیر د خبرو اترو غوښتنه وکړي مخکې له مخکې د بریتانیا شرایط ومي او د خپل نوي چلند له امله بخښنه وغواړي. د مخه مو یادونه وکړه چې د انګلیس منځګړي کولډ سمیت په غیر عادلانه توګه د افغاني سیستان یوه برخه ایران ته ورکړه. امیر شیرعلي خان د انګلیسانو نه د جګوب اباد په تړون هم خواشیني و چې د هند حکومت په ۱۸۷۶ کال کې د کلات د خان سره کړی و او د هغه له مخې یې په ۱۸۷۹ کال د نومبر په میاشت کې کویته ونیوله او د کندهار ښار یې تر ګواښ لاندې ونیو او بیا یې د واخان میر ته د امیر د اجازې پرته ډالی واستولې.

د مخه مو دا یادونه هم وکړه چې د ۱۸۷۸ کال د مارچ په میاشت کې د روسیې او بریتانیا تر منځ د ترکیې په سر اړیکې خړې پرې شوې. روسیه چې د ترکیې سره په جګړه بوخته وه او د ترکیې پلازمینه قسطنطنیه یې ګواښوله بریتانیا د ترکیې په ملاتړ د هندوستان نه خپل پوځونه د مالټا جزیره ته د ترکیې د مرستې له پاره ولېږل. روسیې د دې په وړاندې په منځنۍ اسیا کې په پوځي مانورو لاس پورې کړ چې بریتانیا اړه کړي چې د مالټا نه خپل پوځونه بېرته راستانه کړي. په دې منظور یې همغه کال یو پوځي پلاوی د جنرال ستالیتوف په مشرۍ پر کابل وتپلو او دا پلاوی د اګست په ۹ نېټه د کابل شاوخوا ته ورسېد که څه هم د روسیې او بریتانیا تر منځ اختلافات لا د مخه د جولایي د میاشتې په منځ کې د برلین د غونډې په پایله کې حل شوي وو او د یوه لیک په ترڅ کې د جنرال کافمن له خوا د روسیې پلاوي مشر ستالیتوف ته د مخه تر دې چې کابل ته ننوزي د هغو خبر رسېدلی و. په دغه لیک کې ستالیتوف ته لارښوونه شوې وه چې څرنګه د روسیې او بریتانیا تر منځ اختلافات د برلین په غونډه کې حل شوي دي نو «د غوڅ ګام او لوزونو نه ډډه وکړئ او په عمومي توګه دومره مخته مه ځئ لکه چې باید د مسالې د پرمخ حالت کې مخته تللی وای.» ۲۷۰ ستالیتوف د اګست په ۱۳ او څورلسمه نېټه د امیر شیرعلي خان سره وکتل او یو تړون د دوی تر منځ وشو چې اصلي متن یې تر اوسه نه دی لیدل شوی خو پوهاند کاکړ په خپل کتاب کې هغه متن چې جنرال رابرتس ته رییس میرزا محمد نبي خان د یاده ویلي راوړی دی.

لیټن وروسته له دې چې د هند په چارو کې د وزیر کرین بروک نه اجازه تر لاسه کړه د

اکست په ۳۰ نېټه غلام حسين خپل پخوانی استازی کابل ته ولېږه او د يوه ليک له مخې يې د امير نه وغوښتل چې يو انگليسي پلاوی په کابل کې ومني. لیتن د سر نیوال چمبر لین په مشرۍ يو پلاوی افغانستان ته ولېږه او غوښتنه يې دا وه چې امير بايد روسي پلاوی سمدلاسه رخصت کړي او د چمبرلین سره تړون لاسليک کړي. انگليسي پلاوی د سپتمبر په ۲۰ نېټه جمرود ته ورسېد او افغان پوله ساتونکي جنرال فيض محمد خان يې افغانستان ته د ننوتو مخنيوی وکړ او لیتن د افغانستان پر ضد د جګړې پرېکړه وکړه. خو بيا هم لیتن د لندن په موافقه د نومبر په دوهمه نېټه کابل ته التيماتوم واستولو چې په هغه کې د امير نه غوښتنه شوې وه چې د بریتانیا د پخواني پلاوي له امله بخښنه وغواړي او هغه ته يې کوټخښنه وکړه چې که د نومبر د شلمې نېټې پورې د پلاوي د منلو مثبت ځواب را نه کړل شي د بریتانیا پوځونه به افغانستان ونېسي.

کاکړ وايي چې په دې ټوله موده کې امير شيرعلي خان د ستالیتوف په مشوره کار کاوه او هغه امير ته مشوره ورکړې وه چې د چمبرلین پلاوی ونه مني. په خپله ستالیتوف د اکست په ۲۳ نېټه د کابل نه تاشکند ته روان شو خو د پلاوي غړي يې په کابل کې پاتې شول. ستالیتوف د کابل نه د روانېدو پر مهال د امير سره ژمنه وکړه چې دی به د ۳۰۰۰ لښکر سره بېرته راوگرځي. ستالیتوف په ۲۱ سپتمبر د يوه ليک په ترڅ کې د امير سره د مرستې ورکولو په اړه د خپل بري خبر ورکړ. شيرعلي خان د روسي په ژمنو باور وکړ او دا فکر يې ونه کړ چې يوازې به پرېښودل شي. د نومبر په ۱۹ نېټه امير شيرعلي خان د کافمن ليک تر لاسه کړ چې په هغه کې ورته توصیه شوې وه چې د بریتانیا سره هوکړه وکړي. په دې توګه امير شيرعلي خان بله تاريخي تېروتنه وکړه او د روسي د سياست په لومه کې بند شو او د ده د کورنۍ واکمنۍ د راپرزېدو او د افغانستان د خاورې بشپړتیا ته زيان واوښت او د هېواد بهرنی سياست د انګرېزانو په لاس کې ولوېد.

امير شيرعلي خان په همغه ورځ لیتن ته ليک واستوه چې حاضر دی د بریتانیا وړوکی موقتي پلاوی په کابل کې ومني. دا ليک د نومبر په ۲۹ نېټه په ډاګه کې دانګليس مامورينو ته ورسېد. خو تر دغه وخته لیتن د افغانستان په وړاندې د جګړې اعلان کړی و.

لارډ لیتن چې د «پرمختګ د پالیسي» (Forward policy) يو کلک پلوي و د ۱۸۷۸ کال د نومبر په يووشتمه نېټه په دې پلمه چې امير شيرعلي خان د دوی پلاوی نه دی منلی انګرېزي پوځونو ته امر وکړ چې په افغانستان باندې د خيبر، کورمې او بولان له لارې په ترتيب سره د جنرال برون، جنرال رابرتس او جنرال ستیورات تر قوماندې لاندې يرغل وکړي. امير شيرعلي خان سره له دې چې ۵۶۰۰۰ زره منظم اردو درلود چې په نويو وسلو

سنبال و او همدارنگه د افغان زورور خلکو ملاتړ چې د پرديو د تيري په وخت کې د خپلو مهمو ارزښتونو لکه د وطن، ازادۍ او دين د ساتنې له پاره د خپلو مشرانو څنگ ته کلک دريږي درلود د دې پر ځای چې د انگليسانو پر ضد يې تورې ته لاس اچولی وای د جکړي نه ډډه وکړه او انگرېزي پوځ د کندهار، جلال اباد او کابل ښارونه ونيول. دا د امير شيرعلي خان يوه بله تېروتنه وه.

امير شيرعلي خان خپل زوی سردار محمد يعقوب خان د بنديتون نه ايله کړ، خپل ځای ناستی يې وټاکه، خپل اردو او حاکمانو ته يې لارښوونه وکړه چې د انگليس د پوځ په وړاندې جکړه ونه کړي او په خپله د روسيې نه د پوځي مرستې په هيله مزار ته روان شو. «کله چې امير د روسي پلاوي د پاتې غړو په ملتيا مزار ته راوړسېد هغه زر پوه شو چې دی د روسانو له خوا د يوې الې په څېر د برتانويانو سره په سيالی کې کارول شوی دی... امير د ډېرې زياتې ناهيلۍ سره، د فزيکي او روحي ناکاميو له امله د ډوډۍ خوړلو او دوا کارولو نه ډډه وکړه او د ۱۸۷۹ کال د فبروري په ۲۱ نېټه د ۵۶ کالو په منگ مړ شو.» ۲۷۱

د امير محمد يعقوب خان واکمني او د گندمک تړون

د امير شيرعلي خان د مړينې وروسته د ۱۸۷۹ کال د فبروري په ۲۶ نېټه د بالاحصار په شاهي جومات کې د سردار محمد يعقوب خان په نامه خطبه وويل شوه او په دې توگه نوموړي د افغانستان د امير په توگه د واک واگې په لاس کې ونيوې.

په امير محمد يعقوب خان باندې په همغو لومړيو ورځو کې زور راغی چې د يرغلگرو پر ضد وجنگېږي خو امير ونه منله او د ۱۸۷۹ کال د می د مياشتې په دوهمه نېټه د داودشاه سپا سالار، مستوفي حبيب الله وردگ او ۲۵ محمدزايي سردارانو په ملگرتيا گندمک ته روان شو او د می په اتمه نېټه هلته ورسېد. د امير محمد يعقوب خان او د انگليس سياسي استازي مېجر کيوگناري، چې د امير نه لا د مخه گندمک ته رسېدلې و، تر منځ د می تر اولسې نېټې پورې د تړون د موادو په اړه خبرې اترې وکړې.

امير محمد يعقوب خان د خبرو اترو په جريان کې حاضر نه و چې د افغانستان نه هېڅ برخه بيله شي او د برتانوي هند حکومت بايد هغه حالت ومني چې تر دې د مخه د افغانستان او د برتانوي تر منځ موجود و. خو وروسته له هغې چې کوکناري گواښ وکړ چې که د انگليسانو شرايط ونه منل شي نو افغانستان به د نقشې په مخ دوام ونه مومي، امير د کوکناري غوښتنې ومنلې. کوکناري لپټن ته خپلې خبرې نقل داسې کړی دی: «ما يعقوب خان ته وويل چې دا به د ده يعقوب خان په خاطر وي چې افغانستان به د نخښې پر مخ

دوام ومومي» ۲۷۲

په دې ترتيب سره د ۱۸۷۹ کال د می د میاشتي په شپږويشتمه نېټه د گندمک په سپينه تېره (سفید سنگ) سيمې په يوه کلي کې د گندمک تړون لاسليک شو. د گندمک په تړون کې ټول هغه شرايط ځای شول چې لياتن غوښتل په امير شيرعلي خان پي ومني او نور مواد ورباندې زيات شول. د کاکړ په وينا امير د افغانستان [سياسي] خپلواکي انگليسانو ته وسپارله او ژمنه يې وکړه چې د هېڅ هېواد سره به د دوی د مشورې پرته اړيکې نه ټينگوي، انگليسي استازي به په افغانستان کې د اوسېدو اجازه لري او د هغوی ساتنه به د امير په غاړه وي، د انگليس حکومت ژمنه کوي چې د افغانستان په کورنيو چارو کې لاسوهنه نه کوي، پر افغانستان باندې باندینې تېری به چې دوی ته موزون مالوم شي په پيسو، وسلې او يا په پوځي ځواک سره دفع کوي او د افغانستان نه خپل پوځونه باسي. نيولې شوې سيمې بېرته افغانستان ته ورکوي خو کرمه، سببي او پيشين په خپل لاس کې ساتي. دا سيمې به په افغانستان پورې اړه ولري خو اداره به يې انگليسي کارکوونکي پر مخ بيايي. د دې په بدل کې به امير ته شپږ لکه روپۍ ورکوي. امير ژمنه کوي چې هغو افغانانو ته به بخښنه کوي چې د جگړې پر مهال يې د انگرېزانو سره مرسته کړې ده.

د امير محمد يعقوب خان اقدامات

د گندمک د تړون سره سم د برېتانيا سياسي پلاوی د سر لوی کوکناري په مشرۍ د کرمې او لوکر له لارې د ۱۸۷۹ کال د جولای په ۲۴ نېټه په شاندارو مراسمو سره کابل ته راغی. کوکناري په عمل کې د کابل واکمن شو.

د انگليسي پلاوي د راتگ نه وروسته د هرات نه کابل ته شپږ پلي ټولگي راورسېدل چې د بېلو بېلو قومونو او سيمو نه وو. دوی کابل ته د رارسېدو سره سم د تیکو نه د ايستلو تورو سره د کابل په سړکونو مارش وکړ او د انگليس ضد شعارونه يې ورکول. په واقعيت کې د انگليس سره د دغو سرتېرو د مخالفت د احساساتو سرچينه سردار محمد ايوب خان و چې د گندمک د تړون مخالف و.

د ۱۸۷۹ کال د دسمبر په دريمه نېټه افغان پوځ د کابل د خلکو په ملاتړ پاڅون وکړ چې په پايله کې د کابل په بالاحصار کې د انگلستان سياسي استازی کوکناري د ورسره ملگرو سره يو ځای د منځه يووړل.

انگليسانو ته چې د کيوناري د مړينې خبر ورسېد انگليسي پوځ بيا په افغانستان يرغل وکړ. جنرال رابرتس د ۶۰۰۰ نه تر ۷۰۰۰ پوځ سره د پيوار د کوتل له لارې په افغانستان

تېری پیل کړ. ستیورات ته لارښوونه وشوه چې په کندهار کې خپل پوځ وساتي او د خیبر پوځ هم غښتلی شو او زیات احتیاطي پوځ یې شا ته تیار شو. د رابرتس پوځ په چاراسیا کې د لنډ مقاومت وروسته په بالاحصار کې میشت شو.

د انگلیس پوځي حکومت

انګرېزانو د برغل په دوهمه مرحله کې امیر محمد یعقوب خان استعفا کولو ته اړ کړ او برتانوي هند ته یې پرار کړ. بل گام یې د غچ اخبستلو په موخه بالاحصار وسواوه او د پاڅون کېدونکو کونکو زندگی کولو ته یې ملا وتړله.

انګرېزانو د هغو افغانانو نه چې د سفارت په سوځولو کې یې ونډه اخیستې وه د غچ په موخه هر هغه چا ته د پنځوسو روپیو جایزه ورکوله چې هغوی ورته وښيي. «د ښار په قزلباشو کې ډېرو دغسې جایزې تر لاسه کړې.» ۲۷۳ محمود طرزي په خپلو خاطراتو کې لیکي چې د جنرال رابرتس لومړی کار په کابل کې دا شو: «چې د کوکناري د سوځېدلي کور په کنډوالو باندې دارونه وڅړوي، چې په دغې پېښې کې کېدونکوونکي غرغره کړي. په اصل کې خلک هلته د ننداره کولو او چور کولو له پاره غوندې شوي وو. ځینې د جهاد کولو له پاره ورغلي وو. بې وجدانو مخالفانو چې زړونه یې له کرکې نه ډک وو او د چنډول شیعیه کانو چې هغوی د جاسوسی په بدل کې انعام غوښته، له دغې موقع نه د ځان له پاره ګټه وکړه او بې ګناه خلک یې په ګیر کې ورکړل. نورو هم حتی د یو څه ګټې له پاره همدغسې وکړل.» ۲۷۴ طرزي زیاتوي چې «د نورو په کورونو کې مېلماستیاوې وې، دا هغه خلک وو چې د پېرنګیانو راتګ ته یې هرکلی ویلی وو او د هغو په خپلو خبرو «د دوی غمه خورله شوې وه» دوی زیاتره شیعیه او قزلباش وو، چې د ښار په مینځ کې په چنډولو کې اوسېدل، چې شاوخوا یې تینک دیوال او خندق و. دوی په خپل فرقه یي تعصب سره نامسلمانان د مسلمانانو نه غوره ګڼل.» ۲۷۵

د لیتن له لوري د افغانستان د ټوټه کولو پلان

لیټن د کیوناري د مړینې وروسته د انګلستان صدراعظم ته ولیکل چې افغانستان دې د تل له پاره ټوټې شي او د بریتانې، روسې او پارس تر منځ ووېشل شي چې د نوي نظم په نوم ونومول شو. کندهار او د هغه ګاونډي سیمې دې سمدلاسه او د تل له پاره د بریتانیا امپراتورۍ سره یو ځای شي. مور دا سیمه په اسانۍ سره ساتلی شو. «تر هندوکشه پورې سیمې دې بیلې او یو داسې افغان ته دې ورکړې شي چې د انګرېزانو پلوی وي. د هندوکش

هغه لوري سيمې چې د هر چا له لوري اداره شي انگرېزانو ته يې توپيره ده ځکه چې ساتلی يې نه شو. هرات دې د ځينو شرايطو په منلو سره ايران ته ورکړل شي. د انگلستان حکومت د لیتن د «نوي نظم» د پلان نه پوره ملاتړ وکړ او د دسمبر په يوولسمه نېټه يې لیتن ته خبر ورکړ چې «د افغانستان د پخواني سلطنت له پاره د يوه واحد حکومت شتون نور شونی نه دی او د دوام هيله يې نه شته.» ۲۷۶

د دسمبر عمومي پاڅون

د انگرېزانو په وړاندې د دسمبر عمومي پاڅون وشو چې درې مرحلې لري:

۱- د دغه پاڅون لومړۍ مرحله د دېنمن د دوهم يرغل نه پيلېږي. څنگه چې د انگليسانو د نوې لښکر کښې خبر خپور شو چې د کابل پټو استازو د هېواد په ختيځو سيمو کې خلک مقاومت ته لمسول چې وسله پورته کړي او د بهرنيو ځواکونو په وړاندې ودرېږي. ويل کېږي چې امير محمد يعقوب خان د مومندو، اپريدو او شينووارو قومونو ته ليکونه استولي و او د دوی نه يې غوښتي و چې سره راټول شي. د سپتمبر په ۱۷ نېټه د رابرتس استازي د پکتيا د غلزيو نه اورېدلي و چې امير دوی ته لارښوونه کړې چې ټول هغه سرکونه چې د کرمې علي خېلو نه د کابل سره نښلي پرې کړي. د کندهار نه د انگليس سياسي استازي خان جان خبر ورکړ چې د انگليس ځواکونو د مخنيوي خنډ نه شي خو خپل ځانونه د هغوی د موصلايي لارو باندې د بريد له پاره تيار کړي. خو دا رسې لمسونې وروسته له دې په ظاهر کې بندې شوې چې رابرتس ته علي خېلو استازي واستول شو او بيا امير د لوگر په خوشي کې انگليسانو ته ځان تسليم کړ او استعفا يې وکړه.

۲- د رسې لمسونو د بندېدو وروسته د انگليسانو پر ضد د عمل نوښت د قومي مشرانو، مذهبي عالمانو، پوځي جنرالانو، ځينو دولتي کسانو او سردارانو چې په يعقوب زای سردارانو پورې يې اړه درلوده لاسته ولويد. د ملا مشک علم له خوا منظمې لمسونې کېدې. جنرال محمد جان خان وردک چې د وردگو په سيمو کې يې فعاليت کاوه غزني ته لاړ او هلته د ملا مشک عالم سره يو ځای شو. دوی دواړو په کډه د وردگو، اندرو، تره کيو، سلېمانخېلو، وزيرو، ځدرانو او تاجکو خلکو سره خبرې وکړې او د غزا اعلام يې وکړ.

د کوهدامن او کوهستان خلک د مير بچه خان او سرور خان پرواني په مشرۍ په شيرپور باندې چې بهرنی لښکر په کې پروت و پر ضد بريد ته تيار شول او محمد عثمان د تکاو ساپۍ او د هغه جنګيالي ورسره يو ځای شول.

۳- کله چې ليرې شوی امير محمد يعقوب خان د دسمبر په لومړۍ نېټه او بيا د هغه نږدې مشاورين سردار يعي خان، وزير شاه محمد خان او سردار زکريا خان د دسمبر په اوومه نېټه هند ته پرار شول. تر دغه وخته د کابل نه د ليرو او نږدې سيمو خلک پر کابل باندې د بريد له پاره تيار شوي وو.

کله چې د دسمبر په شپږمه نېټه رابرتس خبر تر لاسه کړ چې کوهستانيان په کابل د بريد هوډ لري او ملا مشک عالم او جنرال محمد جان خان د خپلو جنکياليو سره ارغندي ته را رسېدلي دي د دفاعي عملياتو په اړه پرېکړه وکړه. د دې پرېکړې لامل دا و چې رابرتس ته پوره جوته وه چې د برېتانيا يو غښتلی اردو د جنرال الفنسټون په مشرۍ څلورېنټ کاله د مخه په دغه غرني هېواد کې افغان جنکياليو د وزير محمد اکبرخان په مشرۍ تباہ کړي و. له دې کبله ده يو پوځي ټولگی تيار کړ چې د سوارو او توپچي نه جوړ و چې د چټکو عملياتو په ترڅ کې به افغان جنکيالي تيت او وځي. نوموړي يوه پوځي قوه د مېکفرسن تر قوماندانۍ لاندې د باغ بالا د کوتل له لارې د چاردي د وادی په لور اوښل پوځي ټولگی يې د جنرال بېکر په قوماندانۍ د ميدان په لور واستولو. په همدغه وخت کې يو پوځي ټولگی چې په جگدک کې پروت و په بیره کابل ته راوغوښت. مېکفرسن ته امر وشو چې د خپرځاني د کوتل له لارې په کوهستان او کارېزمير بريد وکړي. خو دغه وخت د ارغندي جنکياليو داسې مقاومت وکړ چې د رابرتس پلان يې په بشپړه توگه ناکام کړ.

په دې توگه افغانان د ۱۸۷۹ کال د دسمبر د مياشتې په لسمه نېټه د نړۍ د يوه ستر ځواک سره په کلکه جگړه بوخت شول. کابل د سوويل- لوېديځ او د شمال له لوري تر بريد لاندې راغی. د لوگر، زرمټو، منگلو، ځدرانو خلک د سوويل له لوري د جنرال غلام حيدر خان څرخي په مشرۍ، د کوهدامن خلکو د شمال له لوري د مير بچه خان او غلام محمد سرور پرواني په مشرۍ او د ميدان وردگو او غزني خلکو د لوېديځ له لوري د جنرال محمدجان خان وردگ په مشرۍ په کابل بريد وکړ.

د جنرال محمدجان خان وردگ جنکيالي د ارغندي نه قاضي کلا ته راغلل او د انگليس پوځيانو هغه هڅې يې ناکامه کړې چې غوښتل يې د جنرال محمدجان خان لښکر دواړه خواوې کلابندې کړي. محمدجان خان وردگ په هر ځای کې د دښمن پوځ ته ماتې ورکړه او په چټکۍ سره يې دهمزنک او کابل ته ځان ورسولو. محمدجان خان ناڅاپه خپل پلان چې په شيرپور بريد وکړي بدل کړ او پرېکړه يې وکړه چې د شير دروازي او د کابل لورې ونيسي. د محمدجان خان دغې تېروتنې رابرتس ته دا موقع ورکړه چې د شيرپور د چاونۍ نه د باندې انگليس پوځيان چې د افغان جنکياليو د ځپونکو گوزارونو له امله

هرې خواته په منډو وو ځان شيرپور ته ورسوي او ځان وژغوري. په اسمایي غره او بالاحصار کې انگلیسي قواوې چې د افغانانو په وړاندې یې جکړه کوله ورو ورو د بیلو بیلو خواوو نه د افغان جنګیالیو سره د نویو خلکو د یو ځای کېدو وروسته انګرېزان اړ شول چې د ځان خوندي کولو په موخه د شيرپور چاوڼۍ ته وتښتي او هلته د افغان جنګیالیو له خوا کلابند شول.

د شيرپور چاوڼۍ یوه ټینګه دفاعي کلا وه چې په ځانګړي ډول یې د لوېدیځ او سوېل اړخونه چې لوړ دېوالونه یې درلودل، ډېر کلک وو. د ختیځ اړخ دېوال یې د اوو فوټو څخه جک نه و او دفاعي چارې یې کمزورې وې. انګرېزانو ختیځ دېوال کې ښه والی راوست او د شمالي دېوال کونجونه چې کمزوري وو، ورغول. چاوڼۍ ته نږدې کلاګانې یې ړنګې کړې او په پنځو ځایو کې دفاعي توپونه او ماشینګرې ځای په ځای کړل. انګرېزي پوځ په ښو وسلو سنبال و. په شيرپور باندې د برید پلان د انګرېز پلویانو د سلطان محمد خان لاتي په کېدون انګرېزانو ته ورساوه او هغوی د برید د مخه پوره تیاری نیولی و. د دسمبر په ۲۳ برید پیل شو چې انګرېزانو دا برید په پوره توګه ناکام کړ.

په دې توګه پاڅون کوونکي په دې کې پاتې راغلل چې کلابند شوي پوځ باندې زور راوړي چې تسلیم شي. یو لامل یې لکه چې د مخه مو یادونه وکړه دا و، چې جنرال محمدجان خان وردک د دې پر ځای چې په شيرپور برید وکړي خپل پلان یې بدل کړ او پرېکړه یې وکړه چې د شیر دروازې او د کابل لوړې ونیسي. د محمد جان خان دغې تېروتنې رابرتس ته دا موقع ورکړه چې د شيرپور د چاوڼۍ نه د باندې انگلیس پوځیان چې د افغان جنګیالیو د ځپونکو کوزارونو له امله هرې خواته په منډو وو ځان شيرپور ته ورسوي او ځان وژغوري. دوهم لامل یې دا و چې پاڅون کوونکو دا ښه وګنله چې د انګرېزانو پلوي قزلباشانو، هندوانو او د انګرېزانو پلوي شتمنو محمدزایي سردارانو کورونه لوت کړي. په دې توګه پاڅون کوونکو لس ورځې کلابند شوی پوځ چې په کمزوري دريځ کې و، وخت ورکړ چې خپل دريځ ټینګ کړي. دریم لامل یې دا و کله چې د دسمبر په ۲۳ مه افغان جنګیالیو په شيرپور برید وکړ دوی یوه مرکزي قوماندانه نه درلوده او د دوی د برید پلان د مخه انګرېزانو ته ورکړ شوی و او په پای کې برید ناکامه شو.

وطن ته د سردار عبدالرحمن راټګ

د مخه تر دې چې د هېواد په شمال کې د هغه په کړو ورو رڼا واچوم لازمه ګنم په

خپله د هغه د ژوند په اړه لږ وغږېږم. سردار عبدالرحمن د سردار محمدافضل خان يوازينی زوی دی. دا مالومه نه ده چې کله او چېرته زيږيدلی دی. ستيفن ويلر باور لري چې هغه په ۱۸۴۴ کې زيږيدلی او تاريخ پوه سلطان محمد هم ورسره موافق دی. خو لپيل کريفن ټينگ دی چې عبدالرحمن خان په ۱۸۳۸ کې زيږيدلی دی. د عبدالرحمن مور بنگشه او د نواب صمد خان لور وه چې د هغه قوم د کابل په دربار کې لږ اغېز درلود.

د عبدالرحمن ماشومتوب ښه څرکند نه دی. هغه په ۱۸۵۳ کې بلخ ته راغی چې هلته يې پلار د ۱۸۵۲ نه تر ۱۸۶۴ پورې د ولايت واکمني کوله. عبدالرحمن خان ۱۳ کلن و چې د تاشقرغان د حاکم مرستيال وټاکل شو چې وروسته د دغې دندې نه استعفا وکړه په دې چې هلته د پوره واک نه برخمن نه و. هغه د ښکار او ټوپک وپشتلو سره مينه درلوده او د جنرال شيرمحمد خان نه چې د عيسويت نه اسلام ته اوښتی و او د افضل خان د پوځ قوماندان و، د جگړې د هنر په اړه څه زده کول.

هغه د پشکيري کار کولو او ټوپک يې جوړول او د فکري فعاليت سره يې مينه نه ښودله. د ده په خپله وينا «زه ډېر تنبل وم، د درسونو نه مې کرکه درلوده او فکرونه مې ډېر زيات د سپرلی او ټوپک وپشتني سره وو.» د انسان ژوند ته يې لږ يا هېڅ لېوالتيا نه درلوده. ده يو ځل د ښکار په سفر کې د خپلو غلام بچه گانو څخه يو تن د دې له پاره د نښې په توگه درولی و چې وگوري چې کولی څنگه يو سړی وژني. په هلک يې ډز وکړ، وپې واژه او وپې خندل. د هغه پلار دی د همدې ډزې له امله بندي کړ. خو يو کال وروسته چې جنرال شيرمحمد خان مړ شو په حيرانتيا سره عبدالرحمن خان د بلخ د ولايت د پوځ د قوماندان په توگه وټاکل شو. شونې ده چې دی دغه وخت ۱۷ کلن و.

عبدالرحمن خان خوشاله و چې د پوځ ځواک يې په لاس کې و او د ... شونتياوې وښودلې. دی ډېر زر د هغه ازمون نه بريالی راووت چې د قطغن ازبک مير اتاليق چې د امير دوست محمد خان په نامه د خطبې ويلو نه انکار وکړ او خان يې د بخارا د پاچا يو بيعت کوونکی اعلان کړ، عبدالرحمن خان د خپل غښتلي پوځ په مرسته هغه اړ کړ چې کابل ته خپله وفاداري څرکنده کړي، ماليه تاديه کړي او د واده يووالی ټينگ کړي.

عبدالرحمن خان د ۱۸۶۰ کلونو په کورنی جگړې کې گډون وکړ. شونې ده چې دی دغه مهال نولس کلن وي. د ده د زياتو ترونو او ترو زامنو تر منځ د تخت د لاسته راوړلو په سر کورنی جگړې کې د ده رول ډېر مهم و. په دغه کورنی جگړه کې نوموړي د خپل پلار او تره سره مرسته وکړه چې يو څه موده واک ته ورسې. دغې کورنی جگړې د امير عبدالرحمن خان سره د ده د سياسي شخصيت په جوړولو کې مرسته وکړه. د دغې جگړې

په جريان کې ده دا زده کړل چې د قبيلوي مشرانو، د ولايتونو د واليانو او محمديزايي سردارانو ځواک او اغېز ارزيايي کړي. ده دا هم زده کړل چې دوی څنگه په مناسب وخت کې خپل دريځ د يوې پارټي نه بلې ته بدلوي او مرکزي حکومت د گواښ سره مخامخ کوي. په پای کې اړ شو چې هېواد پرېږدي. دی د واکمن تره امير شيرعلي خان مهم سيال وگرځېد.

امير عبدالرحمن لومړی بخارا او بيا سمرکنده ته په پناه اخېستو سره هيله درلوده چې هغه به په افغاني ترکستان کې خپلواک امارت په پښو ودروي. څنگه چې هغه د ازبکو اميرانو په ملاتړ باور درلود ادعا يې وکړه چې دی يې هلته بللی دی. همدارنگه د بدخشان مير جهاندارشاه يې خسر و او باور يې درلود چې د بدخشان خلک يې ملاتړ کوي. خو امير عبدالرحمن خان برسېره پر دې د بخارا د امير او روسيې ملاتړ ته اړتيا درلوده. دی د امير شيرعلي خان د مړينې وروسته د افغانستان شمال ته راستون شو.

سردار عبدالرحمن د ۱۸۸۰ کال د فبروري په لومړيو کې د روسي مقاماتو په اجازه د لږ شمېر پيسو او وسله والو پلاويانو سره بدخشان او بيا د ځينو ميرانو په مرسته تالقان ته ننووت. په تالقان کې د ترکستان د نايب الحکومه جنرال غلام حيدر د سوارو يو پوځي ټولگی چې د سلطان مراد قطعي د ځپلو له پاره تالقان ته راستول شوی و د عبدالرحمن سره يوځای شو. په دې ترتيب ده دا ځواک وموند چې په بدخشان، تالقان او قطعن سيمو کې خپل واک وچلوي. لږ وروسته سردار محمد اسحق خان چې د سردار عبدالرحمن د عمه زوی او پلوي و په دې بريالی شو چې جنرال غلام حيدر ترکستان پرېږدي او د هغه ځای واک د ميمني پرته په خپل لاس کې ونيسي. په دې توگه عبدالرحمن د ۱۲۹۷ کال د مارچ تر دريې نېټې پورې په دې بريالی شو چې د هندوکش نه هغې خوا سيمي کې واک وچلوي او د هغې وروسته کندوز ته ننووت.

دا هغه وخت و چې د لیتين استازی لیبیل گريفن کابل ته رارسېدلی و چې د افغانستان په اړه د لیتين نوې پالیسي اعلام کړي. سردار عبدالرحمن د خپل واک په ټينگښت لگيا و. نوموړي د انگليس ضد نهضت مشرانو ملا مشک عالم او مير بچه خان سره يې د ليکونو په ذريعه اړيکې ټينگې کړې وې او د ده د ليکونو روحيه دا وه چې دا مشران دې جگړې ته تيار وي خو په خپله دې گام نه پورته کوي.

لیټن د سردار عبدالرحمن سره خبرو اترو ته د ور پړانېستلو ډېر علاقه من و او فکر يې کولو چې سردار به د ده د شرايطو په منلو سره شکر گزاره هم وي. گريفن محمد سرور غلزی سردار عبدالرحمن ته ولېږه او نوموړي د اپرېل په لسمه نېټه د گريفن

شفاهي پيغام سردار ته ورساوه او ورته يې وويل چې انگرېزان د کابل له پاره داسې امير غواړي چې د دوی ملگری وي، انگرېزي پوځونه به د افغانستان نه وځي، په روسيه کې د امير د استوگنې له امله د ده سره د دښمنۍ احساس نه لري او د روسيې پرتله به د ده سره ډېره مرسته وکړي. عبدالرحمن په ځواب کې وويل چې غواړي د انگرېزانو د دوستۍ په ماهيت پوهيږي او افغانستان به د بریتانيې او روسيې ملگری وي. خو په اپرېل کې په نړۍ او د هېواد د ننه داسې پېښې منځ ته راغلې چې د خبرو اترو په يون يې زيات اغېز وشينده. لومړی په انگليستان کې د ټاکنو په پايله کې ليبرال گوند بريالی شو. ليټن هڅه کوله د مخه تر دې چې د ده ځای ناستی هند ته راورسيږي خپل پلان په افغانستان کې پلي کړي. کريفن د می په لومړۍ نېټه درې کسيز پلاوی عبدالرحمن ته واستاوه چې د بریتانیا د دوستۍ، د افغانستان د ټوټو کېدو او ده ته يې د کابل امارت چې دوی شمالي افغانستان بللو وړانديز وکړ. خو هغه دا وړانديز ونه مانه.

په دغه وخت کې جنرال غلام حيدر څرخي او مير بچه خان د امير عبدالرحمن سره يو ځای شول، په کابل کې سردار ولي محمد خان او سردار محمدشريف خان د امارت هيله له لاسه ورکړه، جنرال محمدجان خان وردگ لا اوس هم د سردار محمد يعقوب خان په بيا واکمن کېدو ټينگار کاوه، خو هغه سرې چې د خبرو د ناکامۍ له پاره يې عملي کام واخېست مستوفي حبيب الله وردگ و چې زر هندوستان ته وشړل شو.

د عبدالرحمن ټاکتیک دا و چې خبرې وځنډوي او انگرېزان په دې فکر شول چې عبدالرحمن پوهيږي چې انگرېزان افغانستان پرېږدي او امارت د انگرېزانو په مرسته نه بلکې د خپلو متو په زور اخلي. دوی بيا عبدالرحمن ته وړانديز وکړ خو هغه ونه مانه او ټينگار يې کاوه چې د امير دوست محمد خان افغانستان بايد د ده د واکمنۍ سيمه وي. کريفن د دوهم ځل له پاره د عبدالرحمن سره خبرې پرې کړې او د دوهم ځل له پاره يې د افغانستان د سلطنت وړانديز محمد يعقوب خان ته وکړ.

ليپل د وروستي ځل له پاره عبدالرحمن ته وړانديز وکړ او دی يې پوه کړ چې کابل ته راشي، د کندهار بيلوالی ومني او د نورو هېوادو سره سيڅې اړيکې ټينگولی نه شي او که زر يې ځواب ورته کړ نو بيا به د امير شيرعلي خان د کورنۍ نه يو تن پيدا کړي چې حکومت جوړ کړي. خو دا ځل عبدالرحمن د انگرېزانو ټول شرايط سمدلاسه ومنل او کابل ته روان شو. دا سمدلاسه بدلون په هرات کې د سردار محمدايوب خان د فعاليت له امله و. سردار محمدايوب خان د سردار عبدالرحمن په پرتله د درانيانو، غلزيانو او ملي پارتۍ په منځ کې زيات کرانېست درلود او سردار عبدالرحمن د سردار محمدايوب خان هغه

ورانديز د مخه رد کړې و چې د انگرېزانو پر وړاندې ګډه مبارزه وکړي. سردار محمدايوب خان د جون په نهمه نېټه يانې درې اوونۍ د مخه تر دې چې امير عبدالرحمن کابل ته روان شي د خپل لښکر سره د کندهار په لور روان شو. عبدالرحمن به د کندهار په لور د ايوب خان د تګ نه هرو مرو خبر و. عبدالرحمن پوهېده چې کندهار ته د ايوب خان په رسېدو سره به درانيان او غلزيان د ده په مشرۍ سره يو شي او د دې شونتيا شته چې انگرېزان به چې د افغانستان نه يې د وتلو ژمنه کړې ده د هغه سره د امارت په اړه موافقې ته ورسېږي. له دې کبله عبدالرحمن کابل ته راغی او د انگليسانو ټول شرايط يې ومنل.

په هر صورت د جولای په شلمه نېټه سردار عبدالرحمن د قومي مشرانو او خلکو له خوا چې شمېر يې شلو زرو ته رسېدو په چاريکار کې د امير په توګه اعلان شو او ورپسې د جولای په ۲۲ نېټه لېږل کريفن او سیتورات هغه په رسميت وپېژاند. د ۱۸۸۰ کال د جولای په ۲۷ نېټه افغانانو د ايوب خان په قوماندانۍ او د انگليس پوځ د جنرال براون په مشرۍ د ميوند په ډګر کې سره مخامخ او انگليسانو ته سخته ماته ورکړه. په کندهار کې د سردار شيرعلي خان په مشرۍ د انگليس لاسپوڅي حکومت رانسکور او کندهار يې کلابند کړ چې وروسته به پوره رڼا پرې واچوم.

سردار محمد ايوب خان د انگرېزانو او هم د امير عبدالرحمن له پاره سمدلاسه يو لوی سرخوړی شو. د دغه سرخوړي او ګواښ د مخنيوي له پاره کريفن او امير د سرای خواجه د زمې په غونډې کې د جولای په دېرشمه او د اګست په لومړۍ نېټه دوه ځله د شپږو ساعتو له پاره غونډه وکړه او داسې پرېکړه يې وکړه چې انگليسي پوځونه به کابل سمدلاسه ايله کړي او انگليسي مقامات به نولس نيم لکه روپۍ امير ته ورکوي چې نيې يې بخښنې او نيې يې د افغان خزاني ته تللې. د دې په وړاندې امير ژمنه وکړه چې د کندهار په لاره پراته غلزيان به وهڅوي چې هغه لس زره انگليسي پوځونو ته ستونزه جوړه نه کړي چې په لسم د اګست د رابرتس په مشرۍ کندهار ته روان دي تر څو سردار ايوب خان د کندهار نه وشړي. کاکړ ليکي چې «امير عبدالرحمن په ذمه کې د برتانوي هند له عمالو سره دومره اخلاص وښود چې په ټول عمر کې يې نه و ښودلی. هغوی د ده د اتل رقيب د ماتولو پرېکړه کړې وه. په ذمه کې ده ان د کندهار او هرات ادعا ونه کړه.» ۲۷۷

د زمې غونډه

د زمې په غونډه کې چې د ۱۸۸۰ کال د جولای د مياشتې په ۳۱ مه او د اګست په لومړۍ نېټه جوړه شوه سر ليبل کريفن د برتانوي هند افسر امير عبدالرحمن ته په پټه د

هند د حکومت لاندې ليک وړکړ:

«د برتانوي هند عالي جناب ويسرا او کورنر جنرال په خوشالي سره خبر شوی چې تاسو عالي جناب کابل ته د برتانوي حکومت د بلې سره سم راغلي یاست. له دې کبله د هغو دوستانه احساساتو ته په کتو چې تاسو عالي جناب څرگند کړي دي او هغه گټه چې سرداران او خلک يې د تاسو عالي جناب په واکمنۍ د تنظيم شوي حکومت د جوړېدو نه لاس ته راوړي، برتانويان تاسو عالي جناب د کابل د امير په توگه پېژني. برسېره پر دې ما ته واک راوړ شوی چې د هند د ويسرا او کورنر جنرال په وکالت تاسو عالي جناب ته خبر درکړم چې د برتانوي حکومت نه غواړي چې د حکومت په هغو سيمو کې چې د تاسو عالي جناب ملکيت دی، لاسوهنه وکړي او هيله نه لري چې يو انگرېز استوگن دې په دې سيمو کې ځای په ځای شي. د عادي دوستانه خبرو اترو د توافق دپاره لکه چې دوه کاونډي هېوادونه يې په خپل منځ کې لري د سلا وړ ده چې د برتانوي حکومت يو مسلمان نماينده په کابل کې د توافق له مخې استوگن شي. د بهرنيو قدرتونو سره د اړيکو په اړه تاسو عالي جناب د کابل د واکمن د دريځ په تړاو د برتانيا د حکومت د نظرونو او نيتونو غوښتنه کړې وه، د تاسو عالي جناب د مالوماتو دپاره به يوه يادونه وشي چې واپسرا او کورنر جنرال ما ته واک راکړی چې تاسو ته اعلان کړم د دې نه وروسته په افغانستان کې د ننه د برتانوي حکومت بهرنيو قدرتونو ته د لاسوهني اجازه نه ورکوي او بيا دواړه روسيه او پارس ژبه کړې چې د افغانستان په کورنيو چارو کې د لاسوهني نه ځان ژغوري، دا څرگنده ده چې تاسو عالي جناب د برتانيا پرته د هېڅ بهرني قدرت سره سياسي اړيکې نه شي لرلی. که چېرې بهرني قدرت هڅه وکړي چې په افغانستان کې لاسوهنه وکړي او که چېرې داسې لاسوهنه د تاسو عالي جناب د واک په کړۍ کې کوم غير لمسونکي تېري ته بوزي په داسې حالت کې به د برتانيه دولت چمتو وي چې د تاسو سره په داسې يوې اندازې او په يوه داسې شېبه چې د برتانوي حکومت ته اړينه مالومه شي، د هغه په مخنيوي کې، مرسته وکړي، په دې شرط چې تاسو عاليجناب په رښتيا خپلې بهرنۍ اړيکې په تړاو د برتانوي حکومت په سلا کار وکړي.» ۲۷۸

کاکړ وايي چې دا ډېره د پام وړ ده چې دغه ليک، د اميرالپهستي منطق يو شاهکار دی چې يوازې د برتانوي هند د حکومت د باندنيو چارو وزير سر الفريد ليال لاسليک کړی دی. گريفن وايي چې په څرگنده دا ليک «په زياته اندازه دا د برتانوي حکومت له خوا د يوې ژمنې يو يادښت و،» ۲۷۹ تر پایه دا يادښت و چې د راتلونکي يوه نسل دپاره يې د دوو حکومتونو تر منځ د اړيکو بنسټ جوړاوه. د امير د واکمنۍ په بهير کې نه تړون يا توافق

نامه لاس ليک شوې وه چې د برتانيې او افغانستان تر منځ اړيکې تنظيم کړي، که څه هم په زمه کې امير په لېږل کريمن باندې د تړون د کړلو زور اچاوه. دا يادښت لکه چې محمود طرزی وايي چې تړون و رښتيا نه دي ځکه چې دا يادښت لومړی دا زيات څه نه و بلکې دا يو مشروطه ژمنه وه چې د امير سره د سيمو په ساتلو کې مرسته کوله. دوهم دا چې د دې ليک سره سم يوازې د انگليس حکومت و چې قضاوت وکړي چې په افغانستان يو تېری شوی دی که نه، دا څرگندوي چې د برتانيې حکومت نه غوښتل د امير سره د تړون له مخې ژمنې ته داخل شي. په دې وخت کې د انگرېزانو حکومت باور درلود چې د امير موقعيت نامصون دی. داسې ادعا يې هم کوله چې هغه تړونونه چې پخوا د برتانيې حکومتونو د افغان واکمنو سره کړي خپل لنډ مهالتوب يې ثابت کړی دی. خو د دوی د دې ادعا پرعکس امير دوست محمد خان د برتانيې سره په خپلو تړونونو ټينگ درېدلی و. دا شايد دوی د گندمک تړون ته اشاره کړې وي چې په افغانانو باندې تېل شوی او ډېر ناعادلانه و او افغانانو هغه رد کړ. امير عبدالرحمن له خپل لوري د ليک سره په داسې شېبه چلند وکړ لکه چې ده ته په لاس ورکړ شوی و: هغه کله چې مناسب وه ورسر روان و او کله چې به مناسب نه و هغه به سترگې پرې پټولې.

۱۸۸۰ کال د دسمبر په لومړيو کې امير غوښتل چې د وایسرا سره وگوري. د دې کتنې نه د امير موخه شايد چې د خپل سيال سردار محمد ايوب خان په وړاندې يې د مرستې لاسته راوړل و، چې هرات يې نيولی و او دا وېره ترې کېده چې کندهار به ونيسي چې په راتلونکي پسرلي کې انگرېزانو خالي کاوه او د برتانيې حکومت يې اعلان کړی و. خو وایسرا د دغې کتنې نه په دې ډډه وکړه چې د برتانيې حکومت نه غوښتل چې په ښکاره د امير لوري ونيسي او د ده په قابليت يې شک کاوه چې په خپل سيال به بريالی شي.

د ميوند تاريخي جگړه

د ميوند جگړه د افغانستان او برتانيې په تاريخ کې يوه نامي جگړه ده چې د ۱۸۸۰ کال د جولای په اووښتمه نېټه د ميوند په ډگر کې د انگرېزي پوځ او افغان جنکيالو تر منځ ونښته.

په هرات کې د ايران د لاس وهنو، په افغانستان کې د ملي ځواکونو تیتوالی او د پوځي سرچينو د لېروالي له امله د ايوب خان ستراتيژيک خوځښت ډېر کمزوری و. تر څو چې جگړې ته تيارېده د ځواکونو ستراتيژيک انډول د ده په زبان بدل شوی و. که څه هم ده په ميوند کې يو ستر تاريخي تاکتيکي بری وکاته خو دغه بري په نېغ ډول د ده ستراتيژيک او

سياسي موخې تر سره نه کړې خو په ضمني ډول يې د افغانستان د سياسي تجزيې مخه ونيوله.

د ۱۸۸۰ کال په پسرلي کې جوته شوه چې سردار محمدايوب خان د کندهار د نيولو په موخه د پليو، سوارو او توپچي يوه لويه قوه جوړوي. د ايوب خان مخکينې قوه د خپلې خوښې ۱۴۰۰ هراتي سپارو نه جوړه وه چې د جون په لسمه نېټه د لوي نايب خوشدل خان په مشرۍ د فراه په لور وخوځېده. د ۱۸۸۰ کال د جون په پنځلسمه نېټه سردار محمدايوب خان د خپل منظم او نامنظم لښکر سره د کندهار په لور ورسېدې روان شو چې انگرېزان د وطن نه وشړي، هېواد خپلواک کړي او د خپلې کورنۍ واکمني خوندي کړي. د جون په يوويشتمه نېټه انگرېزان د ايوب خان د حرکت نه خبر شول او د جون په دېرشمه نېټه يې خپلې يوې لوا ته امر وکړ چې د کندهار نه د هلمند غاړې ته لاړه شي او د ايوب خان قواوې پرې نه ږدي چې د هلمند له رود نه راتېرې شي. د جولاي په دوهمه نېټه د انگرېزانو لوا د جنرال بوروس په مشرۍ د کندهار نه روانه شوه او د جولاي په يوولسمه نېټه د هلمند د رود پر دې خوا غاړې ځای په ځای شوه. خو د کندهار د والي سردار شيرعلي خان پوځ د هلمند د رود په پورې غاړه په کرشک کې لا پخوا ځای په ځای شوی و.

د دواړو خواوو پوځي هدفونه د هغوی د سياسي موخو پر بنسټ جوړ وو. انگرېزانو غوښتل چې هغه سياسي ژمنې چې د امير عبدالرحمن خان سره يې کړې وې د هغو په پلي کېدو کې خنډ رامنځ ته نه شي تر څو وکولی شي چې خپل پوځونه په امن سره له افغانستان نه وباسي. دې موخې ته د رسېدو له پاره د انگرېزانو پوځي موخه دا وه چې کندهار يا غزني ته د ايوب خان د لښکرو د رسېدو مخنيوی وکړي. د دې هدف له پاره د هلمند سيند يوه مناسبه د فاعي کرښه وه چې په هره بيه وي وساتله شي.

د ايوب خان سياسي موخه دا وه چې په بېره ځان کابل ته ورسوي او انگرېزي ضد ځواکونه د ځان سره ملګري کړي. غوره دا وه چې ده په هلمند او کندهار کې ځان په جګړو کې ښکېل کړي نه واي بلکې سيخ غزني ته چې د ملي ځواکونو يو ستر مرکز ګرځېدلی و، ځان رسولی وای. خو د سردار ايوب خان لومړنۍ پوځي موخه د کندهار نيول و.

کاکړ د سنت جان د شمېر له مخې وايي چې د ايوب خان پلې پوځ ۴۵۵۵ تنه، سواره يې ۳۲۰۰ وو او برسېره پردې د ايوب خان سره ۴۰۰۰ غازيان چې زياتره يې طالبان او ملايان وو، هم ملګري وو. خو سر پرسي سايکس د ايوب خان ټول پوځ ۲۵۰۰۰ ښيي. له دوی سره ۳۰ توپونه وو، خو توپکونه يې دهن پر وو، په داسې حال کې چې د انگرېزانو پوځ

مارتيني، هنري او شنایدر ټوپکونه درلودل چې د افغانانو د ټوپکو نه څو ځله ښه وو. د جنرال بوروس د منظم پوځ شمېر ۲۸۰۰ او ۲۰۰۰ نامنظم پوځ هم ورسره و. سایکس د انگرېزانو د ټوپونو شمېر ۱۲ ښيي.

علي احمد جلالي وايي چې د انگليسي څېړونو له مخې داسې ښودل کېږي چې گویا د انگرېزانو ۲۵۰۰ کسيز پوځ د افغانانو د شل زریز نه تر ۲۵ زریز لښکر سره جگړه وکړه. خو دغه څېړنې کره نه دي او غولونکې دي. لومړی خو د افغانانو شمېر ډېر زیات ښودل شوی دی چې واقعیت نه لري، دوهم انگرېزانو خپل لوژستيکي ملاتړ کسان چې شمېر یې نږدې درې زرو ته رسېدو په شمېر کې نه دي نیولي او دریم دوی یوازې د ځواکونو د شمېر اړخ په نظر کې نیولی او کیفیت ته یې اډو پام نه دی کړی.

دی زیاتوي چې د ځواکونو په انډول کې د دواړو خواوو د پوځي سې ورتیا د پرتله کولو له پاه په کار ده چې د هغوی د وسلو او جنګي وسایلو کیفیت او شمېر، د پوځي روزنې او ورتیا کچه، د قواوو پوځي جوړښت، د اکمالاتو نظام، د جګړې مقصد ته د جنګیالیو د سرسپارنې اندازه او د هغوی مورال په نظر کې نیول کېږي. د میوند د جګړو د سیالو پوځونو شمېر په لاندې ډول و.

۱-د انگرېزي پوځ شمېر:

د سپرو دریم بمبي غونډ-۳۱۶ پوځیان، د سند د سپرو دریم غونډ-۲۱۶ پوځیان، د توپچي بطریه-۱۹۱ توپچیان او شپږ ټوپونه، د توپچي بې سد او رخه بطریه-۴۳ پوځیان او ۵ ټوپونه، ۶۶ لمبر انگرېزي پلي غونډ-۵۱۶ پوځیان، د بمبي لومړی پلي غونډ-۶۴۸ پوځیان، د بمبي ۳۰ لمبر پلي غونډ-۶۲۵ پوځیان، د استحکام ټولې. په دې ترتیب ټول جنګي پوځیان ۲۵۹۹ او د لوژستيکي ملاتړ پوځیان ۳۰۰۰ تنه چې ټول ۵۵۹۹ کېږي. برسېره پر دې د انگرېزانو سره د افغان لوی پوځ ورسره و چې د کندهار والي سردار شیرعلي خان د سردار مهردل خان زوی یې قوماندانه کوله. دغه پوځ د ۶۰۰۰ نه زیات سرتیري درلودل چې په انگليسي شنایدر ټوپکو، څلور شپږ پونډه ټوپونو او دوه دوولس پونډه هاوان باندې سنبال وو. د والي شیرعلي خان قواوې نارامه وې. د دوی وفاداري ښکاره تر شک لاندې وه. بوروس او شیرعلي خان په یوه خوله وو چې افغان پوځ په رود بېرته راپورې باسي او بې وسلې یې کړي. خو د مخه تر دې چې دوی دا کار وکړي پلي او یو شمېر سواره د هرات قواوو ته د سرتیپ نورمحمد خان په گډون وتښتېدل او ورسره یوځای شول. خو د سوارو زیاته برخه شیرعلي خان ته وفاداره پاتې شوه. برتانوي قواوې په دوی پسې ووتلې،

توپونه يې ځينې ونيول خو توپچي ورونکي اسونه ترې خلاص شول.

۲- د افغان پوځ شمېر:

لومړی پلې لوا- ۱۵۰۰ تنه، دوهمه پلې لوا- ۱۵۰۰ تنه، دريمه پلې لوا- ۱۱۰۰ تنه، د سپرو لوا- ۹۰۰ تنه، د توپچي يوه غرنی بطریه او څلور سارايي بطری- ۵۰۰ توپچيان او ۲۰ توپونه. په دې توگه د افغان د منظم پوځ شمېر ۵۵۰۰ ته رسېده. هراتي نامنظم سپاره ۵۰۰ هغه جنگيالي چې په فراه کې له لښکر سره يو ځای شول ۱۰۰۰ تنه، د والي شيرعلي خان نه تېښتېدلې سپاره ۵۰۰ چې ټول ۸۵۰۰ کيږي. په دې برسېره د سيمې ډېر غازيان له پوځ سره ملگري شوي وو چې ډېرو يې وسله نه لرله خو د ځينو سره د جزايل شدل توپک وو چې له خولې دکېدل او د ويشتلو اغېزمن واټن يې له ۵۰ تر ۸۰ مترو پورې و. نورو غازيانو يوازې تورې او نېزې درلودې. انگرېزي ځينې سرچينې د دوی شمېر ۱۵۰۰۰ بنودلی دی. خو د انگرېزانو رسمي اسناد يادونه کوي چې دا به مبالغه وي. د وسلو په برخه کې د انگرېزانو لاس ډېر بر و.

په منظمو پوځونو کې د پنځو کابلي غونډونو اينفيلډ د نورو غونډونو تر وسلې ښه وو خو د انگرېزانو د مارتيني او سنايدر د توپکو سره يې سيالي نه شوه کولی چې د انفيلډ په پرتله يې د اور چټکتيا او جنکي اغېزتوب اته ځله زيات و. د ايوب خان هراتي او کندهاري غونډونو شلخي توپکونه درلودل چې اغېز يې د انگرېزانو پر تله پنځلس ځلې لږ و.

د افغان پوځ توپخانه د بوروس د لوا پر توپخانې غښتلې وه. ايوب خان شپږ دوولس پونډه ارماسترانگ توپونه لرل چې ډېر اغېزمن وو. ده همدارنگه شپاړس شپږ پونډه او دوه دوولس پونډه اوبوسونه، دوه غرنی څلورنيم انچه اوبوسونه او څلور درې پونډه توپونه هم درلودل. خو بايد ووايو چې د وسلې په اغېز کې د پوځي روزنې سويه ډېر اهميت لري چې په دې برخه کې د انگرېزي پوځيانو لاس ډېر بر و.

د دې ټولو لاملونو په بنسټ د انگرېزانو د پوځ جگړه يز اغېز لږ تر لږه درې ځلې زيات و. د جلاي په وينا په ميوند کې د افغانانو بری د وسلو د اور په زور نه بلکې د اغېزمن مانور او روحي جذبې په واسطه تر سره شو.

د جنرال بوروس (Burrows) پوځ او د شيرعلي نامالوم شمېر جنگيالي کشک نخود ته په شا شول په دې چې هغه ځای د هغو دوو لارو پر سر پروت و چې کندهار ته تللې او همدارنگه هغه د کندهار دوو نورو لارو ته په لنډ واټن کې پروت و. بوروس په دې توگه غوښتل چې ايوب خان په هره لار کندهار يا غزني ته د تلو نيت وکړي دی يې له دې ځايه

مخه نيولی شي.

د ايوب خان مخکيني ځواکونه د کرشک په شمال کې د هلمند له روده تېر شول او په خپله دی د جولای په دوه ويستمه نېټه د حيدر اباد په برخه کې د هلمند نه ورپسې واوښت او د زمينداور په لور روان شو. د ميرزا يعقوب علي خان په وينا او د کاکړ د څېړنې له مخې انگرېزي پوځ ميوند ته لومړی ورسېد. خو د سر پرسي سايکس په وينا د ايوب خان مخکي ځواکونه هلته لومړی رسېدلي وو. لکه چې د مخه مو يادونه وکړه انگرېزانو د ميوند کلي ته نږدې دښته د جگړې له پاره غوره کړې وه چې هلته به په دغه هوار ډاک کې د خپلې نوې وسلې په زور ايوب خان وڅپي او پرې به يې نه ږدي چې هغه د کندهار يا غزني لوري ته روان شي. د ميوند جگړه د ۱۸۸۰ کال د جولای په اوويستمه نېټه سهار د ميوند کلي په نږدې دشته کې پيل شوه.

د انگرېزانو جاسوسی جال د افغان لښکر د خای د معلومولو له پاره هره ورځ د کشک نخود نه د څارنې ډلې د سنکېر، گرماب او د ارغنداب سين غاړې ته لېږلې. د جولای په ۲۱ مه انگرېزان خبر شول چې ايوب خان د سنکېر له خوا ميوند ته تلونکی دی. د جولای په ۲۶ مه د انگرېزانو يوه جاسوس خبر ورکړ چې ميوند د ايوب خان يو شمېر نامنظمو پوځيانو نيولی او په گرماب کې د سردار د سپرو پوځيانو يوه ډله ليدل شوې ده. د انگرېزانو د څارنې ډلې د افغان پوځ توپخانه چې د ايوب خان د اصلي پوځ سره ملکرې وه لا نه وه ليدلې. ځکه جنرال بوروس او سنت جان فکر کاوه چې د ايوب خان اصلي پوځ لا ليرې چېرته د هلمند په غاړه دی. له دې امله دوی وپتيله چې لا هم د دې وخت شته چې خپل پوځ د کشک نخود نه ميوند ته ولېږدوي.

دوی د جولای په ۲۷ مه د هغه خاي نه ميوند ته روان شول تر څو د ايوب خان پوځ د ميوند په هوار ډگر کې کيږ او کندهار ته يې د تگ مخه ونيسي يا د کندهار په شمال کې د غزني او کابل په لور وځوځيږي چې هلته هغه ترتيبات گډوډ کړي چې انگرېزانو او امير عبدالرحمن نيولي وو.

علي احمد جلالي وايي چې «دواړه خواوې په يوه وخت کې د ميوند په لور روانې وې او په پايله کې د هغوی تر منځ يوه خونړی تصادفي نښته وشوه.» ۲۸۰

د جگړې جريان

د علي احمد جلالي په وينا د جولای په ۲۶ مه سنت جان ته مالومه شوه چې ايوب خان ميوند ته د تلو تکل کړی دی. د انگرېزانو پوځ د جولای په اوويستم د سهار په اوو

بجو له کوشک نخود نه ميوند ته روان شو. ميوند ته لا لس کيلومتره پاتې و چې د دريم ځل له پاره دمه وشوه او دغلته يوه جاسوس خبر راوړ چې د ايوب خان پوځونه په تول ځواک ميوند ته ننوزي.

جنرال بورس سمدلاسه پرېکړه وکړه چې د ايوب خان په پوځ د تک له نظام نه بريد وکړي. هغه د جگړې له پاره د ميوند سوويل لوېديځه سيمه خوښه کړه. دا ځای يو هوار ډاک و چې ځای ځای اوږدې کندی او وچ خورونه په کې غږېدلې وو. د اوبو نشتوالی د دواړو پوځونو له پاره لويه ستونزه وه. بورس اوار ډاک ته مخه کړه. کله چې مالومه شوه چې د محمداباد کلی نه دی نيول شوی د سپرو يوه رساله په دې وکومارل شوه چې هلته لوژستيکي تاسيسات ځای په ځای کړي. د توپي بټريه له کندی نه مخ په شمال لوېديځ واوښته او د اورځای د نيولو له پاره پرمخ ولاړه. توپونه د افغاني پوځ د کتارونو بڼې اړخ ته لمبر شول او د ۱۷۰۰ مترو نه يې ډزې پيل کړې. دا وخت د سهار لس بجې او پنځوس دقيقې وې. ۲۸۱ د توپخانې د ډزو د پيل کېدو سره د انگرېزي پوځ کتارونه کين لاس ته وخرخېدل او د توپخانې شا ته د جگړه ييز نظام د نيولو له پاره په خپرېدو شول.

خو کله چې د انگرېز پوځ کينې خوا ته تاو شو، سردار ايوب خان د هغه د مقابلې له پاره خپل غونډونه مارش کړل. سردار ايوب خان چې انگرېزان په دفاعي مورچو کې ناست وليدل په هغوي يې د بريد تاييه وکړه. د انگرېزانو د نظام کمزورتيا د هغه خلاص اړخونه او پياوړتوب يې د پليو د اور په ستر ځواک کې و. خو افغانان د يوې خوا د بڼې توپخانې د لرلو له امله غښتلي وو او د بلې خوا د دښمن د مورچلو د راتاوېدو له پاره لور تاکتيکي خوځښت درلود. له دې امله ايوب خان پرېکړه وکړه چې ژر تر ژره توپخانه مخ ته کړي او د هغې د اور په پناه کې خپل پوځونه په دښمن باندې د يرغل له پاره خپره کړي. ده خپل سپاره پوځونه د دښمن د اړخ نه د تاوېدو له پاره د خپل جگړه ييز نظام په بڼې اړخ کې وکومارل. د ولسي جنکياليو ډلې يې هم په بڼې اړخ کې تاييه کړې او خپل منظم پلي غونډونه يې د نظام په منځنۍ برخه کې جگړې ته ورمخکې کړل. افغان توپخانې د نظام له مرکزي برخې نه نږدې د ۲۰۰۰ مترو له واټن نه د دښمن کرښه د ډزو لاندې ونيوه. دا وخت د سهار يوولس بجې او شل دقيقې وې. ۲۸۲ د ايوب خان پوځ نږدې په پنځه څلوېښت دقيقو کې ځای پرځای شو. دا وخت ټکنده غرمه او تودوخه په زور کې وه.

د دواړو خواوو تر منځ د توپخانې مقابلې نږدې يو ساعت روانه وه. په دې موده کې يوې خوا هم د لوی يرغل کوښښ ونه کړ. دواړو لورو هڅه کوله چې د بل لوري پليو او سپرو ته د توپونو په ډزو تاوان واړوي او بيا پرې ودانکي او په نږدې جگړه کې خبره ورسره

خلاصه کړي. د ايوب خان توپچي گوزارونو د دښمن پوځ ته چې په مورچو کې پراته وو، دروند تاوان اړاوه.

علي احمد جلالي وايي چې د انگرېزانو د مورچې کيلي هغه کنده وه چې د هغې نه غازيان په پټه د دښمن د کرښې ښي اړخ او شا ته تېرېدای شوای. د غرمې په پاو باندې دوولسو بجو د ولسي جنګياليو سترې ډلې د دغې کندي له لارې د دښمن له اړخ نه تاو شوې او له نږدې واټن نه يې د ۶۶م غونډ په کرښو ډزې کولې. افغاني سپرو د دښمن په کيڼ اړخ د راتاوبدو هڅه وکړه. د کتار په منځ کې افغان منظمو پليو غونډونو د انگرېزانو په منځنۍ برخه باندې د يرغل تياري ونيوه. خو د انگرېزانو له خوا پر دوی له پخو مورچو نه د پليو وسلو چې دوی په کې لاس بري و، د کولۍ باران جوړ کړ او افغان لوري ته يې دروند زيان واړاوه او يرغل يې په شا وتمبول شو او دغه وخت د افغان لښکر حال ډېر خراب و. دغه وخت ښايي افسانوې ملالې خپله لنډۍ:

«که په ميوند کې شهيد نه شوې،

خدايږو لاليه بې ننکۍ ته دې ساتينه!»

ويلي وي چې افغان جنګيالي غوڅ يرغل ته وهڅوي. دغه وخت د ايوب خان د پوځ لوی قوماندان حفيظ الله خان لوکري امر وکړ چې پوځ دې يرغليز عمليات وځنډوي او تر څو د بل بريد له پاره شرايط برابرېږي په خپلو ساتونکو مورچو کې دې کېښي. افغان مشرانو د بل يرغل د برابرولو له پاره پرېکړه وکړه چې يو څه ولسي جنګيالي او سپاره د دښمن د کرښې اړخونو ته ولېږي او د انگرېزانو پام هغې خوا ته واړوي او بيا په منځنۍ برخه غوڅ يرغل ترسره کړي. دا پلان پلي شو. د غازيانو يوه لويه ډله د دښمن د اړخ نه راتاو شوه او يو شمېر غازيانو د محمود اباد او خېک په کليو کې د دښمن په لوژستيکي تاسيساتو بريد وکړ او افغان سپرو د دښمن په کيڼ اړخ د راتاوبدو هڅه وکړه. انگرېزانو خپل پام د اړخونو امنيت ته واړاوه او منځنۍ برخه کمزورې شوه. برسېره پردې نږدې يوه نيمه بجه د دوی د توپونو د يوې بطرې کولۍ خلاصې شوې چې د کيڼ اړخ نه يې د افغان سپرو د يرغل مخه نيولې وه.

په دې ډول د افغان پوځ د غوڅ بريد له پاره شرايط برابرېدل. افغان توپونه جبهې ته ورنږدې شول او د انگرېزانو مرکز او کيڼ اړخونو ته يې دروند زيان اړولو. دغه وخت کې پلي غونډونه مخ ته روان وو. په ښي اړخ کې غازيان او په کيڼ اړخ کې افغان سپاره يرغل ته راوړاندې شول.

په دوه نيمو بجو د افغان توپونو ډزې سستې شوې او چې د توپونو ډزې ودرېدې، د انگرېزانو کرښې ته مخامخ د غازيانو او منظمو پليو بهيرونه د کندې نه راوختل او د دښمن د مورچلو په لور چې پنځه شپږ سوه متره واټن کې وې په ځغاسته ورغلل او د انگرېزانو په منځني کرښې ورمات شول او تن په تن جگړه ونښته چې تورې او برچې په کې زياتې اغېزمنې وې. افغان کابلي پلي غونډونه د انگرېزانو په توپچيانو ورغلل او دوه توپونه په لاس ورغلل. هراتي سپاره د دښمن د کيڼ اړخ په مورچلو ورختل. په دغه يرغل سره د جيکوب رايفلز دوه ټولې چې په کيڼ اړخ کې وو خپلې مورچې پرېښودې او د گرينيډيرز په بهيرونو چې په څنک کې يې وو، ورمات شول. غازيان د انگرېزانو د کرښې اړخونو او شا ته ورتېر شول او هغو يې ځای ځای کلابند کړل. کله چې په هندي پليو فشار زيات شو نو يوه برخه يې په ۶۶م پلي غونډ ورماته او د هغه غونډ له بهيرونو سره گډه شوه. دې کار د انگرېزانو دفاعي کرښه ماته کړه او د جنرال بورس خبره «انگرېزي غونډونه د کيڼ نه ښي خوا ته د سمندر د څپو په شان په يوه بل ورمات شول.» ۲۸۳ په پايله کې انگرېزي پوځيان په بې نظمه توگه د خېک کلي ته پر شا شول. پاتې پلي پوځيان د محمود اباد کلي ته په شا لاړل. دا وخت د ماسپين څه د پاسه درې بجې وې.

د غازيانو پرله پسې بريدونو انگرېزانو ته وخت ورنه کړ چې په محمود اباد کې تم شي له دې کبله جنرال بورس کندهار ته د تېښتې لار غوره کړه.

د ميوند د جگړې انځور د کاکړ له خوا د دواړو دښمنو د روايتونو له مخې بيان شوی دی. د سايکس د روايت له مخې د انگرېزانو «سواره همدا چې له محمود اباد له کلي نه واوښتل له غليم [دښمن] سره په تماس کې شول او په ښي او کيڼي خوا کې يې دوه توپونه وو. د پوځ اصلي برخه د محمود اباد له منځه تېره شوه ... او د مخکينيو ساتونکو شا ته يې ځای ونيو، چې لا د مخه» په جگړې بوخت وو. «د هغوی په مخکې د ۱۵ نه تر شلو فوتو پورې ژوره ناله پرته وه چې د جگړې په ټوله موده کې د غازيانو» په لاس کې وه. ۲۸۴ سايکس دا هم وايي چې د سورو د راپور له مخې د افغانانو ګڼ شمېر افغان جنګيالي په يوې پراخې نيښې دايرې په بڼه په منځني جبهه کې غزېدلي وو.

نوموړی دا وايي چې جگړه د توپونو په دزو پيل شوه چې د ايوب خان توپونو په برتانوي توپونو غوروالی کاوه. افغان منظم پوځ په منځ کې و، خو تر هغه هېښناکو غازيانو ښکته په ناله کې عمل کاوه او له دغه ځای نه يې د انگرېزانو ښي خوا تر بريد لاندې نيولې وه او افغان سورو کڼو ډلو د انگرېرانو د کيڼ اړخ شا سامانونه تر کواښ لاندې راوستي وو. په دې توگه برتانوي سواره اړ وو چې تر دزو لاندې واوسي او د افغان سورو مخه

ونيسي چې دوی يې د دواړو خواو نه تر فشار لاندې نيولي وو.

لغتېنت فالول هم وايي چې افغان توپونو زموږ توپونه د اړخونو نه او همدا راز په نېغه توگه تر گوزارونو لاندې ونيول او د دوی شپږ ارم سترانگ توپونو زموږ تر توپونو نه زيات درانده گوزارونه کول. دوی وار په وار را د مخه کېدل او په دواړو خواوو کې يې موږ کيږ کړو. ۲۸۵

د نوموړي په وينا د افغانانو وړاندې تگ چې د يادې شوې نالې نه يې کټه اخېسته، توپچي قواوو خپل توپونه د برتانې د پوځ کيڼ لوري په پنځه سوه کزي کې وړاندې کول، منظمو پليو او غازيانو خپل بيرغونه د ۶۶مې غرنۍ قطعې په ۷۰ کزي کې ودرول. په دې وخت کې د انگرېزانو پليو قواوو په ځواک سره دزې کولې خو د دښمن شمېر تر دې اندازې ډېر وو چې برتانويان يې په دواړو خواوو کې تر دې اندازې پورې چاپېر کړل چې دغه قوه عملاً ايساره شوې وه. لومړی د کيڼ اړخ د جکوب رايفلز قطعه ماته شوه او ورپسې د ښي اړخ د بمبي کړينداز مات شول. ۶۶مې غرنۍ قطعې چې په يوه کنده کې ځای په ځای شوې وه په غازيانو باندې سختې کولې وروڼې او د سر دروند زيان يې ورواړاوه. دوی لا په ليکه کې وو چې په شا کې هندوستاني پوځ په شا تگ سره ووهل شول. د دوی ټکر د ۶۶مې قطعې ليکه ماته کړه او دغه گډه وده پرکنه په دوو بيلو ډلو ووېشل شوه. ښي برخې يې چې ۶۶مه قطعه ورسره وه د خک په لور په شا لاړه او کيڼه برخه يې د محمود اباد په لور منډې وهلې. جنرال بوروس خپلو سوارو ته په افغانانو د يرغل غږ وکړ خو دوی پورته لوري ته زور وکړ او وتښتېدل.

د نوموړي په وينا ايساره شوې ۶۶مه قطعه چې د خک په لور په شا شوې وه ټينگه ودرېده، ترڅو د سلو کسو يوه ډله ورباتي شوه. دغه ډله د خک سووبل ته هغه ښه ته ننوتله چې دېوال ورته چاپېر و. له دغه ښه نه يې د درندو توپونو تر گوزارونو لاندې د دويم ځل له پاره مقاومت پيل کړ. په پای کې د دوی نه يولسو پاتې کسانو د ښه نه د باندې دزونه وکړل او په داسې حال کې چې د يو بل شا ته ولاړ وو تر وروستۍ سلگې پورې وجنگېدل. سايکس د جگړې پای د مېجر لينچ له خولې داسې نقلوي چې د ۶۶مې غرنۍ قطعې يوازينی افسر و چې ژوندی پاتې شوی و: «له نېکه مرغه تعقيب سخت ونه نيول شو او افغانانو د سامانونو او لوازمو د لوټولو په زړه پورې کار ته پام واراوه.» ۲۸۶

کاکړ د عبدالقادر افندي له خولې د ميوند جگړه داسې بيانوي. د انگرېزانو لومړی ډز په هغې قلمبزي جتري باندې وشو چې د شاه زوی په سر نيولې شوې وه او افغانانو په مخامخ نېغ بريد سره ځواب ورکړ. دښمن په پوره مصونيت سره د جگړې په ميدان کې په

هر گوټ گوزارونه کول د افغانانو سست مقاومت د خپلو ماشايزو ټوپکو له امله و چې د دښمن مارتيني، هنري او سنايدر د ټوپکو جوکه نه وو. يوازې د ارمسټرانگ د ټوپونو يوې بټرۍ جگړه تاوده ساتلې وه. د افغانانو حالت هغه مهال لا بد شو چې د لوی نايب ۴۰۰ نا منظم سواره په شا شول. د څه وخت له پاره بری د انگرېزانو له پاره سترگې په لاره و. خو کله چې افغان افسرانو خپل مړني جنگيالي د ايستلو شويو تورو سره د دښمن په لور روان کړل د سر د زيات زبان په بيه يې د دښمن برخه ليک ته د پای ټکی کېښود. د برتانوي افسرانو د ټينگتيا سره سره د دوی له پاره منظم په شا تک ناشونی شو.

د جگړې په پای کې د برتانيې يوه پلي ټولگي تر وروستۍ سلکۍ وجنگېدل چې د انگرېزي بيرغ حيثيت وساتي. دوی د افغانانو افرين د تل له پاره وکاته دوی افغانان په ځای ودرول او خپل بيرغ يې رپانده نيولی وو، تر څو تر وروستي جنگيالي پورې وجنگېدل. ۲۸۷ د افندي په وينا په دې ډول د برتانيې ټول لښکر د منځه ولاړ او يوازې درې شله تنه کندهار ته ورسېدل چې د ميوند د تاريخي جگړې غم لرلې کيسه يې خپلو وطنوالو ته يووړه.

کاکړ وايي چې د سان جان د شمېرې له مخې د افغانانو د مړو او ژوبلو شمېر ۲۵۰۰ تنو ته رسېږي چې په هغو کې ۸۰۰ غازيان هم شامل دي او د انگرېزانو شمېر ۱۱۰۰ تنه وو. افغان جنگياليو ته په دومره زبان سره سره يوازې يو انگرېز ټوپچي افسر مک لين ژوندی په لاس ورغی.

په دې توگه د ميوند نامتو جگړه د پنځو ساعتو په جريان کې تمامه شوه او څه د باندې درې زره انسانان په تورو، ټوپکو او ټوپونو سره وژل شوي او ټپي شول چې د خپلې چټکتيا له مخې ساری نه لري يا لږ ساری لري.

کاکړ وايي چې که انگرېزان په خپل پلارني ټاټوبي کې د يرغلگرو پر ضد جنگېدلی او له خپل ژوند، خپلواکۍ او حيثيت نه يې ساتنه کولی په هغه حال کې به دوی د شاباسي وړ مدافعان وای. خو د ميوند په ميره کې له دوی نه انسان وژونکي يرغلگر جوړ شوي وو. دا د افغانانو ټاټوبی و او دوی حق لاره چې د يرغلگرو په وړاندې له خپل ژوند، ټاټوبي، خپلواکۍ او ناموس نه ساتنه وکړي او دوی په ميرانه د دغو ټولو ارزښتونو د ساتنې له پاره څه د باندې دوو زرو خپل خواږه ځانونه جار کړل. د ميوند تاريخي بری د هغه بري سره پرتله کېدای شي چې څلوېښت کاله د مخه افغان جنگياليو د وزير محمد اکبرخان په مشرۍ د يرغلگرو ۱۶۵۰۰ تنه پوځ د منځه يووړ او يوازې درې سوه تنه يې ژوندي پاتې شوي وو او يوازې يو يې برابدين جلال اباد ته په نيم ژواندي ډول ځان رسولی و. په دې

توکه د ميوند جگړه په بشپړه توګه د افغان جنګياليو په بري پای ته ورسېده او د افغانستان د ټوټه کېدو پلان يې، چې لپټن کېنلی و، شند کړ.

د ايوب خان لښکر د دې پر ځای چې برتانوي پوځ تعقيب کړي د شيانو په راټولولو او د مرو په ښخولو لس ورځې تېرې کړې او دښمن ته يې پوره وخت ورکړ چې په کندهار کې د ځان ټينګولو له پاره ځينې کامونه پورته کړي لکه په کابل کې چې د افغان جنګياليو مشرانو روبرتس ته هم وخت ورکړی وو چې خپل پوځ د شيرپور چاونی ته ورسوي او هلته ټينګ دفاعي ترتيبات ونيسي.

برتانويانو د جنرال پريمروز په مشرۍ په کندهار کې ۳۴۰۰ پوځ درلود چې په نيو ولسو سنبال و. نوموړي جنرال د کندهار «ښار تر پوره کنترول لاندې ونيو او د هغه ۱۸۰۰۰ پښتانه اوسېدونکي يې له سوداګرو او پارسيانو پرته ټول له ښاره وايستل. په دې وخت کې د ښار ټول اوسېدونکي ۳۰۰۰۰ وو. څوک چې ښار ته ننوته ډزې پرې کېدلې. ايسار شوي پوځ په دې ډول» ۲۸۸ له بهر سره اړيکه پرېکړه.

ايوب خان د ميوند د جگړې د بري لس ورځې وروسته د خپل بريالي پوځ او په زرګونو نورو خلکو سره د اګست په شپاړسمه نېټه کوکړانو ته ورسېد. د کاکړ په وينا ايوب خان د يوې خوا برتانويانو ته لس ورځې وخت ورکړ چې خپل دفاعي حالت ټينګ کړي او د بلې خوا يې سره له دې چې جنرال پريمروز د ايوب خان په پوځ بريد کړی و، د ايسار شوي پوځ سره د زور پر ځای د خبرو لار ونيوله که څه هم افسران يې ورسره مخالف وو. خبرې د اګست په ۱۶ سمه د بي بي حوا په منځګړيتوب چې د سردار رحمدل خان کونده وه او جنرال پريمروز خان د هغې زوی باله، پيل شوې. جنرال پريمروز د دغو خبرو اترو له لارې څلورنېست ورځې وخت تر لاسه کړ تر څو د رابرتس لس زرين پوځ په څلرويشتو ورځو کې کندهار ته ورسېد او د سپټمبر په لومړۍ ورځ يې د ايوب خان لښکرو ته د بابای ولي په غاښي کې ماتې ورکړه. ايوب خان د خپل پوځ سره د هرات په لور او رابرتس د خپل پوځ سره کوټې ته روان شول. ايوب خان شايد خبر نه و چې د هغه تربور امير عبدالرحمن د انګرېزانو د سياسي استازي لپيل گريفن سره سرای خواچې ته ورڅېرمه د ذمې په غونډه کې د هغه پر ضد جوړه کړې وه.

د نوي نظم د طرحې ناکامي

کاکړ وايي چې «د انګرېزانو له پاره د کندهار پرېښودل په اخلاقي، سياسي او نظامي لحاظ هم ګران و. دوی د خپلې امپراتورې، ملکې په نامه د هغه حاکميت د سردار شيرعلي

خان په کورنۍ کې په رسمي ډول ميراثي، خپلواک او له افغانستان څخه بيل اعلان کړی و. د ويسرا د شورا ټول غړي له بارينگ (Barring) نه پرته د کندهار د پرېښودلو مخالف وو. «۲۸۹ څکه چې کندهار په نظامي توگه د هندوستان د ساتلو له پاره ډېر اهميت درلود او په ځانگړې توگه په دې وخت کې چې روسي جنرال سکوپيلوف د ترکمنو په ملک کې عشق اباد ته نږدې په پوځي عملياتو بوخت و. خو رپين په دې نظر و چې د هند ستراتيژيکي اړتياوې پيشين او سيبې پوره کولی شي. برسېره پر دې د برتانيې حکومت په دې نظر و چې د هندوستان ساتنه د هغه په ښه اداره کولو کې پراته ده. په ۱۸۸۱ کې د جنوري په ۲۰مه نېټه د ويسرا د شورا د مخالفت سره سره پرېکړه وشوه چې دوی به کندهار پرېږدي او امير عبدالرحمن ته به يې سپاري. والي شيرعلي خان لا د مخه کراچي ته کډه کړې وه.

انگرېزانو امير عبدالرحمن راضي کړ چې کندهار په خپلو ځواکونو سره وروسته له دې تسليم شي چې انگرېزان خپل پوځ ترې نه باسي. انگرېزانو د اپرېل په شپاړسمه کندهار د امير مامورانو ته وسپاره او خپل پوځ يې د چمن له لارې وايست. په همدې ورځ د امير څلور زريز پوځ له اتو توپونو سره کندهار ته ورسېد. سردار محمدهاشم خان د محمداعظم خان زوی د هغه والي وټاکل شو. خو څنگه چې هغه يو بې تجربې ځوان و د کندهار اداره يوې جرگې ته وسپارل شوه چې له سردار شمس الدين خان، قاضي سعد الدين خان او نايب سالار غلام حيدر خان څرخي نه جوړه وه.

ايوب خان د خپل پوځ سره د دسمبر په ۲۲مه نېټه هرات ته ورسېد. په هرات کې دی د زياتو ستونزو سره مخامخ شو چې د کندهار په لوري تک يې وځنډاوه. په دغه وخت کې په شمالي افغانستان کې د امير پاچاهي جوړه شوه، کندهار هم د امير د پلويانو له خوا اداره کېده. هراتيانو چې د بيلو بيلو قومونو خلک په کې ميشته وو او د کابلپانو د واک نه ستړي شوي وو په دې فکر شول هغه وخت را رسېدلی چې په هرات خپله واکمني وچلوي. د هرات په څلورو غټو قومونو (چارایماق) د تيمانپانو مشر سردار امبیا خان محمدايوب خان ته د مالياتو د ورکولو نه ډډه وکړه، د هغه په نشتوالي کې يې د سنت جان او والي شيرعلي خان سره د ليکونو په ذريعه اړيکې ټينگې کړې وې او انگرېزانو ته يې خپله وفاداري ښودلې وه. د جمشيدې قوم مشر خان اغا که څه هم د ايوب خان خسر و، د يارمحمد خان الکوزي مشر زوی يې د هرات د واکمن کېدو له پاره هڅولی و. له سنت جان نه يې غوښتي و چې د سردار شيرعلي خان زوی او جنرال فيض محمد خان ته اجازه ورکړي له هغه سره يو ځای شي. ده همدارنگه د اگست په ۱۳مه نېټه د کندهار کابل په لار کې حيدر خېلو ته نږدې د شنيز د رود تر څنگه د رابرتس قواوو درستيز چارلېز مک

کريگر ته بلنه ورکړه چې هرات ته راشي او ورته يې وويل چې هرات ستاسو دی. د فيروز کوهي او قبيچق قومونو د يوه معتبر سيد په ذريعه امير عبدالرحمن ته بيعت استولی و. دغه وخت د محمد رياضي هراتي په وينا د هرات خلکو د فيض محمد اسحقزي او کرنيل يارمحمد خان هراتي په لمسون د ايوب خان او کابلپانو پر ضد بلوا وکړه. يوازې د هرات هزاره گان د ايوب خان پر خوا وو. خو ايوب خان د خپل پوځ او منصبدارانو په فعالې مرستې سره ټول ناراضيان وځپل او بلوا يې غلې کړه. خان اغا جمشيد يې وروسته له هغې وواژه چې د سان جان په نامه د هغه له خوا ټاپه شوي ليکونه ورته وښودل شول. په دې ترتيب ايوب خان هرات تر خپلې واکمنۍ لاندې راوست خو وخت ته يې اړتيا درلوده چې هلته خپله واکمني ټينگه کړي.

د ايوب خان په وړاندې په هرات کې ستونزې د دې لامل شوې چې ده په وخت سره ونه کړای شول چې د کندهار په لور روان شي او هلته خپل واک زر وغزوي او د امير واکمني چې په کابل کې لا ټينگه شوې نه وه وپرخوي. ايوب خان د جولای تر مياشتې پورې څلورنيم زره پوځ او څو کنديکه سواره جوړ کړل او د جولای د مياشتې په سر کې د کندهار په لور وخوځېد. د ايوب خان مخکينۍ قوه د امير د پوځ له خوا په شا وتمبول شوه او له دې کبله نوموړي غلام حيدر خان څرخي ته د سپاسلارۍ رتبه ورکړه. خو کله چې ايوب خاند خپل لښکر سره کرشک ته راوړسېد د امير پوځ ته يې ماتې ورکړه او وړسې يې کندهار د جگړې پرته ونيو او د امير پوځ کلات ته پر شا شو.

په کندهار کې د امير عبدالرحمن خان او غازي محمد ايوب خان ترمنځ پرېکنده جگړه او د افغانستان بيا يووالی

د کاکړ په وينا ايوب خان د کندهار نه ونه خوځېد ځکه چې د يوې خوا کندهاريانو زړه نه ښه کاوه چې په کابل يرغل وکړي او د بلې خوا ده دا ناسم فکر کاوه چې گویا کابل ته د تلو په صورت کې به په کوپټه کې د انگرېز پوځ کندهار ونيسي او د ده د شاه تگ لاره به غوڅه کړي. په داسې حال کې چې د برتانوي هند حکومت پرېکړه کړې وه چې د افغانستان په کورنۍ جگړه کې به نېغه او څرگنده برخه نه اخلي. امير عبدالرحمن د ايوب خان په وړاندې، چې هغه يې په کابل کې د خپلې واکمنۍ له پاره خطر گانه، په لږ وخت کې تياری ونيو.

امير عبدالرحمن دغه مهال د خپل دريځ د ټينکولو په موخه ځينې گامونه پورته کړل: لومړی يې د کوهستان او غلزيو له مشرانو سره جرگې وکړې، په کابل کې يې جنرال

محمدجان خان وردگ، د هغه مشر ورور، سردار نیک محمد خان د امير دوست محمد خان زوی او د امير شيرعلي خان پلويان يې بنديان کړل، په ميدان کې يې له څلور سوه ملایانو او مولایانو نه فتوا تر لاسه کړه چې د هغې له مخې ايوب خان ياغي بلل شوی و خو د کندهار ملایانو بيا امير په خپله فتوا کې کافر بللی و. په دې ترتيب امير عبدالرحمن د خپل پوځ سره د عصمت الله جبار خېل، نیازمحمد خان، بهرام خان او نورو په ملگرتيا د اگست په ۱۱ مه نېټه د کندهار په لور روان شو. امير په لاره کې له هغو ميليونونو روپيو نه په پوره سخاوت گټه پورته کړه چې انگرېزانو ورکړې وې. په ټوله لاره کې يې د پخې دودۍ لنگر چالان و، د ترکستاني چينو، سپينو پکړيو او لونگيو د بخشش بازار تود و. برسېره پردې امير خلکو ته د عدل، او يا انصاف او ښه حکومت کولو ژمنې ورکړې.

په کندهار کې ايوب خان اوولس زرين پوځ او ۱۴ توپونه درلودل او امير څورلس زرين پوځ او ۱۸ توپونه درلودل. ايوب خان خپل پوځ له احمد شاهي ښار نه زاړه ښار ته وايست په دې هيله چې په پېښورونکې جگړې کې ملکي خلکو ته د سر زيان ونه رسېږي او ښار چور نه شي. د دسمبر په ۲۲ مه جگړه پيل شوه. د جگړې په لومړيو کې د ايوب خان د پوځ مخکينۍ ليکې په ډېرې زورتيا سره پر مخ ولاړې او د امير پوځ يې تر سخت فشار لاندې ونيو. خو د جگړې په تودېدو او چټکتيا کې دغه ليکې پر شا شوې. دوی ځکه پر شا او تيتې شوې چې پر دوی د دښمن پرته د شا نه کابليو قطعو ډزې وکړې چې د امير د پوځ نه ايوب خان ته اووښتې وې. برسېره پر دې په دوی باندې هراتيانو هم د شا نه ډزې وکړې. په دې ډول ايوب خان نږدې گټلې جگړه بايلوده او امير د ايوب خان د ناراضو عسکرو په سبب د خپل ژوند مهمه جگړه وگټله.

برسېره پردې د ايوب خان په ماته کې شايد دې خبرې هم خپل رول لوبولی وي چې «ايوب خان خپل پوځ له ښاره وايست په جنګياليو کې وپره ولگېده او برخلاف د امير په جنګياليو کې يې د هيلې روح پوه کړ.» ۲۹۰ کاکړ وايي چې «بل غټ ټکی د امير او ايوب خان په قومانداني کې و. لومړی د جنګ په ميدان کې د احمدشاه دراني په شان د خپلو جنګياليو په منځ کې کرزېده... خو ايوب خان د وران شوي برج ديدنه له پاسه ناست و، د جنګ ننداره او سپاناری يې کاوه. د غازي ايوب خان دې ته پام نه و چې د ميوند د جنګ په خلاف چې هلته يې نه ماتېدونکې اراده لرله په چل زينه کې يې اراده او شخصي قومانداني په کار وه چې هغوی يو د بل پر ضد جنګ کولو ته وهڅول شي.» ۲۹۱

غازي ايوب خان د خپلې ماتې وروسته د هرات په لور وخوځېد خو د مخه تر دې چې هرات ته ورسېږي خبر شو چې هرات د اکتوبر په دوهمه نېټه د امير عبدالرحمن د پلويانو

په خانګړې توګه د سردار عبدالقدوس په لاس کې لوېدلی دی چې د شبرغان والي و. ايوب نور اړ شو چې پارس ته وتښتي او په مشهد کې تم شو. ايوب خان هلته هم د امير د واکمنۍ له پاره خطر و. همدغه وخت د ايران حکومت هم په اندېښنه کې شو ځکه چې ايوب خان د مشهد په چاپېر کې د پخوانيو پرار شويو پښتنو او همدارنګه د مشهد ختيځ خوا ته ترکمنو کې د اغېز څښتن شو او د وسلو په ټولولو يې پيل وکړ. د هند حکومت د يوې خوا د دې له پاره چې امير ته دغه خطر بې اغېزې کړي او د بلې خوا امير د تل له پاره تر فشار لاندې ونيسي، په دې فکر شو چې غازي ايوب خان هند ته وبولي. په دې توګه د هند حکومت په مشهد کې د خپل قونسل له لارې د هغه سره خبرې پيل کړې چې په پای کې د پارس د حکومت په موافقه د هند حکومت او غازي ايوب خان پرېکړه وکړه چې هغه به د خپلو ملګرو سره هند ته ځي. په دې ډول د څه د پاسه اتو سوو ملګرو سره د عراق له لارې هند ته مهاجر شو او په ۱۸۸۸ کال کې په لاهور کې استوګن شو.

امير عبدالرحمن د خپل بري وروسته خپلو برياليو جنګياليو ته اجازه ورکړه چې کولی شي د کندهار ښار د څلورېشتو ساعتونو له پاره چور او تالان کړي او بيا يې علمانو ته چې د ده پر ضد يې فتوا صادره کړې وه پام واراوه چې په خرغه شريفه کې يې پنا اېښتې وه. امير په خپل امر دوی له هغه ځايه وايستل. بيا يې مولوي عبدالواسع ته وويل «زه نه، ته لعنتي کاپر يې. ... خپله قفقازي توره بې وايستله، يو ګام د مخه شو او د مولوي په اوږه يې دغسې ټينګ کوزار وکړ چې هغه په ملا کې دوه ځايه شو.» ۲۹۲

«بيا يې امر وکړ چې هغه بل مولوي، عبدالرحيم ورته د مخه کړي. په يوه کوزار سره د هغه سر د هغه د ډنګرې تپې څخه بيل کړ او د توپ په شان يې ايسته وغورځوه.» ۲۹۳

د کاکړ په وينا «امير د چل زبني نه وروسته هغه امير نه و چې د کابل- کندهار په لار کې و. دغه نوي امير د فرانسې د څورلسم لويې پېښې پيل کړې چې ويل يې «زه دولت يم.» امير عبدالرحمن نه يوازې خان واکمن مطاع وګرزاه، له ځان نه يې مسطنطق جوړ کړ، د دعوی وکيل هم شو، قاضي هم شو او د امر اجرا کوونکی هم، چې جلا د هم په هغه کې حسايېرې. په هغو سربېره ځان يې «د خدای سيوری» او د «بني نايب» هم باله. امير عبدالرحمن په دغسې ذهنيت سره په واکمني پيل وکړ. په دې توګه امير عبدالرحمن په خپله د انګرېزانو د نوي حکومت په مرسته ټول افغانستان د ځينو سرحدي سيمو او خيبر پرته بېرته يو موټی کړ.

څورلسم څپرکي

کاکړ او د امير عبدالرحمن واکمني

د امير عبدالرحمن واکمني مې په زياته اندازه د کاکړ د دوو اثارو: «د افغانستان سياسي او ډپلوماتيک تاريخ» او «د امير عبد الرحمن په واکمني کې حکومت او ټولنه» او نورو اثارو له مخې کښلې ده. هغه مهال چې عبدالرحمن امير شو افغانستان په اقتصادي او سياسي لحاظ د انارشۍ او کډ وډۍ په حال کې و. دولتي ماشين شتون نه درلود. د مرکزي حکومت او د ولايتونو تر منځ اړيکې شلېدلې وې. قبایلي سيمې په خپل اختياريه سيمو بدلې شوې وې. ځينې مشرانو او په ځانگړې توگه هغوی چې د انگرېزانو په وړاندې يې جگړه پرمخ بيولې وه خپل ځواک زيات کړی و. برسېره پر دې يوه نوې واکمنه کورنۍ موجوده وه چې د زړې واکمنې کورنۍ ځای ونيسي چې د هغې مخکښ غړي چې د وطنپالنې ستاينه يې کېده او په تخت باندې يې د دوی پر ځای د کيناستو پوره حق درلود او په کاونديو هېوادو کې يې ژوند کاوه. عبدالرحمن خان نه شو کولی چې پر دوی ډډه ولگوي. په دغسې وضعې کې چې د کندهار خلک د عبدالرحمن خان په ضد درېدلې وو په داسې بحراني حالت کې د برتانيې حکومت هغه ته د پيسې او وسلې اړينه مرسته وکړه. د کريگوريان په وينا په افغانستان کې د نوښتگرۍ پروگرام د تمویل گړندوالي د ټولنيزو او اقتصادي ستونزو سره لاس په گربوان و. يو دا چې ديني او قومي مشرانو د نوښتگرۍ سره حساسيت درلود، بل دا چې په خپله افغانستان د نوښتگرۍ د پروگرام د تمویل له پاره مالي سرچينې نه درلودې.

امير عبدالرحمن په داسې حال کې چې هېواد يې د جگړو، بهرني نيواک او خونړيو کړکېچونو له امله بې وسه و په افغانستان کې د سمونونو د پلي کولو له پاره لومړۍ ستره او همغږيزه هڅه پيل کړه. دی په دې باور و چې پاچاهان د هسک څښتن له خوا غوره شوي دي چې د شپڼو غوندې د خپلو رمو غم وخورې. ځکه ده د خپلې واکمنۍ د مشروعيت له پاره د ولس د ارادې پر ځای د پاچاهانو الهي حق ته پناه يووړه. ده همدارنگه د بهرنيو ځواکونو په وړاندې خلکو ته ځان د اسلام اتل او د افغانستان د خاورې د ازادونکي په توگه وروپېژاند.

له دې وروسته برتانوي هند وغوښتل چې د امير په مشرۍ افغانستان پياوړی کړي، پيسې او وسلې يې ورکړې خو دا يې جوته کړه چې د برتانوي د حکومت د ښکاره ونډې اخېستو پرته به د خپل سيال سره دغري وهي.

په دې وخت کې د لارډ ريڼ په اند دا وخت رارسېدلی چې د هغه پوهاوي له مخې چې په ۱۸۸۰ کې د امير او لېپل گريفن تر منځ شوی د دوو حکومتونو تر منځ د هر يوه په پلازمينې کې نماينده گان ځای په ځای شي. ده د امير نه وغوښتل چې يو پلاوی راولېږي، خو امير د پلاوي پرځای يو نماينده وروپلېږه او لارښوونه يې ورته وکړه چې هغه به يوازې خبرې اوري او د هغه خبرو په اړه به راپور راکوي چې اورېدلې وي، ځکه چې «د امير پرته بل څوک د افغانستان ستونزې نه شي حل کولی.» ۲۹۴

د سردار ايوب خان د وتلو نه وروسته امير عبدالرحمن خان هغه څه چې امير ته يې ستونزې جوړولې د افغانستان شمال لوېديځ ته د روسيې پرمختگ و. د ۱۸۸۱ کال د اکتوبر په لومړيو کې امير لارډ ريڼ ته وويل چې د برتانوي له پاره هغه وخت رارسېدلی چې د روسيې د ساتنې لاندې سيمو سره ناکاکلې پولې تثبیت کړي. خو برتانوي د امير د خطر زنگ ونه مانه. د امير په پخوانۍ ناهيلۍ چې کوښښ يې وکړ چې د برتانوي سره تړون ولري دا هم ورزياته شوه.

په پيل کې، په کابل کې د برتانوي نماينده کرنېل محمد افضل څرگنده کړه چې امير به د برتانوي نه ناهيلی شي هغه به د روسانو شرايط ومي. ۲۹۵

د ۱۸۸۳ کال په جولایي کې لارډ ريڼ امير ته هر کال ۱۲۰۰۰۰۰ روپۍ ډالی وټاکله او وويل چې «په هېواد باندې زموږ د يرغل په پايله کې د افغانستان کورنۍ بې نظمي دومره لويه ده چې موږ احساس کړه چې دا زموږ دنده ده چې هغه [امير] سره د يوه منظم حکومت په جوړولو کې مرسته وکړو.» ۲۹۶

همدارنگه د هند برتانوي حکومت کابل ته په بحراني وخت کې وسله ډالی کړه. د ريڼ «د منظم دولت جوړول» مانا د غښتلي پوځ تنظيمول و، ځکه چې د دې موخې له پاره کورنۍ سرچينو بسنه نه کوله. که څه هم دې د برتانوي د مړيې په څېر د امير عام تصوير ټپي کاوه. د دې په وړاندې د امير اقدام دا و چې هغه وويل چې دا ډالی د هند د امنيت او ساتلو په خاطر ورکړ شوې ده، زه د دوی د هېواد سپر یمه او د روسيې د بريد نه يې ساتم. که چېرې زما حکومت باثباته پاتې شي، زه په دې لاره ځم، د انگرېزانو نه ټوپک او پيسې اخلم او خپل بنسټ پرې ټينگوم، او زه به دا وړتيا پيدا کړم چې د روسانو او انگرېزانو سره مبارزه وکړم. د امير د مبارزې نه موخه دا وه چې دوی به پرې نږدې چې زما د هېواد په

چلولو کې نفوذ وکړي. خو په دې برخه کې دومره ليرې لارو چې د مودرنې تکنالوژۍ وړانديزونه چې وايي سره ورته کړي و، چې برتانيې ته اجازه ورکړي چې يو د تلکراف مزی وغزوي چې کابل او پېښور سره وتړي يا د اورگاډي پټلۍ چې کندهار د هرات سره ونښلوي، رد کړل. هغه ان کابل ته نږدې د مسو د کان کار چې يوه انگليس کارپوه پرمخ بيوه ودراره. هغه دا ټول د دې له پاره وکړل چې برتانويان د افغانستان په کورنيو چارو کې د لاسوهني نه بې برخې کړي. د دې مانا دا ده چې امير عبدالرحمن تجریدتوب او د منځنيو پېړيو مطلقیت ته په نوي توب او مودرنيزم باندې ترجیح ورکړه.

د ۱۸۸۳ وروسته د دالي ټاکل، په ۱۸۸۵ کې په هند کې د دولت د عزتمن مېلمه په توګه د هغه هرکلی او په همدغه کال کې د روسانو له خوا د پنجدي نیول د افغان- انگليس اړيکې بڼې کړې. د اړيکو دغه ښه توب د امير په يوه بيان کې چې په راولپنډۍ کې په مېلمستيا کې وکړ، غبرګون وموند. هغه وويل چې دی «... د خپل پوځ او خپلو خلکو سره چمتو دی هر ډول خدمت ترسره کړي، که چېرې د برتانيې حکومت اعلان وکړي چې دوی زما نه مرسته غواړي، په داسې حال کې به افغانستان په يوه ټينګه شېبه خپل يووالي وساتي او د برتانيې د حکومت سره به اوږه په اوږه ودرېږي.» ۲۹۷ امير زیاته کړه «که په هند کې د تاسو امپراتوری ته ستونزې پيدا شي ... د افغانستان خلک به تاسو ته دوستانه مرسته درکړي چې د هند پولې پرې وساتي.» ۲۹۸ خو دا د عسل میاشت اوږده نه شوه.

د ۱۸۸۰ کلونو په ورستيو کې ځينو پېښو د افغان- انگليس اړيکې ټرينګلې کړې. د هند برتانوي حکومت کابل ته بلنه ورنه کړه چې د انگليس- روسې په کميسيون کې برخه واخلي چې د افغانستان د شمال لوېديځ د پولو د په نښه کولو دپاره جوړ شوی و. په داسې حال کې چې دغې موضوع د افغانستان د خاورې تمامیت باندې اغېز درلود. امير په دې خپه شو او د برتانيې پلاوي ته يې اجازه ورنه کړه چې د افغانستان په خاوره کې سفر وکړي. خو د دې له پاره چې دا موضوع لږ غوندې روښانه شي درې تاريخي لاسوندونه وړاندې کوم:

۱- د ۱۸۸۴ کال د اپرېل په ۲۴ مه د برتانيې سفير ادوارد تورنټن په خپل ليک کې د روسې د باندینيو چارو وزير کيرس ته وړانديز شوی چې د افغانستان د شمال- لوېديځ د سرحدي کرښې له پاره «داسې يو ګډ کميسيون جوړ شي، چې په هغه کې افغان استازی شامل وي.» ۲۹۹

۲- د ۱۸۸۴ کال د اګست په ۹ مه نېټه د برتانيې سفير ادوارد تورنټن په خپل ليک کې د روسې د باندینيو چارو وزير کيرس ته وايي چې «برتانوي حکومت خپل ځان ته دا حق نه ورکوي، د هغې خاورې په اړه، چې افغان امير يې خپله بولي، د پردې کېدو په تړاو د افغان

د امير له رضاييت نه سپارښتونه ورکړي.» ۳۰۰

۳- د ۱۸۸۴ کال د اګست په ۲۶ مه نېټه د روسيې د باندنيو چارو وزير گيرس د برتانيې سفير ته په سپارل شوي يادښت کې راغلي چې «د روسيې د باندنيو چارو وزارت اړينه کني، ښاغلي سفير ته دا ورياده کړي، چې دواړه حکومتونه په دې برخه کې داسې جوړ راغلي، چې افغان استازي ته به اجازه نه ورکول کيږي چې د پولې ټاکنې په کميسيون کې شامل شي. يوازې دواړه حکومتونه او د دوی کميساران به دا حق لري، چې د پولې تېرولو او ټاکنې د بيلو بيلو مسلو په تړاو خپل نظريات څرګند کړي... د روسيې امپراتوري حکومت [دا] اړينه نه بولي، چې د افغان چارواکو څرګندونې دې ومنل شي او هرو مرو دې ارزښت ورکړ شي.» ۳۰۱

امير په دې هم خواشيني و چې سردار محمدايوب خان د خپلو ملګرو سره په هند کې پر ده باندې د فشار له پاره ساتل کيږي. خو هغه څه چې په واقعيت کې يې د افغان-انګليس اړيکې ترينګې کړې وې د برتانيې د نولسمې پېړۍ د پرمختګ پاليسي وه، چې د ګومل درې په خلاصولو او چمن ته د اورګاډي د پټلۍ غزول وو.

د دې په وړاندې د امير غبرګون دا و چې هڅه يې وکړه د برتانوي هند پرته د برتانيې سره سياسي اړيکې ټينګې کړي. خو د انګلستان د حکومت سياست دا نه و چې د افغانستان سره سياسي اړيکې ټينګې کړي او په دې د امير هڅې ناکامه شوې. د دې وروسته امير کوشنېن وکړو چې په نورو وسايلو افغانستان خپلواک کړي.

امير په پوره توګه پوه شو چې برتانيه کولی شي ده ته ستونزې جوړې کړي. هغوی امير شيرعلي خان او امير محمد يعقوب خان ليرې کړل. هغوی کولی شي سردار محمد يعقوب خان، سردار محمد ايوب خان، نور سرداران او د غلزيو مشران چې په هند کې استوګن دي او د هغوی ملګري چې په افغانستان کې دي ورڅخه کار واخلي او د پوځ د کارولو پرته يې ليرې کړي. په بل لوري د روسيې د يرغل وېره ورسره وه. له دې امله يې ځان د انګرېزانو سره د ټکر نه ساته. د واييسرا لارډ کرزون په وينا چې د بهرنيو اړيکو د پولې په موضوع کې امير تل د برتانوي د امپريال پاليسي په چوکاټ کې کره ترسره کول ۳۰۲ امير د خپلې واکمنۍ په پای کې خپل دريغ غښتلی کړ او د يوه خپلواک واکمن په توګه يې اکت کولو.

د مخه مو يادونه وکړه چې د رابرتس پوځونه تر هغې وروسته چې سردار محمدايوب خان ته يې ماته ورکړه د کوېټې له لارې بېرته هندوستان ته ستانه شول. په داسې حال کې چې د انګليسانو بل پوځ چې په کابل کې مېشت و او شمېر يې ۲۰۰۰۰ ته رسېد د سټيورات په مشرۍ لا د مخه د اوشانو غاښي له لوري هندوستان ته بېرته ستون شوی و. په دې

ترتیب په کابل کې د امير عبدالرحمن په واکمن کېدو سره د افغان- انگلیس دوهمه جگړه پای ته ورسېده.

په ۱۸۸۱ کې کال کې انگلیسانو خپل هغه پوځیان هم د کندهار نه وایستل چې هلته پراته وو او کندهار یې امير ته وسپاره. سردار محمدايوب خان همغه کال د جون په میاشت کې کندهار بېرته ونیو خو بیا یې د امير عبدالرحمن د پوځ له خوا ماتې وخوړه او فارس ته یې پناه یوره. د کندهار وروسته هرات هم د عبدالرحمن لاسته ورغی. په پای کې د لیټن نخښه چې افغانستان توتې کړې ناکامه شوه او افغانستان متحد پاتې شو خو ځینې سیمې یې چې د گندمک په ترون کې یې یادونه شوې ده د افغانستان نه بیلې شوې او افغانستان بهرنی خپلواکي هم له لاسه ورکړه. په پای کې د افغانستان بهرنی سیاست د انگرېزانو لاسته ورغی او همدارنگه تر ډېرې اندازې افغانان د عصري مدنیت، عصري ساینس، عصري پوهنې او عصري تخنیک نه لیرې پاتې شول.

امير عبدالرحمن او د ختیځ افغانستان ارامښت

امير عبدالرحمن چې د خپلو خلکو او د هغوی د مشرانو په سیاست کې د ښې تجربې خاوند و؛ د ځینو لږکیو توکمي کروپونو د پېژندلو وړتیا یې درلوده چې د بهرني تسلط غوښتونکي وو؛ په گاونډیو هېوادو کې د ده د کورنیو سیالانو د شتون اندېښنې او د روسې او برتانې له خوا هېواد ته خطر له امله ده یو زیات شمېر تدبیرونه تر لاس لاندې ونيول چې یو پیاوړی مرکزي دولت جوړ کړي تر څو د هېواد او د خپلې کورنۍ واکمني وساتي. د دې موخې د پلي کولو له پاره د غښتلي اردو او د پراخو مالیاتو د وضع کولو له لارې د مالي سرچینو منځ ته راوړل و. دغه تدبیرونو پلي کولو ده ته دا وړتیا ورکړه چې د لومړي افغان واکمن په توګه هېواد په نېغ ډول د خپلو افسرانو له لارې اداره کړي.

امير عبدالرحمن خان په خپل هېواد کې څلور غټ ولایتونه (ترکستان، هرات، کندهار او کابل) رامنځ ته کړل او په هر ولایت کې یې والي وټاکه. له امير عبدالرحمن نه وړاندې به د دولت ټولې چارې لس کاتبانو چلولې. هغه د دولت د کارونو د اجرا له پاره د ثبت کتابونه کارول، د سوداګرۍ او خزانه هیئتونه او د عدالت، ارتباطاتو، زده کړو او طب ادارې او موسسې یې په کار واچولې. امير عبدالرحمن اسلام ته په درنه سترګه کتل، خو د ملایانو سره جوړ نه و. امير عبدالرحمن د «خلوت» په نوم یو سازمان رامنځ ته کړ چې کابینې ته ورته و. خلوت به د هغه اراده پلي کوله او یوازې هغه مهال به یې هغه ته مشوره ورکوله چې په خپله به امير ورنه غوښتلي وه. په هر ولایت کې د کورنۍ او میراث د

کړکېچونو د حل له پاره ستره محکمه شته وه. په هره ستره محکمه کې به يو قاضي او خو مفتيانو کار کاوه. پرېکړې به د اسلامي حقوقو له مخې کېدلې، خو د امير عبدالرحمن خان موافقه په کې شرط وه. هر قانون بايد د اسلامي حقوقو او ځايي دودونو سره اړخ ولگوي. مشهور لاروونکي به وسپنيزې پنجرې ته اچول کېدل. پنجرې به د سرک په غاړه په جگو ستنو پورې خورندېدلې او په دې ډول به لاروونکو د لوړې او تندی له امله ژوند له لاسه ورکاوه او خلکو به ورنه عبرت اخېسته. ۳۰۳

خو د افغانستان خلک چې زيات يې کوچني مخکه لرونکي يا بې مخکې بزگران وو چې په کرهڼيز اقتصاد کې يې ژوند کولو، د مالياتو د ټولولو او د امير د مطلقه واک چلولو د شپوې پر ضد ودرېدل. امير د خپل پروگرام د پلي کولو په يون کې د څلوربڼستو نه زياتو پاڅونونو سره مخامخ شو چې د ځينو مهمو نه به په لنډه توگه يادونه وشي.

مومند

د کاکړ د څېړنې له مخې مومند د خپلې استوگنې د ځای په بنسټ په لرو او برو مومندو وېشل کېږي چې د ختيځ افغانستان يو د تر ټولو مهمو قومونو نه شمېرل کېږي. د برو مومندو اوسېدونکي په عمومي توگه د کابل او سوات د رودونو تر منځ وادي او غونډيو کې پراته دي چې مخکه يې لږ حاصل ورکوي او لږ مومند د پېښور د هوارې جلکې په شمال لوېديځ کونج کې ميشته دي چې په نسبي توگه حاصلخېزه ده. په خپله د پېښور ښار د مومندو په وطن کې شامل دي چې د مومندو د خلیلو او خوېزو څانگې خلک په کې اوسي.

کاکړ بيا د مومندو د شجرې په اړه پوره مالومات وړاندې کوي او ورپسې وايي مومند هم د درانيانو او يوسفزيو په شان د سربڼ د نسب نه دي. د دوی لومړی ټاټوبی د کندهار په ختيځ کې مرغه وه چې د هغه ځای نه دوی په شپاړلسمه پېړۍ کې لومړی غزني ته مهاجر شول او وروسته لکه چې د مخه مو يادونه وکړه په اوسنيو سيمو کې ميشته شول. د لرو مومندو په پرتله بر مومند جنگيالي دي. په برو مومندو کې د خانانو ځواک ډېر غښتلی دی. د دوی په منځ کې د لالپورې خان ډېر مهم دی. همدارنگه په نورو خانانو کې د بنديالي او گوشتې خانان شمېرل کېږي. يوازينی خان چې د امير عبدالرحمن د واکمنۍ پر مهال يې خپل موقعيت ساتلی و د لالپورې خان محمداکبر خان و. محمداکبر خان د مورچه خان د نسل نه دی چې د مورچه خېلو موسس دی. مورچه خان د شپاړسمې پېړۍ په دوهمه نيمايي کې د لالپورې د ځانۍ بنسټ ايښی دی. د نوموړي په ځانۍ کې د سيمې يوه روحاني

مورزاد والي بابا مرسته وکړه او برسېره پردې ده د هغه خدمت په مقابل کې چې د مغولو امپراتور جلال الدين ته يې کړی و د ډاکې د کلا قوماندان وټاکل شو چې دا قومانداني د دوی په کورنۍ کې په نیکات پاتې شوه. د هغه مهال راهيسې په ټولو مومندو کې د مورچه خېلو واکمن رول وپېژندل شو. د مورچه خان تر ټولو مهم ځای ناستی سعادت خان و چې څلورېنست کاله يې د خان په حيث کار وکړ او خپله لور يې قمر جانه سردار شيرعلي خان ته د مخه تر دې چې امير شي واده کړه. سردار محمد يعقوب خان او سردار محمدايوب خان د همدې قمر جانې زامن وو.

بر مومند بې وزلې خلک وو چې د کرنې وړ مخکې يې پرته د کابل د سيند په اوږدو کې، لږ ده او د دوی د ځانۍ د ودې لامل د دوی قومي جوړښت نه بلکې د دوی د وطن ساتراژيک موقعيت دی. د لالپورې خان د خيبر د ساتونکي په حيث د جلال اباد او پېښور د سړک ماليه په ډاکه کې ټولوله او هم يې د کابل په درناپه د لړکو کشتيو ماليه راټولوله. کابل هم د لالپورې خان ته د خيبر د ساتنې او په بېرني حالت کې د مليشې د چمتو کولو د پاره هم پيسې ورکولې. دا سبب و چې د مومندو خانانو تر منځ تخريبوونکې سيالي رينډې ځغلولې او د غچ دود پياوړی دی. ...

د ۱۸۷۹ کال په دسمبر کې بر مومند وروسته له هغې د اعتراض غږ پورته کړ چې انگرېزانو امير محمد يعقوب خان هند ته پرار کړ. لږ وروسته د پاڅون مشرانو تر منځ چاود پيدا شو او محمد اکبرخان د انگرېزانو له خوا د برو مومندو د ادارې مشري (د انگرېزانو حکومت ته د وفادارۍ او ښه خدمت په شرط) ومنله. د دې په بدل کې اکبر خان برتانوي قواوو ته خواره چمتو کول او د دوی پر ضد د غزا په وړاندې درېدل و. د افغانستان نه د برتانوي پوځ د وتلو وروسته امير گام په گام اکبر خان د خپلو امتيازاتو نه بې برخې کاوه چې د سړک اداره يې ترې واخېسته او په ۱۸۸۳ کال کې د لالپورې باج ضبط کړل. پخوا د اکبر خان کلفي عايد نږدې سل زره روپۍ کېده. وروسته امير دولت ته د خدمت او په بېرني حالت کې د مليشې د جوړولو په بدل کې هغه ته پيسې ورکولې.

د کنړ پاچا

کاکړ وايي چې د پېړيو راهيسې د کنړ تنکه او اوږده دره چې پشت يې مهم کلی و د نامتو پښتانه شوي سيدانو کورنۍ له خوا چې د عربي نسل نه ده، اداره کېده. سيد علي ترميزي چې په پير بابا مشهور دی، چا چې ظهر الدين بابر د ترميز نه بدرکه کاوه، د دې کورنۍ بنسټ ايښودونکی دی. د هغه قبر په بونير کې د پاوچا په کلي کې دی چې تر اوسه يې

د رنواوی کيږي. امپراتور همایون د بابر زوی او خای ناستي ده ته کتر وبخښنه چې د ماليې نه ازاد و. د دوی نسل په خايي خلکو کې د کتر پاچایان یا د کونړ سیدان په نومونو مشهور دي. دوی د خلکو نه د مخکې مالیه د محصولاتو دریمه برخه اخېستله. د مالکولم یاپ په وینا د اتلسې پېړۍ په ورسټیو او د نولسې پېړۍ په لومړیو کې د دوی عاید د شپټو او اتیا زرو روپۍ په منځ کې خوځېده. د سید د کورنۍ د غړو تر منځ بې اتفاقي د امیر دوست محمد خان سره مرسته وکړه چې د کتر یوه برخه په کابل پورې وتړي. امیر د خپلې دوهمې واکمنۍ په یون کې کتر د دوو ورونو سید بهاو الدین او محمد هاشم تر منځ ووېشه خو د کتر لویه برخه یې په خپل سلطنت کې شامله کړه. امیر شیرعلي خان دغه ترتیب همغسې وساته خو امیر محمدافضل خان سید بهاو الدین بندي کړ.

د انگرېزانو له خوا د افغانستان دوهم ځلي نیولو په اوږدو کې د بهاو الدین زوی سید محمود پاچا چې د پلار خای ناستی شو ټول کتر تر تسلط لاندې راووست. هغه سمدلاسه د انگرېزانو خوا ونیوله که څه هم د هغه پلار د امیر شیرعلي خان په دوهمه واکمني کې کتر ونیو او په خپله یې د وزیر محمد اکبرخان د خور سره واده کړی و او د امیر شیرعلي خان په مشورتي شورا کې د غړي په توګه یې په کابل کې دنده ترسره کوله. ده باور درلود چې د انگرېزانو په مرسته به کتر په خپل لاس کې وساتي. د کابل د هر واکمن نه خپلواک او یوازې انگرېزانو ته اطاعت د نظر له مخې هغه د جګړې په وخت کې د غازیانو پر ضد د انگرېزانو خوا ونیوله. په ۱۸۸۰ کال کې سید محمود پاچا د برتانې د سیاسي استازي سر لېپل کریفن ته په جلال اباد کې، چې کابل ته روان و په یوه لیدنه کې وړاندیز وکړ چې افغانستان دې په ورو ریاستو ووېشل شي چې یو د بل نه خپلواک وي خو برېتانيا ته به تابع وي. ده دغه مشوره هم ورکړه چې «... تر هغو چې محمد جان خان او پلویان یې پوره مات شوي نه وي، او د برتانې حکومت پوره لاس بری شوی نه وي، له هغه سره دې اخيري فیصله ونه شي.» ۳۰۴ د ده خبرو په کریفن دومره اغېز وکړ چې د برتانوي حکومت په استازیتوب یې د سید نیکاتي ملکیت ضمانت ورکړ چې «دی دې ډاډه وي چې حکومت به خپل لوزونه، او ټولې وعدې چې ورسره کړې، هر څه چې پېښ شي، تر سره کړي او له دې امله به هېڅ تاوان ورته ونه رسېږي، چې ده د برتانې خوا نیولې ده.» ۳۰۵

د افغانستان نه د انگرېزانو د پوځ د وتلو وروسته امیر عبدالرحمن د سید د کتر د سیند د دواړو غاړو د ځمکو ملکیت تایید کړ خو د مالې د ورکولو غوښتنه یې ترې وکړه. خو زر د کتر پاچا اړیکې د امیر سره خرابې شوې، لکه چې د هغه زوی، سید احمد پاچا، هغه مهال امیر یوازې پرېښود چې کندهار ته د ایوب خان د خپلو دپاره په لاره و. سید محمود

پاچا لکه د خپل زوی د ژمنې د ماتونې، د شیرعلي خان د کورنۍ سره د هغه خپله ملګرتیا د وېرې له امله کله چې کابل ته راوغوښتل شو د راتګ نه ډډه وکړه تر څو پورې یې د برتانوي حکومت نه د امن ډاډ نوي تر لاسه کړي. ده د هند د حکومت نه وغوښتل، چې امیر ته د ده سپارښتنه وکړي. په دې اړه د سید محمود پاچا او انګرېزانو تر منځ څو لیکونه تبادله شول او په یوه لیک کې یې کریفن ته وویل: «کوم هغه خدمتونه مې چې کړي، په دغه مقصد نه وو چې په بله نړۍ کې راته کټه ورسوي» ده دا هم ورته ولیکل چې «تر اوسه مې چې څه په وسه کې وو، حکومت ته مې خدمت وکړ، او په خلکو کې مې بد نوم وګاټه، او تر هغو به کابل ته لار نه شم چې تر څو مې د برتانوي حکومت نه ډاډینه تر لاسه کړې نه وي.» ۳۰۶

د هند د برتانوي حکومت او امیر تر منځ پر دې موضوع یو شمېر لیکونه تبادله شول. د برتانوي حکومت د باندنیو چارو وزیر. لایل، د ۱۸۸۲ کال د جنوري په ۱۲ مه امیر ته ولیکل چې وایسرای «... ډاډه دی چې د عدالت په هغه احساس چې تاسې جلالتماب په کې نوم ایستلی دی، ټکنی به مو کړي چې له سید احمد [سید محمود] نه د هغه د زوی د کناهونو قصور واخلي.» ۳۰۷ امیر د برتانوي هند د بهرنیو چارو د وزیر د لیک په ځواب کې چې امیر ته یې د سید محمود پاچا سپارښت کړی و، ولیکل: «زه به سید محمود پاچا د خپل زوی په ګناه جزایي نه کړم، خو که د هغه د دندې او د هغه کره وړه پرعکس ثابت کړي زه به بله کرنلاره ونه لرم بلکې هغه به د باندې وشرم.» ۳۰۸

خو څنګه چې انګرېزانو د امیر سره ژمنه کړې وه چې د هغه سره به د ده د واکمنۍ په ټینګوالي کې مرسته کوي او د هغه په کورنۍ چارو کې به لاس وهنه نه کوي د هند وایسرا د سید محمود پاچا برخه لیک د امیر لورپېښې ته پرېښود.

د ۱۸۸۲ کال د نومبر په میاشت کې هغه مهال چې د حکومت یو پوځي ټولګي د هغه پر ضد پرمختګ وکړ، پاچا چې انګرېزي متحدینو یوازې پرې ایښی و او هم د ځایي خلکو د مخالفت سره د هغه د انګرېزانو د پلوی له کبله ور سره مخامخ و لومړي میټي ته او وروسته په ۱۸۸۶ کال کې د هند حسن ابدل ته وتښتېد. کابل زر په کنړ نیغ کنټرول ټینګ کړ. پاچا په هند کې خپل ژوند د انګرېزانو په تنخوا تېراوه او په ۱۹۰۱ کال کې د امیر د مړینې وروسته کنړ ته راستون شو.

شینواري

د کاکړ په وینا امیر عبدالرحمن د نورو قومونو په پرتله د شینوارو سره نرم چلند وکړو دا ځکه چې دوی د خیبر درې ته سړک خلاص پرې ایښی و. امیر دوی ته اجازه ورکړې

وه چې پېښور ته د سرک محصول واخلي او برسېره پردې يې دوی ته پيسې هم ورکولې. د دوی دوې ځانگې: سنگو خېل او سپياى يې د ماليې د ورکولو نه معاف کړي وې. خو شينوارو د مومندو په شان نفوذ لرونکى يو خان هم نه درلود.

امير په ۱۸۸۲ کې خپله پاليسي وروسته له هغې بدله کړه چې په ډاکه کې يې پوځي چاوانۍ جوړه کړه. شينوارو امير ته د مشرانو يوه جرگه ولېرله چې د خپلو حقوقو د بېرته لاسته راوړلو دپاره ورسره خبرې وکړي امير د جرگې غړي بنديان او ځينې يې زندى کړل. په دغه وخت کې امير په ټول ختيځ ولايت کې د شينوارو په گډون په مځکه د حاصل دريې برخې د ماليې سيستم اعلان کړ چې دولت ته به يې ورکوي. شينوارو د دولت د دې نويو تدبيرونو سره مخالفت وکړ خو د ۱۸۸۳ کال په جگړه کې چې د دولت د پوځ سره چې د جنرال غلام حيدر خان اورکزي يې مشري کوله ماتې وخوړه.

دې جگړې د شينوارو چلند سخت کړ کله چې د دوی يو شمېر مشران په جگړې کې ووژل شول او ځوانانو په مشرتابه کې د هغوى ځاى ونيو. نويو مشرانو دا امتياز چې د دريې برخې پر ځاى لسمه برخه ماليه ورکړي رد کړ چې په بدل کې به يې وسلې کيږي او برتمه به ورکوي. د شينوارو او دولت تر منځ ډېرې نښتې وشوې چې په زياترو کې شينوارو ماتې وکړه. دوی بيا سپين غره ته وختل او پر دې يې ټينگار کاوه چې د دوی نه دې ماليه نه اخېستل کيږي. د دولت بريالي لښکر د دوی کورونه او فصلونه وسوځول.

په ۱۸۸۵ کال کې نايب سالار غلام حيدر خان څرخي د ختيځ ولايت ملکي او پوځي اداره په لاس کې واخېسته. د هغه راتک د سولې هيله پيدا کړه او ډېرې جرگې يې شينوارو ته ولېرلې. جرگې ناکامه شوې خو د شينوارو تر منځ يې بې اتفاقي منځ ته راوړه. دا مهال د هېواد په ډېرو برخو کې پاڅونونه ځپل شوي وو او دولت په شينوارو فشار زيات کړو. د ۱۸۸۸ کال په پای کې دولت د ننگرهار د نورو سيمو او تگاوه نه مليشه راتوله کړه او د دولتي قواوو سره يو ځاى په شينوارو بريد وکړ او سنگو خېل يې مات کړل. په پای کې شينوارو اړ شول چې د يوه جريب مځکې په سر يوه روپۍ ماليه ورکړي او بېرته ميشته شول. په دې ترتيب د دولت واکمني شينوارو ته لس کاله وخت ونيو. امير هڅه کوله چې خپله واکمني باجوړ، دير او نورو سيمو ته وغزوي خو په دې وخت کې د برتانوي هند حکومت د هند د ساتنې دپاره نوې ستراتيژي چمتو کوي چې دغه سيمې د خپل نفوذ لاندې وساتي او د کابل وړاندې تک په دې سيمو کې ودروي. د ۱۸۸۰ لسيزې په پای کې انگرېزانو بيا فارورد پاليسي تر لاس لاندې ونيوه چې پايله يې په ۱۸۹۳ کال کې د ډېورنډ هوکړه ليک شو.

اسمار

کاکړ وايي چې د شينووارو د ارامښت وروسته افغان دولتي پوځ د غلام حيدر خان څرخي په مشرۍ د کڼر درې ته ننوت چې د ختيځ په لوري نوره سيمه ارامه کړي. د کڼر د رود د بڼي اړخ ټولې درې چې ساپي او نور توکميز گروپونه په کې اوسېدل، لا دې مخه ارام شوي وې او يوه ټاکلې اندازه ماليه يې هم دولت ته ورکوله. دا لومړی کام و چې رسې واکمني دير، سوات او باجور ته وغزول شي. امير دعوی وکړه چې اسمار د کڼر برخه ده. که څه هم اسمار په جغرافيايي او دموکرافي له کبله په باجور پورې اړه درلوده خو باجور په خپله په جلال اباد پورې تړلی و. اسمار په ختيځو سيمو کې کليدي موقعيت درلود او د دغه اهميت له امله د خيبر د درې سره پرتله کېدای شي چې د هند دروازه گڼل کېږي. دوه زره درې سوه کاله د مخه ستر مقدوني سکندر هند ته د تگ دپاره کڼر وټاکه. هغه خلک چې دلته دی په خپل پوځي کمپاين کې ورسره مخامخ شو د اسپاسيانو او اسواکا په نومونو يادېدل، چې د هغو نه د يوسفزو او افغان نومونه راوتلي دي. په ۱۸۹۲ کال کې امير عبدالرحمن په اسمار کې دولتي قواوې د سپاسالار غلام حيدر خان څرخي په مشرۍ ځای په ځای کړې چې د کڼر ختيځ ته د باجور او د هغه هغې خوا سيمو ته د کابل د واک د غزولو نښه وه.

باجور، دير او سوات

د باجور، دير او سوات پراخې سيمې خپل چاري رياستونه يا خانۍ وې چې په باغستان باندې مشهور وو، چې د کڼر د درې په ختيځ کې د کڼر نه د ډبرينو غرونو په ذريعه بيلېږي. د يوسفزيو پښتنو بيلې بيلې ځانگې او د مندير قوم او د دوی نور گاونډيان د دغو درو په رياستونو کې اوسېږي. د باجور سيمه چې په نسبي توگه حاصلخېزه ده د پنځو درو: چارمنگ، بابوقارا، سور کمر، رود او ماموند نه جوړه ده. ناواکې د خانۍ مرکز د سور کمر په دره کې پروت دی. د باجور خلک په اساسي توگه د يوسفزيو ترکاني دي، خو مومند، سپای، اتمانخېل او نور هم هلته اوسېږي. يو خان چې په رياست واک چلوي يو څه وسله واله قوه ساتي او د ماليې لسمه برخه ټولوي. خو د هغه واک د يوې جرگې په ذريعه محدود وي.

د امير عبدالرحمن د واکمنۍ په وخت کې د جنډول عمرا خان تر ټولو ځواکمن خان و. جنډول، چې د باجور او پنجکورا د دريابونو تر منځ پروت دی، ډېر خانان درلودل چې په

مسته خپل مشهور دي. په پای کې د دوی نه عمرا خان د امان خان ترکانې زوی بريالی راووتلو او په ۱۸۹۰ کې د يوې لسيزې په اوږده مبارزه کې يې ځان د جنډول خان کړو. دی په ۱۸۹۰ کال کې د هغه بري نه وروسته ډېر ځواکمن شو چې دیر يې ونيو او محمد شريف خان يې وشړلو او سوات ته مهاجر شو. د دې وروسته يې د چترال د رياست واکمن ته گواښ وکړ. د ۱۸۹۱ کال په منځ کې نواکي او په لږه اندازه سوات تهديد کړ.

په چټکۍ سره د عمراخان د ځواک لوړوالي ډېر خانان د ده پر ضد کړل. د باجوړ خان صفدر خان د دیر د شړل شوي خان محمد شريف خان سره اتحاد وکړ. د سوات خان ميا گل (عبدالودود) هم د عمرا خان پر ضد خلک لمسول. د هغه ملاتړ ځکه مهم و چې دی د عبدالغفور خان زوی و چې د سوات د اخوند په نوم مشهور و. همدارنگه د مومندو خانانو د عمرا خان د مخالفو خانانو نه ملاتړ کاوه.

امير هم د صفدر خان ملاتړی و او هغه ته يې ډېرې پيسې ورکړې او د اړتيا په صورت کې يې د پوځي مرستې اراده هم څرگنده کړه. په خپله په اسمار کې د افغان د پوځ تمرکز د نایب سالار غلام حيدر خان څرخي چې خپله يوسفزای پښتون و د ځواک انډول د صفدر خان په گټه بدل کړ. د عمرا خان ماتې او د امير د واکمنۍ غزېدل نږدې مالومېدل. په دې وخت کې د هند حکومت سياسالار او هم عمرا خان ته خبرداری ورکړ چې يو د بل پر ضد حرکت ونه کړي. په ځانگړې توگه يې غلام حيدر خان څرخي ته خبرداری ورکړ چې د دوی پرمختگ به د انگرېزانو سره د دښمنۍ په توگه وکتل شي.

امير سياسالار د پرمختگ نه منع کړ او عمرا خان د انگرېزانو په فشار افغانستان ته وتښتېد. پراري شريف خان بېرته د دیر خان شو او د نواب لقب ورکړل شو. دا خبره په ۱۸۹۷ کې وشوه چې انگرېزانو د يوه تړون له مخې نواب ته پيسې او د اړتيا په صورت کې وسله ورکولو ژمنه وکړه او نواب به د دې په بدل کې چترال ته سپرک خلاص وساتي. د امير هڅې چې کوزه کرمه، افریدی، وزيرستان او نورو ته واک وغزوي د انگرېزانو له خوا ناکامه شوې.

د غلجيو ستر پاڅون او د هغه ځپل

کاکړ وايي چې په ۱۸۸۶ کال کې د غلجيانو سره د امير اتحاد په اساسي توگه هغه وخت ولړزېد کله چې دوی د امير په ضد پاڅون وکړ. دا پاڅون ځکه ډېر جدي و چې غلجيان د درانيو نه وروسته د پښتنو تر ټولو ستر قوم دی چې د هوتکو، توخي، اندرو، تره کي، سلېمان خېلو، ناصرو او خروټو د قبيلو نه جوړ دی. کاکړ د غلجيو او درانيو د

سيالی په اړه وايي چې غلجیان خانونه د درانيو پيران بولي ځکه چې د دوی مشر ميرويس خان هوتک په ۱۷۰۹ کال کې کندهار لومړی د پارس د صفويانو د سلطې نه خپلواک کړ او د هغه زوی شاه محمود هوتک او وراره شاه اشرف هوتک په پارس واکمني وچلوله. وروسته درانيانو په ۱۷۴۷ کې افغانستان د ستر احمدشاه په مشرۍ خپلواک او بيا په امپراتوري بدل کړ. د امير عبدالرحمن د واکمنۍ په وخت کې هم د دوی تر منځ اړيکې زياتره د سيالی او دېمنۍ او په لږه اندازه د همکاري او ملگرتيا بڼه درلوده.

د مخه مو يادونه وکړه چې امير د غلجيو سره يو اتحاد جوړ کړ کله چې هغه د خپل سيال سردار محمدايوب خان سره په مقابله کې و. خو کله چې يې ايوب خان د ۱۸۸۱ کال په پای کې د وطن نه وايستلو د امير اړيکې د غلجيانو سره په زياته اندازه تر فشار لاندې راغلې. لومړی حکومت د اندرو مشران ونيول چې د ځنډېدلو پورونو د ماليې د ورکولو نه يې ډډه وکړه. د دې وروسته هغه تره کي له دې کبله وځپل چې د سردار محمدايوب خان ملاتړ يې کړی وو او دا يې هم ورڅخه غوښتل چې د ځنډېدلو پورونو مالیه تاديه کړي. د دې برسېره يې د ميرويس خان د ذوات نه ميرافضل خان هوتک په دې تور بندي کړ چې گویا هغه د امير شيرعلي خان د واکمنۍ پر مهال د تخت نيولو هيله درلوده. خو د هغه د بندي کېدو لامل دا و چې نوموړي د امير شيرعلي خان د کورنۍ نه ملاتړ کړی و. د ميرافضل خان هوتک بندي کولو ټول قوم ولسولو.

امير پردې هم قوم خپه کړو چې د ملا مشک عالم غوښتنه يې رد کړه چې امير دې غازي محمد جان خان وردک او عصمت الله خان جبار خېل د بند نه ايله کړي. خو امير دوی دواړه په دې تور بندي کړي وو چې لومړي دی تروراوه او دوهم په دې تور چې سردار محمدايوب خان ته يې ليکونه استولي وو. خو اساسي پرابلم دا و چې د امير او قومي مشرانو تر منځ باور نه و. دا ځکه چې د انگرېزانو سره د مقاومت په يون کې د غلجيو مشران ډېر غښتلي شوي وو چې امير ورته ډارېده. هغه همدارنگه د جنرال محمد جان خان وردک نه هم وپېرېده چې هغه د خلکو په منځ کې د ازادۍ د لارې قهرمان و. ملا مشک عالم په ۱۸۸۶ کال کې د ۹۶ کالو په عمر مړ شو خو هغه د امير په ضد د تبليغ له امله خلک او په ځانگړي توگه سلېمان خېل راپارولي وو.

د امير او د غلزبو د مځکو د مالکانو تر منځ اړيکې هغه وخت لا هم خرابې شوې چې هغه پر مځکو نوې مالیه ولکوله. په هغو مځکو چې د نېرونو په ذريعه خړوبېدې د حاصلاتو درېمه برخه، په هغو مځکو چې د چينو په اوبو خړوبېدې د حاصلاتو پنځمه برخه او په هغو مځکو چې د کارېزونو په ذريعه اوبه کېدې د حاصلاتو لسمه برخه مالیه

ولگوله. دا دې ماليې تر ټولو درانده اندازه وه چې دوی ورسره مخامخ شول په داسې حال کې چې د درانيو د مخکې ملکان د ماليې نه ازاد وو. د دې برسېره يې د ملا مشک عالم او د هغه ځای ناستي زوی ملا عبدالکریم مدد معاش هم ورباندې بند کړ او د دوی په مخکو يې ماليه هم ولگوله.

د ۱۸۸۶ کال د اکتوبر په مياشت کې د غلزيو ناراضي مشرانو د جلا وطن سردار محمدايوب خان په ملاتړ بلوا وکړه. بيا جنرال تاج محمد خان غلزی چې ايوب خان يې پارس ته بدرکه کړی و وروسته يې په پټه ورسره لاس يو کړ. د پاڅون مشرانو د دې له پاره چې خپل پاڅون ته قانوني بڼه ورکړي ملا عبدالکریم ته يې د خليفه لقب ورکړ او دوی د ميرافضل خان زوی تاج محمد خان نه چې د بند نه خلاص شوی و وغوښتل چې د دوی د پوځي کمپاين مشري وکړي. دوی سردار محمدايوب خان ته بلنه ورکړې وه چې د امير پر ضد د دوی د پاڅون مشري وکړي.

سلېمان خېلو او اندرو د بلوا په لور لومړی گام پورته کړ او د مقر په سيمه کې يې د درانيو يو پوځي ټولگی لوت کړ او د هغې وروسته يې د غزني د ښار په لوري مارش وکړ. د ۱۸۸۶ کال د اکتوبر د مياشتې په وروستيو کې دوی په تلخزار کې د هغه لښکر له لوري مات شول چې د جنرال غلام حيدر اورکزي له خوا يې مشري کېده. جنرال د بلواکرو نږدې دوه زره سرونه کابل ته ولېږل چې هلته د تيمور لنک غونډې يې کلا منار ورنه جوړ کړو چې د نورو د پاره عبرت شي. د بلواکرو مشران کاکړو ته وتښتېدل.

د بري وروسته امير جنرال غلام حيدر اورکزي ته لارښوونه وکړه چې اندر او د دوی متحدین يې وسلې کړي. ده همدارنگه هغه ته لارښوونه وکړه چې هغه تنخواوې ودروي چې دولت ديني عالمانو ته ورکولې، د هغو کسانو مخکې او نهرونه وپلوري چې تښتېدلي دي او د قره باغ د سيمې مخکې ضبط کړي. هغه جنرال ته دا لارښوونه هم وکړه چې په اتغر (د هوتکو د مخکو په زړه کې) يوه کلا جوړه کړي. د وروستۍ پرته نورې ټولې لارښوونې پلې شوې، د غلزيو سره سخت چلند وشو او د دوی ښځې سپکې شوې. داسې ښکارېده چې پاڅون خپل شوی دی او دا احساس د ژمي له کبله پيدا شوی و. امير هڅه کوله چې غلزيان په عمومي توگه تجريد کړي او په نېغه يې د دوی د مشرانو نه وغوښتل چې د ده اطاعت وکړي. هغه هڅه وکړه چې د خپل دراني قوم ملاتړ تر لاسه کړي چې د هغه سره يې اړيکې خړې پرې وې او خبرداری يې ورکړ چې د دوی نه وروسته غلزيان دوهم واکمن موقعيت لري. غلزيانو د درانې پوځي ټولگي د لوټولو وروسته څرکنده کړه چې دوی يوازې د امير پر ضد پورته شوي او د درانيانو سره هېڅ شخړه او اختلاف نه لري. خو امير د

غلزبانو پر ضد د دوی لمسولو ته دوام ورکړ لکه چې پرعکس يې غلزيان هغه وخت چې د سردار محمدايوب خان سره په جگړه بوخت و د درانيانو پر ضد لمسول. برسېره پردې يې درانيان د مخکې د مالي نه ازاد خو په غلزيانو باندې يې د پاڅون د مخه درنې ماليې ولکولې.

په پای کې امير ناکامه شو چې د غلزيانو پر ضد د نورو خلکو ملاتړ تر لاسه کړي. هغه يوازې په دې بريالی شو چې هزاره کان د قزلباشانو په مرسته د غلزيانو نه بيل کړي. خو په دې کې ناکامه شو چې د غلزيانو پر ضد د غزني او کوهستان د تاجکو ملاتړ وکړي. برسېره پردې امير په دې کې هم ناکام شو چې ديني علما د ځان په لوري ودروي. د گاونډيو سيمو غير دراني پښتانه د کاکړو په شمول د غلزيانو په خوا ودرېدل، خو يوازې توخي قبيلې په اردور کې ونډه نه واخېسته.

په راتلونکي پسرلي کې پاڅون زيات پراخوالی وموند. د پاڅونکوونکو ټول شمېر د ۱۸۸۷ کال په مارچ کې تر اپرېل پورې د شلو زرو نه سلو زرو ته لوړ شو. که څه هم په قلات او اتغر کې لومړی پاڅونکوونکو برياليتوب تر لاسه کړ خو وروسته دوی د دولتي پوځ له لوري چې جنرال غلام حيدر اورکزي يې مشري کوله په اتغر او کاتال کلا او نورو ځايونو کې يې ماته وکړه. د پاڅون په اخېرې مرحله کې په غير منتظره ډول دهرات نه هغه غلزيان چې د هرات په پوځ کې د سردار محمدايوب په خوا يې لا د مخه پاڅون کړی وو راورسېدل او د پاڅون سره يو ځای شول. دوی د پوځ په ماته اغېز وکړ او د ۱۸۸۷ کال د جولای په مياشت کې ناوه لاسته راوړه. خو ژمي په رارسېدو سره د دولت د منظم پوځ چې تازه دمې قواوو په ورتگ سره به قوي کېده نور د جگړې وس نه درلود او پاڅون وځپل شو. په دغه پاڅون کې نږدې څلورويشت زره غلزيان ووژل شول.

د غلزيانو پاڅون د سردار محمدايوب خان دپاره يوه موقع پيدا کړه چې يو ځل بيا خپل بخت وازمايي. ځنگه چې ده په ناسم لوري سفر وکړ او په دې کې پاتې راغلو چې د سپتمبر تر پايه افغان پولې ته ځان ورسوي. دا مهال پاڅون تېر شوی و. په دې ترتيب سردار ايوب خان وروستی موقع هم د لاسه ورکړه چې افغانستان ته ننوزي، لکه چې د دې وروسته امير پولې ټينگې کړې او د پارس حکومت د انگرېزانو د حکومت په فشار د هغه د بندي کولو امر وکړ.

د غلزيانو پاڅون په اصل کې د دولت او د غلزيانو د مخکې د مالکانو تر منځ يو جنگ و، چې امير غوښتل د غلزيانو ځواک مات کړي. د امير له لوري د لمسوونکو تدبيرونو نه يو دا و چې د غلزيانو په مخکه والو يې درانه ماليه ولکوله چې د دوی مشران يې پاڅون ته

ار کړل. امير په دې کې ناکام شو چې د دوی پر ضد قومي مليشې جوړې او جگړې ته يې ولېږي او د ديني علمانو نه د دوی پر ضد فتوه تر لاسه کړي چې دوی ياغيان وبولي. څنگه چې د غلزيانو مشرانو وسله کمزورې وه او د جگړې نور وسايل يې نه درلودل د يو ښه بادسپلين او ښه وسله وال شوي منظم پوځ په وړاندې د برياليتوب چانس يې نه درلود. د غلزيو د ماتې وروسته امير په قصدي توگه دوی په اقتصادي توگه د بېوزلې کولو له امله ناتوانه او په سياسي توگه کمزوري کړل چې په راتلونکې کې بيا پاڅون ونه کړای شي. د پاڅون بله پايله دا شوه چې دی د خپل دراني قوم سره ډېر نږدې شو او په ځانگړې توگه محمدزايي څانگې ته چې دی په خپله په هغې پورې تړلی و. هغه د کابل محمدزايانو نر او ښځو ته کالنی تنخواه مقررې کړه او د دوی د ټولې څانگې سره يې د دولت د شريکانو په توگه چلند کاوه.

د سردار محمد اسحاق خان بلوا او د هغه خپل

د کاکړ په وينا افغاني ترکستان ته د کابل د واک پراخوالي د امير په قدرت کې يو مهم زياتوالی و. د ويدي دورې راهيسې ترکستان، چې د يوناني تاريخ پوهانو له خوا د بخدي، بلخ او باختر په نومونو ياد شوی، يو مهمه سيمه وه. د دې سيمې اهميت په دې کې دی چې دا د لرغوني افغانستان د تمدن مرکز و. دا سيمه په اساسي توگه د کرهڼې او څرخايونو له امله مهمه وه او برسېره پردې د دې سيمې جغرافيايي موقیعت چې په نېغه منځنۍ اسيا د سوويلي اسيا سره نښلوي ډېر اهميت لري. د زاړه پلاز بلخ (لرغوني زاراسپه) کنډوالې چې تر اوسه شته د هغه په لرغوني پرتم شاهدي ورکوي. په اوستايي دوره کې د اسپه د واکمنې کورنۍ پاچا گشتاسپه د بلخ يا باختر بنسټ کېښود. دا د اسپه د کورنۍ د پاچا ويشتاسپه د واکمنۍ په يون کې و چې سمونپال زردشت د زردشتي دين تبليغ پيل کړ. د زردشت مذهب بنسټ د خدای په دوه گوني نظريې چې د نيکۍ خدای او د بدۍ خدای دي، ولاړدی.

کله چې بلخ په ۳۳۰ مخزېږدي کې د ستر سکندر د يرغل لاندې راغی، دا وخت بلخ لا پاچاهي وه چې خپل ډېر ښه کتان او غنم يې درلودل او په اخميني پارس پورې تړلی و. د هغه واکمن بېسوس او بيا د هغه ځای ناستي سپيتامېز د غښتلي مذهبي غېر سره يوه ملي جگړه پر مخ وړه. د الکساندر نه وروسته يوناني کلونيستانو د هغه پرمختگ سره مرسته وکړه چې د ځايي خلکو سره يې خپلوي او ملگرتيا وکړه. د فرانک هولت د اروپا د نولسمې پېړۍ پوه په وينا «په باکتریا کې يې د ټولې لرغونې نړۍ تر ټولو ښه څه وليدل.» ۳۰۹ دا د

بلخ پرتم و چې په اسلامي دوره کې د ښارونو د مور او همدارنگه د مخکې پر مخ د جنت په نومونو یاد شو. خو دا پرتمين ښار د افغانستان د نورو ښارونو په شان په دربارلسمه پېړۍ کې د چنگيزي يرغل په پايله کې په کنډواله بدل شو. د امير دوست محمد خان په دوهمه واکمني کې د ترکستان والي محمدافضل خان د بلخ پاتې شوي شيان تخته پل ته يووړل. د امير شيرعلي خان د دوهمې واکمنۍ په وخت کې د سيمې شيعه والي نايب محمداسلم خان د بلخ په تاوان مزار شريف ته پراختيا ورکړه. مزار شريف د حضرت علي د زيارت په حيث يې د سيمې په مرکز بدل کړ. همدارنگه په مزار کې ملي قهرمان وزير محمد اکبرخان او امير شيرعلي خان هم ښخ شوي دي.

د ۱۸۸۱ کال په لومړيو کې سردار محمداسحاق خان د امير عبدالرحمن د سکه تره امير محمداعظم خان زوی د امير نه وغوښتل چې امير دې دی په استثنایي ډول د ترکستان د مالک په حيث وپېژني. امير نه غوښتل چې سردار ولسوي او ژمنه يې ورسره وکړه چې همداسې به وکړي کله چې زموږ ستونزې چې سردار محمدايوب خان په هرات کې جوړې کړې دي ليرې شي. په هر حال دې غوښتنې د امير او سردار تر منځ اړيکې ترينکې کړې. کله چې د ۱۸۸۱ کال په پای کې کندهار او هرات د امير تر واکمنۍ لاندې شول او سردار ايوب خان پرار شو، اسحاق خان د امير نه وغوښتل چې د ده کشر ورور د هرات د والي په توگه وټاکي. امير د دې نه انکار وکړ خو پر سردار يې د پراخ واک باور وکړ او د ولايت د ټولې مالې د ساتلو واک ورکړ. برسېره پردې يې ده ته د کابل نه نورې پيسې ورلېږلې تر څو خپل موقعيت په دغه مهم سرحدي ولايت کې ټينگ کړي.

په پای کې سردار محمد اسحاق خان په عمل کې د ترکستان خپلواک واکمن و. هغه به کابل ته د اسانو ډالۍ لېږلې او خطبه د امير په نامه ويل کېده. خو امير د سردار درې وروڼه په کابل کې د مېلمانو په توگه ساتلي و خو په عمل کې دوی برمه وو.

په ۱۸۸۴ کال کې د ميمې نسکورېدل د دواړو تر منځ اړيکې خرابې کړې. اسحاق خان د ميمې پر ضد بېړنی گام پورته کړ چې دا ولسوالي زيات وخت د ترکستان برخه وه او سردار هيله درلوده چې د ميمې د ارامښت وروسته به هغه امير په حقوقي توگه ده ته ورکړي خو امير داسې ونه کړل.

اسحاق خان د ميمې په سر د مایوسۍ نه وروسته هڅه وکړه چې خپل دريځ نور هم ټينگ او د خلکو زيات ملاتړ تر لاسه کړي. کابل ته د راپورونو له مخې د سيمې په خلکو کې د سردار د واک د هغه د شهرت زياتوالي امير اندېښمن کړی و. په ۱۸۸۰ کال کې چې سردار د سمرکند نه چې هلته پراري و، وطن ته راستون شو هغه خلکو د ترکستان د والي په توگه

وتاکه. مهمه دا وه چې د سردار اداره نرمه او د امير سخته وه. د دواړو تر منځ په خوی کې زیات توپیر و. سردار قدرمن او پرهېزگار او امير توند خوږه او سختگیر و.

سردار د نقشبنديه طريقې پیرو و او له دې کبله ازبکو او په ځانگړې توگه ترکمنو ته زیات نږدې و. هغه په خپل پوځ کې د زیات نفوذ څښتن و او تنخوا یې په وخت تادیه کوله. ځنګه چې ترکستان یو سرحدی ولایت و او د روسیې تر گواښ لاندې و نو امير سردار ته د لوی پوځ د جوړولو اجازه ورکړې وه. ځنګه چې د سردار سره کابل د پیسې مرسته کوله هغه د خلکو نه ډېرې پیسې نه غوښتې نو ځکه یې په دوی کې شهرت زیات و. هغه هڅې چې د کابل د اغېزمنو کسانو له خوا د سردار د پخلایني له پاره وشوې کته ونه کړه. د دې وروسته امير غوښتل چې سردار د ترکستان نه لیرې کړي. خو اسحاق خان چې د امير د سکه تره محمد اعظم خان زوی و یوازینی محمدزای سردار و چې د تخت دعوه یې درلوده نو د امير د غوښتنې پر خلاف کابل ته یې د تگ نه ډډه وکړه او امير ته دخطبې نه انکار د کواښ زنگ و. امير د غلزیو د پاڅون د خپلو وروسته پرېکړه وکړه چې دا خطر لرې کړي. امير یو ځل بیا سردار کابل ته راوغوښت چې په دولتي چارو کې ورسره مشوره وکړي خو واقعیت دا و چې امير غوښتل چې د دندې نه یې گوښه کړي.

د ترکستان د مشرانو خیال دا و چې د امير له خوا بیا کابل ته د سردار د غوښتلو نه مالومېږي چې امير غواړي په ترکستان په خپله واک وچلوي او د دې ولایت په خلکو استبداد وکړي. دوی غوښتل چې د سردار په پلوۍ پاڅي او افغانستان د ده له پاره ونیسي. د نقشبنديه طريقې مشرانو سردار تشویق کړ چې تخت به ورته ونیسي. سرتېرو او افسرانو سوگند وکړ چې ده ته به وفاداره وي. د ۱۸۸۸ کال د اګست په لسمه دوی سردار اسحاق خان د امير په توگه اعلام کړ او خطبه یې د ده په نوم وویل.

په دې وخت کې سردار اسحاق خان څرګنده کړه چې د کابل خلکو هم ده ته د ملاتړ وعده را لېږلې او دی به د افغانستان د خلکو کسات له امير د استبداد په وړاندې اخلي. اسحاق خان په تاکتيکي لحاظ دا اوازه خپره کړه چې امير مړ دی. سره له دې په میمنه او اندخوی کې پېښې د ده پر ضد وې. په میمنه کې جنرال شربت خان سردار ته وفاداري څرګنده کړه خو پوځ او خلکو امير ته وفادار پاتې شول او جنرال یې بندي کړ. همدارنګه د اندخوی او دولت اباد د ولسوالیو خلک امير ته وفادار پاتې شول. په دې ترتیب د سردار شمال لوېدیځ اړخ نا امنه پاتې شو.

د پورته یادو شوو پېښو سره سره اسحاق خان د خپل پوځ په مشرۍ د کابل په لور حرکت وکړ او خپل کوچني زوی محمد اسمعیل خان ته یې د ترکستان چارې وسپارلې. په

کندوز کې د ده سره د هغه ځای مير سلطان مراد يو ځای شو او پوځ يې په خان اباد او بدخشان کې ځای پرځای کړ. په پای کې ټول بدخشان د ده په لاس کې په اسانه توګه پرېوت ځکه چې په دغه وخت کې د بدخشان ګورنر سردار عبدالله خان توخي کابل ته د تګ په لاره کې و. په دې توګه د ميمې پرته ټول شمالي افغانستان د اسحاق خان د واکمنۍ لاندې راغی.

د اسحاق خان پاڅون د ايوب خان د پاڅون په شان د امير عبدالرحمن له پاره ورته ستونزې را ولاړې کړې. اسحاق خان په داسې وخت کې د کابل په لور پوځ روان کړ چې امير ډېر ناروغه و. برسېره پردې د غلزيو د پاڅون د خپلو نه وروسته عمومي ذهنيت هم د سردار اسحاق خان په ګټه و. خو سره له دې چې امير ناروغه و بيا يې هم جدي تدابير ونيول.

امير سره له دې چې په اخلاقي لحاظ د دفاع وړ نه و بيا هم هڅه وکړه چې عمومي ذهنيت د خپل سيال پر ضد تيار کړي. لومړی امير د علمانو نه دا فتوا تر لاسه کړه چې سردار ياغي دی او د دې فتوې پر بنسټ يې ټولو قومونو ته خبر ورکړ چې سردار ياغي شوی او پر ضد يې عمل ته رابلل. بل ګام يې دا و چې هغه د سردار پاڅون د روسانو لمسون وګاڼه او پاڅون ته يې د مذهبي جنګ بڼه ورکړه، که څه هم په پاڅون کې د روسانو د لمسون نېټې نه وې. ځنګه چې د سردار مور ارمني مينځه وه او سردار يې د روسيې نوکر باله. دغه تومت چې امير د برتانيا تر ساتنې لاندې دی د سردار اسحاق خان له خوا تبليغېده خو دا ټول پروپاګانډ د دې له پاره کېده چې د قدرت په خاطر مسلمانان سره وجنګوي.

امير يو غښتلی پوځ د غلام حيدر خان اورکزي تر قوماندنې لاندې د پاڅون پر ضد واستوه. د پوځ سره د ايزنګي او دايکندي هزاره ګانو وروسته له دې ملا وتړله چې د سردار اسحاق خان مخکينۍ قواوې د جنرال نجم الدين تر مشرۍ ماتې وکړه. په دې وخت کې د امير اساسي پوځ د نايب سالار اورکزي په مشرۍ غزنيګک ته راوړسېد چې هلته پاڅونکوونکو د سپاسالار محمد حسين خان تر مشرۍ لا د مخه موقعيت نيولی و. دواړو قواوو غوڅه جګړه پيل کړه.

د ۱۸۸۸ کال د دسمبر په ۲۷ نېټه د جګړې په درشل کې محمد اسحاق خان چې په غونډۍ يې ځای نيولی و د امير د پوځ د يوې ځانګې له خوا يو ټاپه شوی قران وړ ورسېد چې د جګړې په وخت کې به د ده لوري ته اوړي. د رښتني جګړې په ورځ د امير د پوځ يوه برخه د سردار عبدالله خان توخي په قوماندانۍ جنګېده ماتې وکړه او نور اووه غونډونه سردار

ته تسليم شول. د دې وروسته په ښکاره بريالی شوی اردو د ښکاره مات شوي پوځ نه پاتې سامان لوټ پيل کړ. په دغه شېبه کې د نايب سالار اورکزي له لوري حيرانوونکی او سخت بريد وشو چې د سردار پوځ يې اړ کړ چې خپل وضعيت بيا جوړ کړي خو دې کار د سردار د پوځ برياليتوب غبر يقيني کړ.

وروستی او د حيرانتيا وړ خبره چې دې جگړې پايله يې د امير په کټه واروله، دا وه چې د ناسم پوهاوي په پايله کې د اسحاق خان سملاسي تېښتېدل و. وروسته له دې چې ياور يې خبر ور کړ چې تنظيمونکی غونډ تسليم شو د جگړې د ډگر نه وتېښتېد او نېغ سمرکنډ ته لاړ. هغه فکر کړی و چې خپل غونډ يې تسليم شوی په داسې حال کې چې دوی ته د امير تنظيموونکی غونډ تسليم شوی و. اسحاق خان دومره ډار شوی و چې پرته له دې چې ځان ته يې مالومه کړي د جگړې د ډگر نه خپلې پښې سپکې کړي او کتلې جگړه يې بايلوده او د امير سره بخت ياري وکړه او نږدې بايللی جنگ يې وکاته او د ټول افغانستان واکمن شو.

امير يو کال په مزار کې پاتې شو او هغه کسان يې سخت وځپل چې د اسحاق خان سره يې مرسته کړې وه. هغه د روسيې ضد ويناوې کولې او د سرحد په اوږدو کې يې د پولې د پياوړي کېدو له پاره نظامي پوستې جوړې کړې. برسېره پردې يې شمال ته د هندوکش د سوېل نه پښتانه او نور اتنيکي گروپونه ولېږدول، هلته يې ميشته کړل. دې پروسې وروسته هغه مهال هم دوام وکړ چې په مزار کې محمد گل خان مومند او په کندوز کې شير خان خروټی واليان وو. په دې ترتيب ترکستان د افغانستان نه بيلېدونکې برخه شوه.

امير عبدالرحمن او په شمالي افغانستان کې د سرحدي ولسواليو ارامښت

مېمنه

مېمنه په شمالي افغانستان کې يوه لويه ولسوالي وه چې اوسېدونکي يې په اساسي توگه ازبک او ترکمن او يوه واړه برخه يې تاجک او پښتانه وو. احمدشاه دراني حاجي خان ازبک د مېمنې او بلخ د والي په توگه پېژندلی و په دې شرط چې د جگړې پر مهال به دولت ته وسله وال لښکر چمتو کوي. تيمورشاه د نوموړي د زوی واک يوازې په مېمنې پورې محدود کړ. خو کله چې سدوزي او بارکزي شاه زويان يو د بل سره د واک پر سر په جگړو بوخت وو نو مېمنه خپل سرنوشت ته پرېښودل شوې وه. ورپسې کله چې محمديزي سردارانو يو د بل پر ضد د واک پر سر جنګېدل مېمنه تر ۱۸۳۰ کال پورې همغه شان په خپل حال پاتې وه، تر څو چې مهزراپ خان په خپلو سيالانو بريالی شو. مېمنه د هغه تر واکمنۍ لاندې پرمختګ وکړ، خو د هغه د مړينې وروسته په ۱۸۴۵ کې په مېمنه کې بله

کورنۍ جگړه ونښته چې تر هغه اوږده شوه تر څو يارمحمد خان الکوزي په ۱۸۴۸ کې ونيوله او په هرات پورې، چې د ده د واک ساحه وه، وتړله. په ميمنه باندې د يارمحمد خان واکمني اوږده نه شوه او د حکمت خان والي له لوري خپلواکه شوه تر څو په ۱۸۵۵ کال کې والي حکمت خان د امير دوست محمد خان اطاعت وکړ. خو د امير د مړينې وروسته د ۱۸۶۰ کلونو د کورنۍ جگړې پر مهال د والي حکمت خان ورور مير محمد حسين خان په خپلواکه توگه ميمنه اداره کوله. نوموړی په ۱۸۶۶ کال کې د امير شيرعلي خان اطاعت وکړ او د کال يې سل زره تنگې ماليه ومنله. خو والي بيا خپلواک شو کله چې امير خپلو وروڼو ته واک بايلود. په ۱۸۶۸ کال کې سردار عبدالرحمن ميمنه په ۱۶۰۰ کسانو کلابنده کړه. د ميمني يوه مياشت کلابندي سردار پرېښوده او کابل ته لاړ تر څو د امير شيرعلي خان په وړاندې د خپل سکه تره سره مرسته وکړي. خو کله چې شيرعلي خان دوهم ځل واکمن شو د ميمني والي د هغه اطاعت ونه کړ او د بخارا پاچا او سردار عبدالرحمن ته، چې سمرکند ته پرار شوی و، ليکونه استول. خو امير شيرعلي خان په ۱۹۶۹ کې ميمنه ونيوله او د افغان انکلیس د دوهمې جگړې پورې د دولت د افسرانو له خوا اداره کېده.

د امير عبدالرحمن خان د واکمنۍ په وخت کې ميمنه د مير دلاور خان تر واک لاندې وه. ده هغه وخت ميمنه کې واک تر لاسه کړ چې دولتي کارنيزون د هغه ځايه ووت. ده له هغه وخته د سردار محمد ايوب خان ملاتړ کاوه. والي دلاور خان د امير نه ډارېده او د هغه د هڅو سره چې ميمنه په خپل کنترول لاندې راوړي مخالفت و. هغه نه غوښتل چې دولتي قواوې هلته ځای په ځای شي او د هغې ماليې د ورکولو نه يې هم ډډه وکړه چې پخوا يې ورکوله.

برسېره پردې والي هڅه وکړه چې د برتانيې او يا روسيې تر ساتنې لاندې راشي. هغه ان په دې اړه انگرېزانو ته ليک واستاوه چې دا د روسانو ته مالومه وي چې زه د برتانيې حکومت تابع يم. زه هيله لرم چې ماته زما د چارو په اداره کې لارښوونې راکړي. د ده د ليک په ځواب کې انگرېزانو ورته وليکل چې د برېتانيا حکومت ميمنه د امير د واک د ساحې برخه گڼي. د برتانيې حکومت امير هم د موضوع نه خبر کړ. ورپسې والي په مروه کې د روسيې د رسمي واکمنو وغوښتل چې ميمنه ونيسي. خو په دغه وخت روسانو دا کار نه شو کولی ځکه چې دوی د ساريک او د پنجده د ترکمنو سره لاس او کړېوان و او پنجده تر دغه وخته زاده وه. سره له دې يې راپور ورکړی و چې والي ته به وسله ورکړو او والي به د دې په بدل کې زمور بيرغ په ميمنه کې رېانده کوي.

والي هڅه کوله چې خپل موقعيت ټينگ کړي. په دې اړه والي يو لړ کامونه پورته کړل چې لوستونکي کولی شي د کاکړ په کتاب کې يې ولولي. خو امير په ۱۸۸۴ کال کې کله چې روسان مروې ته ورسېدل، دا موضوع ډېره جدي ونيوه او ميمنه د دوی د يرغل په شان کتل کېده. يوازې بيا امير امر وکړ چې په يوه وخت کې دې د هرات او مزار نه وسله وال پوځونه ميمنې ته ولېږل شي چې په پايله کې د امير د واکمنۍ لاندې راغله. امير دلاور خان بېرته د ميمنې والي وټاکي او واک يې محدود شو او د حکومت قواوې په ميمنه کې ځای په ځای شوې او په دې توگه په ۱۸۸۴ کې په ميمنې کې د امير د واک په غزېدو سره د افغانستان بيا يووالي بشپړ شو.

شغنان او روشان

د شغنان او روشان غرنی ولسوالی د شمال ختيځ افغانستان د بدخشان په ولايت پورې اړه لري چې مرکز يې د فيض اباد ښار دی. شغنان او روشان د درواز او واخان د ولسواليو غونډې د پنجا رود دواړو خواوو ته پراتې دي. د شغنان زياته برخه د رود ښی خوا ته پراته ده د پنجا رود تنگ او د دواړو لورو خلکو ته د تېرېدو د پاره خنډونه نه جوړوي. دلته لکه د پاسني اکسوس غونډې درې د يو بل نه د غرونو په ذريعه بيلې شوې، چې د لورو څوکو نه يې تېرېدل ناشوني دي، د دواړو غاړو ميشتو خلکو له پاره اساسي د تک راتگ لاره رودونه جوړوي. زيات وخت د بلخ واکمنانو په بدخشان خپل اختيار ته پراختيا ورکړې ده.

د روشان او شغنان اوسېدونکي په ناسمه توگه تاجک يا د غره تاجک ياد شوي دي. د ارغوان په وينا «هغه څوک چې د پامير په لمنو او د بدخشان په لورو کې ژوند کوي په مونجي، واخي، روشاني، سنکليجي ژبو او د پامير په نورو لهجو خبرې کوي. دوی نه تاجک، نه پښتانه، نه هزاره دي بلکې بيل توکميز گروپونه دي. د دوی ژبې او په ځانگړې توگه سرغلامي د نورو ژبو په پرتله پښتو ته نږدې دي. د دوی پرته د بدخشان نور اوسېدونکي تاجک دي.» ۳۱۰ د پامير ژبې په ټوليز ډول گلچه نومېږي.

د دوی مخکه غرنی او د کرنې وړ نه ده. د شغنان او روشان عادي وگړي چې د واکمنو کورنيو نه يې توپير کيږي سوله خوښونکي خو بختور نه دي. د شغنان او روشان ټولني په سلسله ييزه توگه په واکمنو اشرافو او عادي وگړو وېشل شوې دي. په واقعيت کې د روشان او شغنان تاريخ د عادي وگړو په پرتله په زياته کچه د خواصو (ميرانو، شاهانو، او بېگانو) دی. نږدې اويا په سلو کې د شغنان اوسېدونکي افيمو څکوي او غمزه څښي او

تل د مستقې په حالت او کوبنه توب کې ژوند کوي. د شغنان خلک د شيعه د اسماعليه څانگې په اسلام باور لري او په زياته اندازه په مذهب تمرکز کوي سره له دې چې دوی نه لمنځ کوي او نه روژه نيسي. دوی په خپله د مذهب په پر تله په مذهبي مشرانو (پيرانو) باندې خپله عقیده ټينگه ساتي او د بمبي اغاخان د دوی لور پير دی. د «شاه» کليمه چې د خسترا او اوستا د کليمې نه اخېستل شوې چې د ځواک او تسلط سيمبول دی شايد د «شاه- خاموش» يوه برخه وي چې د دغې پاچاهي سلسلې بنسټ يې ايښی دی. دغه ميران او شاهان مطلق واک چلوي، د دوی کوچنيان پلوري او نورو ته يې د دالی په توگه وړاندې کوي.

د شغنان ميرانو د چاپېر سيمې د شاه زويانو سره د واده په کولو سره خپل حالت ښه کړی دی. د ۱۸۷۰ مو کلونو کې د کاشغر د يعقوب بېگ، د يارقند د خدايار خان، د چترال شاه زوی افضل الملک، د کندز ازبک مير او ځينو افغان افسرانو او شاه زويانو سره وادونه کړي دي. د امير عبدالرحمن خان يوه ښځه د مخه تر دې چې امير شي د بدخشان د يوه ځواکمن مير جهاندارشاه لور وه. د هغې د مړينې وروسته سردار د هغې د خدمتگارې گلرېز سره واده وکړ چې د هغې نه يې دوه زامن درلودل، يو يې حبيب الله خان د امير ځای ناستی شو. د شغناني ښځو سره واده د دوی د ښکله له کبله کېده او په سياسي لحاظ مهم نه و.

د شغنان مير د هغې لارې د ساتونکي په حيث چې کاشغر، يارقند، بخارا او پېښور ته تلله د سوداگرو نه ماليه اخېسته. کتان، چيني لوبڼي، چای، بوتونه او نور توکي د سوداگرو له خوا دلته راوړل کېدل چې په مريانو، وريو او پوستينو باندې تبادلې کېدل. کله چې چينايانو په ۱۷۵۹ کې کاشغر ونيو دوی د شغنان مير ته د لارې د خلاص ساتلو په خاطر يو ډول سبسيدي ورکوله. مير د دغو پيسو يوه برخه د شيعه د اسماعليه د څانگې لوی پير د بمبي اغاخان ته ورکوله.

همدارنگه د شغنان ولسوالي د بدخشان په ولايت پورې تړلې وه خو د هغې مير د يوه برابر همکار په توگه لکه د يو ډول کنفېدرېشن غونډې کړه ترسره کول. د بدخشان مير د شغنان مير ته اجازه ورکړې وه چې کورنۍ خپلواکي ولري، لکه چې مير نورې ولسوالۍ هم په کورنيو چارو کې خپلواکي پرې ايښې وې. هغه کله کله اسونه، اوسپنه د باج په توگه او همدارنگه په بېرنيو حالاتو کې پوځي مرسته هم ترېنه ترلاسه کوله.

د اوومې پېړۍ راهيسې په شغنان او روشان باندې د شاه- خاموش ذودات واکمني چلوي، چې د پارس نه راغلي او د اوسېدونکو ډېرکي يې د زردشتي دين نه د شيعه عقيدې

اسلام ته واړول. ده شغنان د کاهاکاه زردشتي والي نه چې بلخ يې پلاز و په زور ونيو. تر نن ورځې د شاه عقيدتمن د شاه زيارت ته ځي، چې په بر پنجا کې پروت دی. د شاه ذوذاث خپل واک ته د بدخشان او چترال تر پولو پراختيا ورکړه او پر بله نقطه کې يې واخان او درواز او ټول چاپېر دولتونه د شغنان د پاچا تر واک لاندې وو. د ۱۷۴۹ نه راهيسې روشن او په رشتيا ټول بدخشان د دراني امپراتورۍ برخه وگرځېد خو خپله کورنۍ خپلواکي يې وساتله په دې چې موقعيت يې سخت و. د کورنۍ جگړې په جريان کې چې د امپراتورۍ په ماتېدو پای ته ورسېده. په ۱۸۱۸ کې غښتلي اوزبک شاه زوی مير مراد بېگ د امو د سوويل نه تر باميانه، بدخشان او په نورو ټکو له واخانه تر بلخه او د هندوکش نه د کاراتيکين تر پولې د ټول ملک څښتن و. هغه د بدخشان د اوسېدونکو لوی شمېر د مريانو په توگه وپلورل يا يې چې د تې نه د منځه لاړ شي د کندوز په خټينه دښته کې پرېښودل. د شغنان مير هغه ته هر کال پنځلس مينځي جونې د باج په توگه ورکولې. د چارو دغه حالت د امير شيرعلي خان په واکمني کې هغه مهال پای ته ورسېد چې والي نايب سيد عالم خان ټول ترکستان ارام کړ.

په ۱۸۷۴ کال کې شاه يوسف علي شاه د بدخشان په گډون د کابل واکمني ومنله. خو د واک په چلولو کې يې خپل لاس ازاد وساته. د امير عبدالرحمن خان د واکمنۍ په لومړيو درې کالو کې مير د پخوا په شان واک چلاوه، مړيې هلکان او مينځي جونې او نور توکي يې امير ته د ماليې په توگه استول. په ۱۸۸۳ کې د هغه اړيکې د کابل سره خړې پرې شوې. په دې وخت کې شغنان په نړيواله کچه مهم شو او مير د روسيې د تسلط لاندې بخارا ته ميلان وښود. د شغنان مير د ۱۸۷۳ راهيسې د خپل تسلط د برخه ليک په اړه اندېښمن و، کله چې هغه واورېدل چې د روسيې او برتانيې تر منځ پوهاوی رامنځ ته شوی چې د امو رود به د بخارا او افغانستان تر منځ پوله وي. دغې هوکړې د ده د تسلط د سيمې نه د لويې او مهې برخې د بيلولو مانا درلوده چې د بخارا برخه به کرزي. د دې له پاره چې د خپل تسلط سيمه په بشپړه توگه وساتي هغه د بخارا او کابل سره بڼې اړيکې ساتلې. د احتياط له مخې هغه روشن خپلو کوچنيو زامنو په لاس ورکړ. روشن هم مهم و په دې چې د اوسپني زياته زېرمه يې درلوده چې کابل ته د مير د باج برخه په کې شامله وه. په ۱۸۸۲ کې مير يو روسي پلاوی په شغنان کې ومانه. بل کال يوه روسي پلاوي د مير سره وليدل او دی يې زيات باوري کاوه چې «هغه بايد د بدخشان د واکمن نه ونه ډار شي» ۳۱ ځکه چې روسان د اکسوس په بڼې اړخ کې پاسني شغنان د خپل نفوذ د سيمې په څېر گڼي. دا هغه وخت و چې مير د بدخشان د افغان والي عبدالله توخي خطبې نه انکار وکړ او خپله کورنۍ

بې ساروجان ته واړوله چې د ۱۸۷۵ نه راهيسې بخارا نيولی و. مير وېرېده چې که خان والي ته وسپاري نو دی به د نورو ولسواليو په شان د دولت په افسرانو بدل شي. دا د هغې ژمنې پر خلاف و چې په ۱۸۸۰ کې امير عبدالرحمن ده ته ورکړې وه. د دې کال په لومړيو کې کله چې امير عبدالرحمن د سمرقند نه بدخشان ته راغی هغه دوی ته وعده ورکړه «تر هغه پورې چې دی واک ولري د بدخشان مير به د مالې د ورکولو نه معاف وي، او دا ټول به تر هغه پورې وي چې د هغه واک ومي.» ۳۱۲

د دې برسېره مير د والي سره د ليدو نه ډاډه وکړه، مير د روسيې، بخارا، چين او يارقند د افسرانو سره په مکاتبه لکيا و. خو ده والي ته دا مالومات ورکړل چې بهرنيو افسرانو ته بې ويلي چې دی د افغانستان تابع دی. ۳۱۳ خو والي پر ده بدگومانه و. په دې وخت کې يوه سيال فراکسيون د دراب شاه په مشرۍ شغنان ته سفر وکړ چې د مير درېخ بې کمزوری کړ. امير د شغنان په مير شکمن و چې د روسانو سره په دسيسه بوخت دی په دې چې روسانو ته بې اجازه ورکړې و چې شغنان وگوري او د هغه د لرې کولو امر يې وکړ. دا کار د ځينو ستونزو سره ترسره شو او په ۱۸۸۳ کې مير د يو سلو دېرشو پلويانو په ملکر تيا کابل ته راوړسېد. په پای کې هلته يو د والي مرستيال وټاکل شو او پوځ ځای پر ځای شو. په دې توگه شغنان او روشان د کابل د نېغ کنترول لاندې راغلل.

په پراخه توگه داسې گونگوسې وې چې په شغنان کې يو نوی نظم جوړ شوی دی. هغه شغنانيان چې د کلونو راهيسې بې هر چېرې په مړيتوب کې ژوند کاوه د خپلو بادارانو نه بېرته خپلو کورونو ته راستانه شوي او په ازادۍ کې ژوند کوي. د دې سره سره د دوی ستونزې ډېرې وې. دوی د خپلو بادارانو د منگلو نه خلاص شوي دوی اوس ځانونه د حکومتي افسرانو تابع وموندل. ابله يو کال تېر شوی و کله چې د بدخشان نه ... نږدې نيم اوسېدونکي ... حصار، کولاب او کاراتيکين ته وتښتېدل. وروسته له دې امير د دولت د درېخ پياوړي کول پيل کړل او د رود په دواړو خوا بې پوستې جوړې کړې چې يوه بې دومره ليري د ياهسيکول په ختيځه نقطه نږدې پامير ته په سوماتش کې جوړه کړه. نوي والي د دندې د نيولو نه لږ وروسته روسي پوه م. ايوانوف د شغنان د ننوتلو نه منع کړ.

ټولو دغو پرمختگونو شغنان د نړيوالې ډپلوماسۍ په يوه د پام وړ ځای باندې بدل کړو. په شغنان کې د امير په تدبironو باندې روسي برتانې ته اعتراض وکړ. په هغه وخت کې چې روسانو دا ادعا کوله دغه ولسوالۍ ازادې وې. خو د دې سره سره دوی ادعا کوله چې داسې نه وه «... د دغو ولسواليو نه يو شمېر بې په هغه تړون کې په رسميت پېژندل شوې چې په ۱۸۷۳ کال کې د روسيې او برتانې تر منځ شوی و او د افغانستان د ملکيت

برخه يې جوړوله. ۳۱۴ روسي په شغنان کې د امير اقدامونه «يو ... سيخ تيري گانه چې د ترون شرايط تر پوښتني لاندې راوړي» ۳۱۵ او د برتانيې نه غواړي چې امير اړ کړي «د تل له پاره د هغو په چارو کې د لاسوهني نه لاس په سر شي.» ۳۱۶

امير عبدالرحمن خان ادعا کوله چې دا ولسوالۍ د افغانستان برخه وه ځکه چې دوی تل په بدخشان پورې اړه درلوده چې د افغانستان يو ولايت دی. د دغې ادعا په ملاتړ دا ويل شوي چې نه د پنجا رود، بلکې د اکسوس- مرغاب رود د سارېکول نه سرچينه اخلي چې د نيروالې پولې په څير هوکړه پرې شوې وه. په رشتيا د دې موضوع په اړه د برتانيې د حکومت وروستی رسمي پيغام چې روسي منلی و په هغه کې د دواړو لويو ځواکونو په منځ کې يو پوهاوی منځ ته راغلی و. ويل کېږي چې «د اکسوس رود د کوکچې د رود سره په يوځای والي کې د خواجه صالح د پوستي په گډون چې لوېديځ ته ځي» ۳۱۷ ښي چې پنجا د پوهاوي نه د باندې پاتې کېږي. په دې مسله د روسي او برتانيې د حکومتونو تر منځ زيات ليکونه تبادله شوي وو. امير په دې اړه ټينگ دريځ نيولی و او دغه ولسوالۍ يې د خپل کنترول لاندې نيولې وې. خو روسي د ۱۸۹۰ یمو کلونو په پيل کې خپله ډپلوماسي په وحشيانه زور سره بدرگه کوله.

په ۱۸۹۲ کال کې د کرنېل يانوف تر قوماندانۍ لاندې يوه روسي کنډک په سوماتاش کې يو افغان پولې ساتونکی ټولی په ډله ييزه توگه وواژه. بل کال د روسي يو بل کنډک د کرنېل يانوفسکي تر قوماندې لاندې شغنان ته ننووت خو افغانانو هغه په څټ و تمبوه لکه چې د مخه يې يو چينايي کنډک د سوماتاش په شمال کې په شا تمبولی و. سره له دې د روسي حکومت د برتانيې سره په خبرو کې په دې ټينگار کاوه چې کابل دې د شغنان او روشن هغه خوا تخليه کړي. په پای کې د برتانيې حکومت د روسي دا غوښتنه په هغه توگه ومنله لکه چې د روسي غوښتنه يې د پنجدي په اړه په ۱۸۸۵ کې منلې وه او د امير نه يې وغوښتل چې هغسې وکړي. امير راضي شو په دې چې د ۱۸۹۲ کال په جولايي کې د برتانوي هند وایسرا امير ته خبرداری ورکړ چې په پامپرونو کې د فعالې پالېسي له مخې مور ته ستونزې جوړې نه کړې. د دې په بدل کې امير بايد هغه سخت ختيځ دهلېز واخان او د درواز يوه برخه چې د پنجا نه دې خوا ته پروت و، ونيسي چې بخارا ته تسليم شوی و.

واخان

واخان د بدخشان په شمال کې د لوی پامير د پاسه د ويکتوريا جهيل يا سارېکول په سيمه کې يو اوږد خور وور ميشته شوی دهلېز دی چې په زياته اندازه اسماعليه شيعيه

چې په واخيانو مشهور دي او يو لړ شمېر سني کرغېز ترکمن شپانه په کې اوسېږي. دا د لوړې ارتفاع مخکې ده چې هوا يې ډېره سخته يخه ده. د واخان د مخکې محصولات محدود دي. سره له دې چې يو وخت پامير د فرغانې يا چين ترلاس لاندې و په واخان باندې د ځايي ميرانو واک چلېده. هغه زيات وخت د شغنان، درواز او زيباک د ميرانو په شان د بدخشان د مير يا د قطعن د مير تابع و. ميرانو به د دوی نه حيوانات، نايابه مرغان، غواړي او مريان د باج په توگه راټولول.

دغه د بحث لاندې مرحله کې واخان په نړيواله کچه د روسې او برتانيې امپراتوريو تر منځ د خپل موقعيت له مخې مهم شو. څنگه چې د ۱۸۹۰ کلونو په لومړيو کې د واخان ساتل يو پرابلم شو. د ۱۸۷۳ کال د روسې او برتانيې تر منځ په پوهاوي کې روسې ومنله چې بدخشان د واخان د ولسوالۍ په گډون د افغانستان برخه ده. خو امير عبدالرحمن خان نه غوښتل چې هغه د پوځ په ذريعه ونيسي. لومړی لامل يې دا و چې روسانو د شغنان په اړه هم داسې ژبه کړې وه خو بيا يې خپل دريځ ته بدلون ورکړ او د برتانوي فشار په پايله کې امير اړ شو چې د روسې غوښتنې ومني. دوهم لامل يې دا و چې کله روسانو په لمسونکې توگه په ۱۸۸۵ کې پنجدې ونيوه برتانويانو خپله ژمنه پوره نه کړه. دريم لامل چې تر ټولو مهم و دا و چې واخان په هغه صورت کې چې روسانو ورباندې يرغل کړی وای ساتنه يې گرانه وه.

د دې سره سره د برتانوي هند د بهرنيو چارو وزير مورتي مور د ډيورنډ د ۱۸۹۳ په اکتوبر کې د واخان مسله د امير سره راپورته کړه چې د روسې او برتانيې تر منځ د بيلوونکې سيمې په توگه وگرځوي. هغه د امير نه وغوښتل چې واخان ونيسي ځکه چې روسيه د هر بل ځواک په ذريعه د هغه د نيولو مخالفه ده. د ډيورنډ نيت دا و چې امير اړ کړي په پای کې په هغه خپله سلطه ومني. په دغسې وضعيت کې واخان بايد په نامه د افغان وکيل له لوري نيول شي خو په واقعيت کې به هغه د برتانيې له خوا د کلکت نه اداره کېږي.

کله چې شمال ختيځ افغانستان ته د روسې د گواښ په وړاندې امير د برتانيې په ملاتړ هيله من شو په پای کې پرېکړه وکړه چې په واخان خپل واک ټينگ کړي، خو په پوځ سره يې ونه نيسي. ... د اکسوس رود چې د افغانستان شمالي پوله جوړوي د واخان دهلېز د دې ليکې سوويل ته پروت دی.

په ۱۸۹۵ کې د برتانيې- روسې گډ کميسيون او د افغانستان د حکومت غير رسمي استازي د روسې، افغانستان، چين او برتانيې تر منځ پوله وکښله. چين په خبرو کې ونډه

نه واخېسته ځکه چې هغه کومه ادعا نه درلوده. په دې توگه د واخان دهليز او د افغانستان پامير د هغه وخت د درې سترو ځواکونو تر منځ بيلونکې سيمه جوړوي چې د نړۍ د بام په نامه يادېږي.

امير عبدالرحمن خان او د هزاره گانو ارامښت

د کاکړ په وينا په ۱۸۹۱ کال کې نيمه -ازادو هزاره گانو-د مرکزي لورو مخکو هزاره جات اوسېدونکو ومنله چې د دولت افسران به هلته ځای په ځای کېږي. له دې لږ وروسته د دولت افسران او قواوې هلته په بيلو برخو کې ځای په ځای شول. خو هغوی ځايي خلک دومره تر فشار لاندې ونيول چې دوی پاڅون وکړ چې درې کاله اوږد شو. د هغه وخت راهيسې چې هزاره مشرانو په دوهمې افغان- انګليس جگړه کې د برتانويانو نه ملاتړ وکړ دوی هم د نورو شيعيه مسلمانانو غوندې د خپلو سني گاونډيو سره په بدو شرايطو کې وو. دې امير ته دا وړتيا ورکړه چې د دوي پر ضد لوی لښکر او مليشا واستوي. په پای کې هزاره گانو ماتې وکړه؛ څه دراني او څه غلزي د دوی د مخکو په يوه برخه کې ميشته شول او د دوی څر ځايونه کوچيانو ته ورکړل شول.

هزاره گان د مرکزي لورو مخکو په زياته برخه کې چې هزاره جات نومېږي ژوند کوي. د هزاره جات د کرلو وړ مخکه لږ ده، شپږ مياشتې ژمی لري او د څر مخکې يې پراخې دي. هزاره جات په ۱۵ سيمو يا ولسواليو وېشل شوی و چې هره يوه يې د يوې کورنۍ يا په ځانگړي ډول د بېگ (ټول سردار) له خوا اداره کېده. د دايزنکي بېگ کورنۍ ټول دايزنکي او د ابراهيم بېگ کورنۍ ټول دايزنکي خپله کړې وه. هزاره واکمن مشران يا ميران دومره قدرتمن وو چې دوی په خپلو اړوندو ټولنو داسې واک چلاوه چې د ټولې د جرگې سره يې مشوره نه کوله. دوی د خپلو ټولنو ماشومان د غلامانو غوندې خرڅولی شول. د هزاره گانو بنځو يوازې د کور کار پر مخ وور او ماشومان يې زېږول. ځينې وخت دوی د خرو سره تبادله کېدې. ټول هزاره گان د فارسي ژبې لهجه چې هزاره کي نومېږي کاروي د دوی زيات ډېرکي شيعيه مذهب او لږ يې سنيان دي. د دوی مشران تل په خپلو منځو کې جگړې کوي او د خپلو سني گاونډيو سره د دوی اړيکې ترينگلې وي. د هزاره گانو د شمېر په اړه راپورونه ډېر غټ دي. د نولسمې پېړۍ په دوهمه نيمه اي کې د ټولو هزاره شمېر نيم ميليون او د هزاره جات شمېر ۳۴۰۰۰۰ کورنۍ ښودل شوی دی.

د هزاره گانو اصل

کاکړ وايي چې هزاره گانو په افغانستان کې د ديارلسمې پېړۍ د لومړۍ نيمايي را هيسې ژوند پيل کړی دی. تر دې وروستي مهاله دا باور شتون درلود چې دوی د چنگېز خان د پوځ د نسل نه پاتې دي، لکه د نورستان د خلکو په اړه ويل کېدل چې د ستر سکندر د پوځ د نسل نه پاتې دي. خو دا باورونه سم نه دي. چنگېز خان خپلې قواوې وروسته له دې زر وايستې چې خپل کمپاين يې بشپړ کړ. دا يو څه وخت د ده د مړينې وروسته و، چې بيا د ده امپراتوري د ده زامنو تر منځ ووېشل شوه، د منگوليانو قواوې د افغانستان په څر ځايونو کې په ځانگړې توگه د هزاره جات په لال اوکرمان، د هرات په بادغيس او د ترکستان په اشکاشم او تخار کې خپلې کېږدې ودرولې. دوی څرخايونه وټاکل تر څو وکولی شي خپل کوچي ژوند جاري وساتي. دوی د اس سپرو د پوره مهارت په لرلو سره د دې ځايه په مطلق ډول واکمني کوله او په کال کې به يې ځينې وخت او يا څو واړه درانه مالیه د کليوالو خلکو نه چې پاتې وو، ټولوله.

منگوليانو د خلکو مرکزونه د منځه وړل او اوسېدونکي يې په ډله يزه توگه وژل. په دغه وخت کې چې د تاجکو نه يې ښارونه پاک کړل، د کليو پښتانه په زيات شمېر د شمالي هندوستان په لور وخوځېدل. پرعکس منگوليان او ترک- منگول په زيات شمېر افغانستان ته ننوتل. د پوځ هرې قطعې چې هلته يې کېږدې درولې وې، د زرو کسانو نه جوړه وه چې په پارسو کې ورته هزار وايي. گام په گام دغو ميشته شويو خلکو ته د هزاره نوم وکارول شو او هغه ځمکه چې دوی ورباندې ميشته وو، د هزاره جات په نوم ياده شوه.

داسې ښکاري چې د هزاره جات اوسېدونکي په زياته اندازه د چغتايي منگولو نه جوړوي. همدارنگه نور منگول او ترک- منگول هم د چغتايانو سره يو ځای شوي او دا هم شونې ده چې په خراسان کې دايلخانيانو ياغي قواوو هم په هزاره جات کې پناه موندلې وي. کله چې تيموريان بېرته سمرکند ته راستانه شول وروسته د کود تيمور او د هغه د زوی شاه رخ ميرزا د واکمنۍ لاندې دې سيمې ته قواوې او اداري مامورين استول شوي چې ممکن ځينې يې هلته پاتې شوي وي. په دې توگه دا څرگنده ده چې هزاره منگول د منگوليا د قواو زوزات دي، چې زياتره يې چغتايي دي چې افغانستان ته په بيلو بيلو وختو کې د ۱۲۲۹ څخه تر ۱۴۴۷ پورې ننوتلي دي. يوې انټروپولوژيکي څېړنې دا اړيکه تاييده کړې ده؛ د ډېبېټس د وينا سره سم د اوسنيو هزاره گانو ځانگړتياوې راښايي، چې د منځني اسيا منگوليان، چې د هغوی اوسني استازي منگول دي، بوريات، سويولي التايان او نور، اوپه لږه اندازه کرغېز اوکازاک د هزاره گانو په جوړښت کې داخل شوي دي. ۳۱۸

شپاړسمې پېړۍ ته نږدې هزاره جلا خلک و، چې په اوسنۍ سيمه يا هغې ته نږدې ميشته وو. اصلي منگول يا تاتار، چې په هزاره جات کې ميشته وو، نارينه جنگيالي وو، شونې ده چې دوی سره بنځې نه وي. ويل کېږي چې دوی بنځې د تاجکو نه لاس ته راوړې، چې دوی ورسره گډ (مخلوط) شول. د دوی دا شريکوالی د دغو او کاوندیو تاجکو سره د دې لامل شو چې دوی گام په گام ترکي او منگوليایي بيان په [هزاره کې] پارسو بدل کړي. هزاره گانو گام په گام د اصلي ايرانيانو کلتور خپل کړ. نن ورځ هزاره گان د تاجکو، پښتنو او په عمومي توگه د قفقازيانو د پېژندلو وړ ځانگړتياوې لري.

هزاره گان چې د هزاره جات په مرکزي لورو مځکو کې اوسېدل په داسو سيمو چاپېر وو چې په هغو کې پښتانه، تاجک، ازبک او ايماق اوسېدل. دوی د خپلو کاوندیانو سره دوستانه اړيکې نه درلودې. لاملونه يې راز راز وو لکه د دوی فيزيکي بڼه، د دوی مذهبي توپير او هزاره کې لهجه. دغه توپيرونه د دوی خپلمنځي او کاوندیو سره د ټکرونو لامل کېده. دوی د خپلو ټولو کاوندیو قومونو له خوا تر ظلم او فشار لاندې وو. دا ظلم هغه مهال پيل شو چې د منگول ځواک مخ په ځور شو او داسې وضع منځ ته راغله چې د دوی کاوندیانو دا ورتيا وموندله چې دوی د خپلو څرخايو نه وباسي او دوی په اوسنۍ لوره مځکه کې چاپېر کړي.

د امير شيرعلي خان تر واکمنۍ پورې ازبکو او ترکمنو هزاره گان غلامول او په ترکستان او په منځنۍ اسيا کې يې پلورل. د دايکندي، دايژنګي او شيخ علي هزاره گانو د کندوز واکمن مير مراد علي ته هغه وخت مريان لېږل چې دوی يې د واک لاندې وو. چارایماقو د هزاره گانو سره تل دښمني درلوده فيروز کوه يانو دوی مريانول او په بخارا کې يې خرڅول. جمشيديانو هم په لږه اندازه د نولسمې پېړۍ تر پايه پورې هزاره گان غلامول خو وروسته د حکومت د فشار له امله يې د دې کار ورتيا د لاسه ورکړه. روسي واکمنو په پنجدې کې د هزاره گانو د پلورلو مخنيوی کاوه.

هزاره گانو د غلزيو پښتنو سره د ملګرتيا اړيکې درلودې او د اتلسمې پېړۍ په پيل کې هزاره گانو يوه پوځي ټولګي د شاه محمود هوتک سره د پارس په کمپاين کې ملګرتيا کوله. خو د دوی او نورو پښتنو اړيکې د څر ځايونو او کرنيزې مځکو پر سر ترينګلې شوې. پښتنو هزاره گان غلام کړي نه دي خو د دوی مځکې يې نيولې دي.

د کندهار درانيان چې د دوی نه هم شتمن وو او هم په شمېر کې ورته زيات وو د هزاره گانو د مځکو په نيولو پيل وکړ. په ترينکوټ او دهر اووت کې د مخه او هم د تيمورشاه د واکمنۍ په مهال د پوليزيو او نورزيو له خوا د دوی مځکې ونيول شوې. د هزاره گانو اړيکې

د تاجکو سره دومره ترينگلې نه وې ځکه چې دوی په يوه ژبه غږېدل او په ځينو ځايو کې څنګ پر څنګ سره اوسېدل.

په عمومي توګه د هزاره ګانو او نورو ګروپونو تر منځ اړيکې کمزورې وې ځکه چې هزاره ګانو او په ځانګړې توګه د شيخ علي هزاره ګانو کاروانونه او سوداګر شوکول. هر وخت خو په ځانګړې توګه کله چې به په کابل کې حکومت کمزوری و لږو کسانو زړه کولو چې هزاره جات ته لار شي. کوچيان به د پښتنو په سيمو کې پاتې کېدل او کاروانونو به دا ښه ګڼله چې د اوږدې لارې يانې د اونی او عراق درو نه باميان ته لار شي. د غوربند د درې لاره چې د شيخ علي هزاره ګانو نه تېرېده په زور او يا د پيسو په ورکولو سره خلاصه وه. دا وضعه تر ۱۸۸۱ کال پورې وه تر څو امير عبدالرحمن په امر د شيخ علي هزاره ګان په ټوليزه توګه د افغانستان نورو برخو ته ولېږدول. امير داسې ځکه وکړل چې دوی شوکونه کول او د امير په وړاندې يې د سردار محمد اسحق خان نه ملاتړ کړی وو.

هزاره ګانو يو بل جدي تړی وکړ هغه دا چې د برتانويانو په لمسون د افغان- انګليس د دوهمې جګړې پر مهال چې سنجان په کابل کې د برتانوي پوځ پر ضد په جګړه بوخت وو، دوی په غزني بريد وکړ او هغه يې چورکړ. په ځانګړې توګه د جاغوري او نورو سيمو هزاره ګانو د غلجيو پر ضد د جنرال ډونالد ستوارت سره چې ۱۸۸۰ کال د اپريل په مياشت کې د کندهار نه کابل ته په لاره و، همکاري کوله. د غزني د سوويل په احمد خيلو کې تر څوارلس زرو نه زيات غلزيان او نور د انګرېزي څلور زريز پوځ سره په جګړه بوخت وو او نږدې وو چې هغوی تباہ کړي. خو په پای کې انګرېزانو د ښو وسلو او دسپلين په مت زر تنه سړي ووژل. وروسته غلزي وټنېدل او هزاره ګانو د دوی کورونه لوت او ښځې يې سپکې کړې.

تاريخي لرليد

د کاکړ د څېړنې له مخې محمد ظهير الدين بابر د شپاړلسمې پېړۍ په لومړيو کې کله چې د کابل واکمن و په هزاره جات يرغل ونه کړ خو هغه د پنځلسمې پېړۍ په پای کې د باميان نه تېر شو. وروسته له هغې په هر حال باميان ته د هزاره جات د برخې په توګه نه کتل کېدل. خو باميان ته د يوه مهم نښلونکي مرکز په توګه چې د اکسوس رود او اندوس رود او هزاره جات يې سره نښلول د هغه د ځای ناستي امپراتور شاه جهان د سفرونو له پاره لږ او ډېر پراښستی و. که څه هم شاه جهان په هزاره جات يرغل وکړ خو بريالی نه شو. د پارس صفوي امپراتور لومړی شاه عباس په هزاره ګانو اغېز وکړ او په دوی

باندې يو مشر وټاکه. دا شايد دا مهال و چې هزاره گانو خپله عقیده د شامانيزم نه د اسلام شيعيه عقيدې ته په بدلولو پيل وکړ. خو دا چې هزاره گانو نوې عقیده څنگه تعقيب کړه او کله دوی تکیا خانې د مذهبي مراسمو د مرکز په توگه وکارولې مالومه نه ده. ويل کېږي چې د اتلسې پېړۍ په لومړيو کې نادرشاه افشار هزاره گان مطيع کړل او يو شمېر يې د دايژنکي او دايکندي نه د هرات بادغيس ته انتقال کړل چې د جمشيدې قوم په وړاندې انډول وساتي.

د امير عبدالرحمن نه د مخه افغان واکمنو د هزاره جات ځينې سيمې د خپل کنترول لاندې راوستې وې. د احمدشاه دراني په واکمني کې د غزني د محمد خواجه او جغتو هزاره گانو دولت ته ماليه ورکوله. احمدشاه دراني دروېش خان هزاره چې سني مذهبه و، د هرات والي وټاکه. هغه شايد هغه وخت د هرات د قلعه نو د هزاره گانو مشر و. هغه په پای کې د احمدشاه بابا سره خيانت وکړ او د هرات د والي له مقام نه ايسته شو. د امير دوست محمد خان د واکمنۍ پر مهال د بهسودو هزاره گانو چې د کابل سويل لويديځ کې پراته دي د حکومت حاکميت لاندې وو. د امير نامتو گورنر حاجي خان کاکړ و چې د هغه په خپله وينا د باميانو نه ۱۲۰۰۰ روپۍ او د چارلس ماسون د وينا له مخې ۱۵۰۰۰ روپۍ ماليه لاسته راوړې وه. د امير شيرعلي خان په وخت کې د بلخاب، شيخ علي، دايژنکي، دايکندي او جاغوري هزاره گان ارام شوي وو. که څه هم د پخوا غوندې پر دوی خپلو ميرانو واک چلاوه، چې حکومت ته د ماليې د راټولولو مسؤليت يې په غاړه وو. د امير عبدالرحمن د واکمنۍ پر مهال هزاره جات د دولت تر کنترول لاندې راغی.

په ۱۸۹۰ کال کې امير سردار عبدالقدوس خان د شيرغان او همدارنگه د باميان د والي په توگه وټاکه او دا واک يې ورته وسپاره چې تر اوسه ازاد هزاره گان په هزاره جات کې ارام کړي. په دې وخت کې امير د هزاره گانو ۴۵ ميران د هزاره جات د بيلو بيلو سيمو نه دعوت کړل چې د شرطونو پرته مرکزي حکومت ته اطاعت وکړي. خو هزاره گانو ادعا وکړه چې دوی امير بللي وو چې دوی ته به کورنۍ خپلواکي ورکوي او د زياتو کلونو دپاره به د ماليې نه معاف وي. خو رشتيا دا دي چې دوی د امير سره هوکړه وکړه چې د مرکزي حکومت نه به اطاعت وکړي. د ۱۸۹۱ کال په پسرلي کې سردار عبدالقدوس خان د يوه پوځ او قومي اړيکيو د دايژنکي، دايکندي او بهسودو هزاره گانو په گډون چې شمېر يې لسو زرو ته رسېده بدرگه کېده، هزاره جات ته داخل شو. سردار محمد اعظم خان هزاره او مير محمد ايلخان هزاره د هزاره گانو قومي اړيکيو مشري کوله. هزاره جات ته د پوځ داخلېدل د ځای په ځای سپک مقاومت سره سره په اسانۍ تر سره شو.

د هزاره گانو پاڅون

کاکړ وايي چې د ۱۸۹۱ کال په ژمي کې هزاره گانو د ځينو لاملونو له مخې پاڅون وکړ. لومړی لامل يې دا وو چې د دوی وسله ضبط شوه. د يوه واحد مرکز د نشتوالي له امله پوځ په بيلو بيلو ځايو کې ځای په ځای شو او له دې کبله د بريدونو لاندې راغی. د داسو بريدونو د مخنيوي په موخه امير امر وکړ چې هزاره گان دې يې وسلې شي. ځينو هزاره گانو وسله تسليم کړه او ځينو نورو تسليم نه کړه. هغه وسله چې راټوله شوې وه کابل ته ولېږل شوه. هزاره گانو دې کار ته د حکومت د ژمنې د ماتولو په سترکه کتل چې د وضعې د نورمال کېدو وروسته به د دوی وسله بېرته ورکول کېږي. دوهم لامل هغه لمسون و چې سرتېرو به د مالې د راټولولو په وخت کې په واده شويو او ناواده شويو ښځو يو شان جنسي تېری کاوه او هغه کسان چې وسله يې نه تسليموله شکنجه او وژل. سردار عبدالقدوس خان دغه سرتېري د دې کار نه راگرځولی نه شول او په خپلواکه توگه يې عمل کاوه. په دې کمپاين کې په عمل کې دی د هغو لومړنيو کسانو نه و چې د هزاره ښځو سره يوځای شوی وي.

په يوه کوښښ کې امير د هزاره گانو د ځواک د ماتولو په موخه امر وکړ چې د دوی ميران او مذهبي مشران دې د دوی د ټولنو نه بيل شي او په کابل کې دې مخکې ورکړل شي. دا امر پوره پلي نه شو ځکه چې دغه کار د هزاره گانو همداسې د ميرانو او سيدانو په منځ کې دا وېره پيدا کړه چې دوی د خلکو د شمېر دريمه برخه جوړوي زيات نفوذ لري. که څه هم ميرانو د مستبدينو په توگه کړه ترسره کول او د دوی ماشومان يې د غلامانو غوندې خرڅول او په ځينو ځايو کې د دوی مخکې خپلولې. ځنګه چې د هزاره گانو په ټولنو کې د شعور کچه ټيټه وه نو د مذهبي او سيکولر کړوږونو بيلولو پاليسی د ټولنو وکړي عمل ته لمسول. که څه هم هغه وخت چې دولتي پوځ هزاره جاتو ته ننوت د هزاره خلکو ورسره جکړه ونه کړه خو وروسته د دولت پوځ چې په دوی ظلم کولو هزاره گان د خپلو ميرانو او سيدانو تر شا ټينګ ودېدل.

د دغه ظلم په پايله کې په ارزگان کې د سلطان محمد طايښ هزاره گانو وروسته د يو شمېر سرتېرو د مړينې وروسته د خپل ځواکمن مشر محمد حسين بېګ په مشرۍ پاڅون وکړ. زر نور هزاره گان د دوی سره يوځای شول، د پاتې پوځ په شړلو او وژلو چې په هزاره جات کې ټيټ او پرک پراته وو پيل وکړ. ورپسې يې د افغانستان د دولت پر ضد د جنگ او غزا اعلان وکړ. سردار عبدالقدوس خان چې د څلور زره پوځ سره په گېزو کې پروت و

کلات ته غلزيانو ته وتبښتېد او هزاره گانو نږدې شپږ زره پاتې پوځ او نور ووژل. د هزاره گانو پاڅون د سني او شيعيه مذهبونو تر منځ دښمني نوره زياته کړه او د دواړو خواوو ملایانو د دوی خپل مذهبي خلک لمسول. علمانو امير ته فتوه ورکړه چې هزاره گان کاپر او ياغيان دي او مرگ يې روا دی. دوی په خپلو فتوو او وعظونو کې دا موضوع تبليغوله او هغه سرټيري يې لمسول چې جگړې ته روان وو. او امير خپل ځان د اسلام امير باله. امير هغه مهال سرټيري د هزاره گانو د مال خپلولو ته ازاد پرېښودل، چې دوی يې مات کړل.

د هزاره گانو د مخکې ژمنه يوازې د درانيو او غلزيانو سره وشوه. د دې ټولو سره سره د هزاره گانو پر ضد دا دښمني عمومي نه وه. ۲۷۰۰۰ افغانان چې د دوی په گاونډ کې اوسېدل د رپوتونو له مخې د امير پر ضد د هزاره گانو سره يوځای شول. کابل ته نږدې د کوهستان اوسېدونکو د امير پر ضد د پاڅون مشران تشويقول. د ميمې مير چې دا وخت يې بلوا کړې وه د هزاره گانو څخه ملاتړ اعلان کړ. د مېرمن هامليتې په وينا چې دا وخت په کابل کې اوسېده، هزاره گانو د امير او انگرېزانو ناسپېڅلی اتحاد تبليغاوه.

هزاره گانو، لکه چې د مخه مو يادونه وکړه چې د افغان- انگليس په دوهمه جگړه کې د انگرېزانو خوا نيولې وه، هيله درلوده چې انگرېزان به د امير په وړاندې د دوی سره مرسته وکړي. دوی دا ځل بيا د انگليسانو نه غوښتنه وکړه چې د دوی سره په اوسنۍ مبارزه کې مرسته وکړي. دواړو خواوو د خپلو جگړه يزو دريځونو د سپينوي له پاره مذهب ته پناه يوره. دوی دواړو د سني او شيعيه مذهب نه د گټې اخېتې په منظور د خدای، د پېغمبر، علي او د اسلام په نومو خلک جگړې ته لمسول.

پاڅون په هزاره جات کې زر پراخ شو، سره له دې چې هزاره گان تر هر بل وخت نه ډېر متحد وو، بيا هم دوی په بشپړه توگه يو لاس نه وو. د دوی په چاپېر کې واړه قومونه: چاردرسته، جاغوري، جغتو او محمد خواجه د دولت ملاتړ کاوه. دا کار لکه د دايزانکي او بهسودو هزاره گانو يوې کوچنۍ برخې او يو شمېر دم کړی په ارزگان کې د کيزاو، او پنجاب خپلواکو ميرانو هم کړی و. هزاره گانو د عنايت خانکې د قاضي عسکر په مشرۍ، د سلطان محمود خانکې د خپل مشر محمد حسين بېگ او د دايزانکي د سه پای خانکې د سردار محمد اعظيم خان په مشرۍ سخته جگړه کوله.

امير په هزاره جات باندې د ټولو خواو نه سل زره پوځ او قومي اړيکي ورتوی کړل. ده پخوا هېڅکله دومره وړتيا نه وه موندلې چې دومره لوی پوځ او قومي ملېشا د دښمن په وړاندې وگوماري. د امير د پوځ مشري سپاسالار سردار غلام حيدر اورکزى، سردار

عبدالقدوس خان، جنرال شېر محمد او نورو کوله. څه جگړې د مخه شوې وې خو ټاکونکې جگړه په دایا، فولاد او ارزگان کې وشوه. په ارزگان کې جگړه پنځه ورځې اوږده شوه او پنځوس وړې جگړې د مخه تردې شوې وې چې هغه بیا ونيول شو. په بل پسرلي کې شمالي هزاره جات پاڅون وکړ چې دوی په جگړې کې ماتې وکړه. وروستۍ ټاکونکې جگړه چې د هلمند د رود په غاړه د دایکندي او دایزنګي تر منځ د دولتي قواوو او هزاره گانو تر منځ وشوه د دولت په بري پای ته ورسېده. په دې توګه په پای کې د ۱۸۹۳ کال په سپتمبر کې هزاره گان مات شول.

د هزاره گانو میشتېدل

د هزاره گانو د ماتې وروسته امیر کوشنېس وکړ چې د دوی ځواک مات کړي. دوی د اتنیکي ګروپ په څېر چې د شيعيه مذهب په څانګه پورې اړه لري، د هېواد لورو سیمو مخکې یې نیولې او یو مهم ځواک جوړولو، امیر دوی هېواد ته د یوه پوتنسیال خطر په توګه کتل. ده د دوی میران او په ځانګړې توګه مذهبي مشران د هزاره گانو او افغانانو دواړو دښمنان ګڼل. دغه دښمنان باید د هزاره گانو نه بېل او د هېواد په نورو سیمو کې میشته شي. ځنګه چې دولتي چارواکي بډې خواره وو، د هزاره گانو زیاتره میران د دې حکم لاندې رانه غلغل او د دوی پر ځای یې عادي هزاره گان کابل ته ولېږل. دوی یې په بگرام او د جلال اباد په نهر شاهي کې میشته کړل چې د امیر د مړینې وروسته دوی ته اجازه ورکړل شوه چې بېرته خپلو مخکو ته ستانه شي.

امیر هر هغه چا ته چې د هزاره جاتو په جگړه کې برخه واخلي، ژمنه وکړه چې دوی اجازه لري هزاره گان غلامان کړي او د دوی ملکیت لوټ کړي. د هزاره گانو زیات شمېر بندیان شول او دوی د غلامۍ د سوداګرۍ لاندې راغلل. د هېواد د بیلو بیلو سیمو نه سوداګر راتلل دوی یې د سرتېرو نه اڅېستل او په ګټه سره یې خرڅول. د هغه کال وچکالی هم هزاره گان اړ کړي وو چې خپل ماشومان د غلامۍ مارکېټ ته د خرڅلاو له پاره بوزي. دولت د هزاره گانو د خرڅلاو نه لسمه برخه مالیه او د جگړې ولجه شویو هزاره گانو پر سر پنځمه برخه مالیه راټولوله. یوازې په کندهار کې د داسې خرڅلاو مالیه اویا زرو روپو ته رسېدلې وه. د جاغوري قاضي دا اواز پورته کړ چې اسلام د مسلمانانو خرڅلاو منع کړی دی. وروسته له دې دا خرڅلاو منع شو. سره له دې تر ۱۹۲۰ کال پورې په مریټوب کې پاتې وو تر څو د امیر امان الله خان د پاچاهۍ پر مهال دوی د غلامۍ نه ازاد شول. امیر د درانیانو او غلزیانو نه وغوښتل چې په ارزگان کې میشته شي. ده دا اعلان هم

وکر هرڅوک چې غواړي په هزاره جات کې میشت شي لومړی کال به د ماليې د ورکولو نه معاف وي او په راتلونکې کې به لږه مالیه ور څخه اخیستل کېږي. دولت د هزاره جات څرخایونه دولتي ملکیت اعلان کړ او بیا یې په کوچیانو وپلورل. د هغو کسانو ځمکه چې په جگره کې یې ژوند له لاسه ورکړی او میراث خواره ورنه پاتې نه وو، ضبط شوه.

قزلباشانو چې دوی هم هغسې د شیعیه عقیده درلوده او د دوی سره یې خواخوږي درلوده هزاره گان یې لمسول او ویل یې «چې برتانویان امارت ته د پای ټکی ږدي او اوس هغه وخت رارسېدلی چې هزاره جات د امیر د لږزېدونکي دولت نه خپلواک شي. دولت بیا قزلباشان په دې هم ملامت کړل چې پخوا یې هم د انګرېزانو سره همکاري کړې وه او دوی یې هم د هزاره گانو غوندې اړ کړل چې یوازې سني اسلام پلی کړي. د دې موخې له پاره دولت قاضیانو او مفتیانو ته لارښوونه وکړه چې د ارزگان، عسکر اباد، مالیستان، اجرېستان، جاغوري، بهسود، کیزاو، یاګولنګ، بامیان، کاهمارد او سیغان ولسوالیو کې د هزاره گانو قانوني چارې د حنفي قانوني سیستم سره سم حل کړي.» ۳۱۹

امیر غوښتل چې په زور شیعیه مسلمانان سني مذهبه کړي چې په مذهبي لحاظ د افغانستان یووالی تامین کړي لکه صفویانو چې په شپاړسمه پېړۍ کې د پارس سنیان په زور شیعیه گان کړل. نادر افشار په اتلسمه پېړۍ کې نابریالی هغې وکړې چې شیعیه گان سنیان کړي.

د هزاره گانو ماتې دوی د پېړیو جلاتوب نه وژغورل. دوی وروسته د خپلو کاوندیانو سره ګډ شول او په ښارونو او په ځانګړې توګه په کابل کې میشته شول. د هزاره گانو سوداګریز پاتګي وده وکړه او ماشومانو یې زده کړې ته مخه کړه او دولتي ماموریتونه یې تر لاسه کړل. نن هزاره گان د کابل د اوسېدونکو د لیدو وړ برخه جوړوي.

د پخواني کافرستان فتح کول

کافرستان، د افغانستان په شمال ختیځ کې غرنۍ مخکه ده چې د څرخایونو ناوې، څه د کرنې وړ ځمکه، او تنګې درې چې په شنو ځنګلونو پټې دي لري، د پېړیو په اوږدو کې خپلواک پاتې و ځکه چې دې ځای ته لاس رسې ستونزمن و او اوسېدونکو یې په کلکه ورنه ساتنه کوله. امیر عبدالرحمن د خپلې واکمنۍ په لومړیو کې په کافرستان برید ونه کړ ځکه چې هغه هر چېرې بوخت و. ده د کافرستان مشرانو سره چې کابل ته د ده لیدلو له پاره راغلي وو پلرنی مینه وښودله چې د زیاتو کرکجنو د ښمنانو تر فشار لاندې راغلي وو. یوازې د ۱۸۹۰ کال په منځ کې چې روسیه او برتانیا د کافرستان پولې ته واورسېدل. روسي

پامير او انگرېزانو چترال ونيو. امير دغه وخت امر وکړ چې کافرستان فتح کړي. د کافرستان اوسېدونکي هندو اړين خلک دي چې خپله پخوانی عقیده او دودونه يې ساتلي دي. په عمومي توګه دوی جګې، نری ونې لري، ښايسته او جنگيالي خلک دي. ځينې يې شني سترګې او زېر وېښتان لري. د دغو او ځينو نورو ځانګړتياوو له کبله ويل کېږي چې دوی د ستر سکندر د پوځ نه پاتې دي خو هېڅ داسې شواهد نه شته چې دوی دې د يوناني اصل نه وګڼل شي.

کاکړ د دوی د خدايانو او عقيدو په اړه اوږد غږيږي او په زړه پورې مالومات وړاندې کوي او دی د دوی د قومي جوړښت په اړه پوره رڼا اچوي او ټولنيز جوړښت او اداره يې تشریح کوي. کاکړ همدارنګه د دوی اړيکې د خپلو ګاونډيو مسلمانانو سره څېړي او د هغوی د ژبې په اړه مالومات ورکوي، بيا د کافرستان په تاريخي لرليد غږيږي، همدارنګه د جنډول د خان عمرا خان او چترال د مهتر سره د دوی په اړيکو رڼا اچوي.

په اسمار کې د قواوو متمرکز کول کافرو ته د خطر نښه وه. امير سپاسالار ته لارښوونه وکړه چې د دوی وېره د خبرو اترو له لارې لرې کړي. د دوی سره د خبرو اترو موخه د موضوع د حل له پاره نه وه بلکې د دې له پاره چې د يرغل په وخت کې چترال ته لار نه شي تر څو ژمی راورسيږي. سپاسالار چې يوسفزی پښتون و د دوی د خبر اترو د پرمخ بيولو له پاره ډېر مناسب و. څنگه چې کافرو يو مرکز نه درلود سپاسالار د کافرو د بيلو بيلو ځانګو سره ګوښې ګوښې خبرې کولې. جدې خبرې د باشکل د درې د کام کافرو سره چې د چترال سره يې پوله درلوده وشوې. سپاسالار خپلې قواوې بريکوت ته بوتلې او د کام کافرو ته يې وويل چې د امير اطاعت وکړي، اسلام ومني او بدخشان ته د سرک د تېرولو سره مخالفت ونه کړي. دوی امير ته اطاعت ومانه خو د اسلام او د سرک جوړول يې نه غوښتل. بيا يې د سرک جوړول ومنل خو چې د سرک په جوړېدو پيل وشو دوی خپل نظر بدل کړ او د سرک د جوړولو سره يې مخالفت وښود او د هغه پر ځای يې د اسلام منلو ته غاړه کېښوده. خو د يرغل دپاره سرک ډېر اړين و.

خو خبرې خپلې موخې ته ورسېدې سخت ژمی راورسېد او دوی نه شواي کولی چې چترال ته او ان د خپلو درو لوړو برخو ته جګ شي او ستر يرغل پيل شو.

د ۱۸۹۵ کال په ژمي کې په کافرستان د هرې خوا د منظم پوځ او قومي اړيکيو له خوا يرغل پيل شو. د يرغل موخه دا وه چې کافر بايد په مطلق ډول تابع او اسلام ته راواوري. سپاسالار د باشکل په دره يرغل وکړ او د ۱۹۸۶ کال د جنوري په لومړيو کې وروسته له دې چې هلته يې يو ګارنيزون پرېښود اسمار ته راوکرځېد. مقاومت سپک و او يو شمېر

کافر چترال ته وتښتېدل. د منجان له لوري قواوو د پېچ او د هغې څنګ ته درې ارامې کړې. د رامکل او کولم کافر چې د کافرستان د ننه برخه کې اوسېدل په خپل مذهب ټينګ ودرېدل او په دوی بری ستونزمن شو. په پای کې د ۱۸۹۶ کال په ژمي کې بری تر لاسه شو او دواړو خواوو ته دروند د سر زیان ورسېد او د کولم په رانسکورېدو سره جګړه په بري پای ته ورسېده.

د نورستان د باشگل په دره کې سرک د امير عبدالرحمن په امر په اصل کې په دې موخه جوړ شوی و، «چې که روسان وغواړي پر هندوستان برید وکړي، د اصلي افغانستان پر ځای دغه لنډه لار غوره کړي.» ۳۲۰

جوړ جاړی او اسلام ته اوښتنه

د يرغل سره سم اسلام ته د کافرو اوښتنه پيل شوه. وسله وال سني ملايان چې ابو حنيفه د سيستم د لارې پلويان وو، چې د وسله والو خصه دارو له خوا يې سانته کېده دنده ورکړ شوه چې کافر د اسلام دين ته واړوي. په ټولو کليو کې جوماتونه جوړ شول چې کافرو ته په کې د اسلام اساسات ورښودل کېدل. دوی هغه د لرکيو جوړ بتان راټول کړل او جلال اباد او کابل ته يې ولېږل چې هلته بيا يې درکه شول. هلته او دلته د څو بدرنگو ټکرونو پرته اسلام ته اوښتنه په ښه توګه ترسره شوه. د امير د حکم سره سم هېچا نه شو کولی چې د دوی په ملکيت تېری وکړي او يا دوی غلامان کړي. قاضيان او حاکمان وټاکل شول چې د دوی چارې تنظيم کړي او يو غونډ پوځ هلته مېشت شو. د کافرو څلورمه برخه چې د يرغل پر مهال يې مقاومت کړی وو، د مرکزي نورستان نه وايستل شول او په پغمان کې مېشته شول. دوی ته هم د هزاره گانو غونډې اجازه ورکړه شوه چې بېرته خپل ټاټوبي ته راوکړي. نږدې لس زره کافر اردو ته شامل شول. کافرستان لومړی په نور الاسلام او بيا د نورستان په نوم ياد شو او اوسېدونکي يې نورستاني ياد شول. په دې ترتيب دوی يو نوی هويت تر لاسه کړ او د پېړيو جلاتوب نه وژغورل شول. هلته په درو مهمو درو کې سرکونه جوړ شول چې مهم يې د اسمار او بدخشان تر منځ سرک و. دا سرک د سوداګرو له خوا د درې کالو له پاره په وړيا توګه کارېده.

د کافرستان سوېې د افغانستان د ننه او په برتانوي هند، انگلستان او روسيې کې سخت غبرګونونه منځ ته راوړل. د افغانستان خلکو امير وستايه او په نورو درې هېوادو کې رسنيو او ځينو مسيحي ټولنو خپلې انډېښنې څرګندې کړې او په خپلو اړوندو هېوادو يې زور واچاوه چې امير په خپل هېواد پورې د کافرستان د تړلو نه ډډې کولو ته اړ کړي.

خو د دوی دا هڅې چې خپل حکومتونه عمل ته وهڅوي ناکامې شوې. په دې توګه امير په نورستان خپله واکمني ټينګه کړه.

د برتانوي هند د حکومت سره د امير عبدالرحمن اړيکې

کاکړ د خپل کتاب «د افغانستان سياسي او ډيپلوماټيک تاريخ (۱۹۰۱-۱۸۶۳)» لسم څپرکي دې موضوع ته ځانګړی کړی دی. ستره بریتانیا لومړی اروپايي هېواد و چې د افغانستان سره په تړاو کې راغی، خو د دوی تر منځ اړيکې زيات وخت دښمنانه وې. بریتانې دو ځله لومړی په ۱۸۳۸ او بيا په ۱۸۷۸ کال کې په افغانستان يرغل وکړ، خو د هغه په ایلولو کې پاتې راغله. خو هغه په دې بريالی شوه چې د خپل دوهم يرغل په پایله کې د افغانستان بهرنی سیاست د خپل کنټرول لاندې راوړي او همدارنګه یې مرسته وکړه چې د افغانستان نړيوالې پولې کړه او وټاکل شي. دغه مرحله چې د کتنې لاندې ده د انګلیس-افغانستان د بهرنیو اړیکو مهمه بڼه جوړوي.

د افغانستان او بریتانیا تر منځ لومړی رسمي تړاو په ۱۸۰۹ کال کې منځ ته راغی کله چې د بریتانیا پلاوی د مونټسټیورات الفنسټون په مشرۍ، چې د ختیځ هند د کمپنی استازی و، د افغانستان د واکمن شاه شجاع سدوزي سره په پېښور کې، چې د هېواد ژمنی پلازمینه وه، تړون لاسلیک کړ. د دې تړون له مخې چې د ۱۸۰۹ کال د جون د میاشتې په اوولسمه نېټه وشو، افغانستان ژمنه وکړه چې فرانسویان به نه پرېږدي چې افغانستان ته ننوزي او دواړو هېوادو ژمنه وکړه چې یو دبل په کورنیو چارو کې به لاسوهنه نه کوي. که څه هم شاه شجاع زر د تخت نه ولوېد خو دا تړون د راتلونکو شلو کلو له پاره د انګلیس-افغان په اړیکو کې پل پاتې شو.

په ۱۸۳۰ کلونو کې بیا د روسیې وېرې برتانوي هند ته ټکان ورکړ. په ۱۸۲۸ کال کې د ترکمانچي تړون په پایله کې د پارس د تهران په دربار کې روسیې د بریتانې د نفوذ ځای ونیو. افغانستان د کابل، کندهار، هرات او پېښور په څلورو ولایتونو بیل شوی و. دې د انګلیس حکومت دې پایلې ته رسولی و چې د پارس روس پلوی پاچا فتح علي شاه نیت لري چې په هرات او کندهار خپله ولکه ټينګه او افغانستان تر خپل نفوذ لاندې راوړي. بریتانیا دا په هند کې خپلو ګټو دپاره خطر ګاڼه. ګورنر جنرال اوکلنډ په افغانستان کې د روسیې د نفوذ د ودې په وړاندې د دې خطر د مخنیوي له پاره مقابل غبرګون ته هڅاوه. د دې موخې دپاره لارډ اوکلنډ د کابل دربار ته د برنس په مشرۍ یو پلاوی راولېږه خو هغه په دغه

موخه کې پاتې راغی.

سره له دې چې روسې اعلان وکړ چې د هېڅ افغان مشر سره به سياسي اړيکې نه جوړوي د دوی په کورنيو جگړو کې او هم د دوی په کورنيو دښمنيو کې به برخه نه اخلي، بيا هم لارډ اوکلنډ په افغانستان د تېري پرېکړه وکړه. اوکلنډ دا اړينه کتنه چې د روسې له لوري په افغانستان باندې د متوجې شوي تېري مخه ونيسي نو بايد په افغانستان باندې د برتانيا پوځي تېري ته لار هوارې کړي. د دغه تېري د تيارولو له پاره اوکلنډ د پنجاب د واکمن رنجت سنگ او د افغانستان د نسکور شوي پاچا شاه شجاع سره يو تړون لاسليک کړ. د دغه تړون له مخې برتانيا په افغانستان پوځي يرغل وکړ او شاه شجاع يې د کابل په تخت کښېناوه خو واک د دوی په لاس کې و. شاه شجاع ډېر زر د افغانستان د خلکو په منځ کې خپل حيثت بابلود.

انگريزان خپلې موخې ته ونه رسېدل ځکه دوی په دې جگړه کې ۱۶۵۰۰ سرتيري او هندي نوکران له لاس ورکړل او امير دوست محمد خان د دوهم ځل له پاره د افغانستان خپلواک واکمن شو.

د دې وروسته برتانيا د افغانستان په کورنيو چارو کې د نه لاسوهنې سياست چلولو ته مخه کړه. په ۱۸۵۴ کال کې څنگه چې د اروپا په وضعه کې بدلون راغی برتانيا او امير يې وهڅول چې سره پخلا شي. په پای کې په ۱۸۵۵ کال کې د امير او برتانيا تر منځ تړون لاسليک شو چې د هغه له مخې افغانستان ومنله چې د برتانيا ملگري به ملگري او دښمنان به يې دښمن گڼي خو انگريزانو ورته ژمنه ونه کړه او يوازې يې دا ومنله چې د افغانستان په کورنيو چارو کې به لاسوهنه نه کوي. د دې تړون په اساس امير دوست محمد خان د پېښور نه چې د افغانستان برخه وه، تېر شو چې په ۱۸۴۹ کال کې انگريزانو نيولی و. دغه يو اړخيز تړون د انگريزانو له پاره په افغانستان کې د دوی لومړنی ډپلوماتيک بری و.

په ۱۸۵۷ کال کې د امير او برتانيا تر منځ دوهم تړون لاسليک شو چې لومړي ته ورته و. امير په خپله ژمنه وفا وکړه او د پېښور د بېرته لاس ته راوړلو ادعا يې داسې وخت ونه کړه چې په هند کې د همدې کال د اوړي پاڅون له مخې انگريزان د ستونزو سره مخامخ وو. انگريزانو د هرات د بېرته لاس ته راوړلو په موخه امير ته وسله او پيسې ورکړې چې پارس په ۱۸۵۶ کال کې يرغل پرې کړی و. همدارنگه د کابل او کلکتې تر منځ ډپلوماتيک استازو سره تبادله شول. د دغو تړونونو په پايله کې د افغانستان او برتانيايې تر منځ اړيکې د امير د ژوند تر پايه ښې پاتې شوې.

د امير د مړينې وروسته د امير شيرعلي خان د واکمنۍ پر وخت د افغانستان په وړاندې د انگليس پاليسي درې مرحلې لري: لومړۍ مرحله د ۱۸۶۴ نه تر ۱۸۶۸ پورې دوام کوي چې په دغه مرحله کې د دوی پاليسي بې پلوه وه. دوهمه مرحله د ۱۸۶۸ نه تر ۱۸۷۶ پورې د کومې ژمنې پرته د پخلاينې پاليسي او دريمه مرحله يو ځل بيا د فعال تېري پاليسي جوړوي.

امير شيرعلي خان د برتانويانو نه هيله درلوده چې هغه پاليسي به وپالي چې د ده د پلار سره يې پرمخ بيوله. سره له دې د افغان د کورنۍ جگړې په يون کې برتانوي په دې هيلې د پلويتوب سياست د بې پرېتوب په نامه چلولو چې د هغه سيال، برتانوي پلوه ورور محمد اعظم خان تاسيس شوی حکومت، چې د انگلستان دوست دی، ټينګ شي. که څه هم امير شيرعلي خان تر دې وخته د برتانوي دوستي د روسيې په پرتله ښه گنله ځکه ده د خپل هېواد او پاچاهۍ بشپړتيا ته د روسيې د تېري نه وېره لرله. بيا هغه زيار وايست چې د برتانوي هند د حکومت سره د ملګرتيا اړيکې ټينګې کړي او په دې موخه يې د ۱۸۶۹ کال په لومړيو کې وروسته له هغه چې يو کال وړاندې د سپتمبر په مياشت کې په خپلو سيالانو بريالی شو، رسمي سفر وکړ. ده په اميله کې د لارډ مايو سره ليدنه وکړه خو هغه د امير له خوا د روسيې د خطر د غږ سره سره ونه خوځوه. برسېره پر دې لارډ مايو په ډېر ادب سره د امير شيرعلي خان د کورنۍ واکمنۍ په رسميت پېژندلو نه ډډه وکړه او يوازې يې د دوستۍ، مرستې او نه لاسوهنې په پالېسي ټينګار وکړ. همدارنگه هغه امير ته څه وسله او پيسې ورکړې.

د امير سفر برتانويانو ته دا چانس په لاس ورکړ چې سنت پېټرسبورګ دې ته رانږدې کړي چې په منځني اسيا کې د دواړو امپراتوريو تر منځ د بيلتون سيمه جوړه کړي. وروسته د يو شمېر ليکونو د تبادلې نه چې د لندن په نوښت کېدل، په پای کې په ۱۹۷۳ کال کې دوی يوه پوهاوي ته د افغانستان د شمالي پولې په اړه چې د امورود به وي، سره ورسېدل. په واقعيت کې د امورود د هغه راهيسې د افغانستان پوله وه چې احمدشاه بابا د اوسني افغانستان بنسټ کېښود او اوس دوو سترو امپراتوريو په رسمي ډول دا ديوې نړيوالې پولې په توګه ومنله، خو افغانستان د برتانوي نفوذ په سيمه کې پاتې کېده. دا د ماهرانه غير فعالې پاليسۍ دوام و چې د امير شيرعلي خان سره يې مرسته وکړه چې تر لاس لاندې نيولې سمونونه پلي کړي.

کله چې سلزبري مارکيز بيا د ۱۸۷۴ په لومړيو کې د برتانوي هند دپاره د دولت سکرتر وټاکل شو نو دا ترتيب يې د هند د ساتلو له پاره پوره ډاډمن ونه باله.

د روسيې له لوري د اندېښنې سره سره سلزېري د امير شيرعلي خان سره د اتحاد پلوي نه و، که څه هم امير د لارډ مايو سره د ملګرتيا غوښتونکی و چې د هغه په مرسته يې يو غښتلی دولت چې غښتلی پوځ يې درلود جوړ کړ. خو سلزېري په هغه باور نه درلود او په پای کې د ۱۸۷۵ کال د جنوري په ۲۲ نېټه ده وایسرا ته امر وکړ چې د امير نه وغواړي چې په هرات او که شونې وي په کندهار کې برتانوي استازي ومني. په پای کې وایسرا نارټبروک د امير نه داسې غوښتنه ونه کړه. کله چې وایسرا دې پایلې ته ورسېد چې مارکيز جکرې ته ميلان لري هغه په ۱۸۷۶ کې برتانوي هند پرېښود.

په همدې کال کې کله چې بنجامين ډيزرايلي د انګلستان لومړی وزير شو هغه يوه نوې پالیسي ومنله چې د فارورډپالیسي په نوم مشهوره ده، چې مانا يې يرغل او نيواک دی. د پرمختګ د پالیسي پلي کېدل هغه وخت پيل شول چې د ۱۸۷۶ کال په پسرلي کې د لارډ نارټبروک پر ځای لارډ ليټن د برتانوي هند وایسرا وټاکل شو. ليټن غوښتل چې د امير شيرعلي خان سره دفاعي او يرغليز اتحاد وکړي او همدارنګه د هغه وارث په رسميت وپېژني. د دې په بدل کې ليټن غوښتل چې امير د خپل هېواد د بهرنۍ ازادۍ نه تېر شي او د پولې په اوږدو کې د برتانوي افسرانو ځای پرځای کول ومني. د ښکاره دلایلو له مخې امير دا وړاندیزونه ونه منل. د پېښور کنفرانس چې د ۱۸۷۷ کال په مارچ کې چې د امير او ليټن د پلاويو تر منځ جوړ شوی و، ناکام شو. د عثماني سلطان له لوري يو پلاوی چې د ۱۸۷۷ کال په دسمبر کې امير ته راغی هڅه وکړه چې هغه د روسانو نه ليرې کړي او هغه تشويق کړي چې د انګرېزانو سره يو تړون وکړي ناکامه شوه.

د ۱۸۷۸ کال په اګست کې روسي ګورنر جنرال کاوفمن په تاشکند کې د جنرال ستوليتوف په مشرۍ يو پلاوی په کابل کې په امير وټپلو. ستوليتوف د امير سره تړون وکړ چې اصلي منځپانګه يې هېڅکله ښکاره نه شوه. خو روسان په خپله ژمنه ولاړ نه و او يوازې يې د دې دپاره وکړه چې انګرېزان ودروي چې په افغانستان کې ترينګلتيا ده او دوی بايد خپل هندي پوځونه د مالټا نه وباسي چې دوی د عثماني ترکيې د ملاتړ په موخه هلته لېږلي وو چې روسيه په جکره ورسره بوخته وه.

د روسيې پلان کار وکړ، دې کار ليټن ته پلمه په لاس ورکړه چې د خپل پلان له پاره په لندن کې د کابينې ملاتړ وکړي او په افغانستان کې خپل کره ترسره کړي. لومړی هغه کوشنې وکړ چې د نيول چمبرلېن په مشرۍ يو پلاوی په امير وټي خو کله چې د خيبر په دره کې هغه ته اجازه ور نه کړل شوه چې د پولې نه تېر شي هغه د ۱۸۷۸ کال په نومبر کې د افغانستان سره د جکرې اعلان وکړ. امير شيرعلي خان د يرغل نه لږ وروسته مړ شو. د

هغه زوی او ځای ناستي امير محمد يعقوب خان د لیږن ټولې غوښتنې ومنلې چې د هغه د پلار نه یې غوښتې وې او یو څو نور هم ورباندې زیاتې شوې. دا ټولې په هغه تړون کې ځای شوې چې په گندمک کې د برتانوي استازي کيوگناري او امير يعقوب خان تر منځ په ۱۸۷۹ کال د می د میاشتې په ۲۶ مه لاسلیک شو.

د دې تړون سره سم د برتانوي سفارت چې کيوگناري یې مشري کوله د کابل په بالاحصار کې د ۱۸۷۹ کال د جولای په ۲۴ مه د امير مانی ته نږدې استوگن شو. کيوگناري په افغانستان کې د یوه ټاکل شوي واکمن په څېر چلند کاوه. د ۱۸۷۹ کال په سپتمبر کې د کابل خلکو او پوځ د سفارت ټول غړي کيوگناري، جینکینز، کيلي، هاملتون او پنځه اویا سپاره اوبلي ساتونکي په ډله ییزه توگه ووژل. د دې وروسته زر برتانوي د دغه ډله یيزې وژنې په غبرگون کې په افغانستان بیا یرغل وکړ. د جګړې په دوهمه مرحله کې لیږن د افغانستان د ټوټې کولو پلان ترلاس لاندې ونيو چې ناکام شو او افغانستان د امير عبدالرحمن خان په واکمني کې بیا متحد شو.

د افغانستان د پولو ټاکنه

د کاکړ په وینا د امير عبدالرحمن د واکمنۍ بله مهمه ځانګړتیا د افغانستان د پولو د ټاکلو بشپړیدل دي. په دې اړه باید دا یادونه وشي چې د افغانستان د پولو بیلې برخې په بیلو مهالونو کې د برتانوي هند حکومتي مامورینو، د تزاري روسیې، ایران او افغانستان له مامورانو سره په ګډه ټاکلې دي. په دې توگه د افغانستان د پولو ټاکل نړیوال ماهیت لري. د افغانستان د پولو په ټاکلو کې په لومړۍ درجه د برتانوي امپراتورۍ کټې په نظر کې نیول شوې دي او افغانستان تاوان کړی دی. د دیورنډ په هوکړه لیک سره افغانستان نږدې نیم شو چې اوس د پاکستان تر واکمنۍ لاندې دی. د پولو په دغه ټاکلو سره افغانستان له یوې خوا تر پخوا نه کوچنی شو خو د بلې خوا یې هغه د یوه هېواد په توگه مشخص او تثبیت کړ او د نړۍ نورو هېوادونو او نړیوالو موسسو هغه په رسمیت پېژندلی او اړیکې یې ورسره ټینګې کړې دي.

د افغانستان هغه پوله چې د احمدشاه بابا او د بخارا امير له خوا د طبیعي پولې په څېر لومړۍ ټاکل شوې وه هغه د افغانستان او بخارا تر منځ د نړیوالې پولې په حیث د امرود منل و. د امير شيرعلي خان په دوهمه واکمني کې په ۱۸۷۳ کال کې د تزاري روسیې او سترې برتانوي د حکومتونو د یوه پوهاوي په پایله کې د افغانستان او روسیې تر منځ دا پوله ومنل شوه خو وروسته لانجمنه شوه چې وروسته به رڼا ورباندې اچول شي.

د لوېديځ په لور د سيستان په برخه کې د افغانستان پوله ناکلې وه. سيستان په لرغونې زمانه کې د افغانستان خاوره وه او ساکا هم د لرغوني افغانستان خلک وو. کله چې افغانستان په ۱۷۴۷ کې خپلواک شو سيستان بيا هم د احمدشاه بابا د مهال راهيسې د افغان واکمنو د ولکې لاندې و. خو پارس د ژبې له نظره پر سيستان ادعا کوله او د امير دوست محمد خان د مړينې وروسته يې سيستان هغه مهال ونيو چې محمدي سرداران په خپل منځ کې په جگړې بوخت وو. خو امير شيرعلي خان چې دوهم ځل واکمن شو، هوډ وکړ چې د سيستان نه د پارسيانو لاس لند کړي. امير شيرعلي خان د برتانوي هند کورنر جنرال په شخصي غوښتنه د پوځي کړو نه ډډه وکړه او د هغه د منځگړي توب وړانديز يې ومانه. افغانستان او پارس د يو لړ خبرو اترو وروسته دواړو دغه وړانديز ومانه. برتانې برید جنرال گولډ سمیت د منځگړي په توگه وټاکه. گولډ سمیت د ۱۸۷۲ کال په اکتوبر کې خپله پرېکړه وکړه چې له مخې يې زموږ د هېواد ښېرازه برخه چې د خاص سيستان په نوم يادېده او د هلمند رود کيڼې خوا ته پراته وه، پارس ته او ښې خوا يې افغانستان ته ورکړه. په دې توگه انگرېزانو د گولډ سمیت د ناعادلانه منځگړيتوب پر بنسټ د افغاني سيستان ښېرازه برخه پارس ته وبخښله چې افغانستان ورباندې اعتراض وکړ او بيا يې د امير حبيب الله خان په وخت کې چې د هلمند رود خپله د تک لار د لوېديځ په لور اړولې وه په ۱۹۰۴ کال کې د ماکموهن د پولې په رابنکلو سره د هېرمند لوېديځې برخې پارس ته ورکړې. دغې پرېکړې نوې مسلې وزيږولې چې د قانوني پاچايې په لسيزې کې د موسی شفيق په وخت کې پرېکړه پرې وشوه او د سردار محمد داود د ولسمشرۍ په وخت کې سندونه سره تبادله شول.

د مخه مو يادونه وکړه چې په ۱۸۷۳ کې د تزاري روسې او د سترې برتانې د حکومتونو تر منځ د پوهاوي په پايله کې امو رود د افغانستان د شمالي پولې په توگه ومنل شو خو پوله د روسانو سره مشخصه نه شوه. خو د ۱۸۸۵ کال د مارچ په دېرشمه روسانو پنجدي چې د هرات برخه وه، په پوځي زور سره لاندې کړه. دې کار انگرېزان اندېښمن کړل په دې چې هرات ته خطر هندوستان ته خطر و. نو انگرېزانو د روسانو سره د افغانستان د پولو ټاکل جدي ونيول. په پای کې برتانې او روسې يو او بل ته د ډېرو ليکونو او تېلگرامونو په لېږلو سره هوکړه وکړه چې دغه کشاله دې په منځگړيتوب سره هواره شي. بيا يوه روسي- انگليسي پلاوي د افغانستان دغه پوله د امو رود له خيمابه تر ذوالفقاره پورې وټاکله. په دې توگه د افغانستان شمال لوېديځه پوله هم د برتانې او روسې د حکومتونو له خوا د افغانستان په تاوان وټاکل شوه. د بدخشان په برخه کې يانې د

افغانستان شمال- ختيځه پوله د روسانو په نظر ناپاکې وه، که څه هم دوی د ۱۸۷۳ کال په پوهواوي سره بدخشان د افغانستان سيمه منلې وه. روسانو په ۱۸۹۲ کال کې هلته هم تېری وکړ او په دغه ډول بدخشان تر خطر لاندې شو. دا مهال امير ته کرانه وه چې په دغې لرې سيمې کې د روسيې غښتلي پوځ سره مقابله وکړي هغه هم په داسې حال کې چې د هند واييسرا د ۱۸۹۲ کال په جولای کې د امير نه غوښتي و چې په پامير کې په خپل فعال چلند سره انگرېزانو ته ستونزې جوړې نه کړي. په ۱۸۹۳ کال کې د برتانيې د هند د چارو وزير واييسرا ته په يوه ليک کې څرگنده کړه چې مور په دې فکر يو چې اوس د دې وخت راغلی چې امير دې پرېکړې ته تيار کړو چې هرو مرو شغنان او روشن روسانو ته پرېږدي. هغه دا هم وويل چې برتانيا په هېڅ وجه حاضره نه ده چې د دغو سيمو په ساتنه کې له امير سره مرسته وکړي. څرگنده ده چې برتانيې نه غوښتل له پنبې سيندکوتې نه پورته د روشن او شغنان په سر له روسيې سره خبره ټينگه ونيسي.

بيا نو د ډيورنډ سره امير دوه هوکړه ليکونه اعلام کړل چې يو يې د افغانستان شمال- ختيځې پولې په اړه و. په دغه هوکړه ليک کې ويل شوي چې امير « ... په دې ډول موافقه کوي چې دی به ټولې هغه ناحيې (Districts) چې د ده له خوا په شمال کې [په ختيځ کې د ويکتوريا د ډنډ يا سرقول نه له امو سره د کوکچې د يوځای کېدلو پورې] نيولې شوې دي، خوشې کړي» ۳۲۱ او ټولې هغه سيمې چې د امو په سوويل کې پراتې دي او اوس د دوی په لاس کې نه دي، ده ته تسليم کړلې شي. په دغه هوکړه ليک سره د پنجه سين کوتی د افغانستان او بخارا تر منځ پوله شوه او بدخشان چې د افغانستان برخه وه دوه ځايه شو. واخان هم د افغانستان د حاکميت لاندې راغی. په دې توگه په ۱۸۹۵ کال کې د روس- انگليس يوه گډ کميسيون د افغانستان د نارسي استازي په گډون د روسيې، افغانستان، چين او برتانوي هند تر منځ پوله وټاکله او واخان ترانگه او افغان پامير چې د نړۍ بام بلل کېږي، د وخت د درې لويو امپراتوريو تر منځ د بيلتون د سيمې په توگه ومنل شوه.

بل هوکړه ليک د افغانستان د ختيځ-سوويل د پولې په اړه و چې د ډيورنډ د هوکړه ليک يا د کابل د کانونشن په نامه يادېږي او دا کرښه د بدخشان له بروغيل کوتل نه د ايران تر پولې يا تورو غرو پورې يو نيم زره ميله اوږده وه. امير عبدالرحمن د انگرېزانو په نېغ فشار او د روسانو په غير مستقيم فشار سره اړ شو چې دا هوکړه ليک ته غاړه کېږدي. خو ځايي خلکو هغه سمدلاسه په عمومي پاڅون سره رد کړ.

د همدغه هوکړه ليک له مخې د دغې کرښې د نښه کولو له پاره درې کميسيونو په کار

پيل وکړ. لومړی کمیسیون له خيبر نه، دوهم کمیسیون له کرمې نه، دريم کمیسیون د بلوچستان اېجنسی له سېپې نه او وروسته څلورم کمیسیون جوړ شو او په کار يې پيل وکړ.

کاکړ وايي چې د دغه هوکړه ليک په اړه لومړی خبره دا ده چې هغه هوکړه ليک (Agreement) يا کاونشن (Convention) دی، نه تړون (Treaty). تړون او هوکړه ليک يو شان مفهومونه نه دي. تړون د دوو هېوادونو تر منځ ژمنه وي، چې هغه بايد د هغو د لوړو ملي مجلسونو نه تېر شي، په داسې حال کې چې هوکړه ليک د يوې مسلې په اړه د دواړو خواوو تر منځ جوړه يا هوکړه ده. کاونشن د ټولنيز دود له مخې د استازو يا لويانو غونډې ته ويل کېږي، چې مفهوم يې تر هوکړې هم سست وي. دی زياتوي چې له همدې امله به وي، چې دغه هوکړه ليک په اصلي ليکنو کې يوازې په دغو نومونو ياد شوی او نه د تړون په نامه. له دې نه ښکاري چې دوی په هغه سره د افغانستان او برتانوي هند تر منځ د نفوذ سېپې په نښه کړي تر څو د يو او بل په نفوذي سيمه کې لاسوهنه ونه کړي. بله دا چې د هوکړه ليک متن يوازې انگليسانو تهيه کړی و، په داسې حال کې چې هغه بايد دواړه خواوو په کېده او اتفاق چمتو کړی وای. نو دغه شته متن چې د امير لاسليک نه لري، د اعتبار وړ کېدلی نه شي. په تېره چې د کرښې د نښه کولو په وخت کې افغان استازو د ځينو مهمو ټکو په سر مخالفت وښود. بله مهمه موضوع چې د هوکړه ليک اعتبار زيانمن کوي د مومندو موضوع ده. مومند په دغه هوکړه ليک کې ياد شوي نه دي، چې امير د هغو په اړه د نه لاسوهنې ژمنه کړې وي. له همدې امله و چې امير د ديورنډ د کرښې د په نښه کولو په مهال انگرېزانو ته ښکاره کړه چې ټول مومند د افغانستان خاوره ده. د سرپرسي سايکس په وينا د مومندو پوله تر ۱۹۲۶ پورې هېڅ په نښه شوې نه وه. ۳۲۲

د کرښې د نښه کېدلو په وخت کې د برتانوي هند مامورانو د هوکړه ليک د نقشې نه کار اخېسته او افغان مامورانو به د هغو نقشو له مخې کار کاوه، چې امير ورته ورکړې وې. خو دغو نقشو يو د بل سره توپير درلود او د دغه توپير له امله و چې دغه کار درې کاله وخت ونيو. په داسې حال کې چې اول فکر کېده چې هغه به د څلورو مياشتو کار وي. ډېر مهم د خيبر کمیسیون و، چې د نقشو د توپير له امله اول درې مياشتې وځنډېده او بيا د ۱۸۹۴ په ډسمبر کې د کمیسیون افغان غړي، سياسالار غلام حيدر څرخي او برتانوي افسر اوډني (Udny) له خوا له سره ونيول شو. خو دغه کمیسیون د باشگل درې او د مومندو په اړه په مقصد ونه رسېد. وایسرا د باشگل د درې نه تېر شو او د مومندو په وېشلو کې پاتې راغی. د وایسرا د اخطار په پايله کې امير مجبور شو چې په ۱۸۹۷ کال د

اپرېل په ۲۴ مه د ميتايي پوځي پوسته له سرتېرو نه خالي کړي. امير تر پايه د مومندو په اړه د ميتايي پوستې د خوشي کولو پرته برتانوي هند ته کوم امتياز ونه مانه. په خيبر کې هم يوه وره برخه هم بې نښې پاتې شوه او نور ټول له سپين غره نه تر چترال پورې په نښه شول.

د بلوچستان کميسيون هم چې دنده يې درلوده چې دا کرښه د پارس تر سرحده پورې په نښه کړي د ستونزو سره مخامخ شو. دغه د څلورو مياشتو کار څه باندې دوه کاله ونيول چې لامل يې هم د پلاوي د نقشو توپير و. د انگليس کميشنر ماکموهن او د امير استازي سردار گل محمد خان و. وروسته د واپسرا او د امير له خوا پوهاوی رامنځ ته شو او د دغې برخې د کرښې د نښه کولو کار پرمخ ولاړ. برتانوي هند د دې له پاره چې د کميسيون کار پرمخ ولاړ شي د پاه (Paha) کوتل افغانستان ته پرېښود. د بل کال د فبروري تر شپاړسې پورې له ډومندي نه تر چمن پورې د کرښې د په نښه کولو کار د دواړو خواوو په هوکړې سرته ورسېد. خو د خواجه عمران او چمن تر منځ کرښې په سر د دواړو خواوو تر منځ اختلاف پيدا شو او لانجه په پای کې واپسرا او امير ته ورسېده. واپسرا دا ځل هم د دې له پاره چې له چمن نه تر پارسه پورې د ليکې د په نښه کولو کار په مخ ولاړ شي، افغانستان ته يې د ايلتاز کارېز پرېښود. د ۱۸۹۵ کال په جون کې ماکموهن هند ته غوښتل شوی و او نور انگليسي ماموران د ۱۸۹۶ کال په جنوري کې سره ټول شول او د افغانانو سره په گډه د کرښې د په نښه کولو کار له سره ونيو او د همدغه کال په جون کې د دغې اوږدې ليکې وروستۍ مټه (پايه) د ملک سپاه غره د پاسه ودرول شوه.

د کرمي کميسيون د مخه له سيکارام نه تر لارام پورې د ليکې د په نښه کولو کار سرته رسولی و. دغه کرښه د ډونالډ او شيريندل خان په گډ کوښښ لږ و ډېر د ډيورنډ د هوکړه ليک له مخې ايستل شوې او د ۱۸۹۵ کال په منځ کې د په نښه کولو کار سرته ورسېد او د دواړو خواوو له خوا ومنل شو.

د وزيرستان کميسيون د ۱۸۹۵ کال په جنوري کې د ليکې د په نښه کولو کار پيل کړ. خو دغه کميسيون له انگليس افسرانو نه جوړ و. د برتانوي هند د واپسرا په وينا امير هغه ته جوته کړې وه چې دغه کار دې دوی په خپله ترسره کړي، بې له دې چې افغان ماموران په کې برخه ولري. د عظمت خان په وينا دغه کميسيون د وزيرو ملک ته د درې زره سرتېرو په زور ننوت او د گومل له رود نه لس ميله پورته په واڼه کې يې واپرول. خو انگرېزان په واڼه کې د وسله وال پاڅون سره مخامخ شول چې دغه پوځ د جنرال لاکهارټ

په قوماندانۍ دغه پاڅون وځپه. له هغه وروسته د کرنې د په نېشه کولو کار له ډومندي نه پيل شو او د درې پوځي ټولگيو په ملگرتيا له خوجه خضر نه د برمل او شوال له درې نه په سختو حالاتو کې په دغه کې بری ترلاسه کړ. له ډومندي نه تر لارام پورې د کرنې د ټاکلو نقشې او يادښتونه امير ته د هغه د منلو له پاره واستول شول، خو هغه پرې اعتراض وکړ او وپې غوښتل چې يو شمېر ځايونه د يو څو کولونو په گډون بايد د افغانستان وي، خو د هغه دغه غوښتنه ونه منل شوه او ورته څرگنده شوه، چې کومه هغه کرښه چې ښاغلي کينگ او ښاغلي اندرسن ټاکلې، وروستۍ ده او بدلېدلې نه شي. ۳۲۳ په دې توگه د ډيورنډ د کرنې په نېشه کولو سره د افغانستان د ټولو حدودو ټاکنه پای ته ورسېدله او افغانستان په دغه کار سره نه يوازې تر پخوا کوچنی شو، بلکې اصلي افغانستان يې هم له لاسه ورکړ.

کاکړ وايي چې د امير له پاره دا ډېره دردناکه وه چې خپلو خلکو ته يو زورواک او اوسپنيز امير و، خو د ډيورنډ د کرنې په موضوع کې يو بېچاره امير و. د دې ټولو خبرو سره سره د وخت په نظر کې نيولو سره د امير عبدالرحمن ونډه د اوسني افغانستان په جوړولو کې مهمه وه. ده تر هر بل افغان واکمن نه ډېر خپل وينې ژوند د دولتي نظام تنظيمولو او پياوړي کولو او د هېواد د خوندي ساتلو له پاره وقف کړی و، چې پایله يې دغه اوسنی افغانستان دی. په دې حساب دی د اوسني نوي افغانستان موسس کيږي، په داسې حال کې چې ستر احمدشاه بابا د معاصر افغانستان سر موسس و.

د ډيورنډ هوکړه ليک

د مخه مو يادونه وکړه چې د ختيځ په لور د امير پرمختگ د برتانيا د ۱۸۹۰ يمو کلونو د پرمختگ د پاليسۍ سره سمون نه درلود. د دغې پاليسۍ اساسي ټکی «علمي سرحد» (Scientific Frontier) و چې د هند په لوري د روسيې د پرمختگ يا د امير د مړينې وروسته د ننه په هېواد کې د ستونزو د منځ ته راتلو په صورت کې د کابل- غزني- کندهار کرنې چټک نيولو غوښتنه يې کوله. د پرمختگ د پاليسۍ پلي کېدو له پاره د هغو درو او په هغه خلکو د کنترول پراخول و چې په دغو درو کې پراته دي، چې علمي سرحد ته رسېږي. دغو ټولو دا اړينه کړه چې د برتانوي هند پوله د افغانستان سره تثبیت شي. د دغه هدف له پاره د برتانيې حکومت ډېر ليکونه د امير سره تبادله کړل او د نورو راز راز وسيلو په ذريعه يې تر درانه فشار لاندې ونيو.

د هغو تدابيرونو نه چې ونيول شول يو دا و چې د اوسپنې وړل راورول يې بند کړل چې

افغانستان د هزاره جات د جگړې له پاره ترې ټوپک جوړول او همدارنگه په هغو زياتو وسلو بنديز لگول و چې امير په اروپا کې رانيولې وې. ويسرا لئسډون امير ته وړانديز کړی و چې په کابل کې د دوی استازی لارډ روبرټس ومني چې يوه غښتلي پوځي بدرگه به ورسره وي. امير د خپل غبرگون په ترڅ کې ښکاره کړه دا دريځ ډېر بحراني دی چې لس زره سرتيري د خپلو مېلمنو په توگه ومنم. زه اړ يم چې د دوی د منلو له پاره سل زره تيار کړم. په پای کې ده امير ته په نېغه خبرداری ورکړ چې «دا به اړينه وي چې پرېکړه وکړو چې کومه ساحه د افغانستان د پاچاهۍ برخه او کومه ساحه يې برخه نه جوړوي.» ۳۲۴ د برتانوي هند حکومت امير ته وړانديز وکړ چې: «يوه څرگنده کرښه وټاکل يا اعلان شي چې د هغې ها بلې خوا ته د امير واک نه غزيرې او که د دې کرښې هغې خوا ته کوم افغان پوځ وليدل شي په زور به بېرته وايستل شي. دا کرښه به داسې په نښه شي چې اسمار، چغی او وانه د افغانستان نه بهر پاتې شي.» ۳۲۵

امير تر اوسه خوځښت نه کاوه او د ځنډولو تاکتيک يې چې د ۱۸۸۸ کال راهيسې غوره کړی و چې د ده نه د لومړي ځل دپاره غوښتل شوي و چې په کابل کې برتانوي پلاوی ومني، په پوره مهارت سره پر مخ بيولو. خو کله چې روسې په ۱۸۹۰ يمو کلونو کې د پامير او شمال ختيځ افغانستان په لور د وړاندې تگ مارش پيل کړ امير د روسې د زيات فشار په پايله کې اړ شو چې د برتانوي هند يو کوچنی ملکي پلاوی د سر هنري مورټيمر ډيورنډ په مشرۍ چې د برتانوي هند د حکومت د بهرنيو چارو وزير و، په کابل کې ومني. د ۱۸۹۳ کال د نومبر په ۱۲ مه نېټه د امير او ډيورنډ تر منځ يو تړون او يو هوکړه ليک لاسليک شول چې تړون د شمال ختيځ افغانستان په اړه او هوکړه ليک په سوويل ختيځ سيمه پورې اړه درلوده. دا وروستی هوکړه ليک چې په سوېل ختيځ پورې اړه درلوده، د ډيورنډ د هوکړه ليک يا د کابل د کانوېنشن په نوم ياد شو.

خو د پرمختگ پاليسې «علمي» نه وه، بلکې د «په وړاندې» (forward) اصطلاح د پراخوالي او تسلط دپاره کارول کېږي. د نوې «علمي سرحد» پاليسې په واقعيت کې د هغې پاليسې بدله بڼه وه چې پايله يې د امير شيرعلي خان سره جگړه شوه. لکه چې تروسيدل وايي: «خو د پرمختگ د پاليسې زياترو پلويانو ته علمي سرحد د دوی د واقعي موخې دپاره يوه موقتي پرده وه. که [افغان] حکومت د [برتانوي هند سره] د سوويلي نيمايي افغانستان نېټول ومني، په يوه وخت کې به د ټول افغانستان نېټول وزغی.» ۳۲۶

د ډيورنډ هوکړه ليک د دواړو خواو د نفوذ سيمې ټاکلې او دواړو خواو ژمنه کړې وه چې يو د بل د نفوذ په سيمه کې به لاسوهنه نه کوي. د دې هوکړه ليک نه د برتانوي هند

موخه دا وه چې په ختيځو سيمو کې د امير عبدالرحمن پوځي او سياسي وړاندې تگ مخنيوی وکړي. امير د ډيورند د هوکړه ليک د مخه د دغو سيمو په قومونو باندې ډول ډول نفوذ خپروه چې د مخه مو اوږدې خبرې پرې وکړي.

لکه چې د مخه مو يادونه وکړه چې د ډيورند هوکړه ليک نه مقصد دا و چې د برتانوي هند حکومت او د امير د نفوذ سيمې مالومې کړي. په خپله ډيورند د يوې مرکې په ترڅ کې ويلي و چې «د هندوستان د خوا قومونه بايد داسې ونه گڼل شي، چې د ننه د برتانوي سيمه کې پراته دي. هغوی يوازې په تخنيکي لحاظ زموږ تر نفوذ لاندې دي، يانې دا چې تر هغه ځايه چې په امير پورې اړه لري او تر هغه ځايه، چې دوی زموږ نفوذ ته تسليميږي يا موږ په هغو باندې نفوذ کوو.» ۳۲۷

سر اولوف کيرو په زياته روښانه توگه وايي چې «په توافق ليک کې هېڅ ځای د پولې (boundry) کليمه نه ده کارول شوې چې د ډيورند کرښه مشخصه کړي. تر يوې اندازې دا يوه کرښه وه چې دنده يې دا وه چې وښايې چېرته د امير نفوذ تم کېږي او چېرته د انگرېزانو د نفوذ سيمه ښودل کېږي.» ۳۲۸

د دې هوکړه ليک په اړه لومړی خبره دا ده چې د هند حکومت دغه هوکړه ليک ته رښتني نه و ځکه چې د هغوی موخه دا وه چې د اړتيا په صورت کې به په افغانستان کې پوځي لاسوهنه کوي. مهمه دا ده چې امير عبدالرحمن د دغه هوکړه ليک فارسي متن او ورسره مله نقشه لاسليک کړې نه دي. کاکړ وايي چې ده د کابل، نوي ډهلي او لندن په ارشيفي مرکزونو کې د امير په لاس لاسليک شوی متن نه دی ليدلی. دی زياتوي چې که چا د دغه هوکړه ليک دغسې متن په فارسي يا انگرېزي کې وښود چې امير او ډيورند دواړو لاسليک کړي وي، اعتبار به يې لږ تر لږه د تېل شوي هوکړه ليک په توگه تثبيت شي. تر هغې پورې موجود متن د اعتبار وړ کېدلی نه شي.

کاکړ دا وايي چې بل مهم ټکی د دې هوکړه ليک په اړه دا دی چې د همدغه هوکړه ليک د متن ځينې برخې د پلي کېدو په ډگر کې د امير له پاره د منلو وړ نه وې او انگرېزانو هم د هغه ځينې اعتراضونه ومنل. د بېلگې په توگه د پخواني کافرستان د باشکل دره د هوکړه ليک په متن کې د انگرېزانو د نفوذ په سيمه کې ښودل شوې ده، خو په ۱۸۹۶ کال کې چې د ډيورند کرښه هلته په نښه کېدلې، امير په دې ټينگ شو چې باشکل د افغانستان برخه ده. د هندوستان واپسرا لارډ ايلکين د امير اعتراض ومانه او د باشکل موضوع يې «د خواشيني وړ تېروتنه» وبلله. امير په دې هم ټينگ ودرېد چې ټول مومند د افغانستان برخه ده. د هند حکومت د امير ادعا رد نه کړه، خو په اړه يې څه ونه کړل او امير ته يې

خواب هم ورته کړ. د امير په فکر د هند د حکومت چوپ پاتې کېدل د هغو له خوا د ده د ادعا منل و. د مومندو سيمه په نښه نه شوه او امير بيا هلته د سرک جوړولو امر وکړ. د دغه سرک د جوړولو کار هم پيل شو چې د امير د مړينې وروسته يې کار په تپه ودرېد. د امير د مړينې وروسته د مومندو سيمه دوې برخې وکښل شوه، هغه برخه يې چې کوز مومند په نامه يادېږي او تر پېښور پورې رسېږي، د هند د نفوذ سيمه وکښل شوه او بر مومند د پخوا په شان د افغانستان شو. داسې هم د تورخم برخه د امير د اعتراض له امله په نښه نه شوه. دغې کرښې لوی قومونه، کلي او ان کورونه سره بيلول. د بېلگې په توگه ترکلاني، وزير، شينواري، نورزي، اڅکزي، برېڅ، بلوچ او نور. دا هغه قومونه دي چې سره گډه ژبه، گډ دين، گډ تاريخ، گډ کلتور او ورسره ورته نړۍ ليد او همداسې يو راز اقتصادي، کرنيز او ټولنيز طرز لري. دوی نه سره بېلېږي او نه هم د پرديو واکمني مې.

د ډېورنډ د هوکړه ليک په اړه بل مهم ټکی دا دی، چې د کرمې د علي خېلو يا توريو نه پرته ټول پښتني قومونه همدا چې پوه شول چې د انگرېزانو د نفوذ په ساحه کې راغلي دي د ملا نجم الدين اخوندزاده، ملا فقير او ملا مانکي او نورو قومي مشرانو په سروالی په ۱۸۹۷ کال کې په يوه لوی پاڅون لاس پورې کړ او ځانونه يې تر شېقدر پورې ورسول. خو انگرېزانو د دوی پر وړاندې د اویا زرين پوځ نه کار واخېست چې په هغو کې ځوان ونستن چرچل هم و، هغوی يې خواره کړل خو د هغوی مخالفت يې د منځه يووړلی نه شو. دوی په تېره وزيرو، مسيدو، اپريدو او مومندو تر هغه چې انگرېزان د هند څخه نه وو وتلي، د هغو پر ضد يې د غذا جنده رپانده وساتله او ان په هند باندې يې يرغلونه وکړل.

د ډېورنډ د هوکړه ليک په اړه بل اساسي ټکی د هغه د ماهيت په اړه دی، چې موقتي دی، نه تلپاتې. دا چې د هوکړه ليک د اعتبار موده ټاکل شوې نه ده، په اصل کې د همدغه موقتي توب له امله و. دا د دې دپاره و چې د پښتنو په ستراتېژيکو سيمو کې وسلې، لوژيستيکي وسيلې او مهمات زيرمه کړي او د اړتيا په صورت کې به له دغو ځايونو نه جلال اباد، کابل، غزني او کندهار نيسي او روسان به نه پرېږدي چې له هندوکش نه واورې. انگرېزانو دغې موخې ته د رسېدو په نيت لا د مخه د لويو لارو سرونه لکه خيبر، کرمه، پښين او سيي نيولي وو. دغه ځايونه يې د گندمک د ترون له مخې لاسته راوړي وو او د سوېلي وزيرستان گومل يې د ډيورنډ د هوکړه ليک سره ترلاسه کړ. دغه سيمې په اصل کې د هند او افغانستان تر منځ د بيلتون يا حایل په شان وې. برتانويانو تر پايه دغه سيمې د سرحد (Frontier) په نامه يادولې او اداره يې د هغو قومونو ته پرې ايښې وه. د

ډيورنډ هوکړه ليک د دې له پاره نه و چې د افغانستان سره پوله (boundry) ولري. د هند وایسرا ایلېکین وايي: «د ډيورنډ هوکړه ليک دغسې يو هوکړه ليک و، چې د برتانوي حکومت او امير د نفوذ ساحې مالومې کړي» ۳۲۹ د ډيورنډ په هوکړه ليک سره دوی له دغو سيمو نه په نظامي او اداري لحاظ د افغانستان لاس لند کړ او په نورو ساحو کې افغانستان د پخوا په شان خپلې دوديزې اړيکې وساتلې او مشرانو ته يې د موجب په نامه معاشونه ورکول. د دغو قومونو د مشرانو جرگې به په پرله پسې ډول کابل ته تللې او هلته يې امير ته ويل چې دوی د افغانستان رعيت دي او دوی دی خپل امير گڼي. خو امير د دوی غوښتنې په پلمو سره ردولې په دې چې دی د اړيدو په برخه کې د گندمک په تړون سره او د نورو په برخه کې د ډيورنډ په هوکړه ليک سره د هغو له اداره کولو نه منع شوی و.

د ډيورنډ هوکړه ليک يوازې د امير کار و. د هغه په کولو سره هغه د مشرانو سره يا د خپلو درباريانو يا مشاورينو سره مشوره کړې نه ده. په دې اړه ډيورنډ په خپله د ۱۹۰۷ کال د نومبر په شپږمه په لندن کې د منځنۍ اسيا ټولې ته په خبرو کې وويل: «هغه په بشپړه توگه په خپله خبرې اترې پرمخ بېولې، د هغه وزيران ډېر بې اغېزې وو، دوی ډېر کوچنی ځواک او مسؤليت نه درلود. هغه په خپل فکر کړه تر سره کول او د هېچا نه يې مرسته نه غوښته.» ۳۳۰

دا مهمه ده چې يادونه وکړو چې دا هوکړه ليک (agreement) د يوه واکمن او د يوه بهرني هېواد د يوه افسر تر منځ شوی دی او يو تړون (treaty) نه و. يو تړون هغه وي چې د دواړو لورو د دولت نمايندگان د خپلو خلکو په نماينده کې تړون وکړي او بيا يې تصويب کړي. خو څنگه چې امير دا هوکړه ليک لاسليک کړی نه دی نو اعتبار يې شکمن دی.

پاڅون، پوځي عمليات او زياتو لگښتونو انگرېزان هم محتاط کړل چې نور د قبايلي خلکو او امير سره زيات نه پخلا کېدونکي نه شي. يوه لوړپوړي برتانوي افسر د دې سلا گانو وړانديز وکړ: «زموږ د سرحد افسرانو ته سپارښتنه وکړئ چې نور پرمخ زور ونه کړي، او امير ته هېڅ دليل د شک له پاره ورنه کړي. زه به د امير تر مړينې انتظار وباسم او تر هغه د مخه به زموږ د کنترول لاندې د قبايلو د راوستلو دپاره نور هېڅ کوښښ ونه کړم.

زه باور لرم چې دغه ناوخت توب له کبله موږ هېڅ له لاسه نه ورکوو.» ۳۳۱

د عثمان روستار تره کې په وينا «په هند کې د انگرېزي حکومت د نسکورېدو څه وروسته او د پاکستان له جوړېدو مخکې د لومړي وزير شاه محمود خان حکومت د ډيورنډ موافقه ليک په يوه اړخپزه توگه باطل اعلان کړ.» ۳۳۲ شاه محمود خان د خپل حکومت دريځ د ۱۹۴۷ کال د جولای په ۳۱ د برتانيې د بهرنيو چارو وزير ته وړاندې کړ.

دغه دريځ د حقوقو له موازينو سره بشپړ سمون درلود. په دې چې «هر دولت د خپلو کتو د تشخيص او ملاتړ قاضي گنل کېږي. يو دولت کولی شي په خپل مسؤليت په يوه اړخه توگه بل لوري ته د يوه يادښت په استولو کې هغه تړون ملغا اعلان کړي، چې ورڅخه تاواني کېږي ۳۳۳

په ۱۹۴۷ کال کې د پاکستان د جوړېدو نه وروسته په هغه هوکړه ليک کې چې د پاکستان د ولسمشر علي جناح او د افغانسان د استازي نجيب الله توروايانا تر منځ په کراچي کې لاسليک شو، د ازادو قبایلو سيمه له صوبه سرحد او بلوچستان نه جلا وپېژندل شوه. خو د جناح د مړينې وروسته د پاکستان نوي ولسمشر خواجه نظام الدين له مخکينې هوکړې نه سرغړونه وکړه. همدارنگه د افغانستان د پارلمان اوومې دورې په ۱۹۴۹ کال کې د ډيورنډ د کرښې پر ضد دريځ ونيو.

نړيوال تړون بايد د دواړو لورو د صلاحيت لرونکو استازو له خوا بايد لاسليک شي او بيا د خلکو د استازو له خوا تصويب شي. خو مور داسې اسناد په لاس کې نه لرو چې د ډيورنډ هوکړه ليک دې د انگلستان د عوامو د مجلس له خوا تصويب شوی وي. افغانستان هغه وخت پارلمان نه درلود او امير د خپلو خلکو د ویرې نه زړه ونه کړ چې په دې موضوع دوديزه لويه جرگه جوړه کړي او د ملت د استازو سره مخامخ شي. دا هوکړه ليک په رسمي جريده کې خپور او اعلام شوی نه دی چې ان نافذ شي. دا هوکړه ليک د ملگرو ملتونو په ارشيف کې ثبت شوی نه دی.

د نړيوالو حقوقو له مخې کله چې يو هېواد تحت الحمايه (پروټېکتورات) وي، يوازې ساتونکی دولت د نړيوال تړون د کړلو حق او صلاحيت لري. د امير عبدالرحمن په وخت کې افغانستان تحت الحمايه هېواد و. د هېواد بهرنی امنيت او باندني سياست اداره د انگرېزانو په لاس کې وو. افغاني تحت الحمايه دولت د نړيوال تړون د کړلو نه بې برخې و. که د يو دولت په استازي باندې د کواښ او فشارپه وسيله وتړل شي هېڅ يو حقوقي اغېز درلودای نه شي او بلکل باطل دی. ۳۳۴ د بېلکې په توگه په ۱۹۴۱ کال کې کمبوديا د فرانسې تحت الحمايه و. په فرانسه باندې د جاپان له خوا نظامي فشار نوموړی هېواد دې ته اړ کړ چې د تایلنډ سره د پولو د تثبيت په اړه يو تړون لاسليک کړي. تړون د کمبوديا مخکني تماميت ته ډېر زيان واړاوه. د جاپان د ماتې نه وروسته فرانسې اعلام وکړ چې تړون د پوځي کواښ لاندې تړل شوی و او له تحت الحمايکي نظام سره يوځای ملغا اعلانېږي.

يو تړون د يو ثالث له پاره وجيبه او حق نه زېږوي. د ډيورنډ هوکړه ليک د تحت

الحمایه افغانستان او حامی انګلستان تر منځ او نه د افغانستان او پاکستان تر منځ تړل شوی و. پاکستان د ډیورنډ د هوکړه لیک د کرلو په وخت کې شتون نه درلود. له دې کبله د ډیورنډ هوکړه لیک د پاکستان دولت ته هېڅ حق یا وجیبه نه په برخه کوي. ۳۳۵

د سرور رونا په وینا امیر عبدالرحمن خان د انګرېزانو د لیکونو په اړه چې د امیر نه یې غوښتل چې باید پلاوی وټاکي چې په یوځای سره ناکلاکي سرحدونه په نښه کړو داسې ځواب ورکاوه: «ما تر اوسه موقع نه ده موندلې چې د مخکینیو سرحداتو د ټاکلو په اړه قومي مشرانو ته ووايم او هغوی ته قناعت ورکړم چې هغه ومني. څنګه کولی شم چې دوهمه برخه پیل کړم؟ که د دغه جریان نه په دې موقعه کې عالمان، قومي لویان او وطنپالونکي پوهان خبر شي په باور سره د برتانې سره جګړه پیل کېږي چې زه یې د دفاع چاره نه لرم.» ۳۳۶

دغه یادښت یا میمورانډوم چې د برتانیا حکومت ته خبرتیا ورکړې او ځواب ورکوي د دغه کاپي تر شا په خپل قلم لیکي چې لنډیز یې دادی: خپل خلف ته: د ژوند تر وروستی ورځې چې ژوندی يم د برتانوي هند سره د افغانستان د سرحدونو په ټاکلو کې یو کام مخته نه ځم، همداسې یې پرېږدم او د دوی لیکونو ته ځواب وایم چې د دې هوکړه لیک جبري توب او تېل توب ثابت وي. هیله من يم چې زامن به مې چې په راتلونکې کې واک ته رسېږي، وکړای شي دومره ځواک برابر کړي چې د خپل حق نه ساتنه وکړي او د یوه بنایسته تړون له مخې د افغانستان پولې وټاکي. د دې برسېره یې دا هم په کې لیکلي دي:

زه فکر کړم چې په نږدې راتلونکې کې د هند خلک او مسلمانان وپنډېږي او د خپلې ازادۍ د حق نه به دفاع وکړي او په قوي گومان دوه هندوستانه (د هند هندوستان او مسلمان هند) به منځ ته راشي. د مسلمانانو هند به زموږ د هېواد سره ګاونډی شي او شاید زما د وطن خلکو او زامنو ته سرخوږی شي. ۳۳۷

د سرور رونا په وینا د امیر عبدالرحمن د مړینې وروسته امیر حبیب الله خان د ډیورنډ د هوکړه لیک د لاسلیک او منلو سره لا هغه مهال چې پلار یې لاسلیک کولو، موافق نه و، تر څو چې کابل ته یو پلاوی سرلیویز ډین د امیر سره د خبرو دپاره کابل ته راغی او د هغه سره یې نوی تړون لاسلیک کړ.

لوی دوپړې وایي چې د ډیورنډ کرښه د سیاسي، جغرافیایي او ستراتیژیکي نظره د دفاع وړ نه ده. ۳۳۸ کاکړ د ډیورنډ د هوکړه لیک د متن سپړنه کوي او وایي چې د متن په لومړۍ فقره کې ویل شوي چې دغه هوکړه د دواړو خواوو «د نفوذ د ساحو» د ټاکلو دپاره کېږي. کاکړ وایي چې د نفوذ د کلیبې قاموسي مانا «د اشخاصو یا څیزونو هڅې قوې ته ویل کېږي

چې په نورو باندې اثر توليد کړي.» ۳۳۹ دا په هېڅ ډول دا مانا نه ورکوي چې د انگليسانو د نفوذ ساحه د هغوی شوې ده يا امير عبدالرحمن په هغې باندې د افغانستان له حقونو څخه تېر شوی دی.

«د نفوذ د ساحو» په ټاکلو کې ويل شوي دي چې دا به هغې کرښې سره ټاکل کېږي چې د واخان نه تر پارس پورې رسېږي او د هغې نقشې له مخې غزيرې چې د هوکړه ليک سره ملګرې ده. خو امير نقشه لاسليک نه کړه يانې وېې نه منله. امير د باشکل، مومندو او خيبر په برخو کې د دغې کرښې په نښه کول ونه منل. په دې ډول د دغه هوکړه ليک متن د اعتبار وړ نه دی. برسېره پر دې تر اوسه دغسې متن ليدل شوی نه دی چې هم د ډيورنډ او هم د امير لاسليکونه ولري.

بله دا چې د دغې کرښې په نښه کولو کې د هېڅ ډول طبيعي، توپوګرافیکي او دموګرافیکي پرنسپبونه مراعات شوي نه دي. په دې توګه د ډيورنډ کرښه مصنوعي ده او پوله او سرحد کېدلې نه شي.

د ډيورنډ د هوکړه ليک په دوهمې مادې کې ويل کېږي چې د کرښې دواړه خواوو حکومتونه به د يو او بل د نفوذ په ساحه کې «لاسوهنه» نه کوي. خو د ډيورنډ کرښه د برتانوي هند دپاره په اصل کې په افغانستان کې د لاسوهنې دپاره تجويز شوې ده. په دې مانا چې که روسان د افغانستان له لارې په هندوستان يرغل وکړي، دوی به د هندوکش د سووېل ستراتيژيکي ځايونه لکه جلال اباد، کابل او کندهار په نظامي ځواک سره نيسي او د روسانو د وړاندې تګ مخنيوی به کوي. په دغه حال کې به د ډيورنډ کرښه د دوی دپاره باطله وي. د «لاسوهنې» موضوع يوازې د امير عبدالرحمن دپاره وه چې تر هوکړې د مخه يې په باجوړ او نورو سيمو کې د حکومت د نېغ حاکميت د خپرولو دپاره د سپاه سالار غلام حيدر څرخي په مشرۍ يو پوځ ګومارلی و او په اسمار کې ديره و.

کاکړ وايي چې «لاسوهنه» په دغې کرښې کې د پوځي لاسوهنې په مانا وه چې امير د هغې د کولو نه ډډه وکړه. خو په نورو برخو کې امير ځان ازاد ګانه چې د کرښې ها خوا قومونو سره دوديزې اړيکې وساتي.

د هوکړه ليک په درېيمې مادې کې ويل شوي چې «والاحضرت د پاتې وزيرې ملک او داوړ په اړه له خپلې ادعا نه تېرېږي.» ۳۴۰ امير ځکه د خپلې ادعا نه تېر شو چې د نه تېرېدلو په حال کې د هغه واکمني په خطر کې وه. په داسې حال کې چې هېڅ واکمن د دې صلاحيت نه لري چې د خپل هېواد کومه برخه بل هېواد ته ورکړي. ځکه خلکو د کرښې له نښه کولو نه وروسته په يوه لوی پاڅون لاس پورې کړ او بيا هغو او په تېره د وزيرستان خلکو د

برتانويانو پر ضد له هندوستان نه د هغو تر وتلو پورې ټينگې مبارزې او غزاگانې وکړې. د ډيورنډ د هوکړه ليک په اړه بل مهم ټکی دا دی چې په متن کې يې د اعتبار وخت نه دی ټاکل شوی. له دې کبله د هانک کانگ غونډې سل کاله وروسته په خپله باطل کېږي. کاکړ وايي چې د ډيورنډ د کرښې نږدې پايله په سيمه کې له پېښور نه تر کوټې پورې د سياسي تشې او حایل توب دايمي کېدل او سيمه او قومونه د مدنيت نه بې برخې کېدل دي. د دې کرښې ليرې پايلې په افغانستان باندې د شوروي يرغل، د کابل وړانې او د افغانانو روان مصيبتونه دي.

امير عبدالرحمن خان او د روسيې سره اړيکې

د افغانستان او روسيې تر منځ لومړنی رسمي تماس په ۱۸۳۷ کال کې ونيول شو چې د روسيې حکومت کپتان پاول ويکتوويچ کابل ته ولېږه چې د هرات په اړه د پارس د پلان ملاتړ ترلاسه کړي. هرات د پخوا نه د افغانستان يوه برخه وه، خو بيا پارس ونيو او د ويکتوويچ دپاره ناشوني وه چې په خپل ماموريت کې بريالی شي. خو د ويکتوويچ ماموريت انگرېزانو ته بهانه په لاس ورکړه چې په ۱۸۳۸ کال کې په افغانستان تېری وکړي. د برتانوي هند حکومت وروسته له هغې ووېرېد، چې په ۱۸۲۸ کال کې د ترکمانچي تړون وشو او د هغه په پايله کې پارس د روسيې د نفوذ لاندې راغی او د هرات نيول په هند کې د برتانيې مستعمرې ته خطر پېښوه. په دې توگه هرات هند ته د تگ دروازه وگڼل شو. روسيې وروسته له دې چې د ۱۸۵۴-۱۸۵۶ کې د کرېميا په جگړه کې ماتې وکړه او په اروپا کې پاليسي ناکامه شوه روسيې د خپل نفوذ د پراختيا په موخه د سوويل په لور د منځنۍ اسيا د پراخو مخکو د نيولو دپاره مارش پيل کړ. د دې پېړۍ په لومړيو کې روسيې د قزاقستان پراخه جلگه ونيوله او په اورېنبورگ کې ټينگه کلا جوړه کړه چې د هغې نه يې هر لوري ته خپل پوځونه استول. روسيې خپل حاکميت د خوقند، بخارا او خېوا پولې ته ورسولو. بل کال (۱۸۶۵) روسيې تاشکند ونيو او ۱۸۶۷ کال کې د روسي ترکستان ايالت جوړ کړو او د بخارا د امير مظفرالدين سره يې يو تړون لاسليک کړ چې د هغه له مخې بخارا د روسيې د ساتنې لاندې راغله. په ۱۸۶۸ کال کې روسيې سمرقند په روسيې پورې وتړه. روسيه د دې وروسته د افغانستان گاونډی شوه او په دې توگه په منځنۍ اسيا کې واکمنه روسيه په سوويل کې د واکمنې بریتانيې سياله شوه او ستره لوبه پيل شوه.

په ۱۸۷۳ کال کې روسيې خېوا تر خپلې ساتنې لاندې راوستله او په ۱۸۷۶ کال کې يې خوقند لاندې کړ. ستره لوبه د افغانستان د واکمنو له پاره يوه ننګونه (چلنج) شوه چې، د

برتانوي وایسراگانو او روسي جنرالانو په وړاندې چې د نویو سیمو د نیولو له پاره هڅې کوي، خپل هېواد څنگه وساتي.

که څه هم لکه چې د مخه مویادونه وکړه روسيې په ۱۸۷۳ کال کې افغانستان د خپل نفوذ د سیمې نه د باندې کښلو خو په ۱۸۷۸ کال کې جنرال کوفمن خپل یو پلاوی د جنرال ستولیتوف په مشرۍ په امیر شیرعلي خان باندې په کابل کې وتپلو چې د افغان-انګلیس د دوهمې جګړې دپاره یې انګرېزانو ته پلمه په لاس ورکړه. روسانو د خپلې ژمنې پر عکس هېڅ مرسته ونه کړه.

د امیر شیرعلي خان د مړینې وروسته روسانو نیت درلود چې د هندوکش شمال کې داسې دولت جوړ شي چې د دوی په کټه وي. د امیر عبدالرحمن په وینا کافمن دی وهڅاوه چې د افغاني ترکستان نه گورنر وشړي او هلته خپل واک ټینګ کړي کله چې عبدالرحمن بدخشان ته راورسېد داسې راپورونه و چې عبدالرحمن ویلي و چې روسانو دی د دې له پاره رالېږلی چې افغاني ترکستان ونیسي او په دې موخه چې د انګرېزانو سره دې پوهاوي ته ورسېږي چې د افغانستان د وېشلو په صورت کې به هندوکش د دوی سره پوله جوړوي خو امیر د انګرېزانو سره پوهاوی وکړ او د روسانو پلان ناکامه شو.

د روسيې له خوا د پنجېدې نیول

د پنجېدې پراخه دره، چې د هرات شمال- لوېدیځ ته پراته ده، د ترکمنو شپانه به په موقتي توګه په کې اوسېدل، چې پراخ څړځایونه او لږې کرنیزې مخکې یې درلودې. پنجېدې د غلې د اړتیا د پوره کولو له مخې په هرات او میمنې پورې تړلې وه. د ۱۸۵۰ کال په شاوخوا کې پنجه د سارک ترکمنو نږدې اته زره کورنیو له لوري ونیول شوه. په ۱۸۸۲ کال کې دوی په خپله خوښه د امیر واکمني ومنله او ژمنه یې وکړه چې امیر ته لسمه برخه مالیه ورکړي. په پنجېدې کې د امیر له خوا حاکم وټاکل شو او یو پوځي ټولګی هلته ځای پرځای شو.

په ۱۸۷۳ کال کې د خېوا د نسکورېدو وروسته یوازې د ترکمنو هېواد د روسيې په لاس کې نه و لوېدلی. د ۱۸۷۹ کال د جون په میاشت کې د جنرال لوماکین په مشرۍ روسي قواوې د اخیل په رغنیا کې ګوک تپه ته ورسېدې او د تېکې ترکمنو په کمپ یې برید وکړ چې د سر د زیان سره په شا وتمبول شوې. د ۱۸۸۱ کال د جنوري په میاشت کې د روسيې بل پوځ د جنرال سکوبیلېف په مشرۍ په همغه ځای برید وکړ او پرېکنده بری ور په برخه شو. د دغه بري انګازې د تندر په شان په منځنۍ اسیا کې خپرې شوې او د ۱۸۸۴ کال د

فبروري په مياشت کې د مروې تېکې ترکمنو د روسيې واکمني ته غاړه کېښوده او په همدې کال کې مروه په روسيې پورې وتړل شوه.

د مروې د نسکورېدو وروسته د برتانيې حکومت دې پايلې ته ورسېد چې د دې وخت رارسېدلی چې د افغانستان د شمال لوېديځې پولې موضوع هواره شي چې تر دې وخته مالومې نه وې. دا داسې سيمه وه چې که د پولې موضوع هواره نه شي نو شونې ده چې په دې سيمه کې د روسيې او برتانيې تر منځ نېغ پوځي ټکر رامنځ ته شي. د دې موضوع په اړه د روسيې او برتانيې تر منځ ليکونه يو او بل ته ولېږل شول او په پای کې دوی ژمنه وکړه چې يو انگليسي-روسي پلاوی هلته ولېږي چې د ۱۸۷۳ کال د پوهاوي د روحي سره سم پوله په نېنه کړي.

په دغه وخت کې روسيه او افغانستان دواړه په سيمه کې فعال وو. د روسيې مخکېني قواوې د پنجېدې شمال ته د خاتون پله ته ورسېدې. وروسته روسيې خپل دريځ ته بدلون ورکړ او د افغانستان سره يې اتنيکي ملاحظات په نظر کې ونيول.

د افغانستان ادعا د هغې سيمې په اړه چې اوسېدونکي يې ترکمن و، تاريخي او دموکرافیک بنسټ درلود. ترکمن د افغانستان سره د هرات له مخې تړلي و. غبار وايي چې مروه د پېړيو په اوږدو کې د افغانستان برخه وه. امير د روسيې د پرمختګ د مخنيوي دپاره څو ځله انګرېزانو ته څرګنده کړه چې د روسيې سره د افغانستان پولې په نېنه شي خو انګرېزانو د امير اندېښنو ته پام ونه کړ. د مخه مو يادونه وکړه چې د هند برتانوي حکومت او برتانيا وروسته له دې چې په ۱۸۸۴ کال کې روسيې مروه ونيوه، دا وضعه د افغانستان او برتانوي هند دپاره ګواښ وګاڼه. د ۱۸۸۵ کال په دېرشمه روسيې پنځده ونيوله. د پنجېدې بحران روسيه او برتانيا د جنګ غاړې ته نږدې کړل. وروسته دواړو هېوادونو يو او بل ته د زياتو ليکونو او ټلګرامونو د لېږلو نه ژمنه وکړه چې د روسيې او افغانستان د پولو د په نېنه کولو د پاره ګډ کميسيون جوړ کړي.

د پنجېدې ټکر امير نور هم برتانيا ته نږدې کړ او د روسيې- افغان اړيکې يې تر هغه د فشار لاندې ونيولې تر څو په روسيه کې د اکتوبر د انقلاب په پايله کې بلشويکان په ۱۹۱۷ کال کې واک تر لاسه کړ. امير د پولې د بشپړ په نېنه کول د روسيې د پاره ناشونې کړه چې نور د سوويل په لور مارش وکړي ځکه چې هر ګام په اخېستو به د برتانيا او افغانستان سره ټکرېږي. امير اوس هڅه وکړه چې د برتانيا او روسيې تر منځ انډول وساتي.

امير عبدالرحمن او د پارس سره اړيکې

د امير عبدالرحمن د واکمنۍ پر مهال د افغانستان او پارس اړيکې د برتانيا په منځگړيتوب تنظيمېدې. پارس د بهرنیو ځواکونو تر نفوذ لاندې و او د افغانستان سره يې نېغ تماس لږ و. کله چې انگرېزانو د کندهار ښار پرېښود او په ۱۸۸۱ کال کې د امير تر واکمنۍ لاندې راغی، د پارس حکومت نيت درلود چې افغاني سيستان په پارس پورې وتړي. دوی ځکه داسې نيت وکړ چې د امير وضعيت شکمن و او د هغه سيال تربور سردار محمد ايوب خان چې هرات يې په لاس کې و، د هغه واکمني ننکوله. د دې موخې دپاره د ايران وزير د برتانيا حکومت ته وړانديز وکړ چې پارس ته به اجازه ورکړي چې خپله دا نقشه پلې کړي. وايسرا لارډ ريڼ د دې پلان پر ضد ودرېد، ځکه چې په ۱۸۷۳ کال کې د برتانيې په منځگړتوب د سيستان ښه برخه پارس ته ورکړه شوه او د امير شيرعلي خان شکايت يې راوپارولو چې پر مور يې باور کړی و.

بل مهم ټکی دا و چې سردار محمد ايوب خان کله چې مشهد ته وتښتېد، د هغه شتون امير او هم پارس ته ستونزې جوړولی شوې. پارس وېره درلوده چې ايوب خان او د هغه اته سوه ملگري به د پارس- افغان اړيکې زيانمنې کړي. امير چې غوښتل چې د پارس سره دوستانه اړيکې ولري هيله درلوده چې د پارس حکومت به هغه د پولې نه ليرې تهران ته واستوي. همدارنگه په مشهد کې د ايوب خان شتون د پارس دپاره هم د تشويش وړ و، ځکه چې دوی وېره درلوده چې کېدای شي ترکمن او افغانان به مشهد د ايوب خان دپاره ونيسي او د دوی تشويش وروسته له دې لاريات شو چې سردار او د هغو ملگرو په مشهد کې د وسلو په رانيولو پيل وکړ. د دغې وضعې پايله دا شوه چې پارس سل کسيز پلاوی د ميرزا معصوم خان په مشرۍ په ۱۸۸۳ کال کې کابل ته ولېږه. د شاه په ويلو پلاوی يوازې د دې دپاره لېږل شوی چې امير ته د ده د ناستې له امله مبارکي ووايي. خو د کاکړ په وينا داسې نښې شته چې دا پلاوي سياسي و او موخه يې د امير او سردار پخلا کول و چې يې کومې پايلې بېرته خپل هېواد ته ستون شو.

د پلاوي ناکامي، د مشهد گواښ د سردار د شتون په صورت کې او د برتانيا له خوا په پارس فشار په پای کې د پارس حکومت اړ کړ چې ايوب خان تهران ته يوزي او د هغه ځايه يې هند ته د عراق له لارې ولېږه او سردار په لاهور کې تر خپلې مړينې پورې مېشت شو.

په ۱۸۸۵ کال کې کله چې روسيې پنجدې ونيوله پارس هشتادان. چې په کوهسان کې يوه کوچنۍ ولسوالۍ ده او د هرات په لوېديځ کې پراته ده، ونيو. دا موضوع بيا د برتانيا په منځگړتوب داسې هواره شوه چې هشتادان د دواړو خواو تر منځ ووېشل شو.

يو افغان اېجنټ د سوداگرو د مشر (تجرباشي) په لقب په مشهد کې ځای په ځای

شو. ده ته دنده ورکړ شوې وه چې د پارس په خراسان کې سوداګرو ته اسانتياوې رامنځ ته کړي او برسېره پردې د پارس او همدارنگه د افغان مهاجرو په اړه راپورونه برابر کړي. د دې په غبرګون کې د پارس حکومت غوښتنه وکړه چې خپل اېجنټ په هرات کې استوګن کړي، خو امير د پارس دا غوښتنه ونه منله او ګواښ يې وکړ چې سوداګري به بنده او د پارس سره به پوله وتړي. په همدې وخت کې امير د پارس حکومت ته ښکاره کړه چې د ده نماينده ته ويل شوي چې يوازې به د افغان مهاجرو په اړه راپور راکوي او هغه ته دا ويل شوي چې د هېواد په کورنيو چارو کې به لاس وهنه نه کوي. د هند د حکومت په مشوره شاه په پای کې په هرات کې د خپل اېجنټ د ميسټ کېدو نه تېر شو.

امير عبدالرحمن خان او د ترکيې سره اړيکې

افغانستان او اتمان ترکيې په خپل منځ کې سوداګريزې او نورې اړيکې نه درلودې. سره له دې دا دواړه سني مسلمان هېوادونه چې د شيعيه پارس په ذريعه يو د بل نه بيلېدل دوی په دوديزه توګه يو د بل سره دوستان وو. امير عبدالرحمن خليفه سلطان عبدالحميد ته د مسلمانانو د معنوي مشر په توګه لوی درناوی درلود. امير له دې کبله هم د ترکيې سلطان ته نږدې و چې دواړه هېوادونه د يوه بهرني هېواد روسيې له خوا تر ګواښ لاندې و. خو امير د سيد جمال الدين پان اسلاميزم ته زړه نه ښه کاوه ځکه چې سيد مسلمانان د انګرېزانو په وړاندې لمسول.

خو په همدې وخت کې امير هڅه کوله چې د خپل دريځ دپاره نړيوال پېژاند تر لاسه کړي. سلطان غوښتل چې امير ته د ضياء الدين غازي لقب ورکړي. خو امير د هغه توپير له مخې چې د سلطان سره يې درلود دغه لقب چې په ۱۸۹۶ کال کې سلطان ورکولو ونه مانه، که څه هم مشورينو يې مشوره ورکړه چې ويې مني.

په پايله کې ويلی شو چې امير بهرنی اړيکې په دې اصل ولاړې وې چې نوموړی موافقه وکړه چې په کم افغانستان واک وچلوي او همدارنگه يې موافقه وکړه چې يوازې د برتانوي هند د حکومت سره معامله وکړي او نه د نورو سره. ده ځکه داسې وکړل چې هغه دغه مهال د خپل سيال سردار محمد ايوب خان په وړاندې د برتانيې ملاتړ ته اړتيا درلوده. همدارنگه دا وخت هېواد غیر منظم دولت و. خو د ده دغه دريځ موقتي و. همدا وخت و چې ده دولت له سره تنظيم کړ، کورني سيالان يې وځپل او د هېواد يووالی يې تامين کړ. امير هڅه کوله چې دی د بشپړ هېواد خپلواک حاکم شي. خو برتانيې او روسيې چې د امير د هيلو مخالف لوري ته په وړاندې حرکت کاوه، نه يوازې يې د امير د وړاندې تک مخه

ونيوله، بلکې د هغه نه يې مخکې وشو کولې او افغانستان ساحه يې وره کړه. امير په دې بريالی شو چې يو ملي دولت جوړ کړي او د هېواد نړيوالې پولې په نښه شي چې اوسنی مودرن افغانستان يې جوړ کړی دی.

امير د لودويگ اداميک په وينا د ۱۸۹۰ کلونو تر منځ پورې د برتانيې پلوي او د روسيې ضد سياست چلاوه. خو وروسته کله چې برتانيې پوځي شتون په چترال کې او روسيې په پامير کې پوځي شتون درلود امير هڅه کوله چې يو ډول انډول د دوی تر منځ وساتي. برسېره پردې امير دا هڅه هم کوله چې افغانستان په بشپړه توگه خپلواک کړي. خو د امير دا هڅې د ناکامۍ سره مخامخ شوې او په دې هڅې کې بريالی نه شو چې د لندن سره نېغې اړيکې جوړې کړي. خو امير خپلو راتلونکو ځای ناستو ته داسې قوي افغانستان په نیکات پرېښود چې هغوی په پای کې هېواد په بشپړه توگه خپلواک کړ.

خپل زوي حبيب الله خان ته د امير عبدالرحمن خان سپارښتې

امير عبدالرحمن خان د دې له پاره چې په افغانستان کې د ځای ناستي پر سر د کډوډۍ مخنيوی وکړي په خپل ژوند کې يې د حکومت چارې خپل ځای ناستي حبيب الله خان ته وسپارلې. موخه يې دا وه چې خپل زوی د حکومت په ډول او کړنو پوه کړي تر څو د تجربې خاوند وي او هم په هېواد کې د مشرانو په منځ کې درنښت ولري. ده خپل ځای ناستي ته يو شمېر سپارښتې وکړې چې ځينې ډېرې مهې يې دا دي:

ځای ناستی بايد د خپل دين په بنسټونو پوه وي او ټولو ښېگڼو ته يې پام وي؛ ځای ناستی بايد د ملت ښېگڼې، ارامۍ او ثبات ته ډېره پاملرنه وکړي او بايد په دې وپوهېږي چې د ټولې بری په شتمنی پورې تړلی دی او شتمني د کرهڼې، سوداگرۍ او صنعت نه پرته ناشوني ده او د درې واړو پرمختگ په عمومي پوهنه او روزنه پورې تړلی دی. ځنگه چې افغانستان تر اوسه د مدنيت په ټيټو درجو کې ښکېل دی او عبدالرحمن د زړه له کومې هيله لري چې د لوېديځ په شان دې د افغانستان په ټولو ځنډو کې ښوونځي جوړ شي. خو دا کار په اسانۍ سره سر ته نه شي رسېدلی. ځکه دغه هيلې پرله پسې پرمختگونو ته اړتيا لري؛ ځای ناستی دې هرو مرو د خپلو مامورينو په غوره کولو کې پوره پام وکړي او د هغوی ښه کارونه دې وستايي؛ د مظلوم د حق ساتنه دې وشي، که څه هم مجرم به د ځای ناستي زوی وي. د دې لارې ځای ناستی د ولس زړه خپلولی شي؛ پرديو ته بايد د هر ډول حقوقو او امتيازاتو د ورکولو موقع ورته کړل شي؛ د انگرېزانو سره ځای ناستی په

چلند کې د خپل پلار لار ونيسي خو خپله موخه ياني د افغانستان خپلواکي او ثبات له ياده ونه باسي او پوره پاملرنه ورته وکړي؛ ځای ناستی بايد د خپل رعيت بښکښو ته پاملرنه وکړي؛ ځای ناستی بايد په سياسي مسايلو کې په خپله کلک غور وکړي، نه دا چې د کوم وزير په لارښوونه بسنه وکړي؛ وسله والې قواوې دې نه يوازې د جگړې په وخت کې، بلکې تل د تيارسۍ په حال کې وي او د هغوی ټولې اړتياوې (وسله، خواراک، پوښاک او درمل) مخکې د جگړې نه تهيه شوي وي ځکه چې د جگړې په حال کې د دغو اړتياوو پوره کول ستونزمن کار دی. واکمنان بايد خپلو وسله والو قواوو ته خپله مينه او درناوی وښيي او د دوی د سرښندنو قدر دې وکړي؛ د حکومت بيت المال د ملت مال دی. امير د بيت المال په پيسو کې بل حق نه لري خو دا چې ويې ساتي او اداره يې کړي. که واکمن له بيت المال نه په شخصي چارو کې کار واخلي خيانت يې کړی دی. خاين د ملت په سترگو کې سپک وي. بيت المال بايد تل ډک وي ځکه که تش وي د حکومت کمزوري ښيي. په پای کې دا هم زياتوي چې ځای ناستی بايد عايداتو او لگښتونو ته پام وکړي او هغه لار ولټوي چې د بيت المال پياوړتيا ته کته ورسوي.

د زيرکيار په وينا امير عبدالرحمن خان خپل ځای ناستي ته يوه بله ډېره مهمه سپارښتنه هم کړې وه هغه دا چې ځای ناستی به په هيڅ ډول داسې سمونونه نه اعلانوي چې ولس د خپل واکمن پر ضد پاڅون ته راوپاروي. زيرکيار سم وايي چې «څومره به ښه وای که د امير عبدالرحمن لمسي (امان الله خان) د خپل نيکه وينا ته غور نيولی وای.» ۳۴۱

پايله

لکه چې مې د مخه يادونه وکړه امير شيرعلي خان د افغان- انګليس د دوهمې جگړې په پيل سره د هېواد شمال ته په دې نيت چې روسيه به ورسره مرسته وکړي لار شو او روسان د دې پرځای چې مرسته ورسره وکړي دی يې وهڅاوه چې د انګرېزانو سره جوړه وکړي. امير د هغې ناروغۍ له امله چې ورته پيدا شوې وه په مزار کې مړ او هلته خاورو ته وسپارل شو. په کابل کې امير محمد يعقوب خان واکمن شو او په گندمک کې يې د انګرېزانو سره تړون لاسليک او د هېواد يو شمېر سيمې يې انګرېزانو ته ورکړې.

په کابل کې د انګرېزانو پر ضد افغان پوځ د خلکو په ملاتړ پاڅون وکړ او د کابل په بالاحصار کې يې د انګليسانو سياسي استازی کوکناري، د هغه درې انګليسي ملګري او ۷۵ تنه هندي ساتونکي ووژل. د دې پېښې وروسته لارډ ليټن انګرېزانو د غچ اخېستلو په

موخه ځينې گامونه پورته کړل او برسېره پردې ده د افغانستان د توپې کولو پلان تر لاس لاندې ونيو چې د بریتانې، روسې او ايران تر منځ ووېشل شي او دغه پلان يې د نوي نظم په نوم ياد کړ.

د ښه مرغه د اپرېل په مياشت کې په انګلستان کې د ليبرال گوند د وليم کلاډسټون په مشرۍ تاکې وکتلې. لارډ ليتن د برتانوي هند د واکمنۍ نه ليرې شو او پرځای يې لارډ ريڼ وټاکل شو. دوی خپل سياست ته بدلون ورکړ او لارډ ريڼ کابل ته يو تجربه کار ديپلومات لېبل گريفن ولېرلو هغه د شمالي افغانستان له پاره د يوه واکمن په لټه کې شو. امير عبدالرحمن چې بخارا ته تېښتېدلی و او دوولس کاله يې هلته تېر کړي و او د روسانو په مواجېو يې ژوند کړی و د هېواد شمال ته راغی او هلته يې فعاليت پيل کړ او د واک خاوند شو. لېبل گريفن د خپلو موخو له پاره د عبدالرحمن سره اړيکې ټينگې او ليکونه يو او بل لوري ته ولېرل شول. په پای کې امير عبدالرحمن د انګرېزانو سره دا ومنله چې د شمالي افغانستان واکمن شي.

دغه مهال د مېوند په جگړه کې افغانانو د سردار محمد ايوب خان په مشرۍ انګري پوځ ته کلکه ماتې ورکړه انګرېزان د نوي نظم د پاليسۍ نه تېر شول او امير عبدالرحمن يې وهڅاوه چې کندهار په خپل زور د ايوب خان نه ونيسي او په خپله واکمني کې يې شامل کړي.

د امير عبدالرحمن سره د موافقې وروسته دغه جگړه پای ته رانږدې شوه او د ميوند جگړې د ليتن د تجزيې پلان ناکامه کړو او امير عبدالرحمن د انګرېزانو په مرسته محمد ايوب خان مات او افغانستان د عبدالرحمن تر واکمنۍ لاندې يو موټی شو. خو دا د افغانستان د خاورې د يوې برخې په بايلودلو او د هېواد د بهرني سياست د لاسه ورکولو په بيه تمام شو.

د افغان- انګليس د دوهمې جگړې وروسته د انګرېزانو د رسمي چارواکو په سياست کې دوې نظريې په ښکاره توګه څرګندې شوې چې يوه يې د «بيلتون سيمه» او بله يې د «علمي کرښې» په نومو يادې شوې چې د دواړو موخه د روسې د تېرې په وړاندې د برتانوي هند ساتنه وه. خو کله چې په ۱۸۸۰ کال کې روسانو په پامير کې د افغانستان ځينې مخکې ونيولې نو انګرېزانو د روسانو سره د افغانستان د ټولې شمالي پولې د په ښه کولو موافقې ته ورسېدل او بيا دا کار ترسره شو.

د علمي پولې د په نښه کولو له پاره په امير باندې د ډېورنډ هوکړه ليک وټپل شو چې افغانستان هغه رد کړ. د ډېورنډ کرښې دولت کمزوری کړ، افغانستان هغه پراخې سيمې د لاسه ورکړې چې داسې پښتانه په کې اوسېدل چې د هېواد په جوړېدو او ساتلو کې يې مهم رول درلود.

له دې وروسته امير د هېواد کورنيو چارو ته پاملرنه وکړه. ده په دې ډېر زور واچاوه چې يو غښتلی مرکزي دولت جوړ کړي. په دې موخه نوموړي امير د غښتلي پوځ، پراخې ادارې او د جاسوسۍ پراخه شبکې، د ماليې د راټولولو سيستم جوړولو او د بهرني سوداګرۍ انحصارولو ته مخه کړه.

د دغه امير د واکمنۍ په جريان کې د يوه سياسي، اقتصادي، حقوقي او پولي سيستم په غښتلي کولو سره د واحدې ټولې د منځ ته راتلو له پاره شرايط برابرو شول چې په هغې کې يو مرکزي واکمن ملي دولت جوړ شو. امير روحانيون، د مخکې غټ مالکان او د قبيلو د مشرانو په خپلو سره نه يوازې د غښتلي سيکولر حکومت له پاره بلکې په راتلونکو لسيزو کې يې د هېواد د عصري کولو او صنعتي کولو له پاره لار هواره کړه. خو امير د ټولنيز او زده کړې د سيستم د جوړولو هڅې ونه کړې. ده د اساسي قانون د جوړولو نوښت ونه کړ چې د خلکو مسؤليتونه او حقوق په کې ټاکل شوي وای. دی يو مستبد واکمن شو او د ټولې افراد اړ شول چې نوښتګر، خوځوونکي او جوړونکي او په ځانګړې توګه متفکر ونه اوسي.

که د امير شيرعلي خان سياسي مرکزيت چې د دوديزې فردي ازادۍ سره ملګری و د خپلې واکمنۍ په پای کې هېواد په داسې لارې روان کړی و چې افغانستان په ملي دولت بدل شي خو امير عبدالرحمن د دوديزې فردي ازادې پرته سياسي مرکزيت منځ ته راوړ. ده د امير شيرعلي خان پرعکس هغه محمدزيان په سر کې ودرول، چې د انګليس د تېرې په وخت کې د انګرېزانو پلويان وو.

په افغانستان باندې د انګرېزانو په دوهم پوځي يرغل سره نوي دولت د امير شيرعلي خان د پښتو سمون ترک کړ. د پښتو ملکي القاب ترک شول، فارسي د دفتر يوازينی ژبه شوه، خو د امير شيرعلي خان د وخت پوځي القاب تر زياتې اندازې پر ځای پاتې شول. برسېره پردې چې په دې وخت کې يو شمېر تالیفات په پښتو وشول، د ختيځو پښتنو سره د امير مرادوي او هغو ته د ده فرمانونه اوليکني په پښتو وې. د دربار په دارالانشأ کې د پښتو ځانګړې څانګه پرانېستل شوه چې مشر يې ملا محمد خان افغاني نويس د عبدالله خان افغان نويس پلار و.

پوهاند کاکړ وايي چې: «د ملي مصلحت تقاضا دا وه چې د امير شېرعلي خان اخلافو په تېره امير عبدالرحمن د هغه اصلاحات او په خاص ډول د پښتو حرکت د سره نيولې، اصلاح کړي او لا هم عمومي کړای وای، خو نه امير عبدالرحمن او نه د هغه پاچا زوی حبيب الله خان دغسې وکړل. دوی شايد له دې کبله داسې نه وي کړي چې د امير شېرعلي خان د تربورې کورنۍ غړي وو، يا يې نه غوښتل، د هغه نوښتي او اصلاحي پروگرامونه د سره ونيسي.... په پښتنو په تېره د سر په پښتنو کې څه وخت چې کومه کشاله مخصوصا هغه چې د واک پر سر را منځ ته شوې، هغه د تربورې په چوکاټ کې اچول شوې او بيا تربوري په دښمنۍ بدله شوې ده.» ۳۴۲

پنځلسم څپرکی

د امير حبيب الله خان واکمني

د امير عبدالرحمن د مړينې وروسته د امير مشر زوی حبيب الله خان د پلار د وصيت سره سم د واک په کدی کېناست. امير عبدالرحمن د خپلې يوويشت کلنې استبدادي واکمنۍ په يون کې د سر سري وژلي او يا يې د هېواد نه شړلي وو، تر څو د ده ځای ناستي ته ستونزې جوړې نه کړي.

امير حبيب الله خان د خپل پلار غوندې سخت زړی نه، بلکې د نرم دريځ خاوند و. نوموړي ډېر بنديان وبخښل او د بنديتون نه يې ايله کړل. ده د يوه عمومي فرمان له مخې ډېر هغه کسان بېرته افغانستان ته راوبلل، چې د ځانونو د ژغورلو په خاطر تېښتېلي او يا د امير عبدالرحمن خان له خوا د وطن نه شړل شوي وو. په دغو راغلو کسانو کې د محمود طرزي او د مصاحبانو يانې د امير د پتو سلاکارانو کورنی وې.

لودويک اداميک وايي: محمود طرزی يو نامتو شاعر، د غلام محمد خان زوی او د سردار رحمدل خان لمسی و. ده په جلاوطني کې پنځلس کتابونه يا په خپله ليکلي او يا يې هم ژباړلي دي. ده د اسلامي يووالي او اسلامي سمون لوی مبلغ سيد جمال الدين سره پېژندگلوي درلوده او د سراسري اسلامي پېوستون ټينگ پلوي و او د برتانوي واکمنۍ سخت مخالف و. اداميک زياتوي چې د واکمن محمدزايي ټبر د يو غړي په توگه، د امير حبيب الله خان په کهول هغه وخت ورگډ شو چې خپلې دوه لونه يې د هغه زامنو سردار عنايت الله او سردار امان الله ته په نکاح کړې. نوموړي په ۱۹۱۱ کال په مني کې د سراج الاخبار د جريدې په رايستلو سره د ځوانو افغان سمون غوښتونکو تر ټولو تکړه ويندوی وگڼل شو. داود جنبش وايي «چې همدا د سراج الاخبار جريده د پښتو ژبې د مطبوعاتي کولو پيلوونکې ده. محمود طرزي په خپله په دري ژبه د پښتو د لرغونتوب، ادبي، سياسي او ټولنيز ارزښت په اړه مقالې خپرې کړې او خپل نور همکاران يې لکه مولوي صالح محمد خان، غلام محی الدين خان، عبدالرحمن لودين، عبدالهادي داوي پريشان، عبدالعلي مستغني او نور وهڅول چې پښتو ژبې او ادبياتو ته کار وکړي.» ۳۴۳

سراج الاخبار خلکو ته د نيواک ضد او پان اسلامي پېغام لېږه.

هېواد ته د راستنېدونکو په جمله کې يوه بله نامتو کورنۍ د امير د پټو سلاکارانو کورنۍ وه. په دې کې مهم بې د محمد يوسف خان پنځه زامن وو، چې له هغوی نه نادرخان ډېر ژر تر لوره ځايه ورسېد.

نادرخان د سردار يعی خان لمسی او د يوسف خان زوی و. د ده نيکه سردار يعی خان، چې د امير محمد يعقوب خان خسر و هغه مهال چې امير عبدالرحمن په کابل کې واکمن شو، انگرېزانو هندوستان ته تبعيد کړ. د نادرخان پلار يوسف خان او تره اصف خان په هندوستان کې زده کړې وکړې چې بيا د يوسف خان زامنو عبدالعزيز خان، محمدهاشم خان، شاه ولي خان، شاه محمودخان او نادرخان په هند کې دانگرېزانو په ښوونځيو او پوهنتونو کې زده کړې وکړې او د انگرېزانو د ژبې او سياست سره بلد شول.

امير حبيب الله خان د نادرخان د خور سره چې يوه هوشياره او تکړه ښځه وه واده وکړ او د امان الله خان دوې خویندې د شاه ولي خان او شاه محمودخان مېرمنې وې. په دې ترتيب دوی د خپلو نږدې اړيکې درلودې. نادرخان د انگرېزانو ضد جگړه کې د پکتيا په محاذ کې په ټل او وانه کې لوی بری ترلاسه کړ او په دې ترتيب يې د خپلواکۍ په کتلو کې د قدر وړ رول ولوباوه. د خپلواکۍ د جگړې وروسته امان الله خان دی د دفاع د وزير په توگه وټاکه.

امير حبيب الله خان يو سمون- فکړه واکمن و چې د خپل هېواد د موډرن کولو دپاره يې کامونه اوچت کړل. نوموړي په ۱۹۰۳ کال کې د حبيبې او حربي ښوونځي جوړ کړل؛ د سراج الاخبار جريدې د ۱۹۰۶ کال د جنوري په يوولسمه نېټه د مولوي عبدالروف کندهاري له خوا خپره شوه چې يوازې يوه گڼه يې د چاپه راووته؛ بيا په ۱۹۱۱ کې د سراج الاخبار افغانيه په نامه جريدې د محمود طرزي په مشرۍ په خپرونو پيل وکړ. د داود جنبش په وينا «له دويم کال راهيسې يې ټولې گڼې د ډبرين چاپ پرځای په حروفې ډول خپرې شوې او کابل ته د زنگو کرافي تخنيک په لېږدېدو يې د عصري ژورناليزم يوه خورا اړينه برخه- عکسونه، رسمونه او جدولونه هم د لومړي ځل له پاره په خپلو پاڼو کې ځای کړل.» ۳۴۴ په دې کار کې هغو پراريانو چې د امير عبدالرحمن د واکمنۍ په مهال د هېواد نه شړل شوي وو، ستره ونډه واخېسته چې په بهر کې يې نوې پوهنه تر لاسه کړې وه چې ډېر مهم يې محمود طرزی، غلام معی الدين افغان او نور دي. همدلته د لومړي ځل له پاره د افغاني ښځو ستونزې ته پاملرنه شوې او ورته يې د کوچنيانو له پاره د «سراج الاطفال» په نامه ځانگړې ضميمه هم خپره کړې ده. هغه راز راز قانوني سمونونه په لاره واچول او د پلار سختې جنايي جزاکانې يې ليرې کړې. نوموړي هغه څپونکی کورنی

جاسوسی سازمان، چې پلار يې په کار اچولی و، ليرې کړ. د تېري په اند «څرنگه چې په فردي اسبندادي او مطلقه نظام کې د سياسي، اجتماعي او ثقافتي نهضتونو د انکشاف امکانات بيخي کم وي، نو حبيب الله خان په اول قدم کې د خپل پلار اسبندادي سلوک پرېښود.» ۳۴۵ امير حبيب الله خان د بهرني مهارت او تکنالوژي پر اهميت ښه پوهېده او د خپل پوځي ځواک د لا ټينگښت په موخه يې بهرني کارپوهان په لومړۍ درجه برتانويان له اروپا نه کابل ته راوغوښتل، خو ورو ورو يې هنديان او ترکان هم پسې ورزيات کړل. له بهر څخه دغو راغلو کسانو افغانستان ته نه يوازې کمال راوړ، بلکې د سمونونو او موډرن کولو هغه نظريې يې هم خورولې چې په ټولنيزو او سياسي برخو کې خپرېدلې. په دې توگه امير حبيب الله خان د لوېديځې پوهې په لرلو سره د مدنيت، پوهنې او پرمختگ پلوي و.

د امير حبيب الله خان په وخت کې د جبل السراج د برېښنا فابريکه په کار واچول شوه، د کندهار د سراج نهر د جوړېدو کار پيل شو، د کابل د دريو کارخانه جوړه شوه او په کار يې پيل وکړ او په هېواد کې د زرو لارو ترميم او د نويو لارو جوړول پيل شول. ده د راهدارۍ، واده او فاتحې نظامنامې هم جوړې کړې.

امير حبيب الله يتيمتون جوړ کړ او خپل رسم يې د دې موسسې له پاره خرڅ کړ. امير حبيب الله خان د وطن د ساتنې په اړه د خپل پلار لار ونيوله افغانستان بايد پياوړی وسله وال پوځ ولري. پياوړی وسله وال پوځ او د هېواد هر اړخېز پرمختگ د هېواد د خپلواکۍ غټ تضمين دی.

امير حبيب الله خان «په خپل لکښت په کلکته کې «ژباړ خونه» (Translation hous) جوړه کړه چې په افغانستان کې د ښوونځيو له پاره اروپايي علمي کتابونه په فارسي ژبه وژباړي. دغه ابتکار ښي چې د پوهنې سره يې علاقه درلوده» ۳۴۶

امير حبيب الله خان يو عياش سړی و او حرام سرای يې د ښکلو ښځو نه ډک و. ده په ځاني ساعتېريو کې ځان ډوب کړی او دولتي چارو ته يې لږ وخت ايستلی و. خو د دغو کمزوريو سره سره ده بيا هم خپل هېواد ته خدمت کړی دی.

د ليون پولادا په اند دا مهال په افغانستان کې دوې سياسي ډلې شتون درلود. لومړی ډله کې دوه لوري وو: يو پاڅون کوونکی لوری چې امان الله، محمود طرزي او ځوان افغانان، عبدالهادي داوي او عبدالغني په کې وو او بل لوری د برتانيې پر ضد ساتنپالان چې سردار نصرالله خان، جنرال محمد نادرخان او ډېر ديني عالمان په کې شامل وو. دوهمه ډله چې د برتانيې پلوي يا ناپېيلې وه او عبدالقدوس خان ستر وزير، عنايت الله خان او په پټه امير حبيب الله خان په کې وو.

سردار نصرالله خان د امير حبيب الله ورور او خای ناستی ساتنپال خو لږ تر لږه د تخنيکي پرمختگ سره مينه درلوده، ده انګلستان ليدلی و او د هغه خای تخنيکي، اقتصادي، او ښوونې پرمختګونو او د ولس ازاديو اغېز ورباندې کړی و او د بدلون پلوي و. نوموړي په پټه د انګرېزانو په وړاندې د غازيانو سره مرسته کوله او د بدلون غوښتونکو کسانو سره يې په دربار کې راشه درشه لرله.

په افغانستان کې د امير حبيب الله خان په وخت کې «د مشروطه غوښتونکو غوښتنه د افغانستان پوره خپلواکي وه. نورې غوښتنې يې د مشروطيت يانې د اساسي قانون له مخې حکومت او د عصري مدنيت او پرمختګ وې.» ۳۴۷ د افغانانو د خپلواکۍ جذبې په کابل کې د برتانيا د حکومت سفير همفريز ډېره ښه انځور کړې ده: «د پاچا نه نيولې تر اوسپنه کوچي پورې چې د منځنۍ اسيا او هند په بازارونو کې په هسکه غاړه کړې د افغانانو په هره ساه کېښکېښنه کې خپلواکي ده.» ۳۴۸

وارتن گريگورين هم وايي چې «په ۱۹۱۹ کې هېڅ واکمن نه شو کولی په افغان ملت باندې په ټينګه حکومت وکړي، خو دا چې د پوره خپلواکۍ له پاره يې ژمنه کړې وي.» ۳۴۹

امير حبيب الله خان داسې مهال واک ته ورسېد چې په هېواد کې ناسيوناليزم او قانوني غورځنگ سر راجک کړی او په سيمه کې د نيواک ضد او د پان اسلاميزم څپې پراخېدې. د مخه مو وويل چې د لومړي قانوني غورځنگ غوښتنې چې د افغان سياسي فعالانو، د هندې مسلمانانو په گډون مترقي ښوونکو له خوا يې مشرې کېدله، مشروطه شاهي او په ازاده توګه ټاکل شوي پارلمان و. دغو سمونپالو د بهرني تسلط نه بشپړه خپلواکي، ټولنيزه برابري او د هېواد مودرن کول هم غوښتل. د امير د لومړي رضایت سره سره دا لومړی قانوني نهضت (۱۹۰۵-۱۹۰۹) په افغانستان کې اوږد نه شو په دې چې د دغه غورځنگ راديکالو کسانو تيري، زور او بلوا ته زړه ښه کول وښودل. امير هم په بې رحمۍ سره وځپل؛ اته تنه يې زندی او ۳۵ مشران يې بنديان کړل. په دې اړه غبار ليکي چې امير حبيب الله خان «ان د جمعيت د غړو نوملړ چې ده ته يې راوړی و تر پايه ونه لوست او اور ته يې واچوه او وويل: که ټول مې لوستی وای ډېر خلک تباه کېدل.» ۳۵۰ له دې نه ښکاري چې نوموړي د نرمتوب نه کار اخېستی دی. د دوهمې نړيوالې جګړې په جريان کې چې افغانستان د سترو ځواکونو په سياست کې کېږ شو دغه غورځنگ بيا په خوځښت راغی او په ۱۹۱۹ کې د امير د ترور په پايله کې د هغه مترقي زوی امان الله خان يې تخت ته ورساوه.

حبيب الله خان په بهرني سياست کې د پلار په گام روان و. خو روسيې او برتانيې دواړو

د افغان په روان سياسي حالت کې بدلون غوښته. روسي حکومت له افغاني واکمن سره د نېغو اړیکو د لرلو حق غوښته او برتانوي حکومت تر هغه پورې په رسمیت نه پېژانده چې هغه د انګلیس- افغان د شته تړونونو په اړه بیا خبرې اترې ونه کړي. که څه هم امیر حبیب الله خان پر دې خبره ټینګ و چې د برتانوي- افغان تړونونه خو د دوو دولتونو تر منځ شوي، ځکه نو د برتانوي یا افغانستان د واکمن د مړینې په صورت کې باید په هغو له سره غور ونه شي. خو په پای کې اړ شو چې په کابل کې برتانوي استازی ومني.

د انګرېزانو سره یې د ۱۹۰۵ کال د مارچ په ۲۱ مه د پلار له خوا شوی تړون د سره لاسلیک کړ. د دغه تړون له مخې برتانوي امیر ته په کال کې یو میلیون او اته سوه زره روپۍ ورکولې او دا حق یې هم درلود چې د هند نه وسله وارده کړي. د خپلواکۍ د غوښتنې په اړه د امیر حبیب الله خان هغه هڅې هم د پام وړ دي چې د ۱۹۰۵ کال په تړون کې کړې دي. د برتانوي هند حکومت په دې ټینګار کاوه چې د امیر عبدالرحمن سره د ډیورنډ تړون شخصي و او د هغه د ځای ناستي سره د بیا خبرو اترو وړ و. د هند د حکومت موخه دا وه چې د خبرو له لارې د امیر حبیب الله خان نه دا امتیازات تر لاسه کړي چې د پښتونخوا د سیمو په سیاست کې به لاسوهنه نه کوي او د افغانستان او برتانوي هند په منځ کې به د مومندو پوله ټاکي. برتانوي هند امیر حبیب الله خان د کلک فشار لاندې ونيو، مالي مرستې یې پرې بندې کړې او افغانستان ته یې د وسلو د راوړلو مخه ونيوله. خو امیر حبیب الله خان «تسلیم نه شو» هغه د برتانوي هند د بهرنیو چارو وزیر لويس دين کابل ته راوغوښت. د دريو میاشتو خبرو نه وروسته د ۱۹۰۵ کال د مارچ د میاشتي په ۲۱ نېټه «د افغانستان او د مربوطاتو خپلواک پاچا» او لويس دين د هند د بهرنیو چارو وزیر یو تړون لاسلیک کړ. د لودویک ادامیک په وینا په دغه تړون کې امیر حبیب الله خان په ښکاره د افغانستان د دولت او مربوطاتو خپلواک پاچا په توګه ځان یاد کړ. په دې توګه په دغه تړون کې انګرېزانو هغه ته د اعلیحضرت خطاب او هم یې د افغانستان او په افغانستان پورې د اړوندو سیمو د خپلواک پاچا په توګه وپېژاند.

دا وخت په اروپا کې د قواوو اندول بدلېده. جرمني ځواکمن کېده او په ۱۹۰۵ کال په لیرې ختیځ کې د جاپان له خوا د روسي ماتې او د همدې کال د ناکامه انقلاب له امله تزارې روسیه کمزورې کېده. په منځنۍ اسیا کې د دغو پېښو له کبله روسي او برتانوي پرېکړه وکړه چې په اسیا کې د اوږدې مودې اختلافات هوار کړي. دوی په ۱۹۰۷ کال کې په پترسبورګ کې د انګلیس-روس کنوېنشن لاسلیک کړ چې په پارس کې یې د دوی د نفوذ سیمې وټاکلې، په افغانستان کې یې د برتانوي نفوذ ومانه او ژمنه یې وکړه چې په تبت کې به

دواړه لوري لاسوهنه نه کوي. د دغه کانوېنشن له مخې برتانيې ژمنه وکړه چې تر هغه به د افغانستان کومه برخه نه نيسي چې امير د ۱۹۰۵ کال تړون مراعات وکړي. روسيې ژمنه وکړه چې يوازې د برتانوي حکومت له لارې به د افغانستان سره چلند کوي. په دې توگه د برتانيې او روسيې تر منځ د پتسبورگ کانوېنشن په پارس او افغانستان کې د دوی د نفوذ ساحې وټاکلې. د دې تړون موخه دا وه چې د جرمني نفوذ تم کړای شي. خو د برتانيې حکومت په دغه تړون باندې د افغانستان امير حبيب الله خان خبر کړی نه و. خو دوه کاله وروسته کله چې امير حبيب الله خان ورباندې خبر شو دغه تړون يې لاسليک نه کړ او انگرېزان يې وپوهول چې د افغانستان په اړه پرېکړه بايد يوازې په خپله د افغانستان په خوښه وي.

د ليون پولادا په اند په ۱۹۱۵ کال په سپتمبر کې جرمني پلاوی په دې هيله کابل ته راوړسېد چې که امير حبيب الله د برتانيې په وړاندې جگړې ته وهڅوي. مصداق وايي چې حبيب الله خان د لومړۍ نړيوالې جگړې په يون کې د افغانستان د کتو په نظر کې نيولو سره نه د ترکيې او المان د مرکزي قواوو او نه هم د هغو دښمنو متحدينو چې انگرېزان او روسان وو، تر اغېز لاندې راغی. په ۱۹۱۵ کال کې کابل ته د نيدرماير او هېنتيک په مشرۍ د المان يو پلاوی راغی چې موخه يې د انگرېزانو په وړاندې د امير حبيب الله خان او د پښتنو قومونو لمسول وو. خو امير حبيب الله خان دغه پلاوي ته داسې شرطونه وړاندې کړل چې موخه يې د جگړې نه د افغانستان ژغورل و. لومړی شرط دا و چې جرمنيان بايد په کال کې د سرو زرو ۲۰ زره پونډونه، يو لک ټوپک او ۳۰۰ ټوپونه ورکړي. دوهم شرط دا و چې کله چې د ترکيې او المان بريالي سرتېري افغانستان ته ننوزي بيا به د هغوی په مشرۍ په جگړه کې ونډه واخلي.

نيدرماير د امير حبيب الله خان سره د لومړي ځل ليدنې اغېز داسې بيانوي: «مور ته دغه پياوړی سړی د رسا فکر څښتن ښکاره شو چې خپلې گټې يې ډېر ژر درکولې» ۳۵۱ نيدر ماير دا هم وايي: «مور په دې پوهېدو چې له يوه داسې محتاط او دقيق سړي سره زموږ مخه وه چې خپله گټه او تاوان يې پېژندل او بيرنۍ پرېکړې کولی شوې.» ۳۵۲

ني مصداق د لومړۍ نړيوالې جگړې په جريان کې د امير حبيب الله بهرني سياست داسې ارزوي «امير حبيب الله خان د افغانستان د شلمې پېړۍ په تاريخ کې يو رسېدلی او ذکي پاچا و خو زموږ په تاريخ کې هغه ته داسې کرېدېت چې په بهرني سياست کې لوبولی ورکړ شوی نه دی» ۳۵۳

تيخونوف وايي چې «امير حبيب الله خان د ۱۹۱۴-۱۹۱۸ کلونو کې د لندن نه په دغو

غوښتنو باندې پیل وکړ چې افغانستان ته خپلواکي ورکړي او د ختیځو پښتنو مخکې بېرته ورکړي.» ۳۵۴ د لومړۍ نړیوالې جګړې د پای ته رسېدو وروسته امیر حبیب الله خان د خپل هېواد د ناپیلتوب په بدل کې د هغه مهال برتانوي هند د وایسرا چېلمسفورډ نه د ۱۹۱۹ کال د فبروري په ۲مه په یوه لیک کې د پاریس د سولې د کنفرانس له خوا د افغانستان «د غوڅې خپلواکۍ، د عملي ازادۍ او تلپاتې اسقلال» په رسمیت پېژندنه وغوښته او ورڅخه یې وغوښتل چې د ورسالې د سولې په خبرو اترو کې باید افغانستان د خپلواک هېواد په توګه برخه واخلي. وایسرا د افغانستان د خپلواکۍ خواخوږی و او د هند په چارو کې د برتانوي وزیر ادوین مونتاګو ته یې ولیکل چې دا به ښه نه وي چې برتانیا په زور سره د افغانستان بهرنۍ چارې محدودې کړي او په دې موضوع کې جګړې ته لار شو. د چېلمسفورډ په وینا امیر حبیب الله خان بشپړه سیاسي خپلواکي، د ځمکې پراختیا، پیسې او په انګلستان کې د استازي درلودل غوښتل. ۳۵۵

د لومړۍ نړیوالې جګړې وروسته په ۱۹۱۹ کال د جنوري په میاشت کې د ورسالې د سولې کنفرانس جوړ شوی و او امیر حبیب الله خان د همدې کال د فبروري په دوهمه نېټه چېلمسفورډ ته ولیکل چې په یاد شوي کنفرانس کې دې د افغانستان «دایمي خپلواکي» په لیکلې توګه په رسمیت وپېژندل شي. «۳۵۶ حبیب الله خان د بې پلوی د تکلارې له امله د برتانویانو نه د افغانستان د خپلواکۍ انعام غوښته. ده ان اسلامي کټي هم د افغانستان له خپلواکۍ کتلو نه قربانولې. ۳۵۷

د امیر حبیب الله خان دا غوښتنه له خپلواکۍ نه کمه نه وه. دغه وایسرا لندن ته په خپل راپورټ کې لیکي چې تر هغه ځایه چې دی امیر حبیب الله خان «پېژني امپراتور یې په څو لکه روپیو یا د ایران د شاه په څېر د لقب په ورکولو نه شي قانع کولی.» ۳۵۸

د هند حکومت وپاتېبله چې هغه وخت رارسېدلی چې باید اجازه ورکړو افغاني استازی په لندن کې حضور ولري او هم د جګړې نه وروسته د سولې کنفرانس ته استازی ولېږي. خو د هند د حکومت په ځواب کې د لندن حکومت په غوڅه سره وویل چې «هغه ته دومره موقع مه ورکوی چې غوښتې یې زموږ څخه لار او کودر ورک کړي.» ۳۵۹ په دې توګه لندن دا موضوع مهمه ونه ګڼله او د امیر لیک ته ځواب ور نه کړل شو. د دې لیک نه دوې اوونۍ وروسته امیر په لغمان کې ووژل شو.

شپاړلسم څپرکی

کاکړ او د امير امان الله خان واکمني

کاکړ د امان الله خان د واکمنۍ په اړه يو ځانگړی کتاب چې «د پاچا امان الله واکمنۍ ته يوه نوې کتنه» نومېږي کښلی دی. که څه هم کاکړ وايي چې په دې ليکنه کې د امان الله خان د واکمنۍ ټولې موضوعگانې بيان شوي نه دي خو دا کتاب چې د هغه وخت د کسانو د کښلو ليکنو پر بنسټ ليکل شوی د امانی دورې يو رښتینی انځور وړاندې کوي. وروسته يې د امان الله خان د واکمنۍ په اړه يوه بله لنډه ليکنه چې «د ښاغلي زماني او ښاغلي سيستاني د ليکنو په هکله» نومېږي وکړه. ما په خپله ليکنه کې د دغو دواړو اثارو او هم د نورو ليکوالو د اثارو نه کټه پورته کړې ده.

امير حبيب الله خان د ۱۹۱۹ کال د فبروري د مياشتې په يوويشتمه نېټه د لغمان په کله کوش کې ووژل شو. کاکړ وايي چې يو روايت دا دی چې دغه وژنه سياسي او د مشروطه غوښتونکو د يوې پټې کړۍ کار و، چې درباريان په تېره د دربار غلام بچه کان او ان د امير سکه ورور سردار نصرالله او په خپله امان الله خان په کې برخه درلوده. بل روايت دا دی چې د هغه د وژنې موضوع فاميلي او شخصي ده او په اصل کې د وژل شوي امير د لومړۍ مېرمنې سرور سلطان د امان الله د مور د دسيسې پايله وه. څنگه چې نوموړې د امير د نظره لوبدلې وه، خپل زوی امان الله يې د واکمن کېدو له پاره روزه. کاکړ وايي چې د دواړو روايتونو له مخې د امير حبيب الله وژونکی د شجاع الدوله غوربندي په نوم يو غلام بچه و چې تره يې د مخه د امير حبيب الله خان په امر زندی شوی و.

د امير حبيب الله خان د وژنې وروسته سردار نصرالله په جلال اباد او امان الله په کابل کې ځانونه اميران کړل. خو نصرالله د امان الله په پلوي زر د امارت نه تېر شو او د امان الله سره يې لوز وکړ چې چارې به د ده په سروالی سره پرمخ بيايي، خو د هغه پلويانو په خپل سر قرغې ته نږدې په امير امان الله باندې دزې وکړې چې هغه ورنه روغ رمت ووت. کاکړ وايي چې د يوې باوري سرچينې له مخې امير امان الله د خپل تره د وژنې لامل شو. په دې ترتيب امان الله خان د کورني سيال په نه درلودلو سره د پاچايۍ واکې په لاس کې ونيوې.

د ۱۹۱۹ کال د مارچ په دريمه نېټه امير امان الله خان چېلمسفورډ ته يو ليک واستوه او څرگنده يې کړه: «زه په دې کې هېڅ شک نه لرم چې تاسو علي جناب، زما دوست، به د دې خوږمنې پېښې له کبله ډېر غمجن شوي ياست، ځکه له پخوا څخه تر دې گړيه اليحضرت، زما مرحوم پلار، د بې طرفۍ او نېغ تماس او دوستانه اړيکو ټول شرطونه جاري ساتلي وو، چې د هغې يادونې ته ضرورت نه شته.» ده زياته کړه چې «... د نوموړي انډيوال (مرستيال واکمن) څخه دې دا هم پټه نه وي چې زموږ د افغانستان خپلواک او مستقل حکومت په هر وخت او هر مهال کې دې ته چمتو دی چې د انگلستان له حکومت سره د ملگرتوب له هر رنگه غوښتنو سره سم، داسې تړونونه وکړي چې هم زموږ او هم ستاسې حکومتونو ته د سوداگرۍ په برخه کې کټور ثابت شي.» ۳۶۰

د برتانې حکومت چې په کابل کې د ځواک د بدلېدو په اړه شکمن و په لومړي سر کې د ځوان امير د خپلواکۍ ادعا ته ډېر پام ونه کړ. دغه وخت په سمله کې پوځي واکمنو د افغانستان له خوا سملاسي پوځي خطر نه ليد. د هند ويسرا چېلمسفورډ د هند له پاره د دولت وزير اډوين مونتاکو ته په خپل ليک کې څرگنده کړه چې امير ار دی د مخه تر دې چې د برتانې په وړاندې کوم کړه ترسره کړي، خپل ځان په کابل کې ټينگ کړي. ۳۶۱ برتانويانو فکر کاوه چې د ځوان امير نيت دا دی چې د کورني اپوزيسيون پام يوه بهرني دښمن ته واړوي. خو امان الله خان د بشپړې خپلواکۍ له پاره د برتانې په وړاندې سپېڅلې جگړه پرمخ بيوه. برسېره پردې يې د برتانې نه د بشپړې خپلواکۍ د ترلاسه کولو په څنگ کې د افغانستان د اوږدې مودې د سياسي، ټولنيزو او اقتصادي مودرنيزه کول ليدل چې د بهرنۍ نړۍ سره د گټورو اړيکو د جوړولو له لارې ترسره کېږي.

پاچا امان الله په لومړي گام کې د افغانستان د خپلواکۍ د کتلو له پاره د ۱۹۱۹ کال د فبروري د مياشتې په ۲۴ نېټه د کابل د مراد خانې په يوه ميدان کې چې هلته خلک او سرتيري راټول شوي وو په يوازې ځان را څرگند شو او د هغوی په مخ کې يې د هېواد بشپړه خپلواکي او د ټولو خلکو ازادي او برابري اعلان کړه او خلکو يې تود هرکلی وکړ. امان الله د مارچ د مياشتې په دېرشمه نېټه د پلار د وژل کېدو وروسته د برتانوي هند واپسرا ته د ځان د امير کېدو په اړه ليک واستوه. د اپرېل په ديارلسمه نېټه يې په کابل کې په يوه عام دربار کې د وطن بشپړه خپلواکي په لاندې ډول څرگنده کړه.

«ما خپل ځان او خپل هېواد پوره ازاد، په خپل اختيار او خپلواک اعلام کړ. له دې وروسته به زما هېواد هغسې خپلواک وي لکه د نړۍ نور دولتونه او قدرتونه، چې دي. هېڅ باندینی هېواد به پرې نه ښودل شي، چې يو وېښته قدر حق ولري، چې د افغانستان په د

نننيو او باندنيو چارو کې کوتې ووهي او که کوم چا دغسې وکړل، زه تيار او اماده يم چې په دغې خپلې تورې سره يې مری پرېکړم.» پاچا امان الله د خپلې اورېدې وينا په پای کې برتانوي ايجنټ، حافظ سيف الله ته مخ واراوه او په نرمه يې ورته کړه، چې «اوه سفيره، ته پوه شوې چې ما څه وويل؟» هغه ځواب ورکړ، چې «هو، زه پوه شوم.» ۳۶۲

د برتانوي هند واييسرا د ۱۹۱۹ کال د اپرېل په پنځلسمه نېټه د امان الله خان د ليک ځواب ورواستوه چې په هغه کې د نورو موضوعاتو په اړه خبرې شوې وې، خو د خپلواکۍ په اړه پته خوله پاتې و. امير امان الله پوه شو چې برېتانيا لا تر اوسه حاضره نه ده چې د افغانستان خپلواکي ومني که څه هم «افغانستان په کورنيو چارو کې پوره خپلواک و، خو باندني اړيکې يې تر دې وخته پورې د هند د برتانوي حکومت له لارې ترسره کېدلې.» ۳۶۳

پاچا امان الله وروسته له دې چې پوه شو چې برتانيا د افغانستان پوره خپلواکي نه مني نو د جگړې لاره يې خوښه کړه او د انگرېزانو د حاکميت پر ضد يې هم د ننه په هېواد او هم په شمالي هندوستان کې د خلکو په پارولو پيل وکړ. په پېښور کې افغان وکيل عبدالرحمن او د پوستې آمر غلام حيدر پاچا امان الله ته په يوه راپور کې څرگنده کړه چې «هندوستان د انقلاب په درشل کې دی او د افغان يرغل يوه بڅري ته ضرورت دی، چې په هندوستان کې د برتانيې حاکميت پای ته ورسوي.» ۳۶۴

د ۱۹۱۹ کال د مارچ او اپرېل په مياشتو کې يو شمېر پېښو امير په دې قانع کړ چې د ننه په افغانستان او هم په سيمه کې وضع د دې له پاره کنټرول شوې ده چې د برتانيې په حکومت زور واچول شي چې د پوځي خطر په وړاندې د افغانستان بشپړه خپلواکي په رسميت وپېژني. په هېواد کې د ملي احساساتو څپي په جکېدو وې، په سيمه کې د لومړۍ نړيوالې جگړې په پايله کې د ترکيې ماتې د برتانيې پر ضد د مسلمانانو احساسات وپارول او په هند کې د برتانيې د حاکميت نه مسلمانان او هندوان دواړه ناراضي وو.

د کاکړ په وينا پاچا امان الله د می د مياشتې په سر کې پرته له دې چې جگړه اعلان کړي، خيبر ته د سپاه سالار صالح محمد، کندهار ته د صدر اعظم سردار عبدالقدوس او خوست ته د جنرال محمد نادر په قوماندانۍ پوځونه واستول. صالح محمد خان د می په دوهمه نېټه د خپلو مخکينيو قواوو سره ډکې ته ورسېد چې بله ورځ دوه زره نور پوځ ورسره يوځای شو. کندهار ته د صدر اعظم سردار عبدالقدوس خان په مشرۍ پنځلس سوه پوځ او د دوه زره نه زيات پوځ خوست ته د نادر خان په مشرۍ ولېږل شو.

کاکړ زياتوي چې د ۱۹۱۹ کال د می د مياشتې په څلورمه نېټه د صالح محمد پوځ په

انگريزانو بريد وکړ او د افغان- انگلیس دريمه جگړه پيل شوه. د سپاه سالار پوځ په لنډې کوتل کې مات شو، د کندهار په جبهه کې جگړه ونه شوه خو جنرال محمد نادر د وزيرستان په تل او وانه کې د انگرېزي پوځ نه ځايونه ونيول او يو څه وسلې او کارتوس يې هم ترلاسه کړل. په درې واړو جبهو کې ډېرو ولسي خلکو له پوځ سره ملګرتيا وکړه. کاکړ دا هم وايي چې دا واقعيت دی چې د خپلواکۍ جذبه د ټولو قومونو په تېره بيا د پکتياوالو، او د وزيرستان په مسيدو او وزيرو کې ډېره ټينګه وه.

د افغان- انگلیس دريمه جگړه د لومړيو درجه اسنادو له مخې پوهاند ډاکټر علي احمد جلايي په خپل اثر «د افغانستان پوځي تاريخ» کې اوږده او په افياي ډول بيان کړې ده. زه به په دغې ليکنې کې د افغان- انگلیس دريمه جگړه د جلايي د ليکنې پر بنسټ چې «د افغانستان پوځي تاريخ» نومېږي په لنډه توګه بيان کړم.

د افغان- انگلیس دريمه جگړه

جلايي وايي چې د پاچا امان الله خان د جگړې موخه دا وه چې د هېواد د بهرنیو اړيکو کنټرول بېرته وګټي او افغانستان په بشپړه توګه خپلواک کړي. د هغه ستراتيژي درې يو بل سره اوډل شوي اړخونه درلودل: لومړی دا چې د می د مياشتې په منځ کې به په يوه وخت کې د پېښور، کرمې او بلوچستان په کرښه د منظم پوځ بريدونه کېږي چې د غازيانو د ډلو له خوا به يې ملاتړ کېږي. دوهم دا چې د پوځ عمليات بايد د پښتنو د قبايلو د پاڅونو سره موازي پراخوالی ومومي چې دا به برتانوي قواوې بوختې او په افغانستان باندې به يې بريدونه لږ کړي. دريم دا چې افغانانو د هند په ځايي او په ځانګړې توګه د مسلمانو د ځايي قطعاتو په پاڅونونو او د دوی په اتحاد حساب کاوه. جلايي وايي چې سره له دې چې د امان الله خان موخې او سياسي ستراتيژي روښانه وې خو د هغو وسايل او لارې جلا، لږې او نامنظمې وې. په پایله کې د وزيرستان پرته قومي همکاري په زياته اندازه خورا وړه وه. ۳۶۵

د علي احمد جلايي په وينا دغه وخت د افغانستان د ټول منظم پوځ شمير ۳۵۰۰۰ پلي، ۸۰۰۰ غرني سرتېري او ۴۰۰۰ توپچيان وو. له دې څخه ۳۵ پلي کنډکونه، پنځه د سوارو ټولي او ۲۷ توپونه د هند سره په کرښه پراته وو. ۳۶۶ د افغان پوځ زياتره برخه په مودرنو وسلو سنبال وه چې د امير حبيب الله خان په وخت کې هېواد ته راوړل شوې وې چې د ۱۹۰۵ کال د تړون له مخې يې خلاص لاس درلود چې د هند له لارې وسلې هېواد ته راوړي. افغان سرتېري د خپلې زړه وړتيا او زغم له مخې نامتو وو. خو په کابل کې د ځينو

ممتازو قطعاتو پرته د افغان پوځونو زیاتره برخه نوې جذب شوې، په کمزورې توګه روزل شوې، تنخواه یې لږه او رهبري یې کمزورې، د لوړ خوځښت نشتوالی او ترانسپورت یې محدود و.

په ۱۹۱۹ کال کې د برتانوي پوځ د دوو شمالي او سوويلي اردوګانو نه جوړ و. د دغو دوو اردوګانو نه هر یو اردو اته پلې فرقي، پنځه خپلواکه لټوې، درې د سوارو لټوې او یوه غرنی لټو درلوده. له دغو نه د شمال- لوېديځې سرحدي صوبې د خدمت له پاره د پېښور لومړۍ فرقه، د راولپنډۍ دوهمه فرقه، د لاهور شپاړسمه فرقه، لسمه توپچي لټو چې یو ټولې یې په پېښور، یو په مردان او یو په لنډي کوتل کې پروت و، د سوارو لومړۍ لټو (په رسالپور کې) د سوارو څلورمه لټو (په میروټ کې) او درې خپلواکې پلې لټوې په کوهات، بنو او ډېره جاتو کې پراتې وې. برسېره پردې څلورمه فرقه او دولسمه غرنی لټو کوپټه ته نږدې په درستیز (قرارگاه) کې پراتې وې. ۳۶۷ دوی په موډرنو وسلو، وسایلو او ترانسپورت باندې سنبال وو، چې د برتانوي ځواکونو ظرفیت یې زیاتوه. برسېره پردې جنګي الوتکو چې برتانوي مخکښو ځواکونو ملاتړ یې کاوه د افغان قواو د بیا ګروپ کولو وړتیا یې لږوله او په افغان پوځ یې تخریبونکی او اروايي اغېز شینده.

د مڅه مو یادونه وکړه چې پاچا امان الله خيبر ته د سپاه سالار صالح محمد، کندهار ته د صدر اعظم عبدالقدوس خان او خوست ته د جنرال محمد نادرخان په مشرۍ پوځي ځواکونه واستول. په همدې وخت کې افغان نماینده ګان د پیسو، وسلو او کارټوسو سره ولېږل شول چې په سرحدي قومونو او همدارنګه په هند کې یې ووېشي چې د افغان د کمپاین دپاره د هغوی همکاري ترلاسه کړي.

امان الله خان هغه وخت چې د ډیورنډ د کرښې په اوږدو کې ترینګلتیا په ډېرېدو وه، د درې واړو جبهو مشرانو ته ټینګ حکمونه ورکړي و «چې تر هغه وړاندې تګ ونه کړي چې ده خبر ورکړی نه وي.» ۳۶۸ هغه همدارنګه سرحدي والیانو ته هم وویل چې دوی دې خپلو لاس لاندې کسان خبر کړي چې تیاری اووسي ترڅو هېڅ افغان وګړی د برتانوي په سیمو کې کوم لمسونکی کار ترسره نه کړي. ده په پېښور کې خپلو نمایانګانو ته لارښوونه وکړه چې د هغه د شخصي امر پرته کوم هندو یا مسلمان ته پاسپورټ ورنه کړي چې د هند په نننيو بلواګانو کې یې برخه اخیستې وي. ۳۶۹ د دغو لارښوونو سره سره په پوله کې افغان کره وړه په ګړندی ډول د ټکر وضعې ته وده وکړه چې د جګړې پیلول و. د جلالی په وینا د می په دوهمه جنرال صالح محمد د دوو پلي ټولویو په بدرګه د یوه سرحد د تفتیش په بهانه د سرحد دوره وکړه. هغه د باغ د اوبو د چیني شخصي پلټنه وکړه، چې د ډیورنډ

په کرښه د دواړو لورو تر منځ يوه لانجمنه سيمه وه. د می په دريمه د خيبر د ټوپکوالو يوه ډله چې ماموره شوې وه يو کاروان بدرکه کړي د شينوارو د يو شخص له خوا چې زارشاه نومېده، د لنډي خان او تورخم تر منځ لانجمنه سيمه کې، ودروله. وروسته په دې ورځ کې زارشاه ادعا وکړه چې هغه د افغان لور پوري قوماندان امرونه ترسره کوي، پنځه بې وسلې کارگر، چې په لنډي کوتل کې د برتانويانو د پوستې دپاره د اوبو په يوه پروژه کار کاوه، ووژل. په دغه تېري پسې ۱۵۰ افغان منظمو سرتېرو د باغ کلی او د کافر کوټ څوکه ونيول. باغ ستراتيژيک اهميت درلود په دې چې هغه د اوبو جريان او د پمپ سټېشن بې کنټرولوه چې لنډي کوتل ته يې اوبه تهيه کولې. د می په څلورمه برتانويانو غوښتنه وکړه چې قوماندان انور خان او خپل سري دې د باغ نه وباسي. خو افغاني قطعې لنډي کوتل ته د اوبو جريان پرې کړ.

وايسرا چېلمسفورډ په باغ باندې د افغان د تېري په غبرگون کې افغان امير ته پېغام ولېږه او ورنه يې غوښتي و چې زارشاه بندي کړي. خو کله چې د می په ۵مه د افغان منظم پوځ د تقوي قواوې باغ او د کافر کوټ څوکې ته راوړسېدې برتانوي قوماندانې لنډي کوتل ته د تقوي ځواکونه واستول.

د برتانيې د جگړې پلان دا و چې په خيبر کې به يرغل کوي او په نورو دوو جېو کې به دفاع کوي. دوی نيت درلود چې د جلال اباد په لوري اساسي عمليات وکړي چې اړېدي، شينوارو او مومند سره بيل کړي او د افغان دغې جېوې د ټولو قواوو تجمع د منځه يوسي او د افغانستان پوځونه اړ کړي چې د سرحدي سيمو نه ووږي.

د می په شپږمه د برتانيې واکمنو مالومات ترلاسه کړل چې افغانان غواړي په درو جېو: د خيبر جېهه د جنرال صالح محمد خان په قوماندانې، د خوست جېهه د جنرال محمد نادر خان په قوماندانې او د کندهار جېهه د صدراعظم عبدالقدوس خان په مشرۍ په برتانوي پوځونو بريد پيل کړي. په همدغه ورځ د برتانوي هند حکومت په فورماليټي ډول د جگړې اعلان وکړ چې وروسته امان الله خان دوی د جگړې په پيل کرم کښل.

جلالي وايي چې دا مالومه نه ده هغه مهال چې افغان منظم پوځ باغ ونيو، نيت يې درلود چې جگړه پيل کړي. که داسې وي نو دا يو بې وخته او خام حرکت و په دې چې تر اوسه هغه سياسي او پوځي تياری چې امير بې هيله درلوده پوره پلي شوې نه وې يا همغږې شوې نه وې. که چېرې د باغ نيول د دښمن د پوځ د کشف اويا يو حرکت و چې د هغه پاڅون سره همغږی و چې د می په اتمه نېټه به په پېښور کې شوی و. بيا نو افغانانو يوه

طلايي موقع د لاسه ورکړه چې سمدلاسه يې په لنډي کوتل برید ونه کړ. په دغه بحراني مرحله کې د لنډي کوتل کارنيزيون کمزوری و. د افغان پوځ له خوا د لنډي کوتل نيولو به د ايریدو او شينووارو قومونه د افغان پوځ لوري ته اړولي وای او پېښور به يې د گواښ لاندې نيولی وای. خو افغان منظم کنډکونه په غیر فعاله توگه په باغ کې ناست وو او برتانويانو ته يې اجازه ورکړه چې خپل يرغليز ځواک جوړ کړي چې نه يوازې يې افغان ځواکونه د باغ نه وايستل بلکې په افغان خاوره يې يرغل وکړ او د ډاکې سرحدي ښارگوټی يې ونيو او چمتو و جلال اباد ته وړاندې تگ وکړي.

امان الله خان چې په سرحد کې د پېښو څخه خوښ نه و وایسرا ته يو ليک ولېږه او په هغه کې يې برتانوي پوځونه په دې گرم وکتل چې د افغان په خاوره يې تېری کړی او برتانوي الوتکې افغان فضا ته ننوتلې دي. په ليک کې يې زیاته کړې وه چې موږ هلته ځواکونه د دې دپاره استولي دي چې د هند ناکراری دې خوا ته رانه شي.

د خيبر جبهې عمليات

د می په ۶مه افغان ځواکونه چې د باغ د ننه او د هغه چاپېر پراته وو، درې پلي کنډکونه او دوه توپونه وو. د دې ورځې په ماښام افغان قوماندانی د ډاکې نه ۳۵۰ پلي او دوه توپونه واستول چې په لنډي کوتل کې د برتانوي د کارنيزون شمالي اړخ تر گواښ لاندې ونيسي. دوی تور څپر او سپينه تېره ونيوله چې د لنډي کوتل په شمال کې نږدې په پنځه ميلي کې پراته وو. همدغه وخت د افغان سيمو نه د مومندو اوشينووارو جنکيالي راتولېدل چې د افغان پوځ سره يوځای شي. په همدغه وخت کې افغان ځواکونو چې د قومي جنکياليو په ذريعه تقويه شوې وې د اشخېل څوکه ونيوه چې د لنډي کوتل د شمال په يوه ميلي کې پراته وه.

لکه چې مو د مخه يادونه وکړه چې برتانوي د می په ۶مه په فورماليټي توگه د افغانستان پر ضد جگړه اعلان کړه او هم مو دا يادونه وکړه چې افغانانو انگرېزانو ته وخت ورکړ چې په لنډي کوتل کې خپل يرغليز ځواک جوړ کړي. کله چې د برتانوي ځواکونه راورسېدل، د دوی لومړی لخوا افغانان د اشخېل د څوکې نه وشړل. جنرال کراکر پرېکړه وکړه چې په هغو افغان ځواکونو برید وکړي چې د باغ په چاپېر کې پراته وو.

دغه وخت شاهي جنکي الوتکو په ډاکه بمونه وغورځول او جنرال صالح محمد په پښه تپي شو او جلال اباد ته يې يووړ. هغه خپل مرستيال ته وويل چې د جلال اباد نه به تقويي قووتونه راولېږي. دغه ځواکونه درې ورځې وروسته ډاکې ته راورسېدل. په باغ کې

افغان سرتيري په مېرانه جنګېدل چې د شاهي جنګي الوتکو د بمبارۍ لاندې وو او برتانويانو د نوي بريد چمتو والی نيوه.

په باغ باندې دبرتانوي ځواکونو د لومړي بريد ناکامۍ د لنډي کوتل وضع ناپايداره کړه. جنرال فولر د لومړۍ فرقې قوماندان د می په ۹مه ماښام لنډي کوتل ته ورسيد او پاتې ځواکونه يې د می په ۱۱مه سهار راورسېدل. فولر د جګړې مشري په خپل لاس کې واخېسته او هغه فکر کاوه چې د عملياتو هر ډول ځنډ به قوم زړه ور کړي چې پاڅون وکړي. له دې امله هغه د می په ۱۱مه د هغو ځواکونو په مټ چې په اختيار کې يې درلودل سملاسي يرغل پيل کړ. د فولر ځواکونه د لسو پليو کنډکونو، نږدې درې توپچي بطريو (۱۸ توپونه)، دوو ماشيندارو توليو او ۲۲ ويکر ماشينګرو نه جوړ وو. د سختې جګړې نه وروسته چې د جنګي الوتکو بمباري روانه وه، افغان ځواکونه په شا شول.

جنرال فولر ته د می په ۱۲مه امر وشو چې د تورخم او ډکې تر منځ د سرک کنټرول په خپل لاس کې واخلي او ډاکه ونيسي. د برتانې مخکينۍ قواوې د سهار په ۶ بجو په تورخم کې د کرښې نه تېرې شوې او د اوو څاګانو د پوستې پورې د مقاومت سره مخامخ نه شوې او ډاکه يې ونيوله.

علي احمد جلالي وايي چې ډاکه ته د برتانوي پوځ پرمختګ د برتانې دپاره يو اوپراسيوني بری و خو هغه د دوی له پاره ډېر امنيتي پرابلمونه رامنځ ته کړل. ډاکه د لوبديځو او سوېلي غونډيو نه د ګواښ لاندې وه. د شمال نه د کابل رود له لوري چېرې چې د مومندو او شينووارو قومي خلکو د چکنور د لوی ملا او د مير سيد پاچا، ميرزمان خان کزري، سردار محمد خان په ګډون قومي مشرانو په مشرۍ وسله پورته کړې وه.

په کابل کې امير امان الله خان يوه احساساتي وينا وکړه او د برتانې د تېرې په وړاندې يې د افغانستان خلک غزا ته بلل. په دې توګه د افغانستان حکومت د برتانې پر ضد د می په ۱۵مه د جګړې اعلان وکړ. جلال اباد ته د جنرال محمد عمر (سور جنرال) په قوماندۀ تقوي قواوې ولېږل شوې. د جنرال محمد عمر سره د غلام نبي چرخي په ګډون باتجربه کسان ملګري وو. د جلال اباد نه د جنرال عمر تر قوماندې لاندې بسالو ته ۸ کنډکونه او لس توپونه واستول شول چې شمېر يې ۳۰۰۰ جنګياليو ته رسېده. د دغو قواوو لومړی قطار د ګردي غوث په لور وړاندې ته. دغو ځواکونو دنده دا وه چې د ډاکې نه دښمن وباسي. دوی داسې ستر نيولی و چې د برتانې کشف ونه کړای شول د دوی څرک ومومي او ان برتانوي الوتکو دوی ونه موندل. د می په ۱۶مه نېټه د برتانې د کشف تقويه شوې قطعه د جنرال محمد عمر خان د اساسي ځواکونو سره مخامخ شوه او زيان يې

وزغملو. افغان ځواکونو د ډاکې چاپېر غونډۍ ونيولې او د برتانيې په کمپ کې گولې ووارولې. د می په ۱۷مه درې انگرېزي قطعو په افغان ځواکونو برید وکړ چې دوی د غونډیو نه وشړي خو برید ناکامه شو او برتانوي ځواکونو ته د سر زیات زیان واوښت. د می په ۱۸مه نېټه انگرېزي ځواکونو چې د لنډي کوتل نه په یوې لڼوا سره تقویه شوي وو، بیا په افغانانو برید وکړ او دوی یې د ډاکې د چاپېرو غونډیو نه په شا ووهل. افغانانو بیا هغه موقع د لاسه ورکړه چې د می په ۱۶مه د مخه تر دې چې د لنډي کوتل نه د تقویې قواوې راورسېږي په برتانویانو بریالی برید کړی وای.

په دغه وخت کې د پېښور په چاپېر کې وضع خرابه شوه. برتانویانو د خیبر د لارې د ساتلو له پاره زيات ځواکونه ځای په ځای کړل. په ډاکه کې دانگرېزانو د وړاندې تګ له پاره چمتووالی لا بشپړ شوی نه و، چې په منځنۍ جبهه کې د کرمرې او خوست په محور افغانانو پرمختګ وکړ او په وزیرستان کې د خلکو پاڅون د برتانيې پام هغې خوا ته واړاوه تر څو د کرمرې د وادۍ او د وزیرستان له لوري د گواښ مخه ونیسي.

د چترال جبهه

په چترال باندې د برید تیاری د می په لومړیو کې وروسته له دې پیل شو چې افغان پوځ په خیبر کې د لیکې نه تېر شو او باغ یې ونيو. افغان ځواکونه په بریکوت او اسمار کې پراته وو. په هغو کې درې پلي کنډکونه، ۴ توپونه او اته غرني توپونه وو. درې پلي کنډکونه او څلور توپونه د کوز کټر په سرکانو او چغه سرای کې ځای پر ځای وو او هیله وه چې زیات قوتونه به د کابل نه کټر ته لاړ شي.

په چترال کې د برتانيې یو پلي کنډک، د چترال زر کسيز غښتلی سکاوت، د چترال د مهتر دوه زریزه قطعه، د توپچي یوه برخه او یو توپ درلود. کرنل پالمز کومان کاوه چې افغانان برید کوي نو د ۱۹۱۹ کال د می په ۹مه یې یو شمېر امنیتي کسان د سرحد د پوښښ دپاره وګومارل. کله چې د می په ۱۱مه نېټه په خیبر کې افغان ځواکونه د باغ نه وایستل شول په چترال کې افغان پوځ او قومي لښکر د میر زمان خان کټري په مشرۍ حرکت وکړ او د کټر د رود په غاړه ارنای یې ونيو او په چټکۍ سره چترال ته ننوتل او د اتو نه تر لسو میلو د ننه یې په چترال کې پوستې ونيولې.

افغان قوماندانی هیله درلوده چې د افغان منظم پوځ حرکت به د چترال قومونه او مهتر وهڅوي چې د برتانيې ضد جګړه کې د افغانانو سره یوځای شي. د قومونو سره د کمپاین د کمزورې همغږۍ او په لومړي برید کې د افغان لږ ځواک کارولو څو ځایي

قومونو خپل ملاتړ ته چمتو کړل. برسېره پر دې خرابه هوا، غرنۍ ستونزې او په منظم پوځ د جبهې نه تقويه کېدل هم خپل اغېز درلود. خو په دغه وخت کې انگرېزي واکمنو وکړای شول چې د نورستان د قومونو همکاري ترلاسه کړي چې د افغانستان لوري کې پراته وو او د افغانستان د ځواکونو سره جگړه وکړي. د می په ۱۴ مه کله چې په خیبر کې افغان قواوې ماتې وکړه او انگرېزي ځواکونو ډاکه ونيوله په چترال کې هم انگرېزانو افغان قواوې بېرته ارناوې ته په شا ووهلې. د می په ۲۳ مه انگرېزانو افغان قواوې د ارناوې نه وايستلې او بېرته اسمار ته راستنې شوې. افغانانو په چترال کې د کرمې غونډې ونه شو کړای چې ځايي قومونه جگړې ته چمتو کړي او ملېشاوو هم خپله وفاداري انگرېزانو ته ونيوله او د انگرېزي کارنيزيون سره يې مرسته وکړه. سره له دې چې په مياشتو افغان قومي جنګياليو بريدونو دوام درلود افغان پوځ ونه شو کړای چې د برتانوي له خوا د چترال کنټرول شويو سيمو ته ننوزي.

د پکتيا جبهه

د ۱۹۱۹ کال د اپرېل په وروستۍ اوونۍ کې کله چې امان الله خان د خپلواکۍ د اعلان په ملاتړ خپل پوځونه په سرحدونو کې ځای په ځای کړل په لويه پکتيا کې د جبهې د قوماندانۍ باور په جنرال نادر خان وشو. د نادر خان قواوې د برتانوي د راپور له مخې د شپاړسو پليو کنډکونو، دوو مخکښو کنډکونو، څلورو سوارو ټولپو او شپېتو توپونو نه جوړې وې. خو د دغو قواوو نه يوې برخې په جگړه کې برخه واخېسته.

نادر خان د اپرېل په ۲۶ مه گردېز ته ورسېد او د لويې پکتيا د خلکو په راټولولو او غونډو اوونۍ تېرې کړې چې په هغو کې ځاځي، منگل، ځدران، احمدزي، توتاخېل، وزير او مسعود شامل وو. نادر خان دوی په خپلو لښکرو کې راټول کړل چې په درو برخو: کرمه، شمالي وزيرستان او سوويلي وزيرستان کې وجنګېږي. ده همدارنگه د ډيورنډ د کرښې هغې خوا وزيرو، مسعودو او نورو پښتنو قومونو ته نماينده گان واستول او د دوی نه يې وغوښتل چې د افغان پوځ سره د انگرېزانو ضد جگړه کې يوځای شي. د هرې کورنۍ نه د جگړې وړ يو تن په غزا کې ونډه واخلي. دغو قومونو د کابل نه مادي ملاتړ نه ترلاسه کاوه. د وزيرو، کندرو، ژوب او کوملې قومي مشران به د قومي عملياتو مشري په خپله کوي. نادر خان په دريو برخو کې د عملياتو پلان وړاندې کړ: د کرمې دره، شمالي وزيرستان او جنوبي وزيرستان. نادرخان خپل ورور سردار شاه محمود خان د کرمې د جبهې مشر وټاکه چې د ځاځيو، پېوار کوتل د غاښي او د کرمې پاسۍ درې له لارې په برتانوي

خواکونو برید وکړي. نادر خان خپل بل ورور سردار شاه ولي خان د قومي لښکر او منظم پوځ سره ارکون او گوملې درې ته ولېږه چې په سوويلي وزيرستان کې عمليات وکړي او وانه ونيسي. نادر خان په خپله د خوست نه د کیتو د رود په غاړه د شمالي وزيرستان د سپين وام نه تر تل پورې عمليات په غاړه واخېستل. د افغان د لويې پکتيا د جبهې عملياتو په برتانيې فشار واچاوه چې جلال اباد ته د وړاندې تګ عمليات وځنډوي.

د می په ۲۲ مه جنرال نادر خان د خوست د مرکز متون نه ووت او د کیتو د رود سووېل ختیځ په لوري وړاندې تګ وکړ. کله چې نادر خان سپين وام ته نږدې شو، انگرېزي کارنيزون د توجي درې ته ووتلو او د میران شاه په لوېدیځ کې د ملېشاو پوسټې چې د توجي د وادی په اوږدو کې پراتي وي ښارکوتي ته لاړې. کله چې ملېشاوې د خپلو پوسټو نه وتلي د وزيرستان د ملېشاو نه زیات کسان وتښتېدل چې ورپسې د قومونو عمومي پاڅون وشو چې د افغان جګړې د پای ته رسېدو وروسته یې ډېرې میاشتې دوام وکړ. جنرال نادر خان چې د پنځو منظمو کنډکونو او زیات شمېر افغان قومي جنګیالیو او د وزیرو جنګیالیو د زیاتېدونکي شمیر مشري یې کوله د می په پنځمه سپين وام ونيو. د هغه ځای نه بنو او تل په یوه اندازه واټن کې پراته وو. د سپين وام د نیولو وروسته نادر خان د تل په لور وړاندې تګ وکړ او د می په ۲۷ مه سهار په ۹ بجو تل ته راورسېد. نادر خان خپل درستیز په یوسف خېلو کې ځای په ځای کړ او د تل په تانه یې د توجي گذارونه پیل کړل چې ډېر اغېزمن وو. افغانانو د تل چاپېر غونډۍ ونيوې او تل یې کلابند کړ. افغان پوځ د می په ۲۸ مه په تل برید وکړ او ناکام شو. د می په ۲۹ مه د شپې افغان ځواکونو د دښمن په پوسټې باندې چې د تل د چاونۍ په سوويلي غونډۍ باندې پراته وه برید وکړ چې پر شا ووېل شو. د می په ۳۰ مه افغان توپونو ټوله ورځ د تل چاونۍ د اغېزمن اور لاندې ونيوله. د برتانيا کارنيزون ۹۰ تنه سرتېرو او سل ژويو زیان ولید او د دوی زېرمې لږې شوې. په داسې حال کې چې د قومي جنګیالیو ملاتړ په زیاتېدو وو. خو دغه وخت افغان پوځ غوڅ گام نه واخېست او برتانويان بريالي شول چې د تل کارنيزون د ملاتړ دپاره نوي ځواکونه راورسوي او د افغانانو په مورچلو متقابل بریدونه پیل کړي.

دغه وخت د جنرال نادر خان لیک جنرال ډایر ته راورسېد. په لیک کې ویل شوي چې هغه ته امير امر کړی چې دښمني پای ته ورسوي. نادر خان د امير د لارښوونې سره سم د شونې چټکتیا له مخې افغان قواوې د نیول شویو ځایو څخه وایستلې او برتانويانو هغه ځایونه بېرته ونيول. د شاه محمود خان قواو په بره کرمه د پاره چنار په چاپېر کې د برتانيې لوا ټینګه بوخته وساتله.

په سووېل کې وزيرو او مسعود د شاه ولي خان په مشرۍ د افغان پوځ په ملاتړ عمومي پاڅون وکړ. د دې کار له پاره افغان چارواکو دوه تنه ديني عالمانو ته چې يو يې د شېلگر ملا عبدالرزاق اندر او بل يې د ننګرهار د شکې شاه دوله خان ساپي و، سپارښتنه وشوه چې د ډېورنډ د کرښې اخوا وزيرو او مسيدو ته لار شي او د انګرېزانو په وړاندې يې غزا ته راوېوې. د وزيرستان ټولو ميشتو قومونو د امير امان الله خان دغو استازو ته ډېر ښه هرکلی او درناوی کاوه. ملا عبدالرزاق د تبليغ له لارې خلک غزا ته رابلل او شاه دوله خان د وزيرو او مسيدو قومي لښکر د سمبالښت چارې پرمخ بيولې. د جوزا په پنځمه د شاه دوله په مشرۍ د مسيدو او وزيرو څو زره وسله وال او نا وسله وال لښکر په وانه کې په انګرېزانو بريد وکړ او ژر يې د وانه تانه ونيوله او زيات انګرېزي پوځيان يې ووژل. د وزيرو او مسيدو جنګياليو وکړای شول چې يو زيات شمېر پوستې د انګرېزانو نه ونيسي او د اسماعيل خان ډېرې او غازي خان ډېرې په لوري وړاندې لار شي.

د کندهار جبهه

د کندهار په جبهه کې همغه موخه وه چې هلته هم د ډيورنډ د کرښې دواړو خواوو پښتانه قومونه د افغان د پوځ سره چې د برتانيې په وړاندې د خپلواکۍ له پاره جګړه کوي يوځای شي. په دوی کې د وازې خوږې او «دوه جينو» غلځيان منظم شول چې په ژوب، چې د وزيرستان او بلوچستان په منځ کې پروت دی او د صوبه سرحد او کوبټې تر منځ د ارتباطاطو ستراتيژيکه کرښه جوړوي، بريد وکړي او د هغه ځای خلکو د افغانستان د خپلواکۍ په اړه ښه نيت درلود. برتانويانو ته بل گواښ د سووېل نه و چې د افغانستان د منظم پوځ او قومي لښکر له خوا د چمن له لارې کېدونکی و او کوبټې او بولان ته متوجه و.

د ۱۹۱۹ کال په می کې په کندهار کې د افغان منظم پوځ پنځه پلي کنډکونه، يو د سوارو ټولې او ۲۵ توپونه پراته وو. په کلات کې دوه پلي کنډکونه او ۶ توپونه او په مقر کې دوه ماشيندار پراته وو. برسېره پر دې امير د ۱۹۱۹ کال د اپرېل په پای کې صدراعظم عبدالقدوس خان ته امر وکړ چې ۱۵۰۰ غښتلی پوځ د کابل نه کندهار ته د ځان سره بوزي. خو صدراعظم عبدالقدوس خان د می په ۳۱مه کندهار ته ورسېد چې هغه وخت د برتانيې ځواکونو خپل يرغل پيل کړی و.

په نورو جبهو کې جګړې روانې وې. جنرال واپشير هيله درلوده چې چټک کامونه پورته کړي چې پښتانه قومونه په ځانګړې توګه کاکړ، ماندوخل، د ژوب شېراني او همدارنګه د

چمن او سپين بولدک اڅکزي بې زړه کړي. افغانانو هڅه وکړه چې په بلوچستان کې پښتانه قومونه او همدارنگه د کوبټي په منځ کې بغتي بلوڅ او د کلاتپه سووېل کې براهويان د انگرېزانو پر ضد جگ کړي.

جنرال واپشېر لومړی په ژوب کې خپلې قواوې پياوړې کړې او بيا يې په کويته کې خپل ځواکونه متمرکز کړل چې د سپين بولدک ټينگه کلا ونيسي. په سپين بولدک کې يو افغان کنډک چې شمېر يې پنځه سوو ته رسېده پروت و. د کنډک قوماندان ډکروال يوسف خان او مرستيال يې جگړن داودشاه خان و. برتانوي قوماندانې غوښتل چې کلا په خپل ځواک سره ونيسي او د ژوب په قومونو کې د افغانانو مورال ټيټ او همدارنگه د افغانانو د عمومي پاڅون مخه ونيسي. هغه پرېکړه وکړه چې د سپين بولدک کلا په حيرانوونکي بريد سره ونيسي. د دې موخې دپاره هغه دوه سواره ټولي، دوې پلې لواوې چې ټول يې اوه کنډکونه درلودل، څلور توپچي بطرې، دوه ماشيندار ټولي، درې د استحکام او ماین ټولي او د ملاتړ نور توکي متمرکز کړل. د افغان او انگليس د ځواکونو شمېر يو پر لسو د افغانانو په زبان و.

د ۱۹۱۹ کال د می په ۲۷ مه د سهار په څلور نيږې بجې انگرېزانو د سپين بولدک په کلا د هرې خوا سخت بريد وکړ. افغان ساتونکي په ډېره مېړانه جنګېدل. دوی داسې مقاومت وکړ چې خلک حيرانوي. دوی څو ځله د غښتلي دشمن سخت بريدونه په شا وتمبول. خو د ځواکونو انډول ډېر زيات توپير درلود. دوی ان شته لاسي بمونه وکارول تر څو ټول ووژل شول. په يوه نيمه بجه کلا په بشپړه توګه د انگرېزانو په لاس کې ولېږده او ۱۶۹ افغانان د قوماندان يوسف خان او د هغه مرستيال داودشاه خان په گډون چې زياتره يې ژوبل وو بنديان او چمن ته ولېږدول شول. د افغان سرچينو له مخې د ټپيانو پرته چې انگرېزانو ونيول د کنډک ټول پاتې کسان د اخبري سلګې پورې وجنګېدل. د برتانوي يو شمېرنې مسؤل وايي: «دا ناشونې ده چې د دوی د مېړانې ستاينه ونه شي دوی تر پايه جنګېدل پرته له دې چې د تسليمې په اړه فکر وکړي.» ۳۷۰ د سپين بولدک دغه جګړه چې د افغان يوه پلي کنډک په مودرنو وسلو سنبال يوې برتانوي فرقي په وړاندې پر مخ بيوه د افغانستان په تاريخ کې د لوړې اتلولۍ او وطنپالنې سيمبول دی. په سپين بولدک کې د افغان جنګياليو اتلانو مرستون زيارت ته د هېواد د ګوټ ګوټ نه خلک راځي، د دوی د اتلولۍ ياد تازه کوي او ورباندې وياړي. د سپين بولدک جګړې ته په کندهار کې د يوې تراژيدۍ په څېر وکتل شول. دغې پېښې زيات شمېر په خپله خوښه کسان وپارول چې د غزا د ليکو سره يوځای شي. د عيني شاهدانو د ويناوو له مخې کله چې کندهار ته دا خبر

ورسېد د ښار د اوسېدونکو احساسات په جوش راغلل او چمتو وو چې جگړه وکړي. د کابل نه د تقويې پوځونه د صدراعظم عبدالقدوس خان په قوماندانۍ د می په ۳۱مه کندهار ته راورسېدې. دوی سیمبولیکې نارې وکړې چې د سپین بولدک د شهیدانو غچ به اخلي. صدراعظم عبدالقدوس خان یو پوځ چې یو د سوارو ټولې، پنځه پلي کنډکونه او نږدې څه زره قومي سرښندنکو نه جوړ و د کرښې په لور روان کړ، چې دوې ورځې وروسته د چمن د شمال ۳۲ ميلي کې مل کارېز ته ورسېد. دا د ډښندۍ ورځ وه چې افغان امیر او د هند وایسرا تر منځ هوکړه پرې وشوه. خو دې اوربند تنظیم په افغانانو اغېز ونه کړ او هغوي جنکي کاروايي روانه وساتله. عبدالقدوس خان مرغه چمن ونيو چې د سپین بولدک د شمال- ختیځ په پنځه ميلي کې پروت و، او د کارنيزون د اوبو رسول یې پرې کړ. دا ځای د افغان ۳۰۰۰ منظم پوځ او قومي جنګیالیو نیولی و چې د برتانوي د سوارو یوه قطعه چې د جون په ۱۲مه رالېږلې وه اړه کړه چې ووځي. په دغه وخت کې افغان قطعه د سپین بولدک د شمال ختیځ په ۶ ميلي کې په تخت ځای پرځای شوه. د نورو جبهو په څېر د کندهار په جبهه کې ستونزمنه سوله روانه وه چې د ۱۹۱۹ کال د اګست په اتمه د سولې تړون وشو.

د سولې تړون

امان الله خان د ۱۹۱۹ کال د می په ۲۸مه وایسرا ته یو لیک واستوه چې د می په ۳۱مه ورورسېد او په هغه کې یې اوربند غوښتنه کړې وه چې په پایله کې یې جگړه په رسمي ډول د ۱۹۱۹ کال د جون په ۳مه ودرول شوه. د برتانوي کنټرول په سیمه کې د پښتنو قومونو په مخ زیاتېدونکي پاڅونونه، او د هند په شمال کې په بې ثباتۍ کې د هغه اغېز برتانوي واکمن باوري کړل چې د اوږدې دښمني دوام به د افغان د مسلې له پاره د زیاتو قومونو ملاتړ ډېر کړي. په داسې حال کې چې د افغان خاوره کې د برتانویانو وړاندې تک او د برتانوي ورتیا چې د ننه په افغانستان کې ژور هدفونه بمباري کړي امان الله چمتو کړ چې د جگړې د زړ پای ته رسولو په لټه کې شي. امیر د می په ۲۸مه په خپل لیک کې وایسرا ته خبر ورکړ چې هغه خپلو ځواکونو ته امر کړی چې د سولې د خبرو د پیل له پاره اوربند وکړي.

وايسرا د موقع نه گټه پورته کړه چې جگړه پای ته ورسوي او د جون په ۲مه یې امان الله خان ته ولیکل چې د یوه اوربند وړاندیز ته هرکلی وایي خو هغه د امان الله دا ادعا ونه منله چې جگړه برتانوي پیل کړې ده. وایسرا هوکړه وکړه چې بمباري به ودروي که افغان

لوری خپلې قواووې د برتانيې د موقعیت نه شل میله شا ته کړي، په ټولو جهو کې اوربند پلي کړي، او د کرښې د دواړو خواوو قومونه د جگړې درولو ته وبولي. امان الله خان د خپلې غوښتنې په اړه ټینګ و چې برتانيا بايد د افغانستان بشپړه خپلواکي په رسمیت وپېژني او د دې موضوع په اړه جوړجاړي ته چمتو نه و. امان الله خان چېلمسفورډ ته ولیکل چې د سوې د خبرو دپاره یې یو پلاوی نومولی چې چمتو دی د جون په ۲۷ مه سفر وکړي. که څه هم افغان قوماندانان په چترال، پکتیا او د کندهار په جهو کې د برتانيې د غوښتنې سره سره قواوې ونه ایستلې چې د ډزبنډ یو شرط و او د برتانيې پر ضد یې د قومونو لمسون ونه دراوه.

په لندن کې اوربند ته د امان الله خان بلنه د هغه د کمزوری د یوې نښې په څېر وبلل شوه او په انګلستان کې حالت داسې واوښت چې د افغانستان سره دې په جگړه کې د مات شوي اړخ په څېر چلند وشي او د امیر سره دې د برتانيې د شرایطو له مخې سوله وشي. خو وایسرا چې ژور واقعیتونه یې په عیني توګه لیدل هغه باور درلود چې امان الله به هېڅکله د بشپړې خپلواکۍ له پاره د خپلې غوښتنې نه تېر نه شي او بدیل به یې بیا د جنګ د سره نیول وې چې په هند کې د برتانيې د واک دپاره به لیرې پراخې پایلې ولري. امان الله خپل د کورنیو چارو وزیر علي احمد په راولپنډي کې د سوې په کنفرانس کې د ګډون له پاره د پلاوي د مشر په توګه ونوموه چې د ۱۹۱۹ کال د جون په ۲۶ مه پرانېستل شو. په کنفرانس کې د انګرېزانو نماینده کې د هند پخواني د بهرنیو چارو وزیر سر هاملتون کرانت کوله. د ۱۹۱۹ کال د اګست په ۸ مه پنځه ماده ییز د سوې تړون د خپلواک افغانستان د حکومت او برتانوي هند د حکومت تر منځ لاس لیک شو.

د تړون انګلیسي متن:

«Treaty of Peace between Governments of India and Afghanistan, 8 augustus 1919

The following Articles for the restoration of peace have been agreed upon by the British Government and the Afghan Government:

ARTICLE 1.

From the date of signing of this Treaty there shall be peace between the British Government, on the one part, and the Government of Afghanistan on the other.

ARTICLE 2.

In view of the circumstances which have brought about the present war between the British Government and the Government of Afghanistan, the British Government, to mark their displeasure, withdraw the privilege enjoyed by former Amirs of importing arms, ammunition or warlike munitions through India to Afghanistan.

ARTICLE 3.

The arrears of the late Amir's subsidy are furthermore confiscated, and no subsidy is granted to the present Amir.

ARTICLE 4.

At the same time, the British Government are desirous of the re-establishment of the old friendship that has so long existed between Afghanistan and Great Britain, provided they have guarantees that the Afghan Government are, on their part, sincerely anxious to regain the friendship of the British Government. The British Government are prepared, therefore, provided the Afghan Government prove this by their acts and conduct, to receive another Afghan mission after six months for the discussion and settlement of matters of common interest to the two Governments and the re-establishment of the old friendship on a satisfactory basis.

ARTICLE 5.

The Afghan Government accept the Indo- Afghan frontier accepted by the late Amir. They further agree to the early demarcation by a British Commission of the undemarcated portion of the line west of the Khyber, where the recent Afghan aggression took place, and to accept such boundary as the British Commission may lay down. The British troops on this side will remain in their present positions until such demarcation has been effected.

ALI AHMAD KHAN, A. H. GRANT

Commissary for Home Foreign Secretary to the

Affairs and Chief of the Government of the Government

Peace Delegation of the Of India and the Peace Delegation
Afghan Government of the British Government» ۳۷۱

د تړون متن ژباړه:

د هند او افغانستان د حکومتونو تر منځ د سولې تړون ۸ اګست ۱۹۱۹
د سولې د اعادې له پاره د برتانيې او افغان حکومتونه په لاندو مادو باندې موافقې ته
رسېدلې دي.

لومړۍ ماده.

د دغه تړون د لاسليک د نېټې راهيسې به د افغانستان او برتانيې تر منځ سوله وي.

دوهمه ماده.

هغې وضعې ته په کتو سره چې د افغانستان او برتانيې د حکومتونو تر منځ يې اوسنۍ
جګړه منځ ته راوړه، د برتانيې حکومت يې په اړه خپل ناراضيتوب څرګندوي او د هغو
امتيازاتو نه ځان ازاد کړي چې پخواني اميران ورڅخه برخمن وو چې د هند د لارې وسلې،
تدارکات او پوځي مهمات افغانستان ته وارد کړي.

درېمه ماده.

د وروستيو اميرانو پاتې سبسيدي طبيطوي او اوسني امير ته سبسيدي نه ورکوي.

څلورمه ماده.

په عين وخت کې د برتانيې حکومت د زرې دوستۍ د اعادې هيله من دی چې د اوږدې
مودې راهيسې د افغانستان او برتانيې تر منځ موجوده وه، دوی دې تضمین ته چمتو دي
خو چې د افغانستان حکومت د خپلې خوا د زړه له کومې هيله من وي چې د برتانيې
حکومت دوستي بيا وګټي. د برتانيې حکومت تيار دی چې شپږ مياشتې وروسته د دواړو
حکومتونو تر منځ د ګډو کتو پر مسلو باندې خبرو اترو او هوارۍ له پاره يو افغان پلاوی
ومي او زړه دوستي په قانع کوونکي بنسټ بيا جوړه شي، خو چې افغان حکومت دا کار په
نظر او کړو کې ثابت کړي.

پنځمه ماده.

افغان حکومت هغه د هند- افغان سرحد مني چې وروستي امير منلی و. دوی
همدارنگه د برتانيې د کميسيون له خوا مخکينۍ په نښه شوې کرښه مني او د کرښې هغه
برخه چې د خيبر په لويديځ کې په نښه شوې نه ده، چېرې چې د افغانستان اوسني تېری
وشو او داسې پوله مني چې د برتانيې کميسيون به يې تېره کړي. په هغه ځای کې چې افغان

یرغل شوی و برتانوي ځواکونه به د سرحد د ټاکلو تر مهاله په خپله خوا کې پاتې کېږي. یو جلا لیک د برتانې د پلاوي د مشر له خوا افغان لوري ته ورکړل شو او منلې وه چې «نوموړی تړون او دغه لیک افغانستان په رسمي توګه په خپلو کورنیو او بهرنیو چارو کې ازاد او خپلواک بولي. برسېره پر دې دغې جګړې د جګړې د مخه ټول تړونونه لغوه کړل.» ۳۷۲

په دې توګه په دغه تړون کې د افغانستان او برتانې د حکومتونو تر منځ سوله ټینګه شوه، د برتانې حکومت د هند د لارې افغانستان ته د وسلې او مهماتو راوړل ودرول، د وروستیو امیرانو پاتې سبسيدي يې ضبط کړه، اوسني امیر ته سبسيدي بنده کړه، د افغان حکومت هغه د هند- افغان کرښه ومنله چې پخواني امیر منلې وه او افغان لوري دا هم ومنله چې «د کرښې هغه برخه چې د خیبر په لوېدیځ کې په نښه شوې نه ده او داسې پوله مې چې د برتانې کمیسیون يې تېره کړي.» ۳۷۳

سر له دې چې په رسمي توګه د ۱۹۱۹ کال د جون په دریمه دښمنۍ پای ته ورسېدې، ورسته دواړه خواوې په یوه اوربند او د سولې د خبرو پیل باندې هوکړې ته سره ورسېدل، په قومي ساحو کې نارامي ته افغان حکومت بابوزی واهه او نوره پراخېدل. د ۱۹۱۹ کال د اوري په جریان کې د کابل رود او د چمن د کلي تر منځ عمومي قومي پاڅون وشو چې د افغان د پوځ په پرتله يې دښمن د جدي ګواښ سره مخامخ کړ. د ۱۹۱۹ کال د اګست د اتې نېټې د تړون د لاسلیک نه وروسته خپلواک قومونه، چې د افغان مامورینو له خوا لمسېدل، په بې سارې اندازه يې په سیمه بریدونه کول. اړیدو د خیبر په دره کې د پېښور او کوهات د ضلعو سره د کرښې په هغې خوا په مېني کې بریدونه زیات کړل. په سوېل کې مسیدو او وزیرو په ګډه د برتانې واکمني ننګوله او دا د مقاومت کمپاین د دوهمې نړیوالې جګړې تر پیل کېدو پورې دوام وکړ.

افغانستان د ۱۹۱۹ کال د راولپنډۍ د تړون لاسلیک په رسمي توګه د خپلواکۍ ورځې په حیث لمانځي. خو افغانستان هېڅ وخت د برتانې مستعمره نه وه. د افغانستان د بهرنیو اړیکو کنټرول برتانویانو د افغان- انګلیس د دوهمې جګړې په پایله کې په افغانستان وتپلو. افغانستان خپلې موخې چې هغه بشپړه خپلواکي وه د یوې لنډې سرحدې جګړې له مخې ورسېد. برتانویانو د افغانستان د بهرنیو اړیکو کنټرول په دې پرېښودو چې د جګړې د اوږدېدو له امله به دوی ناوړه پایلو سره مخامخ شوي وای. د سرحدې قومونو پاڅون چې د امان الله له خوا د نااعلان شوې جګړې په توګه روان و شونې وه چې هند ته پراخ شي او د برتانویانو کورنی امنیت وننګوي. ځکه برتانې افغانستان ازاد پرېښود. جلالي وايي

چې دا گواښ د افغان پوځ له امله نه و، چې د برتانيې د کنټرول د سيمو نه وايستل شو او د دې وړتيا يې نه درلوده چې د افغانستان د ننه د برتانيې د محدود تيري مخه ونيسي. که امير امان الله په رښتيا نيت درلود چې پوځي ننداره وښيي هغه کمزوری پلان کړي وه، ناسمه تنظيم شوې، او په ډېره بده توگه يې عمليات وکړل. په بيلو بيلو جهو کې په منظم ډول کره ترسره نه شول، د برتانيې ځواکونو ته يې اجازه ورکړه چې په هر محور کې په انفرادي ډول برخورد وکړي. د خيبر او پکتيا په جهو کې د جگړې پيل درې اوونۍ توپير درلود. د کندهار جهې ته قواوې لا ناوخت ورسېدې، او افغان کنډک يې يوازې پرې ايښی و چې په يوازې توگه يې د انگرېزانو د لس ځلي غښتلي پوځ سره د وروستی سلگۍ پورې په اتلولی او مېړانه وجنگېدل. جلالی زياتوي چې د جگړې ستراتېژيکه نظريه چې په هند کې د دوی د کورنۍ ستونزو نه گټه پورته کول او په سرحدونو کې د پښتنو قومونو لمسول د برتانيې پر ضد يوه ځلانده ايديا وه، خو پوځي تياری او عملياتونه چې د دې ايديا ملاتړ يې کاوه بې خونده، ناريا ليسي و او په کمزوري ډول پلي شول چې د نارينو ځاني زيان لامل شول او د افغان د پوځ نظامي پرستېز يې زيانمن کړ. ۳۷۴

دا جگړه د برتانيې دپاره اوه ميليو پونډه په بيه تمامه شوه. برتانيې ۲۳۶ مري، ۱۵۱۶ ټپيان درلودل او د برتانيې د اټکل له مخې د افغان مرو شمېر ۶۰۰ او زر تنه ټپيان وو. د قومي جنگياليو ځاني زيان د برتانويانو د ځاني زيان نه دوه ځله زيات وو.

کاکړ وايي چې د ډېورنډ د کرښې د دواړه خواوو قومونو په دغه جگړه کې له زړه نه برخه واخېسته. د انگرېزانو قومي ملېشاوو، چې له ډېورنډ نه اخوا قومونو نه جوړې وې، هم خپلې دندې پرېښودې او افغانانو ته واوښتې يا خپلو کورونو ته ولاړې. کاکړ وايي چې د خپلواکۍ په جگړه کې دغو پښتنو ثابته کره چې دوی د پخوا په شان د افغانستان رښتيني پلويان او ساتونکي دي. په اصل کې د دوی او د ولسي افغانانو له امله و چې په لندن کې د برتانيې حکومت د هند د وایسرا دا وړانديز رد کړ، چې ويل يې د هندوستان د ناکرارېو د غلي کولو له پاره ښه لار دا ده، چې جلال اباد ونيول شي. په دې اړه په لندن کې د هندوستان له پاره د دولت وزير د وایسرا وړانديز په دې ډول ونه مانه: «زه په دې ډاډه يم چې تا به د تاريخ درسونه هېر کړي نه وي او هغه دا چې مور د افغان له منظم پوځ نه دومره وېره نه لرو لکه د قومي ملېشاوو او زمور په خورو کمپونو او مخابرو پر کرښو باندې يې د هغو د يرغلونو نه لرو.» ۳۷۵

د کاکړ په وينا انگرېزانو دغه وخت څلورنيم لکه پوځ او عصري لوجستيکي، مخابروي او د وړلو راورلو عصري تخنيکي وسيلې لرلې. پر هغو سربېره په دغه جنگ کې

بې له نظامي الوتکو هم کار واخېست او د جلال اباد او کابل ښارونو باندې بې بمونه وغورځول. غبار وايي چې دغو بمونو په افغانانو باندې ناوړه اغېزه ونه کړه خو ډاکټر عبدالعلي ارغنداوي وايي چې «په دې کې ډېر لږ شک دی، چې دغه [هوايي] حمله دغسې مهم عامل شو چې د افغان حکومت بې سولې غوښتلو ته اړ کړ». ۳۷۶ دغه واقعیت په اصل کې په خپله پاچا امان الله جنرال محمد نادر ته په يوه فرمان کې په دغه ډول څرگند کړی دی: «از برای مردم کابل از گلوله باري انها هراس پیدا شده اکثر مردم معتبرين و کلان شونديگان اين ملامتي را بحضور [شاه امان الله] تعلق مېدهند که وقت جنگ نبود.» ۳۷۷ ژباړه: «د کابل خلکو ته د هغوی د بمبارۍ له امله وېره پيدا شوې د متعبرو او لويانو ډېرې خلک دغه پره په امان الله خان اچوي په دې چې دا د جگړې وخت نه و.» په فرمان کې دا ويل شوي چې دغو معتبرانو رايه ورکړه، چې که انگرېزان سوله ومني، تاسې بې قبوله کړئ. دغه معتبران شايد د دولتي شورا غړي وي.

د خپلواکۍ جگړه درې څلور اونۍ اوږده شوه او بيا د همدغه کال د اگست په اتمه نېټه په راولپنډي کې انگرېزانو د افغانستان خپلواکي ومنله. د ادامیک په وينا امان الله د افغان-انگلیس په جگړه کې له دې امله بريالی شو چې د سرحد (ازادې قومي کړۍ) ورسره مرسته وکړه. خو امان الله د سرحد د پښتني قومونو په اړه اساسي څه ونه کړل. «امان الله خان له انگرېزانو نه دغه وعده ترلاسه کړه، چې دوی په هغو کې د نفوذ خپرولو او له هغو سره د جنگ کولو پلان نه لري او که د هغوی پر ضد کوم نظامي کار کوي له امير سره به مشوره کوي، خو له جگړې نه وروسته انگرېزانو د خپلې وعدې پر خلاف د دغه پښتنو په سيمو کې تر پخوا ډېر په نظامي کړو لاس پورې کړ.» ۳۷۸

د رحمت ربي زيرکيار په وينا دا تړون د جنرال يارمحمد وزيری له خوا «ناولی تړون» بلل شوی دی په دې چې د ډيورنډ د کرښې اخوا د پښتنو سيمې د سولې په تړون کې په انگرېزانو پورې وتړل شوې. محمد اعظم سيستاني ليکي چې «علي احمد خان، با آنکه توانسته بود تايبید استقلال افغانستان را توسط نامه بی جداگانه از جانب انگلیسها بدست آورد؛ مگر به خاطر لغزش در قبول خط ديورنډ در این قرارداد از سوی محمود طرزی وزير خارجه و شاه مورد انتقاد شديد قرار گرفت. علي احمد خان، از طرف شاه امان الله خان مورد سرزنش و عتاب قرار گرفته از مقامش سبکدوش و توقيف شد.» ۳۷۹ ډاکټر عبدالرحمن زماني ليکي: «هيچ شکی وجود ندارد که امضای خود سرانه قرارداد صلح راولپنډی یک لغزش بزرگ و خیانت علی احمد خان بود.» ۳۸۰ خو د حيرانتيا ځای دا دی چې پاچا امان الله همدغه د افغانستان په زبان د راولپنډی تړون

توشیح کړ او د هغه د راتلونکو ناوره پایلو تاریخي مسؤلیت یې په غاړه واخېست. د هغې خوا پښتنو فکر کاوه چې امان الله خان جگړه د افغانستان د خاورې د بېرته تر لاسه کولو په موخه اعلام کړې ده. ارواښاد شمس الدین مجروح وايي چې «... و هم بعضې مردم فکر مېکردند که این جنگ سوم برای استرداد اراضي از دست رفته افغانستان رخ داده بود، که ان نتیجه مطلوب بدست نیامده. لذا این جنگ را افتخار بزرگی نه، بلکه ناکامي تصور مېکردند.» ۳۸۱

د رحمت ربي زیرکیار په وینا په ۱۹۱۹ کې امان الله خان افغانستان خپلواک اعلان کړ. امیر امان الله خان نوی خپلواک شوی نیم افغانستان د نړیوال ګوښه توب نه وایست او د نورو هېوادو سره یې اړیکې ټینګې کړې. ډپلوماتیکې اړیکې ټینګول د دولت اعتبار غښتلی کوي او دغه اعتبار په ملي ګټو کې شمېرل کېږي. خو د افغانستان خپلواکي چې د پښتنو د وینو په توپولو وګټل شوه د راولپنډۍ د تړون په اساس د سیاست له لارې وپایلل شوه. یانې د ډېورنډ د تړون له مخې غوڅ شوی افغانستان د خپلو عمومي ملي ګټو او په ځانګړې توګه د خاورې د بشپړتیا په خوندي کولو کې بې وسه پاتې شو.

امیر امان الله خان او د هېواد بهرنی اړیکې

کاکړ وايي چې «د خپلواکۍ یو غټه نښه دا ده چې خپلواک هېواد به له نورو هېوادونو سره ډول ډول اړیکې په نېغه او خپله خوښه د خپل ملت د ګټو د خوندي کولو په مقصد د خپلو استازو له لارې ټینګوي.» ۳۸۲ که څه هم تر دغه وخته پورې د افغانستان اړیکې یوازې د برتانوي هند د حکومت سره وې خو امیر امان الله خان د مخه تر دې چې د افغانستان خپلواکي په رسمیت وپېژندل شي د نورو هېوادونو سره د اړیکو د ټینګولو په لټه کې شو. د دې دپاره نړیواله وضعه برابره وه ځکه چې د یوې خوا د لومړۍ نړیوالې جګړې له امله عثماني امپراتوري د انګلیسانو د دسیسې په پایله کې ټوټې شوه چې په مسلمانانو کې یې د انګلیس ضد احساسات راوپارول او د بلې خوا په روسیه کې د اکتوبر د انقلاب له امله چې د خپل امپریالیستي ضد سیاست له کبله یې د امان الله خان سره روغ نیتي ښوده او افغانستان ته یې لا د وسلو، پیسو، تخنیکي مرستو او ان د پنجدې د بېرته ورکولو ژمنې هم کولې. پاچا امان الله د ۱۹۱۹ کال د اپرېل په میاشت کې محمد ولي دروازي په بخارا کې سفیر ټاکلی و. پاچا امان الله محمد ولي د یوه مهم پلاوي په مشرۍ کومارلی و چې د نوي شوروي حکومت او د لوېدیځ د نورو هېوادونو سره سیاسي اړیکې ټینګې کړي او په اروپا کې د پاریس د سولې په کنفرانس کې هم ګډون وکړي. دغه پلاوي مسکو، برلین، روم، پاریس، لندن، نیویارک او واشنگټن ته سفر وکړ او د ۱۹۲۲ کال د جون په میاشت کې

هېواد ته راستون شو. د دغه پلاوي هڅې د بریتانېې د بهرنیو چارو د وزیر لارډ کرزن د خنډونو د اچولو سره سره د خپلو موخو په پلي کولو کې پوره بریالی وې. د شوروي اتحاد، فرانسې او ترکېې سره یې سیاسي او د دوستۍ تړونونه وکړل او نور ډېر هېوادونه یې وهڅول چې د افغانستان سره سیاسي اړیکې ټینګې کړي. ۳۸۳

امیر امان الله خان او منځنی اسیا

د اکتوبر د انقلاب بری، د عثماني امپراتورۍ ټوټه کېدل، د افغان- انګلیس دریمه جګړه د دې لاملونه شول چې په منځنی اسیا کې ستره لوبه نوي پړاو ته ننوزي. پاچا امان الله، د بخارا امیر او د پان تورانیزم پلویانو هڅه کوله چې په منځنی اسیا کې هغه تشه ډکه کړي چې د تزاري روسېې په نسکورېدو سره منځ ته راغلې وه. د کاکړ په وینا: «د عثماني ترکېې د اتحاد او پرمختګ د کومیتې پخوانیو مشرانو، چې ټینګ ملت پالان وو، له پان اسلامي غورځنګ نه په دغې هیلې کار اخیست، چې په منځنی اسیا کې یو اسلامي ترکي دولت په پښو ودروي.» ۳۸۴

خو پاچا امان الله بیا هڅه کوله چې د پان اسلامیزم نه د دې له پاره کار واخلي چې په خپله د منځنی اسیا د کنفډرېشن سروال شي نو ځکه یې په منځنی اسیا کې د پرمختګ سیاست غوره کړ. د ۱۹۱۹ کال د اکتوبر په میاشت کې افغانستان په دې پیل کړی و چې د پنځده په سیمه کې خپل نفوذ خپور کړي. «افغان ماموران، قونسلان او په خپله خوښه جوړ شوي هیئتونه له منظمو افغاني عسکرو سره ډلې ډلې ګرزېدل او په نتیجه کې په دغې سیمې کې دغسې ښارګوټی نه و چې افغانان» دې په کې نه وي. کاکړ وايي چې د برتانوي راپورونو له مخې «افغان نفوذ په مروه او سهېل کې ټینګېده او په مروه کې خلکو داسې ګڼله، چې افغان قونسل ته تر بلشویکي کمیساری نه لا ډېر مهم مامور وي.» ۳۸۵ کاکړ د ادامیک د لیکنې پر بنسټ دا هم وايي چې په مروه کې څلور سوه منظم افغان عسکر ځای پر ځای او له هغه ځایه تر کشک پورې د افغانانو لاس بری و. «افغانان هر هغه ممکن څه کوي، چې ترکمنان سره پخلا کړي. هغه کسان خوشي کېږي، چې بلشویکان یې بندي کوي، جریبې بېرته ورکولې کېږي، ستونزې د افغانانو په حکم هوارېږي او محلي بلشویکان په ضمني ډول د افغانانو امرونه په ځای کوي» ترکمن په دې نه پوهېږي چې افغانان او بلشویکان سره دوستان دي او که دښمنان «خو ټول دا مني، چې افغانان هر چېرې د مسلمانانو د ساتونکو په توګه د محل د وضع [ې] او موقع کنترول کوي. د سرخس په سیمې کې افغانانو د ترکمنو دایمي بدې ګانې له منځه وړي او ټولو ته

بې خبردارۍ ورکړې، چې د عمل له پاره، چې مناسب وخت يې ورسپري چمتو وي.» ۳۸۶
 د بخارا امير ميرعلم هم جنرال مليسن ته څرگنده کړې چې: «زموږ په نظر ترکستان او بخارا ته د افغانستان راتګ يوازې د دې له پاره دی، چې د ترکستان مسلمانان سره يو موټی کوي او د بخارا سره اړيکې ټينګې کړي. په دغه مقصد چې د بلشويکانو پر ضد په مناسب وخت کې عمل وکړي.» کاکړ د ادامک د ليکنې له مخې دا هم وايي چې افغانانو په فرغانه کې د بسمه چې غورځنګ د يوه مشر محمد امين بېګ سره ژمنه کړې وه چې که دی په پان اسلامي کنفدرېشن کې کېدون وکړي نو د بلشويکانو پر ضد به دوی ته لس زره مېرونه او وسلې ورکړي. ۳۸۷

شوروي اتحاد کونښنې کاوه چې په منځنۍ اسيا باندې خپله واکمني وچلوي. شوروي اتحاد د خپلې واکمنۍ د پراخولو دپاره د ۱۹۱۹ کال په پای کې مسکو د تاشکند سره د اورګاډي د پټلۍ په وسيله بيا وتاړه. د ۱۹۲۰ کال په پسرلي کې د افغان- شوروي اړيکې خړې پرې شوې چې لاملونو ته به يې وروسته راوګرځم او شورويانو بيا په زور سره د منځنۍ اسيا د نيولو تکل وکړ. شوروي اتحاد منځنۍ اسيا ته منظم پوځ واستاوه، فرغانه او خېوا يې لاندې کړل. بل کال يې د می په مياشت کې په پنځده کې د افغانانو لاس بری پای ته ورساوه. د دې وروسته د افغانستان او شوروي پولې هغه شوه چې د تزارې روسيې په وخت کې وه.

افغانستان د ۱۹۲۱ کال د فبروري په ۲۸ مه نېټه په مسکو کې د شوروي حکومت سره يو تړون لاسليک کړ. د دغه تړون په بنسټ دواړو لورو ومنله چې دواړه لوري د هېڅ دولت سره هېڅ داسې پوځي يا سياسي تړونونه لاسليک نه کړي چې د تړونکو کوم لوري ته زيان ورسوي. شوروي اتحاد اجازه لري چې په افغانستان کې قونسلګرۍ پرانيږي. شوروي اتحاد ومنله چې د افغانستان د سوداګرۍ مالونه به د محصول د ورکولو نه پرته د روسيې نه تېر شي. دواړو خواوو د بخارا او خېوې خپلواکي د خلکو د غوښتنو پر اساس وپېژانده. شوروي لوري دا هم ومنله چې د پولې هغه سيمې چې پخوا په افغانستان پورې تړلې وې د «عدالت او خوداراديت د اصولونو» له مخې افغانستان ته بېرته ورپرېږدي. شوروي اتحاد دا هم ومنله چې هرکال به افغانستان ته يو ميليون سره زر يا سپين زر د مرستې په توګه ورکوي. شوروي لوري برسېره پردې د تخنيکي وسيلو او متخصصانو په بڼه د نورو مرستو ورکول هم ومنل. شوروي اتحاد دا تړون دغسې مهال وکړ چې د کورنۍ جګړې او اقتصادي ستونزو سره مخامخ و. شوروي اتحاد دا هم په نظر کې لرله چې د دغه تړون له مخې به افغانستان لږ تر لږه انګرېزانو ته اجازه ور نه کړي چې د هغه د

خاورې نه د شوروي پر ضد کار واخلي. همدارنگه شورويانو دا هم انگيرله «چې دوست افغانستان به د شوروي اتحاد له پاره دغسې يوه هډه وي چې د هغه له ملک نه به د انقلاب بخري په مناسب وخت کې هندوستان ته يووړل شي.» ۳۸۸ ځکه برتانوي هند نارامه و او ملي گټو يې دا غوښتنه کوله چې افغانستان د شوروي اتحاد نه گوښه کړي او په دې موخه يې يو انگرېز جنرال مليسن ته دنده وسپارله چې د شوروي افغان اړيکې خړې پرې کړي.

خو د تړون نه نږدې درې مياشتې وروسته د ۱۹۲۱ کال د می په مياشت کې شورويانو «د بخارا امير هم په ښکاره د پرچمي ډوله «ځوانو بخارايانو» له لارې خو په واقعيت کې په خپل زور کابل ته په پرارولو اړ کړ.» که څه هم د افغانستان سره يې په تړون کې د بخارا او خپوې خپلواکي منلې وه. دا موضوع هم لکه د مخه مې يادونه کړې وه د افغانستان او شوروي اتحاد د اړيکو د خړپرتيا لامل شوه.

د مخه مې يادونه وکړه چې شوروي اتحاد کوښښ کاوه چې په منځني اسيا باندې خپله واکمني وچلوي. برتانوي هند هم لا د ۱۹۱۸ کال د برست- لیتوفسک د تړون له امله چې د شوروي اتحاد او جرمني تر منځ لاسليک شوی و، اندېښمن و. برتانوي هند وېره درلوده چې د لومړۍ نړيوالې جگړې د وخت مرکزي قوت پوځونه به افغانستان ته ننوځي او هند ته به گواښ وړوي. د رحمت ربي زيرکيار په وينا: «د برست- لیتوفسک تړون په اوومه ماده کې افغانستان او ايران «ازاد خپلواک دولتونه» کنل شوي وو او شوروي او جرمني ژمنه کړې وه چې د افغانستان او ايران د خاورې بشپړتيا او اقتصادي استقلال ته به په درنه سترکه کسي.» ۳۷۹ برتانوي هند هڅه کوله چې افغانستان د دښمنو پلاويو نه گوښه وگرځوي.

د مخه مې يادونه وکړه چې د ۱۹۲۰ کال په پسرلي کې د افغانستان او شوروي اتحاد اړيکې خړې پرې شوې. د دې اړيکې د خړپرتيا بنسټيز لامل دا و چې برېتانيا د افغان او شوروي اتحاد د اړيکو د خړپرتيا له پاره جنرال ميليسن د پوره پيسو او پوځ سره د ايران مشهد ته واستاوه. نوموړی د خپل پوځ سره د مشهد نه مروه او بېرم علي ته لاړ، خو هلته د شوروي پوځ له لوري چې زيات ځواکمن و، په مقابل کې پاتې راغی او بېرته مشهد ته راستون او استوگن شو او د هغه ځای نه يې د مسکو، تاشکند او نورو ښارونو تر منځ د تلکرافي مخابراتو په څارلو پيل وکړ او په پوره برياليتوب سره خپلې موخې پلې کړې. مليسن په ۱۹۲۲ کال کې په لندن کې د منځني اسيا ټولني ته د وينا په ترڅ کې وويل چې: «زموږ دنده دا شوه چې هر هغه ممکن کار وکړو چې په هغه سره د يوه دفاعي او يرغلز اتحاد په مقصد د افغان او شوروي پلانونو د واقعي کېدو مخه ونيسو.» ۳۹۰ ده

هغه تاکتيکونه هم په گوته کړل چې په مشهد کې يې کارول. ده زياته کړه: «څه وخت چې په دواړو کمپونو کې د ډبرو اجنتانو له لارې مالومات تر لاسه شول چې رښتيني وضع څنگه ده او دواړه خواوې له يوې او بلې سره څنگه چلند کوي، زموږ کار دا شو چې يوه خوا د بلې په خيانت په غير رسمي ډول خبره کړو. افغانانو په دغه وخت کې واورېدل چې په ټولې فرغانې کې د شوروي پر ضد يو پياوړی او د هيلې وړ پاڅون روان دی، د پاڅون مشرانو ته يې د ليکونو او سوغاتونو سره استازي ولېږل. موږ دا خپله دنده وگڼله چې دغه مالومات بلشويکانو ته ورسوو.» ۳۹۱ په دې توگه مليسن په دې بريالی شو چې د افغانستان او شوروي اتحاد تر منځ ټينگه بې باوري منځ ته راوړي. مليسن په پای کې اورېدونکو ته وويل چې: «وعدده شوې پيسې او وسلې وځنډېدلې او په پای کې گرد سره ودرولې شوې، ځکه چې هغوی [بلشويکان] په هر حال تر څه حده پورې په دې باور شول، چې افغانان په ټولې منځنۍ اسيا کې د دوی پر ضد د يوه لوی پان- اسلامي پاڅون له پاره لمسونې کوي.» ۳۹۲

کاکړ وايي چې د افغان- شوروي اړيکو کې بله ستونزه د بسمه جي غورځنگ په سر وه. امان الله خان په پټه د بسمه جي غورزنگ ملاتړ کاوه چې موخه يې په منځنۍ اسيا کې د خپلواک اسلامي دولت جوړول و. د دغه غورزنگ د برياليتوب له پاره د عثماني ترکيې پخوانيو مشرانو انور پاشا، طلعت پاشا او جمال پاشا په منځنۍ اسيا او افغانستان کې هلې ځلې کولې. د عثماني ترکيې د ماتې وروسته د ترکيې دغه پخواني مشران د ترکيې نه ووتل. انور پاشا او طلعت پاشا د برلين په لار مسکو ته لاړل چې له شورويانو سره د انگليس ضد خوځښتونو کې برخه واخلي. جمال پاشا وروسته کابل ته راغی او هلته د افغان پوځ په بيا تنظيمولو وگومارل شو. «په کابل کې جمال پاشا چې د محمود طرزي د ملاتړ نه بهر نه و، امان الله خان يې په دې قانع کړ، چې انور پاشا غواړي روسي ترکستان په افغانستان پورې وتړل شي.» ۳۹۳ په دغه وخت کې شورويانو مسلمانان د انگرېزانو پر ضد لمسول، خو په منځنۍ اسيا کې په خپله د بسمه جي پلوو مسلمانانو له مخالفت سره مخامخ شول. بلشويکانو انور پاشا ترکستان ته ولېږه تر څو د بسمه جي غورځنگ د مشرانو سره د خبرو له لارې موضوع هواره کړي. خو انور پاشا هلته د ۱۹۲۲ کال په مارچ کې د هغوی سره يو ځای شو او د شوروي اتحاد پر ضد يې د بسمه جي غورځنگ خوا ونيوله. دی «د پخوانۍ بخارا» د ځواکونو مشر شو چې شمېر يې شلو زرو ته رسېده.

کاکړ وايي چې پاچا امان الله په منځنۍ اسيا کې د کنفدرېشن د جوړېدو شونتيا بيا

ولیده. لکه چې د مخه مو یادونه وکړه په کابل کې جمال پاشا چې د محمود طرزي د ملاتړ نه بهرمن و، امان الله په دې قانع کړ، چې انور پاشا غواړي روسي ترکستان په افغانستان پورې وتړل شي او دا چې د بخارا امیر هم غواړي د هغه په مرسته له افغانستان سره یو ځای شي. ۳۹۴ پاچا امان الله په دې اړه په کابل کې د انگلستان د سفير له لارې له برتانې نه وغوښتل، چې د بخارا او خېوې خپلواکي په څرگند ډول ومني او د افغانستان له لارې د وسلو مرسته ورسره وکړي. ده د برتانې نه دا وغوښتل چې هغه دې د افغانستان ملا هم وتړي چې د شوروي اتحاد نه وغواړي له دغو ملګونو نه خپل پوځونه وباسي، خو انګرېزانو د ده غوښتنې ونه منلې. ۳۹۵ سره له دې چې انګرېزانو د ده غوښتنې ونه منلې بیا هم امان الله په دې فکر و چې انور پاشا کولی شي چې بلشویکان د بخارا نه وباسي. نو ځکه یې ورسره د وسلو او رضاکارو مرسته وکړه او د تنظیمي رئیسانو په نومونو یې جنرال محمد نادر قطغن ته، شجاع الدوله هرات ته او د عدلې وزیر محمد ابراهیم مزار ته واستول. برسېره پردې یې افغاني افسران په ملګي جامو کې انور پاشا ته او یو وور پوځي ځواک یې بخارا ته ولېږه. ده ټولو ته لارښوونه وکړه چې دوی ټول به په پټه له انور پاشا سره په بخارا کې او له بسمه جې مشرانو سره په فرغانې کې مرستې وکړي.

کاکړ د منشي علي احمد او ادامیک د لیکنو پر بنسټ لیکي چې: د ۱۹۲۲ کال د اپرېل په میاشت کې یو افغان افسر د پولې نه واوښت او په بېسون کې یې د خپلو قواوو سره د شوروي پوځونو سره مقابله وکړه. د دې برسېره د باندنیو چارو د وزارت یوه حکومتي پوسته په لار کې لوټ شوه او سندونه یې شورویانو ته په لاس ورغلل. ۳۹۶ شوروي اتحاد ته ثابت شوه چې افغانستان د بخارا په ناکراريو کې لاس لري، نو بخارا یې په یوې شپې او ورځې کې په بې رحمۍ سره لاندې کړه. شورویانو په افغانستان مرستې ودرولې او د افغانستان د حکومت نه یې وغوښتل چې څرګندونه وکړي چې بیا به د بخارا په چارو کې لاسوهنه نه کوي او افغانستان د شورویانو غوښتنې ومني او د شوروي اتحاد دوستي یې وساتله.

په دې ترتیب سره ده په منځني اسیا کې «په خپلې سروالی سره اسلامي کنفېډرېشن غوښته چې د بري چانس یې نه و او د ختیځو پښتنو په منځ کې یې هغسې کونښبونه ونه کړل، په داسې حال کې چې دغه سیمې په اصل کې د افغانستان زړه و او خلکو یې د خپلواکۍ په جنګونو کې دغه واقعیت په کړو سره ثابت کړی و. نښې ښيي چې محمود طرزي او هغو ترکي پاشایانو دی منځني اسیا ته هڅولی او د هغه پرعکس د سردار نصرالله مړینې دی له دغو پښتنو نه لیرې کړی وي. هر څه چې وو امان الله خان په دواړو

کې ناکام شو. ۳۹۷

انور پاشا هم له يو څو بريو نه وروسته د ۱۹۲۲ کال د اگست د مياشتې په څلورمه نېټه په يوې نښتې کې ژوبل او ژوند يې د لاسه ورکړ. د ده د مړينې وروسته د بسمه چې غورځنگ يو بل مشر ابراهيم بېگ د ځواکونو په خورېدلو سره په منځنۍ اسيا کې د پاشاکانو د پان ترکي دولت، د بسمه چيانو د خپلواکۍ او د پاچا امان الله د اسلامي کنفدرېشن ارمانونه په اوبو کې لاهو شول. هلته د شوروي اتحاد له لوري د سوويتيزم د پلي کولو په لور کوښښونه پيل او پاچا امان الله خان په هېواد کې په کورنيو سمونونو لنگر واچاوه. د مخه تر دې چې د پاچا امان الله په سمونونو وغېږېم لازمه کښم چې په افغانستان کې د شوروي روسې په کړنو رڼا واچوم.

امير امان الله خان او په افغانستان کې د شوروي روسې کړنې

دا موضوع مې د تيغونوف د کتاب «په افغانستان او پښتنو قبایلو کې د سترو قدرتونو سياست»، چې عزيز اريانفر په فارسي «نبرد افغاني استالين» په نامه ژباړلی، له مخې په ډېر پام سره کښلې په دې چې د کتاب ليکوال د نويو مهمو ارشيفي مالوماتو په څنگ کې د اعراضو ډکې خبرې هم لري. دا کتاب په يوه ناسمه جمله: «په کونه يې که روشن است نزدیک به چهل در صد از باشندگان افغانستان پشتونها اند که در دو اتحاديه بزرگ دراني و غلزایي کرد اماده اند.» پيل شوی دی. لومړی خو په افغانستان کې د پښتنو شمېر څلورېنښت په سلو کې نه بلکې د نسب په لحظ د ۶۳٪ او د ژبې له مخې د ۵۵٪ زيات دی او نه پښتانه يوازې د دراني او غلزایي قبيلو نه جوړ دي بلکه پښتانه د دراني او غلزایي قبيلو برسېره نورې قبيلې هم لري. په دې اړه د مخه پوره مالومات وړاندې شوي چې بيا يادولو ته اړتيا نه شته. دومره به ووايم چې ځينې روسي او امريکايې کړی د خپلو سياسي موخو له کبله د پښتنو شمېر لږ ښيي لکه چې امريکايې ليکوال ريچارډسن وايي: «کله چې په ۲۰۰۱ ز کال په اکتوبر کې امريکا پر افغانستان يرغل وکړ نو امريکايې چارواکو هم د خپلو روسي معاصرو په توگه د توکميزو لوبو کارونه راوايستل (۱۷۱ پاڼه)» او زياتوي چې «زموږ لوبديځوالو په غوږونو کې د خپرندويو او چاپي رسنيو له لارې اتنو گرافيک مالومات راڅخول کيږي او په دې قناعت راکول کيږي چې گڼي د پښتنو ډېرې هېڅکله د ټولني ډېرې نه و او اوس پر «افغانستان د پښتنو د واکمنۍ» د پای وخت را رسېدلی دی.

يو شمېر کسان په دې باور دي چې دغه چال چلند د سرې جگړې د ذهنيت دوام دی

چې طرح يې روسي ميليتاريزم جوړه او پلې کړه او موخه يې د افغانستان د ډبرکي (پښتنو) د شمېرې راتيتول يوې داسې کچې ته ول چې د هېواد په توکميز جوړښت کې د بدلون له لارې افغانستان د تجزيې له پاره چمتو کړي. (۵۰۳ پاڼه) نوموړی د افغانستان د ژبتوکمزي سلنې رښتيني انځور داسې وړاندې کوي: «د افغانستان د وگړو په ټوله شمېره کې پښتانه ۶۲,۷۳ په سلو کې، تاجکان ۱۲ په سلو کې، هزاره ۹ په سلو کې، وزبکان ۶ په سلو کې، ترکمنان ۲,۶۹ په سلو کې او ايماق ۲,۶۹ په سلو کې دي. (۵۰۴ پاڼه)» اوس به اصلي موضوع ته راوگرزم.

د نړيوالې لومړۍ جگړې په جريان کې د المان دا پروگرام چې په هند باندې له افغانستان نه گوزار وکړي د جگړې وروسته په کړو کې شوروي روسې ته پاتې شو چې غوښتل يې چې په هره بيه وي خپل دښمن- برتانيا کمزورې کړي. د سووېل په لور د شوروي روسې سياست په کابل کې د شوروي سفير براوين داسې بيانوي: «د روسې تاريخ د دې ټينگ ثبوت په لاس راکوي چې روسيه د ختيځ او په ځانگړې توگه د منځني اسيا او هند خوا ته ټينگ او د پخوا نه ټاکل شوی ميلان لري. سرنوشت د تزاري روسې لاس د هند په لوري کش کړ او همغه لاس نن ورځ شوروي روسيه هغې خوا ته کشوي. په هند کې بايد نړيوالې مسلې هوارې شي او دغه مسلې د انگرېزانو سره د روسې په ټکر سره هوارېږي.» ۳۹۸ د دې له پاره روسيه بايد د انگرېزانو پر ضد د پښتنو قبيلو د جگړې نه کټه پورته کړي. هغه مهال چې د ۱۹۱۹ کال په جنوري کې د روسې سوسيالستي جمهوريت فېدراسيون د شوروي ترکستان د جمهوريت سره ژوندی شو، د بلشويکانو مشرتابه پرېکړه وکړه چې د برتانيې په وړاندې د افغانستان سره يرغليز تړون وکړي.

شوروي روسې د بهرنيو چارو وزير چيچرين د تزاري روسې د مهال ډپلومات براوين په کابل کې د شوروي روسې د سفير په توگه وټاکه. براوين په ۱۹۱۷ کال کې د اکتوبر وروسته يوازينی تزاري ډپلومات و چې د شوروي حاکميت يې په رسميت وپېژاند. خو په تاشکند کې مشران د هغه د عقيدې له امله ورباندې بې باوره وو او ځکه يې يو شمېر کونديان کابل ته ورسره ولېږل. ايوانوف پوځي اتشه ته دنده ورکړل شوه چې د برتانيې پر ضد د يرغليز دفاعي تړون د کړلو له پاره د امير هوکړه ترلاسه کړي. همدارنگه ايوانوف ته دغه دنده هم ورکړل شوه چې که سفير خاين راوتلو هغه ووژني. ۳۹۹ د ۱۹۱۹ کال د جولای په لومړۍ نېټه د شوروي پوځي- ډپلوماتيک پلاوی افغانستان ته ننووت او د اگست په مياشت کې وروسته له هغې کابل ته ورسېد چې امان الله خان د انگليسانو سره د سوېلي تړون کړی و.

امان الله خان او پلويانو يې هاند کاوه چې د برېتانيا سره بيا د اړيکو خپرولو نه ځان وژغوري په دې چې افغانستان بلې جگړې ته چمتو نه و. برسېره پر دې افغانانو ويره درلوده چې د شوروي روسې غړي به د استخباراتي مالوماتو د ټولولو هڅه وکړي او همدارنگه به کمونيستي تبليغات پرمخ بوزي. تيخنوف وايي چې د افغانانو اندېښنې پر ځای وې ځکه چې په شوروي پلاوي کې د ترکستان د کمونېستانو نه لس تنه په دې کومارل شوي و چې «د افغانانو په منځ کې سياسي کار» وکړي. ۴۰۰ ايوانوف پوځي اتشه په خپل وار د ټولو ستونزو سره سره په کابل کې د مالوماتو په ټولولو پيل وکړ. د ۱۹۱۹ کال په اکتوبر کې پوځي کسان د ايوانوف په مشرۍ اړ شول چې کابل پرېږدي په دې چې دوی خپله تر ټولو مهمه دنده يانې د انگرېزانو پر ضد د امير سره پوځي تړون کړل و، ترسره نه کړه.

د ۱۹۱۹ کال د جون په ۲۳ يو پخوانی بلشويک ياکوف سوريتس د براوين په ځای په کابل کې د شوروي د سفير په توگه وټاکل شو. د ډېر وخت راهيسې په مسکو کې په دې پوهېدل چې د افغان-انگليس جگړه نوره پای ته رسېدلې ده. د دې سره سره په کرملن کې يې دا هيله له لاسه نه ورکوله چې بيا د افغانستان پښه د برتانې ضد جگړې ته ورکش کړي. ۴۰۱ د ۱۹۱۹ کال د دسمبر په ۱۴مه سوريتس د شوروي روسې سفير د يو څو هندي ناسيونالستانو سره کابل ته ورسېد. د همدې مياشتې په ۲۷مه سوريتس تاشکند ته پټ تلگرام واستولو: «موږ وکولی شول چې د سرحد د اړيدو او وزيرو د قبایلو د مشرانو سره تماس ونيسو. دغه قبيلې د می د مياشتې راهيسې د انگليس هندي پوځ په وړاندې بريالی مبارزه کوي.» ۴۰۲ سفير وړانديز وکړ چې د قبایلو سره دې د پامير له لارې اړيکې ټينگې شي. وروسته د شوروي روسې سفير سوريتس دې پایلې ته ورسېد چې افغان مشرتابه به د شوروي روسې سره پوځي تړون ونه کړي. خو د افغانستان مشرتابه چمتو دی چې د شوروي روسې سره د دوستۍ او بې پلوی تړون لاسليک کړي.

چيچيرين د شوروي روسې د بهرنيو چارو وزير د افغانستان سره د دفاعي تړون د کړلو مخالف و په دې چې دا تړون کېدای شو چې د شوروي روسې او لويې برتانې تر منځ په جگړه بدل شي. چيچيرين په دې اند و چې د افغانستان او شوروي روسې تر منځ په لومړي تړون کې دې د پابندۍ ماده نه وي چې شوروي د افغان لوري سره په دې ژمنه وکړي چې په افغانستان باندې د برتانې له لوري د يرغل په وخت کې به د افغانستان پلوي وکړي. ۴۰۳ افغانان او په ځانگړې توگه نادرخان د دې پلوي و چې شوروي روسيه دې د سيستان له لارې پوځي مرسته وکړي او د کرښې اخوا پښتانه د عمومي پاڅون وکړي. خو

څنگه چې د روسانو مرسته يقيني نه وه امان الله خان د ۱۹۲۰ کال په اپرېل کې سویتس ته اعلام وکړ د دې له پاره چې افغانستان د روسيې او برتانيې د لاس اچونې ډگر نه شي په کلکه د بې پلوی کړنلاره به مخته بوزي. ۴۰۴ په دې توگه د افغان دهلېز د بلشویکانو په وړاندې وتړل شو.

د ۱۹۲۰ کال په اوړي کې د افغانستان د دهلېز د بندېدلو په درشل کې سویتس د مسکو نه غوښتنه کوله چې بېرته یې وغواړي. خو په مسکو کې د سویتس د ملاتړ په خاطر د ۱۹۲۰ کال د جولای په میاشت کې جمال پاشا چې د ترکيې وتلی پوځي- سیاسي شخصیت و چې دا مهال د شوروي حکومت سره د همکارۍ له پاره حاضر شوی و، کابل ته ولېږي. جمال پاشا د لومړۍ نړیوالې جگړې پر مهال د عثماني امپراتورۍ د وسله والو قواو وزیر او په سوریا کې د ترک د څلورم پوځ قوماندان و. هغه د برتانوي پوځ په وړاندې د جگړې د لارښوونې له امله په اسلامي هېوادو کې د «اسلام زمري» نوم گټلی و. په ۱۹۱۸ کال کې د ترکيې د تسلیمېدو وروسته المان ته وتښتېد.

د المان د پوځ مشر فون سکېت د دې وېرې نه چې برتانيا په جگړه کې د مات شوي المان څخه د ترکيې د تېرو متحدینو غوښتنه ونه کړي د ترکيې پخواني د دفاع وزیران انور پاشا او جمال پاشا یې په پټه شوروي اتحاد ته ولېږل. د تیخونوف په وینا سرنوشت خپل کار وکړ او جمال پاشا د افغانستان او شوروي اتحاد د اړیکو په ټینګولو او د پښتنو قبیلو د برتانوي ضد غورځنګ په پورته کېدو کې مهم رول ولوباوه. روسانو د جمال پاشا د مسلکي، ډپلوماسي شوونتیاوو او د انګرېزانو نه د زیاتې کرکې د ځانګړتیاوو نه ښه گټه پورته کړه او هغه یې د لسو نورو ترکي افسرانو سره افغانستان ته واستوه. د ۱۹۲۰ کال په اکتوبر کې جمال پاشا کابل ته ورسېد. د کابل ښاریان د ده مخې ته ورغلل او د کابل ښار سرتیري د ده مخې ته سلامي تېر شول او د سلامي توپونو ډزې وشوې.

امان الله خان د جمال پاشا تود هرکلی وکړ او هغه یې خپل مشاور وټاکه. جمال پاشا د ۱۹۲۰ کال په نومبر کې امان الله خان د برتانوي پر ضد د خپلې مبارزې د پروګرام سره اشنا کړ. امان الله خان او جمال پاشا څو ورځې پرله پسې په ډېرو پټو خبرو کې چې د پردې تر شا کېدې د برتانوي پر ضد د جگړې د نیولو په صورت کې تدبیرونه و ارزول. سویتس د دغو خبرو په اړه مسکو ته د جمال پاشا د اطلاعاتو یو رمزي گزارش ولېږه چې په هغه کې «په مسکو کې د جور شوي پروګرام د پلي کېدو شوونتیاوې چې کریملن ورته سترګې په لاره و، انعکاس موندلی و.» ۴۰۵

ترکي سیاست پوه په دې اړه د افغان لوري هوکړه په لاس راوړه چې د هند او

افغانستان د سرحد د ساتنې لارښوونه وکړې. هغه ته همدارنگه اجازه ورکړ شوې وه چې د پښتنو قبایلو سره چې د انګرېزانو د پوځ سره په جګړه بوخت وو تماسونه ټینګ کړي. په قبایلو کې د پوځي کار د تنظیم په موخه د جمال د وړاندیز سره چې یو «ځانګړی کمیسیون» جوړ شي چې په هغه کې په باوري توګه د شوروي نماینده گانو ته اجازه ورکړه شي چې د ترک افسرانو په جامو کې ګډون وکړي، هوکړه ترلاسه کړه. امان الله خان جمال ته اجازه ورکړه چې په کابل کې یوه ګوزاريزه قطعه جوړه کړي.

جمال د مسکو اجنت وکولی شول چې د ترک افسرانو په مرسته درې پلي کنډکونه او یوه د سوارو قطعه جوړه کړي. په دغو قطعاتو کې د قبایلو جنګیالي په خوشالی سره منل کېدل. د ۱۹۲۱ کال فبروري کې د «ګوزاريزو» قطعو شمېر نږدې درې زرو ته ورسېد. جمال د دې پلوي و چې هر څومره زر چې کېږي د افغانستان او شوروي اتحاد تر منځ تړون لاسلیک او افغانستان ته پوځي مرسته زیاته شي.

شوروي سفارت د جمال پاشا په مرسته د کابل او مسکو تر منځ د باور بحران له منځه یووړ. د ترکې پخواني وزیر د ۱۹۲۰ کال د پیل نه د شوروي جاسوس په حیث په کابل کې کار کاوه او د افغان امیر پوځي مشاور هم و. د ده تر ټولو مهمه دنده دا وه چې «په هند کې انقلاب» تنظیم کړي. د ۱۹۲۱ کال په مارچ کې هغه د دفاع وزیر نادر خان سره چې د انګرېزانو په وړاندې د پښتنو قبایلو د کارولو د موضوع په اړه همفکره و، د قبایلو کتنه وکړه. قبایلو هیله درلوده چې د جمال په منځګړتیا به د شوروي نه وسله او پیسې لاس ته راوړي. عبدالرزاق د وزیري قبیلو روحاني مشر چې دوولس زره وزیر او مسعود یې تر قوماندې لاندې وو او د انګرېزي پوځ په وړاندې جنګېدل هوکړه وکړه چې د جمال د پلان په پلي کولو کې مرسته وکړي. عبدالرزاق د ۸۰۰ زرو کابلې روپۍ او وسلې چې د ده په جنګیالیو ووېشل شي، وړاندیز وکړ. جمال د خپل پلان د پلي کولو له پاره مسکو ته د وسلې او پیسو وړاندیز وکړ خو مسکو دغه لګښتونه په غاړه وانه خپستل. په دې چې دغه مهال د انګلیس او شوروي تر منځ د مارچ په ۱۶ مه د سوداګرۍ تړون لاسلیک شو چې د لندن او مسکو تر منځ د ټینکو اړیکو پیل شو او د جمال پاشا د پروګرام پلي کول یې ناشوني کړل. جمال پاشا مسکو ته لار چې د خپل پلان د منلو له پاره د لندن سره وګوري خو هغه ورسره ونه کتل. په مسکو کې د هغه سره د یو څه مرستې خبره وشوه خو کله چې تبلیغې ته راورسېد په مرموز ډول ووژل شو. روسان یې پر په ارمینیانو اچوي خو امریکایي تاریخپوه د. اسپین وایې چې هغه شوروي استخباراتو وواژه ځکه چې نور یې د بلشویکانو له پاره ارزښت نه درلود.

شوروي روسيې نه يوازې په کابل کې د خپل سفارت له لارې په افغانستان کې خپلې موخې پرمخ بيولې بلکې د کمونېستي انټرناسيونال يا کمينټرن او په ترکستان کې يې د هغه د جوړښتونو څخه گټه پورته کوله. شوروي روسيې غوښتل چې هند ته د انقلاب د صادرولو په موخه مالي او مادي سرچينې په افغانستان او د پښتنو قبایلو کې متمرکزې کړي. د پښتون قبایلو ستر پاڅون کېدای شو چې په پنجاب او هند کې په برتانيې دروند کوزار وکړي. له دې کبله په ۱۹۲۰ کال کې د لين په غوښتنه هغه ته د افغانستان د پولې دواړو خواوو پښتنو، د سوويلي افغانستان او د شمالي هند نقشه ورته تهيې شوه.

د ۱۹۱۹ کال په لومړيو کې په ترکستان او کابل کې د هند انقلابي اډې د جوړولو کار پيل شو. په کابل کې د کمينټرن په دستور په دې اړه لومړی کام براوين واخيست. براوين د هند نېشنلسټانو او د پښتنو قبایلو نماينده گانو «د سرحد انقلابيون» سره يې د انگرېزانو ضد مبارزه کې د مرستې ژمنه وکړه. په کابل کې د شوروي روسيې نوي سفير سوريټس چې په منځني اسيا کې د کمينټرن رسمي نماينده هم و، په کابل او هند کې د انگليس ضد عناصرو سره خپله همکاري پراخه کړه. د سوريټس د سفارت په وخت کې د کابل او مسکو تر منځ د اړيکو چارې په بهرنيو چارو کې د خلک کميسار او د انگليس ضد عناصرو سره پټې اړيکې کمينټرن پر مخ وړې. خو د ۱۹۴۳ کال پورې چې کمينټرن رنګ شو ټولو شوروي سفيرانو په دوو رولونو کې لوبه کوله. دوی د خپلو اصلي دندو په څنګ کې په پټه ناقانونه چارې پر مخ بيولې. ۴۰۶

د سوريټس لومړی ستر برياليتوب د ۱۹۲۰ کال په فبروري کې په کابل کې «د هند انقلابي ټولنه» جوړېدل و چې په هغې کې د هند د نېشنلسټانو بيل بيل گروپونه سره يوځای کول خو يوازې د «د هند موقت حکومت» د مېنډرا پراتاب په مشرۍ ورسره يوځای نه شو. عبدالرب د ټولني مشر په توګه وټاکل شو. زر د ټولني د غړو شمېر ۱۵۰ تنو ته ورسېد او وکولی شول چې د پښتنو قبایلو په ترانګه کې خپل کار پيل کړي. د سوريټس پيامونه، د لين ليکونه او کمونيستي اثار چې د دغه سازمان له لارې قبایلو او د هند شمالي غرنيو سيمو ته لېږدېدل د برتانيې استخباراتو لاسته ورغلل چې په هند کې د کمينټرن د لومړيو اجنټانو په بندي کولو سره تمام شو.

همدارنګه د ۱۹۲۰ کال د مارچ په ۳۱مه د هند د موقت حکومت د کورنيو چارو مرستيال محمد علي او محمد شفيق د مرستې له پاره تاشکند ته راغلل. دوی غوښتل چې د افغانستان له لارې د شوروي روسيې په لاسوهنې سره خپل وطن د انگرېزانو د منګلو نه وباسي. محمد علي زر پوه شو او د کمينټرن سره يې همکاري پيل کړه. د دغې شېبې نه

محمد علي د کمينټرن د اساسي دسيسو يوه مهمه مهره وگرځېد. خو څنگه چې د دغو ناسيونالستانو نه روسانو د خپلو ځانگړو موخو له پاره دومره کټه نه شوه پورته کولی نو اړ شول چې د يوه بل کس په لټه کې شي.

په ۱۹۱۹ کال کې لينن مکسيکو ته بورودين ولېږه چې په مکسيکو کې د هغه هېواد د سوسيالست گوند عمومي منشي د هند تبعه مهاندارات روي سره اړيکه ونيسي. م. روي د لومړۍ نړيوالې جگړې په جريان کې د انکليس ضد کړنو له امله چې ځان د بندي کېدو نه وژغوري مکسيکو ته تېښتېدلی و. د ۱۹۱۹ کال په نومبر کې د ده په گډون سره د مکسيکو کمونېست گوند جوړ شو چې سمدلاسه يې د کمينټرن سره خپل پېوستون اعلام کړ. م. روي په ۱۹۲۰ کال کې د مکسيکو د کمونېست گوند د نماينده په حيث د کمينټرن په دوهمه کنگره کې د گډون له پاره مسکو ته لاړ. هلته يې د لنين سره وليدل. م. روي د ۱۹۲۰ کال د اگست په اتمه نېټه د کمينټرن د ترکستان د دفتر يو له مشرانو څخه وټاکل شو. په دې توگه هند ته د افغانستان له لارې د انقلاب د صادرولو د سازمانولو له پاره لوی واک او سرچينې ورکړل شوې. دا کار د سرحد د پښتنو قبایلو د گډون پرته ناشونی و. په ۱۹۲۰ کال کې کمينټرن د بلشويکانو په ملاتړ يو لوی پوځي پلاوی د بورودين او روي په مشرۍ افغانستان ته د لېږلو له پاره تهيه کړو. بورودين او م. روي سره د ډېرو پيسو او زياتو وسلو ژمنه وشوه خو چې تاشکند ته راوړسېدل هېڅ يوه ژمنه يې تر سره نه شوه او د نامالومو دلایلو له مخې دا پروژه راتلونکې ته پاتې شوه.

م. راوي کله چې تاشکند ته راوړسېد د خپل پروگرام په پلي کولو پيل وکړ. بورودين او روي هلته د پوځي زده کړې بورډ جوړ کړ چې په هغه کې به هنديانو ته پوځي زده کړه ورکوي. پرېکړه وشوه چې په هغه کې به دوه دريمه برخه افسران د هند د شمال ختيځو سيمو مسلمانان شاملېږي. سوکولنيکوف او روي غوښتل چې شپږ مياشتې وروسته سل تنه «انقلابي افسران» د پښتنو قبایلو ترانکې ته وليږي چې هلته «هندي لوا» جوړه کړي. د دغې موخې له پاره ځانگړی پوځي پوهنځی جوړ شو. خو په تاشکند کې يوازې ۲۵ تنه هنديان حاضر شول چې په دغو کورسونو کې شامل شي. د بخارا د نسکورېدو وروسته هندي مهاجرو زياتوالی وموند. په دغو مهاجرو کې يو شمېر سوداگر هم وو چې د سياست سره يې مينه نه نښودله. د دوی نه د هندي او افغاني هويت اصلي اسناد واخېستل شول او له دغو اسنادو نه هند او افغانستان ته د کمينټرن د اجنټانو د استولو له پاره د دغو هېوادو د اتباعو تر نامه لاندې کټه پورته کېده.

د ۱۹۲۰ کال په اکتوبر کې د ترکستان د کمينټرن د دفتر په همکارۍ په ترکستان کې د

افغانستان د اتباعو نه د افغانستان د مظلومو پرگنو د ازادۍ له پاره «د افغانستان انقلابي کمیټه» جوړه شوه. د دغې کمیټې مشر محمد یعقوب و چې غوښتل یې امان الله خان د شوروي په مرسته نسکور او په افغانستان کې سوسیالستي بدلونونه منځ ته راوړي. که څه هم دا طرحه پلې نه شوه خو کمیټرن د ۱۹۲۰ کال تر پایه په هرات، میمنه، مزار شریف او نورو ځایونو کې پټې اډې جوړې کړې وې.

د هند په خاوره کې د جنګي عملیاتو پلان د پښتنو قبایلو د ملاتړ پرته ناشونی و. له دې امله کمیټرن ته د پښتنو جلیبول لومړی درجه اهمیت درلود. دا ناڅاپي نه ده چې د هند د کمونېست ګوند اول نمبر کارټ چې راوي جوړ کړی و، په تاشکند کې عبدالقیوم دولت خېل پښتون توکمي ته چې د خیبر او وزیرستان د کمیسار د مرستیال وراره و، ورکړ شو. دغه ځوان په ۱۹۲۰ کال کې د لهستان (پولنډ) نه چې هلته د سره پوځ په لیکو کې په جګړه بوخت و، تاشکند ته راوغوښتل شو چې په تاشکند کې د هند په انقلابي کمیټه کې خدمت وکړي.

د ۱۹۲۰ کال په نومبر کې د ازادو قبایلو نه لس کسيز پلاوی د محمد اقبال او عبدالحق په مشرۍ تاشکند ته ورسېد. د کمیټرن له خوا عبدالحق ته دنده وسپارل شوه چې ازادې ترانګې د پښتنو په منځ کې د برتانوي ضد فعالیت د باجوړ نه پیل کړي په دې چې کمیټرن هلته لا پخوا پټ مرکز جوړ کړی و. د همدې کال د نومبر په ۲۵ مه اقبال او عبدالحق افغانستان ته روان شول او د ۱۹۲۱ کال د فبروري په لومړۍ نېټه کابل ته ورسېدل. عبدالحق په کابل کې وکولی شول چې د امان الله خان سره وګوري. هغه هڅه وکړه چې د هغو طلايي پیسو سره یو ځای برتانوي هند ته وتښتي چې په تاشکند کې یې د کمیټرن نه ترلاسه کړې وې خو د افغانستان د حکومت له خوا ونیول شو. د هغه نه هغه لیک هم لاسته راغی چې د سرحد انګلیسي کمیسار ګرانټ هاملتون ته یې لیکلی و. عبدالحق په خپل پیام کې ګرانټ ته لیکلي و چې هغه د تاشکند نه د مهمو اطلاعاتو سره درځي او د هغه نه یې هیله کړې وه چې له افغانستان نه هند ته د ننوتو اجازه ورکړي. د دې شېبې نه مالومه شوه چې عبدالحق د انګرېزانو جاسوس و. شوروي اړتیا درلوده چې په دې پوه شي چې عبدالحق انګرېزانو ته کوم مالومات ورکړي دي. په دې اړه شوروي سفیر سوریتس د طرزي نه وغوښتل چې عبدالحق دوی ته وسپاري چې بېرته یې تاشکند ته بوزي او ورڅخه پلټې وکړي. خو د سوریتس غوښتنه ونه منل شوه. افغان حکومت روسانو ته اجازه ور نه کړه چې په دهمزنګ کې د عبدالحق نه پوښتنې وکړي او ان د عبدالحق د دوسې د لوستلو اجازه یې ورنه کړه. یو کال وروسته عبدالحق په بندیتون کې ووژل شو.

د دې وروسته م. روي ته د مرستې له پاره د بلوچستان نه دوه خانان تاشکند ته راغلل. د کمينټرن په اسنادو کې دوی د «مصري خانوف» په نامه ياد شول. م. روي هغوی ته د سرو او سپينو زرو پيسې او يو څه وسله ورکړه. خو دوی چې بدخشان ته ورسېدل هر څه يې د بدخشان والي ته ورکړل. دغه کار کمينټرن ته دا مالومه کړه چې د قبایلو مشران د انگرېزانو ضد مبارزه کې امان الله خان خپل اصلي ساتونکی بولي او نه يې غوښتل د هغه د خبرولو پرته کوم عمليات د پښتنو سيمو کې په لاره واچوي.

کمينټرن د دغو ماتو سره سره په دې بريالی شو چې «د غزا د لارې مله» يا وهابيونو سره چې د هند په مسلمانانو کې ډېر مشهور وو، تماس ونيسي. په ۱۹۱۹ کال کې محمد ياسين د وهابيونو نماينده کابل ته راغی او د شوروي ډپلوماتانو سره يې تماس ونيو او د هغې وروسته تاشکند ته لاړ او د کمينټرن څخه يې د سازمان له پاره مرسته واخېسته. وهابيانو د دې مرستې په مقابل کې د کمينټرن سره ژمنه وکړه چې د پښتنو قبایلو په منځ کې به د انگليس ضد تبليغ په ساحه کې د کمينټرن سره مرسته وکړي. کمينټرن وکړای شول د وهابيونو په مرسته د پښتون قبایلو په ترانکه کې خپل دريځ پياوړی کړي.

کمينټرن هڅه وکړه چې په هند کې د انگليس ضد فعاليت له پاره په کابل کې پټ مرکز جوړ کړي. د دې کار له پاره د ۱۹۲۱ کال د جنوري په پنځمه د کوشک له لارې په کابل کې د کمينټرن لومړی جاسوس محمد علي چې د کمينټرن په راپورونو کې د بوس په مستعار نوم يادېده، کابل ته راغی. محمد علي د شوروي سفارت سره په اړيکه کې بايد په افغانستان او هند کې د مالوماتو د راټولولو پټ د جاسوسۍ پراخ جال وغزوي؛ د هند د ملي ازادي غوښتونکي غورځنگ مشرانو ته شوروي روسي ته د راتگ زمينه برابره کړي او پښتنو قبایلو ته د روسي وسلو قاچاق تنظيم کړي.

د کمينټرن جاسوس په کابل کې سمدلاسه د «هند د موقت حکومت» پخواني وزير عبيدالله [سيندي] کور ته چې د افغان حکومت سره يې بڼې اړيکې درلودې لاړ او هلته اوسېده. عبيدالله د حکومت کارمندانو ته تضمين ورکړ چې محمد علي به په افغانستان کې کمونېستي پروپاگانډ نه خپروي. تيخونوف وايي چې مولوي عبيدالله سيندي په کابل کې د «شوروي نفوذ» عامل وگرځېد. په دې توگه د محمد علي له خوا د مولوي عبيدالله سيندي جذب په کابل کې د کمينټرن د جاسوس لومړنی غټ برياليتوب و. عبيدالله چې د قبایلو سره يې بڼې اړيکې درلودې سوکه سوکه يې محمد علي ته پرېښودې. برسېره پر دې عبيدالله د سپاسالار نادرخان سره چې د شمال ختيځ هند د پښتنو د برتانيې ضد مبارزو ټينگ ملاتړی و دوستي لرله. نادر په دغو پښتنو کې ډېر شهرت درلود او د افغانستان او د

هند په وضعه بڼه پوهېده. محمد علي د عبیدالله په مرسته د پښتنو قبایلو په اړه ارزښناک مالومات ترلاسه کول. عبیدالله په سخاوتمندانه ډول د محمد علي له خوا تمویلېده.

دا مهال د سوریټس پر ځای په کابل کې راسکولنیکوف د سفیر او د کمینټرن د مشر په توګه وټاکل شو. ده ته مسکو لارښوونه کړې وه چې په هند او د پښتنو قبایلو په ترانګه کې پټ کار ته دوام ورکړي او نور پراخوالی ومومي.

د ۱۹۲۲ کال په جنوري کې محمد شفیق د هند د کمونېسټ ګوند مشر په تاشکند کې د م. روي سره یوځای شو او په پټو چارو کې یې فعاله برخه واخېسته. شفیق په کابل کې «د سرحد ملي ګوند» جوړ کړ چې په پروګرام کې یې د پښتنو ازادې او هند د برتانې د سلطې نه خلاصول و. د سرحد د ملي ګوند برنامه د امان الله خان د تایید له پاره هغه ته ولېږل شوه. خو په دې باندې د شوروي روسيې سفیر راسکولنیکوف خواری شو په دې چې د ده په اند د افغانستان او روسيې موخې د پښتنو قبایلو په ترانګه کې بیلې بیلې دي. په دې اړه ده اجرایه کمیټې ته لیکلي و: «د ازادو قبایلو په منځ کې د انقلابي کار سره د افغانستان شاهي هېواد د لاسوهنې امپریالیستي هدفونه تعقیبوي خو زموږ هدف د هند او قبایلو واقعي ازادې ده.» ۴۰۷ زما په اند په هند او قبایلو کې د راسکولنیکوف د واقعي ازادې نه موخه دا ده چې هلته خپل جاسوسان په واک کړي او د شوروي روسيې تر سیخې ډېکټې لاندې چارې تنظیم کړي.

د حیرانۍ ځای دی چې د شوروي روسيې سفیر د افغانستان واکمنان چې د خپلې خاورې د لاسته راوړلو هڅې کوي د دوی دغو هڅو ته امپریالیستي موخې وایي او خپلو نیواک ګرو موخو ته واقعي ازادې وایي. راسکولنیکوف د شفیق سره اړیکې پرې کړې او هغه هند ته واستول شو او انګرېزانو بندي کړو. د راسکولنیکوف له لوري د سرحد د ملي ګوند تحریم او د کابل نه د شفیق لرې کولو ثابته کړه چې شوروي روسيې او کمینټرن هڅه کوله د پښتنو قبایلو د پاڅون نه د هند د بې ثباتۍ له پاره کار واخلي. تیخونوف وایي چې دوی په نظر کې نه لرل چې د پښتنو خاوره دې د افغانستان سره یوځای شي. په داسې حال کې چې د افغانستان سره د پښتنو د خاورې یوځای والی په منځني اسیا کې د برتانې په ټوله امپراتوري یو حساس ګوزار و.

راسکولنیکوف د محمد علي له لارې عبیدالله سیندي ته ۲۰۰۰ پونډ سټرلینګ د برتانې ضد د پښتنو قبایلو د غورځنګ د تمویل له پاره ورکړې. روسانو د وهابیانو په مرسته وکولی شول چې په خيبر او وزیرستان کې دوې کمیټې جوړې کړي چې د کمینټرن له

خوا تمویل کېدې او د هغه دستورونه یې پلي کول. په ۱۹۲۴ کال کې په خیبر کې د کمینټرن پټ گروپ جوړ شو.

د ۱۹۲۴ کال په جون کې د وانه گروپ ته لارښوونه وشوه چې په وزیرستان او بلوچستان کې یو پراخ پټ جال خپور کړي. په باجوړ کې د سید آشان مرکز مشري د غلام عزیز په غاړه وه چې د محمد علي په وړاندیز هلته ټاکل شوی و. په ډېره کې د کمینټرن یو بل مرکز د مخني په نوم چې د محمد علي ملگری و جوړ شو. په کابل کې شوروي سفارت د تورنگزو د حاجي سره د چمرکنډ د وهاييونو له لارې اړیکې ټینګې کړې وې.

د ۱۹۲۲-۱۹۲۱ کلونو کې د کمینټرن د اجنټورۍ کره وره د کابل او لندن تر منځ د اړیکو د ښه کېدو په لاره کې جدي خنډ و. امان الله خان د خپلو سمونونو د پلي کولو له پاره د انګلیسانو سره سولې ته اړتیا درلوده. له دې کبله د افغانستان حکومت په ۱۹۲۲ کال کې د کمینټرن د فعالیتونو د مخنیوي له پاره کلک تدبیرونه ونيول او د کمینټرن اجنټان د افغانستان نه وایستل شول. د ۱۹۲۲ کال د اکتوبر په میاشت کې عبیدالله سیندي د مخه تر دې چې د وتلو امر ورته وشي په خپله تاشکنډ ته لاړ. همدارنګه په ۱۹۲۲ کال کې د هند د ناسیونالستانو مرکز چې د لومړۍ نړیوالې جګړې راهیسې فعال و خپل شتون ته د پای ټکی کېښود. په دې توګه د کمینټرن فعالیت د یو څه وخت له پاره فلج شو.

له دې وروسته دا چارې د شوروي روسې حرفوي استخباراتو لاسته ولوېدې. اوس روسان اړ شول چې پامیر ګاونډیو هېوادو او هند ته د انقلاب د صادرولو په اړه بدل کړي. د ۱۹۲۱ کال په اوږو کې د قرغزستان د اوش په ښار کې د ت. دیاکوف په مشرۍ د پامیر ډله جوړه شوه چې د سیاسي استخباراتو چارې ارنستو پومپور پرمخ بیولې. ۱۹۲۲ کال ته نږدې ارنستو پومپور په زیات لګښت سره وکړای شول چې د افغان د پامیر د محلي حکومت سره اړیکې ټینګې کړي او د هغه کسانو کولی شول چې د خاروغ او د افغانستان په بیلو بیلو سیمو، کاشغر او شمالي هند کې ازاد وګرځي. د شوروي ټولو اجنټانو افغاني پاسپورټونه درلودل چې د امیر «وفادارو» مامورینو پرې پلورلي وو. د شوروي استخباراتو وکولی شول چې خپل لومړي بریالیتوبونه د افغانستان او هند په شمالي سیمو کې په زیاته اندازه د اسماعیلانو په همکارۍ سره ترلاسه کړي. د ۱۹۲۲ کال په پسرلي کې ارنستو پومپور وکولی شول چې په قطغن، خان اباد، د چین یارکنډ، چترال، او گلګت په ښارونو کې د جاسوسی جالونه جوړ کړي. په ۱۹۲۲ کال کې شورویانو وکولی شول ډېره جاتو او پېښور ته لاره خلاصه کړي.

په تركستان كې د كمينټرن د بندېدو وروسته په ۱۹۲۲ كال لس تنه وفادار هندوان د چترال له لارې هند ته واستول شول چې هغوی د انگرېزانو له خوا بندي او د ۱۹۲۳ كال د اپرېل او می په مياشتو كې په پېښور كې محكمه شول.

د شوروي روسيې او كمينټرن فعاليتونه چې د برتانيې په امپراتورۍ باندې د منځني اسيا نه كوزار وكړي انگرېزان اړ كړل چې په بېره سره په ټولو جهو كې د «سره گواښ» په وړاندې غبرگون وشي. په هند كې پېچلې وضعې غوښتنه كوله چې د خپل خطرناك سيال په وړاندې د ازادو قبایلو په لور د افغانستان دهلهز وتړل شي. انگرېزان د خپلو جاسوسي جالونو له لوري د بلشويكانو او كمينټرن د برنامو نه پوره خبر وو. د انگليسانو جاسوسي جال په تاشكند او هم په مسكو كې د كمينټرن په جوړښتونو كې نفوذ كړی و. برسېره پر دې د انگرېزانو سره د مالوماتو په ټولولو كې د سپين كارډ د جاسوسۍ جال اغېزمنه مرسته كوله. د انگليس د جاسوسۍ راډيويي دستگاه چې د افغانستان او تركستان په ساحه كې يې راډيويي مخابرات نيول په كوټه كې پراته وه. هغه مهال چې د شوروي راډيويي دستگاه په كابل كې كار كاوه انگرېزان د افغانستان او شوروي اتحاد د ټولو پټو اړيكو نه خبر وو.

په كورنۍ جگړه كې د بلشويكانو برياليتوبونو د د. ل. جورج حكومت اړ كړ چې د ۱۹۲۱ كال په پسرلي كې د شوروي روسيې سره سوداگري هوكره ليك لاسليك كړي. خو د برتانيې د بهرنيو چارو وزير لارډ كرزډ د روسيې د دېفكتو پېژندلو سره كلک مخالفت كاوه. د انگلستان د سوداگري وزير روسي پلاوي ته يو ليك وسپاره چې په هغه كې د برتانيې په ضد د نه انكار كېدونكو حقايقو پر بنا په افغانستان كې د شوروي نماينده گيو او په تركستان كې د هند د نېشنلسټانو فعاليتونه وړاندې شوي و. روسانو په تاشكند كې هندي پوځي پوهنتون وتړلو، خو په واقعيت كې هغه په پټه بخارا ته يوړل شو.

دا مهال پښتنو د انگرېزانو د «پرمختگ پاليسۍ» په وړاندې ټوپك ته لاس واچاوه. د بلشويكانو مشرتابه پرېكړه وكړه چې د دغې وضعې نه په افغانستان او د پښتنو قبایلو په سيمو كې د خپل درېځ د بياوړي كولو له پاره گټه پورته كړي. د روسيې د كمونېستي گوند په څنگ كې د افغانستان د مسايلو په اړه ځانگړی كميسيون جوړ شو او د ۱۹۲۳ كال د فبروري په ۲۸ مه نېټه راسكولنيكوف ته لارښوونه وكړه چې د افغانستان په پوله كې د انگليس د تيري په وړاندې د افغانستان د حكومت سره د يوه پټ هوكره ليك په اړه خبرې پيل كړي. خو انگرېزان د دغو اقدامونو نه خبر شول د انگلستان د بهرنيو چارو وزير د ټولو رښتينيو اسنادو په ښوولو سره روسيې ته التيماتوم وركړ چې په هند كې خپلو

فعالیتونو ته د پای ټکی کېږدي او خپل سفیر بېرته کابل ته وغواړي. د بریتانیا غبرګون کمیټنټر اړ کړ چې د ترکستان او بخارا د فټرونو فعالیتونو ته د پای ټکی کېږدي. د ۱۹۲۴ کال د فبروري نه وروسته راسکولنيکوف بېرته خپل هېواد ته راستون شو او د شوروي هېواد نه د باندې اطلاعاتي چارې کسې جاسوسان پرمخ بیولې.

د پاچا امان الله خان لومړني سمونونه

کاکړ وايي چې په معاصر افغانستان کې امير شيرعلي خان لومړی افغان واکمن و چې د دولتي نظام د عصري کولو په لور يې کامونه اوچت کړل. پاچا امان الله بيا دولتي نظام د عصري کولو برسېره د افغاني ټولني د مدني کولو او عصري کولو له پاره د بنسټيزو او پراخو سمونونو پلي کولو ته ملا وتړله «چې په هغو سره افغان ټولنه مدني، سياسي نظام عصري او د فرد خپلواکي واقعي کړي.» ۴۰۸ امان الله خان د واکمنۍ په لومړي کال کې اجرايوې قوه تنظيم کړه چې په سر کې صدراعظم او وزيران وګومارل. پاچا امان الله لومړی افغان واکمن و چې د دولت درې ګونو قواوو (اجرايي، قضايي او مقننې) ته يې عصري بڼه ورکړه. خو پاچا امان الله سلطنت د حکومت نه بيل نه کړ يا يې په پوره اندازه بيل نه کړ. دی د پاچا په توګه غير مسؤل کنټل کېده، وزيران ده ټاکل او هم يې ليرې کول او دوی يوازې ده ته مسؤل وو. وروسته يې د صدراعظمۍ چارې په خپل لاس کې ونيوې او تر پايه د غير مسؤل صدراعظم په توګه پاتې شو. ۴۰۹

د پاچا امان الله له لومړيو بنسټيزو کارو يو دا شو چې چارې د ولس د استازو په مشوره يا لږ تر لږه د هغوی له لارې پرمخ بوزي. څرنګه چې په افغانستان کې د لومړي ځل له پاره په پراخ ډول سمونونه پلي کېدل نو اړينه وه چې نوي قوانين جوړ شي. د دغې موخې له پاره د «رياست محفل وضع قوانين» په نوم يوه اداره جوړه شوه چې مشر يې سردار شير احمد و. د قانون ايستلو رياست په دولتي شورا وړول شو چې نيمايي غړي يې پاچا ټاکل او نيمايي يې ولس غوره کول. په دې توګه دولتي شورا نيمه ملي وه. يوازې په ۱۹۲۸ کال کې پاچا د لويې جرګې له استازو سره ومنله چې دولتي شورا به په ملي شورا بدلېږي او غړي به يې د خلکو له خوا ټاکل کېږي.

دولتي شورا، وزيرانو او لويو جرګو قانونو نه جوړول او هغه د پاچا امان الله د لاسليک او تپه کېدو وروسته جاري کېدل. په دغه دوره کې د نظامنامه په نومونو زيات قانونونه راوايستل شول چې جوړه نه لري. د پاچا امان الله په وخت کې په افغانستان کې د لومړي ځل له پاره «تشکيلات اساسي افغانستان» په نامه نظامنامه يا اساسي قانون جوړ

شو. مخکې له دې اسلامي حقوق او عرف «ځايي دودونه» چلېدل. د کاکړ په وينا په اساسي قانون کې د مرکزي حکومت او ولايتي ادارو تشکيلات او دندې بيان شوې دي. په مرکز کې اوه وزارتونه، يوه دولتي شورا، او يوه د طب مستقلة اداره تجويز شوې وه. د کابل ولايت امر والي، د ولايتونو امران نايب الحکومه گان او د ځينو سيمو امران اعلیٰ حاکمان ياد شوي دي. د ليرې اطرافي وړې سيمې علاقه دارۍ يادې شوې دي. په ولايتونو کې مشورتې شوراگانې هم تجويز شوې دي. په دغه اساسي قانون کې د هېواد ټولو وگړو ته د جنس، قوم او مذهب د توپيرونو پرته يو هومره حقونه ورکړل او غلامي بې لغوه کړه. کاکړ وايي چې د پاچا امان الله د واکمنۍ يوه ځانگړتيا د لويو جرگو جوړول و چې موخه يې ملت ته د لويو جرگو د رابللو له لارې د دولت په چارو کې ونډه ورکول و او دولتي نظام يې د قانون له مخې په مشورې باندې بنا کړ. کاکړ دا هم وايي چې پاچا امان الله د لويو جرگو نوښتگر دی او تر هغه د مخه بل افغان واکمن دغسې لويه جرگه نه ده بللې، چې غړي يې د افغانستان د ټولو برخو نه د خلکو له خوا غوره شوي وي. دی زياتوي چې د پاچا امان الله د لويو جرگو بله ځانگړتيا د هغو لوی والی دی، چې د ځينو غړي يې زر تنه وو.

کاکړ وايي چې پاچا امان الله په قضايي چارو کې هم بنسټيز بدلون راوست او په فقهيي قضيو کې يې «تعذير» په «تقدير» بدل کړ. د امان الله نيکه امير عبدالرحمن قاضيانو ته په دعوو په تېره جزايي موضوع گانو کې دومره اختيار ورکړی و چې يو چا ته ان پخوا له دې چې عمل يې کړی وي، د ظاهر په نظر کې نيولو سره تر زندۍ کولو پورې جزا ورکړي. پاچا امان الله د قاضي پراخ اختيارونه مقدر کړل په دې مانا چې د هر جرم له پاره جزاگانې وټاکل شوې او قاضي نه شواى کولی چې د يوه جرم جزا په خپل اختيار سره لږه يا زياته کړي. د دې برسېره د تورنو محکمه علي شوه او د لوی څښتن او بنده گانو حقونه سره بيل شول. غبار وايي چې دغو بدلونونو د قاضيانو ډله د تل له پاره د دولت او نويو بدلونونو نه کرکجنه او بېزاره کړه. ۴۱۰ همدارنگه د هيواد د صنعتي کولو، د سوداگرۍ او د ډله يزو خپرونو د پراختيا له پاره گامونه پورته شول.

پاچا امان الله د ټولني د مدني کولو او پرمختگ په موخه نور سمونيز پروگرامونه تر لاس لاندې ونيول. په ۱۹۲۱ کال کې د صنعتونو د هڅونې په نوم قانون جوړ شو چې موخه يې د مالياتي شپې په سمولو سره د هېواد صنعتي کول و. د امير عبدالرحمن د وخت د مالياتو شپوه، چې ماليات په جنس اخېستل کېدل، د پاچا امان الله په وخت کې بدله شوه او ماليات له جنس نه په نغده واړول شول.

د پاچا امان الله په وخت کې باندنۍ سوداګرۍ ښه وده وکړه، په تېره بيا وروسته له هغه چې جرمني، پولنډ او په لومړيو کلونو کې شوروي افغان سوداګرو ته په خپلو ملکونو کې د ازاد ترانزيت امتياز ورکړ او افغانستان د ډېرو هېوادونو سره د جرمني، شوروي او هندوستان په ګډون د سوداګرۍ تړونونه وکړل. کاکړ وايي چې د دغو سمونونو او نوښتونو له امله پولي پانګه په پراخه اندازه په کار ولوېده او ډېره شوه. شرکتونه جوړ شول او د لګښتي مالونو له پاره يو شمېر فابريکې جوړې شوې او نورې يې د جوړېدو په حال کې وې. د ازاد مارکېټ او د لارو د سمولو له امله سوداګري او ورسره ملي اقتصاد په غوړېدو و، خو دغه کار وخت غوښته، چې حکومتي عوايد زيات شي. په دې توګه د پاچا امان الله په واکمنۍ کې پولي پانګه والو ته د پانګې اچولو ډګر پراخ شو تر څو افغانستان د پانګوالۍ درشل ته ننوزي.

د امان الله خان د سمونونو نه، چې په خپله يې د واکمنۍ طبقې ځينې پټکي په نېغ ډول وښورول، د هغو تنخواه ګانو، چې دولت پخوا مخورو کسانو ته لکه خان، ملک، پير، ملا او د کابل محمدزيو ته ورکولې، «د دغه اصل له مخې چې عايدونه بايد وګټل شي» ودرولې شوې يا لږ شوې.

په افغانستان کې د دولت له خوا ملايانو، پيرانو، سيدانو ته مواجب ورکول کېدل، چې د مغلو له وخته دود وو. ملايانو داسې ګڼله چې د شريعت له مخې تنخواګانې د دوی حق دي. که څه هم امير عبدالرحمن خان ملايانو ته تنخواه ورکول په دې پورې تړل چې دوی بايد د ملا خوسه په مشرۍ کميسيون ته ازموينه ورکړي، څوک چې بريالي کيږي، دولتي چارې به ترسره کوي. سيدان يې اړ کړل چې د مغولي حکومت هغه فرمانونه وښيي چې د هغو له مخې دوی تنخواګانې ترلاسه کولې. يوازې يو څو تنو دغسې فرمانونه وښودل. په پايله کې د دواړو ډلو شمېر په افغانسان کې لږ او نفوذ يې لږ شو. خو د دې پر خلاف امير عبدالرحمن د غلزيو له پاڅون نه وروسته د کابل محمدزيو هر نارينه او ښځې ته مواجب ومنل او محمدزيان يې د دولت شريکان وبلل. داسې هم د دولت له خوا هغو اطرافي مشرانو او خانانو ته له دې امله چې په جنګي بيړني حالت کې دولت ته جنګي مېړونه ورکول، تنخواګانې ورکولې. نو دولت د پاچا امان الله تر وخته پورې دغو ډلو او نورو ته مواجب ورکول يې له دې چې د دولت له پاره کار وکړي. دا چې پاچا امان الله د دغو ډلو دايمي معاشونه ودرول يا لږ کړل دا د دوی د خواږدۍ سبب شول او د دوی روغ نيټي يې د ځان په اړه له لاسه ورکړه. په دې ترتيب ساتنپالو د عبدالقدوس خان صدراعظم په سروالۍ، متنفدو روحانيانو چې په سر کې يې د مجدي کورنۍ ولاړه وه او د جمهوريت

غوبښتونکو کړی چې د محمډولي خان دروازي په سروالی يې، چې پخوا د دربار د غلام بچه کانو مشر و، د امان الله خان پر ضد د دسيسو په جوړولو لکيا او چې د امان الله خان د واکمنۍ په راپرزولو کې يې ټاکونکی رول ولوباوه.

خو دولت په افغانستان کې د پاچا امان الله تر وخته پورې خلک رعيت گڼل او د منل شويو حقوقو او ازادۍ نه بې برخې وو. پاچا امان الله په اساسي قانون کې چې په ۱۹۲۳ کال کې لويې جرگې په پغمان کې پاس کړ، د هېواد وگړو ته يې د جنس، قوم، نژاد، مذهب له توپير پرته برابر حقوق ومنل او په دې توگه يې د خلکو روغ نيتي وگڼله.

پاچا امان الله پوهنې ته ځانگړې پاملرنه وکړه. دی په دې فکر و چې د هېواد پرمختگ د عصري پوهنې پرته ناشونی دی نو ځکه يې په وريا توگه د پوهنې د عصري کولو او پراخولو ته رت پام وکړ او د قانون له مخې يې په هېواد کې لومړنی زده کړې هرو مرو (حتي) کړې. ده پوهنه نه يوازې د نارينه وو له پاره بلکې د ښځو دپاره هم غوښتله، ځکه چې پوهنه د ټولې د پرمختگ کيلی ده او يو ډول په نارينه او ښځه دواړو د خدای له خوا فرض ده.

که څه هم په افغانستان کې د عصري پوهنې بنسټ د امير حبيب الله خان له خوا په کابل کې د حبيبي ښوونځي په پرانېستلو سره په ۱۹۰۳ کال کې ايښودل شوی و، خو امان الله خان عصري پوهنه ښه پراخه کړه. په دولتي بوديجه کې د دفاع او دربار د وزارتونو وروسته د پوهنې د وزارت بوديجه دريمه درجه وه. د پاچا امان الله د واکمنۍ پر مهال په ښارونو او ولايتونو کې ډول ډول ښوونځي پرانېستل شول.

د کاکړ په وينا د امير امان الله خان په وخت کې د پښتو د رسمي کېدو دوهم حرکت د لومړي حرکت نه چې امير شيرعلي خان په خپله دوهمه واکمني کې پيل کړی و نږدې نيمه پېړۍ وروسته په کندهار کې پيل شو. ده په کندهار کې د هغه ځای اړوندو چارواکو ته لارښوونه وکړه چې «د کندهار زده کوونکو ته دې په پښتو کې د زده کړې کتابونه برابر او د زده کوونکو شمېر د ډېر شي.» ۴۱۱

امان الله خان په اساسي قانون کې د پښتو ژبې د رسمي کېدو او تعميم ته ځای ور نه کړ که څه هم د جرگې زيات غړي پښتانه وو خو دوی د امير په شمول د امير شيرعلي خان غوندې قوي ملي شعور نه درلود چې د خپلې ژبې د رسمي کېدو او تعميم په اهميت پوهيږي. خو امان الله د پښتو ژبې د ودې په موخه يې د «مرکه پښتو» اداره جوړ کړه.

د پاچا امان الله خان په وخت کې روغتيايي چارو ته هم پاملرنه وشوه او ملي او پوځي روغتونونه جوړ شول. همدارنگه په کابل او اطرافي ښارونو کې حکومتي او غير

حکومتي خپرونې هم ووتلې چې د انيس خپرونه تر اوسه چليرې.
کاکړ وايي چې د سمونونو په پلي کولو سره لگښتونه هم ډېرېدل. دا چې نوې ودانۍ، روغتونونه، په بهر کې په سفارتونو او قونسلگريو، د وسلو او الوتکو په رانيولو او باندیني کارپوهانو ته د تنخواه په ورکولو سره لگښتونه ډېرېدل. خو دا حکومتي لگښتونه په عايدو سره که څه هم د پخوا نه ډېر شوي وو، نه پوره کېدل. له دې امله لکه چې د مخه مې يادونه وکړه حکومت د لگښتونو د کمولو له پاره په نفوذمنو ډلو مواجب ودرول. ده شايد د لگښتونو د لږوالي له امله پوځ لږ کړ او د «نمونې قطعې» په نامه يو نوی نظامي واحد جوړ شو، چې دا پوځي واحد به وکولی شي د بدمانۍ پېښو ته ځواب ورکړي. د ادامیک په وينا پاچا په دې فکر و، چې نور د باندې نه افغانستان ته خطر متوجه نه دی او دغه لږ شوی پوځ به چې هوايي ځواک به يې ملگرتوب کوي، کورنيو ناکرارپو ته به ځواب وويلی شي.

د لگښتونو د لکولو په موخه د افسرانو د يوې مياشتې تنخواه وگرځول شوه چې حکومت په بهر کې پوځي الوتکې رانيسي او په دې هم ټينگار وشو چې هغه ماليات دې راټول شي چې تر اوسه نه دي ورکړل شوي. دغو ټولو تجويزونو ځينې ډلې وپارولې او نورې يې خونې کړې. خو حکومت نه شو کولی د اوږدې مودې دپاره خپل سمونونه په خپلو عايدونو سره پلي کړي. کاکړ وايي چې که لوړ حکومتي غړي په سمونونو باور درلودای، په خپلو کې يو موټی او د پاچا رښتيني مرستيالان وای، حکومت به نويو راهسکېدونکو پېښو ته اوږه ورکړې او شايد پر برلاسه شوي وای، خو داسې ونه شول. دوی په فکري او شخصي توگه په دغسې ډلو او کړيو وېشل شوي وو چې د يوه او بل پر ضد يې دسيسې کولې. ۴۱۲

سياسي ډلگۍ او دسيسې

د کاکړ په وينا په لوړه حکومتي کچه د ساتنپالو د صدر اعظم عبدالقدوس په سروالی او د نوښتگرو او بدلون غوښتونکو د بهرنيو چارو د وزير محمود طرزي په مشرۍ تر منځ چاودون شتون درلود. لومړی چې د امير عبدالرحمن د وخت مامور و، داسې فکر کاوه چې «از طرف شرع انور مشروطه طلبان را بايد واجب القتل» دانست. د ده په اند «مشروطيت» هسې غولول دي او «د شرعي په امر بايد د مشروطه مکروب د منځه ولاړ شي.» ۴۱۳ ده لا په ۱۹۲۰ کال کې خپل دا فکر د شوربازار حضرتانو ته څرگند کړي و. تر دې د مخه يې د کندهار د عالمانو نه هم په دغه اړه فتوا غوښتې وه، دغو عالمانو که څه

هم مشروطيت رد کړ خو د مشروطه غوښتونکو له منځه وړل يې هم رد کړل. په دې ترتيب صدراعظم عبدالقدوس چلند د شوربازار حضرتان او مذهبي عالمان په هماغه اول سر کې د بدلون غوښتونکو په وړاندې بدورگي کړل، چې وروسته د هغو نظرونو او کړو سختې پارونې وکړې.

دغه چاودون يوازې د ساتنپالو او بدلون غوښتونکو تر منځ نه و بلکې د بدلون غوښتونکو تر منځ هم شتون درلود. د بدلون غوښتونکو د سياسي ډلو نه مهمه يې د جمهوريت ډله وه. منشي علي احمد ليکي: «په کابل کې يو شمېر کسان چې زده کړې يې کړې او په باندنيو هېوادونو کې گرېډي و، د محمد ولي په گوند کې په پټه ننوتل او د افغان جمهوريت جوړولو په امکاناتو باندې يې په پټه بحثونه کول. په هغو کې دا کسان وو: غلام صديق [خرخي]، عبدالهادي خان [داوي]، حبيب الله خان (د حرب وزير مرستيال)، عبدالرحمن لودين، علي محمد خان، ميرزا محمد خان، مير سيد قاسم خان، خيبي نظامي افسران او خيبي غير مهم کسان لکه مير غلام محمد او نور. شجاع الدوله خان او محمد يعقوب خان (د دربار وزير) هم په دغه گوند کې وو.» ۴۱۴

د علي احمد منشي په وينا «دغه گوند دې نتيجه ته ورسېد چې د پوځ د مرستې نه پرته به په مقصد ونه رسېږي او د مصطفی کمال او رضاخان پهلوي مثال د دوی په مخ کې و.» ۴۱۵ په دې توگه جمهوريت غوښتونکو، چې په سر کې يې محمدولي دروازي و دا پلان درلود چې امان الله د پوځي کودتا له لارې رانسکور کړي. نادر خان د دفاع د وزير په توگه د دوی په وړاندې لوی خنډ و. دوی وپتيله چې خپلې موخې ته د رسېدو له پاره بايد نادر خان د دفاع د وزارت نه گوښه او پرځای يې محمدولي دروازي د دفاع وزير شي. له دې کبله دوی د دسيسو په جوړولو پيل وکړ.

کيسه داسې وه چې محمد هاشم خان غوښتل چې د امان الله د خور سره واده وکړي. امان الله خان هم ورباندې راضي و خو د امان الله خور د هاشم خان سره د واده کولو سره هوکړه ونه کړه. له دې کبله امان الله خان د خپل لوز نه، چې خپله کرانه خور هاشم خان ته په نامه کړې، په شا شو. د دغې موضوع نه دسيسه کړو د پاچا امان الله خان او محمد نادر خان تر منځ د نفاق اچولو په موخه کټه پورته کړه او پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ دغه دسيسه د علي احمد منشي د ليکنې پر بېنسټ داسې بيانوي:

«دوی د محمد نادر پر ضد په دسيسولاس پورې کړ او پاچا امان الله بي په پټه قانع کړ چې هغه او ورور يې محمد هاشم د هغه د خور، نور سراج په سر له هغه نه اوبښي او په دې لټه کې دي، چې هغه خپله کړي او که هسې ونه شول په دغې لار کې ځانونه يا امان

الله خان ووژني. دا هغه وخت و چې امان الله خان د خپل لوز نه اوبښتی و، چې دغه خور محمد هاشم ته په نامه کړي. په عين حال کې دسيسه گرو محمد نادر ته ورسوله چې امان الله دغه خور د کورنيو چارو وزير عبدالعزیز ته په نامه کوي. دسيسه گر په دې ډول بريالي شول چې امان الله خان ته د محمد نادر وفا لرل خنثی کړي او امان الله خان په هغو نه بېگانه کړي. دسيسه گرو محمد نادر ته وروسته له هغه چې هغه د خپل خان په اړه د امان الله خان په اوربډلي سلوک خبر شوی و، دا هم ورسوله چې امان الله خان د هغه د ډېرېدونکي نفوذ نه اندېښمن دی او په دې لټه کې دی چې نسکور يې کړي. دسيسه گرو په عين حال کې يو سړی وگماره چې په محمد نادر دزې وکړي، هغه پرې دزې وکړې او محمد نادر هغه د امان الله خان په لمسونې وگڼلې او ځان يې د ناروغ په پلمه په کور کې ايسار او د جنگ له وزارت نه گوښه کړ. هغه د خوست تر بلوا پورې په کور کې و، خو په بلوا کې يې لاس نه درلود. په داسې حال کې چې مخالفانو يې پاچا ته رسوله، چې هغه په کې لاس لري.» ۴۱۶ محمد حسن کاکړ زياتوي چې امان الله خان «د جنگ له وزارت نه د محمد نادر خان په ليرې کولو سره چې مسلکي جنرال و او پر ځای يې د محمدولي په ټاکلو سره چې يو غير مسلکي مامور و پوځ غټه صدمه وليدله.» ۴۱۷ محمد نادر په فرانسه کې سفير وټاکل شو او فرانسې ته لاړ. هغه هلته د سفارت نه استعفی وکړه او په فرانسه کې پاتې شو.

د خوست بلوا

د مخه مې يادونه وکړه چې ساتنپالو د عبدالقدوس خان صدراعظم په سروالی، متنفذو روحانيونو چې په سر کې يې د مجددي کورنۍ ولاړه وه او د جمهوريت غوښتونکو کړی چې د محمدولي خان دروازي په سروالی يې، چې پخوا د دربار د غلام بچه گانو مشر و، د امان الله خان پر ضد د دسيسو په جوړولو لگيا وو چې د امان الله خان د واکمنۍ په راپرزولو کې يې ټاکونکی رول ولوباوه. بلواگرو پخوا له دې چې د حکومت پر ضد وسلې ته لاس واچوي د حکومت نه وغوښتل چې د قانون هغه مادې بدلې کړي چې د دوی په فکر د اسلام مخالفې وې. پاچا دوی ته وويل چې دغه قانونونه ديني عالمانو منلي او دوی يې د خبرو له پاره کابل ته وغوښتل. وروسته له دې چې بلواگرو د پاچا بلنه رد کړه، پاچا دوی ته يو دولتي پلاوی واستاوه خو گټه يې ونه کړه. د خوست بلوا چې د ۱۹۲۴ کال د مارچ په مياشت کې د ملا عبدالله چې په گوډ ملا يادېده او ملا عبدالرشيد په مشرۍ پيل شوه، چې خدرانو او منگلو يې ملاتړ کاوه. د دوی سره نور قومونه هم يوځای شول. بلواگرو د

حکومتي ځواکونو نه گردهز، تېره کڼدو او لوگر ونيول. وروسته د غزني ياغيان ورسره يوځای شول او تر شيخ اباد پورې ورسېدل. برسېره پردې په کاپيسا، پروان او ننګرهار کې د حکومت پر ضد تبليغونه هم وشول او يو ځای بل ځای دره ماران هم هسک شول. په دې توګه کابل د لوگر او وردګو له خوا د گواښ لاندې راغی. پاچا وروسته په اوړي کې لويه جرګه راوغوښته چې په پغمان کې جوړه شوه چې ځينې سمونونه يې لغوه کړل او ځينې يې بدل کړل. خو دغې جرګې هم د ياغيانو په غلي کولو کې مرسته ونه کړه.

د دې بلوا په يون کې د حکومتي پوځونو او ياغيانو تر منځ خونړۍ نښتې وشوې او له دواړو خواوو نه ډېر افغانان ووژل شول. کاکړ وايي چې د سريندونکو (جان فدا) په نوم د يوه اته سوه کسيز پوځي واحد نه يو تن هم ژوندي پاتې نه شو. په دې مهال د لومړي ځل له پاره د ياغيانو په وړاندې د بهرنيو پيلوتانو نه په ګټه اخېستلو سره پوځي الوتکې وکارول شوې. د خلکو ذهنيت هغه وخت د حکومت په ګټه بدلون وکړ چې د دوی په اند «سردار عبدالکريم انګرېزانو افغانستان ته رالېږلی دی. دغه سردار چې د پخواني امير محمد يعقوب د مينځې زوی و، د اګست په مياشت کې په داسې حال کې چې جنګ په ټينګه روان و، له هندوستان نه منګلو او ځدراڼو ته ځان ورساوه، په دغې هيلې چې له ياغي توب نه په ګټه اخېستلو سره د افغانستان پاچايي ترلاسه کړي.» ۴۱۸ له دې وروسته ډېرو قومونو د حکومت خوا ونيوله. سردار عبدالکريم د جنوري په مياشت کې هندوستان ته وتښتېد او له هغه زر وروسته کود ملا او عبدالکريم ونيول شول. په دې توګه بلواګر وځپل شول.

غبار د جګړې د لاملونو نه يو دا بولي چې د بلواګرو دوو ملایانو «د يوه يادښت په ترڅ کې د پاچا نه وغوښتل د جزا د عمومي قانون ځينې مادې دې بدلې شي چې د شرعيت مخالفې يې ګڼلې.» ۴۱۹ خو کاکړ وايي چې که د ياغيانو غوښتې يوازې د جزايي قانون د يو څو مادو اړول وای نو جګړه به وروسته له دې پای ته رسېدلې وای کله چې لوېې جرګې ځينې قانونونه واورول او نور يې لغوه کړل. غبار د جګړې بل لامل دا بولي چې يو خو د ازاد سرحد خلک پر دې خپه و چې دولت د دوی د ملاتړ او مرستې نه د انګرېزانو په وړاندې لاس اخېستی وو او بل ځينې ملایانو او خانانو د ځينو امتيازاتو د لاسه ورکولو له امله د دولت نه ناراضه وو او هم د پکتيا د حکومت د خلکو سره د ناوړه او ناسم سلوک له امله د بلوا مشرانو ګټه پورته کړه. ۴۲۰

خو کاکړ وايي چې د بلوا اصلي لاملونه لا زور دې او هغو د جنګي وضعې په اوښتون سره نوي اړخونه پيدا کول ان تر دې چې ملا عبدالله په لوګر کې د پاچا پلاوي ته د هغه د

کوشنه کولو غوښتنه هم وکړه. ۴۲۱ د ماشومې نجلۍ د نکاح منع کولو موضوع هم خلک پارولي و. د کاکړ په وينا د ياغيانو د ياغيوتوب لاملونه د اغراض کوونکو په دغه جمله کې راغونډېدلې شي چې ويل يې «قانون ناسخ مذهب است» ۴۲۲ د دې مانا دا وه چې ټول هغه قانونونه چې د پاچا امان الله په نوښت جوړ شوي دي د مذهب پر ضد دي.

د هغه وخت افغان ټولنه په ټينگه دوديزه او نږدې ټوله نالوستې وه. ځينې دودونه لا داسې کڼل کېدل چې لکه د دين برخې وي. اسلام هم دين او هم دولت کڼل کېده. دا د ټولو خلکو ذهنيت او د ملايانو، پيرانو، او سيدانو ټينگه عقیده وه. ساتنپالانو يا د اوښتون مخالفينو چې د اوښتون غوښتونکو په پرتله زښته زيات وو له ولس سره يو ځای د دغو زرو دودونو او چلندونو له مخې ژوند کاوه. که څه هم پاچا امان الله د ټولني د مدني کولو او عصري کولو له امله اړ و چې نوي اداري، ټولنيز، حقوقي او داسې نور قوانين جوړ کړي. ده دغه قانونونه په فرمانونو سره نه بلکې د قانون پوهانو او ولسي استازو په مشوره ايستلي وو. کاکړ وايي چې د «قانون مخالفان ... په دې نه پوهېدل چې د اجتماعي دودونو او اسلامي شرع تر منځ توپير وکړي» ۴۲۳ دغه قانونونه د اسلامي شرع نه بلکې د ټولنيزو دودونو ماتوونکي وو او په خپله پاچا يو رښتيني مسلمان او د اسلام ساتونکی و. برسېره پردې دا هم واقعيت دي چې د ټولني نفوذناکې ډلې د خپلو دوديزو امتيازونو په بايللو سره ناراضي او ان پارېدلي وو. دا هم سمه ده چې دولتي مامورانو به د قانون په پلي کولو او د دولتي قدرت نه ناوړه گټه تر لاسه کړې وي.

کاکړ وايي چې «دغو ټولو ته په وسلې سره ځواب ورکول، هغه هم په هغه ډول چې په هغو سره په زرگونو افغانان ووژل شي او ټولنه په ژور ډول زيانمنه شي، ډېره غټه ملي تېروتنه ده. د ياغيانو بله غټه تېروتنه دا وه چې دوی په خبرو سره د کشالي د هوارولو له پاره د پاچا وړانديزونه ونه منل. دوی د لويې جرگې هغو پرېکړو ته ارزښت ور نه کړ چې له اساسي قانون پرته ډېر قانونونه او سمونونه يې واړول... دوی تر پايه په خپلې ياغي کړۍ ټينگ ودرېدل، تر څو په وچ عسکري او قومي زور سره وځپل شول» ۴۲۴ خو کاکړ دا هم وايي چې د حيرانۍ ځای دی چې ده [پاچا امان الله] له دغې ماتې نه زده کړه ونه کړه او څلور کاله وروسته يې په دغسې نويو سمونونو لاس پورې کړ، چې تر هغو نورو يې لا ډېرې پارونې وکړې.

پاچا امان الله د پکتيا له پېښې وروسته اداري چارو ته ځير شو او د چارو د سمولو له پاره ځينو ولايتونو ته هم لاړ. دی خپل وطن ته په کار او چوپړ کولو مين و او ويل به يې چې تر وطن نه پورته بله مينه نه لرم. کاکړ د ډېلې ميل استازي، رولېنډ وايېلډ د وينا له

مخې وايي چې پاچا امان الله د کار سره ډېره مينه درلوده او د هغه ماموران د نوي ډول څخه وو، له دوی نه غوښتل کېدل چې د خپل مشر ارمانونه پلي کړي او په دې کې شک نه و، چې په کابل کې هغه وخت ځينې دغسې سخت کوښښونه وشول، چې دغسې ټينگ اخلاقي ډيسپلين وساتل شي چې د پخواني تاريخ له کوښښونو سره يې توپير لاره. د دې سره سره رولند وايېلې دا هم وايي «چې هر نوی قانون چې د خلکو د ښېکڼو له پاره ايستل کېده د فساد له پاره به يې نوی ور پرانېسته.» ۴۲۵ دی دا هم وايي چې «امان الله په نړۍ کې د چلبازۍ له ټولو نه ډېر چلباز سيستم سره مخامخ و.» ۴۲۶ کاکړ وايي چې په همدې دليل به وي چې امان الله که څه هم پاچا و، په اداري چارو کې دومره ځان بوخت کړ چې زياتره وخت به يې تر نيمو شپو پورې کار کاوه. د امان الله خان په شان اوس اشرف غني د فساد کړو د فساد د مخنيوي په موخه تر نيمو شپو کار کوي. د کار او خدمت سره د پاچا امان الله مينه، د کندهار د چارو د پلټنو نه ښه جوتيري د هغه اثر نه چې سرليک يې «په افغانستان کې د حاکميت قانون» دی، ښه څرکندېږي. دا کتاب امان الله خان ته منسوب او د حبيب الله رفيع په زيار په ۱۹۹۹ کال کې خپور شوی دی.

بهرته د پاچا امان الله سفر

د کاکړ په وينا د پاچا امان الله مشاورينو او په سر کې محمود طرزی د پاچا سره د اروپا د ښېکڼو په اړه غږېدل او دی يې هڅاوه چې اروپا ته سفر وکړي. خو کاکړ وروسته په يوه بله ليکنه کې دې پايلې ته ورسېد چې محمود طرزی د امان الله بهر ته د سفر سره مخالف و چې وروسته به پرې وغږېږم. د اروپا سفر امان الله خان ته هم په زړه پورې و او وزيرانو ته يې په يوې غونډې کې څرکنده کړه: «مور د نننيو چارو د پرمختگ په اړه ډاډه يو او افغانستان په پوره ازادۍ او خپلواکۍ سره په ښه ډول پرمخ ځي. د هېواد د يوه گوټ نه تر بل گوټ پورې له قانونه څخه اطاعت کېږي. هر څه په کرارۍ سره په خپل محور څرخي، نو اوس ما ته ښايي چې اروپا ته په سفر لاړ شم او بهرته له ځان سره د خپل گران وطن د پرمختگ له پاره د څيزونو په بڼه د نړۍ د خلکو د چلندونو او رواجونو پوهه راوړم. زه به تجربې ترلاسه کړم او د ډول ډول څيزونو د جوړولو له پاره به فابريکې جوړې کړم. روسيې د لوی پېتر تاريخ ته يوه کتنه به وښيي، چې هغه د ننيو سمونونو له کولو نه وروسته متمدنو هېوادونو ته لاړ او د هغوی پرمختيايي لارې يې وڅېړلې، چې بيا يې هغه په خپل هېواد کې رواج کړې، چې د هغو په نتيجه کې د شوروي اوسني حکومت يو پياوړی حکومت دی. دا ټول د لوی پېتر د زيارونو له امله و چې روسيې ځان د بهرنيو له اړتياوو

څخه وژغوره، نو ما ته ښايي چې زه هم پر هغې لارې يون وکړم.» ۴۲۷ وزيران هم په خپل منځ کې د پاچا د سفر په اړه سره وغږېدل. خو په پای کې څنگه چې پاچا په خپله سفر غوښته، ټولو ورسره ومنله.

کاکړ وايي چې دا هغه وخت و چې پاچا امان الله د دفاع په وزير محمودلي باندې بې باوره شوی و او د دفاع د وزارت نه يې گوښه کړ. هغه يې خپل نایب او د بهرنيو چارو وزير په توګه وټاکلو. عبدالعزيز يې د سلطنت دوهم نایب او د دفاع د وزير مرستيال کړ او دنده يې ورکړه چې د محمد ولي او نورو کړه وړه وڅاري. همدارنګه پاچا محمود ياور، د کابل والي مرستيال ته واک ورکړ چې هر هغه څوک وڅپي چې په خیانت لاس پورې کوي. پاچا د کابل والي علي احمد، حبيب الله د دفاع د وزارت مرستيال او د دولتي شورا سروال شير احمد د خپل سفر په ملګرو کې ونيول ځکه چې ده په لومړيو دوو شک درلود او پر دې پوهېده چې شير احمد او محمد ولي دومره سره وړان دي، چې د ده په نشتوالي کې به هېواد ته جنجالونه پيدا کړي.

پاچا امان الله د ۱۹۲۷ کال د دسمبر د مياشتې په لسمه نېټه د ملکې ثريا او د سفر د خپلو ملګرو سره چمن ته او بيا له هغه ځايه کوېټې، کراچي او بمبې ته لاړ. د بمبې نه مصر، اېټالیه، فرانسه، بلجيم، سويس، جرمني، برېټانیه، پولنډ، روسیه، ترکيه او پارس وليدل او د ۱۹۲۸ کال د جولای د مياشتې په لومړۍ نېټه د هرات او کندهار له لارې کابل ته راستون شو. په دې توګه دا سفر شپږ مياشتې او يوولس ورځې اوږد شو.

په ټولو يادو شوو هېوادونو کې د دولتي چارواکو او خلکو له خوا د پاچا امان الله او د هغه د ملګرو تود هرکلی وشو. په هر هېواد کې دوی اول رسمي مهلمانه وو او بيا په خپل لګښت اوسېدل. يوازې په مصر او پارس کې کوربه پاچايانو له عادي وګړو سره د پاچا امان الله د ازاد روغېر او د ملکې ثريا د مخ لوتې له امله ناارامي وښودله. د مصر پاچا فواد پاشا د پاچا امان الله په رخصتېدو سره خپله خوښي په دې ډول څرګنده کړه، چې «خدايه! شکر چې دی ولاړ.» پاچا په روم کې د کاتوليکي عيسويانو د لوی مشر، پاپ سره وکتل.

پاچا امان الله او د هغه ملګري په انګلستان کې د خپلې هستوکې په موده کې لومړی د پاچا او ملکې او وروسته د حکومت مهلمانه وو. کاکړ وايي چې پاچا امان الله او ورسره ملګرو يې د لندن برسېره د کوربه هېواد نور شپږ صنعتي ښارونه وليدل. هلته «برتانوي موسسو له يوې او بلې سره د دغه وياړ په لرلو کې سيالي کوله چې پاچا يا ملکه يا د هغو د کورنۍ غړي د دوی په مراسمو کې ګډون وکړي. حتی د افغان- انګليس د جنگ پخوانيو پوځيانو موسسې غوښتل چې دوی د افغان پاچا په مخ کې په سلامۍ تېر شي.» د انګلستان

د خلکو د دغسې تاوده هرکلي په اړه د برتانيې يوه وزير څرگنده کړه، چې انگرېزانو «د دغسې شخص په ليدلو سره علاقمني ښودله، چې د برتانيې امپراتورۍ ته يې په بري سره چلنج ورکړي و.» ۴۲۸ پاچا امان الله پاس د الوتکې نه د لندن ښار وليد او د سمندر لاندې په بېرۍ کې وگرزول شو او د يوې بېرۍ نه يې د سمندر نه د کوليو وپشتلو ننداره وکړه او د لندن ورځپاڼو دی د روسيې لوی پېټر وباله.

د عبدالحکيم طيبي په وينا انگرېزانو ډېر کوښښ وکړ چې امان الله خان بلشويکي روسيې ته د خپل تک څخه تېر شي خو هغه روسيې ته د تک هوډ بدل نه کړ. «د دغه سفر په اوږدو کې نوموړي پاچا د بلشويکانو د ځوان حکومت سره هم ليدنه وکړه. د امان الله خان دغه کړنه د انگليسانو له پاره د منلو وړ نه وه ځکه يې هڅه وکړه چې د پاچا په نشتوالي کې د نويتوب او سمونونو ضد غورزنگ ته سازمان ورکړي.» ۴۲۹ خو نوموړی کوم سند نه وړاندې کوي.

په مسکو کې هم د شوروي لويانو له خوا نه د پاچا امان الله تود هرکلی وشو، خو يوازي ستالين ورسره ونه ليدل. افغاني پلاوي د امان الله په مشرۍ د شوروي لوري څخه «يو وار بيا په ښکاره د هغه شوروي سيمې د خپلولو غوښتنه وکړه چې د ۱۹۲۱ کال د شوروي- افغان د تړون په نهمه ماده کې ژمنه ه شوې وه.» ۴۳۰ خو شورويانو خپله ژمنه پوره نه کړه. د امان الله خان په اړه د روسانو نيت د شوروي کميسار ماکسيم ليتوينوف د خبرو نه چې په مسکو کې يې د جرمني استازي سره کړې وې ښه څرگنديږي. «په بهرنيو چارو کې د شوروي کميسار ماکسيم ليتوينوف په مسکو کې د جرمني استازي ته هغه وخت چې امان الله لا په کندهار کې و وويل چې افغاني تخت ته د رسېدو له پاره نادرخان يو ښه انتخاب دی سره له دې چې پر هغه يې د برتانيې پلوه شک هم کاوه.» ۴۳۱

د خان عبدالولي خان په وينا انگليسان هم د امان الله خان دې پلان ډېر ووېرول چې اروپا ته يې د خپل سفر په جريان کې د ترکيې مشرانو ته دا وړانديز وکړ چې ترکيه، عراق، ايران او افغانستان دې يو اتحاد جوړ کړي. د دې پلان څخه انگرېزان په ترکيه کې د عراق سفير، چې د انگرېزانو جاسوس و، خبر کړل. انگرېزانو دا انکېرله چې دا پلان د دوی په ضد دی. « هغه [امان الله خان] ترکانو ته دا تجويز پېش کړو چې ترکي، ايران، عراق او افغانستان که يو اتحاد جوړ کړي. پېرنکيانو سره دا تلوسه وه چې هسې نه چې دا د دوی برخلاف د محاذ جوړولو منصوبه وي. هلته ترکي کې د عراق سفير Sabih Bey د پېرنکيانو دپاره د جاسوسۍ کار کولو.» ۴۳۲ خو کاکړ وايي چې د دغسې اتحاد شونتيا بيخي لږه يا هېڅ نه وه او هغه هېڅ موضوع شوې نه وه.

کاکړ وايي چې له دغه تاوده هرکلي سره سره افغان پلاوي ونه شو کولی د انکشافی پروژو د پلي کولو له پاره له اروپايي هېوادونو څخه پورونه تر لاسه کړي. يوازې جرمني سره له دې چې په لومړۍ نړيوالې جگړې کې د ماتې له امله په خپله په پورونو کې ډوب و، تياری وښود چې غیر حکومتي بانکونه وهڅوي چې افغانستان ته پور ورکړي. افغانانو بيا له جرمني نه شپږ ميليونه مارکه پور ترلاسه کړ، چې د هغه هېواد نه ورباندې د اړتيا وړ توکي وارد کړي. کاکړ زياتوي چې دا هم ويل کيږي چې د فرانسې يوه بانک منلې وه، چې د افغانستان د کمريکي عايداتو په ډاډ د گټې په برابر کې يو ميليون پونډه سټرلینک پور ورکړي.

د بریتانې حکومت له پاچا امان الله خان سره ومنله، چې د افغانستان د پياوړي کېدو له پاره ډول ډول عصري توپونه، توپکونه او نورې وسلې وړيا ورکړي او شل تنه افغان پوځي افسران په خپل سان هرست پوځي اکاډمۍ کې وروزي. ۴۳۳

د پاچا امان الله دغه بهرنی سفر له سياسي پلوه پوره بريالی و. ده معاصر افغانستان تر هر بل واکمن زيات اروپايانو ته وروپېژانده. پاچا امان الله په خپل دغه سفر سره د افغانستان خپلواکي لا هم يقيني کړه.

خو کاکړ دا هم وايي چې په خپله افغانانو د پاچا امان الله د دغه سفر قدر ونه کړ. مذهبيانو يې لا خپل مخالفت ته زور ورکړ او پر ضد يې ډنډورې کډې کړې. په اصل کې د امان الله له پاره چې هم پاچا او هم صدراعظم و، مصلحت نه و چې څه باندې نيم کال په بهر کې په سفر تېر کړي. په پاچا امان الله دغه اوږده سفر چې په تود هرکلي سره بدرکه شوی و لوی اغېز وکړ هغه دا چې دی يې له خپلو کلتوري ارزښتونو نه ليرې او د اروپايي کلتوري ارزښتونو په لور يې واړاوه.

د پاچا امان الله وروستي سمونونه

د مخه مو يادونه وکړه چې پاچا امان الله د خپل بهرني سفر نه د هرات او کندهار له لارې کابل ته راستون شو. ده لا په کندهار کې د خلکو سره د سمونونو په اړتيا خبرې کړې وې او ويلي يې و چې پرمختگ يوازې د ښځو په ازادۍ سره شوني کېدای شي. ده د کندهار خلکو ته دا هم وويل چې سمونونه د ده د ځاني گټې له پاره نه بلکې د افغان ملت د گټې دپاره دي. پاچا امان الله کنديريانو ته په پای کې وويل: «تاسې په لټۍ سره خپلو موخو ته رسېدلی نه شئ. امان الله د تاسو له پاره هر څه کولی نه شي. هغه مشوره درکوي، زاري

درته کوي او فشار درباندي راوړي، خو له هغو نه پرته نور څه کولی نه شي. باور ولری چې امان الله به ټولې هغه هیلې له خان سره کور ته یوسي، چې د یوه شتمن او پرمختللي افغانستان له پاره یې لري، خو دا چې تاسې له خپل درانده خوب نه وینئ،» ۴۳۴

پاچا امان الله کابل ته د راستنېدو وروسته لویه جرگه راوبلله، چې د اګست په ۲۹ نېټه به غونډې پیلوي. د خپلواکۍ تر جشن پورې چې په شان او شوکت سره ولمانځل شو، کابل ته د جرګې استازي رارسېدلې وو. حکومت هر استازي ته اروپايي توره کړۍ او پتلون، سپین خت، توره نېکتایي او توره شاپو برابره کړه او ټول یې په پغمان کې ځای په ځای کړل. هېڅ استازي ته اجازه نه وه چې په وطني جامو کې په جرگه کې کېدون وکړي. لویه جرگه د پغمان په سینما کې د اګست په ۲۹ نېټه د یو باندي زرو استازو په کېدون جوړه شوه چې پنځه ورځې اوږده شوه.

د جرګې په لومړنۍ غونډې کې پرېکړه وشوه چې دولتي شورا دې په ملي شورا بدله شي او د هغې غړي د ولس له خوا غوره کېږي. خو ملي شورا ته دولتي ماموران د غوره کېدو حق نه لري او ملي شورا او لویه جرگه د دواړه... وي. ۴۳۵

د دویمې ورځې په غونډه کې جرګې ومنله چې د بډې اخبستلو او د قدرت نه د ناوړې کټې اخبستلو د مخنیوي په موخه دې د بخښل کېدو اختیار له حاکمانو او قاضیانو نه واخېستل شي او هغه دې یوازې له پاچا سره وي. جرګې بله دغه پرېکړه وکړه چې عسکري خدمت دې دوو کالو پر ځای درې کاله شي او هغه د عام او جبري وي او هر څوک به عسکري په خپله کوي او بل څوک یې پر ځای عسکري خدمت کولی نه شي. دا هم ومنل شوه چې د تعذیر اصل دې په کره توګه تعریف شي. دا پرېکړه هم وشوه چې څاروي دې هر کال وشمېرل شي.

د جرګې په دریمه ورځ پرېکړه وشوه چې له دې وروسته دې ټول رسمي ملکي لقبونه نه وي او هر مامور دې تر پاچا پورې د عزیز یا کران په لقب یاد شي. په خپله امان الله خان وغوښتل چې کران پاچا ورته وویل شي. استازو د هغه غوښتنه ومنله، خو ټینګار یې وکړ چې دی دې د لور حضرت (اعلحضرت) په لقب هم یاد شي. جرګې دا هم ومنله چې په رسمي موقع کې دې یونیفورم نه وي او ټول ملکي ماموران دې تورې دریشۍ او پوځي افسران دې څرې دریشۍ واغونډي. دا هم ومنله شوه چې د دې وروسته دې د خپلواکۍ له نښان پرته، چې هغه د جګړې اتلانو ته ورکول کېږي، نور ټول افغان مېالونه او نښانونه نه وي. بله دا پرېکړه وشوه چې ملایان دې له هغې وروسته ملایي وکړي، چې په خپل مسلک کې ازموینه ورکړي او بریالی شي. غیر افغان ملایانو په تېره د دیوبند د مدرسې فارغانو ته

دې اجازه ور نه کړل شي چې افغانستان ته ننوزي، ځکه چې دوی به يا «بد او شرير کسان» يا هم باندیني ډنډور چيان او خاينان وي. کاکړ د منشي علي احمد د ليکنې له مخې دا هم وايي چې «امان الله په دې ټينگار وکړ چې ټول دغسې ملايان د باندیني دسيسې تر اغېزې لاندې دي او د خپلې ادعا په ثبوت کې يې شواهد هم وړاندې کړل. ده غوښتل چې ټول دغسې ملايان دې له افغانستان څخه وايستل شي، يا دې په يوه ټاکلي ځای کې وي او له هغه ځايه دې له اجازې پرته بېرون نه شي.» ۴۳۶ د جرگې بله پرېکړه دا وه چې د محکمې پراريان دې د قانون له مخې د دولتي مامورينو له خوا محکوم شي او دغسې نوې محکمې دې جوړې شي چې پرېکړې د شواهدو پر بنسټ وکړي، نه د پخوا په شان د شاهدانو په شاهدي. پاچا دا وړانديز هم وکړ چې هغه پنځوس زره ټوپک پېرودلي دي او غواړي چې پنځوس زره نور ټوپک له يو ميليون کارتوسو سره په بيه واخلي. د دغو پيسو د تاديه کولو له پاره دې له پنځه کلن نارينه نه پورته هر افغان پنځه افغانۍ او هر حکومتي مامور د يوې مياشتې تنخوا ورکړي. د پاچا دغه غوښتنه په خوښۍ سره ومنله شوه او د کابل وکیل غلام محی الدين ومنله، چې دی به د همدغې موخې له پاره يو لک افغانۍ بسپنه ورکړي او له نورو وکيلانو يې وغوښتل، چې دوی دې همداسې وکړي.

د جرگې په څلورمه غونډه کې پرېکړه وشوه چې د بدې اخبستلو د مخنيوي په موخه دې ملکي مامورين د خپل کار په پيل کې خپلې شتمنۍ وښيي. دا هم ومنله شوه چې د ملکي استخدام او ترفيع يو قانون دې وايستل شي. د دغې ورځې يو نوښت دا و چې حکومتي ماموران دې يوازې يوه نکاحي ښځه ولري. خو د واده کولو د دود په بدلون کې پرمختگ ونه شو. د پاچا امان الله دا وړانديز چې ځوانانو ته دې د دوه ويشت کلنۍ نه او ځوانانې دې له اتلس کلنۍ نه د مخه د واده کولو اجازه نه وي، د جرگې د زياتو استازو له خوا رد شو، په دې چې د دوی په نظر هغه د اسلامي شرع مخالف و. خو جرگې د پاچا امان الله دا وړانديز په خوشالۍ ومانه چې مېرمن ملکه او زوی يې رحمت الله د تخت وارث وپېژندل شول.

د جرگې په وروستۍ غونډه کې پاچا امان الله د نوي درې رنګه بيرغ يانې تور، سور او شين بيرغ وړانديز وکړ چې په خوښۍ سره ومنل شو. په دې غونډه کې د ښځو د ستر موضوع راپورته شوه چې د ادامیک د ليکنې له مخې خبرې اترې ورباندې ونه شوې خو منشي علي احمد وايي چې د ښځو په موضوع باندې تودې خبرې اترې وشوې. د ملايانو ځينې استازي د دغه سمون په وړاندې وګرېدل او د خپلو نظرونو په ملاتړ يې ايتونه او حديثونه بيان کړل. امان الله خان د دوی په ځواب کې وويل، چې که څه هم دی ملا نه

دی، خو په دې پوهېږي، چې ستر د اسلامي قانون له مخې له غاړې نه ښکته د بدن پټول دي. ملايانو د ده نظر په ټينګه رد کړ او په هغې سره امان الله خان، چې د مصطفى کمال هغه سپارښتنه په زړه کړه چې ده ته يې کړې وه، کنترول له لاسه ورکړ او په لور اواز يې وويل، چې: «دا ټول ملي مصيبتونه د تاسو له لاسه دي، تاسې ملايان چې له دووسانو نه پرته نور څه نه یئ، زه به هغه څه نافذوم چې يې غواړم او زه به ستر پرېښودل ان د برچو په زور عملي کړم، نه په غوره مالی سره. پوه شئ چې زه یو انقلابي پاچا يم.» ۴۳۷

امان الله بيا مخ نورو استازو ته وپراوه او په جګ اواز يې وويل، چې: «او! زما د کران ملت استازو! تاسو ته زما توصيه ده، هغه توصيه چې تاسو يې ټول ملت ته ورسوئ، چې تاسې بايد پوه شئ چې دغه ملايان په دغه هېواد کې په خپلو وعظونو سره د دښمنو د دسيسو د خپرولو مسؤلان دي زموږ د خلکو بېرته پاتې توب د هغو موهمي کيسو (myths، افسانو) له امله دی، چې دوی يې خلکو ته رسوي او په هغو سره يې تېر باسي. زه به په خپل وخت کې د دغو ملايانو چاره وکړم، خو تاسو استازي بايد ولس په دغسې حال کې کړئ، چې وپوهېږي او په دغو يو موتي ملايانو باندې چې د ملت بده غواړي ونه غولېږي.» ۴۳۸

کاکړ وايي چې داسې ښکاري چې امان الله د لويې جرګې په کړو قانع نه و، ځکه چې لږ وروسته د اکتوبر د مياشتې په لومړۍ اوونۍ کې د ستور په ماڼۍ کې څلور غونډې سر په سر راوبللې، چې باندنيو دپلوماتانو، افغان مليکي او پوځي افسرانو، د دولتي شورا غړو او د کابل مخورو چې شمېر يې نږدې شپږو سو کسانو ته رسېده، په کې کېدون کاوه. د دې غونډو مهمه ځانګړتيا دا وه چې د لومړي ځل له پاره ښځو په کې کېدون کاوه او په خپله پاچا په کې ويناوې اورولې.

پاچا لومړنۍ غونډه خپل باندیني سفر ته ځانګړې کړه چې د مخه رڼا پرې اچول شوې ده. ده خپل سفر پوره بريالی وګاڼه او وويل چې د دغه سفر لګښت اوبازره پونډه و، خو د څلور سوه شپږو زرو پونډو په اندازه يې وطن ته سوغاتونه راوړي دي. په دغو سوغاتونو کې هغه پيسې شاملې نه وې، چې وسلې پرې اخیستل شوې وې. په ايټاليا کې نږدې شپږ ميليونه او په جرمني کې نږدې څورلس ميليونه مارک نقد پرې لګېدلي و.

پاچا خپله دوهمه وينا پوځي او مليکي پوهنيز سمون د پاره ځانګړې کړه. هغه څرګنده کړه چې غواړي شته پوځي ښونځي له سره تنظيم کړي او نوي ښونځي پرانيزي. افسرانو ته به اجازه نه وي چې د پيرانو مړيدي وکړي، سرتېري به د پوځي خدمت په دوره کې دغسې مهارتونه زده کوي کله چې مليکي ژوند ته راستنېږي هغه پلي کړای شي او نورو ته يې هم

وښيي. ده وويل چې په ولايتونو کې به هم راز راز ښوونځي پرانېستل شي او د امانې او امانې د لوړو ښوونځيو څانگې به په ولايتونو کې هم پرانستل شي. پاچا امان الله د ځوانانو د نکاح موضوع بيا راپورته کړه او امر يې وکړ چې تر هغه چې ځوانان په ښوونځي کې وي ، ودونه نه شي کولی.

پاچا په دريمه غونډه کې خپله وينا د ستر موضوع ته ځانگړې کړه او څرگنده يې کړه، چې په راتلونکو دوو مياشتو کې دې چادري نه وي. پاچا د خپلې ښځې ثريا نه وغوښتل چې خپله چادري له مخ نه ايسته کړي. هغې خپله چادري د مخ نه ليرې کړه او حاضر و ښځو په گڼو لاس پرېه که سره د هغې تود هرکلی وکړ. په دې توگه ملکه ثريا لومړی افغانه مېرمن ده چې د خلکو په مخ کې مخ لوڅ کړی دی. په دې غونډه کې پاچا ملايان د ناپوهی او تعصب په خپرولو پره وگڼل.

پاچا په خپلې وروستۍ وينا کې د سردار شير احمد نه وغوښتل چې صدراعظمي وکړي خو هغه په دغه کار کې پاتې راغی. بيا پاچا وويل چې دی به په خپله د ملي شورا تر جوړېدو پورې د صدراعظم په توگه هم چارې پر مخ بوزي. پاچا په خپلې وينا کې دا هم وويل چې يوازې دی کولی شي چې اړين انقلابي سمونونه تر سره کړي، ځکه چې د هغه په وينا «زه يو انقلابي پاچا يم او غواړم په هېواد کې د ژوندانه په هر اړخ کې انقلاب راولم.» ۴۳۹ کاکړ وايي چې پاچا دا هم وويل چې هر هغه څوک چې د خپل وجدان په حکم له ما سره کار کولی نه شي ځان دې گوښه کړي. عبدالرحمن لودين چې د کمريکو سروال او د جمهوري گوند غړی و، همدغسې وکړل. ۴۴۰

له برتانويانو سره د پاچا امان الله اړيکې

د کاکړ په اند د امان الله خان او برتانيې تر منځ اړيکې د خپلواکۍ د جگړې نه وروسته خرابې او بحرانې نه وې. امان الله خان که څه هم په ظاهر کې يو وخت بل وخت د خلکو په خاطر برتانوي ضد حرکتونه کول، خو پاچا امان الله خان له برتانوي هند سره ځينې وختونه په نېغ يا په نانېغ ډول مرسته کړې ده.

لومړی دا چې پاچا امان الله د خپلواکۍ د جگړې نه وروسته د ډيورنډ د کرښې اخوا پښتنو سره د هغو د خپلواکۍ کتلو په لار کې عمل ونه کړ، که څه هم دغو پښتنو د خپلواکۍ په جگړه کې فعاله ونډه واخېسته او عمومي هيله هم دا وه. لکه چې د مخه مو يادونه وکړه ارواښاد شمس الدين مجروح وايي چې «... و هم بعضې مردم فکر مېکردند که اين جنگ سوم برای استرداد اراضي از دست رفته افغانستان رخ داده بود، که ان

نتیجه مطلوب بدست نیامده. لذا این جنگ را افتخار بزرگی نه، بلکه ناکامی تصور مېکردند.» ۴۴۱

دوهم دا چې پاچا امان الله د جگړې نه وروسته څه کم دوه کاله ناکام کوشنې وکړ چې په منځنۍ اسیا کې د پیسو په لگښت، او په ملکي جامو کې د سرتېرو په لېږلو سره په دغې سیمې کې خپل نفوذ خپور کړي او د انور پاشا په مرسته او غوښتنه هلته د اسلامي کنفدرېشن سروال شي چې په پای کې ناکام او د شوروي دولت سره د لومړۍ دورې تودو اړیکو سپېدل شول.

درېم دا چې د پاچا امان الله بله غټه مرسته د عجب خان اړیدي په اړه ده چې لیکوالي ستوارت اوږده بیان کړې ده چې لنډیز یې کاکړ داسې بیانوي: «عجب خان اړیدي له برتانوي چارواکو سره، د هغو د زور زیاتي له امله، په کوهات کې د یوه انګلیس مېجر ځوانه لور د مولي الیس (Molly Ellis) په نامه د ۱۹۲۳ کال په اپریل کې په نظامي چوڼۍ کې، د هغې له کوره وټښتوله، او بیا یې له خپل ورور شهزاده اړیدي او نورو ملګرو سره شنوارو ته، په افغانستان کې پناه یووړه. هلته دوی ټولو په منډه تي نومي محل کې وایرول او کورنۍ یې هم ورسره یوځای شوې. ملک منصور شینواري د دوی ساتنه په غاړه واخیسته، او مشکوک کس هلته تللی نه شو. دا هغه وخت و چې ختیځ پښتانه د برتانویانو په بمباري سره، چې نوي رواج شوي وې، په تنګسه کې وو، او عجب خان اړیدي ته د اتل په سترګه کتل کېدل. برتانوي چارواکو د دوی پر ضد عمل کولی نه شو، خو په هغه حال کې چې په افغانستان یرغل وکړي. څنګه چې د دواړو هیوادو تر مینځ یو بل ته د دغسې کسانو د مبادلي تړون نه و لاسلیک شوی، برتانویانو د هغو د تر لاسه کولو ادعا کولی نه شوه. دغه کیسه ډېره اوږده ده، نو دوی دغومره و کولی شول د پېښور د یوې ډاکټري مېرمنې، مېرمن سار، او د هډې اخنډزاده د کورنۍ د یوه غړي، ملا محمود اخنډزاده، په مینځګړیتوب پېغله الیس ازاده کړي، او هغه خپل کور ته ستانه شي. په دغې ټولې مودې کې له هغې سره د یوې درنې مېلمنې په شان سلوک کېده. خو سفیر همفریز په کابل کې په پاچا امان الله فشار راوړ، چې عجب خان او ملګرو ته یې جزا ورکړي. برتانویانو د مخه د همدغې کشالي په سر د هند له لاري افغانستان ته د وسلو د انتقال مخه نیولې وه، او همفریز لا په یوه کتنه کې پاچا ته خبر داری ورکړی و، چې "له اور سره لوبه و نه کړي." پاچا د دغې کشالي د هوارولو له پاره محمد ولي ګمارلی و، په داسې حال کې چې تر دغه وخت پوري سرحدي چاري جنرال محمد نادر اجرا کولې، او دی ناراض شو. محمد ولي همفریز ته وویل چې که د ده خوښه وي عجب خان او ملګري به یې مزار ته تبعید شي

او همفریز هوکړه وکړه او عجب خان بيا د ۱۹۲۴ کال د جنوري په ۲۸ له خپلو ډيرو ملگرو سره، په درو لاريو کې مزار ته تبعيد شو، او هلته مخکي ورته ورکول شوې او نغده هم ورته وټاکله شوه. «۴۴۲ د پاچا امان الله خان نه د ننګرهار خلک او په ځانګړې توګه شينواري ډېر ناراضي شول او پاچا په خپله هم منله چې «هيڅ امير له برتانوي حکومت سره د مخه هيڅ ډول عوذي معامله نه ده کړې. زما تسليحي په سرحد کې زما حيثيت ډېر ضعيف کړ. (سټيورټ ۲۸۴)» ۴۴۳ د شينواريو په بلوا کې دغه ناراضي توب هم اغېز درلود.

کاکړ وايي چې برتانويانو د هغه د رسمي سفر په موده کې د هغه او د هغه د ملگرو تود هرکلی وکړ. ډېره مهمه دا ده چې د دغه سفر په مهال د برتانيې حکومت د افغانستان د پياوړتيا دپاره موافقه وکړه چې ډول ډول عصري توپونه، توپک او نورې وسلې او مهمات وړيا ورکوي او د خپل هرسنت په نظامي اکاډمي کې به شل تنه افغان منصبداران د هند د حکومت په لګښت روزي. (ادامک ۱۳۰) ۴۴۴

کاکړ وايي چې اساسي دا ده چې د افغان- انګليس د دوهمې جګړې وروسته، د پخوا پر خلاف، برتانيې دا سياست غوره کړی و، چې افغانستان پياوړی او دوست وي، چې د باندیني يرغل په وړاندې له ځان نه دفاع وکړي او د اړتيا په وخت کې هم د هند د دفاع په موخه د احتمالي يرغل دفع وکړي. دا چې افغانستان د امير عبدالرحمن په وخت کې د لومړي ځل له پاره مرکزي حکومت شو تر زياتې اندازې د همدغه سياست له امله و.

د پاچا امان الله نسکورېدل او د وطن نه وتل

منشي علي احمد په خپله ليکنه کې د دولت په لور مشرتابه کې د اختلافونو څخه يادونه کوي او څرګندوي چې پاچا د جمهوري ګوند د مخ په ډېرېدو پياوړي توب په دې فکر کړ چې که هغه خپل کېدای نه شي بايد بې اغېزې کړل شي. د ده په اند د حکومت لور کسان بايد هغه کسان وي چې د جمهوري ګوند مخالف او په خپلو کې سره جوړ وي. ځکه پاچا سردار شير احمد ته د حکومت د جوړولو دنده ورکړه. که څه هم سردار شير احمد د لومړي سره نه غوښتل چې صدراعظمي وکړي، خو بيا يې هم د خپلو ملگرو په سلا د وزيرانو نومونه پاچا ته وړاندې کړل، چې په هغو کې غلام صديق د باندینيو چارو د وزير په توګه غوره شوی و. پاچا د يو تن نه پرته نور ټول ومنل، خو کله چې غلام صديق څرخي ته رجوع وشوه، هغه څرګنده کړه چې نه يوازې دی، بلکې اويا نور ملکي او پوځي افسران هم نه غواړي د سردار شير احمد تر لاس لاندې کار وکړي.

غلام صديق څرخي دا دريځ د محمد ولي په قوت سره غوره کړی و. پاچا چې د شيراحمد په وړاندې د دې مخالفت نه خبر شو، د شيراحمد د وړاندیز نه تېر شو او محمد ولي ته يې د صدر اعظمۍ بلنه ورکړه، خو هغه د روحي ستړيا او پښو درد له امله بخښنه وغوښتله. بيا پاچا په يوه عام دربار کې څرگنده کړه چې تر اوسه هېواد د دې سمون له پاره تيار نه دی نو دی به په خپله چارې د پخوا غوندې د دغو وزيرانو په مرسته ترسره کوي. پاچا خپله کابينه په دې ډول وړاندې کړه: عبدالعزيز د دفاع وزير، غلام صديق د بهرنيو چارو وزير، عبدالاحد د کورنيو چارو د وزارت کفيل، علي احمد د سوداگرۍ وزير، عبدالهادي د شورا رييس، شيراحمد د ټولو وزارتونو څارونکی، د ماليې، پوهنې او عدلې وزيران به مخکيني وزيران وي. محمد ولي د پاچا نايب ونومول شو چې دغه مقام د پاچا په شته والي کې يوازې په نامه و.

د منشي علي احمد د ليکني له مخې « [دغه حکومت] د غلام صديق او د هغه د ملگرو په خوښه نه و. دوی چې ناراضي شوي وو پرېکړه وکړه چې کوم قوم د ياغيگيرۍ له پاره ولسوي. غلام صديق چې د خپل پلار غلام حيدر څرخي په سبب، چې د امير عبدالرحمن په وخت کې يې په مشرقي کې کلونه کلونه خدمت کړی و، په دغو قومونو کې د ډېر نفوذ خاوند و» ۴۴۵ علي احمد زياتوي چې په دغه وخت کې د شينوارو دوه مشران محمد افضل او ميرعلم په کابل کې وو. غلام صديق دوی د غټو وعدو په ورکولو سره بېرته وطن ته واستول چې خپل قوم د پاڅون له پاره ولسوي. «هغوی وطن ته په رسېدلو سره په يوې قومي غونډې کې خپلو شينوارو ته وويل، چې پرېکړه دا ده چې د دوی لورې به د زده کړې له پاره ترکيې ته واستولې شي، خو دا چې دوی د هرې يوې د معافېدو په لار کې پنځه سوه روپۍ ولگوي.» ۴۴۶ خو غبار د شينوارو ياغيټوب د هغو د سانکو خپلو د ځانگې او کوچيانو د يوې نښتې نتيجه بولي او وايي چې د جلال اباد اعلى حاکم د شينوارو شکايت ته غوړ ونه نيوه او شينوارې پاڅېدل. ۴۴۷

پاچا امان الله اول کوشين وکړ چې شينوارې په خبرو سره ارام کړي. خو کله چې بنکاره شوه چې خبرې کټه ونه کړه نو بيا د الوتکو بمباري پيل شوه چې په هغې سره شينوارو لا وپارېدل. پاچا امان الله سردار شير احمد د تنظيمې د رييس په نامه له پوره اختياراتو سره جلال اباد ته واستاوه، چې ياغيان په پوځي زور او قومي ايله جاري سره ايل کړي. پاچا په هماغه وخت کې غلام صديق، چې په خپله يې وړاندیز کړی و، هم جلال اباد ته ولېږه. غلام صديق د جلال اباد نه شينوارو ته ورغی او د دوو اونيو خبرو اترو نه وروسته کابل ته راستون شو او د ملايانو ليکلې غوښتنې يې د ځان سره راوړې. دغو

غوبښتنو د پاچا ټول سمونونه ردول او له وطن يې د محمود طرزي د کورنۍ د ټولو غړو ايستل غوښتل.

کاکړ وايي چې د منشي علي احمد په نظر شينوارو ته د غلام صديق «د تللو موخه دا وه دغه اور ته چې اوس ځلېده پکې ووېي.» علي احمد دا هم وايي چې غلام صديق د مومندو او خوگياڼيو د خوی په نظر کې نيولو سره هغو ته د حکومتي پوځ نه د وسلو اخېستلو لارې چارې هم وښودلې. ۴۴۸ فيض محمد لا وايي چې «د غلام صديق د دوه مخي توب له امله چې د ياغيانو په لاس يې خپل نيول جعل کړل، خو په واقع کې دی په خپله د هغو کامپ ته ورغی او وېي هڅول چې په جلال اباد باندې يرغل وکړي. بری (د حکومتي) قواو په نصيب نه شو.» ۴۴۹ جلال اباد بيا چور شو، دولتي پوځ تالا ترغی او د کابل سره د تيليفون مزي پرې کړل شول. سردار شيراحمد کابل ته وغوښتل شو او پر ځای يې والي علي احمد د اعلى رييس او مطلق مختار په نامه مشرقي ته او محمود ياور له يوه پوځ او د ډېرو درندو او سپکو وسلو او ماشينکرو سره د دسمبر په پای کې جگدکک ته واستول شو. والي علي احمد په دې بريالی شو چې «ياغيان او سرايله شنواري د نغدو او نورو سوغاتونو په ورکولو سره د امير اطاعت ته وېولي.» خو دا هغه وخت و چې پاچا امان الله واکمني پرې ايښې او کندهار ته تللی و. ۴۵۰

حبيب الله کلکاني او په کابل د هغه بريد

د دوکتور خليل الله و داد بارش د څېړنې له مخې حبيب الله په ۱۸۹۰ کال کې په کلکان سيمه کې زيږېدلی دی. پلار يې امين الله په کلات کې د عسکري خدمت پر مهال پوځي قطعې ته د اوبو رسولو دنده درلوده چې هلته د سقاو په نوم ياد شو. کاکړ وايي چې «حبيب الله په عام ډول تاجک گنل کېږي، خو نور په دې کې شک لري. ارواښاد مير محمد صديق فرهنگ دی په نسب مخلوط گني او وايي چې: «علاوه بر عنصر اصلي تاجک، احتمالاً خون هزاره يا ازبک هم در رگهای او جريان داشت.» (فرهنگ، ۴۰۱) ارواښاد مجروح، چې حبيب الله يې د اميرۍ په وخت کې ليدلی و، هم د هغه په اړه ورته نظر ښکاره کوي. «او مرد چارشانه، گندمي رنگ، متوسط قد بود. چشم و بيني او چهره مردان توراني، مغولي را بخاطر می آورد. معلوم بود که از اختلاط دو نژاد اريايي و توراني به وجود آمده است.» (مجروح، ۶۴) د کاکړ په وينا حبيب الله کلکاني لومړی په قلعه مراد بېک کې د محمد ولي نوکري کوله. په قلعه مراد بېک کې د زندی شوي مستوفي محمد حسبن ظبيطې شوې مخکې د امان الله خان له خوا د مخه د يو ميليون نغدو روپۍ سره يو ځای محمد ولي ته د

انعام په توگه ورکړ شوې وې. حبيب الله کلکاني د محمد ولي د نوکری وروسته د نمونې په قطع کې له يو نيم کال خدمت کولو وروسته له خپل ټوپک سره پېښور ته وتښتېد او هلته يې د سماوار يو دوکان کوټی چلاوه. بيا پاره چنار ته لاړ او هلته يې يو نيم کال د غلا په تور په بند کې تېر کړ. د بند نه د ايله کېدو وروسته د خوست په بلوا کې د منگلو سره برخه واخېسته او يو څو هغه حکومتي سرتيري يې هم ووژل چې په نيولو يې مامور شوی و. بيا يې په کوهدامن او کوهستان کې د اړه ماری ته ملا وتړله، له بې وزلو سره يې خواخوږي درلوده او د شتمنو او دولتي مامورانو سره يې پوره برحمتي کوله. ۴۵۱

کاکړ زياتوي چې د حبيب الله کلکاني په مشرۍ په کوهدامن او کوهستان کې د د اړه مارو ډله چې د چاريکارو سيد حسين او د سراي خواجه ملک محسن په کې گډون درلود، فعاله وه. د دې ډلې ټول غړي نږدې ۲۴ تنو ته رسېدل. د پاچا د سفر په وخت کې د مراد بېگ قلعه چاپېر خلکو له محمد ولي نه د حبيب الله شفاعت وغوښته او ورته يې وويل، چې هغه له د اړه ماری نه لاس اخېستی او دوی حاضر دي د هغه ضمانت وکړي. محمد ولي چې دغه وخت د پاچا نايب و، له دوی سره ومنله چې حبيب الله کلکاني کولی شي د شپې په تياره کې ورسره وگوري. هغه د محمد ولي سره وليدل. علي احمد وايي چې «محمد ولي حبيب الله ته وويل، چې که دی حتی هغه وبخښي هم به يې امان الله ژوندی پرې نه ږدي. محمدولي وعده ورکړه چې ورسره به مرسته وکړي، خو چې هغه، هغه څه وکړي چې هغه يې ورته وايي. حبيب الله هوکړه وکړه او له هغه وروسته يې د مراد بېگ په قلعه کې له محمد ولي سره په پټه ليدل او هم وسلې او هم پيسې يې ترينه ترلاسه کولې.» ۴۵۲

خو غبار د بهسودو هزاره له غلام حسن له خوږې وايي چې دا والي علي احمد و، چې حبيب الله او سيد حسين يې د «راتلونکو عملياتو» دپاره هغه وخت هڅولي وو، چې دی کوهدامن ته د پلټنو د پاره تللی و. ۴۵۳ کاکړ وايي چې محمد ولي، غلام صديق، والي علي احمد او د دوی په شان نور حکومتي لور کسان به وي چې د هغو په اړه د امان الله لور هنديه وايي چې «هغه څه ډېر غمجن کونکي وو دا وو چې هغو کسانو چې ويل يې چې دوستان يو ... هغوی دوستان نه وو.» ۴۵۴

د اړه مارو د چاريکارو حاکم غلام غوث او يو علاقه دار هم ووژل. حکومت د هغوی د نيولو دپاره د سورو او پليو يو پوځ ولېږه خو د دوی په نيولو کې پاتې راغی. بيا حکومت احمد علي لودين کاپيسا او پروان ته د تنظيمي رييس په توگه واستاوه. هغه د د اړه مارو سره د شنوارو غونډې لومړی د خبرو لار ونيوله. احمد علي له جبل السراج نه حبيب الله او سيد حسين ته داسې پيغام واستاوه: «هغو ته يې د شخصي خوندي توب ضمانتونه

ورکړل او په قران مجيد باندې هغه په لورې کولو سره تاييد کړ، دواړو ته يې د نايب سالاری وعدې ورکړې او هر يوه ته يې درې زره نغدې روپۍ او له کارټوسو سره اووه واړه ټوپکونه او هر يوه ته يې چې له دوی سره يې لوتماري کوله وېنبل.» ۴۵۵

خو پاچا امان الله وايي چې «ما علي احمد [احمد علي] ته حکم وکړ چې دغه دوه کسان خپل ځای ته وبولي او معلومه کړي چې دوی په خپل لوز کې رښتيني دي يا نه دي. دغو دوو [حبيب الله او سيد حسين] له خپلو پنځوسو داړه مارو ملگرو سره [د احمد علي په مخ کې] په اخلاص سره لوړه وکړه چې له پخوانيو جنايتونو نه يې لاس اخېستی او ويې غوښتل، چې ورته وسلې ورکړل شي او ضبط شوي جايدادونه يې بېرته ورکړل شي. احمد علي جان ماته وويل، چې دوی په خپلې ټوپکې رښتيني دي. ما دوی ته ... يو نيم سل ټوپکونه ورکړل او څنگه چې د دوی جايدادونه د حکومت له خوا خرڅ شوي وو، د هغو پر ځای مو دېرش زره روپۍ ورکړلې. دوی له دغو وسلو او پيسو نه په کار اخېستلو سره په کابل حمله وکړه. دغه خلک د غولولو له پاره له قران مجيد نه يوازې د يوې وسيلې په توگه کار اخلي او زه په دې پوره باور لرم، چې زموږ سپېڅلی کتاب به له دوی نه بدل واخلي.» ۴۵۶

کاکړ د فيض محمد د ليکنې له مخې وايي چې دوی د بېنل کېدو نه وروسته د کابل تک ته تياری وښود، خو حبيب الله له پاچا نه په انډېشنه کې و او شايد د محمد ولي خېرې يې په زړه کې وې، نو چېرته د کابل په لار کې له کوم تيلفون نه د تنظيمې رييس علي احمد په نامه له پاچا سره وغږېد، چې د ځان په اړه د هغه په نيت پوه شي. په تيلفون کې ورته وويل چې «ما د سقاو له زوی سره موافقه کړې او هغه مې په لاس کې دی. څه غواړې چې ورسره يې وکړم؟ پاچا ورته کړه چې «ويې وژنه.» حبيب الله بيا پاچا وپوښته چې «ما خو له هغه سره د خوندي توب ژمنه کړې، څنگه يې وژلی شم؟» له پاچا نه يې بيا واورېدل چې «رښتيا هغه له تا سره موافقه کړې نه له ما سره. ژوندی يې پرې نه رډې.» حبيب الله بيا پاچا ته ځان وښوده. سپکې سپورې يې ورته ووييلې او لوړه يې وکړه، چې زر به په کابل باندې يرغل کوي او د امير کار به کوي. ۴۵۷

بيا حبيب الله او سيد حسين جبل السراج کلابند کړ او احمد علي د خپل خوندي توب په وړاندې د دسمبر په دولسمه د ټولو حکومتي پيسو، اتلسو ماشينگرو، يو شمېر درنې وسلې او يو څه ټوپکونه سره ورتسليم کړل. ۴۵۸

له دې وروسته داړه مارو په کابل يرغل وکړ. دوی د جمعې په ورځ د ۱۹۲۸ کال په څورلسمه نېټه د مراد بېک کلي ته ننوتل او د جمعې د خطبې نه وروسته يې حبيب الله

امير وټاکه او د ماسپېښين د دريو بجو په شاوخوا کې باغ بالا او د برتانيې سفارت ته ورسېدل. باغ بالا يې ونيو او برتانوي سفارت ته يې ډاډ ورکړ، چې دوی به د ملت د مېلمنو په شان په امن کې وي. ۴۵۹

کاکړ د فيض محمد د ليکنې پر بنسټ وايي چې «د خاينو وزيرانو او د کابل نفوذمنو لکه د شور بازار حضرت [کل اغا مجددي]، سردار محمد عثمان خان، ولي محمد [د پاچا نايب] او د نورو په دستور چې د مخه يې حبيب الله ته په کابل باندې د يرغل کولو ښه وخت ښودلی او خپل ملاتړ وروړاندې کړی و، ياغيان د ارواښاد صدراعظم عبدالقدوس خان په کور ننوتل... په دغه وخت کې په دغه کور کې د حربيې مدرسه د اسماعيل خاک بېگ او نورو ترکي افسرانو تر څارنې لاندې ځای په ځای وه. داسې هم ياغيانو وکولی شول د شهرار په برج ورننوزي، چې هلته د حبيبيې ښوونځی د شوکت بېگ ترکي په سروالی ځای پر ځای و». ۴۶۰

«د محمداکبر خان يو زوی چې د مير بچه په نوم يادېده، د يوې ورې قطعې په قوماندانۍ سخت مقاومت وکړ او دغه سيمه يې د ده افغانان د اوبو تر زېرمه تون پورې وساتله. داسې هم يو ټولکي افسرانو چې د حبيبيې ښوونځي په سهېل ختيځ کې د امير شيرعلي خان په پارک کې پراته وو، د ياغيانو مخه ونيوله او پرې يې نه ښودل چې زاړه ښار ته ورننوزي. سره له دې هم ټول ښاريان د توپونو او ټوپکونو په ډزو سره په سخته وېره کې شوي وو. خو د پاچا شخصي ساتونکو سورو او يو څو نورو عسکرو رښتيني جنګ ته ملا وتړله. نور پوځ د ياغي توب په حال کې و، ځکه چې د دوی افسرانو د دوی جبرې خپلوې. دوی د دغه مشکل پرې په خپلو افسرانو اچوله نه په ياغيانو او چې د ډزو قوماندانده ورکړل شوه، ډزې يې د هوا په لور کولې». ۴۶۱

«اوس نو شور او زوږ او گډوډي په ټول ښار کې خپره وه. امير چې د خپلو مامورانو له خيانته خبر شو، په غوسه شو، امر يې ورکړ چې د کابل په خلکو او پر هغه قومي خلکو دې وسلې ووېشلې شي چې ښار ته راغلي او لا جلال اباد ته د شينوارو سره د جنګ له پاره تللي نه وو». ۴۶۲

«خو د ښار، د چاردهي په خلکو او په ډېرو قومي ډلو باندې د پنځوسو زرو توپکو او بيخي ډېرې اندازې کارتوسو وېشلو اغېزه ونه کړه. په ډېره اندازه له دې امله چې د پاچا د فاسدو وزيرانو او مامورانو په مقابل کې کرکه عمومي وه. بده يې لا دا وه چې ځينو وزيرو، منگلو او احمدزيو چې د شينوارو پر ضد جنګ ته راغلي وو، د کابل په اسه ماڼي غره باندې موقع ونيوله او د امير په پوځ يې ډزې پيل کړې». ۴۶۳

«غلام غوث [مير غوث الدين] د ملک جهانداد زوی ... له درې سوه ټوپکو سره ښار پرېښود، خوست ته ستون شو، خپل خلک يې وسله وال کړل او د حکومت پر ضد جگ شول. نورو قومونو هم همدغسې وکړل، ځکه چې د ټوپکو په وېشلو باندې کنترول نه وو.» ۴۶۴

«امير چې په دې پوه شو چې د چاردهي خلکو چې د هغه وروستی هيله او ملاتړ وو، هغه ته شا وگرزوله، په وېره کې شو. څلور ورځې وروسته له هغه چې حبيب الله او سيد حسين په کابل باندې دانکلي وو، هغه خپله مور، ښځه، خور او واره ماشومان له ډېرې خزانې سره کندهار ته واستول.» ۴۶۵

«نښتې دولس ورځې او يوولس شپې په پرله پسې ډول روانې وې. کومې هغه وسلې، چې په کلوله پشته او باغ بالا کې زېرمه شوې وې، د کوهدامنيو، کوهستانيو او نورو ياغيانو لاس ته ورغلې. د دغو وسلو ډېره برخه چې د امير عبدالرحمن له وخت نه را په دې خوا زېرمه شوې وې، په دې موخه چې د باندینيو يرغل کوونکو په مقابل کې استعمال شي، د تل له پاره د لاسه ووتلې.» ۴۶۶

«حبيب الله د جنگ په حال کې له هوايي بم نه په اوږه کې ټپي شو او هغه سمدلاسه کوهدامن ته په شا شو.» ۴۶۷

خو د غبار په وينا «پچه سقاو در زېر آتش توپ های دولت در ان طرف شيرپور به ضربت چره شړپنل زخم برداشت و به جای نامعلومی برده شد و به سرعت مداوا شد.» ۴۶۸

د حبيب الله د پرشا کېدلو سره نښتې سپکې شوې، خو په تپه ونه درېدې. پاچا امان الله ته موقع په لاس ورغله، چې ياغيان خواره او بې اغېزې کړي. فيض محمد وايي چې حکومتي سرتېرو د حبيب الله په استوګنځي، مراد بېګ کلي ډزې کولې او بمونه يې پرې غورزول خو اغېز يې نه کاوه. د پاچا هغه فرمان هم کومه پايله نه درلوده چې د حبيب الله پر سر باندې يې د څلوېښتو زرو روپيو انعام ايښی و. «امير اوس په خپل قابليت باندې چې بريالی شي عقیده له لاسه ورکړې وه او په دې ډول يې د حبيب الله د بريالي کېدو له پاره ډګر برابر کړ.» ۴۶۹

د کابل ښار استحکامات او د پاچا ناڅاپي استعفا

«غبار وايي (مخ ۸۲۴) چې حبيب الله او ملکري يې د ډسمبر په ۲۵مه له کابل نه په شا شول، له هغه وروسته... تقريباً دوازه هزار عسکر منظم و غير منظم در سرتاسر خط

کوټل خیر خانه و غیره حصص تمرکز یافت و اشغال قطعي کاپيسا و پروان محتمل گردید. "خو دی دا هم وايي چې د عالي مرکز د نشته والي يا سبوتاژ له امله د مارش امر و نه شو، او دغه جبهه په دفاعي حالت کي پاتې شوه. د فيض محمد په وينا (مخ ۲۱) دغه جبهه په منظم پوځ او ايله جاري سره وار په وار پياوړې کېدله او په قلعه مراد بيگ او نورو برخو کې د کوهدامنيانو پر ځايونو کوزارونه کېدل، خو گټه يې نه کوله. عزيز هندي د دغه وخت پيښي په تفصيل ذکر کړي، چې لنډيز يې دا کيږي، چې د ترکي جنرال، کاظم پاشا په تجويز د کابل په جنوب لويديځ او شمال لويديځ کي دفاعي کرښي جوړي شوې او د منظم او غېرمنظم پوځ کابو دوه ويشت زره پوځ ځای پر ځای شو، او د هر محاذ قومانداني د يوه جرنيل په غاړه شوه. باغ بالا د جبهې د مرکز په شان مضبوط شو او په لوړو غونډيو او د الوتکو د ډگر په لوړو ځايونو کې توپونه ودرول شول، او د کابل امنيت په دې ډول ونيول شو. پوځ ته هم د پرمختګ امر ورکړل شو، او قوماندې يې هم سور جرنيل محمد عمر ته وسپارله شوه. دی چې يو زره ور قوماندان و، زير، ظالم اوبدي خور هم و، چې له امله يې څو ځله بندي شوی، خو د ضرورت په حال کي به سمله لاسه ازاد او وظيفه به وروسپارله شوه، لکه اوس چې همدغسي وشول.

دا چې د جنرال محمد عمر تر لاس لاندي قوه څومره وه، مالومه نه ده، خو هغه د ټول پوځ يوه برخه وه، چې له کابل نه يې لس ميله ليرې يو څو کلي ونيول، او د کلاي مرادبيک د څوکو په هغه خوا کي يې مورچې جوړې کړې او هغه يې خپل مرکز وټاکه. ده مهمات راټول کړل، د دې له پاره چې په سيمې کي د ننه ور د مخه شي. خو ده يوه غټه ستونزه هم لرله، او هغه دا چې د ده په پوځ کې د ځدرانو او منگلو جنکيالي د خپلو مشرانو تر قوماندې لاندي وو، دغه مشران د خوست په جنگ کې له ده سره دغومره وران شوي وو، چې له هغه "سره يې خبرې څه لاندي باندي کولې، تر څو خبره زور ته ورسېده او له دواړو خواوو څخه څو تنه ژوبل [شول] او په خپله سور جرنيل هم په پښې په کولۍ ولکېد او هغه له ميدان څخه د خپلي خېمې په خوا په شا شو. ډېر زر دا اوازه په رضا کارانو او پوځ کي خپره شوه، او د جکړې په لومړۍ ليکه کي يوه عامه نارامي پيدا شوه." له کابل نه د پاچا نايب محمد ولي سمله لاسه دلته ځان ورسوه او د منگلو په غوسه شوي مشران يې آرام کړل، خو د سور جرنيل په پوځ باندي د ۱۹۲۹ کال د جنوري په ۱۳ مه شپه يو ناڅاپي بريد له حد نه ډېر اثرناک ثابت شو.

په هغه " ... شپه د سقاو زوی ورور، حميدالله، پنځوس تنو ... د څلورو خواوو څخه يې د شېخون تکل وکړ او د دې غلچکي بريد هدف يوازي دا و، چې سرکاري پوځ او

رضاکاران یوڅه وارخطا کړي. "خو، " همدا چې غلچکي برید پیل شو [دسرکاري پوځ] یوه برخه په دې فکر شوه چې د کوهستان لښکر، چې د راتولېدو اوازې یې خپرې وې، ناڅاپي یرغل کړی دی، او یوې بلي برخې داسې فکر کاوه چې قبایلي لښکر د سهار پېښه یو ځل بیا راپورته او توده کړې ده، او پوځونه یې چې د سختو سرو له امله په خپلو ځیمو کې دننه پراته وو، په ډېره وارخطايي له ځیمو نه راووتل، او کله چې یې ولیدله چې له څلورو خواوو نه گولۍ اورېږي، نو جرئت یې له لاسه ورکړ او د شپې په دې وپروونکې تیاره کې چې هري خوا ته هڅه وکړه، په هماغه خوا وتښتېدل. "(عزیز هندي، ۴۱۴) په دې ډول حبیب الله او ملگرو ته یې د سرکاري پوځ ټول توپک، ماشیندار او توپونه په لاس ورغلل، او دوی ځانونه کابل ته نږدې ورسول. خو د کابل دفاعي ترتیبات، لکه چې د مخه ویل شوي، دغومره پیاوړي وو، چې حبیب الله او ملگرو ته یې د کابل نیول شوني نه و.

خو چې "د دې مخکینۍ کلا (کمر بند) د ماتېدلو خبر غازي امان الله ته په هماغه نیمه شپه ورسېده... د هغه په افغانستان باندي د راتلونکي حکومت د ټینګېدلو ټولې هیلې له مینځ نه ولاړې. "(عزیز هندي، مخ ۴۱۷) تراجيدي یوازي دا هم نه ده. یاغي شینواري د پاچا دپاره غټه اندېښنه وه. د فیض محمد په ژبه (۲۱، ۱۰۸ مخونه) د ننګرهار د تنظیمي رئیس، سردار علي احمد، "به طمع امارت با خامه خدیعت و فریب به امان الله خان نوشت که: ۲۳ هزار کس از شنواري و غیره جانب کابل به راه افتادند، اطلاعاً عرض شد. و این مکتوب او به امان الله خان رسیده موجب هراس او گشت." فیض محمد بیا لیکي چې پاچا "... هم به فراست دریافت که وزرای غدار و خیانت کارش او را دست بسته به حبیب الله خان خواهند سپرد، ناچار ترک سلطنت نموده، فرار اختیار کرد که گویا فرارش از همان مکتوب علي احمد خان به روی کار آمده." (فیض محمد، ص ۱۵۸) په بل ځای کې فیض محمد د پاچا عزم په دې ډول یادوي: "از بي وفایي قشون نظامي و قومي و اهالي شهر کابل و چار دهی... امیر امان الله خان را از حصول ظفر مایوس ساخته در خوف و رعب گرفتن و به پسر سقا سپردن انداختند." (فیض محمد، ۱۵۸-۲۱۰)

په دې ډول پاچا د مقاومت روحیه له لاسه ورکړه. که څه هم د کابل استحکام پیاوړی، پوځ پر ځای، د توپونو او څو جنګي الوتکو په ګډون وسلې پرېمانه وې، . پاچا په هماغه نیمه شپه کې، بې له دې چې له چا سره مشوره وکړي، خپل مشر ورور معین السلطنه سردار عنایت الله، که څه هم د واکمنۍ شوقي نه و، راضي کړ چې د ده پر ځای پاچا وي. دی بیا د سهار پر نهو بجو د ۱۹۲۹ کال د جنوري په ۱۴مه له محمود طرزي،

دباندنيو چارو وزيرغلام صديق، د دربار وزير محمد يعقوب، او داخله وزير عبدالاحد (مايار) سره په موټرونو کې د کندهار په لور روان شو. (فيض محمد، ص ۲۱، سټيورټ، ۱۹۶۹ مخ) عزيز هندي د پاچا امان الله د دغه سفر رېږونه هم يادوي، چې هغه د پرله پسې واورې اورېدولو له امله، د جدي سخت ساره او په پاچايي موټرونو کې د کافي تېل نشته والی وو، خو څنگه چې پاچا په "ډيرو باوري کسانو هم ډاډ له لاسه ورکړی و" خپل قيمتي وخت ضايع نه کړ او له لږو تېلو سره هم د کندهار په لور روان شو. په لار کې يې د تيلو د يوه ټانکر نه تېل تر لاسه کړل، خو د غزني او مقر تر مينځ، له لنډو وقفو نه پرته، د پرله پسې واورې اورېدولو له امله سرک د موټرو د تللو نه و، تر څو چې هغه د خلکو په مرسته د موټر تللو وړ شو. (عزيز هندي، ۱۹۲۵-۱۹۲۲ مخونه) سټيورټ لا وايي چې امان الله د خپلو ملگرو سره څلور ساعته پياده مزل وکړ، چې مقر ته ورسېد، او اوښی(اخښی) يې، محمد حسن، له کندهار نه له څو موټرو سره راغی او بيا دوی ټول کندهار ته لاړل. دغه ټول سفر ۳۲ ساعته ونيول. «۴۷۰»

په دې توگه پاچا امان الله د ۱۹۲۹ کال د جنوري د مياشتې په ۱۴ مه نېټه له پاچايي نه لاس واخيست او هغه يې خپل مشر ورور عنايت الله ته وسپارله. دی په خپله د سهار په نهو بجو چې محمود طرزی، غلام صديق څرخي، محمد يعقوب د دربار وزير، عبدالاحد د کورنيو چارو د وزارت مرستيال او خپلو شپږو ساتونکو سره د کندهار په لور روان شو او د خان سره يې يوه اندازه سره زر يووړل. چې ټول ارزښت يې لس ميليونه روپۍ کېده.

پاچا عنايت الله د ورځې په يوه بجه په داسې حال کې چې په خپرځانه کې لا نښتې روانې وې، د کابل ځينې مخور، پوځي استازي او قومي کسان د دلکشاه په ماڼۍ کې د بيعت منلو له پاره وبلل. دوی ته د امان الله د گوښه کېدو فرمان ولوستل شو او نوي پاچا ته يې د بيعت لوره وکړه. فيض محمد وايي چې: «عنايت الله هغه بې وجدانه، رذيل د شور بازار حضرت [کل اغا مجددي]، محمد عثمان او دوه يا نور ملايان چې په خپله د ياغي توب محرکان وو، وغوښتل چې له هغو عمري غلو او شريرو جانپانو حبيب الله او سيد حسين سره وگوري.» عنايت الله د دوي په لاس هغو ته يوه ليکنه هم واستوله چې په کې ويل شوي و چې اوس نو امان الله چې تاسې «کافر» گانې، گوښه شوی او پر ځای يې د کابل خلکو له خوا زه پاچا شوی يم، چې تاسې هم ما «رښتيني مسلمان» گنې، نو د جنگ له پاره ټول دليلونه وړل شوي دي. «که تاسې په رښتيا د رښتین توب له پاره جنکېدلي يې نه د مسلمانانو تر منځ د دښمنۍ له پاره، نو بيا لازمه ده، چې بې اتفاقي پرېږدئ او د افغان امير صلاحيت وپېژنئ.» «۴۷۱»

دغه خاين پلاوي په لار کې د امان الله د گوښه کېدو او د عنايت الله د پاچا کېدو نه هغه پوځي واحدونه او قومي خلک خبر کړل، چې په ستراتيژيکي ځايونو کې ځای پر ځای وو. دوی له سرتېرو وغوښتل چې جگړه بس کړي. له دې يې هم خبر کړل چې دوی د حبيب الله او سيد حسين سره د خبرو کولو له پاره روان دي. د دوی په سپارښتنې ډېرو سرتېرو خپل ځايونه پرېښودل او د ښار په لور روان شول. پلاوي حبيب الله او سيد حسين ته د پاچا پيغام ورکړ، خو هغوی د پاچا د پيغام او د خپلې رسې دندې پر خلاف په خپله حبيب الله د پاچا کېدلو له پاره وهڅاوه او ورته وېې ويل چې عنايت الله نه، بلکې دی د پاچايي مستحق دی. د دې له پاره دوی دا عجب دليل وړاندې کړ: «د دغه حقيقت په نظر کې نيولو سره چې حبيب الله د رجب په لومړۍ [دسمبر ۱۹۲۸، ۱۴] په پاچايي تخت ډډه لکولې، په داسې حال کې چې د عنايت الله پاچا کېدل د شعبان په دوهمې [جنوري ۱۹۲۹، ۱۴] سره سمون کوي، نو ته، نه عنايت الله د تخت رښتيني مستحق کيږي. که عنايت الله تا ته بيعت نه کوي، د هغه کره به د شريعت له مخې ناروا وي.» ۴۷۲

حبيب الله او سيد حسين د پلاوي سره د خبرو وروسته سمدلاسه د ښار په لور وخوځېدل. په لاره کې يې هغه وسلې راټولې کړې چې دوی د مخه پرې ايښې وې. د کاکړ په وينا «په دې ډول اته ويشت وسله وال مېړونه په شکېدلو جامو کې له تش لاسو کوهدامنيانو سره له ده افغانان نه په ښار ننوتل، د چار يار نارې سوري يې پورته کړې او هوايي ډزې يې وکړې.» ۴۷۳ فيض محمد وايي چې «د ښار خلک لا د مخه د امان الله پر ضد متمايل شوي وو، دوی له هغو ډېرو وسلو نه کار وانه خېست چې هغو ته ورکړل شوې وې، نو د حبيب الله ملگرو او سيد حسين ښار په قبضه کې ونيوه.» حبيب الله د عنايت الله له پلاوي سره، چې اوس د هغه ډېر عزتمن مېلمانه وو، د باغ بالا مانۍ ته وختل. سيد حسين چې ښار آرام وموند هم له هغو سره يوځای شو. خو عنايت الله د خپلې پاچايي په لومړۍ ورځ په ارک کې ځان ايسار وموند. د کابل او چاردهي ډېر ښاريان د شاه زوی حیات الله او محمد کبير او نورو سردرانو په کېدون چې يوه ورځ د مخه يې عنايت الله ته د بيعت لوره کړې وه، د جنورۍ په ۱۵ مه نېټه د سوغاتونو سره په باغ بالا کې د حبيب الله سلام ته لارل او «وروسته له هغه چې هغه يې له خپل رښتين توب نه ډاډه کړ او د واکمن کېدو مبارکي يې ورته وويله، کورونو ته ستانه شول.» ۴۷۴

په دې توگه دوه پاچايان چې يو يې نالوستی او بل يې زړه سردار په ښار کې ځای پر ځای وو. عنايت الله هغه مهال پوره بې زړه شو چې د شور بازار حضرت، سردار محمد عثمان او نورو «ځايينو وزيرانو او د هغوی غوره مالو ملگرو» دی د حبيب الله په اړه د

خپلو نظريو نه خبر کړ. «دوی په دغه کار سره هغه ووپراوه او د تخت له دفاع نه یې د هغه اراده ولرزوله» که یې لرله.

د جنوري په شپاړلسمه نېټه په داسې حال کې چې د کوهدامنیو او امان الله د پلویانو تر منځ نښتې لا هم روانې وې او اتیا تنو د بهسودو هزاره گانو د کلا بلند له وسله تون نه ساتنه کوله، د ښار ځینو لویانو لکه د شورا سروال شیر احمد، د پوهنې وزیر فیض محمد، د سوداګرۍ پخوانی وزیر عبدالهادي، د مالیاتو وزیر میر هاشم، د امیر عبدالرحمن زامنو (سردار امین الله او سردار محمد عمر) او د وزارتونو یو شمېر مرستیالانو او د دولتي څانګو سروالانو د حبیب الله تبعیت ومانه. داسې هم د ښار قزلباش باغ بالا ته لاړل او حبیب الله ته یې بیعت ورکړ. نښتې غلې شوې. د شور بازار حضرت، سردار محمد عثمان او یو څو وزیرانو عنایت الله وهڅاوه چې واکمني پرېږدي او ارګ خوشی کړي او عنایت الله هم ورسره هوکړه وکړه. په هماغه ورځ حبیب الله د شور بازار حضرت له یوه فرمان سره عنایت الله ته واستاوه چې د ارګ نه د وتلو په صورت کې یې د هغه د خوندي توب ضمانت کاوه. عنایت الله د ۱۹۲۹ کال د جنورۍ په اوه لسمه نېټه حبیب الله ته لیک واستاوه چې په هغه کې د تش په نامه د درې ورځنۍ پاچایې وروسته د واکمنۍ نه په لاندې ډول تېر شو:

«زما ورور حبیب الله ټولو ته څرګنده ده، چې زه نه غواړم پاچا اوسم. د پلار د مړینې نه وروسته مې هېڅکله د تخت د کتلو له پاره هیله نه ده کړې. زه اړ شوم چې هغه یوازې د لویانو په ټینګار ومنم، چې هغوی په تخت باندې زما کېناستل د خلکو د شتمنۍ او د اسلام له پیاوړي توب سره تړلی وګانه، خو اوس چې زه وینم د مسلمانانو وینې توپیري پرېکړه مې وکړه، چې د افغان امارت له پاره له خپلې دعوې نه تېر شم او د نورو پاک زرو مسلمانانو په شان تاسو ته خپل بیعت درکړم. نن ورځ په ارګ کې له ما سره لاندې مسلمانانو ژمنه کړې ده.» په دغه لیک کې د شلو حکومتي کسانو نومونه دي، چې په هغو کې د محمد ولي او عبدالعزیز نومونه هم شته. عنایت الله په خپل لیک کې حبیب الله ته خپل بیعت په لاندې شرطونو وړاندې کوي:

«لومړی دا چې ما ته، زما کورنۍ ته او زما پراخې شوې کورنۍ ته او د پورته نوموړو کسانو او د ارګ ټولو افسرانو او عسکرو ته دې هرومرو د خوندي توب ضمانت وي.»
«دوهمه دا چې زه او زما کورنۍ یا کندهار یا د باندې ټولنکي یو. غواړم کندهار ته د تګ له پاره باید یوه الوتکه زما په خدمت کې وي.»
«درېمه دا چې زه غواړم محمد ولي خان، عبدالعزیز خان او احمد علي خان ته اجازه

وي که غواړي د خپلو کورنيو سره د باندې ولاړ شي.»

«څلورمه دا چې له نن نه د يوې مياشتې په بهير کې هر هغه لور رتبه مامور ته اجازه وي که غواړي له خپلو کورنيو سره د باندې ولاړ شي.»

«پنځمه دا چې تر هغو چې الوتکه راځي، زه په ارک کې اوسم.» ۴۷۵

د ۱۹۲۹ کال د جنوري د مياشتې په اتلسمه نېټه د حبيب الله په غوښتنه دوه برتانوي الوتکې د کابل په هوايي ډگر کې ښکته شوې. په دغو الوتکو کې د درو ورځو پاچا عنايت الله، د ده کورنۍ، د دفاع پخوانی وزير عبدالعزيز او احمد علي خان پېښور ته ولاړل. دوی بيا له هغه ځای نه په اورکاډي کې چمن ته او له چمن نه په موټرو کې کندهار ته لاړل او هلته د امان الله خان سره يوځای شول. په هر حال، حبيب الله چې د نسب په لحاظ هر څوک و، د دغسې غريب، نالوستي کليوال په لاس د افغانستان د پاچايي نظام چپه کېدل په معاصر افغانستان کې يوه بېساري پېښه ده.» ۴۷۶

په دې ډول د ضيبيايي کورنۍ چې نيمه پېړۍ د مخه د امير عبدالرحمن په کوښښ سره واکمنۍ ته رسېدلې وه، له واک نه ولوېده او واکمني د يوه کوهدامني ډاږه مار لاس ته، چې د سقاو د زوی په نوم شهرت لري، ورغله چې ځان يې امير حبيب الله د دين خادم په نوم ياد کړ. محمد ولي په کابل کې پاتې شو.

امان الله په کندهار کې نيت وکړ چې له لاسه تللي واکمني بېرته ترلاسه کړي. پوهاند کاکړ د منشي علي احمد د ليکني له مخې د امان الله خان تک تر غزني پورې داسې بيانوي:

«امان الله په کندهار کې په يوې سترې غونډې کې بيا د پاچا په توگه وپېژندل شو، خو هلته يې نوی حکومت جوړ کړ او هرې خوا ته يې فرمانونه واستول او خلک يې د حبيب الله پرزولو ته وبلل. د دفاع د وزير عبدالعزيز او عبدالاحد مايار په کوښښونو سره امان الله وکولی شول د مارچ په مياشت کې له لږو ډېر څلور زره قومي خلکو او پنځه سوه منظم پوځ سره د کابل په نيت روان شي. د دغه مارش په برابر کې په قلات او مقر کې د سقويانو له خوا مقاومت وشو. په مقر کې ان د محمد اکرم په نامه يوه محمدي غونډ مشر هم د سقاو زوی په پلوی نابريالی مقاومت وکړ. سره له دې هم مارش تر غزني پورې بې له غټ مقاومت نه ورسېد. په مقر کې جاغوري هزاره کان او وروسته د بهسودو، مالستان، جاغوري او نورو ځايونو نه څه باندې شپږ زره هزاره مېړونه د ملاتړ په توگه د پاچا امان الله کمپ ته ورسېدل، خو د دوی راتگ د غلزيو خپلونه لکه اندر، سليمان خېل او تره کي لا وپارول او د غزني سقاوي حاکم محمد کريم په دغو قومونو کې د کرزېدلو په وخت کې دغسې تبليغ کاوه، چې که «امان الله په رشتيا کافر نه وای، هزاره کان

به يې چې د دوی پخواني دښمنان دي، نه وای راغوبښتي او د دوی شته والی يوازې دغه مانا لري، چې هغه د غیر افغانانو له خوا د افغانانو خپل دي. د دغې دندورې اغېزه سملاسي وه. په داسې حال کې چې د مخه يوازې شل په سلو کې د امان الله مخالف وو، اوس يې ټول مخالف شول.» ۴۷۷

امان الله د سقاو په پوځ چې د ننه د غزني په ښار کې و، يرغل وکړ. ورپسې د امان الله په امر هزاره گانو هم په ښار برید وکړ. د امان الله خان د ځواکونو په وړاندې سلېمان خېلو، اندرو، تره کو، دوتنيو او تاجکانو بریدونه پيل کړل. د جگړې په پيل کې بری د پاچا د پوځ په کټه و، خو نښتې پسې اوږدې شوې او يو شمېر کندهاري او هراتي سرتېري وتښتېدل او هزاره گانو هم اغېزمنه جگړه ونه کړای شوه.

کاکړ وايي چې د پاچا پيسې او وسلې هم په خلاصېدو وې او سرتېرو ته خواره رسول او تنخوا ورکول هم ستونزمن وو. سرپرته پردې د غزني چاپېرو زيرمو سيمو سره د پوځ نابلدتيا گرانه تمامېده. د دې ټولو پايله دا شوه چې پاچا امان الله معنويات بايلي. «امان الله هم عصبي او په وېره کې شو. خپل دوه مشاوران محمد يعقوب [د دربار وزير] او محمد حسن جان [د پاچا اوبښی] يې وغوښتل او له هغوی سره په پټه جرگه شو. هغه ته د دوی مصلحت دا و چې له غزني نه په منظم ډول په شاشي او افغانستان پرېږدي. دوی د خپل مصلحت په ملاتړ وويل چې ټول افغان ملت په څرکند ډول د هغه پر ضد شوي دي. دوی د شپې له خوا د کندهاريو او د هراتيو تښتېدلو ته اشاره وکړه او دليل يې راوړ چې څنگه دغو ناپوهو احمقانو د ستاسې اعحضرت د لسو کالونو خدمت درناوی ونه کړ تاسې بايد افغانستان پرېږدئ او که تاسې اعحضرت (بيا) پاچا شئ څه کټه به وکړي، ځکه چې د افغانستان وضع پوره گډه وډه ده او شتمني يې هم ضايع شوي ده.» ۴۷۸

پاچا امان الله بيا کندهاري خانان، بيرغ لرونکي او عبدالاحد خان سره جرگه وکړه او د خپل تک تجويز يې ورته وړاندې کړ. «د کندهاريو معنويات دومره ضعيف شوي وو چې هغو ټولو رضایت وښود. عبدالاحد خان مخالفت وکړ او وې ويل: چې وردگو له سقاويانو نه ډېر مهمات ترلاسه کړي. هغه وړاندیز وکړ، چې څه وخت پوځ به وردگو کې وي د هغوی ټول لگښت به ورکړي او دا چې د وردگو له لارې دې په کابل باندې يرغل وشي. عبدالاحد هغه يوازینی کس و چې د پاچا له وتلو سره يې موافقه نه لرله او د هغه پلان ونه منل شو.» ۴۷۹

پاچا امان الله خپل پوځ ته د کندهار په لور د تک امر وکړ. کندهار ته د امان الله په رسېدلو سره سقاويان مقر ته ورسېدل او هرات هم د حبيب الله له پاره د عبدالرحيم

کوهستاني له خوا ونيول شو. امان الله د می په میاشت کې له کندهار نه د چمن په لار هندوستان ته او له هغه ځایه د اېتاليې مرکز روم ته لاړ او هلته یې پاتې عمر تېر کړ. امان الله خان په ۱۹۶۱ کال کې هلته د اویا کلونو په منگ مړ شو او مړی یې د هغه د وصیت سره سم افغانستان ته راوړل شو او په جلال اباد کې د خپل پلار د گور تر څنگه خاورو ته وسپارل شو.

د پاچا امان الله ځینې مهې تېروتنې

د کاکړ په وینا پاچا امان الله او حکومت ته یې چې د خوست له جنگ نه وروسته بل غټ خطر پېښ شو، هغه د ده له باندني سفر نه وروسته د دغسي سمونونو له امله و، چې افغانان په هغو سره خپل د پېړیو دود دستور او ژوند طرز پرېږدي، او اروپايي دود، دستور او ژوند طرز غوره کړي، هغه هم په حکومتي زور، او په گړندي ډول. اول له ډیرو لوړپوړو چارواکو سره د ده شپږ میاشتي باندنی سفر، په داسې حال کې چې دی هم د دولت او هم د حکومت سروال و، په دغسي وخت کې و چې هم د ده د لومړۍ دورې د نااشنا اصلاحاتو، او هم د یوه کلني جنگ خاطرې هیري شوي نه وې او د هیواد کراري هم په ډاډمن حال کې نه وه، د ده په بیرون کېدلو سره د غبار په وینا "در تمام ولایات افغانستان حلقه های مخفي مخالف به فعالیت ضد دولتي درامند." (۱۳) لوی او اثرناک مخالف یې فضل عمر مجددي و، چې د پاچا نوي پروگرامونه یې د شریعت مخالف گڼل. مجدديان د خپلي نقشبندي عقیدې له مخې عقیده لري چې د یوه مسلمان ملک واکمنان مکلف دي چې د شرعي قانونو له مخې حکومت وکړي، او که یې و نه کړ، خلک دي د هغه مخالفت وکړي. فضل عمر مجددي د نقشبندي طریقې د مشر په توگه د پاچا امان الله په مخالفت د مخه له افغانستان څخه وتلی او په اسماعیل خان دېره کې دېره شوی و. د تاریخپوه ادمک د لیکني له مخې هغه د پاچا ضد تبلیغ تر څنگه د جنوبي او پکتیا له عالمانو سره غونډه وکړه او په دې وغږېدل چې "د ځوانو افغانانو پر ضد کودتا وشي، او پاچا امان الله په ستنېدو سره له یوه شوي عمل سره مخ شي." دوی دغه پرېکړه هم وکړه چې "په وروستي گام کې دي پاچا گوښه او جمهوري نظام په پښو ودرول شي." ۴۸۰ (ادمک، ۱۳۹)

دغه اوږد سفر د پاچا په خپل نوبت و. د مخه مې یادونه کړې وه چې د کاکړ وروستی لیکنه «د ښاغلي زمني او ښاغلي سیستاني د لیکنو په هکله» کې د هغه د لومړۍ لیکني

«د پاچا امان الله واکمنۍ ته نوې کتنه» دا خبره ردوي چې محمود طرزي مشوره ورکړې وه چې اروپا ته سفر وکړي. دی په وروستۍ ليکنه کې دې پایلې ته ورسېد: په کابل کې خسر يې، نوميالي او مجرب محمود طرزي، په دغه وخت کې د نه سفر کولو مشوره ورکړه، خو هغه و نه منله. د ايټالې د ناپل په ښار کې جنرال محمد نادر، او ورونو يې محمد هاشم، او شاه ولي، پاچا ته ځانونه ورسول، او ورته وويل چې "د افغانستان په اوسنيو اجتماعي، سياسي او اقتصادي حالاتو کې د چټکو اصلاحاتو له پاره ډگر برابر نه دي." د دې مانا دا کېده چې دغه سفر ونه کړي، او له دغسې اصلاحاتو نه لاس واخلي. پر عوض يې پاچا جنرال نادر ته وويل چې دی دي افغانستان ته لار شي. "سپاه سالار يې پر امر باندي غوړونه کاڼه واچول." او په سفر کې يې هم ورسره ملکرتوب ونه کړ. (۱۴) د پاچا مور چې په حکومتي چارو کې فعاله او د ملکې ثريا پر خلاف وه، هم د دغه سفر مخالفه وه، او نه يې غوښتل چې زوی يې " ... خپل تاج او تخت په خطر کې کړي." ۴۸۱ (۱۵) (عزيز هندي، ۳۷)

پاچا چې له دغه سفر نه وطن ته ستون شو، هغه پخوانی امان الله هم نه، بلکې د اروپايي کلتور تر تاثير لاندې شوی و. د غبار په وينا "وقتیکه شاه برگشت آمرد گذشته نبود. او بسيار خود رای و مغرور شده بود، و با اقدامات عجولانه اي که نمود بزودي افغانستان را مستعد به یک انفلاق منفي نمود." ۴۸۲ (غبار، ۸۱۲) ليکوال عزيز هندي چې پاچا يې له نژدې پېژانده د غبار د نظر په تائيد کې د پاچا د وضع د تغير په اړه دليل هم راوړي او وايي چې (عزيز هندي، ۵۵): "په اروپا کې له ده نه کوم شاندار استقبال شوی و، د ده په طبيعت باندي دا تاثير کړی و، چې دی تر پخوا زيات د خپل عقل، پوهې او د فکر د رښتين توب مدعي شي، نو ځکه د هيواد د پرمختگ له پاره چې ده کوم فکرونه او تجويزونه له ځان سره لرل، هغه يې سم او د لاس وهني وړ نه گڼل." ۴۸۳ له همدې امله و، چې پاچا په ترکيه کې د هغه مشر اتا ترک ته په همدغې روحې سره مالومات ورکړل.

اتا ترک وپوښته چې "ايا اعلي حضرت په خپل هيواد کې دومره محبوبيت لري چې د اصلاحاتو خلاف اعمال به د يوه بغاوت په شکل را مينځ ته نه شي؟ پاچا ځواب ورکړ، چې "ما د منگلو د بغاوت په ترڅ کې تر زياته حده د روحانيونو قدرت مات کړ، او دوی زما په هيواد کې يو مقتدر عنصر گڼل کېږي، چې د حکومت پر ضد د خلکو د راپورته کولو او تحريک کولو قدرت او استعداد لري، خو اوس دغې ډلې ته پخوانی قدرت نه دی پاتې چې د حکومت پر ضد سروونه راپورته کړي." اتا ترک له ده نه بيا پوښتنه وکړه، چې که بيا هم دغه ډله په دغه کار کې بريالی شوه "اعليحضرت به وکړای شي هغوی په خپل قدرت سره

و ځي. [؟] پاچا په ډاډ وويل چې " هو، زه په اساني سره کولای شم چې د خپل پوځي قدرت په ذريعه د داسي شورشونو او فتنو په ټکولو بريالی شم." د اتاترک بله پوښتنه دا وه چې پوځ به د "تحريک" په وخت کې " خپل دسپلين وساتي او تاسي ته به وفادار پاتې شي [؟]"

ځواب يې واورېد چې " هو، زه په خپل پوځ کې ډېر زيات محبوب، او د دوی په زړه کې ځای لرم." د اتاترک بله مهمه پوښتنه دا وه چې د بغاوت " ... په حال کې تاسي يقين لری چې کاونډي هيوادونه به د اعليحضرت د حکومت پر خلاف کار روايي او لاس وهنه و نه کړي [؟].

ځواب يې واورېد چې " زه په دغه خبره کامل يقين لرم چې په دغه حال کې به روس او انگرېز دواړه خپلو ژمنو او تړونونو ته په درنه سترگه وکوري، او احترام به يې وکړي." اتاترک بيا ورته مشوره ورکړه چې " څرنکه چې دا ټول حالات د اعليحضرت په موافقت دي، نو دی دې دا اصلاحات زر تر زره پيل کړي." خو هغه په پای کې دا هم ورته وويل چې " په ترکيه کې هيڅ اصلاحاتو ته هرکلی نه دی شوی. ... هغه ما د برچې په څوکه عملي کړي دي. هيڅ اوسېدونکي خپل پخواني دودونه، دستورونه، رواجونه په خپله خوښه نه پرېږدي، تر څو د وخت حکومت د هغو [د خپلو] له پاره قدرت استعمال نه کړي." د عزيز هندي د ليکني له مخې (عزيز هندي، ۴۹) " تر دغو وروسته اعليحضرت تر پخوا زيات پر اراده او عزم ټينگ ودرېد. ... دا فکر هم په ده کې پياوړی شو چې دی به افغانستان ته د رسېدلو سره سم اصلاحات په قوت او زور رواجوي." ۴۸۴ پاچا په رښتيا همدغسې وکړل.

پاچا دا هم د اصلاحاتو يوه برخه گڼله چې د جمعې ورځې رخصتي د پنجشنبې ورځ کړي، په داسي حال کې چې د جمعې ورځ خلکو ته يو ډول مذهبي ورځ شوې وه. د ليکوالي سټيورټ په نظر (سټيورټ، ۴۱) دا ټول د پاچا د ستر پلان شروع وه. پاچا د خپل پلان د عملي کولو له پاره د باندنيو چارو وزارت کې ژوند غوره کړ، او عادي چاري يې محمد ولي ته سپارلې وې. ۴۸۵ خو په نورو ساحو کې د پاچا امان الله د لبرال او ازاد مارکيت د رواجولو له امله پرمختگ شوی او پانگه وره ډله خلک د هسکېدلو په حال کې وه. په ټوليز ډول " په اقتصادي برخه کې هم يو ژور اوښتون د مينځ ته راتلو په حال کې و، او د خلکو د ژوند څرنکوالی مخ په ښه کېدو و. ... د سوداگرو منځنۍ طبقه هم د خپل راپرزېدلي حال نه راپورته شوې وه. ... په کليو او کورونو کې د لاسي مصنوعاتو جوړولو ته زيات پرمختگ په برخه شوی و. د حمل او نقل له پاره هره ورځ نوي اسانتياوې را مينځ ته کېدلې." د کابل او پېښور تر مينځ د تجارتي مالونو د لېږدولو له پاره يوه کمپنۍ فعاله شوې وه. " د حکومت له خوا د موټرو دغه ترانسپورتي مؤسسو ته خاص حقوق او واکونه ورکول شول. د هيواد واردات او صادرات ورځ په ورځ مخ په زياتېدو وو." ۴۸۶ (عزيز

هندي، ۹۹-۹۷) په ختيځ کې د بند غازي په نامه يو بند جوړ شوی و، چې ډيري مخکې په خروېدلې. نهر کريم داسې هم په غزني کې د سلطان محمود پاچا د وخت بند سلطان د فعال کولو له پاره کار کېده.

د ده په اخيري حکومت کې د امنيتي چارو افسران دا وو: عبدالعزيز بارکزی د حرب وزير، محمود سامي د قول اردو قوماندان او عبدالاحد (مايار) داخله وزير. غلام صديق (خرخي) د باندنيو چارو وزير و. محمود طرزي، چې د تجربې خاوند او د پاچا رشتيني خواخوږی و، له نظرنه لوېدی و. په دې چې د پاچا مور د هغه د لور ياني ملکې ثريا سره مخالفه وه. ۴۸۷هـ

اشرف غني په خپله مقاله کې «فصل نا تمام تاريخ افغانستان» وايي چې د پاچا امان الله خان کلتوري ليد چې په هېواد کې يې د نظام جوړولو په اړه درلود د هغه مهال د سياسي قشر تر منځ د اختلاف يو لامل شو. پاچا د دې پر ځای چې د محمود طرزي په فکرونو، نظريو، مشورو او تجربو ډډه ولگوي هغه يې د سفير په توگه فرانسې ته واستوه. ده برسېره پر دې لا د مخه يو شمېر وتلي کسان د نادر خان په کېدون هم بهر ته استولي و. پاچا لوېديځو هېوادو ته په خپل اوږده سفر کې د لوېديځ د ظاهري شان او جلال تر اغېز لاندې راغی او ويې ليدل چې افغانستان تر کومې کچې وروسته پاتې دی. ځوان پاچا د ټولني د کلتور د بدلېدو په اړه د خلکو د جامو بدلون ته هم پام واوره. «ده ان د هتيوالو نه وغوښتل چې د جامو د اغوستلو طرز بدل کړي او د ټولو نه يې وغوښتل چې شاپو پر سر کړي.»

غلام محي الدين انيس په خپل اثر «بحران و نجات» کې وايي چې سم انقلابونه تل د يوه پروگرام او نقشې لاندې کېږي شته حالت د منځه وړي. خو د مخه تر دې چې شته حالت د منځه يوسي، د خپلې سې راتلونکې په اړه فکر کوي. دی وايي چې «زموږ انقلاب يوازې د دغو دوو شرطونو څخه يو شرط درلود، ياني په نسکورولو کې ټول ملت متحد و. خو د هغه نه زياته يې بايد د راتلونکې په اړه فکر کړی وای چې وطن په دغه زبان اخته شوی نه وای.» ۴۸۸ انيس پوښته کوي چې ايا د ملت کرکه په رښتيا د سمونونو او پوهنې او تمدن په وړاندې وه، که اصلي لامل يې په ناسمه اداره او جدي تېروتنو او د زيات افراط او تفريط و؟ انيس وايي: چا چې د امان الله خان لس کلنه دوره ليدلې وي په اسانۍ به ورته څرگنده شي چې «رښتيا دا دي چې ملت سمونونو پارولی نه و، بلکه د ملت دا پاڅون د هغې دورې د متواليانو د ناسې ادارې پايله وه.» ۴۸۹ دی زياتوي چې هغه مهال چې پوليسو ته امر شوی و چې هر څوک په سرکونو يا لارو کې څوک بې شاپو وويښ د

ایا د امیر امان الله په نسکورېدو کې انگرېز انورول درلود؟

څرنګه چې یو شمېر افغان لیکوال برتانویان د پاچا امان الله په ناکامۍ کې دخپل ګڼې او ځینې نور یې نه ګڼي نو اړینه ده چې په دې اړه د کاکړ نظر لوستونکو ته وړاندې کړم. د کاکړ په اند د پاچا امان الله د واکمنۍ نسکورېدنه د برتانویانو د توطیو او دسیسو نتیجه نه ده، بلکې دا یوه قوي افسانه ده چې پاچا د برتانویانو د دسیسو ښکار شوی دی. دی وايي چې په خپله پاچا امان الله مني او وايي چې ملایانو یې مخالفت کړی، بې له دې چې چا پیسې ورکړې وي. په بمبې کې پاچا امان الله عبدالغفار خان ته د خپلو خلکو نه شکایت وکړ چې دی یې «قادیاني» او «وهابي» ګانه او دی نه غواړي چې په دوی باندې بیا د واکمنۍ کولو په مقصد کوښښ وکړي. غفار خان لیکي چې «امان الله د پښتنو د رفاه له پاره کار وکړ. مګر دوی د دوست او دښمن تر منځ توپیر ونه کړ، شورش ته یې لاس واچاوه او هغه یې د ملک نه وشړلو.» ۴۹۱

کاکړ وايي چې د برتانوي او هند حکومت غوښتل چې امان الله پیاوړی او د خپل هېواد واکمن پاتې وي. په هغو لیکونو کې چې د ۱۹۲۵ او ۱۹۲۶ کلونو کې د دوی تر منځ لېږل شوي، ویل شوي، «د لومړي درجې مهمه موضوع دا ده چې امیر په خپل تخت وساتلی شي. دی که څه هم د قناعت شخص نه دی، تر ده ښه بل څوک نه لیدل کېږي، او انقلاب هغه څیز دی، چې شورویان ورته کار کوي،» ۴۹۲ پاچا امان الله هم ویلي و چې «زه پوهېږم چې د شوروي اېجنټان زیار باسي زما په خلکو کې انقلابي نظريې خپرې کړې، او زه دومره وړوند نه يم چې فرض کړم چې کمونستي حکومت به ما او زما تخت ته له دښمنۍ نه غیر بل څه وي.» ۴۹۳ اوس به وګورو چې د امان الله خان د نسکورېدو په اړه دغه ناسم ذهنیت د خپرېدو لاملونه کوم دي؟

کاکړ وايي چې په اصل کې له پاچا امان الله سره بېعدالتي شوې ده. کلونه کلونه د هغه نوم نه اخیسته کېده، او دارالامان په نوي کابل واړول شو. خو په افغانستان کې نوې په واک شوې کورنۍ، له پخوانیو واکمنو کورنۍ سره همداسې بېعدالتي ګانې کړې دي. نو د امان الله په اړه نه یوازې بحثونه ونه شول، انتقادي بحثونه هم پرې ونه شول، بلکې د هغه په اړه سطحي او ناسم ذهنیت خپور شو. په دې د امان الله واکمني هغسې چې وه ونه پېژندل شوه. خو دی اوس پلویان او مخالفان لري او په اړه یې احساسات پارېږي. دا به له دې امله هم وي چې افغان کلتور په یوه کرښه ییز فکر جوړ دی: نیکي یا بدې، غندنه یا

ستاينه، کفر يا اسلام، تور يا سپين او نور. کاکړ وايي چې دا به د اوبستا په حواله د سپيټامه ته منسوب د اوسپنه، زردبښت فکري ميراث وي چې نړۍ يې د دوه گونې مفکورې د نيکي خداى او د بدى خداى باندې وېشلې وه.

اوس خو د يوې خوا د رسمي پانو د ارشيف نشتوالى هم د تاريخي موضوعاتو په اړه د متوازنو او افابي اثارو ليکل ستونزمن کړي دي او د بلې خوا د يوه کرښه ييز کلتور جزمي توب له کبله د دين په نامه حيرانوونکي عملونه، ليکنې او تلقينونه کيږي. له نېکه مرغه په دې وروستيو کې، د نويو تعليم کړو، ازادي پالو په هسکېدلو سره په افغانانو کې انتقادي روحيه توکېدلې، او هيله کيږي چې وروسته به څو کرښه ييز فکر د دغه منحط يو کرښه ييز فکر ځاى ونيسي او د متوازنو او انتقادي ليکنو له پاره به ډگر هوار شي، چې دا کار به د فرد، ډلې او ټولني د پېژندلو په لار کې غټه مرسته کړي وي.

اوس به وگورو چې ولې امان الله خان خپله واکمني له لاسه ورکړه، په داسې حال کې چې دى په ۱۹۱۹ کې د دغسې افغانستان واکمن شو، چې ټينگ مرکزي حکومت او ځواکمن پوځ يې لاره او په خزانه کې يې نږدې ۱۵۰ ميليونه روپۍ شتون درلود. پاچا د بشپړې خپلواکۍ په کتبلو سره، په ولس کې زيات منلى و، خو لس کاله وروسته اړ شو چې د خپلې کورنۍ سره د هغه وطن نه د تل له پاره ووږي چې ده به يې په اړه ويل: «د وطن د خدمت نه پورته بله مينه نه لرم»

د پاچا امان الله لومړۍ غټه ناکامي په منځنۍ اسيا کې وه، چې هلته يې په ملکي جامو کې سرتيري واستول او ډېرې بيسې يې ولگولې په دې هيله چې هلته به د اسلامي کانفدرېشن مشر شي، خو هلته د ده ټول کوشنونه او لگښتونه بایزېه شول چې د مخه پوره رڼا پرې اچول شوې ده.

د پاچا بله غټه ناکامي په ۱۹۲۴ کال کې د خوست بلوا وه چې افغانستان ته کرانه تمامه شوه. د فيض محمد په روايت له دواړه خواوو نه ځوارلس زره کسان له منځه لاړل او حکومت ته دېرش ميليونه روپۍ تاوان واوښت. ټول سمونونه چې تر دغه وخت شوي وو لغو شول. دغه تراژيدي د پاچا امان الله له پاره د عبرت درس کېدلې شو، خو هغه ترېنه زده کړه ونه کړه او څلور کاله وروسته په ۱۹۲۸ کال کې يې د لومړۍ دورې تر سمونونو په کراتو ډېر پاروونکي سمونونه پيل کړل چې نږدې ټول يې په افغانانو په حکومتي زور د اروپايي ژوند شپوه او دودونو تپل وو، چې پايله يې د افغانانو وژل کېدل، د امانې نظام نسکورېدل او له وطن نه د هغه د کورنۍ وتل و. د معاصر افغانستان په تاريخ کې دا يوه بېساري او دردونکې تراژيدي وه. په دغو ټولو پېښو کې د پاچا رول اساسي و.

يا په پورته يادو شويو پېښو کې د برتانويانو لاس و؟ په هغه وخت کې په عام ډول او اوس تر يوې کچې عام ذهنيت دا دی چې په دغو پېښو کې برتانويانو لاس درلود. کاکړ وايي چې «امان الله خان له خپلواکۍ کتلو نه وروسته د هغوی [برتانويانو] پر ضد عمل کړی نه دی» ۴۹۴ ان د هغو په کټه بې ډېر کارونه کړي دي چې د مخه يې يادونه شوې ده.

فيض محمد د انگرېزانو ضد تاريخپوه وايي چې «هره پېښه يا سياسي داعيه چې د افغانستان د ننه او په ختيځ او شمالي پولو کې د ملت د ناپوهۍ او وحشت نه او د دولت او حکومت د ناسمو کړو، چلند، فشار او کرکې له مخې شوې وي يا وشي، د خپلو ناوړه کړو پايله يې نه بولي، د انگليس د دولت په حرص يې اچوي» ۴۹۵ (فيض محمد صفحه ۳۱) په خپله امان الله هم د خپلې ناکامۍ پرې په بل چا نه بلکې په خپلو وطنوالو اچوي. په بمبي کې چې دی اروپا ته د تگ په لار کې تم شوی و، د پښتنو لوی مشر پاچا خان ورته خان ورسوه، او ورته وويل چې د دې له پاره چې په افغانستان کې د جنگ مخه ونيول شي، ته بيا د مخه شه او د سرحد [پښتونخوا] پښتانه به دي ملا په ټينگه وتړي. خو هغه صاف ورته کړه چې "بس زما کار ختم شو. ما لس کاله د دې قوم خدمت وکړ. په دې لسو کالو کې ما په وخت ډوډۍ نه ده خوړلې، د سحر نه مي تر ماښام کار کړی، د خپلې ښځې او زامنو نه خبر نه وم. د شپې به بيا د دوی په فکر کې وم، چې دوی به څنگه ترقي وکړي. د دوی په صله کې زه قوم قادياني او کافر کړم." پوهاند ډاکټر وقار علي شاه کاکاخېل چې د ۱۹۲۸ او ۱۹۲۹ کلونو د پښتون مجلې د ليکنو پر بنسټ د پاچا امان الله په اړه ليکنه تمه کړې، دغې نتيجه ته رسېدلې چې: «زه تر قيامته پورې د دې خبرې منلو ته تيار نه يم چې د افغانستان انقلاب د بيروني سياست د مکارۍ نتيجه ده.» ۴۹۶ (۲۰) ليکوال عزيز هندي هم د انگرېزانو د لاس وهنې په اړه وايي چې «موږ په هېڅ ډول په انگرېزانو دا تور نه شو لکولی چې د افغانستان د ۱۹۲۹ کال په پاڅون کې يو ډول د هغو لاس و.» ۴۹۷ (عزيز هندي، ۶۵۳) د برتانويانو د لاس وهنې په اړه د نامتو انگليس، لارنس، نوم هم راوړل کيږي، چې هغه په لومړي نړيوال جنگ کې عربان د عثماني امپراتوري په وړاندې په بري سره هڅولي وو، د پاچا امان الله په اړه پښتانه هم لمسولي دي. خو د دغې وينا مدعيان دې ته متوجه نه دي چې هغه د مکرم شاه په بدل نامه د ۱۹۲۸ کال له مې نه وروسته په کراچي او ميران شاه کې د برتانيې فضايلې قوه کې خدمت کاوه، حکومت يې هغه د ۱۹۲۹ کال په جنوري کې په بېره انگلستان ته واستوه. ۴۹۸ (ادمک، ۱۴۲، سټيورټ، ۴۹۱) په کابل کې د امان افغان ورځپاڼه د هغه له وظيفې نه خبره وه او په اړه يې راپورونه له مبالغې نه ډک کتل.

د پاچا امان الله په وړاندې د وروستيو پاڅونونو په اړه د هغه خپل نظر قاطع دی، چې ليکواله ستیورټ يې په دغه ډول بيانوي (مخ ۵۱۱): "امان الله برتانيه د هغه پر ضد اغتشاش کې تېره کړه." پاچا خپل دغه نظر د شيکاگو تربیون جورنالست، لېري روی (Larry Rue) ته هغه وخت ښکاره کړی و، چې هغه د مرکې له پاره په خاصه الوتکه کې د ۱۹۲۹ کال په فبروري کې کندهار ته ورغلی و. پاچا د عبدالوهاب طرزي، د محمود طرزي زوی، په ترجماني هغه ته دا هم ويلي و، چې "ملايانو يې مخالفت کړی، بېله دې چې پيسې ورته ورکول شوي وي." ۴۹۹ هغه داهم ويلي و، چې "دی پوهيري چې سقاو زوی د سفارت په وره کې له همفریز سره خبرې کړي وې، خو د هغه په نظر دغه خبرې يوازي د سفارت د حفاظت په اړه وې."، خو د هغه په نظر د هغه هغو کوشنسونو چې مطلب يې د ايران، افغانستان، ترکيې، او روسيې سره متحد کول و، برتانويان پارولي وو، چې خلغ يې کړي، خو دوی يې ويلو ته زړه نه کاوه. برتانويانو به ځکه په دې اړه څه نه ويل چې د دغسې اتحاد امکان بيخي لږ يا هيڅ نه و، او هغه هيڅ موضوع شوې نه وه.

پولادا وايي او دليل راوړي «چې برتانوي هند په افغانستان کې له کېدوې نه ډېر خطر محسوساوه نسبت دې ته چې افغان واکمن دې ورسره دوستي ونه پالي. انگرېزانو خپله کتبه په دې کې ليدله چې د يوه قوي افغان واکمن سره معامله وکړي او د مرستو له لارې يې دوست کړي.» ۵۰۰ د پولادا په اند، خورا ډېر مشکل او نږدې ناممکن کار دا دی چې د دولت د واکمن پر ضد دې مخفي استخباراتي عمليات وشي او د رسمي استخباراتي سندونو په دوسيو کې دې هيڅ ډول نخښه ونه موندل شي.

تيخونوف هم وايي چې «په هره اندازه چې د امان الله خان وضعه خرابېده ده په همغه اندازه د برتانيې په امپراتوري باندې تورلکاهه چې د ده پر ضد دسيسه سازمان کوي. خو ان د خپلواک هند په ارشيفونو کې داسې اسناد په لاس نه دي راغلي چې د دې ادعا رښتينوالی وښيي. د تېرو شلو کالو په جريان کې په انګلستان کې اطلاعاتي، امنيتي او د بهرنيو چارو د وزارت پټ اسناد ښکاره شول او ډېرې مسلې روښانه شوې خو داسې اسناد نه په سترگو کېږي چې وښيي چې د امان الله خان نسکورېدل د انګلستان د استخباراتو د سازمان د عملياتو پايله وه.» ۵۰۱

باندني عوامل چې په پورته ډول د پاچا په مسافر کېدلو کې دخپل نه وو، هغه به په خپله د پاچا اصلاحات او د حکومتي عمالو کړه او د هغو په وړاندې د خلکو غبرګونونه وو، چې له امله يې له وطن نه ووت. په اصل کې دا خلک دي چې پيښې رامینځ ته کوي، او تاريخ جوړوي، په تېره هغه وخت چې دوی وپاړيږي، او ټولنه دينامیکه شي، لکه د

پاچا امان الله په وخت کې چې همدغسي وشول. د افغانستان په معاصر تاريخ کې دا لومړی وار و چې حکومت په پراخو اصلاحاتو لاس پوري کړ، چې ځينو يې خلک مجبورول اروپايي دودونه او ژوند طرز غوره کړي، او خپل رواجونه او دودونه پرېږدي. د امير عبدالرحمن په وخت کې حکومت د لومړي ځل له پاره سيمي او کلي ته ننوت، خو د خلکو کلتوري ارزښتونه يې په خپل حال پرې ښوول. سره له دې هم په وړاندي يې پاڅونونه وشول، خو حکومت هغه په پياوړي پوځ وځپل. د پاچا امان الله په وخت کې حکومت هم د خلکو کورونو ته ننوت او هم يې ښځې او نارينه مجبورول چې خپل ژوند طرز اروپايي کړي، او کافي پوځ يې هم نه لاره. دا د سليم عقل پر خلاف کار و. څومره چې يو څوک د پاچا امان الله سياستونو او کړو ته ځير کېږي، هغومره حيرانېږي. پاچا امان الله په خپل باندني شپږ مياشتني سفر کې تر دې حده د اروپايي کلتور تر اثر لاندې شوی و، چې لکه نور يې نه غوښتل چې په خپلو شېلو افغانانو واکمني وکړي. که داسې نه وای هغوی به يې نه مجبورول چې خپل د پېړيو کلتوري ارزښتونه پرېږدي، هغه هم په حکومتي زور او سمدلاسه، او په عوض کې د اروپايي کلتور ظواهر ومني، چې نه يې غوښتل او نه يې ورته ضرورت لاره. هغه دغومره پاروونکي وو چې هغه اوس هم څوک په افغانانو تپلی نه شي.

دا چې امان الله ټينگ وطنپال او د پرمختگ او عصريت غوښتونکی و، په دې کې هېڅ شک نه شته. ده د خپلواکي په کتلو، او د عصري پوهنې په پراخولو او خلکو ته د برابرې حقوقو په خوندي کولو، او د ټولني په مدني کولو سره خپل ولسپال توب هم تثبيت کړ. هم يې ځوانان او ځوانانې د زده کړې له پاره، د حکومت په لگښت، باندنيو هيوادونو، په خاص ډول ترکيې، ته واستول، او هم يې د ننه په وطن کې، په کابل ښار او ولايتي ښارونو کې، ثانوي او مسلکي ښوونځي پرانيستل. په خپله يې هم پوهنې ته خاصه توجه وکړه. هغومره چې ده عصري پوهنې ته توجه کړې، بل افغان واکمن نه ده کړې. داسې هم ده د ليسي فېر يا ازاد مارکېټ په غوره کولو سره پانگه ورو ته ممکنه کړه. د لگښتي مالونو له پاره کارخانې جوړې کړې. هغوی همدغسي وکړل، او دغه لړۍ روانه وه. په نتيجه کې حکومتي عايدات يو څه ډېر شول. په ښهرازو مځکو باندې د جنس پرځای د نقدي مالياتو په ايښودلو سره هم دغه هڅه پياوړې شوه، چې مځکه وال مځکي ښي ودانې کړي او شاري مځکي کرنيزې کړي. له دغو ټولو انکشافاتو سره فردي ازادې هم ملگرې شوه. خو دا د پاچا کلتوري سياستونه وو، چې په پای کې يې دغه ټول انکشافات په صفر کې ضرب کړل. ارواښاد سيد شمس الدين، چې د هغه وخت زلی و، په دې اړه داسې وايي چې: "با تمام اين فضائل و مزايای دوره امانی، امان الله خان مرتکب سهوهای بزرگی هم شد، که

منجر به اشوب افغانستان و سرنگوني خود او شد. او در عصري ساختن مملکت از عجله و ناسنجيدگي کار ميگرفت. او فريفته ظواهر غرب بود و بيشتر از تحمل به عقائد به نو آوري ها دست زد، که مقبوليت و شهرت نیک خود را از دست داد او خود را پادشاه انقلابي ميگفت و حق هم داشت که او را انقلابي بگویند، اما قوتي را که چنین انقلاب اجتماعي بکار دارد با خود نداشت. ماشين عسکري و جنگي او ضعيف و غير فعال بود. پشتيباني يک گروه قوي مردم را که با او همناوي داشته باشد، هم نداشت و در همکاران خود مردمان شايسته و لايقي را هم کمتر داشت، که درين راه مويد و مددگار او باشند." (مجروح، ص ۴۰)

د ده واکمني تر زياتې اندازې اتوکراسي وه. وروستی بېلکه يې هغه وه، چې د ۱۹۲۹ کال د جنوري په ۱۳ مه شپه، همدا چې په قلعه مرادبېک کې د خپلې وړې، مخکښې قوې له دراماتيکې نښتې له ماتې نه خبر شو، سمله لاسه له پاچايي نه لاس په سر شو، بېله دې نه چې د چا سره يې مشوره کړې وي، که څه هم د ده استعفا ټول ملت اغېزمن کاوه. دغه وخت حکومت او پوځ پر ځای او د کابل ښار دفاعي ترتيبات هم ټينک وو، خو دی د هغو پېښو د ادارې نه عاجز شوی و، چې د ده د سياستونو او چلندونو زېږنده وې. په دغه حال کې دی په خپل ژوند ووېرېده، او غوښته يې چې څومره ژر کېږي، له کابل نه بهر شي. بيا نو ده په همغه نيمه شپه کې خپل مشر ورور وهڅوه چې د ده پر ځای پاچا شي، که څه هم هغه نه پاچايي غوښتله او نه يې کولی شوه. پېښو درې ورځې وروسته د دغې پرېکړې ناسم توب وښود او د کلکان حبيب الله د امير په نامه د جگړې پرته د کابل په تخت کېښناست. په دې توگه د پاچا ټول سمونونه هيڅ شول، په کابل کې سمونپال زلميان وځپل شول، قانون او قانوني حکومت مفکورې هوا وکړه، د کابل ښار نږدې ټول کورونه چور او لوټ شول، دولتي خزانه له پيسو نه خالي او د عصري کېدلو غورځنگ په تپه ودرېد او افغانستان کلونه کلونه بېرته پاتې شو.

پولادا ډاډه نه دی چې امان الله خان به د خپل نيکه کتاب «تاج التواريخ» لوستلی وي. امير عبدالرحمن د قومونو زور وټکاوه او عسکري قدرت او اداري موسسات يې رامنځ ته کړل. د ملي دولت د پرمختيا له پاره يې په ښايسته کچه داخلي انسجام، د بهر په مقابل کې امنيت او ځمکنۍ بشپړتيا ته پاملرنه وکړه. امان الله خان د ۱۹۱۹ نه تر ۱۹۲۹ پورې هڅه وکړه چې د سياسي، اقتصادي او ټولنيزو سمونونو له لارې ملي يووالي غښتلی کړي. خو ناکام شو. ۵۰۲

په کابل کې د انگرېزانو سفير همفريز امان الله خان «دارن» سرې گڼلی و په دې چې د

سقاو د زوی په وړاندې يې لومړی کابل او ورپسې کندهار پرېښود. دغه شان برتانوي تاريخپوه او جنرال جورج مکمون د امان الله د سمونونو سره خواخوږي څرګندوي، خو د هغه چلند چې خپل هېواد پرېږدي، حيران کړی دی. مکمون چې د امير عبدالرحمن کلک ارادتمن و، د امان الله خان بې زړه توب ته ګوته نيسي چې که چېرې دی د خپل نيکه امير عبدالرحمن په پل تللی وای او زور يې کارولی وای، افغانستان به يې د پرتم په ستونو درولی وای. پولادا وايي چې امان الله خان د روسيې لوی پېتر ته ورته و چې د هغه غوندې يې هڅه وکړه چې په افغاني ټولنه کې د تورتم پر ځای د عقل ډېوه ولکوي خو دا چې له خپل نيکه عبدالرحمن خان نه يې زياته حکومتي برلاستيا او ټولنيزه ارامتيا په برخه شوې وای. ۵۰۳

د پولادا په اند د امان الله خان او نادر خان تر منځ ټکر په دې راغی چې نادر خان د سمون پلوي و په دې شرط چې هر څه گام په گام وشي او د دودونو سره ټکر راولاړ نه شي. خو درې سړي محمود طرزی، محمود سامي او محمد ولي خان دروازي د دې پلويان وو چې ترکي منصبوالان دې عسکري مودرنه کړي. نادرخان د سمونونو د بېرې په اړه خپل نظر پاچا امان الله خان ته وړاندې کړ. خو امان الله خان پورتنیو درې تنو ته زياته پاملرنه کوله. په سمونونو کې د بېرې برسېره، نادرخان پاچا امان الله خان ته د عسکرو موضوع وړاندې کړه. نادرخان امان الله ته په ډاګه کړه چې د عسکري پورورې يې او قدرت ته يې رسولی يې. خو پولادا وايي چې دغه يادونه په پاچا امان الله خان بده ولکېده (پولادا، ۱۱۷)

په ۱۹۲۴ کال کې د خوست د بلوا پر مهال د محمد يعقوب خان د مينځې زوی عبدالکريم د هند د تبعيد نه افغانستان ته ننوت بيا د ۱۹۲۸-۱۹۲۹ د نارامۍ په مهال د سردار محمد ايوب خان زوی په مومندو کې راښکاره شو او د بادشاهۍ دعوه يې وکړه. پولادا په لاهور کې د يوه مرکبي له خوږې کاري چې دغو دواړو افغانانو د انګرېزانو د تماس له مخې د امان الله ضد بغاوت کې برخه اخېستې وه. خو پولادا زياتوي چې ښايي دواړو سردارانو به د انګرېزانو په وړاندې د خپل اعتبار د زياتولو له پاره دغه اواز خپره کړې وي. خو د ادعا له پاره رسمي لاسوندونه نه شته. ۵۰۴ اداميک هم وايي چې د ۱۹۲۴ کال په پای کې برتانوي مامورينو «غلي شان» د امير محمد يعقوب خان دوه زامن ونيول. دواړو غوښتل چې د غلزي تاجرانو په څېر افغانستان ته ننوزي. اداميک دا هم وايي چې «په برتانوي ارشيفي چينو کې کې يې داسې کوم ثبوت ونه شو ميندلی چې د عبدالکريم د ارمان سره دې د برتانوي هند د حکومت ملاتړ وښيي» ۵۰۵

پایلیک

کاکړ د پاچا امان الله د لسو کلونو د واکمنۍ د څېړنې په پایله کې وايي چې په معاصر افغانستان کې پاچا امان الله يوازینی واکمن دی، چې د عموم په فشار سره له وطن نه د تل دپاره ووت، ټول سمونونه یې په تپه ودرول شول، اساسي قانون یې لغوه شو او ټول دولتي نظام یې نسکور شو او د ناکراري يوه نوې دوره پیل شوه. ټولنه په دغو ټولو پېښو سره په ژور ډول زیانمنه شوه او افغانستان د تمدن له کاروان نه کلونه کلونه وروسته ولويد. د کاکړ په اند «دا په واقع کې ملي غميزه وه.» او دی دا پوښتنه کوي چې د دغې غميزې په واقع کې کومو کسانو او ډلو لاس درلود او لاملونه یې څه وو؟

نوموړی وايي چې په دې کې شک نه شته چې د پاچا ځینې سمونونه یې ځایه وو، خو ډېر یې په تېره د پوهنې او د هېواد د صنعتي کولو سمونونه بنسټیز او اړین وو. دومره وو چې ټول یې په ګړندی توګه او په زور او ځینې یې لا په ننداره ییز ډول پلي کېدل. په اصل کې ټولو سمونونو لږو ډېر ملکي ماموران، پوځي افسران، قومي مشران، ملایان، قاضیان، روحاني پیران او محمد زایي سرداران اغېزمن کړل. د دې لامل دا و چې د دولت له خوا په وړیا توګه د پوهنې او روغتيايي اسانتياوو د برابرولو، د فترتي ادارو د زیاتولو، د سفارتونو په چلولو، د نویو مامورانو او د باندینيو کارپوهانو تنخواه ګانو، د نویو ودانیو د جوړولو او د پوځي وسلو د پېرولو له امله حکومتي لګښتونه دومره ډېر شوي وو، چې په دولتي عایدونو سره نه پوره کېدل. برسېره پر دې د خوست بلوا هم اقتصاد او هم د حکومت مالي توان ته ډېر زیان ورساوه. انګرېزانو هم هغه پیسې ودرولې، چې افغانستان ته یې په اصل کې د هند د ساتنې په موخه له ۱۸۸۳ کال نه ورکولې.

له دې کبله پاچا اړ شو چې د مخکې مالیات څو وارې ډېر کړي، د ځینو ډلو او کسانو دودیز مادي امتیازونه کټ کړي او افسران وهڅوي چې له خپلو څو میاشتو تنخواه نه حکومت ته د بسپنې په نامه تېر شي. څنګه چې د ملکي مامورانو او پوځي افسرانو تنخواګانې د هغو د کورنیو لګښتونه پوره کولی نه شول نو ملکي مامورانو د دولتي پروژو او خلکو نه او پوځي افسرانو د سرتېرو له جبرې او تنخواه نه ناوړه ګټې ترلاسه کولې. له دې کبله نارضايت عام و، خو دغه نارضايت د دولتي نظام د نسکورېدو لامل نه شي کېدای کله چې د هغه سرچلونکي «په ترکیب کې سره همغاري، په موخه کې سره یو موټی او په هوډ کې ټینګ او په نیاو باندې ولاړ وي.» خو د پاچا امان الله د نظام سرچلونکي دغسې نه وو او پوځ یې هم وړ و.

د پاچا د اوښي، محمد حسن له خولې نه ویل شوي، چې د ترکيې مشر اتا ترک پاچا

امان الله ته وويل چې که غښتلې پوځي ځواک ونه لري، سمونونه به سرته ونه رسېږي. خو امان الله خان د هغه په سپارښتني عمل ونه کړ او خپل پوځ يې له پوره خپلواکۍ د کتلو نه وروسته د پلار او نیکه له پوځونو نه ډېر وور کړی و، په دغه خام فکر چې «افغانستان ته له باندې نه خطر متوجه نه دی او اوس د قلم وخت دی نه د تورې» څنگه چې افغانستان د ده په وخت کې د لومړي ځل له پاره د ۱۱ جنګي الوتکو په لرلو سره د هوايي ځواک خاوند شو، شايد د ده په دې فکر چې پوځ لږ کړي اغېز کړی وي. سربېره پردې دغه کم شوی پوځ هم د محمد ولي په لاس هغه وخت چې د دفاع وزير و او وروسته د شينوارو په ياغيوتوب سره نور هم اېتر شو.

کاکړ وايي چې د امان الله د ستونزو سرچينه د هغه د سمونو پاروونکي برخې، د هغه خپل شخصيت، د هغه زورواکي، اتوکراسي او د دوهمې دورې سمونونه او په ځانګړې توګه د کابل د نارينه وو او ښځو اړ کول وو، چې د اروپايي ژوند شېبه غوره کړي او خپل ژوند شېبه، هغه هم سمدلاسه او په حکومتي امر، بدله کړي. په پايله کې وګړي ترېنه بېګانه، مذهبي مشران ورسره مخالف او خپل چارواکي يې ورنه بې مینې شول. په بحراني حالت کې د ځان په وېره کې شو، او د خپل پوځ د يوې وړې مخکينۍ برخې په دراماتيکې ماتې سره د پاچايي نه لاس په سر شو، که څه هم د کابل ښار دفاعي ترتيبات ټينګ، پوځ او حکومت پرځای او د کابل ښار ترتيبات هم ټينګ وو، ۵۰۶ د دغسې غريب، نالوستي کليوال په لاس د افغانستان د پاچايي نظام چپه کېدل په معاصر افغانستان کې يوه بېساري پېښه ده.» ۵۰۷

اشرف غني د پاچا امان الله خان د لس کلني واکمنۍ دوره د افغانستان د تاريخ نامتو څپرکي گڼي او وايي چې سردار محمد داود د خپل صدارت او بيا وروسته په خپل جمهوريت کې، ظاهرشاه د ډموکراسۍ په لسيزه کې او چپيانو د خپلې واکمنۍ په مهال په يوه يا بل ډول د امانې دورې نامتو اجندا ته راوګرځېدل چې دغه نامتو څپرکي پای ته ورسوي. خو د دوی نه هېڅ يوه ونشو کړای چې پرله پسې ثبات تامين کړي. د اوسني ځوان نسل دنده دا ده چې په تدبير، حوصله او واقعيت ته په کتو اوسنی نظام په يوه باثباته او د خلکو واکمنۍ پر نظام بدل کړي چې د تېرو غمجنو پېښو د تکرارولو مخنيوی وکړي او د هېواد پرله پسې پرمختګ له پاره زمينه برابره کړي.

حبيب الله کلکاني يا د سقاوړو واکمني

د مخه مو يادونه وکړه چې د پاچا امان الله د دولت لور رتبه چارواکو حبيب الله ته بيعت ورکړ. د ۱۹۲۹ کال د جنوري د ۱۷ مې نېټې د عنایت الله خان او د نورو لور رتبه چارواکو بيعت نه وروسته د حبيب الله واکمني پيل شوه. حبيب الله سيد حسين د سلطنت نایب او د جنگ وزير، شهرجان خان صاحبزاده د دربار وزير، عطاالحق خان صاحبزاده د شهر جان خان ورور اول د هوايي قوماندان او بيا د بهرنيو چارو د وزير، محمد کريم خان صاحبزاده د شیرجان ورور د ضبط احوالات رييس، خپل ورور حميد الله د سلطنت معين، ملک محسن د کابل والي، عبدالغفور تگابي د کورنيو چارو وزير او پردل خان د لوی درستيز په توگه وټاکل. ميرزا محمد قاسم خان د مزار د تنظيميه رييس، سياسالار عبدالرحيم خان د هرات والي، عبدالقادر خان د کندهار والي او محمد صديق خان صاحبزاده د شیرجان ورور د جنوبي ولايت والي په توگه وټاکل شول. د حبيب الله په کابينه کې د پوهنې او عدلي وزارتونه نه وو. د ماليې، سوداگرۍ او د کرهڼې وزارتونه د عمومي مديریتونو کچې ته راټيټ شوي وو. د ودانيو جوړولو اداره د منځه لاړه. همدارنگه ستره محکمه او څارنوالي هم شتون نه درلود. ۵۰۸

حبيب الله خپله کړنلاره داسې اعلام کړه: «مه (من) اوضای (اوضاع) کفر و بې ديني و لاتي گری حکومت سابق ره ديده و برای خدمت دين رسول الله کمر جهاده بسته کدم، تا شماییادرها ره (برادرها را) از کفر و لاتي گری نجات بتم. مه بادازی (بعد از این) پیسه (یعنی پول) بیت الماله را به تعمیر و متب (مکتب) خرج نجات کدم (نخواهم کرد) بلکه همه ره به عسکر خود میتم (میدهم) که چای و قند و پلو بخوردن، و به ملاها میتم که عبادت کنن، مه مالیه سفای و ماسول [محصول] کمرک نې کیم [کیرم] و همه ره بخشیدم، و دگه، مه، پاچای (پادشاه) شما هستم، و شما رعیت مه میباشین، بروین باد ازی [بعد از این] همیشه سات (همه وقت) خوده تیر کنین، مرغ بازی، بونده بازی کنین، و ترنگ تانه خوش بگذرانین...» ۵۰۹. محمد ابراهیم پاریزي د حبيب الله کلکاني دا وینا «ساده لوح ترین نطق شاهانه تاریخ» ۵۱ بولي.

رحمت ربي زیرکیار وایي چې «سقاو ځوی د اعليحضرت امان الله خان پاچاهي «لاتي کري» کتلي وه. «لات» د اسلام نه وړاندې، د جهالت د دورې يو بت و. لاتي کيرې د بت پرستی او کفر سره اړیکمنه وه، ... په افغانستان کې يو سردار چې په برتانوي هند کې يې د انگرېزانو سره ډېره راشه درشه لرله، په لاتي سردار مشهور شوی و. لاتي سردار يعنې هغه څوک چې د انگرېز سردارانو (لوردز) څېرې پېښې به يې کولې.» ۵۱۱

د ۱۹۲۹ کال د جنوري په ۱۸ مه نېټه د حبيب الله پلويانو چې په اساسي توگه ملايان

او خانان او يو شمېر د پخواني رژيم اشخاص وو يوه ۱۹ ماده يزه اعلاميه ومنله چې په حقيقت کې يې د شرعي فتوې بڼه درلوده چې په هغې کې امان الله په کفر او الحاد محکوم شوی او خلع اعلام شوی و.

د سمونونو د سملاسي درولو په منظور حبيب الله اعلام وکړ «د حنفي مذهب خلاف بدعتونه منسوخ، د جبري عسکري خدمت منع کول او هغه په خپله خوښه کول، بنوونځي تړل شوي او نوي ماليات لغوه شول.» ۵۱۲ همدارنگه نوي رژيم د پخوانيو دولتي جوړښتونو د منځه وړلو په اړه وويل چې ټولې ادارې، زيات شمېر موسسې چې زيات لکښتونه غواړي لغوه شوې. د هغو پر ځای به پيسې په اړينو چارو ولگېږي او ملايانو ته به ورکړل شي چې خپلې ديني چارې پرمخ بوزي،

حبيب الله د ساداتو، ديني عالمانو، شيخانو، حضرتانو او ځايي خانانو حقونه او امتيازونه چې د امان الله خان د رژيم له خوا لغوه شوي و بيا ومنل. حبيب الله د پخواني رژيم ټولې نظامناوې او قوانين لغوه کړل، او د هېواد په مطبوعاتو يې ټينگ کوزار وکړ.

ريا تالي ستېوارت ليکي چې د سقاو زوی د بهرنيو هېوادونو دپلوماتانو ته ويلي و چې «تاسې ښه خلک ياستئ، معاش به مو زيات کړم.» ۵۱۳ نوموړی د سقاو د زوی بهرنيو دپلوماتانو ته دا خبرې ته داسې کتنه کوي: «ماشومگوټی نه پوهېده چې د کور دپلوماټيک تنخواوې د ده په اختيار کې نه دي.» ۵۱۴ دغه شان يې يوه ږيره ور فرانسوي ته ويلي و: «زه خوښ يم چې په فرانسه کې هم ديني سړي شته.» ۵۱۵

برتانيې د سقاو رژيم د دېفکتو په توگه په رسميت وپېژاند، خو د افغانستان نه يې خپل سفارت وايست په دې چې ... د سقاو په وړاندې د قدرت د هغه راتلونکي مدعي سره ازاد لاس ولري چې د برياليتوب هيله ورنه کېږي. ۵۱۶ همدارنگه د سقاو د زوی د واکمن کېدو وروسته برتانيې په هېواد کې د انارشۍ او د نامنۍ له امله د خپلو دپلوماتانو د وتلو پرېکړه وکړه او نورو سفارتونو د دپلوماتانو د وتلو له پاره يې د انگليسي الوتکو په واسطه خپل تياری څرگند کړ. انگليسي الوتکو به هره ورځ نږدې دهرش تنه دپلوماتان پېښور ته وړل چې په ۲۳ الوتنو کې ټول ۵۸۶ باندینيان پېښور ته يوړل شول. ۵۱۷

د شوروي اتحاد جاسوسي اداره د سقاو زوی پلوي وه په دې چې د سقاو زوی يې وژلې طبقې ته منسوب و او د شورويانو سره يې د اسلامي بسماچيانو په ضد مبارزه کې مرسته کولی شي. خو د شوروي اتحاد د بهرنيو چارو وزارت وېره لرله چې د سقاو زوی د انگرېزانو سړی دی او د بسماچيانو سره به يوځای د شوروي په وړاندې راپورته شي.

شوروي اتحاد هم پرېکړه وکړه او په پايله کې يې خپل سفير او د سفارت يو شمېر

غړي د افغانستان نه وايستل. د دې سره سره په کابل کې د شوروي اتحاد، ايران او ترکيې سفارتونه فعال وو. خو په افغانستان کې د شوروي پوځي لاسوهنې د دواړو هېوادو تر منځ اړيکې ترينکلې کړې. شوروي اتحاد يوه ډله پوځيان چې افغاني جامې يې په تن وې د يو شمېر افغانانو په گډون د غلام نبي څرخي او ډگروال پريماکوف په مشرۍ افغانستان ته راولېږل چې د امان الله خان د بيا په واکمن کېدو له پاره مرسته وکړي. دغې ډلې په زياته چټکتيا سره مزار شريف او تاشقرغان ونيول. خو کله چې شوروي اتحاد خبر ترلاسه کړ چې امان الله خان وطن پرېښود او ايتاليا ته روان دی نو خپله پوځي ډلگۍ يې بېرته وغوښته او شوروي اتحاد ته ستانه شوه. د ايتاليا، المان او فرانسې سفيرانو او کورنۍ د کابل نه ووتل. د برتانې سفير همفريز په وروستۍ الوتنه کې د افغانستان نه ووت. په دې توگه د سقاو د زوی رژيم په نړيوال ډگر کې گوښه او يوازې پاتې شو.

فيض محمد کاتب وايي چې حبيب الله کلکاني او ملکرو يې د هغو نجونو لېستونه پيدا کړل چې ښونځي ته تللې او امر يې وکړ چې هره يوه بايد يوه کوهستاني يا يوه کوهدامني غله ته واده شي. فيض محمد کاتب زياتوي چې «د ژونديو انسانانو څلور ځايه کول، د ښځو او هلکانو په عزت باندې تېری کول، بې گناه انسانان په زندانو کې اچول، غرغره کول او په ناحقه د ويني تويول د سقاوويانو ورځنی کار و.» ۵۱۸ همدارنگه نوموړی وايي چې «... هغه يوه ورځ د دريو هزاره گانو سرونه، چې په اور يې بېريان [وريت] کړي او په لړکيو يې مېخ کړي وه او نولس تنه هزاره بنديان په بازارونو وگرځول او خلکو ته يې وښودل چې هر څوک د خادم دين رسول الله سره مخالفت وکړي عاقبت به يې دغه وي.» ۵۱۹

دی وايي چې د حبيب الله کلکاني ورور حميدالله چې د ده نایب السلطنه و، د جولای په لومړۍ نېټه هغه او پوځيانو يې پر سرچشمه باندې بريد وکړ. د تاجک او هزاره توپير يې ونه کړ او کورونه يې لوت کړل، څاروي يې ورسره بوتل او په پای کې يې د کورونو دروازې وايستلې. حميدالله ۳۴ نارينه او ۴۰ ښځې کابل ته ورسره بوتلې. نارينه يې بنديان کړل او خپلو سړيو ته يې امر وکړ چې ښځې څرخې کړي. ۵۲۰

حبيب الله کلکاني په لږو ورځو کې د ښځو لوی حرم جوړ کړی و. هغه غوښتل چې د سردار نصرالله خان او سردار امين الله خان لوني هم خپلې کړي. خو هغه مهال چې خبر شو چې هغه واده شوې دي نو د هغوی نه يې لاس واخېست او د سردار محمد علي د ښکلې لور سره يې د واده کولو پرېکړه وکړه. حبيب الله کلکاني د پېغلې بېنظير د نامتو انځورگر عبدالغفور برشنا چې په المان کې يې زده کړې کړې وې د خور سره واده وکړ.

بېنظيرې نه غوښتل چې د حبيب الله کلکاني سره واده وکړي. هغې زهر وخورل، خو مړه نه شوه او بيا د نامتو شخصيت اغا سيد احمد په منځکړيتوب د حبيب الله کلکاني او بېنظيرې واده وشو. ۵۲۱ خو عبدالله اميني وايي چې په هغه وخت کې محمدزايي سردارانو يې نظير د سقاو د شر نه د ځان د ساتنې له پاره هغه ته وړاندې کړه. ۵۲۲

په دې اړه د بي بي سي راديو سره د محمد ظاهر شاه مرکه چې د مېرمن مينه بگتاش سره يې کړې د پام وړ ده. ظاهرشاه د مينه بگتاش سره په مرکه کې وويل چې «په څلور کلنې کې مې خپله ښځه ليدلې وه. ډېره ښايسته وه. هغه وخت د امان الله خان د يوه زوی نومولې وه. فکر مې نه کولو چې په افغانستان کې به داسې لويې بدبختۍ راشي. د سقاو مسله (حبيب الله چې په سقاو مشهور و) او نورو داسې حالت منځ ته راوړ چې کورنۍ وېرې اخېستې وې. سقاو ښځه غوښته، خلکو خپلې سترگې پټې کړې وې، هر څوک يې هر چا ته ورکړې (ياني يو د بل سره يې واده کولې)، تر څو سقاو موقع تر لاسه نه کړي چې د يو چا سره واده وکړي. په دغه اساس ما واده وکړ.» نوموړی زياتوي چې «د دې حالت پرته هغه ما ته په لاس نه راتله.» ۵۲۳

حبيب الله کلاکاني والي علي احمد او عبدالواسع اخوند زاده د پښتو مرکې مشر او وروسته د محاکماتو ريس چې د کندهار څخه يې د بنديانو په توگه کابل ته رايبول شوي وو زندی کړل. د سقاو د زوی او د هغه ملگرو د ظلم په وړاندې د خلکو کرکه زياته شوه. په کابل کې د مدرسې يو شمېر زده کوونکو څخه دوو زده کوونکو حبيب الله او عبدالرسول په خپله خوښه وپاتيله چې د سقاو زوی د عيدگاه په جومات کې ووژني. خو دوی د خپلو نامردو ملگرو له خوا د مخه تردې چې دا کار تر سره کړي سقاويان د موضوع نه خبر کړل او دواړه په بېرته زندی شول او راپور ورکونکی قاري دوست محمد هم ورسره زندی شو. ورپسې يوه بله ډله ونيول شوه چې د سقاو د وژلو پلان يې جوړ و. په دغه تور عبدالمجيد خان، سردار محمد عثمان خان، قاضي محمد اکبر خان او د جنگ د وزارت پخوانی مرستيال حبيب الله زندی شول. د سقاو زوی د امان الله خان د مالي وزير هم له دې امله لوی کافر گناه چې بوديجه يې جوړوله.

د روسيې د تاريخ ډاکټر پوهاند ای. افسيانکوف ليکي چې د سقاوي اړدور معنوي زيانونه چې د جگړه يزو عملياتو له امله رامنځ ته شول د افغانستان له پاره ډېر درانه تمام شول. ۵۲۴

د هېواد په ولايتونو کې وضع نارامه وه. د هزاره جات خلکو د سقاو د زوی رژيم نه مانه. حبيب الله کلکاني په کابل کې د خپل حکومت د ټينگېدو وروسته ميرزا محمد قاسم

د مزار د والي اونايب سالار عبدالرحيم خان د هغه خای د پوځ عمومي قوماندان په توگه وټاکل. نایب سالار محمد رحيم خان میمنه او بیا هرات ونيول او هلته د سقاو د زوی حاکمیت ټینګ شو.

د کندهار ولایت څو میاشتي د امان الله خان په لاس کې و. د افغانستان نه د امان الله خان د وتلو وروسته سردار علي احمد خان د کندهار په ښار کې خان پاچا اعلان کړی و تر څو د کندهار ښار د سپاه سالار پردل خان له خوا ونيول شو او سردار علي احمد خان بندي شو او عبدالقادر خان د کندهار د والي په توگه وټاکل شو.

برسېره پر دې حبيب الله کلکاني محمد علم خان شینواري د اعزازي نایب سالار، عبدالرحمن شینواری د فرقه مشر، ملک قیس خان او عبدالوکيل خان نورستاني د مشرقي ولایت د مشرتابه د غړو په توگه وټاکل. په جنوبي ولایت کې چې په واقعیت کې د فرانسې نه د نادر خان په راتګ سره د حبيب الله کلکاني پر وړاندې د مبارزې په ډګر بدل شوی و دوهم ځل صاحبزاده محمد صديق خان د نظامي قواو قوماندان وټاکل شو. د سقاو زوی د نادر خان د همکارۍ د جلیلو په خاطر سردار شاه محمود خان د جنوبي د تنظیمیه رییس په توگه وټاکه. خو هغه د جنوبي نه پاره چنار ته وتښتېد او د خپل ورور نادر خان سره یوځای شو.

په دې توگه نږدې په ټول هېواد کې کپوډي او انارشي خپره وه. د لاروهونکو، او وژونکو په نامه خپلواک جرنیلان او خپلواک کرنیلان په رژیم کې وو چې هر یوه ځانته ځانګړي کسان د حاضرېاشانو په نامه درلودل چې د مرکزي واکمنو په کنټرول کې نه وو او د خپلې خوښې هر ډول ناوړه کړو باندې یې لاس پورې کاوه. د دولت لوړو چارواکو د سلطنتي کورنۍ، د دولت د مخالفینو د بډایه کسانو او سوداګرو شته لوتول، د خلکو مال او ناموس خوندي نه و. د اګست په میاشت کې رژیم د عسکرو تنخوا او حقوق نه شول تادیه کولی او په ټول هېواد کې وضعه نارامه وه.

د مخه مې یادونه کړې وه چې د حبيب الله په اړه کتاب «حبيب الله، زما ژوند له لاروهونکي نه تر پاچا» اصلي نه دی. امریکایي تاریخپوه کریګورین وايي چې «د حبيب الله، زما ژوند له لاروهونکي نه تر پادشاه» کتابې اصلیت تر پوښتنې لاندې دی. دی لیکي چې د دغه اثر «د بیلا بیلو برخو د دقیقې مطالعې او د هغه انګرېزي نحوی زه [ګریګورین] قانع کړی یم چې واقعي نه دی.» ۵۲۵ میر محمد صديق فرهنگ هم دا کتاب «په ښکاره جعلی» بللی دی. د امریکې بل تاریخپوه لیون پولادا هم د دغه کتاب اصلیت ته د شک او جعلی په سترګه کوري او وايي چې دا اثر باید د یوې بلې بې لارې کوونکې دوهمې سرچینې په څېر

اخوا شي. «۵۲۶»

پکتيا ته د فرانسې نه د نادر خان راستنېدل او د هېواد خلاصون

نادر خان د خپلې کورنۍ سره د برتانوي هند په ډېره ډون کې د بې وزلي ژوند تېر کړی و او د انگرېزانو په فکر او خوی ښه پوهېده. نادر خان ځلانده عسکري مخينه درلوده: په ۱۹۰۶ کال کې غونډ مشر شو، په ۱۹۱۲ کال کې يې د منگلو پاڅون مات کړ او د نايب سالار رتبې ته جگ شو، دوه کالا وروسته د سپه سالار رتبه ورکړل شوه او په ۱۹۱۹ کال کې د امان الله خان په حکومت کې د دفاع د وزير په توگه وټاکل شو، د خپلواکۍ په جگړه کې يې د پکتيا په جبهه کې مهم رول ولوباوه. په دې توگه نادر خان د خپل ولس په نظر کې د يوه تکړه او په ځان ډاډه شخصيت په توگه وپېژندل شو. نادر خان د سرحدي سيمو د پښتنو سره اغېزمنې اړيکې درلودې.

انگرېزانو لومړی د محمد نادر خان او د هغه د وروڼو په ويزو بنديز لگولی و په دې چې انگرېزانو نه غوښتل چې امان الله خان خفه کړي ځکه چې هغه «د خپل تخت د گټلو له پاره لکيا و». «۵۲۷» خو کله چې وضع واوښتله، انگرېزي سفير همفريز نور د ويزې خنډول لازم نه گڼل. همفريز په دې باور و چې دغه سرداران وروڼه کېدای شي چې په افغانستان کې «د يووالي له پاره اغېزمن» وگرځي. د برتانيې د بهرنيو چارو وزارت په بېره سره په پاریس کې خپل سفارت ته لارښوونه وکړه چې «ډپلوماتيک ويزې نادر او د هغه وروڼو ته ورکړي.» «۵۲۸»

په دې توگه جنرال محمد نادرخان له فرانسې نه د برتانوي هند له لارې د افغانستان پولو ته په ۱۹۲۹ کال کې راستون شو. هغه مهال چې محمد نادرخان د ۱۹۲۹ کال د مارچ په اتمه له فرانسې نه بمبېي، بيا پېښور او ورپسې پکتيا ته راورسېد، حضرت نورالمشايخ مجددي (حضرت فضل عمر) هم له بمبېي نه پکتيا ته راستون شو. خو امان الله لا د مخه د ۱۹۲۹ کال د جنوري په ۱۴ مه کابل پرېښود او د کندهار ښار ته د جدي په ۲۶ ورسېد. «۵۲۹»

په پکتيا کې د نادر خان خپل دوه وروڼه شاه ولي خان او شاه محمود خان ورسره وو چې هلته ولس د سقاو د زوی د واکمنۍ په وړاندې جگ کړي. په ننگرهار کې محمد هاشم خان او محمد گل خان د سقاو د زوی په وړاندې د ولس د پورته کولو په موخه هلې ځلې کولې. نادر خان او وروڼه يې په دې بريالي نه شول چې د پکتيا او ننگرهار ولسونه په ځان راتول کړي. په دې چې له يوې خوا نادر خان او وروڼو پيسې نه درلودې چې د جنگ سرې او

وسلې پرې راوښيي او د بلې خوا د ولس مشران د سقاو د زوی پلویان وو، ځکه چې د حضرت نورالمشایخ اګلک مجددي د اغیز لاندې وو. د غلجي قبیلو زیات مشران یې د مړیدۍ په کړۍ کې ښکېل شوي وو. له دې کبله نادر خان اړ شو چې د ډیورنډ د کرښې هغې خوا په وزیرو او مسیدو غږ وکړي چې د وطن د خلاصون په لاره کې د ده سره مرسته وکړي.

محمد نادر خان د حاجي نواب خان او الله نواز خان په لاس په برمل کې د وزیرو او مسیدو د لښکر قوماندان جنرال یار محمد خان وزیري ته لیک واستوه: «عزیزانو! د وزیرو او مسودو [مسیدو] غیورو مشرانو، ستاسې مېرانه او شجاعت د خپلواکۍ په جګړه کې راته څرګند شوي دي. نن بیا همغه د مېراني او غیرت کتنه ده. اعلحضرت غازي امان الله خان د یوه سارق او کوتاه طریق [قطاع الطريق] له لاسه خارج ته فرار کړی دی. د هېواد هره برخه د بې اتفاقۍ په اور کې سوځيږي. افغاني ننگ او غیرت دا تقاضا زموږ ټولو څخه کوي: چې په اتفاق او اتحاد سره وطن ته د روانې فېټې نه نجات ورکړو. محمد نادر» ۵۳۰

د وزیرو او مسیدو مشرانو د نادر خان غوښتنې ته مثبت ځواب ووايه او په برمل کې یې پرېکړه وکړه چې د شپږ نیم زره لښکر سره پکتیا ته ننوزي. دغه لښکر د امیر امان الله خان د رانسکورېدو وروسته د حبيب الله د واکمنۍ په وړاندې د امان الله خان د ملاتړ په موخه لا د مخه جوړ شوی و او د ارګون څخه تېر شوی و تر څو د امان الله خان د هغه لښکر سره یوځای شي چې په غزني کې د سقاو د زوی د ځواکونو سره په جګړه بوخت و. خو امان الله خان لښکر په غزني کې مات شو او نوموړي پرېکړه وکړه چې بېرته کندهار ته ستون شي. د وزیرو او مسیدو لښکر په سلطاني پړاو کې خبر شو چې پاچا امان الله خان بېرته کندهار ته تللی دوی په ډېرې ناهیلۍ سره بېرته وزیرستان ته ستانه شول. بیا دغه لښکر د جنرال یار محمد خان وزیري په مشرۍ د نادر خان په ملاتړ پکتیا ته ننوت.

د وزیرو او مسیدو لښکر د ۱۹۲۹ کال د می د میاشتې په ۲۲ مه ارګون ته ورسېد او ارګون یې د حبيب الله کلکاني د پلویانو غونډ مشر عبدالغیاث خان او کنډک مشر سید حسېن خان له لاسه خلاص کړ او دوی یې په عزت سره رخصت کړل.

د وزیرو او مسیدو لښکر په اورګون کې د نظم د راوستو وروسته د خوست په لور وخوځېد. کله چې دغه لښکر خوست ته ورسېد هلته یې د سقاو پلویانو ټینګه مخه ونیوله. خو دغه مهال ځلمی خان منګل د ۷۰ سړو او زمړک خان د اتل بېرک خان ځدران زوی د ۸۰ کسانو سره د وزیرو، مسیدو، دورو او تڼیو د لښکر سره غبرګ شول او

سقاويانو ته يې د يوې جگړې په پايله کې ماتې ورکړه او بيا دغه لښکر د علي خېلو په لور خوځېد او هلته د نادر خان سره يوځای شو تر څو د هغه تر مشرۍ لاندې د افغانستان د ژغورنې پلان جوړ او پلي کړي.

د وزيرستان لښکر د پکتيا د بيلو بيلو قومونو د لښکرو سره يو ځای تر کابله پورې د سقاو د ځواکونو مقاومت مات کړو. په پای کې د وزيرستان لښکر په ډېره مېړانې او سربښندنې اسمايي غر ونيو او د اسمايي غره د نيولو وروسته يې د کابل په ارگ باندې د بريد تياری ونيو. د وزيرستان لښکرو ارگ کلابند کړ او د توپو د گوزارونو لاندې ونيو او چمتو و چې په ارگ ورتوی شي او د سقاو د زوی واکمني ته د پای ټکی کېږدي. خو په ارگ باندې د بريد نه لږ د مخه د ۱۹۲۹ کال د اکتوبر په يولسمه د شپې نهه بجې وې چې حضرت اغا گل مجددي، چې د سقاو زوی ته يې مشورې ورکولې او «ځانته [پې] سلطنت او پادشاهي غوښته او پر ځان باندې يې غلجې تېرونه راټول کړې وو» ۵۳۱ د دوو تنو نورو ملايانو سره د ارگ نه په موټر کې چې سپين بيرغ ورباندې رېښه د جرگې غړو ته د امن په نيت ورغلل. د وزيرستان او د پکتيا د لښکر مشرانو چې شاه ولي خان، شاه محمود خان او محمد گل خان مومند هم په کې گډون درلود سره جرگه شول. د لښکر د مشرانو نظر دا و چې ارگ بايد په زور ونيول شي خو شاه ولي خان او شاه محمود خان په ارگ باندې بريد ته زړه نه ښه کاوه په دې چې د کورنۍ غړي يې په ارگ کې بنديان وو. دغه وخت محمد گل خان مومند د قوم مشرانو ته وړانديز وکړ چې د حبيب الله کلکاني سره د امن پرېکړه د نادر خان دوو وروڼو ته پرېښودل شي ځکه د دوی ناموس د سقاو د زوی له خوا يرغمل شوی دی. جرگې د محمد گل خان مومند وړانديز ومانه. کرنل شاه ولي خان د سقاو زوی ته وليکل: «حبيب الله وروڼه! ته د افغانستان د حکومت غاصب يې او د افغانستان مظلوم ملت دې ټوکر ټوکر کړی دی، اوس ته امن غواړې. زموږ له لوري څخه تا ته امن دی او د خپل ال و عيال سره [د ارگ] د شمالي دروازې له لارې نه کوهدا من ته لار شه، په بيت المال او جبهه خانه باندې لاس مه واهه.» ۵۳۲ دا ليک يې حضرت اغا گل مجددي ته ورکړ او هغه د خپلو دوو ملگرو سره په خپل موټر کې سپور شو او د ارگ په لور روان شو. لږ وروسته د جرگې مشران خبر شول چې د سقاو زوی د ارگ د شمالي دروازې له لارې تښتېدلی دی. د شپې په يولسو بجو د وزيرستان لښکر ارگ ته ننوت او د ارگ نظم يې ونيو. زما ليکوال پلار گل عمر ته په ارگ کې د نادر خان د کورنۍ د ساتنې دنده ور په غاړه وه تر څو کورنۍ يې ور وسپارل شوه. په دې توگه د سقاو د زوی رژيم د وزيرستان او پکتيا د بيلو بيلو قبيلو د لښکر له خوا نسکور شو.

نادر خان د څاڅيو نه کابل ته روان شو او کله چې کابل ته ورسېد په ارگ کې د سلام خانې مانۍ ته لاړ او هلته د وزيرستان او پکتيا زرگونو ملېشو د مشرانو، د کابل د خانانو او ملکانو او نورو له خوا بڼه راغلاست ورته وويل شو. نادر خان په خپله وينا کې د ملت د ټولو قشرونو نه د سقاو د زوی د نسکورولو په مبارزه کې مننه وکړه. په دغه غونډه کې حاضر و نماينده گانو ډېره کي د نادر خان نه وغوښتل چې د هېواد د چارو واکي په خپل لاس کې ونيسي.

د خليل الله و داد په وينا نادر خان پرېکړه وکړه او د حبيب الله او د هغه د ملگرو عفو يې اعلان کړه. په دې منظور نادر خان ژمنليک چې د قران په څو ټوکو کې ليکل شوی او ټپه شوی و، حبيب الله، سيد حسين او صاحبزاده ورونو ته ولېږه. ۵۳۳ دی زياتوي چې د نادر خان پيامونه د خواجه بابو (د حبيب الله د رژيم وروستی د کورنيو چارو وزير)، حضرت مجددی، زلی خان نایب سالار منگل او نورو له خوا حبيب الله او ملگرو ته يوړل شول. په دې توگه ټول د پخواني رژيم اوولس تنه نادر خان ته تسليم شول. نادر خان څه وخت وروسته د خپلې ژمنې لاس په سر شو او هغوی يې د قبایلو مليشو ته تسليم کړل. د وزيرو او جنوبي مليشو هغوي په ناوړه توگه ووژل. دی زياتوي چې د مرو جسدونه وروسته د نادر خان په امر په حضورې چمن کې په لرگو پورې د خلکو د عبرت له پاره وځورول شول. ۵۳۴

د دغې وژنې په اړه امريکايي تاريخ پوه فليټچر وايي چې «نادر د دې وس نه لاره چې [د وزيرستان او جنوبي] قومي خلک کنترول کړي يا د دوی د غوښتنې نه چې لاروهونکی [بچه سقاو] دې وژنې سر وغروي». گريگوريان په افغانستان کې د برتانيې د سفير ويليم فرينز ټيټلر په حواله وايي چې د سقاو د زوی په زندگی کولو کې نادر خان «لږ يا هيڅ رول لوبولی و.» «ورپسې معلوماتو وښودل چې وروسته له دې چې ملگرو يې لاروهونکی [بچه سقاو] پرېښود، هغه ځان يې له قيد او شرط تسليم کړ، او اعدام يې په کابل کې د برلاسي قومي لښکر په ټينگار وغوښتل شو.» ۵۳۵

اولسم څپرکی

د نادرشاه واکمني

په دې توګه نادر خان د ۱۹۲۹ کال د اکتوبر د میاشتې په لسمه نېټه وروسته له دې، چې د سقاو زوی یې رانسکور کړ، واک ته ورسېد. نادرشاه خپل وروڼه او نور باوري کسان په لوړو چوکيو وګومارل. محمد هاشم خان د صدراعظم او کورنیو چارو وزیر، شاه محمود خان د دفاع وزیر، فیض محمد خان د بهرنیو چارو وزیر، د شوربازار حضرت شیر اغا د عدلې وزیر، مارشال شاه ولي خان په لندن کې او سردار محمد عزیز خان په مسکو کې د سفیرانو په توګه وټاکل شول.

پوهاند ادامیک کاري چې محمد نادرشاه، د هغه وروڼه او امان الله خان «ټول د پرمختګ او نوښتګرۍ پلویان وو او د نوي افغانستان له پاره د هغوی ارزو اساساً یو شان وه. ښايي نادرشاه به د دوو پادشاهانو په منځ کې زیات واقعین و... دواړه پادشاهان غټ افغان هېواد دوستان وو او د هغوی د نظر اختلافونه په لومړۍ درجه په دې پوښتنه راڅرخېدل چې د اساساً ورته هدفونو له پاره کوم وسایل غوره کړي.» ۵۳۶

نیمه پېړۍ (۱۹۲۹-۱۹۷۸) نسبي سولې او بهرنیو مرستو د افغانستان سره کومک وکړ

چې موږنې دولتي موسسې او اقتصادي انفراسټرکچور جوړ کړي، چې د ملي پېوستون او د مرکزي حکومت ساحه يې په هېواد کې پراخه کړه. ځنګه چې افغانستان د بېې حکومت داری او خلکو ته د عامو خدمتونو وړاندې کولو له پاره ظرفیت او سرچینې نه درلودې نو د قدرت پخوانۍ دوديزې موسسې په خپل ځای پرېښودل شوې.

د نادرشاه بهرنی سیاست

د نادر خان د عمل پلان په دریمه ماده کې ویل شوي چې افغانستان به د امان الله خان بهرنی تکلاره همغسې څاري او د نړۍ د بیلا بیلو ځواکونو سره به خپلو اړیکو ته پایښت ورکوي.

د ادامیک په اند د محمد نادرخان له پاره درې ټکي مهم و: لومړی دا چې د جرمني سره د افغانستان د اقتصادي او سیاسي اړیکو د بحران هوارول، دوهم دا چې په افغانستان کې د شوروي د نفوذ مخنیوی او دریم دا چې په سرحدي سیمه کې د انګرېزانو د پرمختګ په وړاندې درېدل. محمد نادرشاه او ورور یې محمد هاشم خان دواړو د امیر عبدالرحمن خان او امیر حبیب الله خان لاره خپله کړې وه چې له برتانې او روسيې نه باید ځانونه لرې وساتي. ۵۳۶ الف

د ادامیک په وینا شوروي اتحاد لومړنی هېواد و چې د افغانستان نوی رژیم یې په رسمیت وپېژاند. ستارګ د شوروي سفیر بېرته کابل ته راستون شو او د نادر خان حکومت هغه په کورودانی سره ومانه او د یو څلوربېشتو توپونو د دزو سلامي یې هم ورته وړاندې کړه. ۵۳۷ ه

د ۱۹۳۱ په جولای کې د شوروي اتحاد سره د بې پرېتوب او نه تیري تړون لاسلیک شو او دواړو خواوو ومنله چې د یوه او بل په هېواد کې به د دوی دښمنو عناصرو ته اسانتیاوې نه برابرېږي. دا ټکی په دې مهم و چې دغه وخت په منځني اسیا کې بسماچي نهضت فعال و. دغه مهال بسماچي غورځنګ د افغانستان شمال- ختیځ ولایت (د قطغن ولایت) ته نفوذ کړی و. په دې چې د بسماچي غورځنګ زیات شمېر کسان افغانستان ته راتښتېدلې وو او پولې ته نږدې یې کمپونه وهلي او د نامتو بسماچي مشر ابراهیم بېګ په مشرۍ یې د هغه ځایه په شوروي تاجکستان باندې بریدونه کول. دغه وضعیت د دې لامل شو چې په ۱۹۳۰ کال کې شوروي پوځ بسماچیان تر څلوربېشت ميلي پورې د ننه د افغانستان په خاوره کې تعقیب کړي. همدارنګه په شمال کې ځینو کسانو بلوا جوړه کړه. له دې کبله نادرشاه خپل ورور د دفاع وزیر شاه محمود شمال ته ولېږه چې سیمه ارامه

كړي. شاه محمود خان په شمال كې بلواكړ وځپل او ابراهيم بېك يې د امرود هغې خوا ته تېښتې ته اړ كړ چې هلته د تاجكو د ځايي كليو كسانو ورسره خيانت وكړ او شورويانو ته يې په لاس وركړ او وروسته هغوی زندی كړ.

خو «د برتانيې او افغانستان تر منځ د سياسي اړيكو بيا ټينگښت دومره اسانه كار نه و... افغانستان له برتانيې څخه وغوښتل چې د شوروي اتحاد پر پل باندې پل كېښوردي او كابل ته خپل استازی راولېږي، لاکن برتانوي حكومت په دې اړوند له تلوار څخه ډډه كوله» ۵۳۸ په دې چې برتانيا د هېواد د امنيت په اړه اندېښمنه وه. د نومبر په اوومه د بهرنيو چارو نوي وزير فيض محمد خان برتانوي حكومت د خپل حكومت د دې پرېكړې نه خبر كړ چې شاه ولي خان په لندن كې د سفير په توگه ټاكل شوی او له برتانوي حكومت نه يې د هغه د منلو غوښتنه وكړه. د نومبر په څورلسمه د برتانيې د دولت وزير ارتور هنډرمن فيض محمد خان ته خبر وركړ چې برتانيا «هغه حكومت چې د اعليحضرت نادرشاه له خوا ټينگ شوی، د افغانستان د حكومت په توگه مني» ۵۳۹ او هيله يې څرگنده كړه چې له نوي حكومت سره به پخوانيو دوستانه اړيكو ته پايښت وركړي.

د افغان حكومت د رسميت پېژندلو په اړه يوه ستونزه دا وه چې برتانيا نوي افغان واكمن ته د ښه نيت او ملكرتوب له پاره څه بايد وروړاندې كړي. برتانيې تر دريې افغان-انگليس جگړې پورې افغانستان ته منظمه كلني بسپنه وركوله. خو هغه مهال چې امان الله خان خپلواكي اعلان كړه نو انگرېزانو خپله بسپنه ودروله. خو برتانيې د امان الله خان د حكومت سره په ځانگړې توگه د وسلو او الوتكو د پرېدلو او سپړكونو او اورگاډي د پټليو د جوړولو اړوندو پروژو د سروې د پاره پورونه وركړل. ځينې وخت د سوغاتونو فرمايش وركول كېده يا داسې پورونه وركول كېدل چې نښو ښودله چې وركړه يې ژر اړينه نه وه. ۵۴۰

د ۱۹۳۰ كال په اكتوبر كې د برتانيې حكومت افغانستان ته ۱۷۵ زره پونډه او لس زره ټوپك وركړل. په ۱۹۳۱ كال كې د دغې مرستې خپرېدلو په هېواد كې د حكومت ضد تبليغاتو څپه راپورته كړه چې افغان واكمن يې هك پك كړل. دې د نادر ضد تبليغ ته زياته زمينه برابره كړه چې خپل هېواد يې په انگرېزانو پلورلی دی. د ډيورنډ د كرښې دواړو غاړو كې قومونو نادرشاه ته د يوه خرڅ شوي سړي په توگه كتل. د برتانيې سفير مكوناشي د ۱۹۳۰ كال د می په يوولسمه نېټه كابل ته راوړسېد.

كله چې نادر خان واك ته ورسېد نو يې وغوښتل چې د جرمني سره بيا اړيکې ټينگې كړي. نو د جرمني د سفارت يو كارکوونكي پوشرت او نورو چينلونو له لارې د جرمني د

بهرنيو چارو د وزارت سره په تماس کې شو تر څو د دواړو هېوادو تر منځ دپلوماټيک استازي سره تبادله شي. نادرشاه په ۱۹۲۹ کال په دسمبر کې عبدالهادي داوي په برلين کې د سفير په توگه وټاکه. د ۱۹۳۱ کال په می کې هربرت شوربل د جرمني د سفير په توگه کابل ته راوړسېد. ۵۴۱

نادرشاه هم د گڼ شمېر افغانانو غوندې احساس لاره چې د بيلو بيلو دليلونو له مخې يې د جرمنيانو درناوی کاوه. خو ده هر کله ټينگار کړی چې افغانستان نه شي کولی له شوروي اتحاد او برتانيې سره دغري ووهي او په ښکاره يې ويل چې که جرمني غواړي چې د افغانستان په پرمختيا کې مرستندوی شي نو تر مسکو راتېرېدونکې لار بايد پرانېستې وساتي. ده د ۱۹۲۵ کال د می په ۲۳ نېټه څرگنده کړه چې: «افغانستان ته بل هېڅ اروپايي ځواک د جرمني غوندې کتور لاس نه دی ورکړی» ۵۴۲ د امان الله په وخت کې جرمني سوداگرو ډېر ژر کتور کړنو ته لاس واچاوه چې د دارالامان د مانۍ جوړښت، د کډو سوداگريزو موسسو جوړونه يې بېلکې دي. خو د سقاو راتگ دا کار ودراره. خو د جرمني سره مهمه ستونزه دا وه چې د نادرشاه کورنۍ شکمنه وه چې کورنۍ يې د هغې مبارزې هدف گرځول شوې چې د امان الله د پلويانو له خوا راپيل شوې چې له دې لارې واکمنه کورنۍ راوېرځوي.

د نادرشاه کورنۍ سياست

نادرشاه د پاچا امان الله خان د مهال د تجربې پر بنسټ د هغه سمونونه د سره او کام په کام پيل کړل. لومړی يې د امنيت ټينگولو ته پام وکړ. د نادرشاه د رژيم د ثبات يو مهم توکی د افغانستان د اطلاعاتو سازمان و. په دې وخت کې څلورو اطلاعاتي څانگو کار کولو. لومړی د صدارت څانگې څانگه وه چې محمد هاشم خان يې لارښوونه کوله چې دغه پټ جال ډېر مهم پټ عمليات پرمخ بيول. د دې څانگې مهمه دنده دا وه چې د ننه او بهر کې د دولت ضد دسيسې د منځه يوسي او د بهرنيو سفارتونو فعاليتونه وڅاري. د کورنيو چارو وزارت، د دفاع وزارت او د بهرنيو چارو وزارت هر يوه د اطلاعاتو څانگې درلودې. پوځي اطلاعاتي سازمان چې سيخ د دفاع د وزير شاه محمود خان ترلاس لاندې و په خپل وار پولو ته نږدې د کاونډيو هېوادو اطلاعات راتولول چې د دې کار له پاره په هره فرقه کې څانگې څانگې شتون درلود. د بهرنيو چارو وزارت د اطلاعاتو سازمان هم دوې څانگې درلودې لومړی يې د بهرنيو اسخباراتو څانگه وه چې د مېشتو بهرنيو سفارتونو او قونسلگريو فعاليتونه يې څارل. دوهمه څانگه د جاسوسۍ ضد فعاليتونه څارل.

نادرشاه د غزني او مقر غلجيانو پاڅون چې د عبدالرحمن تره کي د مشرۍ لاندې وشو د شوربازار د حضرت په منځکړيتوب غلی کړ. په کوهدهمان کې د کلکاني پلويانو بلوا وکړه. د نادرشاه کمزوري روزل شوي پوځ ونه کړای شول چې دغه سيمه ارامه کړي او د پوځ قوماندان عبدالوکيل نورستاني د بلواکرو له خوا ووژل شو. نادرشاه پلازميني ته نږدې دا گواښ جدي وباله او د پکتيا نه يې خپل متحد قومونه راوبلل چې دغه بلوا وځپي. د دغو قومونو خلک چې د سقاو د زوی د رژيم د ظلمونو د غچ اخېستې له امله په جوش راغلي وو، دا بلوا کلکه وځپله. په سيمه کې يې لوت، بربادي وکړل او د دوی يو شمېر ښځې يې د ځانه سره بوتلې، چې دغه کړنو د تاجکو او پښتنو تر منځ د ډېر وخت له پاره توکمي کينه پرېښوده.

کله چې نادر خان واک ټينگ کړ هغه په ۱۹۳۲ کال کې يو لس ماده ييز د عمل پلان اعلان کړ. په لومړۍ ماده کې ويل شوي چې حکومت د اسلامي قانون د حنيفي تعبير له لارښوونو سره سم عمل کوي. په دې توگه ده د اسلام دين او حنيفي شرعه په رسميت وپېژانده. په همدې ماده کې دا هم ويل شوي چې د احتساب اداره جوړيږي او ښځې دې مخ پټې او مستورې وي. په دې توگه ده د ښځو په حجاب او د مذهبي پوليسو (احتساب) په جوړولو سره د نفوذمنو روحانيونو ملاتړ تر گوتو کړ.

په دويمه ماده کې ويل شوي چې د افغانستان د خپلواکۍ د ژغورنې له پاره به يو عصري پوځ جوړ او هغه به په بيخي نويو وسلو سره سنبال کړای شي. نادر خان د وسله وال پوځ بيا جوړولو، د هغه د تنظيم، وسلو، روزنې او موډرن کولو ته زيات پام وپراوه. نادر خان همدارنگه د دولتي موسسو (د پوځي ښوونځيو د بيا پرانستلو او د دفاعي صنعت انفراسټرکچور جوړولو په گډون) د جوړولو له پاره گامونه پورته کړل.

نادر خان اساسي قانون جوړ کړ چې د امان الله خان د اساسي قانون سره يې لږ توپير درلود او تر ۱۳۴۳ کال پورې نافذ و. نادر خان د هېواد اقتصادي ودې، د پوهنې پراختيا او فرهنگي چارو ته پاملرنه وکړه. گريگوريان وايي چې ليکلي اساسي قانون دوې محکمې درلودې: عدليه محکمه (سيول کورټز) او شريعه محکمه (ديني محکمه)، حنفي مذهب په رسميت پېژندل شوی و. د شلمې پېړۍ په ديرشمو کلونو کې پنځلس لوی شرکتونه جوړ شول، په ۱۹۳۲ کال کې (بانک ملي افغان) په کار پيل وکړ، يو شمېر د نفوذ خاوندان، روحاني شخصيتونه، لوی مخکه وال او د سوداگرو نمايندگان يې د ملي شورا او اعيانو مجلس ته جذب کړل. اعتدال خوبونکي روښنفران يې په فرهنگي موسسو کې وټاکل. په کابل، کندهار او هرات کې ادبي انجمنونه جوړ شول. هغه موډرنې چاپي ميډيا ته پام وکړ

چې هره خپرونه به د دولت د ټينگ سانسور لاندې وتله.

د پښتو د علمي کېدو او غني کېدو له پاره لومړنی اساسي گام د پاچا محمد نادر خان په وخت کې د «ادبي انجمن» په تاسيس سره واخېستل شو. په کندهار کې د ادبي انجمن بنسټ په ۱۹۳۲ کال کې د محمد نادر خان په اجازه د کندهار تنظيمه رييس محمد گل خان مومند کېښود او د هغه ولايت دفترونه يې په پښتو وړول. دغه انجمن وروسته په کابل کې له ادبي انجمن سره يوځای شو او بيا په ۱۹۳۷ کې پښتو ټولنه شوه. د «کابل» په نامه د انجمن مجله لومړی په پارسو او پښتو او وروسته يوازې په پښتو خپرېده. په دې ډول د پښتو دغه حرکت د پاچا نادر خان او ورپسې د پاچا محمد ظاهر شاه د واکمنۍ په لومړيو وختو کې په قوت روان شو او د هغه له پاره په رسمي او علمي برخو کې کار کېده. فرهنگ نادر خان زيرک، فکرمن او د پياوړي عزم او ارادې څښتن بولي. نادر خان د ساتنپالۍ د ځانگړتياوو سره سره د هېواد د نوي تمدن په کرښه د ترقۍ او پرمختگ غوښتونکی و. ده هېواد د کورنۍ جگړې نه وژغوره او مرکزي دولت يې د امير عبدالرحمن وروسته زيات غښتلی کړ. فرهنگ زياتوي چې نادر خان خپل ورور هاشم خان صدراعظم په توگه وټاکه په دې چې له يوې خوا هغه د شاه ولي خان او شاه محمود خان نه مشر و او د بلې خوا هغه ځينې ځانگړتياوې درلودې چې د سلطنتي نظام د ټينگښت له پاره اغېزمنې وې. يانې د سقاو د نهه مياشتې د گډوډۍ نه د راوتلي دولت د ټينگښت له پاره مطلقه واکمني اړينه وه. ځکه ده ته مستبد ويل کېده. خو نوموړي ډېر کار کاوه د بېلگې په توگه د ښکاري درې سړک يې په گرڼدي ډول او په خورا لږ لگښت د افغان ولس په زيار بشپړ کړ. فرهنگ دا هم وايي چې هاشم خان ملوک الطوايفی ټکنی کړه او د دولت په چارو کې يې د خانانو او روحانيونو مخه ډب کړه. په بهرني سياست کې يې د دوهمې نړيوالې جگړې پر مهال د افغانستان بې پرې توب وښود او په خپل هېواد کې يې د بهرنيانو د لاس وهنې مخه ونيوله.

نادرشاه د زده کړې په اهميت پوهېده، ځکه چې پوهنه د ولس له خوا د سمونونو منلو ته لار پرانېستله. نادر خان په يوه وينا کې ويلي و: د کور جوړول په دې نه کېږي چې د کور د بېخ په ځای دې د کور سر لومړی جوړ شي: «امان الله خان هاند وکړ چې د خلکو ذهن د هغوی د خوږۍ د بدلولو له لارې واپروي.» ۵۴۳

محمد نادرشاه هغه ښوونځي بېرته پرانېستل چې جرمنيانو او فرانسويانو د امان الله خان پر مهال جوړ کړي وو. د پوهنې او روزنې اداره جوړه شوه. ملالی ښوونځی بيا پرانېستل شو چې د نرسېنگ او زيربندنې چارې يې په مخ بيولې. دارالعلمين او د کشافانو

ټولنه (سکاوت) هم جوړې شوې.

د ډاکټر يحيى رشيد د مالوماتو له مخې محمد نادر خان هغه ۵۰۰ جريبه ځمکه، چې امان الله خان ده ته د خپلواکۍ په جکره کې د هغه د خدمت په بدل کې د کابل په ښار کې وربخښلې وه، د پوهنې وزارت ته وبخښله. د علي اباد روغتون په دغه زمکه کې جوړ شو او په خپله نادرشاه د هغه بنسټ کېښود. ۵۴۴

نادر خان او وروسته د ده زوی محمد ظاهرشاه په واکمنۍ کې د اقتصادي سياست په برخه کې يو نوی پړاو، ليبرال اقتصادي سياست پيل شو. نادر خان په دې نظر و چې پرمختيايي اقتصادي سياست يوازې او يوازې هغه وخت په ښه توگه عملي کېدای شي، کله چې حکومت د هغه د پلي کولو له پاره د ولس ملاتړ ترلاسه کړي. له دې کبله ده «اقتصادي کره وړه خپلو اتباعو ته ورپرېښودل او خپله اقتصادي دنده يې يوازې د مادي او معنوي زېربنا په جوړولو او له بهر سره د اقتصادي تړونونو په ترسره کولو کې محدود کړل، ځکه چې دولت د لومړي ځل له پاره يوه خوځنده ډله (ډينامیک گروپ) په افغاني ټولنه کې د خپل اقتصادي سيال په توگه وليد.» ۵۴۵

دغې خوځنده ډلې د لومړي ځل له پاره د يوه سهامي شرکت بنسټ چې لومړنی پانگه يې پنځه ميليونه افغانۍ ته رسېده په ۱۳۰۹ کال کې کېښود. په ۱۳۱۲ کې ملي بانک د اته ميليونو افغانیو په لومړۍ پانگه جوړ شو. د دې بانک چې د انحصار بڼه يې درلوده د پيسو چاپ او خپرېدل، د اسعارو پېرېدل او پلورل او د هغو د بيو ټاکل، د صنعتي تاسيساتو رامنځ ته کول، د بورې، پېټرولو او موټرو واردول او همدارنگه صادراتي دندې وې. عبدالمجيد زابلي د ملي بانک پانگوال او مشر او همدارنگه وروسته د اقتصاد د وزير و. دولت وکولی شول چې په ۱۳۱۸ هـ کال کې د افغانستان بانک د هېواد د مرکزي بانک په توگه د ۱۲۰ ميليونو افغانیو په لومړنۍ پانگې پرانيزي او د ملي بانک هغه دندې چې په مرکزي بانک پورې اړه درلوده دې بانک ته وسپارلې او ملي بانک يوازې د سوداگرۍ او د صنعت په برخه کې خپلې هلې ځلې کولې. دغه بانک په کندهار، هرات، مزارشريف، جلال اباد، کوپټه او پېښور کې څانگې لرلې. د بهرنۍ سوداگرۍ د پياوړتيا له پاره دغه بانک په لندن، لايبيخیک، مسکو او پاريس کې تجارتي استازي وټاکل. په ۱۹۳۱ کې د وارداتو د تنظيم له پاره نوی گمرکي قانون جوړ شو.

د نادر خان مهمه لاسته راوړنه دا وه چې نسبي سوله يې هېواد ته راستانه کړه او د دولت او د هېواد د بيا جوړولو کوښښونه يې وکړل چې د ۱۹۲۹ کال کورنۍ جگړې له مخې پرې شوي وو. د علي احمد جلالي په وينا د ده رول د امير دوست محمد خان او امير

عبدالرحمن خان غونډې و چې د افغانستان په يو کولو کې يې لوبولی وو.

نادرشاه غوښتل چې د هېواد د پوهنې ملي پراخ سيستم، اقتصادي ودې او سياسي پرمختګ له لارې د ملي پېوستون پروسه په لار واچوي. نادرشاه د امنيتي ننگونو ته غبرګون او د پراخې اندازې د موډرنيزې کولو د پروسې د ملاتړ له پاره د اردو بيا تنظيمول او رغونه يو بنسټيز توکي ګانه. څنگه چې په کورنۍ جګړه کې بلواکرو وسله لوت کړې وه هغه پوځ د سره جوړ او وسله وال کړ. په ۱۹۳۰ کال کې برتانيې افغانستان ته لس زره ټوپک د ډالۍ په توګه ورکړل. خو په غزني کې د غلجيانو او په شمال کې د ابراهيم بېګ ستونزو د لوی پوځ اړتيا په ګوته کړه. په ۱۹۳۳ کال کې د اردو شمېر نږدې ۵۰۰۰۰ ته رسېده. د ۱۹۳۰ کال په نومبر کې پوځي کالج بيا پرانېستل شو، يو کال وروسته د توپچي، سوارو او پلي ښوونځي په کابل کې جوړ شول چې د يو څو جرمني، هندي او ترکي افسران په ښوونځيو کې د روزونکو په توګه وګومارل شول. کله چې ظاهرشاه پر تخت کېناست د وسله وال پوځ د مهمو بدلونونو له پاره ګامونه اوچت شول چې وروسته به ورته راوکړم.

د ډاکټر حسن شرق د څېړنې له مخې د ټولو خزانه ساتنې د ادارې د اسنادو له مخې چې د امان الله د پاچاهۍ د نسکورېدو، د حبيب الله کلکانې د په واک راتلو او لوېدو او کابل ته د محمد نارخان په راتګ سره خزانه د دوی د پلويانو او مخالفينو له خوا لوت شوې وه د محمد هاشم خان د صدراعظمۍ په لومړيو کې د پيسو نه خالي وه. دا هم بايد وويل شي چې په افغانستان کې هغه مهال د سرو زرو، سپينو زرو او مسو سيکې دود وې. محمد هاشم خان وروسته له دې چې د کاغذ پيسې يې وړاندې کړې، د کاغذ د پيسو پر ځای يې د خلکو نه ماليه په سرو او سپينو زرو ترلاسه کوله او هغه بهرني اسعار چې د صادراتي مالونو له لارې لاس ته راتلې د نيويارک په بازار کې سره زر اخیستل او د پيسې د پشتيواني په موخه يې ذخيره کول. خو خلکو په کوڅو او بازار کې په دې تورنوه چې د خپلو راتلونکو له پاره يې راتولوي. شرق زياتوي چې ده هم په تاسف او شرمنده کې سره د ۱۳۲۹ کال د محصلينو په اتحاديه کې د نورو په ويلو په هاشم خان پسې بدې خبرې کړې دي. په داسې حال کې چې محمد هاشم خان شپږ ټنه او اوه سوه کيلوګرامه سره زر چې د هغو له جملې نه پنځه ټنه د سرو زرو تاريخي سيکې د افغانستان بانک په خزانه او څلور سوه زره اوښه سوه سره زر د نيويارک په بانک کې چې د ۱۳۹۱ کال د نرخ له مخې يې ټول ارزښت نږدې څلور ميليارده ډالر کېده د افغانستان د خلکو له پاره خوندي کړې وه او تر هغې ورځې موجوده وه چې دی صدراعظم و. ۵۴۶

د محمد داود د صدارت په مهال د خزانو لوی رييس نظر محمد خان وړانديز وکړ چې

پنځه تنه د سيکو سره زر د ده په دفتر کې ثبت دي چې د تاريخي لرغونتوب له مخې يې بيه د دوديزو سرو زرو نه زياته ده او د دې شونتيا شته چې د سيکو سره زر په دوديزو سرو زرو بدل شي. له دې امله د صدارت له خوا يو پلاوی د نظر محمد خان، صوفي عبدالحميد د سکو رييس او نوميالي تاريخپوهان احمد علي کهزاد او پوهاند عبدالحي حبيبي او څو تنو لرغون پېژندونکو په کېدون وټاکل شو چې د افغانستان بانک د سکو او دوديزو سره زر سره جلا او بيه يې مالومه کړي. نوموړی پلاوی د سکو د سرو زرو يو گرام بيه د دوديزو سرو زرو د لسو گرامو انډوله وگڼله او د بانک د خزانه دارو په جمع کې يې د پنځه تنه د سيکو سرو زرو بيه، د دوديزو سرو زرو د پنځوسو تنو برابره بيه ثبت کړه. په دې ډول د سکو سره زر په دوديزو سرو زرو د بدلولو او ناورې کتې اخېستې مخنيوی وشو.

د واک پر سرد نادرشاه پر ضد د امان الله خان مبارزه

امان الله خان د سقاو د زوی د نسکورېدو په اړه خپله خوښي د نادر خان سره شريکه کړه: «د يو هېواد دوست افغان په حيث زه تاسې او ستاسې ملگرو ته د دوران ساز بري مبارکي وایم.» محمد نادر خان ور غبرگه کړه چې: «د امان الله خان د واکمنۍ پير به د افغانستان په تاريخ کې په سرو زرو ليکل کېږي او زه په هغه سړک روان يم چې تاسې کښلی دی.» «۵۴۷ محمد ظاهر شاه هم د مينه بکتاش سره په مرکه کې وويل: «امان الله خان يې وپوهولو چې پلار مې غواړي په بله لار لاړ شي.» «۵۴۸ له دې نه ښکاري چې نادر خان د امان الله خان سمونونه پلي کول خو د پلي کولو لار يې بله وه او هغه گام په گام او د خلکو دودونه په پام کې نيول و.

د ۱۹۳۰ کال په سپتمبر کې نادرشاه ملي شورا راوبلله. نوي واکمنان په دې تلواسه وو چې په اصطلاح د «د ځوانو افغانانو» په کېدون به مخکښ مخور دوی ته بيعت ورکړي. خو ډېر زړ څرگنده شوه چې د قدرت سوله يز لېږد ناشونی دی. امان الله خان د ايتالې نه د هېواد د ننه او د باندي له افغانانو سره تماس ساته. د حيرانۍ ځای دی چې امان الله خان او پلويانو يې افغانستان د سقاو زوی ته پرېښود او نادر شاه چې افغانستان يې د سقاويانو د تباھۍ نه وژغوره د هغه پر ضد مبارزې ته ملا وتړله. د دې لامل شايد تېروړی په ناوړه پدیده کې وموندل شي.

امان الله خان او پلويانو يې په اروپا کې د نادرشاه د رژيم په ضد د مبارزې له پاره د يوه مبارز گوند د جوړېدو اړتيا احساس کړه. د دغه گوند د مشرتابه هيئت غړي دا کسان

وو: محمود طرزی، غلام نبي خان څرخي، عبدالهادي داوي، عبدالحسین خان عزیز او امان الله خان يې مشر و. د گوند مرامنامه په استانبول کې تسويد، په برلين کې وڅپرل شوه او په سویس کې د پټي غونډې له خوا د خبرو اترو لاندې ونيول شوه او بيا ومنل شوه. په دغه غونډه کې يو شمېر افغان سفيرانو چې پخوا له دندو گوښه شوي او ځينو دندې اجرا کولې گډون کړی وو. يو د دغو سفيرانو نه عبدالحسین عزیز و چې د غونډې تصویب شوې پرېکړې يې نادر شاه ته لېرې وې. همدارنگه د نادرشاه د دولت جاسوس پر دې بريالی شوی و چې ټول اسناد او ځانگړي ليکونه چې غلام نبي خان په انقره کې لاسته راوړي و او د هغو فوتوکاپي کانې يې د افغانستان شاهي دارالتحریر ته رسولې وې. افغانستان ته د امان الله خان پلويانو له خوا د پروپاگاندا اعلاميې راوړل کېدې چې يو تن هندي مهاجر دوران خان د دې کار له امله بندي او بيا په بالاحصار کې زندی شو.

دا ډېر ژر په ډاگه شوه چې د مصاحبانو د واکمنې کورنۍ له پاره تر ټولو غټ گواښ د څرخي کورنۍ له خوا رابنکاره شو. د څرخي کورنۍ غړو په افغانستان او هم په مسکو، انقره، برلين او پاریس کې د سفارتونو په گډون لوی لوی دريځونه درلودل. د دې کهول تر ټولو غوره کسان درې وروڼه غلام صديق خان څرخي، غلام نبي خان څرخي او غلام جيلاني خان څرخي او ځينې نور وروڼه او خپلوان وو. د څرخي وروڼو پلار غلام حيدر څرخي د امير عبدالرحمن په واکمنۍ کې جنرال او عمومي قوماندان و چې د هغه سره يې د واک په ټينگتيا او کنټرول کې ډېره مرسته وکړه او دغه مهال د څرخي کورنۍ د زيات نفوذ څښتنه شوه او د افغانستان په کورنيو او بهرنيو چارو کې مهم توکي په توگه راغله. غلام صديق خان ډپلوماټيک مسلک غوره کړی و، د افغان-انگليس د دريمې جگړې وروسته د افغان-انگليس په خبرو اترو کې گډون کړی و، بيا په برلين کې افغان سفير او په پای کې د بهرنيو چارو د وزير په توگه کار کړی دی. د ده وروڼه لومړی پوځي قوماندانان او د ولايتونو قوماندانان وو او په بيلو بيلو وختو کې په بهر کې د افغانستان د استازو په توگه دندې ترسره کړې دي. غلام نبي خان او غلام جيلاني خان د ۱۹۱۳ نه تر ۱۹۱۸ پورې د ډکروال عبدالاحمدخان په وژلو تورن شوي او شمال ته تبعيد شوي وو. امير حبيب الله خان په ۱۹۱۸ کې وبخښل او مهې څوکي يې وروسپارلې. د څرخي کورنۍ د پاچا امان الله خان په وخت کې مهم پوستونه درلودل چې د مخه اوږده بيان شوي دي. د نادر خان کهول او څرخي کهول تر منځ اختلافونو او مبارزې د مخه غږېدلې يو چې د لورو څوکيو د ترلاسه کولو سيالي او د هېواد د سمونو د پلي کولو د شيوې په اړه يې درلودل.

د تيخونوف په وينا د ۱۹۳۰ کال په اوړي کې څرخي وروڼو په استانبول کې يو د بل

سره وليدل. داسې ښکاري چې دوی همغه وخت پرېکړه وکړه چې د نادر خان د نسکورېدو له پاره دسيسه سازمان کړي چې امان الله خان ته د افغانستان تاج او تخت ونيسي. په دې وخت کې قبایل ناراضه و په دې چې لومړی نادر خان دوی ته د کابل د نيولو له پاره انعام ورته کړ او هم يې د دوی نه هغه وسله هم وگرزوله چې دوی په جگړه کې ترلاسه کړې وه. دوهم دا چې نادر خان د دوی سره ژمنه کړې وه چې د سقاو د ماتې وروسته به بېرته امان الله خان پاچا کوي خو نادر خان واک په خپل لاس کې واخېست. په دغسې وضع کې د امان الله خان پلويانو هېواد ته د امان الله خان د بېرته راتلو په محور پراخ تبليغات پرمخ بيول. دوی شپې پانې خپرولې او شفاهي تبليغات کول. په دې لړ کې خان عبدالغفار خان او د هغه پلويانو د امان الله خان د ملاتړ له پاره په خيبر کې د قبایلو تر منځ پراخ تبليغات وکړل.

نادر خان چې کله قدرت ته ورسېد دومره پياوړی نه و چې سملاسي د څرخي او د امان الله د نورو پلويانو سره مخامخ دغړې ووهي. په دې وخت کې تر ټولو غوره تکلاره دا وه چې د څرخي کېول له کابله لرې وساتل شي. همدا دليل و چې نادرشاه د ۱۹۲۹ کال په دسمبر کې غلام نبي په انقره کې د افغان سفیر په توگه وټاکه او تر يوه کاله پورې په دغه څوکي پاتې شو. غلام جيلاني کابل ته راوغوښتل شو او په توکيو کې د افغان سياسي نماينده د مشر په توگه وټاکل شو خو هغه دا مقام ونه مانه او په کابل کې همداسې وزگار کېناست. غلام صديق خان څرخي په ۱۹۲۹ او بيا په ۱۹۳۱ کې کابل ته راغی خو ورته لارښوونه وشوه چې په برلين کې بايد په خپله دنده حاضر شي او جرمني ته لاړ. د افغانستان نوي واکمنان په دې تمه وو، چې د پخلاتوب کړنلارې له مخې به پايښت وکړي. خو غلام نبي څرخي چې لږ څه مخکې يې په انقره کې د امان الله خان سره کتلي و د ۱۹۳۰ کال په اکتوبر کې نادرشاه ته يو سرخلاصی ليک واستاوه چې په هغه کې يې نوموړی په دې وغانده چې په ټاکې کې درغلي کړي او اعلان يې وکړ چې نادرشاه دې خپله رښتينې هېوادپالنه د ولس د منځکړي او عامو رايو په تله کې وتلي.

همدارنگه دېرو افغانانو گومان کاوه چې برتانوي حکومت د نادرشاه سره تخت ته د هغه د رسېدو په خاطر په جگړه کې مرسته کړي. برتانوي حکومت لکه څنکه چې له امان الله خان سره يې د سولې د تړون د لاسليک وروسته په صوبه سرحد کې د نفوذ او غلي کولو خپله تکلاره اخېستې وه کټ مټ يې د نوي افغاني پاچا د رسميت پېژندلو وروسته يې همپهغه تکلاره راواخېسته.

«افغاني اذهان په هندي خاوره کې د سور کميسو (سرخپوشانو) او هندو سياست

پوهانو تر منځ يووالی چې د کانگرس د کوند لاسبر کسان دی نه خوښوي، په حقيقت کې کابل د نوي پاچا په واکمن کېدو سره د هندي سرحد په سياست کې د يوه زياتېدونکي جدي عامل په توگه راغلی دی.» ۵۴۹

نادرشاه د ۱۹۳۱ کال د جولای په شپږمه د خپلو دښمنانو د تورونو څخه د دفاع په خاطر پارلمان پرانېست. نادرشاه د پارلمان استازو ته د هغو کسانو په اړه چې پر ده باندې بې نيوکې کولې وويل: چې هغه يوازې د افغاني قبایلو په ملاتړ قدرت ته ورسېد او برتانيې ورسره هېڅ مرسته نه ده کړې. خو ده دا ومنله چې قدرت ته د رسېدو وروسته يې د برتانيې په گډون له هرې سرچينې څخه مالي مرسته اخيستې، پرته له دې چې د هغوی کومې سياسي ژمنې يا شرطونه يې منلي وي. ده زياته کړه چې کله داخلي قبایلو ورسره اغېزمنه مرسته ونه کړه نو اړ شو چې خپل استازي حاجي محمد اکبر خان يې له برتانوي لوري څخه وغوښتل چې د پولې اخوا افغانانو ته اجازه ورکړي چې د نادر خان د ځواکونو سره مله شي خو برتانيې دغسې اجازه ورنه کړه. ۵۵۰ په پای کې څاڅيو، احمدزيو او منگلو د قومونو جرگې پرېکړه وکړه چې د برتانيې د مخالفت سره سره دې پر وزيرو د مرستې يرغ وشي.

نادرشاه د هغې مالي او پوځي مرستې ارقام هم وړاندې کړل چې د برتانيې له خوا يې ترلاسه کړې وه. هغه زياته کړه چې دا مرستې د ملامتې وړ نه دي په دې چې داسې مرستې پخوا امان الله خان ته هم ورکړ شوي دي چې په هغو کې د فرانسې او جرمني مرستې شاملې وې. هغه وويل چې «افغانستان به تل د خپلو کاونديو تر منځ انډول وساتي» ۵۵۱ هغه دا هم وويل چې د پولې دواړه خواوو افغانان د خپل مليت او اسلاميت له مخې يو ولس دی» ۵۵۲

څرخي ورونو بايد د پخلاينې له مخې نوی رژيم منلی وای يا دا چې په کابل کې يې بايد د نوي رژيم سره تر سولې وروسته خپلو فعاليتونو ته دوام ورکړی وای. جيلاني چې په ۱۹۳۰ کال کې يې دنده ونه منله او په کابل کې پاتې شو په ۱۹۳۲ کال کې په ښکاره د پخلاتوب په موخه د افغاني واکمن د پېغام په وړلو سره برلين ته لاړ. د اصلاح ورځپاڼې د ۱۹۳۲ کال د جولای په ۲۱مه نېټه د غلام صديق خان څرخي او نادرشاه تر منځ د ليکونو د راکړې جريان خپور کړ. غلام صديق خان د پاچا د خواخوږۍ نه د مننې په څرگندولو سره د خپلې کورنۍ د بيعت او هېواد ته د خدمت کولو ژمنه وکړه. د غلام نبي خان د غوښتنې پر اساس نادرشاه دی کابل ته راوباله چې د شاه ولي خان سره په گډه کابل ته راشي.

غلام نبي خان د ۱۹۳۲ کال د اکتوبر په ۱۳مه کابل ته راوړسېد او د ځينو سرچينو له مخې نور نو هغه وخت رارسېدلی و چې دغه دواړې ځواکمنې کورنۍ سره پخلا شي. ادامیک وايي چې «۱۹۳۲ کال د پېښو ډک کال و. د هغه د پيل څخه داسې راپورونه وو چې د «سور کميسو» تبليغاتو د منگلو او ځدرانو په منځ کې لمسونې را منځ ته کړې» ۵۵۳ د بېلکې په توگه له بنو څخه دوران نومي له خوا چې د ۱۹۳۲ کال په اگست کې نيول شوی و د امان الله خان په پلوی تبليغات کېدل. شاه محمود خان د يوه لوی پوځ سره د اکتوبر په ۲۱مه گردېز ته وخوځېد او د دوو اوونيو د څېړنې وروسته کابل ته راستون شو او د يوې پټې توطيې راپور يې راوړ چې څرخي ورونو طرحه کړې وه. نادرشاه غلام نبي خان ارک ته وغوښت او د حکومتي سرچينو په اساس يې اړونده مدارک او شواهد ورښکاره کړل او بيا يې د هغه د سملاسي غرغره کولو امر وکړ. غلام جيلاني او د هغه گن شمېر خپلوان يې بنديان کړل.

د ۱۹۳۳ کال د جون په ۶مه سيد کمال په برلين کې افغاني سفارت ته ننوت او د نادرشاه مشر ورور عبدالعزيز يې وواژه. سيد کمال د امان الله يو پلوي وخت او په ډاگه يې کړه چې دا کار يې په افغانستان کې د زياتېدونکي برتانوي اغېز د غندنې په خاطر وکړ. ادامیک وايي چې دې پېښې دوې مهې پایلې درلودې: لومړۍ دا چې د نوي رژيم او د هغه د مخالفانو تر منځ بې دښمني نوره هم زياته کړه او دوهم دا چې د جرمني او افغانستان تر منځ بې اړيکو ته سخت زيان ورساوه.

د ۱۹۳۳ کال د سپتمبر په ۶مه په کابل کې محمد اعظيم د برتانوي سفارت ته ننوت چې د برتانوي سفير مکوناشي ووژني. خو کله چې پوه شو چې سفير نه شته نو هغه درې کسان چې مخې ته يې ورغلل وويستل چې په هغو کې يو انگرېز مېخانیک، يو هندي او يو د سفارت افغان کارکوونکی و. ده هم د سيد کمال غوندې ادعا وکړه چې غوښتل يې په افغانستان کې د برتانوي په اغېز باندې اعتراض وکړي. محمد اعظيم د سپتمبر په ۱۳مه زندی شو چې ورسره شپږ نور مهم بنديان هم ورسره غرغره شول چې په دې ډله کې د امان الله خان د بهرنيو چارو وزير محمد ولي خان دروازي او نايب السلطنه او غلام جيلاني خان په کې شامل وو. په دې توگه د غلام نبي خان له خوا سازمان شوې دسيسه ناکامه او امانيان وځپل شول.

د پوهاند جلالي په وينا نادرشاه زيات دښمنان لرل چې د راز راز دليلونو له مخې يې امان الله خان ته د تخت د راگرزولو په کېدون هغه ننکوه. ډېرو قومونو، په تېره د وزيرستان وزيرو او مسيدو د نادر خان سره ژبه کړې وه چې امان الله خان به پرته تخت

ته راييایي. خو کله چې په کابل کې نادر خان د پاچا په توگه اعلان شو نو دغه کار ډېر وزير او نور قومونه ناهيلي کړل. د ۱۹۳۰ کال د مارچ په مياشت کې يوه هندي اخبار «زميندار» يو اوږد ليک خپور کړ چې د ځينو د خبرو له مخې امان الله خان ليکلی دی چې په هغه کې يې نادر خان په بې وفادارۍ، بد قسمتی او په برتانويانو باندې د افغانستان د خپلواکۍ په پلورلو تومتي کړی و. د دغه ليک کاپي کاني د ننه افغانستان ته په پټه وړل کېدې چې د امان الله خان په کټه او د نادرشاه پرضد يې د ترويجولو سېلاب روان کړی و. د امان الله خان په پلوي ترويج هغه وخت زور واخيست چې د ۱۹۳۱ کال په اپرېل کې امان الله د حج دپاره مکې ته لاړ او هلته د امان الله خان وطن ته د بېرته راتلو خبرې کېدې. سمونپالو او مترقي قوتونو هم ورته احساسات درلودل. همدا مهال ځينې نور د نادرخان د اتوکراسي واکمنۍ، د ځينو سمونونو درول او د هغه قانوني نهضت د ځپلو له امله ورسره مخالف وو چې د پېړۍ په پيل کې منځ ته راغلی و. څنگه چې نادر خان د نيوکو په وړاندې خان غير مصون احساساوه نو هغه کسان يې وځپل چې د ده د مطلقه واک په وړاندې درېدلي وو.

تيخونوف وايي چې په ۱۹۳۳ کال کې د سرحد پښتنو قبایلو کې د نادرشاه په وړاندې نارضايتي زياته شوه او امان الله خان ته يې د بېرته را گرځېدو هيلې زياتې کړې. په دغه موضوع کې غلام صديق خان څرخي د امان الله خان ښې لاس و. د همدغه کال د جولایي په مياشت کې امان الله خان استانبول ته راغی او زيات وخت يې د ترکيې په منځي کې تېر کړ او څو ځله يې د مصطفی کمال اتاترک سره وکتل او د هغه څخه يې افغانستان ته د بېرته ستېدو په موخه پوځي مرسته وغوښته او دغه کتنې بريالۍ وې.

تيخونوف زياتوي چې څه موده وروسته صديق خان څرخي په استانبول کې شوروي قونسلي ته ورغی او وويل: «په افغانستان کې د امان الله خان د پلويانو پاڅون تيار دی. د پاڅون مرکز جلال اباد او د اقداماتو د توپ تخته د افغانستان په شمال کې مزار شريف ټاکل شوی دی. د انگرېزانو لاس وهنه په دې کار کې ناشونې ده.» ۵۵۴ تيخونوف دا هم وايي چې د امان الله خان او اتاترک د خبرو نه ښکاري چې «شوروي هغه ته د نادر د نسکورولو له پاره بشپړ ملاتړ ژمنه ورکړې وه.» ۵۵۵ دی وايي چې ترکي مشر امان الله خان ته ويلي و «کله چې سور پوځ تيار وي چې د پاڅون نه ملاتړ وکړي ترکيه هم خپله برخه د روسيې په تله کې اچوي چې د غوټې خلاصول کړنډي کړي او په افغانستان کې کورنۍ جگړې ته سترگې په لاره نه شو.» ۵۵۶ خو هر څه چې و ستالين د امان الله خان سره پوځي مرسته ونه کړه او په هغه پسې مصطفی کمال هم د پوځي مرستې نه ډډه وکړه.

د ۱۹۳۳ کال د نومبر په ۸مه نادر خان د ښوونځي د زده کونکي عبدالخالق خان له خوا ووژل شو چې د غلام نبي خان د زندی کولو غچ يې د نادر خان نه واخېست. د نويو واکمنو او مخالفينو تر منځ دښمني د ۱۹۳۳ کال د نادر خان په وژلو سره خپلې لورې څوکې ته اوچته شوه. په روم کې ژورنالستانو په امان الله خان زور راوړ چې ورسره مصاحبه وکړي. امان الله خان د روپټر خبريال ته چې د خپل زوی هدايت الله له خوا يې ملگرتيا کېده وويل: «هر گاه مردم افغانستان ارزومند بازگشت من با برنامه اصلاحات و ترقی ام باشند، همواره آماده هستم با همه توان با کشور خود خدمت نمايم.» ... و افزود که: «نمیتواند از مرگ نادرشاه تا اندازه ای احساس رضایت مندی نه کند، مگر در عین زمان متاسف است که پادشاه افغانستان کشته شده است.» ۵۵۷

هاشم خان د خپل ورور د مړینې وروسته د امان الله خان نه د نادر خان د وژنې د غچ او هم خپلې کورنۍ ته د گواښ له امله د امان الله خان او د هغه نامتو پلویانو د منځه وړلو په موخه دوه گروپونه جوړ کړل. د دې نه د شوروي اطلاعاتي سازمان خبر شو او په بیره يې د امان الله خان د امنیت له پاره تدبیرونه ونيول.

د ۱۹۳۴ کال د جنوري په میاشت کې د شوروي د بهرنیو چارو د وزارت مرستیال قره خان په روم کې د شوروي سفیر پوتومکین ته خبر ورکړ چې الله نوازخان د نادرشاه ځانگړی یاور په اروپا کې د امان الله خان د وژلو دنده په غاړه اخیستې ده. الله نواز او ملگري يې د ایټالیا د پولیسو له خوا ونيول شول او وسله يې ضبط شوه.

د ۱۹۳۴ کال په می کې احمد علي خان په روم کې د افغانستان د سفیر په توگه وټاکل شو او دنده ورکړل شوه چې په هره بیه وي الله نواز ته سپارل شوې دنده سرته ورسوي. بیا شوروي استخباراتو دا ارزښتناک مالومات په لاس راوړل او روم ته يې ولېږل او د امان الله خان د امنیت له پاره تدبیرونه ونيول شول.

هاشم خان بل کورپ مکې ته ولېږه چې امان الله حج ته د تک په مهال په زهر و وژني. د دوی دغه هڅه تر ۱۹۳۸ کاله پورې دوام درلود خو د امان الله خان په وژلو بريالي نه شول.

د تیخونوف په وینا د ۱۹۳۴ کال د فبروري په ۲۱مه نېټه د امان الله خان سکرټر په روم کې شوروي سفارت ته ورغی او هیله يې وکړه چې مسکو ته د امان الله خان د یو شمېر غوښتنو راپور ورکړي. په مسکو کې د امان الله غوښتنو ته مثبت ځواب ورکړل شو. د ۱۹۳۴ کال د جون په میاشت کې صدیق خان په ناڅاپي ډول په رېل کې هغه مهال د شوروي اتحاد د بهرنیو چارو د وزیر لیتوینوف سره کتلي و چې د ژینو نه د بېرته تک په

حال کې ورسره يوځای شوی و. په دغه ليدنه کې صديق خان د لیتونيوف نه هيله کړې وه چې هغه ته د مسکو نه د ليدلو اجازه ورکړل شي. د ۱۹۳۴ کال د جون په ۱۵ مه سياسي دفتر اجازه ورکړه چې په اروپا کې افغان مهاجرينو د لسو نه تر دولسو تنو پورې افغانستان ته د ترانزيت ويزې ورکړل شي چې په شوروي اتحاد کې يوه مياشت د اقامت حق ولري. تيخونوف زياتوي چې په واقعيت کې ستالين اجازه ورکړه چې امانستان د منځنۍ اسيا د جمهوريتونو نه خپل فعاليتونه پيل کولی شي. په دې توگه ستالين يو ځل بيا هڅه پيل کړه چې د امان الله خان نه د شوروي دريځ د پياوړي کېدو له پاره گټه پورته کړي. خو هغه ته يې د مادي مرستې په ورکولو کې بېرته نه کوله.

د ۱۹۳۵ کال د مارچ په مياشت کې په روم کې شوروي سفير سوريتس چې پخوا په افغانستان کې د شوروي سفير و د صديق خان څرخي سره ژمنه وکړه چې شوروي ته به د ده سفر وشي. د دې ټولو سره سره شوروي حکومت د امان الله د غوښتنو په اړه بېرته نه کوله.

امانستانو وکولی شول چې يو موټی شي او په برلین، استانبول، بغداد، مکه، تهران، مشهد، کربلا، بمبيي، کوپټه او پېښور کې فعاليت په کار واچوي. خو د ننه په هېواد کې د دوی فعاليتونه د حکومت تر څارنې لاندې و.

امان الله خان په ۱۹۳۵ کال کې حج ته لاړ او هلته يې د پښتنو د مشرانو سره کتنې تر سره کولې. تيخونوف وايي چې يو څه وخت وروسته د شوروي او امان الله خان تر منځ تماسونه په ناڅاپي توگه د منځه لاړل.

د شامي پير پېښه

دریم رایش غوښتل چې د برتانيې ضد قبایلي پاڅون نه گټه پورته کړي. په ۱۹۳۸ کال کې د ایتالیا او المان هېوادونو هڅه وکړه چې په وزیرستان او په سوويلي افغانستان کې غښتلی اردور جوړ کړي. روم په ۱۹۳۸ کال کې د ايبي فقير په وسله وال کولو پيل وکړ او د المان جاسوسي جال د يوه ازماينېتې گام په توگه د هند او افغانستان په پولو کې پراخي لمسونې سازمان کړې. په ۱۹۳۸ کال کې برلین د امان الله خان له پاره چې په علاقمنۍ سره د «محور» د هېوادونو سره همکارۍ ته حاضر و، علاقه وښودله.

هنټيک د المان د بهرنیو چارو د وزارت د منځني ختيځ د دفتر مدير د دوهمې نړيوالې جگړې په درشل کې د المان لومړني لوی اطلاعاتي عمليات په وزیرستان کې طرح کړل. هغه مهال چې په وزیرستان کې د ايبي فقير په مشرۍ د انگليسانو په وړاندې وسله وال پاڅون

وشو هنتیک په سوريا کې د خپل يوه اجنت سره تماس ونيو.

دا اجنت محمد سعد گيلاني د قادرپه طريقې پير و چې د پښتنو په منځ کې د «شامي پير» په نوم نامتو و. دا پير د گيلاني د سترې کورنۍ يو غړی و چې په اسلامي نړۍ کې يې لوی اغېز درلود. د هغه تره حسين گيلاني د يوروشلم لوی مفتي او د خپلې طريقې نړيوال مشر و چې د محور د هېوادونو سره يې همکاري کوله. برسېره پر دې سعد گيلاني د امان الله خان د لرې خپلوانو څخه و. (د محمود طرزي ميرمن د شام وه او د هغې له لوري دا د لرې خپلوی اړیکه موجوده وه) په افغانستان کې هم د قادرپه طريقه مهمه گڼل کېده.

هنتیک په افغانستان کې د ۱۹۱۵-۱۹۱۶ کلونو د خپلې تجربې نه پوهېده چې د پښتنو د سيمو په منځ کې هر ډول فعاليت د پيسو پرته د ماتې سره مخامخ کېږي. له دې امله د پښتنو مشرانو د اخبستلو له پاره بايد شامي پير ته زياتې د سپينو او سرو زرو سکې ورکړل شي. خو ښکاره ده چې د المان اجنت د انګلستان د کمرك له لارې نه شو کولی دومره زياتې پيسې له خان سره هند ته يوسي. ځکه په برلېن کې پرېکړه وشوه چې د قبایلو د رانيولو له پاره د اړتيا وړ پيسې د خايي سودخورو له لارې د گيلاني په لاس ورکړل شي. هنتیک د دې کار له پاره د ټانک نواب د وزيرستان لوی او شتمن فيودال په کوته کړ. د ټانک نواب د لويې فيصدي کټې او ټينګ ضمانت پر بنسټ پرېکړه وکړه چې دا پيسې د پير سعد گيلاني په لاس ورکړي. هغه وخت چې د ايبي فقير د شک توه په دره کې د انګرېزي پوځ په وړاندې دفاع کوله شامي پير وزيرستان ته ورسېد. شامي پير ډېر زر د وزيرو او مسيدو په منځ کې لوی اغېزناک شخص وګرځېد. دا ډېر مناسب وخت و ځکه چې د يوې خوا د ايبي فقير په چاپېر زيات وزير او مسيد راټول شوي وو او د بلې خوا د افغانستان د حکومت له لوري د هند سره د سرحد په اوږدو کې د کمريکاتو د جوړېدو له امله سلیمانخېل د ننه په افغانستان کې د دولت پر ضد پاڅېدلي وو. کله چې شامي پير وزيرستان ته ورسېد سلیمانخېلو يو پلاوی شامي پير ته واستولو.

په زيات کومان د پلاوي سره د ليدنې نه د المان اجنت گيلاني ته ښکاره شوې وي چې په نږدې وختونو کې سلیمانخېل به د هاشم خان د حکومت په وړاندې جګ شي نو هغه سمدلاسه د ۱۹۳۸ کال د جون په ۱۵ مه کاني گرم ته نږدې د قبایلو جرګه راوغوښته چې په هغې کې گيلاني خلک د ظاهر شاه د نسکورولو او پر خای يې د امان الله خان منځ ته راوړلو ته راوبلل. پير سعد گيلاني د پښتنو د رانيولو له پاره د سپينو زرو زياتې پيسې چې ټول وزن يې ۱/۵ ټن ته رسېده ولکولې چې د ټانک د نواب نه يې ترلاسه کړې وې. وزيرو او مسيدو په بېره سره پنځه زره لښکر تيار کړ چې شامي پير يې مشري کوله او دغه لښکر

بې د افغانستان د سرحد په لور روان کړ. خو دغه وخت د ابي فقير چې لرې ليد بې درلود د شامي پير ملاتړ ونه کړ. د ابي فقير شايد په دې پوه شوی وي چې د شامي پير تر شا د انگليس ضد داسې لاس وي چې غواړي د برتانيې ضد د پښتنو ملي ازادي غوښتونکي غورځنگ نه خپل ځانته کټه پورته کړي. دی د سطرنج دانه نه وه چې پښتانه د نورو د کټو له پاره قرباني کړي. سليمانخېلو پرېکړه وکړه چې خپلواک کړه تر سره کړي او د کيلاني سره يوځای نه شول، د مومندو او شينووارو قبيلو همدغسې دريځ ونيو. له دې امله د کابل په لور لښکر کښي ونه شوه. انگرېزانو شامي پير ته د ۲۵ زرو پونډ سټرلینګ د رشوت ورکولو وړانديز وکړ. شامي پير هوکړه وکړه او د جون په ۳۰مه يې خپل ځان د انگليس سياسي اجنت برنس ته تسليم کړ. انگرېزانو هغه دمشق ته يووړ او پښتانه خپلو کورونو ته ستانه شول. د انگلستان استخباراتو ونه شو کولی چې په وخت سره د سعد کيلاني اړيکې چې د المان سره يې همکاري کوله مالومې کړي. خو د افغانستان مشرتابه فکر کاوه چې د شامي پير د کړو تر شا د انگرېزانو لاس دی.

د ۱۹۳۸ کال د اکتوبر په ۶مه د انگليس پلاوی د متکاف په مشرۍ کابل ته لاړ او څو ورځې يې د هاشم خان او نورو دولتي لور رتبه چارواکو سره وکتل او متکاف د خپلو خبرو په ترڅ کې افغان چارواکو ته څرګنده کړه چې د شامي پير پېښه په انگرېزانو پورې هېڅ تړاو نه لري. په پای کې د دواړو لورو تر منځ پرېکړه وشوه چې

۱- برېتانيا ژمنه کوي چې قبايل د افغانستان په وړاندې ونه کاروي.

۲- افغانستان په خپل وار د پښتون قبایلو سره د انگرېزانو پر ضد د همکارۍ نه ځان ژغوري.

۳- انگلستان د افغانستان حکومت ته د افغانستان او هند تر منځ د سرحد د ټينګولو له پاره پيسې او جګړه يز وسايل ورکوي.

د متکاف تړون د افغان او انگليس اړيکو کې ښه والی منځ ته راوست.

د انگلستان استخباراتو سعد کيلاني په سوريا کې تر څارنې لاندې ونيو. انگرېزانو د ۱۹۳۹ کال په پسرلي کې د سعد کيلاني اړيکې په مصر کې د هنتيک سره ثابتې کړې. له دې کبله انگرېزانو د هاشم خان نه وغوښتل چې د المان سره خپلې اړيکې پرې کړي خو هاشم خان دا خبره ونه منله.

د «امان الله خان» او «تبت» عمليات

زه به د تبت د عملياتو نه ډډه وکړم او د امان الله خان عملياتو ته به لنډه اشاره

وکړم. دا ځل وارسا لا نيول شوې نه وه چې فن روبنتروپ د المان د بهرنیو چارو وزير په خپل يوه سفر کې هنتيک په يوه ځانگړي اورگاډي کې د خان سره بوت او هغه ته يې وړانديز وکړ چې د انگرېزانو پر ضد د ازادو قبایلو د پاڅون د تنظيم له پاره په افغانستان کې د سفير په توگه کار وکړي. هنتيک د روبنتروپ وړانديز په دې شرط ومانه چې په افغانستان کې ټول الماني سازمانونه او استخبارات د ده تر لاس لاندې کار وکړي. د المان مشران د شوروي اتحاد سره د نه تېري د تړون د کړلو وروسته هيله من وو چې شوروي لوری به په افغانستان کې د خپل پلان د پلي کولو په موخه خپل لوري ته کش کړي. د المان مشران په دې فکر وو چې د خپل پلان د پلي کولو په موخه چې امان الله خان بېر ته پاچاهي ته راوستل شي دا کار يوازې د روسې په ملاتړ شونې دی. دوی غوښتل چې د انگرېزانو په وړاندې د ازادو قبایلو پاڅون پراخ کړي او په ځانگړې توگه د وزيرستان د پاڅون ملا وتړي تر څو انگرېزان اړ شي چې د خپل پوځ زیاته برخه په هند کې وساتي.

د هنتيک په اند د ظاهر شاه د نسکورېدو له پاره د هغو غلزيانو نه چې شوروي ترکستان ته کوچېدلي دي د صديق خان څرخي په مشرۍ دوه زرينه ډله جوړه شي او په الماني وسله سنبال شي او مزار ونيسي. ده همدا ډول فکر کاوه چې امانبستان به بريالي شي چې د سرحدي پښتنو قبایلو او په لومړي گام کې د اپريدو، مومندو او شينووارو لښکر تنظيم او د کابل په لور يې روان کړي. د دغو قبایلو په پياوړي پاڅون سره د ظاهر شاه نسکورېدل حتمي دي. په دې اړه د المان او شوروي اتحاد تر منځ د ډېرو خبرو اترو نه وروسته د يوې خوا شوروي اتحاد دا پلان ونه مانه او د بلې خوا د المان ځينې کړۍ د دې پلان مخالفې وې او دوی هېتلر قانع کړ چې د دې پلان مخالفت وکړي. په دې توگه دا پلان پاتې شو.

د ۱۹۳۹ کال په دسمبر کې په کابل کې د امانبستانو پټ سازمان د حکومت له خوا کشف شو چې د دربار د وزير مرستيال غلام حيدر خان په مشرۍ يې د ظاهر شاه د نسکورېدو توطيه پلان کړې وه. زيات امانبستان د بندي کېدو له وېرې ازادو قبایلو ته وتښتېدل او په خپله غلام حيدر خان په اپريدو کې پټ شو. د امان الله خان هڅې د دوهمې نړيوالې جگړې تر پايه دوام درلود تر څو په ۱۹۴۸ کال کې هغه د يوه ليک په ترڅ کې خپل بيعت ظاهر شاه ته واستوه. په دې توگه دا مبارزه د امانبستانو په ناکامۍ پای ته ورسېده.

د محمد ظاهر شاه واکمني

محمد ظاهر د ۱۹۳۳ نه تر ۱۹۷۳ کال پورې څلورېنست کاله د افغانستان پاچا و. په دې ترتيب ده د هر بل افغان پاچا نه اوږده پاچايي کړې ده. محمد ظاهر وروسته له دې چې پلار يې پاچا محمد نادر په ۱۹۳۳ کال کې ترور شو، پاچا شو. دغه مهال دی نولس کلن و. خو د کاکړ په وينا دی تر ۱۹۶۳ کال پورې په نامه پاچا و او په عمل کې واک د ده د ترونو په لاس کې و. دی د خپل تره محمد هاشم په اوږده صدراعظمۍ او د بل تره شاه محمود په صدراعظمۍ کې د پاچايي چارو د کولو دپاره ونه هڅول شو. نو ځکه دی په پاچايي چارو کې د تجربې خاوند نه شو. پاچا محمد ظاهر که څه هم د محمد داود په لس کلنه صدراعظمۍ کې له داود او د هغه د ورور محمد نعيم سره په گډه په عملي سياست کې فعال شو خو بيا هم د سياست نوښتگر او عامل محمد داود و. په دې ترتيب محمد ظاهر تر نهه څلورېنست کلنۍ پورې په نېغه او ازاد ډول پاچايي نه ده کړې.

په دغه دوره کې لکه چې مو د مخه يادونه وکړه د نادرشاه له خوا د لېبرال اقتصاد سياست ته دوام ورکړ چې د هغه په پايله کې ملي بانک او بيا د افغانستان بانک منځ ته راغلل. د دې دورې د اقتصادي سياست بله مهمه دنده د ښوونې او روزنې پراختيا او لويو لارو جوړولو ته ځېره شوې وه. د ښوونې او روزنې په برخه کې دولت په دې هڅه کې و چې د ملي اقتصاد ستونزې د ور کدرونو له خوا د منځه وړل کېدای شي نو ځکه لومړنيو، منځنيو او لوړو زده کړو ته پاملرنه زياته شوه. په ۱۳۱۲ کې د ښوونځيو شمېر ۳۷۰ او د زده کوونکو شمېر ۴۵۹۱ وو خو په ۱۳۳۵ کې د ښوونځيو شمېر ۸۰۴ ته لوړ شو او د زده کوونکو شمېر ۱۲۶۰۹۲ ته ورسېد. پردې سربېره هر کال يو شمېر افغان زده کوونکي د لوړو زده کړو دپاره بهر ته هم استول. د لوړو زده کړو په موخه په ۱۳۱۲ کال کې د ښوونې او روزنې وزارت په چوکاټ کې د طب د پوهنځي بنسټ کېښودل شو، په ۱۳۱۷ کال کې د حقوقو او سياسي علومو پوهنځی، په ۱۳۲۱ کال کې د طبيعي علومو پوهنځی، په ۱۳۲۲ کال کې د ادبياتو او بشري علومو پوهنځی، په ۱۳۳۰ کال کې د شرعياتو پوهنځی، په ۱۳۳۵ کال کې د کرنې پوهنځی او په ۱۳۳۶ کې د اقتصاد پوهنځی پرانېستل شول. په دې

توکه په ۱۳۳۶ کال کې کابل پوهنتون د يوې خپلواکې ادارې په توګه راپورته شو. د اقتصادي پرمختيا په موخه ترانسپورت ته زياته پاملرنه وشوه. زموږ هېواد چې سمندري لارې، د اورګاډي پټلۍ او لوی سيندونه نه لري نو د ځمکني او هوايي ترانسپورت اړتيا زياته ليدل کېږي. ځکه حکومت زيار وايست چې د هېواد بيلې بيلې سيمې د لويو لارو په وسيله ونښلوي. له دې کبله دولت د ټولګټو وزارت جوړ کړو چې دنده يې د اصلي او فرعي سرکونو فني سروې او څېړنه، د لويو لارو، بندونو او پلونو جوړول او د هغوی ساتنه وه.

خو دويمې نړيوالې جګړې د هېواد دغه اقتصادي پرمختيا په تپه ودروله، په دې چې له اروپا نه د صنعتي ماشينونو راوړل هېواد ته بند او د هېواد صادرات لږ شول او هېواد د اقتصادي ستونزو سره مخامخ شو.

د دوهمې نړيوالې جګړې وروسته د دې اقتصادي ستونزو د هوارېدو دپاره د اقتصاد وزير او د ملي بانک مشر عبدالمجيد زابلي د يوه پرمختيايي پروګرام وړانديز وکړ چې په هغه کې د کرنې د سکتور د توليداتو زياتوالی، د سپکو او درنو صنايعو پرمختيا او د خدمتونو د سکتور وده په پام کې نيول شوې وه. په دې پروګرام کې بيا ملي بانک ته د هېواد په صنعتي کولو کې لوی رول ورکړ شوی و. څه مهال وروسته جوته شوه چې ملي بانک د درنو صنعتي تصديو په تمویل کې د ستونزو سره مخامخ دی. ځکه دولت اړ شو د درنو صنايعو او د عامه چارو د چټکې ودې او پرمختيا دپاره خپله پانګه واچوي او هم بهرنۍ پانګې او مرستې را جلب کړي.

د رهبري شوي اقتصاد پيل

د محمد داود اقتصادي سياست رهبري شوی اقتصاد و. د داود خان د رهبري شوي اقتصادي سياست زری دا و چې «حکومت د ولس د ټولو برخو د استازي په توګه د اقتصاد لارښوونه وکړي او هغه رهبري کړي.» ۵۵۸

حکومت د رهبري شوي اقتصاد د پلي کولو په موخه په ۱۹۵۵ کال کې د اقتصاد د وزارت په چوکاټ کې د پلان جوړولو رياست جوړ کړو چې په ۱۹۵۷ کال کې د پلان جوړولو وزارت باندې بدل شو. د پلان جوړولو وزارت دنده دا شوه چې د يوې خوا د هېواد طبيعي زېرمې او د هغې تر څنګ کورنۍ او بهرنۍ مادي او مالي سرچينې په معقول ډول په کار واچوي، چې ملي توليدات زيات، د خلکو د ژوند سطح لوړه، وزګارتيا له منځه يوسي او د ملي عايداتو وېش په عادلانه توګه تر سره کړي او د بلې خوا د بيلو بيلو سکتورونو

پروگرامونه يو د بل سره په ښه ډول همغږي کړي. په دې توگه لومړی اقتصادي پلان د ۱۳۴۰-۱۳۳۵ کي تر لاس لاندې ونيول شو. د لومړي او دوهم پلان موخه د مادي زېربنا په تېره بيا د سرکونو، پلونو او هوايي ډگرونو جوړول وو. د ۱۹۷۹ کال پورې ۱۸۶۰۰ کيلومتره سرک جوړ شو چې د هغې جملې نه ۲۷۳۰ کيلومتره کپړ او يا کانکريټي، نږدې ۵۰۰۰ کيلومتره خامه سرک چې په ټول کال کي کټه ورڅخه اخېستی شوه. او ۱۱۰۰۰ کيلومتره سرک چې د کال په ځينو وختو کي کار ځيني اخېستی شو. ۵۵۹

د هوايي ترانسپورت په وده کي گامونه پورته شول. يو شمېر ملي او نړيوال هوايي ډگرونه جوړ شول او د پيلوټانو، انجنرانو او تخنيکرانو روزنه ته پام وشو. په دې کلونو کي د برېښنا، د ډبرو سکارو، سمټو او بورې په توليد کي څو برابره زياتوالی منځ ته راغی. همدارنگه د ورينو او نځي توکرانو په توليد کي زياتوالی راغی او د گاز توليد پيل شو.

همدارنگه په دغو پلانونو کي د مخابراتو، ښوونې او روزنې او روغتيايي چارو کي د پام وړ پرمختگ وشو. دولت د کرنې سکتور ته زيات پام وکړ خو بيا هم حکومت خپله موخه چې د خوراکي موادو له لحاظه په ځان متکي شي او ځيني کرنيز مواد د بهرنيو اسعارو د لاسته راوړلو په خاطر توليد او بهر ته يې ولېږي ترلاسه نه کړه او اړ شو چې يوه اندازه خوراکي توکي د بهر نه وارد کړي. په دې موده کي لويې او کوچنۍ صنعتي فابريکي او تصدۍ جوړې شوې.

افغانستان د مطلق بې پرې سياست ته دوام ورکړ او د دې سره سره چې په هېواد کي د محور په پلوي ټينگ احساسات موجود وو، د دوهمې نړيوالې جگړې کي برخه نه واخېسته.

د هند وېش او د پښتونستان موضوع

د هند وېش ما په خپل يو بل کتاب کي چې «د باچا خان اندونو او مبارزې ته لنډه کتنه» نومېږي اوږد بيان کړی دی. څرنگه چې ټول هندوستان د انگرېزانو مستعمره وه، خو د ډېورنډ د کرښې ختيځه سيمه چې د هغو د نفوذ ساحه شوه او کلونه وروسته ازاد پښتونستان وبلل شوه، له هندوستان نه د انگرېزانو تر وتلو پورې په دغه ډول خپلواکه وه، چې د هندوستان بله هېڅ برخه هغسې خپلواکه نه وه. پاکستان چې په ۱۹۴۷ کال کي د هند د وېش په پايله کي منځ ته راغی خپلې نورې سيمې د ۱۹۷۳ کال د اساسي قانون له مخې اداره کولې خو د پښتنو دغه سيمې يې د انگرېزانو د وخت د سرحد د جزا قانون له مخې تر ۲۰۱۸ کال پورې اداره کولې.

پښتونستان د بولان نه تر چتراله او اباسينه پورې د ډېورنډ د کرښې هغه خوا ته د پښتنو ټاټوبی دی چې د افغانستان څخه د ډېورنډ د تش په نامه کرښې په ذريعه جلا شوی دی. د ۱۹۴۷ کال د جون د مياشتې په ۲۱ نېټه د بنو تاريخي جرگې د هغې وروسته، چې لارډ مونت بېټن او د مسلم ليگ گوند د سرحد په صوبې کې په ټولپوښتنې ټينگار وکړ، پرېکړه وکړه چې د ټولو پښتنو خپلواک دولت دې جوړ شي. دغې جرگې په دې ټينگار وکړ چې که هرومرو د سرحد په صوبه کې ټولپوښتنه کېږي نو بايد د هند او يا پاکستان سره د يوځای کېدو برسېره دې د ازاد پښتونستان په جوړېدو باندې هم پښتنو ته د رايو حق ورکړ شي. د بنو د تاريخي پرېکړې متن، چې د قاضي عطاءالله خان له خوا جرگې ته وړاندې شو، دا دی:

« پښتنو د خپل آزاد حکومت فيصله اوکړه

پښتانه نه هندوستان غواړي نه پاکستان

د صوبې د جرگې- د اسمبلی د ممبرانو، د خدايي خدمتکارانو افسرانو او د «ځلي پښتون» د جرگې يو شريک اجلاس په ۲۱ د جون ۱۹۴۷ په مقام د بنو کې د خان اميرمحمد خان د صدارت د لاندې اوشو. دې اجلاس په اتفاق سره دا فيصله اوکړه چې په دې ملک کې دې د ټولو پښتنو يو ازاد حکومت جوړ شي. چې د هغې د ايښودو په اسلامي اصولو، جمهوريت، مساوات او اولسي انصاف باندې ايښودی شي. دا اجلاس هر چا ته اپيل کوي. چې د دې اعلى مقصد د حاصلولو دپاره په يو مرکز باندې راغونډ شي- او بې د پښتون نه دې د بل چا اقتدار ته سر تيب نه کړي.

له طرفه د صوبه سرحد د لويې جرگې نه» ۵۶.

کاکړ وايي چې پاکستان په خپله خاوره کې ځان يو نوی دولت نه، بلکې د برتانوي حکومت ځای ناستی يا وارث گڼي. که د پاکستان دا ادعا سمه هم وي بيا نو هغه سيې چې د ډيورنډ د هوکړه ليک له مخې د برتانوي هند د نفوذ په ساحه کې کبل شوې وې، د پاکستان د حاکميت لاندې نه راځي، ځکه چې هغه د انگرېزانو د نېغ حاکميت لاندې نه وې او انگرېزانو د هغو له پاره د ادارې بله شېوه غوره کړې وه.

سره له دې چې د افغانستان حکومت د هند افغان سرحد منلې او د ۱۸۹۳ نه راهيسې بيلو بيلو کميسيونونو د افغان- انگليس د ۱۹۰۶، ۱۹۱۹ او ۱۹۲۱ کلونو د تړونونو د احکامو له مخې په نېټه کړی دی، افغانستان د ډيورنډ د کرښې اخوا پښتنو

قومونو سره ځانگړې اړیکې ساتلو ته دوام ورکوي. ډېرو افغان دولتي شخصیتونو هیله درلوده چې یو ځل برتانویان لاړ شي د سرحد موضوع به د نویو خبرو له پاره خلاصه شي. سره له دې چې د امان الله خان وروسته واکمنو نه غوښتل چې دا موضوع بیا پرانيزي په داسې حال کې چې د برتانوي حکومت د هند د مشرانو او سیاسي گوندونو سره د ازادۍ په اړه خبرې کولې. د افغان حکومت په دې کې پاتې راغی چې د پښتنو قومونو چې افغانستان یې د خپل ملت برخه بولي چې د زرو امیرانو نه په زور بیله شوې ده، د راتلونکې په اړه یوه فعاله ډپلوماسي تعقیب کړي.

د دوهمې نړیوالې جګړې په جریان کې چې کله جاپان برما ونیوله او په کلکته یې بمونه وغورځول نو انګرېزانو ته دا فکر پیدا شو چې که جاپان هندوستان ونیسي نو ښه به دا وي چې د افغانستان هغه سیمې، چې دوی ورڅخه بېلې کړې دي، بېرته افغانستان ته وسپاري. ولي خان لیکي: «پېرنګي په خپله د افغانستان حکومت ته دا تجویز پېش کړو چې ته د دې خپلو علاقه مطالبه د حکومت بریتانیه نه وکړه. بلکې ما خو تردې اورېدلي دي دغه خط یا عرضداشت په خپله برتانوي سفیر په کابل کې لیکلی و.» ۱۹۶۱ د سرور رونا په وینا «په ۱۹۴۴ کال کې د افغانستان حکومت په کابل کې لاندینی وړاندیز د یوه لیک په ترڅ کې د انګلستان سفیر ته وسپاره:

۱- د بریتانیا حکومت دې ژمنه وکړي چې د هندوستان د سیاسي وضعې د سیاست تر بدلون په پورې په ازاد سرحد کې د حاکمیت د پراختیا هیله نه لري.

۲- د بریتانیا حکومت دې ژمنه وکړي چې د افغانستان د پوځي ځواکونو د پیاوړتیا او د افغانستان د قبايلي مخکو او سرحد د امنیت په منظور د پوځي تجهیزاتو او پیسو مرسته کوي او په بلوچستان کې یو بندر هم په واک کې ورکوي.

۳- دواړه لوري افغانستان او بریتانیا دې ژمنه وکړي چې د امنیت، سوکالی او نورو په هکله دې دواړه لوري سلاوې او خبرې اترې جاري وساتي

۴- دواړه لوري دې د لسو یا شلو کالو پورې د نه تیري تړون لاسلیک کړي او د همکاری د اړیکو فضا دې په هراړخیزه توګه روښانه شي.

۵- د هند د ازادۍ وروسته دې د افغانستان نه نیول شوې مخکې بېرته مستردې شي خو د هغو د اوسېدونکو په سلا او خوښه.» ۵۶۲

د دې وړاندیز ځواب انګلیسانو د افغانستان حکومت ته په ۱۹۴۵ کې ورکړ. دا ځواب منفي و ځکه چې په جګړه کې جاپان او جرمني ماتې وکړه نو بیا انګرېزانو دا ښه وګڼله چې دا سیمې د افغانستان په ځای پاکستان ته ورکړي. د ولي خان په اند دا کارځکه

انگريزانو وکړ چې: «که چېرې دا علاقې افغانستان ته وسپارلې شي نو دا به په صوبه سرحد کې د پيرنکيانو دېمنان د افغانستان په قومي ورورولۍ کې ځان له داسې مقام پيدا کړي چې هم به د افغانستان حکومت او هم به پيرنکي ته مشکلات پيدا کړي.» ۵۶۳

د کابيني پلاوي د سر سټيفورډ کرپيس په مشرۍ د هندوستان د ازادۍ په هکله د هند د مشرانو سره په خبرو اترو بوخت و د افغانستان مشرانو د خپلې خاورې د بېرته لاسته راوړلو سره مينه ښکاره نه کړه او دانگلستان د لوري سره يې په دې هکله خبرې اترې ونه کړې. عبدالحکيم طيبي په خپلو خاطرو کې ليکي: «په هغو ورځو کې د هند د وېش او د لارډ مونت بېټن د ملکې اليزابت تره او په هند کې د انگليس وروستی واپسرای په هکله ډېرې خبرې اترې کېدې. لارډ مونت بېټن د ۱۹۴۷ کال د پرېکړې په رڼا کې د کانگرس د گوند او د مسلم ليگ د مشرانو سره د هند د ازادۍ له پاره په کار او خبرو اترو لگيا و. د دې پرېکړې له مخې د بلوچستان د ايالت او د هند د شمال- لوېديځ سرحدونو ته دا حق ورکړ شوی و چې د ټولپوښتنې (ريفرنډم) په اساس خپل سرنوشت وټاکي چې اياغواړي د هند سره يوځای شي، يا د پاکستان پلو ته لار شي او يا دا چې خپلواک پاتې کيږي. د افغانستان لاس ته تللایي موقعه ورغلې وه چې په سيمه کې د خپل حق نه ساتنه وکړي. خو افسوس چې د کابل ساتنېال حکومت په درانه خوب بیده و او باور يې نه درلود چې انگليسان هند پرېږدي او حتی مرحوم شاه محمود غازي د افغانستان راتلونکي صدراعظم په هند کې د ښاغلي سر سټيفورډ کرپيس سره، چې خبر اترو ته حاضر و، تماس و نه نیو.» ۵۶۴

د مونت بېټن په پلان کې د کابيني د پلاوي د پلان په څېر دا امکانات وو چې د قلات رياست او د سرحد صوبه دې د افغانستان سره يوځای شي. ولي خان ليکي: «چنانچه په دې مسلې د غور کولو له پاره يوه غونډه وشوله چې هغې کې يوې خوا خان قلات او د هغه قانوني مشير [سلاکار] سلطان احمدخان موجود و. او دې بل اړخ ته د پاکستان نامزد گورنر جنرل جناح صاحب او نامزد وزيراعظم نوابزاده لياقت علي خان وو او په منځ کې موجوده گورنر جنرل او واپسرای هند لارډ ماونټ بېټن ناست و. د مفصلو خبرو اترو نه پس فيصله په دې لاندینیو دوو خبرو وشوله:

۱- چې کله د اگست په پنځلسمه پيرنکي د هندوستان اختيار پرېږدي نو د قلات رياست حيثيت به بېرته هغه مقام ته ورسې کوم چې په ۱۸۳۷ کال کې د خان قلات او انگريز حاکم په منځ کې عهدنامه شوې وه.

۲- دويم دا چې که چېرې د قلات خان او د حکومت پاکستان تر منځه د څه روغه جوړه د الحاق ونه شي، نو بيا رياست قلات دا حق لري چې هغه د افغانستان سره خپل

الحاق وکړي.

په دې معاهده د خان قلات ، ماونټ ټين سره د جناح صاحب دستخط هم موجود دی «۵۶۵»

په حقوقي لحاظ افغانستان وايي چې د ډيورنډ د کرښې هوکړه ليک په امير عبدالرحمن باندې تپل شوی، چې په ۱۸۸۰ کې د افغان- انگليس دوهمې جگړې په جريان کې برتانويانو په تخت کېښوده. برسېره پردې د برتانيې په رسمي پوځي اسنادو کې دا کرښه د هند د پولې (Boundary) په توگه نه ده ياده شوې، بلکې د امير د سلطې ختيځ او سويلي سرحدونه (Frontiers) او د دوو حکومتونو د نفوذ حدود يې ښودل. موضوع د هندي سرحد نه بلکې د برتانيې د حاکميت پراخوالی و. ۵۶۶ خو بيا هم، په ۱۹۴۷ کې، د هند د وېش په درشل کې، برتانويانو د ډيورنډ کرښه د هند د نړيوالې پولې په توگه وپېژنده او په دې توگه يې د افغانستان سره د پاکستان د نړيوالې پولې په توگه هم وپېژنده کله چې برتانيې هند پرېښوده او پاکستان يې د يوه جلا هېواد په توگه ورڅخه بيل کړ او هغه سيمې يې په پاکستان کې شاملې کړې چې د افغانستان څخه يې نيولې وې. په عين وخت کې پاکستان ادعا کوي چې که دلته د اصلي هوکړه ليک په اړه پوښتنې وای نو د ډيورنډ کرښه درې ځله په وروستيو تړونونو سره تصويب شوې ده.

د قانوني پېچلتوب برسېره د ډيورنډ کرښې داسې خلک په دوو برخو جلا کړي چې تل په ملي، سياسي او کلتوري لحاظ سره اوښل شوي دي. افغان حکومت په ځنډ سره يو ډپلوماتيک برید پر مخ واچاوه او غواړي چې پښتنو ته يوه موقع ورکړل شي چې د افغانستان سره په مشوره کې خپل سرنوشت په خپله وټاکي. د ۱۹۴۷ کال په اگست کې د برتانيې حکومت شاه محمود خان صدراعظم ته، چې په لندن کې په رسمي سفر بوخت و، ډاډ ورکړ چې د شمال لوېديځ سرحد د افغانانو او پښتنو کلتوري تړاو به حتمي شي او ورته پېغام يې په هند کې د برتانيې د وروستي وایسرا لارډ مونټ بېټن نه هم لاسته راوړی و چې د هند د وېش په خبرو لکيا و. هغه افغان سفير نجيب الله ته ډاډ ورکړی و چې په يوه ښه وخت کې به د پښتنو د راتلونکې موضوع په پام کې ونيول شي.

د وېش نه د مخه ټولپوښتنې کې د شمال لوېديځ صوبې قومونو ته دا انتخاب ورکړ شوی و چې يا بايد د مسلمان پاکستان يا د هندي هند سره يوځای شي. افغان ملتپالو د وگړو په عامه رايه کې د دغو نظرونو په تنگوالي اعتراض وکړ او وېي ويل چې دوی ته دې د ازادۍ انتخاب هم ورکړ شي. په دې توگه د عبدالغفار خان او ملگرو لومړنۍ ادعا د پښتونستان خپلواکي وه. په دغه دليل د سرحدي پښتنو نامتو مشر غفار خان او خدايي

خدمتگارو او نورو ملتپالو پښتنو په ټولپوښتنې کې د کېدون نه ډډه وکړه. خو بيا يې په پاکستان کې د ننه خپلواکي غوښتنه. خو چې يو ځل وېش پای ته ورسېد او د منځ ته راغلو ملتونو پولې په رسميت وپېژندل شوې د افغان غوښتنې د برتانيې د حکومت يا امريکا متحده ايالاتو نه چې دې مسلې ته يې د انگرېزانو په سترگو کتل، لږ ملاتړ پيدا کړ. همدارنگه د امريکې په پاليسې باندې د پاکستان سره د هغې ستراتيژيکې همکارۍ ډېر اغېز اچولی و.

د امريکا د بهرنیو چارو وزارت د پښتنو او پښتونستان د موضوع په اړه هېڅ کله د افغانستان د دريځ سره موافق نه و. د ۱۹۵۱ کال په مارچ کې په کابل کې په يوه کتنه کې د امريکا د بهرنیو چارو مرستيال وزير جورج مک کي د افغان د بهرنیو چارو وزير علي محمد ته څو ټکي په گوته کړل. هغه څرگنده کړه چې د امريکا د متحده ايالاتو د قضاوت له مخې «دا سيمه چې پښتونستان نومېږي په اقتصادي او سياسي لحاظ ژوندی پاتې کېدونکې نه وه. يو ازاد پښتونستان با تجربه مشران نه لري چې د گاونډيانو سره خپلې اړيکې خوندي کړای شي. د پاکستان کورنۍ وضعه داسې وه چې لياقت علي خان په داسې دريځ کې نه و چې سرحدي سيمې ته د کتنې وړ امتيازات ورکړي. د پښتونستان په اړه د افغان د تضمين وخت ډېر مهم و. مور اوس هڅه کوو چې څومره زر کېدای شي د شوروي يرغل د مخنيوي دپاره په کېو کوښښونو سره چمتووالی ونيسو. د پښتونستان د مسلې ژوندي ساتل به افغانستان ته زيان وروي او داسې شرايط به منځ ته راوړي چې د شوروي تېري ته به لاره هواره کړي. په راتلونکې کې د مخ بيونکو کړو پرته به د افغانستان دپاره اوس ښه دا وي چې د پاکستان سره د پښتونستان په اړه يو لنډ مهالی جوړجاړی ولټوي.» ۵۶۷

که څه هم امريکا خپل ښه خدمتونه وړاندې کړل چې د دواړو هېوادو سره مرسته وکړې چې خپله کښاله هواره کړي. که څه هم په سيمه کې د کرکېچ د کمولو په موخه د امريکا متحده ايالاتو وړانديز په زياته اندازه د امريکا د لويو جيوستراتيژيکو کتو له پاره و او د افغانانو د احساساتو نه ډکه مبارزه چې د پښتنو د خوداراديت د حق دپاره يې کوله، لږ پام کاوه چې پاکستان تر پايه دا د خبرو اترو وړ موضوع نه ده منلې. په پای کې د مک کي کتنه ناکامه شوه چې دا موضوع هواره کړي او وروسته د ۱۹۵۱ په اکتوبر کې د امريکا متحده ايالات د خپل وړانديز نه ووت چې د منځکړي په توگه عمل وکړي.

د کاکړ په وينا په افغانستان کې په پراخه اندازه باور پر دې دی چې پاچا ظاهرشاه د نامالومو دليلونو له مخې په دې کې پاتې راغی چې د شمال لوېديځ سرحد په اړه د وېش نه د مخه او د وېش په جريان کې په پوره ځواک سره د افغانانو د داعيې ملاتړ وکړي که څه

هم د سر په مشرانو کې د جنګ وزير محمد داود د پښتونستان په اړه احساس درلود. خو زه ليکوال فکر کوم چې شايد يو لامل يې دا وي چې پاچا خان او ملګرو يې د نادرخان د کهول د واکمنۍ پر ضد د امان الله د بېرته واکمن کېدو له پاره مبارزه کوله. د پاچا خان او ملګرو دغه دريځ د نادر خان د کهول واکمني گواښوله. بل دليل يې شايد دا وي چې شوروي اتحاد ونه پاروي په دې چې لوېديځ او په ځانګړې توګه امريکې افغانستان ته د شوروي گواښ په وړاندې د دفاع ژمنه نه کوله. دغه د هند د وېش کلونه (۱۹۴۵-۱۹۴۷) د افغانستان د کونړ د بلوا سره سمون خوري چې په پای کې په لوی ننګرهار کې يو لوی پوځ ځای په ځای شو چې قومي پاڅون غلی کړي. سردار محمد داود په جلال اباد کې د عملياتو قوماندۀ او کنټرول په لاس کې ونيو. د بلوا د څپلو او د قومونو سره د سولې د کړلو نه وروسته سردار له دې امله چې بلوا بيا د سره ونه نيول شي، په ډګر کې څو لخواوې وساتلې، هغه شپږ ښې سنبالې لواگانې په سرحد کې ځای په ځای کړې. دا خوځښت په کابل کې داسې تعبير شو چې سردار نيت لري چې د ديورنډ د کرښې اخوا يو پوځي ازمون وکړي چې په شمال لوېديځې سرحدي صوبې قومونه د افغانستان د داعيې په منظور منظم کړي. دا هغه مهال و چې ظاهرشاه داود د خپلې دندې نه گوښه او د افغانستان د سفير په توګه يې فرانسې ته واستوه.

په ۱۹۴۹ کال کې د پاکستان جنګي الوتکو په خوست کې د مغولکي په نامه يو کلی بمباري کړ چې د دواړو خواوو اړيکې يې نورې ترينګلې کړې او د افغان ملي شورا پرېکړه وکړه چې په يو اړخيز ډول د انګرېزانو سره د نولسمې پېړۍ ټول تړونونه د ديورنډ د کرښې د هوکړه ليک په ګډون لغوه کړي په دې اساس چې د تړونونو لاسليک کوونکي مړه شوي او بايد د سره خبرې پرې وشي. له دې وروسته تر ننه هېڅ افغان حکومت د ديورنډ د کرښې اعتباري توب په رسميت نه دی پېژندلی، چې د افغانستان او پاکستان تر منځ (دې فکتو) سرحد جوړوي.

په ۱۹۵۳ کال کې چې سردار محمد داود صدراعظم شو «پښتونستان» د افغان په کورني او بهرني سياست کې مهمه موضوع وګرځېده. په ۱۹۵۵ کال کې د يو يونټ د پاليسۍ په پايله کې چې دغه صوبه يې په لوېديځ پاکستان په وجود کې ګډه کړه، د پښتونستان د کشالې په اړه يې د افغانستان او پاکستان تر منځ اختلاف سخت کړ. دا نقشه چې پنجاب، سيند، شمال لوېديځ سرحدي صوبه او بلوچستان د ختيځ پاکستان په يوه سياسي واحد لوېديځ پاکستان کې منسجم کړل چې د بنګال د زيات نفوسه صوبې سره يې ټاکنيزه برابري ترلاسه کړي. په افغانستان کې د يوه يونټ پاليسۍ ته د داسې پلان په توګه

کتل کېدل چې د قومي سيمې بې نظيره هويت او اداري حالت بدلوي. افغانانو د حکومت په تشويق په کابل، کندهار او جلال اباد کې لويې مظاهرې وکړې. مظاهره کوونکو په کابل کې د پاکستان په سفارت او په کندهار او جلال اباد کې په کونسلگريو بريد وکړ او په کابل کې يې د پاکستان د سفارت بيرغ وسوځوه. پاکستان همدغسې په پېښور کې د افغانستان د کونسلگرۍ په وړاندې ورته عمل وکړ. خو د ۱۹۵۵ کال په سپټمبر کې ترينگلنټيا کمه شوه او د دواړو خواوو نماينده گانو په تشریفاتو توگه د خپلو هېوادو په ډپلوماټيکو سفارت خانو په ترتيب سره بيراغونه وڅرېدل، چې دغه ټکر د دواړو هېوادو په دوو اړخيزو اړيکو ژور داغ پرېښود.

د دې نه لږ وروسته پاکستانيانو په وچه چاپېر افغانستان د ترانزيت لارې بندې کړې او کابل اړ شو چې بهرنۍ نړۍ ته د ترانزيت لارې د لاسته راوړلو دپاره شوروي اتحاد ته مخ واړوي. د ۱۹۵۵ کال د جون په مياشت کې افغانستان د شوروي اتحاد سره د ترانزيت تړون لاسليک کړ. د تړون شرايط د افغانستان په کټه و. دغه گام د پاکستان پاليسي کې بدلون راوست او د افغانستان له پاره يې د ترانزيت لار بېرته پرانېسته. خو وضعې افغانستان نور دې ته کش کړو چې د شوروي اتحاد سره اړيکې پراخې کړي.

د علي احمد جلاي په اند زيات وخت ويل کېږي چې د بغداد په پکت کې چې د امريکا متحده ايالاتو تضمين کړی و په هغه کې د افغانستان نه کېدون د دې لامل شو چې امريکا افغانستان ته د پوځي مرستې نه ډډه وکړي. په واقعيت کې، په اساس کې دا د پښتونستان موضوع وه، چې د امريکا په متحده ايالاتو کې يې د افغانستان او په سيمه کې د هغه د جيو سياسي اهميت په اړه ناسم تصور سره مرسته وکړه په دې چې د امريکا متحده ايالاتو افغانستان ته د برتانې په سترگو کتل چې په زياته اندازه يې د افغانستان سياسي او ستراتيژيک انځور تنوه. د دغه ناسم تصور يوه د برخه ليک نه ډکه پايله دا شوه چې د امريکا مخالفت چې افغانستان په امريکايې وسلو سنډال کړي شوروي اتحاد ته اجازه ورکړه چې په افغانستان کې د وسلو د برابرولو له لارې نفوذ وکړي. دا کار وروسته له هغې وشو چې د افغانستان پرله پسې هڅې چې د امريکې نه وسله ترلاسه کړي، ناکامه شوې.

د دوهمې نړيوالې جگړې په جريان کې برتانيا د دې مخالفه وه چې د امريکا متحده ايالات دې افغانستان ته درنې وسلې تهيه کړي او ادعا يې کوله چې دا وسله به د سرحد قومونو ته په لاس ورشي چې هلته به جرمنيان د برتانې دپاره ستونزې جوړې کړي. د جگړې نه وروسته که څه هم د امريکا متحده ايالاتو د ځان ساتنې پاليسي موخه د کمونيزم د پراختيا مخنيوی و، افغانستان په روښانه توگه د شوروي د نفوذ د گواښ

لاندې د مخکينې جبهې د هېواد په توګه د نظر نه وغورځول شو. د ۱۹۳۱ کلونو په لومړيو کې د افغانستان د بهرنۍ پالیسۍ مهم هدف دا و چې افغانستان به د شوروي نفوذ د منځه وړي. افغانستان په منځني ختيځ او لوېديځې اسيا کې د هغو درې هېوادو له ډلې نه و چې د شوروي اتحاد سره يې ګډه پوله درلوده. امريکا په ۱۹۵۴ کال کې د ترکيې او ايران سره دفاعي تړونونه لاسليک کړل. امريکا د پاکستان سره يې دوه اړخيز دفاعي تړون لاسليک کړ او ژمنه يې وکړه چې امريکا به پاکستان ته پوځي مرسته پراخه کړي. په ۱۹۴۸ کې د افغانستان صدراعظم شاه محمود خان امريکا ته سفر وکړ او د امريکا د بهرنيو چارو وزير جورج مارشال سره وکتل او په ټينګه يې د پوځي مرستې غوښتنه ورڅخه وکړه. وزير د افغان صدراعظم نه وپوښتل چې «دښمن مو څوک دی؟» ۵۶۸ هغه ځواب ورکړو چې «روسان» مارشال د ملنډې په څېر په دغه وړاندېز پورې وخنډل شونې ده چې افغانستان د شوروي پوځي ځواک په وړاندې ودرېدل شي.

په ۱۹۵۱ کال کې په يوه بله کتنه کې افغان سفير سردار محمد نعيم د امريکا بهرنيو چارو وزير مک کي ته ورياده کړه چې که امريکا افغانستان ته پوځي مرسته ور نه کړي هغه به اړ شي چې د شوروي اتحاد نه د مرستې په لټه کې شي. مک کي دا وړاندېز ته ديو ډول پټکي په توګه وکتل او افغان سفير ته يې په واشنګټن کې د شوروي سفير د تليفون نمبر ورکړ. په ۱۹۵۳ کال کې د امريکا د ستر درستيز په يوې پټې څېړنې کې لولو چې «افغانستان د امريکا دپاره لږ اهميت يا هېڅ ستراتيژيک اهميت نه لري.» ۵۶۹

لوېديځ د کمونيزم د پراختيا د مخنيوي دپاره يوه اغېزمنه وسيله د پوځي اتحادونو جوړول او وروسته پاتې هېوادو ته د پام وړ مرستې ورکول و. د دې مرستې په بدل کې د امريکا د متحده ايالاتو سره د دوه اړخيزو امنيتي تړونونو لاسليک کول و. د امريکايي ډپلوماتانو د ويلو له مخې دا مهال ځينې افغان پوځي چارواکو غوښتل د امريکا د امنيتي کمپ سره يوځای شي خو دوی دا ژمنه غوښته چې که دا کار د دې لامل شي چې شوروي اتحاد په افغانستان يرغل وکړي او يا د افغانستان د ننه زيات وېجاړونکي کوشنونه وکړي دوی به د امريکا د متحده ايالاتو له لوري دفاع کېږي. امريکايانو ته ورکړشوی ناسم تصور چې «د ازادې نړۍ» په دفاع کې د ستراتيژيکو دليلونو له مخې افغانستان مهم نه و، د امريکا پوځي پلان جوړوونکو د داسې ژمنې د ورکولو په ضد پرېکړه وکړه. د دې سره سره افغانانو يو ځل بيا د امريکايانو نه د وسلې مرسته وغوښته چې په سيمه کې مات شوی انډول سم شي

په ۱۹۵۴ کال په اکتوبر کې وروستی ځل د امريکا د پوځي مرستې غوښتنه وروسته له

هغې وشوه چې جنرال ايزنهاور د امريکا د متحده ايالاتو جمهور رييس شو او جنرال داود د افغانستان نوی صدراعظم شو. د افغانستان د بهرنيو چارو وزير سردار محمد نعيم د امريکا متحده ايالاتو ته سفر وکړ او د افغان حکومت غوښتنه يې د امريکا د بهرنيو چارو وزير جان فوسټر ډالس ته وړاندې کړه. ډالس دوې مياشتې وروسته د دسمبر په ۲۸ مه په واشنګټن کې افغان سفير ته د يوه ليک په ترڅ کې ځواب ورکړ. په ليک کې ويل شوي چې «په پام سره د کتنې وروسته، افغانستان ته د پوځي مرستې پراختيا به پرابلگونه منځ ته راوړي چې په زور سره به حل نه شي چې دا يې زيروي.» ... د وسلې د غوښتنې له پاره، افغانستان بايد د پاکستان سره د پښتونستان شخړه هواره کړي.» ۵۷۰ ډالس د ډپلوماتيکو نورمونو خلاف د دې ليک يوه کاپي په واشنګټن کې د پاکستان سفير ته لېږلې وه. افغانستان حکومت ناهيلي او سپک شو. د دې نه يوه مياشت وروسته صدراعظم سردار محمد داود د شوروي د پوځي مرستې وړاندېز ومانه چې د مخه افغانانو رد کړي و.

محمد داود د ۱۳۳۴ کال د لويې جرگې د راغوښتلو د مخه د افسرانو يوه لويه شوری جوړه کړه او په دغه شوری کې يې د شوروي اتحاد سره د نږدې کېدو موضوع طرح کړه چې يوازی جنرال اسدالله ساپي د ملي دفاع وزارت د محاکماتو رييس ورسره مخالفت وکړ. د دغې شوری د تاييد وروسته د ۱۳۳۴ کال لويه جرگه دايره شوه او حکومت ته يې واک ورکړ چې د هرې شونې سرچينې نه پوځي مرسته ترلاسه کړي. محمد داود د هېواد د اقتصادي ودې او د اردو د مدرن کولو له پاره د شوروي اتحاد نه په اسانه شرايطو د ۱۰۰ ميليونو ډالرو مرسته تر لاسه کړه او شوروي اتحاد د پښتونستان د موضوع په اړه د افغانستان پلوي وکړه. محمد داود د لومړي او دوهم اقتصادي پلانونو په عملي کولو سره د هېواد په اقتصادي پرمختيا کې د قدر وړ بدلون رامنځ ته کړو. په بهرني سياست کې دناپېيلتوب په نهضت کې غړيتوب او د مثبتې بې طرفي سياست پرمخ بوت. خو په هر ترتيب د شوروي څخه د وسلې رانيول، هلته د ملکي او پوځي کډونو روزنې او د افغانستان د ننه په پوځي او ملکي ساحو کې د شوروي مشاورينو کمارل د شوروي اتحاد د نفوذ له پاره لاره هواره کړه.

د ثور د انقلاب وروسته د افغانستان ډموکراتيک حکومت هم دمحمد داودخان غوندې د پښتونستان د موضوع په هکله ټينگ ملي دريځ درلود. نورمحمد تره کي په کابل او هاوانا کې د ضيا الحق سره په خپلو ليدنو او کتنو کې خپل دريځ په پوره روښانتيا سره د پښتونستان د مسلې په اړه څرگند کړ او حفيظ الله امين د دواړو هېوادو تر منځ د اړيکو د عادي کولو له پاره د ښه نيت د لرلو سره سره د پښتونستان د مسلې په سر هېڅ

ډول سودا کړلو ته چمتو نه و. عبدالحکيم طبيبي ليکي: «حفيظ الله امين ما ته ويل چې د نوومبر په مياشت کې اغا شاهي کابل ته راځي. هغه زما څخه وغوښتل چې د جنرال ضياء الحق سره د کتنې په مهال، چې د ۱۹۸۰ کال په پسرلي کې به تر سره شي د هغې په جريان کې به د پښتونستان د مسلې او د پښتنو او بلوڅو ملتونو د سرنوشت د ټاکلو د حق د ننګونې په اړه خبرې اترې کېږي، تاسو چې يو حقوق پوه او د بهرنيو چارو د وزارت يو پخوانی مامور ياست په دغو خبرو کې د يوه حقوقي مشاور په توګه برخه واخلي ... څرنګه چې دا يوه ملي موضوع ده هيله ده چې په دغو خبرو اترو کې به د ګډون څخه ډډه ونه کړي.» ۵۷۱

خو د دې سره سره د افغانستان مشرانو د پاکستان سره د اړيکو په عادي کولو کې د پښتونستان په مسله کې زياته نرمي ښودله. دا شايد له دې کبله هم وي چې افغانستان بې وسه او ناتوان و.

پاکستان د خپل منځ ته راتګ نه وروسته د افغانستان په اړه زيات وخت ښه نيت نه دی څرګند کړی او تل يې هڅه کړې ده چې د افغانستان او هند سره اړيکې خړې پرې کړي او د پښتنو او بلوڅو حقوق ترېښو لاندې کړي. ځکه هغه «د خپلې ساتنې له پاره لوېديځ سيستم ته ورننوت او د هېواد د ننه يې بحران او د ګاونډيانو سره يې هم د کړکېچ پياوړي کولو ته اړتيا درلوده.» ۵۷۲

د پاکستان د جوړېدو وروسته د هېواد واکمنود اسلامي مدرسو په جوړولو لنگر واچاوه او دغه کار ته په پښتنو سيمو کې ځانګړې پاملرنه شوې ده. «همدا لامل دی چې د پښتنو او بلوڅو په سيمو کې د مدرسې پوهنه پياوړې او عصري پوهنه ډېره کمزورې ده. ۵۷۳ د پاکستان واکمن د ملايانو او تبليغيانو له لارې په قبايلي سيمو کې خلک د خپلو ملي دودونو، ملي کلتور نه د پردې کولو په منظور اغېزمن کار کوي. ملايان او تبليغيان په دودونو کې د موزيک د الاتو غږول، سندرې ويل او ملي اتن کول او ان راډيو اورېدل او د تلويزيون ليدل د ديني مناسکو نه سرغړونه بولي.

پاکستان د انګرېزانو په څېر د سرحد د جزا قانون چې په ۱۹۰۱ کال کې جوړ شوی و په قبايلي سيمه کې چې په اوو اېجنسيو او شپږو سرحدي علاکو (Frontier Regions) باندې وېشل شوې ده او هره اېجنسي د يوه سياسي اېجنټ له لارې، چې د يوه بشپړ زورواک اختيار لري، پلي کوي. «دغه ډول جزاکاني په خپله د پاکستان د اساسي قانون پر خلاف هم دی چې وايي هر هغه قانون يا رواج لغوه دی چې اساسي حقونه نقض کوي.» ۵۷۴ په دغو سيمو کې سياسي ګوندونه، خيريه موسسې او مدني ټولني د فعاليت

نه منع دي او پښتانه مشران هلته د تللو اجازه نه لري. خو مذهبي افراطيون د نړۍ د هر کوبت څخه هلته ازاد تلی شي چې تبليغ او مبارزه وکړي. په دې توگه پاکستان قبایلي سیمه په پوره بې وزلی او بې سوادۍ کې ساتلې ده.

پاکستان د «ملي حاکمیت په مانا د پښتون نېشنلېزم مخالف و نو ځکه د مغولي حکومت په شان کونښن کوي چې د ملایانو او روحانیانو له لارې یې وڅپي» ۵۷۵ همدا لامل و چې په افغانستان باندې د شوروي وسله وال تیري وروسته یې د «ستراتیژیکي ژورتیا پلان» جوړ کړ.

«د ستراتیژیکي ژورتیا پلان د پاکستان هغه نظامي پلان دی، چې د هغه له مخې افغانستان باید تل د پاکستان د نفوذ سیمه وي لکه هسې چې افغانستان د نولسمې پېړۍ په دوهمه نیمایي کې د برتانوي هند د نفوذ سیمه گرځول شوې وه. په داسې حال کې، چې د برتانوي حکومت د افغانستان له لارې د تزاروي روسیې د احتمالي يرغل د دفع له پاره افغانستان تر خپل نفوذ لاندې نیولی و، پاکستانی نظامیان غواړي په پاکستان باندې د هند د نظامي يرغل د دفع له پاره افغانستان تردې حده پورې د خپل نفوذ سیمه وگرزوي چې د هند د يرغل په وخت کې خپل پوځونه هلته په شا کړي او بیا له هغه ځایه گوريلايي جنگونه پیل کړي. د دې له پاره یې باید پښتون نېشنلېزم ځپلی او افغانستان یې تر خپل نفوذ لاندې نیولی وي.

پاکستان ته د هند له خوا خطر لکه برتانوي هند ته د روسیې خطر د وېرې زېږنده دی. پاکستانی نظامیانو د دغې وېرې له امله د ستراتیژیکي ژورتیا پلان ایستلی، لکه هسې چې انگرېزانو د روسیې له وېرې د هند د دفاع له پاره ایستلی و او په هغه یې د «علي سرحد» نوم ایښی و. پاکستانی نظامیانو دغه پلان په افغانستان باندې د شوروي يرغل نه وروسته وایست.» ۵۷۶

د افغان د ملي مقاومت په مهال د افغانستان ښوونځي، اقتصادي موسسې، تاریخي او فرهنګي شتمنۍ او نورې ابادۍ د منځه وړل او د اېس اېس په دستور د خپل نفوذ لاندې اسلاميستي ډلګيو په ذریعه د افغاني روښنفرکانو ترور او نور وړاندوونکي فعالیتونه د دې ستراتیژیکي ژورتیا د پلان له مخې و. «نواز شریف د همدغه پلان له مخې د افغان منظم او په مدرنو وسلو سنبال پوځ ړنګ کړ. د جهاد په لس کلني دورې کې ډېر افغان وتلي تکنوکراتان او قومي مشران چې د مشرۍ او حکومت کولو صفتونه یې لرل د اېس اېس په دستور او همکارۍ د افغان اسلاميستي تنظیمونو له خوا ترور شوي نږدې ټول پښتانه وو.» ۵۷۷

د پاکستان واکمنو د جهاد په لس کلنه دوره کې د امریکا متحده ایالاتو، لوېدیځو هېوادو، اسلامي هېوادو او نورو نه زیاتې پیسې او وسلې په لاس راوړې. د طالبانو د نسکورېدو وروسته پاکستان د یوې خوا له دې کبله چې، د القاعدې او طالبانو په وړاندې د امریکا متحد دی زیاتې وسلې او پیسې ترلاسه کړې، او د بلې خوا یې همدغه پیسې او وسلې د القاعدې او طالبانو د روزلو، تمویلولو او تنظیمولو له پاره وکارولې. دوی غواړي چې «د ډېورنډ د دواړو خواو پښتانه باید بېرته پاتې، ناتوان او د پاکستان تر سیوري لاندې وي. ایران خو لا ډېر د مخه د پښتنو سیاسي ناتوان کولو له پاره بډې وهلې» ۵۷۸ دي.

پښتونستان او د ایبي فقیر

کاکړ وايي چې وزیرستان د باجوړ، مومند، کاکړستان او کوتې په شان د چترال نه د سوېل په لور د اوسني افغانستان شمال ختیځ ته غځېدلې سیمه ده. وزیرستان تر دغو ټولو سیمو نه غرنۍ ده، درې یې تنګې او ژورې او د کر کيلې مخکې یې لږې دي. خلک یې هم تر نیم میلیون نه ډېر دي. وزیرستان دوه برخې لري چې یوه یې شمالي وزیرستان او بله یې سوېلي وزیرستان دی. دواړه برخې یې د ډيورنډ د کرښې په اوږدو کې دواړو خواو ته پراتې دي. په افغانستان کې د ننه په برمل او د خوست په گریزو او متون کې ډېر وزیر اوسېږي چې ټول شمېر یې نږدې د وزیرستان د وزیرو دریمه برخه جوړوي. خو د وزیرو یوه برخه په ننګرهار کې هم شته. کاکړ د ډاکټر بېریکل وزیر او ناصر احمد ساپي د وینا پر بنسټ دا هم وايي چې وزیر په اصل کې ودیر و. په دې حساب د افغانستان د وزیرو شمېر د وزیرستان د وزیرو نه ډېر کیږي. ودیر، مسید او گریز چې د ساپيو ځانګې دي، په وزیرستان، لویا پکتیا، کونړ، لغمان، ننګرهار، تګاو او غوربند کې اباد دي، نو دوی ټول د کرلاني پښتنو یو غټ قوم دی. د وزیرستان وزیر او مسید د وزیر په نامه ګډ نیکه پېژني. وزیر په شمالي وزیرستان او سوېلي وزیرستان دواړو برخو کې او مسید او دوتني یوازې په سوېلي وزیرستان کې اباد دي. داور په شمالي وزیرستان کې اباد دي. د سوېلي وزیرستان مرکز وانه او د شمالي وزیرستان مرکز میرام شاه دی چې دواړه یو څه لوی ښارونه دي. کاکړ وايي چې «وزیر او مسید دواړه ټینګ ډموکرات دي او خپلې چارې د پښتونوالی له مخې په جرګو سره اجرا کوي. څنګه چې دوی په خپل ملک کې بندینیان نه دي پرې ایښي او څنګه چې لویو سوبمنانو هم د دوی ملک نه دی لاندې کړی او څنګه چې دوی له انګرېزانو سره د هندوستان تر نورو خلکو نه ډېرې جګړې کړې دي، پر ځان ډاډه

او د لوړو معنوياتو خاوندان دي، که څه هم ژوند يې نه عصري او نه شتمن دی، نور پښتانه د دوی جنګي مهارت ستايي.» ۵۷۹

د خپلواکۍ په جګړه کې جنرال محمد نادر ټل او وانه د دوی په مرسته د انګرېزي پوځ نه ونيول. پاچا امان الله په کابل کې د دوی د مشرانو درناوی وکړ او د ده په امر سره په ۱۹۲۴ کال کې د دوی له مېړو نه په ارګون او متون کې لويه مليشا جوړه شوه. وروسته وزيرو او مسيدو د افغانستان په شمالي پولو کې د قدر وړ خدمتونه وکړل. دوی وروسته له جنرال محمد نادر سره د سقاو د زوی په نسکورولو کې اغېزمنه مرسته وکړه. د دې سره سره چې دوی د امان الله نه په دې کيله من وو چې له انګرېزانو نه يې د دوی د خپلواک کېدو په برخه کې په ټينګه کوښښ نه و کړي. دوی د نادرخان سره د امان الله د بېرته پاچا کېدلو په نامه مرسته کړې وه او کله چې په خپله پاچا شو دوی ورنه خوابدي شول. د وزيرو قومونو په ۱۹۳۳ کال کې متون کلابند کړ، خو دا ځل افغان پوځ د سردار محمد هاشم خان په مشرۍ دوی په شا وتمبول. ۵۸۰

د وزيرستان خلکو د حاجي ميرزاعلي خان وزير په مشرۍ د لومړي د برتانوي هند نه د خپلې خپلواکۍ او بيا له ۱۹۴۷ کال راهيسې د پښتونستان له پاره ټينګې مبارزې کړې دي.

حاجي ميرزاعلي خان د ايبي فقير

حاجي ميرزاعلي خان، چې د ايبي فقير په نوم مشهور دی، په ۱۹۰۱ کال کې د شمالي وزيرستان د خجورې په سيمه کې د ملا ارسلانخان په کور کې زېږېدلی دی چې د وزيرو د تورخېلو په تېر پورې اړه لري. ده لومړنی زده کړې په خپل کلي کې د خپل پلار او ملايانو نه او نورې زده کړې يې په بنو، کوهات، خوست او جلال اباد کې وکړې. نوموړی «جلال اباد ته نږدې د سره رود په چارباغ کې د نقيب صاحب مريد شو. نقيب صاحب چې د قادري طريقې مرشد و، دی خپل نايب وټاکه او ميرزاعلي خان د هغه تر سيوري لاندې خپل مذهبي او دنيايي فکرونه تنظيم کړل. وروسته له دې چې هلته يې د مهاجر قاضي حيات الدين د لور سره واده وکړ، خپل پلرني کلي ته... راستون شو.» ۵۸۱ په ۱۹۲۸ کال کې حج ته لاړ. د حج نه د راستنېدو وروسته ده د انګرېزانو پر ضد د وطن د ازادۍ په موخه «صوفي کيږي پرېښوده او د اسلام او پښتو دفاع ته يې ملا وتړله.» ۵۸۲

په ۱۹۳۵ کال کې کله چې انګليسانو د هندوستان ټولو يوولسو صوبو ته کورنۍ خپلواکي ومنله نو په پښتني قومونو کې دا احساس پيدا شو چې يوه ورځ به انګرېزان هند پرېږدي او هندوان به په دوی واکمن کيږي. د دې برسېره په ۱۹۳۶ کال کې د اسلام يې بي

موضوع، چې اوس به پرې وغږېږم، د انګرېزانو ضد مبارزه کې نه يوازې د جګړې اساسي لامل شو، بلکې د وزيرستان او هغه ته ورڅېرمه پښتنو قومونو په يووالي کې مهم رول ولوباوه.

کيسه داسې وه چې په ۱۹۳۶ کال کې د رام کوري په نامه يوه هندوه جينې بنو ته نږدې د ډومبل په سيمه کې د ښوونځي په يوه مسلمان ښوونکي سيدامير نورعلي شاه باندې مينه شوه. هغه مسلماننه شوه او د همدې کال د مارچ د مياشتې په پنځمه نېټه د اسلامي اصولو سره سم نورعلي شاه ته واده شوه. هغې خپل نوم رام کوري په نورجهان واړاوه.

لږ وروسته د هغې مور او تره د ډومبل څارندوی ادارې ته راپور ورکړ او دعوی يې وکړه چې نورجهان خپل قانوني عمر ته نه ده رسېدلې، نورعلي شاه په زور مسلماننه کړې او له دې کبله دې بېرته مور ته راستانه کړای شي. کله چې محکمې دعوی واورېده پرېکړه يې وکړه چې هغه دې د نورعلي شاه سره پاتې شي.

د نورجهان مور او خپلوانو دا پرېکړه ونه منله او دډومبل څارندوی ادارې ته يې بل راپور ورکړ. دوی دعوی وکړه چې پخوانی راپور سم نه و او په هغه کې د نورعلي شاه نه دا شکايت نه و شوی چې هغه رام کوري واده کړې نه ده، بلکې هغه يې په زور تېستولې ده نو ځکه بايد بېرته خپلې مور ته راستانه کړای شي. دا ځل د بنو ډېبتي کميشنر جګړن کوب د نورعلي شاه ځوان ورور، چې امير عبدالله شاه نومېده، خپل دفتر ته وروغوښت او هغه ته يې امر وکړ چې جينې خپلې مور ته راستانه کړي.

عبدالله شاه چې کورته راغی نو د خپل ورور سره په دې سلا شول چې نورجهان په پټه افغانستان ته د سوويلي وزيرستان له لارې بوزي خو د دوی په نيت د څار اداره خبره او د څارندوی ټولو پوستو ته امر شوی و چې کلکه څارنه وکړي تر څو دوی سوويلي وزيرستان له لارې افغانستان ته په تګ بريالي نه شي. نورعلي شاه او نورجهان په لاره کې د غوربواله چاونۍ کې پوليسو د تلاشۍ په مهال ودرول او پوليس د نورجهان نه د نوم پوښتنه وکړه. هغې ځواب ورکړو چې نوم يې اسلام بي بي دی او له دې ځايه اسلام بي بي تاريخ جوړ کړو.

دوی ونيول شول. په پای کې واکمنو اسلام بي بي هندوانو ته وسپارله. هغوی په پټه هندوستان ته بوتله او هلته يوه هندو ته واده شوه او نورعلي شاه هم ترې تم شو. خلکو د انګرېزانو په کړو کلک راوپارېدل. حاجي ميرزا علي خان او په ده راتول شويو قومونو دا نه يوازې مذهبي، بلکې د پښتو او پښتونوالي ننگ وګڼلو او د انګرېزانو پر ضد مبارزه يې پياوړې کړه.

حاجي ميرزاعلي خان د بېلو بېلو قومونو د مشرانو او عالمانو سره په دې ټينگار وکړ چې پلان شوې او منظمه مبارزه د مشرتوب پرته کېدای نه شي. د ابي فقير د سلا او مشورې له پاره د ډاکټر بېريکل وزير د ليکنې له مخې، چې «ابي فقير» نومېږي، چې د انگلستان د ارشيفونو او د انگليسي د هغه مهال د ليکوالو د ليکنو بر بنسټ ليکل شوي ده، د قومونو دا مشران راوبلل: «ملا شيرعلي خان مسعود وزير، پېرملاخان احمدزی وزير، مهردل خان خټک، عبدالکريم مومند، گل زمرخان باجوری، گل نوازخان بنوخي، سردارخان مروت، سرميرخان اورکزی، ضميرخان کوي خېل افريدی، دين فقير صاحب بېټنی، او وحيد گل يوسف زی.» ۵۸۳ څرنګه چې د ابي فقير د اسلام بي بي په موضوع کې د انګرېزانو د کړو وړو په وړاندې ټينګ ودرېد نو د ده دريځ په يادشوو پښتني قومونو کې نورهم ټينګ شو. ځکه وزيرو، مسعودو، دورو، بېټنو، بنوڅو، خټکو او مروتو او هم د افغانستان نه کړيزو، ځدراڼو، تنيو او کيانخېلو د حاجي ميرزاعلي خان ملا ټينګه وتړله. حاجي ميرزاعلي خان د متاسی د جرګې له خوا د امير په توګه وټاکل شو او د انګرېزانو په ضد يې د غزا اعلان وکړ. ده يو لښکر تنظيم کړ او د يو شمېر خليفه گانو نه يې جنګي شورا جوړه کړه.

حاجي ميرزاعلي خان د انګرېزانو پر ضد مبارزه کې د خدايي خدمتګارانو او د جمعيت العلماءو د گوندونو سره هم اړيکې ټينګې کړې وې. نوموړي د خدايي خدمتګارانو پرعکس، چې د عدم تشدد د فلسفې پر بنسټ يې سوله ايزه مبارزه کوله، وسله واله مبارزه غوره وګڼله. ده د جنګي ستراتيژي د جوړولو اړتيا په ګوته کړه. نوموړي «د جګړې ګوريلايي ټاکتيک خپل کړ او د جګړې له پاره يې غرنی سيعي وټاکلې.» ۵۸۴ همدارنګه خدايي خدمتګارو د هند د ملي کانګرس سره يو ځای شول او د هندوانو او مسلمانانو يووالي يې غوښته خو حاجي ميرزاعلي خان يوازې په مسلمانانو ټينګ ودرېد. د پاکستان د جوړېدو وروسته په ګروېک کې يې د ازاد پښتونستان له پاره ټينګې مبارزې وکړې او د افغانستان لوري يې ونيو او افغانستان هم ورسره مرسته کوله.

د وزيرستان خلکو د حاجي ميرزاعلي خان په مشرۍ د برتانوي هند نه د خپلې خپلواکۍ د لاسته راوړلو له پاره ټينګې مبارزې وکړې. د محمد حسن کاکړ په وينا: «د ابي فقير د پښتون ټولني د مشرۍ ټول صفتونه لرل، په تېره زورتيا، تقوا او جنګي مهارت.» ۵۸۵ له همدې مهاله د انګرېزانو تر وتلو پورې د ابي فقير د جنګياليو او انګرېزانو ترمنځ زبنته زياتې جګړې وشوې. انګرېزانو د ځمکنيو يرغلونو برسېره هوايي بمباري هم کولې. يو ځلې انګرېزانو د ابي فقير د نيولو په موخه څلوېښت زره پوځ وکاروه

خو د نوموړي په نيولو بريالي نه شول. «د هغه [حاجي ميرزا علي خان] د قوماندنۍ په وخت کې په ۱۹۳۶ کال کې ديارلس څخه، په بل کال هم ديارلس څخه، په ۱۹۳۸ کال کې پنځه اويا څخه، په ۱۹۳۹ کال کې پنځه شپيته څخه او په ۱۹۴۰ کې يو سلو نولس څخه يرغلونه وشول.» ۵۸۶

د يرغلګرو پوځونو پر ضد د ابي فقير دغو بريدونو نه دا جوتيري چې د پورته ياد شويو قومونو په ټينګ ملاتړ ده نه يوازې دانګليسانو پوځي بريدونه شنډ کړل، بلکې هغوی ته يې درانه زيانونه ورواړول. پوهاند ډاکټر کاکړ وايي چې «د يوه کس له پاره دا هسې کارنامه ده چې ما ته يې ساری معلوم نه دی. په معاصرې نړۍ کې دی شايد د کوريلايي بريدونو نوښتګر قوماندان وي.» ۵۸۷ دا بې ځايه نه ده چې ميلان هانر خپل اثر «يو سړی د امپراتورۍ په مقابل کې» په نوم نومولې دی. محمد حسن کاکړ د حاجي ميرزا علي خان د انګليس ضد مبارزو پايلې داسې بيانوي:

«د ابي فقير د انګليس ضد مبارزو يوه پايله د مذهبي ذهنيت پياوړتيا او د عقلي او علمي ذهنيت سستيا شوه... دا چې نن ورځ ملایان د بلې هرې سيمې تر خلکو نه د وزيرستان په خلکو باندې ډېر نفوذ لري د همدغه حال نتيجه ده. د ابي د فقير د مبارزو بله پايله د پښتنو د خپلواکۍ د غورځنګ پياوړتيا شوه، خو د هغه د دولت زري د ډېرو نورو عواملو له امله هم وده ونه کړه، نو د ابي فقير د خپل سلف ميا روښان په شان، چې هغه هم د وزيرستان د کاني کرم و، په خپل ژوند کې په مقصد ونه رسېد، خو د هغه په شان يې د پښتنو د خپلواکۍ غورځنګ په ميراث پرېښود. د ميا روښان غورځنګ تر يوه حده خوشال خان خټک، ايمل خان مومند، درياخان افريدي، ميرويس نيکه او تر پوره حده ستر احمد شاه سرته ورسوه. يوه ورځ به د ابي فقير غورځنګ هم د بري درشل ته ورسول شي.» ۵۸۸

د ابي فقير د ۱۹۶۰ کال د اپرېل د مياشتې په شپاړسمه نېټه په کوروبک کې د ساه لنډۍ د ناروغۍ له امله د دې نړۍ نه سترګې پټې کړې. روح دې ښاد وي. د ده د مړينې په مناسبت د لندن ټايمز ورځپاڼې د اپرېل په شلېمې کڼې کې حاجي ميرزا علي خان يو زورور او د درناوي وړ سيال (رقيب) ۵۸۹ «وباله.

په واکمني کورنۍ کې تربروري

په واکمني کورنۍ کې تربروري له پخوا نه د کرکېچ غټ لامل و او دغه کرکېچ د يحيی

خپلو په پاچايي کورنۍ کې هم شتون درلود چې په پايله کې د دوی د واکمنۍ په نسکورېدو او د افغانستان د اوږدې بې ثباتۍ لامل شو. نادر خان، شاه محمود خان او شاه ولي خان سکه وروڼه او محمد هاشم خان او محمد عزيز خان د هغو ناسکه وروڼه وو. د فرهنگ په وينا د دوی تر منځ د لومړي سر نه د واک په سر سيالي وه. ... دوی که څه هم د لومړي سر نه د واکمنۍ په سر سره سيالي کوله خو ځنگه چې د وروڼو په منځ کې نادر خان يو هوبنډار او مدبر شخصيت و هغه دوی ټول سره يو موټی وساتل. خپل ناسکه ورور محمد هاشم يې صدراعظم وټاکه. خو د نادر د مړينې وروسته صدراعظم محمد هاشم خان «په خپلې اولس کلنۍ صدراعظمۍ کې محمد داود او محمد نعيم چې سکه ورېروڼه يې وو، په لوړو حکومتي مقامونو په پوره اختيار سره وگومارل او خپل ناسکه وراره پاچا محمد ظاهر يې د ننه په ارگ کې د عيش کولو له پاره ازاد پرېښود.» د محمد هاشم خان صدراعظم دغه توپيري چلند د دې لامل شو چې محمد داود او محمد نعيم د سياست سره ټينگه علاقه پيدا کړه او پاچا ورسره علاقه ونه ښووله. په دې توگه «پاچا تر نهه څلوېښت کلنۍ پورې د پاچايي په چارو کې د تجربې خاوند نه و شوی، دی هغسې زړور او ريسک منونکی شخص نه شو چې افغان واکمن بايد وي. پر هغه سربېره ځنگه چې ده پښتو ويلی نه شوه، که څه هم پښتو د زياترو خلکو ژبه ده، له پښتنو سره يې ډېره نه لگېده.» ۵۹۰

پاچا محمد ظاهر د ۱۹۶۱ کال نه وروسته کله چې د پاکستان او افغانستان پولې د پښتونستان په سر د يوه او نيم کال په اوږدو کې وتړلې شوې او د دواړو هېوادو تر منځ اړيکې ترينگلې شوې او افغانستان اړ شو چې په شوروي اتحاد تر پخوا ډېره ډډه وکړي. له دې کبله پاچا د ۱۹۶۳ کال د مارچ په مياشت کې خپل صدراعظم گوښه کولو ته وهڅاوه. د کاکړ په وينا دا هغه وخت و چې افغانستان د سياسي اوښتونونو له پاره تيار شوی و او د پوهنې د پراختيا له امله د تعليم کړو افغانانو پراخه ډله هسکه شوې وه او دغه پرمختگ سره د افغان سياست بڼه بدله شوې وه. د محمد داود د گوښه کېدو وروسته د ظاهر شاه واکمني په عمل کې پيل شوه.

«محمد ظاهر د خپلې واکمنۍ په وروستيو لسو کلونو کې د افغانانو له پاره هغسې ازاده او دموکراتيکه لاره خلاصه کړه چې بل هېڅ افغان واکمن نه وه غوره کړې.» پاچا د نوي اساسي قانون نوښت وکړ او د يو شمېر دموکراتو، قانون پوهو او کارپوهو افغانانو نه د سيد شمس الدين مجروح په مشرۍ يو کميسيون ته دنده ورکړه چې نوی اساسي قانون جوړ کړي. په دغه نوي اساسي قانون کې «د درې گونو قوتونو په څرگند بېلوو

سره يې د قانون پر بنسټ د ازاد ژوند له پاره لار هواره کړه چې په هغه سره فردي ازادي او دموکراسي په افغانستان کې د لومړي ځل له پاره په پراخه اندازه» شونې شوه. په دغه دوره کې «حکومت د محکمې له حکم نه پرته هېڅ افغان څارلی نه دی، بندي کړی نه دی، او اعدام کړی نه دی.» که محکمې يو څوک د وژنې له امله په زندۍ کولو محکوم کړی دی پاچا کوبښنې کړی دی چې د وژل شوي کورنۍ هغه ويښي. ۵۹۱

د کاکړ په وينا د قانوني حکومت او قانوني چلند له امله په ټول افغانستان کې د امنيت او ډاډينې دغسې فضا منځ ته راغله چې د هغه په سيوري کې په خپله محمد ظاهر هم د يوه عادي افغان په شان په کابل ښار او اطراف کې ازاد گرځېده.

د پاچا همدغه ازاد گرځېدو سره په ۱۹۶۱ کال کې د آی خانم باندي ته نږدې يو يوناني ښار وموندل شو. يوه کليوال ورته يوه غير عادي تورلې شوې ډبره ونيووله، پاچا بيا په افغانستان کې د فرانسې د کندنې پلاوي وکوماره او پلاوي د دغسې يوناني ښار اثار رابرسېره کړل چې ۳۰۰ م کې د سلوکوس نيکاتور په واکمنۍ کې ودان شوی و.

د قانوني نظام په جوړولو کې د پاچا ونډه چې ازادي پال، دموکرات او ارامي غوښتونکی شخص و، اساسي وه، خو په دغه وخت کې په افغانستان کې دغسې يوه پراخه تعليم کړې منځنۍ ډله د ښځو په گډون هسکه شوې وه چې دغسې نظام يې غوښته. پاچا د دغې ډلې سره په اتحاد سره چې هغه د اوږدې مودې د امنيت او د عصري پوهنې محصوله وه، دغه نظام رامنځ ته کړ، خو د اساسي قانون له مخې پاچا په کړو کې سلطنت د حکومت نه بيل نه کړ.

نو ځکه د صدراعظم په مشرۍ اجرائي څانگه پياوړې او اغېزناکه نه وه. په داسې حال کې چې په دموکرات نظام کې چې سياسي گوندونه او افراد له ازادۍ نه بهرمن وي او غوښتې او فعاليتونه يې ډول ډول او نوښتي وي حکومت بايد د قانون له مخې پياوړی او اغېزمن وي. که حکومت د قانون له مخې پياوړی او اغېزمن نه وي دموکراسي او ټولنه د انارشۍ په لور درومي. زموږ په هېواد کې د پاچايي په لسيزه کې همداسې وشول. د قانوني پاچايي په لسيزه کې پنځه حکومتونه راغلل او له منځه لاړل او صدراعظمان د پاچا له خوا گوښه کېدلو ته وهڅول شول يا يې ځانونه په خپله گوښه کړل.

د يوې خوا د دغې دورې د صدراعظمانو او وزيرانو صلاحيتونه په اساسي قانون کې محدود شوي وو او د بلې خوا په کړو کې د پاچا له خوا نور هم محدودېدل. کاکړ وايي څنگه چې سياست گوندي نه و، صدراعظمان فردي کسان وو او د پاچا په خوښه غوره کېدل او د ولسي جرگې له منلو وروسته قانونې کېدل. په دې توگه صدراعظمان د پاچا له

خوا غوره کېدل او دوی د خپلو وزیرانو په غوره کولو کې ازاد نه وو. د صدراعظم عبدالظاهر په وینا: «دی د خپلې کابینې د هېڅ غړي نه خبر نه و او یوازې یې د وزیرانو ورکړل شوی نوملړ اعلام کړ.» ۵۹۲

پاچا په دغې دورې کې یوازې نور احمد اعتمادي ته موقع ورکړه چې د نورو په کچه د اوږدې مودې له پاره حکومت وکړي. اعتمادي که څه هم د اساسي قانون د ۲۴ مې مادې سره مخالف و چې محمد داود یې د سیاست کولو نه بې برخې کړ خو پاچا دی شاید د محمد داود د پخلایي په خاطر صدراعظم کړی وي چې په دې کار کې بریالی نه شو. د کاکړ په وینا د اعتمادي اړیکې د ولسي جرگې او قضایي څانگې سره خرابې شوې. ده د پرچمیانو په کړو سترگې پټولې خو اطرافي ملایان یې چې د پرچمیانو پر ضد یې لنین ته د درود ویلو له کبله په کابل کې مظاهري کولې د کابل د جوماتونو نه د پوځ په زور وایستل. د همدغو کړکېچونو له امله به و «چې د خپل حکومت په مهال یې ځان وژنې هڅه وکړه او غوښتل یې چې د قرغې په بند کې د خپل کور مخامخ ځان په اوبو کې ډوب کړي، خو ویې ژغوره.» ۵۹۳

وروسته د مخه تر دې چې د ولسي جرگې د بې اعتمادي په رایو نسکور شي، استعفا وکړه او پر ځای یې عبدالظاهر صدراعظم شو. د صدراعظم عبدالظاهر حکومت په زیاته اندازه د وچکالی او قحطی په وخت کې د عمومو د هیلو پر خلاف په خپلې دندې کې پاتې راغی او له صدراعظمۍ نه یې ځان گوښه کړ.

د حکومتونو د بې اغېزتوب سرچینه په خپله پاچا و، چې نه یې غوښتل صدراعظمان چې د اساسي قانون له مخې باید غیر خانداني افغانان وي، ملي شخصیتونه شي. یو صدراعظم که څه هم ور او ډینامیک وي، د صلاحیت په نه لرلو سره په اغېزناک ډول حکومت نه شي کولی. ځکه حکومتونه کمزوري او ناتوان وو.

خو د عبدالظاهر د گوښه کېدو وروسته د یوې خوا د حکومت اعتبار زیانمن شو او د بلې خوا د سلطنت په اړه شک پیدا شو نو پاچا د یوه ټینګ حکومت په فکر شو. د دغسې حکومت د لرلو دپاره یې موسی شفیق د صدراعظم په توګه ونوماوه او په حکومتي چارو کې د نورو پر تله په ډېر اختیار قابل شو. «موسی شفیق چې ځوان، ډینامیک او نوښتګر شخص و او تر دغه وخت پورې د وزیرۍ تر مقامه پورې په اداره او سیاست کې د تجربې خاوند شوی و، په کم وخت کې وښووله چې په بحراني وخت کې هم پېښو او سیاست ته نوی لوری ورکولی شي او په اغېزناک ډول حکومت کولی شي.» ۵۹۴

د کاکړ په وینا صدراعظم شفیق د اوو میاشتو په بهیر کې په خپل ځانګړي نوښت او

مهارت سره دومره کارونه وکړل چې بل صدراعظم په دومره لنډه موده کې نه وو کړي. ده له ولسي جرگې نه په دوو ورځو کې د باور رایه وکتله. نوموړي د پاچا هوکړه هم ترلاسه کړه چې د سياسي گوندونو، ولايتي او ښاروالي شوراگانو لايحې چې ډېرې د مخه پاس شوې وې، لاسليک کړي. د ۱۹۷۲-۱۹۷۳ مالي کال بوديجه يې چې نهه مياشتې يې تېرې شوې وې، له ولسي جرگې نه تېره کړه.

موسی شفيق د يو شمېر هېوادونو نه د پورونو په اړه چې پخوانيو حکومتونو له هغو نه کتنه پورته کړې نه وه، د ولسي جرگې نه هوکړه ترلاسه کړه. له مقننه قوې نه يې هم صلاحيت ترلاسه کړ چې له باندینيو سرچينو سره ۷۴ توافق ليکونه لاسليک کړي. د ملکي مامورانو د استخدام لايحه چې د ژبې په سر لانجې له امله ځنډېدلې وه او هغه اختلاف چې په هغې سره منځ ته راغلی و، په حيرانوونکي ډول سره هوار کړ.

حکومت د بېسوادۍ سره د مبارزې په موخه د ملگرو ملتونو په مرسته يوه اداره تاسيس کړه. د کتابونو په راوړو باندې ماليه ايسته شوه او له جاپان سره د تلویزيون د جوړولو هوکړه لاسليک شوه. همدارنگه د کرنې د ښه کولو دپاره د نامتو چارپوه عبدالوکيل په نوښت مهم کارونه وشول او د تازه مېوو بهر ته د ورو دپاره اسانتياوې برابرې شوې.

په ۱۹۷۳ کال کې د دغو ټولو کارونو له امله عايدونه په بېسارې ډول ډېر شول. په همدغې دورې کې د کابل ښار په ختيځ کې د صنعتي سيمې بنسټ کېښودل شو او د افغانستان د کانونو د سروې کولو له پاره لايحه وايستل شوه. د ديني علمانو او روحانيانو د راضي کولو له پاره چې د صدراعظم نور احمد اعتمادي په چلند سره ناراضي شوي وو، په کابل راډيو کې د پنځه وخته اذان کولو او په کابل کې د کاليسا په ښوونځيو سره راضي کړل.

موسی شفيق پوه شو چې په وچه چاپېر افغانستان د گاونډيو هېوادو سره د ښو اړيکو د جوړولو پرته پرمختيايي پروژې پرمخ تلې نه شي. نو ځکه يې هوډ وکړ چې د ايران او پاکستان سره د دوستۍ اړيکې جوړې کړي. ده د ۱۳۵۱ کال د کب په ۲۲ نېټه د ايران سره د هلمند د اوبو په اړه يو نوې هوکړه لاسليک کړ، چې د هغې له امله د دواړو هېوادونو په دوستۍ کې ښه والی راغی.

موسی شفيق هوډ کړی و چې د پاکستان سره د پښتونستان د کښالي په سر د افغانستان اساسي ستونزې په سر پوهاوي ته ورسېږي او د هغه هېواد سره د افغانستان اړيکې ښې کړي. ده په همدغه وخت کې د شوروي اتحاد سره د افغانستان دوستۍ ته دوام

ورکاوه او د خلورم اقتصادي پلان د پلي کولو له پاره د هغه سل ميليونه روبله پور ومانه. ده د افغانستان دوديز ناپييلي سياست د چلولو په څنگ کې کوشنې وکړ چې د لوېديځې نړۍ او عربي هېوادو سره د افغانستان د دوستۍ اړيکې وار په وار ټينگې کړي. خو د بده مرغه د حکومت نه گوښه شوي سردار محمد داود دغه پروسه په پوځي کودتا سره ودروله او په افغانستان کې يې د اوږدې بې ثباتۍ پيلامه کېښوده چې تر ننه (۲۰۱۷) دوام لري.

نولسم څپرکی

کاکړ او د چنگاښ کودتا

سردار محمد داود د ۱۳۵۲ کال د چنگاښ په ۲۶ نېټه د پاچا محمد ظاهر قانوني نظام په پوځي کودتا سره رانسکور کړ او پر ځای يې ولسمشریز نظام په پښو ودراره. کاکړ د غي کودتا لاملونه د واکمنې کورنۍ د غرو په تربورۍ، د محمد داود د واک سره لهپالتيا او خلکو ته د هغه د خدمت کولو په ادعا کې ويني. کاکړ زياتوي چې د واکمنې کورنۍ د غرو په تربورۍ د مخه غږېدلې دی. محمد داود د امير عبدالرحمن په شان د واک سره زياته لهپالتيا درلوده. امير عبدالرحمن د دې له پاره چې محمد ايوب خان واکمن نه شي ده ان يوازې په کابلستان باندې د واکمنۍ په خاطر د افغانستان د وېشلو سره سر و خوځاوه. د سپين په وينا محمد داود د خپل ناسکه تره شاه محمود په صدراعظمۍ کې د «ملي کلوب» يا «ملي ټولني» په نامه د نفوذ خاوندان پر ځان ټول کړي وو، په واقعيت کې د صدراعظم شاه محمود او پاچا محمد ظاهر پر ضد دسيسې دپاره و. کله چې محمد داود صدراعظم شو نو ده «د خپلې صدراعظمۍ په لس کلې دورې کې بله چاره نه لرله» تر څو «چې له پاچا سره خپل اړيکې ښې وساتي، خو ده په همدغه مهال کې يوه نوې لاره غوره کړه چې په هغې سره يې مخ په ودې افغانستان له شوروي اتحاد سره نږدې کړ، د پښتونستان ادعا يې ټينگه ونيوله او د هېواد د پرمختگ له پاره يې دوه پرمختيايي پلانونه په زياته اندازه د شوروي اتحاد او تر څه حده د امريکې او نورو هېوادو په پيسو او تخنيکي مرستو پلي کړل.» ۵۹۵

د چنگاښ کودتا

کاکړ وايي چې د سپين په وينا محمد داود د خپلې صدراعظمۍ تر پايه پورې د پاچا سره په گډه کار وکړ او د دوی په همکارۍ سره افغانستان تر هر بل وخت نه وړاندې ولاړ او ودان شو او په نړۍ کې هم د اعتبار او حيثيت خاوند شو، خو د قانوني پاچايي له پيل سره د دوی تر منځ کړکېچ څرگند او تريخ شو. د کړکېچ سرچينه د اساسي قانون ۲۴ ماده وه چې د هغې له مخې د شاهي کورنۍ غړو

نه شو کولی چې په سياسي گوندونو کې گډون وکړي، د صدارت يا وزارت دنده په غاړه واخلي، د شورا غړيتوب او د سترې محکمې غړيتوب ترلاسه کړي. د دغې مادې له مخې داود د سلطنتي کورنۍ غړی شمېرل کېده که څه هم دی د پاچا د تره زوی و. د دې مادې له مخې محمد داود د سلطنتي کورنۍ د نورو غړو غوندې د سياست کولو نه بې برخې شو. د کاکړ په وينا د اساسي قانون ۲۴ مه ماده په ظاهر کې د دې له پاره ايستل شوې وه چې سلطنت له حکومت نه بېل وي خو په کړو کې حکومت بېل نه و او پاچا د قانون پر خلاف صدراعظمانو ته لارښوونې او دستورونه ورکول. د پاچا غټه تېروتنه دا وه چې ديوې خوا د پاچا کورنۍ پراخه نيول شوې وه او د بلې خوا د دومره ډېرو کسانو د دولتي مقامونو او سياست نه بې برخې کول د خلکو په کټه نه و.

کاکړ دا هم وايي چې محمد داود د خپل گوښه کېدلو په ليکونو کې د ډموکراسي د راوستلو او د پاچايي نظام د نوي کولو له پاره وړانديز کړی و. دغه وړانديز ښودله چې محمد داود غوښتل له پاچايي نظام سره همکاري وکړي او په نوي نظام کې د کوم گوند په سروالي يا په کوم بل ډول د سياست په ډگر کې بيا فعال شي. «له همدې امله به و چې محمد داود له خپل گوښه کېدلو وروسته له صدراعظم محمد يوسف سره د همکاري لار ونيوله، په رسمي مېلمستياوو کې گډون کاوه ... محمد يوسف ته يې د صدراعظمۍ مبارکي هم وويله. په اصل کې دا محمد داود و چې پاچا ته يې د هغه د صدراعظم کېدلو سپارښتنه کړې وه.» ۵۹۶ محمد يوسف په خپله لومړنۍ وينا کې وويل چې «د ده حکومت هغه موخې په نظر کې نيسي چې محمد داود خان يې وړانديز کړی و.» ۵۹۷

د اساسي قانون د ليکنې کميسيون ته د محمد داود وړانديز داو چې «د پاچا د تره زامن د سلطنتي کورنۍ غړي نه دي» او «په ولسي جرگې کې د ډېرکي گوند مشر د پاچا له خوا د حکومت [په] جوړولو مامور کېږي.» خو پاچا د اساسي قانون د جوړولو کميسيون ته لارښوونه وکړه چې کوم خانگړی وړانديز په نظر کې ونه نيسي. د مولف فراهي په وينا محمد داود باوري شو چې په دولت کې د ده پر ضد دسيسې کېږي، نو د سلطنتي نظام دښمن شو. ۵۹۸

په دې توگه د محمد داود او پاچا اړيکې يو د بل سره وشلېدلې او پاچا په ۱۹۷۰ کال کې فراهي ته چې هغه وخت په ولسي جرگې کې د فراه ولايت استازی و، ويلي و چې «د محمد داود سره زما فاميلي روابط پرې شوي دي او دا څلور کاله کېږي چې ما خپله خور چې د محمد داود مېرمن ده، نه ده ليدلې.» ۵۹۹

دغه حالت غوښتنه کوله چې د سياسي او امنيتي لاملونو له مخې داود خان هرو مرو

تر څارنې لاندې نيول شوی وای، په تېره وروسته له هغې چې د پاچا شخصي کوشنېونه د محمد داود د پخلا کولو له پاره سر ته ونه رسېدل. ۶۰۰

د افغانستان تاريخ د دې شاهد دی چې زموږ په هېواد کې د واک په سر تېروران څه چې ان ورور د ورور او کله زوی د پلار په وړاندې هم جک شوی دی. خو پاچا سره له دې داودخان تر څارنې لاندې ونه نیوه. برسېره پردې پاچا د هغې انارشۍ د مخنيوي په وړاندې چې د حکومتونو د بې اغېزمنتوب له امله د مظاهرو نه رامنځ ته شوه، ټينگ او غوڅ عمل ونه کړ. کاکړ وايي چې په دې اړه يې د صدراعظم د مرستيال د صمد حامد مشوره هم ونه منله چې ورته ويلي يې و: «افغانستان په خطر کې دی او بايد زر په هېواد کې اضطرابي حالت اعلام سي چې په دغه حالت کې به د شورا صلاحيتونه له مينځه ځي، د ملي جرايدو نشرات به متوقف سي، پر سياسي ډلو به قيود وضع شي، تر هغه وروسته به په اساسي قانون کې تغيرات راسي، د دموکراسۍ اساسات به په تدريجي ډول تر اجرا لاندې ونيول سي.» ۶۰۱

محمد داود د موسی شفيق د صدراعظمۍ په وخت کې د عبدالولي او محمد هاشم ميوندوال له خوا د کودتاکانو اوازې خپرې کړې تر څو حکومت تېر باسي.

کاکړ وايي چې د ملي دفاع د وزارت د استخباراتو مشر ډگروال عبدالغفور راته وويل چې «د داود خان، د هغه د ملگرو او هغه غوندې چې دوی جوړولې، راپورونه يې ما ته رسېدلي وو، ان د هغو کسانو نوملړ چې د داودخان سره يې همکاري کوله د استخباراتو ادارې ته رارسېدلی و، ما دوه ځله په خپل وخت په خپله د دفاع وزير ته وړاندې کړل، د دفاع وزير د ځان سره وساتل او څه موده وروسته مې په ډېر ټينگار سره ورڅخه وغوښتل چې په هکله يې راته لارښوونه وکړي ... پانې يې له دوسې نه راوايستې او د لاندې يې دا جمله پرې وليکله. دا په والا حضرت سردار محمد داود خان باندې يو ناروا تومت دی، اجرات نه لري، ودې ساتل شي» ۶۰۲ ده دا هم ويلي و چې لوی درستيز غلام فاروق ته هم داسې راپورونه رسېدلي و خو هغه هم دا راپورونه رښتيا کتلي نه و. کاکړ د جنرال سراج د ليکې له مخې وايي چې د مرکزي ځواکونو قوماندان ته د داود خان د غوندو د اواز د ثبت فيتې وروړل شوې او هغه دا فيتې پاچا ته اورولې وې خو پاچا عبدالولي د داود خان پر ضد د کړو نه منع کړی و. خو محمد داود ويل چې «د هېواد د ټولو اوسنيو بدبختيو عامل په خپله پاچا دی، تر هغه وخته چې د پاچا چاره ونه شي، تر هغو به په افغانستان کې ښه ورځ رانه شي.» ۶۰۳ محمد داود د دغه فکر د پلي کولو دپاره ان مسکو پلوه چپيان په ځان راټول کړل. کاکړ وايي چې د مولف سراج دا خبره سمه ښکاري چې محمد داود د

اساسي قانون د ۲۴ مادې له امله په زړه کې کلکه غوټه اخیستې او په خپلې کودتا کې د سلطنت او قانون جوړونکو نه غچ واخیست. که د سراج په وینا د محمد داود د کودتا خوځونکې انگېرنه د زړه غوټه او غچ وي نو د ده دغه «ادعا چې خلکو ته یې د ولسمشري نظام او «معقولي» ډموکراسۍ له لارې خدمت کول غوښتل، هسې خبرې کېږي او اصلي مقصد یې د اعلی واک خپلول و» ۶۰۴ د ده په شان تحول غوښتونکو خلکو د خدمت په نامه پر ځای نظامونه په کودتا سره نسکور کړي، خو بیا یې د قدرت په وخت کې د خلکو د حاکمیت پر نسیب تر پېښو لاندې کړی دی. کاکړ وايي چې د محمد داود او د هغه د کودتايي ملگرو «معقوله ډموکراسي» یوه تشه ادعا وه. «محمد داود ډموکرات نه و، ډموکراسي چې په هر نامه یاده شي د خلکو یا د هغو د استازو له خوا حکومت به وي» او سروالان به یې «په نېغ ډول انتخابي یا د ولس د استازو په موافقه واک ته رسېدلي وي». ۶۰۵ محمد داود نه له کودتا نه وروسته د دغسې حکومت د رامنځ ته کولو کوښښ ونه کړ بلکې د صدراعظم شاه محمود د دورې ځوانه ډموکراسي هم خپلې وه او هم یې ورسره غیر حکومتي ازاد مطبوعات چې د ډموکراسۍ او مدني ټولنې حتمي برخه وي غلي کړي وو.

محمد داود په غیر قانوني ډول د کودتا له لارې که څه هم د سر په لږ زیان سر ته ورسېده قانوني حکومت نسکور کړ او ټولنه یې په ژور ډول زیانمنه کړه او پایلې یې د افغانانو له پاره درنې شوې. لومړۍ پایله یې دا شوه چې په افغانستان کې د قانون حکومت چې نوی د اعتبار خاوند شوی و، له اعتبار نه ولوېد. دوهمه پایله یې دا شوه چې په کودتا سره د حکومت نیول د قدرت نیولو لنډه لار وگنبله شوه. دریمه پایله یې دا شوه چې په پوځي افسرانو کې د سیاسي قدرت نیولو فکر خپور شو.

د چنگاښ کودتا نه یوازې افغانان اندېښمن کړل بلکې ان په خپله محمد داود یې هم اندېښمن کړی و او د هغې د پایلې نه ډاډه نه و. ده د خپلې کودتا په هماغه اول وخت کې مولف سراج ته ویلي و چې «مور دا کار وکړ؛ چې څه کېږي؟ ورباندې نه پوهېږم.» ۶۰۶ کاکړ وايي چې مور اوس پوهېږو چې په افغانستان کې د چنگاښ د کودتا نه وروسته څه وشول. «د دغې اوږدې بې ثباتۍ سرچینه د محمد داود په سروالی د سرطان کودتا ده.» ۶۰۷

د افغانستان لومړی کودتايي حکومت

د مڅه مویادونه وکړه چې محمد داود د ۱۳۵۲ کال د چنگاښ په ۲۶ مه نېټه په داسې حال کې، چې پاچا په ایټالیا کې و، کودتا وکړه او جمهوري دولت یې اعلان کړ. داود خان

شاهي نظام او اساسي قانون لغوه کړل، پارلمان يې ړنگ کړ او خپله واکمني يې د پوځي شورا له لارې اعلان کړه. د کودتا په سبا د محمد داود په مشرۍ مرکزي کمیټه اعلام شوه، چې محمد حسن يې منشي او دولس تنه يې واړه پوځي افسران غړي وو چې کودتا يې سرته رسولې وه. کاکړ وايي چې دغه جمهوري حکومت دوي ځانگړتياوې درلودې. «يوه داچې په افغانستان کې د لومړي ځل له پاره مسکو پلوه پرچميان په نوي نظام کې په ننوتلو سره د اعتبار خاوندان شول، بله ځانگړتيا يې دا وه چې دغه بې تجربې ځوانان په ملکي او نظامي څانگو کې د امرانو په توگه لوړو مقامونو ته ورسېدل.» ۶۰۸

د زمري د مياشتې په يوولسمه نېټه کابينه اعلام شوه. محمد داود د دولت سروال، صدراعظم، د ملي دفاع او د بهرنيو چارو وزير او محمد حسن شرق د صدراعظم مرستيال شو. عبدالمجيد د عدلي، سيد عبدالله د مالي، فيض محمد د کورنيو چارو، نعمت الله پژواک د پوهنې، پاچاکل د سرحدونو، عبدالقيوم د معدنونو او صنعتونو، غوث الدين فايق د فوايد عامې، نظر محمد سکندر د عامې روغتيا، عبدالرحيم نوين د اطلاعاتو او کلتور، غلام جيلاني د کرنې، يو څه وخت وروسته محمد خان جلالر د سوداگرۍ وزير، علي احمد خرم د پلان وزير او وحيد عبدالله د باندنيو چارو د وزارت د مرستيال په توگه د کابينې غړي شول.

محمد داود د خپلې صدراعظمۍ د دورې وزيرانو ته په خپله لومړۍ وينا کې د ضعيف النفس خطاب وکړ او په دې توگه يې د داسې کسانو له همکارۍ نه ځان بې برخې کړ چې لايق او د تجربې خاوندان وو. برسېره پردې محمد داود د همدغه کال په جشن کې يوويشت جنرالان په يو وار ناڅاپه تقاعد کړل چې د مولف سراج په وينا د دوی په ايستلو سره سمدلاسه داسې تشه منځ ته راغله چې د خپلې مړينې تر وخته يې ډکه نه شوای کړي. ۶۰۹

کودتايي حکومت د نوي اساسي قانون تر ايستل کېدو پورې (۱۹۷۶) هېواد په فرمانونو سره اداره کاوه. کاکړ وايي چې د جمهوريت په اولو دريو کلونو کې د قانون د حکومت ځای د اشخاصو حکومت ونيو او د چارلز ډورن دغه وينا سمه وخته چې «هغه وخت چې قانون ختمېږي، استبداد پيل کېږي.» د پاچايي کورنۍ غړو ته څه وخت وروسته د افغانستان نه د وتلو اجازه ورکړل شوه او هغوی په روم کې له پخواني پاچا محمد ظاهر سره يو ځای شول. څه موده وروسته عبدالوالي د محکمه کېدو وروسته د باندې تک اجازه ورکړل شوه که څه هم د فايق په وينا پرچميانو غوښتل چې زندۍ کولو ته يې برابر کړي.

د ايران پاچا رضا شاه او د پاکستان لومړي وزير بوتو چې د داود بيا واکمن کېدو نارامه کړي وو، غوښتل چې د پاچا محمد ظاهر سره مرسته وکړي چې بيا واکمن شي خو پاچا د دوی مرسته ونه منله. د رضا شاه سره د پاچايي ساتلو اندېښنه وه او بوتو اندېښمن و چې محمد داود به بيا د پښتونستان مسله ټينگه ونيسي. خو پاچا د يوه ليک په ذريعه د محمد داود د نوي حکومت ملاتړ اعلان کړ او محمد داود د پاچا له لوري پوره ډاډمن شو.

د ميوندوال پر ضد دسيسه

د کاکړ په وينا محمد هاشم ميوندوال يو پوخ سياستوال، د صدراعظمۍ او نورو مهمو دولتي دندو په کولو سره د ملي اعتبار خاوند، د مساوات گوند مشر، پياوړی ليکوال او د سياسي نظريو خاوند افغان و، ميوندوال په خپلې شخصي وړتيا، پرهېزگاری او زيار سره ځان رسولی او د کمونيزم مخالف و، نو شوروي پال پرچميان ورسره مخالف وو. پرچميانو لا په صدراعظمۍ کې په ميوندوال د (سي ای ای) سره د لاس لرلو تور لکاوه؛ لکه وروسته يې په حفيظ الله امين پسې هم همدغسې پروباگنډ کاوه. دوی نوموړی په دې تور ونيوه چې د محمد داود پر ضد يې کودتا کوله.

يوڅ د پخواني صدراعظم محمد هاشم ميوندوال پر ضد دسيسه کې هم زيات زيانمن شو. په دغه دسيسه کې د سپتمبر په ۲۳ مه نېټه ۴۲ کسان ونيول شول چې په هغه جمله کې برسېره د پخوانی ډگر جنرال خان محمد، د هوايي ځواکونو ډگر جنرال عبدالرزاق ميوند، جنرال سهاک، جنرال ناصري، د هوايي ځواکونو قوماندان سيد امير، ډگروال ماما زرغون شاه، ډگروال کوهات، ډگروال گل شاعلي مومند، ډگروال شير افضل مومند، ډگروال شېر افضل افریدی، څو تنه پيلوټان، وکيل سعدالله، يو شمېر سوداگر او قومي مخور وو. دوی ټول وطنپال وو او د کودتا په تور ونيول شول او «دغه تور يې هم پرې ولگوه چې دوی د يوه باندیني حکومت [پاکستان] په لمسونې سره کودتا کوله.» ۶۱۰

په بنديتون کې د دوی نه په سختو کړولو سره د کودتا د کړلو مثل تر لاسه شوي او بيا محکوم شول. لوستونکي کولی شي د کاکړ په کتاب کې چې «د سرطان کودتا د افغانستان د اوږدې بې ثباتۍ پيلامه» نومېږي، د دغو شکنجو په اړه زيات مالومات تر لاسه کولی شي. خو زه به د شيرافضل افریدی د شکنجې په اړه د هغه د زوی له خولې نه چې د دهمزنگ د جيل نه زما د ايله کېدو له کبله زما کور ته راغلی و، د خپل پلار د کړولو دا بورنونکې صحې انځور وړاندې کړو. ده وويل چې زما پلار يې ځړولی و او مادر زادي کې

بې ورته رسې اچولې او کبسته يې ځکوله چې اړ يې کړي چې په کودتا کې کېدون ومي. د دغه کړاو نه داسې زيان ورته رسېدلی و چې د درملنې له پاره مو لوبديځ المان ته واستاوه خو ډاکټران يې په درملنه کې پاتې راغلل او هلته ورڅخه مړ شو. هارون وايي چې په تېره په شپه کې «انسان مخي ځناور به د بې دفاع انسانانو په ځان حواله شول.» ۶۱۱

د مخه مو يادونه وکړه په دې اړه چې ميوندوال کودتا کوله هيڅ شواهد نه شته. د کاکړ په وينا سره له دې هم صمد غوث ... ادعا کوي چې «داسې ښکاري چې ميوندوال چې د مخه په کودتا کې ښکېل شوی و، بله چاره نه درلوده، خو دا چې زره نازره موافقه وکړي.» دی دا هم وايي چې پاکستان په همدغې دسيسې کې لاس درلود. ۶۱۲

خو کاکړ وايي چې د محمد غوث احتمال د هغو واقعيتونو په نظر کې نيولو سره چې هارون او رسولي راوړي ناشوني دی. هارون وايي چې د ميوندوال کور تر څارنې لاندې نيول شوی و او ميوندوال په دغه اړه محمد نعيم ته چې ورته منلی و، شکايت وکړ خو کټه يې ونه کړه. ۶۱۳

رسولي لا وايي چې ميوندوال همدا چې له کودتا نه وروسته له عراق نه وطن ته راستون شو، تر څارنې لاندې ونيول شو. ۶۱۴ کاکړ دې پايلې ته رسېږي چې په دغه حال کې د ميوندوال له پاره گرانه څه چې ان ناشوني ده، چې د څلوېښتو کسانو په کېدون د کودتا تجويز وکړي او پلي يې کړای شي. ۶۱۵ سره له دې د ميوندوال له بندي کولو نه وروسته حکومت د کابل راډيو نه اعلان وکړ چې ميوندوال په خپلې نکتايي ځان خړولی او وژلی دی. دا وينا هم رښتيا نه ده ځکه چې فايق يوه ورځ د مخه د محمد داود په امر د کورنيو چارو وزارت ته د ميوندوال د ليدلو له پاره تللی او هغه يې ليدلی و. فايق وايي چې ميوندوال دريښي نه درلوده او خت او پرتوک يې اغوستي وو نو بيا يې څنگه ځان په نېکتايي وځړاوه. له همدې امله به و چې د هغه مړی د هغه خپلوانو ته ورنه کړل شو او د کابل د عدلي طب کارپوه بالکنداس ته يې د کوټې له وره نه د ليدلو اجازه ورکړه او هغه هم د ځان د وېرې نه هغسې تصديق وليکه چې ترېنه غوښتل شوی و. برسېره پردې تر دېره وخته ان د ميوندوال قبر څارل کېده. ۶۱۶

کاکړ وايي چې «نږدې ټولو ليکوالو د فايق او هارون په کېدون د ميوندوال وژونکي صمد ازهر ښودلی، چې په دغې قضیې کې د هيات د تحقيق مشر و، ميوندوال په قوي احتمال د ک ج ب په دستور د هغه په لاس وژل شوی دی. ک ج ب به ځکه ازهر ته دغه دستور ورکړی وي چې ميوندوال، لکه چې د مخه ويل شوي په افغانستان کې د کمونيزم د خپرېدلو مخالف و او ازهر د «فتح» په مستعار نامه د ک ج ب ايجنت و» ۶۱۷ ازهر د

(Ray) ډلې غړی و چې ک ج ب د پرچم تر چتر لاندې جوړه کړې وه. د پلټنې نور غړي غلام فاروق يعقوبي، نصرالله عمرخېل، غلام رسول عمرخېل، سيد کاظم پرواني، باقي او قطره وو.

د دغو ۴۲ کسانو د ژوند او مرگ لومړۍ درجه مسؤليت د دوی د امرانو او په سر کې د دولت سروال محمد داود په غاړه وو. څنگه چې حکومت نظامي و، د دغو بنديانو موضوع هم نظامي محکمې (د حرب ديوان) ته وسپارله شوه، چې سروال يې ډگر جنرال غلام فاروق او غړي يې محمد سرور نورستاني، نبي عظيمي، محمد اصف الم، عبدالستار سيد خيلي (پرواني) محمد يوسف او مولاداد وو. د هارون په وينا «څرنګه چې په هغه وخت کې روسي مزدوران [پرچميان] په امنيتي څانګو کې ځای په ځای شوي وو. په نظامي محکمه کې هم همدا وحشيان ناست وو.» ۶۱۸ دغې تش په نامه نظامي محکمې شپږ تنه په زندۍ کولو محکوم کړل چې د محمد هاشم په کېدون ډگر جنرال خان محمد مرستيال، وکيل سيف الرحمن، ډګروال ماما محمد زرغون شاه، ډګروال سيد امير او محمد عارف شينواری (سوداګر) وو. اوه تنه: جنرال عبدالرزاق، ډګروال کوهات، ډګروال امين الله، ډګروال ممتاز، تورن سيد هاشم، جګړن محمد اکرم او حاجي فقير يې په عمري بند محکوم کړل. ډګر جنرال نیک محمد سهاک، ډګر جنرال محمد رحيم ناصر، غلام حيدر، ډګروال گل شاه علي مومند، جګړن نقيب الله، ډګروال نور احمد، او تورن محمد اکرم د اوږدې مودې په بند محکوم کړل. د جنت خان غروال، حنان ځاځي، حاجي الله نظر، هزار مير کوچي، الله گل، او حاجي مولا گل پر بندي کېدلو سربېره د هغو شتمني او سرايوته هم ضبط شول.

فايق د زندۍ کولو ځای څرخي پله ته نږدې پولیکون ښي او د يوه سرتېري له خولې د زندۍ کولو صحنه داسې بيانوي: دغه په زندۍ کولو محکومان د سهار په دوو بجو د انضباط د ټولې له خوا پولیکون ته يووړل شول. «په داسې حال کې چې د زندۍ کوونکو په سر تورې کڅوړې په سر چې تر ستوني پورې څرېدلې وې، لاسونه يې شا ته زولنې ... شوي وو، نبي عظيمي د زندۍ کوونکو شا ته د شلو مترو په واټن درې تنه سرتېري د کلاشنیکوفونو سره د تيارسی په حالت درولي او قوماندې ته سترګې په لاره وو، بيا په داسې حال کې چې د پلټنې د هيئت پوليس او د پوځي محکمې غړي حاضر وو، د زندۍ امر د محمد اصف الم له خوا ولوستل شو.» د زندۍ کولو د امر په اورېدو سره محکومانو نارې سورې او د الله اکبر اوازونه پورته کړل، بيا تورن عظيمي چې د انضباط د ټولې قوماندان و په دې ډول بولی ورکړه: «د انضباط ټولې ځوانانو! د خاينينو په وژلو نڅه

[نېسه] ونيسئ» فايق د سرتيري له خولې دا هم وايي چې «هغه څه چې په دغه صحنه کې دېر زړه بورنوونکي په نظر راغی، هغه دا و چې نبي عظيمي د هر زندی کوونکي په سر باندې چې د ساه ورکولو په حالت کې وو د تفنگچې ډزې کولې ... او د تورنو ژوند يې پای ته رساوه.» ۶۱۹

محمد نذير سراج د دغې دسيسې په اړه ليکي: «د بې گناه شخصيتونو زندی او بندي کول د محمد داود خان د پرچمي همکارانو له پاره يوه پيلامه وه تر څو هغه کسان چې د خپلو موخو په وړاندې خنډ او خطر جوړوي له منځه يوسي.» ۶۲۰ عاصم اکرم وايي چې «دسيسه د ميوندوال نه وه، بلکې دسيسه د هغه پر ضد وه، نوښت کوونکي يې کمونستان وو.» ۶۲۱

خان محمد مرستيال که څه هم متقاعد جنرال و بيا هم په پوځ کې د نفوذ او د اعتبار خاوند و. فرهنگ وايي چې «د محمد داود خان د صدارت په وخت کې کله چې دی د مشرقي ولايت نايب الحکومه او پوځي قوماندان و په هغې غونډې کې چې د پاچا په شتون کې جوړه شوې او د سردار محمد نعيم د بهرنيو چارو وزير وړانديز چې د پاکستان په وړاندې د شوروي اتحاد د مرستې په اړه څېړل کېده، گډون درلود. په ياده شوې غونډې کې خان محمد خان دا پوښتنه وکړه چې که د شوروي ځواکونه په دغه نامه افغانستان ته ننوزي کوم ځواک به دوی وتلو ته اړ کړي.» فرهنگ زياتوي چې «څرنگه دا پوښتنه يې خواجه پاتې شوه نوموړی وړانديز د منځه ولاړ.» ۶۲۲ مرستيال وروسته لومړی د نظامي څانگې نه وايستل شو او بيا له وخت نه پخوا په کور کې کېښونول شو او په جمهوري نظام کې زندی شو.

کاکړ وايي «دغو پرچميانو اول په هغو وطنپالو بريد وکړ چې په پوځ کې يې نوم او اعتبار او پلويان لرل او دوی د هغو په شته والي کې خپل مقامونه په خطر کې ليدل. ... دغو پرچميانو د عمل دغسې کسان وځپل چې د ملي فکر خاوندان وو، په پوځ کې يې نفوذ لاره او په شوروي اتحاد باندې د حکومت اتکا يې د افغانستان له پاره خطرناکه باله.» ۶۲۳

د محمد داود کودتا دا فکر ټينگ کړ چې واک ته د رسېدلو لار کودتا ده. نور محمد تره کي او حفيظ الله امين په دې فکر شول چې په پرمختيايي هېوادو کې سوسيالزم د پوځ له لارې پلي کېدای شي. په قانوني پاچايي کې هم سياسي اختلافونو ټينگ شتون درلود خو هغه د ازادۍ او ډموکراسۍ له برکنه په خبرو کې وو. خو په جمهوري نظام کې چې پوځي افسران او په ځانگړې توگه واره افسران سياسي شول د سياسي اختلافونو ځای

کودتاگانو ونيو او ټولنه نوره کرکېچنه شوه.

محمد داود او اسلامي بنسټ پالان

د کرکېچ يو اړخ د جمهوري پالو او اسلامي بنسټ پالو يا اخوانيانو تر منځ اړيکې وې چې د هماغه اول سر نه ترڅي وې. اسلامي بنسټ پالان يا اخوانيان هم د نورو گوندونو غونډې د افغانستان اسلامي جمعيت په نامه تنظيم کي چې مشر يې غلام محمد نيازي د شرعياتو د پوهنځي سروال و، تنظيم شول. دوی چې زياتره يې د پوهنتون او نورو علمي موسيسو منسوبان وو په خپل دريځ ټينگ ولاړ وو، چې هغه د مولانا ابوالعلي مودودي، حسن البنا او سيد قطب د فکرونو له مخې د دغسې اسلامي دولت په پېنو درول و چې ټولنه اسلامي کړي او هغه اړخونه يې پاک کړي چې د دوی په فکر غير اسلامي شوي وو. نو د دوی غټه ځانگړتيا د کيڼ اړخو گوندونو غونډې د ثابتې ايډيالوژۍ له مخې حکومت کول و، بې له دې چې له نورو سره جوړه وکړي او نوي واقعيتونه په نظر کې ونيسي.

د کاکړ په وينا «ويل شوي چې اسلام پالو مشرانو» د چنگاښ د کودتا نه وروسته محمد داود ته د حکومت په چلولو کې د مرستې وړانديز کړی و خو هغه منلی نه و ځکه چې د يوې خوا محمد داود د امان الله په شان په عصري لارو سمونونه غوښتل چې اخوانيان يې مخالف وو او د بلې خوا محمد داود د پرچميانو ملگری او په شورويانو يې ډډه لگولې وه. نو اخوانيانو د جمهوري نظام پر ضد په کړو لاس پورې کړ او د دريځ په وينا د «نظامي پاڅون» نڅېنه جوړه کړې وه چې د هغې له مخې به پوځي افسران د انجنر حبيب الرحمن په سروالي کودتا کوي خو حکومت ورباندې خبر شو او مسؤلان يې د غلام محمد نيازي په گډون ونيول او د جمعيت نور مخکښان: برهان الدين، گلبدین حکمتيار او احمد شاه مسعود پاکستان ته وتښتېدل. د ۱۹۷۳ کال په پای کې اخوانيان د بدخشان ولايت په درواز کې جک شول، خو حکومت هغوی زر غلي کړل. بل کال د ۱۹۷۵ کال د جولای په ۲۲ مه نېټه دا ځل په لويه اندازه او د پاکستان په لمسون او مرسته دوی په پوځي کړو لاس پورې کړ. دوی په بدخشان، لغمان ولايتونو او د پنجشېر ولسوالۍ کې د حکومت پر ضد بلوا وکړه خو هېچا د اله کوله کوونکو ملاتړ ونه کړ. د کاکړ په وينا «پلان دا و چې د دوی پوځي پلويان به په کابل کې کودتا کوي او واک به تر لاسه کوي، خو هغوی په دغه ورځ چې د ملي جشن ورځ وه د لږ وخت له پاره د برېښنا د پرچاو کولو نه پرته نور څه کولی ونه شول او دغه پاڅون وځپل شو.» د بلواکرو يو شمېر کسان ونيول شول او نور يې بېرته پاکستان ته پر شا شول. دوه کاله وروسته ۲۱ تنه په عمري بند او څلور تنه يې په زندۍ محکوم شول. ۶۲۴

وروسته د مولانه فيضاني ډله هم ونيوله شوه چې دريځ د دوی د نيولو لامل کودتا بولي چې د پلي کېدو د مخه حکومت پرې خبر شو خو فايق يې د پرچميانو دسيسه کتې.

د مخه مو يادونه وکړه چې د محمد داود د واکمنۍ پر ضد د اسلامي بنسټ پالو پاڅون د پاکستان د حکومت په لمسونه او مرسته وشو چې ناکام شو چې يو شمېر يې بنديان شول او نور يې بېرته پاکستان ته پر شا شول. دوی په اول کې په ډېر بد حال کې و او يوازې د پاکستان د اسلامي جماعت مشر مودودي له هغوی سره مرسته کوله چې ډېره نه وه. ۶۲۵ وروسته د ذوالفقار علي بوتو په صدراعظمۍ کې د پاکستان حکومت د افغان اسلام پالو نه د سياسي کتې اڅېستلو په فکر شو او د دغه مقصد له پاره يې د افغانستان د جمهوري نظام پر ضد د هغو په روزلو او وسله وال کولو فکر وکړ. بوتو دغه کار د دې له پاره کاوه چې د افغانستان په حکومت باندې فشار راوړي چې د پښتونستان له دعوي نه تېر شي. ځنگه چې د افغانستان حکومت د پاکستان سره په يوې بنسټيزې مسلې يانې پښتونستان په سر اختلاف درلود، اسلام پالو ته اړينه نه وه چې په داسې شرايطو کې د خپل هېواد د ملي کتو پر ضد د بوتو د پلانونو د پلي کولو وسيله شي. کاکړ وايي چې «دا يو تريخ حقيقت دی، چې افغان اسلام پالو له خپل حکومت سره د مخالفت په موضوع کې خپل ځانونه د پاکستان د حکومت ارادې ته وسپارل او د هغه په لمسوني سره يې د ننه په هېواد کې د امنيت کېدو ډولو ته ملا وتړله په داسې حال کې چې افغانستان له پاکستان سره په يوې ملي بنسټيزې کشالې کې کير و.» ۶۲۶ د افغان اسلام پالو د دغه ملي ضد دريځ لامل شايد د دوی په ايډيالوژيکې دريځ کې وموندل شي هغه دا چې دوی په ملي کتو ايډيالوژيکې کتې لورې بولي لکه ځينو کين اړخو د ملي کتو نه د شوروي کتې لورې بللې.

د محمد داود په کورني او بهرني سياست کې بدلون

۱- کورنی سياست

د مخه مو يادونه وکړه چې محمد داود لومړی برید په وطنپالو وکړ چې تش په نامه د ميوندوال کودتا په نوم يې دوه څلوېشت وطنپال وځپل. بيا يې اسلامي بنسټپالونکو پاڅونونه، چې د پاکستان په لمسونه د خپل هېواد د ملي کتو پر ضد يې وسلې ته لاس کړ، وځپل چې بې اغېزې پاتې نه شول. دا ځل د پرچميانو وار راغی. محمد داود له يوې خوا ورو ورو د پرچميانو او په دولت کې د هغوی منسوبينو په تخريبي کړو وړو او دسيسو پوه شو

چې د ده دولت د بدناملولو له پاره يې پر مخ بيول او د بلې خوا د شورويانو په بد نيت پوه شو چې د پرچميانو په وجود کې يې د دولت د بدناملولو سره مرسته کوله.

فایق د ۱۳۵۴ کال د سرطان په میاشت کې محمد داود ته د حسن شرق ثبت کړی اواز اورولی و، چې په هغه کې د محمد داود پر ضد د کودتا د طرحې خبرې وې. د سرطان په ۳۱ مه نېټه د مرکزي کمیټې غونډه د همدې موضوع له پاره بللې شوې وه. د فایق په وینا حسن شرق په دغه غونډه کې د خپل دغه کار له امله توبه وکړه او خان يې وژغوره. دی لیکي: «د خپل معنوي پلار [محمد داود] ته زاري کوم چې هغه تېروتنې او زیانونه چې له ما څخه شوي دي د پلرنۍ بڅښنې په سترګه وګوري او دا هغه درس دی چې د ژوند نه مې واخېست، بیا به تکرار نه شي» ۶۲۷

محمد داود دا کوتا ټینګه ونه نیوله چې لامل يې شاید داوي چې شوروي به يې په نظر کې نیولی وي. د مخه صدراعظم نور احمد اعتمادي هم په همدې دلیل پرچميان په ازاد ډول پرې ایښي و. خو محمد داود سوکه سوکه د کین لاسو او په خانګرې توګه د پرچميانو پر ضد کامونه پورته کړل. د کابینې په بدلون کې يې غلام جیلاني، عبدالحمید محتاط، نعمت الله پژواک، فیض محمد او پاچا گل د وزارتونو نه ګوښه کړل او وروستي دوه يې د باندې سفیران وټاکل شول. وروسته حسن شرق د کابینې نه وایستل شو او په جاپان کې سفیر وټاکل شو. خو محمد داود غلام حیدر رسولې د ملي دفاع او عبدالقدیر نورستانی د کورنیو چارو د وزیرانو په توګه وټاکل چې دواړه يې کفایت و.

کاکړ وايي چې محمد داود د حکومت نه کین لاسي وایستل او د چېرې ایډیالوژۍ نه واټن ونيو او افغان پالنه يې خپله سیاسي عقیده اعلام کړه. دا ګام د مارکسیزم او سیاسي اسلام په وړاندې د افغان ناسیونالیزم درول و. د تابعیت په تذکره کې د قومي نومونو کارول منع شول او د افغانانو هغه تخلصونه هم منع شول چې نسبت يې قوم یا سیمې ته کېده. دا ټول د دې له پاره وو چې افغان ولس په قومونو او نورو نومونو نه وي وېشل شوی او خلک په خپلو کې د افغان په نامه د برابري او ورورې ژوند وکړي.

محمد داود د بیمو او بانک شرکتونه ملي کړل او د مخکو د سمونونو او مترقي ماليو لايحې وایستلې. د لومړۍ لايحې له مخې دولت د مخکه وال له سلو جریبو نه زیاتې اوبه ییزې مخکې، له دوه سوو څخه ډېرې لښې یا باراني مخکې په بیه واخېستلې چې بیه به يې په ۲۵ کلونو کې په قسطنونو سره ورکوي او دولت به دغه اخېستل شوې مخکې بزګرو ته په قسطنونو سره ورکوي. د محمد داود د ځمکو د سمون پروګرام د مترقي مالې پر بنسټ و. د هغه د پروګرام له مخې د لږو ځمکو خاوندان د مالې نه معاف وو. هغو مالکانو چې د

سلو جريبو نه زياته مخکه درلوده ډېره ماليه ورکوله. د دغه پروگرام له مخې له سلو جريبو نه زياتې مخکې ساتل به د مالک له پاره گرانه تمامېده. نو ځکه دوی د سلو جريبو نه زياته مخکه د دوی په کټه وه چې په دولت يې وپلوري. دولت به بيا دغه زياتي مخکه په مستحقو بزگرانو باندې په لږه بيه خرڅولې او پيسې به يې هم په اوږدې مودې کې په قسطنونو سره ترلاسه کولې. له دې امله په ۱۹۷۴ کال کې چې محمد داود د مخکې د سمون اعلام وکړ، خمکه والو د خپلو زياتي مخکو په پلورلو پيل وکړ. ځينو يې په نورو لارو هم خپلې مخکې له سلو جريبو نه بنسټه کړې او په دې ډول يې د درنو مالياتو د ورکولو نه ځانونه خلاص کړل او خپلې مخکې يې هم له لاسه ورنه کړې.

محمد داود د خپل نظام د مشروع کولو له پاره د ۱۹۷۷ کال د فبروري په مياشت کې اساسي قانون وايستلو چې دلويې جرگې له خوا ومنل شو. کاکړ وايي چې د جمهوري نظام نوی او غټ ټکی د ولسمشر غوره کول و. د لويې جرگې سروال عزيزالله واصفي نارې کړې چې «محمد داود کانديد نه دی او ولسمشري نه غواړي». هغه څو ځله داسې وکړل خو هر ځل به د وکيلانو غږ پورته شو چې «موږ پرته له داود خان نه پرته بل څوک نه غواړو». واصفي بيا محمد داود ته مخ وارهو چې «صاحبه! خلک تا غواړي» په دغه وخت کې د خوست استازي ورېښمين غږ وکړ چې «جنرال غلام حيدر رسولي هم د ولسمشرۍ له پاره وړ کس دی که يې وغواړي». محمد داود بيا سم له لاسه غږ کړ چې «په يوه شرط کانديد کېږم چې ټول يې په اتفاق سره ومي». دی بيا د ټولو په اتفاق سره د شپږو کالونو له پاره د افغانستان ولسمشر غوره شو. ۶۲۸ کاکړ وايي «خو څنگه چې د ولسمشر د غوره کولو طرز د جوړې فکر ورکاوه د ولسمشر محمد داود اعتبار يې زيانمن کړ». ۶۲۹

په اساسي قانون کې د «افغانستان جمهوري دولت دموکراتيک» او د «افغانستان اداره د مرکزيت پر اصل بنا» اعلام شوه. کاکړ وايي چې د «دموکراتيک» او «مرکزيت» اصطلاحگانې شايد د «دموکراتيک مرکزيت» د اصل له مخې غوره شوې وي، چې د شوروي اتحاد رسمي گوند پرې بنا شوی او په دغه وخت کې په کابل کې په خاص ډول په چپيانو کې عامې شوې وې. فرهنگ وايي چې د دغه اساسي قانون په ايستلو کې د محمد داود د ليکل شويو هدايتونو نه کار واخېستل شو. محمد داود هغه خپل وړانديز له نظره وغورځاوه چې له صدراعظۍ نه د گوښه کېدلو په وخت کې يې د مشروطې پاچايي په اړه پاچا ته کړی و. په دې توگه د مرکزي اصل له مخې ولسمشر ته ډېر واک ورکړل شو. دی نه يوازې د دولت سروال، د احرائيه قوې منتظم وبلل شو، بلکې د گوند منتظم هم وکبل شو.

دا چې د دغه قانون له مخې به ولسمشر او ورسره اجرائيوي قوه ډېر واک او قانون جوړونکې قوه لږ واک لري، شايد د پاچايي دورې د انارشۍ د مخنيوي له پاره و، خو يو گوندي طرز د ملي گوند په لارښود سره د زورواکۍ او ان د ټولوکې له پاره پيلامه وه. په دغه حال کې دموکراسي هسې کلیمه کېدله؛ لکه په شوروي اتحاد کې چې شوې وه. غلام حيدر رسولی او قدير نورستاني د ملي غورځنگ منتظمان وټاکل شول، خو دوی د دغه کار وړ نه وو. په حکومت کې د وزیرانو تر منځ چاودون راغی، ان تردې چې اتو تنو وزیرانو د خپلو دندو نه د گوښه کېدو نیت وشود. دوی د فایق په کور کې سره جرگه شول چې په دې اړه يو گډ دریځ ونیسي. دوی بیا په دې اړه د ولسمشر د ورور سره د هغه په کور کې وليدل. محمد نعيم دوی د گوښه کېدلو د هود نه وارول، خو سپارښتنو یې په ورور باندې اغېزه ونه کړه. له هغې وروسته محمد نعيم او د محمد داود مشر زوی محمد عمر د داود خان نه ناراضه شول او د افغانستان راتلونکې یې خړه پړه او خطرناکه وښووله. سره له دې ولسمشر نورو هېوادونو ته رسمي سفرونه وکړل چې له هغوی نه د پرمختیايي پروژو او اوه کلن پرمختیايي پلان له پاره مرستې ترلاسه کړي.

۲- بهرنی سیاست

شوروي اتحاد ته د محمد داود سفر

شوروي اتحاد چې د دوهمې نړیوالې جگړې په پایله کې په زبرځواک بدل شو هڅه کوله چې د خپلې امپراتورۍ سوويلي اړخ خوندي وساتي او چم گاونډي هېوادونه او په ځانگړې توگه په افغانستان کې د لوبديځ او په تېره د بل زبرځواک امریکې د نفوذ مخه ونیسي. شوروي اتحاد وېره درلوده چې که افغانستان د امریکې د نفوذ سیمه شوه نو په منځنۍ اسيا کې به د دوی کتو ته گواښ پېښ کړي. ځکه شوروي اتحاد د ۱۳۵۶ کال نه راهیسې د خروسچف په واکمنۍ کې د افغانستان سره د محمد داود د صدراعظمۍ پر مهال راز راز مرستې کولې او اوس یې هم د هغه په ولسمشرۍ کې هم د مرستې ژمنې کولې. محمد داود د دغو مرستو د ترلاسه کولو په موخه په ۱۹۷۴ کال کې شوروي اتحاد ته رسمي سفر وکړ. د شوروي اتحاد حکومت په دغه سفر کې افغانستان ته ۴۳۷ میلیونه ډالر اعتبار منلی و. په ۱۹۷۶ کې د دواړو لورو تر منځ د سوداگرۍ تړون لاسلیک شو چې د یو او بل سره د سوداگرۍ کچه زیاته او ۱۹۸۰ کال پورې شپته سلو ته ورسېږي. محمد داود د یوې خوا د پرچميانو په ایستلو پیل کړی و او د بلې خوا د شوروي اتحاد د چارپوهانو د زیاتوالي نه چې د پرچميانو ملاتړي وو، اندېښمن و. له دې کبله ده ځانگړې لارښوونه کړې وه «چې

دوه- دريمه برخه افغان افسران دې مصر او هند ته او دريمه برخه شوروي اتحاد ته واستول شي، هغه دا هم ويلى و چې د هند او مصر حکومتونو په خپلو هېوادونو کې د افغان افسرانو زده کړه منلې ده، په دې ډول چې هغوى به هلته په روسي وسلو او تجرېزاتو تمرينونه کوي». ۶۳۰ شوروي اتحاد هم د پرچميانو په ايستلو او هم په هند او مصر کې د افغان افسرانو د روزنې چارو انډېبنمن کړى و چې په افغانستان کې به يې نفوذ لږ شي. شورويانو هم په کابل کې افغان کمونستان پياوړي کول چې دا په افغانستان کې د دوى لاسوهنه وه.

کاکړ وايي چې د شوروي اتحاد بلنې محمد داود ته موقع ورکړه چې عمومي منشي ليو نيد برژنف وپوښتي چې شوروي کارپوهان دا لاسوهنه د هغه په دستور يا په خپل نوبت کوي. محمد داود وحيد عبدالله ته لارښونه وکړه چې د دغې موضوع د سپينولو له پاره له بريژنف سره د يوې خانکړې ناستې ترتيب ونيسي.

د افغانستان او شوروي د لور رتبه پلاوو تر منځ د رسمي خبرو په جريان کې بريژنف د افغانستان په کورنيو چارو کې د لاسوهنې هڅه کړې وه. عبدالصمد غوث د بهرنيو چارو د وزارت پخوانى مرستيال چې په خپله په دغه سفر کې د افغان پلاوي غړى و ليکي: «بريژنف په دغه شېبه کې د محمد داود لوري ته کتل او څه يې ورته وويل چې ژباړونکى کاوريلوف ډېر نارامه شو او څه وخت وروسته يې په دوه زره توب سره دا عبارت ژباړه کړو چې انتظار يې نه کېده. بريژنف شکايت وکړو چې په افغانستان کې د ملگرو ملتو د دوه اړخيزو او د ځينو نورو څو اړخيزو پروژو په کارولو کې د ناتو د غړو هېوادو د چارپوهانو شمېر زيات شوى دى. پخوا د افغانستان حکومت د ناتو د غړو هېوادو چارپوهانو ته لږ تر لږه د هېواد په شمال کې بلنه نه ورکوله خو اوس په هغو دستورونو عمل نه کېږي. هغه وويل چې شوروي اتحاد دغو انکشافاتو ته په بد نظر کوري او د افغانستان د حکومت نه غواړي چې د هغوى د تسلط نه ځان وژغوري. هغوى د جاسوسانو نه پرته بل څه نه دي او د امپرياليستي موخو له پاره کار کوي.» ۶۳۱

محمد داود د بريژنف د خبرو په ځواب کې وويل: «موږ به هېڅکله تاسو ته د دې اجازه در نه کړو چې موږ ته امر وکړئ چې حکومت څنگه اداره کړو، څوک په افغانستان کې استخدام کړو، څرنگه او چېرې چارپوهان توظيف کړو. دا يوازې د افغانستان په اداره پورې اړه لري. که لازمه شوه افغانستان به بې وزلې پاتې شي، خو په خپلو پرېکړو کې به ازاد واوسي.» ۶۳۲

کاکړ وايي چې تردې نږدې وختونو پورې د محمد غوث روايت د دغو خبرو يوازينى

سرچينه وه او د دغه روايت په بنسټ دا تيوري جوړه شوې او عامه شوې ده چې د محمد داود پر ضد د ثور کودتا د هغه لفظي ټکر پایله وه چې د کرملن د مانی په غونډه کې د محمد داود او بريژنف تر منځ پېښ شوی و. خو په ۲۰۰۶ کال کې جميلي هم د دغو غونډو بهير چې دی هم په کې حاضر و، په خپلو ليکنو کې بيان کړی چې په هغه سره پورتنۍ تيوري بې مفهومه کيږي.

د جميلي د ليکنې له مخې محمد داود د بريژنف د خبرو په برابر کې هغسې غبرگون نه دی ښودلی چې صمد غوث بيان کړی دی. دی وايي چې محمد داود د غونډې په پای کې شوروي لويانو ته د لاس ورکولو نه وروسته په عادي ډول له سالون نه ووت او د افغان پلاوي غړي ورپسې روان شول. کاکړ وايي چې محمد غوث د دواړو رسمي پلاوو تر منځ رسمي خبرې په درو ورځو (۱۲، ۱۳ او ۱۴) کې تر سره شوې او جميلي يې په دوو ورځو کې (۱۳ او ۱۴) اپريل کې تر سره شوې بولي. دغه توپير د محمد غوث اثر زيانمن کړی چې د هغه نه بايد په احتياط سره کار واخېستل شي. دا ليکنې په څرگند ډول په تضاد کې دي او د دوی په قلم د خپلو ليدنو کتنو او مشاهدو محصول دي. خو د کومو رسمي سندونو او څرگندونو محصول نه دي.

پاکستان ته د محمد داود سفر

پاکستان د هندوستان د وېش په پایله کې د ۱۹۴۷ کال د اگست په څورلسمه نېټه جوړ شو. د افغانستان خاوره چې د نولسمې پېړۍ په جريان کې انګليسانو نيولې او په ۱۸۹۳ کال کې په امير عبدالرحمن باندې د ډېورنډ د هوکړه ليک د تپلو وروسته د برتانوي هند د نفوذ سيمه شوه پاکستان ته ورکړل شوه. څرنګه چې د هند د وېشلو پر مهال پښتنو او بلوچو ته د خوداراديت حق ور نه کړل شو چې په خپله پرېکړه وکړي چې خپلواکي غواړي يا د خپل هېواد افغانستان سره يا د نوي جوړ شوي پاکستان سره يوځای کيږي. د پښتنو او بلوچو د سرنوشت د ټاکلو پر موضوع د افغانستان او پاکستان تر منځ اختلافات منځ ته راغلل. افغانستان دا وخت دومره پياوړی نه و چې دا موضوع د پرنسپب پر بنسټ هواره کړي. د دې په پایله کې د افغانستان او پاکستان تر منځ اړيکې ترخې او د دښمنۍ شوې.

کاکړ وايي چې افغانستان ته د پښتونستان د کشالي يوه پایله دا شوه چې افغانستان له شوروي اتحاد سره ډېر اړخېزې اړيکې ټينګې کړي. د دغه نږدې والي پایله بيا دا شوه چې شوروي اتحاد د خپلو ډېرو مرستو له لارې په افغانستان کې نفوذ وکړي او د افغانستان

خلق ډموکراتيک گوند چې په ماهيت کې کمونستي و، رامنځ ته شي او وده وکړي. ولسمشر محمد داود له حکومتي مقامونو نه د څرگندو پرچميانو له ايستلو نه وروسته په افغانستان کې د شوروي د نفوذ د مخنيوي او افغانستان ته د ودې او پرمختگ له پاره د پاکستان سره اړيکې عادي کړي او نورو اسلامي هېوادونو نه مرستې ترلاسه کړي. په دې ترتيب له پاکستان سره د اړيکې عادي کول او پراختيا ورکول د ولسمشر محمد داود د باندني سياست مهم ټکی شو.

دارنگه د پاکستان صدراعظم ذوالفقار علي بوټو هم چې د پښتنو او بلوڅو سره په شخړو اخته شوی و، غوره گڼله چې په دغې موضوع کې د افغانستان سره پوهاوي ته ورسېږي. د ۱۹۷۶ کال د جون په مياشت کې بوټو کابل ته د ولسمشر محمد داود په بلنه افغانستان ته رسمي سفر وکړ. د دغو خبرو زړی د پاکستان له خوا د بلوڅو او پښتنو د حقونو منل او د ډېورنډ د کرښې په اړه پوهاوي ته رسېدل موضوع گانې جوړولو. د خبرو اترو نه وروسته دواړه خواوې ډاډه شوې چې دواړه لوري غواړي چې دا موضوع گانې د خبرو له لارې هوارې شي. دواړو خواوو روغ نيتي وښوده چې د «د کابل روحیه» ونوموله شوه.

د همدې کال د اگست په مياشت کې محمد داود د بوټو په بلنه پاکستان ته رسمي سفر وکړ. په دې سفر کې په يادو شوو موضوع گانو خبرې وشوې او د هغو د هوارولو له پاره بيا علاقه وښودل شوه او دا ځل د خبرو په پای کې يوه گډه اعلاميه خپره شوه چې په هغې کې د کابل روحيې له مخې پرېکړې ته د رسېدلو ژمنه وشوه. بل کال د جون په مياشت کې بوټو د تهران نه پاکستان ته د تک په لار کې په کابل کې د لږ وخت له پاره تم شو او د محمد داود سره يې ژمنه وکړه چې په پاکستان کې د وضعې په عادي کېدلو سره به د پښتنو او بلوڅو ټول سياسي بنديان ازاد شي ترڅو د نورو لانجمنو کشالو د هوارولو له پاره لار هواره شي. خو د جولای په ۵ مه نېټه د جنرال ضياء الحق په کودتا سره نسکور او دی بندي او وروسته زندی شو.

د جنرال ضياء الحق نوي حکومت له افغانسان سره د لانجو د هوارۍ له پاره د بوټو تر حکومت نه لا ډېره روغ نيتي وښوده. جنرال ضياء الحق د ۱۹۷۷ کال په اکتوبر کې کابل ته راغی او له داود سره يې دوه ځله په ځانگړې توگه وکتل او دواړه خواو د لانجو د هوارولو له پاره ټينگه اراده وښودله او د «کابل روحیه» يې تائيد کړه او د لا پياوړي کولو له پاره يې تياری وښود.

محمد داود د ۱۹۷۸ کال د مارچ په مياشت کې پاکستان ته سفر وکړ او د ضياء الحق

سره وکتل. د دوی په ليدنه کې محمد داود وويل چې خيځې هېوادونه هغې تودوخې ته په ښه سترگه نه گوري چې د افغانستان او پاکستان تر منځ په اړيکو کې پيدا شوې وه. ده دا هم څرگنده کړه چې «دغه دوه هېوادونه په يوه موټي کېدو او ورورۍ سره وکولى شي له دغو خطرونو سره مقابله وکړي او خپلې خپلواکۍ خوندي وساتي.» ۶۳۳

جنرال ضياء الحق هم يادونه وکړه چې اوس د دواړو هېوادونو د پخلاينې له پاره پوهاوی پيدا شوی او د هغه په رڼا کې به يو وخت وروستۍ پرېکړه وشي. محمد داود د پښتنو، بلوچو او د پاکستان له نورو قومي مشرانو سره هم وکتل. محمد داود بيا د لاهور د شاليمار په پارک کې د پاکستان ملت ته په خطاب کې وويل: «ستاسې قوت زمور قوت دی، ستاسې هوساينه زمور هوساينه ده او سياسي ثبات زمور ثبات دی.» ۶۳۴

په بله ورځ د پاکستان د بهرنیو چارو سکرتري اغا شاهي افغان پلاوي ته دا متن وسپاره چې په کې راغلي و چې: «افغانستان به د ډېورنډ کرښه د دواړو هېوادونو تر منځ د نړيوالې پولې په توگه وپېژني او د پښتونستان له مسلې نه به تېر شي او دواړه هېوادونه به د يوه بل هېواد په کورنيو چارو کې له لاس وهنې ډډه وکړي او دواړه خواوې ژمنه کوي چې د يوه بل پر ضد به د دښمنۍ پروپاگانډ نه کوي او دواړې خواوې به د اقتصادي او کلتوري پروگرام له پاره سره همکاري کوي او پراخوي به يې.» ۶۳۵ کاکړ وايي چې: «وحيد عبدالله د متن وروستي ټکي ومنل، خو د دوو لومړيو ټکو په اړه وويل چې افغانستان په دغه ډول د ډېورنډ کرښه منلی نه شي او د پښتونستان له مسلې نه تېرېدای نه شي. هغه دا هم وويل چې دغه مسلې به يوه ورځ د دواړو خواوو له خوا په قناعت لرونکي ډول حل شي او دغه اوسنی خبرې د همدغو موضوع گانو د حل له پاره د لارې هوارول دي» ۶۳۶

وحيد عبدالله د بلې خوا پام دې ټکي ته هم واړوه چې د پاکستان حکومت د پښتنو او بلوچو مشرانو سره د دوی د راتلونکې په اړه تر اوسه غږېدلې هم نه دی. افغانستان به وروسته له دې د دغه متن په اړه به گام واخلي چې پوه شي چې د هغو او په ځانگړي ډول د پښتنو سره څه منل شوي دي. محمد داود په يوه مطبوعاتي مرکه کې وويل چې «په هر څه باندې بحث وشو او د وخت په تېرېدلو سره به هر څه په خپل ځای وي او وخت به د هر څه غمه وخوري.» ۶۳۷ داود خان دا هم وويل چې د خبرو بل دور به په اوږي کې په کابل کې وشي خو بله مياشت د محمد داود حکومت نسکور شو.

صمد غوث په دې نظر دی چې دغو مشرانو به د خپلو هېوادونو تر منځ د يوازيني اختلاف [پښتونستان] له پاره د حل يوه معقوله لار پيدا کړې او په دريو يا څلورو کلونو کې به يې له منځه وړی وای. ۶۳۸ محمد داود د خپل واک د ساتنې په موخه حاضر و چې د

پښتنو او بلوڅو د سياسي برخه ليک ټاکلو په اړه د پاکستان سره هوکړه وکړې خو کاکړ سم وايي چې «چا د دې ضمانت کولی شو چې پښتانه او بلوڅ به له خپل حق نه تېر شوي وای چې هغه د هغو د خلکو له خوا د خپل سياسي برخليک ټاکل دي.» ۶۳۹

ایران ته د محمد داود سفر

د محمد داود په واکمنۍ کې د افغان- ایران اړیکې وروسته له هغې چې ایران ونه شو کرای د افغانستان د واک نه لوېدلی پاچا محمد ظاهر د محمد داود په ضد ولمسوي او د بیا پاچا کېدو په لار کې ورسره مرسته وکړې، ډېرې بڼې شوې. په ۱۹۷۴ کال کې د محمد داود ځانگړي استازي محمد نعیم د وحید عبدالله په ملگرتیا د ایران، عراق، لیبیا، الجزایر، مصر، سعودي عربستان، او کویت نه لیدنه وکړه او دغو ټولو هېوادو د افغانستان سره د مرستې مینه وښوده. ایران، عراق، عربستان او کویت د افغانستان سره د مالي مرستې ژمنې هم وکړې.

د ۱۹۷۵ کال د اپرېل په میاشت کې په خپله محمد داود ایران ته رسمي سفر وکړ. ایران افغانستان ته دوه میلیارده پور ومانه چې د دغو پیسو نه به یو میلیارد او اوه سوه میلیونه ډالر به د هرات- کندهار- کابل د اورگادې د پټلۍ په غزولو او پاتې درې سوه میلیونه ډالر به د اوه کلن پرمختیایي پلان په نورو پروژو لگېږي. که څه هم په ایران کې د پاچا پر ضد د لاریونونو، د تېلو د بېو په لړېدو او ځینو نورو لاملونو له کبله د ایران مرسته په شک کې شوه خو بیا هم د افغان-ایران اړیکې مخ په ښه کېدو وې، په تېره وروسته له دې چې ایران د پولو په ورو پېښو کې روغ نیټې وښوده او په ۱۹۷۷ کال کې د هلمند د اوبو د هغه تړون سندونه لاسلیک او مبادله کړل چې د موسی شفیق په صدراعظمۍ کې د افغانستان او ایران د حکومتونو تر منځ لاسلیک شوی و او هغه مهال محمد داود ورسره مخالف و.

د عبدالغفار فراهي په وینا چې د جمهور رییس محمد داود د سفر پر مهال په تهران کې جنرال قونسل و، وايي چې «په بین المللي روابطو کې د دې اصل ټینګ رعایت کېږي، چې کله چې د یوه هېواد مشر بل هېواد ته په رسمي سفر بلل سوی وي، نو د کوربه هېواد مشر د خپل مېلمه د اقامت په ورځو کې د خپل هېواد څخه د باندې سفر نه کوي، ولې د ایران پاچا د افغانستان د جمهور رییس محمد داود خان د مسافرت په وخت کې د دغه اصل مراعات ونه کړ، او کله چې محمد داود خان په اصفهان کې و، د ایران پاچا د خپل هېواد څخه ووت او د سلطان قابوس د لیدلو له پاره یې عمان ته سفر وکړ.

محمد داود خان د خپل حيثيت او ملي کتو د ساتلو په خاطر د خپل صدارت په وخت کې د غربي نړۍ او په سر کې د امريکا غوښتنو ته سر تپت نه کړ، او محمد داود خان د جمهوريت په وخت کې د شوروي اتحاد مشر برژنيف ته مخامخ کلک جواب ورکړ. ولي ده د ايران د پاچا پر دغه نامناسب عمل باندې اعتراض ونه کړ، که دغه نه اعتراض د ايران د څو ډالرو مرستې له پاره وي، نو د شاعر په قول

احتياج د زمانې هسې بلا ده
ودلاک ته پاچا کښېنوي سر تور» ۶۴۰

محمد داود د ۱۹۷۸ کال په لومړيو مياشتو کې مصر، لېبيا، يوگوسلاويا، هند، سعودي عربستان، او کوېت ته رسمي سفرونه وکړل چې ځينو هېوادو د اوه کلن پرمختيايي پلان د پروژو د پلي کولو له پاره د مرستو ژمنې وکړې. ويل کيږي چې د دغو سفرونو راپورونه د افغان پلاوي يوه غړي محمد خان جلالر، او هم رحيم رفعت د محمد داود ژباړونکي مسکو ته ورکړل. رحيم رفعت چې د شورويانو جاسوس و په شپاړسو مخونو کې د دغه سفر راپور بېرک کارمل ته ورکړ او هغه د دندې له مخې «خپلې دغه موندنې مسکو ته انتقال کړې.» ۶۴۱ کاکړ وايي چې «رفعت هم د باندنيو چارو په وزارت کې د شاه محمد دوست په شان پټ پرچمي و چې مهم حکومتي رازونه يې د کارمل له لارې (ک، ج، ب) ته رسول. دوی او داسې هم نورو پټو پرچميانو مليکي او نظامي څانگو کې کوندي وفاداري تر ملي وفادارۍ نه غوره گڼله.» ۶۴۲

د امريکا سره د محمد داود اړيکې

د افغانستان او امريکا تر منځ د ډپلوماتيکو اړيکو تاريخ اوږد نه دی. د پاچا امان الله په واکمني کې د پاچا ځانگړي استازي محمد ولي اروپا ته د سفر نه وروسته امريکې ته لاړ چې د امريکا سره ډپلوماتيکې اړيکې جوړې کړي. خو د محمد ولي سفر کټه ونه کړه. امريکې که څه هم په ۱۹۳۴ کال کې د فرانکلن روزولټ د ولسمشرۍ په وخت کې افغانستان په رسميت وپېژانده خو په کابل کې يې د سفارت د پرانېستلو نه ډډه وکړه. د دوهمې نړيوالې جگړې په منځ کې د افغانستان د ستراتيژيکې اهميت په پوهېدو سره امريکا خپل لومړی سفير کورنيلوس انکرت په افغانستان کې هستوگن کړ. د دوهمې نړيوالې جگړې وروسته د امريکا ولسمشر ترومن د واکمنۍ پر مهال افغانستان ته د مرستو ورکول پيل شول او د موريسن کودسن په نامه يوې امريکايي کمپنۍ د هلمند په ناوه کې د اوبو او کرنيزې پروژې پيل کړې، خو امريکې د

پنځوسه کاليزې په پای کې افغانستان ته شا کړه او د پاکستان سره یې تاوده ونيوله. لامل یې دا و چې پاکستان د امریکې تر څارنې لاندې د سنتو او سیتو په پوځي تړونو کې گډون وکړ چې موخه یې د شوروي اتحاد په نظامي تړونو چاپېرول و. خو افغانستان په یاد شوو تړونونو کې د گډون نه ډډه وکړه. د افغانستان دا دریځ د دې لامل شو چې امریکا د پښتونستان په مسله کې د پاکستان ملاتړ وکړ. زموږ تاریخ لیکونکي او په هغه جمله کې کاکړ په دې نظر دي چې افغانستان اړ شو چې شوروي اتحاد ته مخ واړوي. د دې سره سره امریکا د افغانستان سره په پوهنیزو او کرنیزو ساحو کې مرستې کولې. امریکې د قانوني پاچایي په لسیزې کې د افغانستان سره تر بلې هرې دورې نه ښې اړیکې ټینګې کړي وې.

امریکې د جمهوري نظام په لومړیو کې د نورو لوېدیځو هېوادو غوندې انتظار وکښ چې وگوري پښې کومې خوا ته روانې دي. په دغه وخت کې افغان چې چارواکو هڅه کوله چې افغان- امریکا اړیکې ترینګلې کړي خو محمد داود او محمد نعیم کوبښن کاوه چې د افغانستان او امریکا اړیکې ښې شي. په کابل کې د امریکا نوي سفير تیودور ایلین محمد داود او محمد نعیم ته ډاډ ورکړ «چې امریکا د افغانستان د خپلواکۍ او د ناپېلټوب د سیاست درناوی کوي او غواړي په خپلو مرستو سره د افغانستان په ثبات کې برخه ولري.» ۶۴۳ د ۱۹۷۴ کال د نومبر په میاشت کې د امریکې د بهرنیو چارو وزیر هنري کسینجر افغانستان ته رسمي سفر وکړ. هغه محمد داود ته ډاډ ورکړ چې امریکا د افغانستان خپلواکۍ، ناپېلټوب او ثبات ته ارزښت ورکوي. د دوی په خبرو کې اساسي موضوع د افغانستان او پاکستان تر منځ اړیکې وې. کاکړ وايي چې بوتو کسینجر ته شکایت کړی و چې افغانستان د پاکستان د بې ثباته کولو له پاره د پاکستان مخالفین پښتانه او بلوچ روزي او د وړانکارۍ له پاره یې بېرته پاکستان ته استوي.

محمد داود کسینجر ته څرگنده کړه چې پاکستان د پښتنو او بلوچو سره زور زیاتی کوی او افغانستان د دوی د مشروعو هیلو نه ملاتړ کوي. داود خان کسینجر ته وویل چې د گډو دوستانو روغ نیتي به گټور وي چې دواړه هېوادونه د خبرو مېز ته وهڅوي. کسینجر په دې خوښ شو چې افغانستان له پاکستان سره د خبرو له لارې د کشالي هوارول غواړي. ده زیاته کړه چې د افغانستان او پاکستان تر منځ دوستي به د نړۍ په دغې مهې سیه کې د سولې او ثبات سره مرسته وکړي او د امریکا حکومت به یې هرکلی وکړي. ۶۴۴ د صمد غوث په وینا د امریکا مرسته که څه هم ډېره نه وه، خو د هغې د سره نیول کېدل د افغان مشرانو د خوښۍ لامل شو. امریکې تر ۱۹۷۸ کال پورې نږدې ۵۳۳ میلیونه ډالر ولگول چې له هغو نه ۷۱ سلنه یې وریا مرسته وه. ۶۴۵

په ۱۹۷۸ کال کې کسينجر د افغانستان په بلنه بيا کابل ته سفر وکړ. ده د افغانستان او پاکستان تر منځ د اړيکو د ښه کولو نه خوښي څرگنده کړه. په کډه اعلاميه کې د امريکې علاقه تاييد شوه چې د افغانستان په اقتصادي او ټولنيزه پرمختيا کې ونډه اخلي. امريکې خپل دوست شتمن عربي هېوادونه په ټينگه وهڅول چې د افغانستان سره د پرمختيايي پروژو په پلي کولو کې مرسته وکړي. کسينجر د امريکې د ولسمشر بلنه هم محمد داود ته وسپارله چې امريکې ته په سفر لاړ شي.

په دې توگه محمد داود د خپلې صدراعظمۍ پر مهال افغانستان ډېر زيات شوروي اتحاد ته نږدې کړی و، د جمهوريت د دورې په وروستيو او په ځانگړې توگه شوروي اتحاد ته د خپل وروستي سفر وروسته په دې لټه کې شو چې د هغه نه يې ليرې کړي پرته له دې چې د ناپېلتوب سياست پرېږدي. کاکړ وايي چې محمد داود د جمهوريت په دوره کې په دې پيل وکړ چې افغانستان د پاکستان، ايران، عربي او لويديځو هېوادونو پر لور بوځي او د هغو په روغ نيتيو او ټولې مرستو سره هېواد ودان کړي. دی زياتوي چې د محمد داود دغه متوازن بانديني سياست چې د افغانستان له پاره د هغه د جغرافيايي موقعيت له امله تر هر بل سياست نه غوره دی، د ثور کودتا نابريالی کړ؛ لکه چې محمد داود د صدراعظم موسی شفيق سياست په خپله کودتا سره نابريالی کړی و.

کاکړ وايي چې د اوه کلن پلان، مرسته يقيني نه وه؛ لکه د ايران. بله دا چې د پلان د پلي کولو له پاره پوره مسلکي کدرونه نه وو، او له دې امله ځينې هېوادونه؛ لکه امريکا د افغانانو په سروې قانع نه وو.

د محمد داود تېروتنې

کاکړ د محمد داود تېروتنو ته داسې کتنه کوي او وايي چې د محمد داود لومړی تېروتنه دا وه چې ده پاچايي قانوني نظام په کودتا سره نسکور کړ هغه هم په زياته اندازه د ورو چي افسرانو په مرسته. په دغه کودتا سره ده نورو ته وښودله چې په کودتا سره دولتي واک نيولی شي.

دوهمه تېروتنه يې دا وه چې دی په کودتا سره د پرچم گوندکي ته په حيثيت قايل شو او د هغه افسران او ملکي غړي يې په خپلې کابينې کې وزيران کړل. ده وروسته د خپلو لومړيو ژمنو نه مخ وگرز او نو دواړه گوندکي يې مخالف شول.

د داود دريمه تېروتنه دا وه چې د خپلې صدراعظمۍ د دورې پر خلاف يې دا ځل د يو څو وزيرانو پرته ناوړه او بې تجربې وزيران په ځان راټول کړل. ده په پوځ کې شل جنرالان

تقاعد کړل، ده د ميوندوال د کودتا په تور پوځ له دغسې افسرانو نه خالي کړ چې په اصل کې ملتپال، وطنپال او د ده طبيعي ملګري وو.

څلورمه خبره دا وه چې د داود د ناکامۍ لامل دی په خپله و چې د ثور د کودتا په وخت کې ۶۸ کلن و چې په بېرنيو حالاتو کې ډينامیک کېدای نه شو. مرستيال يې داسې څوک و چې د هغه ځای يې نيولی نه شو. برسېره پردې د امنيتي وزارتونو سروالان يې د کار سړي نه وو. رسولي په خپله د ولسمشر کېدو فکر کاوه. د ثور کودتا څومره چې د کودتاچيانو د ټينګې ارادې او غوڅ عمل پایله وه، په هماغه اندازه د ولسمشر د امنيتي لويانو د ناورتيا نتيجه وه. ۶۴۶.

کاکړ او د پاچا محمد ظاهر او محمد داود پرتلنه

د کاکړ په وينا محمد داود په ۱۹۱۰ کال کې او محمد ظاهر په ۱۹۱۴ کې پيدا شوی و، خو دوي د شخصيت له نظر نه ډېر توپير درلود، پاچا دموکرات، لبرال، او د واکمنۍ چندان لېوال نه و. د اعدام مخالف و، په داسې حال کې چې محمد داود زورواک، د واکمنۍ لېوال، نيشنلسټ، او د اعدام پلوی و. دواړو د سيکولر نظام او د هيواد عصري کېدل غوښتل. محمد داود د صدارت په لسو کلونو، او پاچا د دموکراسۍ په لسيزه کې وځلېد. خو محمد داود چې د صدارت په وخت کې وځلېد، د پاچا او د خپل ورور د همکارۍ له امله هم و. البته دی د انکشافی پروجو نوښتګر او مخکښ و. په هر حال ده د صدارت په دوره کې د انکشافی او عصري کولو حرکتونه د پلان شوي اقتصاد په چوکاټ کې پر مخ بوتل. دوی دواړه د وطن صادق خدمتګاران وو، او هيڅ يوه يې ناوره استفاده نه ده کړې، او محمد داؤد له خپل شخصي ملکيت نه د هيواد د ابادۍ له پاره ډېره استفاده کړې ده.

خو محمد داود له اول نه زورواک و، او په سياست او اداره کې يې له شدت او زور نه کار اخيستی، په تېره په اولو وختو کې چې د هغه له امله په "سردار ديوانه" هم يادېده. د صدارت په وخت کې يې د ارواښاد شاه محمود د صدارت نوې ډموکراسي خپه کړه، چې خلک ورته ډېر هيله من شوي وو، او په ولس مشرۍ کې يې د پاچا محمد ظاهر د وخت د ازادۍ او دموکراسۍ مخه ونيوله. په دې ډول محمد داؤد په افغانستان کې د فردي ازادۍ او دموکراسۍ د غورځنګ خپه کوونکی او د ازاد مارکيټي اقتصاد مخالف ګڼل کېدلی شي. ده وروسته د سرطان په کودتا دغسې قانوني نظام نسکور کړ، چې لويې جرګې منلی، او سراسري ازادو انتخاباتو تائيد کړی و، او له امله يې ازادې او ډموکراسي په افغانستان کې

په بېساري ډول ځای نيولی و. په دغې دورې کې حکومت تر هر وخت نه ډېر د قانون له مخې چلېده او ښځې او نارينه په بېساري ډول ازاد وو. دغه ټول انکشافات هغه مهال شوني شول، چې په افغانستان کې د لومړي ځل له پاره د قانون له مخې سلطنت واکمني پاچايي کورنۍ ته، او حکومت اولس ته ځانگړی شو. دا په افغانستان کې په پاچايي نظام کې د دموکراسۍ د يوې نوي پروسې پيل و، چې د وخت په تېرېدولو سره پياوړې کېده. رسمي چارواکي هم تر بل هر وخت ډېر د لياقت او تخصص له مخې حکومتي مقامونو ته رسېدل، او دغه کار په ټولې هم ښه اغېز شينده. ډېره مهمه دا هم ده، چې په دغه موده کې فرد د سياست له مخې بندي شوی نه دی، او بندي کېدل يوازې د محکمې په حکم و. هيڅ څوک اعدام شوي نه دي. پاچا محمد ظاهر د اعدام مخالف و. د ده د انسان دوستۍ حس له دغې پېښې نه واضح دی: پاچا يوه ورځ يوازې، د خپلې ملکې او ډېرېر په ملگرتوب له کابل نه پلغمري ته لاړ او هلته يې د يوه مقتول له پلار نه وغوښتل، چې د خپل زوی قاتل، چې هغه د ده وراره و، او د محکمې په حکم په اعدام محکوم شوی و، وبخښي. هغه په افتخار سره د پاچا خبره ومنله. دغه پېښه ډېرو ته د يقين وړ نه ښکاري، خو دغه قصه ما [کاکړ] ته دغسې يوه کس کړې، چې زه پرې باور لرم.

د دموکراسۍ د لسيزې په دغو انکشافاتو سره افغانستان په سيمه او نړۍ کې نوم وايست. په دغه دوره کې افغانستان د لوېديځې نړۍ و نارينه او ښځو گرځندويانو ته دغسې يو هيواد شوی و، چې هغوی په ډاډينه سره په ټول افغانستان کې ازاد گرځېدلی، او ځانله په خپلو خيمو کې اوسېدلی شول. هغومره ډېر گرځندويان چې په دغې دورې کې افغانستان ته راغلل، شايد هيڅ وخت په دغه ډېر شمېر نه وي راغلي. د هغو په راتگ سره د گرځندوی صنعت (هوټلونه، تم ځايونه، د لرغونو سامانونو او اثارو هټې) په بېساري ډول سره وده وکړه، او په ټوله کې افغان اقتصاد يې پياوړی کړ. نو ويل کېدلی شي چې د قانوني پاچايي او د دموکراسي لسيزه د معاصر افغانستان په تاريخ کې يوه ځلانده دوره وه، خو د واک لېوال، محمد داود دغه ځلانده دوره د "فلاڼي دموکراسي" په نامه، د چپيانو په مرسته په کودتا سره د پای ټکی کېښود. په داسې حال کې چې ده له اتلس کلنۍ نه تر هغه وخت پورې څه کم څلوېښت کاله په ملکي او نظامي لوړو مقامونو کې په پوره اختيار سره واک چلولی و. ده په دې قناعت ونه کړ او کودتا يې وکړه، چې په هغې سره يې په وطن کې يو نوی تخريبي څپرکي پرانيست.

محمد داود په کودتا سره قانوني نظام نسکور او قانوني ژوند او قانوني حکومت يې بې اهميته کړ. ده يو شمېر د سر کسان هم، د ارواښاد محمد هاشم ميوندوال، ارواښاد

مرستيال خان محمد، او ارواښاد ماما زرغون شنواري په گډون، سره له دې چې هغوی د ده په شان نیشنلسټ وو، د پرچميانو په فشار، د محاکمې نه پرته، د کودتا په تور له مينځ نه يووړل، او نور ډېر يې بندي کړل. ده په دغه ډول د سر کسانو اعدام بيا رواج کړ، په داسې حال کې چې د افغان سياست له دغه وحشي عمل نه، د پاچا محمد نادر خان له قتل نه وروسته پاک ساتل شوی و. د کودتا بله پایله دا شوه چې محمد داود په نظامي کودتا سره واک ته د رسېدلو لار وښودله او دی په افغانستان کې د عصري نظامي کودتا مخکښ شو. د کودتا بله پایله دا شوه، چې پوځ په سياست کې دخپل شو، په داسې حال کې چې تر هغه د مخه، د پوهنتون له مظاهرو سره سره، له سياست نه ليرې ساتل شوی و. له هغه وروسته و، چې حفيظ الله امين، چې د خلک د ډموکراتيک گوند د نظامي څانگې آمر و، په دغه فکر شو، چې محمد داؤد کودتا وکړه، مور يې هم کولی شو. له هغه وروسته و، چې ده خپل گوند ته د نظامي افسرانو په جلبولو پيل وکړ. ما په خپل «د ثور کودتا نومي» اثر کې ويلي و، چې هغه د درې سوه نظامي افسرانو په قوت کودتا وکړه، خو وروسته راته معلومه شوه، چې هغه په دغو پنځو کلونو کې څه کم دوه زره ښکته رتبه نظامي افسران گوند ته جلب کړي، او په قوت يې دغومره ډاډه و، چې غوښتل يې د خپل پلان له مخې د زمري په مياشت کې کودتا وکړي، او په هغې د "زمري انقلاب" نوم کېښودې. له هغه نه پرته هم د ولسمشر په نشته توب سره، د ده د نظام دوام په شک کې، او د کورني جگړې شونتيا زياته وه. نو ويل کېدلی شي چې محمد داود، له خپلو ډيرو خدمتونو سره سره په افغانستان کې د نظامي کودتا او د دې اوږدې نارامۍ سر مؤسس دی. په اصل کې د همدغې کودتا او د دغو ناراميو له امله ده چې د افغانستان راتلونکې د انډېښني وړ شوې ده.

محمد داود، چې د خپل ژوند په وروستيو شېبوي کې د خلقي کودتاجيانو له خوا خپل ژوند په خطر کې وليدی، د خپلې کورنۍ د غړو وژنه يې هم جايزه وبلله. د افغانستان په تاريخ کې څه، چې ان د انسان په تاريخ کې به دا يوه بېسارې تراژيډي وي. ښاغلی محمد داود ملکيار چې د محمد داود له کورنۍ سره يې د خېښې ارتباط لاره، او په اړه يې د کره و مالوماتو خاوند دی، وايي چې د ثور د کودتا په ورځ " ... کشته شدن اکثر اعضای خانواده محمد داود خان، بشمول اطفال معصوم به تصميم داود خان و بدست يکي از اعضای خانواده او صورت گرفته است." دا په داسې حال کې چې د محمد داود زامن او لوني د لور او ملي فکر خاوندان وو، او هيڅ يوه يې له خپل ممتاز مقام نه د خان يا کورنۍ له پاره استفاده نه ده کړې. مشر زوی يې، عمرجان لا د دغسې ازاد قضاوت خاوند و، چې په

اخېر کي د خپل تره، ارواښاد محمد نعيم، په شان د خپل پلار د سياست مخالف شوی و. محمد نعيم لا د خپل ورور پر ضد د کودتا په لټه کي و. په هر حال، محمد داود د خپلي کورنۍ د غړو - مېرمنې، لونو (له محترمي درخانۍ نه پرته، چي هغه وخت هغه هلته نه وه) او اوس په سويس کې ژوند کوي) او تور پېکي نه پرته (چي وروسته وفات شوه)، او زامنو (له عمر جان نه پرته، چي هغه تر دوی د مخه په کولۍ لگېدلی او مړ شوی و) د ژوند سلبولو حق نه لاره، او د محمد داود دغه امر د هغو په حق کې ظلم و، هغه هم په دغسي حال کي، چې معلومه نه وه چې کودتاچيان به د هغوي حيثيت او ژوند ته خطر پېښ کړي، لکه د ده د کورنۍ د يو څو پاتي کسانو، او د هغه د لونو - درخانۍ او تورپېکي مزاحم نه شول.

شلم څپرکي

کاکړ او د ثور کودتا

کاکړ د خلقي دورې په اړه که څه هم هغه لنډه خو ډېره پېښناکه وه او ټولنه يې په ژوره توګه اغېزمنه کړه، يو پند کتاب چې «د ثور کودتا او د هغې ژورې پايلې» نومېږي کښلی چې اوه څپرکي لري. کاکړ په پوره زغم د اسنادو، مدارکو، خاطرو، مرکو او پښتنو ګروپونو له لارې د رښتيا موندنې له پاره ډېر هاند او کوشښ کړی چې د دې دورې يو عمومي او مستند سياسي تاريخ وکارې. د ده په وينا دغه ليکنه په دغې لار کې لومړی کوشښ دی. دی دا هم وايي چې د هم مهال پېښو تاريخ کښل ګران دي ځکه چې د يوې خوا د پېښو په اړه مالومات نيمګړي وي. نوي مالومات وروسته يو وخت او بل وخت عام کيږي، نو تاريخ کښل په اصل کې يوه پروسه ده، چې هېڅ وخت پوره نه وي. د بلې خوا د هم مهال پېښو ځانګړتيا دا ده چې دوره يې تاريخي شوې نه وي او په اړه يې ليکنه احساسات پارولی شي. له دې کبله تاريخ پوه دې هرو مرو د تاريخ معيارونه په کره توګه په پام کې ونيسي او ليکنه يې د پېښو، سياستونو او نظرونو افاقي بيان وي او خپل نظرونه په کې ځای نه کړي.

کاکړ دا هم وايي چې د دغې دورې په ځينو اړخونو باندې ليکې شوې چې هغه د نظام د پلويانو يا مخالفانو دي، يو اړخېزې او د ځانګړي غرض دپاره دي. اوس د دغې دورې په اړه په انګرېزي او نورو ژبو کې باندېنيو د روسي جنرالانو په ګډون ليکې کړې دي. برسېره پر دې يو شمېر پټ اسناد هم خپاره شول چې د دې دورې د روښانولو دپاره مرسته کوي. کاکړ دا پند اثر د دغو ليکنو او هم د هغه يادښتونو نه، چې ده د خپلې مشاهدو، د پېښو د ګډونوالو او نورو افغانانو نه د پوښتنو او ګروپونوله لارې ترلاسه کړي دي، کښلی دی. زما په اند دغه مالومات چې د پېښو ګډونوالو زموږ د ملګرو په ګډون محترم کاکړ ته ورکړي ځينې يې نه يوازې کره نه دي بلکې ان ناسم دي. خو کاکړ هڅه کړې ده چې د تاريخ ليکني د علمي ميتود په رڼا کې په خپله ليکنه کې د بيلو بيلو اړخونو نظريات پرته له دې چې خپل نظر په کې ځای کړي بيان کړي دي. ما خپل نظر د دغې دورې په اړه په خپل کتاب «د ثور پاڅون، د کې چې بې دسيسې او شوروي يرغل» کې څرګند کړی چې سريزه په خپله محترم کاکړ صاحب پرې ليکلې او په دغه کتاب کې يې دومره يادونه کړې چې «ده [اقبال

وزيري] په ۲۰۰۷ کال کې (د ثور پاڅون، د کې چې بې دسيسې او شوروي يرغل) په نامه يو کتاب هم خپور کړی، چې له هغه نه مې دلته پوره کار اخېستلی دی. څنگه چې په هغه باندې مې يوه ليکنه کړې، د هغه په اړه دلته نه غږېږم. دغومره وایم چې دا د خلقي دورې په اړه يو دقيق او مهم اثر دی. «۶۴۷ همدارنگه کاکړ د «د ثور پاڅون، د کې چې بې دسيسې او شوروي يرغل» په اړه ليکلې مشوره راکړې وه چې د کتاب په بڼه يې د لوستونکو په واک کې ورکړم. دلته د کاکړ هغه ليکنه هم لوستونکو ته وړاندې کوم:

«د نومبر ۲۹، ۲۰۰۶»

کانکورډ، کليفورنيا

ډېر محترم وزيري وروره

ليکنه مې دې تر پايه ولوستله. حجم يې ډېر نه دی، خو موضوع گانې يې ډېرې مهې دي، او هغه د دغسې معلوماتو او ستا د شخصي تجربو پر بنسټ ليکل شوی دی، چې په بلې ليکنې کې موندل کېدلی نه شي. غټې موضوع گانې يې د خلق دموکراتيک گوند داخلي انکشافات او په خاص ډول د هغه د بيلو ډلگيو خپل مينځي رقابتونه او شخړې، د ثور د کودتا بهير، او د خلق د حکومت په برابر کې د شوروي اتحاد دسيسه ييز چلند دی د دې د پاره چې د هغه پر ځای پرچمي حکومت په واک کړي. د ليکنې دغه برخه دې د شوروي د حکومت ماهيت هم په حيرانوونکي ډول په ډاگه کوي او ښيي چې چلوونکو يې څنگه د ملگرتوب په پلمه دسيسې کولې، او په هغو کې خپلې کټې لتولې.

د ليکنې بل غټ اهميت په دې کې دی چې په هغه کې بيان شوې پېښې د افغانستان د دغې لنډې دورې د سياسي تاريخ زری جوړوي. دا چې هغه متوازنه ده، انتقادي ده، او افراطي ده د هغې ارزښت يې لا زيات کړی دی. ژبه يې هم څرگنده، رڼه، معياري او د پام وړ ده. نو د هغې خپرول به د کتاب په بڼه هم د محتوا او هم د افادې له نظره په پښتو او انگرېزي کې ډېره کتوره وي. په دې اړه په ملي او جهاني سطح کې ډېرې خپرونې شوې، خو هغه ټولې لږ و ډېر پارټيزاني دي او په دې ډول د افغانستان سياسي تاريخ په دغې دورې کې مسخ شوی دی. ستا دغه ليکنه به چې د کتاب په بڼه خپره شي، د ليکوالو او مولفانو د پاره به د باور وړ سرچينه وي. په دغه حال کې يقين دی چې تا به د يوه استاد افغان په حيث د دغې لانجمنې دورې د سياسي تاريخ په روښانه کولو سره غټ او د قدر وړ خدمت کړی وي.

په درنښت

محمد حسن کاکړ»

څنگه چې کاکړ د ثور انقلاب کودتا بولي نو زه دلته د ده د کتاب «د ثور کودتا او د هغې ژورې پایلې» له مخې د هغه نظريات وړاندې کوم نو ځکه د کودتا کلیمه کاروم.

د ثور کودتا

د کاکړ په وینا د افغانستان سياسي تاريخ ډېر ډینامیک، ډېر وړانوونکی او لږ ودانوونکی دی. دا به ځکه دغسې وي چې د افغانانو په تېره د پښتنو کلتور په تشدد او فزیکي زور ولاړ دی. دغه کلتور چې د پېړيو په بهیر کې جوړ شوی دی، رښې یې له جگړو او وژنو نه خړوبې شوې دي.

له ویدي دورې راهیسې دغه هېواد د خونړيو جنګونو ډکر شوی دی، دلته یوازې زردشتي دین او بودیزم په تبلیغ سره خپاره شوي دي، په نورو ټولو دورو کې جنګونه شوي، چې په بهیر کې یې وړانې ډېرې او ودانې لږ شوې دي. هغه لږې ودانې هم د سمندري لارو نه د مخه په ځینو سیمو کې شوې وه، د باندینيو یرغلګرو له خوا ونړول شوه. د دغه وطن خلکو د ویدي دورې نه تر دوو پېړيو نه د مخه پورې په ځانګړې توګه په شمالي هند باندې یرغلونه کړي، له هغې خوا نه هم له پخوا نه یو وخت بل وخت پر دوی باندې یرغلونه شوي دي. په معاصر مهال کې افغانستان یوازینی هېواد دی چې د نړۍ درې زبرځواکونو یو وخت بل وخت پرې دانګلي دي. په دې توګه د دغې خاورې خلک له یوې خوا په خپل ډېر اوږده تاریخ کې له باندینيو یرغلګرو سره مخ شوي، چې د هغو په وړاندې له خپل وطن، ارزښتونو نه دفاع وکړي او د بلې خوا د خپل منځي جگړو، ترپورې او ګوندیمارۍ په سبب دغه جنګي کلتور خپل کړی دی.

دی زیاتوي چې افغانان اوس هم د واک درناوی کوي، د رسمي واک خاوند لا ورته ستر، هوښیار او د درناوي وړ ښکاري. ځکه په دوی کې دا میل پیاوړی دی، چې په خپله هم واک ترلاسه کړي، که په وچ فزیکي زور سره وي. دغه میل په دوی کې دومره پیاوړی دی، چې په واقعي کولو په لار کې یې هغه ارزښتونه هم تر پښو لاندې کوي، چې پرې عقیده لري او د دین، اخلاق، قانون او جرګو پروا نه کوي او ان خپل خپلوان او نږدې ملګري هم له منځه وړي.

د واک د کټلو میل به له دې امله هم پیاوړی وي چې په افغانانو کې د دولت د سروال د ځای ناستي موضوع حل شوې نه ده. په معاصر افغانستان کې هر وخت چې د دولت مشر د میروېس نیکه او احمدشاه بابا نه نیولې چې د منځه تللي، د هغه د ځای ناستي په سر جنګونه شوي او ټولنه او خلک ورسره نارام شوي دي. د واکمنو کورنیو مدعیانو له

پخوا نه د واک په سر جنګونه کول، خو د ملي دولت په وروستي وخت کې نظامي افسرانو په کودتاګانو لاس پورې کړ.

کاکړ وايي چې «په افغانستان کې محمد داود دغسې سياسي نظام په کودتا سره نسکور کړ چې د لوپې جرګې او اساسي قانون له مخې جوړ شوی، وطن ارام او د پرمختګ په حال او په نړۍ کې د اعتبار او حيثيت خاوند و، که دی د دولتي واک لېوال نه وای، کودتا ته به يې زړه نه وای کړی» ۶۴۸ د ده د کودتا نه وروسته ملګرو يې د بې قانونی او خپل سړی په وخت کې ډېر نوميالي کسان او نور مخالفان او سيالان د منځه يوړل.

خو د واک نورو لېوالو د محمد داود نظام د ثور په کودتا سره نسکور کړ او دغو کودچيانو بيا د خپلې لنډې واکمنۍ په بهير کې د سرطان د کودچيانو نه بيخي ډېرې وژنې، بندي کړی، کړونې او پارونې وکړې چې په هغې سره يې ټولنه په ژور ډول کړکېچنه کړه.

د مير اکبر خيبر ترور

د کاکړ په وينا په افغانستان کې سياسي ترور نوی دود شوی و. ترور په اصل کې د بڼې او کيڼ لاسو افراطي سياسي ګوندونو کار و. د خيبر د ترور نه د مخه د محمد داود د حکومت د پلان وزير علي احمد خرم د مرجان نومي له خوا د هغه د رسمي دفتر نه د توپنګې په زور وويستل شو او په بازار کې په رڼا ورځ ترور يا ووژل شو. تر هغه د مخه په پاچايي رژيم کې د کښې د جريدې چلوونکي منهاج الدين کښې په گذرګاه کې په خپل کور کې د يوه ثقه راوي په وينا د يوه غير ګوندي چپي انقلابي له خوا ترور شوی و. په کابل کې بل غټ ترور د هوايي پيلوټ انعام الحق کران و او همدارنګه يو شمېر ګوندي غړي د هېواد په ډېرو برخو کې هم ترور شوي وو.

مير اکبر خيبر د ۱۳۵۷ کال د وري د مياشتې په ۲۸مه ماښام د خپل ملګري عبدالقدوس غوربندي سره چکر وهلو ته ووت. هغه وخت چې غوربندي له خيبر نه بيل شو د دولتي مطبوعې شمالي خوا سرک سره د يوه روان جيب نه ګولی پرې ووارېدې او ځای په ځای مړ شو.

د خيبر د ترور په سبا د ګوند په زرګونه غړي د هېواد د ښارونو نه کابل ته ورسېدل. د خيبر جنازه د اټکل شلو زرو کسانو په ګډون د زاره مکرويان نه د پل خشتي جومات له لارې د شهدای صالحين هديرې ته يووړل شوه او په لاره کې د امريکې سفارت مخې ته لکه چې د کمونستانو په منځ کې دود و، د امپرياليزم پرضد شعارونه واورېدل شول. په هديره کې څو ګوندي لويانو ويناوې وکړې او داسې يې وښوول چې ګواکې دغه ترور حکومت او

ارتجاعی قوتونو په لمسون شوی وي.

کاکړ وايي چې د مير اکبر قاتل چا يو څوک او چا بل څوک ښوولی دی. د کورنيو چارو وزير نوراحمد نور د راپور له مخې ډاکټر کریم چې په کریم کپ مشهور و او د هغه اوه تنه ملگري يې په همدغه تور ونيول او بې له محکمې نه زندی شول. کریم کپ په کابل کې د اسلامي گوند د عملياتي ډلې مشر و. پرچميان چې وروسته په واک شول د حفيظ الله امين لاس يې په دغه وژنه کې گډ وباله. دی زياتوي: «خو دغه وژنه د پرچم د گوندکي يوه خپل منځي موضوع وه. خيبر په اصل کې د خپل سياسي نظر او د پرچم په گوند کې د ننه د مشرتوب د سيالی قرباني شوی دی.» ۶۴۹ خيبر د کارمل پرعکس په دې فکر نه و چې محمد داود دې په کودتا سره نسکور شي. دغه اختلاف و چې مير اکبر ته د کارمل له خوا د وژنې گواښ وشو. په دې اړه د غوربندي په وړاندې خيبر نوراحمد نور ته وويل: «ستاسو کارمل ما ته د مرگ گواښ کړی دی. هغه ته زما له خوا وواياست چې زه د مرگ څخه نه بېرېرم... هغه علاقه لري د مافيا د دريمې درجې باند د مشر په رول کې ځان وازموي.» ۶۵۰

د کارمل او خيبر تر منځ اختلاف پر دې هم و چې خيبر ناسيونالېست گوندي او کارمل انټر ناسيونالېست گوندي و په دې مانا چې کارمل واک ته رسېدل د شورويانو په مرسته او مير اکبر خيبر د افغانانو له لارې غوښتل.

د گوند يووالی چې د شورويانو په فشار ترسره شو هسې په نامه و. بېرک کارمل خپل فراکسيون جلا ساتلو او مير اکبر خيبر د فراکسيون مخالف و. له دې کبله د ده په مشرۍ د بېرک نه ناراضي پرچميانو کې دا ميل پيدا شوی و چې د تره کي خوا ته واوري. غوربندي د پرچميانو د هغې غونډې په اړه چې د بېرک په مشرۍ د کریم زاده په کور کې جوړه شوې وه داسې ليکي: «موږ هم کنېهناسټو او منتظر شوو. خيبر هم څو شپې وروسته راورسېد. وروستی تن کارمل و چې کور ته راننوت. د نوموړي په رارسېدو سره ډاکټرې اناهيتا ټول کسان د هغه ميز شاوخوا ته راوبلل چې د سالون په منځ کې پروت و. تر اوسه د ميز په چار چاپېره لا نه وو راغونډ شوي چې په حافظه کې مې د شپاړس کسيزو غونډو جوړېدل په ياد راغلل چې کارمل د لومړي انشعاب د بيلامې په پلمه کوڼې جوړولې... ما وويل تر اوسه مو د قلم رنگ وچ شوی نه دی چې بيا هم فراکسيون بازي صورت نيسي او بېله غونډه داېرېږي.» ۶۵۱ غوربندي د پنجشېري له قوله ليکي: «د بارک شفيعی او سليمان لايق په ويلو په همغو ورځو کې بېرک کارمل خيبر ته د نور احمد نور پدريعه خبر ورکړی و چې د خپل انحلال غوښتونکي مښي څخه د تېر شي. (پنجشېري، ۳ مخ)» ۶۵۲ اعطا محمد شېرزی ليکي چې د يووالي د سند د لاسليک نه وروسته بېرک کارمل

د مير اکبر خيبر نه پرته د خپلې مرکزي کميټې غړي د نوراحمد نور کور ته وبلل او هلته يې ورته توصيه وکړه چې د گوند د يووالي سره سره مور بايد په خپل منځ کې تماس ولرو.

غوربندي زياتوي چې څه موده وروسته سرور يورش زما کورته راغی او وويل: «د دې سره سره چې له دوې مياشتې څخه زيات وخت تېرېږي تر اوسه دوهم مرکز د پخوا په څېر په نورماله بڼه خپل کار ته دوام ورکوي. د کنفرانس د پرېکړو په اساس خو نورمحمد تره کي د گوند عمومي منشي دی. پل سرخ د موازي مرکز په څېر خلاص دی او بېرک کارمل نفاق اچوونکې لارښوونې ورکوي.» ۶۵۳

کاکړ وايي چې په دې ترتيب سره دا غونډه پته پاتې نه شوه. عبدالقدوس غوربندي، نجيب الله او سرور يورش خيبر په دې خبر کړ او خيبر د دوی نه ليکلي راپورونه ترلاسه کړل، چې د گوند عمومي منشي نورمحمد تره کي پرې خبر کړي. تره کي په تليفون سره په دې اړه په نهو بجو له خيبر سره په گډه د پرېکړې کولو دپاره وخت وټاکه خو خيبر د همدې شپې په ماښام ووژل شو. ۶۵۴ کاکړ وايي چې دا روايت به رښتيا وي چې وايي: «نوراحمد او امتياز حسن د ۱۹۷۸ کال د اپرېل په ۱۷ مه ماښام مهال له يوه روان جيب نه په مير اکبر باندې گولی ووارولې او وېي واژه. نوراحمد نور له اول نه تر پايه پورې د کارمل ټينگ ملگري او امتياز حسن د کارمل شخصي ساتونکي و چې بيا د معدنونو د وزارت مرستيال وټاکل شو.» ۶۵۵

زما ماما عبدالرشيد وزيرې د وطن گوند د مرکزي کميټې غړي او د ډاکټر نجيب الله باوري کس پاسنی روايت په غوڅ ډول په لږ توپير سره تاييد کړ هغه دا چې د جيب نه په مير اکبر خيبر باندې گولی امتياز حسن د کارمل شخصي ساتونکي ووارولې وې. عبدالرشيد وزيرې د نجيب الله په واکمنۍ کې د مرکزي کميټې په اپارات کې کار کاوه.

کاکړ وايي چې د مير اکبر خيبر د جنازې چارې او په گور باندې يې د لويانو اخطار د حکومت له پاره يو ډول ننګونه وه. ولسمشر محمد داود د عدلې وزير او لوی څارنوال وفي الله سمیعی ته لارښوونه وکړه، چې مالومه کړي چې ايا هغه کسان چې د خيبر په جنازه کې يې ويناوې کړې دي، د جزا د قانون له مخې محکمه کېدای شي که نه؟ نوموړي داود خان ته د هو! مشوره ورکړې وه. صمد غوث وايي چې «د لويې څارنوالۍ په دفتر کې د راډيو کسټ د فيټې څخه په ښکاره ډول د بيانيو د اورېدو وروسته، حکومت پرېکړه وکړه چې دا. خ. د. گ مشران د محکمې له پاره حاضر کړي.» ۶۵۶

کاکړ د ژورنالست ستانيزي د ليکنې «سهل انگازی محمد داود خان و کودتای ثور» پر بنسټ دا هم وايي چې محمد داود تر دغه وخته پورې په دې اړه د خپلو ځينو مشاورينو

خبرې نه منلې چې د خلق ډموکراتيک گوند لويان د قدرت نيولو له پاره تياری نيسي. د هغو محوري ټکي دا و چې د خلق ډموکراتيک گوند په پوځ کې نفوذ او د حکومت پر ضد د عمل کولو نيت لري، خو د ملي دفاع وزير غلام حيدر رسولي ولسمشر محمد داود ته ډاډ ورکوي چې پوځ په ټينگه د هغه او حکومت پر خوا ولاړ دی. د دغه نظر له مخې به وي چې حکومت په سر کې د گوند څرگند ملکي لويان ونيول او بيا يې د نظامي گونديانو د نيولو امر وکړ، چې عملي نه شو. ۶۵۷

کاکړ زياتوي چې د ثور په پنځمه شپه اتو عملياتي ډلو د افغانستان د خلق ډموکراتيک گوند د لويانو په نيولو پيل وکړ او دغه موضوع يې د عبدالغني ساپي د ليکنې «شپاهي کابل» چې لا چاپ شوې نه وه، له مخې کښلې ده. د څارونديوانو دغو عملياتي ډلو نورمحمد تره کي، بېرک کارمل، ډاکټر شاه ولي، عبدالحکيم شرعي جوزجاني، دستکبر پنجشېري، سليمان لايق، بارک شفيعي او ضمير ساپي ونيول، چې وروستی په غلطه نيول شوی و. اتم عملياتي گروپ، چې قوماندان يې عبدالغني ساپي عمرزی و، د شپې ناوخته د حفيظ الله امين په نيولو وگومارل شو. امين چې د څارونديوانو د ورتگ نه خبر شو سمدلاسه يې د نظامي تشکيل لست خپلې مېرمنې پتمنې ته ورکړ، چې د پوليسو لاس ته ورنه شي. امين د کور د لتولو په جريان کې له قوماندان غني نه دوه غوښتنې وکړې: يوه دا چې پوليسان د هغې کوټې ته نه ننوزي چې ښځې او ماشومان په کې ويده دي. بله دا چې دی د همدغه اوس بندي خانې ته بو نه تلل شي، بلکې سبا په اتو بجو دې حاضر کړل شي. قوماندان غني ورته وويل چې د تاسو لومړی غوښتنه د خپل صلاحيت له مخې په دې شرط منم چې د تاسو يا د تاسو د زوی سره په پوره پام سره چې ستاسو ماشومان هم وپش نه شي سر وربکاره کړم. امين دغه تجويز په خوښۍ سره ومانه او قوماندان غني د وره نه د خوب کوټه وليدله. د امين د دوهمې غوښتنې په اړه يې د مخايرې د الې په وسيله د امنيت له لوی قوماندان نه هدايت په داسې ډول وغوښت چې د هغه اجازه يې ترلاسه کړه. غني بيا امين ته ويلي چې دواړه غوښتنې دې ومنل شوې.

کاکړ وايي چې د گوندي لويانو د بندي کېدو وروسته د خلق ډموکراتيک گوند دپاره سياست د مرگ يا ژوند سوال شوی و، په دې ډول چې يا غوڅ عمل وکړي يا کور ته راغلی اجل ومي. امين لومړی تجويز غوره کړ. امين د خپل زوی عبدالرحمن له لارې د تره کي د بندي کولو خبر ترلاسه کړ. په دغه شېبه کې د امين او د هغه د مېرمنې يو خپلوان چې سرمعلم و او عبدالغفور نومېده د امين کور ته راځي. امين نوموړی د کابل ښاروالی ته لېږي چې د هغې ښاروالی يو مامور فقير محمد فقير ته ووايي چې په بیره خان د امين کور ته

ورسوي. په دې توګه لومړی ارتباطي غړی فقير محمد فقير و چې د امين کور ته ورسېد او امين په ليکلې توګه د انقلاب قوماندنه ورکړه چې په چټکۍ سره يې انجنر ظريف، خيال محمد کتوازي، انجنر صالح محمد پيروز، سيد محمد کلابزوی ته ورسوي. امين په ټول افغانستان کې ۲۲ تنه خلقي افسران د قوماندانانو په توګه غوره کړل چې په هغو کې جګړن محمد اسلم وطنجار د ټولو ځمکنيو قواوو د قوماندان او ډګروال عبدالقادر د هوايي ځواکونو د قوماندان په توګه وټاکل. کاکړ زياتوي هغسې، چې امين په لږ وخت کې پلان وايست داسې هم روابطو غړو هغه په حيرانوونکي ګرځيدتوب خلقي افسرانو ته ورساوه او خپله دنده يې په بري ترسره کړه.

کاکړ وايي چې د ۱۹۵۷ کال د ثور کودتا د څرخي پله د څلورمې زغره والي قوې نه پيل شوه. د سهار نږدې لس بجې وې چې ټانکونه د ښار په لور وخوځېدل او نږدې يولس بجې وې چې د دفاع په وزارت ډزې وشوې. د دفاع وزير رسولي او لوی درستيز عبدالعزيز په قرغه کې اتې فرقي ته لاړل، چې په حرکت يې راوړل. رسولي او لوی درستيز د ناهيلۍ په حال کې فرقه پرېښوده او په سختۍ سره يې ځانونه د تاج بېګ غونډۍ ته ورسول او هلته د درستيزوال تورنجنرال عبدالعلي وردګ سره يوځای شول. په دې وخت کې د مهتاب قلعه نه ورباندې د توپچي ډزې وشوې او دوی درې واړه د تاج بېګ مانۍ پرېښوده او په چاردهي کې د عبدالمجيد د دلکشا د مانۍ باغبان باشي کور ته چې د رسولي دوست و، پناه يووړه، خو د هغه زوی کودتا کوونکي پرې خبر کړل. دوی درې واړه ونيول شول او د څرخي پله په پولیکون کې يې زندۍ کړل. په دې توګه د دوی په زندۍ کولو سره د پوځ د سوق او ادارې مرکز فلج شو.

اسلم وطنجار ډله ډله ټانکونه، زره پوښونه او جنګي ماشينونه د حکومت د پوځي قطعو د حرکت شنډولو له پاره ټاکلي وو، هغه قطار ټانکونه، چې د بالاحصار د کوماندو د قطعې د حرکت د شنډولو له پاره مامور شوي وو، هغه يې کلابند او بې وسلې کړه. نورو ټانکونو د خواجه رواش هوايي ډګر، د افغانستان راډيو، د ښار لويو څلور لارو، د دهمزنګ بنديتون، د کورنيو چارو وزارت، د کابل ولايت بنديتون مخې ته ځايونه ونيول.

ولسمشر محمد داود په ارګ کې د وزيرانو ځانګړې غونډه رابللې وه چې د نورو موضوعگانو په څنګ کې په ګوندي بنديانو بحث کېده. کله چې د دفاع وزارت باندې ډزې پيل شوې د جمهوري ګارډ نه د ګارډ قوماندان جګړن صاحب جان ساتنه کوله. محمد داود په دغه وخت کې لارښوونه وکړه چې د کورنۍ غړي يې چې د ښار په هره برخه کې وي، ارګ ته راوړل شي، چې همدغسې وشول. محمد داود، ورور يې محمد نعيم، د دوی د

کورنۍ غړي، سيد عبداللله او قدیر نورستاني د گلخانې ماڼۍ يوې کوټې ته ننوتل. خو کله چې ارگ د هوا نه د بمباريو لاندې راغی پاڼه د کودتاچيانو په کټه واوښته.

په ارگ باندې جوړه جوړه الوتکو د هوا نه گوزارونه کول او حيرانوونکي پيکونه يې وهل. «په کابل کې ويل کېده، چې د دغو الوتکو پيلوتان شورويان وو او کودتا د شورويانو په دستور او همکارۍ شوې ده. ځينو ليکوالو همدغسې ويلي دي، خو دا هسې او زې دي.» ۶۵۸ محمد نظير کبير سراج، چې نظامي متخصص او د اعتبار وړ مولف دی ليکي چې «ټولې الوتکې او چورلکې د افغان پيلوتانو له خوا سوق او اداره کېدې.» ۶۵۹ دغو الوتکو جمهوري گارد ارام کړ او د محمد داود کلابندي يې نوره هم ټينگه کړه.

يوه وره ډله ټانکونه او زغرور قوتونه چې د کورنيو چارو د وزارت په نيولو مامور شوي وو د هغه وزارت منسوبين يې بې وسلې کړل. گوندي لويان د بنديتون نه خلاص او افغانستان راډيو ته راوستل شول او هلته امين د ټولو په خوښه له وطنجار نه د کودتا مشري په خپل لاس کې ونيوله. په راډيو کې د افغانستان د وسله وال پوځ د نظامي شورا په نامه اعلاميه لومړی د اسلم وطنجار له خوا په پښتو او بيا د عبدالقادر له خوا په پارسو او ورېدل شوه. د اعلاميې د خپرېدلو وروسته د امين، وطنجار او کټوازي نه پرته خلقي مشران د خواجه رواش د هوايي ډگر مرکز محل چنار ته ولېږدول شول.

د اوومې فرقې د ريشخور نه يوه پلې قوه له ارگ سره د مرستې له پاره راوتلې وه چې د ټانکونو او د الوتکو د کوزارونو له امله شا تگ ته اړه شوه. کاکړ د تاجيار له قوله وايي چې د محمد داود امر چې گارد دې تسليم شي، د سهار په شپږ بجو پلي شو.

تورن امام الدين وايي چې د محمد داود سره د خبرو په مقصد ارگ ته لاړم. «کله چې کوټې ته ننوتم... محمد داود خان ته [مې] پوځي درناوی او عسکري سلام وکړ... د وسله وال پوځ انقلابي شورا ته تسليم شى... په دغه وخت کې په هغې تپانچې چې په لاس کې وه په ما ډز وکړ او زه په لاس ولگېدم او سخت تپي شوم... نور زما د کسانو تر منځ يو پر بل ډزې وشوې چې په پايله کې داود خان ووژل شو.» ۶۶۰ په دې توگه د محمد داود د رژيم په نسکورېدو سره د محمدزيانو واکمني پای ته ورسېده.

د افغانستان لومړی ايډيالوژيک حکومت

کاکړ دغه موضوع د خپل کتاب دوهم څپرکي کې بيان کړې او وايي چې د ثور کودتا د افغانستان په تاريخ کې يو نوی څپرکي پرانېست. د ثور د کودتا په پايله کې داسې افغانان واک ته ورسېدل، «چې زياتره يې ځوانان او د عصري زده کړې خاوندان وو. په عمومي ډول

دوی بیلو قومونو ته منسوب د کلیو خلک وو، نه دې یوې کورنۍ غړي لکه پخوا چې وو. دوی د کمونیزم په پړي سره تړلي او ادعا یې کوله چې خواریکښو خلکو ته یې د خدمت له پاره ملا تړلې ده. «۶۶۱»

لومړی تېروتنه یې دا وه چې دوی د خپلې ایډیالوژۍ له مخې داسې حکومت تنظیم کړ، چې قدرت یې د خپل کوند له لارې ځانونو ته ځانگړی کړ، نورو افغانانو ته یې برخه په کې ور نه کړه.

«خلقیانو وروسته له هغه په حکومت کولو پیل وکړ، چې گوندي لویان یې د ثور په اومه د مازدیگر په شپږو بجو افغانستان راډیو ته ورسول شول. تر دغه وخته دوه دېرش کلن محمد اسلم وطنجار، د ځمکنیو قواو نوی قوماندان د کودتا چارې پرمخ بیولې. راډیو ته د خلقي مشرانو په راتگ سره د خپلو ملگرو په سلا امین د حکومت کولو چارې په لاس کې ونيولې، که څه هم د جمهوري نظام ولسمشر محمد داود په ارگ کې ژوندی و، خو د کودچیانو له خوا کلابند او له حکومتي ارگانونو سره یې اړیکه شلېدلې ده.» «۶۶۲»

دی زیاتوي چې په دغه وخت کې گوندي لویانو په خپل بریالیتوب باور نه درلود نو ځکه یې حکومت د کابل راډیو نه د نظامي شورا په نامه اعلام کړ، نه د خپل کوند په نامه. گوندي لویان د امین، وطنجار او خیال محمد کتوازي نه پرته د هوايي ځواکونو مرکز محل چنار ته لاړل، چې که وضع سرچپه شي په الوتکې کې کوم خوندي ځای ته لاړ شي. له دغه وخت نه امین د ستړیا پرته په حیرانوونکې توگه د پوځ په تنظیمولو، د قوماندانانو په ټاکلو او د امنیت په خوندي کولو کې تېر کړل، پخوانی نظام یې له پښو وغورځاوه او د خپل حکومت د واکمن کولو له پاره یې ډگر هوار کړ. که گوند په داسې وخت کې امین نه لرلی چې هغه ۴۹ کلن تکره روغ ځان درلود زور او د نوښتگر فکر خاوند و چې هغه یې په گوندي لویانو کې بېجورې کړی و، واکمن کېدل به یې په شک کې و. «۶۶۳»

د ثور د میاشتې په لسمه د یکشنبې په ورځ گوندي لویانو د نظامي شورا پر ځای په گوندي حکومت کولو په ښکاره پیل وکړ. کاکړ وايي چې دا گوندي اوږده موده سره بیل او لنډه موده سره یوځای وو. د اتحاد په حال کې هم دوی سره سیالان او لکه بیل گوندونه وو. کاکړ وايي چې د خلقیانو او پرچمیانو د اختلاف لاملونه درې وو. لومړی د دوی د گوند کيو ترکیب و. «خلقیان زیاتره د کلیو او بانډو پښتانه او لږ شتمنو کورنیو ته منسوب وو او پرچمیان زیاتره ښاري غیر پښتانه او شتمنو کورنیو ته منسوب وو، که څه هم په لوړه کړۍ کې یو شمېر پښتنو شتون درلود.» «۶۶۴» دوهم د دوی د شوروي سره اړیکې وې. «زیاتره خلقي لویان نهښنلسټ کمونستان او زیاتره پرچمي لویان انترناسیونالست کمونستان وو.

پرچميان په عمومي ډول تر دې حده انټرناسیونالست او شوروي پال وو، چې افغان هويت، ملي واکمني او حتی وطن ته يې د خپلې ايديالوجۍ په برابر کې اهميت نه ورکاوه. «۶۶۵» دريم د دوی د لويانو او په ځانگړي ډول د کارمل او امين تر منځ اختلافات وو. د دوی اختلاف د مفکورې و، چې ورو ورو يې شخصي او نورې بڼې پيدا کړې. امين په اصل کې نېشنلسټ او کارمل په اصل کې سوويتست و. د سياست په ډگر کې کارمل په شوروي اتحاد او امين په خپل کوند ولاړ وو. په داسې حال کې امين کارمل د پنجابي طاهر پهلوان کړوسى ښوده او ويل يې چې هغه په اصل کې افغان نه بلکې «مطلق يو ايجنټ» دی. د افغانستان د ټولو اساسي قانونو له مخې هر څوک چې د افغانستان تبعیت ولري، افغان دی، خو لکه څنگه چې ليدل شوي دي د مهاجرو په ذوات کې افغانستان ته د رښتینتوب او وفادارۍ احساس ډېر کمزوری دی. ۶۶۶ کارمل د يو شمېر نورو افغانانو په شان له مهاجر نسل نه و، نیکه يې محمد هاشم پر ۱۸۷۹ کال کې له انگرېزي پوځ سره د هندوستان له کشمير نه افغانستان ته راغلی و. ۶۶۷ کارمل چې په ۱۹۵۷ کال کې د کې چې بې ايجنټي منلې وه او په دې فکر و چې افغانستان د شوروي اتحاد په شپاړسم جمهوريت وگرزوي. ۶۶۸ کاکړ وايي چې د غوربندي دغه وينا سمه ده چې «کارمل د گوندي قدرت سرچينه او منشا د گوند د باندې (په شوروي اتحاد کې) پلټله او د هغه د باور د لاسته راوړلو له پاره يې هر ډول هاند نه ډډه نه کوله.» ۶۶۹

د نور محمد تره کي واکمني

کاکړ وايي چې نور محمد تره کي د ثور د مياشتې په لسمه د انقلابي شورا د رييس او صدراعظم په توگه وټاکل شو. سره له دې چې د اقبال وزيرې په فکر خلقيان «...په دغه وخت کې نه د انقلاب په فکر... وو او نه د انقلاب له پاره په ملي او نړيواله کچه شرايط برابر وو. ۶۷۰ ان د شوروي اتحاد حکومت حاضر نه و، چې د تره کي حکومت بې له قيد او شرط نه په رسمي ډول وپېژني. سفير يې پوزانوف نه غوښتل، چې ان له نور محمد تره کي سره وگوري، که څه هم هغه د کودتا په سبا اول صالح محمد پېروز او بيا گل محمد نورزی د همدغه مقصد له پاره وراستولي وو. پوزانوف غوښتل، چې تره کي او ملگري يې په نوي حکومت کې پرچميانو ته برابره برخه ورکړي. شوروي اتحاد بيا زر د کې چې بې د باندینيو چارو مدير ولاديمير کريچکوف په مشرۍ کابل ته يو پلاوی واستوه. کريچکوف د حکومت په ترکيب کې «د خلق او پرچم گوندکیو د غړيو په سره برابر غړيتوب باندې» ۶۷۱ ټينگار وکړ. تره کي او امين دغه غوښتنه ومنله، يا يې منلو ته اړ شول. په هر

حال، له هغې وروسته و چې پوزانوف د کودتا په دریمه ورځ خلقي حکومت په رسمي ډول وپېژانده. ۶۷۲

کاکړ وايي: «خو څنگه چې کودتا په اصل کې خلقيانو کړې وه، هغو نه غوښتل پرچميانو ته برابره برخه ورکړي، خو د شوروي اتحاد په هڅونې او فشار سره دغه کار ته اړ شول. شوروي اتحاد او پرچمي لویان په دغه امتیاز هم قانع نه وو. د اقبال وزیري په وینا «... د ثور د انقلاب د بريالیتوب د لومړۍ شېبې څخه د خلقيانو پر ضد دسیسې جوړې کړې». ۶۷۳ پرچميانو د حکومت له جوړېدو نه درې ورځې وروسته اول د کورنیو چارو وزیر نور احمد نور په دفتر کې او بیا په بادام باغ کې د کورپراتیفونو په ریاست کې غونډې وکړې. په وروستۍ غونډې کې د شوروي سفارت کوم مامور هم گډون کړی و. پرچميانو وروسته په پغمان کې د همدغه مطلب له پاره گوندي کنگره جوړه کړه. ۶۷۴ تر هغه د مخه دوی د ک. ج. ب له مامورانو سره په کډه د خلقي حکومت په بدنومۍ کولو پیل کړی وو او د نجم الدین په روایت کارمل دستور ورکړی و چې «تخریب، تخریب باز هم تخریب». ۶۷۵ دغه څه به ځکه رښتیا وي، چې کارمل د امین له لاسه بې واکه کېده او بې اهمیت کېده. د دوی تر منځ اړیکې له پخوا نه ترڅې وې. ۶۷۶

کاکړ زیاتوي چې د وخت غوښتنه دا وه چې د حکومت په ترکیب کې نور گوندونه هم باید ځای ولري او که سمدلاسه د ائتلافي حکومت شونتیا نه وای، لږ تر لږه فني ماموران او وره چارپوهان په حکومت کې د مقامونو خاوندان شوي وای. د دولت لور رکن پنځه دېرش کسيزه انقلابي شورا شوه چې سروال یې د دولت د رییس حیثیت پیدا کړ. دغې شورا ته قضايي قوه مسؤله وبلل شوه او هم اجرایه قوه د صدراعظم په مشرۍ هغې ته مسؤله وگرځول شوه. د دولت یا حکومت لارښوونه د رسمي گوند په غاړه شوه... په دې توگه نوی دولت د درې گونو قوتونو (اجرایه، مقننه او قضایه) په یو ځای کولو او د لور واک په غونډولو سره تنظیم شو. انقلابي شورا پورې د تړل شوو قواوو سروالان او غړي او وزیران ټول د حاکم گوند غړي وو. په دې ډول گونديان او په ځانگړې توگه د مرکزي کمیټې غړي او د سیاسي دفتر غړي د حکومت په ټولو لورو مقامونو باندې وکومارل شول. کاکړ وايي چې په گوند کې د پرېکړې کولو واک په مرکزي کمیټې کې او بیا په سیاسي دفتر او هلته په یوه تن عمومي منشي پورې چې په واقعیت کې د ټول لور نظام واکمن و، متمرکز و چې د واکمنۍ موده یې ټاکلې نه وه. خلقي لویانو خپل نظام لږ و ډېر د بلشویکانو په بڼه په پښو ودروله. دوی د بلشویکانو غونډې هم د تشدد ایدیالوژي غوره کړه. په واقعیت کې دوی ته شوروي اتحاد او په ځانگړي ډول لنين سرمشق شو.

نور محمد تره کي د ثور په اتلسمه د افغانستان راډيو نه د «اساسي کړبنو» په نامه يوه وينا واوروله چې په هغې کې د باندینيو او د نننيو چارو په اړه اساسي ټکي بيان شول چې په هغو کې د خلکو گډون، د فيوډالي او د هغه د مخه اړيکو د منځه وړل او د دولتي سکتور د پياوړتيا ژمني ورکړل شوې وې. بله مهمه ژمنه يې د دولت د دستگاه تصفيه وه. د اتم ټولکي کانکور لغوه شو، د کانکور وهلو له پاره بسپنه راتوله شوه او د بسپنو په پيسو د هغو له پاره يوه لیسې پرانستل شوه او جنایي بنديان خلاص شول خو زیاتره سياسي بنديان خوشي نه شول. حکومت د انقلابي شورا په نامه د جوزا د میاشتې تر دوه ویشتمې پورې پنځه فرمانونه يو پر بل پسې وایستل. د دولتي تشکيلاتو په ترڅ کې انقلابي نظامي محکمه د انقلابي ضد عناصرو له پاره جوړه شوه او د عسکري اصولنامې له مخې اګسا ته د تورنو په محکمه کولو کې ډېر واک ورکړل شو. کاکړ د انقلابي شورا د ځينو فرمانو په اړه خپل نظر داسې بيان کړی دی:

د سور بيرغ په اړه فرمان

د کاکړ په وينا د ۱۹۷۸ کال د اګست د میاشتې په ۷مه نېټه د څلورم فرمان له مخې، چې د مخه ایستل شوی و، د کابل په ښار کې نوی بيرغ په ډېر لور شان سره جګ شو. د هغه له پاره نه يوازې لورپورې کوندي او حکومتي کسان، بلکې حکومتي ماموران، د لوړو زده کړو د موسسو محصلان، د ښوونځيو زده کوونکي، د کابل ښاريان او د شش کروي بزرگان په ښه تنظيم سره په پښتونستان واټ او د هغه په چاپېر کې سره غونډ شول. د ټولو خلکو شمېر له حساب وټلی او ډېر و. ۶۷۶ الف دا يې د برياليتوب او وياړ هسکه وه. د بيرغ رنگ تک سور غوره شوی و او په يوه ځنډه کې يوازې د خلک کلیمه ليدل کېده او د پاچا امان الله خان د وخت بيرغ چې تور، سور او زرغون رنگ يې درلود او محراب او ممبر هم په کې په نښه شوی و او افغانانو ته د وياړ او سرلوری بيرغ و، ترک شو. دی زیاتوي چې ډېرو خلکو سور بيرغ د ملک د کمونيستي کولو په لور د خلقي لويانو لومړی گام وبله. د پخواني بيرغ د پرېښودو نه هم اندېښنه راولاړه شوه چې افغانانو ته د خپلواکۍ او هويت وياړلې نښه وه. په دغه حال کې د خلقي بيرغ په نامه د سره بيرغ غوره کول او په ننداره يز ډول د هغه هسکول د خلکو د پارولو نه بل څه نه و. خلک په رښتيا هم وپارېدل، په دې کې حکومت ته څه عملي گټه هم نه وه، مخالفينو له دې نه گټه پورته کړه.

د گروهې په اړه فرمان

کاکړ وايي چې د سود، سلم او گروهې په اړه شپږم لمړ فرمان د خلقي حکومت په نظر د ستمکرو له جغ نه د خواریکښو بزگرو په کټه وایستل شو. خو په واقع کې دغه فرمان د دغه مقصد پر خلاف تر زیاتې اندازې د ځمکه والو په کټه تمام شو. فرمان په هغو پلي شو چې د ۱۹۷۳ د مخه یا تر هغه وروسته یې د پیسو په بدل کې ځمکې په گروهې ترلاسه کړې وې. گروهې په اصل کې دا مانا لري چې گروهې وال به تر هغه پورې د ځمکې د حاصل څخه کټه پورته کوي تر څو چې د مخکې څښتن د هغه په گروهې ورکړل شوې پیسې بېرته ورکړې نه وي. کاکړ زیاتوي چې د فرمان مهم ټکی دا و چې که ځمکه له ۱۳۵۳ کال د مخه په گرو اخیستل شوې وي گروهې وال اړ دی له ولاړ فصل نه وروسته ځمکه مسترده کړي او که یې ځمکه په ۱۳۵۳ کال کې اخیستې وي د اصلي پیسو په سلو کې د شل مستحق گڼل کېږي. که چا یو کال وروسته یا د کودتا په کال ځمکه په گروهې اخیستې وي په سلو کې نوي د خپلو پیسو مستحق دی، هغه هم په پنځه کلونو کې. البته ځمکه به په هغه اول کال کې اصلي څښتن ته پرېښودل کېږي.

د فرمان بل مهم ټکی دا و چې یوازې بې ځمکې زراعتي کارگر پوروري مالکانو ته د سود او پور ورکولو نه معاف دي. د دغه فرمان له مخې له سود او سلم او پور ورکولو نه د بزگرو معافېدل سمدلاسه د هغوی په کټه تمام شو. خو دغه فرمان د اړتیا په سختو شهبو کې لکه د واده، ناروغۍ او نورو له پاره د پیسو ترلاسه کولو سرچینه وچه کړه. نوموړی دا هم وايي چې په دغه فرمان سره کټه د هغه چا وشوه چې د ځمکې خاوند و او تاوان هغه چا وکړ چې بې ځمکې و او د خپل کار له برکنه د پیسو او گروهې مخکې څښتن شوی و. په گروهې والو کې ځمکه وال هم شامل وو، خو هغوی تر هغو ډېر لږ وو، چې ځمکې یې په خپلو کټل شویو پیسو سره اخیستې وې. په همدغه ډول افغان کارکرو چې په ایران او عربي هېوادونو کې پیسې کټلې وې، په وطن کې یې په گروهې سره ځمکې خپلې کړې وې، په دغه فرمان سره د گروهې ځمکې او خپلې پانگې له لاسه ورکړې.

د دغه فرمان یوې بلې برخې پارول وکړل. دغه برخه د بزگرو د ستونزو د لیرې کولو له پاره په علاقه داریو، ولسوالیو او ولایتونو په مرکزونو کې کمیټې وې، چې په هرې یوې کې د بزگرو دوو استازینو غړیتوب درلود، خو د ځایي مخورو او ځمکه والو په کې غړیتوب نه درلود. کاکړ وايي چې د دې کمیټو ښکاره دنده دا شوه چې د گروهې، سود او سلم نه راپیدا شوې کشالې به هواروي، خو اصلي مقصد یې دا و چې د بزگرو دغه استازي به د ملکونو، خانانو او بېگانو او نورو ځایي مخورو ځای نیسي چې حکومت فیوډال گڼل او غوښتل یې

چې د خپل ايډيالوژۍ له مخې په افغانستان کې د فيوداليزم رېښې وباسي. ۶۷۷ خو دا کار د افغانستان غوندې په دوديزه ټولنه کې شونې نه وه چې سمدلاسه بېسواده، بې تجربې او د ټولني د ښکته دريځ غړي ټولنيز شخصيتونه شي. د دې پايله دا شوه چې دوديز ملکان او نور تر ډېره بې اغېزې او د حکومت مخالفان شول. د مخکو د وېش په درشل کې يا بهر کې ډېر اطرافي مخور بنديان شول يا د منځه ولاړل. په دې ډول هغه د مشرۍ تشه چې په ولس کې پيدا شوې وه، نوره هم ژوره شوه او ټولنه بې ناکراره کړه.

د ښځو او ودونو په اړه فرمان

د کاکړ په وينا د حکومت اووم لمړ فرمان د ښځو او نارينه وو د برابرۍ او پلارواکي او فيودالي د غير عادلو اړيکو د له منځه وړلو په موخه د ميزان د مياشتې په ۲۵ مه نېټه وايستل شو. د دغه فرمان مهم ټکي دا وو چې هېڅوک نه شي کولی نجلی د پيسو يا جنس په بدل کې چا ته په نامه او يا نکاح کړي، يا د واده په وخت کې زوم د ولور په ورکولو او د نورو لگښتونو په کولو اړ کړي، يا له لس شرعي درهم نه چې انډول بې درې سوه افغانۍ کيږي ډېرې پيسې ترلاسه کړي. په همدغه فرمان سره اجباري واده هم منع وښودل شو او د نکاح ښکته منک د هلك له پاره ۱۸ کاله او د نجلی له پاره ۱۶ کاله وټاکل شو او کونده به بيا مېړه کولو کې واکمنه وکيل شوه. ۶۷۸ د نورو فرمانونو په پرتله دا يو بې ازاره فرمان و، نه خلکو پرې عمل وکړ او نه حکومت د هغه پلي کول ټينگ ونيول. کاکړ زياتوي چې که څه هم په نجونو باندې د ولور په نامه پيسې اخېستل کيږي ځينې په دې فکر دي چې په افغانستان کې پلرونه خپلې لونې د پيسو په بدل کې د نکاح په نامه خرڅوي، خو دوی دا په نظر کې نه نيسي چې واده په واقعيت کې يوه ټولنيزه پديده ده او د ولور يوه برخه په کوزده او په واده کې په ولس لکول کيږي او ودونو د دواړه خواوو کورنيو او د هغوی د خپلوانو تر منځ اړيکې پيدا کوي او سره يې نږدې کوي. په هندوستان کې د افغانانو پر خلاف نجلی وال د هلك کورنۍ ته پيسې ورکوي. د دواړو ولسونو دغه سرچپه دودونه د هغو په خوښه وي. دواړه رواجونه ناورې خواوې لري چې بايد ورو ورو له منځه يوړل شي. خلک د پوهې او روښانتيا او د وضعې په اوښتلو سره سوکه سوکه په خپله اوري لکه چې ډېر وخت کيږي چې په تعليم کړو افغانانو کې ولور نه اخېستل کيږي او د څو ښځو دود سست شوی دی، خو دوی په ودونو کې لا هم ډېر لگښت کوي چې ورو ورو بايد لږ شي.

د ځمکود وېش فرمان

کاکړ د دې فرمان په اړه وايي چې د دغه فرمان نه د حکومت موخه د «فيوډالي» او د «فيوډالي دورې نه د مخه» اړيکو د منځه وړل، د کارکرو او بزکرو تر منځ د يو موتي والي ټينګښت او ژورتيا، او د کرنيز محصول د حجم زياتوالی وښودل شو. خو د هغه سملاسي موخه سياسي وه او هغه دا چې حکومت غوښتل د خپلو مخالفينو پر ضد د بزکرو، کارکرو او نورو خوارکينيو ملاتړ ترلاسه کړي. څنگه چې په ټولنه کې بزگران او لږ مخکي مالکان ډېر وو نو حکومت دغه فرمان د دوی په ګټه وايست. خو دغه فرمان په بېره وايستل شو پرته له دې چې ډېر مهم او پېچلي اړخونه يې په کره توګه وڅېړل شي او د پلي کېدو شونتياوې او وسيلې يې په في ډول برابرې شي.

د فرمان مرکزي ټکی د ځمکه وال کورنی (مور، پلار او تر اتلسو کالو پورې اولاد) له پاره د مخکې د اندازې ټاکل و، چې هغه دېرش جريبه اوله درجه مخکې يا د هغې اندوله وه. تر هغې زياته د دولت مال وکښل شوه. د بې ځمکو، لږ ځمکو، کرنيزو کارکرو او بې شتو کوچيانو ته د پنځه جريبه لومړۍ درجې مخکې يا د هغې اندوله وټاکل شوه او هغه مستحقانو ته د ملکيت د سند په نامه وړيا ورکول کېده. دا هم په نظر کې ونيول شوه چې د مخکو دغه نوي څښتنان به وروسته په کوپراتيفونو کې تنظيم کيږي او بيا به د دولتي شرکتونو له لارې کيمياوي سره، اصلاح شوي تخمونه او کرنيز ماشينونه په مناسبو شرايطو ورکول کيږي. همدارنګه د مخکې د وېشلو نه راپيدا شوې کشالې د هوارۍ په موخه د ولايتونو او ولسواليو په کچه ځانګړې خلقي کميټې په نظر کې ونيول شوې. د دغو کميټو پرېکړې اساسي او غوڅې وکښل شوې. کاکړ وايي چې د مخکې سمون د داسې حکومت له خوا وشو چې مشروعيت يې نه لاره او د ولس د استازو سره يې په دې اړه مشوره ونه کړه. حکومتونو پخوا هم د خلکو مخکې ضابطولې خو هغه لږې او د انفرادي کسانو وې.

امير عبدالرحمن د افغانستان لومړی واکمن و چې د لومړي ځل له پاره يې د جګو مالياتو په وضع کولو سره د مخکې والو دوديز ځواک مات کړ. هغه له هغو ځمکو نه چې په روانو اوبو سره خړوبېدلې د حاصل دريمه برخه، له هغو مخکو نه چې په چينو او کارپزونو سره اوبه کېدلې پنځمه برخه او له للمي مخکو نه د حاصل لسمه برخه د دولت برخه وګرځوله. د دولت دغه برخه په جنس سره ترلاسه کېدله او دا د پاچا امان الله په وخت کې و، چې دغه مالیه د جنس نه په نغده بدله شوه. ۶۷۹ د محمد داود په وخت کې له مالک نه زياتي مخکې په پيسو اخېستل کېده او هغه بيا مستحق بزګر ته په پيسو

ورکول کېده. د محمد داود د ځمکو د سمون پروگرام د مترقي مالي پر بنسټ و. د هغه د پروگرام له مخې د لږو ځمکو خاوندان د مالي نه معاف وو. هغو مالکانو چې د سلو جريبو نه زياته مخکه درلوده ډېره ماليه ورکوله. د دغه پروگرام له مخې له سلو جريبو نه زياتې مخکې ساتل به د مالک له پاره گرانه تمامېده. نو ځکه دوی د سلو جريبو نه زياته مخکه د دوی په کټه وه چې په دولت يې وپلورې. دولت به بيا دغه زياتي مخکه په مستحقو بزگرانو باندې په لږه بيه خرڅولې او پيسې به يې هم په اوږدې مودې کې په قسطنونو سره ترلاسه کولې. له دې امله په ۱۹۷۴ کال کې چې محمد داود د مخکې د سمون اعلام وکړ، ځمکه والو د خپلو زياتي مخکو په پلورلو پيل وکړ. ځينو يې په نورو لارو هم خپلې مخکې له سلو جريبو نه ښکته کړې او په دې ډول يې د درنو مالياتو د ورکولو نه ځانونه خلاص کړل او خپلې مخکې يې هم له لاسه ورنه کړې.

کاکړ وايي چې د اتم لمبر د فرمان د پلي کېدو ستونزې درلودې. يوه ستونزه دا وه چې د مستحقو بزگرانو شمېر ډېر او د هغه پر خلاف د وېش وړ مخکې لږ وې. له همدې امله به و چې دوی د محمد داود د مخکې سمون په پام کې ونه نيو او مخکه والو ته يې لږ مخکه (۳۰ جريبه) پرېښوده او بزگرو ته يې د مخکې وړې توپې (۵ جريبه) ورکړې. په دې توگه د کرنې ميکانيزه کېدل گران شول. د مخکو په ټوټو کولو سره د مخکې حاصل هم لږېږي.

کاکړ وايي چې د کرنيزو حاصلاتو او د حکومتې مالياتو د زياتوالي او د هېواد د ودانولو له پاره يوه ښه لار دا ده چې د بندونو جوړولو او د کاربزونو په کيندلو هغه پراخې مخکې چې د مقرر نه د لوېديځ په لور ان تر هرات پورې او له هندوکش نه پورته او نورو سيمو کې پراتې دي، د کر کيلې له پاره برابرې شي او بې ځمکو او نورو اړو کورنيو ته دومره مخکه په لږه بيه ورکړل شي چې د ژوند له پاره يې بسنه وکړي. د اوبو بندونه د برېښنا د توليد له پاره هم اړين دي. د افغانستان لوی او واړه سيندونه د هېواد د سمسورتيا او د خلکو د ژوند د کچې د لوړولو له پاره غټې سرچينې دي. د اوبو د سرچينو مديريت کولی شي چې دا مسلې هوارې کړي.

کاکړ دا هم وايي چې خلقي حکومت د «فيودالو» ځپل د فرمان په پلي کېدو سره پيل کړل. خو څنگه چې ځمکه ډول ډول وه او ملکيت هم د شرعي او هم عرفي سندونو له مخې او نوې ابادې شوې مخکې بې سنده ملکيت وې د مخکې د سمون پروگرام پېچلی کاوه. برسېره پر دې د مخکې سروې او کچل (اندازه کول) او بيا له ټاکل شوې اندازې نه د زياتي مخکې بيلول او هغه په نورو وېشل د مسلکي او فني کدرونو شتون د پروگرام د برياليتوب له پاره اړتيا ليدل کېږي. خو دغسې کسان ډېر لږ وو. په دې توگه د مخکې د سمون

پروگرام چې په خپله ډېر پېچلی و د کمزورو کدرونو په لاس چې د يوې اوونۍ په کورس کې روزل شوي وو هغه هم په زور او ننداره يز ډول په بیره سره پلي شو او زياتره د «فيودالو» په سپکاوي سره پيل پرې وشو. دی زياتوي چې په فرمان کې د اوبو تنظيم په نظر کې هېڅ نېول شوی نه و په داسې حال کې چې د مخکې په سمون کې د اوبو تنظيم اساسي موضوع ده. دی دا هم وايي چې شوروي حکومت به د خلقي حکومت سره د سياست له مخې د مخکې د وېش په اړه همکاري نه وي کړې. د دې له پاره چې په هغه کې پاتې راشي او د حکومت کولو چانس پرچميانو ته ورسېږي.

د ليک او لوست کورسونه

کاکړ وايي چې د ليک لوست پروگرام پلي کولو هم پارونې وکړې. د ليک او لوست د کورسونو سره په پرنسپ کې خلک مخالف نه وو، چې لويان ليک او لوست زده کړي ځکه چې د دوی له پاره يوه د ژوند موضوع وه. افغانستان د يوه بېرته پاتې هېواد په توگه د بې سوادۍ له موضوع نه کړېده او د دې هېواد نارينه او تر هغو لا زيات ښځې په لوړه کچه سره په ليک او لوست نه پوهېدلې. د کودتا نه وړاندې هم د افغانستان په خلکو کې د ښوونځيو د زده کړې شوق تر دې اندازې لوړ و، چې د کليو خلکو هم نه يوازې د هلکانو، بلکې د نجونو د زده کړې ښوونځي غوښتل او حکومت د مخکې او کار په بڼه د خلکو په مرستې سره ان په ډېرو لېرو سيمو کې د نجونو او هلکانو ښوونځي جوړ کړي وو. په خلکو کې د ليک او لوست احساس له دې کبله هم غښتلی او پياوړی و، چې د نويو ښوونځيو په پرانستلو او په عمومي ډول د عصري پوهنې په دودولو کې د خلکو ارزښتونه په نظر کې نيول کېدل او د پاچا امان الله د وخت د ترخو تجربو په نظر کې نيولو سره د عمومي ارزښتونو په مخالفت څه نه کېدل. خو خلقيانو دغو واقعيتونو ته ونه کتل او دغه متل يې له ياده وايست چې «افغانان په هڅونې سره دوزخ ته ننوزي خو په زور سره به جنت ته هم لاړ نه شي.» ۶۸۰ څرنگه چې د يوې خوا د ښځو له پاره ښځينه ښوونکې نه وې يا لږ وې او د نارينه برخورد احساساتي او د خلکو د دودونو سره سم نه وو نو په ټول هېواد کې د ښځو د کورسونو سره مخالفت عام و. گوندیانو د دې پروا نه کوله چې «په افغانستان کې نارينه د خپلو کورنيو واکمنان دي، چې ښځې خپل ناموس کښي او سپکاوی يې نه زغوي.» ۶۸۱ نو کورسونو ته په زوره کښول دوی ته عملي گټه نه لرله.

بندي توب او جزاگانې

په افغانستان کې د عبدالرحمن د واکمنۍ د مخه رسمي بندیتونونه نه وو، لکه چې د رسمي دفترونو له پاره ودانۍ هم نه وې، واکمنو له پخوا نه د اطراف د زورورو کورنيو زامن په کابل کې د يرغمل په توگه ساتل. د امير عبدالرحمن د واکمنۍ پر مهال بنديان په بالاحصار، ارگ او کوتوالۍ کې ساتل کېدل. له ځينو سرايونو او حکومتي ځايونو نه هم د بنديانو د ساتلو په توگه کار اخېستل کېده. په بالاحصار او ارگ کې بنديان تورو څاکانو ته اچول کېدل. بيا په دهمزنک کې لوی بندیتون جوړ شو چې د هغه له ورو او نمجنو کوچنيو کوټو څخه ان د څرخي پله د لوی کانکرېټي بندیتون تر جوړېدو پورې کار اخېستل کېده. د امير عبدالرحمن په وخت کې دومره افغانان بنديان شوي وو چې واقعي شمېر يې شايد حکومتي چارواکو ته هم مالوم نه وو.

د کاکړ په وينا د امير عبدالرحمن د دورې نه وروسته د ثور کودتا پورې هم له بندیتونونو کار اخېستل کېده. د محمد هاشم خان په اولسو کلونو کې ډېر خلک بنديان شول. يوازې د پاچا امان الله خان او پاچا محمد ظاهر خان په قانوني لسيزه کې د محکمې د حکم پرته افغانان د حکومت د سياست سره د مخالفت له امله نه بندي کېدل. د محمد داود د صدراعظمۍ او بيا د جمهوري رياست په وختونو کې سياسي بنديان تر جنایي بنديانو په شمېر کې ډېر وو. په دې برخه کې خلقي او پرچمي حکومتونه د افغانستان تر هر بل حکومت نه د مخه لاړل.

د افغانستان د حکومتونو يوه ځانگړتيا دا ده چې د امن په حال کې هم نه يوازې د فعالو، بلکې د بالقوه مخالفانو خپل دي. هغو حکومتونو چې دولتي واک يې په زور سره نيولی او بيا يې هغه د امنيت، خدمت او پرمختگ په نامه ځانله منحصر کړی دی، هم داسې کړی دي.

په افغانستان کې د پاچا امان الله او پاچا محمد ظاهر له قانوني واکمنۍ پرته د څه کم سلو کالو په بهير کې لږ و ډېر همداسې شوي دي. په دغې مودې کې د فرد حيثيت او ژوند د حکومتي قدرت په وړاندې، چې د پوليسو، سرتېرو، حاکمانو او عدلي محکمو په بڼه څرگند شوي، بې اهميته شوي دي. په داسې حال کې چې د حکومت د پياوړتيا د مخه افغانان د ازادۍ له لورې درجې نه برخمن وو. په پايله کې په افغانستان کې فردي وړتيا چې د نامحدود انکشاف ظرفيت لري انکشاف نه دی کړی يا په پوره اندازه انکشاف نه دی کړی. ځينو چې څلا کړې ده، په حکومتي چوکاټ کې د ننه يې لرلې ده. خو څنگه چې حکومتي چوکاټ په اصل کې محدود وي، د دغسې افرادو انکشاف هم محدود و. د دغه

محدودیت پایلې هغه شوې چې انگلیس فیلسوف جان سټورات مل څه باندې یوه پېړۍ د مخه د هغو وړاند وینه کړې وه. هغه ویلي و چې په اوږدې مودې کې د دولت ارزښت د هغو افرادو ارزښت دی چې دولت ترېنه جوړ وي او هغه دولت چې خپل افراد کوچني کوي که څه هم هغه به د کتورو موخو له پاره وي و به مومي چې په ورو انسانانو سره لوی کارونه نه تر سره کېږي،

د سټورات مل د مخه جرمني فیلسوف ایمانوېل کانت ویلي و چې هېڅ انسان باید د بل انسان د لاس اله ونه ګرځول شي. فرد او ژوند ته د دغه اهمیت او ارزښت د قایل توب له امله ده، چې یهودو په لرغوني مذهبي او مدني قانون تالمود کې راغلي، چې هغه څوک چې یو ځانګړی ژوند ژغوري لکه چې ټوله نړۍ یې ژغورلې وي او هغه څوک، چې یو ځانګړی ژوند له منځه وړي، لکه چې ټوله نړۍ یې د منځه وړې وي. له دې کبله یو یهود بل یهود نه وژني او په زیاتو لوېدیځو هېوادو کې زندی کول غیر قانوني دي. دغه فکر د یوې روغې ټولني دپاره ډېر مهم دی ځکه چې غړي ته دا شونې کوي چې د ژوند د ښه کولو دپاره رغنده او نوښتي کارونه وکړي. د لوېدیځ دغه حیرانونکې پرمختیا شاید په اصل کې د همدغه فکر له مخې د ژوند کولو پایله وي.

خو په اسلامي هېوادو کې یو مسلمان بل مسلمان وژني. وژنه په پښتنو کې شاید تر بل هر ملت نه ډېره وي. یو پښتون نه یوازې بل پښتون وژني، بلکې د خپلې کورنۍ غړي هم وژني. وژنه د دوی د کلتور په تېره د تربورۍ او ګوندیمارۍ غټه ځانګړنه ده. دا شاید د پښتنو د بېرته پاتې توب او کمزورۍ اصلي لامل وي. په دغسو وژنو سره ولس د خپل د سر او د کار د سرو د فکر، عمل او خدمت نه یې برخې کېږي. دغسې وژنې د ثور د کودتا نه وروسته بیخي ډېرې شوې دي. د سر پښتانه د تربورۍ او ګوندي ماری او داسې د ملتونو له خوا او په دې وروستیو کې د ایډیالوژیکي او مذهبي سخت دریځو له خوا وژل شوي دي. خلقي حکومت د ملي مصونیت اداره له منځه یوړه او د ک ج ب ډوله اکسا یې تنظیم کړه چې په بندي کولو، کړولو او وژلو یې او هغه هم د محکمې او شواهدو پرته لار یې وټاکله.

اکسا او اسدالله سروري

کاکړ وايي چې اکسا (د افغانستان د کتو ساتندويه اداره) د ملي مصونیت د ادارې پر ځای جوړه شوه. د اکسا سروال اسدالله سروري و. سروري د اکسا له لارې د افغانانو په بندي کولو، کړولو، او له منځه وړلو کې د امیر عبدالرحمن د وخت له نایب کوتوال

ميرسلطان (افشار) سره پرتله کېدای شي. (زما ليکوال وزيرې په اند وروسته نجيب الله د خاد له لارې تر دوی وړاندې شو). ميرسلطان په امنيتي او جزايي چارو کې د مطلق اختيار خاوند و. د هغه د دغه مطلق اختيار نه په پراخې استفادې سره ناراضي توب تر دې حده پورې عام شو چې په پای کې حکومتي لوړو چارواکو امير ته څرگنده کړه، چې د هېواد ناراهي د هغه د بېرحمۍ له امله وه. له همدې امله ميرسلطان په پغمان کې په دار وځړول شو.

دی زياتوي چې اکسا د عصري تخنيکي وسيلو، بېحده اختيار او د بوکدانوف په مشرۍ د شوروي ماهرانو په لرلو سره دغومره پياوړې او په خپل سر شوې وه، چې له يو څو کسانو پرته بل هر څوک يې بندي کولی شو، بې له دې چې له کوم مقام نه يې اجازه ترلاسه کړې وي. سروري د اکسا له لارې ان د صدراعظم حفيظ الله امين د منځه وړلو له پاره څو ځله تجویزونه نيولي وو، چې نابريالي شول. ۶۸۲ په دې ډول اکسا له دغسې اختيار نه بهر مننه وه، چې چارواکيو يې په تېره سروري د نظام د مخالفينو په خپلو کې هر هغه څه کول، چې يې لازم گڼل. که څه هم هغه د داسې ادارې د چلولو له پاره تجربه او وړتيا نه لرله خو د شوروي سرمشاور په مرسته يې د نظام په يو بې جوړې پياوړي مرکز باندې بدله کړه.

کاکړ ليکي چې د ثور په ديارلسم ماښام نږدې په نهو بجو د پخواني حکومت د سر کسان په څرخي پله په پولیکون کې ووژل شول. په دغو کسانو کې موسی شفيق پخوانی صدراعظم، د بهرنیو چارو د وزارت مرستيال سيد وحيد عبدالله، د عدليې وزير او لوی څارنوال وځي الله سمیعی او نور شامل وو.

موسی شفيق د مصر په ازهري پوهنتون کې د لېسانس او ماسټرۍ ډیپلومونه او بيا د ممتاز محصل په توگه د امريکې د کولمبيا د پوهنتون نه ډیپلوم لاس ته راوړ. په دې توگه دی د اسلامي او غربي حقوقو متخصص و. دی په پښتو، فارسي، انگرېزي، عربي او فرانسوي پوهېده. شاعر، ليکوال، نطاق، داستان ليکونکی او نوښتگر انسان و. د ۱۳۴۳ کال د قانون په ايسټلو کې يې د صمد حامد، سيد شمس الدين مجروح او نورو سره ونډه واخېسته. د خپلې صدراعظمۍ په وخت کې موسی شفيق په دې لټه کې و، چې افغانستان په شوروي اتحاد باندې په زياتېدونکې خطرناکې اتکا نه وژغورل شي او ايران او پاکستان ته په نږدې کولو سره د لوېديځ په خوا وارول شي. خو محمد داود زړ پرې کودتا وکړه. چي کوندونه ورسره مخالف او پرچميان ورسره دښمنان وو. هغه شايد د کودتا وروسته د کارمل په امر وژل شوی وي. په يوه روايت سره موسی شفيق تر کودتا وروسته د دې پر

ځای چې له هېواد نه ووځي، د تره کي دفتر ته د مبارکي له پاره لار. تره کي ورته د ويشو زلميانو د وخت نه دغومره نږدې دوست و، چې فکر يې نه کاوه چې د ده په واکمنۍ کې به ده ته زيان ورسېږي. خو تره کي دغه وخت په دفتر کې نه و او ده خپل د پېژندوالی کارت ورته پرېښود او هغه د کارمل لاسته ورغی. بېرک د تره کي په نشتوالي کې د هغه د نيولو امر صادر کړ چې وروسته ووژل شو. دا يوه ستره ضايعه وه ځکه چې هغه د شوروي يرغل نه وروسته په دغه بحراني مهال کې د هغه اعتبار له مخې چې په عربي او لوېديځو ملکونو کې درلود کولی شول چې وطن ته اساسي خدمت وکړي.

وفي الله سمیعی چې د ازهر پوهنتون کې يې لوړې زده کړې کړې وې يو وتلی عالم او د اصولي عمل سرى و. دی د کابل د پوهنتون رييس او بيا د عدليې وزير شو. دی د يو اعتدالي مسلمان په توگه د کمونيزم مخالف او د عربي هېوادونو سره د افغانستان د نږدې کولو په سياست ټينگ ولاړ او وحيد عبدالله له لوېديځو هېوادو سره د افغانستان د نږدې کولو د سياست ټينگ پلوي و.

کاکړ وايي هغه روحانيون چې د ثور د کودتا نه وروسته پاکستان ته واوښتل، ژوندي پاتې شول لکه د گيلاني کورنۍ مشران او د تکاو مياکل جان او داسې نور. هغوى چې د ننه په وطن کې پاتې شول، لکه مجدديان ژوند يې له خطر سره مخ کړو. په يوه روايت د گيلاني کورنۍ مشر د شلې پېړۍ په سر کې له بغداد نه افغانستان ته راغی او امير حبيب الله خان ورته په سره رود کې مواجب مقرر کړل. دی چې د نقيب صاحب ياني د قوم مشر په نوم يادېده، د قادريه صوفي طريقې پيرو و، ورو ورو يې په ځانگړې توگه په پښتنو کې نفوذ وکړ او په ننګرهار او پکتيا کې يې ډېر پلويان وموندل، خو دوى د مجدديانو پرخلاف له ملي سياست سره علاقه من نه وو. د ثور د کودتا په وخت کې سيد حسن گيلاني د دغې طريقې مشر و. ۶۸۳

مجدديان په افغانستان کې تر گيلانيانو نه اوږد تاريخ لري. په يوه روايت د مجدديانو موسس شيخ احمد سرهندي و، چې په ۱۵۶۴ کال کې پيدا شوى او د هندوستان په سرهندي کې مړ شوى و. دی د مجدد الف ثاني په لقب يادېده، په دې مانا چې د مسلمانانو په عقیده له يوې اوږدې مودې يا زر کال نه وروسته دغسې يو مصلح هسک کېږي، چې اسلام اصلي اصولونو ته په رسولو سره نوى او پياوړى کوي. د دغه سرهندي يو لېرې ځای ناستى قيوم جان مجددي له هندوستان نه په نولسمې پېړۍ کې افغانستان ته مهاجر شو او د کابل ښار په شوربازار کې يې واړول او يوه مدرسه يې هلته پرانېستله. کورنۍ يې د له هغې وروسته د شوربازار حضرت په نامه ياده شوه او په خلکو په تېره د ښار په کسبگرو

او په غلزي پښتنو او په ځانگړې توگه په سلیمانخېلو کې يې نفوذ وکړ. دغې کورنۍ په هرات، لوگر او غزني کې ځانگړې وکړې. ۶۸۴ په کابل کې دغه کورنۍ وروسته له شوربازار نه د قلعه جواد کلي کې هستوگنه شوه او هغه يې د خپلې طريقې مرکز وگرځاوه. څنگه چې مجددیان د خپلې صوفي طريقې په حکم، چې د نفوذناکې مذهبي ډلې په بڼه يې ساتنېالي کوله، په دولتي واکمنو او چارواکيو باندې فشار راوړ، چې د شريعت په رعايت کې ټينگ وي، نو دوی د افغانستان په سياسي ژوند باندې ډېر اغېز کړی دی. تر ډېره حده پورې د دوی د مخالفت له امله و، چې د افغانستان لوی مصلح پاچا امان الله له افغانستان نه د تل له پاره په وتلو اړ شو او اصلاحي پروگرامونه يې په تېه ودرېدل. ۶۸۵ له هغه وخت نه د ثور تر کودتا پورې په داسې حال کې، چې مجددیان په حکومت کې هم غټه ونډه لرله، دوی د ملتپالو، سمون او نويتوب غوښتونکيو افغانانو په نظر د پرمختگ او ملتپالنې مخالف گڼل کېدل. صدر اعظم محمد داود خان هم په همدغه فکر و. دی د يعي خېلو د واکمنۍ کورنۍ لومړنی مهم غړی و چې په څرگنده يې همدغسې ويل. دغه فکر په خلقيانو کې هم قوي و. د همدغه فکر له مخې به و چې د ۱۳۵۷ کال د دلوې د مياشتې په ۲۹ مه حضرت ضياءالمشايخ ابراهيم مجددي او کورنۍ يې بندي شول. په همدغه وخت کې د کوهستان، هرات، غزني، ننگرهار او کندهار مجددیان هم ونيول شول، چې په زيات گومان سره وروسته د منځه يوړل شول. د دوی ډېر نوميالي د هرات پخوانی سناتور عبدالباقي مجددي او د ننگرهار فضل احمد مجددي وو. دا چې څومره مجددیان له منځه وړل شوي دي مالومه نه ده. ټول شمېر يې اټکل نږدې اتيا تنو ته رسېږي. دغسې مرگونې گوزار په افغانستان کې په مجدديانو باندې بل هېڅ وخت شوی نه و. نقشبنديان د لومړي ځل له پاره په ۱۸۸۸ کال کې کله چې يې والي سردار محمد اسحاق د امير عبدالرحمن په مقابل کې ياغي کړی ته هڅولی و، له منځه وړل شوي وو. ۶۸۶

د حکومت پر ضد لومړني اعتراضونه

درې اسلامي تنظيمونه، چې د نوي حکومت ټينگ مخالف و، د محمد داود د حکومت په وړاندې له ناکامه پاڅونونو نه وروسته له اعتبار نه لوېدلي او مشران يې په پېښور کې اوسېدل. چين پلوي شعلیان يا ماويستان او نورې چې ډلې هم د نوي حکومت سختې مخالفې وې، خو د هغه سره يې د ښکاره مقابلې توان نه درلود. دوی د پټو مخالفتونو او تخريبونو لار ونيوله، خو د حکومت لاس په ټولو بر و. کاکړ وايي چې دغه لاس بری د پوځ او گوند په سبب و. سره له دې چې په پوځ کې چې اخواني او ملت پال افسران ډېر وو.

حکومت په دغه حال کې هم په پوځ او هم په ټولني کې د ماوېستانو، اخوانيانو او «تنگ نظره نېشنالستانو» په ځپلو پيل وکړ.

افغان ټولنه چې د محمد داود د کودتا نه وروسته د حکومتي پرچميانو په کړو سره تاجونه شوي وه، د ثور د کودتا نه وروسته د خلقي لويانو په کړو سره نوره هم کړکېچنه شوه.

د ثور د کودتا نه پنځه ورځې وروسته د ثور د مياشتې په ديارلسې د پکتيا د زېروک ولسوالي کې ځدران د حکومت په وړاندې جگ شول او پرچمي علاقه دار او يو څو خلقي بنوونکي يې ووژل. څلور ورځې وروسته د پکتيا د وزې ولسوالۍ هم د لږ وخت له پاره د حکومت د کنترول نه ووتله. ۶۸۷ تر هغه لوی پاڅون د پېچ ولسوالۍ د ننګلام د خلکو وو چې د ثور په اوښتمه وشو. خلک په ظاهر کې د پېچ نوي ځايي ولسوال د کړنې له امله چې يو نفوذمن روحاني يې سپک کړی و، د پېچ اوږده دره وپارېده.

حکومت د گوندي او حکومتي فعالانو له لارې په ټول هېواد کې قومونه، مذهبي او ټولنيزې ډلې او حکومتي ماموران وهڅول، چې د انقلاب په ملاتړ لاريونونه وکړي. همدارنگه د ټول ملک نه يې قومي او مذهبي مشران او مخور کابل ته رابلل او هلته يې د نورمحمد تره کي او امين سره ليدل. تره کي ولسي مخورو ته په ويناوو کولو سره خپل حکومت او گوند ته بې ساری خدمت وکړ. هغومره چې دی په دغه وخت کې وځلېد، بيا هېڅکله ونه ځلېد.

د خلقي دولت پرضد د خلکو پاڅونونه

کاکړ د خلکو پاڅونونو ته پنځم څپرکي ځانگړی کړی دی. دی وايي چې خلقي حکومت د باندنيو فکرونو او طريقو پر بنسټ چلول کېده او واک د دغسې گوند په انحصار کې و چې غړي يې په حکومتي چارو کې بې تجربې او دوی خپل مخالفين ځپل. په پای کې افغانستان په دغې مودې کې په زياته اندازه د پاڅونونو، وژنې، ځپلو، بندي کولو او کړولو ډگر شو. که څه هم د گوند واکمنه ډله لا هم په هېواد واک چلاوه خو په پای کې شوروي اتحاد په خپل نظامي پوځ وځپله.

د سره بيرغ د پورته کېدو وروسته د هېواد په ډېرو سيمو کې ډېر واړه او لوی پاڅونونه وشول چې حکومت هغه په زيات گړنديتوب سره وځپل. کاکړ په خپل کتاب کې د هرات، بالاحصار، اسمار، دره صوف، پلخمرې او د چنډول پاڅونونه بيان کړي دي چې لوستونکي کولی شي د کاکړ په کتاب کې ولولي. زه به دلته يوازې د هرات په پاڅون رڼا

واچوم.

د هرات پاڅون

کاکړ وايي چې «هرات په يوې شېرازي سيمې کې پروت او د هريرود او نورو ډېرو وړو رودونو نه بهره من دی. د لرغونې زمانې راپه دېخوا د انسانانو ټاټوبی دی. لرغونی نوم يې «اريا» يا «هري» و. دغه نوم په اصل کې د هريرود د نوم نه اېخستل شوی چې لرغونی نوم يې هريوه (Harivo) يا اريوس (Arius) و او په اسلامي دوره کې هرات شو. لهر اسپ يې بنسټ ايښی، گشتاسپ پراخ کړی، بهمن بنه کړی او لوی سکندر بشپړ کړی دی.» ۶۸۸ د ځايي روايت له مخې د ښار ززی د شمېران په نامه يو ځای و، چې وروسته يې ځای هزار جريب ښار ونيو، خو هزار جريب زر ترک شو او شمېران بېرته ښار غوره شو او لوی شو. د تاريخ په بهير کې په هرات کې سلطنتونه جوړ شوي او بيا باندنيو ړنگ کړي او ښار يې وېجاړ کړی دی، خو ښار هر ځل د خلکو په همت او د نېرونو او د سيمې د شېراز توب له امله بېرته ودان شوی او لا ښه شوی دی. ۶۸۹

د ۱۳۵۷ کال د حوت د مياشتې په ۲۴ نېټه د هرات په ښار کې اوولسم لمر فرقې پاڅون وکړ چې د کاکړ په وينا شپږ زره سرتيري يې درلودل. کاکړ د هرات د پاڅون په اړه وايي چې په هرات کې خلک دومره د مخکې د وېش په پروگرام سره نه وو تورېدلي لکه د چارواکو په زير چلند سره او په ځانگړي توگه د ليک او لوست د زده کړې کورسو ته د نارينه وو او ښځو کښول وو. دی د هرات د فرقې د ناکرارۍ د نورو قطعو غوندي اصلي لامل دا بولي چې د ټيټو رتبو گوندي افسران په لوړو مقامو کومارل شوي وو. بل لامل يې شوروي مشاوران بولي چې د دوی په مشوره د لوړو رتبه افسرانو واک کم شوی وو.

د تره کي- امين دښمني او د اندروپوف شیطاني

کاکړ وايي چې د نورمحمد تره کي او حفيظ الله امين تر منځ اختلاف د توقع پر خلاف و. دوی دواړو د نږدې نه سره پېژندل. امين تره کي ته ډېر درناوی کاوه. په واقعيت کې ټولو گوندي غړو تره کي ته ډېر درناوی کاوه او نوموړی د ټولو گوندي مشرانو نه مشر و او گوند په اصل کې د ده په نوښت او پرله پسې زيار سره جوړ شوی و. که څه هم دی د عبدالکریم ميثاق په شان د لږې منظمې زده کړې خاوند و. امين د تره کي په وړاندې ځان د «وفادار شاکرد» يادوه خو په مهارت سره يې کوښښ کاوه چې د هغه قدرت کم او خپل قدرت زيات کړي.

د تره کې او امين تر منځ اختلاف د هرات د پاڅون نه وروسته پيدا شو چې د کې چې بې د چارواکو په لمسونه سره په مرککې دښمني بدل شو. د کې چې بې سروال اندروپوف په دغسې کوشنبنونو پيل وکړ چې کارمل د امين پر ځای په واک شي. د کې چې بې چارواکو له همدغه وخت نه تر پوځي يرغل پورې په کابل کې حيرانوونکې دسيسې وکړې. د شوروي حکومت د اول نه د خلقي حکومت په راتلو خوښ نه و. شورويانو کوشنبن وکړ چې واک پرچميانو ته ولېږدوي خو بريالي نه شول. خو بيا هم پرچميان په تمه وو چې شورويان به يې واک ته ورسوي.

د دوی زياتره لويان د شوروي اتحاد منونکي ايجنتان وو. په خپله کارمل د «مريد» په نوم د دوی ايجنت و. نو دوی ځکه تر خلقيانو زيات شورويانو ته د باور وړ وو. «خلقيان که څه هم مسکو پلوه وو، خو د شورويانو په دستور يې حکومت نه کاوه. د کې چې بې ټولې دسيسې د امين پرضد وې، خو امين نه يوازې دغه دسيسې شنډې کړې، بلکې خان يې د گوند او دولت د سروالی مقام ته ورساوه.» ۶۹۰

په کریملن کې خلقي او شوروي لويان

کاکړ وايي چې د مخه مو وويل چې شوروي حکومت له اول سر نه د خلقي حکومت په هسکېدو خوښ نه و. بريټنډ خپله دغه ناخوښي د ۱۹۷۸ کال د دسمبر په مياشت کې هغه خلقي پلاوي ته څرگنده کړه چې د تره کې په مشرۍ مسکو ته رسمي سفر کړی و. په کریملن کې د دسمبر د اوومې نېټې د دواړو پلاويو په رسمي غونډه کې د بريټنډ او تره کې تر منځ هغسې لفظي ټکر پېښ شو، لکه چې يو کال د مخه د ولسمشر محمد داود او بريټنډ تر منځ پېښ شوی و. کاکړ دغه ټکر په زياته اندازه د افغان پلاوي د مطبوعاتي غړي خيال محمد کتوازي د يوې لاسي ليکنې له مخې بيانوي. په دې غونډه کې نورمحمد تره کې دا يادونه کوي چې افغانانو د دې له پاره په خپل هېواد کې انقلاب کړی دی چې دا وروسته پاتې هېواد اباد او د خلکو ژوند بسيا کړي. د دې موخې د پلي کولو له پاره مور اقتصادي مرستو ته زياته اړتيا لرو. زموږ د دوستی درجه به د نورو هېوادو سره د هغوی د بېغرضو مرستو په اندازه پورې تړلې وي. له دې کبله مور د شوروي مشرتابه په بلنه ستاسو هېواد ته په دې منظور راغلي يو چې زموږ د هېواد د اقتصادي ودې د پروژو په جوړولو کې به زموږ گاونډي هېواد د پام وړ اقتصادي مرسته وکړي. د دې خبرو په جريان کې بريټنډ د نورمحمد تره کې خبرې پرېکوي او ورته وايي چې د وروړی، دوستی او مرستو خبرې پرېږده او خپل سياسي اختلافونه د طرح کړه چې د شوروي اتحاد سره بې لری. نورمحمد تره کې د

بريژنف د دې بې خايه لاسوهنې له امله رنگ سور او په تندۍ کې يې د قهر نښې څرگندې شوې، خپله رسمي وينا يې پرېښوده او ځان يې دې ته چمتو کړ چې د بريژنف د دې لاس وهنې په وړاندې غبرگون وښايي. خو په دې وخت کې امين، چې د تره کي څنگ ته ناست و، د تره کي څخه اجازه غواړي او د بريژنف په ځواب کې په جدي لهجې سره وايي چې مور د شوروي اتحاد سره هېڅ سياسي اختلاف نه لرو که شوروي لوري د افغانستان د دموکراتيک جمهوريت سره کوم سياسي اختلاف لري نو شوروي لوري دې طرح کړي. بريژنف خپلو ملگرو ته وکتل، شونډې يې وڅړيدې او د ځواب ويلو يې ډډه وکړه.

نورمحمد تره کي بېرته د خبرو مزې په لاس کې ونيو نو په جدي توگه يې وويل افغانستان د اقتصادي ودې په داسې وروسته پاتې پړاو کې دی چې تر هر څه د مخه بهرنیو مرستو ته اړتيا لري. مور په دې هيله په خپل هېواد کې انقلاب کړی چې په هغه کې ژور او هراړخيز بدلونونه منځ ته راشي. خو مور ته د بهرنیو هېوادونو سره د دوستی معيار اقتصادي مرستې دي. مور گومان کاوه چې شوروي اتحاد زموږ گاونډي او دوست هېواد دی شايد د افغانستان په وده او پرمختگ کې به له هېڅ ډول مرستو او همکاريو څخه ځان ونه سپموي نو ځکه مور شوروي اتحاد ته ستاسې په رسمي بلنه سفر وکړو. خو که تاسې ته د مرستو او دوستی يادونه ښه نه ښکاري نو مور د خبرو له پاره نور هېڅ نه لرو.

نورمحمد تره کي ددې خبرو د پای ته رسولو سره سم يې له دې، چې د بريژنف غبرگون څه دی، له خپل ځای څخه ولاړ شو او د ميز د غاړې څخه راووت، ورسره پلاوی غړي يې ټول راپورته شول. په دې وخت کې پاناماريوف د گوندي چارو د بهرنیو اړيکو رييس په بېرته بريژنف ته ورنږدې شو او په غور کې يې پس پسې ورسره وکړ او په چټکۍ سره د تره کي په لور راوگرزېد. ده هڅه وکړه چې غونډه بېرته عادي بڼه ونيسي خو گټه يې ونه کړه او غونډه د کومې پايلې او نتيجې څخه پرته پای ته ورسېده.

د اوسېدو ځای ته راوگرزېدو او هلته تره کي وويل چې مور به هڅه کوو چې د خپلو امکاناتو له مخې خپل وطن او ټولنه اباد کړو. تره کي صاحب زياته کړه چې سبا به په شپږ بجو بېرته وطن ته ستنېږو خو د حفيظ الله امين او د ورسره پلاوي غړو او هم د کاسيکين په هڅه ددې مخنيوی وشو چې افغاني پلاوی خپل رسمي سفر پرېکړي. بريژنف هڅه وکړه چې په هغې مېلمستيا کې چې د شوروي اتحاد د مشرتابه له خوا د افغاني پلاوي په وياړ جوړه شوې وه، نورمحمد تره کي خوشاله کړي او ډير ځله يې د هغه په سلامتيا جامونه پورته کړل خو تره کي ترپايه خپل عادي حالت ساتلی و.

شورويانو به شايد د اواز د ثبتولو الات د مېلمنو په استوگنځي کې ايښي وي او د

پلاوي خبرې به ورسېدلې وي. نو ځکه يې د افغانانو د تيرايستلو له پاره ځانونه زښته خواره کړل او د هر راز مرستې وعده يې کوله. په دې سفر کې د افغانستان د دموکراتيک جمهوريت او شوروي اتحاد تر منځ د دوستي اومتقابلې مرستو لوزنامه د دسمبر په پنځمه نېټه لاسليک شوه چې بيا وروسته هغه مهال، چې شوروي اتحاد افغانستان د وسله وال يرغل په نتيجه کې ونيو، د يوې تبليغاتي وسيلې په حيث وکاروه چې زموږ د هېواد نيواک قانوني وبولي. په دې ترتيب شوروي اتحاد پورتنی لوزنامه د خپلو استعماري موخو ته د رسېدو له پاره په کار يوره. کاکړ وايي چې دا شايد هغه تصادف وي چې هم محمد داود او هم خلقيان هر يو له کريمې سره له ټکر نه يو کال وروسته نسکور شول.

د تره کي- امين د اختلاف پيل

د مخه مو وويل چې د تره کي او امين اختلاف د هرات د پاڅون په بهير کې پيل شو. کاکړ وايي چې کيسه داسې وه، چې د هرات د پاڅون په وخت کې امين د اقبال وزيرې په ملگرتيا عسکري کلوب ته لاړ او له هغه ځايه يې د مخابرې دستگاه له لارې د شوروي اتحاد د دفاع وزير ديمتري اوستينوف سره د هرات د پاڅون په اړه وغږېد. اوستينوف امين ته وويل، چې ښه به دا وي چې تره کي په دغه اړه له بريښف سره په مسکو کې وويني. هغه دا هم وويل چې د دغه مقصد له پاره به يوه ځانگړې الوتکه درواستول شي او سهار له وخته به له تره کي سره بېرته کابل ته درشي. همدغسې وشول. په مسکو کې تره کي د بريښف له خوا هڅول کېږي چې د هرات د پېښې نه په گټه اخېستو امين د ملي وزارت څخه گوښه کړي. تره کي په بل سهار د انقلابي شوري غونډه کې له امين او اقبال پرته نور، په سفر خبر نه وو، پرته له دي، چې ددې موضوع په اړه يې د چا سره مشوره کړې وي، ناڅاپه غږ کړ چې: «ما اسلم وطنجار د باصلاحيته لوی درستيز په توگه وټاکلو او په خپله به د ملي دفاع وزارت په چارو کې ورسره مرسته کوم.» ۶۹۱ په دې توگه تره کي د بريښف هيله پرځای کړه او امين يې د ملي دفاع د وزارت څخه ليرې کړ. امين د دفاع وزارت سره خپله همکاري پرېکړه. کاکړ وايي چې وطنجار که څه هم په کودتا کې يې د مخکښې رول په بري سره پای ته رسولی و، د امين د همکارۍ نه پرته د دې جوگه نه و، چې د ملي دفاع وزارت چارې ترسره کړي. د ملي دفاع سرمشاوړ تورن جنرال کاريلوف په همدغې روحيې سره د وزيرې له لارې تره کي ته پيغام واستوه. په پای کې د نورمحمد تره کي او امين نږدې کسان، چې مشخص شوي نه دي، د دوی تر منځ ښکته پورته شول او دوی يې سره پخلا کړل او بيا تره کي د مارچ په ۲۷ مه امين لومړی وزير، اسلم وطنجار د ملي

دفاع وزير او محمد يعقوب لوی درستيز په توگه وټاکل. ۶۹۲

کاکړ وايي چې تره کي که څه هم امين د لومړي وزير په توگه وټاکه په خپله يې «لا هم د وزيرانو شورا د غونډو سروالي کوله او امين په دغه کار سره ډېر خپه کېده.» ۶۹۳ په خلقي نظام کې د سر په کسانو کې د ټکر شونتيا زياته وه. د کاکړ په نظر لومړی لامل يې دا و، چې نظام نوی او ناشنا و او دغسې قانون يې نه لاره، چې د هغه له مخې د مقامونو صلاحيت او دندو کرښې ټاکل شوې وي. بل لامل يې دا بولي چې په کېده او ملگرتوب سره د کار د کلتور نشتوالی او د دوی تر منځ ځانپالنې او سيالی احساس شتون و. د همدغه احساس له مخې به و، چې لومړي وزير امين د می په اوله ورځ، چې حکومت د کارکوو د ورځې په نامه لمانځله، تره کي خبر نه کړ او د حکومت استازي توب يې په خپله وکړ. که څه هم دغه امتياز د دود له مخې د تره کي و.

خو امين ته د ننه په گوند او حکومت کې مخالفين پيدا شول چې هغه د اکسا سروال اسدالله سروري او درې وزيران: محمد اسلم وطنجار، سيد محمد کلابزوی او شېرجان مزدوريار وو. دوی د خپلو وزارتونو د چارو راپورونه امين ته نه، بلکې د پخوا په شان تره کي ته ورکاوه، که څه هم امين د لومړي وزير په توگه د دوی نېغ مشر شوی و. سروري په اکسا کې د ک. ج. ب سرمشاور بوگدانوف ته د امين پر ضد خپل مخالفت ښوده او هغه به په کابل کې د ک. ج. ب استازي جنرال ايوانوف او داسې هم اوسادجي په مسکو کې اندروپوف ته استوه. ۶۹۴ دوی ټولو داسې ويل چې ډله ييزه مشري له منځه وړل شوې او هر څه امين په لاس کې نيولي دي. په دغه وخت کې د شوروي سفارت غړو او د ک. ج. ب خاص استازي جنرال ايوانوف دغه ډله لمسوله، چې د امين او تره کي اړيکې خړې پرې کړي. وزيری ليکي چې تر هغو چې «... د شوروي سفارت کارکوونکو او د کي چې بې اجنتانو د اسدالله سروري او د هغه د ملگرو په ذريعه په دې لا بريالي شوي نه وو چې تره کي او امين يو پر بل باندې بې باوره کړي نو هغه سفارت به شبنامې د تره کي امين باندې په نامه خپرولې او د اکسا او د شوروي سفارت له موټرو به تيت کېدې. خو کله چې پاس يادشوو څلورو تنو وکړای شول چې د کي چې بې په دستور د تره کي او امين تر منځ بې اتفاقي راوړي بيا شبنامې د امين باندې په نامه خپرېدې او د اکسا او شوروي موټرو له خوا تيت کېدې. شورويانو به کله کله مور ته په خپله راکولې چې گواکې دوی ته رسېدلې دي. زاپلاتين ليکي:»د تره کي او امين ترمنځ هلاک کوونکې شخړه د دوی [سروري، وطنجار، کلابزوی او مزدوريار] پر وجدان باندې پرته ده...دا هر څه زمور د خاصو خدماتو د اغېزې پرته نه کېدل.» ۶۹۵

په افغانستان کې د شوروي اتحاد ځانگړي پلاوي

Epishyef پيښېف په ۱۹۶۸ کال کې پراگ ته د يوه پلاوي په مشرۍ استول شوی و او بيا يې خپل حکومت ته د وارسا د تړون له خوا د لاسوهنې نظر ورکړی و. د پيښېف پلاوي په کابل کې د يوې اوونۍ تم کېدو وروسته شوروي حکومت ته دا نظر وړاندې کړو چې د افغان پوځ د معنوياتو د کمزورۍ له امله شونې ده چې په هغه کې مخالفين نفوذ وکړي. خو د شوروي اتحاد اصلي پام د خلقي حکومت ترکيب ته و چې غوښتل يې د «انقلابي» يا «د ملي دموکرات کولو» په نامه د خپلې خوښې افغانان په کې ننه باسي. د دغه مقصد له پاره يې د واسيلي سفرانچوک په نامه يو ازمايلي ډپلومات يا سياسي استازی کابل ته واستوه. دی پخوا په کانا کې سفير او له ۱۹۷۱ نه تر ۱۹۷۶ پورې په ملګرو ملتو کې د شوروي پلاوي د دايمي استازي مرستيال و. کابل ته د هغه د راتګ نه د مخه د امريکې سفارت راپورونو ښودله چې «شورويانو لا پخوا دغسې پلانونه په لاس کې نيولي وو چې مطلب يې د خلقي مشرتابه عوض کول و.» ۶۹۶ د سفرانچوک اصلي ماموريت دا و چې په افغان حکومت کې «اساسي بدلون» راوستل شي، چې مشر به يې دغسې يو نوی صدراعظم وي، چې د حکومت له جاري سياستونو سره پېژندل شوی نه وي لکه نور احمد اعتمادی. په دغسې حکومت کې به تره کي، امين او کارمل هم غټ مقامونه ولري. ۶۹۷ په دې اړه په خپله سفرانچوک د امريکې سفارت د ځينو غړو سره غږېدلې و. ان مولف سليک هريسن ته يې هم ويلي و چې امين د حکومت د پراخ بنسټ وړانديز ته غوږ نه نيسي. شوروي اتحاد د دې له پاره چې د سفرانچوک ماموريت نور هم اغېزناک شي يو بل لوی پلاوی د دفاع د وزير د مرستيال جنرال ايوان پاولوفسکي په مشرۍ د اګست په ۱۷ مه نېټه د بالاحصار د پاڅون نه وروسته کابل ته واستوه. پاولوفسکي هغه جنرال و چې په ۱۹۶۸ کال کې يې د چکوسلواکيا د لاندې کولو قومانداني په غاړه لرله. ۶۹۸ خو هغه په کابل کې د وضعې د مالومولو وروسته اوسټينوف ته څرګنده کړه چې دا به «مصلحت» نه وي، چې شوروي اتحاد خپل پوځ افغانستان ته واستوي او دا چې د امين سره دې په لوړه کچه خبرې وشي، خو اوسټينوف د هغه پلاوی په نومبر کې مسکو ته وغوښت. په مسکو کې جنرال پاولوفسکي له اوسټينوف سره خپله ليدنه داسې بيانوي: «د گزارش د پای ته رسېدو وروسته مې په افغانستان کې په دې اړه چې بايد افغانستان ته خپل پوځونه ونه لېږو، خپل نظر وړاندې کړ... وړانديز مې وکړ چې د ګوند د سياسي دفتر نه دې يو تن

امین ته چې نور په مسکو کې پرې باور نه لري، بلنه ورکړي. همدارنگه مې د هغه د ځانگړي پيام په اړه چې د افغانستان د دفاع د وزير سرمشاور په لاس يې ليونيد برېښف ته استولی و، خبر کړ. خو وزير مې خبرو ته غور و نه نیو. «۶۹۹ له هغې وروسته جنرال پاولوفسکي د افغانستان په اړه خبرو ته نه غوښتل کېده او تنزیل ورته ورکړ شو.

د جولای په ۲۷ مه په حکومت کې بدلونونه راغلل. امین د دفاع وزیر، اسلم وطنجار د کورنیو چارو وزیر او شیرجان مزدور یار د سرحدونو د چارو وزیر په توگه وټاکل شول. وضعه کېکېچنه وه، که څه هم امین د نظام پیاوړی کس و، لوی پاڅونونه خپل شوي وو او په پېښور کې د افغان اسلامي جمعیت او اسلامي گوند له نورو هېوادو د ملاتړ نه بهر من نه وو. تره کې او د امین نور څلور مخالفان په دې لټه کې وو، چې امین په خپله یا د شوروي په مرسته له واک نه وغورځول شي یا ان له منځه یووړل شي.

کاکړ وايي چې دغه وخت په هاوانا کې د ناپېیلو هېوادونو د مشرانو د غونډې وخت رانږدې شوی و. تره کې هڅه کوله چې امین هاوانا ته ولېږي، خو امین له دې وېرېده چې د ده په نشتوالي کې به له خپلې دندې څخه لیرې کړای شي. په همدغه حال کې و، چې امین په پولي تخنیک کې ناڅاپه څرگنده کړه، چې د افغانستان ستر لارښود د انقلابي شورا مشر تره کې صاحب د کیوبا په هاوانا کې د ناپېیلو هېوادو په کنفرانس کې د افغانستان د پلاوي مشري کوي.

تره کې په هاوانا کې

نورمحمد تره کې د ۱۳۵۸ کال د سنبلې په میاشت کې د ناپېیلو هېوادو په کنفرانس کې د گډون په موخه کیوبا ته روان شو. خو په مسکو کې د شوروي مشرانو له خوا د هغوی په غوښتنه د دې له پاره تم شو چې نوموړی د دغه سفر څخه ډډه کولو ته وهڅوي.

په مسکو کې د شوروي اتحاد سفیر پوزانوف او د شوروي اتحاد مشرتابه له خوا تره کې ته ویل شوي و چې کیوبا ته لار نه شي خو هغه کیوبا ته په خپل سفر ټینگار کړی و. نو بیا د شوروي مشرتابه له خوا ورته ویلي شوي و چې د کیوبا څخه د راکړېدو په وخت کې د دې مسکو له لارې ستون شې چې یو ځل بیا ورسره خبرې وکړي. ایوانوف لیکي: «تره کې ته لازمه نه وه چې په دغسې وضعې کې کابل ترک کړي. هغه د کې چې بې د نماینده په کنايه باندې په نارامی سره موسکه شو او کیوبا ته یې په خپل سفر ټینگار وکړ. دوی (د شوروي مشرتابه) هغه وخت پرېکړه وکړه چې یو ځل بیا په مسکو کې ورسره خبرې

وکړي. «۷۰۰

په هاوانا کې د تره کې د یاد وړ کار د پاکستان له مشر جنرال ضياء الحق سره د افغانستان او پاکستان د کشالو په اړه خبرې اترې وې.

تره کي په مسکو کې

کاکړ وايي چې دا دوهم ځل و، چې تره کي د شوروي لور واکمن بريژنف سره په يواځې خان ويني او د خپل هېواد د اساسي موضوع گانو په اړه ورسره غږېږي. د دوی د خبرو اجندا هغه وه چې په کابل کې د ک ج ب والو د مخه ټاکلې وه او د تره کي د سفر په پيل کې مسکو ته استولې وه. دغو ک ج ب والو مسکو ته وړاندیزونه وکړل چې مهم يې دا وو چې «بايد يوه لار وموندل شي، چې امين د هېواد د مشرۍ له مقام نه گوښه کړل شي، په دې چې هغه د داخلي سياست د وړاندې بيولو مقصر دی» نو هغه «بايد د داخلي سياستونو د ناکاميو او قانون پر خلاف د کارونو مسؤل وگڼل شي.» بله دا چې «تره کي بايد وهڅول شي، چې دا اساسي ده چې يو ډموکراتيک ايتلافي حکومت جوړ شي، چې په هغه کې د لارښود رول په حتمي ډول د پرچميانو په گډون د ا خ ډ ک گوند سره وي» په وړاندیز کې دا ويل شوي و چې د وطنپالو روحانيونو، قومونو، ملي لږکيو او روښان اندو استازيو ته هم په کې برخه ورکړل شي. ۷۰۱

کاکړ وايي چې دا په واقعيت کې هغه د سفرانچوک تجويز و چې اصلي موخه يې په حکومت کې د شړل شويو پرچميانو شريکول وو، چې امين يې مخالف و. بريژنف تره کي ته وويل «... د نورو په لاسونو کې د قدرت له حد نه ډېر تمرکز حتی که ستا ډېر نږدې ملگری هم وي، د انقلاب له پاره خطرناک کېدای شي. دا به له مصلحت نه ډېره ليرې وي، چې يو څوک د هېواد په مشرتابه، په وسله والو ځواکونو او په دولتي امنيتي څانگو کې د ممتاز قدرت خاوند وي.» ۷۰۲ مېټروخين وايي چې «دا د تره کي له پاره نېغ او څرگند دستور و، چې له امين نه ځان خلاص کړي.» ۷۰۳ ځکه نو د سروري له خوا د امين د منځه وړلو پلان جوړ شو چې د هغه له مخې به امين هغه وخت په ماشينگرو سره د منځه وړل کېږي چې د تره کي د هرکلي له پاره هوايي ډگر ته روان وي.» کاکړ وايي چې سروري د دغه پلان د پلي کولو دنده خپل خورې عزيز اکبري د اکسا مرستيال ته وسپارله چې لس کسه وروزي، بې له دې چې هغوی د دې پلان په مقصد پوه شوي وي.» ۷۰۴ خو اکبري د بل اېجنټ و، هم يې خپل د شوروي مشاور او هم امين په پلان خبر کړ او بيا «شوروي مشاورينو په گډه د لوی درستيز [محمد يعقوب] سره د هغه په دفتر کې د دغه پلان د ناکامۍ له پاره بل پلان

جوړ کړ، چې د هغه په نتيجه کې امين هوايي ډگر ته روغ رمټ ورسېد. «۷۰۵ کاکړ دا هم وايي چې شوروي مشاورينو شايد ځکه د امين د منځه وړلو پلان په شنډولو کې برخه اخېستې وي چې دوی د مرکز د پرېکړې نه خبر نه وو. په مسکو کې «اندرپوف ... بريژنف او تره کي قانع [کړي وو] چې... د ک ج ب د مالوماتو له مخې کابل ته د تره کي د رسېدو د مخه به امين لېرې شوی وي.» ۷۰۶ کاکړ زياتوي چې په همدغې ډاډينې سره و، چې د هغه مسلمان کنډک له استولو نه کابل ته ډډه شوې وه، چې دنده يې د تره کي ساتنه وه.

وطن ته د تره کي بېرته راتگ او د هغه پای

تره کي وطن ته راستون شو. په کابل کې د سپتمبر د ۱۱مې نه تر ۱۶مې پورې ډېرې مهې پېښې وشوې چې په هغو سره تره کي لومړی بې واکه شو. تره کي بيا د اکتوبر په نهمه له منځه يوړل شو او امين د کوند او دولت سروال شو. کاکړ وايي چې دغه پېښه د وزيری او ميتروخين د ليکنو له مخې بيانوي خو ستونزه دا ده چې دوی دوه معروضو حکومتونو ته منسوب دي او ليکنې يې په اساسي ټکو کې سره نه جوړيږي. په داسې حالت کې څېړونکی اړ دی چې د پلټنې پوليس شي تر څو واقعيت ومومي.

تره کي کابل ته په رسېدلو سره په همغه ورځ يانې د سپتمبر په ۱۱مه د انقلابي شورا غونډه جوړه کړه او په هاوانا او مسکو کې يې د خپلو خبرو راپور وړاندې کړ. د ميتروخين په وينا «... د خبرو اصلي موضوع يې پټه کړه.» ۷۰۷ په هماغه ورځ تره کي له پوزانوف سره وليدل. د بلې ورځې په سهار يانې د سپتمبر په ۱۲مه تره کي لومړی سروري خپل دفتر ته وغوښت او بيا يې امين د تليفون له لارې وغوښت. د بلې ورځې په سهار يانې د سپتمبر په ۱۳مه سروري او درې نور ملکري يې «... د تره کي دفتر ته د کلاشنیکوفونو سره راځي.» ۷۰۸ امين چې د هغو د وسله وال ورتگ نه د تړون له لارې خبريږي، د تره کي دفتر ته له ورتگ نه ډډه کوي. په دغه وخت کې له کابل نه په مسکو کې اندروپوف ته په يوه تلگرام کې وويل شول چې «تره کي کونښن وکړ امين وهڅوي، چې هستوگنځي ته ورشي، خو امين له ورتگ نه ډډه وکړه.» ۷۰۹ بيا د همدغې ورځې په ماښام يانې د سپتمبر په ۱۳مه سروري، کلابزوی، وطنجار او مزدور يار د شوروي سفارت ته لاړل او هلته «د تره کي له خوا سروري وغوښتل چې يوه ډله شوروي ملکري د امين په نيولو کې له دوی سره مرسته وکړي.» ۷۱۰ خو د شوروي له خوا په همدغه ورځ پوزانوف ته ويلي شوي و چې «دغه حقيقت په نظر کې ولره، چې مور په خپله [دا] په غاړه اخېستلی نه شو، چې امين د خپل کنډک په زور ونيسو، ځکه چې دغه کار به د افغانستان په د نننيو چارو کې نېغه

لاسوهنه وي او د اوږدې مودې پایلې به ولري. په واقع کې دا له عملي نظره یو ناشونکی کار دی.» ۷۱۱ د وزیري په وینا د همدغې ورځې یانې د سپتمبر په ۱۳مه په نیمه شپه کې دوه پېښې وشوې. له یوې خوا د شوروي سفارت نه «... د اسلم وطنجار له خوا د وسله وال پوځ قطعاتو ته قوماندو ورکول کېږي چې د تره کي صاحب ژوند په خطر کې دی او د امین پر ضد یې حرکت ته رابولي خو د ده په قوماندو څوک د ځایه و نه ښورېده.» له بلې خوا د صاحب جان صحرايي په هاند دتره کي په هستوګنځي کې تره کي او امین سره پخلا کېږي.

تره کي، هغو څلورو تنو ته شوروي سفارت ته تیلیفون کوي او ورته وايي چې «بچو خپلو کورونه راشئ، امین دا اوس زما په کور کې را سره ناست دی، موږ سره پخلا یو او بیا تیلیفون امین ته ورکوي او هغه هم د وطنجار سره خبرې کوي او دا پخلاینه تاییدوي.» ۷۱۲ هغوی دا پخلاینه ومنله او د شپې په دوولسو بجو خپلو کورونو ته په مکروربانو کې ستانه شول. کاکړ وايي چې میټروخین هم د تره کي او امین پخلاینه یادوي، خو د ده روایت بل ډول دی او ناسم معلومیږي. په دې ډول، چې تړون د شپې په نهو بجو او شلو دقیقو پوزانوف ته خبر ورکوي، چې امین د تره کي هستوګنځي ته راغلی او پوزانوف بیا د جنرال ایوانوف، جنرال پاولوفسکي او جنرال کوریلوف په ملګرتیا د تره کي کور ته لاړل او دغه پخلاینه یې شونکې کړه. ۷۱۳ کاکړ سم وايي چې «مهمه دا ده چې دوی د نورو سرچینو په حواله په دغه شپه ارګ ته نه وو تللي.» ۷۱۴ په داسې حال کې چې وزیري په غوڅه توګه وايي همدا چې «پوزانوف او جنرال ایوانوف چې خبر شول، چې تره کي او امین د صحرايي په هاند سره پخلا شوی دي، په دې هڅه کې شول چې دا پخلاینه په شخړه بدله کړي.» ۷۱۵ لا مهمه دا ده چې [د بلې شپې یانې د سپتمبر په ۱۴مه] د وزیري په وینا «د هغوی په لمسون د نواب وژنه او د درې تنو تېښته تنظیم شوه.» ۷۱۶

سروري او ملګري یې دا ځل د ک ج ب د یوه چارواکي کور ته لاړل چې لومړی نوم یې ایلین و. اول سروري تره کي ته په تیلیفون کې وویل، چې امین یې پر ضد توطیه کوي او دوی حاضر دي د ساتنې له پاره یې وسله وال راشي، خو تره کي دغه وړاندیز ونه مانه، بیا کلابزوی ایلین ته کړه، چې «امین زموږ د بندي کولو امر کړی، نو موږ دوه لارې لرلې: یا تر مرګه پورې مبارزه یا دلته پناه راوړل. موږ وروستی لار غوره کړه، ځکه که موږ ووژل شو، موږ به ګټور نه شو، خو موږ سره له دې هم خپلو شوروي ملګرو ته خدمت کولی شو.» ۷۱۷ کاکړ وايي چې شوروي لویانو ته دا د افغانستان په ننني چارو کې نېغه لاسوهنه وه چې د حکومت وزیرانو ته د صدراعظم پر ضد په سفارت او ک. ج. ب چارواکي په کور کې پناه ورکړې وه او په دې ډول یې هغوی هڅولي او ورسره مرسته کړې وه. دغو

شورويانو غوښتل، چې دغه کار د دوی په مرسته په خپله د افغانانو له خوا وشي. پوزانوف او جنرال ايوانوف چې خبر شول، چې تره کي او امين د صحرايي په هاند سره پخلا شويدي، په دې هڅه کې شول چې دا پخلاينه په شخړه بدله کړي. دوی بيا سروري، کلابزوی او د هغوی ملگري ولمسول چې پرونی پخلاينه بېرته تخریب کړي او د هغوی په لمسون د نواب وژنه او د درې تنو تېښته تنظيم شوه. شوروي سفارت او د کي چې بې کارکوونکو ته دنده وسپارل شوه چې د تره کي او امين ترمنځ ټکر حتمي کړي. د دې دندې د پلي کولو په موخه بريژنف پېغام راوستولو، چې په ظاهري توگه يې د دواړو افغاني مشرانو ترمنځ د يوالي غوښتنه کوله، ولې په عمل کې په دې ټکي پوره غور شوی و چې څرنګه د دې پېغام په بهانه خپل ناولی پلان پلي کړي.

د پورتنی موخې د پلي کولو له پاره د شوروي سفير پوزانوف، د اندروپوف نماينده جنرال ايوانوف، د شوروي د ځمکنيو پوځونو لوی قوماندان جنرال پاولوفسکي او د افغانستان د دفاع د وزارت سرمشاور جنرال کاريلوف د سپتمبر په ۱۴مه د «بريژنف د پېغام» په پلمه د تره کي دفتر ته لاړل. «دوی سمدلاسه د اوازه خپره کړه چې شوروي سفير او ورسره کسانو د بريژنف پېغام راوړی او غواړي د افغاني مشرانو ترمنځ اړيکې نورمال کړي.» ۷۱۸

وزيري وايي چې «پلان داسې و چې امين به د بريژنف د پېغام په نامه د تره کي دفتر ته وغواړي، د گلخانې د مانی په پاسني چت باندې به د روسي کوماندو سرتيري خای په خای کړي چې د جنرال ايوانوف د شخصي ساتونکو ترنامه لاندې په خانکري موټر کې د ده سره يوځای گرځېدل. د تره کي ساتونکو قاسم او بېرک ته دنده ورکړ شوې چې امين د تره کي دفتر ته د ننوتلو په مهال کې د مينځه يوسي.» ۷۱۹

کاکړ وايي چې د ميتروخين ليکنه «چې يوازې د شوروي چارواکو او په خاص ډول د ک ج ب چارواکيو د راپورونو پر بنسټ تهيه شوې ده» ۷۲۰ د خپل دولت د گټو په نظر کې نيولو سره رښتيني واقعيت پتوي. د بېلګې په توگه ميتروخين په دې اړه چوپ دی چې امين وروسته له هغې گلخانې مانی ته تلل ومنل چې پوزانوف په تليفون کې ډاډ ورکړ چې ژوند به يې خوندي وي.» ۷۲۱ خو د ک. ج. ب پخوانی چارواکی الکزاندر موروزوف ليکي، چې وروسته له هغه چې پوزانوف او درې تنه جنرالان د تره کي دفتر ته لاړل «... تره کي له امين نه وغوښتل، چې دی هم په غونډه کې کډون وکړي، خو امين په دې چې ممکن هلته ژوند يې په خطر کې شي، له ورتګ نه ډډه وکړه، خو د تره کي په ټينگار سره يې موافقه وکړه، په دې شرط، چې پوزانوف يې د ژوند د خونديتوب ضمانت وکړي. وروستي په تليفون کې دا

ضمنانته ورکړ. «۷۲۲ نور نو د اقبال وزيرې په ژبه ...» نورمحمدتره کي امين ته تيليفون کوي چې پوزانوف د خپلو ملگرو سره يو ځای د ده دفتر ته ورغلی او د بريژنف پيغام يې راوړی دی خو امين د تره کي دفتر ته د ورتگ څخه ډډه کوي. په دې مهال کې پوزانوف د خپل ژباړونکي پذيرعه د امين سره تيليفوني خبرې کوي او امين ته وايي چې نوموړی يې امنيت تضمينوي او که ځان مصؤون نه احساسوي د خپلو ساتونکو سره د راشي. امين د پوزانوف سره موافقه کوي او د ځان سره د ساتونکو په توگه حبيب الرحمن، مصطفى او وزير څيرک بيايې... امين د گلخانې مانی ته ننوزي او د ترون له خوا د تره کي دفتر ته بدرگه کيږي. د امين مخې ته ترون او ورپسې وزير او په وزير پسې امين او د هغه شاته مصطفى او حبيب الرحمن روان دي او دوهم پور ته په زينه خيږي. د تره کي ياوران هغه وخت، چې دوی په زينه راخيږي، ورباندې ډزې کوي، ترون سمدلاسه وژل کيږي، وزير سخت ټپي کيږي او امين او نور ساتونکي يې تېښتي. امين، چې وزير يې په لاسونو کې نيولی، په بیره سره خپل موټر ته وځيږي او په چټکتيا سره د دلکشا مانی ته په خپل موټر کې تېښتي. د تېښتي په مهال د گلخانې د بام څخه په امين او ساتونکو باندې د شوروي کوماندو د سرتېرو له خوا ډزې کيږي او امين دا صحنه په خپله ويي. «۷۲۳ امين له صحې نه روغ وځي او د دفاع وزارت ته ځي.

کاکړ وايي چې دا به قصدي وي، چې د ميټروخين په ليکنه کې دغه مهمه پېښه نه ده بيان شوې. دغومره په کې ويل شوي، چې «يو څو دقيقې وروسته د تره کي د دفتر له هغه بل وره نه د ماشينگر اواز واورېدل شو. ملگري ل. ن. کوريلوف کړکې ته لاړ او کتل يې چې حفيظ الله امين د انگرې دېوال تر څنگه ځغستل. «۷۲۴ کاکړ وايي چې دلته هغه شی چې مهم دی هغه دا دی چې د تره کي په دفتر کې د دغې پېښې په وخت کې د پوزانوف او درې جنرالانو شتون و، چې موظف شوي وو، د امين په لاندې کولو کې له تره کي سره مرسته وکړي.

له همدې امله به و چې تره کي هغې پخلاينې ته اهميت ورته کړ چې تېره شپه يې د صاحب جان صحرايي په منځکړتوب له امين سره کړې وه. دی هغه پلان ته رښتيني و چې په مسکو کې د امين د منځه وړلو له پاره ايستل شوی و. لومړی تره کي له امين سره، په داسې حال کې چې اقبال وزيرې ورسره په دفتر کې و په تليفون کې وغږېد او وزيرې له امين نه واورېدل، چې «د نر تړپ وي يا خړپ». هغه دا هم ورته وويل، چې «زه خو ستا دفتر ته د درتگ په مهال په ډزو استقبال شوم، خو تاسې د سفير او د هغه د ملگرو سره راشئ، زه به دې په کولو استقبال کړم.» ۷۲۵ په عين حال کې پوزانوف هم له امين نه په تليفون کې

وغوښتل، چې غواړي ورسره وگوري. پوزانوف بيا له خپلو ملگرو سره ورسره وليدل، په پېښه يې خواشينی ښکاره کړه او د امين له دفتر نه ووتل. دغه وخت «تره کي د کارډ قوماندان جاندا د ته امر کوي چې د دلکشا مانی د خاورې سره برابره کړي. خو هغه د تره کي د امر د منلو څخه ډډه کوي او ورته وايي چې هلته امين او نور ملگري دي او نشي کولای په خپلو ملگرو بريد وکړي. تره کي بيا د هوايي پوځ د قوماندان مرستيال حاجي محمد ته تليفون کړی و چې په بگرام کې د شوروي اتحاد د پراشوت کنډک د د ده مرستې ته ورودانگي. نوموړي ورته ويلي و چې هغوی دا کار نه کوي.» ۷۲۶ يواځې د خواجه رواش په هوايي ډگر کې د سياسي څانگې امر دوست محمد په هڅې سره يو جنکي ماشين راووت او په ارگ باندې يې ډزې وکړې، خو ماشين تسليم کړای شو او دوست محمد ونيول شو.

کاکړ وايي چې د تره کي پر ضد د امين کوښښونه غوڅ او بريالي وو، د هغه د تليفون د مزي په پرېکېدلو سره په خپل دفتر کې گوښه کړل شو. د امين په قوماندو وسله والې قطعې ښار ته ننوتلې او د ښار امنيت يې په لاس کې ونيوه او په افغانستان راډيو کې سروري او ملگري يې له خپلو وظيفو نه کوښه شوي اعلام شول. په دې ډول د سپتمبر په ۱۵ مه امين په واقع کې په گوند او حکومت کې د تره کي ځای ونيوه.

د سپتمبر په سهار امين د گوند سياسي دفتر غونډه د دلکشا په مانی کې جوړه کړه او غړيو ته يې د گلخانې او د روغتون د وژنو په اړه راپور وړاندې کړ. بله ورځ د سپتمبر په ۱۶ مه د مرکزي کوميتې پلېنوم جوړ شو حفيظ الله امين د گوند د عمومي منشي په توگه وټاکل شو. انقلابي شورا هم امين د خپل سروال په توگه غوره کړ. په دې ډول امين د گوند او دولتي سروالی مشروعيت ترلاسه کړ، خو هغه ته د تره کي شتون د اندېښنې وړ و.

کاکړ وايي چې درې اوونۍ وروسته د اکتوبر پر لسمه په يوې رسني څرگندونې کې په لنډ او عادي ډول وويل شول، چې نورمحمد تره کي د هغې ناروغتيا له کبله چې ورپېښه شوې وه، مړ شو او په قول ابچکان کې په پلرنۍ هديرې کې خښ شو. دی زياتوي چې د تره کي وژنه د امين غټه تېروتنه وه، له اخلاقي او انساني کتنو نه سرېره سياسي مصلحت او د سليم عقل حکم دا و، چې تره کي په داسې حال کې چې څلور فتنه گر له صحې نه وتلي او د عمومو په ذهن کې محکوم شوي او تره کي په ارگ کې بندي شوی او له بهرون سره يې اړيکې شلېدلې وو، پر ځان پښ او نه چندان فعال تره کي امين ته خطر کېدلی نه شو، البته د روجي نظره به امين ته گرانه وه، چې تره کي وزغمي، خو دولتي لويان د ملي چارو په اجرا کې له مصلحت او سليم عقل نه کار اخلي، يا بايد کار واخلي نه له بدل او انتقام نه. ۷۲۷

يوويشتم څپرکی

د حفيظ الله امين سل او درې ورځې واکمني

امين په ۱۹۲۹ کال کې په پغمان کې زېږدلی و؛ پلار يې حبيب الله نومېده چې د پوليسو مامور و؛ د پنځوسو کلونو و، چې شورويانو وواژه. کاکړ وايي چې په معاصر افغانستان کې امين له تره کي نه وروسته دوهم غير دراني پښتون و، چې د خپل شخصي زيار او د نظامي کودتا په نتيجه کې د حکومت، دولت او گوند سروال شو. امين د کابل د پوهنتون ليسانس او د امريکې د کولمبيا پوهنتون ماسټر و، د ډاکټرۍ د ډيپلوم د ترلاسه کولو له پاره يې د تيسس د ليکلو تر پولې رسولې وه چې د کابل پوهنتون رييس ډاکټر صمد حامد د هغه سکالرشپ ودراره. ده بيا غوښتل چې په انگلستان کې د ډيپلوم له پاره کار وکړي خو هلته ونه منل شو او بېرته وطن ته ستون شو.

امين د افغانستان د خلک ډموکراتيک گوند عمومي منشي نورمحمد تره کي نه د گوند د غړيتوب غوښتنه وکړه. کاکړ وايي چې د گوند ځينو غړو سلطان علي کښتمند، بېرک کارمل، طاهر بدخشي او غلام دستگير پنجشيري په گوند کې د هغه د غړيتوب سره مخالفت وکړ. امين سره له دې هم په گوند کې لومړی ازميبښتي او بيا پوره غړی شو چې وروسته د مرکزي کوميتي غړيتوب ته جگ شو. دی يو ځل د پغمان د خلکو له خوا د ولسي جرگې د غړي په توگه غوره شو. په گوند کې د ده مخالفينو او په ځانگړې توگه کارمليانو په هغه پسې ډېر پروپاگانډ کاوه او هغه يې سخت ناسيونالست او ان فاشست کاڼه.

کاکړ وايي چې د امين د ناسيوناليزم يوه نښه دا ده چې هغه هم د محمد داود په شان په خپلواکۍ ټينک ولاړ و، چې د ژوند په بيه ورته تمامه شوه. د امين د ناسيوناليزم بله نښه دا وه چې هغه پر پښتونستان ولاړ و او له لوی افغانستان نه غږېده. دا هم د امين ناسيوناليزم و چې د حکومت لوړپوړي چارواکي يې د وطن له بيلو بيلو قومونو نه وو. په دې ډول چې حکومت يې د ډاکټر شاه ولي، منصور هاشمي، سالم مسعودي، صديق عالميار، عبدالحکيم جوزجاني، دستگير پنجشيري، عبدالکریم ميثاق، محمد اسماعيل دانش او څو پښتنو ملگرو په همکارۍ چلاوه. دلته زه ليکوال دا يادونه کوم چې ډاکټر شاه

ولي پښتون او په قوم ساپی دی.

کاکړ دا هم وايي چې امين په خپل لنډ سياسي توپاني ژوند کې پر خپلو کورنيو مخالفينو بريالی شو، ده د اندروپوف او د هغه د پلويانو دسيسې هم شنډې کړې. که څه هم وروسته اندروپوفيان په نظامي زور پرې بريالي شول خو هغو په خپل دغه عمل سره هم خپل ځانونه او هم شوروي اتحاد تر دې حده بې اعتبار او ناتوان کړ، چې د امين ناکامي په پای کې د دوی ناکامي هم شوه. ۷۲۸

دی زياتوي چې امين د تره کي د وخت کابينه وساتله او د گوښه کړل شويو وزيرانو او د اکسا د سروال پر ځای يې خپل ټينک پلويان په کې د ننه کړل. فقير محمد فقير يې د کورنيو چارو وزير، انجنر محمد ظريف د مخابراتو وزير او صاحب جان صحرايي د سرحداتو د وزير په توگه وټاکل. خپل وراره او زوم يې اسدالله امين د اکسا پر ځای د کام (د کارکو استخباراتي موسسې) سروال په توگه وټاکه.

د کاکړ په وينا د نوي حکومت اصلي محور امين او دويم کس شاه ولي د صدراعظم مرستيال او د باندینيو چارو وزير و. امين همدا چې د گوند عمومي منشي او د انقلابي شورا سروال شو، د ۱۹۷۹ کال د سپتمبر په ۱۷ مه په خپله لومړنی ټلویزيوني وينا کې وويل چې د دې وروسته به په وطن کې «قانونيت، مصؤنيت او عدالت» وي؛ هغه بنديان چې بې مجبه بندي شوي ازاد به شي او د دې وروسته به هېڅوک له لاسوند پرته بندي نه شي؛ د اساسي قانون د جوړولو له پاره به يو ځانگړی کميسيون وټاکل شي؛ نور به فردي حکومت نه وي او حکومت به خلکو ته مسؤليت ولري او د قانون له مخې به چلېږي.

د بنديانو په اړه حکومت دوه کارونه وکړل: لومړی يې د نومبر په ۱۶ مه د له منځه وړل شويو لستونه د کورنيو چارو وزارت په دېوالونو وځړول، چې بيا زر ټول شول. د دغه لستونو د ځړولو نه مقصد دا و، چې دغه وژنې د اکسا چارواکو کړې او کام به څوک له لاسوندونو پرته نه بندي کوي. دويم دا چې حکومت د وعدې سره سم په کابل کې ۸۵۰ تنه بنديان جوپه په جوپه ازاد کړل او پاتې يې د جنوري په لومړی ورځ د گوند د شپاړسې کاليزې په وياړ خوشي کول، خو په هغه وخت کې نسکور شوی و.

د دې له پاره چې حکومت د قانون له مخې وشي امين د اکتوبر په سر کې د اساسي قانون د تسويد کميسيون جوړ کړ. د کميسيون کار پای ته رسېدلی و، چې شورويانو په افغانستان ودانگل او تصويب نه شو.

اساسي موضوع د امنيت وه، چې د امين په واکمني کې خرابه وه، خو نه هغومره چې مخالفانو په تېره پرچميانو او وروسته شورويانو ويل او د شوروي يرغل يې د کرارولو

دليل ښودل شوی و. د امين په وخت کې د ريشخورو د فرقي نارامي وه، چې د اکتوبر په ۱۴ مه پېښه شوه او هغه زر وځپل شوه. کاکړ وايي چې د دغې پېښې مشر غلام محمد فرهاد وښودل شو، خو هغه د خپل زوی سره تر دې يوه اوونی د مخه نيول شوی و. ويل کېدل چې فرهاد له دې کبله د دې پاڅون مشر وښودل شو، چې شورويانو ته وښودل شي چې دوی د نېشنلستانو مخالف دي.

په کابل کې د نوي حکومت په ضد د ک. ج. ب چارواکيو ورانی کاوه. دوی ځينې کونديان هڅول، چې شوروي اتحاد ته لار شي، ځکه چې دلته يې د دوی په فکر، ژوند په خطر کې دی. صولت شاه او ايکور کاتکوف د دغه کار له پاره کومارل شوي وو. صولت شاه چې د تاجکستان تاجک و، د پښتو متلونو په څېړنه کې د ډاکټرۍ شهادتنامه ترلاسه کړې وه او کاتکوف د شوروي سفارت دويم سکريټر و. صولت شاه عبدالکريم ميثاق ته ويلي و، څنگه چې يې دلته ژوند په خطر کې دی، شوروي اتحاد به ورته سياسي پناه ورکړي. ميثاق هغه ته نه يوازې د رد ځواب ورکړی و، بلکې امين يې هم پرې خبر کړی و. وزيری وايي چې کاتکوف ده ته هم دغسې بلنه ورکړې وه. امين وزيری ته ويلي و، چې کاتکوف داود پنجشيري ته د همدغه مقصد له پاره ويزه هم اخستې وه. صولت شاه او کاتکوف بيا په ۲۴ ساعتونو کې له افغانستان نه وايستل شول. شورويانو کارمل او د هغو ملگرو ته ډاډ ورکړی وو، چې په واک به يې ورسوي. د امريکې د څو استخباراتي څانگو په يوه يادښت کې د سپتمبر په ۲۷ مه ويل شوي و، چې «مور داسې راپورونه ترلاسه کړي وو چې شورويانو د خلق ډموکراتيک د پرچم د مخالفې ډلې لويان، چې په اروپا کې پراري دي، هڅولي دي چې ډاډه اوسي چې شورويان به يې په واک راوړي او که داسې ونه شول، شورويان به په نظامي کودتا لاس پورې کړي.» ۷۲۹ د همدغې ډاډينې له امله و، چې پرچميان ډېر فعال وو.

د ريشخورو د پاڅون پرته د امين په واکمني کې بله غټه نارامي ليدل شوې نه ده. البته هېواد نارام و، خو امنيتي وضع مخ په ښه کېدو وه. کاکړ وايي چې د امين د واکمنۍ په سر کې په پکتيا کې يوازې خوست او گردېز د حکومت د کنټرول لاندې وو... خو وروسته ټوله پکتيا ارامه شوه. د گردېز، احمدزي رود، سيد کرم، احمد خېلو او ميرزکې خلکو او مشرانو لا په بېرني ډول د کابل د خلکو هغه تنگسيا له منځه يووړه، چې په سره ژمي کې د سونک د لرکيو له امله پېښه شوې وه. کاکړ د پکتيا د والي په تاييد چې زيات وخت به د پکتيا نه کابل ته په دولتي موټر کې تلو راتلو ليکي: «زه هم د پوهنتون له څو استادانو سره له کابل نه د ننګرهار پوهنتون ته د درس ورکولو له پاره په اونۍ کې يو ځل

د شوروي تر يرغل پورې تلم، بې له دې چې د بد امنيتۍ کومه نېشه مې ليدلې وي، د وطن د نورو سيمو وضع لږو ډېر همدغسې وه، يوازې د بدخشان، د پنجشېر سردرې د مخالفانو په لاس کې وې، خو مخالفان په هيڅ سيمې کې له حکومتي وسله والو ځواکونو سره مخامخ کېدلی نه شول.» ۷۳۰

له شوروي اتحاد سره اړيکې

د ثور د کودتا نه وروسته په افغان- شوروي اړيکو کې کړکېچ ډېر او ټينگ و، که څه هم دا اړيکې د ځانگړې دوستۍ په بڼه ښودل کېدې. شوروي حکومت په اصل کې د ثور د کودتا سره جوړ نه و. په دې چې کودتا د پرچميانو نه، بلکې په اساسي ډول د خلقيانو او په ځانگړې توگه د امين کار و. کاکړ وايي چې «شوروي اتحاد د کودتا په اولو ورځو کې له خلقي حکومت نه دوه امتيازونه ترلاسه کړل: يو دا چې لکه چې د مخه ويل شوي په حکومت کې يې پرچميانو ته له خلقيانو سره برابر مقامونه وکتل.» شوروي اتحاد پرچمي لويان په تېره کارمل خپل منونکي ايجنتان کنل او په حکومت کې يې د هغو شته والی مهم کاڼه. بيا وروسته چې پرچميان د خلقيانو نه د ټول واک د خپلولو په هڅو کې پاتې راغلل او يو شمېر پرچميان د کارمل په گډون لکه چې د مخه ويل شوي د باندې پراري شول او يو څو نور يې په څرخي پله زندان کې بندي شول، بريژنف د کريملن په ماڼۍ کې له افغان پلاوي سره د «اختلاف» مسله پورته کړه، چې په زبات گومان د پرچميانو په اړه و. بريژنف بيا د هرات د پاڅون په وخت کې له تره کي نه، چې له يوې شپې له پاره په پټه مسکو ته تللی و، وغوښتل چې «امين د ملي دفاع د وزارت څخه گوښه کړي.» ۷۳۱ هغه همداسې وکړل خو لږ وروسته امين اول لومړی وزير او وروسته د ملي دفاع وزير هم شو. وروسته کله چې تره کې د هاوانا نه د راستنېدو په مهال په مسکو کې تم او د بريژنف سره کتنه درلوده پلان ورکړ شو چې امين د منځه يوسي او کارمل د دوهم کس په توگه ومني. خو تره کې د دغې دندې په پلي کولو کې پاتې راغی او خپل ژوند يې وبايله او امين د گوند او حکومت سروال شو. په دغې پېښې سره بيا نوي کړکېچونه پيدا شول چې پای يې د امين وژنه او د خلقي حکومت نسکورېدل شول. لومړی غټ کړکېچ له دېنه راولاړ شو، چې په داسې حال کې چې له تره کي سره د شوروي درې جنرالان او سفير پوزانوف وو، بيا په امين باندې درې وشوې، خو هغه له مرگ نه بچ شو. د هغې ورځې له پېښې نه زر وروسته پوزانوف او هغه درې جنرالانو له امين سره د دلکشا په ماڼۍ کې لنډه ليدنه وکړه او بيا د هغه ماشام په اوونيمو بجو يې د دوو نيمو کړيو له پاره بيا ورسره وليدل. د خبرو موضوع تره کي و. په

بله ورځ د سپتمبر په ۱۵ مه دغو شورويانو د شوروي اتحاد د کمونېسټ گوند د مرکزي کمیټې په لارښوونه د امین سره د غرمې په يوولسو بجو وليدل. د هغو په وينا «مور د عمومي منشي توب له مقام نه د تره کي د تجویز شوي گوشه کولو پر ضد وغږېدلو، چې په انقلاب باندې به ناوړې اغېزې وکړي.» ۷۳۲ خو امین ونه منله، تره کي يې گوشه کړ او خان يې د هغه مقام ته ورسوه.

دوه ورځې وروسته د سپتمبر په ۱۷ مه جنرال پاولوفسکي، جنرال ايوانوف او جنرال کوريلوف له امین سره د هغه په دفتر کې وليدل او د خپل حکومت له خوا يې هغه ته مبارکي وويله، خو مبارکي توده او د زړه له کومې نه وه. پوزانوف هم په همدغه ورځ امین ته مبارکي وويله. هغه وروسته په سفارت کې خپل ډپلوماتان سره راټول کړل او ورته وويل چې «مور د يوه پېښ شوي واقعيت سره مخ يو. امین په واک رسېدلی دی، تره کي ونه شو کولی چې واک ته د امین د رسېدو مخه ونيسي. واقعيت دا دی چې تره کي ضعیف او لت و، هغه د خپل قول په اندازه ښه نه و. د هغه پرعکس امین هر وخت له مور نه مشوره اخېستلې ده. امین پياوړی دی او مور بايد له هغه سره کار وکړو او ملاتړ يې وکړو» ۷۳۳ د پوزانوف د همدغه فکر له مخې به و، چې بریټنډ د خپل گوند په سياسي دفتر کې د سپتمبر په ۲۰ مه د لومړي ځل له پاره د امین په اړه له احتیاطنه ډک ښه نظر ښکاره کړ: «مور بايد داسې وگڼو چې د افغان- شوروي اړیکو کې به کوم غټ ډول تغیر رانه شي او داسې ښکاري چې هغه به د پخوا په شان دوام وکړي. امین به د روانې وضعې او د هغو ستونزو له امله، چې د افغان حکومت به د اوږدې مودې له پاره ورسره مخامخ وي، په هماغه لور کش شي.» ۷۳۴

لس ورځې وروسته بریټنډ د امین او حکومت سره د همکارۍ لار ونيوله او د اکتوبر په لومړۍ نېټه يې خپل سياسي دفتر ته څرگنده کړه، چې «امین يو څو ويناوې کړې او له هغو نه معلومېږي، چې د انقلاب د پراخولو او له شوروي اتحاد او نورو سوسيالېستي هېوادونو سره د همکارۍ د پياوړي کولو په لور روان دی. شاوخوا يې يو شمېر [دغسې] صادق کسان او رينېتيني انقلابيان راټول دي، چې د مارکسیزم- لينينيزم په اصولونو باندې ټينگ ولاړ دي او د شوروي اتحاد په لور د ښو ميلان لري او زده کړه يې زموږ په هېواد کې کړې ده.» ۷۳۵

څلور ورځې وروسته بریټنډ په ډاډينې سره وويل، چې «مور وينو چې امین هغه څه کوي کوم چې ما تره کي ته ويلي و.» ۷۳۶ له دغې څرگندونې نه د بریټنډ مقصد دا و، چې هغه تره کي ته د اساسي قانون له مخې د حکومت کولو سپارښتنه کړې وه. هغه دا هم

وويل چې «وضع په هېواد کې ښه شوې، خو په ځينو ولايتونو کې له هغو ياغيانو سره مقابله کيږي چې له پاکستان نه په نېغ يا نانېغ ډول او له ايران، امريکې او چين نه په نېغه مرسته ترلاسه کوي.» ۷۳۷

خو د اکتوبر په ۶مه د دواړو حکومتونو تر منځ اوبه خړې شوې، په دې چې په دغه ورځ د باندنيو چارو وزير شاولي د سوسياليسټي هېوادو د سفيرانو په وړاندې، چې يې خپل دفتر ته غوښتي وو، له پوزانوف نه شکايت وکړ، چې د افغانستان په چارو کې لاسوهنه کوي. د دې پېښې نه درې ورځې وروسته د اکتوبر په ۹مه پوزانوف، پاولوفسکي، کوريلوف او بوکدانوف له امين سره د ماينام په ۶ بجو د هغه په دفتر کې وليدل. د دې له پاره «چې د شاه ولي په وينا اعتراض وکړي او د هغې ترديد وغواړي.» شوروي خوا ادعا کوله چې پوزانوف د سېپتمبر په ۱۴مه د تره کي له دفتر نه له امين سره په تليفون کې د ترجمان له لارې هېڅ خبرې نه دي کړې، خو امين د شاولي په وينا ټينګ ودرېد. د مخه مو يادونه وکړه چې د ک. ج. ب پخواني چارواکي د امين په ملاتړ وايي چې «د تره کي ټينګار ته په تسليمېدو سره هغه موافقه وکړه، خو له پوزانوف نه يې د خپل مصونيت ضمانت وغوښت. وروستي په تليفون کې دغه ضمانت امين ته ورکړ.» ۷۳۸

له هغې وروسته و چې د ک. ج. ب پروپاګندي ماشين په ځانګړې توګه د امين پر ضد چلان شو. د دسمبر په ۱۲مه شوروي مشرانو په افغانستان د يرغل پرېکړه وکړه. کوشنېن دا شو چې امين په يو ډول له منځه يوړل شي او که دغه کار ونه شو، بيا دې په افغانستان وسله وال يرغل وشي.

له امريکې سره اړيکې

د ۱۹۱۹ کال د خپلواکي د کټلو وروسته د پاچا امان الله خان ځانګړي استازي محمد ولي واشنگټن ته په سفر تللي و، چې د دواړو هېوادو تر منځ اړيکې ټينګې کړي. خو دامريکا متحده ايالاتو حکومت دا وړانديز ونه مانه په دې چې دوی افغانستان د برتانوي هند د نفوذ لاندې هېواد ګاڼه. په ۱۹۳۴ کال کې د امريکا متحده ايالاتو حکومت افغانستان په رسمي ډول وپېژانده. په ۱۹۴۳ کال کې يې د دوهمې نړيوالې جګړې په بهير کې اړيکې ورسره ټينګې کړې او په کابل کې يې خپل سفير استوګن کړ. افغان چارواکو کوشنېن کاوه چې د امريکې علاقه ځان ته واړوي او د انګشافي پروژو کې دا شتمن هېواد برخه واخلي، چې د هلمند د ناوې کرنيزه انګشافي پروژه يې څرګنده بېلګه ده. خو د شلې پېړۍ په پنځوسې لسيزې کې د دواړو هېوادونو باندني سياستونه په بيلو بيلو لارو روان شول. په دغه وخت

کې امريکې د شوروي اتحاد په چاپېر دفاعي نظامي تړونونه رامنځ ته کړل. نوی هسک شوی پاکستان په دوو دغسې پکتونو کې کډ شو او په دې ډول يې د امريکې سره اړيکې پيدا کړې، خو افغان چارواکو د مثبت ناپيلتوب سياست غوره کړ. امريکې د پښتونستان په لانجه کې د پاکستان خوا ونیوله او د دې خنډ شوه، چې افغانستان د امريکې د وسله جوړوونکو فابريکو نه وسلې په بيه واخلي او خپل پوځ پرې پياوړی او عصري کړي. خو امريکې په نورو برخو کې په تېره د پوهنې په برخه کې يو څه مرستې وکړې.

د صدراعظم محمد داود په وخت کې د افغان- شوروي په اړيکو کې څرکند ښه والی راغی. په ۱۹۵۶ کال کې خروسچوف او صدراعظم بولکانين افغانستان ته رسمي سفر وکړ. دوی د دغه سفر په بهير کې د افغان پوځ د عصري کولو او د پرمختيايي پروژو د پلي کولو له پاره سل ميليونه ډالرو پور ومانه. د شوروي مشرانو د دغې مرستې موخه دا وه، چې افغان حکومت به امريکې ته اجازه ور نه کړي، چې هلته نظامي هډې جوړې کړي. دا کار د شوروي په گټه و، په دې چې په افغانستان کې د امريکې د پوځي هډو په شتون کې به شوروي اتحاد اړ وی چې په منځنۍ اسيا کې متقابل ترتيبات ونيسي او بيا به يې دومره لگښتونه کولی چې د افغانستان سره ټولې مرستې به «د سمندر د يوه څاڅکي» په اندازې وې. ۷۳۹ کاکړ وايي په هر حال د شوروي د مرستو او له افغانستان سره د شوروي اتحاد د ښو اړيکو پايله په افغانستان کې د کمونېستي حرکت ټوکېدل او د ثور کودتا شوه، چې د مخه يې بيان شوی دی.

د ثور د کودتا وروسته د خلقي حکومت او امريکې تر منځ اړيکې پرځای خو ساړې وې. خو د ۱۹۷۹ کال د فبروري په ۱۴ مه په کابل کې د امريکې سفير ادولف ډېس د ستي ډلې د څلورو تنو له خوا د کابل په هوټل کې يرغمل شو او د سفير په بدل کې له حکومت نه د خپل مشر بهرالدین باحث ازادول غوښتل. په داسې حال کې، چې هغه د محمد داود د جمهوريت په وخت کې د بدخشان په درواز کې د اله کولې په تور بندي شوی او د ۱۹۷۸ کال په اوږو کې د علي اباد په روغتون کې د درملنې له پاره بستري شوی او له هغه ځايه د ملګرو په مرسته تېښتېدلی او بيا نيول شوی او له منځه وړل شوی و. ۷۴۰

کاکړ وايي چې اوس پوښتنه دا ده چې دغه د ډېس تېښتونکو وې د دغسې يو کس ازادول وغواړي، چې پوهېدل هغه د مخه د منځه وړل شوی و؟ دغه پوښتنه په دې هم پرځای ده، چې دغه انسان تېښتونکي د ک. ج. ب په راپورونو کې ستميان نه، بلکې ماوېستان ښودل شوي دي.

په هر حال، د ميتروخين په روايت «امين د ک. ج. ب د مشاور په مشوره افغان

ضربتي ډلې ته، چې په کلاشنیکوفونو سمباله وه او د شوروي او مرمي ضد کړنې يې په ځان وې، د دزو امر وکړ. د لنډې مودې په دزو کې، چې وشوې ډېس او دوه انسان وژونکي [تېنتونکي] ووژل شول. درېيم يې ونيول شو او څلورم يې وتېنېد. ک. ج. ب بيا د دې له پاره، چې تر هغو په اغېزناک ډول ممکن وي، په پټولو لاس پورې کړ، چې په دغو عملياتو کې خپله ونډه او د ډېس په وژنه کې خپل مسؤليت پټ کړي. د امريکې امنيتي ماهران، چې هوټل ته ورغلي وو، پرې نه بنودل شول چې له هغې کوټې نه د گوليو پوچاډي [نلی] ترلاسه کړي. دغه کوريليان په درې ټونکچو سمبال وو، کلاشنیکوف ته ورته يو ټوپک چې اصل يې معلوم نه و، په کوټې کې واچول شو، چې وېني هغو په هغه سره سفير وژلی دی. امريکايانو ته د دې له پاره چې له هغو دوو ژونديو کوريليانو نه پوښتنې کولی ونه شي، وويل شول چې څلور واړه يې په دزو کې وژل شوي دي. په واقع کې نيول شوي کوريلياي له تېنتونې نه وروسته په هغه شپه کې ووژل شو، لکه هسې چې هغه بندي ووژل شو، چې په غلطه يې ادعا شوې وه، چې تېنتېدلې دی. د دې له پاره چې امريکايانو ته وېنودل شي څلور جسونه پوره شول، په افغان ورځپاڼو کې د دريو اصلي ماوستانو او يوه جعلي ماوست عکسونه خپاره شول. د اوسادې په غوښتنه چې په کابل کې د ک. ج. ب امر و، امين او وزيرانو يې د خواخوږۍ د څرگندونې په وخت کې امريکايانو ته وويل، چې دوی يوازې په خپل نوښت عمل کړی او شوروي مشاوران په کې دخپل نه وو. «۷۴۱»

کاکړ وايي چې شونې ده چې ک. ج. ب همدا غوښتل، د دې له پاره چې د سفير په وژل کېدو سره له امريکې سره د افغان حکومت اړيکې خرابې شي، نو ځکه د امريکايانو دغه وړانديز ونه منل شو، چې له تېنتونکو سره دې خبرې وشي. په دې ډول له امريکې سره د افغانستان اړيکې خړې پرې شوې. د امريکې حکومت له کابل نه خپل ډپلوماتان وايستل او وروسته ولسمشر جيمي کارتر د امريکې د کانگرس دغه لايحه قانوني کړه، چې په کې ويل شوي و، چې تر څو خلقي حکومت بېسنه ونه غواړي او د سفير په مرگ کې خپل مسؤليت ونه مني، ورسره به مرسته ونه شي. «۷۴۲»

د ډېس له مرگ نه وروسته د امريکې سفارت او خلقي حکومت تر منځ ليدنه تر اخري کچې لږ شوه. خو د امريکې شارژدافير امستونز سفرانچوک ته د اخطار په ډول څرگنده کړه چې «که شوروي اتحاد افغانستان ته خپل پوځ واستوي، دا به د امريکې او شوروي اړيکې ډېرې پېچلې او زيانمن [ي] کړي.» «۷۴۳» خو وروسته د ايران د نوي حکومت له خوا د امريکايي مامورانو برمه کول نور هر څه تر سيوري لاندې ونيول. د امريکې حکومت په دې فکر شو، چې په سيبې کې به «د امريکې غټ نظامي شتون مناسب وي، چې د پاکستان

او د خليج سيمې له پاره ملاتړ وښودل شي.» ۷۴۴ کاکړ وايي چې د دې دا مانا کېده، چې د شوروي حکومت په افغانستان کې د عمل ازادي لري او د امريکې حکومت به يې په ضد عمل ونه کړي.

امین د خپل واکمن کېدو وروسته کوشنې وکړ چې په داسې حال کې چې افغانستان له شوروي اتحاد سره ځانگړې اړيکې لري، له نورو هېوادونو سره اړيکې ولري. ده غوښتل له ټولو هېوادونو سره انډوليز سياست پر مخ بوزي.

د باندنيو چارو وزير شاه ولي د سپتمبر په ۲۷ په نيويارک کې د امريکې د بهرنيو چارو وزير «نيوسم ته ډاډ ورکړ چې د هغه حکومت خپلواک دی، د بل حکومت يا گوند تر نفوذ لاندې نه دی.» ۷۴۵ نيوسم هم وويل، چې غواړي د دواړو هېوادو تر منځ د پوهاوي او مخابرې لاره خلاصه وي او خوښی دی چې امین په همدغه ورځ زموږ شارژ دافير خپل حضور ته بللی او هيله کوي، چې دا به د دواړو هېوادونو په اړيکو ښه اغېزه وکړي. ۷۴۶

امین د اکتوبر په ۲۷ مه له بلېد سره وليدل. دا ليدنه يو ساعت اوږده شوه. امین د امريکې سره د اړيکو ښه کېدل او د افغانستان سره د امريکې مرسته وغوښتله. هغه بلېد ته ويلي و، چې دی فکر نه کوي تر ډېره مودې ژوندی وي. خو د امین د کوشنېونو سره سره د امريکې حکومت له ځايه ونه ښورېد. کاکړ وايي په دغه حال کې د امین له پاره دوه لارې پاتې وې يوه دا چې شوروي لويان قانع کړي، چې د افغانستان په اداره کولو کې دی تر ټولو ور شخړ دی او بله دا چې د پاکستان سره خپلې اړيکې ښې کړي.

د پاکستان سره اړيکې

کاکړ وايي چې افغانستان د پاکستان سره ډېر اړخيزې اړيکې لري. يو دا چې د اصلي افغانستان يوه برخه په اوسني پاکستان کې نيول شوې ده. بله دا چې د ډيورنډ د کرښې په دواړو خواو کې په عمده ډول پښتانه قومونه پراته دي او دوی د لرغوني مهال نه تر اوسه په دغو سيمو کې اوسېدلي، خو دوی په رسمي ډول د ډيورنډ په کرښې سره بيل شوي، چې په ۱۸۹۳ کې د برتانوي هند حکومت له خوا په امير عبدالرحمن باندې تپل شوې وه.

د ۱۹۴۷ کال نه وروسته چې د هند لويه وچه په هند او پاکستان ووېشل شوه په ملگرو ملتو کې افغانستان د پاکستان د غړيتوب په اړه منفي رايه ورکړه. د ثور تر کودتا پورې د پښتونستان د مسلې په سر اړيکې ترخې وې. خو د محمد داود د ولسمشرۍ په اخېر وخت کې د افغانستان او پاکستان د اړيکو د ښه کېدلو په لور اساسي گامونه اخېستل شوي و.

کاکړ وايي چې د ثور کودتا د پاکستان واکمن جنرال ضياء الحق اندېښمن کړ. په دغه وخت کې د شوروي اتحاد وزن او حيثيت تر هر بل وخت نه لوړ شوی و. ضياء الحق د سپتمبر په ۹مه د تره کي او امين سره په پغمان کې وليدل خو کتنه گتوره نه وه او ضياء الحق د ۱۹۷۹ په می کې افغانستان د شوروي لاس لاندې هېواد وباله او وويل، چې افغانستان نور نو حایل هېواد نه دی. ۷۴۷ له بلې خوا کابل د پښتونستان داعيه په عمل کې ټينگه ونيوله. د افغانستان پخوانيو حکومتونو ادعا کوله، چې پښتانه او بلوچ د ازادي ولري، چې د خوداراديت د اصل له مخې خپل سياسي برخه ليک په خپله وټاکي. امين د امر او اباسين تر منځ د افغانانو په يووالي ودرېد، تره کي او امين په دې ډول لوی افغانستان غوښته.

تره کي دغه مسله له بريژنف سره ياده کړې او ورته ويلي و، چې افغانستان بايد د هند تر سمندر پورې ورسيرې. هغه وويل چې «مور بايد د پاکستان پښتانه او بلوڅان د امپريالستانو په لاسونو کې پرې نه ږدو. اوس دغه امکان برابر شوی دی، د دغو قومونو تر منځ د ژغورنې جگړه شروع کړو او د پښتنو او بلوڅو سيمې په افغانستان کې ورکډې کړو.» ۷۴۸ امين لا د ۱۹۷۸ کال په اگست کې پوزانوف او گوريلوف ته څرگنده کړې وه، چې «د افغانستان سيمه بايد د عمان د خليج او د هند سمندر غاړو ته ورسيرې. مور غواړو سمندر په خپلو سترگو ووينو.» ۷۴۹ امين امريکايي ليکوال هري سن ته هم په همدغه ډول غږېدلی و، چې «تاريخ مور ته دا سپېڅلی رسالت راکوي چې له خيبر نه اخوا خپل ځپل شوي پښتانه وروڼه ترک نه کړو.» ۷۵۰ هغه دا هم ويل چې «هېڅوک انکار کولی نه شي چې د افغان انقلاب او د پښتونستان موضوع سره تړلي دي.» ۷۵۱

که له يوې خوا پاکستان د افغانستان له لوري په اندېښنه کې و، خو د بلې خوا افغانستان هم د پاکستان له خوا په اندېښنه کې و چې پاکستان به په پېښور کې د اسلامي گوندونو لويان او افغان کډوال د افغانستان پر ضد ولسوي. دواړو خواوو ته ښه موقع برابره وه چې د خپلمنځي کشالو د هوارولو په اړه سره وغږيږي.

د ۱۹۷۹ د سپتمبر په مياشت کې نورمحمد تره کي او ضياء الحق د ناپېيلو هېوادو په غونډه کې چې د کيوبا په پلازمينه هاوانا کې جوړه وه، سره وليدل. دوی د کيوبا د مشر فيدل کاسټرو په منځگړيتوب د خپلمنځي اختلافاتو د هوارولو په اړه دوه ځله خبرې اترې وکړې. په دغه خبرو کې د افغانستان د بهرنيو چارو وزير ډاکټر شاه ولي او د پاکستان د جمهور ريس سلاکار اغا شاهي هم حاضر وو. د دغو خبرو په جريان کې په لاندې ټکو هوکړه وشوه.

۱- دواړه لوري به په خپله خاوره کې د يوه او بل د دولت ځواکونو ته د فعاليت اجازه نه ورکوي. پاکستان به د افغانستان د دولت ضد ځواکونو مشران تر څارنې لاندې نيسي او د افغانستان پر ضد فعاليت ته نه پرېښودل کېږي او افغانستان به وطن ته د مهاجرينو د بېرته ستنېدو په موخه عمومي بڅښنه اعلانوي، هغوی ته به جزا نه ورکول کېږي او د عادي افغانانو په توګه به د ژوند شرايط برابرې.

۲- دواړه لوري په دې موافقه کوي چې د يو او بل پر ضد به دښمنانه تبليغات بندوي، د افغانستان حکومت به د خلق جريده پاکستان ته نه وړي، د شمشاد په غره باندې د تلویزيون د جوړولو کار بندوي او په پاکستان کې به خپل د افغانستان خلق دموکراتيک ګوند ړنګوي.

۳- دواړه لوري هوکړه کوي چې افغانستان به د پاکستان تجارتي مالونو له پاره د حيراتان بندر له لارې او پاکستان به د افغانستان د تجارتي مالونو له پاره د کراچۍ د بندر له لارې اړينې اسانتياوې برابرې وي.

۴- د دې موافقې د وروستي متن د تيارولو په موخه د افغانستان د بهرنيو چارو وزير ډاکټر شاه ولي پاکستان ته رسمي سفر کوي او بيا د پاکستان د جمهور رييس سلاکار اغا شاهي کابل ته رسمي سفر کوي او دا موافقه به کابل ته د پاکستان د جمهور رييس ضياءالحق د رسمي سفر په جريان کې د دواړو هېوادو د مشرانو له خوا لاسليک کېږي.

امین هم د پاکستان سره د اړیکو د ښه کولو له پاره د تره کي په پله کلام کېښود او د پاکستان د حکومت سره یې تماس ټینګ کړ. پاکستان هم روغ نيتي وښوده او د خبرو له پاره یې تياری څرګند کړ. امین خپل د باندینيو چارو وزارت معین شاه محمد دوست پاکستان ته د يوه پلاوي په مشرۍ واستوه چې د پاکستان د دولت او په خپله د جنرال ضياءالحق له خوا یې تود هرکلی وشو. شاه محمد دوست چې پوه شو چې دواړه لوري سوله غواړي په بېره یې روسان د موضوع نه خبر کړل. کرومیکو د ۱۹۷۹ کال د دسمبر د اتې په غونډه کې د خپل راپور په ترڅ کې وویل: «د دپلوماتیکو کانالونو څخه ښکاري چې امین د لوېدیځ او امریکا متحده ایالاتو سره د نږدې کېدو لار لټوي. په دې اړه د امین او ضياءالحق تر منځ د وعدې کولو حقیقت دا را په گوته کوي چې د دسمبر په پای کې ... د پاکستان د لارښود ځانګړی استازی اغا شاهي کابل ته د خبرو له پاره ؤي. امین به کت مت د لوېدیځ یا متحده ایالاتو د رابللو له پاره د دغه کانال څخه کټه واخلي.» ۷۵۲

کاکړ وايي چې د دولت، حکومت او ګوند د سروال په توګه د امین تېروتنې هم ورې نه وې، چې يوه یې د تره کي له منځه وړل و. د دې پېښې له کبله په اوومې فرقي کې پاڅون

وشو او په گوند کې چاود منځ ته راغی. د امین بله تېروتنه دا وه چې په رسمي دفتر کې د شوروي اتحاد سفیر په څپېره وهل و، چې شوروي لویان یې تر دې اندازې وپارول چې په افغانستان باندې یې وسله وال تېري ته لاس واچوه، خو اقبال وزیري دا روایت ردوي. د امین بله تېروتنه دا وه چې د وروستیو پېښو پایلې یې په نظر کې ونه نیولې او د شوروي لویانو وروستي ناولي سیاست یې درک نه شو کړای.

د تره کي او امین ناکامی افغانستان او افغانان په ژور ډول زیانمن کړل. د دغو ناکامیو درس به دا وي، چې د افغانستان د دولتي واک خاوند باید دا زده کړي، چې خپل سیاسي مخالفان څنگه وزغمي او لا ښه دا چې په واک کې یې شریک کړي.

د خلقیانو یوه بله تېروتنه دا وه چې شوروي اتحاد د کمونیسټي «ایدیالوجی» په نامه هر څه کول، په اصل کې یې د خپل ملت له پاره کول. حکومتي سیاستونه او چلندونه په نهایت کې ملي وي، نه ایدیالوجیکي او هېڅ ملي حکومت په خپل ملک کې باندینیو ته په هر نامه، چې وي، واک نه ورکوي. البته د امین په واکمنۍ کې افغان چارواکي موظف شوي وو، چې د شوروي مشاورانو نه یوازې مشوره ترلاسه کړي.» ۷۵۳

خو زما لیکوال په اند خلقیانو د تره کي د واکمنۍ په مهال او هم د امین د واکمنۍ پر مهال شورویانو ته د خپل ملک واک نه دی ورکړی لکه چې وروسته کاکړ په خپله وايي: « شوروي مشران په خلقیانو شکمن و او د هرات د پاڅون په وخت کې ان د شوروي اتحاد صدراعظم ا. کاسیکین پر دوی شکمن و او ویل یې چې دوی له مور نه هر څه پټوي او مور نه پوهېږو چې په افغانستان کې واقعیت څه دی. کاکړ وايي چې د کاسیکین «له دغې وینا نه څرگنده ده چې خلقي لویانو د حکومت په کولو کې له شوروي مشاورانو سره مشوره نه کوله. په اسلام اباد کې د تاس استازي هم د دغه نظر په ملاتړ ویلي و چې «امین لکه تر هغه د مخه د تره کي په شان حاضر نه و، چې مشوره ومنی...»

لازمه کیم دلته یوه یادونه وکړم چې ما لیکوال د رحمت ربي زیرکیار په کتاب «د ناپوهۍ تیاري او د پرمختګ دېوي د افغاني کلتور په چوکاټ کې له امیر عبدالرحمن خان نه تر اشرف غني احمدزي ۱۸۸۰ تر ۲۰۱۵» په ۴۷۸ پاڼه کې ولوستل چې (د ۲۰۱۵ د جنوري په ۲۲ راته محمد اقبال وزیري په تلفون کې وویل چې حفیظ الله امین شوروي سفیر په څپېره وهلی و). زیرکیار زما نه دا پوښتنه وکړه چې ایا امین د شوروي سفیر پوزانوف په څپېره وهلی و؟ ما ورته وویل چې حفیظ الله امین د شوروي سفیر پوزانوف په څپېره وهلی نه و. دا پوښتنه څو ځله زما نه پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ هم کړې وه په دې چې هغه ته د امین خوري په لندن کې ویلي و چې امین د شوروي سفیر پوزانوف په څپېره وهلی و. ما

کاکړ صاحب ته وويل چې دا خبره سمه نه ده خو هغه ته دا خبره په دې دليل سمه بنسټکارېده چې دا خبره د امين خوري ورته کړې وه چې د امين سره نږدې د خپلوی اړيکې درلودې. بيا چې زه پوه شوم چې کاکړ صاحب ته د امين د خوري خبره سمه بنسټکارې بيا مې ورنه هيله وکړه چې زما نظر هم په خپله ليکنه کې منعکس کړي. نو ځکه کاکړ وايي چې اقبال وزيرې دا روايت ردوي.

زه په دوو دليلونو دا خبره ردوم لومړی دا چې تر هغه ځايه چې ما امين پېژانده هغه د لور کلتور خاوند و. برسېره پر دې چې ده په سياست کې غټې تېروتنې هم کړې دي دومره خام سړی هم نه و چې د داسې کړو په سياسي پايلو باندې يې سر خلاص نه شي. نو زما په اند د داسې کلتور څښتن او سياسي شخصيت له پاره په بشپړه توگه ناشونې ده چې په خپل دفتر کې د شوروي سفير چې درې شوروي جنرالان ورسره ملکري وو په څپېره ووېي. دوهم دا چې که دا پېښه شوې وای نو هغه به لږ تر لږه د شورويانو له خوا هرو مرو برېښه شوې وای.

کېدای شي چې زيرکيار زما خبره سمه نه وي اورېدلې. هغه په خپله ليکنه کې زما نظرونه په پوره امانت دارۍ سره بيان کړي دي او ما په خپل کتاب کې د ده د ياد شوي کتاب نه ډېره گټه پورته کړې ده.

دوه ويشتم څپرکي

په افغانستان باندې د شوروي اتحاد وسله وال يرغل

کاکړ د شوروي اتحاد د وسله وال يرغل نه د تنظيمواکي تر پيل پورې د هېواد سياسي او دپلوماتيکي پېښې په يوه بل کتاب کې چې «افغان- شوروي جگړه» نومېږي، بيان کړې دي. نوموړي لومړی د روسيې لنډه تاريخي مخينه ته کتنه کوي او وايي چې «روسانو تر هر بل ولس نه زيات خپل هېواد د نورو هېوادونو په تاوان پراخ کړی، سره له دې چې دوی د دغه ملک اوسېدونکي نه دي.» ۷۵۴ دی زياتوي چې د لومړني تاريخ (Primary Chronicle) له مخې د سلاو قومونو او نورو چې په خپلو کې سره وران وو، په ۸۶۲ زېږديز کال د سنکندونيانو ورنګيانو روسانو ته بلنه ورکړه، چې «زموږ ملک لوی او شتمن دی، خو نظم په کې نه شته؛ تاسې راشئ او پر موږ حکومت وکړئ.» ۷۵۵ روسانو دغه بلنه ومنله او په نووګوراد (Novgorod) او نورو سيمو کې ميشته شول. دوی وروسته په کيف کې، چې اوس د اوکراين پلازمينه ده، د لومړي ځل له پاره د حکومتي نظام بنسټ کېښود. اوس روسيه د اورال تر غرونو پورې په اروپا او د اورال د غرو نه تر ولادي واستوکه پورې په اسيا کې پراته ده.

په لرغوني زمانه کې دغه سيمه په تېره سوويلي روسيه د نورو قومونو لکه سيمريان، سیتيان، سرمه تيان، هونان، اواران، کاتان او خزاران، په لاس کې وه. د سیتيانو او خزارانو پرته دوی ټول هندو- اروپايان او پوونده وو، چې يو په بل پسې يې دغه سيمې لاندې کړې او پر ځايي خلکو يې واک وچلاوه. سيمريان لومړنی تاريخي قوم و، چې نږدې د زر نه تر اوه سوه مخزېږدي کال پورې يې پر دغې سيمې واکمني کړې ده.

کاکړ وايي چې اولېک (Oleg) لومړنی ورنګي روس و چې په ۸۸۲ زېږديز کال کې يې د کيف ښار ونيو او خپله واکمني يې ورباندې پيل کړه. ورپسې د هغه ځايناستي ايګور (Igor) په روسي کيف باندې له ۹۱۳ نه تر ۹۴۵ پورې واکمني وکړه. د ايګور د مړينې وروسته د هغه کونډه اولګا (Olga) او بيا د هغه زوی سويتاسلاو (Svetaslav) واکمن شو. خو بيا د اولګا لمسی ولاديمير نامتو واکمن تر ۱۰۱۵ کال پورې واک وچلاوه. دوی خپل پام سوداګرۍ او د لوېديځو سلاويانو او ختيځ روم سره جګړو ته اړولی و.

د ولاديمير په واکمني کې روسانو عيسوي دين ومانه. خو دوی د عيسويت د

ارتودوکس عقیده ومنله چې له کاتوليکي او پروټسټانتي عيسويت نه وروسته د عيسويت لويه څانگه ده او يوازې په يوه «حقيقت» عقیده لرله، چې هغه يوازې د بخښنې دين و نه د زغم دين. کاکړ وايي چې د روسانو په عيسوي کېدلو سره د هغوي ژبه د سري ليک (Cyrilic) د الفبا له برکته د ليک ژبه شوه. د روسانو واکمني که څه هم په سوداگرۍ او جگړې په محور څرخېده سياسي نظام يې زورواک و. مسکو چې تاتاري مغولو د ۱۲۴۰ نه تر ۱۴۸۰ پورې د دوه نيمې پېړۍ محکوميت نه سر هسک کړ د پوره زورواک نظام تر لاس لاندې شو. دا نظام وروسته له هغه نور هم زورواک شو چې د مسکو ايوان په ۱۵۴۷ کال کې د تزار لقب غوره کړ.

روسانو په ۱۸۶۱ کال کې په خپله ټولنه کې يو اساسي سمون راوړ. د تزار د فرمان له مخې سرفان په حقوقي لحاظ ازاد اعلام شول. روسيه د ستر پېټر د واکمنۍ لاندې د عصري صنعت له امله مخ په پياوړي کېدو شوه. روسيې په ۱۸۵۴-۱۸۵۶ کال کې د کرېميا جگړه کې ماتې وکړه. روسيې د کرېميا د ماتې وروسته په اسيا کې خپل پرمختگ ته مخه کړه. په ۱۸۵۷ کال کې د انگرېزانو د واک پر ضد د هند د خلکو پاڅون روسان د هند په لوري تللو ته وهڅول تر څو د لوی پېټر په شان تودو اوبو ته د رسېدو خوښه رښتيني کړي. د دغې موخې د پلي کولو له پاره د اورنبرگ د سترې پوځي اډې نه د منځنۍ اسيا د لاندې کولو له پاره پوځونه استول او د انګليسانو سره يې ستره لوبه پيل کړه.

ستره لوبه د روسيې او د لويې برېتانيې تر منځ د منځنۍ اسيا د لاندې کولو سيالي وه. روسانو په ۱۸۶۴ کال کې خپلې واکمني د خوقند، بخارا او خېوې پولې ته ورسوله او په ۱۸۶۵ کال کې يې تاشکند ونيوه. روسانو د منځنۍ اسيا دغه سيمې په ۱۸۷۷ کال کې د ترکستان د ولايت په نامه نوي تشکيل جوړ کړ. روسانو بيا د بخارا امير مظفرالدين د يوه تړون له مخې اړ کړ چې خپل سلطنت د روسانو واکمنۍ ته وسپاري. روسيې په ۱۸۶۸ کال کې سمرقند هم لاندې کړ.

روسان د امير شيرعلي خان د دوهمې دورې په سر کې د لومړي ځل له پاره د افغانستان پولې ته ورسېدل او په دغه ډول افغانستان د روسيې او د لويې برېتانيا د امپراتوريو له خوا يو چاپېر هېواد شو. په دغو پېچلو شرايطو کې روسان په منځنۍ اسيا کې د خپلې امپراتورۍ په پراخولو، انګليسان په هندوستان کې د خپلې امپراتورۍ د خوندي ساتلو او افغان واکمنان د خپل هېواد د ساتلو په هڅه کې شول.

د افغان-انګليس دوهمه جگړه په اصل کې د همدغو دوو امپراتوريو د متضادو سياستونو د ټکر پايله وه. کاکړ وايي چې د هند انګليسي واپسرا لارډ ليټن د هندوستان د

خوندي ساتلو له پاره د امير شيرعلي خان نه غوښتل چې د خپل هېواد د بهرني سياست واک د هند حکومت ته وسپاري، خو امير شيرعلي خان د لارډ ليتن دا غوښتنه ونه منله. خو لږه موده وروسته په ۱۸۸۷ کال کې روسانو يو نابلی پوځي پلاوی د جنرال ستالیتوف په مشرۍ په ناڅاپي ډول کابل ته راولېږه چې د انگرېزانو وېره يې راولېږوله. انگرېزانو د همدې کال په نومبر کې په افغانستان باندې پوځي يرغل پيل کړ. که څه هم روسي پلاوي منلې وه چې د اړتيا په صورت کې به افغانستان ته دوه دېرش زره پوځ استوي خو هغوی نه يوازې خپله ژمنه ترسره نه کړه بلکې امير ته يې روسي ترکستان ته د تللو اجازه ور نه کړه. خو افغانانو په پرله پسو جکړو سره په ډېره مېړانه دا يرغل په شا وتمبوه تر څو په ۱۸۸۰ کال کې سردار عبدالرحمن خان د افغانستان واکمن شو.

د امير عبدالرحمن د واکمنۍ پر مهال د افغانستان بهرنی سياست د هندوستان د انگليس حکومت په لاس ورغی، خو امير په کورنيو چارو کې په کړو او نظر کې يو خپلواک واکمن و. کاکړ وايي چې د امير دوست محمد خان له وخت نه وروسته دا دوهم ځل و، چې د افغانستان او برتانوي هند د حکومت تر منځ دوستي ټينګه شوه، خو روسانو سره له دې په ۱۸۸۵ کال کې پنجدي لاندې کړه او وروسته په ۱۸۹۲ کال کې د پنجه له سيند نه د شمال په لور د اقسو- مرغاب سين پورې بدخشان په پوځي زور ونيو. انگرېزانو د روسيې د دغه تيري په وړاندې نه يوازې په خپله څه ونه کړل بلکې د امير نه يې په ټينګه وغوښتل چې مقابله ونه کړي. په دې ترتيب د افغان- روس اړيکې د روسيې د اکتوبر د کودتا پورې خرابې وې. ۷۵۶

دافغان روس اړيکې د روسيې د اکتوبر انقلاب نه وروسته د پاچا امان الله په وخت کې سره نېې شوې. د دواړو هېوادو تر منځ دوه تړونونه چې يو يې په ۱۹۲۱ او بل يې په ۱۹۳۱ کې لاسليک شول. د پاچا امان الله د گوښه کېدو نه وروسته دغې دوستۍ خپله تودوخه د لاسه ورکړه. خو د داود خان د صدراعظمۍ پر مهال د دواړو هېوادونو تر منځ د دوستۍ او همکارۍ نوې پاڼه پرانېستل شوه. له هغه وروسته شوروي اتحاد او ورسره شوروي ډوله کمونستي فکرونو په افغانستان کې نفوذ وکړ. د ثور د پاڅون نه وروسته چې خلقيانو په بري سره سر ته رسولی و، شورويانو هڅه وکړه چې پرچميان په واک کې شريک کړي او حفيظ الله امين چې د پاڅون اصلي قوماندان او د خلک ډموکراتيک گوند تکړه شخص و، ترېنه وباسي چې د خپلې لارې خنډ يې باله. دوی د دې کار د پلي کولو په لار کې دسيسې وکړې خو ټولې ناکامه شوې. کله چې شورويان په خپلو دسيسو کې پاتې راغلل نو بيا يې پر افغانستان پوځي يرغل وکړ. کاکړ وايي چې اوس په دې غېږېږي چې شوروي واکمنو ولې او

څنگه په افغانستان باندې د يرغل پرېكړه وكړه او يرغل يې څنگه پلي كړ. شوروي حكومت د خپل سفارت چارواكو او د ك ج ب غړو ته دنده وسپارله چې د يوې خوا د امين په سروالي له نوي حكومت سره د پخوا په شان د دوستۍ چلند وكړي او د بلې خوا د امين كړه او چلند په كره توگه وڅاري او داسې كار ونه كړي چې هغه د شوروي په اړه شكمن شي. د افغانستان د ننه داسې ځواك نه و چې د امين حكومت وكواښوي نو د دغه واقعيت له مخې د هغه د منځه وړل پر خپلواك افغانستان باندې د وسله وال يرغل له مخې شونې و. نو اندروپوف د ليكوال جگت مهتا په وينا په افغانستان باندې د «حماقت مارش» وكړ چې د هغه په نتيجه كې له ډېرو وژلو او وړانولو نه برسېره سوسياليستي ايډيالوژي په بېساري ډول بې اعتباره شوه، د برژنف دوكترين د تل له پاره تر خاورو لاندې شو او د شوروي اتحاد امپراتوري له منځه لاړه.

په افغانستان باندې د شوروي يرغل پرېكړه

اندروپوف د دې له پاره چې په افغانستان باندې د پوځي يرغل په موخه د برېژنف هوكره تر لاسه كړي هغه ته ناسم مالومات وركړل، لكه هسې چې په ۱۹۶۸ كال كې يې خروسچف ته د چكوسلواكيا د پاڅون په اړه ناسم مالومات وركړي وو. كاكړ وايي د هغو دواړو اصلي ټكي دا و، چې سوسياليزم ته د ايډيالوژيكي سبوتاژ خطر متوجه دی چې بايد مخه يې ونيوله شي. اندروپوف د دې له پاره چې برېژنف د پوځي يرغل نه اندېښمن نه شي داسې وښودله چې امين او د هغه حكومت به د رښتینو انقلابي افغانانو له خوا نسكور شي او د شوروي پوځ به څنگڅن رول ولري. په كابل كې د شوروي قوه بسنه كوي خو د نه ليدونكو ستونزو له پاره اړينه ده چې يوه پوځي ډله د افغان پولې ته نږدې ځای په ځای شي. په دې توگه اندروپوف، اوسټينوف او كروميكو د ۱۹۷۹ كال د دسمبر په دولسمه نېټه په افغانستان باندې د يرغل په اړه د برېژنف هوكره تر لاسه كړه.

وزيرې وايي چې «سروري، وطنجار او گلابزوی د بلغاربه څخه مسكو ته د كې چې يې له خوا راوستل شول او د دوی له خوا هلته ساتل كېدل. د كې چې بې اجنتانو دوی ته ويل چې كه د شوروي مقاماتو څخه د پوځي مرستې غوښتنه وكړي تر څو د امين رژيم رانسكور كړي نو پوځي مرسته به ترلاسه كړي. بيا سروري او ورسره ملكري يې د پوځي مرستې غوښتنه كوي. خو د كې چې يې مؤظف كسان ورته وايي چې دلته نور افغانان شته چې كت مت همدا غوښتنه لري. تاسو د هغوی سره وكورئ او كه جوړ راغلی نو په كډه به د پوځي مرستې غوښتنه وكړئ. په دې ترتيب كې چې بې دوی تياروی چې د كارمل او د هغه د ډلې

سره خبرو ته کښېني.

داچې د بېرک نور ملګري مسکو ته څنگه او څه وخت راغلي دي او دوی د کې چې بې سره د پوځونو د لېرلو په اړه څه کره وره درلودل تر اوسه پټ ساتل کېږي خو دومره ښکاره ده چې سروري، وطنجار او ګلابزوی څخه يوازې د کمکي وسيلې په توګه کار اخېستل کېده او اصلي معامله د پرچميانو سره وه چې شايد تر ډيره پټه وساتله شي. دوی (وطنجار، سروري او ګلابزوی) په پای کې د کارمل سره دې نتيجه ته رسېږي چې په کېد د شوروي اتحاد څخه پوځي مرسته وغواړي او د امين د نسکورېدو وروسته به دولتي چوکي سره وويشي او د کارمل مشري به مني.

د شوروي اتحاد څخه د پوځي مرستې د غوښتنې په خاطر غونډه جوړېږي چې لاندې کسان په کې کېدون کوي: د کې چې بې رييس اندروپوف، په کابل کې د شوروي اتحاد د سفارت لومړی سکرتېر ګاوريلوف، کارمل، وطنجار، ګلابزوی او سروري. په دغه غونډه کې په اصطلاح افغاني ملګرو د روسانو په سلا د پوځي مرستې موضوع طرح او د شوروي لوري له خوا ومنل شوه. د پوځ د لېرلو وخت د دسمبر د مياشتې تر پايه اټکل شو. کارمل په دغه غونډه کې په ډېرې غوره مالي اندروپوف ته وويل چې که شوروي پوځونه په پسرلي کې افغانستان ته تللي وای نو د افغانانو له خوا به دومره کلان ورباندې شيندلې شوي وای چې دوی ټول به د کلانو لاندې شوي وای.

د ۱۹۷۹ کال د دسمبر د مياشتې په اتمه نېټه په کريمېل کې په افغانستان باندې د پوځي تيري په اړه غونډه کېږي چې بريټنډف، اندروپوف، اوسټينوف، ګروميکو او سوسلوف په کې کېدون کوي. سوسلوف د خپل راپور په ترڅ کې وايي: «ملګري بېرک کارمل دلته په مسکو کې د وطنجار، ګلابزوی او سروري سره وليدل. سره له دې چې دوی په بېلو بېلو فراکسيونو کې دي دوی ګډ دښمن سره يوځای کوي او هغه ګډ دښمن امين دی. د هغه په وړاندې دوی چمتو دي چې په کېد عمل وکړي.» ۷۵۷

بريټنډف پوښتنه کوي: «دا څومره واقعي ده چې دوی زموږ د مرستې پرته واک ته راشي؟ بريټنډف پرته له دې چې ځواب ته منتظر شي اوسټينوف ته مخ اړوي او ورته وايي: ديميتري فيودوروويچ. پوځ د بېرک کارمل څخه ملاتړ کوي؟ ستا مشاورين څه وایي؟

فکر نه کوم ليونيد ايليچ. په پوځ کې د امين نفوذ زښته زيات دی. دوهم دا چې عملاً ټول افسران خلقيان دي او بېرک پرچمي دی» ۷۵۸

بريټنډف د سوسلوف څخه پوښتنه کوي: «پوستونه يې سره وويشل؟ اساسی پوستونه وطنجار، ګلابزوی، سروري او د کارمل نږدې کسان نور، اناهيټا،

نجیب او وکیل نیسي. بریټنډ د اندروپوف څخه پوښتنه کوي: «یوري ولادیمیروچ [اندروپوف]. داسې وضع امکان لري چې بېرک کارمل زموږ د برخې اڅېستنې پرته واک ته ورسېږي؟ زما مقصد د پوځ د ننوتلو څخه دی؟

په بشپړه توګه، که موږ تشبه وکړو نو امین افغاني ستالین دی او داسې کسان لکه چې موږ پوهیږو صمیمي ملګري نه لري. ځکه زه د پېښو داسې امکان نه ردوم چې امین به لیرې کړای شي.

تاسې دا ثبوت پیدا کړو چې هغه سي اي اي اې جذب کړې دی. تراوسه نه، لیونید ایلچ، «۷۵۹»

د ۱۹۷۹ کال د دسمبر په ۱۲ نېټه د کابل څخه د کې چې بې نماینده ایوانوف مسکو ته دوه راپورونه لیري: «لومړی دا چې د پاکستان اردو ستر درستیز د دوو ورځو په موده کې د پاکستان د ځواکمنې منظمې اردو پندریعه د کابل د نیولو پلان لري... دوهم دا چې د نږدو هفتو په جریان کې د هغو ځواکونو له خوا، چې د امین په وړاندې ولاړ دي، د هغه د واکه څخه د لیرې کولو پلان لري.» ۷۶۰

دا دواړه راپورونه بریټنډ ته ورکړل شول او د ۱۹۷۹ کال د دسمبر د دوولسمې نیټې د ماښام د ډوډوی وروسته په نېو بجو د بریټنډ په مشرۍ غونډه جوړېږي چې اندروپوف، اوستینوف او کرومیکو په کې کېدون کوي. په دې غونډه کې پرېکړه کېږي چې افغانستان ته دې د شوروي پوځونه ننوزي. د دغه راپور څخه ډیر کالونه تېرېږي خو هېچا دا سند وړاندې نه کړو چې د پاکستان اردو د کابل د نیولو پلان درلود. برعکس د ضیاء الحق په راتګ سره د افغانستان او پاکستان په اړیکو کې ښه والی منځ ته راته. «۷۶۱»

په دې توګه په افغانستان باندې د شوروي یرغل پرېکړه څلورو تنو وکړه. وروسته د سیاسي دفتر غړو هغه لاسلیک کړه. د پوځ ستر درستیز د دې پرېکړې په وړاندې خپل اواز پورته کړ خو اندروپوف هغه غلی کړ.

ایوانوف لیکي: «کله چې سیاستوال زور ته لاس اچوي هغوی د سیاستوال په حیث مري... بریټنډ، اندروپوف، کرومیکو او اوستینوف د سیاسي لارښوونکو په حیث کټ مټ د دسمبر په دوولسمه نېټه مړه شول. دوی د هغې وضعې یرغمل شول چې په خپله یې منځ ته راوړې وه. سیاسي عمل ترسره شو او پوځیانو ته پرته له دې، چې دا په ستره پیمانته عملیات په لږو تلفاتو ترسره کړي، نور څه پاتې نه شول.» ۷۶۲

اوستینوف د ۱۹۷۹ کال د دسمبر په دیارلسمه نېټه ستر درستیز ته دنده سپاري چې په افغانستان باندې د وسله وال تیري له پاره پوځونه تیار کړي او کرومیکو په ملګرو ملتو

کې د شوروي اتحاد دايي نماينده ته شفر ورکوي: «که چېرې د امنيت په شوری کې افغانستان ته د شوروي پوځونو د ننوتلو مسله پورته کېږي د ملګرو ملتو د منشور د ۵۱ مادې له مخې، چې هر هېواد د ځانګړې او ډله ايزې دفاع حق لري، باندې تکيه وکړي.» ۷۶۳

د ستر درستيز د اوپراسيون د رياست د جنوبي لوري مسؤل ډګروال بوګدانوف د دسمبر په ديارلسمه نېټه هغه وخت، چې د ده څخه پوښتنه وشوه، د خپل سيف څخه هغه نقشه راباسي چې شپږ مياشتې پخوا يې افغانستان ته د شوروي پوځ د ننوتلو په موخه جوړه کړې وه. دغه نقشه چې د سره وکتل شوه نو نوموړي «په خپلو حسابونو کې درې، څلور کنډکه تېر وتنه کړې وه.» ۷۶۴

په دې ترتيب سره وينو چې په افغانستان باندې د وسله وال تېري پلان لا د ۱۳۵۸ کال د جون په مياشت کې جوړ شوی و او د دغه پلان جوړولو به هم يو ټاکلی وخت هم نيولی وي. اوس به وګورو چې شوروي اتحاد خپله پرېکړه څنګه پلې کړه.

شوروي اتحاد د وسله وال يرغل په درشل کې

کاکړ وايي چې د ک ج ب پلان دا شو چې د مخه تردې چې د شوروي پوځ افغانستان ته ننوزي بايد امين د منځه وړل شوی وي او د هغه پر ځای کېناستل شوی کارمل به د شوروي پوځ ته بلنه ورکوي تر څو افغانستان ته د شوروي پوځ ننوتل «مشروع وګنل» شي. د دغه پلان له مخې به امين په زهرو له منځه يوړل شي او ک. ج. ب کارمل د کودتا په کړلو سره واک ته ورسوي.

د امين پرضد د کې چې بې ناکامه کودتا

د امين پرضد د کې چې بې ناکامه کودتا مې په زياته اندازه د خپل کتاب «د ثور پاڅون، د کې چې بې دسيسې او شوروي يرغل» له مخې کېښلې ده. اندروپوف د امين پرضد د کودتا له پاره غواړي کارمل، اناهيتا، نور او وطنجار افغانستان ته ولېږي. په دې منظور دوي د کې چې بې د لومړی رياست څخه تاشکند ته راوړل کېږي. داود جنبش د «الف-د کې چې بې پټ پوځي ټولګی» نومي کتاب، چې د کې چې بې افسر ليکلی دی، نقل قول کوي:

«مېلمانه د ننه وبلل شول. په يوې خونې کې يو پند سړی د ميز شا ته ناست او په پوره زور له چايو نه غرپ کوي. د پند سړي نوم چيچيرين و.

خو د انتظار شېبه لنډه وه. د لومړی رياست استازی راغی، له روغېر وروسته يې په

څو ټکو کې د هر چا دندې روښانه کړې. د هغه چا پوره ساتنه به کوی چې اوس درسپارل کېږي.... د غفلت په صورت کې مو سرورنه غوڅيدلی شي» ۷۶۵

دکې چې بې نمانده د اسرارو د پټولو په غرض په بېرک د «بوریا»، په اناهیتا د «انیا»، په اسلم وطنجار د «ساشا» او په نوراحمد نور هم کوم روسی نومونه ږدی او تاشکند ته وړل کېږي. داود جنبش لیکي: «وايي همدلته بېرک کارمل د روسانو په سلا د امین د رژیم د نسکورېدو په هکله وینا ثبتوي. ټينگار کوم دا د جدي د شپږمې نه نږدې شپاړس ورځې مخکې خبره ده.» ۷۶۶

د کودتا د کړلو په منظور هغه مسلمان کنډک، چې د نورمحمد تره کي د غولونې له پاره جوړ شوی و، د دسمبر په نهمه او دوولسمه د دووځانکرو الوتنو پذیرعه بگرام ته ولېږل شو او د پراشوت د هغه کنډک سره یو ځای شو چې لا پخوا په بگرام کې موجود و او د تره کي د ساتنې له پاره یې غوړ ونه کراوه. مسلمان کنډک په افغاني یونیفورم کې د مسکو قوماندې ته سترګې په لاره و. د دسمبر په لسمه نېټه د بگرام په هوايي ډګر کې د تورن جنرال گوسکوف په سمخه کې د فضايي سپورمی نوی تیلیفون نصبیږي چې د مسکو څخه د امین پر ضد کودتا سیخه د اندروپوف تر قوماندې لاندې ترسره شي.

دشپي له خوا د تاشکند څخه بېرک، نور، اناهیتا او وطنجار د تو- ۱۴۴ الوتکه کې بگرام ته راوړل کېږي. د دسمبر په دیارلسمه نېټه ډګروال سکوکاریف خپل دفتر ته د ځانکړې ځانګې افسران راغواړي «په هېواد کې د دولتي کودتا امکان شته. زموږ دنده دا ده چې په هېڅ پلمه اجازه ورنه کړو چې یوه الوتکه هوا ته پورته شي... د موجوده الوتکو پرته لکه چې تاسو پوهیږی دوی ورځې د مخه د شوروي څخه د «میک الوتکو» جوپه راغله. د الوتکو ورکړه وځنډول شوه، راز راز علتونه په گوته شول لکه اضافي پرزې یې پوره نه دي، تنظیمونه یې خرابه ده او دې ته ورته. په دغو الوتکو کې به زموږ پیلوتان کېښي، نه افغاني پیلوتان.» ۷۶۷

اندروپوف غوښتل چې د ۱۹۷۹ کال د دسمبر په شپاړسمه نېټه په افغانستان کې د امین پر ضد د هغو شوروي قطعاتو پذیرعه، چې هلته موجودې وې او هغو پټو لېږل شویو کوماندوگانو پذیرعه چې د شوروي په سفارت کې یې ځای په ځای کړی وو، کودتا وکړي. شورویانو پلان درلود چې لومړی حفیظ الله امین او د هغه وراره اسد الله امین ته زهر ورکړي او دوی د لویې څخه وباسي.

کاکړ وايي چې د امین د منځه وړلو له پاره د ک. ج. ب اتحې ځانګې موتالین طالبوف په نامه یو اذربایجاني چې په پارسو روان کېږده، د صابر په نامه د امین په پخلنځي کې ځای

په ځای کړی و. ۷۶۸ نو بیا یې د دغه خپل اجنټ پذیرعه په منو کې زهرجن مواد پېچکاري کړي او د نورو منو د پاسه یې اېښې دي. اسدالله امین هغه منه خوري چې زهرجنه ده او سخت ناروغه کيږي، سمدلاسه یې روغتون ته وړي او په چټکتیا سره یې د روغتون څخه شوروي اتحاد ته د درملنې په پلمه لېږي. خو حفیظ الله امین زهرجنه منه نه خوري او روغ پاتې کيږي او دا دسیسه ناکامېږي.

د ۱۹۷۹ کال د دسمبر په شپاړسمه نېټه وروسته له دې، چې نوموړې دسیسه ناکامېږي، اندروپوف تورنجرال کوسکوف ته امر کوي چې سمدلاسه مېلمانه بیرته شوروي اتحاد ته واستوي. د فرغانې څخه ان-۱۲ الوتکه د بگرام هوايي ډگر ته الوتنه کوي. د الوتکې انجنونه همغسې چالان او د شا باروونکې برخه یې خلاصېږي او مېلمانه پکښې پټوي او سمدلاسه د شوروي په لور الوتنه کوي. بل سهار روسي پیلوټان هم شوروي اتحاد ته الوتنه کوي او «د میګ الوتکې، چې د امین پر ضد کودتا کې به شوروي پیلوټانو په کار وړلې، افغانی پیلوټانو ته وسپارل شوې.» ۷۶۹

کاکړ وايي چې بیا ک ج ب دغه شوروي شوي پرچمیان او شوروي شوي خلقيان د بې ارادې ساه کښانو په شان تاشکند ته بېرته واستول. کاکړ وايي چې دوی په کې چې بې ډډه کړي وه او باوري وو چې دوی به په واک کوي. د دغه پلان د ناکامۍ وروسته دوی اړ شول چې په افغانستان باندې پوځي يرغل ته لاس واچوي.

په افغانستان باندې د شوروي وسله وال يرغل

کاکړ وايي چې په افغانستان باندې د وسله وال برید نه د مخه شوروي پوځي ټولگي په ورو ورو ډلو او د ک. ج. ب غړي په بیلو بیلو بڼو افغانستان ته ننوتل. یو شمېر سرحدي ساتونکي په ملکي جامو کې له ورو وسلو، ورو ماشینګنو، توپنګجو او لاسي بمونو سره د شوروي سفارت د ساتنې په نامه ورزیات شول. د ک. ج. ب اووم لمړ څانګې له عملياتي ډلې نه هم د شوروي تاسیساتو د ساتنې په پلمه، د افغانستان د باندینيو چارو د وزارت د مشاورينو په نامه کابل ته ننوتل. داسې هم یو څو ماهران کابل ته راغلل چې په دارالامان کې د امین د هستوګنځي د مخابرو لیکې تر څارنې لاندې ونیسي. د «agat» عملياتو لومړنۍ چارې د ک. ج. ب بین المللي څانګې د اتم مدیریت تر څارنې لاندې پرمخ بیول کېدې. په دې ډول د دسمبر د میاشتې په بهیر کې د ک. ج. ب ایجنټانو کابل شپه او ورځ تر څارنې لاندې نیولی وو. د هستوګنځي یا شوروي سفارت کې د ک. ج. ب څانګې د ۱۶۰۰ نه زیات پوځي مشاوران او چارپوهان، د هستوګنځي نه د باندې د ک. ج. ب ۶۱ غړي، په خپله د

هستوګڼځي ۲۱ ایجنټان او د زینت د ټولګي لس تنه افسران د جاسوسی په چارو بوخت وو. پر هغه سربېره ۱۰۳ تنه ایجنټان او ۱۱۰ تنه مرستندویان (چې شاید افغان جاسوسان وي) له هستوګڼځي سره په تړاو کې وو. د کابل او مسکو تر منځ مخابره په پرله پسې ډول چالانه وه. ۷۷۰

په همدغه مهال هغه شوروي مشاوران او ژباړونکي چې د امین پلویان کنل کېدل مسکو ته په بیلو بیلو پلمو وغوښتل کېدل. په دوی کې ډېر مهم د افغانستان د وسله وال پوځ د سیاسي چارو د عمومي رییس مشاور جنرال زاپلاتین و چې مسکو ته وغوښتل شو. همدارنګه ډګر جنرال دیمیتکوف چې باید د جنرال کاریلوف ځای یې نیولی وای درې اوونۍ وروسته په دې مسکو ته وغوښتل شو چې د خلقیانو لوری یې نیولی و. شوروي مشرتابه د ستر جنرال پاولوفسکي په مشرۍ پلاوی بېرته مسکو ته وغوښت چې افغانستان ته یې د شوروي پوځونو د لېرلو مخالف و.

د دسمبر په ۱۷مه یوه ډله شوروي سرتیري په دارالامان کې ځای په ځای شول چې د تاج بېک په ماڼۍ کې د امین د نوي هستوګڼځي ساتنه وکړي. د کارډ قطعه چې نږدې دوه زره سرتیري یې درلودل د جانداډ صبري په قوماندانۍ د ماڼۍ د ساتنې له پاره ځای په ځای شوي وو. داسې هم «شورویانو مسلمان کنډک په دارالامان کې د امین د ساتنې په نوم ځای په ځای کړ». ۷۷۱ چې د جدي په ۶مه یې د زینت د ټولګي سره یو ځای د امین په ماڼۍ برید وکړ.

شورویان د ۱۹۷۹ کال د دسمبر د شپاړسمې نیټې د ناکامې دسیسې وروسته په دې پوه شول چې پرچمیان په افغانستان او په ځانګړې توګه په وسله وال پوځ کې هېڅ نفوذ نه لري او هغه پوځي قوتونه، چې دوی افغانستان ته په بېلو بېلو پلمو د خلقیانو څخه پرچمیانو ته د واک د لېږدولو په خاطر استولي وو، د امین د راپرزولو له پاره بسنه نه کوي. له دې کبله شوروي مشرتابه افغانستان ته د یو سلوشلو زرو شوروي پوځ د ننوتلو له پاره د شرایطو په برابرولو کار پېل کړ.

اندریو پوف دې موخې ته د رسېدو له پاره په کابل کې خپل ځانګړي استازي جنرال ایوانوف ته دنده وسپارله چې د افغاني مقاماتو او په ځانګړې توګه امین ته ووايي چې دې چې یې د معلوماتو له مخې د پاکستان وسله وال پوځ پلان لري چې په نورستان برید وکړي او هغه ونیسي. خو همدغه اندروپوف د بریټنډ د غولولو له پاره د همدغه ایوانوف پدربغه مسکو ته بیا د پاکستان د منظمې اردو له خوا د کابل د نیولو راپور ورکوي. د دغه پلان له مخې مجاهدین به په نورستان کې موقتي حکومت اعلان کړي. د امریکا متحده

ايلات، سعودي عربستان، پاکستان، چين او نور لوېديځ هېوادونه يې سمدلاسه په رسميت پېژني. دا موضوع زښته جدي ده او کېدای شي د درېيمې نړيوالې جگړې د پيل ټکی شي.

د پېښو د دغسې ودې د مخنيوي په موخه د مخه تر دي، چې اشرار په نورستان کې موقتي حکومت اعلان کړي، بايد د افغانستان وسله وال پوځ په نورستان او بدخشان کې پوځي عمليات ترسره کړي. د نورستان د عملياتو د ترسره کولو له پاره د اوومه او اتمه فرقې ننګرهار ته واستول شي او د بدخشان د عملياتو د ترسره کولو له پاره د د نهرين فرقه او يو غونډ د باميانو څخه بدخشان ته واستول شي.

دا تشه، چې د کابل څخه د پوځونو د لېرلو په نتيجه کې منځ ته راځي، شوروي اتحاد تيار دی چې د هغې د ډکولو له پاره په موقتي توګه درې کنډکونه درواستوي چې يو کنډک به په بالاحصار، بل کنډک به په باميانو او دريم کنډک به په کيله کې کې ځای په ځای شي. په پای کې امين پرته له دې، چې د حکومت د غړو او يا د سياسي بيورو د غړو سره خبرې وکړي، په خپل سر يې د درې کنډکونو د رالېرلو هوکړه د شورويانو سره کړې وه. دا موضوع امين د ۱۳۵۸ کال د جدي په پنځمه نېټه د سياسي بيورو د غونډې وروسته هغه وخت، چې بار ته د ناشتې د صرفولو له پاره د غونډې غړي ننوتل، ياده کړه او وويل چې په افغانستان کې د سوسياليزم جوړېدل تضمين شول او دا هغه مهال و، چې شوروي پوځونه د الوتکو پندريعه د خواجه رواش هوايي ډګر ته په راتلو، پيل کړی وو.

هغه وزير ته ويلي و چې د شوروي د درې کنډکو په راتګ خفه دی ځکه هغه د ثور د انقلاب ملي ارزښت کموي. امين شورويانو ته ويلي و چې د دغو درې کنډکونو سرتيري بايد پټ وساتل شي چې افغانان يې ونه ويني که نه نيمايي افغانان به هېواد پرېږدي.

کاکړ وايي چې د روسي افسرانو د ليکنې له مخې د دسمبر په ۲۵ مه په ماښام د څلوربېستم لمبر پوځ يو کنډک د امو له سين نه افغانستان ته ننوت. ورپسې ټوله شپه ټوله فرقه د شوروي د ملي دفاع وزارت لومړي مرستيال مارشال سوکولوف په قوماندانۍ تېره شوه. په بله ورځ د دسمبر په ۲۷ مه د جدي په ۶ مه ورته امر وشو چې په پنځه نيمو بجو ځان کابل ته ورسوي. دی زياتوي چې په عين حال کې په دغه ورځ د پاراشوټ د فرقې واحدونه د کابل په هوايي ډګر کې او يو پاراشوتي کنډک په بگرام کې ښکته شوي وو. د دسمبر په ۲۷ مه يوه موټريزه فرقه د امو د لوېديځ نه تېره شوه او په بله ورځ يې د هرات کنټرول په لاس کې ونيو. ۷۷۲

د کاکړ په وينا ک. ج. ب څو کړی د مخه د زهرجن کولو لوبه پيل کړې وه. امين د

۱۹۷۹ کال د دسمبر په ۲۷مه د غرمې په يوه بجه د تاج بېک په ماڼۍ کې د خپل کوند د سياسي دفتر غړي غونډې ته بللي و. د غونډې يوه موخه دا هم وه چې غلام دستکبر پنجشيري چې د امين په واکمني کې په مسکو کې و او نوی راستون شوی و، د سياسي دفتر غړو ته هغه څه ووايي چې په مسکو کې يې د امين او د هغه د حکومت په کټه کړي وو. دی د زيري له قوله وايي چې مېلمانو ته لومړی بنسټ ورکړل شوه چې ډېره خونديزه او د مستو غونډې خوند يې و. ټولو د بنسټ او نورو خوارو ستاينه وکړه. حفيظ الله امين وويل «يو ښه او خاص اشپز يې راستولی دی. ډېر ښه شيان پخوي.» ۷۷۳ د قوماندان جانداد په روايت هم «دودۍ شوروي اشپزانو پخه کړې... او دودۍ ته همدې شوروي اشپزانو زهر اچولي دي...» ۷۷۴ يوازينی کس چې بنسټ يې ونه څښله دستکبر پنجشيري و، ځکه چې د زيري په روايت «... لا د مخه ويل شوي و، چې سوپ ونه خوري.» ښاغلي زيري په تليفون کې ما ته دا هم وويل چې ده په دغه ورځ په پخلنځي کې يو شوروي اشپز ليدلی و. له دغې پېښې نه وروسته خلقيان پر پنجشيري باندې شکمن شول چې «د امين د واکمنۍ په نسکورولو کې يې له شورويانو سره برخه واخېسته.» ۷۷۵ امين ښه بې هوښه شوی و. د يوه روايت له مخې د روغتون نه ډاکټر ولايت او يو شوروي ډاکټر د درملنې له پاره راغلل چې وروستی بيا په دزو کې ووژل شو.

د دسمبر په ۲۷مه د جدي په ۶مه ماښام په شپږ نيمو بجو د کابل د مخابراتو په مرکز کې چاودنه وشوه او په هغې سره د ښار تليفونونه د کار نه ولوېدل. د دغه کار له پاره د شوروي اتحاد د مخابراتو وزير درې ورځې د مخه کابل ته په دې پلمه راغلی و چې کواکې د هغه د عصري کولو له پاره د شوروي مرستې ارزوي. خو د هغه موخه دا وه چې هغه په کره توگه په نښه او د کار نه واچوي. د ماښام په تيارې سره د خواجه رواش د هوايي ډگر نه د شوروي پنځه زره سرتېري خو د ک. ج. ب په روايت ۷۰۰ سرتېري د تاج بېک د ماڼۍ په لوري روان شول.

او هېچې او شل دقيقې وې چې د تاج بېک په ماڼۍ د لوېديځ له خوا توغوندي وويستل شول او دغه د توغونديو باران تر دوولسو بجو پورې روان و. وروسته مالومه شوه چې د ک. ج. ب د الفا او زينت ټولگيو په افغان يونيفورم کې د کرنېل بوريانوف په قوماندانۍ د حکومت په ضد په عملياتو پيل کړی دی. داسې هم شوروي پوځي ټولگي د څرخي پله، قرغې او د ريشخور په لور لاړل تر څو د منظم پوځي مقاومت مرکزونه يې تر څارنې لاندې نيولي وي. ځينې قوتونه د کورنيو چارو وزارت او راډيو ټلويزيون په لور هم لاړل. خو د شورويانو اصلي پام د تاج بېک ماڼۍ په خوا و چې د حفيظ الله امين هستوگنځی و.

د يرغل کوونکو سره سخته مقابله د جمهوري کارډ وه، چې ډېر يې تعليم کړي او سرپرېکړي ځوانان وو. متروخين وايي چې د دارالامان مانۍ که څه هم زر ونيوله شوه او امين د خپلې کورنۍ سره ووژل شو، د هغه ساتونکو دغومره سخت مقاومت وکړ چې ک. ج. ب يې هېڅ فکر نه کاوه. د ک. ج. ب د ځانگړو قواوو نه تر سلو تنو ډېر ووژل شول، او ټپي شول. په وژل شوو کسانو کې کرنبل کريکوري بوريانوف د اتعي ځانگړي قوماندان هم و، چې له مرگ وروسته د شوروي اتحاد د اتل په لقب وويارل شو.

د کابل د راډيو او ټلويزيون ساتونکو تر هغه په مېرانه وجنگېدل چې ټول ټانکونه يې د منځه لاړل. هلته د يوه کندهاري سرتيري مقاومت د يادونې وړ دی. چې نه يې غوښتل له خپل امر د اجازې پرته بل چا ته د ننوتلو اجازه ورکړي. ځنکه چې هغه په داسې يوه ځای کې ولاړ و، چې رسېدل ورته يې له دې چې ودانۍ ته زيان ورسېږي، گران و، يرغلگر په ځای ودرېدل او د هغو پر ځای د سټېشن يو مشاور چې پېچلوف نومېده چې کندهاري پرې باور درلوده ورنږدې شو او مرکې وار يې پرې وکړ. په دې ډول شورويانو په همدې شپه کې د کابل واکمني ترلاسه کړه او له امين سره يې د هغه حکومت هم نسکور کړ.

شورويانو بيا د تاشکند او دوشنبې د راډيوگانو نه د بېرک کارمل د مخه ثبت شوې وينا د کابل راډيو په څپو خپره کړه. د کارمل په اواز کې وويل شول چې د امين حکومت نسکور شوی او دی د انقلابي شورا په نامه له افغانانو او په تېره د نظامي افسرانو نه غواړي چې امنيت وساتي. هغه د امين حکومت فاشستي او وينې هېونکې وښوده.

کاکړ وايي چې په دغه وخت کې کارمل په افغانستان کې نه، بلکې د شوروي اتحاد په کوم جمهوريت کې و. دا د شوروي پوځ و چې د مخه يې په افغانستان باندې تېری کړی، د افغانستان حکومت يې د امين په سروالی نسکور کړی او دغه پوځ دا شونې کړې وه چې د کارمل ثبت شوی اواز په افغانستان کې واورول شي. نو په دې کې يوه زړه شک هم کېدای نه شي، چې شوروي اتحاد پر افغانستان باندې وسله وال يرغل کړی، او شوروي شوی، له افغانستان نه شړل شوی او له افغان تبعيت نه بې برخې شوی کارمل يې د نوي حکومت د سروال په توگه ټاکلی و. ۷۷۶ دی زياتوي چې شورويانو دی ځکه په واک کړ چې کارمل په ۱۹۵۷ کال کې د «ماريد» په نامه د ک. ج. ب اجنټي منلې وه. خو دوی په خپله اعلاميه کې په درواغو د خپلو خلکو د غولولو او نړيوالو ته په سترگو کې د خاورو اچولو په نيت وويل چې «په افغانستان کې قوتونه راولاړ شول، د امين رجيم يې په غوڅه توگه له منځه يووړ.» ۷۷۷

د خلقي لويانو تېروتنې

د خلقيانو او پرچميانو او په واقع کې د ټولو افغان کمونستانو اساسي تېروتنه دا وه چې دوی د افغانستان غوندې هېواد کې د کمونستي ايډيالوجۍ پر بنسټ سياست او کره وړه تر سره کول په داسې حال کې چې افغانان پر ملي او ديني ارزښتونو ټينګ ولاړ او د کمونيزم مخالف وو. کاکړ دا هم وايي چې څنګه چې د دغې ايډيالوژۍ خاوندان د دريښې نړۍ په ځينو هېوادونو کې واک ته رسېدلي وو، دوی هم دولتي واک ته د رسېدو له پاره دغه لار ونيوله او له دوی نه خلقيان په کودتا سره واک ته ورسېدل. په ټوليز ډول خلقيان په دې باوري وو چې شوروي ملګري يې د کډې ايډيالوژۍ له مخې خپل ملګري دي او د نظام په ټينګولو او د هېواد په ودانولو کې به د دوی سره راز راز مرستې کوي. په دغه فکر کې دوی سخت تېروتل. د دوی د لويانو بله تېروتنه دا وه چې دوی د خپلې ايډيالوژۍ له مخې په شوروي لويانو باندې باور وو، پرته له دې چې هغوی يې د خپلو کړو او سياست له مخې پېژندلي وي. د دوی بله تېروتنه دا وه چې دوی د خپل افغان کدرنو او چارپوهانو نه چې په دغه وخت کې د حکومت په ټولو څانګو کې ډېر اوږه چارو کې د مهارت او تجربې خاوندان وو، د خپلې ايډيالوژۍ د غوښتنې له مخې له ادارو نه وايستل او پر ځای يې تجربې خلقيان کېښلول.

شوروي مشران په خلقيانو شکمن و او د هرات د پاڅون په وخت کې ان د شوروي اتحاد صدراعظم ا. کاسيکين پر دوی شکمن و او ويل يې چې دوی له مور نه هر څه پتوي او مور نه پوهېږو چې په افغانستان کې واقعيت څه دی. کاکړ وايي چې د کاسيکين «له دغې وينا نه څرګنده ده چې خلقي لويانو د حکومت په کولو کې له شوروي مشاورانو سره مشوره نه کوله. په اسلام اباد کې د تاس استازي هم د دغه نظر په ملاتړ ويلي و چې «امين لکه تر هغه د مخه د تره کي په شان حاضر نه و، چې مشوره ومي...» له مشورې نه مقصد د شوروي اتحاد مشوره وه، په دغه مقصد چې خلقي حکومت پرچميان په حکومت کې شريک کړي.» ۷۷۸ کاکړ زياتوي چې د امريکې د استخباراتو په يوه راپور کې راغلي چې مسکو د ۱۹۷۹ کال په اوږو کې د تره کي- امين رژيم د بدلولو په لټه کې و. په راپور کې دا هم ويل شوي چې شورويان د خلک ډموکراتيک ګوند د سيالې ډلګۍ مشران چې په اروپا کې مهاجر دي، هڅوي چې باور وکړي چې بېرته به يې په واک کړي يا به شورويان د نظامي کودتا پلان پلي کړي. ۷۷۹ کاکړ وايي چې شوروي لويان ځکه په پرچميانو ټينګ ولاړ وو، چې پرچمي لويان انټرنېشنلسټ کمونستان او په شورويت معتقد وو. دوی د عقيدې له مخې شوروي لويانو ته د تابعيت غاړه ايښې وه، د بل هېڅ افغان ډلې لويانو د بېګانه

هېواد لویانو ته دغسې تابعیت نه و منلی، ځکه چې د دوی د واکمنۍ سرچینه شوروي لویانو وو، نه افغان ولس. د دوی د همدغه تابعیت له امله وو چې شورویانو خلقي حکومت د دوی له پاره په خپل پوځ سره نسکور کړ.

کاکړ وايي چې شوروي اتحاد ولې په افغانستان کې دغسې حکومت په پوځي زور سره رانسکور کړ چې په اصل کې د هغه پلوي و. دا چې د دوی اصلي موخه څه وه مالومول یې یو گران کار دی. د دې دلیل دا دی چې د شوروي اتحاد ټولنه سرپټې او نظام یې زورواک و او حکومت یې اصلي موخه ښکاره کړې نه ده. د شوروي حکومت په دې اړه چې هر څه ویلي د دې له پاره ویلي چې خپل دغه یرغل له قانون سره برابر وښيي. د شوروي اتحاد حکومت ان له خپل یرغل هم انکار کړی او د افغان حکومت نسکورول یې د افغانانو کار بللی او په دې اړه یې نارښتيني دلیلونه هم وړاندې کړي دي. خو د شوروي د نورو یرغلونو پرعکس د دغه یرغل په اړه دوو ټکو د څېړونکو کار اسان کړی دی. یو دا چې د شوروي اتحاد په ړنگولو سره د افغانستان په اړه د هغه یو شمېر سندونه خپاره شوي او بل دا چې د افغان جنګي قوماندانانو او هم د شوروي جنرالانو او افسرانو لیکني او مرکې راوتلې دي. د مخه مو یادونه وکړه چې د دوی یوه ادعا دا وه چې امین د لوېدیځو هېوادونو په اړه «انډولیز سیاست» پرمخ بیوه چې له مخې یې شونې وه چې افغان سیاست په هغه لوري واړوي چې د امریکا په خوښه وي. دا کار به د شوروي اتحاد سووېلي جمهوریتونه د خطر سره مخامخ کړي. دوهمه ادعا دا وه چې کویا د امین حکومت د اسلامي بنسټ پالو له لوري نه د نسکورېدو تر پولې رسېدلی و. له دې امله په افغانستان کې نه یوازې سوسیالستي نظام بلکې د شوروي اتحاد سووېل هم په خطر کې دی. رښتیا دا دي چې دغه ادعا یې بنسټه او د ک ج ب پروباکند و. سره له دې هم دغې ادعا د ډېرو لیکوالو په لیکنو کې انعکاس کړی دی. د حفیظ الله امین په سل ورځنۍ واکمنۍ کې هم هېواد نارام و، خو وسله والو مخالفانو دغه توان نه درلود چې له حکومتي ځواکونو سره مقابله وکړي، دا خو لا پر ځای پرېږده چې نسکور یې کړای شي. د ډیلي په سفارت کې د امریکا شارژدافیر په ټینګه وايي: «دغه رژیم د نسکورېدو په حال کې نه و، او ټول سفارت په دې اړه موافق و.» ۷۸۰ کاکړ وايي چې په پای کې د امین په واکمنۍ کې د افغانستان امنیتي وضع په داسې حال کې وه، «... زه، پوهاند میرحسین شاه، پوهاند امین (د هرات) له کابل نه د ننګرهار پوهنتون ته په اوونۍ کې یو ځل د درس ورکولو له پاره ان د شوروي تر یرغل پورې تللو، بې له دې چې د نارامۍ کومه نښه مو په سترگو شوې وي.» ۷۸۱

دی زیاتوي چې همدغسې وضع په لیدو سره به و، چې هغه شوروي جنرالان چې په

افغانستان کې يې نظامي وضع څېړلې وه، افغانستان ته د شوروي پوځ د استولو مخالف وو. د دوی مهم کسان جنرال کوريلوف، په کابل کې د دفاع وزارت مشاور، جنرال زاپلاتين، د افغانستان د وسله وال پوځ سياسي مشاور او جنرال پاولوفسکي وو. د لوېديځ په لور د امين ميلان شوروي لويانو ته هسې پلمه وه، دوی په اصل کې نه غوښتل چې امين پر خپلواک افغانستان باندې پر خپلواک ډول حکومت وکړي. دوی د شوروي شوي کارمل او د هغه شوروي شويو ملگرو له لارې غوښتل افغانستان د بخارا په شان د خپلې امپراتورۍ يوه برخه وگرځوي او بيا به د لاس لاندې رژيم له لارې له هغه له طبيعي زېرمو او شتمنيو نه گټه پورته کړي او په هغو سره خپل ځای په ځای درېدلی اقتصاد په حرکت راوړي.

کيورکي کورنېنکو د شوروي اتحاد د باندنيو چارو د وزير لومړی مرستيال شوروي يرغل د يوې بلې موضوع سره هم تړلی کړي او هغه دا چې «... داسې ښکاري چې تر هغه وخته چې د دې پرېکړه وشوه چې افغانستان ته پوځ واستول شي، د شوروي اتحاد او امريکې او ناټو او نورو هېوادونو تر منځ اړيکې ستونزمنې شوې وې. په ځانگړې توگه د سالټ-۲ تړون چې د ۱۹۷۹ په جون کې کارتر او بريټنډ لاسليک کړی و، په امريکې کې په واقع کې د هغه د مخالفانو له امله په ناکامۍ محکوم و، وروسته افغانستان ورته خاتمه ورکړه. دا کوم تصادف نه و، چې وروستۍ فيصله د ۱۹۷۹ د دسمبر په دولسم ماښام هغه وخت وشوه چې مسکو خبر شو چې د ناټو شورا پرېکړه کړې چې په اروپا کې به د امريکې د منځني واټن ويشتونکي راکټونه ځای پر ځای شي. په بل عبارت د شوروي لويانو په فکر هغه دليلونه چې پخوا افغانستان ته د شوروي پوځ په استولو سره پر لوېديځ باندې د منفي اغېزو له امله مهم ښکاره کېدل، سمدلاسه له اعتبار نه وغورځېدل، دغه اړيکې پخوا خرابې شوې وې بيا نو څه نه وو پاتې چې له لاسه وځي.» ۷۸۲

د حيراني ځای دی چې د ناټو د پرېکړې په وړاندې د شوروي لويانو ځواب پر افغانستان د دوی وسله وال يرغل شو، په داسې حال کې چې د دغه يرغل او د ناټو د پرېکړې تر منځ تړاو نه و. سره له دې هم هغه لکه چې د مخه ويل شوي، د شوروي امپراتورۍ د لا پراخېدو له پاره يوه پلمه شوه، خو د يرغل اصلي موخه يې نه ښووله.

د يرغل رسمي موخه، هسې چې له مخه په خواږه ډول ياد شوي دي، د شوروي اتحاد له سوويل نه ډاډمن کېدل، د افغانستان له لارې د امريکې د خطر شندول، د «ثور انقلاب» د لاسته راوړنو خوندي کول، د امين د «انډوليز چلند» مخه نيول او په افغانستان کې د شوروي دوست حکومت له واکمن کېدلو سره مرسته کول ښودل شوي

دي، خو دا ټول هسې پلېچي دي او د شوروي د يرغل اصلي موخه بل څه وه. کاکړ وايي چې په افغانستان باندې د دوی اصلي موخه دا وه لکه چې د مخه يې يادونه شوې ده چې دوی د امين حکومت د دې له پاره نسکور کړ چې هغه انډوليز سياست پرمخ بيوه او غوښتل يې افغانستان پر خپلواک ډول اداره کړي. دوی د شوروي شوي کارمل او د هغه شوروي شويو ملگرو له لارې غوښتل افغانستان د بخارا په شان د خپلې امپراتورۍ يوه برخه وگرځوي او بيا به د لاس لاندې رژيم له لارې له هغه له طبيعي زېرمو او شتمنيو نه گټه پورته کړي او په هغو سره به خپل ځای په ځای درېدل اقتصاد په حرکت راوړي.

د بروس ريچارډسن په وينا روسانو د نولسمې پېړۍ له نيمايي راهيسې د سوېلي او منځني اسيا د ښکېلاک په هلو ځلو کې هڅه کوله افغانستان په څو ټوټو ووېشي. په ۱۹۸۱ کال کې د «کاسکې» د عملياتو تر سيوري لاندې بريژنف بېرک کارمل ته لارښوونه وکړه چې د هېواد د وېش او د مسکو د حضور له پاره دې د کاري پلان بنسټ کېږدي. د دغه پلان له مخې هغو ډلو ته به محدودې خپلواکي ورکړل شي چې د مسکو له پلان څخه ملاتړ کوي. په ۱۹۸۹ کال کې کله چې روسي سرتېري له افغانستان څخه وتل مسکو هڅه وکړه چې شمالي ټلوالې ته خپلې پوځي او سياسي مرستې زياتې کړي چې د هېواد د ولکې ترلاسه کولو له پاره د پخوانيو مجاهدينو او طالبانو سره په جگړه بوخته وه. مسکو دا مرسته ځکه کوله چې په کابل کې د خپل پلوي رژيم له لارې کولی شي د افغانستان په شمال کې د بډايو طبيعي زېرمو د لړۍ د پلټنو له پاره ښه بنسټ شي او هم به په سيمه کې د امريکا د متحده ايالاتو د سيالو اقتصادي نوښتونو د پرمختگ خنډ وگرځي په دې چې هر څوک افغانستان په لاس کې ولري هغه د قفقاز او منځني اسيا د تيلو د شتمنو سرچينو دروازه هم په لاس کې لري. ۷۸۳

د ريچارډسن په وينا د افغانستان د طبيعي سرچينو سره د مسکو لهوالتيا له ۱۹۲۷ کال وروسته ښودل شوې ده. عبد الصمد غوث وايي چې «په ۱۹۳۷ کال کې د هاشم خان حکومت د امريکا د انلنډ اېکسپورېشن کمپني سره د افغانستان د انرژي د زېرمو د موندنې او په کار اچولو له پاره تړون وکړ چې په ۷۵ کالو کې به پلي کېږي.» د عبد الصمد غوث په وينا وروسته امريکايانو په يوه اړخيزه توگه دا تړون پرېښود او په افغانستان کې دا کنکوسې وې چې په دې کار کې روسانو لاس درلود خو د افغانستان په ارشيف کې داسې سند پيدا نه شو چې روسانو په دې هکله افغانانو ته څه ويلي وي. خو د بهرنيو چارو يوه لوړ رتبه مامور ده ته ويلي چې «روسانو په نېغه د امريکايانو نه غوښتي وو چې د

افغانستان د تېلو د موندنې او د هغو څخه د کټې اخېستنې د چارو نه لاس واخلي» ۷۸۴ په ۱۹۷۷ کال کې د ملګرو ملتونو د سيوري لاندې د طبيعي سرچينو د سروې يو راپور خپور شو چې د افغان او شوروي ځمکه پېژندونکو کډ کار ښودل شوی و. د پوهانو له پاره د وود وېلسن په نړيوال مرکز کې د خپارو شويو مالوماتو له مخې ښکاره شوه چې د همدغې مودې په ترڅ کې روسي ځمکه پېژندونکو د افغانستان د طبيعي سرچينو د کميت او کيفيت په اړه په سيستماتيک ډول له افغان دولت سره درغلنه کړې ده. شوروي سلاکارانو د ځمکې پېژندنو د پلټنو پايلې په دوو گزارشونو کې چمتو کولې. يوه بڼه يې د نامېدې په ستنه ولاړه وه او هغه افغانانو ته ورکېدله او رښتيني او کره مالوماتي بڼه يې د شوروي له پاره وه. شوروي په اقتصادي او پوځي چارو کې د افغانستان د پورونو نه په کټې اخېستنې د طبيعي سرچينو د پرېمانه د کډ ملتيزو پلټونکو ډلو د پرېمانه شتون سره سره افغان دولتونه اړ شول چې د افغانستان د مينرالي سرچينو د پلټنې حق له بولي پرته شوروي اتحاد ته وسپاري.

په ۱۹۶۳ کال کې شبرغان ته نږدې د طبيعي گاز د موندلو پايله د ۶۰ ميلو د واټن په اوږدوالي له افغانستانه د شوروي مرکزي اسيا ته د يوې نل ليکې په غځېده واوښته. له گاز د پلورلو څخه ترلاسه کېدونکې کټه د شوروي د پورونو او د هغو د کټې په بدل کې شمېرل کېده، په دغو کې هغه پيسې هم شاملې وې چې شوروي د پروژو په لګښت لګولې وې. په ۱۹۸۰ کال کې شوروي افغانستان ته دا کريډټ ورکړ چې د افغانستان د طبيعي گاز د لېږد کټه دې په افغانستان کې د شوروي د مېشتو پوځونو د لګښت په بدل کې وشمېرل شي. له ۷۰ بيليونو فټ مکعب گازو تر ۱۰۵ بيليونو کوبېک فټ پورې طبيعي گاز په کلني توګه شوروي اتحاد ته د پوځي نيواک په بيه کې ورکړل شوی دی چې د نړيوال مارکېټ له بې څخه څو ځله ټيټه حساب شوېده. شوروي خپل ميټر په خپله خاوره کې ځای په ځای کړی و او د گاز د لېږد شمېره به يې يوازې په خپله نيوله او افغانستان دې ته اړ کړ شوی و چې د لېږدول شوي گاز د شمېرې په اړه د مسکو د ميټر شمېره ومني. مسکو د هر زر مکعب فټ گاز په ۲، ۵ ډالره له افغانستان څخه پېروده او اروپا کې يې په ۵، ۱۰ ډالره پلور. په دې توګه د غاز بيه په کال کې ۶۰۰ ميليونه ډالرو ته راټيټېدله. د ۱۹۸۶ کال په دسمبر کې نوي ډيلي ته له ميخايل ګارباچوف سره د مل رسمي پلاوي يوه لوړپوړي چارواکي د يوې مرکې په ترڅ کې وويل: «چې په افغانستان کې جګړې مسکو ته له اړه د يوه (سنت) په بيه لګښت نه درلود ځکه چې شوروي اتحاد خپل د اړتيا وړ طبيعي گاز او نور محصولات له افغانستانه ترلاسه کوي.» ۷۸۵ سنډي ټلګراف د جون ۹ «د روسي جګړه

شتمني لوتوي» ليکوال کشر جان اېف شرودر

په ۲۰۰۴ کال کې د افغانستان بانک ريس ډاکټر اشرف غني وايي چې «د شوروي د يرغل او نيواک له امله افغانستان د ۲۴۰ بيليونو ډالرو په کچه د خپلو اقتصادي بنسټونو په نږدنه او د اقتصادي امکاناتو په له لاسه ورکولو کې تاوان ليدلی دی.» ۷۸۶

د ۲۰۰۶ کال د جنوري په دېرشمه سرکي ستارچاک د روسيې د مالي چارو د وزارت مرستيال وويل: «روسيه چمتو ده چې د افغانستان د شوروي د پير پورونه چې اټکلنه يې لس- يوولس بيليونه ډالره کيږي تر لاندې معيارونو لاندې په مشروط ډول وبخشي: هر اقدام چې تر لاس لاندې نيول کيږي بايد د پور شمېره د افغانستان له لوري تصديق ليک سره مل وي او د پور د بخښنې هر تړون چې تر لاس لاندې نيول کيږي بايد د جنکي ماتينيو (غراماتو) او جبران په اړه د افغانستان د هرې ادعا او غوښتنې لمن وړلنده کړي چې افغانستان يې په خپله خاوره کې د شوروي سرتېرو د شتون په تړاو ولري.» ۷۸۷

په مسکو کې د اګست په ۶مه نېټه (د پور بخښنې) د تړون په لاسليک کولو ، د پور د ۸۰ په سلو کې د بخښنې منلو ته د ډاکټر احدي غاړه ايښودنه د درغلنې او زورمتې د غاړې ټيټولو مانا لري. د هغې تر څنګ د احدي لاسليک د افغانستان د هغه قانوني حق لاسونه او پښې وروټرل چې د نړيوالو تړونونو او کنوانسيونونو تر سيوري لاندې له ۲۰۰ بيليونو نه زيات اووښتی تاوان په اړه د عادلانه اقداماتو په اړه د افغانستان غوښتنه ده. ۷۸۸

د شوروي تيري په وړ اندې غبرګونونه

په افغانستان باندې د شوروي اتحاد وسله وال تيري نه يوازې په هېواد کې د ننه بلکې په نړۍ کې انګازې وکړې. دا لومړی ځل و چې شوروي د خپل کمپ نه د باندې پر يوه ناپييلي هېواد باندې د ټولو نړيوالو پرنسيپونو پر خلاف وسله وال تيري وکړ. کاکړ وايي چې د افغانستان او شوروي اتحاد تر منځ د دولتي نظام او کلتوري ارزښتونو تر منځ پوره تضاد و. په سياسي ډګر کې دوی په بيلو بيلو لارو روان وو. شوروي اتحاد د نړۍ د سوسيالستي کمپ سروال او افغانستان د ناپييلو هېوادو غړی و. په شوروي کې د اسلام دين خپل کېده او په افغانستان کې اسلام لمانځل کېده. شوروي اتحاد چې د ډېر لوی پوځ او پراخې امپراتورۍ په لرلو سره له امريکا نه وروسته دوهم زبرځواک و، افغانستان يې تر خپل نفوذ لاندې هېواد ګاڼه. شوروي اتحاد تر يرغل د مخه د درويشتو کلونو په بهير کې د افغانستان په پرمختيايي پروژو کې د کريډيټونو په بڼه پولي او تخنيکي مرستې کړې وې، او د افغانستان د خلک ډموکرتيک ګوند د هغه ټينګ پلوي و، خو څنګه چې شوروي اتحاد د

افغانانو پر وطن تېری کړی و، د دوی غوڅ اکثریت د یرغل په وړاندې جک شو، او له خپل وطن، خپلواکي، ننگ، ناموس او دین نه دغسې ټینګه ساتنه وکړه چې نړیوال ورته گوته په غاښ شول. ځکه د نړۍ دېرو حکومتونو او خلکو له افغانانو سره خواخوږي وښووله او د پیسو او وسلو په گډون یې دېرې مرستې ورسره وکړې.

کاکړ وايي چې د مخه تر دې چې د شوروي اتحاد د یرغل په وړاندې د نړیوالو غبرګونو په اړه وغږېږي غواړي چې شوروي مشرتابه او په ځانګړې توګه ک ج ب د خپل یرغل د سپینوي له پاره خپلو خلکو او نړیوالو ته څه دلیلونه وړاندې کول. دوی «خپلو ګوندي کدرونو، د خپل سوسیالستي کمپ حکومتونو او هم د سوسیالستي هېوادونو ۳۶ کمونېستي او کارګري ګوندونو ته د خپلو سفیرانو او ایجنټانو او څیړونو له لارې رسوله چې د افغانستان دموکراتیک جمهوریت، چې د شوروي ملګری و، د باندینيو وسله والو باندونو له خوا تر خطر لاندې شوی او غوښتل یې چې نه یوازې د اپرېل انقلاب لاس ته راوړنې له مینځه یوسي، [بلکې] د افغانستان دموکراتیک حکومت هم نسکور کړي او هلته د امپریالیزم تر لاس لاندې حکومت په واک کړي او په دې ډول زموږ د سوسیالیستي هېواد امنیت هم له خطر سره [مخا] مخ کړي،» ۷۸۹ امین د انقلاب مشر نورمحمد تره کي او په سلګونو انقلابیان د منځه وړي او په دې برخه کې یې د باندینيو سره لاس یو کړ. ده د یوه واړه باند په ملګرتوب په واقعیت کې افغانستان د لوېدیځ په لور بیوه.

شوروي لویان د خپلو خلکو سره هم رښتیني نه وو. دوی هڅه کوله چې د شوروي اتحاد خلک د یرغل او جګړې په واقعیتونو خبر نه شي او کوشښ یې کولو چې په څیړونو یې بندیزونه ولګوي. ان پر پوستې او په تلیفوني خبرو څارنه پیل شوه. سرتیرو ته ویل کېدل چې امریکایانو په افغانستان تېری کړی او تاسو د افغانانو سره د مرستې له پاره لېږل کېږئ. خو تعلیم کړي شورویان د باندینيو راډیوګانو له لارې لږ لږ د دغه تېري او جګړې د واقعیتونو په اړه خبرېدل. له یرغل ژر وروسته د شوروي پوهانو یوې ډلې د او. بوګومولوف په مشرۍ د شوروي اتحاد مرکزي کمیټې ته یو راپور واستوه چې په هغه کې یې د یرغل د ناکامۍ وړاندوینه کړې او په وړاندې یې ټینګ غبرګون ښودلی و. ۷۹۰ شهبانادزې وايي چې په شوروي اتحاد کې خلکو پر افغانستان باندې یرغل د چکوسلواکيا د یرغل په پرتله زیات منفي غبرګون وښود. دی زیاتوي چې «له ۱۹۷۹ نه وروسته اکثر و [شوروي خلکو] په نېغ یا نانېغ ډول پر افغانستان باندې یرغل محکوم کړ.» ۷۹۱ سره له دې هم هېچا د سخاروف پرته پوره زوروتیا نه لرله چې په ښکاره یې په اړه وغږېږي. د شوروي دا یرغل د دې لامل شو چې په نړیوال کمونستي غورځنګ کې چاودون

راشي. لومړنی چاودون د ستالین د مړینې وروسته د چین کمونست گوند د شوروي اتحاد د کمونېست گوند لاره پرېښوده. د دغه يرغل پر ضد د ايټالې، رومانيې او نورو کمونستي او ملي ډموکراتيکو گوندونو د نیوکو اوازونه جک کړل. د ختيځې اروپا په هېوادونو کې سره له دې چې د شوروي اتحاد د کنټرول لاندې و، ناراضه ډلو د شوروي يرغل په ضد فعاليتونه پيل کړل او د اولمپيک په لوبو کې يې د نه کېدون غوښتنه کوله. چې په ۱۹۸۰ کال کې په مسکو کې کېدلې. په دغه لړ کې د چکوسلواکيې د يوې ناراضه ډلې په يوه ليک کې دغه لوبې هغو لوبو ته ورته ښوولې چې په ۱۹۳۶ کال کې د نازيانو په واکمنۍ کې په برلين کې شوې وې. ۷۹۲

کاکړ وايي چې په لوبديغو هېوادونو کې د شوروي يرغل په وړاندې د امريکې ولسمشر غبرگون اغېزناک و. د امريکا متحده ايالات د اوږدې مودې له پاره د نړۍ په دې برخه کې د شوروي اتحاد د نفوذ او ځواک د خپرېدو نه په اندېښنه کې و. د امريکا چارواکو فکر کاوه چې که شوروي اتحاد خپل ځان په افغانستان کې ټينگ کړي بيا به پاکستان تر نفوذ لاندې راولي او د دې وروسته به د پارس خليج په ملکونو کې خپل نفوذ خپور کړي. په دې توگه په دغه سيمه کې د شوروي نفوذ به د ايران، عراق او کوېټ تيل چې امريکې، اروپا او جاپان ته ورل کېږي، د خطر سره مخامخ کړي. امريکا په سياسي لحاظ هم اندېښمنه شوه هغه دا چې په افغانستان کې د شوروي اتحاد فزيکي شتون به امريکه اړه کړي چې د خپل دوست هندوستان سره اړيکې نورې هم ټينگې کړي. په دغه حال کې به پاکستان تر خطر لاندې او سوسيالستي کمپ به نور هم پياوړی شي. د دغې شونتيا د مخنيوي په موخه امريکې د شوروي په وړاندې دا دريځ خپل کړ چې په افغانستان کې د هغه پوځي شتون ورته ډېر گران او ستونزمن کړي او د پاکستان په لور د هغه د وړاندې تک مخنيوی وکړي. خو کاکړ وايي چې امريکايان په دې فکر هم وو چې دوی شورويان له افغانستان نه ايستلی نه شي او په خپله افغانان د دې توان نه لري چې دوی د خپل هېواد نه وباسي. په دې ډول امريکايانو په افغانستان کې د شورويانو پوځي شتون او د افغانستان بابل منل، پرته له دې هم دوی افغانستان د شوروي اتحاد د نفوذ سيمه گڼله. په دې توگه د شوروي اتحاد د يرغل په وړاندې ځواب دفاعي و او غوښتل يې چې د دغه ستر سيال اقتصاد کمزوری کړي او د وېټنام غچ ورڅخه واخلي. د شوروي يرغل نه وړاندې کارتر په ويانا کې بريټنډف ته په يوه رسمي ليدنه کې ويلي و چې «امريکې د افغانستان په ننيو چارو کې لاسوهنه نه ده کړې» او «موږ غواړو چې شوروي اتحاد همدغسې وکړي». د اگست په مياشت کې بريټنډسکي د امريکا د امنيت شورا سروال د

کارتر په لارښوونه د شوروي اتحاد سفير دوېرینين ته په افغانستان کې د شوروي اتحاد د مخ په زياتېدونکې ښکېلتيا په اړه د امريکا «ټينگه اندېښنه» ښکاره کړه. سايروس وانس د امريکا د بهرنيو چارو وزير چې د شوروي اتحاد سره د نرم چلند پلوي و، بيا يې هم د سپټمبر په ۱۹ نېټه څرگنده کړه چې «امريکا په افغانستان کې د هر ډول لاسوهنې سره مخالفه ده.» ۷۹۳ خو د نومبر د مياشتې نه وروسته چې ايران د امريکې چارواکي يرغمل ونيول د امريکې حکومت پام هغې خواته شو او د امين وړانديزونو ته يې پام ونه کړ چې د امريکې سره يې د اړيکو د ښه کولو له پاره کړي وو. بيا هم د دسمبر د مياشتې په لومړيو کې په مسکو کې د امريکې سفير توماس والتسن کروميکو ته د افغانستان پولو ته ورڅېرمه د شوروي پوځونو د خوځښتونو له امله اندېښنه ښکاره کړه.

برژنيسکي د دسمبر په ۲۶ نېټه د شوروي يرغل په اړه کارتر ته په يوه يادښت کې د امريکې د غبرگون په اړه خپلې سپارښتنې وړاندې کړې:

۱. افغان مقاومت بايد ژوندی وساتل شي نورې وسلې، پيسې او تخنيک ورته ورکړل شي.

۲. پاکستان ته ډاډ ورکړل شي چې د مجاهدينو سره مرسته وکړي. دا به اړينه وي چې مور پاکستان ته مرستې ورکړو او د امنيت سياست يې بايد د اتومي قوې د نه جوړولو له سياست نه ازاد وي.

۳. مور بايد چين، اسلامي هېوادونه وهڅوو چې د مجاهدينو سره مرسته وکړي.

۴. مور بايد روسانو ته ووايو چې د دوی کړو د سالت- ۲ تړون له خطر سره مخ کوي.

۵. مور بايد د ملگرو ملتونو موسسې ته د شوروي دغه کره سولې ته د خطر په نوم وړاندې کړو.

امريکا د شوروي د برينډ يرغل په وړاندې لومړی گام دا و چې د شوروي اتحاد سره يې د نويو قونسلسکريو پرانېستل ټال کړل؛ شوروي اتحاد ته يې د لوړې تکنالوژۍ او نورو ستراتيژيکو توکو صادروول ودرول؛ شوروي اتحاد د امريکا په اوبو کې نور ماهيان نه شي نيولی او امريکا به هغه اوولس ميليونه متریک غله چې له شوروي اتحاد سره يې تړون شوی و، پر هغه ملک ونه پلوري. امريکا همدارنگه په مسکو کې د راتلونکي کال د اوږي په لوبو کې د گډون نه ډډه وکړه او نورو لوبديځو هېوادو هم همدغسې وکړل او د اولمپيک په لوبو کې يې گډون ونه کړ.

کارتر شوروي اتحاد ته گوتځنډنه وکړه چې «هر باندنی ځواک چې کوشښ وکړي چې د پارس خليج کنترول کړي هغه به د امريکې د متحده دولتونو د حياتي گټو په وړاندې بريد

وکتل شي او دغه برید به په هرې اړینې وسیلې د نظامي ځواک په ګډون په شا ووهلی شي. ۷۹۴ په دې توګه د امریکا متحده ایالاتو له یوې خوا په اقتصادي او پوځي توګه د پاکستان په پیاوړي کولو او د بلې خوا په سیمه کې د شوروي د راتلونکي وړاندې تګ د شونتیا د مخنیوي له پاره په ګړندي ډول د پوځي ځواک ځای په ځای کولو باندې لنګر واچولو.

د فرانسې حکومت په یرغل نیوکه وکړه او د برتانې صدراعظمې مارګرېت تاچر د شوروي یرغل محکوم کړ او پر شوروي حکومت یې غبر وکړ، چې خپل پوځونه له افغانستان نه وباسي، ټولو لوېدیځو هېوادونو نه یوازې د شوروي اتحاد تر لاس لاندې د کارمل رژیم په رسمي ډول ونه پېژانده، بلکې له کابل سره یې اړیکې وشلولې، خو هلته یې خپل سفارتونه ونه تړل او هر یوه په خپل سفارت کې څو تنه ماموران پرېښودل، چې د افغانستان د روانې وضعې په اړه یې خبر وساتي.

په افغانستان باندې د شوروي یرغل په اړه د ملګرو ملتو موسسې کلک غبرګون وښود. د ملګرو ملتو د امنیت شورا د ۱۹۸۰ کال د جنوري په پنځمه نېټه د دوو مخالفو رایو په وړاندې په ۱۳ رایو پرېکړه وکړه چې له افغانستان نه دي باندیني پوځونه ووځي چې د شوروي اتحاد په ویتو سره رد شوه. بیا د جنوري په ۱۴ مه نېټه د ملګرو ملتو د موسسې د عمومي اسمبلې په بیرنۍ غونډه کې د ۱۸ رایو په وړاندې په ۱۵۴ رایو پرېکړه وشوه چې له افغانستان نه دې باندني پوځ د کوم قید او شرط پرته ووځي. د ۱۹۸۰ کال د جنوري په ۲۸ مه نېټه په اسلام اباد کې د اسلامي موسسې کنفرانس ګډونوالو له شوروي اتحاد نه په ټینګه وغوښتل چې خپل پوځ د افغانستان نه وباسي.

د ۱۹۸۱ کال په سر کې په نوي ډیلي کې د ناپیليو هېوادو په غونډه کې غړو هېوادونو د شوروي اتحاد نه وغوښتل چې خپل پوځ د افغانستان نه وباسي او د هغه د ناپیلتوب درناوی دې وکړي. د همدغه کال په اوړي کې د اروپا اقتصادي ټولنې لا په ټینګه د افغانستان نه د شوروي اتحاد د پوځ د ایستلو غوښتنه وکړه. اروپایي ټولنې شوروي اتحاد ته ډاډ ورکړ چې د دوی د پوځ د وتلو نه وروسته به افغانستان د استریا غونډې چې په ۱۹۵۷ کال کې د هغه د پوځ د ایستلو نه وروسته یو ناپیلي هېواد شو، هغسې یو ناپیلي هېواد وي. د چین حکومت د شوروي اتحاد سره اړیکې ښه کول له افغانستان نه د هغه د پوځ په ایستلو پورې وتړل. په یو شمېر ملي، ډموکراتیکو او سوسیالستي هېوادو کې په افغانستان باندې د شوروي اتحاد یرغل په کلکه وغندل شو او په نړیوال کمونستي غورځنګ کې یو بل چاود رامنځ ته شو. د شوروي اتحاد د یرغل په وړاندې د ایټالې،

رومانې او نورو کمونستي او ډموکراتيکو گوندونو د نيوکو غبرونه جک کړل. لومړی چاود لا د مخه د ستالین د مړینې وروسته د شوروي او چین د کمونستو گوندونو تر منځ پېښ شوی و.

شوروي اتحاد دا ټولې غوښتنې، چې د نړۍ د مطلق ډبرکي خلکو استازيتوب يې کاوه، رد کړې او په دې توگه يې د نړۍ په کچه خپل اعتبار زيانمن کړو. نو ځکه د کارمل کوداکي رژيم هېڅ مشروعيت ونه موند او نړيواله هوا کړکېچنه شوه؛ ديتانت د منځه ولاړ او نړيوالو افغان جنکياليو ته د پيسو، وسلو او نورې ډول ډول مرستې په غټه کچه پيل کړې.

د شوروي يرغل په وړاندې د افغانانو لومړني غبرگونونه

د شوروي يرغلگر پوځ په وړاندې د افغانانو مقاومت عام و. د کاکړ په وينا د شوروي اتحاد څلورېنيم يرغلگر پوځ چې «هغه شوروي شوي، پراري او د افغانستان د تابعيت نه محروم شوي پرچميان، کارمل او ملکري يې او داسې هم شوروي شوي او پراري شوي خلقيان- سروري او ملکري يې» هم ورسره وو په افغانستان يرغل وکړ. که څه هم دغه شوروي شوي او پراري شوي پرچميان او خلقيان «په افغانستان کې پيدا شوي او د افغانانو په پيسو د عصري زده کړې خاوندان شوي وو، خپلو وطنوالو ته شا کړه او دولتي قدرت ته د رسېدلو له پاره يې د شورويانو مړيتوب ته غاړه کېښوده. دوی په دغه ډول د خپلو وطنوالو د حاکميت منل شوی حق تر پېښو لاندې کړ او هغو او وطن ته يې خيانت وکړ.» ۷۹۵

دا يرغل هغه وخت وشو چې په افغانستان کې يو ډول جکره روانه وه. يرغلگرو دا جکره د ازادۍ په جکره بدله کړه. کاکړ وايي چې دا جکره د جهاد په کليمه کې خلاصه شوې چې هغه په اصل کې د يرغلگرو په وړاندې د کورنۍ، وطن، ناموس، خپلواکي او اسلام نه ساتنه ده. ۷۹۵ الف جهاد په لومړيو وختونو کې د اسلام د خپرېدو له پاره کېده او اوس په ټوله اسلامي نړۍ کې د مسلمانانو د ناتوانۍ له امله دفاعي شوی دی. په دې توگه جهاد په وروستۍ مانا د يرغلگرو په وړاندې د هېواد پوښ ساتل دي او جهاد په دې مانا د وطن نه ساتنه ده. په نولسمه پېړۍ کې افغانانو د پنجاب د سيکانو او بيا د انگرېزانو په وړاندې جهاد وکړ خو د افغانانو جهاد د شوروي يرغلگرو پر وړاندې ډېر ټينگ او عام و.

د څلورېنيم لمړ پوځ ټولگي په ښارونو لکه کابل، هرات، شينډنډ، کندهار، جلال اباد

او فيض اباد او د هغو چاپېر او داسې هم په لويو لارو کې ځای په ځای شول. په کابل کې د شوروي سرتېرو په وړاندې خلکو په فردي توګه خپل مخالفت يو ځای بل ځای وښود. د بېلګې په توګه د کوهستان د قلعه يو ځوان عبدالله د مې په مياشت کې د شوروي په يوه کزمه کوونکي سرتېري د چارې برید وکړ او مړ يې کړ او بيا يې د هغه يونيفورم په ځان کړ او د هغه په وسلې سره يې هغه اووه روسان هم ووژل چې په نږدې وياړې کې يې لمبل. دغسې بريدونه د راتلونکي توپان پيلامه وه.

کاکړ وايي چې د يرغلګرو په وړاندې د عامو خلکو له خوا مخالفت په ځانګړي ډول د کندهار ښار د خلکو له خوا ژر او په ډراماتيک ډول وښوول شو. له يرغل نه پنځه ورځې وروسته د کندهار خلک د يرغلګرو په وړاندې جګ شول. يرغلګر پوځ وروسته له دې چې يو څو تنه پاڅونکوونکي يې ووژل، چوڼۍ ته پرشا شول. د ښار هتيوالو دغې پېښې ته د خپلو هتيو په تړلو غبرګون وښود. د فبروري تر لومړۍ اوونۍ اعتراضونه او پاڅونونه عام شول، په دې ډول چې ښځو او نارينه وو پر خپلو بامونو باندې په اذان کولو پيل وکړ او په داسې حال کې چې روسان او د کابل لاسپوڅي رژيم يې ګانده خپلو هديرو ته يې مخه وکړه.

د هرات خلکو هم د يرغلګرو په وړاند تينګ غبرګون وښود. د هرات خلکو د ۱۹۸۰ کال د جنوري د مياشتې په لومړۍ اوونۍ په بهر کې د ښار نارينه د روسانو په ليدلو سره ماجتونو ته لاړل او هلته يې په دعا کولو پيل وکړ او د ښار ټولې هقې يې وټرلې. د فراه او بلخ ښارونه هم نارام شول خو نه د کندهار او هرات په شان چې نارامي په کې پرله پسې او عامه وه.

د ۱۹۸۰ کال د فبروري په ۲۲مه د کابل خلکو په لوی پاڅون لاس پورې کړ چې په خپل اوږد ه تاريخ کې يې ساری و. کاکړ وايي چې د کابل پاڅون په واقع کې د ټولو افغانانو د احساس هينداره وه، ځکه چې په کابل کې د افغانستان د ټولو سمتونو او قومونو خلک اوسېدل. د پاڅون نه د مخه د رژيم امنيتي چارواکو «اتکل دوه سوه کسان چې په هغو کې خلقيان هم وو، په دې نامه ونيول چې خلک پاڅون ته هڅوي.» ۷۹۶

د کابل په تاريخي ښار کې د توپان لومړۍ نښه د ماښام پر مهال د الله اکبر نارې وې چې له بامو پورته او په ټول ښار کې يې انګازې وکړې. د حوت په دريم سبا په زرګونو کابليانو له زاړه ښار نه په يوه لوی پاڅون لاس پورې کړ، له نورو برخو-دشت برچي، پل خشتي، محمد جان خان واټ، سالنګ واټ، جمال مينې، بيبي حصار او قلعه فتح الله نه هم په زرګونو افغانان راووتل. د دغو ډلو د هرې يوې سره په لار کې په زرګونو افغانان يوځای

کېدل. د حاجي يعقوب په څلور لاري کې يو شمېر بنځو د شوروي ضد شعارونه ورکول، خو هغوی زر تيت کړای شوې. حکومتي پوځي ټولگي چې په سرکونو کې ځای په ځای شوي وو، «د سالنک په وات کې د پاڅونکوونکو سره مخامخ شول، ځينو خلقيانو له دې نه ډډه وکړه چې د پاڅونکو پر ضد عمل وکړي.» ۷۹۷ پاڅون کوونکي بې وسلې او په سوله ييز ډول په وړاندې تلل. امنيتي ځواکونو د لارښوونکو د تیتولو له پاره لومړی د لور غږ وسيلو او بيا د هوايي ډزو نه کار واخېست، خو اغېز يې ونه کړ، نو بيا يې په پاڅون کوونکو سپېڅې ډزې وکړې چې د لومړی ليکې کسان په مځکه ولوبدل، نورو د هغو بيرغونه جکول او مارش ته يې د ډزو په حال کې تر څه وخته دوام ورکاوه. خو دوی نور نه شو کولی چې مارش ته دوام ورکړي او د غاړې په تنکو کوڅو کې خواره کېدل او څه درنگ وروسته بيا ورتلل. په پای کې دوی د پل خشتي جومات ته پناه يووړه خو هلته هم ډزې وشوې. د پاڅون کوونکو د خورېدلو وروسته امنيتي ځواکونو بيا هوايي ډزې د دې له پاره پيل کړې چې خلکو ته وښيي چې دوی له اول نه همداسې کول.

امنيتي ځواکونو په پاڅون کوونکو په پل سوختې او ميروېس ميدان کې ډزې وکړې چې هلته د دوی نه ډېر کسان شهيدان شول او نور تيت شول. په همدې مهال د پاڅون کوونکو بله ډله د قلعه شهدا نه راووتله او ده بورې له لارې د سيلو په لور پر مخ لاړه هلته نور د مخه خواره شوي پاڅون کوونکي ورسره يوځای شول. دوی په کپه د خوشال مينې د پوليسو منځې چور کړ. څاروندويانو نه يوازې د دوی په وړاندې د کړو وړو نه ډډه وکړه بلکې پرې يې بنسټول چې د دوی وسلې تر لاسه کړي دغه مهال د شوروي سرتيري په زغرورو موټرو کې را دمخه شول او د پاسه چورلکې الوتې. د غرمې په شاوخوا کې په خوشال مينه کې د بمونو چاودنو انکازې وکړې. شوروي زغرورو موټرو او چورلکو ډزې پيل کړې او په دې ډول روسانو په لومړي ځل د مځکې او هوا نه پر افغانانو وسلې وچلولې.

د لارښوونکو بله لويه ډله د چنډول نه راووتله او د څارندوی له ناحيې نه يې وسلې چور کړې. دغه پاڅون زر وځپل شو. په باغ عليمردان کې هم خلک پاڅېدل او د پوليس له ناحيې نه يې وسلې تر لاسه کړې. د هغې يوې ډلې ان تر ارگ پورې ځان ورسوه چې د سر د زيات زيان د ورکولو وروسته پر شا شوه.

کاکړ وايي چې رژيم د دغه لوی پاڅون په ورځ د غرمې پر مهال د تلویزیون په خپرونې کې پوځي حکومت اعلام کړ او د خلکو غوندې يې ناقانونه وبللې او د څلورو کسانو نه د زياتو کسانو يوځای گرزېدل يې ناقانونه وبلل. کاکړ زياتوي چې د پنځو زرو افغانانو نه چې امنيتي ځواکونو بندي کړي وو، يو شمېر يې د يو څو امين پلوه خلقيانو په گډون له

محکمې پرته زندی شول. ۷۹۸

د کاکړ په اند د روغ عقل غوښتنه دا وه چې روسانو باید دغه پاڅونونه د ټولو افغانانو د نیت او ارادې هنداره گڼلې وای او د نیواک په سیاست یې د سره نظر کړی وای، لکه چې د هند انگریزي حکومت یوه پېړۍ د مخه په ورته حال کې همدغسې کړي وو. خو شورویانو د زور او پوځ نه کار واخېست. دی زیاتوي چې په همدغه وخت کې به وو، چې په افغانستان کې د شوروي پوځ لور قوماندان ته له مسکو نه دا هدايت ورسېد چې «د وسله وال مخالفت د تنظیمونو د منځه وړلو له پاره د افغان پوځ په ملګرتیا فعال عملیات پیل کړي.» ۷۹۹

نوې امنیتي ادارې یا خاد وسله وال ایجنټانو به شکمن کسان نیول او کورونه به یې لټول. په کابل کې به دغسې شپه نه وه چې هټی او مغازې چور نه شي، او کورونه ونه لټول شي او د خلکو شته لوب نه شي. روسي کزمه والو هم هټی او مغازې لټولې. کاکړ وايي چې داسې زور زیاتی پیل شو چې خلکو د خلقي حکومت خپل هېر کړل.

د پاڅون کوونکو هېڅ ډلې تنظیم نه درلود او مارش کوونکي عادي او بې نومه افغانان وو. دوی د هغو افغانانو نه توپیر درلود چې د افغان-انګلیس په دوهمه جګړه کې د انګریز یرغلګرو په وړاندې جګ شوي وو. په هغه وخت کې د خلکو د پاڅون سروالي داسې نوميالیو لکه جنرال محمد جان خان وردک، جنرال غلام حیدر څرخي، میر بچه خان کوهستانی، ملا مشک عالم اندر او نورو کوله. خو د اوسنیو مارش کوونکو پاڅونونه ډېر طبیعي، له جوش او جذباتو نه ډک او نامنظم وو.

کاکړ وايي چې د دغو پاڅون کوونکو غټه ځانګړتیا له سني وروڼو سره د شيعه وروڼو ملګرتوب و په داسې حال کې چې د افغان-انګلیس په دوهمه جګړه کې په کابل کې یوازې سني افغانان جګ شوي وو. «د قزلباشو وره برخه پرچميان وو چې «د داخلي روسانو» په نامه یاد شول.» ۸۰۰

په دې توګه نږدې ټول افغانان له ديني، ژبني، قومي او سمټي پولو نه اوسني او د شوروي یرغلګرو په وړاندې جګړه کې په یوه زړه برخه واخېسته. د دې پاڅون اصلي انګېزه د یرغلګرو په وړاندې د ملي او اسلامي ارزښتونو ساتنه وه.

د شوروي د يرغل پر مهال د کابل پوهنتون زده کړیالان چې د ثور د پاڅون نه د مخه یې شمېر دولس زرو او د استادانو شمېر یې اته سوو ته رسېده او د ښوونځيو زده کوونکي رخصت وو. دوی د تعلیمي کال د پیل نه وروسته د شوروي یرغلګرو د نیواک په وړاندې په لاریونونو پیل وکړ. پرچميانو د اپرېل په پنځه ویشتمه د عمر شهید په لیسې کې په څلورو

زده کوونکو او د حبيبي په لیسې کې پر یو زده کوونکي مرکوني کوزارونه کړي وو. په دغه وخت کې لومړی د کابل د ښوونځیو زده کوونکو په کابل کې نارامي جوړه کړې وه. په دغو نارامیو کې د کابل د ښوونځیو نجونې ډېره زوروتیا ښودله او هغوی په هغو څارندویانو ملنډې وهلې چې د دوی د ارامولو له پاره استول شوي وو. دغو نجونو دوی د روس مریان بلل او نورو د پیغور په توګه پروني پرې اچول. دغو نجونو په خپل زوروتوب اریانونکي وضع رامنځ ته کړې وه خو پولیسانو د دوی سره نرم چلند کولو او خواخوږي یې ورسره لرله. خو پرچمیانو چې له پولیسو سره یوځای وو، پر نجونو رحم نه کاوه.

د اپرېل په ۲۹مه هغه لاریون چې د پوهنتون زده کړیالانو د پوهنتون په ساحه کې په لار اچولې و لا هم خونړی و. دغو زده کړیالانو د شوروي ضد شعارونه ورکول او په لور اواز یې د شوروي پوځ د وتلو غوښتنه کوله. دغه لاریون چې د انجنري پوهنځي نه پیل او کله چې د فارماسي پوهنځي ته ورسېد، پرچمي وسله والو ځوانانو اول هوايي ډزې او بیا په زده کړیالانو سیخې ډزې وکړې او درې تنه یې ترېنه شهیدان کړل. د دې سره سره لاریون کوونکي مخ په وړاندې لاړل تر څو د دارالمعلمین په څلور لاري کې لس زده کړیالان د پرچمي وسله والو په ډزو ووژل شول. د پوهنتون د زده کړیالانو دغه لاریون د دغو پېښو له امله پرته له دې چې ښار ته ورسېږي تیت شو. په دې ورځې د ښوونځیو یو شمېر زده کوونکي سرکونونو ته وتلي وو، د سوريې د نجونو ښوونځي کلا بند شوی و او د حبيبي د ښوونځي زده کوونکي د شوروي سفارت ته د اعتراض کولو له امله ورنږدې شول، پرچمیانو پرې ډزې وکړې او درې تنه یې ترې شهیدان کړل.

د می د میاشتي په دریمه بیا د پوهنتون زده کړیالانو یو ستر لاریون پیل کړ چې دا ځل ډېر منظم و او د ښار په لور روان شو. دوی چې بریکوټ ته ورسېدل پر اسانو سوارو سرتېرو سره مخامخ شول. دغو سرتېرو په لاریون کوونکو برید وکړ؛ په ډنډو یې ووهل او اوبسکې هېونکي غاز یې پرې وشینده. له پنځو سوو نه زیات یې بندیان کړل. د می په ۲۲مه وروستی لاریون چې د انجنري پوهنځي نه پیل شوی و له پیل سره سم وځپل شو. خو د ښار د ښوونځیو زده کوونکي او زده کوونکې په ټول ښار کې نارامې او پارېدلې وې. دغه ښوونځي د پولیسو له خوا کلا بند وو او زده کوونکو او په ځانګړې توګه نجونې زده کوونکې اعتصابونه په لاره اچولې وو.

د جون په دوهمه اوونۍ کې په ځینو ښوونځیو کې زده کوونکي زهرجن شول. په درې پرله پسې ورځو کې د سوريې د نجونو ښوونځي او یو شمېر نور ښوونځي زهرجن شول. د دولتي چاپځي دېرش تنه کارګران هم زهرجن شول. څو ورځې وروسته د جون په دولسمه

نېټه د لسو ښوونځيو زده کوونکي او زده کوونکې زهرجنې شوې. په دغه ورځ له پنځوسو تنو نه زيات زده کوونکي د درملنې له پاره روغتونونو ته يووړل شول. دا چې دغه کار چا کولو مالوم نه شو. د کابل رژيم دغه کار د امپرياليزم او د اخوانيانو کار باله خو په کابل کې ټينگه اواز وه چې هغه د خاد کار و. يو دليل يې دا گڼل کېده چې د زده کوونکو اوږدې نارامۍ د کابل رژيم بې اعتباره کړې او خاد غوښتل چې د دې لارې دوی ووېروي. دوهم دليل يې دا گڼل کېده چې که په دغه کار کې د خاد لاس نه وای نو هغه به هغه کسان پيدا کړي او نيولي وای. پرچميانو د شورويانو په ځواک سره دغه لاريونونه په وچ زور وځپل.

د افغانستان ډموکراتيک جمهوريت يا د کارمل واکمني

کاکړ وايي چې د شوروي اتحاد د يرغل زر وروسته د شوروي شويو پرچميانو او شوروي شويو خلقيانو نه د بېرک کارمل په سروالی حکومت جوړ شو. د دغه نظام بڼه هغه وه، چې مخکې وه، غټ توپير يې دا و چې د حکومت ساحه له پخوا نه ډېره وړه شوې وه. حکومت يوازې په ښارونو کې و او اطرافي سيمې د مجاهدينو په لاس کې وې. «حکومتي تشکيلات د پخوا په شان منظم او د لوړو چارواکو القاب غټ وو، خو اعلى واک له شورويانو سره و، چې پوځ يې په افغانستان کې ځای پر ځای کړی و، د رجيم لويان يې په واک رسولي او د خپلو مشاورانو له لارې يې پرې حکومت کاوه.» ۸۰۱

کاکړ وايي چې د دغې «تکاملي مرحلې» په نوي نظام کې بېرک کارمل د افغانستان د خلق ډموکراتيک گوند د سياسي دفتر لوی منشي، د وزيرانو د شورا يانې د حکومت او دولت سروال او د پخوانۍ ويره وونکې ادارې اکسا سروال اسدالله سروري يې مرستيال و، سيد محمد کلابزوی د کورنيو چارو وزير، محمد رفيع د ملي دفاع وزير، او نجيب الله د خاد سروال شو. کلابزوی د «مامد» په نامه او رفيع د «نيروز» په نامه د ک ج ب ايډنټيان وو. سروري او نجيب الله چې ک. ج. ب والو ته په ځانگړي ډول منلي وو، په زيات گومان هم د هغې ايډنټيان وو. په خپله کارمل هم په ۱۹۵۷ کال کې د ک. ج. ب ايډنټي منلې وه.

په کابل کې د شوروي اتحاد لوړ قوماندان مارشال سرکي سوکولوف و، چې يې د شوروي سفير، د ک. ج. ب استازي او نورو په مرسته حکومت چلوه. کارمل او د رژيم وزيرانو ته د مهمو موضوع گانو په اړه د شورويانو له خوا ليکل شوې ويناوې ورکول کېدلې او دوی به هغه په هغه ډول اورولې، چې لکه په خپله يې وي. دا ويناوې د ک. ج. ب مېجر پاولوف او د ک. ج. ب د باندنيو استخباراتو څانگې يو غړي تيارولې.

د ليکوال ارنولډ په وينا «د ۱۹۷۹ کال په ختم سره د افغانستان خلق ډموکراتيک

ګوند نور نو په افغانستان حکومت نه کاوه؛ د شوروي اتحاد کمونست ګوند کاوه. ۸۰۲ کرومیکو وايي چې «ببرک له مور نه مشوره وغوښته چې که دی کنفرانس ته د کېدون له پاره لاړ شي، مور ورته مشوره ورکړه چې ښه دا ده چې د افغانستان د پولو نه اخوا نه شي» ۸۰۳ له دغه کنفرانس مطلب د اسلامي هېوادونو د مشرانو هغه کنفرانس و، چې له يرغل نه زړ وروسته په اسلام اباد کې کېده.

کاکړ وايي چې د کارمل په هسک کولو سره د شوروي مشاورانو شمېر زيات شو، تر هغه د مخه د شوروي نظامي او ملکي مشاورينو شمېر ۳۵۰۰ تنه وو. په ۱۹۸۴ کال کې د شوروي مشورينو شمېر نږدې لس زره تنو ته لوړ شو. د جراردت په وينا هېڅ وزير د شوروي مشاورينو له مشورې پرته ان يوه وره پرېکړه نه شي کولی. کاکړ زياتوي چې «د باندینيو چارو واقعي وزير شاه محمد دوست نه بلکې له ډېر وخت له پاره واسيلي سفرانچوک و.» د جراردت په وينا دغه وزارت «ټول تلگرامونه او رسمي سندونه بايد دوی ته وښودل شي او هېڅ څيز د يوه روسي د لاسليک نه پرته استول کېدلی نه شي.» ۸۰۴

اندروپوف فکر کاوه چې د پرچم او خلق تر منځ يووالی د ډاډ وړ و خو په اصل کې خلقيان او پرچميان سره جوړ نه وو او د دوی يو موټی والی لنډ مهاله و. دوی يوازې د امين د پلويانو په څپلو کې سره يو موټی وو. دوی اټکل دوه سوه امينيان د وزيرانو په شمول بنديان او يو شمېر يې زندگی کړل. پرچميانو هوډ درلود چې څنگه اوس دوی د شوروي پوځ په زور واک ته رسېدلی نو خلقيان او په تېره اميني خلقيان وځپي. خو پرچميانو د دې کار وس نه درلود، يو دا چې دوی په پوځ کې د خلقيانو په کچه ځواکمن نه وو، بل دا چې سروري، کلابزوی او وطنجار د امين د حکومت په نسکورولو کې د شوروي پوځ سره ملګرتوب کړی وو او شورويانو ته منلي وو او د کارمل زور پرې نه رسېده. کلابزوی له کار نه ایستل شوي خلقيان په ځان راتولول او په خپل وزارت کې يې په دندو ګمارل. په دې ډول د کورنيو چارو وزارت د خلقيانو له پاره يو ډول پناه تون شو او کلابزوی د دوی ژغورونکی شو. د بلې خوا پرچميان په خاد کې ننوتل او خاد يې د شوروي مشاورينو په مرسته دومره واک ورکړ، لکه په شوروي اتحاد کې ک. ج. ب ته ورکړ شوی و. خو پوځ او څارندوی د کارمل په لاس کې نه و.

خادستانو په ټولو ښارونو او په ځانګړې توګه په کابل کې د شوروي او هم د رژيم مخالفان په ډول ډول تورونو نيول او د تحقيق په مهال يې سخت کړول. دغه رژيم د خاد له لارې زښته زيات افغانان بندي کړي او ډېر يې زندگی کړي دي. کاکړ وايي چې د ۱۹۸۲ کال تر پايه چې دی يې د خپلو څو ملګرو استادانو سره د صدارت له نظارت خانې نه د

څرخي پله زندان ته بوتلو، د دغه بندیتون په اوو بلاکونو کې اټکل دېرش زره افغانان بندیان وو. د ۱۹۸۳ کال د دسمبر په ۲۳ مه شپه د ۳۵۰ او ۴۰۰ تر منځ بندیان د چمتې دښتې ته د زندې کولو له پاره یورل شول. دی زیاتوي چې د یوه پخواني پرچمي په روایت د ۱۹۸۴ کال د می میاشتې پورې د ۱۶۰۰۰ نه تر ۱۷۰۰۰ پورې بندیان په همدې دښتې کې زندې شوي دي.

که څه هم په مسکو کې سروري د خلقیانو او کارمل د پرچمیانو په استازیتوب د کوند د یووالي په اړه ژمنه کړې وه، خو ورته رښتیني نه وو. دغه یووالی هم د ثور د کودتا د مخه یوالي غوندې ظاهري و چې د شورویانو له خوا ورباندې تپل شوی و. کارملیانو لا د مخه د خلقي لویانو پر ضد تبلیغ پیل کړی و، چې په هغه کې ډېر ماهر وو. دوی غوښتل چې خلقي لویان که څه هم یې ورسره اتحاد کړی و، بې اعتباره کړي. کارملیانو د اسدالله سروري پر ضد که څه هم په نوي رژیم کې د دوهم مقام خاوند و، ډېر تبلیغ کاوه.

کاکړ زیاتوي چې اسدالله سروري هم چې په اکسا کې د دسیسو او وژلو متخصص و، په دغه وخت کې د پرچمیانو پر ضد د کودتا په لټه کې شو. ده د زیري په مخ کې یو څو ملګرو ته وویل چې «کارمل او څو غټ پرچمیان به مړه کړو، شورویان بل څوک نه لري، بله چاره نه لري، مجبورېږي پر مور او تاسو باندې تکیه وکړي.» کاکړ زیاتوي چې سروري د ک.ج. ب شتون په نظر کې نه و نیولی. سروري د مخه تر دې چې په هغه لاس پورې کړي د ۱۹۸۰ کال په جون کې د یوه لوړپوړي پلاوي په ملګرتوب مسکو ته وبلل شو او هلته د اندروپوف د لیدلو نه وروسته منګولیا ته د افغانستان د سفیر په توګه واستول شو.

کارمل شورویانو ته ویل چې په عمل کې د کوند نه یوالی د خلقیانو له امله دی او کوند به هغه وخت یو موتی شي، چې خلقیان وځپل شي لکه چې بلشویکانو منشویکان ځپلي وو. خو کارمل په دې نه پوهېده چې «بلشویکي کوند لوی او منشویکي کوندي» وروکي و او «بلشویکانو په خپل قوت کودتا کړې وه او پوځ او کارکران یې تر شا ولاړ وو، او لنډن په شان یې مشر لاره.» په دې ډول د پرچم کوندي د بلشویک کوند سره د پرتلې وړ نه و او «کارمل د شوروي پوځ په شتون سره له خلقیانو نه وېرېده». ۸۰۵

کاکړ زیاتوي چې اوس د شوروي مشاوران او د ک.ج. ب چارواکي په کوند او رژیم کې پوره ننوتلي وو، ورته مالومه شوې وه چې پرچمیان سربېره پر دې چې قوي نه دي، تر خلقیانو نه ډېر د کوند د یووالي پر ضد تبلیغ او کار کوي. میتروخین لیکي چې «د ۱۹۸۲ کال په مارچ کې سوکولوف او جنرال اخرامیېف په یوه راپور کې اوسټینوف ته څرګنده کړه چې نور، بریالی او گل اغا د کوند د یو موتي والي او کتو پر ضد کار کوي او دوی د

کشمند، نجيب الله او رفيع الله له ملاتړ نه بهر نه دي. ځنگه چې د دوی نفوذ مخ په دېرېدو دی، دغه کسان په خاص ډول خطرناک دي او دوی زیاتره وخت د شوروي مشاورانو سپارښتنې او نظریې له پام نه غورځوي او د منافقانو (phariseec) په شان ټکماري کوي.» ۸۰۶ دی زیاتوي چې دغو پوځي «مشرانو نظر ورکړ چې دوی باید له موجودو کلیدي مقامونو نه گوښه شي او د باندې واستول شي.» ۸۰۷

خو په مسکو کې شوروي مشرانو د پوځي جنرالانو سپارښتنې ونه منلې او یوازې یې د ملي دفاع وزیر محمد رفیع یې مسکو ته د مسلکي کورس د لوستلو له پاره واستوه او پر ځای یې جنرال عبدالقادر وکوماره. د هغه مقرری نه اصلي مطلب دا و چې د پوځ خلقي افسران ډاډه وي او د زړه نه جنک وکړي. جنرال قادر د عثمان په نامه د ک. ج. ب ایجنټ و. په کابل کې شوروي مشاورانو په کارمل ملنډې وهلې او ویل به یې چې «د یابو د بدلېدو وخت راغلی». له یابو نه مقصد کارمل و. خو د دې سره شورویانو بله چاره نه درلوده خو دا چې کارمل او د هغه رژیم د پیاوړي کولو له پاره خپل کوشښونه جاري وساتي. بیا نو شورویانو د خاد په پیاوړي کېدلو او نظامي کېدلو باندې نور هم لنکر واچولو.

د شوروي يرغل او پاکستان

د کاکړ په وینا د شوروي يرغل نه د مخه یو شمېر افغانان او هم یو څو تنه تنظیحي لویان پېښور ته اوښتي وو، خو هغوی د خلقي حکومت په وړاندې د کوم حکومت له فعال او جوت ملاتړ نه بهرمن نه وو. یوازې د امریکې ولسمشر جيمي کارټر د پاکستان د دولت مشر ضياء الحق په هڅونې له افغان مجاهدينو سره د ۱۹۷۹ کال د جولای په میاشت کې د پټې مرستې ورکول منلي و، چې هغه څه باندې نیم میلیونه [دالرو] په اندازه وې او د غیر نظامي شیانو له پاره وې. امریکې نه غوښتل چې مجاهدينو ته د جوتو مرستو په ورکولو سره شوروي اتحاد وپاروي. ضياء الحق سره له دې چې د کمونیزم ټینګ مخالف او د مجاهدينو کلک پلوي و، له خلقي حکومت سره یې د هغو په اړه خبرې روانې کړې وې او په دې اړه پرمختګ شوی و، خو هغه د شوروي په يرغل سره پر ځای ودرېدلې.

د شوروي اتحاد يرغل نوې وضع منځ ته راوړه. د امریکا ولسمشر کارټر انګېرله چې شوروي يرغل په دغه سیمه کې ستراتیژیکه وضع په خطرناک ډول اړولې ده او دغه وضع د پارس په خلیج کې د امریکا د تېلو حیاتي ګټې د شوروي د هوايي ګوزار د نښه کولو په ټاک کې روالي؛ د امریکې دوست هېواد پاکستان چې په مهم ستراتیژیک موقعیت کې پروت دی تراتي او په ایران او د منځني ختیځ په نورو هېوادونو باندې د شوروي د فشار شونتیا

زياتوي.

ضياء الحق هم اندېښمن و چې افغانستان به د شوروي په مرسته د پاکستان اسلامي هويت ته خطر پېښ کړي. ځنکه چې ختيځ پاکستان د هند په ملاتړ لا د مخه د بنګله دېش په نامه له پاکستان نه بيل شوی و، د شوروي په يرغل سره د هېواد بشپړتيا ته اندېښمن شو. ضياء الحق د پښتونستان او بلوڅو له داعيې نه په وېره کې و، چې افغانستان يې ملاتړ کاوه. له دې کبله د پاکستان دولتي مشر د امريکې د پوځي او اقتصادي مرستو د جلبولو له پاره د ستراتيژۍ او امنيت موضوع ټينګه ونيوله. په دې موضوع کې نه يوازې امريکا بلکې نور لوېديځ هېوادونه هم ورسره يوکېدل. ضياء الحق ته هغه مهال ښه موقع په لاس ورغله چې د ۱۹۸۰ کال په ټاکنو کې رونالد ريکن په امريکا او مارګرېټ ټاچر په انګلستان کې بريالي شول. دوی دواړه د شوروي د وړاندې تګ او د هغه د دغه يرغل په وړاندې د فعال چلند پلويان وو. دغه وخت چې رونالد ريکن او مارګرېټ ټاچر د خپلو حکومتونو سروالان شول افغانانو د شوروي پوځ او د هغه لاسپوڅي رژيم په وړاندې په بېلو بېلو ښو مخالفه ښوولي وو او د کابل ښار او د ولايتونو د مرکزونو چاپېر سيمو پرته پر ټول افغانستان مسلط شوي وو. دوی دا مهال ښوولي وه چې د شوروي د يرغلگر پوځ په وړاندې د دوی اراده د وطن او اسلام نه د ساتنې په لار کې ټينګه او نه ماتېدونکې ده. خو نړيوال په بل فکر وو. برېژنسکي ويلي و چې «افغان جګړه به په څلورو يا پنځو مياشتو کې سره شي.» ده دا هم ويلي و چې «مور شورويان اړ کولی نه شو له افغانستان څخه ووځي.» ۸۰۸ ضياء الحق هم دا ويلي و چې دا به معجزه وي چې شوروي پوځ له افغانستان څخه ووځي. خو ضياء الحق په دې پوهېده چې افغان ځوانان به د شوروي يرغل په وړاندې که اړتيا شوه په تشو لاسونو هم جګړه وکړي. ۸۰۹

ضياء الحق د افغانانو د همدې ټينګې ارادې او خپله پاکستان ته د شوروي اتحاد د خطر له امله وپټيله چې د شوروي په وړاندې خپل هېواد د مخکې کرښې دولت وګرځوي او کوښښ وکړي چې له امريکې او نورو هېوادونو نه د وسلو او پيسو مرسته تر لاسه کړي. امريکا سره له دې چې د مقاومت د ډلو تنګ نظري يې نه غوښتله، پاکستان خپل کسان غوښتل او په دې اړه يو کړکېچ و، چې د امريکا له پاره مهم نه و. امريکا د پاکستان سره د مرستې کولو په موضوع کې ان د دغه هېواد اتومي پروګرام او هم د نشه اي توکو پروسس کول ټينګ ونه نيول. امريکې د پاکستان سره توافق وکړو چې د هغې له مخې به امريکا پاکستان ته په شپږو کلونو کې يو نيم ميليارډ ډالره پوځي مرسته او يو ميليارډ او اووه سوه ميليوڼه ډالره اقتصادي مرسته ورکوي، چې په هغو کې به د اېف- شپاړس

خلوبښت جنګي الوتکې هم وې. د امريکې حکومت د دې له پاره چې د شوروي په وړاندې خپل متحد پاکستان ښه پياوړی کړي په ۱۹۸۶ کال کې دوهمه مرسته د شپږو کلونو له پاره د څه باندې څلورو ميليارډو ډالرو مرسته ومنله. د دې مرستې برسېره امريکې پاکستان ته خپل پخواني پورونه وبخښل او ځينو نورو لوېديځو هېوادو او عربستان او نورو عربي عمارتونو چې د پېټرو ډالرو خاوندان و د پيسو مرستې وکړې. په دې توګه په پاکستان کې د اقتصادي ودې نوې دوره پيل شوه. د بلې خوا افغان تنظيمونو ته د امريکې او عربستان د پيسو مرستې د پاکستان له لارې رسېدلې چې د هغې په پايله کې دغه تنظيمونه تر خپل نفوذ لاندې راوستل او پوځي چارواکو يې د پاکستان د خونديتوب له پاره د ستراتيژيکې ژورتيا طرح جوړه کړه. کاکړ وايي چې د مخه تر دې چې د دغو اسلامي تنظيمونو د جوړښت او د هغو د چلندونو او له پاکستان سره د هغو د اړيکو په اړه وغږېږي غواړي چې په پېښور او پېښين کې د ګڼو افغانانو هغه کونښښونه وکتل شي چې په افغانستان کې يې د ملي ارزښتونو پر بنسټ د حکومت جوړولو له پاره هاند کاوه او د اسلامي تنظيمونو مخالفانو د پاکستان د حکومت په هڅونې هغه څنګه او ولې ناکام کړل.

کاکړ وايي چې د شوروي يرغل نه وروسته د ۱۹۸۰ کال تر پايه نږدې يو ميليون او په ۱۹۸۹ کال کې له افغانستان نه د دغه پوځ تر وتلو پورې څه باندې درې ميليونه افغانان پاکستان ته ولېږدېدل او په پېښور، کوېټه او د هغو چاپېر سيمو لکه باجوړ، مومند، ملکنډ، کرمه، شمالي وزيرستان، سوويلي وزيرستان او نورو سيمو کې هستوګن شول. داسې هم د لوېديځو ولايتونو خلک ايران ته کډوال شول. دوی ټول د شوروي يرغلګر پوځ او د پرچم د رژيم مخالف وو. دوی په دې فکر وو چې يوازې د افغانستان خلک دغه حق لري چې څنګه غواړي هغسې حکومت په پښو ودروي. د دغه اصل له مخې د يرغل سره مخالفت عام و. دی زياتوي چې په واقعيت کې ټوله کشاله د واکمنۍ په چورلټ (محور) چورلېده. دا هغه وخت و چې افغانان د باندنيو ځواکونو له خوا تر فشار لاندې نيول شوي وو. د ننه شورويانو پرچمي رژيم افغانانو ته جوړ کړی او په پاکستان کې ای اس ای د ضياء الحق په دستور سخت دريځه تنظيمونه پياوړي کول او ملي ګوندونه او شخصيتونه يې ځنډې ته کول. په دغو شرايطو کې د پخواني پاچا محمد ظاهر پلويانو، د پخواني ولسي جرګو غړو، پخوانيو نظامي او ملي چارواکو، قومي مشرانو او دوديزو ديني عالمانو د جرګې او اتفاق له لارې د اسلامي ملي حکومت په پښو درول غوښتل. د سياسي اسلام پلويانو د اسلامي جمهوريت په نامه متمرکز ايډيالوژيکي اسلامي نظام غوښته.

د پېښور ممثله جرگه

افغان کډوال سمدلاسه په پېښور او کوېټه کې د خپلې ملي کشالې د هوارولو له پاره لاس په کار شول. مشرانو ته يې مالومه وه چې په داسې حالاتو کې ملي کشالې په جرگو سره هوارې شوي دي. د مانجې جرگه د ميروېس نيکه په نوبت جوړه شوې وه. د هغې د پرېکړې پر بنسټ افغانانو کندهار د پارس له صفويانو له ولکې ازاد کړ؛ د شير سرخ جرگه چې ستر احمدشاه يې د مشر په توگه غوره کړ او د هغه په تدبير ټول افغانستان خپلواک او افغان امپراتوري هسکه شوه او د پاچا امان الله لويې جرگې پرېکړو سره امانې دولتي چارې چلېدې او سمونونه پلي کېدل. په دې توگه په پېښور کې افغان لويانو د دغه غوره دود په بنسټ غوښتل چې د شوروي يرغل نه پيدا شوې ملي کشاله پرې هواره کړي. د لومړنيو غونډو نه وروسته د جدي په ۱۵مه کڼ شمېر قومي مشران، د پخوانۍ ولسي جرگې وکيلان او نور مخور افغانان د پېښور په ښار کې سره جرگه شول او محمد عمر بېرک زى يې د سروال او نوراحمد مصلح يې د منشي په توگه غوره کړل. دغه جرگه د لويې ممثلي جرگې په نامه ياده شوه. دغو مشرانو د مخه تنظيمي مشرانو ته په جرگه کې د گډون بلنه ورکړ شوې وه. هغوى لومړى د گډون نه ډډه وکړه، خو بيا کله چې د دوى نه نږدې يو نيم سل قومي مشران د اعتراض په توگه بيل او له جرگې سره يو ځاى شول، دوى د گډون د پاره تيارى وښود. په پاى کې د فبروري په ۲۱مه په ۳۴ مادو کې د رايو په اتفاق يو پرېکړه ليک لاسليک شو چې په لومړۍ ماده کې د شپږو اسلامي ډلو د يووالي غوښتنه شوې وه. په دوهمه ماده کې همدغه غوښتنه د ټولو قومونو نه وشوه. په پرېکړه ليک کې د داسې انقلابي شورا په پښو درول وغوښتل شول چې هغه به د يوه موقتي حکومت په شان کار کوي. دا هم ومنل شوه چې راتلونکى دولت دې د افغان مسلمان ولس له ارادې سره سم يو اسلامي جمهوري نظام وي. په پرېکړه ليک کې د افغانستان د ازادۍ له پاره د اتحاد په نامه د شپږو اسلامي تنظيمونو نه وغوښتل شول چې په خپلې انقلابي شورا کې د هر قوم او ولس يو استازى د غړي په توگه ومني. د دې موخه دا وه چې د ولسواکو او اسلامي تنظيمونو څخه داسې پياوړى ځواک جوړ شي چې له يوې خوا دفاعي جگړه په اغېزناک ډول تنظيم کړي او د بلې خوا د افغان د کشالې د هوارولو له پاره پياوړى سياسي نظم په پښو ودروي. که څه هم دغې جرگې وړانديزونه او تجويزونه وړاندې کړل خو نه يې کوم ډول جلاوطني حکومت په پښو ودراره او نه يې کوم څوک د سياسي مشر په توگه وټاکه. سره له دې انجنر گلبدین حکمتيار د اسلامي گوند امر د جرگې په وړاندې مخالف دريځ ونيو.

سره له دې هم د ممثلي لويې جرگې دوهمه دوره د ۱۳۵۹ کال د ثور د مياشتې په ۲۱ مه نېټه پيل شوه. په هغې کې د افغانستان له ټولو ولايتونو او ولسواليو نه ۹۱۴ تنو چې د کوچيانو استازي هم په کې وو، گډون کړی وو. جرگې د عاملي کوميټې په نامه يو کميسيون يا هيئت وټاکه چې د ممثلي جرگې اجرايوي هيئت يا حکومت حيثيت لاره. دا ځل د اسلامي اتحاد مشر عبدالرب سياف د جرگې په مخالفت اواز جک کړ خو بيا اړ شو چې په بنسټه د مخالفت نه لاس واخلي.

عامله کميټه وکمارل شوه چې د جرگې د پياوړي توب په موخه د تنظيمونو مشران او نور مخور افغانان د يوې غونډې له پاره وټولې؛ د جرگې چلوونکې ډله او د هغې سروال وټاکي چې د دولت د موقتي سروال په توگه دنده تر سره کړي. خو د اسلامي تنظيمونو ځيني لويان اندېښمن وو چې قدرت به يې له لاسه ووځي. په دې توگه سياسي اسلام پالو جرگه تخریبوله، خو له جرگې سره د کوربه چارواکو چلند اغېزمن و، چې يې نه غوښتل له اسلامي تنظيمونو نه پرته نور افغانان کوم تنظيم ولري. خو کاکړ وايي چې په ممثلي جرگې باندې د ننه څخه د سيد احمد کيلاني د وراره له خوا کاري گوزار وشو چې د مقرر پر خلاف يې د خپلو پلويانو په قوت د جرگې سروالي په لاس کې ونيوه. خو د ممثلي لويې جرگې ناکامي د ملي جرگو د غورځنگ پای نه و، له هغې وروسته په پېښين کې لويه جرگه جوړه شوه او په پېښور کې د قومي او سيمه ييزې جرگې تجويز وړاندې شو. د دغه تجويز له مخې چې شمس الدين مجروح يې نوښتگر و د افغانستان هر قوم او هر سمت بايد ځانله اتحاديه ولري او په پای کې دې له ټولو اتحاديو نه جرگه جوړه شي. خو دغه غورځنگ په لنډ وخت کې له منځه لاړ.

د پېښين جرگه

د پېښين جرگه په واقع کې د پېښور د جرگې دوام و. ځنکه چې په پېښين کې اسلامي تنظيمونو نفوذ نه و کړی، هغه د ملي جرگې له پاره غوره شو. په ۱۹۸۱ کال کې پخواني سناټور عبدالقدوس پوپلزي او پخوانی د ولسي جرگې مرستيال عبدالاحد کرزي د افغانستان لويان جرگې ته وبلل. د اسلامي سخت دريځو بنسټ پالو د اخطار سره سره پېښين ته زيات شمېر ديني عالمان، قومي مشران، سياستوالان، پخواني نظامي او ملکي چارپوهان او نور مخور افغانان لاړل چې په جرگې کې گډون وکړي. دا ځل د ملي محاذ او ملي نجات جبهې له جرگې سره د پرېکړون اعلام وکړ. د ۱۹۸۱ کال په سپتمبر کې په جرگه کې پنځه ورځي ويناوې او وړاندیزونه وشول. د

جرگې اساسي موضوع د يوه ملي مشر غوره کول و. د ننگرهار مشرانو پخوانی پاچا محمد ظاهرشاه د غزا د مشرۍ له پاره وړاندې کړ. په پای کې موافقه وشوه چې په لومړي کام کې دې د پخواني پاچا محمد ظاهرشاه په مشرۍ او د جنرال عبدالوالي په نيابت په موقتي توگه د ممثلې شورا يو هيئت جوړ شي چې په هغې کې د هر ولايت او هرې لويې ولسوالۍ نه پنځه پنځه تنه، د هزاره خلکو لس تنه غړي او د کوچيانو د مختلفو حوزو پنځه پنځه تنه غړي د دې جرگې ترتيب کوونکي غړي دي. دغه هيئت ته دنده ورکړل شوه چې پر خپلو واحدونو کې دې محلي جرگې جوړې کړي چې په پای کې له استازو نه يې يوه لويه اسلامي جرگه جوړه شي. خو د عمل په ډگر کې دغه وړانديز هم پرمختگ ونه کړ. افغان لويانو ته کرانه وه چې په پېښور او پېښين کې د ملي مشرۍ په اړه پرېکړه وکړي او پلي يې کړي. په دې کار کې اساسي خنډ د ضياء الحق د پان اسلاميزم پروگرام و، چې د افغان ناسيوناليزم مخالف او د اسلامي تنظيمونو پر خوا و.

درويشتم څپرکي

د افغان- شوروي جگړه

د مخه مو يادونه وکړه چې شوروي لويانو په افغانستان باندې وسله وال تېری وکړ او د حفيظ الله امين په مشرۍ يې خلقي حکومت نسکور کړ او د ببرک کارمل په سروالی يې خپل لاسپوڅی رژيم په پښو ودراره تر څو افغانستان لاندې او د ځان تابع وگرځوي. خو افغانان پر خپلواکۍ او واکمنۍ ټينگ ودرېدل او د يرغلگر پوځ او د رژيم په وړاندې يې جگړه پيل کړه. دا جگړه يوه ډېره نابرابره جگړه وه، «په يوې خوا کې پنځلس نيم ميليوني خو د ټينگې ارادې ولس او په بلې خوا کې د نړۍ دوهم زبر ځواک حکومت و، چې د ۲۵۵ ميليونه نفوسو او درې ميليونه منظم پوځ او د ډول ډول عصري وسلو خاوند و.» د افغان- شوروي جگړې اصلي انځور کښل زيات ستونزمن او ان ناشونی دی ځکه چې د دغسې تاريخ کښلو له پاره رسمي پاڼو نه بايد هرو مرو کټه پورته شي. خو د بده مرغه داسې پاڼې درک نه لري. يوازې د شوروي اتحاد د کمونېست گوند ځينې هغه پرېکړې چې د افغان- شوروي جگړې په اړه وې، د هغه د شپږدلو نه وروسته ترلاسه شوې دي. د افغان- شوروي جگړه کې د افغان مجاهدينو او د يرغلگر پوځونو تر منځ ډېرې زياتې جگړه بيژې نښتې، بريدونه او جنکونه شوي دي. يوازې د دريو کلونو ۱۹۸۵-۱۹۸۷ کې مجاهدينو په شوروي او رژيم پوځونو باندې تر لسو زرو نه ډېر غلچکي بريدونه (ambushes) او ۹۵۰۰ ځله يرغلونه (raids) کړي دي. له مخالفې خوا يرغلگر پوځ د ټولې جگړې په بهير کې نږدې ۲۲۰ ځله په ځانگړې توگه او د کابل د رژيم له پوځ سره په گډه ۴۰۰ ځله غټ عمليات کړي دي. ۸۱۰

د شوروي اتحاد پوځ

د افغان- شوروي جگړې په يوه لوري کې د شوروي اتحاد د لوی درستيز د افسرانو په ويناوو د شوروي اتحاد څه باندې سل زره سرتيري وو چې د زروي وسلو نه پرته په ډول ډول نويو وسلو سنبال وو، چې د شوروي اتحاد د څلورېنيم لمړ پوځ په نوم يادېده. دغه پوځ له څلورو فرقو، پنځو غونډونو، څلورو کنډکونو او شپږو لږوکانو نه جوړ وو. د

سرتېرو شمېر يې د بدلون په حال کې و او يو ځل يې شمېر ۱۳۰۰۰۰ ته رسېدلی و. د هغه په جوړښت کې څلور هوايي کنډکونه او د چورلکو درې کنډکونه وو. ۸۱۱ شورويانو به د افغان جنګياليو پر ضد د چورلکو نه ډېره گټه اخېسته او افغان جنګياليو د دغو چورلکو نه ډېر په تنگ وو خو د ټانکونو نه يې د افغانستان په غرنيو سيمو کې اغېزمنه گټه اخېستلی نه شوه.

شوروي سرتېري په عمومي ډول د ټولنيز او اقتصادي ښکته ډلو له ځوانانو نه افغانستان ته استول کېدل. برسېره پر دې جلي مامورانو جنايتکار بنديان د بند نه ايله کول او افغانستان ته د جگړې له پاره لېږل. ۸۱۲ شورويانو په خپل پوځ کې د چم گاونډيو جمهوريتونو نه تاجکان، ازبکان او ترکمنان سرتېري نيول. په لومړي سر کې دوی ډېر وو ځکه چې شوروي مشرتابه فکر کاوه چې د دوی شتون به په افغان ازبکو، تاجکو او ترکمنو ښه اغېز وکړي. خو د دغه چلند پايله سرچپه شوه، ځکه چې دغو سرتېرو د افغانانو سره خواخوږي ښودله.

په شوروي اتحاد کې به سرتېرو ته ويل کېدل چې دوی به په افغانستان کې له امريکايي او چيني اجيرانو سره جنګيږي خو په افغانستان کې به ورته مالومه شوه چې دا دروغ و او دا به د دوی په جگړه يز مورال منفي اغېز کاوه. د شوروي سرتېرو له پاره وډکا او نېشه يي توکي بله ستونزه وه. دوی به زيات وخت خپلې روسي وسلې د خوراک او څښاک، نېشه يي توکو په رانيولو له خلکو سره مبادله کولې. د جنګ په حال کې دوی ته اسانه وه، چې د وسلې د لاسه ورکولو له پاره پلمې جوړې کړي. په شوروي پوځ کې ناروغي غټه ستونزه وه. «په افغانستان کې د شوروي سرتېري په سلو کې شپېته تنه د سختو ناروغيو له امله بستري شوي دي. د څکر انتاني ناروغی، کولرا، شکي لوسس، امبي ناروغی او د اوبو نه پيدا ناروغيو د څلوبيستم لمړ پوځ د ليکو لسمه برخه ورپېله.» د افغان- شوروي جگړې د جگړې اثر ژباړونکی وايي چې «د څلوبيستم لمړ پوځ له پاره ناروغي تر جنګ نه غټه ستونزه وه.» ۸۱۳ بل مهم ټکی دا هم و چې شوروي سرتېرو د خپل پلارني هېواد نه ساتنه نه کوله، بلکې دوی يرغلگر وو. دوی يوازې د دې له پاره جنګېدل چې ژوندي پاتې شي.

شوروي سرتېري په افغانستان کې له دغسې کوريلايي جنګ سره مخامخ شول چې ورسره روږدي نه وو. په اولو وختونو کې شوروي سرتېري د جگړې په وخت کې نېغ ډرېدل او پروت يې نه کاوه او د سر ډېر زيان يې کاله. روسي افسران مني چې «د ۱۹۷۹ کال د دسمبر له ۲۵ م نه تر يو دېرشم پورې هره ورځ په متوسط ډول نهه شپېته (۶۹) شورويان

تلف کېدل.» له هغه وروسته د سر د زيان کچه راتپه شوه، خو بيا هم جگه وه. «د ۱۹۸۴ کال په ډېرو خونړيو ورځو کې له څلوربېستم لمبر پوځ نه هره ورځ ۲۶ تنه وژل کېدل، يا تپي کېدل.» ۸۱۴

شورويانو په ۱۹۸۳ کال کې د وژنې بله بڼه غوره کړه هغه دا چې دوی د کليو او بانډو خلک اړ کړل چې خپل کورونه پرېږدي. د دې له پاره چې مجاهدين له هغو د مرستې او ملاتړ نه بې برخې کړي دوی بايد وځي. د دغې موخې له پاره دوی هوايي ځواک کاروه تر څو اطرافي سيمې د خلکو نه تشې کړي. د بېلگې په توگه توپ لرونکو چورلکو يو کلی وړاندو: له هغه وروسته به پوځيان ورننوتل چې کنډوالي يې ولټوي او وسلې او قيمتي شيان ترلاسه کړي. په اطرافي درو کې به بيا الوتکو د چوونکو موادو تارونه ښکته غورځول، د فصلونو او باغونو د وړانولو له پاره يې د ناپالم بمونه غورځول چې بيا کړنه ونه شي. د پسو او وزو رمې به يې په چورلکو سره چې په يوه دقيقه کې به يې ۳۹ زره گولي واورولې وېشتل کېدې. په مخکه کې به يې ماینونه کړل. د همدغو خطرونو له امله وو چې د ۱۹۸۴ کال تر نيمايي پورې دري نيم ميليونه افغانان پاکستان ته او يو ميليون نور ايران ته کډوال شول. ۸۱۵ شورويانو له خلکو نه د سيمو د خالي کولو د پروگرام له مخې ډېر پښتانه د ډيورنډ د کرنې نه اخوا په پېښور، کوېټې او د هغو چاپېر سيمو کې اوسېدل. د پښتنو کډوالو شمېر په سلو کې پنځه اتيا ته ورسېد. ځکه دوی د پښتنو سيمې تر سختو بمباريو لاندې ونيولې چې دوی په لږه کي واوروي.

د کابل د رژيم پوځ

کاکړ وايي چې لکه د مخه يې يادونه کړې ده چې خلقي پوځ د شوروي يرغل په وړاندې له وطن نه دفاع ونه کړه، خو ډېرو يې وروسته د مجاهدو په پلوي دغسې پټ او ښکاره کارونه وکړل، چې د شورويانو له خوا د هېواد لاندې کول يې په شک کې کړل. ۸۱۶ شوروي مشرانو فکر کاوه چې د شوروي څلوربېستم لمبر پوځ يوازې شتون به د مجاهدو له پاره د عبرت درس وي. د ۱۹۸۰ کال په جنوري کې په خپله برژنف په امريکې کې خپل سفير دوپرين ته ډاډ ورکړی و، چې د افغانستان کښاله به «... په دريو يا څلورو اونيو کې هواره شي.» ۸۱۷ د هغه څلورو اونيو پرځای د افغان- شوروي جگړه څه باندې نهه کاله اوږده شوه چې په ميليونو افغانان او په زرگونو شوروي پوځيان به کې ووژل شول او په پای کې شوروي اتحاد اړ شو چې خپل پوځ د افغانستان نه وباسي. شوروي مشرانو دا فکر هم کاوه چې افغان پوځ به د مخالفانو په وړاندې د جگړې اصلي بار پر غاړه اخلي. دوی په دې

نه پوهېدل چې افغان پوځ په پرچمي رژيم کې هسې نه پاتې کيږي چې د خلقي حکومت په وخت کې و؛ پوځ په اصل کې د پرچمي افسرانو په لاس کې نه، بلکې د خلقي افسرانو په لاس کې و؛ همدارنگه د پوځ ډېر سرتيري هم د يرغل مخالف وو او د پوځي ليکو نه په يوازې او هم په ډله ييزه توگه تېنښتېدل. کاکړ زياتوي چې د شورويانو بله تېروتنه دا وه چې خيال يې کاوه چې مجاهدين به د دوی له پوځ نه وډار شي، خو هغوی د يرغل په وړاندې لا هم وپارېدل. ځکه چې «دوی کارمل نه يوازې سياسي دښمن بلکې د مسکو تابع کاڼه.» ۸۱۸ څنگه چې په پوځ کې د يوې خوا پرچميان بيخي لږ او هم هېڅ پرچمي افسر په يرغل کې برخه اخېستې نه وه او د بلې خوا ټولو خلقي افسرانو د يرغل ملاتړ نه کاوه او سرتيري له پوځ نه په يوازې او هم په ډله ييزه توگه تېنښتېدل. د يرغل په مهال د بغلان ټوله فرقه تېته شوه. د ۱۹۸۰ کال په مارچ کې د ميدان ښار اټکل دوه زريز غونډ نه يوازې څلور سوه سرتيري پاتې شول او نور يې تېنښتېدلې وو. ۸۱۹ «د کې چې بې د ارقامو له مخې د شوروي د يرغل په لومړيو څلورو مياشتو کې ۱۷۰۰۰ (اولس زره) افغان سرتيري و تېنښتېدل. په ۱۹۸۱ کال کې تر دېرشو زرو (۳۰۰۰۰) زيات سرتيري و تېنښتېدل، او په ۱۹۸۲ کال کې هم دومره شمېر و تېنښتېدل.» ۸۲۰ جلالي دا هم وايي چې د بېلکې په توگه په يوه فرقه کې د لسو زرو جنکياليو سرتېرو پر ځای زر تنه، لوا د پرسونل ځواک په کنډک، د کنډک د ټولې په کچه و. ۸۲۱ په دې توگه افغان پوځ لږېده نو شورويان اړ شول چې په خپله د جنګ ډکړ ته ننوزي.

د دې وروسته د افغان پوځ په پياوړي کېدو لنگر واچول شو او د دې له پاره د خدمت وړ ځوانان په نظامي عملياتو سره په زور نيول کېدل. دغه کار د خلکو نارضايت لا نور هم زيات کړ. له دغو ځوانانو ډېر يې پېښور ته لاړل او پاتې به يې تل څار وو او د رژيم د ځواک په ښکاره کېدو به پېښېدل. خو هغوی به چې په لاس ورغلل هغه به يې بېول خو ښکاره ده چې داسې سرتيري د زړه له کومې جگړه نه کوي او په مناسب وخت کې به د پوځ له ليکو تېنښتېدل.

د ۱۹۸۱ کال د سپټمبر په اتمه د پرچم رژيم څرکننده کړه چې هغه افغانان دې د جلب مرکزونو ته حاضر شي چې د ۱۹۶۸ او ۱۹۷۸ تر منځ يې عسکري خدمت کړی وي او عمر يې تر پنځوسو کلونو نه ښکته وي. د جلب د دغه نوي سياست په وړاندې د خلکو غبرگون توند او چټک و. کاکړ وايي چې د اعلام په سبابي د احتياط سرتېرو له ښارونو نه په وتلو پيل وکړ او خلکو هغه په کابل کې وغندلو. په پايله کې د ښوونځيو زده کوونکو يا په سړکونو لاريونونه وکړل يا يې د خپلو کلابندو ښوونځيو په انګړونو کې غونډې وکړې.

چارواکو په دغه ورځ نږدې دوه سوه زده کوونکي بنديان کړل او ځينې يې د ټوپکو په کنډاغونو ووهل. په بله ورځ په کلابند شويو ښوونځيو کې بيا د دغه سياست په وړاندې د اعتراض غونډې وشوې. نظامي کسانو د دغو اعتراض کوونکو له وهلو نه ډډه کوله خو وسله والو پرچميانو د زده کوونکو د لينکيو په لور ډزې کولې. د دغو ډزو په پايله کې يو څو تنه ووژل شول او شپږ تنه د ټپي لينکيو له امله د جمهوريت په روغتون کې د درملنې لاندې نيول شوي وو. کاکړ وايي چې په افغانستان کې دا لومړی رژيم و چې د ښوونځيو ښځينه زده کوونکې يې په ډله ييز ډول بندي کړې دي. په زوره نيول شوو سرتېرو نه غوښتل د وطن د ساتونکو جنکياليو په وړاندې د کارمل د لاسپوڅي رژيم له پاره وجنگيږي. له دې کبله افغان پوځ خپله جنکي وړتيا له لاسه ورکړې وه. د همدغو او نورو دليلونو له مخې د افغان جنکياليو په وړاندې جگړه د شوروي سرتېرو په غاړه وه.

په دې ډول د مجاهدينو سره جگړه د شوروي سرتېرو په غاړه وه او د رژيم پوځ په هغو پورې تړلی څنگځن ځواک و، جنرال شېرشين دا مني چې «... مور پر هغوی [پرچمي افسرانو] خپل امرونه چلول، هغوی ته مو قومندې ورکولې؛ پر هغوی مو حکومت کاوه... [او] پر هغوی مو خپلې پرېکړې تحمیلولې.» ۸۲۲

د افغان مقاومت بنسټ

جلالي وايي چې مقاومت زياتره وخت د مجاهدينو د يو شمېر کوندونو، چې په پاکستان او ايران کې پراته وو، په څېر توصيفيږي، چې د افغانستان د ننه يې د شوروي په وړاندې جگړه پرمخ بيوله. خو د افغان مقاومت جوړښت ډېر اړخيز و. په پاکستان او ايران کې د مجاهدينو د سياسي کوندونو اداري مرکزونو مهم وو، په دې چې دوی په نړيواله کچه د مقاومت نماينده کې کوله، پيسې، وسلې او نورې زېرمې يې ترلاسه کولې چې په افغانستان کې د ننه د جهو ملاتړ وکړي او د مجاهدينو د جنکي ټولگيو له پاره سياسي لوري او لوژستیک تهيه کړي. اساسي جگړه ييز عمليات د ننه په هېواد کې د قوماندانانو له خوا په خپلواک ډول پلان او پلي کېدل. په پاکستان کې اوه اسلامي تنظيمونه پراته وو. دوی بېلې سياسي کړنلارې درلودې، دوی هېڅ کله خپل سياسي پوځي او مالي سرچينې سره کېدې نه کړې، بلکې دوی هر يوه په يوازې ډول د نړيوال پېژند او د مرستو لوی برخې لاسته روړلو له پاره سيالي کوله. دا د کوندونو تر منځ نننۍ سيالۍ د جگړې د سې لارښونې خنډ کېده، د کد پوځي عمل ته يې زيان اړوه او د دښمن په وړاندې يې د منظمو عملياتو مخنيوی کاوه په دې چې اسلامي تنظيمونو د جهاد د مشرۍ له پاره په خپل منځ کې جگړې

کولې.

د مقاومت غیر مرکزي جوړښت د دې لامل شو چې دوی پوځي عملونه هم متمرکز نه وو. د یو څو استثنا پرته، د مجاهدینو د سلگونو ډلو تر منځ عملیاتي همغږي نه وه. له دې امله دوی نه شو کولی چې لوی ځواکونه جگړې ته چمتو کړي او د ټاکلو هدفونو د په نښه کولو له پاره کډ عمل وکړي او د هېواد په کچه سیاسي او پوځي کمپاین سازمان کړي.

کاکړ وايي چې د باندینيو تېرو په وړاندې له وطن نه دفاع د افغانانو ټینګ دود دی. دغه دود وروسته له هغې لا هم پیاوړی شو چې کاونډيو هېوادو د دراني امپراتورۍ د منځ نه تللو نه وروسته پر افغانستان ډېر بریدونه کړي او افغانانو د منظم پوځ او د ولسي واکمن په نه شتون کې هم له خپل وطن نه په خپله ساتنه کړې ده. په نولسمې پېړۍ کې پارسیانو په هرات باندې څو ځله پوځي بریدونه کړي او هراتیانو هغه په خپله په شا وهلي دي. کاکړ وايي چې افغانستان د افغان- انګلیس تر دوهم جنګ پورې دایمي منظم پوځ نه درلود. دا امیر شیرعلي خان و چې په خپله دوهمه واکمني کې په افغانستان کې د لومړي ځل له پاره دایمي منظم پوځ جوړ کړو. هغه په افغانستان باندې د دوهم تیري پر مهال تیت شو او افسرانو یې د قومي او مذهبي مشرانو په فعال ملګرتوب او د قومي ملېشاوو په سرښندنې سره له وطن نه داسې ټینګه ساتنه وکړه چې په پای کې تیري کوونکی پر شا کېدلو ته اړ شو. د امیر عبدالرحمن په وخت کې افغانستان د غښتلي مرکزي دولت او نږدې د یو لک منظم پوځ خاوند شو. د ډېورنډ د توافق لیک نه وروسته ختیځو پښتنو د انګرېزانو په وړاندې ټینګې غزاګانې وکړې چې د وزیرستان د حاجي میرزاعلي خان غزاګانې یې ډېرې مشهورې دي. په پایله کې په افغان ولس او په ځانګړي ډول په پښتنو کې له وطن، اسلام، خپلواکۍ او ننګ ناموس نه د ساتنې دود نور هم ښه ټینګ شو. د شوروي یرغل د تیري کوونکو سرتېرو په وړاندې افغانانو په ټول وطن کې دغه دود په ځانګړې جذبې سره نړیوالو ته وښود، چې له اتومي وسلو نه پرته په ډول ډول نویو وسلو سنبال وو.

د شوروي د یرغلګر پوځ او د لاسپوځي رژیم په وړاندې نږدې د افغانستان د ټولو سیمو، قومونو، ژبو او د مذهبونو ته منسوب افغانان ودرېدل. افغان جنګیالیو ته له پاکستان نه د افغان اسلامي تنظیمونو له لارې وسلې او نور اړین توکي رسېدل. په هر ټاکلي ځای کې د دغو جنګیالیو مشري یوه یا څو قوماندانانو کوله چې بیلو تنظیمونو ته منسوب وو. افغان ځوانان چې د خپل وطن، دین او خپلواکۍ د ساتنې په هوډ ټینګ ولاړ،

زور، روغ، ميلمه پال او د سرو او تودو سره ښه روږدي وو، د جهاد د ملا تير جوړولو. شوروي يرغلگرو د دغو جنکياليو سره نېغه مقابله سخته ليدله نو ځکه يې يو غير انساني چلند غوره کړ. دوی په ارادي ډول پرېکړه وکړه چې ملکي خلک ووژني.

کاکړ وايي چې مجاهدين د خپلو خلکو د ملاتړ او ډاډينې نه خوښ وو او د جگړې په سختو شرايطو کې کې يې بدلې او سندرې ويلې او خپل پام يې ورباندې غلطوه. افغانان ژوندی او د جوش نه ډکه موسيقي لري. له دې امله دوی د سختو کړاوونو په وخت کې هم د غښتلې او پياوړې روحې خاوندان او ناهيلي توب ته غاړه نه ږدي.

کاکړ وايي چې مجاهدانو ته د جهاد له پاره ښه موقع برابره وه. لومړی دا چې افغانان يو رښتینی ولس دی چې زياترو خلکو يې د خطر په منلو سره مجاهدينو ته پناه، ډوډی، جنکيالي او اطلاعات ورکول. دوهم دا چې دوی د خپل وطن، دين، او خپلواکۍ سره داسې مينه وه چې دوی ورباندې سرښندنې ته تيار وو. دريم دا چې زموږ د هېواد جغرافيه دا ځانگړتيا لري چې دوه- درېيمه برخه يې غرنۍ او هغه يوازې ځايي خلکو ته مالومه وه. څلورم يې پاکستان او په ځانگړې توگه د اباسين تر روده د پښتنو سيمې د دوی له پاره ښه پناه تون و، چې په کې يې دمه کولی شوه. پنځم دا چې د باندنيو هېوادو ملاتړ ورسره و، چې هم يې د وسلو او پيسو او هم يې په نړيوالو غونډو کې ملاتړ ورکولو. د امريکا متحده ايالاتونه او سعودي عربستان په دغې برخې کې تر ټولو د مخه وو.

سي ای ای د افغان جنکياليو له پاره پاکستان ته وسلې استولې او هغه يې د مصر، ترکيې، انگلستان، اسراييل، چين او ان د هند نه رانيولې او بيا ای اس ای په خپله خوښه په افغان تنظيمونو وېشلې او هغو به خپلې وسلې په خپلو لاريو کې تر ډېورنډ کرښې پورې ۵۵ مرکزونو ته رسولې. دا وسلې بيا په قاجرو، اوبنانو، او اسونو باندې د چترال نه پنجشېر او بدخشان، له پاره چنار نه لوگر او د کابل چاپېر، له ميران شاه نه لويې پکتيا، لوگر او د کابل چاپېر، له چمن نه کندهار، هلمند، نيمروز، فراه او هرات ته وړل کېدې. د ايران نه هم وسلې د زاهدان نه فراه او هرات ته لېږدېدې. خو دغه وسلې زړې او ځينې يې ان د کار نه وې. خرڅوونکو هېوادو له يوې خوا د دغو زرو وسلو نه ځان بې غمه کاوه او د بلې خوا يې کټه هم کوله.

کاکړ وايي چې سي ای ای د غزا په ټوله موده کې د درې ميليارډو ډالرو په ارزښت وسلې د افغان جنکياليو په نوم ای اس ای ته کراچي يا راولپنډی ته استولې دي. خو ټولې وسلې افغان جنکياليو ته نه دي رسېدلې. له هغو وسلو نه چې نوې او پېچلې وې او پاکستان نه لرلې يوه برخه يې پوځ خپلې کړلې. پاکستان دا وسلې زېرمه کولې او ساتلې او

تنظيمونو ته يې لږ ورکولې. کاکړ وايي چې يو دليل يې دا و چې که تنظيمونو ته ډېرې وسلې ورکړل شي هغوی به ډېر پياوړي او خپلواک شي او د دوی له اغېز نه به ووځي. دوهم دليل يې دا و چې که مجاهدين د جگړې په ډگر کې ډېر پياوړي شي شورويان به وپارېږي او په پاکستان به يرغل وکړي. ځکه ضياء «ريکن ته شکايت وکړ چې مجاهدانو ته دغسې وسلې استولې کېږي چې تر اوسه هغه ته نه دي استولې شوې.» ۸۲۳ ريکن بيا سل ميله د سټينگر راکټونه پاکستان ته ورکړل.

په ۱۹۸۸ کال کې په راولپنډۍ کې د اوچرې په ستر زېرمه تون کې د اور لگېدو له امله د دېرش زره راکټونو په گډون لس زره تنه ډول ډول نوې وسلې د اور په لمبو کې د منځه ولاړې. په افغان تنظيمونو کې هم د وسلې نه ناوړه کټه پورته کېدله. د ځينو تنظيمونو اميرانو وسلې دغسې کسانو ته ورکولې چې هغوی پرې سوداګري کوله. ځينو نورو وسلې زېرمه کولې چې د قدرت په راتلونکې لوبه کې ترې کار واخلي. قوماندانانو هم وسلې پلورلې.

د دې له پاره چې افغان جنګيالي د نويو وسلو په کارولو ښه وپوهېږي د دوی د روزنې په موخه په پېښور، کوېټه کې د روزنې مرکزونه جوړ شول. خو د دوی روزنکي امريکايان او چينايان نه، بلکې د پاکستان افسران وو. دا ځکه چې ای اس ای غوښتل چې مجاهدين دې د دغې لارې هم د پاکستان تر اغېز لاندې وي او د امريکايانو د نفوذ نه دې لېرې وي. په دغسې خطرناک حالت کې چې د شوروي د يرغل نه په افغانستان کې منځ ته راغلی و د هر افغان سياستوال دنده وه چې د باندنيو هېوادو او په تېره د امريکا ملاتړ د پاکستان له لارې نه، بلکې په خپله تر لاسه کړي. خو د تنظيمونو د مشرانو سره دا وېره وه چې نوميالي افغانان لکه ډاکټر صمد حامد، ډاکټر محمد يوسف، ډاکټر عبدالقيوم او عبدالرحمن پژواک او نور د افغانستان مشران نه شي نو ځکه يې نه غوښتل چې د امريکايانو سره اړيکې ولري. د اسلامي گوند امير کليدين حکمتيار په ۱۹۸۵ کال کې په نيويارک کې د ولسمشر ريکن هغه غوښتنه ونه منله چې په څرګند ډول يې له هغه نه غوښتي و، چې ورسره وګوري. خلیلزاد وايي چې «ما په ۱۹۸۵ کال کې د ملي امنيت شورا د لوړپوړي چارواکي «والټ ريمونډ» په غوښتنه حکمتيار له ولسمشر ريکن سره د ليدنې پر اهميت خبر کړ، هغه په ځواب کې وويل: «تاسې ولې ما ته سپيني ماڼۍ ته د تک بلنه راکوئ، غواړئ چې د امريکا له ولسمشر سره په انځورونو کې راڅرګند شم؟» دا کار به په اسلامي نړۍ کې زما په اړه د خلکو کرکه راوپاروي.» ۸۲۴ ډکروال يوسف وايي چې «حکمتيار په خپل دغه قضاوت سره غټه تېروتنه وکړه او د ده دغه عمل جهاد ته زيان ورسوه او امريکا يې پر خپل دغه فکر نوره هم ټينګه کړه چې په کابل کې د دغسې کسانو واکمن کېدل به

هغومره خطرناک وي چې د کمونستانو به وي. «۸۲۵ کاکړ وايي له همدې امله به وي چې د افغانستان د کښالې په اړه د ژينو په خبرو کې افغان تنظيمونو ته برخه ور نه کړه شوه. دی زياتوي «د حيراني ځای دی چې حکمتيار سره له دې هم، د نورو تنظيمونو د اميرانو په شان، نه يوازې د امريکې له سي اي اي نه ډول ډول وسلې ترلاسه کولې، د خپلو دفترونو لگښتونه يې هم ترلاسه کول.» ۸۲۶

کاکړ دا هم وايي چې د سي اي اي بله غټه مرسته دا وه چې د مصنوعي سپورمه کيو د مالوماتو له لارې د جگړې د تصويرونو ته يېه کول وو، چې د هغو له مخې يې د مجاهدينو د عملياتو پلانونو په جوړولو او اغېزناکه کولو کې د دوی قابليت ډېر کړی و.

مجاهدينو يوه غټه ستونزه درلوده. هغه دا وه چې د دوی تر منځ بې اتفاقي او ان نښتې وې چې سرچينه يې تنظيمونه او د هغوی اميران وو. ځينې تنظيمونه او د هغوی اميران دومره توندلاري وو، چې له اعتدالي تنظيمونو سره تر پايه جوړ رانغلل. څنگه چې هېڅ ولايت د يوه تنظيم تر اغېز لاندې نه و او په هرې ولسوالۍ کې به يو يا څو قوماندانان چې بيلو تنظيمونو ته منسوب وو، فعال وو. دغه بې اتفاقي په وطن کې قوماندانانو او له هغو نه مجاهدينو ته رسېده. د دغو قوماندانانو تر منځ د سيمو د کنترول په سر سيالي روانه وه، که څه هم د گډ دښمن پر ضد جنگېدل.

کاکړ د يو شمېر نامتو قوماندانانو نومونه د يوه لسټ په ترڅ کې يادوي او بيا د هغوی نه درې تنو په شخصيتونو، چلندونو او سياستونو باندې کتنه کوي. د درې تنه قوماندانان مولوي جلال الدين حقاني، عبدالحق او احمدشاه مسعود دي چې لوستونکي کولی شي د افغان- شوروي جگړه نومي کتاب کې يې ولولي. زه به دلته د کاکړ د دغې ليکنې ځينې مهم ټکي لوستونکو ته وړاندې کړم.

قوماندان مولوي جلال الدين حقاني

جلال الدين حقاني د پکتيا د ولايت اوسېدونکی، په قوم ځدران او د مولوي محمد يونس خالص د اسلامي حزب غړی و. په لويه پکتيا کې لوی پښتانه قومونه پراته دي. لويه پکتيا مهمه پراخه سرحدي سيمه ده چې ځينې قومونه يې د ډېورنډ د کرښې دواړې خواوې ته پراته دي چې پياوړې معنوي او حياتي اړيکې سره لري. په خلکو کې يې تک راتگ هم زيات دی.

د دغو خلکو ژوند دوديز او د پښتونوالی گډې ځانگړتياوې لري. ژبه يې په نسبي توگه سوچه ده. په ۱۸۹۳ کال کې د هندوستان انکلیس حکومت د ډېورنډ په توافق ليک سره د

وزيرو او مسيدو سيمې د دې له پاره د خپل نفوذ په ساحې کې ونيولې، چې د بېړنۍ اړتيا په مهال د کوملې له لارې پوځي خوځښتونه وکړي او خپل پوځ زر کابل ته ورسوي. د شورويانو يرغل دغه سيمې او قومونه مهم وگرځول. که څه هم د لويې پکتيا زياتره خلک د پير سيد احمد کيلاني او صيبت الله مجددي د کورنيو مريدان دي، دوی د هغو مشران خپل مريدان گڼي او پرې ټينگه عقیده لري خو د دغه ملي جهاد په بهير کې په لويه پکتيا کې د خالص اسلامي حزب د حقاني له لارې هم نفوذ وکړ او تنظيم يې هلته نوم وايست.

حقاني د خټکو په اکوړه کې د حقاني مدرسه کې زده کړې کړې دي. دی د توند لارو اسلامي بنسټ پالو نه و او لا هم دی. نوموړي د خپل تنظيم له لارې ای اس ای او په خپل شخصي اعتبار او اړیکو سره د عربي اماراتونو او عربستان د بنسټ پالو سره اړیکې ټينگې کړې او له هغوی نه يې زياتې پيسې ترلاسه کړې. د ده يوه مېرمنه هم د قطر د عربي امارت نه ده. ده د همدغه اعتبار او د لويې پکتيا د ستراتيژيکي اهميت له امله وکړای شول چې په ژوره نومي سيمه کې د عربستان په پيسو د مخکې لاندې داسې لوی مرکزونه جوړ کړي چې په ټول وطن کې يې ساری نه درلود. د ۱۹۸۶ کال په اپرېل کې حقاني او مجاهدينو د شورويانو او کابل د رژيم گډ بريد په وړاندې ټينگ مقاومت وکړ. دغه بريد د شوروي يوه ځانگړي کومانډويي غونډ (سپيناز) له خوا وشو چې درې اونۍ اوږد شو او په سلگونو جنکيالي په کې شهيدان شول. په پای کې شوروي ځواکونه چې جنکي الوتکو او توپ لرونکو چورلکو بدرکه کولو، په شا شول.

د جلال الدين حقاني د فعاليت بل اړخ له عقيدوي مخالفانو سره مرکي چلند و. په دې برخه کې دی د هغو توند لارو او زغم نه منونکو بنسټپالو نه و چې بې شمېره افغانان يې په خپل دستور سره د محکمې پرته د منځه وړي دي، په دې نامه چې چپيان يا کمونستان دي يا يې له خلقي او پرچمي رژيمونو سره کار او همکاري کړې ده. کاکړ د يوه وړ باوري مشاهد په حواله وايي چې په سلگونو هغه سرتيري ځوانان هم د هغه په حکم وژل شوي دي، چې د پرچم د پوځ نه تښتېدل او د ده تنظيم ته تسليمېدل. که څه هم دغه ځوانان د کارملي رژيم له خوا په زور نيول کېدل او هغوی بيا په مناسب وخت کې له وسلو سره تښتېدل. امريکايي ليکوال اوبالانس وايي چې د دغسې وژلو پايله هم سملاسي او د غزا په تاوان شوه. له هغه وروسته «افغان سرتېرو په دې پيل وکړ، چې تسليم نه شي او جنگ وکړي». په دغه کار سره «د افغان پوځ معنوياتو په پياوړي کېدلو پيل وکړ او د کابل رژيم په يو څه رښتينتوب سره ادعا کوله چې ډېر مجاهدين ورته تسليمېږي، په داسې حال کې چې د سرتېرو د تښتېدو اندازه يې تر ډېره حده ښکته شوه.» داسې هم له

هغو افغانانو نه ډېر بې له منځه وړل شوي دي چې له کابل او شاوخوا سيمو نه د پکتيا پر لار پېښور او نورو ځايو ته کډه کېدل.

قوماندان عبدالحق

عبدالحق په ۱۹۵۸ کال کې د هلمند د کرمسېر ولسوالۍ د دروېشانو په کلي کې د امان الله خان جبارخېل په کور کې زيږيدلی دی، چې هلته ولسوال و. د عبدالحق غور نيکه ارسلاخان جبار خېل و چې د امير شيرعلي خان په دوهمې واکمنۍ کې د باندنيو چارو وزير او عصمت الله جبارخېل د کورنيو چارو وزير و. دی پنځلس کلن و چې د خپل تره دين محمد سره چې د داود خان له حکومت سره يې جوړه نه وه، د سره رود د فقير الله په مدرسه کې زده کړه پرېښوده او د حکومت په مخالفت پېښور ته واوښت. دی وروسته وپېژندل شو او د کابل په توقيف خانه کې بندي شو. دی بيا د ثور د پاڅون نه وروسته ازاد شو. دوی او مولوي جلال الدين حقاني په پېښور کې د مولوي محمد يونس خالص په مشرۍ د اسلامي حزب بنسټ ايښی و. مولوي خالص نوی د کليدين حکمتيار له اسلامي حزب نه بيل شوی و. عبدالحق د وطن په ازادولو او بيا د لويې جرگې له لارې د سياسي نظام په جوړولو ولاړ و.

نوموړي د شوروي يرغلگرو او د هغوی د لاس پوڅي رژيم په وړاندې منظمه مبارزه پيل کړه. عبدالحق د شوروي يرغل او د هغه د لاسپوڅي پرچمي رژيم په وړاندې لومړی خپله غزا د خوست د مستر بل سيمي نه پيل کړه چې د خپلو وروڼو سره هلته تللی و. بيا پرېکړه وشوه چې د ننگرهار په خوکیانيو کې جبهه پرانېستل شي. بيا نو د تورې بورې مرکز د پچيراکام ولسوالۍ د سلېمان خېلو په تنگي کې غوره شو. مولوي خالص د تورې بورې دفاعي سيستم عبدالحق او نورو ته وسپاره. له همدغې جبهې نه مجاهدينو خپل کړوپونه چېرهار، خوکیانيو، سره رود او د شينوارو سيمو، حصارک، سروبي ولسوالۍ، تور غر او جلال اباد ته خپل عمليات وغزول او عبدالحق چريکي عمليات پيل کړل. بيا په همدغه کال د ننگرهار جبهې مشري يې انجنر محمود ته وسپارله او دی د خپلو ملگرو سره په پغمان کې د شوروي زبرځواک پر ضد جبهه جوړه او جگړه يې پيل کړه. پغمان هم لږو ډېر د تورې بورې غونډې غرنۍ سيمه وه. په پغمان کې د څارندوی يو افسر عبدالحليم د حکومتي گړندي موټر او څه وسلو سره د عبدالحق ملگری شو. څنگه چې عبدالحق پيسو او وسلې ته اړتيا درلوده نو د خالص او دين محمد نه يې مرسته وغوښته خو هغوی غور ورباندې ونه گراوه ځکه چې دوی د پغمان د جبهې د پرانېستلو سره جوړ نه وو. له دې

کبله ده د هغو سره پوره وشکوله او اړ شو چې په خپل ځان ډډه وکړي او خپل ملګري زيات کړي.

عبدالحق د نوښتي او رانه فکر خاوند و، په خلکو يې باور درلود او د ملګرو د موندلو وړتيا يې درلوده. د ده په فعاليتونو سره د پغمان جبهې نوم وايست. دغه مهال د عبدالحق د پلار سوداګرو ملګرو او هم خپل مشر ورور عبدالقدير پيسې ورواستولې. دغه وخت نوموړی په سر ټپي شو او د درملنې له پاره پېښور ته لاړ. هلته مولوي خالص خپله تېروتنه ومنله او دوی سره پخلا شول. د دې وروسته د ده اړتياوې د کوند له خوا پوره کېدې. د دې وروسته د کابل په چاپېر يو شمېر جبهې جوړې او د هغو له پاره يې چې کوريلايي جګړه پرمخ بوزي پوره جنګيالي درلودل.

د عبدالحق د کابل چاپېرو جنګياليو دنده د نورو تنظيمونو د مجاهدينو په شان دا شوه چې پر لويو لارو باندې د يرغلګرو په قطارونو باندې بريدونه وکړي او د ښار د ننه په ورو ورو ډلو سره د شورويانو او هم د لاسپوڅي رژيم بېره داران په نښه کړي. په ۱۹۸۹ کال کې د قرغې د فرقي زيرمه تون هم د عبدالحق په نوښت وچاودل شو.

قوماندان عبدالحق په ځانګړې توګه د ښاري چريکي عملياتو له امله د باندنيو ژورنالستانو له لارې نوم وايست. په ۱۹۸۵ کال کې د امريکا ولسمشر په واشنګټن او بل کال د انگلستان لومړی وزيرې مارګرېت تاچر په لندن کې ورسره وليدل. دغو ليدنو له دې سره مرسته وکړه چې امريکا په ۱۹۸۶ کال کې مجاهدينو ته د سټينګر راکټونه ورکړي تر څو د شوروي هوايي ځواک تر زياتې اندازې بې اغېزې کړي.

د ۱۹۸۹ کال د فبروري په مياشت کې د شوروي اتحاد پوځ د ژبنو د موافقې له مخې له افغانستان نه ووت. خو عبدالحق د نجيب الله رژيم د شورويانو لاس پوڅي کاڼه نو د هغه پر ضد يې جګړې ته دوام ورکړ. د نجيب د رژيم د نسکورېدو وروسته کله چې د افغان اسلامي تنظيمونو نه جوړ حکومت په کابل کې واکمن شو عبدالحق د کابل د امنيه قوماندان وټاکل شو. خو ويل کېږي چې ده د مجاهدينو تر منځ د غنيمتونو او واک پر سر د جګړو سره د مخالفت پر بنسټ خپله دنده پرېښوده او ۱۹۹۲ کال کې له افغانستان نه ووت. دی په اصل کې د اسلامي بنسټ پالنې سره جوړ نه و. ده به ويل هغه څه ته چې مور ورته اړتيا لرو «هغه پراخ بنسټه حکومت دی.» ۸۲۷

قوماندان عبدالحق د پاکستان د ای اس ای سره هم جوړ نه و ځکه چې يې بنسټ پال تنظيمونه غوره ګڼل او هغه قوماندانان يې څنډې ته کول چې د افغانيت او خپل فکر له مخې يې غزا کوله. د ای اس ای هم د عبدالحق سره ورانه وه ځکه چې ده په نړيواله

کچه بڼه نوم کتلی و: د پیاوړې ارادې او د روغ فکر خاوند و: د نرم سیاست پلوي و او تر هر څه یو خپلواک شخص و. ۸۲۸ د عبدالحق نه د ای اس ای ناخوښي له دې کبله هم وه چې هغه د غزا په اړه باندینیو ژورنالستانو ته په خپلو مرکو کې کوم مالومات ورکول د ای اس ای د مالوماتو نه یې توپیر درلود. خو ډگروال یوسف غوښتل چې «ټول مجاهدان باید زما سره اړیکې ولري او زه چې د افغانستان په اړه نړیوالو ته کوم تصویر وړاندې کوم، مجاهدین باید په هماغه لار لار شي.» ۸۲۹ کاکړ وايي چې د ای اس ای مشر حمید گل لا «له عبدالحق څخه دا غوښتنه درلوده چې «... اروپایان او امریکایان چې مسلمانان نه دي له هغو سره ستا جلا اړیکې ساتل د جهاد په کټه نه دي.» ۸۳۰ خو عبدالحق ځان اړ نه باله چې نړیوالو ته خپل خبر د ای اس ای له لارې ورسوي او ویل به یې چې «تاسې [ای اس ای] هم دا هر څه له هغوی اخلئ، نو موږ ولې منع کوئ.» ۸۳۱ دا د عبدالحق د مرگ لامل شو.

کله چې د طالبانو امارت نه د خپل زیر چلند له کبله نارضايت عام شو، د امریکې او ملګرو ملتونو له خوا پرې بندیزونه ولګېدل او د هغه د بدلولو له پاره په نړیواله کچه تجویزونه نیول کېدل عبدالحق په دې لټه کې شو چې امارت له د ننه څخه نسکور او په ځای یې یو پراخ بنسټ نظام په پښو ودرول شي. په دې موخه د امارت له ناراضو لویانو سره، چې شمېر یې لږ نه وو، خبرې پیل کړې.

د مخه مو یادونه وکړه چې عبدالحق په دې فکر و چې د افغانستان کښاله د پراخ بنسټه حکومت د جوړېدو په اساس هوارېدلی شي چې د قومونو د استازو، د تجربه لرونکو سیاست چلوونکو او پوهو افغانانو نه جوړ وي. دی په دې فکر هم و چې پخوانی پاچا محمد ظاهر د دغسې نظام د مشرۍ له پاره مناسب شخص دی چې د واکمنۍ تجربه لري، افغان قومونه پرې راټولېدای او د ملي پیوستون ورباندې ټینګېدای شي. د ده سره په دغه پروګرام کې ملا خاکسار د امارت د کورنیو چارو مرستیال او ملګري یوځای شول. ملا خاکسار لا د مخه د امارت ناراضي کسان په پټه تنظیم کړي وو. دغو کسانو د یو پروګرام له مخې غوښتل چې یو داسې اسلامي نظام په پښو ودروي چې د ټولو قومونو له استازو نه جوړ وي له بهرنۍ نړۍ سره اړیکې ولري او روانې جګړې ته د پای ټکی کېږدي. د عبدالحق سره عبدالسلام راکتي او ملا ملنگ هم ودرېدل.

کاکړ وايي چې دا هغه وخت و چې د امریکا د متحدو ایالاتو له خوا د ۲۰۰۱ کال د پېښې د غچ اخبستلو له پاره په افغانستان هوايي بمباری روانې وې.

عبدالحق د وطن بمباری زغملی نه شوې. ده لا د مخه د امریکې د ولسمشر جورج

بوش او د انگلستان د صدراعظم نه غوښتي و چې افغانستان بمباري نه کړي ځکه چې امارت د نسکورېدو په حال کې دی او دی هڅه کوي چې له ننه څخه یې نسکور کړي. ۸۳۲ عبدالحق د اکتوبر په دریمه یاني د امریکې د بمباری نه د مخه یو پلان جوړ کړ چې مېرمن لوسي ایډورډز د دې پلان پوره متن په خپل کتاب کې چې «د افغان کشاله هوارول» نومېږي، خپور کړی دی.

د امریکې له خوا د افغانستان بمباري کېدل د عبدالحق د پلان د پلي کولو په وړاندې اساسي خنډ و. له همدې امله ده د خپل پلان د پلي کولو له پاره د وخت نه د مخه پیل وکړ. دی د خپلو یو شمېر ملګرو سره د اکتوبر په یووشتمه له پېښور نه افغانستان ته ننوت. دی د اکتوبر په ۲۵ مه د طالبانو له خوا ونیول شو او د چاراسیاب د سنگ نوشته په سیمه کې د طالبانو د کورنیو چارو وزیر عبدالرزاق په امر د اکتوبر په ۲۶ مه نېټه د جمعې په ورځ ووژل شو. دی دا وخت د درې څلوېښتو کالو ځوان و. تامسن د سي ای ای د ترهګرۍ ضد یوه پخواني چارواکي ونس کانستارو په حواله وايي چې ای اس ای «یو افغان قومي مشر د عبدالحق د موقعیت نه خبر کړ او دغه قومي مشر دغه خبر طالبانو ته ورسوه.» ۸۳۳ دغسې ډېر افغانان لا د مخه د ای اس ای د اجندا له مخې په پېښور او کوبته کې ترور شوي وو او همدارنګه ملا یارمحمد، ملا بور جان او مولوي احسان الله د جګړې په ډګر کې د شا له خوا ویشتل شوي دي. دا وژنې ای اس ای د دې له پاره کولې چې د افغان کشالې په ملي اجندا سره هواره نه شي او یوازې یې د هغو بنسټ پالو ملاتړ کاوه چې د هغوی له لارې یې پر افغان نظامي عملیاتو باندې خپل سیاسي او ستراتیژیک کنترول ټینګولی شو.

قوماندان احمدشاه مسعود

کاکړ وايي چې احمدشاه مسعود خپلو پلویانو د حد نه ډېر ستایلی او مخالفینو د حد نه ډېر غندلی، خو دی به هڅه وکړي چې د هغه یو اندولیز او شاید افایي انځور وکاري. د احمدشاه مسعود کوم نیکه له پار دریا یا له ننني تاجکستان نه افغانستان ته مهاجر شوی او هلته د ده کورنۍ د نوروز خېل په نامه یادېده. ۸۳۴ مسعود په یوه روایت په ۱۹۷۲ کال کې د استقلال د لیسې او په بل روایت د ابو حنیفه مدرسې نه فارغ او په ۱۹۷۳ کال کې د کابل په پولیتخنیک انستیتوت کې ومنل شو. هلته د زده کړیال حبیب الرحمن تر اغېز لاندې اخواني شو. خو په همدغه کال کې محمد داود د چنګاښ کودتا وکړه او مسکو پلوه پرچمیان یې په نظام کې شامل کړل نو ځکه ده ورسره مخالفت وکړ.

بل کال د هوايي افسرانو کودتا برېنده شوه، حبيب الرحمن بندي او مسعود پاکستان ته وتښتېد. دا هغه وخت و چې د پاکستان حکومت د افغانستان د حکومت مخالفين د افغانستان پر ضد لمسول او تر روزنې لاندې نيول او د افغانستان حکومت د پاکستان د حکومت مخالفين د پاکستان د حکومت پر ضد لمسول او روزل.

احمدشاه مسعود د پاکستان حکومت د «جنرال بابر تر څارنې لاندې پېښور ته نږدې چرات کې د کوماندو او ځانگړيو ځواکونو د ښوونکي تر لارښوونې لاندې د ترور، سبوتاژ، ښکولو او وژلو، حملې او نورو چارو زده کړه وکړه.» ۸۳۵ پوځي روزنې درې مياشتې اوږدې شوې او حکمتيار د جمعيت د تنظيم د نظامي څانگې امر او مسعود يې دوهم شخص و. مسعود بل کال له ۳۷- کسيزې اخواني ډلې سره په پنجشېر کې د داود خان د حکومت پر ضد پاڅون وکړ او نورو په بدخشان او لغمان کې هم پاڅونونه وکړل. حکومت دغه ټول پاڅونونه د خلکو په ملاتړ وځپل، ځينې يې مړه او ځينې يې بنديان او مسعود او نور يې د پاتې ملگرو سره پېښور ته بېرته لاړل.

کروموف وايي چې مسعود مصر ته لاړ او په فلسطين کې يې د اسراييلو پر ضد جنک کې برخه واخېسته. دی زياتوي چې «په غالب گومان هلته [منځنۍ ختيځ] کې د پارتيزاني جگړو مهارتونه زده کړي دي.» ۸۳۶ د همدې زده کړو له کبله به وي چې مسعود وروسته په پنجشېر کې يو ماهر چريکي قوماندان شو. د ثور د پاڅون وروسته دوی ټولو ته د خلقي حکومت په بڼه يو نوی دښمن پيدا شو.

مسعود د جوزا په مياشت کې له يو شمېر ملگرو سره د نورستان له لارې د پنجشېر سردرې ته ننوت، خو د ده په وړاندې پهلوان احمد جان يوه ستونزه وه. پهلوان احمد جان د يوې نفوذ منې کورنۍ نه و او په خپله د ښه نوم خاوند او يو پېژندل شوی شخص و. دی خلکو لا د مخه خپل ولسوال غوره کړی و. د ده په مشرۍ د پنجشېر خلکو له يو لړ نښتو نه وروسته پنجشېر تر دهانه پنجشېر پورې ونيوه، خو خلقي حکومت دوی بېرته په شا ووهل او دوی د ربوت تر دښتې پورې ورسېدل. د سهراب په وينا «په اول کې احمدشاه مسعود د پهلوان احمد جان له خوا د يوه جنکي گروپ مشر وټاکل شو او د لومړي ځل له پاره د ربوت د دښتې سيمه او د سره غره په جگړو کې برخه واخېسته چې په دواړو جگړو کې يې له دولتي قواوو نه ماته وخوړه.» ۸۳۷ کاکړ وايي چې احمدشاه مسعود د پهلوان احمد جان په شتون کې د پنجشېر جبهې سروال کېدل نه شو نو هغه بايد له ډگر نه وايستل شي.

د شوروي يرغل نه وروسته احمدشاه مسعود پهلوان احمد جان ته مشوره ورکوي

چې کابل ته لاړ شي او د خپلو شونتياوو نه په کټه اخېستو سره وسله او مادي مرسته راټوله کړي او پنجشېر ته يې راوړي. احمدشاه مسعود د ده په نه شتون کې د اخوانيانو او ملايانو غونډه جوړوي چې گويا پهلوان احمد جان د دولت سره همکاري کوي او پرته له دې چې په دې اړه کوم سند وړاندې کړي. احمدشاه مسعود په دغه غونډه کې د ملايانو نه د پهلوان احمد جان د وژلو فتوا تر لاسه کوي او کله چې احمد جان پنجشېر ته راستنېږي د احمدشاه مسعود له خوا وژل کېږي. ۸۳۸ د دغې پېښې په پايله کې احمدشاه مسعود د پنجشېر د جبهې قوماندان او بيا امر صاحب کېږي.

احمدشاه بيا د احمد جان پلويان او نور مخالفين وځپل او په دې توگه دی د پنجشېر د جبهې يوازينی نوښتگر قوماندان شو. ده د خپلې ډلې په تنظيم او د پنجشېر د جبهې په پياوړي کولو پيل وکړ. ده د پنجشېر د خلکو ژوند چارو ته پام وکړ او کونښن يې کاوه چې هغوی ته په پنجشېر کې د ژوند وسيلې برابرې کړي. خو په اصل کې د پنجشېر د تنکو درو کرنيز محصول لږ او هم پنجشېر په دغه وخت کې کلابند و. د امريکايي ژورنالست جراردټ په وينا په ۱۹۸۳ کال کې په پنجشېر کې د څلورنيم او پنځوس زرو تر منځ خلک له لوړې سره مخ وو او په همدغه شمېر خلک يې يا کابل يا پېښور ته کډوال شول. ۸۳۹

د کاکړ په وينا په پنجشېر کې لکه په نورو ځايونو کې جگړې لومړی دفاعي بڼه درلوده چې بيا يې پارټيزاني بڼه غوره کړه. د ۱۹۸۲ کال تر اوري پورې دغسې جنکيالي په ۲۲ ډلو چې په هره يوه کې ۳۲ تنه وو، تنظيم شول. دوی هر يو په دوه ميل RPG او يو ميل PK سل ټکه ماشيندار وسله وال وو. دوی د قرارگاه په نامه مرکزونو کې سره وېشل شوي وو، چې هره قرارگاه په فرعي دره کې پرته وه. په هرې قرارگاه کې يو کوزاريز ډلگي جوړ شو چې اصلي دنده يې جگړه کول و او د نورو دنده د لوژستيکي لوازم تېهه کول وو. د احمدشاه مسعود عوايد هم لږ نه وو. سوداگرو نغده مرسته کوله، د محصولاتو نه عشر اخېستل کېده او په کابل کې د پنجشېر مامورينو د خپلې معاش پنځمه برخه دغې جبهې ته ورکوله. دې جبهې ته په کال کې تر نهو ميليونو ډالرو د هغو قيمتي کاڼو نه چې په پنجشېر کې د کانونو نه رايستل کېدل چې کالنی عايد يې د اتيا او نوي ميليونو ډالرو تر منځ و، ورکول کېدل. همدارنگه احمدشاه مسعود يو پراخ د جاسوسۍ جال غورولې و چې د هغه په مرسته يې د حکومت او هم د نورو مجاهدينو د فعاليتونو په اړه مالومات ترلاسه کول. له دې کبله دی د شوروي يرغلگر پوځ او د کابل د رژيم د پوځ له لوري په پنجشېر باندي د بريدنه د مخه خپرېده او اړين ترتيب يې نيوه.

احمدشاه په پنجشېر قانع نه و او غوښتل يې چې خپله سيمه پراخه کړي. خو په دې لار کې يې د يوې خوا د شوروي يرغلگر پوځ خنډ و چې دی يې په پنجشېر کې د ننه خپلې شو او د بلې خوا د حکمتيار اسلامي حزب يې د ده د پراختيا په مخ کې خنډ و چې په دغه وخت کې يې د اندراب، د بگرام چاپېر سيمې او کوهستان تر چارباکارو پورې د قره باغ په کېدون تر ولکې لاندې وې. اندراب د پنجشېر له پاره حياتي ارزښت لاره، ځکه چې د دې لارې د پاکستان نه د وسلو کاروانونه ور رسېدل او له هغه نه غله هم پنجشېر ته وړل کېده. د ۱۹۸۰ کال نه تر ۱۹۸۲ کال پورې په پنجشېر باندې د شوروي او د هغه د لاسپوڅي رژيم پوځونو پنځه ځله بريدونه وکړل، خو په مقصد ونه رسېدل. له پنځم نه وروسته د جنرال گروموف په وينا د ۱۹۸۲ کال په دسمبر کې او د نورو په وينا د ۱۹۸۳ کال په جنوري يا فبروري کې احمدشاه د يرغلگر پوځ له استازو سره اوربند لاسليک کړ، که څه هم د غزا او وطن په تاوان او د ملي ارزښتونو پر خلاف و. ۸۴۰

په دغه پروتوکول کې چې په افغانستان کې د شوروي ځواکونو او «د پنجشېر د وسله وال اپوزيسيون» تر منځ لاسليک شوی، ويل شوي چې په سوويلي سالنک او داسې هم د سالنک- حيراتان پر لار به هېڅ وسله وال بريد نه کېږي او د شوروي خوا به د مهماتو او د سملاسي او نورو اړتيا وړ شيان تېره کوي او خپل نظامي ټولکي به له پنجشېر نه باسي او د درې په خوله عنابه کې به د کابل د رژيم د يوه کنډک تر څنگه به يو کنډک ساتي. داسې هم د شوروي لوري به اپوزيسيون ته ۳۵۰۰۰ ډالر ورکوي. ۸۴۱ الکساندر فيدوتوف وايي چې د هغه يوه پخواني آشنا او د کې چې بې يوه افسر ډگروال زکين قادروف راته بربنده کړه چې نوموړي په خپله د ترون په لومړيو شپو ورځو کې څو څو ځله په سلگونو زره ډالره د اوربند د ترون د يوې برخې په توگه مسعود ته وروري دي. ۸۴۲

د ستيف کول په وينا په ۱۹۹۰ کال کې څرگنده شوه ... چې سي اي اي احمدشاه مسعود ته ۵۰۰ زره ډالر ورکړل چې د سالنک لويه لار وتړي او له ترمزه څخه د کابل پر لور د توکو د رسولو لاره له خنډونو سره مخامخ کړي. خو کابل هېڅ اندېښنه نه درلودله، مسعود پيسې واخېستلې او د سالنک د لويې لارې د تړلو په وړاندې يې هېڅ ډول گام پورته نه کړ. ۸۴۳ (ستيف کول د پيريانو جگړه، نيويارک ۲۰۰۴ پاڼه ۸)

روسانو د مسعود د ساتنې له پاره د شخصي ساتونکو په توگه د هوايي لوا (VDV) کوماندو يوه ډله وروپېرله او نوموړې ډله د نيوک د مهال تر پايه يانې تر ۱۹۸۹ کال پورې له احمدشاه مسعود سره وه. گروموف وايي چې «... مسعود د ځينو کوچنيو مواردو نه پرته خپلې ژمنې بشپړې سرته رسولې». دی زياتوي چې په دغه پروتوکول سره مو «له

احمدشاه مسعود سره داسې ټينگې اړيکې پيدا کړې چې له افغانستان څخه د شوروي پوځونو د وتلو تر وخته پر خپل حال پاتې وې. «۸۴۴

دا پروتوکول چې شورويانو د احمدشاه مسعود سره په نېغ ډول لاسليک کړې له دې چې د کابل رژيم د هغه يو لوری وي د کابل د حکومت اعتبار نور هم لږ کړ. خو د شورويانو د دغه پروتوکول نه درې موخې درلودې. لومړۍ دا چې د کابل- حيراتان لار په تېره د بغلان او سالنگونو په برخه کې په امن کې شي، دوهمه دا چې د مجاهدينو تر منځ بې اتفاقي او بې باوري رامنځ ته کړي او په خپلو منځو کې بې وځنګوي، دريمه دا چې احمدشاه مسعود د شورويانو سره د همکارۍ په لور ورمات کړي تر څو شمالي افغانستان په اول سر کې په اقتصادي لحاظ په شوروي پورې وتړي او د خپلو اوږدو موخو له پاره ورڅخه کار واخلي.

د ۱۹۹۵ کال د اګست په مياشت کې د کې چې بې پخواني څارگر اناتولي سودوپلاتوف په بوستون کې د يوې مرکې په ترڅ کې وويل چې «مسعود د ۱۹۸۳ او ۱۹۸۵ کلونو په منځ کې د فرونزې په پوځي اکاډمي کې زده کړې وکړې.» ۸۴۵

بروس ريچارډسن وايي چې «مسعود له شورويانو سره ... له ۱۹۸۰ تر ۱۹۸۹ کلونو پورې تړونونه وکړل. مسعود د خپلو تړون[نو] الو ژمنو د ترسره کولو له پاره تل شوروي هوايي او توپچي ځواکونو ته کوارډيناتونه برابرول او هغوی به د مقاومت ډلې پرې درې ورې کړې. ... د [سالنگ] د خوندي ساتلو په تړاو د مسعود پرېکړو شوروي ډلگيو ته لار پرانېسته چې خپل ځواکونه هر چېرې پلي کړای شي.» ۸۴۶ لياخوفسکي هم وايي چې مسعود د ۱۹۸۰ کال د اپرېل د مياشتې له پيله له شورويانو سره تړون وکړ. ميخايل کورباچوف د ۲۰۰۴ کال د فبروري په شپاړسمه نېټه د بي بي سي سره د يوې مرکې په ترڅ کې وويل: «مسعود زموږ له پاره کار وکړ.... هغه موږ ته سالنگ پرانېستلی وساته.... هغه هېڅ چا ته اجازه نه ورکوله چې په موږ بريد وکړي.» ۸۴۷

د بروس ريچارډسن په وينا د ۱۹۸۷ کال د امريکا د بهرنيو چارو د کيبلې پېغامونو د پټو افشا شويو لاسوندونو نه ښکاري چې «له روسانو سره د مسعود د تړون په اړه په واشنګټن او اسلام اباد کې د ريکن د ادارې د چارواکو تر منځ پراخه خبرې شوې او په خبرو کې اندېښنې په ډاګه شوې دي. په زړه پورې خو دا ده چې مسعود په همدغه وخت کې له سي اي اي څخه خپله تنخوا هم ترلاسه کوله.» ۸۴۸ بروس ريچارډسن زياتوي چې «د مشرانو د جرګې د استخباراتو د کميټې يوه غړي ما ته ويلي و چې «مسعود د استخباراتو د يوې ويسيپي په توګه پېژندل کېده. ده او (سي اي اي) د راتلونکو اړتياوو له پاره يوې ګوښې

ته ساتلی وو. «۸۴۹ دی زياتوي چې مسعود او رباني په ۱۹۹۵ کال کې له اسامه بن لادن څخه لس ميليونه ډالره تر لاسه کړل؛ دغه ډالر مسعود رباني ته د ۱۹۹۲-۱۹۹۵ کلونو په ترڅ کې د هغو وسلو د قاچاق په بدل کې ورکړل شول چې په سوماليه کې يې محمد فرح عبيد ته وسلې ولېږلې او د امريکايي پوځيانو پر ضد وکارول شوې. دی زياتوي چې مسعود په ۱۹۹۵ کال کې د سټينگر توغوندي په کابل کې ميشت د شمالي کوريا د سفارت له لارې په شمالي کوريا وپلورل. ۸۵۰

ستر جنرال ليونيد شيبارسين د کې چې بې د بهرنيو استخباراتو پخوانی مشر په خپل کتاب کې چې «د مسکو لاس» نومېږي د مسعود اروايي انځور داسې وړاندې کوي: «[مسعود] ځان خوښی، په ځان مين، توکمپال، داسې يو سړی چې پوځي پوهې او زړه وړتيا ته کلک لېواله دی، داسې يو سړی چې د خيانت وړتيا لري.» ۸۵۱

کابل د جگړې په حال کې

کابل د پلازمينې په توگه د يرغلگر پوځ او هم د کابل د رژيم له پاره ځانگړی اهميت درلود. د شوروي اتحاد او کابل تر منځ پوځي اړيکې د بکرام او کابل د هوايي ډگرونو له لارې خوندي کېدلې او د وسلو، لوژستيکي او نورو شيانو د راوړلو له پاره د حيراتان-سالنگ-کابل لارې ځانگړی اهميت لاره. د دې برسېره د غزني-کندهار-هرات، کابل-جلال اباد-تورخم او داسې هم کابل-لوگر-پکتيا لارې هم مهې وې. د کابل، ولايتي مرکزونو او ښارونو خونديتوب د همدغو لارو په خونديتوب پورې تړلی و او همدارنگه د هغو سرحدي سيمو په گډون چې ستراتيژيک اهميت يې درلود چې د حکومت د واک لاندې وي، دغو لارو اهميت لاره.

د کابل ښار او د هغه چاپېر سيمو خوندي ساتنه د يرغلگر او کابل رژيم د پوځ پر غاړه وه. دوی له کابل نه درې امنيتي کړۍ راتاو کړې چې له نظامي پوستو، د ماين ډگرونو او نورو نه جوړې وې. خو تر ۱۹۸۵ کال پورې چې شورويانو د کابل پر چاپېر دريمه امنيتي کړۍ جوړه کړه، پر کابل باندې د توغنديو د وپشتلو مخه ونیوله شوه. دغه ستونزه په ۱۹۸۷ کال کې وروسته له هغې حل شوه چې ای اس ای له چين نه د (SBRL) سم شوی ماډل لاسته راوړ چې مجاهدينو ته يې د کابل د وپشتلو توان ورکړ. ۸۵۱ الف

د ای اس ای مشر جنرال اختر عبدالرحمن چې ويل يې «کابل بايد وسوځي» په کابل باندې بريدونو ته لومړيتوب ورکاوه. د کابل په چاپېر کې د دريمې امنيتي کړۍ نه لېرې په پغمان، چکري، ساپي غره او چاريکار کې څلور لوی مرکزونه جوړ شول چې ورڅخه پر

لویو لارو بریدونه کېدل او هم یې د کابل ښار تر فشار لاندې نیوه. په کابل کې د راکټي بریدونو لوی هدفونه د کابل هوایي ډگر، د دارالامان ماڼۍ، د قرغې فرقه، د شوروي سفارت، مکروریان، د ریشخور فرقه او د چېلستون ماڼۍ وو.

د کابل پر ضد د جگړې بل اړخ د لویو لارو پرېکول وو، چې اړین توکي ښار ته ونه رسېږي. د دغه مقصد له پاره د ښار په لور په روانو کاروانونو باندې بریدونه کېدل؛ بندونه په ماینونو سره وړاندېدل؛ دغسې غیر پوځي ټولګټو پروژې د ای اس ای په دستور د دې له پاره د منځه وړل کېدل چې د شورویانو د وتلو وروسته وران شوی او ناتوان افغانستان د دوی تر لاس لاندې هېواد وي. مجاهدانو به د شوروي اتحاد یوولس زره لاری او تر هغو لاریاتې د رژیم لاری د کاره غورځولې وې. ۸۵۲

د جگړې بل اړخ په کابل ښار کې سیاسي وژنې، ترور او وړانګاري وه. مجاهدینو د ورځې له مخې په کابل کې د رژیم پر ضد داسې کارونه نه شو کولی چې زبان ورته ورسوي خو د شپې له خوا له خپلو مرکزونو نه ښار ته ننوتل؛ ګوندي کسان به یې له کورو څه تښتول؛ امنیتي پوستې به یې بریدونه کول او د کزمه وهونکو سره به یې نښتې کولې. د ښار په بیلو بېلو سیمو کې به د شپې د ماشینګرو، راکټونو او سپکو وسلو دزې اورېدل کېدې. کاکړ وایي چې په کابل ښار کې فرد وژنه د کب یا فبروري میاشتي له پاڅون نه وروسته په پراخه اندازه پیل شوه. تر سرطان یا جولایي پورې وژنې ډېرې شوې. دی وایي چې د دغو وژونو نمونې د نظامي خاد سیاسي آمر اکبري، د خاد د پنځم لمبر آمر حاجي سخي او د پخواني جنرال میر فتح هزاره او نور یادولی شو. د کانو د وزارت یو شوروي کارپوه د قوماندان عبدالحق د یوه مجاهد له خوا پاکستان ته وتښتول شو.

د ۱۹۸۲ کال په فبروري کې صایمه مقصودي د تلویزیون ویندویه ترور شوه چې د هغو پرچمیانو په وړاندې ټینګه ولاړه وه چې د پښتو خبرونو په وړاندې خنډ کېدل. د هغې د ترور کېدو وروسته د پښتو نامتو سندرغاړی خان قره باغي او نامتو سندرغاړې بخت زمینه هم ترور شول. خو دا مالومه نه شوه چې دا د چا کار و. د ۱۹۸۲ کال په مارچ کې د پوهنتون رییس سعیدی په زهرو او بیا د مرکزي ځواکونو قوماندان جنرال عبدالودود هم ترور شول. بل کال د شورویانو اوه افسران او د کابل پوهنتون د ډوډۍ خوړلو په سالون کې نهه تنه شوروي استادان ووژل شول. خلقیان په ترهګرۍ سره په زیات شمېر له منځه وړل شوي دي او ویل کېږي چې دغه وژنې خادستانو د خپلو لویانو په دستور کولې.

د جگړې مرحلې

جلالي وايي چې د روسيې ستر درستيز د شوروي سياسي- پوځي کمپاين په څلورو مرحلو ويشي:

لومړۍ مرحله د ۱۹۷۹ د دسمبر نه تر ۱۹۸۰ فبروري پورې ټاکي. په دغه مرحله کې شوروي ځواکونو په افغانستان کې د اساسي ښارونو او د ارتباطي دهلېزونو ساتنه کوله تر څو د مسکو- ملاتړي حکومت په هېواد کې په پښو ودروي. د دې مرحلې په جريان کې يوازې د امنيتي دندې له پاره د څلوېښتم لښکر نږدې ۵۲ زره ځواکونه په کې شامل وو. دوی په دې مرحله کې زيات تعرضي عمليات نه کول.

دوهمه مرحله د ۱۹۸۰ کال د مارچ نه د ۱۹۸۵ کال تر اپرېل پورې کله چې ميخايل گورباچوف د گوند د عمومي منشي څوکۍ نيښي. په دغه مرحله کې په زياته اندازه گډ پوځي عمليات پلان شوي او پلي شوي دي.

درېمه مرحله د ۱۹۸۵ کال د اپرېل نه د ۱۹۸۶ کال تر اپرېل پورې غزيرې. په دغه مرحله کې د شوروي يرغلگر پوځ د ځواک لورو ته رسېږي، چې په هغه کې څلور فرقې، پنځه جلا لواوې، څلور جلا غنډونه، شپږ جلا کنډکونه چې شپږ زره ټانکونه او نور جنکي واسطې، څلور هوايي او د چورلکو کنډکونه شامل وو، چې د ټول پرسونل شمېر يې ۱۰۸۸۰۰ وو، چې په هغو کې د جنکي قطعو د جنکيالو شمېر ۷۳۰۰۰ وو. ۸۵۳ دغه غوڅه او ټاکنوکې مرحله وه او شورويانو هڅه کوله چې جگړه په پوځي ځواک سره وکتې او دا د نيواک تر ټولو خونړۍ کال و.

څلورمه مرحله د ۱۹۸۶ د می نه پيل کېږي چې د بېرک پر ځای نجيب الله د گوند مشر شو او د ۱۹۸۹ کال د فبروري په ۱۵ مه د افغانستان نه د شوروي پوځ په بشپړ وتلو سره پای ته ورسېده.

خو جلالي په خپله وضع څارله او د هغې له مخې نوموړی افغان- شوروي جگړه په څلورو بيلو ستراتيژيکو مرحلو ويشي: د رژيم د بدلولو په ملاتړ د شوروي تعرضي عمليات؛ د جگړې يوه تناظري پراختيا چې شوروي ځواکونه يې په دې کې ناکامه کړل چې جگړه په پوځي توگه وکتې، ستراتيژيکي ماتې ته يې بوت؛ د شورويانو کډه سياسي- پوځي مبارزه چې موخه يې د يوه سياسي حل له پاره د وتلو مسؤله ستراتيژي وه؛ د شوروي پوځي ماتې او د افغانستان نه يې وتل و.

جلالي ليکي: «کارمل د ځان د سپينوي له پاره د ننه د افغانستان د خلک ډموکراتيک گوند کې ځان سپينه او خپلو شوروي مشاورينو ته يې شکايت کاوه: «تر څو پورې چې تاسو زما لاسونه تړلي وي او ما نه پرېږدئ چې د خلق فراکسيون چاره وکړم، تر هغه به د

افغانستان د خلک ډموکراتيک گوند کې يووالی منځ ته رانه شي، او دولت به پياوړی نه شي. دلته تر هغه ټينگ ارکانيک يووالی نه شي ټينگېدلې تر څو خلقيان په گوند کې وي. دوی مور کړولي او وژلي يو. دوی تر اوسه زموږ نه کرکه کوي. دوی د يووالي دښمنان دي» «۸۵۴

د مجاهدينو تاکتيکي عمليات

مجاهدين ټينگ جنکيالي وو، دوی په سختو جگړو کې د دښمن د اور لاندې پوره زوروتوب ښوده. د مجاهدينو د نامتمرکزو تاکتيکونو گډې بڼې چې په ځايي کچه يې پلي کولو: لومه، بريد، د گوليو او راکتونو د ويشتلو بريد، ماین ايښودل، د قطارونو پرېکول او د ساتنې په پوستو باندې بريدونه وې.

په لومه يا دام کې دښمن اچول د پخوا راهيسې د افغان جنکياليو د جگړه يز دودو يوه برخه او تاريخي ځانگړتيا ده. لومه د افغان مجاهدينو يو د خونې تاکتيک دی چې دوی په يوه ځای کې پټيږي، نابره په دښمن بريد کوي، اړينې زېرمې نيسي او د دښمن سره د مخه تر دې چې هغه اغېزمن غبرگون وښي پر شا ځي او پټنځي ته راستنېږي. لومو چوپړ کاوه چې د شوروي او افغان په ارتباطي ليکو بريد وکړي، اړينې زېرمې پراخې کړي او د شوروي او افغان د مانور پوځ يوه برخه اړه کړي چې د ساتنې دندې په غاړه واخلي. د افغان- شوروي جگړې د پرمخ بيولو کيلي لوژستيک و او د مجاهدينو لومو د شوروي او افغان قواوو بيا زېرمې کولو ته گواښ جوړاوه او د شوروي پوځ شمېر يې محدود کاوه چې په هېواد کې ځای په ځای کولی شوې. مجاهدينو د جنکي قواوو کوچنيو قطارونو د ځورنې له پاره يا د زېرمو په کتارونو چې د ساتونکو د ۳۰ نه تر ۸۰ کسانو پورې رسېدې په دوو گروپو وېشل کېدل چې يو به د جنگ گروپ او بل به يې د ملاتړ گروپ و، لومې اچولې. مجاهدينو هر کال څو زره لومې اچولې. د شوروي ارقامو له مخې مجاهدينو د ۱۹۸۵ کال نه تر ۱۹۸۷ کاله پورې ۱۰۰۰۰ لومې اچولې چې په منځنۍ توگه په کال کې ۳۳۰۰ کيږي. لومې په لويو سرکونو، لارو، درو او تنکو واديو کې اچول کېدې. ۸۵۵.

بريدونو (raids) په اساسي توگه د دښمن په جلا شويو پوستو، او په ځايي اداري مرکزونو باندې حمله ده چې يوه نقطه ونيسي، برياليتوب ترلاسه کړي او بيا ورڅخه بېرته ووځي. دا يو موقتي اقدام دی چې توکي ترلاسه کړي، تاسيسات ړنگ کړي او د دښمن په مورال گوزار وکړي. د بريد جوړښت د درنې وسلې په گډون يو د جگړې گروپ او بل د ملاتړ گروپ نه جوړ وي. مجاهدينو د ۱۹۸۵ نه تر ۱۹۸۷ پورې په شوروي او افغان هدفونو باندې ۹۵۰۰ بريدونه کړي چې په منځنۍ کچه هر کال ۳۲۰۰ عملونه کيږي. د

دغو بریدونو لنډ واټن او د نږدې ملاتړ د وسلې (زیات وخت هاوانونه) د برید ژوروالی لنډ کاوه او د بریدونو نه گټه یې لږوله.

د مجاهدینو د گوليو او راکټونو ویشتل په کارنیزونو، پوستو، هوايي ډکرونو او ښارونو باندې د ورځې چار وه. په دغو حملو کې مجاهدینو زیاتره هاوانونه، راکټونه، بې پس لغته ټوپک کارول. ځینې وخت دوی غرني ټوپک او غرني توپونه کارول. گولی ویشتل به د شوروي او افغان قوي ترو هدفونو باندې کېدل چې په هغې باندې بریدونه خطرناک وو. د گوليو او راکټو ویشتل له پاره ۱۰۷ ملي متره او ۱۲۲ ملي متره یو دزه او ډېر دزه د چین-جورشيوي راکټونه یا مصري سکر- ۲۰ او سکر- ۳۰ راکټونه کارول. د روسانو د شمېرنې له مخې د ۱۹۸۵ د اپرېل اود ۱۹۸۶ د جنوري تر منځ ۲۳۵۰۰ راکټونه په پوځي او دولتي هدفونو باندې ویشتل دي.

د ماینونو جگړه د مجاهدینو د جگړې یوه بڼه وه. دا یوه اسانه لاره وه چې د دښمن پرسونل او په لږدونکو وسیلو بریدونه وشي. د مجاهدینو زیاتره ماینونه د ټانک ضد او د لږدونکو وسیلو ضد ماینونه وو. دوی د ماینونو جگړه په اغېزمن ډول پرمخ بیوله.

مجاهدینو د کلابندی د بڼې نه هم کار اخیست. دوی به د حکومت جلا کارنیزونونه کلابند کول. که د کلابندی مجاهدین ځایي وو بیا کلابندی تر نامالوم وخت پورې اوږدېدل. خو که د کلابندی مجاهدین به د بل ځای وو، زیات وخت ناکامېدل په دې چې مجاهدینو د ډېر وخت له پاره اړینې زېرمې نه درلودې. دوی به کلابندی په تاکتیکی لحاظ پرېښودې او یا به یې هغه وخت پرېښودې چې دولتي تقوېنې قواوې به راورسېدې.

افغان مجاهدینو به زیاتره حیرانونکي بریدونه هم کول چې دښمن په نږدې جگړه کې تباه کړي. خو په تخنیک سنبال پوځ سره دا ډول بریدونه ډېر ستونزمن وو. له دې امله د کوزار او منډې تاکتیک یا د خرب او ترپ تاکتیک د لاسبري دښمن په وړاندې کاروه. دوی په عمل کې لنډ کوزار او اوږدې منډې تاکتیک نه کار اخیسته.

شوروي پوځي عملیات

په افغانستان کې د شوروي ځواکونو د شتون په جریان کې دوی ۲۲۰ خپلواک (ټول-شورويان) او ۴۰۰ کډ (شوروي او د افغانستان ډموکراتیک جمهوریت) د سترې کچې عملیات په لاره واچول. ۸۵۶ خو د سترې کچې عملیات لکه د ورې کچې د عملیاتو په څېر چې تاکتیکی جگړې وې، ډېر لږ اغېز درلود. په افغانستان کې د خپل شتون په موده کې شوروي پوځي او استخبارتي قواوو په زرگونو خپلواک د لومې اچولو، بریدونو او د کشف

دندې ترسره کړې. د بېلګې په توګه د ۱۹۸۳ او ۱۹۸۴ کې يوازې پلان شوي او ناپلان شوي د لومو اچولو ۴۸۸۴ دندې ترسره کړې چې په هغو کې يې څه کم لس په سلو کې پایلې درلودې. په همدغه وخت کې ۴۵۰ د کشف دندې ترسره شوې وې.

شوروي ځواکونو خپلواک عمليات هغه وخت پلانونو او پلي کولو چې افغان پوځ د استفادې وړ نه و يا د کليو عملياتو له پاره پوره روزنه ورکړ شوی نه وه. خپلواک عمليات به په عمومي توګه د يوه غونډ له خوا کېدل چې هوايي او توپچي ملاتړ به ورسره و او زياتره يې د جګړې په لومړنۍ مرحله کې کېدل. شورويان زر پوه شول چې دوی اړتيا لري د مخه تر دې چې د افغانستان نه ووزي يو اغېزمن افغان پوځ په جوړولو کې مرسته وکړي.

هغه ټاکيکونه چې د کنډک په کچه دوی زياتره په نېغه توګه کنټرولول د لومې اچول، د کلي کمربند او تلاشي، د قطار بدرګه او نور ځانګړي عملونه وو. لومې اچول په اساسي توګه د کوچنۍ قطعې عمل و چې يوه ټولې يا کوچني ځانګړي کړوپ يا سپينتاز کړوپ به پلي کاوه. د قطار بدرګه د جګړه يز عمل يوه نوې شېبه وه چې د ماشينګنو موټريزه قطعې له خوا پلې کېده. زياتره وخت د ۸۰ يا ۱۰۰ لاريو قطار چې دوه او دوه نيم کيلومتره به اوږد و د ټولې په کچه د ماشينګرو موټريزې قطعې له خوا بدرګه کېده او د پاسه به چورلکو تر پوښې لاندې وه. بريد به په لوي تره قوه ترسره کېده چې يو يا دوه موټريزه کنډکونو به په کې کېدون کاوه. شورويانو د کمربند او تلاشي عمليات د غونډ په کچه د افغان ځواکونو سره يا د هغوی په ملاتړ او د هوا نه مخکې ته کوزېدونکو قواوو سره کول.

ګډ عمليات زياتره وخت د ډېر اړخيزو عملياتو کمپاين وي چې په ګډه د شوروي او افغان پوځونو له خوا کېږي چې دوه درې اوونۍ او ځينې وخت زياته موده نيسي. د دغو عملياتو په جريان کې د شوروي او افغان ګډې قواوې پوځي عمليات کوي چې د مقاومت له خوا کنټرول شوې سيمې ونيسي، د مجاهدينو شته قواوې وځپي او بيا خپلو اډو ته ستانه شي.

لوی عمليات په يوه وخت کې په بيلو بيلو سيمو کې پرمخ بيول کېږي. د بېلګې په ډول «ګوزار-۱» په نامه عمليات چې د ۱۹۸۰ کال په نومبر کې په هېواد کې وشول چې په هغو کې ۶۴ شوروي او ۱۱۰ افغان کنډکونو برخه اخېستې وه. د ۱۹۸۱ کال د مارچ نه د می پورې په يوه وخت کې په اوو عملياتو کې ۳۵ شوروي او ۱۰۹ افغان کنډکونو برخه واخېسته. د غټو عملياتو روښانه بېلګې د پنجشير، ژورې او سټې کنډو عملياتونه دي چې اوس به يې لنډ بيان لوستونکو ته د کاکړ او په زياته اندازه د علي احمد جلالي د څېړنې له

مخې وړاندې شي.

د پنجشیر په دره کې پوځي عمليات

پنجشیر د هسکو غرونو تر منځ یو سلو شل کیلومتره (۷۰ میله) اوږده دره ده چې په منځ کې یې ګړندی سیند بهیري چې د هندوکش د لوړو واورینو غرو نه راوځي. د شوروي د نیواک په جریان کې د پنجشیر اډه د مقاومت له پاره غښتلی مورچل وګرځېد. دا یوه طبیعي کلا ده چې دوې دروازې لري. یوه یې په سووبل کې د پنجشیر د عناېې نه کلپهار او کابل یا د کوهستان هموارې ته پرانېستل کېږي، بله یې په شمال کې د درو یوې غرنۍ شبکې او لارو ته پرانېستل کېږي چې پنجشیر د پاکستان د اساسي سړک سره د نورستان او چترال له لارې او هم یې د لغمان او نجراب سره نښلوي اوهم یې د شمالي ولایتونو سره د خاواک د درې له لارې تړي. د درې بل اهمیت په دې کې هم دی چې د پنجشیر دره د سالنګ عمومي لارې ته، چې د شوروي پوځ د اکمالاتو شریان جوړوي، نږدې پراته ده. د دغې درې نه په پرله پسې ډول شوروي او افغان اکمالاتي کتارونه د بریدونو لاندې راتلل. شورویانو په پنجشیر کې د دوه نیمو کالو په جریان کې شپږ ځله پوځي عمليات وکړل چې د شوروي یرغل نه څو میاشتې وروسته پیل شول. د دغو عملیاتو نه به د ۱۹۸۲ کال اساسي عملیات بیان شي:

شورویانو په ۱۹۸۲ کال کې د پنجشیر په وړاندې پراخ تعرضي عملیات پیل کړل چې دوی یې ډېر مهم ګڼي. دغه عملیات د می د ۱۵م نه د می تر ۲۸ پورې وشول چې شوروي او افغان ګډو ځواکونو په کې برخه واخېسته. په دې عملیاتو کې درې شوروي موټریزه غونډونو او دوو هوايي کنډکونو چې جنګي او خدماتي ملاتړ هم ورسره و، ګډون وکړ. د افغان پوځ له لورې د درې فرقو نه درې غونډونو، د کومانډو د لوا ځینې قطعې، یو خپلواک پلي غونډ او د خاد ځینو قطعو برخه واخېسته او د شوروي افغان پوځ د قطعاتو ټول شمېر ۱۲۰۰۰ تنو ته رسېده.

د پنجشیر د عملیاتو پلان د شوروي یوه اوپراسیوني ګروپ له خوا چې مشري یې د څلوېښتم پوځ درستیزوال کوله، جوړ شو. د مجاهدینو د غولولو په خاطر هغوی ته داسې احساس ورکړ شو چې اساسي برید د غوربند په دره کېږي. د عملیاتو د پلان د پټ ساتلو په موخه شورویانو افغانانو ته د اصلي پلان په اړه څه نه و ویلي په دې چې مجاهدین پرې خبر نه کړي. شورویانو افغانانو ته ویلي و چې عملیات د غوربند په دره کېږي تر څو بامیانو ته ورسېږو. افغانانو دا مالومات هم مجاهدینو ته ورکړي و.

دغه عمليات د می په ۱۵ م پیل او په څلورو مرحلو کې د می په ۲۸ م پای ته ورسېدل. د دغو عملیاتو لومړۍ مرحله د می ۱۵ م او ۱۶ م د غوربند په درې غولونکي عملیات و چې غوښتل یې دښمن تېر باسي او د عملیاتو د اصلي لوري نه یې پام وروړي تر څو مجاهدین خپلې قواوې د غوربند درې خوا ته ولېږي. په دغو دوو ورځو کې د شوروي او افغان ګډ پوځونه د بگرام له شمال نه د پنجشیر درې په خوله کې ځای پر ځای کړل.

د جګړې دوهمه مرحله د می په ۱۷ م سهار په څلورو بجو پیل شوه او شپږ ورځې اوږده شوه. د دغې مرحلې په درشل کې ۱۱ د کشف ګروپونو د درې غاړو ته نفوذ وکړ او د جګړې پرته یې د درې لورې حاکمې څوکې ونيولې چې پنجشیر ته د ننوتلو دروازه وه. په بله شپه د شوروي ۱۷۷ د موټرپزه غونډ یوه کنډک بله مهمه څوکه ونيوله چې لس کیلومتره د ننه په درې کې پراته وه.

د درې په اوږدوالي کې د هوايي ځواکونو د سخت بمبارد نه وروسته چې د مقاومت په کلکو مورچلو د توپچي په کلکو ګوزارونو سره بدرکه کېدلو د شوروي دوو مخکینيو کنډکونو وړاندې تک پیل کړ او د درې د دواړو غاړو لورې یې ونيولې او د شوروي دریم زره پوښ کنډک د روځي- بازارک په لوري روان شو چې د پليو وړاندې تک پوښنې کړي.

د عملیاتو د پیل نه یو ساعت وروسته د سهار په پنځو بجو یو شوروي موټرپزه کنډک او یو افغان پلي کنډک د روځي او بازارک کلي ته نږدې د هوا نه ښکته شول. سره له دې چې په دې سیمه باندې له دې کبله چې دښمن هوايي مقاومت نه بې برخې کړي سخت بمبارد وشو خو مجاهدینو خپل د هوا دفاعي سیستم وساتلو او په روځه کې یې دوې چورلکې راوغورځولې. دغه کار شورويان اړ کړل چې دغه سیمه د دښمن نه د پاکولو له پاره د الوتکو او چورلکو شمېر زیات کړي چې بمبار نور هم سخت کړي. د جګړې د دوهمې مرحلې د لومړۍ ورځې په جریان کې درې شوروي او درې افغان کنډکونه چې ټول شمېر یې ۱۲۰۰ تنو ته رسېده د درې د ننه د ۴۰ او ۵۰ کیلومترو کې د هوا نه ښکته کړل چې د مجاهدینو مورچلونه کلابند کړي. کله چې شوروي او افغان قواوو د مجاهدینو سیمې او مورچلونه کلابند کړل افغان قواوې او امنیتي اجنټان سیمې ته ننوتل چې وسلې او چاودېدونکي توکي وپلټي او شکمن کسان بندیان کړي.

د دغو عملیاتو سره د مخکینيو ځمکنۍ قواوو وړاندې تګ همغږی و چې له ۷ نه تر ۱۰ کیلومترو پورې په ورځ کې وړاندې تللې. د عملیاتو په دوهمه ورځ مخکي ځواکونه نور هم پیاوړې شول په دې چې د هوا نه یو شوروي او یو افغان کنډک په «ماتا» کې ښکته کړل چې د یوې خوا د مجاهدینو ختیځ لوري ته د وتلو مخه ونیسي او د بلې خوا د اندراب

له درې نه مجاهدينو ته د تازه دمه مجاهدينو د راتلو مخه ډب کړي. په بله ورځ د درې په د ننه کې د هوا نه د شوروي او افغان قواوو بنسکته کولو د مجاهدينو د قواوو همغږي ماته کړه. په دريمه ورځ د می په ۱۹ مه یو شوروي او یو افغان کنډک د استانې په سيمه کې بنسکته شول او همدومره قوه د ماتا په چاپېر کې د هوا نه کوزه شوه. په څلورمه ورځ دوه شوروي او دوه افغان کنډکونه د اېویم په سيمه کې بنسکته شول چې د درې په ۲۰ ميلي کې د ننه پراته ده. په دې ډول پوځ د څلورو ورځو په جريان کې ۶۵ کنډکونه په چورلکو کې د مجاهدينو د جوړښتونو شا ته کوز کړل. دغو ځواکونو د مخکي ځواکونو وړاندې تک ته چې د ماینونو او نورو چاودېدونکو توکو نه مخکه پاکوله، لاره هواره کړه.

د دې عملياتو د دوهمې مرحلې نه وروسته د عملياتو دريمه مرحله، چې د می له ۲۲ م نه د می تر ۲۴ م پورې اوږده شوه چې د مجاهدينو نه ټوله دره پاکه شوې وه، په دې موخه پيل شوه چې د پنجشیر درې وروستی برخه بنده کړي چې د پاکستان نه د چترال، نورستان او اندراب د درو لارې راوځي. په خپله په اېویم کې یو روسي او یو افغان کنډک د هوا نه کوز شول او د درې په پای کې یې د سرکونو او لارو سره د تماس نقطې د خپل کنترول لاندې راوستلې، د دې سره د عملياتو دريمه مرحله پای ته ورسېده او پوځ د عملياتو څلورمې وروستی مرحلې ته تياری نیوه. د جون په پيل کې گډو قواوو د پنجشیر درې نه په وتلو پيل وکړ. په رخه او عنابه کې شوروي گارنيزونونه ځای په ځای شول. د خلکو د اوسېدو په مرکزونو او د درې په شمال- ختيځه برخه کې افغان قواوې ځای په ځای شوې. په دغو عملياتو کې شوروي او افغان ځواکونو دوه سوه بنديان ونيول او هم یې ډېر سندونه ترلاسه کړل چې په هغو کې د گوندي غرو لست چې ۵۲۰۰ نومونه د عکسونو سره په کې ثبت وو، شامل و. د ۱۱۳ تنو مجاهديو لست چې په کابل کې یې پټ فعاليت کاوه هم لاس ته ورغی چې د رژيم له خوا ونيول شول

د دې وروسته لکه چې د مخه مو يادونه کړې په ۱۹۸۳ کال کې د دواړو خواوو تر منځ د لنډ مهالي اوربند هوکړه وشوه.

د خوست ژورې لومړي لوی عمليات

کاکړ وايي چې په افغانستان کې د غزا په ټوله دوره کې د ژورې په شان بل ټينگ مرکز نه و. ژوره د افغانستان د خوست ولايت په يوې غرنۍ سيمې کې تنگه دره ده چې د ډيورنډ د کرنيې په څلور کيلومتري کې پراته ده. پنځلس کيلومتره اخوا يې د شمالي وزيرستان مرکز د ميران شاه ښار پروت دی. ژوره د جلال الدين په مشرۍ د خالص د اسلامي گوند

مرکز و چې لومړی د مجاهدينو د روزنې ځای و، چې ورو ورو په دغسې لوی او پراخ مرکز بدل شو چې هلته د مجاهدينو د وسلو او نورو شيانو زېرمه تون وگرځېد او مجاهدين په کې روزل کېدل. په ژوره کې یولس ټولنونه وکیندل شول چې ځینې یې ۵۰۰ متره اوږده وو. یو هوټل، د وسلو او مهماتو زېرمه ټونونه، د ترمیم ورکشاپ او یو کاراژ، د روغتیا مرکز، د راډیو د خپرولو سټېشن، یو جومات او یو پخلنځی او د اوسېدو ځایونه یې درلودل. د جنراتور په مرسته برېښنا ورته چمتو کېده.

د ژورې د مرکز جوړښت او نوښت د اسامه بن لادن کار و. په عربستان کې د اسامه بن لادن د شرکت چارې د ټولنو کیندل او د ودانیو جوړول و. اسامه بن لادن د عربستان نه بولدزروونه، لاری کانی، د خندقو د کیندلو ماشینونه او نور اړین وسایل راوړل او د ژورې مرکز ټولنونه یې وکیندل. د مجاهدينو یو ۵۰۰ کسيز کنډک د دغه مرکز د ساتنې په موخه پروت و چې یو ۱۲۲ ملي متره توپ، دوه د افغان پوځ نه نیولي ټانکونه، شپږ د چینایي BM-12 د زیاتو راکټ ویشتونکي دستکاوې (MRL) او څه ماشینګني او وړه وسله یې درلوده. مجاهدينو دلته د هوايي دفاع یو ټولی ځای په ځای کړی و چې پنځه د شوروي زیګو-۱ او څلور زیګو-۲ هوايي ضد څورلس نیم ملي متره درانه غرنی توپونو سنبال و. د ژورې مرکز د مورچلونو په یوه سیستم سره یې ساتنه کېده چې د چاپېرو لوړو په سرونو جوړې وې.

د جلالی په وینا په ۱۹۸۵ کال کې شوروي او افغان پوځونو څو لوی تعرضي عملیات په لاره واچول چې دا مرکز له کاره واچوي تر څو نورو جنګي سیمو ته د مجاهدينو لوژستيکي ملاتړ کمزوری کړي. د ۱۹۸۵ د اګست په میاشت کې شورویانو او افغان حکومت پرېکړه وکړه چې د ژورې مرکز ړنګ کړي. په دې موخه د ګردېز ډولسمه پلې فرقه، د ۳۷ او ۳۸ مې د کومانډو د لواکانو ځنې قطعې د ګردېز نه د څاڅیو له لارې خوست ته لاړې. په خوست کې د ۲۵ مې فرقي ځنې قطعې ورسره پوځای شوې. د سپتمبر په میاشت کې دا ګډ ځواکونه د جنرال تني په قوماندانۍ په بارې چې د ژورې په شمال-ختیځ کې پروت دی، یرغل پیل کړ چې د توپچي په کلکو ګوزارونو او درانده هوايي بمبارد سره یې ملاتړ کېده. پوځ باره ونیوله او د هغې وروسته یې د ژورې د نیولو تکل وکړ. خو د مجاهدينو ۸۰ کسيزه ډله چې د مغولګي د غونډیو په ختیځه کره برخه کې ځای په ځای و، د افغان قواوو مخه ونیوله او د سر زیان یې ورواره وه. په پای کې د رژیم پوځ بېرته خوست ته پر شا شو او مجاهدينو باره بېرته ونیوله.

لږ وروسته افغان حکومت نوی یرغل له تنيو نه پیل کړ او لږه یې ونیوله او قوماندان

مولوي احمدگل يې وواژه. مجاهدينو ۲۰ کسيز گروپ د مني کنډو کوتل بند کړ. دوی د پليو ځواکونو بريد دروه خو د هوايي سخت بمبارد او توپچي کلکو گوزارونو له امله مجاهدين په شا شول او افغان پوځ وکړای شول چې د مني کنډو ونيسي. دوی تور کمر هم ونيو چې د ژورې نه يو کيلومتر واټن لري.

بيا يوه دراماتيکه پېښه وشوه چې د جگړې سرنوشت يې وټاکه. مجاهدينو د افغان قواوو چې د غره په څوکه پراتې وې وليدلې چې د دوی د هدف په واټن کې راځي يوازې دوه ټانکونه ور روان کړل. د ټانک په لومړي ډز سره د افغان ځواکونو د څار پوسته ړنگه شوه. بيا ټانکونو د افغان په قواوو اغېزمن گوزارونه وکړل او افغان قواوې بېرته کوزې شوې. د شهنواز تني هڅې چې نوی يرغل وکړي ناکامه شوې کله چې د مجاهدينو تازه دمه قواوې له ارگون او جلال اباد نه راورسېدې. جنرال تني له ۴۲ ورځو نېستو نه وروسته خپل پوځ خوست ته پر شا کړ. په دغه جگړه کې ۱۰۶ تنه مجاهدين مړه او ۳۲۱ تنه ټپيان شول د رژيم د پوځ د سر زيان هم دروند و، خو شمېر يې په يقين سره مالوم نه دی.

د خوست د ژورې دوهم لوی عمليات

جلالي وايي چې د ۱۹۸۶ کال د اپرېل په لومړيو کې شوروي او افغان ځواکونو پرېکړه وکړه چې د ژورې په مرکز گډ شوروي افغان عمليات ترسره کړي. دا ستر عمليات داسې پلان شوي و چې د افغان د څلورو فرقو ځينې قطعې، يوه د کوماندو لوا او يو هوايي جنګي غونډ په کې کېدون کوي. دا قواوې نږدې د ۵۴ افغان جنګي کنډکونو او ۵ موټريزه شوروي کنډکونو نه جوړې وې چې د توپچي او هوايي ملاتړ هم ورسره و. دا قواوې په دوو کړيو ووېشل شوې. ختيځ گروپ د اوومې او څورلسمې پلې فرقو او د ۶۶۶م د هوايي جنګي غونډ نه جوړ و. لوېديځ گروپ د ۸مې او ۲۵مې فرقې نه جوړ و. د کوماندو د ۳۸م غونډ دنده دا وه چې د هوا نه په دوري غر باندي ښکته شي د عملياتو قوماندان د جنرال اعظيبي او جنرال تکاچيف په غاړه وه.

افغان قواوې چې شوروي هوايي قواوې يې پوښېن کاوه د ۱۹۸۶ کال د فبروري په ۲۸مه نېټه د گردېز نه د ځايي ميدان له لارې خوست ته حرکت وکړ. دغه قواوې د خوست په شمال لوېديځ کې ځای په ځای شوې. د اپرېل په دوهمه نېټه نيمه شپه افغان پوځونو دوه ساعته د توپچي او هوايي تياري ونيو. د جلايي په وينا شپږ مي-۸ چورلکو د خوست د هوايي ډکر نه والوتې او د ۳۸م غونډ لومړی جنګي گروپ يې ښکته کړ چې د دوري غره د مجاهدينو د درانه مقاومت سره مخامخ شو. مځکني مارش درېدلو ته اړ شو.

د قوماندې مرکز د خوست نه تنيو ته ولېږدېده. د راډيو د تماس نه ښکاره شوه چې لومړی جنګي گروپ د ژورې شا ته پنځه کیلومتره د ننه په پاکستان کې ښکته شوی دی. دوی زر کلابند او د مجاهدينو سره په جګړه کې ونښتل. دغه وخت افغان قوماندانې پرېکړه وکړه چې د ۳۸ غونډ نور کوماندوگان په دوري غره باندې ښکته نه کړي بلکې د ژورې په چاپېر خلاصه سيمه کې ښکته کړي. په دې توګه د ۳۸مې لوا د ژورې په چاپېر کې په اوو جلا سيمو کې راکوز شول. لومړی ۱۵ چورلکې سهار په اوو بجو کوماندوگان ښکته کړل ورپسې نورې چوپې وشوې تر څو د ټولې لوا پرسونل ښکته شو. د ځينو چورلکو د ناستي ځايونه د پاکستان پوځي ته په يوه کیلومتری کې ښکته شوي وو. مجاهدينو يو شمېر چورلکې د کيناستو په حالت کې وويشتلې. مجاهدينو په څلورو کوزو شويو برخو کې په کوماندوگانو بریدونه وکړل او ډېری يې ونيول. د ميران شاه نه د تقوي قواوې راورسېدې او کوماندوگان يې د شا له خو د برید لاندې ونيول. په دې توګه کوماندوگان د دواړه خواو نه په لومه کې ولوېدل ځينې مړه او ځينې ونيول شول. د ورځې تر پايه مجاهدينو د ۳۸مې لوا ۵۳۰ کوماندوگان ونيول.

په همدغه مهال کې و چې شوروي ځانګړو الوتکو د ژورې غارونه بمباري کړل. ځنګه چې د دغو غارونو مخې د پاکستان د سوويل ختيځ په لور وې د شوروي الوتکې به په هغې خوا لاړې او له هغې خوا نه يې دا غارونه بمباري کول. په دغو بمباريو کې اتلس مجاهدين ووژل شول. داسې هم ځينو الوتکو يو بل غار چې يو سلو پنځوس متره اوږد و او يو سلو پنځوس تنه مجاهدين يې په داخل کې وو، بمباري کړ. که څه هم درنه بمباري روانه وه خو ايسار شوي مجاهدين د جلال الدين په ګډون د غارو نه ووتلې شول. د کوماندو يوې ډلې چې په جګه کې وو چې دوی درې ورځې سخت مقاومت وکړ چې په پای کې تسليم شول. د کوماندو د يوه کنډک ضد جاسوسی مشر ۲۴ کوماندوگان منظم کړل او په امن سره يې د خپلو قواوو سره يوځای کړل.

په راتلونکو ورځو کې د شوروي او افغان پوځ له پاره وضع لا کرانه شوه. دوی په دې کې ناکامه شول چې د خپل د منځه تللي هوايي غونډ د کوماندوگانو سره اړيکې ټينګې کړي دوی د اپرېل په ۹مه خپله لومړی ليکه (د ۷مې او ۱۴مې پليو فرقو) وروسته له دې چې مهمات يې خلاص شول، خپل لومړی نقطې ته راستانه شوه.

د شوروي سرچينو له مخې جنرال وارنېکوف د شوروي اتحاد د دفاع وزير سوکولوف ته پيغام واستوه چې په هغه کې يې د قواوو افغان قوماندانې باندې نيوکه وکړه او پلان يې جوړ کړو چې په هغه کې د قواوو د تقويې له پاره درې افغان غونډونه، يو د افغان د

خانګرو ځواکونو کنډک، او شپږ روسي کنډکونه ورکړي. هغه د قواوو د قوماندان اعظمي د بدلون وړانديز وکړ او هم يې د قواوو د بيا صف بندۍ له پاره وخت وغوښت. د اعظمي پر ځای جنرال غفور د قواوو او د څلوېښتم پوځ درستيز وال جنرال کريکوف د قوماندانانو په توګه وټاکل شول. جنرال کريشن د ټولو قواوو همغږي په خپل لاس کې ونيوله. کارمل د جنرال وارنيکوف نه وغوښتل چې د دغو عملياتو عمومي قوماندان په غاړه واخلي. د شوروي دفاع وزير وارنيکوف ته د نوي تعرض د تيارې له پاره دولس ورځې وخت ورکړ. شوروي او افغان هوايي قواوو د دولسو ورځو د تيارې په جريان کې شپه او ورځ بمباري او توپچي ګوزارونه روان وو. د هوايي او توپچي ګوزارو د اپرېل په ۱۷ م ډېر پياوړي شول. دا مهال مجاهدينو ته نوي برتانوي بلوپايپ د هوا ضد راکټونه ورسېدل خو اغېزمن واقع نه شول. پاکستان يو څو تنه افسران ژورې ته ولېږل چې مجاهدينو ته د دې راکټو کارول ورزده کړي. دغو افسرانو په خپله ۱۳ راکټونه له يوه غره نه ګوزار کړل خو نتيجه يې ورته کړه او يو پاکستاني کپتان او ملګري يې سخت ټپيان شول او د پاکستان يوه پوځي روغتون ته د درملنې له پاره ولېږدول شول.

د اپرېل په سهار افغان قواوو په ختيځ کې د سهار په شپږ نيمو بجو او په لوېديځ کې د سهار په لس نيمو بجو بريد پيل کړ. د مجاهدينو د سخت مقاومت وروسته افغان قواوو د مني کنډو ونيو او شوروي افغان قواوې د مني کوتل نه تېرې شوې. د لژې نه ختيځ په لور قواوې د مغولکي د غرونو خوا ته وړاندې تګ وکړ. جلال الدين هم په هوايي بريد کې ټپي شو. په دغه وخت کې مجاهدينو ژوره پرېښوده او چاپېرو غرو ته جګ شول. مجاهدينو ونشو کړای چې په ژوره کې خپلې زېرمې وباسي. شوروي او افغان ځواکونه د اپرېل په ۱۹ مه غرمه ژوره ته ننوتل.

افغان سرتېرو د ژورې د مرکز په لوتولو پيل وکړ. کرنېل کوتچنکو څلور کړۍ وخت درلود چې ژوره ښکته کړي. هغه نږدې دوه سوه د ټانک ضد ماینونه په لومړنيو غارونو کې ځای په ځای کړل او ټول يې د يوه برقي هادي سره وتړل چې ټول په يوه وخت کې وچوي. د دغه غټ چاودون په پايله کې غارونه والوتل. بيا قوتونو په وتلو پيل وکړ او يوازې استحکامچيان پاتې شول چې ماینونه وکړي. دوی لږ وخت درلود او امر ورته شوی و چې د مازديکر په پنځو بجو تنيو ته حرکت وکړي. په دې توګه دوی د ۵۷ ورځو نه وروسته يوازې د پنځو ساعتو له پاره ژوره ونيوه.

د حيرانۍ ځای دی چې دوی د زېرمه شويو وسلو سره غرض ونه کړ. مجاهدين د پوځونو د پر شا کېدلو په سبا ژورې ته ستانه شول خو د دوی نه يو شمېر ماینونو ووژل.

دوی ماینونه پاک کړل، د غارونو تر منځ ټولونه یې بېرته ورغول او ژوره یې بېرته فعاله کړه. ۲۸۱ مجاهدین په جکره کې وژل شوي او ۳۶۳ تپیان وو.

د سټي د کنډولوی عملیات

د سټي کنډو د گردېز په دېرش کیلومتری کې د ځدرانو په سیمه کې د گردېز او خوست تر منځ پروت دی چې د دواړو ښارونو تر منځ لنډه لار ورنه تېریږي او پر چاپېر یې د دنگو ونو ځنګل دی. د سټي کنډو د ۱۹۸۱ کال راهیسې د جلال الدین حقاني او هغه مرستیال گلزرګ ځدران د قوماندانی لاندې د مجاهدینو په کنټرول کې و چې د خالص اسلامي ګوند پورې تړلي وو. د ژورې د عملیاتو نه وروسته مجاهدینو خوست کلابند کړ. د شوروي یو افسر ای. ان ششکوف وایي چې د ۱۹۸۷ کال په مې کې یاغیانو د افغان حکومت او شوروي پوځونو سره نښتې وکړې او خوست یې په بشپړ ډول کلابند کړ، د لېږد رالېږد لارې یې پرې کړې او زموږ ځواکونو ته یې د وسلو مهماتو او خوړو شیانو رسول محدود کړل. له دې کبله لوړو چارواکو پرېکړه وکړه چې د کابل- گردېز- خوست لارې د پرانېستلو په موخه پیاوړي عملیات ترسره کړي او یاغیان وڅپي. هلته یوه بله لار چې د ختیځ لوري ته په څلور میله واټن کې پراته ده چې د سروتي تنګي نه تېریږي او پنځلس میله په واټن د سټي کنډو په سوېل کې د اصلي لویې لارې سره په لکه تېره کې یو ځای کېږي. په دغه سیمه کې د ځدرانو درې خېل تېر میشت دی.

مجاهدینو په گردېز کې د دښمن د ځواکونو راغونډېدل لیدل. د ۱۹۸۷ کال په پای کې د شوروي قوماندانی د څلورنیمتم پوځ د قوماندان جنرال ګروموف په مشرۍ د سترې کچې عملیات پلان او پلي کړل. په دغو عملیاتو کې د شوروي ځواکونو د ۱۰۸ مې او ۲۰۱ مې موټریزې فرقو قطعات، ۱۰۳ مه هوايي فرقه، ۵۶ مه ځانګړې هوايي جنګي لوا، ۳۴۵ مې پاراشوټ ځانګړې جنګي غونډ چې د نورو جنګي او خدماتو د قطعاتو ملاتړ ورسره و، کېدون کاوه. په دغو عملیاتو کې د افغان ځواکونه د ۸ مې، ۱۱ مې، ۱۴ مې، او ۲۵ مې فرقو قطعات، ۱۵ مه د ټانک لوا، او نور د ملاتړ قطعاتو په کې کېدون کاوه. برسېره پردې د کورنیو چارو وزارت د څارندوی لس کنډکونو هم په کې کېدون کاوه. د دغو ځواکونو ټول شمېر ۲۴۰۰۰ وو.

د جلايي په وینا دغو عملیاتو څلورو مرحلو کې وده وکړه. په لومړۍ مرحله کې د ۲۱ م او ۲۷ م نومبر په منځ کې د شوروي او افغان ځواکونه د گردېز د باندې متمرکز کېدل، په داسې حال کې چې د جلال الدین حقاني او نورو قومي مشرانو سره په دې اړه خبرې روانې

وې چې خوست د زېرمې د لاريو کاروان ته د سرک له لارې اجازه ورکړې. خو خبرې ناکامه شوې. په دغې مرحلې کې د شوروي او افغان ځواکونه د سروتي کوتل په وړاندې حرکت وکړ چې د هغه د نيولو په موخه موقعيت ونيسي.

مجاهدينو ټولې هڅې دې ته متمرکزې کړې وې چې د شوروي او افغان پوځونو يرغل مخه د ستې په کنډو کې ونيسي. دوی دا فکر نه کاوه چې د دښمن پوځونه به د سروتي کنډو ته خوځيږي. مجاهدينو هلته ماینونه کړلي نه وو او يوازې يې ځايي جنکيالي د ۳۰۰ تنو قومي اړيکيو په لېرلو سره پياوړي کړل.

مجاهدينو د ستې کنډو د ساتنې په موخه د کنډو په خوله کې درې د ماینونو کمربندونه چې په منځ کې يې د ۳۰۰ نه تر ۴۰۰ مترو واټن و، جوړ کړي وو. دوی په لوړو ځايو کې لس د بي اېم-۱۲ د گڼو دزو دستگاوي ځای په ځای کړې وې چې سرک او د کنډو مخه يې د اور لاندې نيوله. دوی دلته د الوتکو ضد زيکو-۱ درنې ماشينکړې ځای په ځای وې. همدارنگه مجاهدينو ۷۵ ملي متره او ۸۲ ملي متره ده شاګې او يو شمېر PRG درلودل.

دوهمه مرحله د نومبر په ۲۸ د خبرو د ناکامېدو وروسته پيل شوه. شوروي او افغان پوځونو په سروتي کنډو سملاسي يرغل پيل کړ. شورويانو د سروتي کنډو نه مجاهدين په شا وتمبول او د سروتي کنډو يې ونيو. شورويانو د سختې بمبارۍ وروسته د لوی سرک او سروتي کنډو تر منځ يې په هسکو ځايونو د هوا نه خپلې ځانکړې قواوې ښکته کړې او مهم ځايونه يې ونيول. دغه وخت مجاهدين د خپلو کورنيو په اړه اندېښمن شول او هغوی يې له هغه ځايه وزيرستان ته وايستلې.

جنرال گروموف د مجاهدينو د تېرايستلو له پاره د ستې په کنډو په لاس جوړشوي «پاراشوتي عسکر» ښکته کړل او مجاهدينو ورباندې سخت بريدونه وکړل، په دغه وخت کې شوروي د کشف الوتکو د مجاهدينو ځايونه په نښه کړل او سخته بمباري يې ورباندې وکړه. بيا د شوروي مخکې قوه په وړاندې وڅوځېده مگر بريد يې د مجاهدينو له خوا د ماتې سره مخامخ شو. په بله ورځ د ډسمبر په اوله نېټه شورويانو بمباري سخته کړه، او مجاهدين اړ شول خپل ځايونه خوشي کړي او په لوېديځ لوري جګو غرو ته په شا شي. شوروي قواوې مخ په وړاندې وڅوځېدې او پنځه ورځې وروسته يې د ستې کنډو ونيو. په دې ډول د جګړې دوهمه مرحله پای ته ورسېده.

بيا دوې اوونۍ د حکومت د نماينده کانو او د قومي مشرانو تر منځ خبرې په دې موخه روانې وې چې خوست ته د لوی لارې نه د اکمالاتو کاروان پرېږدي. د دغې وضعې نه شورويانو د عملياتو د څلورمې مرحلې د تياري له پاره کټه پورته کړه او خپلې قواوې

پياوړې کړي.

د عملياتو څلورمه مرحله د دسمبر په ۱۶مه پيل شوه کله چې شوروي او افغان ځواکونو خپل تعرض پيل کړ. دوی په دوو خواوو: ستې کښو او سروتي درې نه پرمختګ پيل کړ او په لکه تېره کې سره يو ځای شول. د هوايي پوښښ او ټينګ توپچي اور تر پوښښ لاندې گډې مخکې قواوو د ځدرانو په دره کې پر مختګ ته دوام ورکړ او مجاهدين د غرونو په لوري ووتل. همدغه وخت د افغان د کوماندو لوا او هوايي جنګي کنډک خوست ته نږدې ښکته شول چې د کلابندې ۲۵مې فرقي سره اړيکې ټينګې کړي. د دسمبر په ۲۳ م سباوون د توپچي په ملاتړ شوروي ۳۴۵ جنګي هوايي غونډ د مجاهدينو په اساسي مرکز سرانا يو زړور بريد وکړ او د درنې جګړې وروسته يې ونيو.

وروسته له دې چې مجاهدين غرونو ته په شا شول شوروي انجانوانو ماینونو او نور خنډونه شنډ کړل او د نوي کال په درشل کې د لاريو کاروان چې په ټنونو زېرمې چې په هغو کې خوارکي توکي، د سونګ مواد، مهمات شامل وو د گردېز نه خوست ته ورسېد. د ۱۹۸۸ کال د جنوري تر اتلسې هره ورځ د دوو نه تر درې کاروانونه د گردېز نه خوست ته تلل چې ټول يې ۲۴۰۰۰ تنه زېرمې ولېږدولې. د جنوري په شلمه قواوې په وتلو پيل وکړ. د شوروي او افغان قواوو د ۱۲ ورځو له پاره لاره خوندي وساتله. په دغه جګړه کې نږدې سل تنه مجاهدين ووژل شول. د شوروي او افغان پوځونو د وتلو وروسته مجاهدينو د ستې کښو بيا ونيو او خوست يې کلابند کړ.

د کاسکد عمليات او د شوروي پټه استخباراتي جګړه

د رېچارډسن په وينا د ۱۹۸۱ د دسمبر په مياشت کې شوروي ولسمشر ليونيد بريژنف بيرک کارمل ته وويل چې په افغانستان کې د پوځي شتون د پياوړي کولو د بنسټ او په اټکليز او مشروط ډول د شوروي اتحاد د سوسيالستي جمهوريتونو سره د افغانستان د يوځای کېدنې بنسټ کېږدي. ۸۵۷ د خاد بريد جنرال غلام صديق ميرکي چې د شوروي پلانونو په اړه يې لومړۍ درجه مالومات لرل او وروسته وتښتېد وايي چې «په افغانستان کې د دوو شتو کمونېستو ډلو، خلق او پرچم د سيالی او دښمنۍ له امله د بريژنف پلانونه په اسانۍ نه شول پلي کېدای. (بوروفسکي ۱۱)» ۸۵۸

بريژنف د شوروي څارګرو څانګو سلاکارانو له سلا وروسته دې پايلې ته ورسېد چې د کاسکد د عملياتو له لارې دې افغانستان درې وړې کړي. (بودانسکي ۱۱) د کاسکد عمليات هغه پټ عمليات وو چې له مخې يې د هندوکش په شمال کې نهه غېږ پښتون

ميشتم ولايتونه له افغانستان نه بيل او د شوروي اتحاد د سوسيالېستي جمهوريتونو له خاورو سره يوځای کړي. ميرکي دا وويل چې «بريټنډف کارمل ته وويل له افغانستانه به نه ولايتونه بيل کړل شي او دغه ولايتونه به د کابل په کېدون د شوروي په ولکه کې ورپرېوزي. د هېواد پاتې برخه به خپل برخه ليک ته پرېښودل شي. (بوروفسکي ۱۱)» ۸۵۹

په شمال کې شورويانو او د هغوی ملگرو د شمالي ولايتونو د ښارونو، کليو او بانډو له وړانولو په کلکه ډډه کوله خو مسکو په پرله پسې او فعاله توگه نه يوازې د پښتنو په سيمو کې د خپلې واکمنۍ په وړاندې مخالفين په ټينگه ټکول بلکې د ميشتمو پښتنو د بقا او د هغو د شتمنيو او د ژوند او معشيت د اړونده شيانو د منځه وړلو په لاره کې تر وسې وسې هلې ځلې وکړې. (کراکوفسکي ۱۷۸). ۸۶۰ د شمالي زون د سيمو د باندې، په نورو ټولو سيمو کې د اوبو لگولو شېبې او مخکې حاصلات د منځه يوړل شول، مخکې د وگړو له شتون څخه پاکې شوې او د هېواد سوويلي برخې په رښتني توگه په ښارو مخکو واورول شوې. (کراکوفسکي ۱۷۸) ۸۶۱

شوروي اتحاد د هوايي بمبارد له لارې په سيسماتېک ډول د پښتنو سيمو وړانول او له هغو څخه د وگړو شړل وو. په دې مانا چې «ټولې پښتون ميشتمه سيمې چې له سووېل لوېديځو ولايتونو څخه تر سووېل ختيځو ولايتونو پورې غځېدلې دي کلکې بمبارد کړې چې په سلگونه زره وگړي يې ووژل او پاتې يې له هېواده شړلو ته اړ کړل.» ۸۶۲ د پښتنو د شړلو له پاره گڼ شمېر لارې چارې په کار ولوېدې. پرله پسې بمباريو کلي په کنډوالو واورول او شوروي چورلکو تښتېدونکي کليوال د هوا نه قصابي کړل. يو کلی په بل کلي پسې ونړول شو، وگړي يې په ډله يز ډول ووژل شول او د دغه بې رحمه قصابيو په ترڅ کې ولسوالي په ولسوالۍ يو پر بل پسې د خاورو سره يو او د وگړو نه تشې شوې. د درمندونو د ټولولو په وخت کې پټيو او کروندو ته اور واچول شو، بنونه او انکور باغونه له منځه ولاړل او څاروي يې ورووژل شول. د مسکو په موخو کې په دغو سيمو کې د بيا ميشتم کېدلو پلان نه و او له دې چې د افغانانو ژوند په کرهڼه او د اوبو لگولو په بندونو پورې تړلی دی نو د اوبو بندونه يې هم وروچاړ کړل او مخکې يې په وچو ښارو واورولې. (کلاس ۱۳۳-۱۳۳) ۸۶۳

د کاسکېد د عملياتو دوهم پړاو دا و چې د افغان مقاومت د ډلو له منځه يو شمېر کسان د همکارۍ له پاره جلب شي. کاکړ وايي چې شورويانو د پټې استخباراتي جگړې له لارې ډېر برياليتوبونه ترلاسه کړل. دا پټه جگړه د کې چې بې او پوځي استخباراتو په کېدون شوروي پټو ادارو پرمخ بيوله. همدارنگه کې چې بې د خپل مودل سره سم د نجيب الله په

مشری چې نوموړی شاید پخوا د کې چې بې له خوا د اجنټ په توګه استخدام شوی و، د کام جاسوسي اداره د خاد په جاسوسي اداره واروله. کې چې بې د کاسکېد په ځانګړو جګړو کې نېغ رول درلود.

شورويانو نه يوازې احمدشاه مسعود د ياد پروتوکول په بنسټ د خپل نفوذ لاندې راووست بلکې دوی او د دوی لاسپوڅي رژيم کونښن کاوه چې په ټول ملک کې د خپلو مخالفانو برسېره ان نور ځايي مشران او مخور کسان هم د رژيم په خوا واري. دوی دغه کار د پراخې جاسوسي جال له لارې په پيسو، زور او چل او ول سره کاوه، چې د هرات شير اغا چونغر يې يوه څرګنده نمونه ده. د ۱۹۸۱ کال په پيل کې د شوروي د کاسکېد افسرانو شير اغا چونغر چې د ۲۵۰ تنو مجاهدينو قوماندان و، د رژيم پر خوا راوړاوه. کاسکېد د سبوتاژ، ترورستي کړو، ډول ډول وړانيو او د مخالفانو د جلبولو له پاره د ک ج ب له افسرانو نه جوړ شوي ډلګۍ وې چې پراخ اختيار ورسره وو. دوی د چېکا د شوروي استخبارتي ادارې د تاکتيکونو نه کار اخېست چې په منځنۍ اسيا کې د بسمچيانو په وړاندې کار ترې اخېستی و. چونغر د پيسو او شوروي اتحاد ته د سفر او ځينو نورو امتيازاتو په بدل کې ومنله چې له کاسکېد سره به مرسته کوي او د رژيم مخالفان به ځپي. ميتروخين ليکي چې «د ۱۹۸۱ کال د اپرېل نه د ۱۹۸۲ کال تر مارچ پورې د هغه جنګياليو د کاسکېد له ټولګي سره په ګډه په يوويشتو لويو عملياتو کې برخه واخيستله او په بيل ډول يې څلورېشت مورچليز بريدونه وکړل او د مقاومت د واحدونو ۳۱ قوماندانان له مينځ نه يووړل.» چونغر په ټوليز ډول «۲۰۵۰۰» د رژيم مخالفين له منځه وړي او اتيا تنه يې نيولي وو. ۸۶۴

په ۱۹۸۲ کال کې يو شمېر نور قوماندانان د رژيم پر خوا واورول شول. په جوزجان کې قوماندانان دير اوراز هلدي، دير عبدالله جان او لاو عبدالله حنايي، په شمال کې سيد حسېن شاه منصور، د کابل د قره باغ نه اغا رحيم خان او په هزاره جات کې د وطنپال په نامه قوماندان د کابل په لور واورول شول چې د دوی نه هم د چونغر غونډې کار واخېستل شو.

کاکړ وايي چې دغه چلندونه د انسجام د ډلې له خوا کېدل چې د کاسکېد- ک ج ب او پوځي استخباراتو له استازو نه جوړه وه. دغه ډله په ځانګړې توګه د پکتيا او ننگرهار سرحدي قومونو ته متوجه وه او د پيسو او وسلو په بدل کې د قومي ملېشيا او پوځي پوستو د جوړولو پروګرام پرمخ بيوه. د پرچم رژيم د سرحدونو چارو وزير فيض محمد هم پکتيا ته د دې کار له پاره ولېږه چې په ځدراڼو کې د خپلو ملګرو سره يوځای ووژل شو.

د ننګرهار په خوګيانيو کې د کابل رژيم د ملک قيس او ملک محمد جان د کورنيو د خپلمنځي دښمنۍ نه په کټې اڅپستې سره د ملک قيس گنده وهڅوله چې د وسلو او پيسو په بدل کې ولسوالي ومي. د امان بېک په سروالی د ملک قيس کورنۍ ورسره دغه وړانديز ومانه، خو د امان بېک اصلي مقصد دا و چې وسلې او پيسې ترلاسه کړي او بيا د رژيم پر ضد عمليات وکړي. دغو دواړو کورنيو په پېښور کې روغه وکړه.

د کارباچوف بيا جوړونه او سمونونه

په ۱۹۸۵ کال کې ميخايل کارباچوف د شوروي اتحاد لور واکمن شو او هغه په دې واقعيت پوه شو چې د دې وضعې نه د وتلو يوازینی لار د افغانستان نه د شوروي پوځ ايستل او د ننه په شوروي نظام کې د سمونونو راوستل دي.

کارباچوف د سوسياليستي نظام د ټولو امکاناتو څخه د کټې اڅپستلو ترنامه د نوي تفکر په رڼا کې د بيا رغونې او علنيت تر شعار لاندې د ژورو بدلونونو پلان ترلاس لاندې ونيو. شوروي اتحاد چې په افغانستان باندې د وسله وال تيري په نتيجه کې د نړۍ د خلکو تر مېنځ د يوه تيري کوونکي استعماري ځواک په توګه خپل حيثيت بايللی، ددې هېواد اقتصاد په جګړه کې ډير کمزوری شوی او هغه د سر زيان، چې د جګړې په جريان کې د استعماري پوځ منسوبينو ته اړول شوی، د شوروي خلکو د ناراضی سبب شول. ددې وضعې نه د وتلو په موخه د شوروي اتحاد نوي مشرتابه وپتېبله چې د افغانستان د مسئلې د حل يوه داسې لاره ولټوي چې شوروي تيري کوونکی پوځ د افغانستان څخه په داسې بڼه وباسي چې يوه د اوږو پزه ځانته جوړه کړي. د افغانستان څخه د شوروي پوځ د ايستلو پرابلم د شوروي اتحاد د نوي مشرتابه د بهرني سياست په اجندا کې مهم ځای ونيو.

کارباچوف د شوروي پوځ د ايستلو موضوع د افغاني مشرتابه سره د خپلو مشاورينو له لارې څېړله او دوی ته يې دا ذهنيت ورکولو چې شوروي اتحاد هوډ لري چې خپل پوځ د افغانستان څخه وباسي او افغان لوری دې په خپله د انقلاب ساتني ته ملا وتړي.

د دې مسئلې د څېړلو په وخت کې ښکاره شوه چې بېرک کارمل دې ته چمتو نه دی چې د افغانستان څخه د شوروي پوځ د وتلو سره موافقه وکړي. له دې کبله د نوي مشرتابه له خوا کارمل ته داسې اشارې ورسېدې چې نوموړی نور نه شي کولای د شوروي پوځ په زور خپل واک ته دوام ورکړي. خو داسې شواهد شته چې د شوروي مشاورينو سره د دې موضوع د څېړلو په وخت کې ډاکټر نجيب الله د شوروي پوځونو د وتلو سره سر خوځولی

دی. شاه محمود حصین په خپل کتاب کې، چې «بې عیبه مثلث» نومېږي، د صالح محمد زیري له خولې لیکي: «ډاکټر نجیب الله لکه چې د مخه د موضوع څخه خبر و، په داسې بڼه یې طرح کوله چې که د شوروي له خوا د افغانستان څخه د شوروي پوځ د وتلو موضوع طرح شي، مور ته لازمه ده چې د هغوی د پرېکړې څخه ملاتړ وکړو.» ۸۶۵

کارباچوف په دې موخه د ملګرو ملتونو د ځانګړي استازي په منځګړیتوب د خبرو لار ټینګه ونيوله، چې د مخه په ۱۹۸۲ کال کې پیل شوې وې. د دوی سره دا وېره هم وه چې د دوی د امپراتورۍ نور تابع هېوادونه به هم پر خپلواکۍ غوښتنې باندې نور هم ټینګ شي. دوی د ژینو په خبرو کې هڅه کوله چې له بنګېلو خواوو سره دغسې تړون وکړي چې د هغه له مخې خپل پوځ په عزت سره له افغانستان نه وباسي او هم په کابل کې د دوی لاسپوڅی رژیم په کوم ایټلافي ډول پاتې وي. خو د ډېرو چنو وهلو وروسته یې د ۱۹۸۸ کال د اپرېل د میاشتې په څلورمه نېټه ومنله چې خپل پوځ په نهو میاشتو کې له افغانستانه وباسي. خو تر دغه وخت په شوروي اتحاد کې وضعه دومره خرابه شوې وه چې لومړی شوروي امپراتوري ړنګه شوه او ورپسې په کابل کې د دوی تابع رژیم د منځه لاړ او په ځای یې افغان اسلامي تنظیمونه په واک شول.

د کارمل لیرې کول

په ۱۹۸۵ کال کې میخایل کارباچوف کارمل مسکو ته وباله. په مسکو کې کارباچوف کارمل ته وویل چې شوروي اتحاد هوډ کړی چې خپل پوځونه د افغانستان نه وباسي. کارمل د دې خبرې په اورېدو هک پک شو او خپل مخالفت یې کارباچوف ته په دې ټکو څرګند کړ: «که تاسې اوس ووځئ بل ځل به مجبور شئ، چې یو میلیون سرتیري راولېږئ.» ۸۶۶

کارباچوف بیا د سیاسي دفتر ناسته راولبله او پرېکړه وشوه چې کارباچوف د کارمل ته رد ووايي چې شوروي اتحاد خپل پوځ د افغانستان نه وباسي او کارمل دې هرو مرو په خپله د خان نه ساتنه وکړي او شوروي به وسله ورلېږي. د ۱۹۸۶ کال د فبروري د میاشتې په ۲۵مه نېټه کارباچوف افغانستان د ناسور تپ وباله او د افغانستان نه یې د شوروي پوځونو په ایستلو ټینګار وکړ. کارمل په دې نه پوهېده چې شوروي لویانو دی د خپلو موخو د پلي کولو له پاره واک ته ورسوه او اوس دوی د خپلې موخې له پاره هغه له واک نه کوزولی هم شي. د ۱۹۸۶ کال د مارچ د میاشتې په ۳۰مه نېټه کارمل مسکو ته د درملنې له پاره وغوښتل شو. د درملنې وروسته هلته ده ته وویل شول چې د نړۍ او افغانستان وضع اوري او د دې وخت رارسېدلی دی چې د عمومي منشي مقام خپل کوم یو ځوان ملګري ته

پرېږدي. دی نور د شوروي اتحاد په کار نه و. شېرشین وايي چې په پرنسيب کې هغه هوکړه وکړه چې د خپل مقام نه لاس په سر شي، خو وويل چې اړينه ده لومړی د خپلو ملگرو سره مشوره وکړي. نوموړي د ۱۳۶۵ کال د غوايي د مياشتې په يوولسمه نېټه چې د ۱۹۸۶ کال د می د مياشتې د لومړي نېټې سره سمون کوي په شعوري توگه افغانستان ته رااستول کېږي ترڅو په شوروي اتحاد او هم په افغانستان کې نه يوازې د می د لومړي ورځې د نمانځلو په مراسمو کې کېدون ونه کړای شي، بلکه همدارنگه د ثور د انقلاب د کاليزې د نمانځې په مراسمو کې هم کېدون ونه کړي. د ثور انقلاب د کاليزی د مراسمو په جريان کې پوځي رسم گذشت د نجيب الله د مخې څخه تېر شو او په دې مراسمو کې څرگنده شوه چې کارمل ته نور هېڅ ډول اړتيا نه ليدل کېږي. کې چې بې والو په ده باور نه کاوه او همدا چې کارمل د می په اوله ورځ د کابل په لور روان شو د کې چې بې د نړيوالې ځانگې مشر ولاديمير گريچکوف ورپسې رهي شو او د می په دوهمه پخوا له دې چې په دسيسې لاس پورې کړي، ورسره وليدل او ترېنه وغوښتل چې له وعدې سره سم د گوند د مرکزي کمیټې د عمومي منشي د مقام نه استعفا وکړي. د شېرشین په وينا چې دی هم هلته و، د دغې خبرې په اورېدلو سره «د کارمل مخ تور شو» په پرتو ويلو بې پيل وکړ او چينغې يې کړې چې «ومې وژنئ، قرباني مې کړئ! زه مرگ، بندي توب او کړاو منلو ته تيار يم.» خريچکوف وويل چې سبا به بيا په دې اړه خبرې وکړو. کارمل موافقه وکړه. خو د همدغې ورځې په مازديگر د دفاع وزير، د کورنيو چارو وزير او د خاد سروال کارمل سره په گډه وليدل او په ټينگه بې ترېنه وغوښتل چې ځان گوښه کړي. کارمل په ژورې ناهيلی سره تسليم شو. کارمل سره له دې د بنڅو د سازمان يو شمېر نجونو او ځينې نورو نږدې کسانو له خوا مظاهره تنظيموي، خو دا عمل گټه نه کوي

په پای کې د ۱۳۶۵ کال د غوايي د مياشتې په څورلسمه نېټه د افغانستان د خلک ډموکراتيک گوند پلنوم دایر شو، د بېرک استعفی تاييد او د هغه پرځای ډاکټر نجيب الله د افغانستان د خلک ډموکراتيک گوند د مرکزي کمیټې د عمومي منشي په توگه وټاکل شو.

بېرک کارمل د شوروي اتحاد د زاړه تفکر د پلويانو سره ټينگې اړيکې درلودې. ده د هغوی په لاسون د نجيب الله پر ضد د افغانستان د خلک ډموکراتيک گوند د مرکزي کمیټې د عمومي منشي په توگه د ټاکنې په همغه مهال د خپلو پلويانو په مرسته مظاهرې وکړې او مړه دوي کارباچوف او نجيب الله شعارونه يې ورکړل او د محمود بريالي ميرمنې جميله ناهيد خو لا په يوه مظاهره کې افغانانو ته دا توصيه وړاندې کړه چې افغاني

ماشومانو ته لا په زانگو کې د ستر شوروي اتحاد دوستي په غورونو کې زمزمه کړي. د بېرک کارمل د پلويانو مظاهره د وسله وال پوځ د منسوبينو له خوا تیت او پرک شوه. په پای کې کارمل اړ شو چې د انقلابي شورا د ریاست نه هم لاس په سر شي او هغه و چې د ۱۹۸۶ کال د نومبر په شلمه یې خپل گونښه لیک واستوه. په دې ډول د ده سیاسي ژوند پای ته ورسېد، ټولنیز ژوند یې محدود شو او په خپله یو عادي کس شو. بیا د درملې په پلمه مسکو ته واستول شو تر څو نجیب الله په ډاډه زړه د هېواد چارې پرمخ بوزي.

د ژینو خبرې

د مخه مو یادونه وکړه چې د شوروي د یرغل نه وروسته د ملګرو ملتو موسسې، اروپایي ټولني، د ناپېیلو هېوادونو او اسلامي هېوادونو او د نړۍ نورو هېوادونو او نړیوالو موسسو له شوروي اتحاد نه وغوښتل چې خپل پوځ له افغانستان نه وباسي او د افغانستان د ناپېیلوب او خپلواکۍ درناوی وکړي. خو شوروي نه غوښتل چې د افغان کښاله د خبرو او ډپلوماسۍ له لارې حل شي. شوروي مشران پر خپل پوځ ډاډه و، چې په افغانستان کې به کراري راولي او د خپل اجنت بېرک کارمل په سروالی به پرچمي رژیم د ختیځې اروپا شوروي ته د تابعو حکومتونو په شان حکومت کوي. ځکه دوی جګړې ته د دوام ورکولو په خاطر د سلګونو زرو انسانانو د وژلو او د افغانستان د ورانولو مسؤلیت په غاړه واخېست.

څه مهال وروسته ځینو شوروي لویانو خپله تېروتنه ومنله خو بریټنډ د پخوا په شان په خپله سرزوري تینګ و، په دې چې روسانو هغه هېوادونه چې لاندې کړي و، هېڅکله د هغو نه د پوځ ایستلو ته اړ شوي نه و. اوس بریټنډ دا منلی نه شوه چې خپل پوځ له افغانستان نه وباسي. بریټنډ په ۱۹۸۲ کال کې مړ شو او د هغه د مړینې وروسته د شوروي د یرغل اصلي نوښت ګر د ک ج ب مشر اندروپوف د شوروي اتحاد لوړ واکمن شو. دی چې زر په خپله تېروتنه پوه شو د ډپلوماسۍ لار یې تینګه ونيوله. خو له بده مرغه ناروغ اندروپوف د ۱۹۸۴ کال په جنوري کې مړ شو او ځای ناستی یې کانستانتین چرننکو د بریټنډ غوندې د افغان مسلې د پوځي حل پلوي و. خو د ښه مرغه هغه ته مرګ په ښه وخت کې راوړسېد.

که څه هم دغه خبرې په ۱۹۸۲ کال کې د ملګرو ملتو په منځګړیتوب پیل شوې خو شوروي اتحاد د بریټنډ او چرننکو په وخت کې د ژینو خبرو ته رښتیني نه و. دوی پلې

کولې او ويل يې چې د جگړې د لاملونو له منځه تلو وروسته شوروي اتحاد خپل پوځونه د افغانستان نه وباسي.

د ملګرو ملتو سرمشري کورټ والډ هایم د ۱۹۸۱ کال د فبروري د میاشتې په ۱۱ مه نېټه جاویر پرېز دي کویلاز په سیاسي چارو کې د خپل شخصي استازي په توګه وټاکه چې د بنسټلو هېوادو تر منځ د سولې خبرې پرمخ بوزي. دي کویلاز په ۱۹۸۱ کال کال کې لومړی د اپرېل او بیا د اګست په میاشت کې سیمې ته دوه ځله سفر وکړ. ده په کابل او اسلام اباد کې له مقاماتو سره د خبرو وروسته د افغان کښالې د هوارولو له پاره د ملګرو ملتونو د ماموریت او هغه فعال رول ومنل شو. په خپله سرمشري هم د همدې کال په می کې مسکو ته سفر وکړ او هلته یې د همدغه پوهاوي په اړه د ګرومیکو او نورو موافقه ترلاسه کړه. دوکویلاز په دې اړه په اسلام اباد کې د جنرال ضیاءالحق موافقه هم ترلاسه کړه. پاکستان د افغان کډوالو استازیتوب، او په عمومي ډول د افغانستان استازي توب په کړو کې په خپله کاوه او افغان اسلامي تنظیمونو ته یې چانس نه ورکاوه. کاکړ وايي چې «د تنظیمونو مشرانو هم د خپل هېواد د کښالې په اړه د پاکستان مخکښې منلې، او د خپل ملي حاکمیت اصل یې له نظره غورزولی و. له همدې امله و چې دوی ملي اهمیت پیدا نه کړ ... او تر پایه پورې د پاکستان د ای اس ای تر مشرۍ لاندې جنګي ډلې پاتې شوې او د هېڅ تنظیم امیر یا سروال ملي مشر نه شو» ۸۶۷

د ۱۹۸۱ کال په پای کې پرېز دوکویلاز د ملګرو ملتو د سرمشري په توګه وټاکل شو او دیګو کوردوویز یې په سیاسي چارو کې خپل مرستیال وټاکه او د ۱۹۸۲ کال د فبروري په میاشت کې د افغانستان د کښالې د هوارولو له پاره د خپل خاص استازي په توګه وټاکه. اندروپوف د ۱۹۸۳ کال د مارچ په ۸ مه د ملګرو ملتونو سرمشري پرېز دوکویلاز ته وویل چې جګړه د شوروي اتحاد اړیکې د لوېدیځ، سوسیالستي هېوادو، اسلامي هېوادو او د نورې پاتې نړۍ سره ترینګلي کوي او همدارنګه کورنۍ ټولنیزه او اقتصادي وده زیانمنه کوي.

په امریکا کې د نوي ولسمشر رونالډ ریګن منځ ته راتګ شوروي اتحاد اندېښمن کړ چې د افغان کښاله یې د کارتر په پرتله ډېره ټینګه ونیوله او د پاکستان له چارواکو سره یې د نیو وسلو د جنګي الوتکو په ګډون د څلورو میلیارډو ډالرو په اندازه هوکړه لیکونه لاسلیک کړل. د چېرینکو وروسته په نسبي توګه ځوان ګارباچوف د شوروي اتحاد واکمن شو او د ژینو په خبرو یې لنګر واچاوه.

کوردوويز او د ژينو خبرې

کوردوويز يو خوځند او نوښتگر ډپلومات و او د افغانستان د کشالې د هواری له پاره يې د «بيړې ډپلوماسي» غوره کړه. کوردوويز د ۱۹۸۲ کال د اپرېل په مياشت کې سيمې ته په سفر لاړ. په پاکستان کې يې د پاکستان د بهرنیو چارو وزير صاحبزاده يعقوب خان سره وليدل. د کوردوويز د دغه سفر موخه د خبرو د څرنګوالي او کړنلارې د ټاکلو په اړه وه. کوردوويز د خبرو د «نږدې غږېدو» فارمول وړانديز وکړ چې د ښکېلو خواوو استازي به په بيلو کوټو کې ناست وي، دوی به نه سره گوري او دی به هغوی په خپلو کوټو کې وي او د مقابل لوري خبرې به اوروي. دا ځکه چې پاکستان نه غوښتل چې استازی يې د کابل د استازي سره مخامخ خبرې وکړي او هغه ته رسميت ورکړي. په کابل کې د باندنيو چارو وزير شاه محمد دوست د کوردوويز له فارمول سره هوکړه وکړه. کوردوويز بيا تهران ته سفر وکړ او هلته د ايران د بهرنیو چارو وزير علي اکبر ولايتي سره وغږېد. ولايتي ورته وويل چې ايران نه غواړي په خبرو کې گډون وکړي. خو ولايتي د کوردوويز د دغه وړانديز سره زړه نازره هوکړه وکړه چې هغه به ايران له بحثونو نه باخبره ساتي او ايران به هر هغه نظر کوردوويز ته انتقال کړي چې د بحث لاندې موضوع گانو په اړه يې لري.

له دغه سفر نه وروسته کوردوويز په هاوانا کې د صاحب زاده يعقوب خان او شاه محمد دوست سره وليدل او د خبرو په اړه يې ځان نور هم ډاډه کړ. ده بيا هغه ليک چې د بحث وړ موضوع گانو اجنډا يې بللې اول يعقوب خان او بيا نورو ته واستوه. هغه مهال چې له دوی نه يې د هوکړې خواب ترلاسه کړ په ژينو کې يې د ۱۹۸۲ کال د جون د مياشتې ۱۵ مه د خبرو نېټه وټاکله. په دې توګه په دغه نېټه د افغان کشالې په اړه د خبرو لړۍ پيل شوه او کوردوويز د ملتونو په ماني کې د ملګرو ملتونو د استازي په توګه د دواړو پلاوو کوربه توب کاوه. هر پلاوی به د ملتونو ماني ته يو په سهار او بل په ماسپېښين کې جلا ورتلو، په بلې اوونۍ کې به دغه ترتيب سرچپه کېده. دواړه پلاوي به هېڅکله په يوه وخت کې په ماني کې نه و.

کوردوويز په ژينو کې د خبرو په درشل کې د شوروي اتحاد استازي ستانيسلاو کاوريلوف سره هم وليدل چې په کابل کې د شوروي اتحاد د سفير مرستيال و. کوردوويز د ده له لارې چې د ګروميکو سره يې په نېغه توګه مخابره کوله، د شوروي حکومت په سياست ځان پوهاوه. شورويانو هيله درلوده چې د ژينو خبرې به د کابل رژيم ته يو ډول مشروعيت يا لږ تر لږه نړيوال حيثيت ورکړي.

کاکړ وايي چې د نړۍ بل زېرڅواک امريکا چې په دغه وخت کې يې د افغانستان پر

پېښو ژور اغېز درلود د ژينو د خبرو سره چندان علاقه نه ښووله. کوردوويز وايي چې ده ته په ملګرو ملتو کې د امريکې دايمي استازي يو مرستيال جورج شارمان په رسمي ډول څرګنده کړه، چې که څه هم امريکا د خبرو له لارې د افغان کشالي د هوارولو ملاتړ کوي خو نه غواړي چې د هغې په اړه خبرو کې برخه واخلي. خو په ژينو کې د يونو په دفتر کې د امريکې استازي هرمن سواي بي (Herman Swaebe) چې د ولسمشر ريکن نږدې ملګری و، د کوردوويز سره ومنله چې د دغې موضوع په اړه به په کرسمس کې د ريکن سره وغږيږي.

کوردوويز په ژينو کې د ۱۹۸۲ کال د جون په شپاړلسمه نېټه لومړی د پاکستان د پلاوي د مشر يعقوب خان سره وليدل او په دې توګه د ژينو خبرې پيل شوې. يعقوب خان غوښتل چې د خبرو اصلي موضوع د افغانستان نه د شوروي پوځ ايستل وي. نوموړي د افغانستان په چارو کې د لاسوهنې نه انکار کاوه. خو شاه محمد دوست د هغه پر خلاف په پرله پسې ډول ويل چې که دغه لاسوهنه ودرول شي نورې موضوع کانې به حل شي. په پای کې د پوځ د وتلو موضوع په متن کې د اساسي ټکي په توګه ومنل شوه. که څه هم د کابل د رژيم استازي په وار وار له هغې سره مقاومت کاوه.

د ۱۹۸۲ کال د نومبر د مياشتې په ۱۱مه نېټه بريټنډ مړ شو او د ک ج ب مشر يوري اندروپوف د هغه پر ځای د کمونسټ ګوند عمومي منشي وټاکل شو. تر دغه وخته د ژينو په خبرو کې يو څه پرمختګ شوی و، خو د اندروپوف په واکمن کېدو سره د ژينو په خبرو کې د پرمختګ هيله ښه پياوړې شوه. اندروپوف اوس خپلې تېروتنې ته ځير شوی او په دغه فکر شوی و، چې خپل پوځ د ښکېلو حکومتونو په موافقې سره له افغانستان نه په عزت وباسي.

کوردوويز همدا چې د خبرو لومړی پړاو پای ته ورسېد د افغان کشالي د هوارولو هراړخېزې پرېکړې لومړنۍ مسوده تياره کړه چې اساسي ټکي يې د پوځ ايستل، د لاسوهنې بندول، د هېوادونو د ضمانت او د کډوالو ستنېدل وو. په مسوده کې د دې نه هم يادونه شوې وه چې د پرېکړې د ټولو توکو پلي کول به په يوه وخت کې وي. د کوردوويز نه هيله کېده چې خپل کار چټک کړي خو هغه خپل تګ سيمې ته وځنډاوه. کوردوويز په نيويارک ټايمز کې د تاس د اژانس د اعلاميې په حواله ولوستل چې شونې ده چې د شوروي نوی واکمن د حيثيت نه بايللو پرېکړه وکړي. د تاس دغې اعلاميې هغه توده هوا بېرته سره کړه چې د اندروپوف په واکمن کېدو سره پيدا شوې وه. دارنگه د کراچي د ډان ورځپاڼې نظر ښکاره کړ چې پاکستان ته نه ښايي چې د ډراماتيک بدلون هيله وکړي.

دغه نوي انکشاف کورډوويز په دې فکر کړ چې د افغان کشاله اوس د زبرخواکونو په کړکېچنو اړيکو کې نغښتې ده. مسکو دی پوه کړی و چې غواړي خبرې پرمخ لاړې شي خو دا نه شي زغملی چې په ښکاره يا ان په ضمني ډول ووايي چې په هر ډول وي پرېکړه غواړي. خو لږ مهال وروسته د ۱۹۸۳ کال د جنوري د مياشتې په ۶مه نېټه په ملګرو ملتو کې د شوروي استازي ولادمير شوستوف کورډوويز ته وويل: «له يوه ډېر لور ځای نه هغه ته هدايت شوی چې تا ته ووايي چې په مسکو کې د جامعې فيصلې مسودې درناوی شوی دی او دا چې د شوروي حکومت هيله کوي چې په ژينو کې به له خبرو کوونکو سره د هغه خبرې بريالی وي.» ۸۶۸ بيا نو کورډوويز په ډاډه زړه سيمې ته په سفر لاړ. ده په تهران کې د ايران د باندنيو چارو وزير علي اکبر ولايتي سره وکتل. علي اکبر ولايتي د پرېکړې اصلي موضوع د پوځ ايسټل ياد کړو چې بايد په دوو کلونو کې سرته ورسېږي او هم يې د کډوالو د بېرته ستنېدو نه يادونه وکړه. کورډوويز بيا اسلام اباد ته لاړ او هلته يې د پاکستان د بهرنيو چارو د وزير يعقوب خان سره وليدل. هغه د پرېکړې د مسودې د څلورو ټکو سره موافقه ښکاره کړه خو ده د کورډوويز نه وغوښتل چې د پوځ د ايسټل کېدلو له پاره دې د وخت چوکاټ وټاکل شي او کورډوويز ورسره ومنله. بله ورځ يعقوب خان کورډوويز ته ډاډ ورکړ چې پاکستان د پرېکړې ټول توکي منلي دي خو مشاورانو يې دا موضوع هم ياده کړه چې په پرېکړې کې دې هرو مرو د موجودو پولو د منلو يادونه وشي. خو کورډوويز وايي چې ده له دغه بحث نه وروسته لازمه نه گڼله چې په دې اړه اوس بحث وکړي. په کابل کې شاه محمد دوست د کورډوويز جدول خوش کړ خو د پوځ د ايسټل کېدو په اړه يې د وخت د ټاکل کېدلو جدول ونه مانه. بله ورځ شاه محمد دوست د هم مهالتوب پرنسيب ومانه او د وروستۍ پرېکړې نه دېرش ورځې وروسته يې د ټولو توکو د پلي کولو سره هوکړه وکړه. کورډوويز وروسته په شوروي سفارت کې له گاورييلوف سره د ډوډۍ خورلو په مهال خبرې وکړې. ده هغه ته ورياده کړه چې د مخه په ژينو کې د پوځ د ايسټلو د وخت د چوکاټ په اړه څرگند پوهاوی منځ ته راغلی و. گاورييلوف هم د دوست په شان د پوځ د ايسټلو د وخت د ټاکلو د موضوع سره مخالفت وکړ خو په پای کې يې وويل چې په دې اړه به له مسکو سره مشوره وکړي.

کورډوويز د ملګرو ملتو د سرمنشي پرنز دې کويلار په ملګرتيا مسکو ته سفر وکړ. شوروي حکومت د ملګرو ملتو سرمنشي په رسمي ډول مسکو ته بللی و. اندروپوف دې کويلار ته وويل چې د ملګرو ملتونو له لارې د افغانستان په چارو کې د لاسوهنې مخالف دی خو په همدغه وخت کې يې د ډپلوماسۍ له لارې د افغانستان د کشالې په اړه د

کورډوویز کوښښونه مثبت وارزول او یو ځل یې بیا په ټینګه وویل چې که لاسوهنې ودرولې شي «ګرانه به نه وي د اړوندو موضوع کانو په اړه د شوروي پوځ د وتلو په ګډون موافقه وشي» ۸۶۹ ده دا هم وویل چې په افغانستان کې د پوځ پاتې کېدل به دغه پایلې ولري. لومړی هغه ډېر لکښت غواړي؛ دوهم د ننه په شوروي اتحاد کې ستونزې پیدا کوي؛ دریم د امریکې د متحده ایالاتو، دریمې نړۍ او اسلامي نړۍ سره د کشالو لامل کېږي؛ څلورم د تولو هغو هېوادونو سره چې له دغې موضوع سره علاقه لري هرو مرو پرابلمونه جوړوي. نو دی له زړه نه غواړي چې «دغه حال ته د پای ټکی کېږدي» ۸۷۰

له هغه وروسته کورډوویز د جامعي پرېکړې په بشپړولو بوخت شو. خو پاکستان په دغه وخت کې نوې کشاله پیدا کړه هغه دا چې د کورډوویز نه یې وغوښتل چې د پرېکړې په وروستی متن کې دې د ډیورنډ کرښه نړیواله پوله وښودله شي. کاکړ وايي چې د کابل رژیم «حاضر و چې د دغې موضوع پر سر سوداګري وکړي، خو چې پاکستان یې په رسمي ډول وپېژني» ۸۷۱ کورډوویز وايي چې شاه محمد دوست راته وویل چې «... لکه هسې چې د اګست په وړاندیزونو کې ښودل شوي، دغه موضوع په رښتیا د خبرو موضوع کېدلې شي. خو په مستقیم ډول د دواړو حکومتونو تر منځ او یوازې د پرېکړې له ختم نه وروسته» ۸۷۲ په دې توګه پرچمیان حاضر وو چې د پاکستان له لوري د دوی د رژیم د رسمي پېژندلو په بدل کې د ډیورنډ کرښه د نړیوالې پولې په توګه ومني. خو پاکستان دغه سوداګري ونه منله.

بله موضوع د وروستۍ پرېکړې پلي کول و. په پای کې ومنله شوه چې د پرېکړې ضمانت به د امریکا او شوروي اتحاد پر غاړه وي په دې ډول چې امریکا به مجاهدینو ته خپله مرسته دروي او شوروي به ژمنه کوي چې خپل پوځ له افغانستان نه وباسي. له هغې وروسته د پرېکړې لومړنی لیکنه په اوولسو مخونو کې بشپړه شوه.

د دې سره سره د ۱۹۸۳ کال د اپرېل د میاشتې د ژینو په غونډه کې ګاوریلوف د مسودې د ځینو ټکو په اړه نارضايت ښکاره کړ. ګاوریلوف لا ویل چې «... مسکو له دغې مسودې نه ناهیلې دی» ۸۷۳ او باید د نه لاسوهنې فقره دې په ټینګه بیان شي. کورډوویز وايي چې دی زر پوه شو چې د کابل استازو څه نه شو ویلی ځکه چې ګاوریلوف ته د مسکو نه لارښوونه رسېدلې نه وه. که څه هم ګاوریلوف په رسمي ډول د خبرو استازی نه و خو بیا د دغې موضوع په اړه د افغانانو پر ځای دی د کورډوویز سره خبرې کوي او افغان استازي غلي دي. دا د حیرانتیا خبره نه ده ځکه چې ګاوریلوف په ژینو کې د دې د پاره ناست و چې افغانانو ته لارښوونه وکړي چې په غونډه کې څه ووايي او څه نه ووايي. ما لیکوال ته

د افغان د پلاوي يو غړي په هالنډ کې وويل چې دوی ته د شوروي نماينده لارښوونه کوله او په خپله يې څه نه شول کولی. په هر حال له هغه وروسته و چې شاه محمد دوست د مسودې په اړه نظر ښکاره کړ او کورډووين د استازو د نظرونو په رڼا کې مسوده بيا وکتله او هغه يې د متن په چوکاټ کې په څلورو حقوقي برخو ووېشله او د نوي متن مسوده د اپرېل په پنځلسمه تياره شوه. په ډله ييزو څېرونو کې د کورډووين دا وينا چې د مسودې متن ۹۵ سلنه بشپړه شوې په دې ډول خپره شوې وه چې گويا د پرېکړې ۹۵ سلنه بشپړه شوې ده. وضع بحراني کېده او د ملامتي گوته کورډووين ته نيول کېده. کورډووين د ژينو د خبرو د پيل کېدو درې ورځې د مخه ژينو ته لار چې د ښکېلو خواوو له استازو سره يې د مخه ليدلې وي. خو په دغه وخت کې د شوروي استازي کاوريلوف د زړه د درېدو له امله مړ شو او پر ځای يې واسيلي سفرانچوک ژينو ته ورغی. کورډووين د يعقوب خان او سفرانچوک د ليدو وروسته په دې فکر شو چې «... په مسکو کې کومه سخته پېښه شوې ده.» ۸۷۴ د پېښې يوه نښه دا وه چې سفرانچوک په پاکستان تور ولگاوه چې د نه لاسوهنې په فقره کې له ډاډ ورکولو نه تېر شوی دی او پاکستان د نه لاس وهنې په اړه بايد په رسمي ډول ژمنه وکړي. د سفرانچوک په لارښوونه به و چې شاه محمد دوست د پوځ د ايستلو د وخت د ټاکلو په موخه د خبرو په اړه په ټينگه انکار وکړ. کورډووين د دغې اورېدلې هوا په لامل نه پوهېده. خو وروسته ښکاره شوه چې اندروپوف سخت ناروغ شوی او کروميکو پوه شو چې د تلې بله خوا درنيرې نو خپل دريځ بدلوي. کورډووين د ۱۹۸۳ کال په اگست کې خپله پرېکړه څرگنده کړه او وويل چې په خبرو کې د پرمختګ چانس نه ليدل کېږي. د ۱۹۸۴ کال د فبروري په مياشت کې اندروپوف مړ شو او پرځای يې بل عمر خورلی کنستانتين چرننکو واکمن شو او د کورډووين ماموريت نور هم ستونزمن شو.

ضياء الحق چې د اندروپوف د جنازې له پاره مسکو ته تللی و، له چرننکو سره د ليدنې غوښتنه وکړه، خو هغه ورسره ونه ليدل. شورويانو په افغانستان کې خپل پوځي عمليات سخت کړل. د شوروي اتحاد دغو عملياتو واشنگټن هم اغېزمن کړ او ريکن د ۱۹۸۵ کال د مارچ په مياشت کې خپل ملي مصونيت ته پوره واک ورکړ چې په ټولو شتو وسيلو سره هاند وکړي چې شوروي ځواکونه له افغانستان نه وايستل شي. ۸۷۵ د واشنگټن پوست ورځپاڼې خبر وکړ چې افغان مجاهدينو ته د سي ای اي پټه مرسته د لومړي ځل له پاره د وېټنام د جګړې وروسته په بېساري ډول زياته شوه.

د ۱۹۸۵ کال د مارچ د مياشتې په لسمه نېټه د چرننکو د مړينې خبر خپور شو او پر ځای يې ميخايل گورباچوف د شوروي لور واکمن شو او نوې پاڼه واوښته. ضياء الحق چې

د چرنکو د جنازې له پاره مسکو ته تللی و، هلته يې پنځوس دقيقو له پاره د کورباچوف سره وکتل. ضياءالحق په اسلام اباد کې وويل چې «زه د هغه [کورباچوف] په وينا له سره باوري شوم، چې شوروي اتحاد د ملګرو ملتو نو تر څارنې لاندې په نامخامخ خبرو سره د سياسي حل ملاتړ ته ژمن دی.» ۸۷۶

کورباچوف دغه يرغل تېروتنه کبله خو بيا هم د کورباچوف په واکمنۍ کې د ژينو خبرې پېچلې او اوږدې شوې ځکه چې شوروي واکمن اندېښمن و، چې د پوځي ځواک په بې اعتبار کېدلو سره به په اسيا او ختيځې اروپا کې د هغه تر لاس لاندې هېوادونه له خپلو ملګرو نه د شوروي پوځونو ايستل وغواړي.

کورډوويز د می د مياشتې په ۲۵ مه نېټه سيې ته د خپل سفر په يون کې اسلام اباد ته ورسېد او د پاکستان د چارواکو سره د خبرو زوړته مالومه شوه چې په پاکستان کې د ژينو د خبرو په اړه کوم بدلون نه دی راغلی او دوی د شورويانو له لوري نه بې علامې ته سترګې په لاره وو. کورډوويز په کابل کې د شاه محمد دوست سره د می په ۲۸ مه وليدل او کوبښن يې کاوه چې د مسودې نه د پوځ وتل وباسي. خو کورډوويز ته په کابل کې د شوروي استازي کوزيروف په يوه جلا ليدنه کې ډاډ ورکړ چې کورباچوف هوډ کړی چې پرېکړه دې د ملګرو ملتونو په منځګرتوب وشي. په دې توګه کورډوويز او پاکستان ته هغه علامه د مسکو نه ورسېده چې دوی ورته سترګې په لار وو.

د ۱۹۸۵ کال د جون په شلمه د ژينو د خبرو څلورم پړاو پيل شو چې په پای کې د درو سندنو په اړه د څو ورو تګو پرته هوکړه وشوه. يوازې څلورم سند چې د شوروي پوځ ايستل کېدلو په اړه و، پاتې و. د کابل او شوروي استازو غوښتل چې د پوځ ايستل کېدل د وخت په چوکاټ کې د ننه هغه وخت ومي چې پاکستان د کابل د رژیم د استازو سره مخامخ خبرې وکړي. خو مقابل لوري دا وړانديز نه مانه ځکه چې په هغه حال کې به په کابل کې د شوروي په لاس درول شوی رژیم په رسميت پېژندل شوی او منل شوی وي. کورډوويز شوروي استازي ته وويل چې مخامخ خبرې يوازې هغه وخت شونې ښکاري چې بېرک کارمل د خپل مقام نه گوښه شي. لږ وروسته د ګروميکو پر ځای د کورباچوف نږدې ملګری شېرنادزي د باندنيو چارو وزير شو او دا هم يوه مثبتې نښه وه.

د ۱۹۸۵ کال د اګست په ۲۷ مه په ژينو کې د خبرو پنځم پړاو پيل شو. دخبرو دغه دور يې نتيجه و، ځکه چې دواړه خواوې په خپلو دريځونو کلکې ولاړې وې. د شوروي لوري پوځي عمليات ډېر سخت کړل کاکړ وايي چې دا عمليات د چنگېز خان د وخت عملياتو ته ورته و، چې په اړه يې ويل کېده چې «راغلل، وې وژل او لاړل.» ۸۷۷ خو که شورويانو جګړه

سخته کړه نو امریکا او پاکستان د مجاهدينو د مقابلې وړتيا نوره هم پياوړې کړه. مجاهدينو ته د الوتکو ضد د سټينگر راکټونه ورکړل شول چې د شورويانو هوايي بريدونه يې يو څه اندازه بې اغېزې کړل او د جنګ اړونکی ټکی شو.

کوردووين نيويارک ته ستون شو او د ۱۹۸۶ کال د فبروري په مياشت کې د شوروي اتحاد په بلنه مسکو ته لاړ هلته يې د باندنيو چارو د وزير شهبوراندزې سره وليدل. شهبوراندزې د هغه د پوهاوي له يادښت سره هوکړه وکړه. په داسې حال کې د مخه کوزيروف او دوست د ژينو په خبرو کې رد کړی و. برسېره پردې شهبوراندزې هغه ته دا هم وويل چې اوس اړينه ده د دغه متن د څلورم سند په اړه خبرې وشي او شوروي اتحاد حاضر دی، د پرېکړې د پلي کېدو ضمانت وکړي. کوردووين په يوې خصوصي کتنې کې دې پايلې ته ورسېد چې پخوا له دې چې د ژينو د اووم پړاو خبرې پيل شي، کارمل به هلته نه وي. ۸۷۸، د همدغې مياشتې په پنځويشتمه د شوروي اتحاد د کمونېست کوند په ۲۷ مه کنګره کې گورباچوف وويل چې شوروي به په نږدې راتلونکې کې خپل پوځ له افغانستان نه بېرته وغواړي. کوردووين د لومړي ځل له پاره په رښتيا باوري شو چې د دې وروسته د پوځ د ايستل کېدلو د مودې ټاکل د خبرو اساسي موضوع ده او دی د پرېکړې په لوري درومي. کوردووين د مارچ په مياشت کې اسلام اباد او کابل ته سفر وکړ. ده په اسلام اباد کې له ضياءالحق سره په ليدنه کې د مخامخ خبرو موضوع ياده کړه او «هغه په ټينګه تاييد کړه، چې پاکستان به هغه وخت دغه خبرې وکړي، چې ټول سندونه بشپړ شوي وي.» ۸۷۹ خو په کابل کې دوست کوردووين ته يوه ليکنه ورکړه چې د هغې له مخې به د پوځ وتل څلور کاله ونيسي، هغه په دې شرط چې د پاکستان او ايران له لورو د نه لاسوهنې ژمنې پوره شوې او په بشپړ ډول تر سره شوې وي. ۸۸۰ خو دا کار ناشونی و او له دې امله به و، چې کوزيروف د کوردووين نه وغوښتل چې دغه ليکنه يوازې د ځان سره وساتي.

کوردووين په نيويارک کې د خپل مرستيال ريموند سومېرېز سره څلورم سند بيا وکوت او نور يې هم سم کړ او يوازې يې د پوځ د ايستلو ځای سپين پرېښود او کله چې کوردووين دا سم شوی متن سفرانچوک ته وښود، هغه وويل چې «عجبه ده چې هغه زموږ متن ته ورته او لا ترېنه ښه دی.» ۸۸۱ سفرانچوک کوردووين ته دا هم وويل چې «تر هغو چې د وخت رښتيني چوکاټ ترلاسه کوې، خپلو خبرو ته دوام ورکړه او دغه کار به ډېر وخت ونه نيسي.» ۸۸۲

کوردووين بيا له امریکا د باندنيو چارو مرستيال ارمه کاسټ سره په ځانګړې توګه وليدل. هغه د نويو انکشافاتو په اړه رضايتم وښود او کوردووين ته يې وويل چې خبرو ته

دوام ورکړه.

په ژينو کې د ۱۹۸۶ کال د می په میاشت کې د خبرو اووم پړاو پیل شو. د خبرو په بهیر کې اعلام وشو چې کارمل د خپل مقام نه گوښه شو چې دا د کوردوویز له پاره یو ښه خبر و. دا ځل هم په خبرو کې د پوځ د ایستل کېدو چې د خبرو اساسي موضوع وه هوکړه ونه شوه. دوست د پوځ د ایستلو موضوع درې نیم کاله او یعقوب خان درې یا څلور میاشتې یادوله. له دې امله د دواړو خواوو په سلا خبرې د همدغه کال د اګست میاشتې ته وځنډول شوې.

کوردوویز ته تر اګست پورې د هر لورې نه ډول ډول نښې ورسېدلې. کورباچوف د دې سره سره چې له یوې خوا یې د افغان لوري سره ستونزې او د بلې خوا د خپل پوځ سره کشالې درلودې، د ۱۹۸۶ کال د جولای په اومه نېټه په ولادي واستوک کې د یوې وینا په ترڅ کې څرګنده کړه چې د شوروي اتحاد شپږ کنډکه به له افغانستان نه وایستل شي. کاکړ وایي چې د دې وینا بل مهم ټکی دا و، چې د افغان سیاسي ځواکونو په ګډون له جور حکومت ملاتړ وښود. له سیاسي ځواکونو نه د کورباچوف موخه په پاکستان کې اسلامي تنظیمونه، پاچا محمد ظاهر او د هغه پلویان وو. کورباچوف په دې اړه له نجیب الله سره هم غږېدلې او نجیب هم د رژیم د ټولو مخالفینو سره د خبرو تیارې وښود.

کوردوویز د ایسلنډ په پلازمینه ریکیاویک کې د رونالډ ریکن او د کارباچوف د ناستې نه هم اورېدلې و، چې د اکتوبر په یوولسمه کېده. که څه هم دا غونډه په اصل کې د وسلو د کنټرول په اړه وه، خو مشاورین یې د افغان کشالې په اړه هم سره وغږېدل. یو څه وروسته د شوروي اتحاد د باندینیو چارو وزیر مرستیال کوردوویز ته وویل چې د افغان کشالې هواری د کورباچوف په اجنډا کې لوړ ځای لري. همدارنګه شپږنادرې چې د نومبر په میاشت کې په نیویارک کې ويلي و چې دا کوښښونه به زر پای ته ورسېږي. ۸۸۳

د ژينو د خبرو نهم پړاو د ۱۹۸۷ کل د فبروري د میاشتې په ۲۵ مه پیل شوې. دا ځل د افغانستان استازي توب وکیل کاوه چې نوی د باندینیو چارو وزیر ټاکل شوی و. وکیل د شوروي پوځ د وتلو موده ۲۲ میاشتې وښودله او کوزیروف هم د هغه ملاتړ وکړ او هغه یې نه بدلېدونکی ګاڼه. خو پاکستان د پوځ د ایستل کېدو موده شپږ میاشتې ښودله. وکیل بله ورځ اتلس میاشتو ته راښکته شو خو یعقوب خان ته دا وړاندیز د منلو وړ نه و او دی یوازې اوو میاشتو ته پورته راغی.

د ۱۹۸۷ کال د دسمبر په نهمه ریکن او کورباچوف په رسمي ډول په واشنگټن کې سره ولیدل. د دې کتنې وروسته کورباچوف د بې وسلې کولو د موضوع په اړه خوښې وښوده او

د افغانستان په اړه يې وويل چې «مور په دغسې پايلې پسې نه يو، چې په کابل کې دې يو شوروي پلوی حکومت وي.» او «مور سياسي پرېکړه کړې ده، چې خپل پوځ «په دوولس مياشتو کې» وباسو. په دغه وخت کې له افغانستان نه د شوروي پوځ ایستل د نړيوال کرکېچ زری گنل کېده.

په پای کې نجيب الله کوردوویز ته وويل چې شوروي او افغانستان هوکړه کړې چې د شوروي پوځ وتل به د ۱۹۸۸ کال د می په ۱۵ مه پيل شي او په نهو مياشتو کې به پای ته ورسېږي. دغه نېټه په دې گڼې جوړه شوې چې د پرېکړې په اړه هوکړه د ۱۹۸۸ کال د مارچ تر پنځلسمې لاسلیک شي.

د ژينو خبرې د همدغه کال د مارچ په دوهمه پيل شوې او د اپرېل تر ۱۴ مې وغزېدلې. خبرې ځکه اوږدې شوې چې دا موضوع گانو: په کابل کې د نوي حکومت جوړول، د وسلو د تناظر اصل، د پولې موضوع او د کابل رژیم په رسمیت پېژندل. خو په پای کې د ژينو توافق لیکونه د ۱۹۸۸ کال د اپرېل په ۱۴ مه د ژينو د ملتونو په ماڼۍ کې د پاکستان د باندینيو چارو وزير زين نوراني او د کابل رژیم د باندینيو چارو وزير عبدالوکيل له خوا او د ضمانت کوونکو هېوادونو په استازیتوب د امریکې د باندینيو چارو وزير جورج شولتز او د شوروي اتحاد د باندینيو چارو وزير شيواردنازي له خوا لاسلیک شول. د دغې غونډې مشري د ملګرو ملتو سرمنشي پریز دي کویلا کوله او کوردوویز هم حاضر و. شوروي اتحاد د همدغو توافق لیکونو سره سم خپل پوځ په نهو مياشتو کې له افغانستان نه وايست او جنرال کروموف د دغه پوځ قوماندان وروستی شوروي و، چې له افغانستان نه ووت.

د ژينو په پرېکړه کې يو د وسلو د تناظر اصل او بل يې د يوه ایتلافي حکومت په اړه و. د تناظر اصل له مخې امریکا مجاهدینو ته او شوروي اتحاد به د کابل رژیم ته وسلې ورکوي يا نه ورکوي. د تناظر اصل دوه اړخونه درلودل چې مثبت تناظر له مخې به دوی خپلو خواوو ته وسلې ورکوي او د منفي تناظر له مخې به يې نه ورکوي. لومړی د مثبت تناظر اصل ومنل شو چې مانا يې د جګړې دوام و. د ۱۹۹۱ کال د دسمبر په ديار لسمه د امریکا او شوروي اتحاد ترمنځ د منفي تناظر اصل ومنل شو، چې د نوي کال د پيل نه به پلي کېږي.

بل پوهاوی دا و، چې د ژينو د پرېکړې څلور واړه خواوې به د کوردوویز د هغو شخصي هڅوسره مرسته کوي چې په افغانستان کې د يوه ایتلافي حکومت له پاره لار هواره کړي. کوردوویز ته د ډېرو افغانانو سره د خبرو اترو نه مالومه شوه چې يوازې

پخوانی پاچا محمد ظاهر د افغانستان له پاره د يووالي سيمبول کېدلی او افغانان پر ده غونډېدلې شي. کورډوویز د همدې موخې له پاره په روم کې د هغه سره وليدل. کورډوویز هغه ته وويل چې دی سمدلاسه لويه جرگه رابللی شي. خو د کورډوویز په وينا محمد ظاهر د دغسې تاريخي کار له پاره نه فزيکي او نه فکري قوت وښود، که څه هم هغه د محمد ظاهر نه په وار وار وغوښتل چې دی کولی شي په خپل هېواد کې د ډېر بد کورني جنګ مخه ونيسي. دی دا هم وايي چې د واشنګټن په مرسته شونې وه چې پاکستان د هغه په خوا واورې. ۸۸۴

کورډوویز بيا په افغانستان کې د سولې له لارې د يوه مشروع پراخ بنسټه حکومت په نامه د يوه انتقالي حکومت تجویز وړاندې کړ، چې هغه به د متنافذينو يوه شورا وي چې د لويې جرگې د جوړولو له پاره لاره هواره کړي تر څو له دې لارې افغانان خپل سياسي برخليک په خپله وټاکي. د جرگې د تجویز څخه نه يوازې د افغانستان خلکو، د قومونو استازو، د ډگر قوماندانانو، ديني عالمانو، روڼ اندو، ټکنوکراتانو او نورو د لويې جرگې د تجویز په ټينګه پلوي وکړه، بلکې د نرمو اسلامي تنظيمونو مشرانو سيد احمد کيلاني، صيبت الله مجددي او شايد مولوي محمد نبي ملاتړ وکړ. شوروي اتحاد او امريکا اول دغه وړانديز په اړه زړه نازړه وو، خو بيا يې په پلوي نظر ښکاره کړ. پخوانی پاچا لا هم د روم نه د باندې نه تلو او ضياءالحق هم مړ شوی و. د پاکستان ای اس ای ادارې هم د تنظيمي حکومت پلوي کوله. خو هسې چې فکر کېده حکمتيار د دغه وړانديز مخالف و. حکمتيار په افغانستان کې د شوروي اتحاد په سفير هم له دې امله کلکې نيوکې وکړې چې په روم کې يې د پخواني پاچا محمد ظاهر سره ليدلي و. دا نيوکې له دې امله وې چې محمد ظاهر په کابل کې شايد د کوم ډول پراخ بنسټه حکومت سروالي ومني. په دغه وخت کې کورډوویز په خپل هېواد ايکوادور کې د باندنيو چارو وزير وټاکل شو او د دغې دندې لاس په سر شو.

د کورډوویز نه وروسته د ملګرو ملتو سرمنشي پېرز دې کويلار په افغانستان کې د يوې ټوليزې سياسي پرېکړې له پاره د لارې د هوارۍ له پاره د عمومي اسمبلې په سپارښتنه د ۱۹۹۱ کال د می په ۲۱ مه يو پلان جوړ کړ چې د هغه له مخې افغانان په انتقالي دوره کې د خبرو له لارې يو پراخ بنسټ حکومت جوړ کړي او بيا دغه حکومت د ازادو او عادلانه ټاکنو ته لار هواره کړي. پېرز دې کويلار د دغه ماموريت له پاره پېنان سيوان وټاکه.

کاکړ وايي چې شوروي اتحاد پخوا له دې چې ټوټه ټوټه شي د افغان مقاومت له يوه پلاوي سره په يوې څرګندونې کې هوکړه وکړه چې په افغانستان کې دې قدرت يوه انتقالي

اسلامي حكومت ته منتقل شي. امريكې خپل سياست هم بدل كړ چې په افغانستان كې د يوې سياسي پرېكړې يا د انتقالي حكومت په اړه د خبرو اترو له پاره د نجيب الله «كوښه كېدل به مخكيني شرط نه وي.» د پاكستان د باندنيو چارو وزير د ۱۹۹۲ كال په پيل كې هم د ملگرو ملتو د پلان ملاتړ وكړ ځكه چې په منځني اسيا كې د نويو هسك شويو خپلواكو جمهوريتونو سره اړيكې نيول په اقتصادي لحاظ د يوه باثباته او ارام افغانستان له لارې شونې او كټورې وې. نږدې ټولو افغان سياسي ډلو د دغه پلان ملاتړ وكړ او دا ځل يوازې عبدالرب رسول سياف مخالفت وكړ. دا يوزيني پلان و چې په افغانستان كې د انتقالي حكومت جوړولو له پاره ټولو كورنيو او بهرنيو ښكېلو خواوو ته د منلو وړ وه او هيله كېدله چې د دې پلان په پلي كېدو سره به د افغانستان له پاره كوم ډول حكومت په پښو ودرول شي او د كورنۍ جگړې مخه ونيوله شي. خو په همدغه وخت كې (۱۹۹۲ اېرېل) په كابل كې د كارمليانو له خوا د نجيب الله پر ضد كودتا وشوه او دغه پلان ناکام شو.

د نجيب الله لنډه واکمني

د كاكړ په وينا د كارمل د كوشه كېدو وروسته د خاد مشر نجيب الله د كوند عمومي منشي وټاكل شو. نجيب الله د كورباچوف او شېوارنادزي په سپارښتنه په يو لړ سمونونو لاس پورې كړ. د كابل په ښار كې يې د شپې گرځېدلو بنديز، چې د ۱۹۸۰ كال راهيسې لكېدلی و، ليرې كړ؛ د بنديتون نه يې د بنديانو په خوشي كولو پيل وكړ؛ د ۱۹۸۷ كال كې يې لويه جرگه راوغوښتله او د اوو كالو له پاره د دولت د مشر په توگه وټاكل شو؛ نوی اساسي قانون جوړ شو؛ د اسلام سپېڅلی دين د افغانستان رسمي دين او سياسي كوندونه ازاد اعلام شول؛ وروسته د افغانستان د خلك دموكراتيک كوند د وطن كوند ونومول شو او خاد په واد (د ملي امنيت وزارت) واړول شو. خو د واد د سر چارواكي د پخوا په شان كارملي خادستان وو.

دی دا هم زياتوي چې د واد نه پرته د افغانستان سياسي نظام د ملي او لبرالي ارزښتونو له مخې له سره جوړ شو، خو وخت ته اړتيا وه چې مالومه شي چې هغه د ژوند په ډگر كې پلي كېږي يا يوازې د كاغذ پر مخ د تورو غونډې پاتې كېږي لكه د ۱۹۸۰ كال اساسي قانون چې يوازې په نوم و. دا مهال هم د ننه په افغانستان او هم په شوروي اتحاد كې وضع په اساسي ډول اوښتې وه. نجيب هڅه كوله چې د خلكو باور وكتي چې د خاد د سروال په توگه ترېنه پردي شوي وو. اول يې د سلطان علي كشمند پر ځای محمد حسن

شرق او وروسته فضل الحق خالقيار د صدراعظم په توګه وټاکه. نجيب الله هغه يو ډول فرعي حکومت چې د کارمل او کشمند له خوا په مزار کې جوړ شوی و او نجيب الله مسير يې سروال و او د افغانستان د دوه ټوټه کېدو پيلامه وه، د منځه يووړ.

نجيب الله د شوروي پوځ د وتلو نه لږ د مخه خپلې نظامي قواوې د کونړ د مرکز نه وايستلې او مجاهدينو ته يې پرېښود. مجاهدينو او په ځانګړي ډول «د مولوي جميل الرحمن پلويانو چې د وهايبانو په نامه يادېدل له خلکو سره د ژغورونکو په شان نه، بلکې د لوتمارو په شان چلند وکړ». ۸۸۵ لږ وروسته مجاهدينو په خېوه کې يوه حکومتي نظامي پوسته ونيوله، «دوه تنه افسران يې چې ورته تسليم شوي وو، ووژل او اټکل يوويشت ښځې يې د جنگ د غنيمت په شان خپلې کړې» ۸۸۶ همدارنګه د رژيم «څلور اويا تنه افسران او سرتيري تورخم ته نږدې د پاکستان چارواکو ته تسليم شول او هغوی دوی د مولوي خالص اسلامي حزب يوه قوماندان ته وسپارل. خو وروسته پولې ته ورځېرمه د افغانستان په سيمه کې د دوی مړي وليدل شول». ۸۸۷ دغسې پېښو د کابل د رژيم اعتبار زيات کړ. د دې وروسته د جلال اباد په ښار بريد په شا ووهل شو چې د رژيم اعتبار يې لا نور هم جګ کړ.

د جنرال تني کودتا

کاکړ وايي دا چې د ملي دفاع وزير جنرال شهنواز تني د جمهور رييس نجيب الله پر ضد يا نجيب الله د تني پر ضد په کودتا پيل وکړ، په يقين سره مالومه نه ده، خو دا د تني په کودتا ياده شوې ده. دغه کودتا په اصل کې د خلق او پرچم د سياليو ټوکېدلې ده. د کارمل په وخت کې که څه هم په پوځ او ملکي اداره کې اميني خلقيان خپل شوي وو، بيا هم خلقي افسران تر پرچمي افسرانو زيات وو او دغه وخت چې رژيم د مجاهدينو سره په جګړې بوخت و، خلقيانو ته يې سخته اړتيا درلوده. له دې امله په دې ټوله دوره کې له جنرال رفيع پرته د دفاع وزير خلقي و. «دغه حال کارمل او ملګرو ته چې رژيم يې خپل ګانه او د شورويانو مخلص مريدان وو، د منلو وړ نه وو.» ۸۸۸ ځکه دوی د مسکو نه په الهام سره چې ک ج ب ته يې په عمل کې ډېر واک ورکړی و، خاد ته ډېر واک او اهميت ورکاوه. خاد دوی ته ځانګړی شو او کارملي پرچميان د خاد د ځانګړو امران شول.

د دغې کودتا په مهال خاد چې وروسته د واد په نامه ياد شو ډېر پياوړی شوی و. رژيم د شورويانو په لارښوونه په راز راز نومونو وسله والې ډلې تنظيم کړې وې. خو د شوروي د وتلو وروسته قومي مليشياوې جوړې چې د ځينو سروالان پرچميان وټاکل شول. دغه

مليشياوې د امنيتي ځواکونو په توگه په دفاع وزارت پورې نه، بلکې په دولتي رياست پورې تړلې وې خو په کړو کې د خاد يا واد تر ولکې لاندې وې چې هغو ته يې وسلې او پيسې ورکولې او دندې يې ورسپارلې. د عبدالرشيد دوستم د ازبکو مليشيا چې اول کنديک، بيا غوند او وروسته ۵۳مه فرقه شوه چې د کابل په گډون د هېواد په ډېرو سيمو کې عمليات وکړل چې په پراخه توگه مرگ ژوبله او لوت يې وکړ. بله غټه مليشيا د سيد جعفر نادري وه. ده ته دنده ورکړه شوه چې د حيرتان نه تر سالنگه پورې د لارې د ساتلو له پاره فرقه جوړه کړي. ۸۸۹

د رژيم بل غټ ځواک خاص کارډ و، چې افسران يې د خاد په شان پرچميان او سرتيري يې د هغوی خپلوان او باوري کسان او زياتره يې دري ژبي د کابل، شمالي او شمالي ولايتونو اوسېدونکي وو. ۸۹۰ دوی ته د دفاع وزارت او څارندوی تر منسوبانو ډېر معاش او لوړه درجه خواره ورکول کېدل او د جنگ نه معاف وو. د دوی دنده د دولتي مقام او حکومتي مهمو ودانيو ساتل وو. پخوا دا کار شورويانو کاوه. د همدغو بېسارو امتيازونو د لرلو له امله وو، چې د دفاع او کورنيو چارو د وزارتونو نه هم د خاد باوري کسان کارډ ته لارل او په دې ډول د کارډ ځانگړي ټولکي بشپړ او په لوی ځواک بدل شو. ۸۹۱ نجيب الله د کابل کارنيزون له غوند نه قول اردو ته جگ کړی و او نبي اعظمي پرچمي يې د هغه قوماندان ټاکلی و. کاکړ وايي چې که څه هم نجيب الله کوبښ کاهه چې د شوروي پوځ د وتلو وروسته د افغان پوځ د لوړ قوماندان په توگه «خپل ځواکونه پياوړي کړي، خو دی د پرچمي توب د کړی نه هېڅ ونه ووت او ملي نه شو» ۸۹۲ او نه يې غوښتل چې د خلقيانو باور وگټي. خلقي لويانو داسې گڼله چې د هغه ټولې هلې ځلې د دوی د خپلو له پاره دي. د کونړ او پکتيا نه يې پوځي ټولکي وايستل خو د کابل نه تر امو پورې غزېدلو سيمو قومي مليشياوې يې نورې هم پياوړې کړې او ان د سازا او سزا په نومونو سټي ډوله ډلې يې په حکومت کې کېدې کړې. دې کار دا گواښ پيدا کړ چې که شورويان ټول افغانستان تر خپل نفوذ لاندې ونه ساتلی شي نو هېواد به ووېشي او شمالي سيمې به خامخا د خپل نفوذ لاندې وساتي. د نجيب الله او شهنواز تتي تر منځ اختلاف دومره ډېر و چې هر يوه پر خپلو پوځي قطعاتو کې افسران په خپله ټاکل او تبديلول. هغه پېښه چې د نجيب الله او تتي تر منځ يې اړيکې لا ترخې کړې، د جنرال ولي شاه د راکټو د لوا قوماندان او د هغه د يو څو تنو ملگرو بندي کول وو، چې کواکې د افغانستان د اسلامي حزب له خوا جذب شوي وو. د نجيب الله مشاور وايي چې «په کابل کې يو شمېر شوروي پوځيانو او ډپلوماتانو گومان کاوه چې د کودتا سناريو په مسکو کې ک ج ب جوړه کړې وه. دغه سناريو له يوې خوا تتي

ک ج ب د کودتا له پاره او د بلې خوا يې په پټه نجيب د هغه د خپلو له پاره د مخکې نه تيار کړی و.» ۸۹۳

د نجيب پلويان وايي چې تنې د همدغې ورځې (۱۹۹۰ مارچ) په سهار له دارالامان څخه چېرې چې د ملي دفاع وزارت پروت و، په ټانک کې بگرام ته په پټه تللی او د هغه ځايه يې کودتا پيل کړه. خو د تنې پلويان دا وايي چې کودتا د دوی نوښت نه وو، بلکې ورباندې وتپل شوه. خو کاکړ وايي چې اقبال وزيرې د تنې کودتا په اصل کې د کې چې بې نوښت کوي. اقبال وزيرې وايي چې شورويان په تېره جنرال کروموف په دې نظر و، چې د شوروي پوځ په وتلو سره د خلق او پرچم تر منځ ټکر کېدونکی دی او دوی يو ځل بيا د هغه د واقعي کولو له پاره غلام دستکبر ته دنده وسپارله او «دستکبر پنجشيري، صالح محمد زېري، نياز محمد مومند، شهنواز تنې او يو شمېر نورو کسانو خلقي افسران يوې بې نتيځې کودتا ته وهڅول.» له ټکر نه موخه دا وه چې خلقي پوځ کمزوری شي، د ملګرو ملتو پروګرام شنېد شي، د نجيب حکومت ناتوان او بيا نسکور شي او دولتي واک کارمليانو او شمالي تلووالي ته انتقال شي او شمالي سيمې د افغانستان نه بېلې او د شوروي اتحاد د دايمي نفوذ لاندې شي. ۸۹۴

د کودتا ناکامي په دغومره لنډه موده کې عجب نه ښکاري ځکه چې دواړه خواوې يو د بل د پلانونو نه ک ج ب له خوا خپرېدل او دوی غوښتل چې خلقيان وڅپي او نجيب کمزوری او بيا يې د کارمليانو له خوا نسکور کړي تر څو د بېنات سيوان د سوېلي پلان شنېد او شمالي افغانستان جلا او بيا يې د مرکزي اسيا په شوروي جمهوريتونو پورې وتړي. په دغه کودتا کې سمدلاسه يو شمېر جنرالان او افسران ووژل شول، په سلګونو نور افسران او ملګري ګونديان بندي شول او کابل لا نور وران شو.

د کودتا په پايله کې د ځواک انډول بدل شو او د لومړي ځل له پاره په پوځ کې پرچمي پله درنه شوه او نجيب الله او ملګرو يې د خلقيانو نه په غچ اڅپستلو پيل وکړ، که څه هم اسلم وطنجار د دفاع وزير او راز محمد پکتين د کورنيو چارو د وزير په توګه وټاکل شول. برسېره پر دې قومي مليشياوې نورې هم پياوړې شوې. حسن شرق ليکي «د تنې د نوم لاندې د اردو د پاکونې، کمزوری او تیتولو وروسته د شمال او د هرات د ولايت قومي قوماندانان تر غاښو وسله وال کړل او تر سره پورې يې په پيسو کې ډوب کړل او د قومي ځواکونو سيځې اړيکې د شوروي جمهوريتونو د ايالتونو سره د ډاکټر نجيب په امر جوړې او د پاسپورټ پرته يې د دوی تګ راتګ شوروي اتحاد ته برابر کړ.» ۸۹۵ په دغو کړو سره نجيب الله د بېرک کارمل ډله پياوړې کړه.

د نني د خپلو وروسته د نجيب الله ستونزې زياتې شوې چې په پای کې يې دی د قدرت نه وغورځوه. د مجاهدينو له خوا په ۱۹۹۱ کال د مارچ په ۳۱مه د خوست د فرقې او د جون په ۲۱مه په تخار کې د خوجه غار پوځي قطعې نيول. په شوروي کې د گورباچوف پر ضد د کودتا شنېدل، د روسانو له خوا کابل ته د کارمل بېرته لېږل، د شوروي اتحاد د باندینيو چارو وزارت او د امريکې د بهرنیو چارو د وزارت تر منځ د اگست د میاشتې هوکړه چې د هغې له مخې به يې حکومتونه د نوي کال له پيل نه افغان مجاهدينو او کابل حکومت ته وسلې نه ورکوي، همدغه کال د دسمبر په ۲۵مه پر افغانستان باندې د شوروي اتحاد د يرغل نه پوره دولس کاله وروسته په خپله پنځلس توپې شو او فيدرالي روسي ولسمشر د نجيب الله په حکومت مرسته بنده کړه او د يلتسن حکومت د نجيب الله د حکومت پر ضد عمل کاوه.

دا هغه وخت و، چې د افغانستان له پاره د ملگرو ملتو ځانگړې استازي بينان سيوان د افغانستان د کښالې له ټولو ښکېلو خواوو سره هوکړه کړې وه، چې د ۱۹۹۲ کال د اپرېل په ۲۸مه به د قدرت لېږد پلي کېږي. په دې ډول چې لومړی به پنځلس کسيز کميسيون ته واک ورکول کېږي او هغه به له هغې نېټې نه ۴۵ ورځې وروسته د ۱۵۰ مجاهدينو، قوماندانانو او د نفوذمنو افغانانو نه د ملگرو ملتونو تر لارښوونې لاندې په ژينو يا انقره کې يوه جرگه جوړوي، چې هغه يو موقتي حکومت په پښو ودروي. نجيب الله د مارچ په ۱۸مه د بينان سيوان سره په رسمي ډول منلې وه چې د دغه کميسيون په جوړېدلو سره به له ولسمشرۍ ځان گوښه کوي. خو کارملي گوندیان د خپلې راتلونکې په اړه په ژور ډول اندېښمن شول. بيا دوی د بينان سيوان د پلان د مخنيوي په موخه د نجيب الله پر ضد په مزار کې د شمال ايتلاف په نوم دسيسه پلې کړه او نجيب الله د واک نه وغورزول شو او د بينان سيوان پلان شنې شو.

د نجيب الله د واکمنۍ پای

د جنرال نني په پرار او د خلقيانو په خپلو سره پرچميان د لومړي ځل له پاره په حکومت او گوند کې يوازیني لوبغاړي شول. کارمل د نجيب الله نه د غچ اڅېستلو په موخه چې د گورباچوف په مټ يې د ده مقامونه نيولي وو، گوښښ کاوه چې د تخت نه يې کوز کړي. د نجيب په وړاندې بريالی کودتا د کارمليانو وه، چې لومړني کارونه يې جنرال نني اعظمي تر سره کړي و. که څه هم د واد مشر يعقوبي د نجيب الله پلوي و، خو د کارملي خادستانو په وړاندې څه نه شو کولی. د پوځ نوی لوی درستيز جنرال اصف دلاور و، چې

نجیب الله د اعظیې په سپارښتنه په دغه مقام گومارلی و. خو هغه هم کارملي و. د وطن کوند هم د کارملیانو د نفوذ لاندې و. کارملیانو د ازبکي ملیشیا سروال جنرال عبدالرشید دوستم په سروالی د افغانستان مرکزي حکومت د پښو وغورځاوه. دا وخت کېدای شو چې د هندوکش اخوا سیمې د شورویانو د پلان له مخې د روسانو د دایمي نفوذ لاندې تللې وای خو دغه دسیسه د لنډ وخت له پاره د تنظیمي حکومت له خوا شنډه شوه. که څه هم د بینان سیوان پلان هم ورسره له منځه لاړ.

دا په اصل کې کې چې بې وه چې دغه دسیسه یې تنظیم او د کارملیانو او ستمیانو او د رباني- مسعود او د شمالي ایتلاف له لارې یې پلي کوله. فقیر محمد ودان د نجیب له خولې وایي چې په مزار کې د روسې کونسل یو ځای بل ځای دومره سفرونه کول، چې کابل یې اندېښمن کړی و. نجیب الله په دې اړه د روسې سفیر ته اخطار ورکړ، چې له دغو کړو نه لاس واخلي. برسېره پر دې د حارث شاه په نامه د دوشنبې د اطلاعاتو رییس چې په بلخ کې یې د مشاور په توګه دنده سرته رسوله، د شمال ایتلاف د مشرانو سره د ارتباطي غړي په توګه فعال و. دغه وخت دوستم په کابل کې و او د نجیب الله نه یې شبرغان ته د تک اجازه غوښته. د دې سره سره چې نجیب الله پرې باوري نه و هغه یې د وطن د گوند د سیاسي دفتر د ځینو غړو په منځګړتوب شبرغان ته د تلو اجازه ورکړه. خو دی چې جوزجان ته ورسېد د حیراتان د لوا د یاغي قوماندان جنرال مومن خوا یې ونیوله، جنرال مومن لا د مخه د فرید مزدک په تلیفوني دستور له دې نه سرغړونه کړې وه، چې کابل ته لاړ شي. دوستم د نجیب الله نه دا غوښتنه هم وکړه چې جنرال اڅک او یو شمېر نور قوماندانان، چې ټول د مرکزي حکومت ټینګ پلویان او د غوڅ عمل خاوندان وو او دوستم یې د وطن بشپړتیا ته گواښ باله، له مزار نه کابل ته وغوښتل شي. نجیب الله د گوند د اجرایه شورا په وړاندیز همدغسې وکړل، خو له دوستم نه یې هم وغوښتل چې کابل ته راشي، خو دوستم له دغه امر نه د محمود بریالي، نجم الدین کابوی، فرید مزدک او سید اکرام پیکر په لمسون سرغړونه وکړه. زر وروسته دوستم له نجیب الله نه وغوښتل چې د «افغانستان شمالي ولایتونه د جمهوري افغانستان د فېدراسیون په توګه وپېژني او اعلان یې کړي.» ۸۹۶ دا د شورویانو له خوا د افغانستان د ټوټه کولو د پلان سره سمون کاوه. نجیب الله د امنیت د خوندي کولو له پاره جنرال اڅک له دوو نورو جنرالانو سره مزار ته واستوه. خو د مرکزي شورا په اجرایوي ډله کې دسیسه کوونکو نجیب الله ته وویل چې اوس د بینان سیوان پلان د پلي کېدو په درشل کې دی او په مزار کې به پوځي عملیات د هغه په مخه کې خنډ شي او که نبي اعظیې هغې خوا ته ولېږي، دوستم به د فېدریشن له

غوښتنې نه تېر شي. دغه نظر ومنل شو، جنرال اخک او نور بېرته وغوښتل شول او جنرال اعظمي مزار ته واستول شو. په دې توګه نجيب الله د دسيسه کوونکو د لاس نانځکه کړې.

که څه هم اعظمي نجيب الله د دې له پاره مزار ته لېږلی و چې په مزار کې امنیت ټينګ کړي خو ده په مزار کې د دسيسه کوونکو پلان په ځانګړي مهارت پلي کړ. لومړی يې د دوستم مليشاوو ته شونې کړه چې مزار ونيسي او ورپسې ځان کابل ته ورسوي او امنیت په کې ودولو کې ونډه واخلي.

نجيب الله هڅه کوله چې د کابل وضعه ارامه وساتي او د دغه مقصد له پاره له اطراف نه پوځي ټولګي راوغواړي. په دغه لړ کې يې هغه پوځي ټولګي کابل ته وغوښتل، چې مخکې يې مزار ته استولي و. دسيسه کوونکو نجيب الله ته وويل چې دوی دوستم قانع کړي چې هغه پوځي ټولګي چې د دوستم سره بنديان دي، ازاد کړي او بېرته يې کابل ته راواستوي. په پای کې د دوی د بېرته راوړلو له پاره ۱۸ الوتکې ولېږلې شوې او کابل ته د حکومتي پوځي ټولګيو پر ځای د دوستم مليشاوې راوړل شوې او د کابل هوايي ډګر کنټرول يې په خپل لاس کې ونیوه.

بله ورځ غلام فاروق يعقوبي د امنیت وزارت وزير په خپل دفتر کې د فريد مزدک د ورور يارمحمد له خوا وژل کېږي او هم جنرال عبدالباقي د همدغه وزارت د پنځمې څانګې سروال ووژل شو. نجيب الله پوه شو چې ژوند يې په خطر کې دی نو بيا سيخ د ملګرو ملتو دفتر ته لاړ او د هغه ځای نه يې په تليفون کې د بينان سيوان څخه چې دغه وخت په اسلام اباد کې و، وغوښتل چې په بېرته ځان کابل ته ورسوي. هغه د سهار په يوه بجه کابل ته راوړسېد خو د دوستم مليشاوو د الوتکې نه د وتلو اجازه ورنه کړه. بينان سيوان د اعظمي په مرسته نجيب ته وروستل شو تر څو نجيب د ځان سره په الوتکه کې د افغانستان نه وباسي. خو د ملي ګارډ يوه جنرال عبدالرزاق د نجيب الله د تللو مخه ونیوله. نجيب الله اړ شو چې د خپل ورور سره يو ځای د ملګرو ملتو دفتر ته ځان ورسوي او هلته د مېلمه بندي په توګه پاتې شو. په دې توګه بېرک کارمل د نجيب الله نه غچ واخېست.

په کابل کې کارمليانو او په مزار کې دوی ته اخلاصمنډو قومي مليشاوو او نورو په دغه حساس وخت کې چې بايد د بينان سيوان پلان د پلي کېدو په درشل کې و، د نجيب الله پرضد د ک ج ب په مرسته کودتا تنظيم کړه، د نجيب الله واکمني پای ته ورسېده او د بينان سيوان پلان يې ناکام کړ.

د نجيب الله په گوښه کېدو سياسي تشه منځ ته راغله. عبدالوکيل د احمدشاه مسعود سره په جبل سراج کې او محمد رفيع په لوگر کې له حکمتيار سره وکتل. هغه مهال چې طالبانو د ۱۹۹۶ کال د اکتوبر په مياشت کې کابل ونيو نجيب الله او د هغه ورور د اريانا په څلور لاري کې زندی شول.

څلورويشتم څپرکي

کاکړ او افغان اسلامي تنظيمونه

کاکړ وايي چې په افغانستان کې د نورو اسلامي هېوادو غوندې د سياسي اسلام غورځنگ د ټولې د عصري کېدلو او مدني کېدلو په وړاندې غبرگون و، چې د محمد داود د صدراعظمۍ په دوره کې پيل شوی او د قانوني پاچايۍ کې ښه پراخ شو. په دواړو دورو کې اقتصادي، ټولنيزې او پوهنيزې پروژې پرمخ بيول کېدلې چې په پايله کې يې افغان ټولنه له دوديز حال نه د عصري کېدلو په لور روانه کړه. په دغه انتقالي پړاو کې د تعليم کړو افغانانو په ليکو کې له يوې خوا داسې ځوانان هم هسک شول چې د شوروي او چين د کمونستي گوندو د ادبياتو نه اغېزمن وو او د بلې خوا نور يې اسلام پال ځوانان وو، چې د عراق د ابن تيميه د فکرونو نه اغېزمن و او غوښتل يې چې په افغانستان کې سوچه اسلامي نظام پر پښو ودروي. په دې توگه افغان ټولنه د متضادو ايډيالوژيکي اندونو ډگر شو، چې پر افغان سياست او د افغانانو پر ژوند يې ژوره اغېزه وکړه.

د مخه مو يادونه وکړه چې يو شمېر تعليم کړي ځوانان په ځانگړې توگه د قانوني پاچايۍ په ازاد چاپيريال کې د مارکس او لينن له فکرونو نه اغېزمن شوي او مسکو پلو غورځنگ يې تنظيم او پياوړی کړ. داسې هم يو شمېر نور د اسلامي سوچوالو تر اغېز لاندې تللي او په اسلامي تنظيمو کې ننوتلي وو. کاکړ وايي چې د افغانستان د شلې پېړۍ د دوهمې نيمايي تاريخ په زياته اندازه د دغو متضادو خوځښتونو ترمنځ د مقابلې داستان دی.

افغان اسلامي غورځنگ د ټولې او دولت د بيا تنظيم په برخه کې د عراق د ابن تيميه

(۱۳۲۸-۱۲۶۸) فکرونو او کړو څخه اغېزمن و، چې اساس يې قران مجيد او نبوي ويناوې او د مدينې امه يا لومړنی سياسي اسلامي ټولنه يې سرمشق وه. ابن تيميه په هغه وخت کې چې مغول په اسلامي نړۍ کې لاس بري وو او د شرعيت پر ځای يې د خپل مغولي قانون ياسا نه کار اخېسته، چې د هغه يانې ياسا له مخې د نظام ستر واکمن د چنگېز خان له کورنۍ نه و، پر مغولو د «کاپر» او «مشرکو» حکم وکړ، که څه هم دوی په دغه وخت کې مسلمان شوي وو. ابن تيميه نړۍ د دارالحرب او دارالاسلام تر منځ وېشلې وکېله او د مرتدانو او کاپرانو پر ضد يې غزا روا باله. ۸۹۷

د اسلامي گوندونو تاريخچه

د افغانستان د اسلامي حرکت بنسټ ايښودونکي له اطرافي سيمو څخه وو، چې په کابل کې يې په عصري تعليمي موسسو کې زده کړه کړې وه؛ ځينو يې لوړې زده کړې په بهرنيو هېوادونو کې سرته رسولې او بيا د کابل پوهنتون د شرعياتو په پوهنځي کې يې بسوونه کوله. دوی د قانوني پاچايي لسيزې د ډموکراسۍ او ازادې هوا کې موقع ترلاسه کړه چې غونډې وکړي، ټولني جوړې کړي او فکرونه خپاره کړي. په دغې هوا کې لومړی ملي او کين اړخي گوندونه تنظيم او فعال شول او بيا اسلامي حرکت د هغو په وړاندې هسک شو. د افغانستان اسلامي جمعيت په ۱۹۵۷ کال کې د پغمان په ابو حنيفه مدرسه کې د غلام محمد نيازي او نورو له خوا يې بنسټ کېښودل شو. دا په واقعيت کې په افغانستان کې د سياسي اسلام د حرکت پيل و.

نيازی تازه د قاهرې د الاظهر په پوهنتون کې د لوړو زده کړو د سرته رسولو نه وروسته وطن ته راستون شوی و. سياسي اسلامپالو تر ۱۹۶۹ پورې د عمل ډله ټاکلې وه، چې مشر يې د امير په نامه نيازی و. دوی په قانوني پاچايي لسيزې کې ډېر فعال شول او په ۱۹۷۳ کال کې يې يوه پټه شورا جوړه کړه، چې مشر يې بهان الدين رباني او نهايي مشر يې نيازی و. نيازی د شرعياتو د پوهنځي سروال و او په غونډو کې يې برخه نه اخېسته. د دوی نوم اسلامي جمعيت شو خو په خلکو کې د اخوان او اخوانيانو په نامه ياد شول. دغه نوم د پاکستان له جماعت اسلامي سره اړخ لگوي. د افغان سياسي اسلامپالو د ټولني دولتي نظام او ډموکراسۍ په اړه د سيد قطب او مودودي له نظريو نه اغېزمن وو. دوی په يوه خپرونه کې «مور څوک يو او څه غواړو؟» ويل شوي چې زموږ موخه دا ده چې افغان خلک د ظالمانو د منگولو نه وژغورل شي او په دين کې نوی غورځنگ راورل شي. د مسلمان ځوانانو مشر گلبدین حکمتيار په ځانگړې توگه څرگنده کړې وه چې د دغه

حرکت موخه د واکمنې ډلې نسکورول او اسلامي نظام يې په ځای راوستل دي، د دې له پاره چې د ټولني سياسي، اقتصادي او ټولنيز اړخونه اسلامي کړي. مولف کلزرک ځدران لا ويلې و چې «له دې امله چې اسلام... تر قيامت پورې تکميل دی له اسلام نه وتلی بل هر ډول قانون، رسم رواج [او] طرز عمل او تخيلات د اسلام په محتوی کې نه ځاييږي.» ۸۹۸

د مخه مو يادونه کړې وه چې د محمد داود په ولسمشرۍ کې د کودتا په تور د نيازي په کلونو يو شمېر بنديان شول او نور يې پېښور ته لارل او له هغه ځای نه يې د پاکستان په هڅونې او مرستې په ۱۹۷۵ کال کې د افغانستان په ځينو ولايتونو کې پاڅونونه وکړل. خو حکومت هغه ټول وځپل او دوی بېرته پېښور ته پر شا شول. په پېښور کې دوی نه يوازې د خپلې ناکامۍ له امله بې اهميته شول بلکې په خپلو کې سره وران او بې اتفاقه شول. په اول سر کې اسلامي جمعيت دوه ټوټې شو. رباني د جمعيت امير پاتې شو، چې د مودودي په شان د تشدد او سختۍ پلوی نه و. د اسلامي حزب په نامه يو بل گوند ترې ووت چې مشر يې د لنډې مودې دپاره قاضي محمد امين وقاد او وروسته گلبدین حکمتيار شو. اسلامي گوند تر جمعيت نه سخت دريځی و، په مرامنامه کې يې ويل شوي دي چې «د حکومت اصلاح د ټولني او داسې هم د فرد د اصلاح له پاره مخکينی شرط دی.» ۸۹۹ دا هم په کې ويل شوي چې په افغانستان کې «غير اسلامي فکرونه او تمرینونه بايد نه وي» ځينې لا په دې عقیده وو، چې حکمتيار له پيل نه نظر دې ته چې د افغانستان د خپلواکۍ له پاره وجنگيږي، د قدرت کتلو له پاره جنگېده. مولوي محمد يونس خالص د همدغې موضوع پر سر ترېنه بيل شو او د اسلامي حزب په نامه يې يو بل گوند جوړ کړ. د هغه په عقیده د افغانستان خپلواکي تر قدرت نيولو نه مهم و. ۹۰۰

شوروي يرغل د دې لامل شو، چې په عمومي ډول د افغانستان اسلامي حرکت او په ځانگړې توگه اسلامي تنظيمونه د ولسواکو او وطنپالو گوندونو په تاوان د پاکستان د ای اس ای له لارې په ځانگړې توگه د امريکې او عربستان په پيسو او وسلو پياوړي او د جگړې او سياست په ډگر کې مخکېښان وگرزول شي. په دغه وخت کې دغه تنظيمونه په پېښور کې ځای پر ځای وو. د اسلامي گوند د گلبدین په مشرۍ، د اسلامي جمعيت گوند د رباني په مشرۍ او اسلامي گوند د خالص په مشرۍ برسرېره د اسلامي انقلابي حرکت د مولوي محمد نبي په مشرۍ، ملي اسلامي محاذ د پير سيد احمد گيلاني په مشرۍ او د ملي نجات جبهه د صبيعت الله مجددي په مشرۍ تنظيم شوي وو. درې وروستي د ۱۹۷۹ کال په بهير کې جوړ شوي وو.

د تنظيمونو د دېروالي او د هغو د مشرانو د بې اتفاقۍ نه افغان کډوال او جهادي

قوماندانان او په عمومي ډول د يرغلگرو مخالف افغانان ناراضي او اندېښمن وو. د سعودي عربستان حکومت لا پر تنظيمونو فشار راوړ چې سره يو موټی شي او د هغو سره يې اتحاد د مرستې يو شرط وټاکه. دوی بيا د ۱۹۸۰ کال په مارچ کې د افغانستان د ازادۍ له پاره د اسلامي اتحاد په نامه سره يو موټی شول. عبدالرسول سیاف (وروسته عبدالرب رسول سیاف) يې مشر، صیعت الله مجددي يې مرستیال او مولوي نصرالله منصور يې منشي غوره شو. د اتحاد نه گوندونه يو پر بل پسې ووتل او اتحاد سیاف ته پاتې شو او په دې توگه د اسلامي اتحاد په نامه يو بل تنظيم ډگر ته راووت. له هغه وروسته درې اعتدالي او څلور سختدريځي تنظيمونه په پېښور کې ځای په ځای وو. د دوی يوالی ستونزمن و. ډگروال يوسف ليکي: «زه په دې فکر شوم چې په سياسي سطح کې له کوم ډول اتحاد نه پرته په نظامي ډگر کې سمونونه پلي کېدل نه شي». په دې اړه له تنظيمونو سره خبرې پيل شوې، خو دی وايي چې «ما دغه مشران يوازې بيل بيل ليدلی شول. دوی نه غوښتل په يوې کوټې کې له يوه بل سره کېښي». دی دا هم وايي چې «ما له دغسې کسانو سره خبرې کولې که څه هم رښتيني مسلمانان وو، که څه هم جهاد ته ژمن وو، په شخصي- رقابتونو، تعصوبونو او نفرتونو تحریک کېدل چې زياتره وخت يې د هغوی نظرونه خپرول او پر کړو يې اثر کاوه. ۹۰۱.

دا لامل به وي چې له دوی نه هېڅ يو نه په هغه وخت کې او نه وروسته د تنظيمي واکمنۍ په دوره کې ملي مشر شو. اساسي اختلاف د اعتدالي او سختدريځو تر منځ و. اعتدالي تنظيمونه هم ملي او هم اسلامي وو خو سختدريځي د ملي ارزښتونو په ټينگه مخالف او د اسلامي ارزښتونو ټينگ پلويان وو. اعتدالي تنظيمونو پخوانی پاچا غوښته او سختدريځي يې په ټينگه مخالف وو. دوی د دې پروا نه کوله چې افغانان يوازې د هغه تر سيوري لاندې يو موټی کيدای شي. لا مهمه دا ده چې د سختدريځو تنظيمونو مشرانو د جهاد ډپلوماسي اړخ ته اهميت نه ورکاوه، په داسې حال کې چې د افغانستان موضوع په بېساري ډول سياسي او نړيواله شوې وه. د امريکې د باندنيو چارو يو چارواکی وايي چې «د دغه ښار [پېښور] خلک سياسي خوا ټينگه نه نيسي. دوی فکر کوي چې که موږ رښتيني وسلې ترلاسه کړي، هغه به سياسي کشالې هوارې کړي، خو د تولې شلې پېړۍ تجربه ښي چې هر گوربلايي جنگ په سياست سره ميدان گټلی دی.» بيا ده وړاندیز وکړ چې د مقاومت په مشرانو باندې بايد فشار واچول شي، چې «د خبرو له پاره يو پياوړی شريک ترېنه جوړ شي.» ۹۰۲ له دې امله په ۱۹۸۴ کال کې په خپله د ای اس ای مشر سختې هلې ځلې پيل کړې چې تنظيمي مشران د کوم ډول رسمي اتحاد په اړتيا قانع کړي. په دې منظور

د ای اس ای مشر په اونيو اونيو د دغو مشرانو سره خبرې وکړې، چې سره جوړه وکړي، بیا د عربستان د پاچا زوی ترکي، د سعودي عربستان د استخباراتو سروال چې هغه هم د جهاد له پاره د خپل حکومت د پیسو د مرستې څارنه کوله، د دغې کښالې د هوارولو له پاره راوغوښتل شو، خو دغو کوښښونو هېڅ پایله نه درلوده. په پای کې په خپله ضیاء الحق لاسوهنه وکړه او سر په سر دېرې غونډې وشوې. کله چې هغو پایله نه درلوده نو د ضیاء الحق زغم پای ته ورسېد او دستور یې ورکړ چې په ۷۲ کړيو کې دې په دې اړه یوه گډه څرگندونه وکړي.

له دې امله و چې په ۱۹۸۵ کال کې د اوو تنظیمونو تر منځ د افغانستان مجاهدو اسلامي اتحاد په نامه اتحاد ومنل شو. د افغان اسلامي تنظیمونو دغه اتحاد د تنظیمي مشرانو په خوښه او نوبت نه، بلکې د پاکستان په نوبت او قوت وشو. دا د خلقیانو او پرچميانو هغه اتحاد ته ورته و، چې په ۱۹۷۷ کال کې د شوروي اتحاد په نوبت او زور شوی و. دا هغسې یو اتحاد و چې په هغه کې هر تنظیم کوښښ کاوه چې خپل شتون په کې وساتي تر څو وسلې، پیسې او نور اړین شيان ترلاسه کړي. ځنګه چې دا ملي اتحاد نه پلکې یوازې د اوو اسلامي تنظیمونو اتحاد و په دې چې هر یوه تنظیم ځانله مرکز، دارالانشاء او کمیټې لرلې. ضیاء الحق غوښتل چې افغانستان د شوروي پوځ د وتلو نه وروسته د پاکستان تر نفوذ لاندې هېواد وي. پاکستان لا د مخه د پېښور او پېښین ممثلي جرګې شنډې کړې وې تر څو د ملي اتحاد مخه ونیسي. هنري برادشیر لیکي: «پاکستان شاید رښتیني اتحاد هېڅ نه غوښته، شاید په دغه دلیل چې په خاوره کې به یې یو پیاوړی ځانګړی تشکیل د پښتونستان د حرکت له پاره یوه نوې بڼه شي، یا د فلسطین د ازادۍ موسسې په شان شي چې په اردن او وروسته په لبنان کې پر ځان ډاډه یو بیل ځواک شو.» ۹۰۳ داسې د دوی ډېر پیاوړی کوونکي سعودي عربستان هم غوښتل چې «د خپل سني اسلام ارتودوکس وهابې شکل تبلیغ وکړي.» ۹۰۴

کاکړ وايي چې د پاکستان چارواکو د افغان جهاد سياسي خوا ځانله منحصره کړه او تنظیمونه یې یوازې د جګړې په چارو کې سره متحد کړل. د تنظیمونو مشرانو د پاکستان مشرانو ته د خپلو چارو او ستونزو راپور ورکاوه، ښي چې دوی د افغانستان په چارو کې د پاکستان د چارواکو مشري منلې وه. کاکړ زیاتوي چې همدغې ډاډینې له امله به و چې ضیاء الحق له خپل ناڅاپي مرګ نه لږ څه د مخه امریکایي مولف سلیک هرډسن سره په یوې مرکې کې ويلي و چې له اول نه د هغه موخه د کمونستي نظام د منځه وړل او پر ځای یې د یوه لاس لاندې رژیم پر پښو درول او په سوويلي اسيا کې د «ستراتیجیکي بیا صف

جورول» وو. په دې اړه د ضياء خپل الفاظ دا دي: «مونږ د دې حق خپل کړی چې هلته [په افغانستان کې] يو ملگری رجيم ولرو، مونږ د يوه مخکيني دولت په توګه خطر ومانه او مونږ به پرې نه ږدو چې وضع د پخوا په شان وي چې هلته به د هند او شوروي نفوذ او زمونږ په خاوره ادعاګانې وي. دا به يو رښتيني اسلامي دولت وي، د اسلامي احيا يوه برخه چې يوه ورځ به د شوروي اتحاد مسلمانان هم په کې شامل وي. ته به يې بيا وويي» ۹۰۵

چارلز ولسن د امريکې د استازو مجلس غړی چې ډېر کوشنيس يې کړی و چې امريکا مجاهدينو ته د سټنکر راکټونو په کېدون وسلې ورکړي او په خپله هم پکتيا ته د مجاهدو عملياتو ليدلو له پاره تللی و، په اسلام اباد کې له ضياء الحق سره په خبرو کې دې پایلې ته رسېدلې و چې «... ضياء نړی د هندوانو او مسلمانانو تر منځ د جنګ ډګر ګاڼه او فکر يې کاوه چې پر حکمتيار باندې حساب کولی شي، چې د هند په مقابل کې د پان اسلامي اتحاد په چوکاټ کې کار وکړي.» هغه دا هم ويلي و چې ضياء دغسې نقشه ورته ښودلې وه، چې په کې د دغسې کانفېرېشن طرح وه، چې په سر کې به «پاکستان او افغانستان او وروسته منځنی اسيا په کې شامله وي.» ۹۰۶ د همدغه فکر له مخې و چې ای اس ای سخت دريځو تنظيمونو او په ځانګړي ډول د حکمتيار ګوند ته ډېرې وسلې ورکولې. په پېښور کې د سي ای اي (CIA) ځانګړي امر م. بېرډن وايي چې په ۱۹۸۶ کال کې د ای اس ای (ISI) مشر اختر عبدالرحمن د هغه په مخ کې په يوې غونډې کې چې د تنظيمونو ټول مشران په کې حاضر وو، د نويو وسلو په اړه په دغو الفاظو مخاطب کړل: «که له دغو وسلو څخه کومه يوه د دښمن لاس ته ورغله، يا زه واورم چې هغه پر نورو خرڅه شوه، زه به تاسو هر يو مسؤل وګنم» ۹۰۷

خو تنظيمي لويانو د ای اس ای په اشاره بې شمېره افغانان ترور کړل. ترور شوي ملي او زياتره تعليم کړي افغانان وو، چې د سياسي اسلام پالو مخالف وو. په دغه ډول دغه ترور په اصل کې سياسي او عقيدوي وو او هغه ډېر د مخه پيل شوی و.

په دوی کې ډېر د نامه او د نفوذ خاوندان افغانان لکه جنت خان غروال، عزيزالرحمن الفت، پوهاند ډاکټر سيد بهاولدين مجروح، پوهندوی ډاکټر نسيم لودين، ډاکټر سعادت شګيوال، استاد زاګر، عبدالرحيم څښ زی، حاجي عبدالطيف، ملا نسيم اخوندزاده، ډاکټر قيوم رهبر، محمد ولي کروخېل، جنرال عبدالحکيم کټوازی، عبدالاحد کرزی او نور. دا په واقعيت کې د نامه او د نفوذ منو د وژنو دوام و، چې خلقيانو او پرچميانو په کابل کې پرې پيل کړی و. په کابل کې ملي، ډموکرات او لبرال افغانان د انقلاب ضد په نامه او په پېښور کې له سياسي اسلام سره د مخالفت په پلمه د منځه وړل کېدل.

په پایله کې هغه تعلیم کړې معتدله ډله چې له وطنپالو، خپلواکي پالو افغانانو نه جوړه وه او په اداره او سیاست کې د پوهاوي، زغم او ایتلاف پلویان وو او د ملي کښالې په هوارولو کې یې اغېز او خدمت کولی شو، په کابل کې د چپي افراطیانو او په پېښور کې د مذهبي سختدریځو له خوا وځپل شول. د دغه وژنو سرچینه د شوروي اتحاد ک. ج. ب او د پاکستان ای اس ای وه. دواړو د افغانستان لاندې کولو ته سترګې نیولې او په دې اړه یې دسیسې کولې. دواړو د خپلې خوبې افراطي ډلې پیاوړې کولې، د دې له پاره چې افغان ولس د دوی سرمشرۍ منلو ته آماده کړي. د همدغه چلند بله خوا د افغان ملي هویت او د ملي خپلواکۍ د منځه وړل وو. په کابل کې کارمل غوښتل افغانستان د شوروي اتحاد شپارلسم جمهوریت کړي او په پېښور کې ځینو سیاسي اسلام پالو ویل چې «که په دغو دواړو هېوادونو [افغانستان او پاکستان] کې اسلامي نظام غلبه وکړي، مونږ غوره گڼو چې زموږ تر منځ کېدې پولې له منځ نه یووړل شي او دواړه هېوادونه سره یو موټی شي.» ۹۰۸

افغان اسلامي تنظیمونه او پاکستان

کاکړ وايي چې د محمد داود په ولسمشرۍ کې د کورنیو چارو وزیر فیض محمد خپل پرچمي چارواکي د اخوانیانو ځپلو ته هڅول او ډېر یې بندي هم کړل. د دوی له ډار نه د ننګرهار د نجم المدارس استاد فضل هادي شینواری پېښور ته واوښت. دغه وخت بوتو د پاکستان لومړی وزیر و. دی زیاتوي چې شینواری هلته د صوبه سرحد (پښتونخوا) گورنر محمد اسلم خټک له خوا چې یو وخت په کابل کې د پاکستان سفیر و، د سرحدي پوځونو لوی مفتش او وروسته د کورنیو چارو وزیر جنرال بابر ته وپېژندل شو. دوی دواړه سره جوړ راغلل او منظم یې سره لیدل. شینواری وايي چې «یوه ورځ بابر راته وویل چې د داود حکومت به په یقین سره نسکور شي. ... ده رانه وغوښتل چې د داود دوستان او دښمنان ورته وښییم. موږ خپله ستراتیجی جوړه کړه او پرېکړه مو وکړه چې ځینې کسان له افغانستان څخه وغوښتل شي.» ۹۰۹ په اوله جوبه کې اته کسان د مولوي حبیب الرحمن، کلیدین حکمتیار، برهان الدین رباني، محمد کلاب ننګرهاری او احمدشاه مسعود په گډون راغلل او وروسته شپېته تنه نور راواوښتل چې په هغو کې مولوي محمد یونس خالص او انجنیر احمدشاه هم وو. دوی ټول د پاکستان حکومت په لگښت په پېښور کې د بېرسک چوک کې ځای پر ځای شول. دی دا هم وايي چې د افغان اخوانیانو پاکستان ته د ورتګ دغه لړۍ روانه او د «بابر په وخت کې اته سوه کسان د اټک په حصار کې تر روزنې لاندې ونیول شول.» ۹۱۰ دوی په ۱۹۷۵ کال کې د بوتو د حکومت په

هڅونې او مرستې د خپل وطن په ځينو ولايتونو کې وسله وال پاڅونونه وکړل. خو افغان حکومت هغه ټول وځپل او دوی بېرته پېښور ته پر شا شول. دوی هلته د شوروي تر يرغل پورې د ای اس ای او ځينو اسلامي تنظيمونو په مرسته د بې نومی په حالت کې ژوند کاوه. دوی د شوروي اتحاد په يرغل سره په غورځنگ راوستل شول. دوی د شوروي يرغلگر پوځ او د هغه د لاسپوڅي رژيم په وړاندې د نړيوالو په مرسته په يو پياوړي ځواک بدل شول. په دې ډول دا د شوروي اتحاد يرغل و، چې د اسلامي تنظيمونو د پياوړي کېدو لامل شو.

د شوروي اتحاد د يرغل نه وروسته نړيوالو او په ځانکړې توګه امريکا او سعودي عربستان پر خپلو مالي او نورو ډول ډول مرستو سره او همدارنګه په خپله پاکستان افغان اسلامي تنظيمونه د دې له پاره پياوړي کړل، چې له يوې خوا شوروي اتحاد د خپل يرغل په مقصد کې ناکام کړي او د بلې خوا پاکستان د همدغو اسلامي تنظيمونو له لارې افغانستان تر خپل نفوذ لاندې راولي، تر څو خپل د ستراتيژيکي ژورتيا پلان خوب په کړو بدل کړي.

پخوا مو يادونه کړې وه چې افغانستان د پاکستان د جوړېدو وروسته د پښتونستان مسله د خپل بهرني سياست مهمه برخه وګرځوله او ان تردې چې د ملګرو ملتو په موسسه کې يې د پاکستان د غړيتوب پر ضد رايه ورکړه. د پاکستان چارواکو خپل بهرنی سياست دې ته متوجه کړ چې پر ايډيالوژي باندې ټينګار وکړي او د پښتنو او بلوچو هغه قومي نېشنلېزم بې اغېزې کړي چې افغانستان يې ننګه کوله. په دې ډول د پاکستان چارواکو له اسلام دين نه د سياسي ګټې کولو ته ملا وتړله او په ځانکړې توګه يې دغه دنده د ای اس ای په غاړه واچوله، چې اداره يې په ملګري جامو کې د پنجابي جنرالانو په لاس کې وه. د دې کار په پايله کې د پاکستان د پوځيانو او ملايانو او ديني عالمانو تر منځ يو ډول اتحاد رامنځ ته شو. د همدغه غټ پوځ په قوت سره خپل مخالفان د پښتنو او بلوڅو په ګډون ډېر وټکول.

کاکړ وايي چې په پای کې د همدغه ځپونکي سياست په وړاندې پښتانه او بلوڅ نېشنلستان له چپي روښانفکرانو او فعالانو سره د حکومت په وړاندې يو موټی شول. دی زياتوي چې «دغه اتحاد د خلقي حکومت په خاص ملاتړ دغومره پياوړی شوی و، چې ضياءالحق يې اندېښمن کړی و، هغه بيا له خلقي حکومت سره په دغه اړه جوړې ته نږدې شو» ۹۱۱ چې د شوروي يرغل له امله پاتې شوه.

د ستراتيژيکي ژورتيا پلان په اصل کې د پاکستان د خوندي توب او ساتنې له پاره جوړ

شوی و. څنگه چې پاکستان یو هوار ملک دی له هندوستان سره په جنګ کې ساتل کېدای نه شي. د پاکستان د پوځي ستراتيژستانو په نظر د دغسې جنګ په حال کې به د پاکستان پوځونه به افغانستان ته په شا کېږي او بیا به له دغه ځایه پرله پسې کوریلایي جنګونو ته ملا تړي. ۹۱۲ دوی فکر کوي دغه پلان هغه وخت کنټر کېدای شي چې افغانستان او حکومت یې تر خپل نفوذ لاندې وي. د اسلامي سخت دریځو تنظیمونو او په ځانګړې توګه د طالبانو نه د پاکستان ملاتړ د دې له پاره و، چې د یوه پښتون حرکت له لارې پر افغانستان باندې خپل نفوذ خپور کړي. په دې توګه دوی غوښتل چې په دې کار سره به د یوې خوا د هند په وړاندې ستراتيژیکې ژورتیا ترلاسه کړي او د بلې خوا به ایران ځنډې ته کړي. خو دوی هغه وخت سخته ډکه وخوره چې د امارت چارواکو د مولف زاهد حسن په وینا، نه د ډېورنډ کرښه ومنله او نه په صوبه سرحد باندې د افغانستان له ادعا نه تېر سول. ۹۱۳

پاکستان د «ملي حاکمیت په مانا د پښتون نېشنلیزم مخالف و نو ځکه د مغولي حکومت په شان کوښښ کوي چې د ملایانو او روحانیانو له لارې یې وڅپي» ۹۱۴ همدا لامل و چې په افغانستان باندې د شوروي وسله وال تېري وروسته یې د « ستراتيژیکي ژورتیا پلان» جوړ کړ.

«د ستراتيژیکي ژورتیا پلان د پاکستان هغه نظامي پلان دی، چې د هغه له مخې افغانستان باید تل د پاکستان د نفوذ سیمه وي لکه هسې چې افغانستان د نولسمې پېړۍ په دوهمه نیمايي کې د برتانوي هند د نفوذ سیمه ګرځول شوې وه. په داسې حال کې، چې د برتانيې حکومت د افغانستان له لارې د تزاري روسيې د احتمالي يرغل د دفع له پاره افغانستان تر خپل نفوذ لاندې نیولی و، پاکستانی نظامیان غواړي په پاکستان باندې د هند د نظامي يرغل د دفع له پاره افغانستان تردې حده پورې د خپل نفوذ سیمه وګرزوي چې د هند د يرغل په وخت کې خپل پوځونه هلته په شا کړي او بیا له هغه ځایه کوریلایي جنګونه پیل کړي. د دې له پاره یې باید پښتون نېشنلیزم ځپلی او افغانستان یې تر خپل نفوذ لاندې نیولی وي.

پاکستان ته د هند له خوا خطر لکه برتانوي هند ته د روسيې خطر د وېرې زېږنده دی. پاکستانی نظامیانو د دغې وېرې له امله د ستراتيژیکي ژورتیا پلان ایستلی، لکه هسې چې انګرېزانو د روسيې له وېرې د هند د دفاع له پاره ایستلی و او په هغه یې د « علمي سرحد» نوم ایښی و. پاکستانی نظامیانو دغه پلان په افغانستان باندې د شوروي يرغل نه وروسته وایست. ۹۱۵

د افغان د ملي مقاومت په مهال د افغانستان ښوونځي، اقتصادي موسسې، تاريخي او فرهنگي شتمني او نورې ابادي د منځه وړل او د ای اېس ای په دستور د خپل نفوذ لاندې اسلاميستي ډلگيو په ذريعه د افغاني روښنفکرانو ترور او نور وړاندوونکي فعاليتونه د دې ستراتيژيکي ژورتيا د پلان له مخې و. «نواز شريف د همدغه پلان له مخې د افغان منظم او په مډرنو وسلو سنبال پوځ ړنګ کړ. د جهاد په لس کلني دورې کې ډېر افغان وتلي تکنوکراتان او قومي مشران چې د مشرۍ او حکومت کولو صفتونه يې لرل د ای اېس ای په دستور او همکارۍ د افغان اسلاميستي تنظيمونو له خوا ترور شوي نږدې ټول پښتانه وو.» ۹۱۶

د پاکستان واکمنو د جهاد په لس کلنه دوره کې د امريکا متحده ايالاتو، لوبډيځو هېوادو، اسلامي هېوادو او نورو نه زياتې پيسې او وسلې په لاس راوړې. د طالبانو د نسکورېدو وروسته پاکستان د يوې خوا له دې کبله چې، د القاعدې او طالبانو په وړاندې د امريکا متحد دی زياتې وسلې او پيسې ترلاسه کړې، او د بلې خوا يې همدغه پيسې او وسلې د القاعدې او طالبانو د روزلو، تمویلولو او تنظيمولو له پاره وکارولې. دوی غواړي چې «د ډېورنډ د دواړو خواو پښتانه بايد بېرته پاتې، ناتوان او د پاکستان تر سيوري لاندې وي. ايران خو لا ډېر د مخه د پښتنو سياسي ناتوان کولو له پاره بډې وهلي» ۹۱۷ دي.

ضياء الحق د نويو متحدينو د موندلو په لړ کې افغان اسلامي تنظيمونه د جهاد او اسلام په نامه د پاکستان د ساتنې پلان په چوکاټ کې راښکېل کړل. ای اېس ای لا د مخه افغان توند لاري اسلامي تنظيمونه تر نفوذ لاندې راوستلي وو.

ضياء الحق د ای اس ای د مشر جنرال اختر عبدالرحمن هغه دفاعي پلان سره هوکړه وکړه چې د شوروي اتحاد د يرغل د شا وهلو په موخه جوړ شوی و. ده د ضياء نه په ټينګه وغوښتل چې پاکستان به د افغان مقاومت ملاتړ په وسلو، مهماتو، اسخباراتو، روزنې او عملياتي سلا سره په پټه کوي. ده فکر کاوه چې دغه افغان مقاومت به نه يوازې د اسلام بلکې د پاکستان ساتنه هم وکړي.

ضياء الحق وروسته له دې چې د امريکا، برتانيې، لوبډيځې اروپا، عربستان او نور د خليج شتمن امارتونه، چين او نور متحدان وموندل او د هغو له پرېمانه وسلو، پيسو او ملاتړ نه ډاډه شو په دې فکر شو چې «پاکستان به يو پر ځان بسيا، باثباته او پياوړی دولت شي، چې په اسلامي نړۍ، سهيلي اسيا او لوبډيځې اسيا کې به يو قوي دريځ ولري او د دغسې توان خاوند به شي چې په ګاونډيو هېوادونو او سيمې کې د اسلام بېرته ژوندي

کولو حرکتونه پياوړي کړي.» او «د نفوذ ساحه به [پې] هغه وي چې له افغانستان څخه تر ترکې پورې د ايران او د شوروي اتحاد د منځنۍ اسيا ډېر دولتونه په کې شامل وي.» ۹۱۸ ده د دغه خوب د واقعي کولو له پاره د مخه په دې پيل کړی و چې د پاکستان اسلامي دولت «يو اسلامي ايډيالوجيکي دولت» کړي. د دولت د اسلامي کولو دغه حرکت په مذهبي گوندونو کې تيار متحدين وموندل. اسلامي جماعت او نورې مذهبي ډلې د حکومت همکارۍ ته حاضرې شوې او د لومړي ځل له پاره په حکومتي څانگو کې يې مقامونه ونيول. ضياء په سياست کې د پوځ ونډه ډېره زياته کړه. پوځ دا وخت د برتانوي ماډل پر اساس سيکولر و، خو ده ورته «نوی اسلامي لوری» ورکړ. برسېره پر دې يې د ټولني د اسلامي کولو له پاره يو لړ کارونه وکړل.

ضياء الحق د ټولني د اسلامي کېدو په موخه د ديني مدرسو ډېرېدلو ته ځانگړې پاملرنه وکړه. د افغان غزا له امله په مدرسو کې دغزا مضمون ځانگړی اهميت وموند. حکومتي سرچينو د دغو مدرسو ټول شمېر ديارلس زره او زده کوونکو شمېر يې يو ميليون او اووه لکه ښوولی دی. د افغان جهاد په بهير کې له ۱۹۸۲ نه تر ۱۹۸۸ پورې زر نوې مدرسې پرانستل شوې، چې زياتره يې د صوبه سرحد او بلوچستان په ولايتونو کې وې. کاکړ وايي چې «د ضياء الحق بل خوب د شوروي پوځ ايستل کېدو نه وروسته د افغان اسلامي تنظيمونو له لارې د جهاد او اسلام په نامه افغانستان د تحت الحمايه دولت په شان د پاکستان تر اثر لاندې راوستل و.» ۹۱۹ هغه د دغې موخې د پلي کولو له پاره د ای اس ای له لارې د افغانستان له ډېرو سياسي ډلو، گوندونو او شخصيتونو نه هغه تنظيمونه غوره او محکمان کړل چې د ده له فکر سره موافق وو.

اسلامي تنظيمونو د څرگند جهاد تر څنګ يوه پټه جبهه خلاصه کړې وه. دغه پټه جبهه د قومي مشرانو، لبرالانو، ډموکراتو، تعليم کړو او په عمومي ډول د هغو افغانانو پر ضد وه، چې نه يې غوښتل د دغو تنظيمونو او ای اس ای تر چتر لاندې وي. د دغو کسانو ډېر شمېر لوېديځو هېوادو ته کډه وکړه او يو شمېر يې په پېښور او کوېټه کې ترور شول چې د مخه مو ترې يادونه وکړه.

د تنظيم واکي پيل

کاکړ وايي چې د ۱۹۹۲ کال د اپرېل تر ۲۴ پورې اټکل شل زره وسله وال مجاهدين او قومي مليشيا د کابل ښار ته ننوتلي او د بينان سيوان په ژبه «کابل په هر چا پورې اړه لري، خو هېڅوک پرې کنټرول نه لري.» ۹۲۰ بينان سيوان چې دنده يې وه، د سياست

مخکېښو افغانانو سره په گډه کوم ډول پراخ بنسټه حکومت په پښو ودروي، اوس په دې لټه کې شو، چې افغانستان د بې امنيتۍ له ناوړو پايلو نه وژغوري. بينان سيوان د اپرېل په ۲۳ مه د تنظيمونو مشران او د پاکستان صدراعظم نواز شريف يې د افغانستان د خطرناکې وضعې نه خبر کړل. نواز شريف د ۱۹۹۲ کال د اپرېل په ۲۴ مه د اسلامي تنظيمونو مشران د کوم ډول پرېکړې نيولو له پاره د پېښور گورنر هاوس ته وبلل. که څه هم د شوروي پوځ د وتلو نه وروسته د ۱۹۸۹ کال د فبروري په ۲۳ مه تنظيمي مشرانو يو انتقالي حکومت حور کړی و، چې سروال يې صبيعت الله مجددي او صدراعظم يې عبدالرب رسول سياف و. څرنګه چې دغه حکومت انحصاري، د جلال اباد د ښار په نيولو کې پاتې راغلی او تر دغه وخته يې کوم مهم کار سرته رسولی نه و، خپل اعتبار بايللی و. بيا هم دوی دا ځل د پېښور د والي په مانۍ کې غونډه وکړه چې په يوه مانشام کې پيل او تمامه شوه. په دې غونډه کې چې اجندا يې د افغانستان له پاره د حکومت تنظيم و، په کېدونکوونکو کې يې د افغانانو په پرتله پردي زيات وو. په غونډه کې د پاکستان صدراعظم نواز شريف، د پاکستان د پوځ لوی درستيز، د ای اس ای مشر، د عربستان د استخباراتو رييس، په اسلام اباد کې د عربستان سفير، په اسلام اباد کې د ايران سفير، د ملګرو ملتو استازی بينان سيوان او دوه تنه نور د پاکستان او عربستان نه او شپږو تنو افغان تنظيمونو مشرانو د حکمتيار پرته کېدون کړی و. کاکړ وايي چې «د دغې پرېکړې په متن کې د افغان او ملت نوم هېڅ ياد شوی نه دی.» ۹۲۱ دغه حکومت د نهو تنو باندنيانو او شپږ تنو افغانانو له خوا تنظيم شو او دوی لور حکومتي مقامونه يوازې تنظيمي لويانو ته ځانګړي کړل لکه چې د دوی شخصي ملکيت وي.

کاکړ وايي څنګه چې د دغې پرېکړې اصلي نوښتګر د پاکستان صدراعظم نواز شريف و او هغه د يوه باتجربه سياستمدار په توګه په دغه طرح کې د افغانستان له پاره يوه بده راتلونکې په نظر کې نيولې وه. هغه وروسته په وياړ سره ويل چې ده د افغانستان پوځ منحل کړ.

د دغې پرېکړې له مخې حضرت صبيعت الله مجددي د دوو مياشتو له پاره د افغانستان جمهور رييس په توګه وټاکل شو او بيا به دوه مياشتې وروسته د ده پر ځای برهان الدين رباني د څلورو مياشتو له پاره د جمهور رييس په توګه د واک واګې په لاس کې نيسي. د دوو مياشتو وروسته د حضرت صبيعت الله مجددي د واک دوره پای ته ورسېده او برهان الدين د واک واګې په لاس کې ونيوې.

برهان الدين رباني د څلورو مياشتو وروسته د پېښور د پرېکړې پر خلاف خپل واک

وغزاهه او د واک پر سر خپل منځي جگړې ته يې لمن ووهله. رباني په ۱۹۹۲ کال کې د افغانستان د ولسمشر په توګه خپل لومړنی سفر مسکو ته وکړ چې د خپل دولت د اقتصادي او پوځي ملاتړ له پاره د روسانو سره د افغانستان د ولس په حق يانې د جگړې د تاوان په تېرېدلو سره معامله وکړي. د مسکوسکي کمسول د ۱۹۹۴ کال د اپرېل په ۱۳ نېټه خبر ورکړ چې په ۱۹۹۲ کال کې رباني د روسيې د اقتصادي او پوځي مرستې په بدل کې له روسيې سره د جنګي تاوان د نه غوښتنې او نه دعوې تړون لاسليک کړ. ۹۲۲

په ۱۹۹۳ کال کې مسعود د تلویزیون د غره د پاسه په سلګونو توغوندي د کابل په بې وزلو خلکو وتوغول چې د هغو په پایله کې په لسګونو زره هېوادوال ټپيان يا ووژل شول. مسعود او حکمتيار دواړو د کابل په واټونو کې د لاس په ګرېوان جګړه کې يو پر بل توغوندي ووارول، ښار يې د توکميزو بيلتونپالو او ګونديمارو ډلو په خونړيو مورچلونو وويشه. د کابل خلک د جګړه مارو ډلو تر منځ د جګړو د اور په لمبو کې ايسار شول. سياف او هزاره ګانو يو پر بل په پوره بې رحمۍ سره بريدونه وکړل. د وحدت ګوند هزاره ګانو ته به چې هر څوک په ګوتو ورغلل په تنديو يې مېخونه ورته ټک وهل، د ښځو د بدن غړي يې ورپرې کړل او د مرو د نڅا نندارې يې جوړې کړې. د دوستم ازبکو ملېشو سيستماتيکې وژنې او جنسي ترسره کړل. لوتماري د دوی د ورځې دنده ګرځېدلې وه.

د رباني- مسعود د واکمنۍ پر مهال د ښځو خورونه هغې کچې ته ورسېدله چې د جګړې [ي] د مهال په هېڅ يو [ي] شېبې کې يې ساری نه درلود. ۹۲۳

کابل بل هېڅ وخت دومره وران شوی نه و لکه چې په دغې څلورنيم کلنې دورې کې وران شو، چې په حقه سره «شر او فساد» [دوره] ياده شوې ده. ۹۲۴ «دغو افراطي تنظيمونو، ملي اسلامي جنبش او نظارت شورا جنګ مشرانو د قدرت کتلو او قدرت ساتلو په لويه کې د خپل وطن په ښار کې له خپلو مسلمانو او افغانانو سره دغسې څه وکړل، چې ځناور يې په ځنګلونو کې له يوه او بل سره نه کوي.» ۹۲۵ د احمدشاه مسعود ونډه د کابل په وړانې کې تر هر بل جنګ مشر نه زياته وه. دوی په دې نه پوهېدل چې ژوند روزل او ودانول هم دي. ۹۲۶

په تنظيمي دوره کې هېواد په واقعيت کې په سيمو وېشل شوی و، که څه هم برهان الدين رباني، د ټول افغانستان تش په نامه سروال و. کاکړ وايي چې د هرې سيمې د ننه «د اسلامي تنظيمونو او قومي مليشاوو او د ملي اسلامي جنبش او د نظار شورا قوماندانانو او داسې هم ازادو قوماندانانو د خپلو ټوپکچيانو له لارې د خپلې خونې حکومت چلوه. دوی ټول تر دې حده په خپل سر و، چې د اسلامي شرعيت، قانونونو او ټولنيزو مقالو،

او د رسم رواج پروا نه کوله، خو دا چې د هغو په نومونو د خپلې خوبې حکومت وکړي، شته ټول کړي او خپل جنسي هوسونه یخ کړي. په دغه وخت کې د دوی پر افغاني، اسلامي او انساني ميل باندې حیواني ميل غلبه کړې وه او د انسان په بڼه لېوان ډېر شوي وو. په ټول ملک کې سر، مال او ناموس خوندي نه و، وطن هم د شپډو لور ته ورکش شوی و او د ملي حکومت د جوړولو د پاره ټول «کوښښونه ناکام شوي وو. په پایله کې په میلیونونو بې دفاع او مظلومو افغانانو باندې د ناهیلې، خواشینی او بدبینۍ څپې خپرې وې.

د بروس ریچاردسن په وینا دا دوره د افغانستان د تاریخ تر ټولو توره بلل کېدای شي؛ په دغې دورې کې د ښځو د بدن غړي د ودانیو د دروازو په سر د جگړې د یادگار په توګه په مېخونو ځړول کېدل؛ شمالي ټلوالې د ځان د خوشاله ساتلو له پاره د مړیو د نڅاوو نندارې جوړولې او د مړیو د نڅا په سیالی کې د بې ګناه انسانانو په ککړو په سټکونو مېخونه ټکول او ژبتوکمیز او سکتاریستي وحشت د پښتو یا سني په ګناه وژل کېدل. په ۱۹۹۷ کال کې د شمالي ټلوالې د عبدالملک د امر پر بنسټ، محقق په لیبې دښته کې ۶۰۰۰ [پښتانه] بندیان په بهرحی سره قصایې کړل.

کاکړ وايي چې رښتیا دا دي چې جنګونه ښځو ته په هر هېواد کې سخت زیان رسوي چې د اسلامي تنظیمونو یا «د شر او فساد» څلورنیم کلنه دوره یې یوه څرګنده نمونه وه. «په دغې دورې کې په زرګونه ښځې [ان د نکاحي ښځو په ګډون] د هغو ټوپکچیانو له خوا چې افراطي اسلامي تنظیمونو، ملي اسلامي جنبش او نظار شورا ته منسوب وو بې عفته شوي، تښتول شوي، په زور واده شوي او وژل شوي دي» ۹۲۸

ملایان فکر کوي چې ښځې فساد کوي او د شرع په نامه باید په کورونو کې ایسارې کړي. خو رښتیا دا دي چې «د دغسې «فساد» اصلي عاملان نارینه ګان دي او دغه حقیقت نږدې هر رسېدلي نارینه ته معلوم دی.» ۹۲۹

په افغانستان کې سرزورو اسلامي تنظیمونو نه یوازې حکومت خپل ځان ته منحصر کړ بلکې د واک پر سر یې په خپلو منځو کې د جگړې او افغان وژنې یو بل دور پیل کړ چې په هغه سره یې د وطنوالو سر، مال، ناموس او د وطن بشپړتیا په خطر کې واچول. افغانانو هغه نوم، حیثیت او لوړ ځای چې د ملي غزا له برکته کتلې وو، دغو سرزورو اسلامي تنظیمونو هغه پرمخګه وواهه.

اسلامي تنظیمونو مشرانو او قوماندانانو په تېره بیا احمدشاه مسعود او د هغه شوری نظار، چې د مرکزي ځواک واکې په لاس کې وې، د کابل ښار د خلکو د سر، مال او

ناموس پروا ونه کړه. د دوی نه یې په لسگونو زره ووژل، ویې کړول او د دوی کورونه، هټی او شتمني یې لوټ کړل، شایسته نجونې او ښځې یې عزته شوې او ډېرې یې په زور خپلې کړې او د کابل ښار یې په کنډواله بدل کړ. په دغه شر او فساد کې ټولو اسلامي تنظیمونو او ډلو او د دوستم ډلې ونډه درلوده. دا حالت د څپرکیار په وینا د انګرېز سیاسي متفکر تامیس هابیس د «لیویتان» (نهنگ) کتاب ور په زړه کوي چې په ۱۶۵۱ کال کې یې لیکلی چې د انګلستان د کورنۍ جګړې په مهال یې د انسانانو ترخ ژوند انځور کړی دی. په دغه کتاب کې دغه داخلي جنګ ته طبیعي حالت ویل شوی دی چې په روانه ژبه کډوډي ورته هم ویلی شو. په دغه کډوډي کې چې واکمن نه وي رامنځ ته شوی «ژوند سخت، وحشي او لنډ» وي او «ټول د ټولو پر ضد جنګیاري». څپرکیار سم وايي چې دا کډوډي «د ټولو جنګ د ټولو پر ضد» د یوه کلک مرکزي حکومت له لارې له منځه تللی شي. ۹۳۰

د افغان- شوروي جګړې پایله دا شوه چې د برلین دېوال ړنګ، د شوروي امپراتوري ړنګه او ساړه جګړه پای ته ورسېده. د شوروي پوځ په وتلو او د کابل رژیم په نسکورېدو سره جګړه باید پای ته رسېدلې وای، خو داسې ونه شول. تنظیمي لویانو د پاکستان د صدراعظم نواز شریف د پلان له مخې د تنظیمي انحصاري حکومت فرمول ومانه. اسلامي تنظیمونو د دې پرځای چې د وران شوي ملک د بیا ودانولو او د ملي سیاست په کولو بوخت شي، د واک پر سر پخپلمنځي جګړو بوخت شول. د کابل ښار چې د نیواک په دوران کې لوی شوی او په امن کې و، په کنډواله بدل شو. په ټول ملک کې د سر، مال او ناموس خونديتوب له منځه لاړ. په دغې دورې کې ابادي هېڅ ونه شوه. پاکستان، ایران او تر څه اندازې ازبکستان په دغه ناارام حالت کې خپلې ځانګړې ډلې پیاوړې کولې او په دې ډول یې په افغانستان کې یو ډول نیابتي جګړه کوله.

په افغانستان کې سرزورو اسلامي تنظیمونو نه یوازې حکومت خپل ځان ته منحصر کړ بلکې د واک پر سر یې په خپلو منځو کې د جګړې او افغان وژنې یو بل دور پیل کړ چې په هغه سره یې د وطنوالو سر، مال، ناموس او د وطن بشپړتیا په خطر کې واچول. کابل بل هېڅ وخت دومره وران شوی نه و لکه چې په دغه څلور نیم کلني دورې کې وران شو، چې په حقه سره «شر او فساد» نومولې شوې ده. ۹۳۱

پنځويشتم څپرکی

کاکړ او اسلامي بنسټ پالنه

اسلامي سلفي غورځنگ

د شوروي د يرغل نه وروسته کله چې نړيوال د افغانانو په مقاومت باوري شول امريکې د پاکستان د ای اس ای له لارې افغان مجاهدينو ته وسلې او پيسې رسولې. عربستان د امريکې په اندازه پيسې ورکولې. د ډېرو اسلامي او په تېره بيا د عربي هېوادونو نه رضاکاران هم پېښور ته تلل په دې نيت چې د ننه په افغانستان کې د مجاهدانو تر څنګ جهاد وکړي يا د خپلو کمپيو له لارې ډول ډول غير نظامي خدمتونه وکړي. دغه رضاکاران، چې په خپلو هېوادو کې اسلامي بنسټپالو سخت دريځو ته منسوب وو، د افغان جهاد په پای ته رسېدو سره د نويو تجربو او فکرونو خاوندان شول. عبدالله عزام، بن لادن، ايمن الظواهري او نور د القاعدې په تنظيم کې راغونډ شول، چې د خپلو واکمنو او د باندنيو د تسلط په وړاندې جهاد وکړي. دغو رضاکارو د بن لادن په مشرۍ د امارت په دوره کې د افغانستان په کورني او باندني سياست ژور اغېز وکړ.

له سلفي غورځنگ نه «مراد لومړنيو اسلامي اصولو ته رجوع ده.» ۹۳۲ نن ورځ هغوی چې د سلفيانو په نامه ډېر يادېږي، هغه وهابيان دي. خو سلفي خوځښت دومره پراخ دی چې «... بيبي بيبي ايديالوجيکاني، حرکتونه، د منځنيو پېړيو او د اوس مهال تشدد پال او نه تشدد پال په غېږ کې نيسي.» ۹۳۳ نو ښه به دا وي چې کله يو چا ته سلفي ويل کېږي بايد هغه خوځښت او بنسټ ايښودونکی يې هم څرګند وي. دا اوس په اسلامي نړۍ

په تېره په عربي نړۍ کې يو پياوړی غورځنگ دی چې اسلام ته د نننيو خو زياتره د باندینيو خطرونو نه اغېزمن شوی دی.

لومړی خطر هغه وخت رامنځ ته شو چې د چنگېز خان لمسي هلاکو په ۱۲۵۸ زېږديز کال کې بغداد ونيو او د عباسيانو امپراتوري يې لاندې کړه. مغلو بيا د مشر په غوره کولو کې د مغولي قانون ياسا څخه کار واخېست او لور واکمن يې خليفه نه، بلکې خان باله. برسېره پردې دغه خان بايد يوازې د چنگېز خان له نسب نه وي. دغه چلند ديني عالمان په تېره تقی الدين احمد بن تيميه سخت وپارول. ابن تيميه د يوه ساتنپال عالم په توگه دغسې ژور او بنسټيز نظرونه وړاندې کړل چې هغه تر اوسه انکازې کوي.

ابن تيميه (۱۲۶۸-۱۳۲۸)

ابن تيميه د بغداد له نسکورېدو نه وروسته اړ شو چې له خپلې کورنۍ سره سوريې ته کډه وکړي. کاکړ وايي چې دا ستر ساتنپال عالم په سياسي ډگر کې د عمل خاوند و. دی د امام احمد ابن حنبل په مذهب ټينگ ولاړ و، چې د سني اسلام د څلورو مذهبونو نه يو دی. هغه نور يې حنفي، مالکي او شافعي دي. خو دغه مذهبونه په اصولو کې سره هېڅ اختلاف نه لري خو په نظري موضوع گانو کې هر يو يې په بېلې لارې روان دی. شافعي د قانون ايستلو تخنيک په اجماع کې گڼي، چې محمدي حديث يې بايد تاييد کړي. حنبلي مذهب اجماع ردوي او قياس ته هم ډېر لږ هغه هم د سختې اړتيا له امله مخ اړوي. حنفي مذهب د فردي نظر زغمونکی دی. خو شافعي مذهب فردي نظر د قران مجيد، حديث، اجماع او قياس تابع گڼي. په دې توگه حنبلي مذهب تر نورو ډېر سخت دريځه دی.

ابن تيميه له نظرونو او کړنو څخه يو نوی ترکیب جوړ کړ او دين، دولت او ټولنه يې نور سره ونېلول. د ده نظرونو د اتلسمې او شلمې پېړۍ د نوي توب په غورځنگ باندې ژور اغېز وکړ. ده مدينه د اسلامي دولت له پاره سرمشق وگڼله. د ده په عقیده د حضرت محمد راشده خليفه گانو د دورې لومړنی سوچه توب ته مخ اړول د اسلامي ټولني د تېر قدرت او سترتوب د بېرته خپلولو دپاره اړين و. دی د اسلام او غير اسلام يانې د عقيدې او بې عقيدې ملکونو تر منځ په څرگند توپير قايل دی. دی دولت او دين ډېر نږدې بولي خو دين او کلتور سره پوره بيل گڼي. دی که څه هم يو پرهېزگاره صوفي و، د خپل وخت عام دودونه لکه د واليانو لمانځل، د زيارتونو او قبرونو لمانځل يې د خرافاتو په توگه وغندل. ده مغولان له دې امله په يوه فتوا کې کافران وبلل چې د شرعيت پر ځای د ياسا څخه يې کار اخېسته. د مغولو پر ضد د ده دغه فتوا سرمشق وگرزېده. په دې ډول د ابن تيميه په

فکر دا د مسلمانانو حق او دنده ده چې پر ضد يې جگړه او غزا وکړي. د منځنيو پېړيو د عالم ابن تيميه نظريې د اتلسمې پېړۍ د عربستان وهابي غورځنگ، د شلمې پېړۍ ديناميك ايديالوگ سيد قطب، د اسلامي جهاد محمد فرک او اوسني سخت دريځي لکه اسمه بن لادن و خوځول او د هغه نظرونه يې خپل کړل. توپير يوازې په دې کې دی چې ابن تيميه د مغولو په وړاندې خپل عقلايي غورځنگ پيل کړ خو محمد عبدالوهاب د خپلې ټولې معنوي او اخلاقي کمزورېو په وړاندې غبرگون وښود.

محمد بن عبدالوهاب (۱۷۰۳-۱۷۹۱)

محمد ابن عبدالوهاب د ابن تيميه فکري لار ونيوله. دی د خپلې ټولې د معنوي لوبدنې او اخلاقي سستيا نه په ژور ډول اغېزمن شوی و. ده هم عامه عقيدې او دودونه د بت لمانځنې او د جهالت د دورې نښې وبللې او وغندلې. نوموړي د منځنيو پېړيو د عالمانو ډېر قانونونه بدعت وگڼل او رد يې کړل. ده د وحی شويو او سپېڅلو سرچينو پر بنسټ د اسلام د سره تعبير کولو غږ پورته کړ او د توحيد نظر يې د خپلو تعليماتو او غورځنگ زری وگرز او. دی د امام حنبل غوندې قران مجيد او حديثونه هغه يوازیني سرچينې گڼي، چې د هسک څښتن حکمونه پرې درک کېدای شي. وهابيان شيعه توب بدعت گڼي ځکه چې دغه غورځنگ د حضرت محمد د مړينې وروسته د اسلامي واکمنۍ په سر د حضرت علي په پلوی هسک شو. د شيعه کليمه د حضرت علي د پلوي په مانا ده.

وهابيت د هغه مهال نه چې د نجد امير محمد ابن سعود ومانه د عربستان په ډېرو برخو کې خپور شو. په ۱۸۰۳ کال کې يې د مدينې او مکې ښارونه د هغو واکمنو نه تر لاسه کړل، چې د عثماني ترکيې له خوا اداره کېدل. عثماني ترکيه چې د ديارلسمې پېړۍ په پای کې د عثمان په نامه يوه ترک په ورې اسيا (اوسنۍ ترکيې) کې پيل کړې وه په اتلسمې پېړۍ کې يانې د عبدالوهاب په وخت کې دومره پراخه وه چې ننني عربي ملکونه، د شمالي افريقې ملکونه، د بالقان ملکونه او مجارستان يې تر اغېز لاندې وو. ان د سوريې او د عراق ولايتونه يې ورتړل. خو بيا د مصر واکمن محمد علي پاشا د عثماني خليفه په دستور هلته ترکي او مصري پوځونه واستول او د وهابي امپراتورۍ ځواک يې مات کړ او وهابيت بېرته په نجد کې ايسار شو. وهابيت د نولسمې پېړۍ په نيمايي او شلمې پېړۍ کې بېرته هسک شو او دا ځل په ټول سعودي عربستان کې خپور شو. د شلمې پېړۍ په دوهمه نيمايي کې وهابيت د عبدالعزيز بن باز په کونښنونو د عربستان برسېره په نورو اسلامي هېوادو کې هم نفوذ وکړ. نوموړي د عربستان د واکمنې کورنۍ سره جوړه وکړه چې هغه به

په سياسي ډگر کې د هغې ملا تړي او دی به د پوهې او تبليغ په برخه کې ازاد پرېښودل کېږي. بيا نو ده د نورو وهابي عالمانو په ملګرتيا د اسلام د ساتلو په موخه يو لړ منځپات او وایستل او د هغه د پلي کولو له پاره يې مذهبي پوليسان وګمارل. د افغانستان اسلامي امارت هم د دوی په تقليد د امر بالمعروف او نهی عن المنکر پوليسان وګمارل. وهابيت اوس نړيواله بڼه غوره کړې او د پټرو ډالرو په زور چې د عربستان واکمنه کورنۍ او د عربستان او خليج نور شتمن وهابيان يې پرېمانه لري، په مسلمانان نړۍ کې په يوه ځواک بدل شوی دی.

په نولسمه پېړۍ کې مسلمانان نړۍ

اروپا په اصل کې په رنسانس او د سمندري لارو په موندلو سره په چټکۍ سره په مخ روانه وه. اروپا په کرنې، صنعت، سوداګرۍ، تخنيک او ساينس کې په بېره پرمختګ کاوه. د لوېديځې اروپا کرښه د نوې پوهې او تخنيک په پلي کولو سره تر پخوا ډېر حاصل کاوه. سوداګري نويو لارو ته بدله شوې وه. اروپايانو په تېره د پرتګال، هسپانيې، هالنډ، انګرېزانو او فرانسې سوداګرو د سمندر له لارې سوداګري پراخه کړې او ښه شتمن شوي وو. دا ټول پرمختګونه د سياسي پرمختګونو په ګډون چې د مخه پيل شوي وو، په نولسمه پېړۍ کې د صنعتي انقلاب په برکت نور هم پراخ شول.

خو د ختيځ هېوادونه په تېره مسلمانان نړۍ په پخوانيو لارو ورو ورو روان وو. د لوېديځې اروپا له سمندري ملکونو نه مسلمانان هېوادونه نه يوازې په سياسي ډگر کې بلکې په کرنې، صنعت، سوداګرۍ، تخنيک او ساينس کې هم وروسته پاتې وو. په دغه وخت کې اروپايي نيواک او امپرياليزم په اسلامي هېوادونو باندې خپل ورسونه غوړولي و. ان عثماني امپراتوري مخ په ځورې روانه وه. د بالقانو سيمې يې وار په وار د استريا- هنګري او روسيې په وړاندې له لاسه ورکولې، مصر انګرېزانو ورڅخه نيولی و او د هندوستان مغولي امپراتوري د انګلستان تر واک لاندې وه. په داسې حال کې چې د پارس صفوي امپراتوري لا په اتلسمه پېړۍ کې له منځه تللې وه. نو ځکه د نولسمې پېړۍ په دوهمه نيمايي کې له مسلمانان نړۍ څخه عقلائي اوازونه پورته او پاڅونونه وشول. دا هغه غبرګونونه وو چې د نننيو اهرينو د نفوذ په وړاندې وښودل شول. په پايله کې په مسلمانو هېوادونو کې عقلائي سوچوالان او مصلحان هسک شول چې د اسلام د بېرته توب لاملونه وڅېړي او د دې حالت نه د خلاصون خوځښتونه په مخ بوځي. د دغه خوځښت سوچوالان سيد جمال الدين، محمد عبده او رشيد روا دي.

خليل زاد وايي چې اسلامي نړۍ د تمدن د کړکېچ په لومه کې ښکېله شوې ده. دغه وخت مسلمانان پر دې نه پوهېدل چې په پنځلسمه پېړۍ کې يې څنگه د تمدن پرتم او خلا له لاسه ورکړه. هغه وخت اسلامي امپراتورۍ له هسپانيې نه تر هند پورې واکمني کوله او د پوهنې، پرمختګ، ساينس او فلسفې په برخه کې تر نورو وړاندې وه. د اسلامي تمدن مرکز د عثماني خلافت ډېر مخکې د عربي مشرتابه تر واکمنۍ لاندې رامنځ ته شوی و. هغه مهال هسپانيه پرمختللي ګڼ ملي ټولنه وه چې پوهانو به يې يوناني اثار عربي ته ژباړل. هغه مهال اسلامي تمدن زده کړې او پوهنې ته پراختيا ورکوله.

وروسته اسلامي تمدن د تلپاتې ځورتيا پړاو ته ننوت. لوېديځ چې د بشري لوړتوب په يون کې د رنسانس او عقلاښت پر متو پياوړی شو، نو اسلامي نړۍ يې په پرمختګ کې شا ته پرېښوده او د تل له پاره د مخکښ رول څښتن شو. اسلامي سوچوالان او مشران د دې حالت نه د وتلو په اړه په څو برخو ووېشل شول.

۱- د مودرنيزم ملاتړ وويل چې اسلامي نړۍ بايد هغه څه کاپي کړي چې له لوېديځ سره په پرمختګ کې مرسته کوي. بېلګه يې ترکيه ده چې د سيکولريزم تکلاره يې خپله کړه. د دې تر څنګ د مصر، عراق او سوريې مشران د پرمختګ او پرتم په تر لاسه کولو کې پاتې راغلل. دغو ناکاميو خلک اړويستل چې د نورو ځوابونو په لټه کې شي.

۲- بنسټپالو انګېرله چې د اسلام نه ليرې والی د تمدن د زوال لامل دی او پرمختګ يوازې اسلام ته پر مخ ګرځونې کې دی.

۳- دودپالونکي بيا په دې اند وو، چې د ژغورنې يوازينی لار د اسلام او مودرنيزم ګډول دي. دوی ويل، چې اسلام د هر انسان شخصي گروهې ته مهم دی، خو ټولنه بايد د اوسنۍ نړۍ له غوښتنو سره سمه پر مودرنيزم سنباله شي. ۹۳۴

سيد جمال الدين افغان

سيد جمال الدين د نولسمې پېړۍ په دوهمې نيمايي کې په يو شمېر هېوادو لکه ايران، افغانستان، هند، مصر، ترکيې، انګلستان او فرانسې کې وګرځېد. نوموړی د خپلو سفرونو په يون کې د اسلامي هېوادو بېرته پاتې توب او په هغو کې د اروپايانو نفوذ ته او هم د اروپايي هېوادو پرمختګ ته ځير شو او د خپلو کتنو او ليدنو نه يې ژورې اخېستې وکړې. دی د اروپايي انسان پالنې (Humanism) او زياترو ته د ګټې رسولو (Utilitarianism) له فلسفو نه په ژور ډول اغېزمن شوی و. دغه فلسفې په دې فکر باندې ولاړې دي چې انسان دا ځواک لري چې د خپل ژوند چاپېر واپړوي.

سید جمالالدين او اسلامي سمون غوښتونکو داسې عقلاني او د کړو غورځنگ پیل کړ چې موخه یې د اسلام د مخ په خوریتوب چاره، د هغه خطر سره مبارزه چې اروپایي امپریالیزم مسلمانو هېوادو ته پېښ کړی او د اروپایي مدنیت نه د اسلام د بیا په غورځنگ راوستلو دپاره کټه پورته کول و. دی په اصل کې په اسلامي نړۍ کې د نننیو سمونونو اړتیا ته څیر شو.

سید جمال الدين افغان په دې نظر و چې د اسلامي ټولې د ننني پېوستون منطق د داسې مدنیت په مفهوم کې پروت دی چې په برابری او عدالت باندې ولاړ وي. ده د اروپایي قوتونو اصلي ستنه همدغه عدالت کاڼه او هغه یې د دوی د پېوستون لامل کاڼه چې اروپایي هېوادونه یې په سیاسي لحاظ پیاوړي کړي دي. سید جمال الدين د عقل او دماغ نه کټه اخیستل د اسلام مرکزي ټکی وگاڼه. دی وايي چې «هغه لومړنی ستنه چې پر هغې د اسلام دین بنا دی دا ده چې د ربانیت د وحدت عقیده باید د انسان دماغ روڼ کړي او دوهم له ناتوانی نه یې پاک کړي.» ۹۳۵ له دې امله ده د فرد په عقلي استدلال یا اجتهاد باندې ټینګار وکړ. نو دی د دودیزو عالمانو په وړاندې ودرېد، چې ویل یې په اسلام کې اجتهاد ته اړتیا نه شته. د ده د اجتهاد دغه غورځنگ انقلابي و. برسېره پردې ده د قران مجید د دیارلسمې سورې د یولسم ایت له مخې: «په تحقیق سره خدای تعالی د یوه قوم حال نه بدلوي، خو په هغه حال کې چې هغوی خپلو نفسونو ته بدلون ورکړي» یو بل کام واخېست هغه دا چې دا په خپله د خلکو اراده ده چې په هغې سره خپل حال بدلولی شي او اراده خو د کړو دپاره لومړنی کام دی. په دې توګه دغه نوښتګر سوچوالان په دې لټه کې شول چې اسلام ته د اروپایي مدنیت سره سمون ورکړي او د مدنیت په توګه یې بیا په غورځنگ کړي. خو دی «د پرنسیپ له مخې مشروطه غوښتونکی نه و. د هغه د حکومت ایدېال د اسلامي تیوري پوهان وو، چې د هغه له مخې یو عادل واکمن به د اساسي قانون واکمني مټي... هر ځل دی ناهیلی کېده. داسې پېښېده چې واکمن په اصل کې عادل نه خته او نه یې هم له خپل ځان څخه پورته د قانون مراعات کاوه.» ۹۳۶

سید جمال الدين د کړو لار غوره کړه او په هر اسلامي هېواد کې به یې ځوانان د سیاسي او مذهبي سمونونو له پاره هڅول. خو د ده کړو د واکمنو د چلند سره ټکر کاوه. ده په هغو واکمنو نیوکې کولې چې اروپایي پوځونه یې پرې ایښي و چې ملکونه یې لاندې کړي او باندینیو کمپنیو ته یې امتیازونه ورکړي وو، چې په اقتصاد یې ولکه وکړي. دی د په خپل سرو واکمنو مخالف و او د هغو د نسکورولو او پر ځای یې د پرېهزګارو او اصولي کسانو د کېښولولو غږ پورته کړ. د مصر واکمن خدیو توفیق دی په ۱۸۷۹ کال کې

هندوستان ته وشاره، لکه چې په ۱۸۶۸ کال کې امير شيرعلي خان د کندهار او کوېټې له لارې هند ته شړلی و. امير شيرعلي خان سيد ځکه هند ته شړلی و چې «هغه غوښتل امير د انگرېز ضد سياست غوره کړي. دا هغه وخت و چې د روسانو امپراتوري د افغانستان پولو ته رسېدلې وه او امير غوښتل، چې د روس له خطر نه د افغانستان د ژغورلو دپاره د انگرېزانو روغ نيټي تر لاسه کړي.» ۹۳۷

سيد جمال الدين په ۱۸۸۲ کال کې په کلکټې کې يوې غونډې ته وويل: «اروپايانو اوس خپل لاسونه د نړۍ هر گوټ ته غزولي دي. انگرېزان افغانستان ته رسېدلي دي، فرانسويانو تونس نيولی، په واقع کې د يرغل، شکاونې او لاندې کولو دغه عملونه له انگرېزانو يا فرانسويانو څخه نه دي ولاړ شوي. دا ساينس دی، چې خپل زور او ستوتوب هر چېرې ښيي. ناپوهي بله چاره نه لري، خو دا چې په عاجزي سره غاړه کېښېږدي او په خپلې تسليحې باندې اعتراف وکړي.» ۹۳۸

سيد جمال الدين افغان په ۱۸۹۸ کال کې په ترکيه کې مړ شو او مړی يې څو لسيزې وروسته کابل ته راوړل شو او د کابل پوهنتون په ساحه کې خاورو ته وسپارل شو چې هلته يو لوړ منار يې د گور غټه نښه ده. د ده فکرونه د اسلامي عصريت زری جوړوي او تر اوسه د مسلمانو ليکوالو له پاره د الهام شتمنه سرچينه جوړوي. د ده د پيروانو نوميالی د مصر محمد عبده دی.

محمد عبده (۱۸۴۹-۱۹۰۵)

محمد عبده د سيد جمال الدين افغان ډېر وتلی شاکرد او فکري ملگری و. ده د مصر الاطهر په پوهنتون کې زده کړه کړې او هلته يې درس ورکاوه. د عربي پاشا په پاڅون کې د برخې اخېستلو له امله بندي شوی و. د بنديتوب نه وروسته په بيروت، انگلستان او فرانسې کې وگرزېد او بيا مصر ته ستون شو. هلته لومړی قاضي او بيا مفتي شو. ده د سيد جمال الدين غونډې د اجتهاد او بدلون لار غوره کړه. د هغه په اند اجتهاد چې د تجربې، پوهې او پوهې پر بنسټ ولاړ وي د قران مجيد د رمزونو د پوهېدلو د پاره اساسي وسيله کېدلای شي. د ده په اند مسلمانان له عقل نه په گټې اخېستې سره له لاسه تللی اسلامي مدنيت بېرته ژوندی کولی شي. دی فکر کوي چې د اسلام مخ په ځورتوب د عقل په پرېښودو سره وهڅېد، اسلام ځای پر ځای ودرېد او د اروپايي فکر ډيناميزم مخ په وړاندې لاړ. دی دې پایلې ته ورسېد چې اوس نو اجتهاد اړين دی، چې د عقل او نص پر بنسټ سمونونه وشي او اسلامي مدنيت بېرته په غورځنگ شي. دی ړوند تقليد محکوموي او د اسلام د له سره د تعبير کولو

په اړتيا پوه شو تر څو د عصري ژوند غوښتنو ته ځواب ومومي. ځواب يې دا دی چې ټول هغه قوانين چې خدای تعالی ته د عبادت دپاره او عقيدې په برخه کې دي، ثابت او نه اورېدونکي دي په داسې حال کې چې اسلامي اجتماعي قانونونه په اساسي ډول بدلون منونکي دي. عبده ويل چې مثبت بدلون يوازې د عيسوي لوبديځ ځانگړتيا نه ده، بلکې په اسلام کې هم د منلو او ان د هڅونې وړ ده.

محمد عبده د مصر د ستر مفتي په توگه يو لړ سمونونه پلي کړل، چې په هغو کې د اروپايي جامو د اغوستلو د جواز، بانکي گټو، د واده او طلاق په اړه مقررې وې. کاکړ وايي چې عبده «شاید لومړی سمونپال وي، چې د کورنۍ په غړو باندې يې د څلورو ښځو کولو ناوره اغېز ته گوته ونيوله او د عصري تفسير په رڼا کې يې يوازې د يوې ښځې کول اسلامي اعلام کړل. هغه د النسا د سورې د ۱۲۹م ايت» له مخې وايي چې مېړه هېڅکله د ښځو تر منځ عادل کېدلی نه شي. ۹۳۹ له دې کبله ده دغه نظر وړاندې کړ چې اسلام په واقع کې څلور نه، بلکې يوه نکاحي ښځه روا کړې ده. قران مجيد په يوه وخت کې تر څلورو ښځو پورې د ښځو په نکاح کول جايز کښلي خو هغه په هغه حال کې، چې مېړه د خپلو ښځو سره د برابرۍ، عدالت او بې طرفۍ سلوک وکړي حال دا چې د هغه دپاره په واقع او عمل کې شونې نه ده چې د څلورو ښځو تر منځ عدالت وکولى شي. محمد عبده په دې نظر دی چې د النسا د سورې د ۱۲۹م ايت د دغه درانده شرط د ايښودلو مانا دا ده، چې اسلام په يوه وخت کې د يوې ښځې نکاح کول روا بللي دي. اوس په تونس کې د عبده د نظر له مخې يو نارينه په يوه وخت کې يوازې يوه ښځه د قانون له مخې نکاح کولى شي او په عراق کې نارينه مکلف دی د دوهمې ښځې د کولو دپاره په محکمه کې د هغې د نفقې د تامينولو توان ثابت کړي. ۹۴۰ محمد عبده وايي چې «فکر د تقليد د زنجېرونو څخه ازاد کړي» ۹۴۱ دی وايي چې «دين ته بايد د ساينس د ملگري په توگه وکتل شي چې انسان د شته توب د اسرارو لټولو په لور» بوزي. ۹۴۲ د عبده دغه ډول نظرونو د ډېرو عربي تعليم کړو مسلمانانو او هم د عرب له نړۍ نه د باندې مسلمانانو ذهنونه په ژور ډول ځان ته جلب کړي دي. ۹۴۳

د شلې پېړۍ نيمايي او اسلامي نړۍ

د شلې پېړۍ په لومړۍ نيمايي او څه وړاندې په اسلامي نړۍ او په تېره په سوويلي او لوبديځه اسيا کې يو لړ مهې پېښې وشوې. لومړۍ پېښه دا وه چې عثماني امپراتوري د لومړۍ نړيوالې جگړې په پايله کې ټوټه ټوټه شوه او پر ځای يې يو شمېر هېوادونه د

اسلامي اصولو له مخې نه، بلکې د ملي اصولو له مخې جوړ شول. د نوې ترکيې بنسټ ايښودونکي اتاترک د خلافت موسسه ړنگه او برسېره پر هغې يې د ترکيې نوي دولت په اسلامي کړنو باندې نه، بلکې د لوېديځ په عصري او دنيايي کړنو يا سيکوليزم باندې روان کړ. بله دا چې په ډېرو نويو اسلامي هېوادونو په تېره بيا په مصر کې سيکولر حکومتونه په واک شول يا د فرانسې او انگرېزانو له خوا په واک راوستل شول. دغو نويو حکومتونو هم د لوېديځ د لبراليزم او ډموکراسۍ لار ونيوله. خو د دوی لبراليزم او پارلماني ډموکراسي د منځنيو طبقو د هسکېدو يا د صنفی اتحاديو او د عامه خلکو د فشار پایله نه وه. په دغه سيستم کې واک يوازې سياسي لويانو او امرانو ته په لاس ورغی او هغو ځانونه له قانون نه لور کتل. ۹۴۴ بله ټاکونکې پېښه لومړی د انگلستان او فرانسې او وروسته د امريکې په مرسته د نړيوالې زايونستي موسسې د کرنلارې له مخې په فلسطين کې د اروپايي او اسيایي يهودانو ميشته کول و، چې په پای کې په ۱۹۴۸ کال کې د اسرائيلو دولت ترېنه جوړ شو، چې هغه تر اوسه پورې د نړيوال کړکېچ يوه سرچينه ده.

د دغو پېښو په غبرگون کې د اسلامي نړۍ ټينک عصري تعليم کړي سوچوالان وپارېدل او هغه يې اسلامي مدنيت ته خطر وگاڼه. د دغو تعليم کړو څخه په مصر کې حسن البنا او سيد قطب او په هند او پاکستان کې ابوالحسن ندوي او ابو العلي مودودي مخکښان وختل. دوی د دغه خطر په نظر کې نيولو سره د اسلامي مدنيت د بېرته نوي کېدو دپاره د نويو فکرونو په وړاندې کولو او د تنظيمونو په جوړولو سره يو نوی اسلامي غورځنگ پيل کړ.

حسن البنا (۱۹۰۶-۱۹۴۹)

حسن البنا د ښونځي ښوونکي په ۱۹۲۸ کال کې د اسماعيلې په ښار کې د اخوان المسلمین د تنظيم بنسټ کېښود. د دغه تنظيم کرنلاره د دودونو او نوي توب يوه گډوله وه. دا کرنلاره د يوې خوا ځکه دوديزه وه چې د البنا په اند د مصر سياسي او ټولنيز سمون په ملي ژوند کې د لارښود ځواک په توگه د اسلام په له سره خوځښت راوستلو پورې تړلی دی. د دې موخې دپاره يې د شريعت د بيا جاري کولو غږ پورته کړ. د هغه په اند د مصر ستونزې له دې نه راولاړې شوې چې قرآني اصول په سيکولر حقوقي او سياسي موسسو اړول شوي دي. دا کرنلاره د بلې خوا نوی والی درلود ځکه چې البنا د عبده غوندي د داسې لارې د موندلې په لټه کې شو چې د هغې له مخې مسلمانان وکولی شي د شلې پېړۍ د تکنالوجي له پرمختگونو نه گټه پورته کړي، بې له دې چې اسلامي ارزښتونه تر پښو لاندې

شي. ده دليل وړاندې کاوه چې شريعت په اساس کې د دې دپاره تنظيم شوی، چې د يوې تاريخي دورې ځانگړې اړتياوې پوره کړي. په دې ډول د حسن البنا په اند شريعت د خپرو انسانانو د عقل محصول دی. هغه فکر کاوه د بېرته جاري شوي شريعت په اړه به اجتهاد کېږي او له سره به يې تعبير کېږي او په دې ډول به د عصري ټولني له اړتياوو سره سمون کوي. البنا د دغسې ټولنيزو سمونونو لکه د مخکو وېش، د ټولنيزو ښېگڼو پروگرامونو او د باندنيو پانگو پر ځای د وطني پانگو په کار اچولو دپاره تبليغ کاوه. ده او پلويانو يې د دې دپاره چې هغه واتن لند کړي، چې مصري ټولنه يې په مذهبي او دنيايي برخو وېشلې وه، لومړني ښوونځي پرانېستل چې په هغو کې مذهبي زده کړه د ساينسي او تخنيکي زده کړې سره گډه کړي. دوی د ټولني محرومو کسانو ته وړيا طبي کلينيکونه او د کساد په سختو ورځو کې د ښارونو بې وزلو ته د شورو پخلنځي پرانېستل.

اخوان د خپل جوړېدو په لومړيو لسو کلونو کې په ټول مصر کې پنځه سوه څانگې پرانېستلې او خپل غړي يې د مصر ټولو طبقو ته ورساوه. دوی د پوهنتون په زده کړيالانو، مامورانو، تخنيک پوهانو، کسبکرو او هتي والو کې ډېر پلويان وموندل. دوی ته د مصر په پوره خپلواکي باندې ټينگار هم ډېره گټه وکړه چې د ۱۹۳۶ کال تړون يې سخت غنده، چې په هغه سره که څه هم مصر خپلواک شو خو د انگرېزانو يوه پوځ ته يې اجازه ورکوله چې د سوېس په کانال کې ځای پر ځای شي. البنا لوبديخ ډوله پرمختگونه، د وطنپالنې، نېشنلېزم او د پارلماني ډموکراسۍ فکرونه منلي و، خو هغو ته يې مشروطه او اسلامي بڼه ورکړې وه. ۸۳۵ اخوان له طبقاتي مبارزې او صنفی اتحاديو سره ټينگ مخالفت کاوه. اخوان دغسې يو موټی شوی صنفی دولت غوره گاڼه چې په هغه کې به ټولې طبقې او ټولې بشري ډلې د يوه ځانگړي واک تر ادارې لاندې وي. اخوان د دوهمې نړيوالې جگړې وروسته د مصر په سياست کې يو غټ ځواک وگرزېد.

حسن البنا د دوهمې نړۍ والې جگړې په پيل سره په وسله وال پوځ کې د نفوذ په موخه کار پيل کړ. برسېره پر دې يې يوه پټه (ځانگړې موسسه) جوړه کړه او غړو ته يې د وسلو کارول ښودل، چې سروال يې عبدالرحمن سيندی و. هغه زياتره وخت د خپل لارښود د دستورونو پر خلاف کړه تر سره کول او د خپلو سرتېرو له لارې سياسي وژنې کولې. په ۱۹۴۸ کال کې د دغو سياسي وژنو په غبرگون کې صدراعظم فهيم النقراشي د اخوان په خپلو پيل وکړ. هغه هم د يوه اخواني له خوا ووژل شو. د هغه په وژلو سره اخوان المسلمین منحل اعلام شو او د بل کال په فبروري مياشت کې په خپله حسن البنا هم په زيات کومان د امنيتي قوتونو له خوا د منځه لاړ. کاکړ وايي چې اخوان بيا هېڅکله د

خپل بنسټ ايښودونکي غوندې د بل سروال او هغسې خواک خاوند نه شو. خو د حسن البنا فکرونه په ډېرو اسلامي هېوادو کې سرمشق وگرزېدل او هلته هم د اخوان المسلمین په شان تنظيمونه جوړ او فعال شول.

ابوالعلي مودودي (۱۹۰۳-۱۹۷۹)

ابوالعلي مودودي د منظمې زده کړې له کولو نه وروسته ژورنالست شو. دی په دې فکر و چې اسلامي هويت او اتحاد د هندوانو د سيکولريزم او عصري نېشنلېزم په تېل کېدو سره گواښل کېږي. ده هم د البنا غوندې د منځنيو پېړيو د اسلامي عالمانو نظرونه کافي نه گڼل او په دې فکر و چې د اسلامي نصوصو نوی تعبیر او د هغو پلي کول د عصر سياسي، اقتصادي او کلتوري ننګونو ته ځواب ووايي.

مودودي په ۱۹۴۱ کال کې د جماعت اسلامي تنظيم بنسټ کېښود. د ده په اند ټول عصري مدنيت په دريو مفکورو: نېشنلېزم، سيکولريزم او ډموکراسي باندې ولاړ دی چې دا درې واړه اصول د اسلام مخالف دي. د ده په فکر نېشنلېزم که د نژاد، يا ژبې يا د اقتصادي گټو پر بنسټ ولاړ وي، هرمر و په ضمني ډول د جگړو او تېرو لامل کېږي او يو ملت د بل پر ضد کوي. دی انسانان په دوو نېشنلېزمونو: د اسلام او عقیدې نېشنلېزم او د بې عقیدې توب يا بې لارې توب نېشنلېزم باندې وېشي.

د همدغه فکر پر اساس و، چې مودودي د هندوستان د خپلواک کېدلو په درشل کې د پاکستان نوی تاسيس شوی جمهوريت ته د ميليونونو مسلمانانو د مصيبت نه ډک هجرت ته په بې پامۍ سره کتل او مودودي تر هغه پورې چې پاکستان واقعي شوی نه و، د هندوستان مسلمانانو ته د يوه ملي واحد پلوي په ټينګه نه کوله. تر هغو د مخه اسلامي جماعت لا د مسلم ليک او د هغه د بنسټ ايښودونکي محمد علي جناح پر ضد په ټينګه مبارزه کوله. په پای کې مودودي او د هغه تنظيم تر ۱۹۷۱ پورې په تېره د بنگله دېش له بېلېدو نه وروسته د خپل نوي ملي دولت يانې پاکستان تر شا ودرېد. مودودي نو بيا د ملي دولت منځ ته راتلل د «تاريخي حرکت طبيعي نتيجه» وگڼله او د اسلامي هېوادو سروالانو ته په يوه ليک کې څرګنده کړه، چې «له دوهم نړيوال جنگ نه وروسته له لوبديځ نه تر ختيځه پورې خورو مسلمانانو هېوادونو د لوبديځ د استعماري حاکميت څخه نجات وموند.» ۹۴۶

د مخه مويادونه وکړه چې ابوالعلي مودودي چې د هند د وېش نه د مخه په ۱۹۴۱ کال کې د جماعت اسلامي تنظيم بنسټ ايښی و، په دې فکر و چې ټول عصري مدنيت په دريو

مفکورو: نېشنلېزم، سيکو لريزم او ډموکراسي ولاړ دی او هغه دا مفکورې د اسلام مخالفې گڼلې. دی د هند د وېش نه پاکستان ته کډوال شو او هلته د واقعيتونو د فشار له امله د خپل اصلي فکر نه واوښت او د پاکستان د دولت تر شا ودرېد. سره له دې دی په دې فکر و چې اسلامي دولت «باید يوازې هغوی وچلوي چې په اسلامي ايديالوژي باندې عقیده ولري.» او «اسلامي دولت چلونکي باید هغوی وي چې ټول عمر يې د دغه قانون [شريعت] په رعايت کولو او نافذ کولو کې تېر کړی وي». دی دا هم وايي چې «هر هغه څوک چې دغه پروگرام مني، فرق نه کوي چې په هر نژاد او مليت پورې اړه لري، په هغې ټولنې کې کېدون کولی شي چې دغه اسلامي دولت چلوي او هغوی چې يې نه مني، حق نه لري د دغه دولت د اساسي سياست په جوړولو کې برخه واخلي.» ۹۴۷ په دې ډول د يوه اسلامي دولت غير مسلمان تبعه به له دولت چلولو نه يې برخې وي او د يو بل هېواد مسلمان به په کې برخه لري. د ده په فکر ښځې به د دغه اسلامي دولت په چلولو کې په طبيعي لحاظ ونډه ونه لري. د ده په اند ښځې په طبيعي لحاظ د دې وړتيا نه لري چې د کور نه د باندې په ټولنه کې فعال رول ولوبوي. په دې ډول د مودودي اسلامي دولت به د ښځو په بې برخې کولو او د نارينه وو په محدودولو سره په ترکيب کې محدود خو په وظيفه کې عالمي وي.

خو دومره بايد وويل شي چې په ۱۹۶۵ کال کې ده د ښځو په اړه خپل نظر بدل کړ او خپل تنظيم يې د يوې ښځې فاطمه جناح د کانديدۍ تر شا ودراره.

سید قطب (۱۹۰۶-۱۹۶۶)

د مصر سيد قطب د حسن البنا په شان د ښوونځي ښوونکی و. لوړې زده کړې يې د امريکې د کالورادو په دولتي پوهنتون کې د پوهنې په څانگه کې کړې وې او د ماسټرۍ ډيپلوم يې ترلاسه کړی و. دی تر دغه وخته په فکر او سلوک کې اعتدالي و. خو له دغه وروسته سخت دريځي انقلابي شو. ده ډېر کتابونه وکښل چې د هغو نه يې معالم في الطريق او د قران مجيد تر سيوري لاندې ډېر اغېزمن ثابت شوي دي. په هغه وخت کې چې په مصر، عراق او سوريې کې دين د سوسياليزم، ناسيوناليزم، ډموکراسۍ او په ځانگړې توگه د مصر د ملي سوسياليزم تر سيوري لاندې کېده، ده پر خپلو اثارو کې دغه نظر وړاندې کړ چې انسان خپلې لوړې چارې په خپله سمولی نه شي. دی خپل علاج په قران مجيد کې موندلی شي. ده اسلامي نړۍ غير اسلامي نړۍ ليدله او ويل يې چې مشرکان، منافقان، يهودان، عيسويان، سيکولر واکمنان، کمونيستي او د پانگوالی طرزونه ټول د

اسلام پر ضد دسيسې کوي. په دې توگه ده هم د ابن تيميه په شان ټولنه په دوو مخالفو کمپونو د نېکې قوتونه، د بدې قوتونه، حزب الله، حزب الشيطان سره وېشله. د ده په اند منځنۍ لار نشته. خو ده دا هم ويل چې اسلامي قانون د اوسنيو خوځنده ټولنو اړتياوې پوره کولی نه شي او بايد له سره تعبير شي، چې مانا يې اجتهاد کېږي. دی هم د مودودي غوندې د ډموکراسۍ مخالف و، چې خلک د واک سرچينه گڼي. سيد قطب د دولسمې سوږې د څلورېنيم ايت (ان الحكم لله) له مخې چې «حکم يوازې په الله پورې اړه لري» دې پايلې ته ورسېد، چې خلک حق نه لري د واکمنۍ خاوندان وي.

کاکړ وايي چې سيد قطب د رايې حق، ازادي او ډموکراسي تشې کليې گڼلې او په دې فکر و چې پانگه وال د قانون، ډله ييزو خپرونو، پارلمان او نورو له لارې خلک تېرياسي. په پای کې دی په دې فکر شو چې خلک د حکومت په وړاندې تنظيم کېدلې نه شي او په خلکو باور کېدای نه شي، چې هغوی د ډله ييزو خپرونو په عصر کې په اسانۍ تر اغېزې لاندې کېږي. د ده په نظر چې «اسلامي ټولنه بېرته په غورځنگ شي» دولتي واک بايد ترلاسه شي. څنگه چې د ټاکنو له لارې ده واک ترلاسه کولی نه شو او په دغه لار کې جمال ناصر د ده لارې خنډ و، نو دې پايلې ته ورسېد چې واک ته د رسېدو لار يوازې غزا ده. څنگه چې غزا هغه مهال اعلامېده چې اسلام او اسلامي ټولني ته به د کاپرو له خوا خطر پېښ شو، او هغه به اول الامر له خوا اعلامېده. خو د سيد قطب له پاره غزا سياسي شوه. دی وايي چې «دېمن بې وسلې شي، تر څو اسلام ازاد وي او خپل شريعت جاري کړي.» په دې توگه د سيد قطب په اند غزا به د «معتقدانو يوه ټينگه ډله» کوي چې خپل ټول ژوند يې د يوې ځانگړې موخې له پاره وقف کړې وي. دی د زندان نه د ايله کېدو وروسته د خپلو پټو انقلابي ملگرو سره په دې لټه کې شو، چې د جمال ناصر سوسيالستي حکومت په زور نسکور کړي، خو پخوا له دې چې په کودتا لاس پورې کړي، نيول شو او د ۱۹۶۶ کال د اگست په مياشت کې زندی شو. ۹۴۸

کاکړ وايي سره له دې چې سيد قطب په اسلامي نړۍ کې تر مودودي او نورو نه ډېر لوستونکي لري او نظرونه او کړه يې د هغه د پلويانو له پاره سرمشق شوي دي، خو پلويان يې تر اوسه بريالي شوي نه دي چې د هغه د نظريو پر بنسټ «اسلامي نظام» په پښو ودروي. دليل يې دا دی چې د لومړۍ اسلامي دورې دولتي نظام بېرته ژوندي کول ناشوني دي. دا ځکه چې په دغه دومره اوږدې مودې کې د ژوند په بيلو بيلو اړخونو کې ژور بدلونونه پېښ شوي دي؛ په اسلامي نړۍ کې هم نه يوازې اقتصادي او تخنيکي بلکې په ټولنيزو، حقوقي او سياسي ساحو کې ژور بدلونونه راغلي دي. که د دغه «اسلامي نظام»

موخه د ژوند بڼه والی او د هغه دوام وي، شونې نه ده چې دغه بدلونونه د پام نه وغورځول شي او که په پام کې ونیول شي بیا به اسلامي نظام هسې نه وي چې په اول وخت کې و. برسېره پر دې پر دغه اسلامي نظام به نیوکې هم نه شي کېدای ځکه چې سرچینه به یې شرع وي. بل دا چې سید قطب خپل «اسلامي نظام» ته د ټاکنو له لارې څخه نه بلکې د انقلاب او زور له لارې رسېدل غواړي. سید قطب غذا هم سیاسي کړې او هغې ته یې د وسله والې مبارزې رنګ ورکړی دی. کاکړ وايي چې تجربو بڼوولې ده چې په دغې لارې ژوند له منځه ځي او کړکېچ دایمي کېږي. له دغسې چلند سره پر اخلاق او قانون ولاړ انسان جوړ نه راځي. د شلمې پېړۍ په سر کې د تروتسکي د دایمي انقلاب مفکورې عمر لند و، داسې به د سید قطب د اسلامي نظام مفکورې عمر به هم اوږد نه وي، ځکه چې د سید قطب د دولتي نظام مفکوره د تروتسکي د دایمي انقلاب د مفکورې غوندې د ژوندیو واقعیتونو سره په ټکر کې ده. په افغانستان کې په تنظیمي دوره کې د مودودي او سید قطب د فکرونو او بیا د طالبانو په دوره کې د عبدالوهاب د فکر له مخې د دولت د تنظیمولو له پاره کوښښ وشو، خو دوی ټول په خپل کوښښ کې په مطلق ډول ناکام شول او ټولنه یې په ژور ډول کړکېچنه کړه، پر هغه سربېره ایران او پاکستان یې په دې قادر کړل چې د افغانستان په چارو کې په بېساري ډول دخپل شي. ۹۴۹

اسامه بن لادن، القاعده او افغان ملي جهاد

اسامه بن لادن په ۱۹۵۷ کال کې د سعودي عربستان په ریاض کې زیږېدلی دی. پلار یې محمد بن لادن په اصل کې د یمن و، چې د شلمې پېړۍ په دوهمه نیمايي کې یې له خپلې کورنۍ سره یو ځای کډه کړې وه. محمد بن لادن د خپلې زياتې ورتیا او زیارونو له کبله ډېر شتمن شو. د عربستان د واکمنې کورنۍ سره یې اړیکې ټینګې کړې او د غټ نوم او اعتبار خاوند شو.

محمد بن لادن په ۱۹۳۱ کال کې د بن لادن گروپ په نامه د ودانولو یوه کمپنۍ جوړه کړه، چې له عربستان سره یې مرسته وکړه چې خپلې سرچینې په کار واچوي. دې کمپنۍ د شلمې پېړۍ په وروستیو کلونو کې پر ودانیو برسېره د کرنې، پټرو کیمیاوي او مخابراتي فعالیتونه هم کول. همدارنګه یې د اروپا او امریکا له ځینو هېوادونو سره د وړلو او راوړلو سوداګري پیل کړه. د بن لادن گروپ وروسته له هغې چې د مدینې او مکې جوماتونه ترمیم او په فلسطین کې د اقصی جومات جوړ کړ نوم واېست. ټوله پانګه یې نږدې پنځه میلیارده ډالر اټکل شوې چې د نړۍ د شتمنو کورنیو په ډله کې راغله. محمد بن لادن د

پاچا فيصل له خوا د ټولگتو وزارت وزير وټاکل شو او درې کاله وروسته د الوتکې د غورځېدو په پېښه کې مړ شو.

محمد بن لادن د ډېرو ښځو او وينځو نه نږدې پنځوس زامن او لونه پرې اېښي دي. محمد بن لادن خپل زامن د کمپنۍ او بزنس په چارو کې بوخت کړي وو. اسامه بن لادن د محمد بن لادن اولسم زوی دی چې مور يې حميده عاليه بېگم د سورېي څخه وه، د خپل مېړه لسمه يا يولسمه ښځه وه. هغه تعليم کړې وه، عصري کالي يې اغوستل او مخ لوڅې وه.

اسامه بن لادن لومړنی، منځنی او لوړې زده کړې په جده کې وکړې. مشر ورور يې غوښتل چې مسلکي انجنري ولولي، خو هغه په پوهنتون کې اسلامي زده کړې غوره کولې. په پوهنتون کې د هغه اسلامي عقیده د اسلامي عالمانو د زده کړو له امله نوره ټينگه شوه چې په هغو کې سيد قطب او ابن تيميه تعليم شامل و. په دغه پوهنتون کې عبدالله عزام او محمد قطب چې د سيد قطب ورور و، درس ورکاوه. عزام چې د فلسطين و د اظهر پوهنتون نه يې د ډاکټرۍ ډپلوم لاسته راوړی و. هغه په معاصر مهال کې مسلمان ولسونه تر هر بل چا نه ډېر د کاپرو او بې ايمانو پر ضد نړيوال جهاد ته هڅولي دي. د اسامه بن لادن علاقمني د ابن تيميه، سيد قطب او د عزام د تعليماتو سره له هغه سپکاوي له امله هم ټينگه شوې وه چې د ليکوال خالد خليل احمد په وينا «د هغه عصر د ځوانو زامنو کلکې ماتې» بللې چې د اسرائيلو له خوا په ۱۹۴۸، ۱۹۶۷ او ۱۹۷۳ کې عربانو کړې وې. ۹۵۰ اسامه بن لادن د خپل پلار سره د انجنري او ودانيو چارو کې د چاودونو موادو په کارولو کې عملي کارونه هم کړي و. دی اوولس کلن و چې د مور د کومې خپلوانې سره يې واده وکړ.

په افغان جهاد کې د اسامه بن لادن ونډه

کاکړ وايي چې اسامه بن لادن د شوروي اتحاد د پوځي يرغل نه اوولس ورځې وروسته ځان پاکستان ته ورسوه. دی دغه وخت دروېشت کلن و. په پاکستان کې يې د اسلامي جماعت مشر قاضي حسين احمد ته غټه بسپنه ورکړه، چې افغان تنظيمونو ته يې ورکړي او په خپله عربستان ته ستون شو. ده تر ۱۹۸۲ کال پورې افغانستان او پاکستان ته څو ځله لنډ سفرونه وکړل، په دې مقصد چې د جهاد سروې وکړي، د مجاهدينو اړتياوې په گوته کړي او په عربستان کې بسپنې ورته ټولې کړي. ده دغه بسپنې افغان تنظيمونو ته د احمدشاه مسعود په گډون رسولې. خو د عبد الرب رسول سيف، گلبدین

حکمتيار او برهان الدين رباني سره د هغه اړيکې ټينگې وې. د بسپنو غټه برخه سياف ته رسېده، ځکه چې هغه د اسامه بن لادن غوندي ټينگ وهابي و. يو بل دليل يې دا و چې رياض د جهاد په پای کې په دې هيله و چې سياف او د هغه په شان نور کلک سني پښتانه چې په کابل کې په واک وي د منځني اسيا نويو خپلواک شويو هېوادونو کې به د ايران هغه کونښښونه شند کړي چې د شيعه کړۍ د پرمختگ له پاره يې کوي. ۹۵۱ نو د عربستان حکومت د ۱۹۸۹ کال د فبروري په مياشت کې د اسلامي تنظيمونو په عبوري حکومت کې د صدراعظم په توگه د سياف د ټاکلو په لار کې ۲۶ ميليونه ډالره د پاکستان د ای اس ای له لارې په افغان مشرانو ولکول.

اسامه بن لادن اټکل د سلگونو ميليونو ډالرو بسپنې برسېره د افغان مجاهدينو له پاره د ځمکې لاندې د تونلونو او روغتيابي مرکزونو په جوړولو سره عملي مرسته هم وکړه. ده په ځانگړي ډول خوست ته نږدې په ژوره کې د قوماندان حقاني هغه مورچلې ټينگې کړې چې د غزا په پيل کې يې هلته پوځي مرکزونه جوړ کړي و. ده له ۱۹۸۶ کال وروسته د باندنيو رضاکارانو جهادي چارو ته پام واراوه.

په افغانستان باندې د شوروي پوځي يرغل د نړۍ مسلمانان پارولي وو. له دوی نه ځينې په خپله خونبه حاضر شول چې په افغانستان کې د شوروي يرغلگرو په وړاندې وجنگيږي. په دغه مهال د عربي هېوادونو ځينې حکومتونه په دې فکر شول چې خپل په جهاد مين اسلامستان افغان غزا ته وهڅوي، شونې ده چې دوی هلته د منځه لاړ شي او د دوی د وړاندوکارونو نه وژغورل شي. د سعودي عربستان حکومت پاکستان ته د دغو رضاکارانو د ورتگ له پاره د سفر د ټکټ بيه په سلو کې پنځه اويا لږه کړه او د پاکستان حکومت په ډېرې اسانۍ سره ويزې ورکولې. دغه رضاکاران همدا چې پېښور ته رسېدل، ځانگړو ځايونو ته په گړنديو موټرونو کې په قدر وړل کېدل. د امريکې د سي اي اي سروال ويليم کسي، د پاکستان سي اي اي د نړۍ افراطي مسلمانان هڅول چې د افغانستان په غزا کې کډون وکړي. خو هر چا په دې کې خپلې اجنداوې درلودې.

د پاکستان «جنرال محمد ضياء غوښتل اسلامي اتحاد ټينگ کړي، پاکستان د اسلامي نړۍ مشر وگرزوي او په منځني اسيا کې اسلامي مخالفت په حرکت راوړي. واشنگټن غوښتل وښيي چې ټوله مسلمانان نړۍ د شوروي پر ضد د افغان مجاهدانو تر څنکه جنگيږي او سعوديانو موقع ومونده چې وهابيت خپور کړي او له خپلو ناراضو افراطيانو نه ځان خلاص کړي.» ۹۵۲ خو په افغان جهاد کې لږ اسلامي سخت دريځي د منځه لاړل او د غزا د برياليتوب وروسته دوی خپلو هېوادو ته راستانه شول او د خپلو

هېوادونو دپاره يې نه اټکل کېدونکې ستونزې پيدا کړې .

د باندنيو رضاکارو د شمېر په اړه کره مالومات نه شته. احمد رشيد وايي چې د ۱۹۸۲ تر ۱۹۹۲ پورې له ۴۳ ملکونو نه په افغان جهاد کې پنځه دېرش زره مسلمانو رضاکارو کېدون کړی وو. پوهاند مکنس رنسيپارت وايي چې اسامه بن لادن د خپلو لسو کلونو کوريلايي تجربو په دوره کې له اوو نه تر نهو زرو رضاکارو مسلمانو سره په تماس کې شوی دی. د سورې يو رضاکار يې شمېر اټکل د اوو ويشتو او ۲۹ زرو پورې بولي او جراح سعد يې شمېر د دولسو او پنځلسو زرو تر منځ بښي. د دغو رضاکارو رول د افغان په جهاد کې ډېر لږ و. يو دليل يې دا و چې دوی په بې شمېره خپره موسسو کې کار کاوه چې د افغان کېدوالو سره مرسته وکړي. دوهم دليل يې دا وو چې «عربانو د افغانانو په څېر د جنګ کولو روحیه نه لرله.» ۹۵۳ افغان عربان د بيلو بيلو مجاهدو تنظيمونو تر څنګه په ورو ټولګيو کې جنګېدل. عربي يا نړيوال غونډ هېڅ نه و. ۹۵۴ او ډېر وروسته اسامه بن لادن يوه لوا جوړه کړه چې بيا به رڼا ورباندې واچول شي.

د باندنيو رضاکارو په منځ کې ډاکټر عبدالله عزام، اسامه بن لادن او ايمن الظواهري هغه کسان وو چې دغه رضاکاران يې په لومړي سر کې د افغان جهاد دپاره او وروسته د خپلو نړۍ والو موخو دپاره تنظيم کړل. هغه مهال چې د باندنيو رضاکارو شمېر څلور سوو ته ورسېد، د پاکستان حکومت له عربستان نه وغوښتل چې کوم شاه زوی ورواستوي چې د هغو سروالي او تنظيم وکړي. عربستان اسامه بن لادن، چې له پاچايي کورنۍ او په ځانګړې توګه د عربستان د استخباراتو د سروال سره تينګې اړيکې درلودلې، د هغو د سروال په توګه وټاکه. اسامه بن لادن د دغو رضاکارانو دپاره پېښور ته نږدې کمپ جوړ کړ چې دوی د پاکستانې او امريکايي افسرانو له خوا په کې روزل کېدل. د اسامه بن لادن په وينا دغو رضاکارانو ته وسلې امريکايانو او پيسې سعودي تمپه کولې. ۹۵۵ اسامه بن لادن وايي چې «ما کشف کړه چې دا بس نه ده چې په افغانستان کې وجنګېږم. موږ بايد په ټولو جهو کې وجنګېږو، کمونيستي وي يا لېوډيځ.» ۹۵۶

د افغانستان د جهاد په مهال عبدالله عزام او بن لادن په دغو ډګرونو کې کار کاوه: د باندنيو رضاکارو له پاره د روزنې کمپونه جوړول، د هغوی جلبول او تنظيمول او کله په کډه ورسره جنګ کول، د مجاهدينو دپاره بسپنه ټولول او جهاد تبليغول.

اعزام د افغان جهاد مغز او بن لادن د هغه مټه وه. اعزام په پېښور کې د نړۍ وال اسلامي ليک او د اخوان المسلمین د ادارې مشر و. دغه ادارې د عربي رضاکارو له پاره مرکزونه وو. اعزام او بن لادن په ۱۹۸۴ کې په کډه د مکتب الخدمات په نامه يوه اداره

جوړه کړه، چې موخه يې د رضاکارانو روزنه وه. دغې ادارې د روزنې، پوځي، لوجستيکي او خپريه څانگې لرلې. عزام يې امير او بن لادن يې نايب امير و او ورځنۍ چارې يې نورو تر سره کولې. دوی د سیاف په هوکړې سره د پوځي روزنې لومړي مرکزونه په ځاځيو کې جوړ کړل چې هلته نه يوازې باندنيو رضاکارو ته، بلکې افغان مجاهدانو ته هم جنکي مهارتونه بنودل کېدل. بن لادن په ۱۹۸۶-۱۹۸۷ کې د عربي رضاکارو په اړه يوه پرېکړه وکړه چې د هغې له مخې يې يوازې د عربيو رضاکارو له پاره د ننه په افغانستان کې د روزنې څو کمپونه جوړ کړل او نور باندني رضاکار هم په کې روزل کېدل چې هغه وروسته د اعزام او بن لادن تر منځ د اختلاف سبب شوه. ځکه چې اعزام غوښتل چې باندني رضاکار بايد د پخوا غوندې د افغان مجاهدينو سره يو ځای وروزل شي. بن لادن دوی سره راټول کړل او د الخاصه په نامه يې يوه لوا جوړه کړه دغې لوا په خوست کې يو سخت جنګ وکړ چې ډېر عربان په کې تپي او نور په کې ووژل شول. ۹۵۷ دغې لوا په ۱۹۸۷ کال کې جلال اباد ته نږدې په يوه جگړه کې برخه واخېسته. دوه کاله وروسته په ۱۹۸۹ کال کې د شوروي پوځ د وتلو وروسته د جلال اباد په جگړه کې ونډه واخېسته چې يوازې د بن لادن د لوا نه ۱۸۷ تنه عربان ووژل شول.

القاعده

اسامه بن لادن او د هغه څو ملګرو د عزام په سپارښتنه د ۱۹۸۸ او ۱۹۸۹ کلونو تر منځ د القاعدې په نامه يوه ټينګه جنګيالی ډله تنظيم کړه، چې موخه يې د دغسې يو نړۍ وال پوځ جوړول و چې مسلمانان د خپل کېدو نه وساتي. د بن لادن په څنګ کې دغسې کسان او وړې ډلې ډېرې وې چې د افغان د بريالي جهاد له امله سخت دريځې شوې او د يوې لويې جگړې له پاره يې تيارې شوي. د بن لادن يوه ملګري ابو محمد په وينا «د القاعدې فکر د بن لادن په دماغ کې د لومړي ځل له پاره په ۱۹۸۸ کې تېر شو». خو د ليکوال کونارتنه په وينا «د عمومي ذهنيت پر خلاف دا عزام و چې د القاعدې مفکوره يې وړاندې کړه». جهاد د القاعدې يوه غټه برخه وګڼل شوه. عزام ويلي چې «دغه دنده به په افغانستان کې له بري سره پای ته ونه رسېږي، جهاد به د فردي وظيفې په شان پاتې شي تر څو ټول اسلامي هېوادونه مور ته وسپارل شي، د دې له پاره چې اسلام بيا په کې جاري شي». ۹۵۸ د القاعدې په لومړۍ غونډه کې ډاکټر ايمن ظواهري، ډاکټر فضل مصري، ابو عبيده، محمد هاتف ابو فرج يمې او نورو ګډون کړی و. ابو ايوب عراقي د القاعدې امير او بن لادن د هغه نايب وټاکل شو. بن لادن بيا وروسته د ظواهري او دوو سخت دريځو

مصري ډلگيو په ملاتړ د القاعدې امير شو. ليکوال کونارتنو د القاعدې لنډ مهاله، منځمهاله او اوږدمهاله ستراتيژي داسې ښودلې ده: «د (۲۰۰۱ کال) د سپتمبر د يولسمې د مخه د هغې سملاسي موخه له عربستان نه د امريکې پوځ ايستل، او هلته د خلافت رامنځ ته کول و. د هغې منځنۍ ستراتيژي د عربستان په ټاپو وزمه کې د مرتدو رجمونو نسکورول او له هغو وروسته د رښتینو اسلامي دولتونو جوړول و او د اوږدې مودې ستراتيژي د يو لړ هيبتناکو اسلامي دولتونو تاسيسول و چې د امريکې ... او د هغې د متحدانو پر ضد جگړه وکړي». ۹۵۹ دا خيالي ستراتيژي د شتو واقعيتونو سره ډډه نه لکوي. کاکړ رښتيا وايي چې «که د هدف ټاکلو نه مراد، هغه ته په رښتيا رسېدل وي» يو څوک دغسې موخه بايد وټاکي چې هغه ته رسېدل په هغو وسيلو سره چې په لاس کې يې لري شوني وي. «خو بن لادن او د هغو ملگرو دغسې هدفونه ټاکلي چې هغو ته رسېدل ناشوني دي. د دغسې هدف يا هدفونو پايله دا کيږي چې هم دوی او هم د دوی پلويان په سختو رېږونو اخته او له نورو ډېرو نورو انسانانو سره له رښتيني او ښکلي ژوند نه بې برخې وي.» ۹۶۰

په هر صورت د ۱۹۸۸ او ۱۹۸۹ کلونو په بهير کې د بن لادن غټه ستونزه د عزام سره وه. دوی د څو موضوع گانو په سر سره وران شول. د ۱۹۸۹ کال په سر کې بن لادن د عزام نه وغوښتل چې د مصادره د روزنې کمپ دې القاعدې ته يوړل شي. خو عزام ونه منله. دوهمه موضوع چې د دوی تر منځ اختلاف يې نور هم ټينگ کړ هغه دا و چې د مکتب الخدمات مصري جنکياليو غوښتل باندني رضاکاران په ترهگرۍ کې وروزي. خو عزام په مصر کې اوسېدلی و او هلته د ترهگرۍ په پايلو پوهېده. عزام د ترهگرۍ مخالف و ځکه چې په ترهگرۍ کې بې گناه کسان وژل کيږي او اسلام د دې کار مخالف دی. اسلام د خپلو پيروانو څخه نه غواړي په کاپرانو کې بل څوک ووژني خو هغوی چې جنګ کوي. ځکه چې قراني ايت وايي چې «او د خدای تعالی په لار کې له هغو سره جنګ وکړه چې درسره جنګ کوي.» ۹۶۱ نو په دې توګه بن لادن او دوو مصري ډلگيو د غرو په شان چې غوښتل يې د مصادې کمپ نه د القاعدې د مرکز په توګه کار واخلي، عزام يې مخه ونيوله. اسامه بن لادن ورته بيل شو. بن لادن د ۱۹۸۹ کال د نومبر نه د مخه عربستان ته لاړ او عزام په پېښور کې د نومبر په ۲۴ مه نېټه په ګرڼدي موټر کې د خپلو دوو زامنو سره يو ځای په يوې چاودنې سره ووژل شو.

د عزام د وژل کېدو نه وروسته د مکتب الخدمات يوه سخت دريځه ډلگۍ د بن لادن سره يو ځای شوه. بن لادن وروسته د الظواھري تر اغېز لاندې لاړ. ظواھري په ۱۹۷۳

کال کې د مصر اسلامي جهاد تنظيم کړ چې د مصر د دوو سخت دريځو ډلگيو نه يوه ډلگي وه. ظواهي د مصر د ولسمشر انور سادات په وژنه کې تورن شو او دوه کاله يې په بند کې تېر کړل. په ۱۹۸۴ کال کې پېښور ته لاړ. د ظواهي په کونښن سره د اسلامي جماعت په نامه د سيد قطب په پله روانه بله ډلگي هم د بن لادن پر خوا ودېده. برسېره پر دې ظواهي د بن لادن هغه ايډيالوژيکه تشه ډکه کړه چې د عزام په وژنې سره پيدا شوې وه. د ظواهي په کونښن سره د باندنيو ډلو لويان سره نږدې شول. د القاعدې غټ غړی، ابو عبیده، د محمد هاتف په شان په اصل کې د ظواهي ملگری و، چې وروسته په ۱۹۹۶ کال کې د يوکنډا د ویکتوريا په ډنډ کې دوب شو او پرځای يې هاتف د القاعدې پوځي سروال شو. د عزام له وژل کېدو وروسته د مصر د اسلامي جماعت د مشر په توگه شېخ عمر عبدالرحمن د يوه روحاني مشر په توگه ومنل شو. ډېره موده نه وه تېره شوې چې اسامه بن لادن د ظواهي او نورو په مرسته د شيخ عمر ځای ونيو. په دې ډول بن لادن، ظواهي او محمد هاتف د يوه نوي اتحاد په پري پورې ځانونه وښلول او د القاعدې مخکښان شول.

اسمه بن لادن د ۱۹۸۹ کال په جولایي يا اگست کې سعودي عربستان ته ستون شو. دی اوس په عربانو کې د افغان د جهاد او هم په يمن کې د کمونېست رژيم په وړاندې د اسلامي تنظيمونو د ننکې له امله د غټ نامه خاوند شوی و. کاکړ وايي څوک چې په عربستان کې د نامه او اعتبار خاوند شي او له واکمنې کورنۍ څخه نه وي او د هغې په لارې روان نه شي په رېږونو اخته کېږي. بن لادن هم په رېږونو اخته شو. په عربستان کې د هغه پاسپورټ داسې په نښه شوی و چې که بهر ووزي بيا راستنېدلی نه شي. د دې سره سره حکومت نه غوښتل چې ويې پاروي. حکومت د دې دپاره چې دی تر اغېز لاندې راوړي په مدينه کې يې ورته د حضرت محمد د جومات د پراخولو قرارداد وړاندې کړ چې په هغه کې د بن لادن نکه کټه نوي ميليونه ډالره کېده. خو ده د قرارداد د منلو نه ښځنه وغوښته. اسامه بن لادن په جوماتونو کې د امريکې په باندیني سياست نيوکې کولې چې د عربستان واکمنان يې انډېښمن کړي وو. په ۱۹۹۰ کال په اگست کې عراق په کوېټ باندې بريد وکړ او عربستان هم د خطر سره مخامخ شو. پاچا فهد د عبدالعزیز بن باز او نورو ديني عالمانو په مشوره چې گواکې «اسلام په خطر کې شوی» د امريکې پوځ وغوښت. د کوېټ نه د عراق د پوځونو د ايستلو وروسته شل زره امريکايي سرتيري په عربستان کې مېشته شول. ځکه بن لادن وروسته د سعودي د واکمنې کورنۍ او امريکې نه پخلا کېدونکی مخالف شو. اسامه بن لادن د ۱۹۹۱ کال په اپرېل کې د لنډ وخت له پاره پاکستان ته لاړ

او د همدغه کال تر پایه پورې په افغانستان کې چېرته د دې دپاره په نامالوم ځای کې تېر کړل چې د برهان الدين رباني، گلبدین حکمتیار او احمدشاه مسعود تر منځ جوړه وکړي خو هلو ځلو يې گټه ونه کړه.

اسامه بن لادن په سوډان کې (۱۹۹۲-۱۹۹۶)

دغه وخت بن لادن اندېښمن و چې شاید د عربستان حکومت يې د خپلو اجنټانو له لارې ووژني نو له دې کبله له خپلې کورنۍ سره په شخصي الوتکه کې په پټه سوډان ته لاړ. هغه د سوډان د حکومت سروال حسن ترابي سره لا د مخه اړیکې ټينگې کړې وې. د سوډان واکمنو هڅه کوله چې د سوډان نه د اعتبار وړ مخکښ اسلامي هېواد جوړ کړي. دوی غوښتل چې د بن لادن په فني او پولي مرستې سره سوډان اباد کړي. بن لادن د خپلو پنځو کلونو د هستوگنې په مهال د يو بزنس مين غوندې د ودانيو، صنعت، کرنې او بانکي ساحو کې پانگې په کار واچولې او خپل ملگري او پخواني عرب رضاکاران يې په کارو وگمارل. کاکړ وايي دا چې بن لادن به په سوډان کې له القاعدې نه څومره کار اخېستی وه په يقين سره مالومه نه ده. خو په دغې مودې کې په فلپاين، اردن، يمن، تاجکستان، بوسنيا، مصر، نيويارک او نورو ځايونو کې د ترهگرۍ او چاودنو تر شلو نه ډېرې وړې او لويې پېښې وشوې چې ډېر انسانان په کې د منځه لاړل. ډېر جهادي جنگيالي، چې بوسنيا ته د غزا په موخه تللي وو، په بوسنيا کې ونيول شول او ووژل شول. په مصر کې هم جهادي جنگيالي چې د مصر د اسلامي جماعت غړي وو، خپلې موخې ته ونه رسېدل. سره له دې چې دوی په خپلو کړو سره د څو کلونو په بهير کې د اتو سوو او زرو کسانو تر منځ انسانان د مصر د پارلمان د سروال په کېون ترور او ووژل. دوی د مصر په ولسمشر حسني مبارک د وژلو نابريالې هڅه وکړه. د ۱۹۹۲ کال په پيل کې د مصر حکومت د دوی په څپلو بيا پيل وکړ. په زرگونو يې بندي کړل او نور يې د ملکه وتښتېدل. يو شمېر يې لوېديځو اروپايي هېوادو ته پناه يووړه، نور يې سوډان او افغانستان ته د روزنې کمپونو ته لاړل. دا ځل د دوی څپل او خپلو موخو ته نه رسېدل مهم ثابت شول او مشران يې په دې فکر شول څنگه چې دوی په خپلو هېوادو کې د نږدې دشمن يانې د مرتدو رژيمونو په نسکورولو کې پاتې راغلل نو ليرې دشمن يانې امريکا او اسرائيل بايد تخریب شي.

بن لادن په ۱۹۹۴ کال کې د اصلاح او وعظ کمیټه جوړه کړه چې چلوونکي يې د عربستان ناراضيان وو. دوی په خرطوم او لندن کې دفترونه پرانېستل. دوی د عربستان خلک د واکمنې کورنۍ پر ضد پارول. بن لادن د سعودي واکمنې کورنۍ ټينگ مخالف

وکتل شو او واکمنو يې په ۱۹۹۴ کال کې د عربستان له تبعیت نه بې برخې کړ. د ۱۹۹۵ کال په نومبر کې په عربستان کې دوې چاودنې وشوې چې په لومړۍ کې چې په خوبار کې وشوه، نولس امریکایان ووژل شول او په دوهمې کې چې اوه میاشتي وروسته د نومبر په میاشت کې په دهران کې وشوه چې په هغې کې پنځه امریکایان ووژل شول او تر شپږو ډېر نور امریکایان په کې تپیان شول. خو عربستاني ډلو د دغې چاودنې مسؤلیت په غاړه واخېست او ټولو څرګنده کړه چې امریکا دې خپلې لښکرې د عربستان نه وباسي.

د ترهګرۍ د دغو پېښو له امله د امریکې حکومت په سوډان فشار راوړ چې بن لادن د ملک نه وباسي. د ۱۹۹۵ کال په پای کې په خپله ترابي او نور لوړ رتبه مامورین په دې فکر شوي وو چې د دوی هغه فکر سم ونه خوت چې غوښتل یې د سوډان نه یو سوچه اسلامي هېواد جوړ کړي. بله خبره دا وه چې د بن لادن په سر یې له عربستان سره اړیکې خرابې شوې وې. مصر هم سوډان په دې کرم کاوه چې د هغو ترهګرو ساتنه کوي چې په حسني مبارک یې برید کړی و. په دغه حال کې د تېلو غټو کمپنو نه غوښتل چې په سوډان کې پانګونه وکړي چې ترابي ورباندې حساب کاوه. بل د ترابي او بن لادن تر منځ ایډیالوژیکي توپیر هم و هغه دا چې د ترابي سیاسي اسلام د عزام غوندې و نه د ظواھري غوندې. ترابي غوښتل چې تر هر څه د مخه سیاسي قدرت ټینګ کړي او بیا ټولنه اسلامي وګرزوي ځکه نوموړي بن لادن د خپلې دغې لارې په مخ کې خنډ باله. ۹۶۲ د دغو دلیلونو له مخې د سوډان حکومت دې پایلې ته ورسېد چې بن لادن په زیاته کچه پیاوړی شوی دی او باید ځان ورته خلاص کړي.

د سوډان حکومت په دې لټه کې شو چې افغانستان د هغه راتلونکی هستوګنځی وګرځي. په پاکستان کې یې په خپل سفارت کې دغسې یو سوډاني وګماره چې په پښتو پوهېده او هغه له پېښور نه له دريو قوماندانانو سره په دې اړه وغږېد. دغه درې کسان مولوي ساز نور، انجنر محمود او فضل حق مجاهد وو. دوی په ترتیب سره د سیاف، حکمتیار او مولوي خالص تنظیمونو ته منسوب وو. همداسې بن لادن هم له خپل حساس حال له کبله په خپله هم د مولوي یونس خالص او قوماندان حقاني سره په تماس کې شوی و. په دې توګه دغو درې کسانو بن لادن ته بلنه ورکړه چې افغانستان ته کډه وکړي. «د بن لادن د تګ مخکې د سوډان دولت د لادن د الوتلو بشپړ مهالوبش د امریکا دولت ته ورکړ خو د هغه د نیولو له پاره هېڅ ډول ګام پورته نه شو.» ۹۶۳ د ۱۹۹۶ کال د می په اتلسمه دوې الوتکې د جلال اباد په هوايي ډګر کې ښکته شوې چې په هغو کې بن لادن، د هغه لس اولادونه او اټکل دېرش نارینه سرتیري وو.

د سوډان حکومت په دې توگه د خپلو ملي گټو په خاطر بن لادن د هېواد نه وويوست. په دغه ډول القاعدې د بن لادن په مشرۍ په پای کې په افغانستان کې دغسې چانس وموند چې خپلو موخو ته د رسېدو په خاطر د افغان خاورې نه گټه پورته کړي.

افغانستان او بن لادن

د کاکړ په وينا افغانستان د بن لادن د ورتگ په مهال د نظامي او سياسي قدرت څو مرکزونه درلودل. کابل د برهان الدين رباني په مشرۍ، کندهار د محمد عمر په سروالی، جلال اباد د حاجي عبدالقدير په والي توب، او مزار د عبدالرشيد دوستم د زورواکۍ مرکزونه وو. رباني هسې په نامه خان د ټول افغانستان سروال کاڼه. د ملا محمد عمر د واک چلېدو ډگر په پراخېدو و او نور ټول په دفاعي حالت کې و. د ۱۹۹۶ کال په سپټمبر کې لومړی لوی ننګرهار او ورپسې کابل د امارت په لاس ورغی. امارت دغه مهال د باميان پرته، چې د کریم خلیلي په مشرۍ د وحدت د گوند په لاس کې و، د هندوکش په سوويلي افغانستان باندې واکمن و. د امارت مشرانو هڅه کوله چې ټول افغانستان تر خپل بیرغ لاندې يو موټی کړي، د نړۍ والې ټولنې له خوا په رسمیت وپېژندل شي او د خپلې خوښې سلفي ډوله اسلامي شریعت په وطن کې پلی کړي.

بن لادن په جلال اباد کې لومړی په ظاهر باغ کې بیا په هډه کې د مولوي خالص یوې ټینګې کلا او یوه میاشت وروسته د سپین غره میلاوي ته کډه وکړه چې هلته په توره بوره کې د مقاومت په دوره کې د افغان مجاهدينو له پاره يو ټینګ زیرمه تون جوړ شوی و.

کاکړ وايي چې د طالبانو د هسکېدو نه د مخه په افغانستان کې د نا اغېزمن مرکزي حکومت له امله سياسي تشه را منځ ته شوې او د وطن پولې د هر چا پر مخ پرانیستې وې. «له څلورېښتو ملکونو نه په زرگونو اسلامي افراطيان، رتل شوي کسان، سياسي خيال اوبدونکي او ټوپکيان افغانستان ته ننوتل، د دې له پاره چې هلته جهادي تاکتيکونه زده کړي، د وسله والو پاڅونونو له پاره وروزل شي او بیا مبارزه بېرته خپلو هېوادونو ته یوسي.» ۹۶۴ کاکړ زیاتوي چې طبیعي ده چې په افغانستان کې به د بن لادن د ورتگ په وخت کې له دغو جنګیالیو به ډېر لږ پاتې وو. خو القاعده د همدغې مودې په بهیر کې د یوه تنظیم په توگه واقعي شوه او بن لادن موقع وموندله چې له هغې نه یوه منظمه ډله جوړه کړي.

بن لادن په افغانستان کې خپله لومړۍ څرګندونه په توره بوره کې د ۱۹۹۶ کال د اګست په ۲۳مه خپره کړه. دا څرګندونه د امریکا پر ضد د جهاد اعلامیه وه. د افغانستان

د تنظيمونو مشران او د طالب مشرانو هېڅ يوه دا فکر ونه کړ چې د افغانستان څخه د پردي سخت دريځي بن لادن له خوا د امريکې پر ضد د جهاد غږ پورته کول افغانان زيانمن کوي او دوی د دې نه توان او نه دليل لري چې د امريکا ضد چلند غوره کړي. بن لادن کوم ديني عالم او مجتهد نه و، چې د جهاد صلاحيت ولري او بيا د نړۍ ټول مسلمانان جنګ کولو ته ووبولي. د جهاد اعلامول چې په واقعيت کې د جګړې اعلامول کېږي د يو تن کار نه بلکې د خلکو په استازي توب د حکومتونو کار دی. بيا د داسې تن چې د خپل هېواد د تابعيت نه بې برخې شوی، له يوه بل ملک نه د ملي ګټې د ساتنې په موخه شړل شوی او په دريم هېواد کې پناه موندلې وي. دا په هغه مهال د مولوي خالص، والي عبدالقدير او برهان الدين ملي دنده وه چې بن لادن ته يې ويلي وای چې د افغانستان په خاوره کې د خپلو سياسي موخو له پاره د نورو هېوادونو پر ضد بيا وينا او کره ونه کړي. خو دوی دا کار ونه کړ او برهان الدين رباتي خو لا هغه ته افغان پاسپورټ هم ورکړ. بن لادن د همدغه کال په نومبر کې دوهمه مرکه په توره بوره او د ۱۹۹۷ کال په مارچ کې دريمه مرکه هم هلته وکړه.

بن لادن په دغو مرکو کې خپله ليرې کړنلاره وټاکله چې موخه يې امريکا او په نړۍ کې د هغې د ګټو او تاسيسونو ویشتل و. د ظواھري په مشرۍ د اسلامي جهاد غړي بن لادن ته لا نږدې شول او هغو د الفاروق او ابو جندال د روزنې کمپونه د هغه او د هغه د ملګرو او جنګياليو ته څانګړي کړل، چې د خليج په پيسو د مصريانو له خوا چلېدل. له هغه وخت نه چې ننګرهار طالبانو ونيو، بن لادن تر پخوا زيات د خپل مصؤنيت په اندېښنه کې شو. هلته په هغه باندې د اتو مياشتو د هستوګنې په موده کې د هغه د وژلو په موخه څلور يا پنځه واړه نابريالي بريدونه وشول.

د دې سره سره چې د بن لادن او طالبانو تر منځ ايډيالوژيکي توپير زيات و. بن لادن د نړۍ وال سخت دريځي جهادي سلفيت لار نيولې وه چې د وهابيت او سياسي اسلام ځينې توکي په کې ګډ وو او د طالبانو مشران په محلي نوې دوديز پالنې باندې ولاړ وو. خو بيا هم ملا محمد عمر د ۱۹۹۷ کال په لومړيو کې د بن لادن نه وغوښتل چې «د خپل مصؤنيت په خاطر» کندهار ته راشي. بن لادن کندهار ته د سفر په لار کې دوه شپې په کابل کې تېرې کړې او هلته يې د کابل د شورا له سروال ملا محمد رباتي او د هغه له مرستيال ملا محمد حسن سره وليدل. بن لادن د طالبانو غورځنګ ډېر وستايلو او د کوم شرط پرته يې د پيسو او مېرو مرستې کولو ژمنه وکړه. بن لادن دا وويل چې که دی د نړۍ والې ټولنې له خوا د امارت د رسمي پېژندلو په لار کې خنډ وي، حاضر دی له افغانستان نه ووځي. ملا

رېاني ورته وويل چې که دی په افغانستان کې وي نړۍ واله ټولنه به امارت په رسمي ډول ونه پېژني. د حيراني ځای دی چې رېاني د افغانستان ملي گټې په پام کې نه نيسي، بيا هم ټينکار کوي چې بن لادن بايد دلته واوسي.

بن لادن لا د مخه قوماندان حقاني د طالبانو په لور اړولی و او د نيوزويک د يوې ليکنې له مخې هم ملا محمد عمر د بن لادن په پيسو د احمدشاه مسعود ځينې قوماندانان له هغه نه گرزولي او هغوی په حساس وخت کې د کابل دفاعي ځايونه خوشي کړي وو. ۹۶۵.

په کندهار کې د بن لادن، د هغه کورنۍ او د هغه مليشاوو ته د اوسېدلو له پاره يوه لويه ماڼۍ ورکړل شوه خو دی کله هلته، کله په پکتيا او ننګرهار کې اوسېده. ده په کندهار کې د امارت له مشرانو سره هم هغسې چلند غوره کړ لکه په سوډان کې يې چې له ترابي او نورو سره غوره کړی و. د امارت خزاني ته يې څو ځله پيسې ورکړې او په کندهار کې يې د عامه اباديو ژمني وکړې. خو د هغه مدني چارې پيل نه شوې او د ودانيو چارې سرته ونه رسېدلې ځکه چې پانګې يې په بانکونو کې د امريکې په نوبت بندې شوې وې.

افغانستان ته د بن لادن سره د هغه ټولو هغو ملګرو کډه کړې وه چې په سوډان کې ورسره وو. ابو زبيده د پخوا په شان په حيات اباد کې د القاعدې دفتر چلاوه. که څه هم د بن لادن بانکي پانګې بندې وې، د خليج د شتمنو نه پيسې ور رسېدلې. د مصر د اسلامي جماعت او اسلامي جهاد سرتيري د جلال اباد په چاپېر کمپونو کې چې شايد درونته او توره بوره وي روزل کېدل. د سياف تنظيم په کونړ کې لا هم د اسلامي نړۍ رضاکاران روزل او د هغه خالدان کمپ په سرحدي سيمې کې فعال و. لنډه دا چې ټولو اسلامي تنظيمونو د رېاني د رژيم په گډون د اسلامي نړۍ رضاکارانو ته يا پناه ورکړې وه او يا يې په کمپونو کې د ترهګرۍ له پاره اسانتياوې برابرې کړې وې.

د روزنې کمپونه په ننګرهار، کونړ او په خانګرې توګه د پکتيا په سرحدي پولو کې پراته وو. په پکتيا کې د خوست ختيځې ته د غره په ډډه کې په ژوره کې د البدر په نامه شپږ مرکزونه وو، چې په يوه وخت کې تر شپږو سوو جنکاليو پورې په کې اوسېدلی شول او د القاعدې غړو د هغه نه کار اخېست. ۹۶۶ په هر حال د البدر په شپږو مرکزونو کې سعودي، يمنيان، فلپاينيان، ايغوريان، کردان، اردنان، تاجکان، ازبکان او نور شامل وو. خو پاکستانيان په کې دومره ډېر وو، چې ځايي خلکو هغه ته «پنجابي غونډ» وايه.

ليکوال کونارتنه په نظر القاعده هغه وخت چې بن لادن په سوډان کې و، واقعي شوه خو برک وايي چې القاعده د ۱۹۹۶ تر ۲۰۰۱ کال کلونو کې موجوده وه او مرکز يې

افغانستان گرزېدلی و. ۹۶۷ د القاعدې سروال د امير په نامه يادېږي. تر هغه وروسته مشورتي مجلس دی، چې غړي يې هغه وخت ايمن ظواهي، البنشيري، ابو ايوب عراقي، ډاکټر فضل مصري او نور وو. د شورا لاندې د عمل کوميتې: پوځي، مالي، اداري، فتوا او د اسلامي څېړنو او تبليغ دي. پوځي کوميتې د روزنې د مرکزونو او پوځي چارې پرمخ بيوې. د القاعدې د سر کسانو او کميتو تړاو له هغو سرتېرو سره دی چې په نورو هېوادونو کې دي. القاعده د دغو کړيو له لارې د نړۍ په بيلو بيلو ځايو کې فعاليت کوي. دغه کړۍ سره جلا دي ځکه چې که يوه يې له منځه لاړه شي، بله يې زيانمنه نه شي. د هرې کړۍ غړي د درو نه تر پنځلسو پورې وي. د القاعده غړيتوب په خپله خوښه دی. غړي يې د روزنې په مرکزونو کې ډول ډول تخنيکونه، چلونه، د راز راز سپکو او درنو وسلو او د چاودېدونکو موادو د کارولو زده کړه کوي. مرکز د دغو کړيو نه غواړي چې په خپله نوښت وکړي، په خپل ځای کې پلان جوړ کړي. په مرکز کې په عمومي ډول او په خارج کې د هغه واکمن غړي کله کله د پلان د پلي کولو هوکړه ورکوي او لوژستيکي شيان او بېسې ورته برابروي. غټه نمونه يې د هامبورگ کړۍ وه چې د امريکې چاودنې يې واقعي کړې.

کاکړ وايي چې د دغه اسلامي سخت دريځي غورځنگ رينې ټولنيزې، سياسي او اقتصادي دي چې په مذهبي بڼه بيان شوې خو اصلي ټکي هدف ته د رسېدلو لار ده چې القاعدې غړو او د هغو په شان نورو غوره کړې ده. دغه د دغسې تشدد لاره ده چې ورباندې تگ وچ او لاندې ټول سوزوي. تجربو ښودلې چې په دغې لارې باندې تگ له لومړنيو خونړيو بېرته نه وروسته پوره ناکامي ده. ژوندی نمونه يې په مصر کې د سيد قطب په پله روان د مصر هغه دوه سخت دريځي ډلگۍ- اسلامي جهاد او اسلامي جماعت دي چې په خپل ملک، مصر کې يې اغېزې شوې دي. د دغه واقعيت په نظر کې نيولو سره القاعده او د هغې په شان نور جنگيالي تنظيمونه به څنگه وکولی شي د ملي حکومتونو په وړاندې چې د دوی په انډول پرېمانه سرچينې او ځواکونه او د خپلو ملتونو ملاتړ لري په ترهگرۍ او د پټو تشدد ناکو لارو او کړو سره خپلو ټاکلو موخو ته ورسېږي؟ هو د دوی داسې کړه به قربانيان ولري خو هغه به حکومتونه او سياسي نظامونه نه، بلکې بېکناه عام خلک او د مدنيت ځنې برخې وي. ۹۶۸

افغانستان ته د بن لادن په ورتگ سره اسلامي جنگيالي هم په ډېر شمېر ورننوتل. د امي ښکاري چې بن لادن کندهار ته د ورتگ نه وروسته د ۱۹۹۷ تر پايه پورې د رضاکارو په تنظيمولو او روزنې د کمپونو په ټينگولو کې تېر کړی وي. بن لادن د ۱۹۹۸ کال د فبروري په ۲۳ مه د البدر په کمپ کې د ژورنالستانو په وړاندې د «صليبيونو او يهودانو پر

ضد د علمي جبهې» جوړېدل اعلام کړل.

د ۱۹۹۸ کال د اګست په اوومه د کينیا مرکز نايروي او د تانزانيا مرکز دارالسلام کې د څو دقيقو په توپير سره د امريکې د سفارتونو په مخکې غټې چاودنې وشوې چې په هغو کې ۲۱۹ تنه افريقايان او دولس تنه امريکايان ووژل شول او تر څلور زرو نه ډېر کسان تپيان شول. د دغو چاودونو دوه کېدونوالو په نيولو سره يقيني شوه چې دا د القاعدې کار و. د امريکا حکومت ديارلس ورځې د اګست په شلمه د عرب سمندرګي نه د البدر کمپ ۷۵ تومهاک راکټونه وويشتل، ترڅو بن لادن او د هغه ملګري د منځه يوسي.

د امارت د مشرانو او د بن لادن اړيکې

د امارت د مشرانو اړيکې د بن لادن سره د عمومي ذهنيت پر خلاف لوړې ژورې درلودې. ملا محمد عمر د بن لادن له خوا د صليبپيانو او يهودو پر ضد د اسلامي علمي جبهې اعلامولو پارولې و. د همدغه کال په اپرېل کې افغانستان ته د يوه لوړ رتبه پلوي له ورتګ نه دوه مياشتې وروسته ملا محمد عمر په کندهار کې د سعودي عربستان د استخباراتو د سروال ترکي الفيصل سره په پټه ومنله چې بن لادن عربستان ته سپاري خو چې د عربستان او افغانستان د عالمانو يو پلاوی د هغه د ايستلو له پاره يو قانوني فارمول وباسي. د امارت مشرانو د جولايي په مياشت کې عربستان ته د خپلې ژمنې له مخې يو پلاوی ولېږه او د بن لادن د عربو ساتونکو پر ځای يې افغان ساتونکي وګومارل. ۹۶۹ عربستان په دې اړه زر څه ونه کړل. د خوست د ويشتل کېدو نه درې اونۍ وروسته د کندهار په هوايي ډګر کې د عربستان دوه جټ الوتکې کوزې شوې. په يوې کې ترکي الفيصل او په بلې کې کومانډوګان وو چې بن لادن به د هغې موافقې له مخې عربستان ته بيايي، چه له ملا محمد عمر سره شوي وه. خو ملا محمد عمر د خوست د پېښې له امله له خپلې خبرې نه واوښت او فيصل تش لاس عربستان ته ستون شو. خو د دې سره سره د همدغه کال په دسمبر کې ملا محمد عمر د بن لادن نه د امريکا ضد ويناوو له امله نور هم خپه شو. بيا امارت وويل چې د بن لادن نه بې غوښتي دي چې خپل سياسي او پوځي کره بس کړي. دوی دا وويل چې د هغه ستالايټ تليفونونه يې بند کړي او يوه لس کسيزه ډله يې کمارلې چې خوځېدنې يې وڅاري. له دغو خپګانونو سره سره ملا محمد عمر نه غوښتل چې بن لادن د ملک نه وباسي.

ملا محمد عمر په دغه بې ځايه فکر و چې «که زه بن لادن و شرم دا به زما پای وي». ۹۷۰ خو واقعيت پرمخک شو او د ملا محمد عمر پای ځکه شو چې بن لادن يې ونه

شړلو. ملا محمد عمر يو ساده سړی و خوت او بن لادن تېر ایسته. ۹۷۱ په پای کې محمد عمر په يوه پراري عرب باندي دومره ټينگ ودرېد چې خپل مقام، نظام، هېواد او د خپلو وطنوالو واکمني يې په خطر کې واچول.

بن لادن محمد عمر ډېر ستايه شايد په دې چې هيله يې کوله چې د سوډان د واکمنو په شان چلند ورسره ونه کړي. کاکړ وايي چې بن لادن د ۱۹۹۸ کال د سپتمبر په پنځلسمه نېټه خپل بيعت ملا محمد عمر ته استولی و. هسې امارت د القاعدې او نور ترهگرو ډلو د روزنې کمپونه ازاد پرې ايښي وو، هغو ته د وسلو د ترلاسه کولو مخه يې نه نيوله. د وسلو غټه سرچينه د ادم خېل درې د وسلو جوړولو شخصي کارخانې وې چې د بن لادن په پيسو اخېستل کېدې او د ای اس ای په موافقه په لاریو کې کمپونو ته ورل کېدلې. ۹۷۲ په امارت باندي د طالبانو له خوا د کابل د نيولو وروسته نړۍ وال فشارونه وار په وار زیاتېدل چې وروسته به ورته راوگرځم.

اسامه بن لادن د نړۍ والې کشالې زړی

له امارت سره د نړۍ والې ټولني او په ځانگړي ډول د امريکې چلند دوې مرحلې لري. لومړۍ مرحله يې د کابل د نيولو د مخه او دوهمه مرحله يې د کابل د نيولو وروسته موده په غېږ کې نيسي. د کابل تر نيولو د مخه هغو هېوادونو چې په افغانستان کې يې ارامي غوښتله له امارت سره روغ نيتي لاره. د امريکې د حکومت روغ نيتي له دې امله و چې طالبانو په خپلو سيمو کې يې وسلې کول پيل کړل، خپلې مخالفې جنګي ډلې او تنظيمونه يې بې اثره کول او د کوکنارو په کرلو يې بنديز لکولی و. دا هيله ورو ورو پياوړې کېده چې د طالبانو په پوره بري سره به په ټول افغانستان کې سوله خوندي شي او افغانستان به بيا ترانزيتي او لويه لار وي. څنګه چې د شوروي اتحاد په ټوټه کېدو سره په منځنۍ اسيا کې خپلواک جمهوريتونه هسک شول هيله کېدله چې د کسپين د سيمو گاز او تېلو نلونه به د افغانستان له لارې چې لنډه او اسانه لاره ده د بلوچستان گوادرن بندر ته وغزول شي.

د امريکا د يونيکال او د ارجنتاين د بريداس د تېلو کمپنيو د دغو نلونو د غزولو دپاره خپلې هڅې پيل کړې وې. که څه هم د دغې پروژې سره فېدرالي روسيې او ايران مخالفت درلود خو مهمه دا ده چې د افغانستان د امارت لويان هڅې ته په اهميت قايل نه وو. ۹۷۳ د بروس ريچارډسن په اند په افغانستان کې د جکړې مهم لامل تېل او سيمه يزه لاسوهنه ده. په افغانستان کې اوږدمهاله بې ثباتي ايران او روسيې ته اجازه ورکوي چې د وړانديز شوې د نل ليکې د غزولو له پاره خپلې بديلي لارې راوړاندې کړي چې د دوی له

سيمو نه تيرېږي. د تېلو او گازو پراخه زېرمې د صنعتي نړۍ اړتياوې تر کلونو کلونو پورې بسپه کوي او بيه يې تريليونو ډالرو ته رسېږي. د دغو زېرمو د راويستلو له پاره تر ۵۰ تريليونو بهرنۍ پانگې اچونې ته اړتيا ده. د دې برسېره د دغو زېرمو د ماليې او گمريکي تعرفو په بڼه نيول شوې کټه لسگونو بيليونو ډالرو ته رسېږي او هغو هېوادونو ته ورکول کېږي چې د نل ليکې په سر خبرې اترې په برياليتوب سره سر ته ورسوي او نل ليکه يې له خاورې نه تيرېږي. روسيه او ايران دواړه لېواله دي چې دا نل ليکې د دوی په کنټرول کې وي. ځکه دوی دواړه شمالي ټلوالې ته د مرستو له لارې جگړه پراخوي او د افغانستان په کورنيو چارو کې لاسوهنه کوي.

د طالبانو له خوا د کابل له نيولو وروسته د امارت په اړه د نړۍ والې ټولنې او په ځانگړي ډول د امريکې د لومړۍ دورې روغ نيتي له منځه لاړ ځکه چې د منځنۍ اسيا د تېلو او گاز پروژو، د بنځو موضوع، د امارت انحصاري نظام او په ځانگړي ډول د اسامه بن لادن او القاعدې تروريسټي کړنو په دغه بدلون کې ټاکنو کې رول ولوباوه.

د ارجنټاين د بريداس کمپنۍ لا په ۱۹۹۵ کال کې له پاکستان او ترکمنستان سره منلې وه چې د ترکمنستان نه د افغانستان له لارې د بلوچستان سوي (Sui) ته چې ۸۷۵ ميله واټن کېږي يو نل وغزوي چې د هغه سره د ځايي غازونو نلونه لکه د شبرغان ونشلول شي. برهان الدين رباني د ۱۹۹۶ کال په فبروري کې د دېرشو کلونو له پاره يو توافق ليک لاسليک کړ. خو د بريداس په وړاندې د امريکا د تېلو کمپنۍ يونيکال لا د مخه پر ضد فعاليت پيل کړی و. د ترکمنستان مشر سفر مراد نيازوف د ۱۹۹۵ کال په اکتوبر کې په نيويارک کې له يونيکال او د هغې شريکې د عربستان دلټا شرکت سره د همدغه نل د غزولو توافق ليک لاسليک کړ او له بريداس نه له خپلې موافقې نه واوربست. دې پروچې د سيمي هېوادونه او داسې هم روسيه او امريکا سيالۍ ته راکش کړل او موضوع د اقتصاد او سودا کړۍ له چوکاټه ووتله او سياسي او کرکېچنه شوه. په پای کې يونيکال له بريداس نه ميدان وکاټه که څه هم د بريداس شرطونه اسان او ښه وو. ملا محمد غوث د ۱۹۹۷ کال په نومبر کې د يونيکال په بلنه امريکا ته سفر وکړ او د امريکا د باندنيو چارو په وزات کې يې د چارواکو نه وغوښتل چې امارت په رسمي ډول وپېژني. داسې هم يونيکال په کندهار او امريکې کې د افغان کدرونو په روزلو پيل وکړ. کاکړ وايي چې که د امارت چارواکو د نلونو پروژو د وطن له پاره گټوره گڼلې او د خپل امارت د پېژندلو له پاره يې له هغې نه کټه اخېستلای له يونيکال سره به يې د موافقې لار نيولې وای. طالبانو پرېکړه وکړه چې هغوی به د يونيکال/دلټا له کنسرسيوم سره تړون لاسليک نه کړي. په اسلام اباد کې د

امريکا د سفارت يوه لوړپوړي چارواکي د طالبانو مرکچي پلاوي ته وويل چې «تاسو به يا زموږ د سرو زرو غاڼۍ مټي که نه د «غاليو تر بمونو» لاندې به مو ښخ کړو.» ۹۷۴ ريجارډسن وايي چې «امريکايانو هغه وخت خبرې په تپه ودرولې کله چې طالبانو د نل ليکې د غځېدا له پاره د بريداس کمپنۍ خوښه کړه. ډېر څارونکي په دې باور دي چې که طالبانو د يونيکال د سعودي عربستان له امريکايي کنسرسيوم سره تړون لاسليک کړي واي امريکا به هېڅکله پر افغانستان نه واي رادانگلي.» ۹۷۵ خو د تېلو او غازو دا پروژې د بن لادن او القاعدې په سر شنده شوه چې افغانستان ته يې په ډېرو اړخونو کې کتنه رسوله او د هغې په پلي کېدو سره افغانستان ته په کال کې سل ميليونه ډالر په وړيا ډول ورکول کېدل.

د افغانستان له لارې نه د نل غزولو نه د امريکا موخه دا وه چې ايران گوښه کړي؛ د طالبانو، ترکمنستان ملاتړ به وشي او د منځني اسيا په هېوادونو کې به د روسيې مخه ونيوله شي، چې د خپل نفوذ سيمه يې کښي. خو امريکې نه شو کولی د ازبکستان له ملکرټيا پرته چې په منځني اسيا کې تر نورو پياوړی او لوی هېواد دی او د روسيې په وړاندې درېدلی هم شو، پرمختگ وکولی شي. نو امريکا د ازبکستان سره د ښو اړيکو په جوړولو په لټه کې شوه. ازبکستان هم غوښتل له امريکا سره نږدې او د روسيې نه ليرې شي. په دې توگه د احمد رشيد په وينا دوه ډوله ايتلافونه مخ په هسکېدو شول. د يوې خوا امريکا د ازبکستان او ازبکستان تر شا ودرېدله او اسرائيل، ترکيه او پاکستان يې هڅول چې هلته پانگونه وکړي. د بلې خوا روسيې قزاقستان، قرغزستان او تاجکستان په خپلې قبضې کې ونيول. ۹۷۶ خو اصلي خبره دا وه چې د امارت چارواکو د بن لادن او القاعدې په سر د افغانستان د بې جوړې جغرافيوي موقعيت نه کتنه ونه کړای شوه او په پای کې افغانستان بایلونکی شو.

د ۱۹۹۷ کال په سپتمبر کې طالبانو مېرمن بونينو له څو باندنيو ژورنالستانو سره د عکس اخېستلو په سر بندي او زر خوشې کړه. بونينو چې د اروپايي اتحاد د خيريه موسسو مشره وه کابل ته د بشري مرستو په موخه تللې وه. طالبانو د دې پر ځای چې د هغې درناوی وکړي بندي کړه. د بونينو دغه بنديتوب اروپايان هک پک کړل او د امارت مخالفان ډېر کړل. دوه مياشتې وروسته د امريکا د بهرنيو چارو وزيرې مېرمن البرايت طالبان «د کرکې ور» وبلل. په ۱۹۹۹ کال کې د ولسمشر مېرمنې هېلري کلينټن په يوه وينا کې څرگنده کړه چې «کله چې ښځې د تش په نامه مذهبي پوليسو له خوا په وحشي ډول ټکولې کېږي چې يا يې مخ نه دی پټ کړی يا د تک په حال کې په جگ اواز غږېږي، موږ

پوهېرو چې مقصد يوازې جسي وهل نه دي، دا د دغو ښځو روحي وژل دي» ۹۷۷ کاکړ وايي د دې سره سره به د دغو ټولو موضوع گانو په سر به ټکر نه و پيدا شوی که بن لادن او القاعدې کمپونه په افغانستان کې نه وای.

د مخه مو يادونه وکړه چې د کابل تر نيولو پورې امريکا د طالبانو ملاتړ کاوه او طالبان يې د ثبات خوندي کولو له پاره مهم گڼل. مېرمن رابن رافايل د امريکا د بهرنيو چارو د وزير مرستيالې د ۱۹۹۶ کال په می کې يانې د برهان الدين رباني په وخت کې څرگنده کړه چې «افغانستان د نشه يي موادو، جرم او ترور لار کرزېدلې چې پاکستان او د منځنۍ اسيا هېوادونه وړانولې شي او له اروپا او روسيې نه اخوا اثر لري.» ۹۷۸ دوه مياشتې وروسته له هغې چې طالبانو کابل نيولی وو مېرمن رافايل د ملگرو ملتو په يوې پټې غونډې کې چې د افغانستان په اړه جوړه شوې وه وويل: «چې طالبان د هېواد تر دوه درېيمې برخې نه ډېر په لاس کې لري؛ دوی افغانان دي، دوی ځايي دي، دوی د پاتې کېدلو قوت ښودلی. د هغوی د بري رښتيني سرچينه افغانان او په تېره پښتانه دي چې نه پای ته رسېدونکی جنک او کډوډي تر څه حده په سوېلي او مصؤنيت په حتيي ډول بدلوي حتی له سختو ټولنيزو بنديزونو سره.» د خبرو په پای کې يې خپل نظر ووايه چې «دا نه د افغانستان او نه دلته د هېڅ چا په گټه ده چې د طالبان دې گوشه کړل شي.» ۹۷۹ د کابل له نيولو وروسته د امريکې د باندنيو چارو وزارت څرگنده کړې وه چې کابل ته د يوه مامور په استولو سره به له امارت سره ډپلوماتيکې اړيکې ټينگې کړي.

د ۱۹۹۷ کال په می کې د طالبانو او د هغو د يوه متحد له خوا مزار ونيول شو. په مزار کې طالبان د ۱۹۹۷ کال په می کې په نابېره ډول مات شول. طالبانو د عبدالملک په بلنه د مزار ښار ونيو. ناخبرو طالبانو د هغه ترون په خلاف چې مشرانو يې له عبدالملک سره کړي و، د ده د ځواکونو په بې وسلې کولو پيل وکړ. عبدالملک د نورو ډلو په تېره د حزب وحدت په ملگرتوب د طالبانو پر ضد عمليات وکړل. هلته «د پنځه زره بندي طالبانو له منځ نه د دوه نيم او درې زرو تر منځ وژل شوي وو.» ۹۸۰ د بنديانو قصدي وژنه په نړيوالو قوانينو کې منع شوې او د بنديانو ډله يزه وژنه د انسانيت په وړاندې جرم اعلام شوی دی. دغه ډله يزه وژنه د پلان له مخې په ارادي ډول تر سره شوه چې ډېرو کسانو په کې لاس درلود، چې د هغې په اړه عبدالملک تر ټولو زيات مالومات لري. بيا زر د طالبانو ډراماتيکه ماتې د طالبانو د ځواک په اړه چې ټول افغانستان به لاندې کړي شک پيدا شو که څه هم د مزار د نيولو په لومړيو ورځو کې پاکستان، عربستان او عربي امارتونو د افغانستان امارت په رسمي ډول وپېژانده. دا شک له يوې خوا د دې لامله پيدا

شو چې طالبان به د هېواد په شمال کې هغسې پرمختګ ونه شي کړی لکه د هندوکش په سوېل کې يې چې د پښتنو په ملاتړ وګرځېدې خوا دا چې ګاونډي هېوادونه ايران، ازبکستان او روسيه په شمال کې د طالبانو مخالفې ډلې د دوی په وړاندې پياوړې کوي او غواړي چې شمال يې ثباته کړي تر څو د امريکې د نل پلانونه ناکام کړي. دغه وخت د افغانستان په چارو کې دخپل هېوادونه هېڅ يوه په يوازې ځان خپلې موخې سر ته رسولی نه شوې نو دوی د داسې فارمول په لټه کې شول چې په هغه سره د هر يوه ګټې لږ او ډېر په کې خوندي وي. له دې کبله د ۱۹۹۷ کال په مې کې د امريکې او روسيې په نوبت د شپږو جمع دوه فارمول وايستل شو چې د هغه له مخې د افغانستان چم ګاونډي هېوادونه چين، تاجکستان، ازبکستان، ايران او پاکستان او داسې هم امريکا او روسيه به د ملګرو ملتونو تر څارنې لاندې په افغانستان کې د پراخ بنسټه حکومت تنظيمولو له پاره کوښښ وکړي. ۹۸۱ دا پروژه ناکامه شوه ځکه چې د يوې خوا د حکومت جوړول د مغرضو ګاونډيانو او باندنيو کار نه دی بلکې په خپله د هېواد د خپلو خلکو کار دی او د بلې خوا ټولې خواوې په افغانستان کې د دې فارمول له مخې د حکومت جوړولو ته رشتينې نه وې.

برسېره پر دې دا وخت د افريقا چاودنې او په خوست د توماهاک راکټونه ويشتل شوي وو. طالبانو د هېواد په نوي سلې برخې واکمن شوي وو. د منځنۍ اسيا هېوادونه او روسيه تر پخوا نور هم اندېښمن شوي وو. دوی د روسيې په نوبت د چين په ګډون د طالبانو په وړاندې د شانګهای په نامه يو ډول کډه جبهه جوړه کړه تر څو تش په نامه شمالي تلواله ته مرستې زياتې کړي. د ۱۹۹۸ کال په اکتوبر کې د قرغستان امنيتي قوتونو يو رېل ودروله چې په هغه کې ۱۶ واکونونه له اوه سوه تنو وسلو او کړتوسو سره وموندل شول. دغه ريل چې د وسلو نه ډک و د بشري مرستو په بڼه له ايران نه تاجکستان ته روان و. ۹۸۲

خو د امارت کشاله د امريکا سره وه. د امريکې حکومت د افريقا د چاودونو نه وروسته د امارت نه د بن لادن د محکمې کولو له پاره سپارل وغوښتل. ملا محمد عمر دغې ته غاړه نه ايښوده. امريکې بيا د ۱۹۹۹ کال په فبروري کې د امارت له پاره وروستی نېټه وټاکله چې بن لادن وروسياري يا دې د نه سپارلو پایلې ته سترګې په لاره وي. په ۱۹۹۹ کال کې د پاکستان ای اس ای او سي ای ای يوه نوې کوماندويي قوه د دې له پاره جوړه کړه چې بن لادن په افغانستان کې ونيسي يا يې ووژني. خو دغه پروژه د مشرف په کودتا سره وخنډول شوه. ۹۸۳

د امريکې حکومت د بن لادن په سر د بې ګټو خبرو وروسته په امارت باندې د

بنديزونو د لگولو په لټه کې شوه، بې له دې چې د هغه سره يې د خبرو ور تړلی وي. امريکا د ۱۹۹۹ کال د جولای په ۶مه نېټه له امارت سره د سوداګرۍ او مالي معاملې بندې کړې او په امريکې کې يې د امارت پانګه قلفه کړه. هندوستان لا د مخه د افغان اريانا الوتکه هند ته نه پرېښوده. همدغه کال د اکتوبر په ۱۵مه د امريکې او د روسې په نوښت د ملګرو ملتونو د امنيت شورا له خوا لا پراخ بنديزونه وايستل شول او د نومبر په ۱۴مه ولګول شول. ملګرو ملتونو له خپلو غړو هېوادونو نه وغوښتل چې د طالبانو الوتکو ته دې په خپل ملک کې د ښکته کېدلو او پورته کېدلو اجازه ور نه کړي او پانګې او مالي سرچينې يې بندې کړي. د امنيت شورا د ۲۰۰۰ کال د دسمبر په ۱۹مه په امارت باندې پخواني بنديزونه په ټينګار سره تاييد کړل او پر دې يې خواشينی څرګنده کړه چې «طالبان اسامه بن لادن ته لا هم پناه ورکوي او هغه او ملګري يې پرېږدي چې د طالبانو د کنترول لاندې سيمه کې د ترهګرو د روزلو کمپونه په کار واچوي او د افغانستان نه د يوې اډې په توګه د نړيوالې ترهګري عملونو د سپانسر کولو له پاره کار اخلي.» ۹۸۴ د امارت چارواکو د ملګرو ملتو غوښتنو ته پام ونه کړ، نه يې بن لادن وسپاره نه يې د القاعدې د روزنې کمپونه وتړل.

د امريکې لويان په دې فکر وو چې د امارت لويان به د پاکستان په فشار سره بن لادن دوی ته وسپاري. د ۱۹۹۹ کال د جولای په ۴مه د پاکستان صدراعظم نواز شريف امريکا ته سفر وکړ او ولسمشر کلينټن د خبرو په ترڅ کې وويل: «هغه په وار وار د پاکستان مرسته غوښتلې چې بن لادن له افغانستان نه راوباسي چې عدالت پرې جاري شي. شريف زياتره وعده وکړې چې همدسې به کوي خو هېڅ يې نه دي کړي. پر ځای يې ای اس ای له بن لادن سره د ترهګرۍ له پاره کار کړی دی.» ۹۸۵ نواز شريف د همدغه کال د اکتوبر په لومړۍ اوونۍ کې د ای اس ای سروال کندهار ته ولېږه چې د ملا محمد عمر نه وغواړي چې بن لادن امريکا ته وسپاري او د بنسټ پالو د روزنې هغه کمپونه وتړي چې د افغانستان او پاکستان په سرحدي سيمو کې فعال وو. د اکتوبر په دولسمه جنرال مشرف کودتا وکړه او د نواز شريف ټول تجویزونه تال شول.

د امريکې حکومت له بنديزونو سره سره د ۲۰۰۰ کال د جنوري په شلمه د سوويلي اسيا په چارو کې د باندینيو چارو د وزارت مرستيال کارل اندرفرت د پروېز مشرف سره د خبرو له پاره اسلام اباد ته واستوه چې هلته له افغان له سفیر او اطلاعاتو وزير امير خان متقي سره هم وغږېد. د خبرو موضوع د بن لادن سپارل او د امارت سره د اړيکو عادي کول و. په همدې مياشت کې د ملګرو ملتو سرمنشي کوفي حنان فرانسېس د ملګرو ملتو د

افغانستان په چارو کې د خپل ځانگړي استازي په توگه وټاکه. د مارچ په مياشت کې د امارت د باندینيو چارو وزير وکيل احمد متوکل په جده کې د اسلامي کنفرانس موسسې په غونډه کې د خبرو له لارې د افغانستان د کښالې د هوارولو ملاتړ وکړ. د ۲۰۰۰ کال د دسمبر په ۲۷ مه د شپږ او دوه استازي په واشنگټن کې سره جرگه شول. په دې ډول د افغان د کښالې د هوارولو او د بن لادن د ايستو هيلې پياوړې شوې خو دغه هيله د امريکې د ولسمشرۍ ټاکنو په مهال ځای په ځای ودرېدله.

د ۲۰۰۱ کال په پيل سره د امريکې نوي حکومت د نوي ولسمشر جورج بوش په مشرۍ د منځنۍ اسيا د انرجي موضوع ټينگه ونيوله. دغه وخت مسکو او پيکنګ د نلونو د غزولو په اړه داسې موافقې کولې چې په هغو سره د منځنۍ اسيا د انرجي زېرمې يوازې د دوی په لاس کې لوېدلې. په دغه حال کې د افغانستان له لارې د نل غزول او د شپږ او دوه فارمول اهميت پيدا کړ.

د ۲۰۰۱ کال د فبروري په ۱۲ مه په ملګرو ملتو کې د امريکا استازي نانسې سوډر برک څرګنده کړه چې امريکا غواړي د ويندل په غوښتنې سره د «پوهاوي دوام» ته انکشاف ورکړي. دغو هڅو نتيجه ورنه کړه. بيا په انګلستان کې د يو شمېر هېوادونو استازو د ملګرو ملتو په مشرۍ غير رسمي غونډه جوړه شوه. هلته دا نظر ومنل شو چې په افغانستان کې دې د پخواني پاچا محمد ظاهرشاه په مشرۍ يو ائتلافي حکومت جوړ شي. نياز نېک د پاکستان استازي او په پاريس کې د هغه سفير څرګنده کړه چې د امريکې د پلاوي يوه غړي ويلي و چې که طالبانو خپل دريځ په تېره د بن لادن په اړه بدل نه کړ په وړاندې به يې پوځي ځواک وکارول شي. د دې دا مانا وه چې لوېديځ نور طالبان «د تل له پاره ترک کول». ۹۸۶ خو پخوا له دې چې طالبان د تل له پاره ترک شي، په امريکا باندې داسې غټ تروريستي بريد وشو چې خيال يې نه کېده.

شپږويشتم څپرکی

کاکړ او طالبان

د طالبانو د واکمنۍ په اړه کاکړ کتاب ليکلی چې «طالبان او اسلامي بنسټ پالنه» نومېږي چې په هغه کې کاکړ افغانستان ته د خپل سفر کتنې، د امارت نظام او تشکيلات او د سياسي اسلام په چوکاټ کې اسلامي بنسټپالنې باندې اوږده رڼا اچولې ده. اسلامي بنسټ پالنه مې د مخه په پنځويشتم څپرکي کې اوږده بيان کړې او اوس به د طالبانو په اړه وغږېږم.

د مخه مو يادونه کړې وه چې په تنظيمي دوره کې هېواد په واقعيت کې په سيمو وېشل شوی و، که څه هم برهان الدين رباني، د ټول افغانستان تش په نامه سروال و. کاکړ وايي چې د هرې سيمې د ننه «د اسلامي تنظيمونو او قومي مليشاوو او د ملي اسلامي جنبش او د نظار شورا قوماندانانو او داسې هم ازادو قوماندانانو د خپلو ټوپکچيانو له لارې د خپلې خوښې حکومت چلوه. دوی ټول تر دې حده په خپل سر و، چې د اسلامي شريعت، قانونونو او ټولنيزو مقاولو، او د رسم رواج پروا نه کوله، خو دا چې د هغو په نومونو د خپلې خوښې حکومت وکړي، شته ټول کړي او خپل جنسي هوسونه پخ کړي. په دغه وخت کې د دوی پر افغاني، اسلامي او انساني ميل باندې حيواني ميل غلبه کړې وه او د انسان په بڼه لېوان ډېر شوي وو. په ټول ملک کې سر، مال او ناموس خوندي نه و، وطن هم د شپږدو لور ته ورکش شوی و او د ملي حکومت د جوړولو د پاره ټول»

کونښنبښونه ناکام شوي وو. په پايله کې په ميليونونو بې دفاع او مظلومو افغانانو باندې د ناهيلی، خواشینی او بديیی څپې خپرې وې. دوی ژغورونکي ته سترگې په لار وو. په ۱۹۹۴ کال کې د طالبانو، ملايانو او مولويانو نه جوړې ديني ډلې له خوا د طالبانو د حرکت په نامه يو نظامي او سياسي غورځنگ د ملا محمد عمر په مشرۍ پيل شو. دغې ډلې خلکو نږدې ټول ملک ونيو. دوی ټول د کليو او باندو خلک وو، چې هلته د ديني مدرسو طالبان، د ماجتونو امامان او د مدرسو چلوونکي وو. دوی د عصري پوهنې يا فني او مسلکي زده کړې نه وې کړې او دولتي تجربه يې هم نه درلوده.

ملا محمد عمر

ملا محمد عمر په خټه هوتک او د کندهار د پنجوايي ولسوالۍ د نوده په کلي کې په زيات گومان په ۱۹۵۹ کال کې زېږېدلی دی. دی يو پرهېزگاره او ساده سړی و. کاکړ وايي چې د ده د منظمو زده کړو په اړه يې مالومات نه شته، شايد دغسې زده کړې يې هېڅ نه وي کړې، ځکه چې ليکل يې په زحمت کول. ملا عمر په ځوانۍ کې د مولوي محمد نبي په مشرۍ د اسلامي انقلاب په تنظيم کې د قوماندان فيض الله اخوند زاده د مرستيال په توگه د شوروي يرغلگرو پر ضد غزا کوله او خپله ښۍ سترگه يې په غزا کې د لاسه ورکړې وه. کاکړ وايي چې په دې ډول د محمد عمر شخصيت د ملي جهاد په دوره کې د مجاهدينو سره د هغه د ناستې ولاړې په پايله کې جوړ شوی او د ده د نړۍ ليد غټه برخه د باندنيو يرغلگرو په وړاندې د وطن او اسلام نه ساتنه جوړوي. په دې کې شک نه شته چې د انگرېزانو او شورويانو په يرغلونو سره په افغانانو کې د وطنپالنې او دين جذبه دواړه يو ډېر غټ خوځوونکی ځواک گرځېدلی، خو ملا محمد عمر دا له ياده ايستلي، چې دی او ملگري يې د اسلامي تنظيمونو په وړاندې ځکه پاڅېدل، چې د هغو او په ځانگړي ډول د هغو قوماندانانو او ټوپکچيانو له خوا اسلام دين ته نه، بلکې وطن او وطنوالانو ته خطر پېښ شوی وو. تر اسلام نه د مخه هم د دغه وطن اوسېدونکو د مقدوني لوی سکندر په وړاندې د خپل وطن نه د ساتنې په موخه په بلخ کې د بېسوس او سپېتامز په سروالی او په کونړ او باجوړ کې اسپه زيو او اسواغانه وو دغسې مقاومت وکړ چې د اسيا په وچه کې بل قوم هغسې مقاومت کړی نه وو. دا ټول د دې اصل له مخې چې د يوه چا وطن د دودونو، ژبې، تاريخ او قوميت په گډون د هغه د ډېرو ارزښتونو سرچينه ده. ۹۸۷

ملا محمد عمر د ۱۹۹۴ کال د می د مياشتې په نهمه نېټه د کندهار د مېوند له سنگسار نه د طالبانو غورځنگ پيل کړ. د دې غورځنگ لومړنی څرگنده پېښه دا وه چې

د ملا محمد عمر په مشري د چاپېرو مدرسو طالبان او ملايان په دې بريالي شول، چې محمد صالح قوماندان، چې د کندهار- هرات په لار کې يې له سروېس نه پردی بڼې په خپل زور د خپل ځانگړي مقصد له پاره بنکته کړې وې، له منځ نه يوسي او بڼې ازادې کړي. ملا محمد عمر وروسته لومړی سپين بولدک او بيا کندهار ونيو. د طالبانو له خوا بيا غزني، هرات او ننگرهار ونيول شول. د ۱۹۹۶ کال په سپتمبر کې يې کابل ونيو. بيا يې په شمال کې سيمې يو پر بل پسې لاندې کړې او تر ۲۰۰۰ کال پورې نږدې ټول افغانستان په خپله ولکه کې راووست. له پخوانيو زورواکو نه برهان الدين رباني په بدخشان او احمدشاه مسعود د تخار په بهاء الدين کې کوبنه کړل شول او نور يې يا ونيول شول، يا يې له طالبانو سره جوړه وکړه يا له وطن نه د باندې ووتل.

ملا محمد عمر د کابل د نيولو د مخه د طالبانو د غورځنگ مشر او بيا اميرالمومنين غوره شو او هېواد د افغانستان اسلامي امارت باندې ياد شو.

د افغانستان اسلامي امارت

کاکړ وايي چې د امارت اداري نظام د نورو حکومتي نظامونو په شان د ټاکلو قوانينو په اساس تنظيم شوی نه و. خو بيا هم امارت يو ډول نظام و چې مشرانو يې هڅه کوله چې د خپلې خوښې سره هغه ته داسې بڼه ورکړي چې په عربستان کې د اسلام په اولې دورې کې جاري و.

د دغه نظام په سر کې ملا محمد عمر د اميرالمومنين په توگه د لوړو امتيازونو خاوند و. د ده تر څنگه د کندهار عالي شورا شتون درلود چې ټاکلي او ثابت غړي يې نه درلودل، منظمې غونډې يې نه درلودې او نه يې ټاکلی صلاحيت درلود. په اول کې يې لس غړي درلودل چې د امارت په پراخېدلو سره يې شمېر ډېرېده. څنگه چې دوی په جهمو کې د خپلو جنکي طالبانو قومانداني کوله نو په غونډو کې د جگړو په وخت کې ونډه نه شوه اخېستې نو ځکه په کندهار کې يوه وره کړی هسکه شوې چې د ملا محمد عمر د نږدې ملگري نه جوړه وه. دغه کړی د اميرالمومنين په مشرۍ د امارت واقعي حکومت و.

د کابل شورا يا اجرائيوي قوه د امارت دوهمه درجه اداره وه چې د وزيرانو په نامه ۲۷ تنه غړي درلودل. د دوی اختيار محدود و او اړ و و د کندهار د شورا د مشورې سره سم خپلې پرېکړې وکړي. خو يوازې د امر بالمعروف او نهی عن المنکر وزارت پراخ اختيارات درلودل او ډېر فعال و. کاکړ زياتوي چې کابل د کندهار په شان يوه شپږ کسيزه د څارنې شورا درلوده چې ملا محمد رباني يې مشر ياني صدراعظم و، چې نرم او اعتدالي سياست

بې چلاوه خو مرستيال يې ملا محمد حسن اخوند تر دې کچې سخت دريځه و چې باندینیو مېرمنو ته يې د روغېر دپاره لاس نه ورکاوه.

ستره محکمه د قضايي قوې په توگه مسلې د شرعیت په اساس هوارولې خو مدني چارې د داود خان د قانونو له مخې اجرا کېدې. د امارت د سر کسان انتصابي او ټول يې ملايان نږدې ټول يې سخت دريځه او نرم دريځه لږ وو. د نرم دريځو د لږوالي لامل دا ښودل کېږي چې هغوی په جنکي جهو کې د ای اس ای د کسانو له خوا د شا له خوا لکېدلي او د منځه وړل شوي دي لکه ملا بورجان په څرخي پله، ملا مشر په کابل، ملا يارمحمد په غزني او ملا احسان الله په مزار کې له منځه يوړل شول. ځکه د امارت سياست وار په وار مذهبي کېده. په ۲۰۰۰ کال کې ملا محمد عمر څرکنده کړه چې اصلي «موضوع د اسلام ده. د اسلام او کفر تر منځ د قدرت مبارزه روانه ده.» ۹۸۸ په دې توگه د ۲۰۰۰ کال د پيل نه طالبان د نوې ايډيالوژۍ نه په ژور ډول اغېزمن شول، چې بن لادن يې په افغانستان کې څرکند پلوي و.

اميرالمومنين

کاکړ وايي چې ملا محمد عمر ته د اميرالمومنين لقب د ديني عالمانو له خوا ورکړل شو. څنگه چې دغه لقب ده ته د ملت يا د هغه استازو له خوا نه دی غوره شوی، له دې امله دغه مقام په قانوني لحاظ د ټولني د سروال د پاره مشروعيت نه لري او د لاندې دليلونو له مخې بې ځايه غوره شوی دی.

لومړی دا چې په دغه لقب کې د جهاد مفهوم نغښتی دی. جهاد ډېرې ماناوې لري، چې يوه يې د کاپرو په وړاندې د مسلمانانو مقابله ده هغه هم په هغه حال کې چې هغو په اسلامي هېواد باندې وسله وال تېری کړی او د اسلامي هېواد سروال د غزا اعلام کړی وي. په افغانستان کې نه په ۱۹۹۹ کې د جهاد حالت و او نه اوس شته. کاکړ زياتوي چې امير د مومنانو امير يانې قوماندان وي نه دولتي سروال. په دې ډول د يوه هېواد سروال د اميرالمومنين په نامه يادول د هغه هېواد د قوماندان کچې ته ټيټوي. بل مهم ټکی دا دی چې اميرالمومنين د ځمکې په سر د ټولو مومنانو يانې د ټولو مسلمانانو امير کېږي، نه د يوه هېواد د مسلمانانو په داسې حال کې چې اوس د ملي دولتونو په عصر کې يو کس د ټولو مومنانو امير يا سروال نه شي کېدای. امارت تر پايه د ځان په اړه له ولس يا د هغه د استازو سره مشوره ونه کړه. ملا محمد عمر د اميرالمومنين په توگه د اسلامي شرع په چوکاټ کې د ننه ملت نه، بلکې خپل ځان «د قدرت لومړنی مرجع» گڼلو. په دې ډول په

امارت کې واکمني فردي شوه او د ملت نه د حاکمیت حق واخېستل شو. فرمانونه د اسلامي شرع په اساس د اميرالمومنين ملا محمد عمر په لاسليک ایستل کېدل او د قانونو حیثیت درلود او په نظر کې د امارت د نظام تمثيل کولو.

کاکړ وايي چې د امارت لویانو وروسته له هغه د خپل نظام او ټولني لا اسلامي کولو ته زور ورکړ چې نظام يې په رسمي ډول ونه پېژندل شو. د دې وروسته د امارت د سر کسانو په باندنيو سخت دريځو عالمانو باندې ډډه لگول وار په وار زیات شو. د دې حکم د تایید له پاره د بامیانو د بتانو ماتول ښه بېلگه کېدای شي. په ۱۹۹۸ کال کې چې طالبانو بامیان ونيو، ملا محمد عمر ژمنه وکړه، چې امارت په دې ټينګ ولاړ دی چې د افغانستان تاريخي اثار د بامیانو د بتانو په گډون خوندي وساتي. خو د دغې ژمنې پر خلاف يې د ۲۰۰۱ کال په فبروري کې د هغو د نړولو فرمان راویست او د مارچ په میاشت کې يې ونړول. ۹۸۹ کاکړ وايي چې دغه د بامیانو د بتانو نړول او داسې هم د امارت چلند له وهابیت سره سر خوري، چې د اسلامي ټولني د لومړۍ دورې له مخې د موجودې ټولني د سوچه کولو غوښتونکي او د فکري ودې او سمونونو مخالف يانې ډېر سخت دريځه بنسټپال خوځښت دی.

دوی هڅه کوي چې نه يوازې ټولنه د اسلامي اخلاقو له مخې سوچه کړي، بلکې د خلکو پام اخرت ته هم واړوي او د مخکې په سر له واقعي ژوند نه يې لرې وساتي. د امارت د لویانو په اند د لومړۍ امې دورې ټولنيزې او حقوقي اړیکې تلپاتې دي او وده او بدلون نه مني او په خپله امه چې څورلس سوه کاله د مخه د ۲۳ کلونو په بهیر کې تنظیمه شوې وه، د کمال پوښ ته رسېدلې او د مخکې پر مخ په ټولو ځایونو او نورو کلتورونو کې صدق کوي.

امارت په عمل کې

امارت د طالبانو او ملایانو په انحصار کې و که څه هم حکومت کول يې نه مسلک، نه تخصص او نه يې په کې تجربه درلوده. دوی نورو افغانانو ته نه په حکومت کولو کې برخه ورکوله او نه يې مشوره غوښته. مقامونه هم د ورتيا او کفایت له مخې نه، بلکې د باور او سیمه ییزو کتنو له مخې ورکول کېدل. د جگړو په وخت کې د امارت ځینې لویان د وزیرانو او د هغوی د مرستیالانو په گډون په جهو کې د خپلو جنکي طالبانو قومانداني کوله او د ملا محمد عمر سره د ستالایت د تليفون له لارې اړیکې درلودې. د امارت د عایدونو سرچینې دا وې: لومړۍ د کرنې وړ اوبو مخکو نه د یوه جریب په سر پنځوس زره افغانۍ د مالیاتو په نامه ټولېدې. برسېره پر دې له حاصلاتو نه يې لسمه برخه د ذکات په نامه هم اخېستل کېده او د تر لاسه کولو له پاره يې یوه بېله اداره جوړه شوې وه. د

عايدونو بله سرچينه د گمرک او خرڅلاو محصولونه دي چې له سوداگرو او هتيوالو نه ټولېده. د کوکنارو عايد هم په دې قلم کې راته. د عايدو بله سرچينه بن لادن او د خليج نور نامالوم شتمن عرب وو چې کچه يې مالومه نه وه. د عايدونو غټه برخه په جنگ لکېده او د هېواد د ابادولو له پاره عايدونه لږ وو.

د امارت په دوره کې هم خلک په راز راز ستونزو اخته وو. د ستونزو غټه سرچينه وزگارې او د خلکو د عايدو لږوالی و. امارت خلکو ته د کار په پيدا کولو کې پوره ناکام و، خود امارت په قلمرو کې امنيت ټينگ او د خلکو سر، مال او ناموس خوندي وو. خو څنگه چې امارت د خلکو د اړتياوو د پوره کولو دپاره شونتياوې برابرولی نه شوې، د قانون ماتوونکو ته يې سختې جزاگانې ورکولې، نو دغه امنيت او د قانونونو دغه مراعات واقعي نه، بلکې د زور او سختې جزا پايله وه. همدارنگه د وطن تعليم کړي کسان د وطن نه باندې تلو ته اړ کېدل.

د بتانو نړول په اصل کې د پاکستان د حکومت او په ځانگړې توگه د ای اس ای کار و. دوی غواړي افغاني هويت او هغه مادي اثار چې تاريخي هويت يې تمثيلوي، له منځه يوسي تر څو افغانان بې هويته کړي يا يې هويت تر دې کچې کمزوری کړي چې خپل ملي شخصيت له لاسه ورکړي. د ای اس ای اغېزمنو کسانو د افغانستان دېرې وړې بودايي مجسمې په راز راز ذريعو تر لاسه کړې، وېې پلورلې او ځانونه يې شتمن کړل. خو بيا يې اوازې خپرې کړې چې طالبانو ماتې کړې دي. د باميان لويې مجسمې يې په خپله د امارت په لاس ماتې کړې.

د امارت مامورين «د اسلامي شرع په نامه، چې په اصل کې له نن نه څورلس سوه کلونو د مخه عربستان قوانين وو، په دوی [افغانانو] باندې» تپل کيږي. ۹۹۰

کاکړ وايي چې د نارينه وو تورې يا سپينې ږيرې په مخونو پورې نښتې او له زنو نه څورندې وې، خو دغه ږيرې د ږيرې والاوو په واک کې نه وې. د طالبانو په وخت کې «ږيرې دولتي» او سپېڅلې شوې او د ږيرو په برخه کې د خيالي سوسياليزم د برابرۍ اصل په کړو کې پلي شوی و. کاکړ ليکي چې «طالبان به په دې خبر نه وي چې په روسيه کې د لوی پېتر په وخت کې چا چې ږيره پرېښوده، مجبور و حکومت ته محصول ورکړي. ږيرې پېژندونکي محترم محمد علم خان لوکري ته به اوس غټ مصروفيت پيدا شوی وي چې له ږيرې نه د ږيرو ولايت مالوم کړي.» ۹۹۱ طالبان دنده لري چې دغه مساوات د اسلامي شرع په نامه په ځواک سره پلي کړي. «دوی ته ږيرې د افغانانو تر حيثيت نه دېرې ارزښتناکې دي.» ۹۹۲ کاکړ وايي چې په کابل کې «د امر بالمعروف يوه طالب له ما سره نرمه رويه وکړه. په وزير

اکبر خان مېنه کې د يوه سړک تر څنګ ولاړ وم، چې يوه نري جگ ځوان وپوښتلم، چې د کوم ځای يې؟ ما خيال وکړ، چې دی د اطراف دی او مرستې ته اړه لري. نو مې وپوښته چې «ته د کوم ځای يې؟» وپې ويل: «د لغمان». ما کړه چې «زه هم د لغمان يم» بيا يې وپوښتلم چې «دا پيره دې ولې لنډه ده؟» پوه شوم چې دی کوم موظف طالب دی، نو مې وپوښته چې «څو کلن به يې؟» وپې ويل چې «د اتو ويشتو» بيا مې وپوښته چې تحصيل د کړی؟» وپې ويل «هو، د مدرسې» بيا مې ورته کړه چې «بڼه، ايا تا ته مناسبه ده چې له ما نه چې تر تا ډېر مشر يم او تا غوندې ډېرو ځوانانو ته مې په پوهنتون کې درس ورکړی دغسې پوښتنه وکړې؟ ايا دا سپکاوی نه دی؟» هغه بيا په ډاګه کړه چې د امر بالمعروف د طالب په حيث دی دغه وظيفه به غاړه لري. وروسته مې هغه رسې ليک وروښود، چې په اسلام اباد کې مې د امارت له سفير الحاج ملا عبدالسلام ضعيف نه تر لاسه کړی و. «د دې ليک په ذريعه محترم حسن کاکړ چې په بهر کې اوسېده اوس غواړي خپل کران هېواد افغانستان ته ولاړ شي درمعرفي کيږي. مور نوموړي ته توصيه کړې چې خپله پيره د شريعت مطابق کړي. فعلاً به ورسره همکاري وکړئ.» ۹۹۳

داسې هم د امر بالمعروف طالبان موظف دي بالغ نارينه کان د لمانځه په وخت کې په جمع سره لمونځ کولو ته رهبري کړي.

د کابل په ښار کې اوس ښځې ډېرې نه ليدل کيږي. هغه لږ شمېر ښځې چې ښار ته وځي په چادري کې پټې وي. په دې توګه د ښار بڼه د انساني شکل له مخې اوښتې وه. په افغانستان کې لومړی ځل د پاچا امان الله خان په وخت کې ښځې مخ لوڅې شوې او بيا د محمد داود د صدارت په مهال ښځې مخ لوڅې شوې خو مخ لوڅي په خپله خوښه وه. په دې توګه د داود خان په وخت کې مخ لوڅي ورو ورو عام شوه او ښځې د نارينه وو غوندې په ټولنيز او سياسي ډګر کې ننوتلې. د ثور د پاڅون نه وروسته د کابل په ښار کې ښځې تر هر بل وخت نه ډېرې ليدل کېدې. خو د طالبانو په وخت کې ښځو د کور نه د باندې کار او زده کړه کولی نه شوه. په دې توګه ښځې د طالبانو په وخت کې د ټولو بشري حقوقو نه بې برخې وې.

په کابل کې د عصري پوهنې يانې د عصري زده کړې په مرکزونو کې د متخصصو استادانو له خوا د سيانسي او ټولنيزو علومو، ټکنالوجي، فلسفې، هنر او ادبياتو تدریس حال هم خراب شوی و. د دغه حال يو لامل دا دی چې ديني مدرسو ته تر عصري پوهنې ډېر پام کيږي. د پوهنې ننداره او ټلويزيون هم نشته، موسيقي خو مطلقه بنده وه.

د طالبانو د مشر انوسره د کاکړ خبرې

کاکړ لومړی په اسلام اباد کې د افغانستان د امارت د سفر له مولوي عبدالسلام ضعیف سره لیدلي او خپل تائر داسې بیانوي: ضعیف ښه څرکند کړيږي او خبرو ته ښه غوږ نیسي. خبرې یې په نرمه ژبه د ټینګ دریځو دي. په خبرو کې یې «کفري نړۍ» ډېره ویله. د ده په فکر نړۍ د کفر او اسلام تر منځ وېشل شوې ده.

سفر وویل چې اسلام مکمل شوی دین دی او په قران مجید کې د هر څه په اړه قوانین شته، نو ځکه د ده په اند اسلامي امارت نړیوالو قوانینو ته اړتیا نه لري او که امارت دغه قوانین او منشورونه ومي، مانا به یې دا وي چې مور د پاکستان په شان له اسلام نه اوبښي یو او نور قوانین مو په اسلامي قوانینو باندې لور کښلي دي. کاکړ وايي چې سفر دا هم وویل چې اسلامي هېوادونه باید د ملګرو ملتو په وړاندې د اسلام ننګه وکړي. دغه ښاغلي د ملګرو ملتو د امنیت شورا د بنديزونو په اړه بې توپيري وښودله. خو نوموړي د کاکړ د دغه فکر په برابر کې چې امارت ته ښايي هغو افغانانو ته چې په لوېدیځ کې دي خپله غېږه پرانېزي، مثبت غبرګون وښود.

په کندهار کې ښاغلي ثاقب د سترې محکمې سروال هم په خپلو خبرو کې کفري نړي ډېره یادوله او داسې یې ښودله چې نړۍ کواکې په اسلامي او کفري برخو ویشل کېږي. کاکړ وايي چې دغه وېش اوس بې ځايه او د کفر کلیمه بې ځايه کارول کېږي. که د کفر له کلیمې نه مقصد بې ایماني او یا بې ديني وي، عیسویان او یهودان په کې نه راځي، ځکه چې د دوی دینونه هم د اسلام په شان په وحدانیت ولاړ دي. که د کفر نه مراد د رښتیا پټول وي نو د رښتیا پټول د هر دین په پیروانو کې شته. بل ټکی دا دی چې په عیسوي هېوادونو کې دین په عمل او نظر کې له دولت نه بیل دی. دوی په دې نه پوهیږي چې د دغو کلیمو په کارولو سره په افغانانو کې د نورو دینونو د پیروانو په وړاندې کرکه پیدا کېږي په داسې حال کې چې په اوسنۍ نړۍ کې ولسونه په زیاتېدونکي ډول یو او بل ته اړ او سره نږدې کېږي.

ثاقب د ژبو په اړه وغږېد او ده عربي تر نورو ژبو لوړه کټله خو کاکړ د ژبو په اړه خپل نظر داسې وړاندې کړی و. ژبې په اساس کې د ځان د افادې او د نورو د پوهاوي وسیلې دي، ټولې ژبې انسانانو ایستلې او هېڅ یوه د بلې نه بهتره نه ده. هر څوک په خپله مورنۍ ژبه کې مطلب په کره ډول څرګندولی شي او هم نور په خپل مقصد ښه پوهولی شي. پخوانیو حکومتونو په عمومي توګه پښتو ته خدمت نه دی کړی او اوس باید پښتانه په تېره پوهان او لیکوالان د پښتو د پاره ډېر کار وکړي.

کاکړ وايي چې د ده د سفر غټ ټکی دا و چې د امارت ځینو لویانو ته وړاندیزونه

وکړي. لومړی وړانديز يې دا و چې نړيواله ټولنه به په تېره د باميانو د بتانو د ړنگولو نه وروسته امارت په رسمي ډول ونه پېژني او شايد د هغه د نسکورولو يا لږ تر لږه د هغه د ناتوان کولو دپاره په ځينو ځانگړو کړو لاس پورې کړي. د بېلگې په ډول د اروپايي ټولني له خوا د قوماندان احمدشاه مسعود بلل او هغه ته د روسيې او ايران له خوا د وسلو په استولو کې زياتوالی راوستل او دروم او قبرس او بن ته د منسوبو ډلو تجويز شوې غونډې جوړېدل په خپلو کې د مخالفت سره سره د امارت پر ضد ايتلاف غواړي او په هغې کې د ايټالې، جرمني، امريکې او ايران د حکومتونو کتونکي هم په کې کېدون کوي. د دغو فشارونو وړاندې امارت ته بښايې چې دغسې يو څه وکړي، چې دغه فشارونه بې اغېزې کړي. امارت دې په اداري طرز کې ځينې کېدونکي بدلونونه راوړي او د ملت استازي دې په حکومت کې شريک کړي. د لوېديځو هېوادونو نه د تعليم کړو افغانانو نه د هېواد په ابادولو کې کار واخېستل شي. د ږيرې، موسيقي او ستر په اړه هم ورسره غږېدلی و. ۹۹۴ خو دغو بښاغلو د مسعود د سفر او د نړيوالې ټولني د فشارونو نه اندېښنه ښکاره نه کړه. اضطرابي لويه جرگه يې هم رد کړه. کاکړ ورته ويلي و چې د نړۍ نه د افغانستان کوښه کېدل به افغانستان ته ډېر گران تمام شي. د امريکا سره اړيکې ښه کول د افغانستان په کټه دي. د امريکې حکومت د بن لادن د موضوع نه پرته د افغانستان سره اسامي اختلاف نه لري. ۹۹۵ د دغې موضوع په حل او د امارت په چلند د عمومي نرموالي په راوستلو سره به د هغه او د دوی تر منځ پوهاوی او روغ نيتي راشي. د امريکې په اړه کاکړ دا هم ورته ويلي و چې له هغې سره دوستي کول د افغانستان په کټه او مخالفت ورسره کول د افغانستان په زيان تماميږي. امريکا د افغانستان نه ليرې پرته ده او د افغانستان خاورې ته تمه نه لري. د هغې په مرستې سره وران شوی افغانستان ابادېدلی شي او بدنېته گاونډي حکومتونه به له افغانستان سره له احتياط نه کار واخلي.

کاکړ دا هم ورته ويلي و چې په افغانستان کې هېڅ افغان د بتانو عبادت نه کاوه، په ټول وطن کې يو بودايي نه شته. دا بتان اوس يوازې زموږ د تېر مدنيت ښکارندوی او د ټول ملت مال و.

د امريکې چاودنې او د امارت پای

د ۲۰۰۱ کال د سپټمبر د مياشتې په يولسمه نېټه نولس ترهگرو چې پنځلس يې د سعودي عربستان تبعه وو په نيويارک کې د نړۍ وال سوداگريز مرکز دوه غبرگونې جکې مانی او په واشنگټن کې د ملي دفاع وزارت په مانی باندې درې مسافر وړونکې الوتکې، چې تېښتولې وې، ووهلې. څلورمه الوتکه چې شايد موخه يې د سپينې مانی وهل و، پخوا له دې

چې خپلې موخې ته ورسېږي د سپرليو د مقاومت له امله د پنسلوانيا ښار ته نږدې راولوېده. په نيويارک کې هغو دنکو غبرکو مانيو د الوتکو په جنکولو سره رانسکورې شوې او په دغې بې سارې تروريستي پېښه کې څه باندې درې زره امريکايي ملکي کسان ووژل شول چې د نړۍ اويا ملتونو ته منسوب وو.

د امريکې ولسمشر جورج بوش د دغې ورځې په ماښام د امريکې خلکو ته په خپله وينا کې څرگنده کړه: «مور به د هغو ترورېستانو چې دغه عملونه يې کړي او د هغو تر منځ چې پناه يې ورکړي توپير ونه کړو.» بوش بله ورځ ژورنالستانو ته څرگنده کړه چې زموږ د هېواد په وړاندې پروني کړنې «د ترهگرۍ له کړو نه ډېر وو. هغه د جنک عملونه وو.» ده زياته کړه چې «د امريکې متحد دولتونه به د دغه دښمن د لاندې کولو له پاره له خپلو ټولو منابعو نه کار واخلي.» ۹۹۶

د امريکې کانگرس د سپتمبر په ۱۴ مه ولسمشر ته دغه واک ورکړ چې د هغو ملتونو، موسسو، يا کسانو پر ضد له ټول اړين او مناسب زور نه کار واخلي چې د ۲۰۰۱ کال د سپتمبر يولسم بريد پلان يې ايستلی، اجازه يې ورکړي يا يې پناه ورکړي ده. کانگرس د دغه کار له پاره څلوېښت ميليارده ډالر ځانگړي کړل. د امريکا خلکو د ولسمشر نه غوڅ ځواب غوښته. ولسمشر جورج بوش د سپتمبر په شلمه د امارت چارواکو ته التيماتوم ورکړ چې دوی دې د امريکې چارواکو ته د القاعدې ټول هغه مشران وسپاري چې ستاسې په هېواد کې دي... سمله لاسه به د تل له پاره په افغانستان کې د ترهگرو د روزنې کمپونه وتړي. طالبان بايد سمله لاسه لاس په کار شي.

د امريکې سره د ترورستانو په وړاندې د ملاتړ په موخه د ملگرو ملتو د امنيت شورا د پېښې په سبب له ټولو دولتونو وغوښتل چې په بېرته سره لاس په کار شي چې د دغو وروستيو بريدونو سپانسر کوونکي، تنظيم کوونکي او عملي کوونکي محاکمې ته وړاندې شي. ناټو په هغه ماښام کې له امريکې سره د تروريزم په وړاندې د مرستې کولو له پاره خپل تياری وښود. د انگلستان لومړي وزير توني بلېر د امريکې سره په دغه کار کې د پوځي مرستې اعلام وکړ او د طالبانو نه يې وغوښتل چې بن لادن وسپاري يا به هرو مرو د جکړې سره مخامخ شي. په دې ډول د امريکې په مشرۍ د لوېديځې نړۍ له خوا په داسې حال کې چې ملگري ملتونه او د ناټو ملاتړ ورسره وو د بن لادن او القاعدې په سر د افغانستان د اسلامي اتحاد په وړاندې ائتلاف جوړ شو.

خو د امريکې د التيماتوم په وړاندې د ملا محمد عمر ځوابونو نه داسې ښکارېده چې هغه دا التيماتوم مهم نه گانه او د پايلوپه اهميت يې سر نه خلاصېده. د دغه التيماتوم

نه څلور ورځې وروسته د سپتمبر په ۲۴ مه ملا محمد عمر د بي بي سي سره په مرکه کې وويل چې «که امريکا وغواړي ترور او وېرول ختم شي بايد د خليج نه خپلې قوې وباسي او په فلسطين کې يې طرفي غوره کړي». بله ورځ يې وويل چې «که د امريکې جکومت د عقل اواز ته غوږ ونه نيوه او خپلې قوې يې د خليج نه ونه ايستلې د تروريستي عمل ټول مسؤليتونه به د هغه د مشري په غاړه وي». ۹۹۷ ملا محمد عمر داسې کار وکړو چې هغه د پښتو متل را په يادوي چې گونگت په پچه وختلو او کشمير يې ليدو. د امارت مشران د دې موضوع په اړه ټول په يوه خوله نه وو. وکيل احمد متوکل له ملا محمد عمر نه په ټينگه وغوښتل چې بن لادن امريکې ته وسپاري او که نه هغه به «د وژنې او بريدۍ سبب وگرزي». ملا عبدالسلام ضعيف د سپتمبر په پنځلسمه گوټخندنه وکړه چې «که گاونډيو يا د سيمو هېوادونو په تېره اسلامي هېوادونو د امريکې غوښتنې ته د نظامي هډو له پاره د هوکې خواب ورکړ فوق العاده حالت به رامنځ ته شي او مور به په دغسو هېوادونو باندې بريد وکړو او سيبې به يې ونيسو». ۹۹۸

په دې توگه ملا محمد عمر او سخت دريځو ملگرو يې د وطن د ملي کټو په وړاندې د خپل وطن نه شړل شوي عرب ته ډېر ارزښت ورکړ. خو د سوډان واکمنو بن لادن د خپلو ملي کټو د ساتلو په موخه د سوډان نه وشړلو. مشرف د پاکستان د ملي کټو له پاره د امارت نه لاس واخېست او دا يې په ډاگه کړه چې «د پاکستان د کټو نه بل څه لور نه دي» او «شرائط اوري راوړي خو ملي کټې پر ځای وي». ۹۹۹ خو امارت ملي کټو ته شا کړه او امارت په دغه ډول په ټوله نړۍ کې يوازې پاتې شو.

امارت د امريکې په سوزوونکو هوايي بمباريو سره چې د ۲۰۰۱ کال د اکتوبر په اوومه پيل شوې د همغه کال په نومبر کې له منځه يووړل شو او د کاکړ په وينا په دغه ډول ملا محمد عمر هغسې چې په موټر سايکل سره واک نيولی و هماغسې يې په موټر سايکل سره واک پرېښود. ۱۰۰۰ ملا عبدالسلام ضعيف هم د دې پر ځای چې د نورو هېوادو سيبې ونيسي د پاکستان واکمنو د خپلو ملي کټو له پاره امريکايانو ته لاس تړلی وسپاره او کوانتامو ته روان کړای شو.

پايليک

د افغانانو تاريخ د چم گاونډيو د تاريخ په پرتله ډېر پېښناک او توپاني دی. په افغانستان کې د شلې پېړۍ په بهير کې له يوه اساسي قانون (۱۹۳۳) نه پرته چې پر ځای يې يو بل قانون (۱۹۶۴) غوره شو نور شپږ يې ټول په زور او تشدد له منځه وړل شوي

دي. خو اساسي قانون د يوې ټولني د نظام تمثيل کوي د هغه د منځه وړل بڼي، په دغه ډول په افغانستان کې اوه يا اته ډوله نظامونه په پښو درول شوي او بيا نسکور شوي دي. د دې نه ښکاري چې افغانان د قانون او قانوني ژوند پخوا نه کوي. دولتي چارواکي چې يوه دنده يې د قانون پلي کول دي په خپله يې ماتوي. په افغانانو کې دغه ميل پياوړی دی چې تر قانون او ان د دولتي نظام نه د زورورو کسانو درناوی ډېر کيږي. د شوروي د يرغل په وړاندې د افغانانو دفاعي جگړه نږدې ټولو افغانانو، په اسلامي او لوېديځې نړۍ کې نږدې ټولو خلکو او حکومتونو مشروع بلله. د شوروي چارواکو خپل تېری او جگړه هم مشروع بلله. په دغه ډول دواړو خواوو د افغانانو په خاورې کې د انسانانو وژل روا وبلل چې په هغه کې لږ او ډېر يو نيم ميليون افغانان ووژل شول. په دغه نږدې لس [شل] کلن جنګ په پايله کې د انسان ژوند نور هم غير مهم شو. د افغانانو کلتور چې د مخه نظامي و په دغه جنګ سره نور هم نظامي او نور هم مذهبي شو. په افغانستان کې سرزور او اسلامي تنظيمونو نه يوازې حکومت خپل ځان ته منحصر کړ بلكې د واک پر سر يې په خپلو منځو کې د جگړې او افغان وژنې يو بل دور پيل کړ چې په هغه سره يې د وطنوالو سر، مال، ناموس او د وطن بشپړتيا په خطر کې واچول. افغانانو هغه نوم، حيثيت او لور ځای چې د ملي غزا له برکته کتلی وو، دغو سرزورو اسلامي تنظيمونو هغه پرمخکته ووايه. د ملايانو په پنځه کلنه دوره کې په دغه وړاندونکي فکر تر پخوا لا ډېر ټينګ عمل وشو چې حکومت به يوازې زورمنان کوي که څه هم په حکومت کولو به هېڅ نه پوهيږي. په دغې دورې کې د جنګ قانون حاکم شو او د افغانستان حيثيت نور هم په مخکه ووهل شو. که څه هم افغانان هېڅکله د خپل کړکېچن تاريخ په اوږدو کې د ترهګرۍ د لېږد ملاتړ نه دی کړی، ان له شوروي د لس کلني وحشي جگړې په اوږدو کې چې همدغسې شونتيا او برحقه توجه درلودله بيا يې هم ترهګري ته ملا ونه تړله. خو د طالبانو د سياست له امله و چې د افغانستان نوم له تروريزم سره يو ځای اخيستل کېده. د طالبانو لويه تېروتنه دا وه چې د هرات د نيولو نه وروسته يې پرېکړه وکړه چې يوازې دوی به حکومت کوي. دوی هم د سرزورو تنظيمونو د مشرانو او د پرچمي او خلقي لويانو او محمد داود په شان د دولتي واک لېوالان وو.

د نړۍ له ټولنو نه هغه بريالی او پرمخ لاړې چې دولتي واک يې د اساسي قانون له مخې په اجرايه، مقننه او قضايه څانګو وېشلی، دولتي لورو څوکيو ته رسېدل د ټاکنو له لارې غوره کول، چارواکي غوره کوونکو ته مسؤل کړول او افرادو ته داسې حقونه او قانوني ازادۍ منلې چې په هغو سره د خپلو ځانونو او په پای کې د ټولني د ښېګڼو له پاره کار

وکړي. په افغانستان کې د امارت د نسکورېدلو وروسته دغسې يو اساسي قانون ايستلی چې په ملي ژوند به ښه اغېز وکړي خو چې چارواکي يې پلي او خلک يې درناوی وکړي. کاکړ زياتوي چې د هغه په پلي کولو او د دولتي چارواکو په غوره کولو کې د ورتيا د اصل له مخې دغه شونتياوې وار په وار ډېرېدلې شي چې قانون او موسسې بېخ ونيسي، د کودتا کانو او جنګونو مخه ونيوله شي او امنيت او ملي پېوستون ټينګ شي. يوازې په دغسې حال کې خلک په ډاډه زړه کولی شي د مدني، صناعتي او کرنيز او داسې هم د پوهې، سيانس او تکنالوژي او د هنر او کلتور په لور په پراخ ډول مخه وکړي او وطن ودان او ژوند شتمن او ارزښتناک کړي. ۱۰۰۱

دوهم ٲوک

کاکړ او نور موضوعات

اوويشتم څپرکي

کاکړ او پښتو ژبه

کاکړ د پښتو په اړه دوې څېړنيزې مقالې چې يوه يې «په معاصر افغانستان کې پښتو او د هغې په هکله يو څو خبرې» او بله يې «پښتنو ته اوس حتي شوې چې خپله پښتو او هويت وساتي» ليکلې دي او په خپلو تاريخي ليکنو کې هم يو نيم ځای د پښتو ژبې موضوع ته اشاره کړې ده. همدارنگه مې د انورالحق احدي يوه مقاله چې «د ملي ټولني د جوړېدو اساسات» نومېږي په دې ليکنه کې هم کته ورنه اخېستې ده. زه هڅه کوم چې د دوی نظريې د پښتو ژبې په اړه لوستونکو ته وړاندې کړم چې د پښتو ژبې د راتلونکې ودې او په ځانگړې توگه د خپلې مورنۍ ژبې اهميت ته د پښتنو پام اړولو له پاره ډېرې مهې دي.

کاکړ ليکي: «پښتانه به هغه وخت د لومړي ځل له پاره څرگند شوي وي، چې اريايان ډلې ډلې شول او د خپل اصلي ټاټوبي نه ولېږدېدل. اريايان د نن نه شپږ زره کاله د مخه په يوه ژبه گډېدل، چې هېڅ څرک يې نه دی ليدل شوی، خو وروستيو د اړيک په نامه ياده کړې ده.» ۱۰۰۲ اريايان چې سره ډلې ډلې او بيل شول، ژبې يې هم ډېرې او بيلې شوې.

د اريايي ژبو نامتو ژبپوه مارکن سټرن وايي چې «پښتو په اصل کې د اريايي د هغې شمال ختيځې ژبې ډلې يوه برخه ده، چې د پامېرې ژبې او د سرخ کوتل د ډبرينې ليکنې بخدي ژبې د هغې اوسني تمثيل کوونکې دي.» ۱۰۰۳

د کاکړ په وينا داسې ښکاري چې د پښتو لومړي جوړونکي ساکا وي، ځکه چې پښتو هغومره چې د ساکي ژبې سره نږدې ده، له بلې ژبې سره دومره نږدې نه ده. د اريايي ژبو نامتو کارپوه جورج مارکن سټرن لا وايي چې «... پښتو بې له دې چې له ساکي ژبې سره وتړله شي بل کېدون نه لري.» ۱۰۰۴ کاکړ وايي چې که ساکي ژبه پاتې وای په دې اړه به څرگند حکم شوی وی خو د نالوستو او پوونده ساکاوو ژبه نه ده راپاتې. راپاتې کليې يې هم د کونو په شمار دي. دوه يې هغه دي، چې اوس هم په پښتو کې هغسې ويل کېږي، چې دوه نيم زره کاله د مخه په ساکاوو کې ويل کېدلې. زرينه او تنی. زرينه د ساکا د کومې ځانگې واکمنه يا ملکه وه او هغه په خپلو خلکو دغومره گرانه وه، چې له مړينې نه وروسته يې وطنوالو د هغې د سرو زرو مجسمه ودروله. زرينه يوازې د پښتو کليمه ده. تنی

(Tanais) د ساکاوو په وخت کې د منځني اسيا د اوسني سردريا نوم و او اوس هغه د افغانستان په پکتيا کې د يوه پښتون ټبر نوم دی. داسې امو د ساکا د هامه ورگه لنډه شوې بڼه ده. داسې هم د لرغونې زمانې د منځني اسيا په ځينو سيمو لکه خوارزم او مروه کې داسې ښارگوټي لوڅ شوي چې د کالا کلیمه يې د نامه يوه برخه يا وروستاری جوړوي. د بېلگې په توگه تيشيک- کالا (Teshik- Kala)، ټوپرک- کالا (Toprak- Kala)، کوی- کرلگان- کالا (Koy- Krylgan- Kala)، د ژنباس- کالا (Dzhanbas- Kala) او کياور- کالا (Gyavr- Kala).

کالا د پښتو يوه عامه کلیمه ده چې اوس هم کارول کېږي لکه د زمان خان کالا، سره کالا، د بست کالا او نور. ژبپوه پوهاند زيار د سکه، کسی، کاسي او کاس نومونه چې په افغانستان او پښتونخوا کې ويل کېږي د ساکا د نامه بدلې شوې بڼې گڼي.

کاکړ دا هم وايي چې ساکا او پښتانه په اصل کې لکه چې يو ټبر وي، يا پښتانه د ساکا د ټبر څانگه وي. ساکي ژبه او پښتو له اوستايي ژبې سره هم نږدې دي. د اوستا ژبه د ويدي دورې نه وروسته هسکه شوې، په داسې حال کې چې پښتو او ساکي ژبه تر هغې نه د مخه راوتلې دي.

کاکړ وايي چې «پښتنو په خپل اوږده تاريخ کې له خپلې ژبې سره بې پروايي کړې ده، که څه هم دغې ژبې د هر پښتون په روزل کېدو او د استعدادونو په انکشاف کې اساسي اثر لرلی دی... گرامر يې پراخ، اوازونه يې ډېر او جوړښت يې ښه منظم دی... د گرامر په برکت يې مطالبه به کې دغسې دقيق او لنډ ادا کېدای شي، چې شايد په ډېرو نورو ژبو کې هغسې ادا نه شي» ۱۰۰۵

کاکړ دا هم وايي چې پښتو د خپلې ودې په لومړنيو مرحلو کې له سانسکرت نه هم اغېزمنه شوې ده. سانسکرت هغه لرغونې هندي ژبه ده، چې له ويدي ژبې سره تړاو لري. دغه ژبه د مخزېږدې څلورمې کې د تعليم کړو هنديانو ژبه وه، نورې هندي ژبې له سانسکرت نه راوتلې دي. دغې ژبې به د موریا کورنۍ د واکمنۍ په دوره کې، چې څه باندې يوه پېړۍ اوږده شوه، په پښتو اغېز کړی وي. ۱۰۰۶

دی وايي چې د سامانيانو او په ځانگړي ډول د غزنويانو له دورې نه وروسته فارسي د دربار او دفتر ژبه شوه. د هندوستان د ډهلي سلطنت په دوره کې چې اول د سلطان محمود غزنوي په فتوحاتو سره تاسيس شو فارسي د دربار او سلطنت ژبه شوه. خو په خپله په فارس کې که څه هم فارسي د ملک دفتري او ملي ژبه وه، د صفوي واکمنې کورنۍ ژبه يوه ترکمني ژبه وه. په داسې حال کې چې د عثماني ترکيې په واکمنې کورنۍ کې فارسي

ويل کېده.

کاکړ دا هم وايي چې پښتانه په لرغونو وختونو کې د نورو قومونو د ليکوالو له خوا يو ځای بل ځای په نامنظم ډول ثبت شوي او ان د دوی ژبه په لرغونو مهالونو کې نه ده څېړل شوې. دی د لرغونو پښتنو شاعرانو په اړه وايي چې د دوی «شعرونه ډېر او ښه پاخه دي، دغومره پاخه چې ښي چې ويونکي يې د لور فکر او احساس خاوندان و. دوی په خپلو اشعارو سره په دغې برخې کې پښتون ولس ښه شتمن کړی دی. دا به شايد د همدغو کلاسيکي اشعارو له امله وي چې پښتو يو ډېر پراخ او دقيق گرامر لري، چې له برکته يې مطالب په کې په دغسې لند او دقيق ډول بيانېدلی شي، چې په نورو ډېرو ژبو کې هغسې ادا کېدلی نه شي.» ۱۰۰۷ دغه شعرونه او پښتونوالي وه چې پښتانه يې د لور او پياوړي کلتور خاوندان کړي وو. دی دا يادونه هم کوي چې په روښاني دوره کې د روښان پير او د هغه پلويانو او اخوند دروېزه تر منځ مشاجرو پایله دا شوه چې «د اسلام په چوکاټ کې د ننه نوي نظريات منځ ته راغلل او دغه مشاجرې چې په پښتو ژبه کېدې د هغې د ودې سبب شوې.» ۱۰۰۸ دی دا هم وايي چې د هوتکو واکمنې کورنۍ په پښتو کې ويناوې او ليکنې کولې او د پښتو په پرمختگ کې يې برخه اخېستې وه. خو دا چې پښتو په معاصر مهال کې چې څنگه ښايي پرمختگ نه دی کړی، دا په اصل کې د پښتنو د بېرته پاتې والي او پښتو ته د دوی د بې پروايي له امله دي.

په افغانستان کې درانيو لومړی په هرات او وروسته په کندهار کې دولت تاسيس کړ. خو تر هغو د مخه د هرات او کندهار دواړه سيمې د صفويانو تر اثر لاندې وې او دفترونه يې په فارسي چلېدل. کاکړ وايي چې احمدشاه بابا «د حکومت چارې غير دراني قومونو ته وسپارلې. منظم پوځ يې له غير دراني قومونو يانې د قزلباشانو نه جوړ و، دري يې دفتري ژبه کړه او دري ويونکي افغانان يې دفتري ماموران شول.» ۱۰۰۹

احمدشاه بابا لومړی د امو نه تر اباسينه خپلواک افغانستان جوړ کړ. بيا يې د خپلو نورو لښکرکشيو په پايله کې په کشمير، پنجاب، سند، بلوچستان او پارسي خراسان يا پخوانی پارتیه کې د واک په خپرولو سره امپراتوري تاسيس کړه. احمدشاه دراني پارسي دفتري ژبه کړه او پارسيوان يې دفتري مامورين کړل. په دې ترتيب پښتنو د پارس نه سياسي ازادي وکتله خو د کلتوري ازادي په لاس ته راوړلو کې پاتې راغلل او تر ننه د پارس د فرهنگي ښکېلاک په زنجيرونو کې پراته دي.

احمدشاه بابا که څه هم پارسو رسې ژبه کړه خو بيا هم خپلې مورنۍ ژبې پښتو ته بې توپيره نه و. نوموړي شاعر و او د خپل نيکه کامران خان غوندې چې «کلید کامراني»

کتاب يې په پښتو ليکلی دی خپل شعر په پښتو ژبه ووايه او نن يې خپلو پښتنو ته د شعر ديوان په نیکات پرې ايښی دی.

د احمدشاه بابا د واکمنۍ په اوږدو کې د «فتواى احمدشاهي» کتاب په پښتو ژبه وليکل شو، قاضي محمدغوث، چې د خان علوم لقب ورکړل شوی و، په پښتو ژبه پر تصوف رسالې وکښلې، حافظ گل محمد مرغزي د پښتو ژبې دريمه شاهنامه ياني احمدشاهي شاهنامه وليکله چې يوازينی مالومه خطي نسخه يې اوس په برېتښ موزيم کې خوندي ده، ملا پيرمحمد کاکړ د پښتو ژبې د زده کړې (درسي) لومړنی کتاب چې «معرفته الافغاني» نومېږي وليکه. ملا پيرمحمد کاکړ دا کتاب خپل شاکرد شهزاده سلېمان ته د لنډې دوه مياشتنۍ واکمنۍ (۱۱۸۶) په دوره کې وړاندې کړی و.

ښاغلی حبيب الله رفيع وايي چې «دا اثر د دې له پاره ليکل شوی و، چې درباريان، منشيان او ميرزايان د پښتو جملو جوړول او ليکل زده کړي او بيا د همدې اثر په مرسته د دفتر او دربار ټولې چارې په پښتو راوړوي خو پښتو د دفتر او ديوان ژبه شي او لکه د نورو ژبو غوندې د دربار په ملاتړ او حمايت پراختيا او پرمختگ وکړي.» ۱۰۱۰ برسېره پردې احمدشاه بابا د پښتو ژبې شاعران په ځان راټول او د شعر ويلو مجلسونه به جوړېدل او په دربار کې پښتو ژبه ويل کېده.

تيمورشاه په خپل دربار کې د پښتو پرځای فارسي رواج کړه. په دې ترتيب د پارس فرهنگي ښکېلاک يقيني شو او تر ننه دوام لري. کاکړ وايي چې «د فارسي په رواجولو کې تيمورشاه دراني، د احمدشاه دراني زوی، غټ رول لوبولی دی. دی چې په مشهد کې زېږېدلی دی او د ځوانۍ دوره يې د خپل پلار د وایسرای په صفت په پنجاب او هرات ياني په ناپښتو ويونکو سيمو کې تېره کړې وه، د فارسي تر اثر لاندې تللی و. دا چې ده پايخت له کندهار نه کابل ته ياني يوه فارسي ژبې ښار ته نقل کړ، تر څه حده د همدغه تاثير له امله و.» ۱۰۱۱

په معاصر افغانستان کې د سدوزيو د واکمنۍ په پيل سره له هماغه اول سر نه يوه پښتنه کورنۍ په کې واکمنه شوه، دفتري ژبه يې پښتو نه، بلکې فارسي شوه. له احمدشاه دراني نه پرته چې هغه په پښتو اشعار ويلې، د هغه اخلافو په فارسي کې اشعار وويل.

د پښتو د رسې کېدو لومړی حرکت د امير شيرعلي خان په دوهمه واکمني کې پيل شو. پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ وايي چې د امير شيرعلي خان د مهمو سمونونو نه يو دا و چې پښتو يې د لومړي ځل له پاره د هېواد ملي او رسې ژبه اعلان کړه.

امير شيرعلي خان د نورو سمونونو په څنگ کې د پښتو د رسې کولو له پاره کوبښښ

دا څرگندوي چې د ده ملي شعور ډېر غښتلی او قوي و. امير غوښتل چې پښتو د يوې رښتيني ملي ژبې په توګه وده او پرمختګ وکړي او د فارسي ځای ونيسي. د دغه مقصد له پاره د پښتو کتابونو ليکل او ژباړل پيل شول، د پښتو سيند (قاموس) د لارښود په توګه حتمي شو، عسکري تعليم نامې په پښتو ژبه برابري شوې، واره او لوی ماموران په القابو ووياړل شول او په پای کې د پښتو بولي (قوماندې) د افغان جنګياليو د ګڼو صنفونو له پاره جوړې شوې. لیتوګرافي مطبعه په کابل کې په کار ولوېده او د شمس النهار اخبار په همدغې مطبعې کې چاپ شو. د قاضي عبدالقادر له خوا «قواعد پلټن پياده» په پښتو ژباړل شو چې تشریحات يې په پاړسو و. علم قواعد لشکر د دریا خان نيازي له خوا، قواعد عسکري د محمد ابراهيم له خوا وليکل شول. «دغه مشکور واکمن ځان ژر په داسې حال کې وموند چې ادعا وکړي چې پښتو د هغه د هېواد والو ملي ژبه شوې وه. د دغه امير په نظر فارسي امانتي بڼکې وې.» ۱۰۱۲ د غوث خيبري په اند د امير شيرعلي خان له خوا د پښتو ژبې د رسمي کولو اصلي موخه د ايران د فرهنگي ښکېلاک د ماتولو په لور یو اغېزمن ګام و.

امير عبدالرحمن د امير شيرعلي خان د پښتو سمون ترک کړ. د پښتو ملګي القاب ترک شول، فارسي د دفتر يوازينی ژبه شوه، خو د امير شيرعلي خان د وخت پوځي القاب تر زياتې اندازې پر ځای پاتې شول. برسېره پردې چې په دې وخت کې يو شمېر تألیفات په پښتو وشول، د ختيځو پښتنو سره د امير مراودې او هغو ته د ده فرمانونه اولیکې په پښتو وې. د دربار په دارالانشأ کې د پښتو ځانګړې څانګه پرانېستل شوه چې مشر يې ملا محمد خان افغاني نويس د عبدالله خان افغان نويس پلار و.

د امير حبيب الله خان په وخت کې هم پاړسو د هېواد يوازينی رسمي ژبه وه او پښتو ژبه يوازې په ښوونځيو او مدرسو کې د پوهنې په نصاب کې شامله شوه خو د غبار په وينا د حبيبي په لیسې کې انګلیسي ژبه يې د پښتو په وړاندې کېښوده چې زده کوونکي د دواړو ژبو نه په خپله خوښه يوه ټاکلی شي. نور ټول مضامين په پاړسو ژبه وو. که څه هم په دولتي کچه پښتو ژبې ته پاملرنه نه ده شوې خو په ولسي کچه بيا هم لږ لږ کار کېده.

د کاکړ په وينا د امير امان الله خان په وخت کې دپښتو د رسمي کېدو دوهم حرکت د لومړي حرکت نه چې امير شيرعلي خان په خپله دوهمه واکمني کې پيل کړی و نږدې نیمه پېړۍ وروسته په کندهار کې پيل شو. ده په کندهار کې د هغه ځای اړوندو چارواکو ته لارښوونه وکړه چې «د کندهار زده کوونکو ته دې په پښتو کې د زده کړې کتابونه برابر او د زده کوونکو شمېر دې زيات شي.» ۱۰۱۳

امان الله خان په اساسي قانون کې د پښتو ژبې د رسمي کېدو او تعميم ته ځای ور نه کړ که څه هم د جرګې زيات غړي پښتانه وو خو دوی د امير په شمول د امير شيرعلي خان غونډې قوي ملي شعور نه درلود چې د خپلې ژبې د رسمي کېدو او تعميم په اهميت وپوهېږي. خو امان الله د پښتو ژبې د ودې په موخه د «مرکه پښتو» اداره جوړ کړه.

د پښتو د علمي کېدو او غني کېدو له پاره لومړنی اساسي گام د پاچا محمد نادر خان په وخت کې د «ادبي انجمن» په تاسيس سره واخېستل شو. په کندهار کې د ادبي انجمن بنسټ په ۱۹۳۲ کال کې د محمد نادر خان په اجازه د کندهار تنظيمه رييس محمد گل خان مومند کېښود او د هغه ولايت دفترونه يې په پښتو وازول. په دې ډول د پښتو دغه حرکت د پاچا نادر خان او ورپسې د پاچا محمد ظاهرشاه د واکمنۍ په لومړيو وختو کې په قوت روان شو او د هغه له پاره په رسمي او علمي برخو کې کار کېده.

په ۱۹۳۷ کال کې د سردار محمد هاشم خان د صدارت په وخت کې کله چې محمد نعيم د پوهنې وزير و د اصلاح په ورځپاڼه کې يو پاچايي فرمان خپور شو چې ويل يې چې پښتو دې د فارسي په څنګ کې په دولتي دفترونو کې جاري شي او د هغه له پاره د درې کلونو په موده کې پښتو دومره زده کړي چې پرې خبرې او هم ليک ولوست وکړای شي او د ولس او حکومت تر منځ مفاهمه حقيقي شي او ملي پېوستون ټينګ شي. دا حرکت د شاهي کورنۍ د نه پاملرنې له امله ناکام شو.

د پاچا ظاهر شاه په مشروطه پاچايي کې د ۱۳۴۳ کال په اساسي قانون کې «د افغانستان د ژبو نه پښتو او دري رسمي ژبې دي سربره پردې څنګه چې پښتو د افغانستان د اکثرو خلکو ژبه ده د افغانستان د ملي ژبې په حيث منل شوې ده.» خو بيا د همدغې شاهي کورنۍ د نه پاملرنې له امله دا حرکت ناکام شو.

په دې ترتيب د شلمې پېړۍ په پيل سره دربار او واکمنې کورنۍ پښتو ورو ورو پرېښوه او دولت ورته په دفترونو کې ځای ور نه کړ. پښتو په عمل کې رسمي نه شوه. واک فونډېشن دې پايلې ته رسېدلې چې «د افغانستان امپراتوري او دولت جوړونکي پښتون قوم په کلتوري لحاظ په تاريخ کې يو ډېر زيات مسخ کېدونکی او ورک کېدونکی قوم دی.»

۱۰۱۴

د واک فونډېشن په موندنې سره په سلو کې اتو پښتنو په افغانستان کې خپله مورنۍ ژبه پرې ايښې ده. له افغانستان نه د باندې د پښتو نه لاس پر سرکېدل تر دې هم گړندي دي. په دې ډول پښتو مخ په پرېښېدو ده او پښتانه د هويت د بحران سره مخامخ دي. په ايران او پاکستان کې «دغه نظر څرګند دی چې څنګه چې پښتو د افغانستان په

جوړولو، ساتلو او تنظيمولو کې اساسي رول لرلی دی، پرعکس د پښتنو کمزوري کېدل به افغانستان هم کمزوري کړي چې په دې حال کې به دوی په اسانۍ سره وکولی شي هغه تر خپل نفوذ لاندې راوړي.» ۱۰۱۵ د دوی ټول کوښښونه دې ټکي ته متوجه دي چې افغانستان دې د دوی په مشرۍ سره یو خپلواک هېواد نه وي. ټول هغه مصیبتونه چې افغانستان ته اول د شوروي په یرغل سره او وروسته د همدغو گاونډيو هېوادونو له خوا پېښ شوي دي د همدغه نظر په اساس دي.

کاکړ وايي چې په دغو هېوادونو او په خاص ډول ايران کې دغه کوښښونه روان دي چې د هغو په موجب پښتو يا کمزوري يا ورکه شي چې څو پښتانه خپل هويت له لاسه ورکړي او افغانستان هغسې هېواد نه وي لکه چې و، يا ان چې دی. «د ايران په افراطي او حتی ځينو رسمي خلکو کې د پښتو ضد تمايل يو څرگند حقيقت دی. د ډېرو منابعو له مخې دغه افراطيون د پښتو اثار تر لاسه کوي او له منځه یې وړي. سربېره پردې چې د پښتو پر ضد تبليغات کوي او ستمي ډوله افغانان د همدغه مقصد له پاره استخداموي او تمويلوي. د همدغو کوښښونو [له امله] د علومو په اکاډمي کې د پښتو اثار له منځه يووړل شول. پښتو ته بل خطر تر دې لا بېخکې دا دی چې پښتانه د نورو کلتورونو سره په تماس سره خپله ژبه د نورو ژبو په کتنه هېروي. داسې چې که دوی د ډېر شمېر په منځ کې يو کس دري ويونکی هم وي، دوی پښتو پرېږدي، په دري گړېږي او يا لکه چې د دري ويونکو نه ښځه په نکاح کړي، هغې ته موقع ورکوي چې اولادونه یې دري ويونکي کړي.» ۱۰۱۶ که کومه پښتانه يو دري ويونکی په نکاح کړي، دغه ښځه د دې توان نه لري چې خپل اولاد ته مورنۍ ژبه ور زده کړي.

دا لا څه کوي ما ته داسې کورنۍ مالومې دي چې مور او پلار یې دواړه پښتانه خو د اولادونو سره دري وايي چې اولادونه یې پښتو زده نه کړي.

خو خبره د يو څو ورځو او ورخطايي نه ده. ځنګه چې پښتو د افغانستان د ډېرو خلکو ژبه ده، دوی د دې توان لري چې هغه له ورکېدو وژغوري، خو چې ليکوالان او د فکر خاوندان دوی د خپلې ژبې حال ته متوجه کړي بې له دې چې د وطن د نورو ژبو نه توجه واورل شي يا هغوی ته د مېرې زوی په سترګه وکتل شي. د افغانستان د ټولو ژبو ويونکي افغانان او د وطن په کتنه او تاوان کې سره شریک دي. له دې امله د هغوی ژبې همغسې وړ دي، لکه په خپله چې دي. د هېڅ ولس ژبه نه سپېڅلې او نه د سپکاوې وړ ده. دا په خپله ويونکي دي چې ژبې جوړوي او وده او انکشاف ورکوي، نو د هر ولس قوت د هغه د ژبې قوت دی او پرعکس په دې ډول پښتانه خپله پښتو هغه وخت په ښه ډول

ساتلی او غني کولی شي چې «په خپله قوي اوسي. ياني قوي اقتصاد ولري، د علم، پوهې او تکنالوژۍ لوړې سطحې ته رسېدلي او په مجموع کې غوړېدونکي او توليدونکي کلتور ولري.» ۱۰۱۷

انورالحق احدي په خپله څېړنيزه مقاله «د ملي ټولني د جوړېدو اساسات» کې وايي چې «ملي ټولنه هغې جامعې ته وايي چې اوسېدونکي يې د قومي، ژبني او مذهبي توپيرونو سره سره د هغې ټولني (ټاټوبي) غړي بولي، هغې ته نهايي وفاداري ولري، او له بلې هرې ټولني نه زيات له هغې سره کلک اجتماعي، سياسي او رواني تړون احساس کړي.» ۱۰۱۸

افغانستان د ډېرو قومونو نه چې بيلې بيلې ژبې، کلتور او دودونه لري جوړ شوی دی. په داسو ټولنو کې چې متجانسې نه وي هلته د ملت جوړولو پروسه کرانه او د ستونزو ډکه وي له دې کبله د ملت جوړونې هغې روڼ فکر، غښتلې اراده او پرله پسې هغې غواړي. په لوېديځو هېوادو کې سياسي وده د ځانگړې پوريو نه تېره شوې ده: «اول دولت جوړ او ټينگ شو؛ بيا ملي ټولنه جوړه شوه او ملي وحدت منځ ته راغی؛ بيا د اقتصاد ودې ته توجه وشوه؛ بيا په سياست کې عامو خلکو ته اجازه ورکړه شوه او ډموکراسي تعميل شوه؛ او کله چې اقتصاد ښه وده وکړه بيا د ملي عايداتو عادلانه وېش مطرح شو.» ۱۰۱۹

خو د دريې نړۍ په هېوادونو کې د ملتونو د سياسي ودې يون بل ډول دی. د دريې نړۍ په هېوادو کې لومړی دولت جوړېږي او د دولت د جوړېدو سره سم د ملت جوړولو، اقتصادي ودې، ډموکراسۍ او د ملي عايداتو د عادلانه وېش موضوعاتو باندې پرېکړې کېږي. خو دا پروسې د يو او بل سره په ټکر کې راځي او سياسي ناکراري پيدا کوي. دلته بايد دې موضوع ته ځانگړې پاملرنه وشي چې په هغو ټولنو کې چې بيل بيل قومونه ژوند کوي که هلته د ملت جوړولو جوړښت غښتلی نه وي کېدای شي چې له ډموکراسۍ نه د قومي اختلافونو د زياتېدو له پاره گټه واخېستل شي. دغه سياسي ناکراري په خپل وار اقتصادي ودې، د ډموکراسۍ ودې او ملي يووالي ته کلک زيان رسوي.

په هغو ټولنو کې چې بيل بيل قومونه ژوند کوي د ملت جوړولو له پاره بنسټيز ټکی د ټولني په هويت باندې موافقه ده. د ملي ټولني په هويت کې اکثريت قوم اساسي رول لري. په دې اړه د ژبې موضوع ډېره مهمه ده. ملي ټولنه ملي ژبې ته اړتيا لري چې په هغې باندې د ټولني ټول قومونه يو د بل سره پوهاوی راپوهاوی وکړي. له سويس او کوم بل هېواد پرته په نورو ټولو هېوادونو کې ملي ژبه د ملي ټولني په جوړېدو کې مهم رول لري. دا د دولت دنده ده چې ملي ژبه په کام په کام تعميم کړي چې زموږ گاونډيان ايران، تاجکستان، ازبکستان او ترکمنستان يې ښې نمونې دي.

د ملي ټولني د جوړولو دوهم بنسټيز لامل د هېواد د وگړو تر منځ قانوني مساوات دي. ان په هغو ټولنو کې چې د قومي او مذهبي لحاظه متجانسې هم وي خو تر څو پورې چې د دغې ټولني ټولو وگړو ته برابر حقونه ورنه کړل شي، هلته ملي ټولنه نه شي جوړېدلې. لکه چې د فرانسې د انقلاب نه د مخه په اروپايي هېوادو کې ملي ټولني نه وې جوړې شوې. په دې توگه د ملي ټولني د جوړولو له پاره د خلکو تر منځ قانوني مساوات حتی دي.

د دې سره سره چې قانوني مساوات د ملت جوړولو بنسټ دی خو تر څو پورې چې په ملي هويت باندې موافقه نه وي شوې قانوني مساوات نه شي کولی چې د ملي ټولني د جوړېدو پروسه پرمخ بوزي. په غيرو متجانسو ټولنو کې چې د ملي هويت موضوع نه وي حل شوې، ډموکراسي چې د قانوني برابري لوره بڼه ده ان سياسي ناکراري منځ ته راوړي او د ملي ټولني د جوړېدو ستونزې لا گرانوني. په دې توگه د ملي ټولني په هويت باندې موافقه او د ملي هويت تعميم د ملي ټولني د جوړېدو او سياسي پرمختگ له پاره لومړی اړين شرط گڼل کيږي.

د افغانستان د دولت تيره د ستر احمد شاه بابا په لاس ايښودل شوې ده. احمد شاهي دولت که څه هم د ډېر وخت له پاره قوي دولت و، خو سدوزي واکمنو د ملت جوړولو له پاره کومه روښانه ستراتيژي نه درلوده او زما ليکوال په اند دوی د ملت جوړېدو په موضوع نه پوهېدل. د احمد شاه بابا دولت د ده د لمسيانو او د محمدزايي واکمنو په لومړيو کلونو کې ډېر کمزوری شو. زما ليکوال په اند امير شيرعلي خان په خپله دوهمه واکمني کې د ملي دولت د ټينگېدو او د ملي ټولني د جوړېدو له پاره ټينگ گامونه واخېستل چې که د انگرېزانو له خوا په افغانستان باندې دوهمه جگړه نه وای تپل شوې نو د دې شونتيا وه چې د افغانستان د ملت جوړېدو پروسه اصلي مسير ته داخله شوې وای.

د امير عبدالرحمن خان له خوا په نسبي توگه قوي دولت جوړ شو. د امير عبدالرحمن او د هغه زوی امير حبيب الله خان دواړو د دولت جوړېدو ته پام وکړ خو د ملت جوړولو او اقتصادي ودې ته يې ځانگړې پاملرنه ونه کړه. د پاچا امان الله په واکمني کې د ملت جوړولو، اقتصادي ودې او ډموکراسي پروسې يو ځای پيل شوې خو د ملت جوړولو هڅې يې نيمگړې وې او د ملي هويت په اړه يې قاطعيت او روښانتيا نه درلوده. پاچا امان الله د خلکو د قانوني برابري په اړه ټينگې هلې ځلې وکړې خو څرنگه چې د ملي هويت مسله حل شوې نه وه نو د ۱۹۲۹ کال اردور نه يوازې د ملت جوړولو، اقتصادي ودې او ډموکراسي پروگرامونه ناکام کړل، بلکې نادر خان او بيا صدراعظم محمد هاشم خان د دولت د ټينگېدو له پاره ډېرې هلې ځلې وکړې.

احدي وايي چې د صدر اعظم محمد هاشم خان دا ستراټيژي چې د اکثريت قوم او ژبه (پښتانه او پښتو ژبه) په ملي هويت کې اساسي برخه ولري عملي ستراټيژي ده خو حکومتونو د هغې په پلي کولو کې د قوي عزم نه کار نه واخېست او په پایله کې د ملت د جوړېدو په لاره کې دغه لومړنۍ ستراټيژي ناکامه شوه. د صدر اعظم شاه محمود خان او محمد داود خان په دورو کې د ملت د جوړولو د پروسې پر ځای اقتصادي ودې ته زياته پاملرنه وشوه او د محمد ظاهر شاه د پاچاهۍ په دوره کې د ملت جوړولو، اقتصادي ودې او دموکراسۍ پروسې ټولې يوځای پيل شوې. د ظاهر شاه ستراټيژي د ملي هويت په اړه دا شوه چې پښتو او دري به رسمي ژبې وي او پښتو به برسېره پر هغې چې رسمي ژبه ده ملي ژبه هم وي. احدي وايي چې که څه هم دا يوه معقوله ستراټيژي وه خو د پلي کولو په لاره کې يې هېڅ ډول اغېزمن گامونه پورته نه شول. د دې سره سره چې ظاهر شاه د خلکو د قانوني برابرۍ په اړه اغېزمنې هلې ځلې وکړې، خو څرنگه چې ملي هويت پوخ نه و د دغې دورې د لېبرال ازاديو نه د قومي اختلافاتو د غښتلتيا په لاره کې کټه پورته شوه او د ملت د جوړېدو پروژه يو ځل بيا ناکامه شوه.

د محمد داود په دوهمه دوره کې دموکراسي د منځه ولاړه، د ملي وحدت په اړه کوم ښکاره فارمول طرح نه شو او د دولت په استحکام او اقتصادي ودې باندې ټينگار وشو. د خلقيانو په دوره کې د ملي وحدت پر ځای په طبقاتي جگړې ټينگار وشو او پرچميانو قومي اختلافات تشويق کړل او غوښتل يې حکومت د قومي لږکيو په مرسته ټينگ کړي. د برهان الدين رباني په دوره کې د ملي وحدت ځای قومي جگړو ونيو.

د ملي هويت په ټاکلو کې د ژبې موضوع ډېر اهميت لري. د ډېورنډ د کرښې د تېرېدو د مخه پښتانه په افغانستان کې دومره ډېر وو چې پښتو بايد د افغانستان يوازینی رسمي او ملي ژبه وای. اوس هم په افغانستان کې پښتانه د شمېر له مخې د ۶۳٪ او د ژبې په لحاظ ۵۵٪ نه زيات دي په دې اساس هم بايد ملي او رسمي ژبه وي. ځنګه چې پښتنو د پارس نه سياسي ازادي واخېسته خو د کلتوري ازادۍ په لاسته راوړلو کې پاتې راغلل او افغان واکمن د ملت جوړولو په پروسه کې د ژبې په اهميت نه پوهېدل نو د دوی د ناپوهۍ او بې پروايي له امله تر ډېره وخته پښتو رسمي اهميت نه درلود. کله چې د ۱۳۴۳ کال په اساسي قانون کې پښتو ته د ملي هويت په ټاکلو کې اهميت ورکړ شو، په عمل کې پښتو نه يوازې دا چې د دري په پرتله يې لومړيتوب نه درلود، بلکې په واقعيت کې دوهمه درجه او محکومه ژبه وه.

په دې ترتيب د هېواد د ملي يووالي له پاره په ملي هويت موافقه تر ټولو مهم شرط دی

او د ملي هويت پر موافقې برسېره د ټولنيز، سياسي، اقتصادي، او نورو برخو کې قانوني برابري ده. په واقعيت کې دغه دوه مهم شرطونه د ملي يوالي منځ ته راتلو له پاره بنسټ جوړوي.

د احدي په اند د هېواد د ملت جوړونې په پروسه کې د هويت په ټاکلو کې بايد «د افغانستان د ټولو وګړو شمېر او ځيني تاريخي واقعيتونه په نظر کې ونيسو. په دې کې شک نه شته چې د افغانستان د ټولو قومونو نه د پښتنو شمېر ډېر دی. دا هم ښکاره ده چې پښتون او افغان مترادفې کليې وې او وروسته د افغان کليمه عام شموله شوه او د افغانستان ټول وګړي يې په غېره کې ونيول. همدغه دليل دی چې د دولت هويت تل افغان و.... زموږ په سيمه کې نور قومونه ځانګړي دولتونه لري. تاجکستان، ازبکستان، ترکمنستان، ايران او ترکيه ټول قومي دولتونه دي. د دغو ټولو دولتونو هويت د هر هېواد د اکثريت په قوم پورې تړلی دی. څرنګه چې په افغانستان کې پښتانه د ټولو نه لوی قوم دی، د ملي ټولې هويت بايد چې افغان وي. په دې اساس که د اول نه د افغانستان سياسي پرمختګ د نورو ډېرو هېوادونو د انکشاف مسير تعقيب کړی وای، پښتو بايد د افغانستان يوازينی ملي او رسعي ژبه وای. خو په افغانستان کې سياسي پرمختګ له نورمال مسير نه اوښتی دی او سره له دې چې د پښتنو نفوس په سلو کې د پنځوسو نه زيات دی ګڼ شمېر اقليتونه د پښتو پر ځای دري زده کړي او مور دغه واقعيت د ملي ټولې په جوړولو کې په نظر کې ونيسو. په دې اساس ښه به دا وي چې پښتو او دري دواړه رسعي ژبې وي، خو سياسي عدالت، تاريخي واقعيت او په هېواد کې د پښتنو اکثريت دا حکم کوي چې پښتو دې د افغانستان ملي ژبه هم وي.» ۱۰۲۰

کاکړ وايي چې «په افغانستان کې له سروال نه نيولې تر کاتب او چپراسي پورې ټول هغه کسان چې له بيت المال ياني د ملت له خزاني نه معاش اخلي په پښتو او دري ژبو بايد ليک او لوست وکولی شي. پښتو دې د فارسي په څېر په نظر او عمل کې رسعي او دفتري ژبه وي او په ښوونځيو، پوهنتونونو او قضايي محاکمو کې د قانون له مخې د اکثريت په حيث ځای ولري.» ۱۰۲۱

زما ليکوال په اند د پښتو ژبې د پرمختګ له پاره يوې اوږد مهاله ستراتيژي ته اړتيا ده. څرنګه چې ايران د خپلې ژبې د پرمختګ له پاره اغېزمنه ستراتيژي لري هغه دا چې د نړۍ د ژبو نه هر ډول علمي او د هنري ادب کتابونه په پارسو ژباړي. د دې لارې خپله ژبه شتمنوي او خپله هم په پارسو ژبه اثار ليکي. دوی د خپلې ژبې د پرمختګ د ستراتيژي په پلي کولو کې پوره بريالي دي.

پاکستان هم د ژبې اغېزمنه ستراټيژي لري هغه دا چې نړيوال مالوماتو ته د انگرېزي ژبې د زده کړې له لارې لاسرسی لري او اردو ژبې ته هم هر ډول اثار ژباړي. پاکستان هم د خپلې ستراټيژي په پلي کولو کې بريالي دي.

پښتانه اړ دي چې د نړيوالو علمي مالوماتو د لاسرسی په موخه انگليسي ژبه زده کړي او د انگليسي ژبې نه هر ډول اثار په پښتو ژبه وژباړي او خپله ژبه شتمنه کړي. نن پښتانه ځوانان لگيا دي چې د کمپيوټر په مرسته داسې د ژباړې پروگرامونه جوړ کړي چې د انگليسي ژبې نه هر ډول کتاب د يوې تنې په کېښکېښلو سره د سترگې په رپ کې وژباړل شي او ژباړه بيا د مسلکي کسانو له خوا د سمون وروسته د چاپ له پاره تياره شي. په دې ترتيب به انگليسي د علم د لاسته راوړو او بهرنۍ سوداگرۍ ژبه، پښتو شتمنول د ملي پېژاند د ساتنې او غښتلتيا له پاره اړينه وسيله وگرځي او پښتانه بايد په خپل وطن کې پښتو د زده کړې، اقتصاد او دفتر ژبه کړي.

دلته لازمه گڼم چې د ۲۰۱۶ کال د می د مياشتې د پښتو ژبې د نړيوالې ورځې د نمانځنې سيمينار ته، چې د هالنډ د لايډن په ښار کې جوړ شوی و، د کاکړ پېغام چې د عبدالله احسان له خوا ولوستل شو هم لوستونکو ته وړاندې کړم.

«پوهاند ډاکټر محمد حسن کاکړ ۲۱ می ۲۰۱۶

د رنو دوستانو روغ او خوښ اوسې

د دغه سيمينار په جوړولو کې د ستاسو محترمانو زيار د قدر او ستاينې وړ گڼم او بری او سرلوري مو غواړم.

دا د هرپښتون دنده ده چې خپلې پښتو ته خدمت وکړي. پښتو ته خدمت په واقع کې اولس ته خدمت دی. دا د دوی حق او غوښتنه ده. خو له بده مرغه د پښتنو په اوږده تاريخ کې پښتو ته هغسې چې ښايي خدمت نه دی شوی. که پښتو استازی لرلی، د گيلې په ډول به يې ويلی وی چې اې پښتنو! زه د ژبې په توکله د هېڅ ژبې نه کمه نه يم خو دغه تاسې يې چې زه مو له پامه غورځولې او بې قدره کړې يم. په نتيجه کې زما په بې قدری سره تاسې په خپله حتی په خپل ټاټوبي کې بې قدره شوي يې. اوس نو په دغې يوويشتمې پېړۍ کې که تاسو يو څه ننگ، غيرت، پښتني احساس او سرپتوب لری ما مه بې قدره کوئ. زه ډېره بې قدره شوې يم نوره مې مه پرېږدی چې بې قدره شم. يوازې زه له تاسې نه دا هيله کولی شم. د رنو دوستانو! د دغسې د رنو دوستانو د دغسې شعور په لرلو سره به وي چې تاسو

دغه غونډه په هالنډ کې جوړه کړې ده سره له دې چې امکانات مو محدود دي. خو له نېکه مرغه اوس تاسو د نوو تکنالوژيکي، مخابراتي وسيلو له لارې په دې اړه په پښتونخوا، کاکړستان او د ننه په افغانستان کې د پښتني کلتوري ټولنو سره پوهاوی کولی او تجويزونه نيولی شئ. اوس هلته هم همدغسې ځوانان او ځوانانې هسکې شوې چې خپلې ژبې او خلکو ته يې د خدمت ملا ترلې او يو ډول غورځنگ يې پيل کړی دی چې بايد نور پښتانه ورسره مرسته وکړي چې هغه پياوړی او اغېزناک شي.

هيله ده چې تاسې به په دې اړه له مباحثې او د نظرياتو د تبادلې نه وروسته سپارښتې او کوم ډول عملي کېدونکي تجويزونه وړاندې کړئ. په خپله زما وړانديز به دا وي چې تاسې محترمان د نوو پښتو کره کتابونو يادونه او سپارښتنه وکړئ په تېره بيا «پښتو د تاريخ په بهير کې» د محترم اقبال وزيرې اثر او که يې لازمه گڼي زما د «پښتون، افغان، افغانستان» اثر. د وزيرې اثر د درسي کتاب په توگه ډېر موثر دی چې گومان نه کوم چې ډېر پښتانه به ورنه خبر وي.

په پای کې د پښتو په اړه د دغسې سيمينار په تنظيمولو کې ستاسو محترمانو د زيار قدر او درناوی کوم او بخښنه غواړم چې ما په کې گډون وکولی نه شو که څه هم ما ته مو د گډون بلنه راکړې وه.

په درنښت»

اته ويستم څپرکی

جان ستوارټ مل په نوي دقيقو کې

د ازادۍ فلسفه، تجربي فلسفه، د گټورتوب فلسفه،

کاکړ په ۲۰۱۶ کال کې بل په زړه پورې کتابکوټی چې «جان ستوارټ مل په نوي دقيقو کې» نوميږي چې پاول سټارټن ليکلی او په ۲۰۰۲ کال کې خپور کړی دی. اوس به وگورو چې پاول سټارټن د هغه فلسفه څنگه بيانوي. خو د مخه تردې چې د مل د فلسفې په اړه وغږېږم لومړی به د دې کتاب د پيلامې ځينو مهمو ټکو ته چې کاکړ ليکلي ده، د لوستونکو پام واړوم.

کاکړ وايي چې د نولسمې پېړۍ برتانوي فيلوسوف جان ستوارټ مل افغانانو ته نا آشنا دی. دغه ژباړه به لومړی ليکنه وي چې په اړه يې په پستو وړاندې کېږي. پلار يې جمز مل د ننه په کور کې د هغه روزنه او پوهنه کړې ده. جمز مل دغه کار د انگليس د يوه نامتو فيلوسوف جان لاک (John Locke) د دغه نظر پر بنسټ کاوه چې د انسان ذهن په پيدايښت کې د «سپين کاغذ» په شان دی. د محمد صديق روهي د څېړنې له مخې «خوشال چې د جان لاک معاصر او تقريباً همزولی دی کټ مټ همدغه مفکوره په دې ډول بيانوي: «د هلک زړه لکه سپين کوره کاغذ هسې دی هر چې پرې وکارې هغه حرف پرې پرېوځي»» ۱۰۲۲ روهي زياتوي چې د خوشال وروسته کوم پښتون پيدا نه شو چې د هغه فلسفه ورېشپړه کړي.

د جان لاک په اند پوهه يوازې د تجربې څخه راوړي او د دې مانا دا ده چې پوهه د احساس نه پرته شونې نه ده. هغه وخت چې احساسونه دماغ ته ورسېږي، هغه يې يو له بله نښلوي او فکر پرې کوي. په بله ژبه انسان اول د حواسو له لارې اطلاعات ترلاسه کوي او دماغ بيا له هغو نه د فکر کولو په پروسې سره مفهوم او علم ته رسېږي. دغه شېوه تجربوي پوهه (Empiricism) نوميږي. نورو برتانوي سوچوالو او په ځانگړې توگه ډبويډ هيوم، جورج برکلي او ستوارټ مل ورته وده ورکړه.

جمز مل د خپل زوی پوهنه د لرغوني يونان د تعليماتو له مخې پيل کړه چې مدنيت يې، د وخت د نورو مدنيتونو پر خلاف، په اساس کې د عقل په پرنسيپونو ولاړ و. ستورات مل په درې کلنې کې د رياضي او لرغوني يوناني ژبې او په اته کلنې کې د لاتين، الجبرې او هندسې په زده کړې پيل وکړ. په دولس کلنې کې د منطق او فلسفې د زده کړې له پاره تيار و. زده کړه به سهار په شپږ بجې پيل کېدله او ټوله ورځ به يې دوام کاوه. د مل کور د هغه له پاره بسوونځی و. جمز مل د خپل زوی د عقلي وړتيا ودې ته پام اړولی و او د هغه جذباتي او احساساتي اړخ او همدارنگه شعري او تخيلي خوا د نظر نه غورځولې وه. د هغه ټول کوبښې دا و چې د خپل زوی عقلي ظرفيت يې د روښانتيا د دورې پوهانو د نظريو له مخې وغورځوي. همدارنگه ده خپل زوی هڅاوه چې د فيلسوفانو په بحثونو کې، چې نامتو اقتصاد پوه ډېويډ ريکارډو هم په همدغې ډلې کې و، ونډه واخلي. مل هم د خپل پلار سره په دغو بحثونو کې کېدون کاوه او د سياسي اقتصاد په اړه يې په خپله هم نظر ورکاوه.

خو د ده لوی هڅونکی نامتو فيلوسوف جرمني بنټهام و، چې د خپل نوښتي ذهن په قوت او په پرله پسې زيار سره هم نوې پروژې ايستلې، او هم يې نوې ايډياگانې وړاندې کولې، د دغې فلسفې پر بنسټ چې د خورا ډېرو [انسانانو] خورا ډېره نېکمرغې د قانون او اخلاقياتو بنسټ دی.

ستورات مل په ځوانۍ کې د بنټهام د نږدې يو ميليون ياداښتونو او ورو ليکنو نه يو منسجم اثر «د شواهدو په اړه» (On Evidence) په نامه وايست. خو مل چې د بنټهام د گټورتوب په فلسفه کې څومره ژور کېده، هغومره پرې انتقادي کېده. ان تر دې چې ځان له يې بيله لار غوره کړه. لکه په لرغوني يونان کې ارستو د اپلاتون د ايډيا فلسفه، چې موجوده نړۍ يوه ايډيا ده، پرېښوده او د مشاهدې او تجربې لاره يې ونيوله او په نولسمې پېړۍ کې مارکس د هيگل ايډيالي فلسفه په مادي فلسفې واړوله، مل د بنټهام هغه نظر رد کړ چې خوندونه له يوه او بل نه يوازې په کميت سره توپير لري. مل په دې باور و چې خوندونه په کيفي لحاظ هم سره توپير لري. مل د کيفيت خوا ټينگه ونيوله. برسېره پر هغه د هغه د گټورتوب په فلسفه کې لېرال فکر کېد کړ، په دې ډول چې «د خوښې ارزښت په هغې ښېکڼې کې پروت دی چې د فرد ژوند ته ښه نفوذ وکولی شي، چې هلته هر څوک پرېښودل شي چې د خپلې خوښې نېکمرغې ولټوي او يوازینی شرط بايد دا وي چې د نېکمرغې دا فردي ډول د نورو د نېکمرغې له رقم يا د ټوليز ښه والي سره ټکر ونه کړي.» ۱۰۲۳

مل په دې ډول په عملي ژوند کې په فردي ازادۍ ټينګ ودرېد. ده باور درلود چې «فرد په خپل ځان، په خپل بدن او په خپل ذهن باندې د مطلق حاکمیت خاوند دی.» په دې ډول ستورابت مل «ازادي غوره کړه، چې فردي موخو ته پرې ورسېږي.» مانا دا وه چې «د فرد د غورېدلو وړ طبيعي قوت ازاد شي، د دې له پاره چې مور ټول قادر کړي چې خپل ټول استعدادونه کشف کړو. دغسې ازادي به زموږ ټولو استعدادونو ته د تخليق او ابتکار لامل شي. په نتیجه کې به مور وکولی شو چې په اخلاقي، روحي او عقلايي لحاظ پرمختګ وکړو. دا به په خاص ډول دغسې ټولنه رامنځ ته کړي چې په هغو نورو پېښو غلبه وکړي چې مارکس يې پارولی و، خو د انقلاب د شديدو وړانيو پرته.» ۱۰۲۴

د مل فکرونه د ازادۍ فلسفه (Leberalism)، د تجربې فلسفه (Empiricism) او د کټورتوب فلسفه (Utilitarianism) کې خلاصه کېدلی شي.

۱- د ازادۍ فلسفه

لبراليزم هغه سياسي، ټولنيز او اقتصادي دوکتري يا نظر ته ويل کېږي چې کلاسيک جوړښت يې په فردي ازادۍ، محدود حکومت، پرله پسې ټولنيز پرمختګ او ازادې سوداګرۍ ولاړ و. اوسنی لبراليزم په فردي ازادۍ او شخصي فرصت عقیده لري، له دولت نه غواړي چې په ټولنيزې ښېګڼې او ټولنيز سياست کې رول ولوبوي. د دواړو شکلونو مفهوم د عمل او وجدان ازادۍ په غېږ کې نيسي. لبراليزم په نولسمې پېړۍ کې د منځنۍ طبقې له سوداګرو او متشابساتو د ايډيالوژۍ په شان وده وکړه. د هغه عقلي بنسټ د جان لاک په سياسي فلسفې او د روښانتيا د دورې په انساني پرمختګ او د عقلايت په عقیده، د ادم سمېت د ازاد مارکېټ په اقتصادي نظريو او د بنټهام او جان ستورابت مل د کټورتوب په فلسفې اېښودل شوی و. د لبراليزم مرکزي ټکی فردي ازادۍ ده، په دې ډول چې فرد به د قانون له مخې له محدوديت او اجبار نه ازاد فعاليت کوي او له دغې لارې به هم د ځان او هم د ټولني ګټې خوندي کوي. ځنګه چې ټولنه له افرادو نه جوړه ده، که افراد پوه، فعال او د ايډيال خاوندان وي، ټولنه ډيناميکه او ابتکاري کېږي. د مل په نظر دا د ټولني مسوليت دی چې دغسې افراد وروزي. د افرادو د اصلاح لار پوهنه ده. دا روزنه د ماشومتيا په مهال د کورنيو او وروسته د ټولني له خوا په ډموکراتيکې شپوې سره وشي او د انسان دوستۍ مضمون بايد په درسي نصاب کې شامل شي. په اصل کې دا پوهنه، پوهه او تکنالوژي ده چې د پرمختګ، ښکمرغۍ او د ښه ژوند لامل کېږي. ارستو ويل چې مور او پلار اولاد ته ژوند ورکوي خو ښوونکی ورته ښه ژوند ورکوي.

۲- د امپيريزم فلسفه

امپيريزم يا د تجربې فلسفه د پوهې هغه شېبه ده چې د حواسو په شواهدو سره تاييدېږي. په ليدلو، اورېدلو، بويولو، حس کولو او چينلو سره موږ د خپل چاپېر په اړه مفکوره جوړو. په دې ډول تجربې پوهه له هغو نظريو څخه جوړېږي چې د مشاهده شويو يا حس شويو واقعيتونو پر اساس ترلاسه کېږي. په دې توگه تجربې پوهه هغه پوهه ده چې له تجربې، مشاهدې او حس کولو نه راوړي او د پوهې ټولې ادعاگانې يوازې د تجربې له لارې د اعتبار وړ کېدلی شي. کاکړ وايي د پوهې دغې فلسفې په انگرېزي ويونکو ژور اغېز کړی دی او له جان لاک نه وروسته د برتانيې ډېرو سوچوالو هغې ته ډېره وده ورکړې ده. کاکړ وايي چې په انگلستان کې د ده فکري طرز له امپيريزم (Empiricism) يا تجربه پالي نه اغېرمن شو. د دغه فکري طرز ريښه د يونان ارستو او د اروپا رنسانس ته رسېږي. وروسته انگرېزي سوچوالو هغه ته نوره وده ورکړه او په ټولې نړۍ په تېره په انگرېزي ويونکې نړۍ کې خپور او واکمن شو. کاکړ ليکي: «زه په افغانستان کې له هغه سره روږدی نه وم. په اصل کې هلته زما فکر انتقادي او تحليلي نه و. هلته به مې چې څه لوستل هغه به مې په يادول او د ځان کول... هغه مې لږو ډېر ټول منل، يا ټول ردول... داسې خو نه وه چې ليکنې مې تحليل کړې وي يانې دا چې هغه مې په ټوټو ټوټو ویشلي او د ټوټو په کتلو سره مې ټول متن درک کړی او د ليکونکي موخه، غوره والی او تعصب مې معلوم کړی وي او نتيجه مې ترېنه ايستلې وي. دا د شلې پېړۍ په پنځوسمې لسيزې کې په کابل پوهنتون کې د زده کړې او درس ورکولو مسلط طرز و... دغه طرز په اصل کې د افغان کلتور ښکارندوی دی، چې دين او عنعنې يې غټ عنصرونه دي. نو زه لکه نور افغانان د دغسې غير ډموکراتيک، غير انتقادي او غير تحليلي يانې د تقليدي کلتور او زده کړې محصول وم.» ۱۰۲۵

کاکړ وايي چې د پوهې او پلټنې لارې ډېرې دي خو تجربه پالي تر نورو ډېر مروج طرز دی. دا په اصل کې د واقعيت او رښتيا ميندلو تر ډېرې اندازې باوري لاره ده. د دغې طريقې لومړي ايستونکي په دې فکر وو چې د انسان په مغزو کې داسې شې نه شته او نه ميندل کېدای شي چې هغه د حواسو له لارې نه وي خپل شوی او کوم هغه شې چې په حواسو سره نه وي تجربه شوی واقعي کېدلی نه شي. نو تجربه پال ټوله پوهه چې د نړۍ يا انسان په اړه وي له هغه څه څخه راباسي چې حواس يې ورته تهيه کوي. ارستو ويل چې «په دماغ کې داسې څيز نه شته خو هغه چې لومړی په حواسو کې وي.» ۱۰۲۶ په اولسې

پېړۍ کې انگلیسي سوچوال جان لاک د ارستو د نظر په ملاتړ دا نظر وړاندې کړ، چې «مور د نړۍ په اړه پخوا له دې چې لیدلې مو وي... ذاتي ایدیاکانې نه لرو. که مور یوه ایډیا ولرو چې په تجربه شویو واقعیتونو پورې اړه ونه لري، هغه به ناسمه مفکوره وي.» ۱۰۲۷ د جان لاک په نظر ماغزه چې باندیني مالومات د حواسو له لارې تر لاسه کوي، په غیر فعال ډول نه مني، پر هغو سوچ کوي، په اړه یې استدلال کوي او شک او تردید ښکاره کوي. ۱۰۲۸

په دې ډول امپیریزم په اصل کې هغه فلسفي دریځ دی چې د پوهې تیوري په غیر کې نیسي او منځنۍ ټکی یې دا دی چې د نړۍ ټوله پوهه او د هغې په اړه معنی لرونکې ادعاگانې او بیانونه له تجربو او کتنو څخه راولاړېږي بې له دې چې کومې خاصې تیوري، یا نص یا کومې وینا ته رجوع وشي.

امپیریزم تاریخ لیکنه لا کره کړې ده. د امپیریزم په عام کېدو سره تاریخ کښونکي تر پخوا ډېر په دې باوري شوي چې یوازې ټولنیزې انساني پېښې او واقعیتونه د تاریخ بنسټ جوړوي.

۳- د گټورتوب فلسفه

د نېکمرغۍ یا گټورتوب د فلسفې اصلي پرنسیپ دا دی چې د خورا ډېرو خورا ډېره نېکمرغي د قانون او اخلاقیاتو بنسټ دی. د دغې فلسفې نوښتگر جرمني بنهام و. مل وده ورکړه او د هغې کهي یا مقداري بڼه یې کيفي کړه. د گټورتوب دغه پرنسیپ اوس په لوېدیځه نړۍ کې د اساسي قانوني حق په شان شوی دی.

کاکړ وايي چې مل په خپل اثر کې چې «د سياسي اقتصاد پرنسیپونه» نومېږي د برتانيې د کلاسیکو اقتصاد پوهانو په نظرونو کې اساسي بدلون راوست. هغه دا چې په اقتصادي فعالیت کې تولید قوانین لازم کوي. یانې ازاد مارکېټ ځانله قوانین لري چې باید لاسوهنه په کې ونه شي. خو «وېش» هېڅ قوانین نه لري او شتمني همدا چې تولید شوه د ټولني د هغې برخې احساسات او نظرونه ورته قوانین ټاکي چې تولیدوي یې. مل د شتمنۍ په وېش سره په پانکوالي نظام کې اخلاقیات گډ کړل. ده په خپلو نظرونو سره پانکوالي نظام له بېخ نه اصلاح کړ. دا په زیاته اندازه د مل نوښتي نظرونه دي چې د نن ورځې لوېدیځه نړۍ ډموکراتیکې او د عامه ښېکڼې (Welfare) ټولني شوې دي.

د مل په اند انسان د عقل نه برسېره نور طبیعي میلانونه هم لري چې هغه کړو وړو ته که هغه شعوري یا غیر شعوري وي، هڅوي. هانس مورکېنټا د عقلاني فلسفې دا

نيمکړتيا داسې بيانوي: «عقلاني فلسفې د انسان طبيعت، د ټولنيزې نړۍ طبيعت او په خپله د عقل طبيعت سم پېژندلی نه دی. هغه دا نه ويني چې انسان درې بعدونه لري چې بيالوژيکي، عقلاني او روحي دي. د بيالوژيکي محرکاتو او د روحي غوښتنو په نظر کې نيولو سره هغه د انسان د ټول شته والي په حدودو کې هغه وظيفه په ناسمه توگه تعبيروي، چې عقل يې ترسره کوي.» ۱۰۲۹

کاکړ وايي خو دا چې عقل په خپله څه شی دی په دې اړه کره تعريف نه دی ليدل شوی، که څه هم انسان د عقل خاوند دی او د هغه په حکم کره ترسره کوي، يا يې بايد وکړي. کله چې د ماشوم کوته اول ځل په اور وسوځېدله، بيا د عقل په حکم له اور نه ځان ساتي. په دې ډول عقل هغه وړتيا يا قوې ته ويل کېدای شي چې انسان پرې د ځان ساتنه کوي او د ځان په خاطر بل چا ته هم خطر نه پېښوي. مورگانا وايي هغسې چې په فزيکي نړۍ کې د عقل د قوانينو سره د برياليتوب ضمانت کوي، داسې هم هغه په ټولنيزه نړۍ کې د عقل له قوانينو سره سمون کوي. که ټولو انسانانو د عقل حکم ومانه جگړې به چې دوی سره بيلوي، ورکې شي.

البته دغسې کره اسانه نه دي، په تېره بيا په هغه چاپيريال کې چې عقل او عقیده سره وران وي، لکه زياتره چې همدغسې وي. خو په سې روزنې، سې پوهنې او سمو ظابطو سره عقل وده کوي او انسان د بشپړتيا په لور درومي. بيا نو ويل کېدای شي چې انسان په ښې پوهنې سره قادر کېدلی شي چې ځان او نور وپېژني او د دوستۍ په روحيې سره ژوند وکړي.

کاکړ وايي چې په برتانيا کې هم لکه په لرغوني يونان کې چې د مذهبي بنديزونو په نشتوالي سره ازاد تفکر عام و، پايله يې د سترو سوچوالو لکه سوکرات، اپلاتون، ارستو او نورو هسکېدنه وه، نوميالي سوچوالان هسک شول. مل او نورو برتانوي سوچوالانو د افرادو د وړتياوو د غورېدلو او د ټولې د سمون او ښه تنظيم په اړه اساسي او نوښتي نظرونه وړاندې کړي چې له امله يې اوسني برتانويان په يوه منظمه ټولنه کې په عمومي ډول د عقل په رڼا کې ژوند کوي او خپلمنځي ستونزې او کشالې په خبرو سره هواوړوي. برتانويان اوس د فکري تقليد د حال نه وتلي او د ازاد فکره انسانانو سطحې ته لور شوي دي. برتانويانو ته پوهه او پوهنه دومره ارزښت لري چې ځېنې چارواکي يې د ښځو په کېدون له تقاعد وروسته د لوړو زده کړو کورسونه وايي.

کاکړ زياتوي چې زموږ افغانان په دغې يوويشتمې پېړۍ کې هم جذباتي، احساساتي او مذهبي دي. تربورگلو، غچ، دښمني او وژنه په کې دود ده. اوس لا په کې ځان وژنه او بل

وژنه هم دود شوې ده. کاکړ دې پوښتې ته چې افغانان چې تر برتانويانو اوږد تاريخ لري، ولې په دغه فکري حال کې دي؟ داسې ځواب وايي:

افغانان په پېړيو، پېړيو کې په خپله اراده يا د ټولنيز جبر له مخې مقلد او نا ازاد وو، او د عنعنو او دودونو له مخې يې تقليدي ژوند کاوه. له هغو فکرونو او نظريو سره هم نا آشنا وو، چې د نويو پرمختگونو له امله، په نورو ټولنو کې د فرد او ټولې په اړه وړاندې کېدل، نو په ژوند کې يې اساسي بدلون پېښ نه شو. خو افغانان د حنفي مذهب او د خپل چاپېريال د واقعيتونو په رعايت سره د نونسې پېړۍ تر نيمايي پورې په فکر او عمل کې اعتدالي او په مذهبي لحاظ د زغم خاوندان او ازاد طبع وو. له دوی سره په ملک کې ارمي عيسويان، يهودان، هندوان او سيکان اوسېدل. له هغه وروسته و، چې افغانان اول له برتانويانو سره د جنگونو او په شلمه پېړۍ کې له شوروي روسيانو سره د يوه اوږده جنګ له امله په خپلو ديني ارزښتونو نور هم ټينګ او د نامسلمانو په وړاندي حساس شول.

د قانوني پاچايي په ډموکراتيکه لسيزه کې، د افغانستان په رسمي سياست کې د لبراليزم پر اساس يو نوى څپرکې پرانيستل شو او د عصري پوهني په پراخېدلو سره په تعليم کړو افغانانو کې فکري ازادي نفوذ وکړ. په دغه وخت کې و چې يو شمېر فعال سياسي افغانان د جرمني د مارکس، د روسيې د لينن، د جارجيا د ستالين او د چين د ماوزيتونګ د نظريو له مخې په عصري ګوندونو کې تنظيم شول او په وړاندي يې مذهبي ساتنپالان، د عراق د محمد عبدالوهاب، د هند د مولانا ابوالعلي مودودي، او د مصر د حسن البنا او سيد قطب د نظريو پر بنسټ په اسلامي تنظيمونو کې تنظيم شول. په دې ډول دوې سره پوره متضادي ډلې په سياسي ډګر کې فعالې شوې او افغان سياست سخت قطبي شو. دغه ګوندونه په يو څه استثنا يو په بل پسې په واک شول. دغو ګوندونو او تنظيمونو په واکمني کې کوښښ کاوه، چې د ټولني اساسي اړيکي له سره تنظيمي کړي، هغه هم په حکومتي زور.

د بېګانه فکرونو او ايډيالوجيګانو پر بنسټ ولاړ دغو ګوندونو او تنظيمونو خپله ايډيالوجي سپېڅلې او د متقابلې خوا ايډيالوجي پوچه او مردوده ګڼله. هري ډلې د خپلې "سپېڅلې" ايډيالوجۍ په تعميل کې د ټولني جاري واقعيتونه په نظر کې نه نيول او په خپلې ايډيالوجۍ په جزمي ډول ټينګ درېدل. بيا نو هري خوا د واکمنۍ پر مهال خپل مخالفان خپل او په تشدد سره يې له مينځه وړل. افغانستان په دې ډول د لومړي ځل له پاره د سره متضادو او دښمنو ايډيالوجيګانو د پلويانو تر مينځ د وژونکي مقابلي ډګر وګرځېد.

لېرال او ملي افغانان هم تر ډېره حده وځپل شول او د دوی په خپلو سره متوسطه تعليم کړې طبقه، چې د کلونو کلونو د پوهني محصول وه، له مينځ څخه ولاړه او د هيواد سياست په حکومت چارو کې د بې تجربې، هغه هم د افراطي او جذبي گوندو او تنظيمونو ته منحصر شو. په نتيجه کې په افغانستان کې د سياست په ډگر کې د تقليد او فکري مړيې توب يوه نوې دوره پيل شوه.

اوس که څه هم د دغو گوندونو او تنظيمونو د مطلقي ناکامۍ نه وروسته نوي لېرال او ډموکرات افغانان، چې زياتره يې تعليم کړي، او د انتقادي روحيې خاوندان دي، د عصري پوهني په پراخېدلو سره، هسک شوي دي، بيا هم د فرد او ټولني د اساسي موضوعگانو په اړه نوي اساسي فکرونه نه دي وړاندي شوي، او ټولنه په اساس کې لا متحجره ده. اوس لا قومي او عقيدوي احساسات لا پياوړي شوي او له مرکز نه د پرار ميل ښکاره شوی، او ملي پيوستون هم سست شوی دی.

دا ټول له دې امله چې د گوندونو او تنظيمونو د واکمنۍ په مهال خپل هيواد تر زياته حده له لايقو او مجربو افغانانو نه محروم کړ، او په پرېمانه وژلو سره يې افغان ژوند هم ارزان او بې ارزښته کړ. په دغه ډول دغو وړانوونکو او وژونکو رجمونو، سره له دې چې د سر يو څو لويان يې د پوهنتون استادان هم وو، د وژني ډېر بد ميراث پرېښود.

بده يې لا داده چې دغه ميراث د سرطان د مرض په شان ريښې کړي او د خپل سر وژلو نوي طريقې ايستل شوي دي. دا په خاص ډول وروسته له هغه وو چې د امريکې زبرځواک حکومت د يوه بېگانه عرب، اسامه بن لادن په سر د ۲۰۰۱ کال په اخبر کې د طالبانو اسلامي امارت په نظامي او هوايي قوت سره نسکور کړ او بيا د لوبديځې نړۍ د ډيرو هيوادونو پوځونه هم د امريکې له لوی پوځ سره په افغانستان کې ځای پر ځای شول. په نتيجه کې د څه باندې لسو کلونو په موده کې د طالبانو د شريکو او دباندينو پوځونو په مقابله کې له دواړو خواوو نه په زرگونو افغانان او باندنيان هم ووژل شول. امريکا په همدغه دوران کې د وران شوي افغانستان د بيا ابادولو په لار کې يوسلو درې ميليارده ډالره ولگول، خو که دغه پيسې، چې د افغانستان له پاره خورا ډيرې وې، په رښتيا او پر ځای لگولې شوې وای، افغانستان به بيرته ودان او د افغانانو غټي ستونزي به هوارې شوې وای. خو په افغانستان کې حکومت د بېسارې، ډېر عام اداري فساد او د باندنيو د ناوړي مديريت له امله وو چې دغو پيسو خلکو ته هغومره گټه و نه کړه چې دوی يې هيله من کړي وو.

اوس (۲۰۱۶) که څه هم د امريکې او ناتو پوځونه شاوخوا لس زرو ته لږ شوي دي او

اصلي دنده يې جگړه کول هم نه دي، بيا هم يو پراخ جنگ روان دی، او د وژلو او ترهگری قربانيان افغان نظاميان او ولسي وگړي دي، دغه وژني، هغه هم د ولسي معصومو خلکو، بايد افغانانو ته د زغم وړ نه دي، خو ځنگه چې د پرله پسې جگړو او ترهگری له امله د افغانانو ژوند ارزانه شوی دی، د سليم عقل اواز ته وژونکي غوږ نه نيسي. اوس لا د وژني نوي شکلونه، انتحاري وژني (خان وژنه او بل وژنه) نه يوازي د نارينه وو، بلکه د ښځو او ماشومانو [وژني] هم رواج شوي دي؛ که څه هم دا د ټولو بشري حقوقو او اسلام پر ضد عمل دی. په قرآن مجيد کې د النسا د سورت په ۹۳ م آيت کې ارشاد دی چې که " څوک يو مؤمن په ارادي ډول وژني د هغه پاداش دوزخ دی، چې هلته به (د تل له پاره وي، او د خدای تعالی عذاب او غضب به پر هغه وي، او سخته جزا به ورته تياره وي." لوی امام ابو حنيفه په فقه اکبر فتوا کې مؤمن دغسي مسلمان ښودلی دی: " مور هيڅ څوک د گناه له کبله کافر نه گڼو، او نه مور د هغه له عقيدې نه منکر يو." ۱۰۳۰

د وژني ميراث لا هم په قوت کې دی او د ختم هيله يې کمزورې ده. دا د افغان په تاريخ کې تر هر بل جنگ نه اوږد دی، او ښکاري چې هغه به په يوه او بله بڼه نور هم اوږد شي، مگر په هغه حال کې چې د سياست د ډگر لوبغاړي د خپلو ايډيالوجي گانو افراطي اړخونه پرېږدي او د زغم په ښوولو سره د روغي جوړي لار ونيسي. ځنگه چې د دغو ډيرو ډلو مخينه د جنگ، وژني او افراطيت ده، قوي حکومتي نظام په خپله کټه نه ويښي. دوی دا هم په نظر کې نيسي چې د شورويانو او د لوبديزو پوځونو په وتلو سره کراري په وطن کې خوندي نه شوه، او دوی په خپلو کې د جنگ يوه بله دوره پيل کړه. په داسې حال کې چې پخوا د برتانوي لښکرو په وتلو سره په وطن کې کراري شوې وه، هغه وختونه په افغانستان کې د دوی په شان تنظيمونه نه وو.

کاکړ وايي چې دغه ټول جنگونه، د کورنيو جگړو په گډون، دغومره اثرناک شول، چې د افغانانو کرکټر او سلوک ته يې بدلون ورکړ. اوس ان ښځي او ماشومان هم په دغسي بهرحی سره وژل کېږي لکه په ديارلسمه پېړۍ کې چې چنگېزيانو وژل. د دغو ټولو جنگونو، وژنو او د هيواد د ورانولو بيان نه دی شوی. امکان يې هم نه مالومېږي. يو څو وروستی بيلگي يې دادي:

د تېر کال (۲۰۱۵) په پای کې د کابل ښار د شاه دو شمشېره ماجت تر څنگ اتو نارينه وو، په گډه په جوش سره د فرخنده په نامه يوه ځوانه نجلی ووژله. ما ته نه ده مالومه چې د افغانستان په تاريخ کې به دغسي بهرحمه وژنه، هغه هم د يوې ښځي او د ښار په مينځ کې، ارگ ته نژدې شوې وي. وروسته د غور ولايت د غلمين په ولسوالۍ کې، شاوخوا شلو سربله

طالبانو، نولس کلنه رخشانه یو په بل پسې په تیرو وودبشمله، تر څو مړه شوه. د سرپله طالبانو د صحرايي محکمې په نامه یوې سرپله محکمې هغه په سنگسار محکومه کړې وه، په دې چې هغې له دې څخه انکار کړی وو، چې له یوه پنځه پنځوس کلن سړي سره واده وکړي، چې پلار یې ورته په نامه کړې وه. د ۲۰۱۵ کال په نوومبر کې د زابل په ولایت کې اوه هزاره لارویان - څلور نارینه دوې ښځې او یو ماشوم ووژل شول، بې له دې چې کوم جرم یې کړی وي. ویل شوي دي چې دا د داعش (د عراق، شام د اسلامي دولت) ته منسوب د ملایانو کار وو. په ۲۰۰۸ یا ۲۰۰۹ کې په سوات کې د راتول شویو ډیرو خلکو په مخ کې د چنډ په نامه د اوه لس کلنې نجلی په درو وهل وو په داسې حال کې چې د هغې لاس اوږنې تړلې شوي وې. هغه وخت طالبان هلته مسلط وو. د ۲۰۱۶ کال په جنوري کې د فاریاب ولایت په غورماچ کې یوه سړي د خپلې شل کلنې ښځې، ربزه گل، پزه پرې کړه او خپله یې، چیرته نژدې، د طالبانو تر لاس لاندې سیمې ته پناه یووړه.

په بله سطحه کې څو کاله وړاندې د شرعي محکمې له خوا د ښاغلي غوث زلي په اعدام محکومېدل وو، په دې چې هغه د خلکو د پاره قرآن مجید په فارسي اړولی وو. دی بیا د کوم چا په شفاعت عفو خو له وطن نه د تل له پاره وایستل شو.

له دغو پېښو نه واضحه ده چې جنګ، هغه هم پرله پسې جنګ او وژنه، انساني صفتونه له مینځ نه وړي او انسان وژنه عامه کېږي. د افغانانو په تاریخ کې دغسې افغان وژنه عامه نه وه. دا ډېره غټه تراجیدي ده چې د افغانانو په ډېر ښکلي ملک کې دغسې کرغېړني پېښې کېږي، هغه هم په یوویشمه پېړۍ کې. چاره په کار ده، چې وخت له وخت نه تېر نه شي، او که نه د دغسې جنګ، وژني او ترهګرۍ به افغانانو ته د دغسې لویو ملي مصیبتونو لامل شي چې که خلاصون ترې نه کېدونکی نه وي، خورا کران به وي. اساسي چاره په کار ده. د استاد محمد ظریف امین یار په نظر چاره داده چې: "ما باید در طرز تفکر خود تجدید نظر بنیادي کنیم." د اساسي چارې له پاره حتی ده چې د افغانستان جاري واقعیتونه په نظر کې ونیول شي. افغانستان نور یو کوښه شوی هیواد نه دی، او افغانان نور په تقلیدي ژوند قانع نه دي. په میلیونونو افغانان اوس په چم کاونډیو هیوادونو او په لکونو نور په اروپا، امریکا او کاناډا کې پراته دي. تېر کال (۲۰۱۵) شاوخوا دوه نیم لکه افغانان په اروپایي ملکونو کې د ژوند له پاره لاړل. دننه په وطن کې عصري پوهنه، د پوهنتون په سویه، تر هر بل وخت پراخه شوې ده، او ډېر افغانان د الکترونیکي مخابراتي وسایلو - موبایل تیلیفون، انټرنیټ او تلویزیون له لارې له نړیوالو سره په زیاتېدونکې اندازه په تماس کې دي. هر ګړی د نویو مالوماتو خاوندان کېږي، تنویر

کيږي او هڅول کيږي چې ژوند د عقل په لارښود وکړي، او له تقليدي ژوند نه مخ واړوي. دا يو پراخ او پراخېدونکی حرکت دی، په دې چې دا د عادي افرادو حرکت دی، او افراد د هري بشري ټولني بنسټ جوړوي. اوس د افغاني ټولني چلوونکو ته حتي ده چې د دغه حرکت له پياوړي کېدلو سره مرسته وکړي او په خاص ډول، افغانانو ته د هر ډول پوهني زده کړه اسانه کړي. افرادو ته د ازادې او د دغې لارې نه ممکن کيږي چې خپلو استعدادونو ته، چې انکشاف ته يې ټاکلی حد نه شته، د کمال په لور انکشاف ورکړي. افراد د بڼې پوهني او ازادۍ په حال کې فکري ابتکارونه کوي، او د ژوند لار بڼې طريقې راباسي.

نهه ويشتم څپرکی

جگړه اوزمور نړی

کاکړ د علمي اثارو د ژباړلو په لړ کې يو بل مهم اثر چې «جگړه او زمور نړی» نومېږي او جان کيکن ليکلی دی او دې مايکل هاورډ دوې مقالې هم ورسره ملې دي په پښتو وژباړه. دا اثر له يوې خوا د پښتو د علمي کېدو په لاره کې يو کام دی او د بلې خوا زمور د جنگ څپلي هېواد خلکو ته، چې دا څلور لسيزې د جگړې په لمبو کې سوځي او لا دوام لري د جگړو د زيان او وړانۍ برسېره په تاريخي لحاظ د جگړې ځينو مهمو اړخونو او پايلو نه خبر شي.

کاکړ د خپلې پيلامې په ترڅ کې وايي چې جگړې انسان او ټولنه هر چرې او هر وخت زيانمنه کړي، دومره ډېره چې د جان ستورات مل په وينا «هېڅ شی د جگړې د وړانۍ جبران نه شي کولی». لرغونو يونانيانو ويل چې جگړه په دې بده ده چې هغه نور هم بد خلک زيروي نظر دې ته چې له منځ نه يې وړي.

کاکړ زياتوي چې انسانان له انسانانو سره جگړې کوي او د جنگ پايلې د انسانانو له شمېر او جنګي وسيلو سره نېغ تړاو لري. په اوسنۍ نړۍ کې چې خلک خورا ډېر شوي، هېوادونه ډېر شوي، ملي دولتونه ډېر شوي او ورسره ډول ډول وسلې د اتومي او هايډروجنې بمونو په کېدون ډېر شوي دي، جگړې هم ډېرې تباه کونکې شوي دي. په هستوي وسلو سره شونې شوې ده چې د انسان په لاس جوړ شوی نړيوال مدنيت له منځ نه يوړل شي او په خپله انسان کرد سره نابود شي او مخکته د لمريز نظام د نورو کړو په شان له ژوند نه خالي شي.

له همدې امله پوهانو په تېره د لوېديځې نړۍ پوهانو د جگړې او د هغې په ټولو اړخونو ليکنې کړې تر څو خلک د جگړې د پايلو نه ښه خبر وي او واکمنان په سياست او

دپلوماسۍ کې د هغو په نظر کې نيولو سره کشالې په خبرو سره هوارې کړي. په دغه حال کې د هر انسان دنده ده چې د جگړې په مخنيوي کې په هره بڼه او کچه چې وي ونډه واخلي.

جان کيکن د جگړې په مهمو اړخونو غږېدلی، چې ډېر مهم يې د جگړې سرچينه ده. ځنګه چې انسانانو د تاريخ په اوږدو کې ډېرې جگړې کړې، ځکه دغه فکر عام دی چې وايي جگړه د انسان طبيعي ميلان دی. په بله ژبه د جگړې سرچينه جنګ ته د انسان طبيعي ميلان دی. کانت وايي چې «انسان د کاره لري نه جوړ دی.» ۱۰۳۱ د تاريخ پوه جان هورکن وايي چې «جنګونه دومره ډېر ډول ډول دي، چې د هغو په اړه تاسې د هر ډول تيوري د منلو يا ردولو له پاره شواهد ميندلی شئ» ۱۰۳۲ دی زياتوي چې د وژونکې ډلې د تشدد شواهد يوازې د تمدن له هسکېدو نه ديارلس زره کلونو د مخه ته رسېږي.

که جگړه طبيعي ميلان هم وگڼل شي، هغه به داسې ميل وي چې په يو حال کې نه پاتې کېږي او بدلون مومي، په دې چې ټول کاینات چې انسان يې يو ډېر کوچنی توکی دی، تل بدلون کوي. ځنګه چې انسان د مخکې د کرې پر مخ تر هر بل ژوندي موجود نه د ډېرې لوړې وړتيا يانې د عقل خاوند دی، خپل طبيعي ميلان يې بدلونکی دی. جان ستوسنګر وايي چې انسان ډېر داسې دودونه پرې ايښي دي چې پخوا نه پرېښېدونکي ښکارېدل. د بېلګې په توګه د کنګل په دوره کې چې خلک په سمخو کې اوسېدل له نږدې محرم سره ملاسته پوره د منلو وړ وه، په داسې حال کې چې اوس له محرم سره جنسي عمل نږدې په عالمي کچه مردود دی. انسان خورل او مړيتوب هم روا کتل کېدل خو اوس دا ښکارندې ورکې شوې او د مړي توب او د انسان خورلو په شان به جگړه د انسان د مصيبتونو د کارخانې نه ليرې کړای شي.

دی زياتوي چې داسې ښکاري چې انسانان خپل ناوړه خوښه له مصيبتونو نه وروسته پرېږدي. عقل يوازې بسپه نه کوي. مور بايد پخوا له دې چې بدلون وکړو مصيبت بايد تجربه کړو. دی زياتوي چې د لرغوني انسان د ښکاريتوب او پونده توب د ژوند په اړه هر څه چې ويل شوي دي شخصي نظريې او تيوري گانې دي، چې هغه هم سره ټکر کوي. د بېلګې په توګه توماس هوبس انسان د طبيعت په حال کې دغسې حيوان ښودلی چې د ټولو سره د جنګ په حال کې وي. خو ژان ژاک روسو ويلې چې انسان په طبيعي حال کې جگړه نه پېژانده او دا مدني حالت و چې جگړې ته يې وهڅوه. د هوبز نظر ډېرو پوهانو رد کړ. نومياله انسان پېژندونکې مارکېټ ميد وايي چې جگړه بيالوژيکي اړتيا نه، بلکې يوازې يوه موندنه (اختراع) ده. په دې چې که جگړه بيالوژيکي اړتيا وي انسان به هغه د نورو طبيعي

اړتياوو غوندې په منظم ډول کولی.

په لوېديځې نړۍ کې د دوهمې نړيوالې جګړې نه وروسته نړيوال جنګ نه دی شوی. د اروپايي اتحاديې غړو لا ژمنه کړې چې خپلمنځي لانيجې به په جګړې نه، بلکې په خبرو هواروي. زموږ په وخت کې د جګړې په وړاندې ذهنيت په ځانګړې توګه په لوېديځې اروپا او شمالي امريکا کې ښه پياوړی شوی دی. دا چې انسان د جګړې وړتيا لري، هغه د سولې وړتيا هم لري. په دغه حال کې ويل کېدای شي چې د وسيلو په سمون، د ژوند په ښه کېدلو، د ولسي نظامونو په عام کېدلو او په ځانګړې توګه د ژوند د ارزښت په پوهېدلو او قدر کولو سره د نړيوالې جګړې د له منځ نه وړلو يا لږ تر لږه د هغې د کمېدلو له پاره هيله کېدای شي. انسان پوه جان ميولر وايي چې د نړيوالې جګړې مخ په ځورتوب د جنګ په اړه زموږ د ډېرېدونکي مخالفت غبرګون دی. ۱۰۳۳

د دغه کتاب بل بحث دا دی چې وايي «دولت جګړه رامنځ ته کړه او دولت جګړه کوي». کيکن په دې فکر دی جګړه کول د دولت ځانګړې دنده نه وه او د وخت په تېرېدلو سره د جګړې کولو دندې يې په تېره په لوېديځې نړۍ کې خپل درنښت له لاسه ورکړی دی. په لوېديځې نړۍ کې اوس دغه ذهنيت پياوړی او عام دی، چې له دولت نه د دفاعي حالت نه پرته جګړه نه غواړي، بلکې د ژوند ښه کېدل غواړي. کيکن وايي چې په تاريخ کې هم داسې نه وه، چې جګړه يوازې د دولت کار و. بې دولته هم جګړې وې او برسېره پر دې دغسې دولتونه هم وو، لکه د مصر د فرعونانو چې د پېړيو پېړيو په بهير کې يې هم نه يرغليز او نه هم دفاعي جګړه کړې ده. په تاريخ کې په تېره د ناپليون د وخت نه وروسته، نړيوالې جګړې هغه وخت ډېرې شوې چې دولتونو لوی او دايمي پوځونه يې لرل.

له جګړې نه مطلب يوازې نړيواله جګړه ده. خو په ټولو جګړو کې يو ګډ ټکی شته، چې هغه د خبرو اترو او منځګړي توب له لارې پرته د فزيکي زور له لارې د يوې لانيجې هوارول دي. البته هغه وخت چې خبرې پایله ورنه کړي، فزيکي زور ته لاس اچول کېږي. د جګړې وار په وار د کمېدو له پاره کيکن دا دليلونه راوړي:

دی وايي چې ډېر مهم يې دادی چې جګړه په بشري، اقتصادي او نظامي لحاظ ډېره کرانه تمامېږي او تيري کوونکي په جګړې سره خپلې موخې ته هم رسېدلی نه شي. هېڅ ملت چې په شلې پېړۍ کې جګړه پيل کړې بريالی ونه ووت. د بېلګې په توګه استريا، هنگري او جرمني لومړۍ نړيواله جګړه وپاروله او په بدنامۍ سره مات شول. په دوهمه نړيواله جګړه چې هېتلر پيل کړه، جرمني په بې شرطه تسليمۍ سره وځپل شو. عربانو چې په ۱۹۴۸ کال کې په نوي يهودي دولت يرغل وکړ، په څلورو پرله پسې جګړو سره يې د اسرايلو په

وړاندې سيمې له لاسه ورکړې. پاکستان چې غوښتل يې هند ته مخکې له مخکې جزا ورکړي، د جگړې په بهير کې په خپله دوه ټوټې شو. کاکړ وايي چې بله بېلگه يې په افغانستان باندې د شوروي اتحاد يرغل و، چې د افغانانو سره څه باندې نهو کلنو په جگړې کې ناکام او د امپراتورۍ د ټوټه کېدو يو لامل شو.

د هيلې بل وړ ټکی دا دی چې لوېديځوالو د شلمې پېړۍ د لويو جگړو نه زده کړه وکړه. ډېرو هېوادونو د لومړۍ نړيوالې جگړې ورسته د ملتونو ليک او د دوهمې نړيوالې جگړې ورسته د ملګرو ملتونو موسسه جوړه کړه. د ملګرو ملتونو موسسې د يرغلونو او جگړو په شندولو، د سولې په خوندي کولو، په اقتصادي او پوهنيزو ساحو کې مهم کارونه کړي دي. غرو يې ژمنه کړې چې د يرغليز جنګ په وړاندې به دغې موسسې ته ځواکونه ورکوي. د موسسې غړي په خپل سر جگړې کولو نه منع دي، خو دا چې د ځان په دفاع کې وي يا د دغې موسسې له خوا تاييد شوې وي. نن د هستوي وسلو په لرلو سره د انسان د بشپړ ورکېدو شونتيا شتون لري ځکه هم دولتونه محتاط شوي چې لانجې په خبرو سره هوارې کړي.

دی وايي چې بل مهم ټکی دا دی چې د لوېديځې نړۍ په ولسونو کې د جگړې، وژنې او زور پر وړاندې د شعور او وينستيا پياوړي کېدل دي. ستوسنګر وايي چې د علمي شعور دغه نوی او سوکه سوکه پياوړي کېدونکی زړه سواندی کې زموږ غټه هيله پرته ده. ۱۰۳۴ جان هوګن وايي چې د جگړې د مخ په ځورتوب تر ټولو ډېره عامه شرحه د ډموکراسۍ عام کېدل دي. په ډموکراسۍ کې خلک د خپلو استازو له لارې حکومت کوي. کانت وايي چې له دغسې ډموکراسي نظام نه د تلپاتې سولې هيله کېدای شي. د جان هوګن په وينا کانت لومړی پوه و، چې د ډموکراسۍ او د سولې تر منځ يې د تړاو وړاندیز وکړ.

ستوسنګر دا هم وايي چې دا هم د هيلې وړ نښه ده، چې زموږ په مهال کې د نړيوالو لانجو د هوارولو له پاره د ډپلوماسۍ نه ډېر کار اخېستل کېږي. د ډپلوماسۍ د بري له پاره به هغه مهال لاره هواره شي، چې د شتمنو هېوادو واکمنان کوښښ وکړي د خپلو ټولنو او پرمختلونکو هېوادو تر منځ د ژوند په کچه کې توپير لږ کړي.

بل اساسي شی چې دا بهير پياوړی کولی شي، د عصري پوهنې او ټکنالوژۍ نور عام کېدل دي. اوس دا فکر عام شوی چې پوهه، پوهنه او ټکنالوژي د وړاندې تک او ښه ژوند له پاره اساسي شرط دی. فکري وده د وړتياوو د ودې له پاره حتمي ده. د وړتياوو دا وده ده چې انسان د پياوړي وجدان خاوند کېږي او قضاوت او کړه د عقل او تدبير له مخې کوي او د بدلون او وړاندې تک خنډ نه کېږي. نامتو اقتصاد پوه ويلي و، چې هغه داسې

ټولنه ليدلې نه ده چې غړي يې باسواد او په خپله بېرته پاتې وي. ځنګه چې افراد د ټولني بنسټ جوړوي، د هغو وده او پرمختګ د ټولني د پرمختګ او د خلکو د نېکمرغۍ لامل کېږي.

کاکړ د خپلې پيلامې دوهمه برخه د افغانستان جګړو ته ځانګړې کړې ده او د هغو ناوړه پايلې يې وطنوالو ته روښانه کړې تر څو سوې ته وهڅول شي. دی وايي چې په افغانستان کې د تاريخ په اوږدو کې دغومره ډېرې جګړې شوې، چې په بل هېواد کې په دغه اندازه شوې نه وي. د نړۍ نامتو قوماندانان لکه سکندر، چنګېز خان، امير تيمور او بابر دلته زموږ د خلکو سره جنګېدلي دي. سکندر چې په نړۍ کې يو بېجوړې قوماندان و، په لرغوني افغانستان کې د پښتون سپېتامنز په مشرۍ د ځايي خلکو له داسې مقاومت سره مخامخ شوی، چې د هخامنشيانو په امپراتورۍ کې ورسره مخامخ شوی نه و. سکندر د کونړ په دره کې د هغه مهال د اسپاسيانو يا د نن ورځې يوسفزيو له ټينګ مقاومت سره مخامخ شو. په دواړو سيمو کې هم د سکندر پوځ د سر ډېر زيان وليد او په خپله څو ځله ټپي شو. د ځايي خلکو دغه زورتيا او جګړه يزې ځانګړنې به وې چې سکندر په خپله او د هغه قوماندانانو ورسره خپلوي او خېښي وکړه. که څه هم يونانيان د اپلاتون او ارستو په ګډون غېر يونانيان بربر ګڼل خو د تارن په وينا «دا په خپله د سکندر فکر و، چې دغسې سطحې ته لوړ شي، چې د اپلاتون او ارستو له سطحې نه لوړ و.» ۱۰۳ سکندر د يوه ځايي واکمن اوکسيارتز د لوړ رخشانې او د هغه قوماندان سلوکوس نيکاتور د سپېتامنز د لوړ اپامه سره واده وکړ. د سلوکوس نيکاتور او اپامې زوی چې انتيو کوس نومېده پاچا شو. د يونان- باختري پاچايانو دلته يوه پېړۍ واکمني وکړه.

د اتلسې پېړۍ په پيل کې ميرويس نيکه په کندهار کې د صفويانو واکمنۍ ته د پای ټکی کېښود او په کندهار کې د لومړي افغان دولت بنسټ کېښود. زوی يې شاه محمود هوتک د صفوي امپراتورۍ مرکز اصفهان يې د کلناباد د تاريخي جګړې په ترڅ کې ونيو. د ستر احمدشاه په سروالی د امو نه تر اباسين پورې ټول افغانستان د پرديو له واک نه ازاد شو. کشمير، سند، پنجاب او فارسي خراسان د هغه د امپراتورۍ برخې شوې. ورسته د اروپايي نيواک په دوره کې په داسې حال کې چې هم اسيايي او هم د نورو لويو وچو هېوادونه د هغه د لاندې کېدلو تر خطر لاندې شول، افغانستان ته هم خطر پېښ شو. افغانستان چې له سدوزيو نه محمدزيو ته د واکمنۍ د انتقال په مهال چې امير دوست محمد خان په کابل کې واکمن و، د برتانوي پوځ د يرغل سره مخامخ شو. افغانانو په ټينګ او کلک مقاومت په پايله کې دښمن په شا تلو ته اړ او د کابل- کندمک تر منځ لارې

کې له منځه يووړ. تر دې د مخه د باندنيو گرځندويانو په ليکنو کې افغانان په ټولې اسيا کې ازاد طبع او پراخ ذهن خلک ياد شوي دي. خو د دې جگړې په پايله کې د نامسلمانو باندنيو په وړاندې حساس شول. دغه حساسيت څلورېښت کاله وروسته د برتانوي هند په بل ناکام يرغل سره نور هم پياوړی شو. په ۱۸۹۳ کې د برتانوي حکومت له خوا په امير عبدالرحمن باندې د ډپورنډ کرښه وټپل شوه او له هغې وروسته نږدې هر کال په ختيځو پښتني سيمو کې د برتانوي هند د يرغلگر پوځ په وړاندې د غزا په نامه جنګېدل. امير عبدالرحمن سره له دې چې د برتانوي هند د حکومت دوست و، او باندني چارې يې هم د هغوی له خوا ترسره کېدې، بيا هم هغه د هغه سيمو خلکو ته وسلې ورکولې او ځوانان يې په خپلو افسرانو سره روزلي وو. په دغه لړ کې د وزيرستان د حاجي ميرزعلي خان، چې د ابي فقير په نامه يادېده، غزاګانې ان له هند نه د انګرېزانو تر وتلو پورې او تر هغه وروسته د پاکستان پر ضد روانې وې. يو ځل انګرېزانو د هغه د نيولو په موخه څلورېښت زريز پوځ وکاروه خو د هغه په نيولو کې ناکام شول. کاکړ وايي چې د ابي فقير د وزيرستان د يوه بل ستر قوماندان ميران شاه په شان و، چې په منځنيو پېړيو کې يې د هند په وړاندې يرغلوونه کول. د دغو ټولو جنګي مقابلو په پايله کې په افغانانو او په ځانګړې توګه په ختيځو پښتنو کې جنګي روحيه د دوی د کلتور برخه شوه. په ۱۹۷۹ کال کې په افغانستان باندې د شورويانو پوځي يرغل سره دغه جنګي روحيه لا نوره پياوړې شوه. افغانانو، چې د نړيوالو پراخ ملاتړ ورسره و، شوروي اتحاد اړ کړو چې خپل پوځونه د افغانستان نه وباسي.

د افغان- شوروي جگړې پايله دا شوه چې د برلېن دېوال ړنګ، د شوروي امپراتوري ړنګه او ساړه جگړه پای ته ورسېده. د شوروي پوځ په وتلو او د کابل رژيم په نسکورېدو سره جگړه بايد پای ته رسېدلې وای، خو داسې ونه شول. تنظيمي لويانو د پاکستان د صدر اعظم نواز شريف د پلان له مخې د تنظيمي انحصاري حکومت فورمول ومانه.

اسلامي تنظيمونو د دې پرځای چې د وران شوي ملک د بيا ودانولو او د ملي سياست په کولو بوخت شي، د واک پر سر پخپلمنځي جگړو بوخت شول. د کابل ښار چې د نيواک په دوران کې لوی شوی او په امن کې و، په کنډواله بدل شو. په ټول ملک کې د سر، مال او ناموس خونديتوب له منځه لاړ. په دغې دورې کې ابادي هېڅ ونه شوه. پاکستان، ايران او تر څه اندازې ازبکستان په دغه نارام حالت کې خپلې ځانګړې ډلې پياوړې کولې او په دې ډول يې په افغانستان کې يو ډول نيابتي جگړه کوله.

په دې لړ کې د جوماتونو ملايان او طالبان د تنظيم واکې پر ضد جګ شول او له يو

لږ نښتو او جگړو وروسته يې په ۱۹۹۶ کې دغه دوره چې دوی «د شر او فساد دوره» بلله پای ته ورسوله. خو د دغه نوي اسلامي امارت لويانو هم د خلقيانو، پرچميانو او تنظيمي ډلو په څېر واکمني خپلې ډلې ته ځانگړې کړه. د دوی غړي چې له قدرې، خلاصې، کز او قران مجيد نه اخوا په نور څه نه پوهېدل او په اداري او حکومتي چارو کې يې هېڅ تجربه نه لرله. د طالبانو لويانو په لومړي سر کې وکولی شول چې وسله ټوله، امنيت ټينگ، د خلکو مال او ناموس خوندي، د کابل په نيولو سره د رباني- مسعود واک مات او د افغانستان د وېشلو شوروي پلان ناکامه کړي. د طالبانو په واکمنۍ کې د هغوی افراطي کړي د هغو بهرنيو تروريستانو تر اغېز لاندې راغلې چې د رباني- مسعود د واکمنۍ په وخت کې يې په هېواد کې ځاله کړې وه او د افغانستان د تابعيت تذکرې ورکړي شوې وې هېواد نور هم ناتوانه کړ. دغو ترهگرو د اسامه بن لادن په مشرۍ د ۲۰۰۱ کال د سپتمبر په يوولسمه نېټه د نيويارک د ښار د نړيوالې سوداگرۍ جگې مانۍ رانسکورې کړې. دوی امريکا يا کوم دريم هېواد ته اسامه بن لادن د سپارلو څخه د مېلمه توب تر پلغې ډډه وکړه. د امريکا متحده ايالاتو د ملگرو ملتو او نړيوالو په ملاتړ د طالبانو واکمني رانسکوره کړه او د افغانستان د تاريخ نوې پاڼه پرانېستل شوه او د بن پروسه پيل شوه.

د بن په غونډه کې که څه هم د هغې گډونکوونکي د خلکو واقعي استازي نه وو د زياتو نيمگړتياوو سره سره يې د يوه مشروع دولت د جوړېدو له پاره لار پرانېسته. د بن د پرېکړو پر بنسټ د برهان الدين رباني څخه د لنډ مهالې ادارې مشر حامد کرزي ته واک ولېږدول شو، بيا لويه جرگه جوړه شوه او د لويې جرگې د پرېکړې له مخې حامد کرزي د انتقالي دورې د رييس په توگه وټاکل شو، ورپسې د اساسي قانون جرگه جوړه او اساسي قانون تصويب شو، د اساسي قانون پر اساس د ولشرۍ ټاکنې وشوې او حامد کرزي د خلکو د پټو او نهغو رايو په بنسټ د جمهور رييس په توگه وټاکل شو، د ولسي جرگې او د مشرانو جرگې ټاکنې ترسره شوې. په دې توگه د اساسي قانون له مخې يو لېرال ډموکرات ولسمشر نظام په پښو ودرول شو او د پنځه ويشو کلونو وروسته د ډموکراسۍ نوې دوره پيل شوه.

په دغه دوره کې د پوهنې، د بيان د ازادۍ، مخابراتو، د لارو د جوړولو، روغتيا، د دولتي ادارې د جوړولو، د ښځو د حقوقو د تامين او ځينو نورو برخو کې د پام وړ کارونه سر ته رسېدلي دي. مهمه دا ده چې د امريکا د متحده ايالاتو، انگلستان، اروپايي اتحاد او ناټو سره ستراتيژيک تړونونه لاسليک شوي دي. دا لاسته راوړنې به څو ځله نورې هم زياتې وای که د لومړي سره ځينې تېروتنې نوای شوې.

نړيوالې ټولنې د ۲۰۰۱ کال د سپتمبر د يوولسمې نېټې د پېښې نه وروسته چټک غبرگون وشو او د دې وخت يې ونه موند چې د افغانستان له پاره ټاکلې ستراتيژي جوړه کړي، همدارنگه د بده مرغه په عراق باندې بريد د افغانستان موضوع ته پاملرنه لږه کړه، برسېره پردې نړيوالې ټولنې د خپل سر د زيان د لږولو په موخه پخوانيو ټوپکمارانو او زورواکانو باندې تکيه وکړه او د شمالي ټلوالې په وجود کې يې په زياته کچه د واک واځي دغو بې رحمه قوماندانانو، ډرامارانو او لوتمارو ته په لاس ورکړې له دې کبله د خلکو مال، جايداد او ناموس خوندي نه دی. که څه هم هغه مهال د افغانستان خلکو او په ځانگړې توگه د کابل خلکو ډيرې نارې سورې وکړې خو د دوی غږ ته چا غوږ و نه نيو. د مايکل هاورد په ژبه د افغان دغه نوې ډموکراسي د عمل په ډگر کې د غلو او ټکمارو واکمني شوه او اداري فساد په حيرانوونکي ډول په دغه ډول عام شو چې په افغانستان کې هېڅکله دومره عام نه و. ۱۰۳۶

د ۲۰۰۶ کال نه وروسته د بهرنيو او حکومت په وړاندې د طالبانو او ملگرو ډلو له خوا کوريلايي ډوله بريدونه زيات شول. د دې وضعې نه زموږ بدنيتو گاونډيانو هم کته پورته کړه. دوی زموږ د هېواد په کورنيو چارو کې د لاس وهنې په موخه طالبان او القاعده تنظيم، وسله وال، تمويل او وروزل او د وراني په موخه يې زموږ هېواد ته راولېږل. د دغو کورنيو او بهرنيو لاملونو په پايله کې بې امني لا زياته شوه، په دولت کې فساد لوړې کچې ته ورسېد او د نشه يي توکو د کښت، قاچاق، سوداگرۍ او انتقال مافيا رامنځ ته شوه چې هېواد يې د سترو ننګونو سره مخامخ کړ.

د امريکا متحده ايالاتو د مشر اوباما د جمهوري رياست په دوره کې د امريکا د متحده ايالاتو او د حامد کرزي تر منځ اړيکې ورو ورو خرابې او د کرزي د واکمنۍ په دوهمه دوره کې يې د هيواد په بيا رغونه منفي اغېز وشينده. د امريکا او ناتو پوځونو لويه برخه په ۲۰۱۴ کال کې د افغانستان نه ووتل. خو دوی لوی افغان پوځ شا ته پرېښود او د هغه د روزنې له پاره يې يوه وره قوه پرېښوده.

په ۱۹۱۵ کال کې بيا ټاکنې وشوې او اشرف غني د زياتو رايو په کتلو سره ټاکنې وگټلې، خو داسې ښکارېده چې د اوباما د ادارې ځينو چارواکو نه غوښتل چې يو اغېزمن دولت دې په افغانستان کې په پښو ودرېږي. دوی د جان کېرې په خوښه په افغانستان باندې د تش ملي يووالي په نامه حکومت په افغانانو وټپه. خو بيا هم د زياتو ملي او نړيوالې ستونزو سره سره د امريکا له متحده ايالاتو سره اړيکې ورغول شوې او نړيوالې مرستو دوام وکړ.

په ۲۰۱۹ کال کې بيا ټاکنې وشوې او دا ټاکنې اشرف غني وگټلې خو دا دريم ځل دی چې عبدالله عبدالله د ټاکنو پایلې نه مني. اوس له يوې خوا د طالبانو او امريکې تر منځ تړون لاسليک شوی او د بلې خوا د افغانستان د حکومت او طالبانو تر منځ د سولې خبرې د پيلېدو په درشل کې دي.

دېرشم څپرکی

د ډموکراسۍ و اقي نړۍ

دا کتاب په اصل کې د مېسي (Massey) شپږ لېکچرونه دي چې د کاناډا د تورنتو د پوهنتون پوهاند س. ب. میکفرسن د ۱۹۶۵ کال د جنوري او فبروري په مياشتو کې د کاناډا د راډيو په څپو کې اورولې وې. دا لېکچرونه لومړی د کاناډا راډيو د يوې رسالې په بڼه او بيا د انگلستان د اکسفورډ د پوهنتون له خوا په ۱۹۶۶ په لږ بدلون سره چاپ شول. کاکړ دا رساله په فارسي وژباړله او په ۱۳۵۰ کال کې په کابل کې چاپ شوه. د افغانستان د تاريخ په دغه مهال د کابل د پوهنتون د زده کړيالو او روښان اندو تر منځ پر دغسې موضوعاتو تاوده بحثونه روان وو. په دغه مهال کې چې ايډياگانو چې د خلک ډموکراتيک کوند له خوا او د بلې خوا افراطي اسلامي نظريات چې د اسلامي تنظيمونو له خوا يې تبليغ کېده د پوهنتون فضا توده کړې وه. کاکړ دا رساله په دغه حال کې ځکه خپاره کړه چې د هغو روڼ اندو، چې د سياسي او د دولت د اداره کولو د چارو سره علاقه لري، پام دې ته واړوي چې دغه رساله ولولي او د واقعي ډموکراسۍ نړۍ نه خبر او د افراطيت نه وژغورل شي. خو کاکړ ما ته په تليفون کې وويل چې اغېز يې لږ و. په دغه کتابکوټي کې ليکوال د ډموکراسۍ يو ځانگړی تعريف نه مې بلکې هغه په درې بيلو مفهومانو سره پېژني: لبرال ډموکراسي چې په لوېديځه نړۍ کې پلې کېږي، غير لبرال ډموکراسي چې يوه ځانگه يې د دريسې نړۍ د پرمختلونکو هېوادونو کې پلې کېږي او په پای کې د غير لبرال ډموکراسۍ بله ځانگه چې په سوسيالستي نړۍ کې پلې کېږي. د دې کتابکوټي د ليکوال په نظر د دې درې واړو ډولونو وروستی موخه يوه ده هغه دا چې دوی د انسان د بشپړې وړتيا د ودې زمينه برابروي، خو هغوي دغې موخې ته د رسېدلو له پاره په بيلو لارو روان دي. دا نتيجه گيري د هغې نظريې سره په ټکر کې ده چې ادعا کوي چې موجودې ډموکراسۍ په يوه لارو يو پر بل پسې روانې دي او يوه ورځ به ټولې د يو بل سره وتړلې شي او په پایله کې به يو مفهوم ځانته ونيسي. اوس به د دغو شپږو لېکچرونو مهم ټکي لوستونکو ته وړاندې کړم.

د ډموکراسۍ زارې او نوې پولې

د دې کتابگوټي ليکوال وايي چې د ډموکراسۍ په اړه شک شته. په اصل کې د شک اساس چې د ډموکراسۍ په اړه شته هغه په خپله د ډموکراسۍ موضوع ده په دې چې د ډموکراسۍ کليمې څو ځله خپل مفهوم په څو لورو اړولی دی. پخوا ډموکراسي يوه بده کليمه وه. هر نفوذمن او مهم سړی په دې پوهېده چې د ډموکراسۍ اصلي مانا د خلکو اراده يا حکومت د خلکو د ډبرکي په اراده وي. نږدې سل کاله وړاندې هونبنيارو خلکو د ډموکراسۍ په اړه همدا نظر درلود.

ډموکراسي له هغې نه وروسته په وروستيو پنځوسو کلونو کې ښه وگڼل شوه. د لوېديځې لبرال ډموکراسۍ په وړاندې انقلابونه وشول چې د پرولتاريا ډموکراسۍ يا خلقي ډموکراسۍ په نامه او د اسيا او افريقا په هېوادو کې په څو نومو ياده شوه.

ډموکراسي د لوېديځې نړۍ د لبرال ډموکراسۍ سره بايد يوه ونه گڼل شي او غير لبرال سيستمونه چې په سوسياليسټي او د دريمې نړۍ په هېوادونو کې شته د دې حق لري چې د ډموکراسۍ اصطلاح وکاروي. دا موضوع به په دوهم لېکچر کې نوره هم روښانه شي. بل ټکی دا دی چې د بل هر سيستم په شان لبرال ډموکراسي د قدرت يو سيستم دی يانې د هر بل سيستم په شان د دوه گوني قدرت سيستم دی. په دې توگه ډموکراسي د قدرت د يوه سيستم په توگه يو سيستم دی چې دولت د هغه په وسيله سره په خپلو افرادو او ډلو خپل قدرت عملي کوي.

دریم ټکی دا دی چې لبرال ډموکراسي د پانگوالي له اصل سره يوځای مخته ځي. لبرال ډموکراسي يوازې په هغو هېوادو کې ليدل کېږي چې پانگه وال اقتصاد لري. هر پانگوال هېواد د څو استثنی پرته چې هغه هم د څه وخت له پاره وي د يوه لبرال- ډموکراتيک سياسي سيستم لرونکي دي.

اوس به لومړی د ډموکراسۍ زارې او نوې پولې له نظر نه تېرې کړو. په لوېديځه نړۍ کې هغه وخت چې لبرال ډموکراسي او لبرال دولت منځ ته نه و راغلی د ډموکراتيکو ټاکنو حق معمول نه و. ډموکراسي له پاسه وارده شوه او اړه وه چې د هغو شرايطو سره ځان برابر کړي چې د ټولنې له خوا تهيه شوي و چې په خپله د فرد او مارکېټ د سيالۍ محصول و او په هغه کې يو لبرال دولت واک چلوه او دغه دولت د يوه سيستم له لارې د ټولنې په چوپړ کې و چې سياسي گوندونو په کې په ازاده او ډموکراتيکه توگه سيالي کوله. لبرال دولت په پای کې ډموکراتيک او ډموکراسي په پای کې لبرال شوه. دا د ډموکراسۍ په ماهيت کې بدلون و.

په سوسيالستي او هغو هېوادونو کې چې نوي ازاد شوي د لبرال پانګوالي او دولت په وړاندې د انقلاب په څېر ډموکراسي منځ ته راغله. د دوی په اند ډموکراسي په اصلي مانا د عامو خلکو په ذريعه اداره د اعتبار وړ ده. دلته هم د ډموکراسۍ په مانا کې هم بدلون راغی ځنګه چې نوې ماشيني تکنالوژۍ توليدي قواوي دومره زياتې شوې چې د خلکو د راتلونکې له پاره د پېرمانۍ فکر وکړو. له دې کبله دوی ډموکراسي په اصلي مانا نه، چې حاکميت د يوې طبقې په کټه، بلکې حاکميت د ټولو خلکو له پاره په مانا بولي.

د ډموکراسۍ اصلي مانا د خلکو له خوا حاکميت دی. د ډموکراسۍ دا مانا په زياته اندازه طبقاتي مسله وه او د هغې مانا د تر ټولو ټيټې او لويې طبقې نفوذ او حاکميت و. له دې کبله پوهو، شتمنو او هغو کسانو چې د متمدن ژوند لارې ته يې ارزښت ورکاوه له ډموکراسۍ نه وېرېدل او هغه يې ردوله. اپلاتون د مخزېږدې پنځمې پېړۍ کې ډموکراسي د برابرۍ د نظريې په حيث رد کړه. په اوولسمه پېړۍ کې کرومول په همغې روښانتيا سره رد کړه. ان جان ستوارټ مل د نولسمې پېړۍ د لبراليزم ستر لارښود کله چې پوه شو چې اوس بايد د عوامو سره د خلکو په څېر معامله وکړو د رای ورکولو د داسې سيستم وړانديز يې وکړ چې د هغه له مخې کارکړې طبقې نه شو کولی چې د ډېرې د غېر څښتنه شي.

د دې کتابگوټي ليکوال وايي چې هغه لبرالي ډموکراسۍ چې مور يې پېژنو اول لبرالي وې بيا ډموکراتيکې شوې. په بله ژبه په لوبديځه نړۍ کې د ډموکراسۍ د ترويج کولو د مخه ټولنه او د انتخاب سياست او ټولنه او د مارکېټ سياست منځ ته راغی. د ازاد انتخاب اصل پرته د اداره کونکو او اداره شويو تر منځ د سياسي اړيکو پرته د افرادو تر منځ په ټولو اړيکو کې ټولو منلی و. افراد ازاد وو چې مذهب، د ژوند شپوه، د واده شريکان، او خپل کار وټاکي.

د فردي انتخاب پر بنسټ ټولني ځيني نيمګړتياوې درلودې. په داسې ټولنه کې لويه نابرابري پټه وه. په دې چې شونې نه ده چې تر هغه د پانګوالي مارکېټ څښتن شو چې ځينو خلکو پانګه جمع کړې او ځيني زيات خلک يې هېڅ ونه لري او يا دومره لږ ولري چې نه شي کولی په خپلواکه توګه کار وکړي او اړ وي خپل کار نورو ته وړاندې کړي. دغه نابرابري د انتخاب په ازادي کې شامله ده. سره له دې پانګوالي سيستم تر پخوانيو نه په زياته اندازه لوړ و. په هغه کې د جګېدو او لوېدو چانس ډېر و. په خوا هم تل نابرابري شتون درلود. په هر حال نوی سيستم منځ ته راغی او فردي لبرالي ټولنه جوړه شوه چې د حقوقو د واقعي برابرۍ يې هېڅ ډموکراتيک شی نه درلود. خو لبراله وه.

د دې له پاره چې دا ټولنه اغېزمن کار وکړي د حکومت يوه معقول سيستم اړتيا

احساس کېدله. داسې حکومت د سمون يا د انقلاب له لارې په اوولسمه پېړۍ کې په انګلستان، په اتلسمه پېړۍ په امريکا او په اتلسمه او نولسمه پېړۍ کې په فرانسه کې منځ ته راغی. په دې ترتيب لېرال دولت منځ ته راغی. د لېرال دولت جوهر متناوب يا د يو شمېر ګوندونو سيستم دی. دغه ډول ګوندي سيستم په خپل ځان کې کوم ډموکراتيک شی نه درلود. لومړی ځل دا سيستم په انګلستان کې منځ ته راغی سيستم ښه ټينګ او اغېزمن شو. دغه پېښه نيمه يا يوه پېړۍ د مخه دوره کې وشوه چې عمومي رايه اچونه ډموکراتيکه شي. د لېرال دولت دنده دا شوه چې دغه لېراله ټولنه چې ډموکراتيکه نه وه وساتي او وده ورکړي. د سيالی ګوندي سيستم دنده دا شوه چې د مارکېټ سيالی کونکې ټولنه وساتي او حکومت د شتمنو د اکثريت په ګټه چې په خپله د مارکېټ ټولنه اداره کوي مسول وي.

دا ډېر وروسته و چې په لېرال دولت کې ډموکراتيک انتخاب رواج وموند. دا کار په اسانۍ او زر لاسته راغی. د نننيو لېرال ډموکراتيکو په زياترو هېوادونو کې دغه تشکل د زياتو لسيزو او په ځينو هېوادو کې د نولسمې پېړۍ په وروستيو کې منځ ته راغی. ښځې چې د ټولني نيم شمېر جوړوي اړې وې چې لا نورې هم سترګې په لاره وي تر څو د سياسي غېر څښتنې شي.

په دې ترتيب د مارکېټ په ټولنه او لېرال دولت کې ډموکراسي وروسته ورزياته شوه. هغه وخت چې ډموکراسۍ په لېرال ډموکراتيکو هېوادو کې رواج وموند نوره د لېرال ټولني او لېرال دولت مخالفه نه وه. ډموکراسي په دغه وخت کې د ټيټو طبقو له خوا د لېرال دولت او د مارکېټ د اقتصاد د غورځولو له پاره کوشښ نه و، بلکې د ټيټو طبقو له لوري د موسساتو د ننه او د ټولني د سيستم د ننه ځان ته موزون ځای پيدا کول و. ډموکراسۍ خپله بڼه بدله کړه. ډموکراسۍ لېرال دولت ته د خطر پر ځای د لېرال دولت بشپړولو ته بدلون وکړ.

هغوی چې د ټاکنو حق ترلاسه کړ خپل سياسي غېر يې په زياته اندازه وکاروه. د دولت نه يې د پوهې، روغتيا، او سوکالی په برخو کې خدمتونه وغوښتل. دا خدمتونه پخوا ډېر لږ وو. دوی د زياتو دولتي مقررو غوښتنه هم وکړه. لېرال ډموکراتيک دولت له دې وروسته د عامې سوکالی دولت شو. د دې کتابګوتي ليکوال دا هم وايي چې دا سمه ده چې لېرال ډموکراتيک دولت زيات خدمتونه کړي او پلانګذاري او کنټرول يې تر يوې اندازې پلي کړي دي. خو که لېرال دولت ډموکراتيک شوی نه وای بيا هم لېرال دولت دا کارونه کول. په دې چې حکومتونو کله چې د نارامې کارګرې طبقې چې د دولت ثبات ته خطر شمېرل کېدو، د ملاتړ د لاسته راوړلو د اړتيا احساس وکړ دا کار د جرمني ساتنپال صدراعظم بسمارک

وکر نه کوم لوی ډموکرات چې په ۱۸۸۰ کې یې د لومړي ځل له پاره د سوکالی د دولت اساس ایښی و.

په دې ترتیب لبرال دولت د ډموکراسۍ په زیاتولو سره خپل ذاتي منطق بشپړ کړ نه یې خپل ځان د منځه یوړ او نه یې ځان کمزوری کړ، بلکې هم یې ځان او هم یې د مارکېټ ټولنه غښتلي کړه. ډموکراسي یې لبراله او لبرالیزم یې ډموکراتیک کړ.

د غیر لبرال ډموکراسۍ کمونيسي څانگه

د دې کتابکوتي لیکوال وايي چې مور په لوېديځ کې یوه بې جوړې سياسي سيستم ته وده ورکړې چې هغه د لبرال دولت او د ډموکراتیکو ټاکنو د حق جوړښت دی. مور باید هغه ته د لبرال ډموکراسۍ نوم ورکړو. اوس دا پوښتنه راپورته کېږي چې لبرال ډموکراسي څه شی دی؟ د مخه مو یادونه وکړه چې ډموکراسي په اول کې یوه طبقاتي مسله وه. ياني د یوې طبقې حاکمیت د خپلې کټو د تامین له پاره. هغه انقلابي غورځنگونه چې په سوسیالستي هېوادو او په هغو ملتونو کې چې اوس خپلواکي ترلاسه کړي لږ او ډېر ډموکراسي په دې مانا پېژني. خو د مخه مو دا هم وویل چې په دغو هېوادو کې هم د ډموکراسۍ مفهوم بدل شوی او د لومړي طبقاتي مفهوم نه په یوه بشري مفهوم چې د طبقاتو نه لوړ دی بدلون کړی دی.

د ډموکراسۍ کمونستي نظریه د ۱۸۴۰ او ۱۸۸۰ کلونو تر منځ د کارل مارکس د لیکنو نه سرچینه اخلي. مارکس په دې باور و چې انسان په اصل کې یو خلاق ازاد موجود دی. د مارکس په نظر انسان په ټولو تاريخي دورو او هم د تاریخ نه د مخه دوره کې د ځانگړو دلیلونو له مخې ونه کړای شول چې خپل اصلي ماهیت په بشپړه توګه واقعي کړي. په دې چې توليدي قواوو کچه ټیټه وه. د توليدي قواوو دغې ټیټې کچې انسان په اجباري کار محکوم کړی و. په هغه حال کې د دې له پاره چې کار متشکل شي د حاکمې طبقې استثمار ته لږ او ډېره اړتیا وه. خو اوس دغه حال ته اړتیا نه شته ځکه چې وروستي پانګوالي سيستم د توليدي قواوو ظرفیت ډېر زیات پراخ کړی دی. دغه سيستم په تخنیکي لحاظ د اجباري کار نه د ټولو انسانانو د خلاصولو شونتیا منځ ته راوړې ده. انسان د دغه اجباري کار او طبقاتي ټولې د زېښاک نه خلاصون کولی شي د لومړي ځل له پاره انساني شي.

د اروپا پانګوالي ټولنه چې مارکس وڅېړله په ښکاره په طبقاتو وېشلې وه. د مارکس د تحلیل له مخې طبقاتي زېښاک د طبقاتي سيستم اساسي توکی و. تر هغه چې پانګوالي نظام موجود وي یوه طبقه به د خپلو کټو د تامینولو له پاره وسیلې کاروي او د دولت نه د

زور د وسيلې په توگه کار اخلي. له دې کبله بايد د پانگوالۍ اصل له منځه يوړل شي او يوازې توليدي قواوې چې پانگوالۍ ورته وده ورکړې وساتل شي. ليکوال وايي چې له دې نه داسې پوهيدای شو چې د مارکس په نظر د مخه تر دې چې طبقاتي زبېښاک وضع پای ته ورسېږي او انسان ازاد شي تر څو خپلې وړتياوې په بشپړه توگه کشف کړي بايد پانگوالي دولت له منځه يوړل شي او پر ځای يې پرولتاري حاکميت ودرېږي. د پرولتاريا حاکميت به تر هغه اړين وي چې پانگوالي ټولنه په سوسيالستي ټولنه بدله شي.

مارکس د پرولتاريا د حاکميت دوره ډموکراسي وبلله. دغه مفهوم مارکس د کمونېست په مانيفېست کې چې په ۱۸۴۷ کال کې خپور کړ په بشپړه توگه روښانه کړ. د کارگرې طبقې په انقلاب کې لومړی گام دا دی چې پرولتاريا سياسي واک ته ورسېږي او د ډموکراسۍ مبارزه وکړي. ډموکراسي بايد طبقاتي دولت وي. د هغه په مرسته د پانگوالۍ قانوني بنسټ ړنګ شي او د ټولې ټولې توليدي قواوې د جمع شوې پانګې په گډون د ټولې په چوپړ کې وکارېږي. د مارکس په اند د پرولتاريا او پانگوالانو باندې طبقاتي وېش په تاريخي لحاظ د طبقاتي وېش وروستی بڼه ده او هغه وخت چې د پرولتاريا دولت پانگوالي سيستم له منځه يوسي د هغې وروسته به ټولنه په دښمنو طبقو وېشلې نه وي. طبقې به د زبېښاک په اصلي مفهوم ورکېږي. طبقاتي دولت هم په دغه سرنوشت اخته کېږي.

په دې توگه مارکس فکر کاوه چې د کارگر طبقه پانگوالۍ زېږولې ده. يوازې د سياسي قدرت په نيولو سره ځان ازادولی شي. حاکميت يې له دې امله ډموکراتيک دی، چې د خلکو ډېره کي جوړوي او موخه يې د ټولو انسانانو بشري کول دي. دغه ډموکراسي په اول کې به طبقاتي حاکميت وي په دې چې طبقاتي حاکميت د پانگوالي اقتصاد په سوسيالستي اقتصاد باندې د بدلولو له پاره اړين دی. کله چې دا بدلون بشپړ او پرېماني عامه شي له هغې وروسته به طبقاتي حاکميت ته اړتيا نه وي.

خو هر چا ته مالومه ده چې وروستي انکشافات هغسې ونه شول چې مارکس يې هيله کوله. د زياترو پرمختللو سرمايه داري هېوادو کارگرو طبقې چې د خپل سياسي ځواک نه خبر شول او د اغېزمن سياسي غړ څښتنان شول، د خپل غړ نه يې د پانگوالۍ سيستم د ردولو له پاره گټه پورته نه کړه، بلکې په دې هڅه کې شول چې خپل ځای په داخل د دې سيستم کې بهتر او سم کړي. پرولتاري انقلاب په داسې هېواد کې وشو چې څو لسيزې د مخه پانگوالي په کې رواج شوې او پرولتاريا اوس د کوچني ټاپو غونډې د بزگرانو په لوی سمندر کې پراته وو.

لنډ په ۱۹۰۲ کال کې ويل چې د يوه مخکښ گوند چې په مارکسستي ايډيالوژي سنيال

وي بايد د انقلاب لارښونه وکړي او د کاکړ طبقه په خان پسې روانه کړي. په ۱۹۱۷ کال د اکتوبر په مياشت کې کله چې حکومت چې د قانوني او لبرال پانګوالی د اصل له مخې د ښکته شوي تزاري رژیم نه ورته په نیکات پاتې و، ونه شو کولی ټولنه چې جګړې او طبقو نارامه کړې وه اداره کړي. په دې توګه لومړنی کمونستي انقلاب د يوه مخکښ ګوند له خوا د کارګرې طبقې په نوم پلي شو. له هغه نه وروسته شوروي دولت د يوه تنګ مرکزيت د اصل له مخې د مخکښ يا کمونست ګوند له خوا کنترول کېده.

د دغه دولت موخې مارکسېستي وې. دوی غوښتل د دولت د قدرت نه د ټولې انتقال د پانګوالی نه بې طبقاتو ټولې ته ګټه واخلي. خو څنګه چې د انقلاب په مهال يې مادي بنسټ جوړ شوی نه و بايد مادي اساس ورته جوړ شي. د شوروي سروالانو د هغه وخت نه دا اړتيا احساسوله چې سيستم ډموکراتيک کړي. شونې نه ده چې په مخکښ تل باور وشي. شوروي دولت د مارکسېستي ډموکراسۍ د اصلي مفکورې نه يو څه لرې شو. د دې پرځای چې له يوې طبقاتي ډموکراسۍ نه پيل وکړي اړ شو د مخکښ دولت نه يې پيل کړي. په لويديځ کې فکر کېده چې شوروي سيستم يوازې يو مطلقيت دی او د يو څو نخبه ګانو له خوا د شوروي په خلکو باندې عملي کېږي.

ايا کولی شو مخکښ دولت يو ډموکراتيک دولت وبولو؟ که ډموکراسي يوازې په دې ځانګړي مفهوم تعبير شي چې دا د ټاکنو او حکومتونو ته واک ورکولو يو سيستم وي په هغه حال کې مخکښ دولت ډموکرات کېدای نه شي. په دې چې د خلکو له خوا نه دی ټاکل شوی.

ټول واکمن کمونستي واکمن ګوندونه ادعا کوي چې ګوندې ډموکراسي لري. خو مور ويلی شو چې که د ګوند د ننه پوره ډموکراسي موجوده هم وي بيا هم د کليې په کره مانا سره ډموکرات کېدای نه شي. په دې چې په ګوند کې غړيتوب ښکاره او بې قيد او شرطه نه دی. په هر حال دغه کتاب چې ليکل کېدو د کتاب ليکوال دا فکر نه شو کولی چې دا کمونستي حکومتونه به زياتره د شلمې پېړۍ تر پايه دوام ونه کړي.

په پرمختلونکو هېوادو کې د غیرلبرال ډموکراسۍ څانګه

مېکفرسن وايي چې د درېيمې نړۍ پرمختلونکي هېوادونه زياتره نه کمونستي او نه پانګوالي دي. ځينې يې د انقلابي مبارزې نه وروسته او ځينو يې د زور د کارولو پرته خپلواکي ترلاسه کړه. دا بدلون دومره ستر دی چې بايد د انقلاب په نوم ياد شي. دا انقلاب د خلکو د منظم توده يې غورځنګ په پايله کې د خپلو لارښوونکو په مشرۍ پلي شو. دغو

لارښوونکو وکولی شول چې د تودو ملاتړ د خپلو راتلونکو خيالونو له پاره وکتی او د دغو خيالونو او ليدونو يوه برخه په عمومي توگه ډموکراسي نظر و.

دا د ډموکراسي نظر څه شی دی؟ دا نظر د ډموکراسي د دوو لارو نه چې د مخه مو وڅېړلې، توپير لري. دا نه د لوېديځې نړي لبرال ډموکراسي ده او نه د مارکس او لينن له خوا طرح شوې ډموکراسي ده. دا هغه ساده ډموکراسي ده چې د صنعتي ټولني د مخه موجوده وه. د مخه مو وليدل چې د اصلي ډموکراسي دا مفکوره په لوېديځ کې څنگه په لبرال دولت کې شامله شوه او څنگه يې بدلون وکړ او په لبراله ډموکراسي بدله شوه. دا مو هم وليدل چې د اصلي ډموکراسي مفکوره په کمونستي تيوري کې په يوه بله بڼه بدلون وکړ. مارکس او لينن هغې ته په بشپړه توگه طبقاتي منځپانگه (مضمون) ورکړه. د غير لبرال ډموکراسي د دې څانگې د پېژندلو له پاره ښه لاره دا ده چې وگورو چې د دريسې نړی نويو ملتونو د مارکسېستي او لبرال تيوريو کوم شيان منلي او کوم يې منلي نه دي.

د دريسې نړی پرمختلونکو هېوادو مشران زياتره په لوېديځ کې روزل شوي او په عمومي توگه د لبرال ډموکراسي او مارکسېستي تيوري گانو سره بلد او آشنا دي. دوی په شعوري ډول د دواړو تيوري گانو هغه توکې د ځان د پاره ټاکي چې د دوی په اند د اوسنيو مسايلو او د دوی د خلکو د راتلونکې د پاره د عملي کېدو وړ وي او په دې توگه دوی خپله تيوري جوړوي. دوی د لبرال ډموکراسي ځينې ځانگړتياوې رد کړې. د دوی د ډموکراسي مفکوره د لبرال فرديت په اصل ډډه نه لگوي په دې چې د دوی په نظر برابري او ټولنه او د ننه په ټولنه کې برابري د دود په لحاظ د انفرادي ازادۍ نه زيات ارزښت لري. په پرمختلونکو هېوادو کې د خپلواکي مبارزه د يو گوندي سيستم يا لږ تر لږه هغه سيستم چې د يوه برلاسي گوندي سيستم په نامه يادېږي پرمخ لاړه. نو ځکه د دوی د پاره د لبرال گوندي سيستم چې ملي گوندونه د سيالی له مخې حکومت ټاکي او واک ورکوي د دوی د پاره پوره اساس نه درلود. د مېکفرسن په اند څنگه چې د دې هېوادونو نه يوازې د خپلواکي لاسته راوړل و بلکې د خپلواکي وروسته د ټولني عصري کول او د توليدي قواوو د کچې لوړول هم دي چې نږدې د يوه گوند شتون هرو مرو کوي. په پرمختلونکو هېوادو کې مذهبي، قومي او په اقتصادي لحاظ د ځينو سيمو وروسته پاتې والی کله د دې لامل کېږي چې د مرکزي حکومت او د لاسبرې گوند ملاتړ ونه کړي او د خپلو گوندونو جوړولو هڅه وکړي. خو دا پروسې د ملت د جوړونې او پرمختگ سره ټکر کوي نو داسې مخالفتونه د دغو هېوادو ملي کچې تهديدوي او خيانت بلل کېږي. له دې کبله په دغو هېوادو کې نني ذاتي فشارونه د لبرال ډموکراتيک سيستم په وړاندې موجود دي.

په دې هېوادونو کې دا فشارونه چې د يوه نالبرال دولت د منځ ته راتلو له پاره کيږي دوه لاملونه لري. لومړی دا چې د اقتصادي پرمختګ له پاره د پانګې تمرکز ته اړتيا ده. دوهم دا چې د قبيلې، کوچنۍ مذهبي ټولنو او کوچنۍ ځايي ټولنو پرځای ملت ته د پراخې وفادارۍ اړتيا ده.

په دغو هېوادو کې د پراخو پرګنو غورځنګونه د پياوړي مخکښ ګوند په لارښوونه نوي دولتونه منځ ته راغلل. د دوی سياسي شعور تر طبقاتي زيات ملي دی. دلته د پراخو پرګنو عمومي اراده د طبقو پرته د ځينو لوړو موخو د پاره لکه ملي خپلواکي او د اقتصاد وده په نسبتې ډول شتون لري. د ملي خپلواکي د ټينګښت او ملي اقتصاد د پياوړتيا له پاره سياسي شعوري ژوند ته د پراخو پرګنو جذبول دي. په دغسې حالت کې دغه سياسي سيستم چې دا کار په ښه ډول پرمخ بيايي ډموکراتيک بللی شو.

د ميکفرسن په اند د طبقاتي مبارزې مارکسسټي نظر د تاريخ د محرک ځواک په توګه په خپلو هېوادو کې د تطبيق وړ نه بولي. همدارنګه دوی د مارکس دا ادعا هم نه مني چې دولت د طبقې د واک يوه اله ده. دوی د هغه د دې پايې سره هم سر نه خوځوي چې د هغې له مخې د سياسي قدرت سيستم چې د پانګوالې په وړاندې د انقلاب وروسته منځ ته راځي د پخوا په شان دې يو انقلابي دولت وي. دوی د دې سره هم سر نه خوځوي چې د بې طبقاتو ټولنه د طبقاتي دولت له لارې وشي.

د درېيمې نړۍ هېوادونو د پانګوالې ضد انقلابونه زياتره د ملي انقلاب په توګه ګڼل کيږي. دوی د امپريالستي سلطې په ردولو او د پانګوالي د اصل نه ځان ازادول د طبقاتي سيستم د ټول سياسي قدرت نه خپل ځان ازاد کوي. ځکه د انقلاب وروسته د طبقاتي دولت يوې دورې ته لاس نه اچوي. د پرولتاريا د ډيکتاتوري اړتيا هم نه احساسوي.

لبرال ډموکراسي د قدرت د سيستم په څېر

د مخه مو وليدل چې په اوسنۍ نړۍ کې د ډموکراسۍ درې ډوله فعاليت کوي. هره يوه يې د ټولې بڼې ته د ودې په يوه ځانګړې مرحله کې بدلون ورکوي او په خپله هم د هغې په ذريعه سره بدليږي. دا يادونه مو هم وکړه چې هر حکومتي سيستم د قدرت يو سيستم دی. حکومت د خپل ماهيت له مخې يوه عمليه ده چې په هغې سره قوانين وضع کيږي او په مدني افرادو پلي کيږي. د حکومت سرچينه چې هر څه وي داسې واک ورکول کيږي په هغوی چې حکومت ورباندې کيږي په زور کنټرول کړي.

د مخه مو دا يادونه هم وکړه چې لبرال ډموکراسي د ټاکنې سياست دي او په هم هغه وخت کې د قدرت سيستم هم دی. په رښتيا لبرال ډموکراسي د حکومت او ټولني د نورو ټولو سيستمو غوندي د قدرت دوه گوني سيستم دی. لبرال ډموکراتيک دولت د هر بل دولت غوندي د قدرت يو سيستم دی. هغه شی چې په لږه اندازه پېژندل شوی دی لبرال ډموکراسي د قدرت د سيستم دوهم مفهوم دی. هغه هم د هر بل دولت په شان په دې سبب وجود لري چې د افرادو او داخلي ډلو د اړيکو ټولگه چې په اصل کې د قدرت اړيکې دي وساتي. البته د افرادو تر منځ ټولې اړيکې د قدرت په اړيکو نه بدلېږي. د بېلگې په ډول د مینې اړيکې، د دوستۍ اړيکې د خپلوی اړيکې او نور.

د قدرت د اړيکو شتون او دولت ته اړتيا چې هغه پلې کړي د غير ازاد مارکېټ په ټولنو کې ښکاره ليدل کېږي. د مريتوب په نظام کې د بادار او د مريې تر منځ اړيکه د قدرت اړيکه ده او دولت چې هلته موجود و دنده درلوده چې دا اړيکې وساتي. د قدرت دا ډول اړيکه د ملکيت د ځينو حقوقي موسسو له خوا ساتله کېږي او پلې کېږي. په مريتوب کې په خپله انسان په ملکيت بدل و. په فيودالي ټولنه کې بزگران اړ وو د مخکو مالکانو ته په ټاکلو شرايطو کار وکړي په دې چې بزگر د مخکې څښتن ته د کار د وسايلو د ملکيت په بدل کې يو څه ورکړي او دغه تاديه شايد د زور بڼه ونيسي. د بېلگې په ډول بزگر کولی شي د مخکې څښتن ته د مخکې د ملکيت په بدل کې د خپل محصول يوه برخه او يا د اجارې په صورت کې يوه اندازه نغدې پيسې ورکړل شي.

په پانگوالي ټولنه کې د افرادو تر منځ اړيکې هم د قدرت اړيکې دي. په دې چې د خلکو ډېرې شخصي مخکې يا سرمايه نه لري چې په هغې کار وکړي او اړ دي چې د نورو په مخکې يا پانگه کار وکړي.

وروستۍ کچې ته د رسولو افسانه

میکفېرسن وايي لکه چې د مخه مو وليدل لبرال ډموکراتيک دولت د لبرال دولت چې په اول کې بېخي ډموکراتيک نه و، د ټاکنو ډموکراتيک حق چې وروسته ورزيات شو تاريخي ترکيب دی. لبرال دولت د سيالو سياسي گوندونو او ځينې ازادۍ لکه د غونډو، بيان، د خپرونو، مذهب او شخصي ازاديو ضمانت وکړ. لبرال دولت د پانگوالي ازادې ټولني د پاره شرايط برابر کړل. سيالي د لبرال دولت او د مارکېټ د ټولني اصل وگرزېد. دا سيالي د افرادو ترمنځ کېده. دوی ازاد وو، چې په خپله خوښه د خپلې انرژۍ او وړتيا نه گټه پورته کړي. ځينو کسانو ته دا واک ورکړي چې هغوی حکومت وکړي او داسې قوانين او مقرري

پلې کړې چې د يوې پانگوالۍ مارکېټ ټولنې د پاره لازم وي. لېرال انقلابونه نږدې د عامو خلکو د ملاتړ نه برخمن و.

د مخه مو دا هم وويل چې دغې سيالۍ ته د ټولنې غړي د برابرۍ په اساس داخلېدای نه شي په دې چې د پانگوالي ټولنې د ماهيت سره سم ځينې د دوی نه بايد پانگه ولري او نور ورباندې کار وکړي. دوی اړ دي چې د خپل کار يوه برخه هغو ته ورکړي چې د کار وسايل يې په لاس کې دي. ميکسپرسن زياتوي چې دغه د خپل کار د يوې برخې ورکول په عمومي توگه نه احساسېږي ځکه چې د پانگوالي اقتصاد لويې توليدي قواوې يې تر وړانگو لاندې نيسي. خو کله چې توليدي قواوې د زوال په لوري روانې شي لکه د ۱۹۳۰ کال کې چې وې بيا دغه د خپل کار د يوې برخې ورکول احساسېږي په داسې حالاتو کې کارگران او نور زيار ايستونکي حاضرېږي چې جدي سياسي کړو ته لاس واچوي. دولت اړ کېږي چې ټولنېزې بيمې او د سوکالی د دولت د نورو فايدو، په عايداتو د مترقي ماليي د وضع کولو او نورو له لارې جبران کړي. اوس د سوکالی دولت (Welfare state) تر يوې اندازې جوړ شوی دی. خو سره له دې د مارکېټ پانگوالي ټولنه د ځينو د کار يوه برخه ځينې نورو کسانو ته لازمي کوي.

جان ستوارت مل د تېرو سلو کلونو د مخه په دې پوه شو چې د کارگر طبقه به تر زياتې مودې پورې د خپل کار د يوې برخې ورکولو سره به جوړه رانه شي. خپله يې د دې مسلې د هوارولو ځواب ونه موند. وروسته د دې مسلې د هوارولو دپاره د کټي تيوري (Utilitarian theory) مرستې ته راوونکل. هغه دا چې څنگه چې د انسانانو غوښتنې اندازه نه لري نو انسانان به د خپلو غوښتنو د پوره کولو د پاره به تل لاس په کار وي دوی وړانديز کوي چې دا مسله بايد داسې هواره شي چې هر څه دې د مارکېټ د سيالۍ اقتصاد ته پرېښودل شي او دولت دې د دغه اقتصاد ملاتړ وکړي. د لېرال ډموکراسي تيورۍ له دې وروسته وروستۍ کچې ته د رسولو په تيوري بشپړه ډډه ولکوله. د کټي تيورۍ تر نولسمې پېړۍ پورې ښه عامه شوه.

د لېرال ټولنې ډموکراتيکه تيوري سره له دې چې د مارکېټ د کټو د اخبري کولو باندې بشپړه ډډه لکوي قانع کوونکې نه ده. لومړی دا چې يوازې په داسې حال کې چې عايد موجود وي شونې ده چې وښيي چې د مارکېټ سيالي کوونکې ټولنه خوشالۍ ته يې کولی شي. خو که تاسو د موجود وېش عادلنوب ونه ښودلی شئ نو نه شئ کولی چې د سيستم حقانيت هم وښيي. که د کټو توليد د مارکېټ د طبيعي عمليې په وسيله وروستۍ کچې ته ورسېږي ثبوت هم شي دا فرضيه ايجابوي چې مارکېټ بايد په بشپړه توگه د سيالۍ وي او هېڅوک او

کومه ډله ونه کړای شي نرخونه کنټرول کړي. خو دې ډېرې مودې راهيسې گورو چې د پانگوالی پرمختللی اقتصاد انحصاري مرحلې ته رسېدلی او د انحصاري شرکتو پانگوال د ډېرو توليد شويو شيانو نرخونه کنټرولوي. په داسې حال کې هېڅ دليل نه شته چې هيله وکړو چې د دغو کډو شرکتونو پانگوال به د ټولې ټولنې گټې وروستی کچې ته ورسوي.

يو دېر شلم څپرکی

کاکړ اولرغونی یونان

د یونان اصلي اوسېدونکي پېلاسکین (Pelasgian) نومېدل. تر هغو د مخه د مینوس (Minos) خلکو د کرېټ په ټاپو کې یو ځلانده مدنیت درلود چې د ختیځ له مدینتونو نه اغېزمن و. دغه مدنیت نږدې د مخزېږدې ۱۴۰۰ کې د یونان د مای سینای (Mycenae) خلکو له خوا ړنگ شو. د کرېټ مدنیت چې ښه وده یې کړې وه دوه پېړۍ وروسته د تروی جگړې (۱۱۹۴-۱۱۸۴ مخزېږدې) په پایله کې کمزوری او بیا د پوري قومونو (Dorians) له خوا نسکور شو. یونان دوریانو ته په لاس ورغی چې د هندو- اروپایي ژبني ډلې خلک وو. دوریانو د یونان اصلي اوسېدونکي پېلاسیکین ونومول، چې د هېرودت په وینا په غیر یوناني ژبه کېدل او ایونیان (Ionians) له هغو د نسب څخه وو. دوریانو ایونیان ونه ځپل، لاندې یې کړل او له هغو او ای اولونیانو (Ae Olions) سره یې په کېدو د یونان کلتور او مدنیت ودان کړ.

دوریانو خپله هندو- اروپایي ژبه په ټول یونان کې خپره کړه. ایونیان د دوریانو د فشار له امله د ایجن سمندرګي، ورې اسیا او ورو ټاپوګانو ته مخه کړه او هلته میشته شول او هغه یې ایونیا (Ionia) ونوموله. د یونان زیاتره فکري مخکښان له همدغو ایونیانو نه هسک شوي وو.

کاکړ وايي چې د یونان اوسېدونکي، د پښتنو په شان، په ډېرو قومونو وېشل شوي او هر قوم له ځانګړو ځانګړو او هره څانګه له کورنیو نه جوړه وه. د مخزېږدې د ۷۰۰ کالو پورې زیاتره یوناني پاچایان نسکور شوي یا له واکمنۍ نه بې برخې شوي وو او یوازې یې مذهبي رسمونه ترسره کول. د دوی ځای قومي ارستوکراتو نیولي وو. ځمکې چې پخوا د یوه خپل د غرو کېد مال و، زیاتره دغه قومي ارستوکراتو ونيولې. خو څنګه چې د یونان کرنیزې مخکې لږې او ښه‌تره هم نه وې نو ځکه د ارستوکراسۍ بنسټ ټینګ نه و. د ملک اسامي محصول د انګورو د باغونو او د زیتون د غوړیو نه ترلاسه کېده. همدارنګه یو ځای بل ځای د کانونو نه هم ګټه اخیستل کېده چې ایستل یې د مریانو کار و، چې ډېر بد ژوند یې لاره. برسېره پر دې ډېرو یونانیانو په بادي ورو کېښتو سره سمندري سفرونه او

سوداګري کوله، چې له امله يې د مديترانې او ايجن د سمندرګيو په غاړو کې ميشت شول. دا پروسه د مخزېږدې ۵۵۰ پورې دوه پېړۍ روانه وه، چې په لوېديځ کې د قرطه جيانو او په ختيځ کې د پارسيانو له خوا ودرول شوه. د دې سره سره اتن يو غټ سمندري ځواک و.

د لرغونو يونانيانو دين

لرغوني يونانيان د پخواني مدنيت د نورو خلکو غوندې د طبيعت نه اخوا قووتونو په شته والي معتقد وو. د يهودانو نه پرته نور ولسونه لا په يو خداى معتقد نه وو. لرغونو يونانيانو په ډېرو خدايانو عقیده لرله، خو دوى ورته په لور قدرت قايل نه وو. د دوى خدايان په خپله د دوى، د مصريانو او اسيايي توکو ګډتوب وو. د يونان د دين لومړۍ مرحله هومري نومېږي ځکه چې د يونان لومړني شاعر هومر په خپل ايلياد (Iliad) نومي اثر کې د خدايانو بيان کړى دى. د ده په وينا دا خدايان د اولمپا په غره کې اوسېدل. د دوى ستر خداى زيوس (Zeus) نومېده. ماینه يې هېرا (Hera) هم الهه ګڼل کېده. اپولو (Apollo) هم د اتن له نومياليو خدايانو څخه و، چې له وړاندوينې، طب، موسيقي او شعر سره يې سرو کار لاره. دى د فلسفې او هنر ساتونکى ګڼل کېده. د افسانو له مخې نورو نارينه او ښځينه خدايانو له يوه او بل سره خپلوي او فاميلي ژوند لاره. د دلفي (Delphi) غونډۍ د مذهبي روحانيونو (Oracle) هستوګنځى و. د دوى کار دا و، چې د خلکو پوښتنو ته د خدايانو ځوابونه ورسوي، نو دوى هغه ډول دنده ترسره کوله لکه په هندوييزم کې برهمنانو ترسره کوله. د افسانو له مخې دوى تل پاتې ګڼل کېدل او ستايل کېدل خو دوى نه هر چېرې حاضر، نه په هر څه پوه او نه تر هر څه غښتلي ګڼل کېدل. دوى دغسې ګڼل کېدل چې له انسانانو ستر دي، خو ترېنه بيل او پردي نه دي. خو د يونان دغو خدايانو ته جګړې او ناروغۍ کانې ازمويږي وې او څنګه چې هغو ته يې ځوابونه نه لرل، خلک له ژوند نه اخوا ته متمايل کېدل. ۱۰۳۷ کاکړ وايي له دغې شرحې نه جوته ده، چې د يونان خدايانو د کوئ او مه کوئ په بڼه حکمونه نه دې کړي او يونانيان په مذهبي لحاظ په فکر او عمل کې مقيد نه، بلکې ازاد وو چې د هغه له امله فکري مخکښانو يې وکولى شول خپل کلتور دغومره شتمن کړي، چې تر اوسه هم بصيرتونه ترې ترلاسه کېدلى شي. ۱۰۳۸

پوليس يا ښاري دولت

لرغونو يونانيانو دغسې ټولنيز او سياسي نظم وايست، چې په لرغونې نړۍ کې څه چې د انسان په تاريخ کې جوړه نه لري، چې هغه پوليس (Polis) او د هغه اداري طرز دی. پوليس ته ښاري دولت ويل شوی، خو دا يې کره او سمه ژباړه نه ده. يو عادي پوليس د ښار په شان نه او له دولت نه زيات و. په ټول يونان کې پوليس يا ښاري دولتونه يا سياسي ټولني ډبرې وې. پوهاند هوليسټر وايي چې «د لرغوني يونان کلتور د خپلواک ښاري دولت نه پرته درک کېدلی نه شي.» ۱۰۳۹ نږدې په هر پوليس کې د کومې غونډۍ د پاسه يا د هغې په چاپېر کې د اسامبلې، شورا او مذهبي رسمونو د ترسره کولو له پاره ودانۍ جوړې شوې وې. تر څنګ به يې د اکورا (Agora) په نامه بازارګوتی و. دغه اکروپوليس (Acropolis) په واقع کې د پوليس سياسي، مذهبي، ټولنيز، اقتصادي او اداري مرکز و. هر پوليس ځانله اداري شېبه درلوده. پوهاند کيتو (Kitto) ليکي چې «واقعي حکومتي چارې به يو کوم پاچا ... يا د ځينو اشرافي کورنيو مشرانو ته يا د اصلي تبعه وو شورا ته چې د شتو خاوندان به وو، يا ټولو اصلي تبعه وو ته سپارل کېدلې. دغه ټول يا د هغو ځينې تعديلونه د سياسي ټولني (polity) دغسې طبيعي بڼې وې، چې يونانيان يې په څرګند ډول له ختيځې پاچايي (Oriental Monarchy) نه چې پاچا به يې هيڅ مسؤليت نه لاره، ممتاز کاوه.» ۱۰۴۰

دا چې يونانيان ولې د ډېرو سياسي پوليسو پر ځای تر يوه مرکزي نظام لاندې سره راغونډ نه شول، شايد دوه لاملونه ولري: لومړی دا چې په جغرافيايي لحاظ دوی د ننه په يونان کې او هم په ټاپوګانو او د سمندرګوتو په غاړو کې اباد وو. دوهم دا چې يونان د پوليس د هسکېدلو يانې د مخزېږدې نهې، اتې او اوومې پېړۍ په اوږدو کې د بهرني خطر نه په امن کې و. يونانيانو پوليس ته د دولت په څېر نه، بلکې د خلکو په سترګه کتل او هر يوه يوناني ځان اړ ګاڼه چې له پوليس سره مرسته وکړي. دغه ښاري دولتونه چې واړه وو، د پوليس د ټولو غړو له خوا نه بلکې د هغه د نارينه د اصلي تبعه وو له خوا په نېغ ډول چلول کېده. ښځو، مريانو او سوداګرو د پوليس په چلولو کې ونډه نه لرله. دوی په واقعيت کې د اصلي اتباعو د اړتياوو په پوره کولو سره هغوی ته موقع ورکوله، چې د پوليس سياسي او ټولنيزې چارې د ازاد فکر له مخې پرمخ بوزي. يونانيانو سياست او سياسي ژوند په پوليس پورې تړلی ګاڼه. ارستو ويل چې «انسان هغه حيوان دی، چې د ننه په پوليس کې ژوند کوي.» ۱۰۴۱ په دې ډول يونانيانو فکر کاوه، چې ازاد انسان يوازې په پوليس کې اوسېدلی شي، نه د پارس په شان امپراتوري کې، چې اوسېدونکي يې منونکي، مريان او بربريان دي. ازاد فکر کول، ازاد کېدل او ازاد عمل کول د ازادۍ بېخ نور ټينګوي خو په ازادۍ کې اختلاف هم هرو مرو منځ ته راځي، ځکه چې په دغه حال کې هر څوک د

خپل فکر له مخې کړيږي او اړ نه دی چې د بل چا يا مقام په متابعت فکر او عمل وکړي خو چې خپل فکر رښتینی ورته مالوم شي. په دغه حال کې استعداد، فکر او خیال ښه وده کوي. په لرغوني یونان کې همداسې وشول او دغسې پاخه مفکران، ډرامه لیکونکي، شاعران، تاریخ پوهان او سیاست ماران په کې هسک شول، چې اثرونه یې تر اوسه پورې هڅونې کوي. خو ځنګه چې په لرغوني یونان کې هم د ننه په پولیس کې د فردونو او ډلو او هم د پولیسو تر منځ نښتې کېدلې، تر څو چې د پولیس سیستم د مقدونې د لوی سکندر په هسکېدلو سره له منځ نه لاړ.

د سپارټا ښاري دولت

د یونان په ښاري دولتونو کې سپارټا او اتن ډېر مهم و. خو د دوی فردي او ټولنیز ژوند سره پوره توپیر درلود. سپارټا داسې لار ونیوله چې د اوسپنیز دسپلین او پوځي اغېزمنتوب له پاره یې سوداګري، کلتوري نوښت او د ژوند هوساينې ته پام ونه کړ. سپارټا په سياسي لحاظ تل ساتنپاله وه. په سپارټا کې کله چې ارستوکراتان واک ته ورسېدل پاچايي یې نسکوره نه کړه بلکې کمزورې یې کړه. د اتعې پېړۍ په پای کې سپارټا د مسینیا (Messenia) گاونډۍ سیمه لاندې کړه، د هغې اوسېدونکي یې مریان کړل، که څه هم هغوی یونانیا وو. سپارټا یو پوځي دولت او اصلي اتباع یې منظم دایمي سرتیري شول. سپارټا ټینګه وچه ټولنه شوه شته حال یې په زور ساته. سپارټا په یوه وخت کې دوه پاچایان لرل لکه چې وروسته په روم کې دوه فونسلان یا لور واکمنان وو. د جګړې پر مهال به یوه پاچا قوماندني کوله خو د ننه په هېواد کې د دواړو پاچایانو واک د درې ځانګو: د لویانو د ارستوکراتیکې شورا، اجرائیوي شورا او د اصلي غړو د اسامبلې له خوا محدود وو. نو سپارټا یوه محدوده دموکراسي وه چې په هغې کې نه یوازې ښځو او مریانو بلکې ډېرو اصلي غړو په کې ګډون نه شو کولی.

کاکړ وايي چې د سپارټا د اصلي غړو ژوند له زانګو نه تر کوره پورې د دولت د روزنې او څارنې لاندې و ترڅو چې سرتیري پیاوړي، زور، بادسپلینه، منونکي او وفایال وي. له دې نه منع و، چې بزګري، کسب او سوداګري وکړي. دولت به اوه کلن ماشوم تر شل کلنۍ پورې تر روزنې لاندې نیوه، چې له سخت پوځي ژوند سره روږدی شي. د دغې دورې په تېرولو سره د سپارټا اصلي غړي کېده، خو لس کاله نور به یې هم په بارکونو کې تېرول، که څه هم واده به یې کړی و او له دې وروسته په کور کې اوسېدلی شو. په دې ډول د سپارټا اصلي غړو فردي خپلواک ژوند نه لاره، روح او جسم یې دواړه دولت ته ځانګړي

کړي وو. له دې امله سپارټا په ټول يونان کې تر ټولو ښاري دولتونو نه ښه سرتيري لرل. سره له دې سپارټا له دغه ځواک نه په احتياط سره کار اخېسته. د سپارټا دغسې تنظيم شوی ژوند شېبه په ټول يونان کې ستايله کېده. خو دغه ښاري دولت د اتن پر عکس په فکري او ذهني لحاظ وچ او بې حاصله پاتې شو. پوهاند کيتو وايي چې «هغه وخت چې سپارټا مخ په خوري او نسکوره شوه، د انرچي د نشتوالي له امله نه، بلکې د مدني غړو او د ايدياکانو د نشتوالي له امله و، چې په دې کې هغه خپله کرمه وه.» ۱۰۴۲

د اتن ښاري دولت

اتن د مخزېږدې ۹۰۰ تر ۷۰۰ پورې تر سپارټا وروسته درېيم ښاري دولت و. اتن د سپارټا پر خلاف د پاچايي، ارستوکراسي، زورواکي او ډموکراسي په تېرولو سره تحول وکړ. په همدغه وخت کې کله چې سپارټا په پلي پونيز کې په ښکېل کېدو سره په يونان کې پېژندل شوی ځواک گرځېدلی و، د اتیکا (Attica) ټول ښاري دولتونه د کوم مشر په نوښت سره د اتیکا اتحادېې کې سره يو موټی شول او اتن يې خپل مرکز کړ. د اتن ښاري دولت په دغه اتحاد سره د پراخې سيمې خاوند شو. اتن ځنگه چې سمندر ته نږدې و، سوداگرۍ يې وده وکړه. برسېره پر دې هلته د وړو مخکېه والو تر څنګ سوداګر، کسبګر ورو ورو هسک شول او اصلي اوسېدونکي يې د مدني حقوقو خاوندان شول. په دې ډول اتنيانو په هغه لومړي سر کې په سياست کې ځانګړی مهارت وښوده. د اتنيانو «نبوغ» وروسته په هغو سمونونو کې وځلېد، چې سمون پالو لويانو يې د دولت او ټولني د ښه کولو له پاره وکړل.

د سمونونو په لړ کې د مخزېږدې په ۶۲۱ کال کې لومړی سمون د ډراکو (Draco) نومي له خوا وشو چې دوديز قانونونه يې ټول او تدوين کړل. په دغه سمون سره لږ تر لږه د خپل سر او حاکمانه چلند په وړاندې يو څه مصونيت پيدا شو. سره له دې دا پروسه روانه وه، چې په هغې سره واړه ځمکه وال د لويو ځمکه والو پوروري کېدل او د پورونو د نه پرېکولو په صورت کې مريان کېدل چې پایله يې دا شوه چې عام ناراضي توب يې منځ ته راوړ. په نورو ښاري دولتونو کې دا ډول ناراضي توب د انقلاب لامل کېده. خو دلته د سولون (Solon) په نامه يوه سوداګر، چې په ملک کې ګرزېدلی و او يو ډول فيلسوف، سياستمدار او شاعر و، له ناراضيانو سره خواخوږي ښکاره کړه. مخالفو ډلو هم ورته ډېر واک ورکړ. سولون په اتن کې د ناراضيانو غوښتنې يې له مقاومت او ګډوډۍ نه ومنلې. د پور په برابر کې يې مري توب لغوه کړ او مخکې يې لومړنيو څښتنانو ته ورکړې او ان هغوی يې چې د پور په بدل کې له اتن نه د باندې پلورل شوي وو، بېرته وغوښتل.

سولون اتنيان وهڅول چې د تاکو (د انگورو بوټي) په زياتولو سره ځانگړې کرنه پياوړې کړي. ده پلرونه اړ کړل چې خپلو زامنو ته کسبونو وښيي. په دې توگه کسبونو او په ځانگړې توگه کلايي دومره وده وکړه چې د يونان لوبني د مديترانې په چاپېر سيمو او ان په مرکزي اروپا کې خرڅېدل. دا هغه وخت و، چې له ليديا څخه په اتن کې سکه او پيسې په دوران کې لوبېدلې وې.

سولون په سياسي ډگر کې سمون پلي کړ. تر دغه وخته پورې يوازې نسب د اسامبلې د غړيتوب شرط و. سولون د هغه پرځای شتمني د غړيتوب شرط وگرځاوه. په دې ډول سوداگر يا نوې سوداگره طبقه هم لوړ اجرائيوي مقام ته رسېدلی شوه. د اسامبلې د غړو په ډېرېدلو سره يوه څلورسوه کسيزه انتخابي شورا منځ ته راغله، چې د اجرائيوي کميټې په شان يې دنده ترسره کوله. ۱۰۴۳

سولون د دغو سمونونو نه وروسته په سفر لاړ. د هغه په نشتوالي کې ناراضي توبونه زيات شول. ټوله اتیکا نارامه او انقلابي شوه. سره له دې هم «د اتن خلک په دغه فکر وو چې کډه کټه له ډله يزې کټې نه لوړه ده» ۱۰۴۴ دا ځل هلته زورواکان هسک شول. له سپارټا پرته په ټول يونان کې زورواکان سياسي واکمنان شول. خو يوناني زورواکان نږدې ټول ارستوکراتان او متمدن وو. پخوا په ټول يونان کې د پاچايانو پرځای ارستوکراتان په واک شوي وو، اوس د هغو پرځای زورواکان واکمن شول، چې هسکېدنه يې په اصل کې د ممتازو او شتمنو او د منځنيو او ښکته طبقو د مخالفتونو او مبارزو پايله وه.

نويو واکمنانو چې ټول يې د ارستوکراتو او ممتازو کورنيو څخه وو، په خپلو سمونونو سره يې د مړيو حال څه ښه کړ. دوی د ښکته او منځنيو طبقو په ملاتړ پورونه يا لغوه کړل يا لږ کړل، ډېرې ټول گټې پروژې يې پلې کړې، مخکې يې له سره ووېشلې او د مالياتو شېبه يې بدله کړه او د سياسي موسسو غړي يې ډېر کړل، خو سياسي سيستم پرځای پاتې و. دغو واکمنو زور زياتی هم نه کاوه. دغه سمونونه د مخزېږدې د ۹۰۰ نه تر ۵۵۰ پورې پلي شول. دا هغه وخت و، چې د وړې اسيا له ليديا نه په يونان کې د پيسو په چلند سره د سوداگرۍ ډله هسکه شوې وه او د کرنيزې ټولني يو ډول برابر توب له منځه تللی و. له سولون نه وروسته د اتن لوی مصلحان پيسستراتوس (Pisistratus) او کلايستينز (Cleisthenes) وو. کلايستينز د اتن قانون پوره ډموکراتيک کړ. د اتن ټول اصلي تبعه يې د اسامبلې غړي کړل، د پخوانو ارستوکراتو قومونو پوځي او سياسي دندې يې لغوه کړې او يوازې يې تشریفاتي دندې ورته پرېښوې. د پخوانيو ارستوکراتو پياوړو قومونو پرځای يې لس نوي قومونه تنظيم کړل، چې نسب يې د غړيتوب شرط نه و.

اسامبله د ټولو اجتماعي ډلو له غړو نه د بې ځمکو اصلي تبعه وو او کارگرو په کېدون جوړه شوه. اسامبلې عمومي سياستونه ايستل او د يوې پنځه سوه کسيزې اجرايو شورا ته يې د پلي کولو دنده وسپارله، چې هر کال د دغو لسو قومونو له هر قوم نه پنځوس تنه غوره کېدل. خو مشر يې هغه څوک کېده چې د حيثيت او نفوذ خاوند و. دی په شخصي وړتيا د «خلکو مشر» په نامه يادېده او تر هغو به يې مشري کوله چې د اسامبلې او شورا غړي به پرې ولاړ وو. ده رسمي مقام نه لاره.

پريکس (Pericles) په پنځمې پېړۍ کې همدغسې مشر و، چې د يونان په «طلايي دوره» کې يې د ارستوکراتو او وکړو تر منځ انډول وساته او يو دېرش کاله يې مشري وکړه. دی داسې يو واقعبن سياستمدار او اغېزمن وياند و، چې چارې يې په زور سره نه، بلکې په منطق او هڅونې سره ترسره کولې. هولستر ليکي: «د فرد او ټولني تر منځ د همغږۍ په حاصلولو کې د يونان د پوليس بری هېڅ چېرې هغومره پوره نه و، لکه په اتن کې چې له دموکراسۍ سره د انسان د لومړۍ مېمې مقابلې په ډگر کې و.» ۱۰۴۵ پريکس وايي چې «زموږ اساسي قانون ته دموکراسي ويل کېږي، ځکه چې هغه د څو کسو په لاس کې نه، بلکې د ډېرو په لاس کې دی... مور د سياست په ټولو موضوع گانو باندې په خپله غور کوو او داسې نه گڼو چې قول او عمل سره نه جوړېږي، بلکې داسې گڼو چې هغه کره له اول نه ناکام وي، چې له مباحثې او مشورې نه پرته کېږي.» ۱۰۴۶

د پلي پونيز جگړه

د پلي پونيز جگړه د مخزېږدې ۴۳۱ نه تر ۴۰۴ پورې د سپارټا او اتن په مشرۍ د دوو اتحاديو تر منځ جگړه وه چې اوه ويشت کاله اوږده شوه. د جگړې پړه په اتن اچول شوې، چې د جگړې د مخه يې امپراتوري جوړه کړې او نور دولتونه ترېنه وېرېدل. اتن د نورو په مرسته په ۴۹۰ په مراتون (Marathon)، په ۴۸۰ کال کې په سالامي (Salamis) او په ۴۷۹ کال کې په پلاتي (Plataea) کې د هخامنشي پارس لوی يرغلېز پوځونه مات کړي او د ستر اعتبار او حيثيت خاوند شوی و. اتن د جگړې وروسته په ۴۷۷ کال کې په خپلې مشرۍ سره يوه نوې اتحاديه جوړه کړې وه، چې له اتیکا نه تر ايونیا پورې د ايجن سمندرگي د غاړو او ټاپوگانو زياتره ښاري دولتونو په کې غړيتوب درلود. دغې اتحاديې د پريکس په زيار سره سوکه سوکه د اتن په امپراتورۍ بدله شوه. اتن له غرو هېوادو نه په راز راز پلمو عوايد ټول کړي، د ايجن په سمندرگي کې په لاسرې سره خپلې سوداگرۍ ته وده ورکړي او ځان شتمن او پياوړی کړي. د اتن د ځواک نه سپارټا ووېرېده او د يو شمېر دولتونو

سره يې اتحاد وکړ، چې هغوی هم له اتن نه وېرېدل. پخوا مو يادونه وکړه چې هسې هم سپارټا او اتن د دولتي شېوې له مخې توپير درلود. سپارټا او اتن هر وخت سيال دولتونه وو. سپارټا او متحدین يې دوريان او اتن او متحدان يې زياتره ايونيان وو. سپارټا کوبسین کاوه په پلي پونيز کې د اوليکارشي حکومت او اتن د پريکلس په مشرۍ هاند کاوه چې د خپلې امپراتورۍ په ښارونو کې ډموکراتي ډلې په واک کړي. په دې توگه د پلي پونيز جگړه د قدرت پر سر جگړه وه. «اتن تر خپلې ولکې لاندې د ټول يونان د راوستلو خوب لیده او سپارټا او متحدان يې ټينگ وو، چې د اتنيانو امپرياليزم پای ته ورسوي. ۱۰۴۷»

دغه جگړه چې اوه ويشت کاله اوږده شوه تاريخ پوه تاسيد ايز دا جگړه په خپل اثر کې د پلي پونيز جگړه په نامه په کره او افاقي ډول بيان کړې ده. د يرغل نوښت د سپارټا او د هغې د ملگرو لاس کې و. د جگړې په دوهم کال کې وبا ولگېده چې د اتن څلورمه برخه خلک د خپل مشر پريکلس په گډون مړه شول. د پريکلس د مړينې وروسته د اتن مشري افراطيانو لاس ته ورغله او د اتن ډموکراسۍ د وگړو د حاکميت بڼه غوره کړه. د پريکلس دا خبره رښتيا شوه چې ويلې يې و چې «دی د سپارټا له طرحې نه دومره نه وېرېږي، چې د اتنيانو د تېروتنو نه وېرېږي» ۱۰۴۸ دا له دې نه جوته شوه کله چې اتن د ميلوس بې پرې ټاپو ونيو نارينه يې ورته ووژل او ښځې او ماشومان يې د مريانو په شان وپلورل. د اتنيانو بله تېروتنه دا وه چې دوی د ناسې ستراتيژي له مخې د خپل سمندري ځواک غټه برخه د ليرې پراتې سيراکوز سيمې په ساتنه کې له لاسه ورکړه. له هغه وروسته، چې د ايجن په سمندري باندې د اتن کنترول غړند شو، تر لاس لاندې دولتونه يې په وړاندې جگ شول، تر څو په پای کې د پلي پونيز مخالف سمندري ځواک، چې د پارس په سرو زرو سره غښتلی شوی و، د اتن سمندري ځواک يې په هيلسپونټ کې تس نس کړ، اتن اړ شو چې په ۴۰۴ کال کې سپارټا ته تسليم شي. که څه هم سپارټا جگړه وکتله او په لاس لاندې سيمو کې يې د اتن په گډون شتمن نفوذ من په واک کړل، خو په خپله يې د ټولو دولتو سره ډېر ناوړه چلند پيل کړ او هغوی يې د ځان مخالف کړل. په دې توگه سپارټا ونه شو کولی چې د اتن په شان امپراتوري جوړه کړي. اتن د سپارټا تر لاس لاندې زورواک کريټياس په مشرۍ د ډېرشو ديکتاتورانو له خوا اداره کېده، چې اتنيانو يو څو مياشتې وروسته هغوی نسکور کړل او خپله اسامبله او شورا يې بېرته فعاله کړه او ډموکراسي يې ژوندۍ کړه.

يونان د پلي پونيز د جگړې نه وروسته

د پلي پونيز د جگړې وروسته د يونان بڼاري دولتي شېبه مخ په خور روانه شوه او د لرغوني يونان دوره پای ته ورسېده. اتنيان هم د پلي پونيز د جگړې وروسته فردي شول او بڼاري دولت ورته په دويمه درجه مهم شو. همدارنگه بريالی سپارټا هم په دې کې پاتې راغله چې تر لاس لاندې دولتونه اداره کړي. د څلورمې پېړۍ په نيمايي کې د يونان قدرت د سپارټا، تبس او اتن تر منځ بدلون کاوه، تر څو په ۳۵۹ کې په مقدونې کې فيليپ پاچا شو. مقدونيه د يونان په شمال کې يو ډېر بېرته پاتې هېواد و. خلک يې دوري يونانيان وو. دوی هم د سپارټيانو غوندې جنګيالي وو. پاچا فليپ په ۳۵۸ کې يوه غوڅونکې جگړه وکتنله او ټول يونان يې تر ولکې لاندې شو. دوه کاله وروسته فليپ مړ شو او پرځای يې د هغه زوی سکندر په شل کلنې کې پاچا شو چې د مخه مورنا پرې اچولې ده.

دوه دېرشم څپرکي

د سوکرات، اپلاتون، ارستو، اپیکور اوزينو په نظر بڼه انسان

دا د هومر بالابانس د کتابکوټي ژباړه ده چې اصلي نوم يې «د بڼه انسان کلاسيک ايډيال» (The Classical Ideal of the Good Man) دی. کاکړ د دې کتابکوټي ژباړه په داسې وخت کې وکړه چې په افغانستان کې نږدې څلور لسيزې خونړۍ جگړې په پايله کې افغان ټولنه د ايډيالوژيکي، اخلاقي او بې باوري د ژور بحران سره مخامخ ده. دی د افغان ټولني د ټولنيز او اخلاقي نزول نه ډېر ځورېده ځکه په دې وخت به لور پورو چارواکو په ځانگړې توگه هغوی چې د بهرنيو هېوادو د متو په زور په لوړو مقامونو کومارل کېدل، د دې پر ځای چې لږ تر لږه د خپل وجدان په وړاندې خجالت وباسي د پرديو له خوا به يې د مقام ترلاسه کولو باندې وياړ هم کاوه. ده د افغان ټولنيز او اخلاقي رغونې په موخه دا مهم کتابکوټۍ وژباړه. البته دا ژباړه نورې کټې هم لري هغه دا چې د پښتو د علمي کېدو او افغانان د لرغونو دورو د فلسفي افکارو سره اشنا کول دي.

هومر بالا بانس دا کتابکوټی هم د اوسنۍ صنعتي ټولني هغې مهېې مسلې ته د خلکو د پام اړولو په موخه ليکلی هغه دا چې د دغې ټولني په تحول کې انسان نه، بلکې ماده «زموږ د توجه محراق دی او د هغې محصول ساينس او تکنالوژي زموږ مادي غوښتنې په اوله درجه پوره کوي، خو په غاړو کې يې موږ که څه هم په ناڅرگند ډول مومو، چې يوه نوې ورځ په ټوکېدو ده، چې هلته شخصيت يو ځل بيا مرکزي مقام ته په رسېدلو کې ښکاري.» ۱۰۴۹ دی وايي چې د جگړې د بحران په فضا کې زموږ اخلاقي ارزښتونه او معيارونه د بيا ارزونې لاندې راغلي او دا هغه بحران را په زړه کوي چې د يونان فيلسوفان يې وهڅول چې د اتن او سپارټا تر منځ اوږدې دردونکې جگړې په موجودو اخلاقي معيارونو باندې بيا نظر وکړي. دی وايي چې «زما مقصد دا هم دی، چې د هغو يوناني فيلسوفانو ښوونو ته توجه وشي، چې دغې پوښتنې ته يې ځواب وايه، چې د بڼه انسان خاصيتونه کوم دي؟».

په اصل کې دا دې پلي پونيز جگړه وه، چې يوناني سوچوال يې دې ته وهڅول چې ډول

ډول نوي فکرونه رامنځ ته کړي. په بل ملک کې د جگړې وروسته نوي او ژور فکرونه هغسې ځلېدلي نه دي لکه چې په اتن کې غورېدلي دي.

بالابانس هغه سياسي او ټولنيز چاپېريال چې يوناني فکر په کې وده وکړه په لنډه توګه داسې بيانوي: د مخزېږدي څلورمې او پنځمې پېړيو په بهير کې چې اخلاقي فلسفې وده وکړه، د يونان مدنيت له تور سمندرګي نه د جبل طارق تر تنګي پورې غزېدلی و. هلته دا فکر عام و چې څوک له يونان څخه نه دی بربر يا پردی دی. فيلسوف ايسوکرات په دې فکر و چې اتن د هيلن کليمه ايستلې چې نه د نژاد، بلکې د سلوک په مانا ده نو پردی هغه چا ته ويل کېده چې د اتنيانو د ژوند د اروايي شېبې نه پردی و.

سکندر د ارستو شاګرد او د هغه ځای ناستو يوناني ژبه او کلتور د نيل له سين نه تر اباسينه پورې خپاره کړل. وروسته چې روميانو يونان ونيو هغوی په خپل وار په يونانيت (Hellenism) سره جذب شول. دوی د يونان هنر، ادب او فلسفه د خپل مدنيت بنسټ وګرزول او په شمال کې يې ان تر برتانيې پورې په خپلو مستعمرو کې مروج کړ.

په لوېديځې اروپا کې د يو څه وخت له پاره تياره خپره شوه، خو د قسطنطنيې له نسکورېدو نه وروسته چې د کلاسيکو ښوونو څراغ، چې د بېزانس خلکو روښانه ساتلی و، د رنسانس انسان پالو ته په لاس ورغی، وړانګو يې ټوله لوېديځه نړۍ د امريکې د وچې په کېدون روښانه کړه.

د بالابانس په وينا اتن د ډموکراسۍ زانګو وه. شورا چې قانونونه يې ايستل د ازادو يونانيانو نه جوړه وه. دا يوه نېغه ډموکراسي وه، نه تمثيلي ډموکراسي چې مور يې په امريکا کې لرو. اتن په واقعيت کې د ټولې يوناني نړۍ سياسي، کلتوري، اقتصادي او مذهبي مرکز و.

ازادي، ډموکراسي، د انساني حيثيت او د رښتين توب د موندلو پلټنه په يونان کې هسکه شوه. د پنځمې پېړۍ د پريکلس عصر د اتنيانو د سياسي نفوذ او کلتوري پرمختګ ډېره لوړه هسکه وه. د پلي پونيز جګړه د هغې د مخ په ځورتوب نښه ده. د جگړې وروسته هوبنيارو کسانو د رښتين توب او راحت په پلټنه فلسفې ته مخه کړه او د اخلاقي معيارونو په بيا ارزونې پسې يې پښې لوڅې کړې، چې د جگړې او نښتو په کړکېچ کې فاسد شوي او له منځ نه تللي وو. اپلاتون په حقه و چې ويل يې دا سوکرات نه و چې د ځوانانو فکرونه يې فاسد کړي و، دا په خپله ټولنه وه چې په جنګ سره ککړه او حيواني شوې وه. هغه څه چې د منځه وړل شوي و، اوس بايد له سره ودان شي. د ژوند نوې فلسفه او انساني ارزښتونه بايد هسک شي.

سوکرات- کلاسيک بڼه انسان

بالابانس د بڼه انسان د ځانگړو ځانگړتياوو له بيان نه مخکې د بڼه والي او د هغو نظرونو په اړه چې بڼه انسان بايد څنگه وي؟ د ځينو فيلسوفانو فکرونه د هغوی عمومي ايديالوژي وړاندې کوي او خپل بحث د سوکرات نه پيلوي چې د «بڼه انسان سرمشق دی.» ۱۰۵۰

ارستو وايي «فکر کيږي چې [د] هر هنر او هرې څېړنې او داسې د هر عملي تشبېث مقصد بڼه والی دی، نو په دې ډول ... د ټولو څيزونو مقصد د بڼه توب په لور وي.» ۱۰۵۱
ارستو په دې ډول د خپل استاد نظر تاييدوي، چې بڼېگنه د شته والي [بڼه والي] دليل دی او دا چې د ټولې پوهنې موخه د بڼه والي پوهه ده.

يونانيان لومړي کسان وو چې د پوهې په موخه وپوهيدل. دوی د انسان په ارزښت او درنښت عقیده درلوده او فيلسوفان يې په دې فکر وو چې د انسان وروستی موخه دا ده، چې نه يوازې خپلو ځانگړو مهارتونو ته، بلکې خپلو ټولو ظرفيتونو ته وده ورکړي. اپلاتون دې پایلې ته رسېدلی و، چې هغوی چې په بڼه ډول بسوونه ورته وشي، په عمومي ډول بڼه انسان کيږي، ځکه چې هېڅ انسان يې له عقل نه په کار اخېستلو سره بڼه کېدلی نه شي او هېڅوک يې له پوهې نه عقلي قدرت ترلاسه کولی نه شي. اپلاتون په خپلې دغې وينا سره د خپل استاد فکر منعکسوي چې ويل يې «بڼېگنه پوهه ده.» د «په بڼه ډول زده کړې» کليمو ته بڼه څير شئ ځکه چې يونانيان زموږ سره موافق وو، چې «لږه پوهه يو خطرناک شی دی.» ۱۰۵۲

د ارستو په نظر انسان په يوازې ځان نه، بلکې په ټولې کې ژوند کوي. د هغه خوی او سلوک په هغو ټولنيزو دودونو، قانونونو او موسسو سره جوړيږي، چې د هغه لاندې ژوند کوي. دی وايي چې د بڼه او نېکمرغه ژوند شرطونه دادي چې داسې اخلاقيات او د حکومت طرز وټاکو چې سياست يې په پوهې او نورو مناسبو شرطونو سره تنظيم شوی وي، چې انسان قادر کړي چې بڼه انسان ترې نه جوړ شي. اپلاتون په خپل «جمهوريت» نومي اثر کې د ټولنيز نظم يو پلان وړاندې کړ، چې په کې عدالت، ازادې او د انساني استعداد وده په بڼه ډول تضمين شوي وي. ارستو په خپل «سياست» نومي اثر کې د يو شمېر ښاري دولتونو قانونونه وکتل تر څو د بڼه کرکټر د ودې له پاره کوم يو بڼه مناسب دی. په دې ډول د يونان اخلاقي فيلسوفان په دې فکر وو، چې د انسان وروستی موخه د مثبت بڼه والي ترلاسه کول دي، چې هغه په خپل عقل سره وده کوي، پوهه يې تاييدوي،

په داسې ټولنيز چاپيريال کې چې ښه والی پرمخ بيايي.

د مخزيرې د پنځمې پېړۍ په نيمايي کې يو نوی اواز، د سوکرات اواز، واورېدل شو. سوکرات غټ انسان و، مخ يې بدرنگ و خو د ده د مخ نه زړه سوندي، پراخه خواخوږي، بې شانه ساده کي او پوره رښتین توب د ورايه ليدل کېده. دی دومره بې وزلې و، چې د زړو جامو پرته يې بل څه نه شو اغوستی او پښې ابلې به روان و. ده باور درلود، چې د هغه لږو اړتياوو د هغه ذهن د دنيايي چارو نه ازاد کړی او په دې يې قادر کړی و، چې په روحي او معنوي شيانو سوچ وکړي.

سوکرات يوه نوې فلسفي لار وايستله هغه دا چې د ده په فکر فلسفه تر هغو لور ماموريت لري چې د بې روحه شيانو په اړه په رښتيا وپوهيږي. ډېره مهمه دا ده چې په دې پوه شو چې انسان په کومې خوا درومي. په دې توگه د مادي نه وانسان ته پام اړول د سوکرات د فلسفې يو اصل و. بل دا چې سوکرات جاري اخلاقي مفهومونه د دې له پاره د علمي تحليل لاندې راوستل چې د هغو رښتيني مانا مالومه شي. ده د دلفي ليکنې په پيروي چې «ځان وپېژنه» په دې پيل وکړ چې «انسان په انسان کې کشف کړي» او وټاکي چې انسان بايد څوک وي؟ هغه فکر کاوه چې يو څوک هغه وخت په نورو کې د ښه او بد په خاصو پوهېدلی شي کله چې هغه ښه او بد خاصيتونه په خپل ځان کې درک کړي.

سوکرات باور درلود چې د ده د وخت دوديزو اخلاقياتو د فکر په طبيعي ازادۍ باندې مصنوعي قيدونه لگولي دي. د طبيعي ازادۍ موخه د داسې رښتین توب موندل دي، چې په عام ډول د دغسې مفهومونو لکه ښېگڼه له پاره ترې کټه اخېستل کېږي. ښېگڼه د ډېرې لوړې کچې د ښه والي د موندلو له پاره د انسان کوشښ دی. برسېره پر دې سوکرات داسې کبله چې د انسانانو تېروتنې د هغوی د ناپوهۍ پايله وي او دا چې ښېگڼه له پوهې او له داسې مناسب پوهاوي نه لاس ته راځي، چې څه سم دي او څه ناسم دي. هر چا چې دغه توپير په څرگند ډول وکړ، هغه خپله اراده دې ته بيايي چې ښه وکړي او له بدۍ نه ځان وژغوري.

هغه شېبه، چې سوکرات د رښتيا موندلو د پاره غوره کړې وه، په دې ډول وه: هغه به د خپلو زده کوونکو نه راز راز پوښتنې کولې لکه «عدالت څه ته وايي؟» ځوابونه به ډول ډول وو. دی په دې بوخت نه و، چې خپلې عقلي ايډياگانې وړاندې کړي، بلکې په دې پسې و چې د نورو د ذهنونو نه فکرونه وباسي. بيا به سوکرات د اورېدونکو د ځوابونو له اورده او څېړنيز تحليل نه وروسته له ډېرو گډو وډو نظريو څخه د عدالت يوه دغسې مفکوره ايستله، چې هغه به رښتيني، افراطي او د گډ خاصيت په لرلو سره به د شرايطو له کتنې نه

په عالمي ډول د تطبيق وړ وه. بيا به يې له شاگردانو نه په ټينگه غوښتل، چې کوبښنې وکړي هغه په خپل ژوند کې پلي کړي.

دا د اتن ځوانانو په سوچ کولو کې يوه نوې تجربه وه، په داسې حال کې چې له هغو نه غوښتل کېدل چې د دوديزو قانونو له مخې سلوک وکړي. خو د ځوانانو په هڅولو سره چې د دغو منل شويو قانونو اعتبار د پوښتني لاندې کېده، داسې کتل کېده چې سوکرات هغه واک تخريبوي، چې لويان په هغه سره د خپلو ماشومانو سلوک کنټرولوي. برسېره پردې سوکرات د يوناني موسسو اسماني سرچينې ته گواښ کاوه. سوکرات ويل چې ښه د دې له پاره ښه نه دي، چې خدايانو منلي، بلکې خدايانو هغه ځکه منلي چې هغه ښه دي. په دې توگه خدايانو ته د دغسې اخلاقياتو نسبت د اولمپس د خدايانو له لومړۍ مفکورې نه انحراف و.

په دې توگه په سوکرات تور ولگول شو او محکمې ته راوستل شو، چې د ۵۰۱ غړو نه جوړه وه. تور دا و چې دی ځوانان فاسدوي او مقدساتو ته سپکاوی کوي. دغسې نه زغم توب د اتن د ډموکراسۍ له تاريخي روح نه، چې د فکر په ازادۍ او مباحثې سره خړوبېده، پوره انحراف و. خو څنگه چې اتن له سپارټا سره په اوږده جگړه کې ماته خوړلې وه او له هغې نه را پيدا شوي سياسي ټکان خلک گډوډ او کم عقله کړي وو، د اتن شورا سوکرات د دېرشو رايو په توپير سره په مرگ محکوم کړ. کاکړ وايي چې «د حېراني ځای دی چې دغسې هوښيار او ښه انسان په دغه ډول جزا محکوم شو، خو تاريخ ښوولې چې گرانه ده له عمومي تعصب سره په عقل او [د] ناپوهۍ سره په رڼا مجادله وشي.» ۱۰۵۳ ځکه چې زمور د هر يوه له پاره گرانه ده کله چې د يوه شي په حقانيت په پټو سترگو قانع اوسو، څوک مور له هغه څخه واوروي او ووايو چې په غلطه يو.

اپلاتون (۳۸۴-۳۴۷)

د اپلاتون اصلي نوم ارستوکلس او تخلص يې اپلاتون و. پلار او مور يې چې له لور نسب نه وو، ډېر ښه تعليم ورکړ او پوره وسيلې يې ورته برابرې کړې، چې خپل ټول عمر د فلسفې په زده کړه تېر کړي. اپلاتون لس کاله د سوکرات په شاگردۍ کې تېر کړل او دېرش کلن و چې د خپل استاد محکمه يې له سترگو نه تېره شوه. ده چې د اتن د عوامو په بې عدالتۍ سره پارېدلې و، د «جمهوريت» په نامه يو کتاب وليکه چې په هغه کې يې دغسې سياسي او ټولنيز ايډيالې نظام انځور کړ چې د «فيلسوف پاچايانو» له خوا به چلول کېږي، چې د هغو په واکمني کې به دغسې جنايت ته هېڅ اجازه ور نه کړه شي.

اپلاتون اول په اتن کې يو جمنازيم او وروسته په يوه بڼ کې د اکاډيموس په نامه يو فلسفي مکتب پرانېست. دا اکاډمي ډېر زړ په ټوله مديترانه کې ادبي او فلسفي مرکز شو. دا په واقعيت کې لومړی پوهنتون و چې نهه پېړۍ يې دوام وکړ. اپلاتون هلته څلويښت کاله درس ورکړ او ليکنې يې وکړې.

اپلاتون ډېر پياوړی منطق پوه، ستر نفوذمن سوچوال او د يوناني نړۍ لور خياله شاعر و. ده اټکل دېرش ديالوگونه پرې ايښي دي. له نيکه مرغه ټول يې ساتل شوي دي. ديالوګ چې د دوو کسانو تر منځ خبري يا مرکه ده اپلاتون په هغو کې د سوکرات د شېوې نه کار اخېستی دی. سوکرات د پوښتلو او ځواب ورکولو شېوه کاروله. د اپلاتون ديالوګونه د عدالت، نېکمرغۍ، ښېکڼې، ايديالي دولت او هم د الهياتو او د پوهې له تيورۍ نه بحث کوي. په دې توګه د اپلاتون د ايډياوو دوکتورين د کایناتو مادي او هم روحي توکي په غېږ کې ونيول.

بالابانس خپله ليکنه د اپلاتون هغه دوکتورين ته ځانګړې کړې ده چې په اخلاقياتو پورې اړه لري. دی وايي چې دا يوه ډېره کرانه، ژوره او پېچلې تيوري ده چې د شرح کولو له پاره د لوستونکو زغم او کره پام غواړي. دا تيوري ان په خپله اپلاتون هم د استعارو، سيمبولونو او افسانوي رمزونو نه پرته شرح کولی نه شوه. خو د اپلاتون دغه دوکتورين عملي اړخ لري، په دې چې هغه دغسې يوې اصلي نمونې ته ګوته نيسي، چې ښه انسان بايد ځان ورسره موافق کړي.

بالابانس د بېلګې په توګه د ښکلا مفهوم تر کتنې لاندې نيسي. ښکلا د حواسو له لارې بيل بيل مفهوم غوره کوي، چې هغه د يوه چا په روزنې او شاليد پورې اړه لري. د بېلګې په ډول شونې ده چې ښکلا په انځورګري کې هنرمن ته يو مفهوم او عام وګړي ته بل مفهوم ولري. خو ښکلا د ايډيا په شان د انسان د عندي ارزونې نه لوړه ده. خو د ښکلا اصلي نمونه يو عالمي ايډيال، يو مطلق معيار دی چې په هغه سره ښکلا په ټولو خلکو او په ټولو شیانو کې په يو شان تر ارزونې لاندې نيول کيږي. لکه ښکلا په ښځو يا کلانو کې ځي او راځي، خو ښکلا د ايډيا په شان پرځای پاتې وي. انسان او کلان مري د ښکلا ايډيا تلپاتې وي. په دې توګه اپلاتون وايي چې د ښکلا ايډيا يواځې يو کليمه يا افاده يا ځانګړتيا نه ده چې په کوم انسان يا مادي کې نغښتې وي. هغه د انسان نه په خپلواک ډول وجود لري او په حواسو سره يې درک نه کيږي. درک يې د انسان په عقل يا روح سره کيږي. انسان هېڅکله اصلي نمونې ته په پوره ډول رسېدلی نه شي، خو بايد د خپلې غوښتنې موخه يې وګرځوي. دی وايي «چې دا د ښکلا له ايډيال سره د حضور او ګډون له امله ده

چې څيزونه ښکلي کيږي.» دی زياتوي چې «هغه وخت چې يو ښکلی روح له يوه ښکلي شکل (ايديا) سره همغږی کيږي، دواړه په دغسې قالب کې لويږي چې د هغه چا له پاره چې د ليدلو سترگې لري، تر ټولو ښکلي منظره وي.» ۱۰۵۴

اپلاتون د دې شرحې پر بنسټ وايي چې ډېر لور ښه توب بايد له دغه ماډل سره د انسان په يوځای کېدلو او توافق کې ولټول شي. په دې توگه اپلاتون دې پايلې ته ورسېد چې روح بايد تلپاتې او نه فنا کېدونکی وي.

د اپلاتون په نظر مور ته ښايي چې له ناڅاپي او بې هدفه نظر او د حواسو له محرکې نه لور واوسو او د عالمي مفکورو پرنسيپونو يا قانونو په چوکاټ کې فکر وکړو چې بنسټيز او رښتيني واقعيتونه دي. په دې ډول که مور د انسانيت له نظر نه فکر وکړو، نظر دې ته چې د دغه يا هغه کس له نظره فکر وکړو، چې خوښيږي يا مو نه خوښيږي، مور شايد د انسان روحي ماهيت په ښه ډول درک کړو او وبه وينو چې ټول بشریت يو دی.

ارستو (۳۸۴-۳۲۲)

ارستو د شمالي يونان په سټاګيرا کې زيږېدلی و او اتلس کلنۍ کې د زده کړې له پاره اکاډمي ته ورغی او هلته د اپلاتون سره شل کاله پاتې شو. د اپلاتون د مړينې وروسته په ورې اسيا کې اسوس ته لاړ او هلته يې د ځان له پاره د فلسفې ښوونځی پرانېست. وروسته د مقدونيې پاچا فليپ ترېنه وغوښتل چې د هغه د ديارلس کلن زوی ښوونکی شي چې هغه وروسته لوی سکندر شو. د پلوتارک په وينا سکندر ويلي و چې د ژوند له پاره د خپل پلار او د ښه ژوند له پاره د ارستو پوروری دی.

سکندر چې د يونان د نيولو نه وروسته په هخامنشي امپراتورۍ ودانگل، ارستو اتن ته ستون شو او هلته يې د ليسييم په نامه ښوونځی پرانېست. ارستو په لومړيو وختونو کې د اپلاتون د ډوکټرين پلوي کوله خو وروسته يې وويل چې «رښتین توب اړ کړ» چې د خپل استاد تيوري پرېږدي او بله لار ونيسي. دی او زده کوونکي يې د اتن په ليسييم کې په څېړنو بوخت شول. له بده مرغه د ده د څېړنو يوازې څلورمه برخه راپاتې ده. دی لومړی فيلسوف و، چې د انسانې پوهې بيلې بيلې ساحې يې په منظم ډول تصنيف کړې. د هغه اثرونه منطق، فزيک، ميتافزيک، بيالوجي، اروا پوهنه، اخلاق، سياست او بديعياتو په اړه دي.

ارستو که څه هم د عقلاني تحليل او مجرد فکر سره علاقه درلوده، خو هغه د طبيعي پېښو د يوه لېوال کتونکي په توگه په خپلو عمومي مفکورو کې د حواسو په درک

او د ورځيني تجربو په رول هم قايل و. د ارستو په نظر د اپلاتون د بنسکلا ايديا يو مجرد واقعيت دی چې شته والی لرلی نه شي. د اپلاتون پرخلاف بنسکلا په هغه شي کې شته چې په کې نغښتې وي. مور بنسکلا په يوې ښځې او گل کې وينو، هغه هلته په دوی کې شته نه په مجردې نړۍ کې.

بيا نو ارستو د جسم او روح يووالی مني او وايي چې روح زموږ په فزيکي شته والي کې څرگندتيا مومي. دی دا وايي چې هر څوک په ځان کې دا استعداد لري تر هغه ځايه چې کولی شي ځان ايديال يا مطلوب کمال ته ورسوي. دا چې د هغه دغه استعداد په ژوندي مقصد لرونکي يا نهايي علت- خدای، نامتحول او تلپاتې سره فعال کېږي. ارستو دغه خوځوونکی خدای بولي او زياتوي چې صوفيا يا دغه خوځونکی په اړه ژور سوچ د ذهن تر ټولو لوړ او تر ټولو ښکمرغه فعاليت دی.

د ارستو په فکر د انتخاب ازادي د اخلاق له پاره اساسي شرط دی، ځکه چې ښېگڼه په هغه حال کې مانا نه شي لرلی چې يو څوک په بدې لارې د تلو اختيار ونه لري. يوازې هغه انسان ښه دی چې اختيار لري ښه يا بد وکړي او بيا ښه وکړي. يو څوک په وار وار په ښې لارې باندې تگ سره هغه خوی خپلوي چې په کولو سره يې اخلاقي کرکټر ودانېږي. «يو عادل انسان د عادلو کارونو په کولو او د اعتدال خاوند د اعتدالي کارونو په کولو سره جوړېږي.» ۱۰۵۵

ارستو وايي چې څه وخت د مخه يوې مور راته وويل، چې لور يې له درې اونيو نه وروسته پوهنځی پرېښود، ځکه چې «هغه خوښه نه وه.» ما ورته وويل هېڅوک پوهنځی ته د دې له پاره نه ځي چې خوښي يا ښکمرغي ومومي. يو څوک پوهنځی ته د دې د پاره ځي چې فکر وکړي، د سترو انسانانو ذهنونه کشف کړي، د ځان او د نړۍ په اړه چې په کې اوسي پوهه ترلاسه کړي، له نورو سره ايدياوې شريکې او مبادله کړي د اړو هم ټولگيوالو سره مرسته وکړي او د عقلاني او اجتماعي نظره وده وکړي. ښکمرغي د دغسې کوښښونو د ميوو له څکې نه پيدا کېږي. ستا لور په لومړيو دريو اونيو کې له دغو نه هېڅ يو ترلاسه نه شو کړی. زه په خپل اوږده علمي ژوند کې له دغسې محصلانو سره مخامخ شوی يم چې په اول کې يې باور نه درلو چې پوهنځی «ښه» وکني، خو د کال په پای کې يې ورسره «مينه» پيدا شوه. په دې توگه ارستو وايي چې دا د ښه توب تمرین دی چې په ژوند کې د ښه توب او ښکمرغي لامل کېږي.

اېپیکور (۳۴۳-۲۷۰)

اېپیکور د يوه غريب پلار او مور زوی و. هغه د اپلاتون او ارستو غوندې له ښوونکو نه زده کړه نه وه کړې. هغه لږو ډېر په خپله ځان رسولی و. لومړنی ښوونځی يې په ورې اسيا کې لوستی و او وروسته اتن ته لاړ او هلته يې د بن ښوونځی پرانېست. په ښوونځي کې يې نارينه او ښځې شاملې وې. دا هغه وخت و چې د پلي پونيز د جکړې وروسته يونان د مقدونيې ترلاس لاندې شوی و. اپلاتون او ارستو هم دواړه مړه وو. د هغه عقلي او اخلاقي قوت رول چې دوی يې لارښوونه کوله، نور د يونان د خلکو په ذهن اغېز نه لاره. په دغه حال کې ډېرو د اېپیکور په فلسفه کې له ترخه واقعيت نه پرار او د خوند ژوند ته لار وموندله.

اېپیکور د کينانو د سرچينې او کارکولو په اړه ميخانيکي شرح ومنله. د هغه په فکر کاینات د يوه غير شخصي په خپله خوځېدونکي ماشين په څېر دي چې د دغسې عقلي خالق (Demiurgus) له خوا څخه نه ورته لارښوونه کېږي او نه اداره کېږي، لکه هسې چې اپلاتون وايي او نه له کوم عقلي «خوځوونکي» له خوا چې ارستو پرې معتقد و. د اېپیکور په فکر انسان د نورو څارويو او واده والو په شان ژوند کوي او مري او د هغه ذهن يا روح، چې د حواسو له زرو (اتومونو) څخه جوړ شوي دی، د هغه په ټول بدن کې تیت دی او له هغه سره يو ځای مري. انسان په دغسې نړۍ کې د تلپاتې توب او د جنت هيله کولی نه شي. او نه ار دی چې د دوزخ له هيبتونو نه ووېرېږي.

د اېپیکور په نظر خوند (Hedone) د نېکمرغی اساسي توکي گڼل کېږي. اېپیکور ښوونه کوله چې انسان په طبيعي ډول د خپلې دغې غوښتنې له مخې عمل کوي چې خوند ترلاسه کړي او له درد نه ځان وژغوري او عقل يوازې هغه وخت رول لوبوي چې د دغې موخې له پاره لار يا وسيله غوره کوي.

اېپیکور يوازې په ورځنيو حسي تجربو ډډه کوي لکه خوړل، څښل، ټنک ټکور، جنسي عمل د يوې وسيلې په شان چې نېکمرغه ژوند ترلاسه کړي. داسې هم هغه په ژوند کې لوړ خوندونه هم د نظر څخه نه غورزول لکه د ملگرتوب خوښي، له اندېښنې او غم نه ازادي او داسې نور.

تر هغې اندازې چې د اېپیکور فلسفه په دغه مقصد ايستل شوې چې مور له طبيعت نه اخوا هيبتونو او له دنيايي اندېښنو نه وژغوري، په هغې کې ارزښت پروت دی، خو په خپله د خوند فلسفه چې د اېپیکوريزم زری دی، انسان له هغې سطحې نه ښکته کوي چې سوکرات او شاگردانو يې په کې انسان ته ځای ټاکلی و.

زينو (٣٦٤-٣٢٦)

زينو د قبرس په ټاپو کې زېږېدلی دی. دی شل کاله په اتن کې اوسېدلی او هلته يې په ستووا (Stoa) چې د برنډې يا دالان په مانا ده د فلسفې يو ښوونځی پرانېست. زينو د اپيکور غوندې سوکرات ستايله. دوی په هغه کې د سپماکر ذوق يو دغسې عقلايي انسان لیده چې تر وروستی شېبې پورې يې ارامتيا وساتله او د خپل ذهن د سوې نه يې خوند واخېسته. خو سوکرات دغسې څوک و چې حسي خوندونوته يې په خواره سترگه کتل او په خوښۍ سره ورته بې توپيره و، زينو له هغو څخه پرېهې شېکېنه او فضيلت گانه.

اخلاقي ژوند د ذهني ارامتيا ژوند دی چې په انساني حسياتو باندې په پوره کنټرول او د کایناتو له پلان يا د انسان د برخه لیک سره په سمون کې ترلاسه کېږي، چې په هغو هېڅوک کنټرول نه لري. خو هغه د تل له پاره د اسماني قدرت له خوا په عقلايي ډول اداره کېږي او دا د انسان دنده ده چې د هغه (خدای) له دغې عقلي طرحې سره سمون وکړي. انسان همدا چې خپل مقام په خدايي پلان کې ومومي او بيا د هغو په مطابقت عمل کوي، ذهني ارامتيا او ثبات ته رسېږي. دا دغه ارامتيا ده چې نېکمرغي راوړي.

ستوييزم هغه انسان ته چې له ترژاېدۍ سره مخامخ وي، مرستيال دی. د اپيکوريزم سره په اسانۍ سره سمون کېدلی شي. خو هغه وخت چې يو څوک له سختې ستونځې سره مخ وي، ستوييزم د جذباتي انډول په ساتلو کې ورسره مرسته کوي.

د يونان فيلسوفانو که سوکرات، اپلاتون، ارستو، اپيکور او يا زينو وو، ټولو د ازموينې له پاره د ښه ژوند کولو له پاره په واقعي عمل باندې ټينگار کاوه. دوی ويل چې د ښېکڼې له پاره يوازې پوهه بسيا نه کوي، بلکې په هغې باندې عمل کول دي، چې يو څوک ښه سړی کوي.

د ښه انسان د شخصيت ځانگړتياوې

بالابانس وايي چې اوس مور د موضوع عملي زړي ته رسېدلی يو. د يونان فيلسوفانو د ښه انسان د شخصيت په ځانگړتياوو بحث کړی او په لاندې ډول دي:

١- اعتدال (temperance)

د اعتدال اصطلاح د حال توب، منځلاري توب يا نرمۍ انډوله ده. اعتدال د يونانيانو په فکر له هر شي نه د پرېهې په مانا نه و. شاعر هومر وايي چې «مور له مېلمستيا، تنگ

ټکور، نڅا، جامو بدلولو او تاوده حمام ... سره مينه لرو. سوفوکلبس وايي چې هغه چا چې د خونې احساس له لاسه ورکړی وي، لا د مخه مړ دی.» ۱۰۵۶ یوناني فیلسوفانو منلې وه چې انسانان په دې چې انسانان دي او خدايان نه دي بايد له حسي خوندونو څخه يو څه برخه ولري. ان اپلاتون منلې وه چې مور بايد په گډ ژوند کې ښه ولتوو. اپلاتون ويل چې د انسان روح درې ظرفيتونه لري چې د لاس بري توب له پاره مبارزه کوي. دا درې ظرفيتونه دا دي: لېوالتياگانې او غوښتنې چې اقناع غواړي؛ پياوړې او نه کنټرولېدونکې انرژي چې د عمل له پاره هڅول کوي او عقلي قوه چې هغو دوو ته لارښوونه کوي او کنټرولوي يې. په دې ډول مور په انسان کې هم مادي او هم روحي ظرفيت مومو. خو اپلاتون ويل چې پله بايد د روحي ظرفيت په لوري درنه وي.

ډرامه لیکونکي اکاتون يوه مېلمستيا کړې وه او سوکرات د عزتمن مېلمه په توگه ورځي او ملګري هم ورسره وو. خواره او شراب پرېمانه وو، خو ټول د دغه شعار سره، چې هېڅ شی له اندازې څخه زيات نه، يوه خوله وو. دا د اعتدال ښه بېلګه ده. د دغې مېلمستيا د بحث موضوع مينه (eros) وه چې يو په بل پسې پرې وغږېدل. دوی د جسي ميې چې د جسي ښکلا په وړاندې غبرګون دی او اسماني ميې تر منځ چې د ټولو ښکلو شيانو په وړاندې د روح له ميې پيدا کېږي توپير وکړ. سوکرات په خپل وار وويل چې دواړه ډوله ميې مهې دي او دواړه ماشومان زيروي. خو هېڅوک د هغه چا عزت نه کوي چې يوازې «د انسان په شان» ماشومان زيروي خو هغوی چې په روح سره يې ماشومان پيدا کړي، ښکلي شيان لکه عقلمني، ښېکنه، هنر او شعر د زيارتونو او څلو په درولو سره ابدي کېږي چې په درناوي يې جوړېږي.

ارستو د اعتدال د بيان له پاره د (mesotis) يا (metroiotis) کلیمه راوړې چې لفظي مانا يې د منځ لارې غوره کول دي. خو دا دواړه کليمې په اصل کې د انډوليزې اندازې ايډيا ده چې مور يې «طلايي وسيله» بولو. دغه کچه د ځله کوونکي د پوره پرېهز او داسې هم خوند ته د پوره تسليمې سره جوړه نه ده. همدغه ايډيا ده چې يونانيانو په جسي خوندونو، هنر، معمارۍ، شعر او جمناسټيکونو کې رعايت کړې ده.

د انساني سلوک په ساحه کې چې زموږ د جسي خوندونو له کنټرول سره اړه لري يوناني اصطلاح يې انګرېشيا (engratiata) نومېږي. دا د دواړو افراطونو څخه د ډډې کولو ظرفيت دی چې د پرېهز او بې بندوبارۍ تر منځ د اعتدال لار ده او د داسې لارښود له خوا اداره شي چې سوچ يا عقل نومېږي.

بيا هم ازموینه ارادي انتخاب دی. انسان هرو مرو اعتدالي نه وي. هغه څوک اعتدالي

وي چې موقع ولري بې بندوبار شي او د بندوبارۍ وسيلې يې هم په لاس کې وي او په دغه حال کې پرېکړه وکړي چې د اعتدال لار ونيسي. اپلاتون وايي چې انسان دې «د خپل ډېر غم يا خوښۍ کنټرول وکړي او کوښښ وکړي چې په مناسب ډول سلوک وکړي.» تا سیدایدز د پریکلس له قول نه وايي چې «ځکه چې مور د ښکلا مینان یو، بیا هم په خپلو ذوقونو کې ساده یو مور ذهن روزو بې له دې چې سریتوب مو له لاسه ورکړی وي.» یونانیان په اعتدال کې یو ایډیال ویني او په حقیقت کې د قهرمانۍ ایډیال چې په سختۍ سره ترلاسه کیږي او کوښښ کول ورته ارزوي.

په دغه دلیل او د انساني طبیعت د اخلاقي کمزورتیا او ناتوانیو په پېژندلو سره ارستو ومنله چې «ښه کېدل اسان نه دي.» یانې اعتدالي کېدل اسان نه دي. ارستو ومنله چې هغه څه چې مور یې متعادل معیار گڼو، یو ټاکل شوی د ریاضي ټکی نه، بلکې د زغم یوه ساحه ده چې په هغې کې هر څوک باید تر وروستۍ کچې زیار وباسي چې منځنی مقام غوره کړي. د اعتدالي انسان په شان ارستو به هغه څوک محکوم نه کړي، چې له مبارزې وروسته د اعتدال د کچې نه اوسنی وي. داسې هم هغه به د یوه ښه فزیالوجي پوه په شان هغه څوک گرم نه کړي، چې د کومې ناروغۍ قرباني وي، یا یې په خپګان او ټینګ احساساتي حال کې عمل کړی وي. هغه وايي چې دغسې ټینګ احساسات په واقعیت کې زموږ جسمي عملیو ته بدلون ورکوي او زموږ عقلي سوچ فلجوي. څه عصري فکر! په زړه پورې ده چې دی له ښځو سره مهرباني کوي چې ځنګه «هغوی ضعیف جنس» دی تر نارینه وو نه ډېر د ښځې وړ دي، ځکه چې د ښځو له پاره کرانه ده چې کوښښ وکړي له طلايي وسیلې نه کار واخلي.

بالابانس وايي چې د ارستو په فکر د یو فرد عمر د هغه د اعتدالي یا افراطي کېدلو باندې اغېز لري. ارستو د هغو په اړه چې د عمر په قوت کې دي وايي، چې دوی د اعتدال له پاره استعداد او میل لري، په داسې حال کې چې ځوانانو او د پاخه عمر کسانو ته د افراط یا د غیر اعتدال ځانګړتیاوې منسوبوي. دی زیاتوي چې ارستو که څه هم عمومي حکمونو او شاید مبالغه کوي، د ده د دغو درې واړو ډلو د سلوک په تحلیل کې زیات رښتین توب شته.

۲- زړه ورتیا یا مېرانه (andria)

د ښه انسان بله ځانګړتیا مېرانه ده. یونانیانو د تروې (Troy) د جګړې نه وروسته او په تېره د هخامنشي زورواکو پاچایانو سره د مقابلو په وخت کې په فزیکي زړه ورتیا ټینګار

کاوه او مېرانه يې ستايله. د هومر د اكيلز د اتل او د مره تان، سېلامي او ترموپايلاي سرتېري په ډرامو، سندرو او شعرونو کې ستايل کېدل. اپلاتون وايي چې زړه ورتيا نه يوازې په جگړې کې اړينه او د ستاينې وړ وي، بلکې له سمندري خطرونو سره په مخامخ کېدو يا د ناروغۍ په مصيبتونو يا د بې وزلۍ په سختيو يا د سياسي مقام په خطرونو کې هم لازم او د ستاينې وړ وي.

په ټولو حالتونو کې لوړه موخه او عقلي چلند د زړه ورتيا اساسي شرطونه دي. په دغسې حالتونو کې، چې رشتينې زړه ورتيا ښووله کيږي، هغه د کرکټر له امله وي، چې په پوهې او عقل سره ورته لارښوونه کيږي. اجيران چې د جنک کولو له پاره استخدا مېرې زړه وړ نه وي، که څه هم شونې ده چې يوه جگړه وکړي. دا ځکه چې دوی د پيسو له پاره نه د کومې داعيې يا ازادۍ له پاره جگړه کوي. هغه انسان هم چې تر ده د کمزوري سره مخامخ کيږي زړه وړ نه دی. «زړه وړ په اصل کې هغه انسان وي چې د خطر درک کوي او پوهيږي چې ژوند يې د خطر لاندې دی او بيا هم د مخه کيږي او غوره کني چې سختۍ وکالي او حتی مرگ قبول کړي.» ۱۰۵۷

خو انسان په جگړه کې د جنکيالي نه لارښات دی. لکه چې د مخه مو يادونه وکړه چې اندريا چې لفظي مانا يې زړه ورتيا يا مېرانه ده، تر فزيکي زړه ورتيا نه ډېره ده او رشتياني مېرانه د اخلاقي زړه ورتيا مفهوم لري يانې هغه زړه ورتيا چې يو څوک هڅوي چې د اخلاقي موضوع په خوا ودرېږي او پرې حساب وشي.

۳- لور همتي

د اخلاقي زړه ورتيا په اړه د ښه انسان بله ځانگړتيا لور همتي يا د روح سترتوب دی. د راستو په نظر هغه څوک لور همتي دی، چې د سترو شيانو هيله لري او مستحق يې دی. که دی يې مستحق وي، مانا يې دا ده چې دی هغسې ځانگړتياوې لري چې قادر به يې کړي چې ترلاسه يې کړي. که ارزښت يې له هيلو نه لوړ وي د کوچني روح خاوند وي. دلته بيا هم طلايي وسيلې ته مراجعه په کار ده. ښېگڼه او رشتينوالی د لور همتي انسان ځانگړتياوې دي. هغوی چې شتمن او د قدرت خاوندان وي، بې له دې چې ښه وي شونې ده چې کېرجن او بدغوني وي، ځکه چې څوک شته لري او ښېگڼه نه لري د ناوړه غرور ښکار کيږي. ځان لور کني يې له دې چې د لور توب خويونه ولري.

د ستر روح خاوند د ښکته خلکو په وړاندې اعتدالي او مودب وي. دی کوشنې نه کوي چې د خپل قوت ظرفيتونه د نورو له ظرفيتونو سره چې تر ده ناتوان دي، پرتله کړي.

د ښېکښې ځانگړتيا دا ده چې ښه وشي. د ستر روح انسان که په شتمنۍ يا عزتمنۍ، قدرت او يا برياليتوب يا ناکامۍ کې وي ټينگ او آرام وي. دی هغه وخت چې مستحق يې وي يوازې د ښې سرچينې او په عزتمنو وسيلو سره عزت غواړي.

۴- مدني وفا پالي (Peitharchia)

پيتارکيا د تاسيس شوي يا قانوني مقام ته د وفا پالي يا عقیده لرلو په مانا ده يا په نورو ټکو د قانون د مشروعييت په اړه باور يا وفاپالي ده. وفاپالي د ښه انسان بله ځانگړنه ده. د دغې کليجې ډېره ښه بېلگه زنه فون (Xenophon) په خپل انابيس (Anabasis) کې د لسوزرو د مارش په کيسه کې بيان کړې ده. لس زره يونانيان د کليير کس (Clear cus) په مشرۍ د پارس د پاچا د زوی داريوش د ملاتړ له پاره لاړل چې د خپل ورور ارتخيرپش (Artaxerxes) سره د تخت په سر جنګېده، وجنگېږي. خو سپروس په جګړه کې ووژل شو او دغه يونانيان په داسې حال کې چې قوماندان يې هم وژل شوی و، په وړې اسيا کې له خپل هېواد نه زر ميله ليرې کيږ پاتې شول. دوی په خپله خوښه په يوې جرګې کې پرېکړه وکړه چې زنه فون خپل قوماندان غوره کړي، ځکه دوی په دې قانع وو چې هغه د دوی د لارښوونې له پاره تر ټولو وړ و. د زنه فون واک په دغې عقيدې بنا و، چې هغه تر ټولو ښه پوهيږي. دوی د هر يوه له مشورې نه وروسته زياترو په هوکې سره پلان وايستل شو. دوی د خپل مشر د دغه شعار په منلو سره چې «ټول د يوه له پاره او يو د ټولو له پاره» وکولی شول چې په سره ژمي کې په غرونو باندې تگ سره چې دښمن قومونه ورباندې پراته وو، د ډېرو سختيو په گاللو سره بريالي شي او خپل وطن ته په مصؤن ډول ستانه شول. زنه فون وويل چې «په رشتيا چې د رضا اطاعت له اجباري اطاعت نه ميدان گټي.» ۱۰۵۸

ازادي د اتن د ډموکراسۍ له بنسټونو څخه وه، خو ازادي د ډموکراسۍ سره د قانون د واکمنۍ پرته خوا په خوا ژوند نه شي کولی. نو يوه يوناني ته په داسې حال کې چې ازاد ژوند وکړي، فکر وکړي، وغږيږي، تخليق وکړي او سوچ وکړي هرو مرو به يو قانون منونکی تبعه وي. د اتن ځوانان په نولس کلنۍ کې اړ وو لوړه وکړي چې د ښار قانونونه ومي، له پلارني هېواد نه ساتنه وکړي او ژمنه وکړي چې راتلونکو نسلونو ته به داسې کامنولټ سپاري چې «تر هغه نه چې ما ته سپارل شوی و، وور نه بلکې هم لوی او هم ښه وي.» ۱۰۵۹

اتکل دا و چې قانونونه به عادل او معقول وي. قانون د ټولنيز قرارداد محصول و چې ولس به پرې هوکړه کوي، په دې ډول چې دوی به له ځينو حقونو څخه د هغو کډو کټو

په بدل کې تېرېږي چې دوی يې هيله لري له دغسې گډون نه را پيدا کېږي. هغه وخت چې چارواکي ناعادل او زورواک شي، دوی بيا په اخلاقي لحاظ اړ نه وي اطاعت يې وکړي. په واقعيت کې دا بيا د دوی حق او دنده وي، چې د بې قانونۍ په وړاندې اعتراض وکړي، تر هغه زيات دا دوی حق او دنده ده چې بدل يې کړي.

۵- عدالت (Dikiosyne)

عدالت د ښه انسان بله ځانگړتيا ده. اپلاتون خپل د جمهوريت اثر انساني اړيکو د عدالت د ماهيت شرح ته ځانگړی کړی دی. د دغه اثر په سر کې د يونان د جاري فارمول يادونه شوې، چې عدالت هر يوه ته د هغه د حق سپارل دي چې مانا يې په عام ذهنيت کې خپلو ملگرو ته گټه رسول او دښمنانو ته زيان اړول دي او دا د انعام او جزا ورکولو يوه دوديزه لار ده. داسې هم عدالت په ډيالوگ کې د يوه گډونکوونکي له خوا «د قوي په گټه» تعبير شوی دی، «حکومتونه قانونونه جوړوي چې د حکم چلونکو گټې خوندي کړي. بيا نو دوی دغه قانونونه عادل گڼي او هغو ته جزا ورکوي چې ترېنه سرغړوي». ۱۰۶۰ داسې هم په کې ويل شوي چې دغه قانونونه ځينې وخت نه يوازې نور له خپلو شتمنيو نه بې برخې کوي بلکې دوی هم مريان کوي.

سوکرات د دغو نظريو د هېڅ يوې سره جوړ نه و. سوکرات وايي چې عدالت په اصل کې ښېگڼه او عقلمني ده او بې عدالتي بدې او ناپوهي ده. د هغه په اند: «که څوک ووايي چې دا عدالت دی چې هر يوه ته د حق وسپارل شي او که دا په دې مفهوم وي چې د هغه دوستانو ته گټه او دښمنانو ته يې زيان ورسول شي، هغه عادل او عقلمن نه دی... ځکه چې يو څوک بايد په هېڅ حال کې چا ته زيان ونه رسوي.» ۱۰۶۱ ارستو په خپل اخلاقياتو اثر کې ډېر په ځير سره د عدالت مفکوره او هغه شرايط چې عدالت يقيني گرزوي سپړلي او شرح کړي دي. ارستو منځنۍ لار غوره کړې چې د هغې له مخې عدالت «د ښه لا ډېر او د بدې لا لږ» تر سره کوي. يو څوک بايد د عدالت په فکر سره وهڅېږي ان که د پوره عدالت ترسره کولو توان هم ونه لري. دی د عدالت په اړه هم عقلي پرنسيپ ته مخ اړوي. د بېلگې په توگه که يو څوک چا ته په خطا يا ناپوهۍ يا په تصادفي ډول زيان واړوي، بايد د تاوان جبران وکړي خو څنگه چې عمل يې اختياري نه دی، ناعادل نه گڼل کېږي. ارستو د اقتصاد په ډگر کې هم وايي چې عدالت هغه وخت ترسره کېږي چې جايزې د استحقاق پر اساس ورکړل شي.

په قانون پوهنه کې د ارستو مهمه ونډه د عدالت او انصاف تر منځ توپير کول دي. انصاف هغه ډول عدالت دی چې د انسان په لاس له جور شوي قانون څخه اخوا وي. د انصاف سرچينه د کاپناتو قانون يا د طبيعت قانون دي چې د بالابانس په وينا «زموږ په وختو کې د لا لور قانون په نامه ياد شوی دی» ۱۰۶۲ قانون جوړيږي خو شونې نه ده چې هغه په داسې ډول بيان شي چې هره ځانگړې موضوع په منصفانه ډول حل کړي. له دې کبله د قانون دغه تشه وضعي قانونونه بشپړوي. هغه داسې قانون بدلوي چې د يوې عادلي پرېکړې له پاره بسنه نه کوي. سياست او اخلاقيات سره نه بيلېدونکي دي، اخلاقيات په واقع کې د سياست مخکينی شرط دی.

اپلاتون د پلي پونيز جگړې د ناخوالو او د پايو له امله د خپل وخت په سياسي موسسو باندې خپل باور د لاسه ورکړ. دغو پېښو د يونان عدالت هم د ده په نظر بې اعتباره کړ. د پلي پونيز جگړې د پريکلس طلايي عصر ته د پای ټکی کېښود او داسې يې د چارواکو او عادي خلکو اخلاق فاسد کړي و. برسېره پر دې دغه ډموکراسۍ د ده استاد سوکرات په مرگ محکوم کړی و. دغو ټولو د اپلاتون نظر د وخت د اساسي قانون په اړه اړولی و.

اپلاتون وليکل چې تجربو ښوولې ده چې ارستوکراسي په تيورۍ کې د ډېرو ښو او ډېرو عزتمنو حکومت دی، په پای کې د هغو ښکار کېږي چې د شتمنۍ، قدرت او پيسو جوړولو لېوال وي او هغه اوليکارشي يا د څو شتمنو او مخورو حکومت کېږي. داسې شتمن بيا د خپلو گټو له پاره ولسونه زېښني او په پای کې دوي طبقې هسکېږي: يوه يې د واکمنو چې واکمني کوي او بله يې د بېوزلو، چې واکمني پرې کېږي. څه وخت چې واکمنان پڼ او لت شي او ظلمونه تر دې کچې ورسېږي چې خلک يې زغملی نه شي، ولس پاڅېږي، زېښونونکي وژني يا شري او حکومت ترلاسه کوي. اوس د ډموکراسۍ په وخت کې ټولو مدني تبعه وو ته چې په استعداد يا اخلاقي وړتيا کې برابر يا نابرابر وي، د دولتي مقام نيولو له پاره برابر حق ورکول کېږي، ازادي محور کېږي او غوښتنې او جذبې يا پياوړي احساسونه په عقلمۍ باندې لاسبري مومي، زر يا وروسته ازادي په فساد اوږي او ښېکڼه له ياد نه ايستل کېږي. اپلاتون زياتوي چې هر څوک د واکمنۍ کولو د حق ادعا کوي، که څه هم هر يو د حکومت کولو وړتيا نه لري. ان دومره وړتيا نه لري چې سم چارواکي غوره کړي، يا د رښتينيو داعيو له پاره رايه ورکړي.

اپلاتون د دې د مخنيوي چاره داسې گڼي چې حکومت يوازې داسې کسانو ته په لاس کې ورکړل شي چې د ښاري دولت د چارو په اداره کې قدرت له پوهې او ښېکڼې سره يوځای

کوي. د اپلاتون په اند داسې کسان «فيلوسوف پاچايان» دي چې هغوی به له اخلاقي او عقلايي استعدادونو څخه برخمن وي، چې د سياست والی په فن کې به د يوې اوږدې مودې منظمې پوهنې له پړاو نه تېر شوي او د انساني چارو په رښتینې نړۍ کې به د کلونو په بهیر کې د تجربو څواند شوی وي. د دې له پاره چې د ټولو شخصي گټو په غوښتلو کې بې غرض توب يقيني شوی وي، دغه دولتي ساتونکي بايد شخصي شتمني او ان فاميليي مسؤليت هم ونه لري، په گډه ژوند وکړي.

اپلاتون د ډېر زيات نفوسو او د لږ نفوسو د مخنيوي له پاره دغسې قانونونه غوښتل چې د کورنۍ د غړو محدود کولو او د نسل د ښه کولو له پاره وايستل شي او هغه «له ډېر ښه سره د ډېر ښه په جوړه کولو سره وي.» ۱۰۶۳

بالابانس وايي چې سره له دې چې د اپلاتون اوتوپيا کمزوري ټکي لري خو دغه اثر د اتن په شان د يوه واړه ښاري دولت په اړه و چې په ژبه او کلتور کې متجانس و. مور ته کرانه ده چې د هغه په اصلي تېزس نيوکه وکړو هغه دا چې «تر هغو چې فيلوسوفان پاچايان کېږي ... يا هغوی چې مور يې پاچايان يا واکمنان بولو، زده کړي چې فيلوسوفان شي او سياسي قدرت او عقلمني په هغه يوه شخص کې راغونډ شي ... زمور په ښارونو کې به بدې ختمه نه شي، نه، گومان نه کوم په ټول انساني نژاد کې...» ۱۰۶۴ دی زياتوي چې اپلاتون په رښتيا د حکومت د ناوړو استفادو او خطرونو په ښوولو سره په سياسي تيوري کې د غټ کړيدت لرلو استحقاق لري.

ارستو بيا د ايديالي دولت پرځای د دې سره ډېره علاقمني ښودلې چې د گټې رسولو د پرنسيپونو له مخې د حکومت يو عملي سيستم ومومي، چې د ډېرو خلکو له پاره ډېر ښه والی يقيني کړي. هغه په دې موخه د يو شمېر لويو دولتونو اساسي قانونونه کتلي چې کوم يو به يې عامه گټې په ښه ډول يقيني کړای شي.

ارستو د اپلاتون غوندې د نفوذمنو حکومت د افراطي ډول سره مخالف دی. دی «د تر ټولو ښو او تر ټولو ښکانونو»، له يوې پياوړې، معقولې منځنۍ طبقې سره چې د شتمنۍ او خوارتوب او د لوړ نسب او ښکته نسب د افراطيت ترمنځ د متعادل څرخ په شان کار وکړي، څخه جوړه ارستوکراسي غواړي. د ده په اند په دولت کې دغسې منځنۍ طبقه د ثبات توکي گرزي.

دی هم د اپلاتون په څېر د قانون له لارې د نفوسو د کنټرول پلوي کوي خو د ښځو او ملکيت په برخه کې د اپلاتون د گډ ژوند پلوي نه کوي. دی کورنۍ د يوې اساسي موسسې په توگه گڼي، چې هغه د دې د غړو او دولت په گټه ده. نوموړی دولت د کورنيو

ټولنه بولي. دی په دوو دلیلونو سره د خصوصي ملکیت د موسسې ملاتړ کوي. لومړی دا چې هغوی چې ملکیت یې شخصي وي په ښه ډول یې پاملرنه کوي. دوهم دا چې شخصي ملکیت د عدالت د پرنسیب سره سمون لري، چې انعام د ورتیا له مخې ورکوي.

اپلاتون ویل چې ښځې د نارینه وو په شان د مدني تبعه کېدو او دولتي مقام نیولو له پاره استعداد لري. دوی د فزیکي نظره توپیر لري، دوی د نارینه وو غوندې درانه کارونه نه شي کولی، خو ښځې او نارینه دواړه یو شان ذهني ځانګړتیاوې لري او که هغوی ته هم هغسې روزنه او پوهنه ورکړل شي، ښځې ان د دولت د ساتونکو مقام ته جګېدل شي.

که څه هم په یونان کې ښځو مدني حقونه نه لرل، په حکومت کې ورته برخه نه ورکول کېده او له رسمي پوهنې نه یې برخې وې، خو د یونان ښځې په واقعي ژوند کې د نارینه وو سرپرسته وې. مایني د ملت میندې وې او د پلارواکي کورنۍ په منځ کې د دوی عزت او اطاعت کېده. میندې او لوڼې لومړی اقتصاد پوهانې وې او د کورنۍ تنظیم یا اداره د دوی په لاس وه. داسې هم ښځې په مجسمو، انځورونو او ډرامو کې تمثیل کېدلې او په اولمپس کې یې په مذهبي رسمونو کې ګډون کاوه.

مړيې توب یوه پخوانۍ موسسه ده چې نېټه یې د هومر تر وخت پورې رسېږي او په اتن کې یوه منل شوې موسسه وه. مریان ځینې بربریان او نور یې یونانیان او دولتي اسپران وو. مریان په ټولو دولتونو کې د هغو د څښتنانو شخصي مال وو چې د ژویو غوندې پلورل کېدل او رانیول کېدل. د مریانو ډېر شمېر د عامه سرویس په لیکو کې استخدامېدل او دوی خپله ازادې د کوم مهم عامه خدمت په ترسره کولو یا د ښار په دفاع کې د ځانونو په ممتاز کولو کې حاصلولی شوه.

سوکرات د یوناني له خوا د یوناني د مړيې کولو مخالف و او هغه یې یو لعنتي شی باله. د هغه په اند ټول یونانیان د یوه اواز او د خپلوي روح خاوندان دي. هغه فکر کاوه د ښځو په ګډون د یوه ټول ولس مریه کول په داسې حال کې چې یو څو تنه په جګړې کې سره مخامخ کېږي، غیر عادل دي.

اپلاتون فکر کاوه چې «ځینې د واک له پاره او نور د واک چلول کېدو له پاره پیدا شوي دي» او د ده په خیالي دولت کې د مریانو ښکته مقام د هغه د کار د وېش له پاره مناسب و. ده ویل چې ځینې کسان باید ډېر ښکته بدني کارونه وکړي او په دغه ډول اصلي تبعه وو ته چې، ښغه واکمني کوي، موقع ورکړي چې فکر وکړي، د رښتین توب له پاره څېړنه وکړي او د خپلو مدني چارو د کولو له پاره وخت ولري.

ارستو ویل چې «ځینې کسان د زیږېدلې د شېبې نه وروسته د تابع کېدلو له پاره او نور

د واک چلولو له پاره پيدا شوي دي.» د ده په اند کورنۍ د کسانو ټولنه ده، چې د دولت د ژوند له پاره اساس وي. داسې هم کورنۍ اقتصادي واحد دی او بايد د ژوند اړتياوې پوره کړي. مريه د کورنۍ د غړي په توگه دغسې څوک گڼل کېده چې د بنسټه ظرفيت خاوند وي، په خپلو لاسو سره کار کوي او د خپل خاوند لور ظرفيتونه، ذکاوت او کرکټر تکميلوي. مريه د خپل خاوند ژوندی سامان دی او په هغه پورې اړه لري. دا د کار يو ډول طبيعي وېش دی چې هم د خاوند او هم د مريې په کټه دی. د ارستو په اند دا طبيعت دی نه انسان چې مريې ته يې په دغسې تابع حال کې ځای ور په برخه کړی دی. نو په دې ډول د ده په نظر مريې توب يوه طبيعي او عادلانه موسسه ده.

ارستو زه دا هم ورزياتوي چې گرانه ده هغه نظر له پام نه وغورزول شي چې مخالف يې وړاندې کوي او دليل راوړي چې مريې توب يو غير طبيعي کار او په دې ډول يوه ناعادلانه موسسه ده، چې حق شايد د هغه پر خوا وي ځکه ډېر مريان په دغه حال کې دي نه په دې چې دوی د بنسټه استعداد خاوندان دي، بلکې د دوديز قانون له امله چې لاسپرو ته يې حق ورکړی چې لاندې کړي مريان کړي. دی وايي چې ډېرو حقوق پوهانو دغه عمل چې زورور کمزوري خپل مريان گرځوي، جرم گڼلی. مور په حقه زياتولی شو ځنکه چې د لاندې شويو يونانيانو په منځ کې چې مريان شوي وو، شايد په زرگونو دغسې کسان وو چې د اتن په کوڅو کې گرځېدل چې د خپلو خاوندانو له ذکاوت او اخلاقي ظرفيت سره برابر يا ترېنه لوړ وو.

۶- عقلمني (Sophia)

د ښه انسان وروستی ښېگڼه عقلمني ده چې د يونان فيلسوفانو تر نورو ښېگڼو نه لوړه گڼلې ده. هونسياري يا عقلمني له عملي عقل نه زياته وي. له فلسفي نظر نه د سوفيا او فروني سيس (Phronisis) تر منځ توپير ډېر دی. فروني سيس ليرې ليد دی. بالابانس وايي څه وخت چې يو څوک که په فروني سيس ډول له عقلمني نه کار اخلي، په دغه اړه په ژور ډول فکر کوي، چې ډېره ښه او مناسبه لار به کومه وي چې دی پرې لار شي؟ هغسې لار چې د ده په کې کټه وي. د سوفيا عقلمني نه په کار اخېستلو سره يو څوک د ورو او غيرو مهمو شيانو په فکر نه وي، هغه غواړي پوهه د پوهې په خاطر خپله کړي، نه د هغې د گټې په خاطر چې په پوهې سره به يې خپله کړي. څوک چې د سوفيا له عقلمني سره سر او کار لري، هغه د معنوي يا روحي شيانو په فکر وي، لکه د هغه ماهيت او سرچينه د هغه د ژوند موخه، د هغه روح، د هغه برخه ليک، د کایناتو روح او خدای تعالی. هغه

غواړي د دغو شيانو په رښتين توب پوه شي او خپل ژوند له هغو سره همغږی کړي. څه وخت چې انسان په دا ډول بوخت وي هغه د يونان د فيلسوفانو په نظر، د خدايانو ژوند ته نږدې کيږي او له ننني آرامۍ نه خوند اخلي.

پايليک

بالابانس وايي چې په دې کتابکوتې کې کوشنې وشو هغسې چې د يونان فيلسوفان پوهېدل د ښه انسان د خوی ځانگړتياوې بيان شوې. د ده په نظر په اتن کې ښه او رښتيني انسانان وو. خو د يونان وگړو د خپلو فيلسوفانو د نظريو او ښوونو قدر ونه کړ او په لاره يې نه لاړل چې دا يو عام تاريخي واقعيت دی.

يونانيانو د نرم، حساس، د پياوړي روح، ازاد فکر، د تکړه وياند، سپورتي لوبغاړي ستاينه کوله. خو د دوی د ډېرو کړه وړه د غچ او بې اتفاق هم وو. په سياست کې د دوی لېوالتيا دوی په ډلو سره ووېشل، چې پای يې د ننه ښاري او د ښارونو ترمنځ جگړې وې. لويانو يې عزت ته دومره ارزښت ورکاوه چې د شخصي مقام د لاسته راوړلو له پاره يې د بري په موخه د هرې وسيلې نه که ښه او يا بده وه، کار اخېسته. دوی دا د لاسبرو حق گانه چې لاندې کړي لوت او مړي کړي.

بالا بانس وايي چې د افسوس ځای دی چې د سوکرات د مړينې نه دوه نيم زره کاله تېر شوي خو بيا هم د ده او نورو اخلاقي نظريې د وگړو په ناپوهۍ بريالی شوې نه دي. جگړه، بې رحمې، نژادي جگړه، بې وزلي، سياسي فساد، حرص او ځان غوښتنه لا هم زموږ سره دي. نو يو څوک شايد ووايي چې د ښه توب ايډيال او د ښه انسان ځانگړتياوې هغسې چې په دې ليکنې کې تر څېړنې لاندې نيول شوي د اندازې نه دغومره لوړې دي چې د عادي فناکېدونکي په ژوند کې به عملي نه شي، ځکه چې هغه نه يوازې د اخلاقي ځواک لوړه درجه، بلکې ذکاوت هم غواړي چې ډېر يې له هېڅ يوه څخه بهر نه ښکاري.

دی زياتوي سره له دې چې ومنله شي، چې د ښه انسان کلاسيک ايډيال يوازې لږو انسانانو ته منحصر دی دا مانا نه لري چې د هغو اعتبار او ارزښت لږ دی. يو ايډيال داسې يو شی دی چې وررښه دلو ته يې بايد زيار وايستل شي. بالابانس وايي چې له ځينو تضادونو سره سره په عمومي ډول د يونان فيلسوفانو داسې حس کوله او موږ بايد ورسره موافقت وکړو، چې هر انسان د خپل استعداد او ذکاوت په حدودو کې د ننه خپل ځان ته مسؤل دی چې څومره کولی شي، د ښېگڼې په زينه پورته وڅيږي.

انسان هم جذباتي او هم عقلي وي، که يوازې په جذبې يا احساس سره حرکت

وکړي، د مصيبت په لور درومي، که يوازې په عقل سره خوځيږي، سست او بې اغېزې وي، خو دا پوره شونې ده او په واقعيت کې دا اړينه ده چې د انسان عقل او احساس سره په ګډه کار وکړي او احساس د عقل په ذريعه رهنمايي شي.

مور وې بايد اخلاقي واوسو؟

د جمهوريت په يوه ډيالوګ کې يو چا شکايت کړی، چې که ښځې د دوی په ډله کې راوړلې شي، چې زده کړه وکړي چې د دولت ساتونکې شي دوی به د خپلې ساحې نه بهر شوې وي. ځکه په لرغونې زمانه کې د ښځې ځای د ننه په کور کې و. اپلاتون خواب ورکوي، چې په ټولې کې د يوه چا شخصي مقام د هغه د جنس پر بنسټ نه، بلکې بايد د هغه د ظرفيت او د وړتيا د پرنسيب له مخې، وټاکل شي.

پر هغه برسېره بايد په ياد ولرو چې نوميالی اسپه سيا (Aspacia) د پريکلس معشوقه او د سوکرات فکري ملګرې وه، ساپ هو (Sappho) بډمي شاعره وه، ايفي جينيا (Ephegenia)، ايليکټرا (Electra) او انټي کون (Antigone) د يونان په تراژيډيو کې مرکزي رول لوبولی دی، هيرا (Hera)، ارټي مس (Artemis) او افرديت (Aphrodite) د يونان خدايانې وې او اتېنا (Athena) د عقل الهه او د اتن ساتونکې بزرګه وه.

درې دېرشم څپرکي

د انسانتوب په اړه د اخلاق پوهنې پرنسيپونه

څنگه چې د څو لسيزو جگړو په پايله کې افغاني ټولنه د فکري، اخلاقي او د بې باورۍ په بحران اخته ده، کاکړ د افغاني ټولني د بيا رغونې په پروسه کې د هغې اخلاقي رغونه دېره اړينه گنله. ځکه نوموړي د بالابانس د «دښه انسان کلاسيک ايډيال» کتاب پسې «د انسانتوب په اړه د اخلاق پوهنې پرنسيپونه» د اندربو. س. ورگا (Andrew. C. Varga) کتاب په پښتو وژباړه تر څو د افغان روڼ اندو پام دغې مهېې موضوع ته واړوي.

د اخلاق پوهنې موضوع

د اخلاق (Ethics) د اصطلاح ريښه (Ethose) يوناني کليمه ده چې مانا يې دود ده. لرغونو يوناني فيلسوفانو درک کړه چې د بدلېدونکو دودونو (د کاليو اغوستل، فېشن کول، او د قومي خلکو له خوا د بيلو خوارکي شيانو برابرول) او د پاييدونکو دودونو (په ژمنه وفا کول، رښتيا ويل، د نورو د ملکيت او ژوند رعايت کول) تر منځ توپير شته او دا يې اړينه وگنله چې دا توپير وڅېړي. دوی د پاييدونکو دودونو څېړنه (Ethica) ونوموله چې انگرېزي اصطلاح Ethics د هغې نه راوتلی ده. د لرغوني روم فيلسوفانو د اېتوس يوناني کليمه په لاتيني کليمه (Mores) واړوله او د هغې نه انګلسي کليمه (Morality) راووتله.

کاکړ وايي چې عام ذهنيت دادی چې اخلاق پوهنه د ښه توب او بدتوب موضوع څېړي. دا لنډه وينا سمه ده خو دا نه شي ښودلی چې ښه او بد څه ته وايي؛ ايا دا مفهومونه نسبي يا مطلق دي؛ کوم اصول او پرنسيپونه لري؟ ايا د انسان کړنه په خپل ذات کې ښه يا بده ده او يا د کړنې نه د باندې لاملونه دي چې د ښه او بد پرنسيپونه ټاکي؛ هغه معيارونه کوم دي چې د هغو له مخې ښه او بد مالوم کړو.

ورگا وايي چې د انسان پوهانو او تاريخپوهانو څېړنې ښيي چې د ښه او بد موضوع دېره پخوانی ده. د سلوک مقررې چې د ښې کړنې سپارښتنه کوي او بد عمل منع کوي، په لرغونو زمانو کې موجودې وې. ښه سړی هغه و چې د هسک څښتن يا خدايکوتو د قانون رعايت يې کاوه. په دې ترتيب اخلاق پوهنه د فلسفي يوه څانګه ده چې هغه «به د انساني

کړو د رښتین توب او یا غلط توب مطالعه وکړله شي. «۱۰۶۵» کاکړ وايي چې انسان د خپل طبیعت له مخې یو ټولنیز موجود دی او اړ دی چې له نورو سره گډ ژوند وکړي. گډ ژوند انسان اړ کوي چې د نورو انسانانو سره اړیکې او یو نظم ولري. دی همداسې اړ دی چې نورو ته هم هغه حقوق ومني چې د ځان له پاره یې غواړي. انسان د عقلي قوې او ارادې خاوند دی نو باید د ځینو پرنسیپونو له مخې ژوند وکړي چې ځان خوښ او نېکمرغه کړي او په دې ډول خپل طبیعت د بشپړتوب پورې ته نور هم نږدې کړي. دا ټول لازمي چې انسان باید اخلاقي پرنسیپونه ولري او د هغو له مخې ژوند وکړي. اوس به وگورو چې اخلاق پوهنه په کوم ډول علمونو پورې اړه لري.

مثبت او معیاري علوم

مور پوهېرو چې علمونه بیانیز یا مثبت (Positive) یا معیاري (Normative) دي. مثبت علوم د شیانو او پېښو بیان کوي خو په خپلو موضوعگانو باندې قضاوت نه کوي. فزیک، کیمیا، بیالوژي او نور د مثبت ساینس بېلگې دي. خو نورماتیف علمونه د قانونونو، نورمونو یا معیارونو نه بحث کوي او په هغو سره د څېړنو په موضوع گانو قضاوت کوي. نورماتیف علوم د قضاوت یا حل له پاره قانونونه باسي او دستور ورکوي. د بېلگې په توگه بنکلا پېژندنه د هغو نورمونو نه بحث کوي چې د هغو له مخې مور په پېژندل شویو شیانو باندې قضاوت کوي چې هغه بنکلي یا بدرنگ دي. اخلاق پوهنه په نورماتیف ساینس پورې اړه لري په دې چې د اخلاقي نورمونو له مخې د هغې په موضوع قضاوت کېږي. اوس مهال د اخلاقي نورمونو د اعتبار مطالعه په (Meta-ethics) یادېږي. ځنګه چې د انسان د کړو ښه توب او بدتوب د اخلاق پوهنې موضوع ده مور اړ یو چې پوه شو چې «ښه» او «بد» څه ته وايي.

ښه او بد

د «ښه» کلیمه په دوو شېبو کارول کېږي: لومړی دا چې د «ښه» کلیمه په نسبي ډول کارول کېږي. د بېلگې په توگه د وچکالی په حالت کې به بزگر ووايي چې باران ښه دی خو هغوی چې مېلې ته ځي وښه وایي چې باران بد دی. په دې ترتیب ځینې شیان او کره ښه کتل کېږي چې غوره شوې موخې ته د رسېدلو له پاره وسیله وي. دوهم دا چې د «ښه» کلیمه په مطلق ډول کارول کېږي. د بېلگې په توگه د منو په بڼ کې د منې یوه ونه چې ډېرې ښې منې وکړي پرته له دې چې د څښتن عاید په نظر کې ونیسو د ښې منې ونه یې گڼو. په دې توگه

هغه وخت چې يو شی خپل بشپړ ظرفيت واقعي کوي د هغه د شته والي بشپړتوب ته ښه ويل کېږي. په دې توگه د «ښه» کليمه په نسبي يا مطلق ډول کارول کېږي اوس به وگورو چې اخلاقي ښه توب څه شی دی.

اخلاقي ښه توب

د «ښه» اصطلاح د سپړلو وروسته مور کولی شو چې په ځانگړې توگه يې د انسان په کړو باندې پلې کړو په دې چې د اخلاق پوهنې موضوع ښه او بد دي، چې په انسان کې موندل کېږي. هغه مهال چې مور د انسان په اړه د «ښه» کليمه يادوو، هغه بيلې ماناگانې لري. د بېلگې په توگه زلی د کرکت ښه لوبغاړی دی. زلی د کرکت په لوبو کې ښه مهارت لري خو دا دغه مانا نه لري چې دی به هرو مرو ښه سړی وي. داسې بېلگې شته چې د کرکت ځينې ښو لوبغاړو د پيسو په بدل کې خپل ټيم د ناکامۍ سره مخامخ کړی او د خپل هېواد نوم يې بد کړی دی. دا بېلگه راښيي کله چې مور يو څوک ښه سړی بولو نو هغه بايد نه يوازې په خپل کسب کې ښه مهارت ولري بلکې په انسان پالنه کې هم ښه وي. دغه ځانگړی انساني ښه توب اخلاقي ښه توب دی.

هېڅوک په اخلاقي لحاظ نه ښه او نه بد زيريدلی دی. دی د لويېدو په بهير کې د ښو يا بدو کړو په کولو سره ښه يا بد کېږي. د دې نه داسې ښکاري چې ښه توب يا بدتوب تر څه اندازې د انسان په عمل کې نغښتی دی. له دې امله د انسان د عمل جوړښت او طبيعت د اخلاقياتو له پاره زموږ په لټون کې اساسي اهميت لري. د دې له پاره چې د انسان د ښه توب سرچينې يا د هغه د اخلاقي ښه توب جوړونکی لامل پيدا کړو نو بايد د انسان کړنه (عمل) وسپړو او هغه ځانگړنه يې ومومو چې دی ښه کوي.

انساني کړنه (عمل)

انسان په ځانگړي ډول د څلوربولو نه د عقل او ازادې ارادې په وړتياوو سره توپير لري. زموږ ځنې کړنې چې مور يې ترسره کوو، په ځانگړتياوو کې د حيواناتو د کړنو سره توپير نه کوي، په دې چې عقل او ازاده اراده د هغو د رامنځته کېدلو لاملونه نه دي. د بېلگې په ډول غير ارادي کړنې، يا هغه عملونه چې انسان پوره بلې خوا ته وگرځوي. انسانان ډېر داسې کړه لکه خورل، اورېدل، له درد نه تېښتېدل، يا د خوند لټول ترسره کوي چې هغه ځانگړتياوې لري، چې حيوانات يې کوي. دا ټول داسې ښکاري چې هغه په حيواناتو او انسانانو کې سره گډ دي، خو انساني کړه د پوهې او په ازادۍ سره د عمل

کولو له امله له حیواني کړو نه توپیر کوي.

د حیواناتو عملونه په طبیعي غریزې یا غوښتنې سره ټاکل کېږي. خو انساني عمل هغه دی چې انسان ترېنه خبر وي او په ازادۍ یې ترسره کوي. هیڅ داسې عمل نه شته چې د مقصد په اړه یې پوهه نه وي، ځکه چې انسان کېدل په دې مانا دي چې په عقل اداره شي. داسې پوهه د ازادۍ د تمرین له پاره اساسي ده، په دې چې رښتیني ازاد انتخاب زموږ د ازادې ارادې پرته نه شته دی. هغه مهال چې موږ په انساني شېوې سره عمل کوو، لومړی موږ د خپل عمل مقصد درک کوو او بیا په ازاد ډول هغه ترسره کوو.

دا پوهه او ازادې ده چې موږ په عمل لاسرې کوي. کړنه په رښتیني ډول په خپله زموږ ده او د هغې له پاره موږ مسؤل یو. مسؤلیت د پوهې او ازادۍ نه ولاړېږي. ځکه اخلاقیات او په ځانگړې توګه ښه توب په رښتیني ډول په انساني عمل کې ځای لري. له دې نه ښکاري چې د انتخاب ازادې او د هغې نه راولاړ مسؤلیت د اخلاقیاتو مخکیني شرط دی.

د مخه مو یادونه وکړه چې څنې کړنې لکه رښتین توب په وعده وفا کول، د دندې ترسره کول په عالمي ډول ښه یادېږي، په دې چې د پوره انساني مفکورې سره سمون لري ځکه دا ځانگړتیاوې په یوه انسان کې رښتیني انسان پالنه پیاوړې کوي. په دغو کړنو کې داسې ځانگړتیا شته چې د انسان د بشپړتوب سره مرسته کوي.

اخلاقي شېوې یا سیستمونه په دې اړه چې انسان څه مانا لري؟ بیل بیل فکرونه وړاندې کوي. ځینې فیلسوفان انسان داسې کني چې معیار یا نورم جوړوي چې په هغه سره د یوې کړنې ښه توب یا بدتوب ټاکل کېږي. بیا نو په دغه مانا سره د اخلاقي نورم یا معیار مانا د انسان د کړنې سره پرتله کېږي او په دغه ډول د یوه عمل ښه توب یا بدتوب ټاکل کېږي.

موږ په ورځني ژوند کې د راز راز معیارونو د کارولو سره اشنا یو لکه د اوږدوالي، وزن، حجم، تودوبې او داسې نورو له پاره له نورو معیارو نه کار اخلو.

دا مسله چې د اخلاق معیار په کوم طبیعي واقعیت ولاړ دی د بشر د اخلاقي ژوند له پاره اساسي دی. د دغې پوښتنې ځواب چې انسان څه راز موجود دی د یوه تن د مفکورې انعکاس کوي. که انسان په عمد ډول د احساس موجود وي، بیا نو هر هغه عمل چې د احساس خوند تولیدوي په اخلاقي لحاظ ښه وي، په دې چې هغه انسان په خپل انسان توب کې بشپړ کوي. او که انسان په خپل اصل کې عقلي او ټولنیز موجود وي، بیا نو د هغه کړه چې عقلاني چلند او له خپلو ملګرو سره د همغږۍ ژوند ته وده ورکوي له اخلاقي نظر نه ښه عملونه دي، ځکه چې هغوی به په هغه کې رښتیني انسانیت پیاوړی کړي.

د دې له پاره چې د اخلاقياتو معيار وڅېړو مور به لومړی په لویو معيارونو يا شپوو باندې رڼا واچوو.

جبر او اختيار

د مخه تر دې چې د جبر او ازادۍ په اړه دلايل ووايو بايد د ازادۍ او جبر مفهومونه روښانه شي.

ازاده اراده:

د علتيت اصل وايي چې له يوه مناسب علت نه پرته هېڅ عمل يا پايله منځ ته نه شي راتلی، او دا چې بې علتته پېښې هېڅ نه شته د انتخاب د ازادۍ مانا دا نه ده چې ازاد کړه علتونه نه لري. مانا يې دا ده چې اراده د يوه عمل د علت په توگه دا توان لري چې خپل ځان وټاکي، په دې چې هغه د دې قدرت لري چې د عمل بيلې لارې غوره کړي يا دغه ورتيا لري چې په ځينو حالاتو کې د يوه عمل د کولو نه ډډه وکړي.

ازادي په عمومي ډول د جبر نشتوالی دی. خو دا يوازې د ازادۍ منفي اړخ دی. د ازادۍ مثبت اړخ دا دی چې ازادي د ازادۍ له پاره تل مقصد ته د رسېدلو په لور په نظر کې نيول شوی عمل د اجرا له پاره وي. جبر شونی دی چې فزيکي، روحياتي يا اخلاقي وي. د فزيکي اجبار نشتوالی په خپل سر يا بې اختياره ازادي نومېږي. د بېلگې په ډول هغه مهال چې يو مجرم په بند محکومېږي بيا هغه ازاد گرزېدلی نه شي او له بندي تون نه وتلی نه شي. نو مور وايو چې هغه خپله ازادي له لاسه ورکړې ده. د روحياتي يا ذاتي اجبار نشتوالی د روحياتي ازادۍ يا د انتخاب د ازادۍ په نامه يادېږي. دا د ازادې ارادې جوهر دی. دغه ازادي د مسؤليت بنسټ يا سرچينه گڼله کېږي، په دې چې دغه ازاد عمل په هر هغه شخص پورې اړه لري چې يې تر سره کړی او د کولو نه يې ډډه کولی شوه. د ذاتي جبر نشتوالی د ازادۍ منفي اړخ دی. د هغه مثبتې ځانگړتيا د ارادې هغه ورتيا ده چې څه وخت د کړو ټول شرطونه موجود وي، په بيلو بيلو طريقو عمل کوي، د عمل کولو نه ډډه کوي. د يوه عمل نه په ارادي ډول ډډه کول يو ازاد انتخاب دی او هغه مور ته منسوب کېدای شي.

د اخلاقي اجبار نشتوالی اخلاقي ازادي نومېږي. د بېلگې په توگه يو قانون چې يو کړځندوی اړ کوي د هغو مالونو مالیه ورکړي چې يې د باندې رانيولې وو، د هغه دغه قابليت له منځ څخه نه وړي، چې دغه مالونه پټ کړي او د کمرک محصول ورنه کړي. خو دی په اخلاقي لحاظ اړ دی چې محصول ورکړي.

د ډېرو انتخابونو نه د يوه غوره کول د مشخصتوب ازادي نوميږي. د بېلگې په توگه که مور غواړو چې يو عمل وکړو، مور زيات وخت د څو انتخابونو موقعې لرو، لکه يو مامور د خپلې دندې د پای ته رسولو وروسته کور ته راشي هغه د دمې له پاره کولی شي سينما ته لاړ شي، کولی شي ټنگ ټکور واوري، کومه لوبه وکړي او نور. په دې توگه دی کولی شي د دغو انتخابونو نه يو غوره کړي.

جبر (Determinism):

د جبر له مخې انسان د ټولو ظواهرو سره سره بيا هم په خپلو کړو کې ازاد نه دی. د مخه مو يادونه وکړه چې د مسؤليت او اخلاقياتو مخکينی شرط د انتخاب يا روحي ازادي ده، جبر د داسې ازادۍ شته والی نه مني او وايي چې د ډېرو عواملو له امله اړ يو يوازې په مشخص ډول عمل وکړو.

بيالوژيکي جبر وايي: چې وراثت يانې هغه ډول بدن چې مور يې لرو د خپلو ټولو بيالوژيکي عملياتو او بيالوژيکي قوانينو سره زموږ ټول عملونه ټاکي. دا چې مور ځنگه چلند کوو، زموږ په بيالوژيکي جوړښت پورې اړه لري. ب. ف. سکينز وايي چې چاپېريال زموږ چلند ټاکي او د يوه ځانکړي سړي کرکټر او چلند د ټولنيز او فزيکي چاپېريال محصول دی. له دې کبله د ده په نظر مسؤليت او اخلاقيات مانا نه لري. هېڅوک بايد د خپلو کړو جزا ونه ويني. د دغه نظر له مخې انسان د چاپېريال له خوا په مهارت سره اداره کېږي او د هغه چلند يا سلوک د چاپېريال د دغو ټولو اغېزو ټولگه ده.

زيکمونډ فرويد وايي چې بې اختياره شعور يا لاشعور زموږ پر کړو باندې ټاکوونکی رول لري او د انتخاب ازادي هسې يو نوم دی. تحليلي روحيات زموږ د عملونو په پټو علتونو باندې رڼا اچولی شي. روحي جبر تايدوي چې طبيعي ميل د عملونو تر ټولو پياوړی محرک دی. انسان يوازې طبيعي ميلونه بيا بيا له نظر نه تېروي او تر ټولو پياوړی محرک د عمل بهير فيصله کوي. که په نورو ټکو ووايو تر ټولو پياوړې غوښتنه د انسان عملونه اداره کوي.

منډې جبر دا مانا لري چې هسک څښتن د کایناتو بهير د انسان د کړو په گډون د مخه ټاکلي دي. دا تيوري د قسمت سره يو گنل کېږي. په دې تيوري کې دا ښکاره شوې نه ده چې د تقدير د کارونو مسؤل څوک دی. په دې چې ټولې پېښې د قسمت په زور پېښېږي او انسان نه شي کولی د پېښو بهير وټاکي.

د انتخاب شته والي ازادي

هغه کسان چې د انتخاب په ازادي عقیده لري دا نه مني چې زموږ ټول عملونه ازاد دي. شونې ده چې د چاپېريال سيستم، فزيولوژيکي جوړښت، ځينې ارثي ځانگړتياوې، ځينې روحي ميلونه او روحي يا عصبي ناروغۍ دومره پياوړي شي چې يو شخص اړ شي د خپل عمل ازادي له لاسه ورکړي. له دې سره سره دوی عقیده لري چې انسانان په عمومي ډول په خپلو ډېرو عملونو کې ازاد او مسؤل دی، د هغو په اړه چې يې په ازادي ډول او په پوهې سره ترسره کړي دي. د ازاد انتخاب د شتون له پاره دا دليلونه وړاندې کوي:

۱- د ازادۍ سملاسي خبرتيا: فلسفي روحيات په دې ټينگار کوي چې ټول انسانان د ازادو پرېکړو نېغ شعور لري. موږ د کړنې نه پخوا له خپلې ازادۍ نه خبرتيا لرو. موږ دا توان لرو چې د کړو تر منځ انتخاب وکړو. کله چې موږ پرېکړه کوو، نو موږ د خپلې ازادې پرېکړې په اړه فکر کوو او باوري کېږو چې زموږ پوهه سمه ده.

۲- د ازادۍ نانېغ شعور- موږ پخوا له عمل نه د فکر کولو په واقعيت پوهېږو. موږ د خپل عمل د کولو د پلوي توب او مخالفت دليلونه تلو ځکه چې موږ پوهېږو چې په پای کې دا موږ يو چې په يوه او بل ډول پرېکړې ته رسېږو.

۳- د شخصي مسوليت عقیده- ټول رسېدلي کسان د هغو کړو مسوليت مني چې په خپله يې په ازادې او فکر سره ترسره کړي وي. ځنکه چې موږ د خپلو کړو مسوليت منو په همدغه ډول نور هم د هغو د خپلو کړو مسول گڼو. په ټولې کې ژوند د مسوليت په همدغه احساس باندې ولاړ دی او له هغه نه پرته منظمه انساني ټولنه به شونې نه وي.

۴- د ازادۍ د شته والي اتفاق: په دې اړه عمومي اتفاق دی چې انسان ازاد دی. دغه عمومي اتفاق په ټولنه کې له څو واقعيتونو نه ښکاره کېږي. ځنکه چې موږ د خپلو کړو مسوليت په غاړه اخلو په نورو باندې هم موږ په دغه ډول قضاوت کوو. د بېلکې په توگه کله چې په موږ بريد کېږي د قواږې په ښودلو، د عمل کولو په شپوې او په پلان کولو باندې داسې غبرگون ښیو لکه چې ازاد وو.

۵- د عدالت ترسره کول: زموږ ټولنه په دغې عقيدې ولاړه ده، چې انسانان د خپلو کړو مسول دي. ځکه چې دوی د انتخاب کولو ازادي لري. په متمدنو ملتونو کې دا سيستم شته چې د يوه تورن د ازادۍ اندازه وگوري. که دماغي اخلال ولري د يوه غير قانوني عمل مسول نه گڼل کېږي. په دې توگه د ازادۍ او مسوليت اندازه يې په اسانۍ مالومېږي. او عدالت تر سره کول د دغه واقعيت له مخې کېږي.

۶- ټولنيز چاپېريال او کلتوري مخينه زموږ په انتخابونو اغېز لري.

۷- موږ د يوې موخې د پوهې نه پرته، يا بې له دې چې محرک ولرو، يو رښتيني انساني عمل نه ترسره کوو. روحي جبر تايدوي چې موږ په لازمي ډول تر ټولو لوی محرک تعقيبوو. خو دا پياوړی محرک کوم دی؟ تر ټولو پياوړی محرک هغه دی چې بريالی وي. موږ د خپلو محرکانو نه يو غوره کوو چې ميدان يوسي. طبيعي ميل اراده نه مجبوروي، خو انسان په ازاد ډول پرېکړه کوي چې د دغه يا هغه ميل په پيروی کړنه وکړي.

انساني ازادي په کړنه کې تمرین کيږي چې د يوې لورې موخې له پاره کيږي. د بېلگې په توگه که يو زده کوونکی وغواړي چې د طب ډاکټر شي نو د هغه دا پرېکړه به د دغه مقصد په لور د هغه ډېر فعاليتونه متوجه کړي. دی به اړ وي ټول هغه مضامين غوره کړي چې ورته لازم وي. څه وخت چې د ډاکټرۍ ډيپلوم ترلاسه کړي د ده هغه لومړی پرېکړه چې د درملنې ډاکټر شي د ده د ټول ژوند په شېوه اغېز شيندي. اوس دا پوښتنه منځ ته راځي چې ټول ازاد عملونه په برابر ډول ازاد دي او يا د ازادۍ بيلې درجې او اندازې وي او په پايله کې د مسوليت مختلفې درجې به ولري؟ دغې پوښتنې ته ځواب د شخصي اخلاقياتو او د عدالت ترسره کولو له پاره ډېر اهميت لري. ځنګه چې عقل او اراده دواړه د يوه ازاد عمل په رامنځ ته کولو کې رول لري، خو دغه دواړه وړتياوې د خپلو دندو په سرته رسولو کې د ځينو عواملو له امله اغېزمنې کيږي، شونې ده چې د يوه شخص د ازادۍ اندازې او مسوليت ته بدلون ورکړي.

هغه اغېزونه چې عقلي قوه اغېزمنه کوي

زموږ په ورځني ژوند کې ځيرتوب او انحراف په بيلو درجو پېښېدل شي. موږ دنده لرو چې څه کوو ورته ځير شو په تېره چې عمل مهم وي.

د دې له پاره چې زموږ د تمرکز يا ځيرتوب قوت ډېر شي د «دماغ کنټرول» تخنيکونه د ځينو تمرينونو سپارښتنه کوي. سره له دې هم داسې پېښيږي، چې يو څوک په نه ملامت کېدونکې توگه منحرف شي او چې څه کوي په پوره اندازه ورته ځير نه شي. انحراف د يوې موضوع واضحه پوهه محدودوي، چې شونې ده مسوليت لږ کړي. د بېلگې په ډول يو موټر چلوونکی هرو مرو بايد سپرک او ترافیک ته پام وکړي او څه وخت چې پوه شي د سټريا يا نورو خنډونو له امله د فکر تمرکز کولی نه شي، بايد موټر ونه چلوي.

ناپوهي: ناپوهي هم د عقل قوه اغېزمنه کوي. هغه ناپوهي چې علاج يې نه کيږي په نه لاندې کېدونکې ناپوهۍ باندې ياديږي. دا هغه وخت پېښيږي چې ان موږ شک نه کوو چې د

يوه ازاد عمل د ځينو اړخونو په اړه د ناپوهۍ په حال کې يو. د بېلګې په توګه يو پوسته رسوونکي به خيال ونه کړي په هغې پوستې کې چې دى يې رسوي بم ايښودل شوى دى. په داسې ناپوهۍ به ان د ښه څيړتوب نه وروسته هم هيڅ لاسې ترلاسه نه کړو ځکه چې د هغې په ځينو اړخونو مور هيڅ پوهېداى نه شو. هغه ناپوهي چې په پوره څيړنې او پلټنې به ورباندې غلبه وشي په فتح کوونکې ناپوهۍ باندې يادېږي. د ناپوهۍ د پايلو په اړه په فکر کولو سره مور دې نتيجه ته رسېږو چې نه لاندې کېدونکې ناپوهي مسوليت له منځه وړلى نه شي خو ملامتيا به لږه کړي. په دې ډول ناپوهي به د يوه عمل پايلو ته راجع شي. په ځينو حالاتو کې به يې مسوليت لږ شي او په ځينو حالاتو کې به پوره له منځ نه لاړ شي. خو مور دنده لرو چې د يوه ازاد عمل پايلې په نظر کې ولرو او نورو ته د شونې زيان مخنيوى وکړو.

تعصب: هم عقلي قوه اغېزمنه کوي. ځينې کسان د نژادې، ديني او نورو ځانګړتياوو له مخې خپل نظرونه جوړوي. خو څه وخت چې يو څوک پوه شي يا شکمن شي چې د هغه ځينې کړه د تعصب له مخې کېږي، هغه دنده لري چې د خپلې ناپوهۍ چاره وکړي او که نه دى به په اخلاقي لحاظ د هر هغه عمل له کبله چې نورو ته زيان اړوي مسول وي.

وېره: هم عقلي قوه اغېزمنه کوي. وارکا وايي چې وېره دغسې يوه کليمه ده چې بېلې ماناوې لري شي. يوه به يې د خطر يا ناوړې پېښې خبرتيا يا انتظار لرل وي. د بېلګې په توګه يو زده کوونکى وېرېږي چې که په کورس کې ليکنه وړاندې نه کړي په کورس کې به بريالى نه شي. دغه وېره به دى وهڅوي چې کتابتون ته ورشي او د ليکنې د پاره څېړنه وکړي. هغه په دې توګه په ارادې او شعوري توګه زيار باسي.

هغه لاملونه چې اراده اغېزمنه کوي

زور: اراده اغېزمنه کولى شي. زور يو فزيکي جبر دى او څه وخت چې د هغه نه د يوه چا د رضا پر خلاف کار اخيستل کېږي ازدي او مسوليت به له منځه لاړ شي. ځکه شونې ده چې فزيکي کړاو دومره سخت شي چې اراده کنټرول له لاسه ورکړي.

عادت هم کېداى شي په ارادې اغېز وکړي. عادت د يوه چلند طرح ده، چې دې ځينو دواګانو په کارولو سره د هماغه يو عمل تکرار غوښتل کېږي. د دې له پاره چې مور يو نورمال ژوند پرمخ يوسو بايد ځينې عادتونه خپل کړو لکه لوستل، ليکل، قدم وهل، د موسيقي اورېدل او نور. له بلې خوا دا ښه څرګنده ده چې د تمباکو، الکولو، هېروين او نورو کارول په عادت اوري او شونې ده چې د فزيولوژيکي ډيپرېشن لامل شي.

اخلاقيات جوړيږي يا موندل (کشف) کيږي؟

د مخه مو يادونه وکړه چې انسان د ښو يا بدو کړو په کولو سره په اخلاقي لحاظ ښه يا بد کيږي. نو اخلاقيات بايد د انسان په عمل کې وکتل شي. مور د دې څېړنې د اسانتيا له پاره د انساني عمل د ځانگړتياوو جوړښت وسپړلو اوس بايد هغه عامل وگورو چې د انسان عمل ښه يا بد گرځوي. د انسان عمل يوازې فزيکي عمل نه دی لکه يو ډوبېدونکی کس چې له ډوبېدو څخه وژغورل شي. انساني عمل په اول سر کې يو ارادي عمل دی چې يو شي ته ځير وي. خو اراده تر هغو چې ترسره شوې نه وي، پوره نه وي يا لږه وي، چې د پرېکړې د ترسره کولو له پاره ټينگ کوښښ شوی وي. د بېلگې په ډول اراده هغه وخت ترسره کيږي چې هغه ډوبېدونکی کس وژغورل شي.

کيميا پوه په لابراتوار کې يو شی د دې له پاره ازمي چې د هغه شي د ننه د عملونو او غبرگونو ځانگړتياوې ومومي. دی په خپله قانونونه نه جوړوي بلکې په هغه شي کې د ننه قانونونه مومي.

ايا د انساني عمل په تړاو مور ورته څه ويلي شو؟ ايا هغه عامل چې يو شی ښه يا بد کوي په خپله په عمل کې دی او که د باندې نه پرې اضافه کيږي؟ هغه معيار يا نورم کوم دی چې مور ته وښيي چې دغه عمل ښه يا بد دی؟ کله چې مور پيدا کېږو په خپل انسانتوب کې پوره او بشپړ نه يو. خو مور کوښښ کوو چې د ټول ژوند په بهير کې د دغسې کړو په کولو سره چې له دغه پوره توب سره مرسته کوي د خپل ماهيت پوره توب ترسره کړو. ټول اخلاق پوهان تر اوسه په څرگنده يا ځنکيز ډول وايي چې ټول انسانان د نېکمرغه کېدلو له پاره زيار باسي. اخلاق پوهان بايد د عملونو ماهيت ته ځير شي چې انسانتوب سموي او په دغه ډول د نېکمرغۍ د کومې بڼې لامل کيږي.

ټول اخلاقي سيستمونه معيارونه يا نورمونه وړاندې کوي چې يو عمل د يوه کس انسانتوب ښه کوي. دغه سيستمونه يو د بل نه په خپلو معيارونو کې توپير کوي.

د اخلاقياتو معيارونه

ورکا وايي چې مور ټولې هغه اخلاقي تيوري گانې يا نظرونه چې د تاريخ په بهير کې منځ ته راغلي، کتلی نه شو. مور به يوازې د اخلاقو هغه څلور لوی ډولونه وگورو چې د اخلاقياتو په واقعيتونو يا استدلال ولاړ معيارونو څېړنې پورې تړاو ولري.

لومړی ډله:

دا ډله باور لري چې د اخلاقي حکمونو بنسټ په جذباتو (Emotions) ولاړ دی. دوی وايي چې اخلاقي حکمونه يا د اخلاقي ارزښت حکمونه بې مانا دي. داسې شپوه نه شته چې مالومه کړای شي چې هغه رښتيني يا ناسم دي. ارزښتي قضاوتونه د جذباتو بيانونه دي. په دې د دوی تيوري گانې جذباتي تيوري نومېږي.

د دغه تيوري لوی استازی الفريد اير (Alfred Ayer) دی چې په ۱۹۱۰ کال کې زيږيدلی و. ورگا وايي چې نوموړي خپله تيوري د ويانا کړۍ (Vienna Circle) د علم پوهنې د پرنسيپونو پر بنسټ را ايستلې وه. دوی د ۱۹۲۰ لسيزې په لومړيو کلونو کې د منطقي مثبت توب فلسفه په ويانا کې مطالعه کړه او انگلستان ته د ستنېدو وروسته د دوی تيوري د مثبت پالنې (Positivism) پر پرنسيپونو ولاړه ده.

د اير په نظر بيانونه يوازې دوه ډوله: تجربې بيانونه او اخلاقي بيانونه دي. تجربې بيانونه په حسي تجربې او د ساينسونو په عصري متودونو سره تاييديږي چې هغه په پای کې د تجربې په پرنسيپ ولاړ وي. د اير په نظر اخلاقي بيانونه بې مانا دي، په دې چې هغه په هېڅ دغو طريقو سره نه تاييديږي. هغه نه رښتيا او نه غلط دي. هغه صاف ساده بې مفهومه دي. اخلاقي حکمونه يوازې زما احساسات ښيي چې زما څه ښه يا ښه نه ايسې. دغه بيانونه علمي افادې نه بلکې جذباتي افادې دي. شونې ده چې هغه هيلې او ټينکې غوښتې وي. کله چې وایم يو شی په اخلاقي لحاظ ښه دی، زه په برابر ډول د هغه له پاره ښه ايسېدنه اعلاموم. کله چې وایم يو شی په اخلاقي لحاظ بد دی، زه يوازې د هغه له پاره ښه نه ايسېدنه څرگندوم. اخلاقي ارزښت د رښتيني نړۍ کومه برخه نه ده او په پای کې هېڅ اخلاقي سيستم رښتيني يا غلط ثابت کېدای نه شي. ځکه د دې تيوري پلويان د نه پېژند پالنې (Non Cognitivists) په نامه هم ياد شوي دي.

چارلز سټېونسن (Charles Stevenson) وايي چې د اخلاقي بيانونو مانا گړد سره غېر علمي ده. مور د خپلې ښې ايسېدنې يا بد ايسېدنې له پاره دليلونه ورکوو، ځکه چې زموږ ښه ايسېدنه يا بده ايسېدنه په منطقي شپوې سره تړلې ده. اخلاقيات د دغې ښې ايسېدنې يا بدې ايسېدنې د دغې منطقي همغږۍ تحليل کوي او په دې ډول زموږ د اخلاقي قضاوت له پاره يو څه دليل ورکوي.

وارگا وايي چې د جذباتي تيوري پلويان په نسبي توگه يوه وره ډله ده، چې هغه هم د انگلو ساکسون فيلسوفان وو. دغه تيوري د ډېرو نيوکو لاندې راغله او په دغو نږدو

وختو کې يې په فلسفي کړيو کې خپل نفوذ له لاسه ورکړی دی.

دوهمه ډله: نېغ درک پالنه

دوهمه ډله په دې عقیده دي چې مور په خپلو عملونو کې ښه او بد پېژنو خو دليل ورته ویلی نه شو چې کوم یو یې ښه او کوم یو یې بد دی. ډېر خلک په خپل انساني ژوند کې په اخلاقي لحاظ له ښه او بد څخه خبرتیا لري. نېغ درک پالان (Intuitionists) وايي چې ښه او بد په حسي يا نېغ درک سره پېژنو. دوی د اخلاقياتو په اړه کوم افراطي معیار نه وړاندې کوي.

د طبیعت پالنې ناسم توب

جورج مور (George-e- More) دودیز اخلاقي سیستمونه تر نیوکې لاندې ونيول په دې چې زیار باسي اخلاقي ښه توب تعریف کړي. دی په دې باور دی چې د ښه مفهوم تعریف کېدای نه شي ځکه چې یو مفهوم چې په اجزا سره تحلیل شي ټول تعریف ورنه جوړیږي. خو ځنګه چې ښه یو ساده مفهوم دی او په برخو وېشل کېدای نه شي چې د هغو د سپړنې په اساس تعریف شي. د مور په نظر ډېر اخلاقي سیستمونه د «ښه» اصطلاح د یوه بل شي په تړاو تعریفوي. خوند پالان یې د خوند په تړاو پېژني، خیر یا کټه رسوونکي یې له کټورتوب، نور سیستمونه یې د ځان- پوهې، ځان- اکمال یا د هسک څښتن په تړاو تعریفوي.

د اخلاقي مفهوم تیوري

انتوني.ا. کوپر په خپلو اثارو کې ښېکنه یا اخلاقي ښه توب د «طبیعي مهربانۍ، یا د سخاوت عاطفې» او د کرکې او دښمنۍ «غیر طبیعي عاطفو» تر منځ د توازن پایله بولي. دی وايي چې د دې له پاره چې مور مناسب توازن ترسره کړای شو باید د دغو عواطفو مثبت او منفي توازن وپېژنو. دی د بېلګې په توګه وايي چې «له اول وروکتوب نه د مهربانۍ او مخالفت چلند توپیر په اسانۍ کوو». لومړي ته کش کېږو او دوهم نه بېزاره کېږو. دی دغه قوه چې په هغې سره دغه توپیر کوو اخلاقي حس (Moral sense) نومېږي. داسې ښکاري چې دغه اخلاقي شعور د جذب او دفعې حس وي. لکه چې ښکلا ته جذبېږي او بدرنګي دفع کوي. دغه اخلاقي شعور د اخلاقي حساسیت انعکاس دی، چې زموږ د رښتیني یا غلطې ارادې د انتخاب دلیل دی.

جوزف بتلر ويل چې دا درې پرنسيپونه دي چې انسانان په اخلاقي ژوند کې تحريک کوي: د خير رسولو پرنسيپ، د ځان مينې پرنسيپ او د ژور سوچ پرنسيپ

فرانس هوچسن تاييدوي چې مور يې له عقلايي محاسبې نه د ښکلا نېغ درک لرو. دی دا هم وايي چې عملونه هم د اخلاقي ښکلا په شان په نېغ فهم سره درک کوو. اخلاقي شعور يو ډول داخلي شعور دی او هغه عملونه تنظيموي او کنټرولوي.

ادم سميت د سکاټلنډ په کلاسکو کې د فلسفې استاد و او په هغه فکري ښوونځي پورې يې اړه درلوده چې اخلاقي ښه والي ته يې ځانگړی مفهوم ورکړ. دی له مناسب يا ښه سلوک په اړه وغږېد، چې له هغه يې موخه اخلاقي ښه توب و. د ښه چلند دغه مفهوم په مور کې يو ډول منصف يا «بې پرې مشاهد» دی. انصاف يا بې پرې توب هغه وخت ترسره کېدای شي چې که مور خپل چلند هغسې وگورو لکه چې د بل چا وي، مور به خپل عمل ښه يا بد وگڼو او دا به له هغو احساساتو له مخې وي، چې زموږ عملونه يې تحريک کړي دي. د دغه مناسب چلند يا انصاف حس وجدان نومول کېدای شي چې هغه د خواخوږۍ طبيعي حس دی. په دې توگه د نېغ درک پالنې د ښوونځي پلويان دې پایلې ته رسي چې مور د ښه له پاره خواخوږي او د شر له پاره دښمني لرو. دوی په پایله کې وايي چې په انسان کې به اخلاقي شعور يا کومه قوه وي چې دغه غبرگونونه رامنځ ته کوي.

ورگا وايي چې د دې تيوري منتقدان باور لري چې د دغو عواطفو سرچينه بې له دې چې دغسې اخلاقي شعور پخوا له پخوا وکښل شي، شرح کېدای شي. مور په وروکتوب کې د خپلو پلرونو، ميندو، ښوونکو او ټولني له خوا پوهول کېږو چې ځينې کړه ښه دي او ځينې کړه بد دي چې بايد ورڅخه ډډه وشي. زموږ د ودې په يون کې د خپلو قضاوتونو تکرار کوو. دا طبيعي ده چې مور به له بې رحمۍ او بې عدالتۍ نه په تېره چې هغه په مور شوي وي، زړه بدې کېږو او په مهربانۍ او روغ نيتۍ سره مجذوب کېږو.

ورگا وايي چې د يوه عمل د اخلاقي توب په اړه قضاوت په پای کې د احساس پایله نه، بلکې د عقلي دليل محصول دی. روحيات نه دي توانېدلي چې تش په نامه دغسې اخلاقي شعور يا ځانگړي قوه ومومي چې مور ته د ښه او بد عمل پوهه تياره کړي.

دریمه ډله:

دریمه ډله هغه تيوري گانې دي چې د باندنيو معيارونو وړاندیز کوي.

اخلاقي مثبت توب (Moral Positivism): دریمه ډله د اخلاقياتو سرچينه په داسې عواملو کې لټوي چې له عمل نه د باندې وي. دغه باندیني قوتونه د مرکزي مقام يا

حکومت، د پياوړو کسانو نفوذ يا اراده، د ډېره کي يا ټولنيز فشار نظر، د واکمني طبقې کټي، يا د هسک څښتن حاکمه او ازاده اراده دي، چې خپل قانونونه په ټولو انسانانو باندې پلي کوي.

دغه تيوري په ټوله نړۍ کې ډېر پلويان موندلي او نن ورځ ډېر کسان شته چې شعوري ژوند يا طبقاتي ژوند د عادت د قوې له مخې يوه ټاکلې ټولنه يا ټولنيزه شپوه د خپل اخلاقي نورم په توګه مني. ځنګه چې ټولنيز خوښونه بدلون مومي داسې هم د دوی په نظر اخلاقيات هم بدلون کوي. په دې توګه د دوی په اند اخلاق د بدلېدونکي عام ذهنيت يا شرايطو په بدلون سره ټاکل کېږي.

د ټولنيز تړون تيوري گاني

توماس هابز وايي چې انسانان د مدني ټولنې د مخه له يو بل سره د جګړې په حال کې وو. انسان يو تېري کوونکی او د ټولنې پر ضد موجود دی او په خپل لومړي حال کې له ټولو سره د ټولو جنګ و. خو انسانان تر هر څه ډېر له مرګ نه وېرېږي، او درک کوي چې دوی په يوازې توګه خپل ځان ساتلی نه شي، مدني ټولنه جوړوي او بې له شرط څخه د حکومت واکمني ته غاړه ږدي. مرکزي واکمني مقررې او قانونونه جوړوي او په خپلو اتباعو يې مني او د ښه او بد مفهوم د لومړي ځل له پاره دود پيدا کوي.

د همدغو قوانينو له مخې ځينې عملونه مجاز او ځينې منع اعلامېږي. د دغې تيوري له مخې د ښه او بد سرچينه حکومت کېږي، چې له عمل نه د باندې وي. په دې ډول د اخلاقياتو نورم يو مثبت عامل کېږي، چې رښتين توب او غلط توب له باندې څخه ټاکي. له دې تيوري نه ښکاري چې زور حق دی. حکومتونه قدرت لري، چې حکمونه وکړي او د عملونو رښتين توب او غلط توب وټاکي. په پايله کې اخلاقيات يا کانوېنشنونه قراردادي دي او د عمل په ماهيت سره نه ټاکل کېږي.

ژان ژاک روسو د خپل «ټولنيز تړون» په اثر کې وايي چې انساني ټولنه او هغه قانونونه چې زموږ چلند تنظيموي ځنګه منځ ته راغلل. دی د هوبز پر خلاف فکر کوي چې انسانانو د طبيعت په حال کې هغه څه کول چې په طبيعي لحاظ ښه و او د يوه بل پر ضد د جنګ په حال کې نه وو.

د دې سره سره هغه دا ومنله چې انسان په طبيعي لحاظ ځان غوښتونکی دی او دغه ځان غوښتنه په ټولنيز تړون سره په اخلاقي مکلفيت وړول شوه. د ټولنيز تړون عمومي بنسټ د ټولنې د غړو عمومي اراده ده چې هغه قانونونه ومنې چې د سوله يز ژوند، نظم او

د ټولو د بښکچې په خاطر پرې پلي کېږي. د طبيعت د حال نه مدني حال ته دغه بدلون د اخلاقياتو سرچينه ده. په دې توگه سياسي واکمني د ټولنو په غړو باندې د چلند يا سلوک قانون پلي کوي.

د پياوړي انسان اراده:

فريديک نيچي د ښه او بد مفهوم سرچينه پر کمزورو باندې د پياوړو برلاسي ته نه منسوبوي. باداران له ښه او بد نه د باندې وو، په مريانو باندې يې خپله اراده تېله، دوی د خپل شويو د نيوکو موضوع وگرزېدل او د بادارانو عملونه يې بد وگڼل. دغه واقعيت د بادار اخلاقياتو او مري اخلاقو سرچينه شوه.

يهوديت او عيسويت د مريانو، کمزورو، متواضعو او خورانو خوا ونيوله او د مري اخلاقياتو تبليغ يې وکړ، چې مور تر هغو لاندې ژوند کوو. د ټولني دنده دا ده چې بادار- اخلاقيات يو ځل بيا د پياوړو اخلاق له سره ژوندي کړي او د سوپرمن او د انساني نژاد ارستوکراسۍ ته وده ورکړي چې د عامه وگړو څخه جک شي، د بشر له پاره يوه ښه راتلونکې باوري کړي. زبرانسان له ښه او بد څخه پورته او د هغه اراده قانون دی.

ټولنيز فشار (عام نظر)

د عامه ذهنيت سروې گانې زموږ د ژوند برخه شوې ده. دغه د عام ذهنيت سروې په سياسي مبارزو او هم د عصري ژوند په نورو برخو کې يې نور هم اهميت زياتېږي. اکستې کومې وايي چې يو مثبت سيانس د هغو خلکو جوړښت، تنظيم او وده څېړي چې په ټولنيزو ډلو کې ژوند کوي.

ورگا وايي چې ځيني ټولنپوهان چې له خپل مثبت ساينس نه فلسفي ته مخه کوي اخلاقيات د ډېره کې د ژوند د شېوې سره يو کوي، اخلاق به په دغه مفهوم سره مثبت ساينس شي، چې عامه ذهنيت او د ډېرې اتفاق به ثبتوي. په پايله کې به اخلاق نسبي شي او د ټولنيزو ډلو په بدلېدونکي ذهنيت به ډډه ولگوي، د اخلاقي چلند تعبيرونه به د ذکي کسانو د رسنيو له خوا د ټولني د کنټرولولو پايله شي.

د هسک څښتن اراده:

سامويل پوفندروف پروتستاني فيلسوف وايي چې يو عمل هغه وخت ښه وي، چې لوی څښتن يې همدغسې اراده کړې وي او بد هغه څه چې خدای پاک رتلي وي. د دغې

تيوري له مخې دا د هسک څښتن اراده ده، نه د عمل ماهيت چې د يوه عمل رښتين توب او غلط توب ټاکي. په دې حساب د ښه او بد ټاکونکي عامل يو باندنی او مثبت توکي دی. په دې توگه پورته يادې شوې تيوريگانې په معمولي ډول د اخلاقي پوزيتويزم په نامه يادېږي، په دې چې هغوی اخلاقيات له مثبتو قوانينو يا د تولني له دودونو نه راوباسي.

څلورمه ډله

په څلورمه ډله کې هغه تيوري گانې راځي چې ادعا کوي چې د اخلاقياتو معيار د عمل په ماهيت کې مومي او د داخلي معيارونو وړانديز کوي.

د عالمي توب پرنسيپ:

د دغه پرنسيپ پلويان وايي چې کوم شی چې د يوه کس له پاره ښه يا بد وي د نورو له پاره به همدغسې وي، چې په همدغسې شرايطو کې واقع وي. د بېلگې په ډول هغه وخت چې ميندې او پلرونه خپلو ماشومانو ته پند کوي چې خپل ورونه يا خوښدې ټپي نه کړي، ځکه چې هغوی هېڅکله نه غواړي تاسې ټپي کړي. «مه يې ټپي کوه هغه دې نه ټپي کوي» دا اصل په دغه طلايي قانون کې افاده کېږي: «دغسې چلند ورسره وکړه چې ته غواړې هغوی يې له تاسره وکړي».

ايمانويل کانت د پوهې تيوري (Epistemological Theory) له مخې زموږ خالص عقل شی په خپل ذات کې پېژندلی نه شي، بلکې يوازې د پېښې يا د شيانو ظواهر پېژندلی شي. دی وايي چې زموږ عملي عقل يو شمېر گڼې (Postulates) مني په دې چې موږ يې له دې چې ځينې شيان رښتيني وگڼو، اخلاقي ژوند نه شو کولی.

د کانت په نظر يو له هغو رښتين توبونو نه چې زموږ عملي عقل يې پېژني د اخلاقي مکلفيت شته والی او عالمي خصوصيت دی. د تاريخ په بهير کې بيلو ټولنو او کسانو د بيلو اخلاقي قوانينو پر بنسټ ژوند کړی دی، خو دوی د دغو قوانينو له سترو ځانگړتياوو سره موافقه کړې، چې د هغو اطاعت به په عالمي توگه کېږي. په دې توگه کانت وايي چې موږ بايد د يوه اخلاقي قضاوت په کولو سره دغه ظاهري حال تل په خپلو کړو باندې پلي کړو چې «که هر چا دغسې وکړه څه به پېښ شي.» يا «ايا زه هيله کولی شم چې په هغه حال کې هر څوک بايد په هغه ډول عمل وکړي لکه زه چې غواړم عمل وکړم؟»

ورکا وايي چې نږدې ټول دينونه اخلاقياتو ته د لارښود په شان د طلايي قانون وړانديز کوي، يو څوک بايد انکار ونه کړي، چې دا دغسې اسان قانون په شان دی، چې په

دېرو حالاتو کې مرسته کوي خو د عالمي توب پرنسيپ په خپل ذات کې دغې پوښتنې ته ځواب نه وايي چې ځينې عملونه ولې ښه او نور يې بد دي، په دې چې هغه د منځپانگې سپړنه نه کوي، لږ تر لږه په څرگند ډول هغه يوازې د عالمي توب فارمول تر کتنې لاندې نيسي. خو فلسفي تيوري بايد د شکل نه وړاندې لاره شي او دغه وړتيا ولري چې د يوه مکلفيت منځپانگه وسپري او دليل وړاندې کړي چې د عمل يو ډول ښه يا بد دی او په پايله کې دغسې کړه ولې په عالمي ډول مجاز يا منع وکښل شي.

خوندپالنه (Hedonism):

هېډونيزم يا خوندپالنه يا د مزې فلسفه هغه سيستم دی، چې وايي د اخلاقياتو معيار خوند دی. د لرغوني يونان فيلسوف ارستي پوس (Aristippus) په دې فکر و، چې يوازې خوند ښه دی. ده خوند ښکمرغي وبلله. د ده په اند ښه عمل هغه دی چې په نېغ يا نانېغ ډول د خوند احساس ورکوي او بد عمل هغه دی چې درد او ناوړه احساس زيروي. د انسان موخه ښکمرغي ده او ښکمرغي د خوند نه راوړلېږي. په همدغه دليل ده چې د يوه عمل اخلاقي ښه والی د هغه په ځانگړتيا يا خاصيت سره ټاکل کېږي، چې خوند زيروي. په دې توگه اخلاقيات د يوه عمل د نننۍ ځانگړتيا نه جوړ وي.

ورگا وايي چې ارستيپوس او پلويان يې تر عقلايي خوند نه زيات په حسي خوند ټينگار کوي خو عاقل انسان يانې فيلسوف به خوند له اندازې نه ډېر ونه غواړي په دې چې د هغه پايله به خوښي نه بلکې درد شي. انسان ته ښايي ځان يو څه کنټرول کړي که نه هغه به د خوند مريه وگرزي چې هغه به يوه دردناکه تجربه وي. د دې مانا دا ده: چې انسان خپلې غوښتنې محدودې کړي او د دې له پاره چې په لوړه درجه خوښي او ښکمرغي ولري، بايد يو مناسب انډول وساتي.

اپيکور (Epicurus) د ارستيپوس او د هغه د پلويانو په شان د ژوند موخه په خوند کې لټوله. خو د دوی پرعکس چې د حاضر وخت په خوند يې ټينگار کاوه، اپيکور پايډونکي خوندونه غوره گڼل. اپيکور وايي ځنګه چې حسي خوند دوام نه کوي نو له دې کبله د انسان موخه عقلايي خوند دی، چې هغه په عمد ډول د روح له ارامۍ، له ذهني سوېلي او په ټولنه کې له همغږي ژوند نه راوړلېږي. ښېکښې ته د يوې وسيلې په توگه د عقلايي خوند د توليدولو له پاره ارزښت ورکول کېږي. ځان کنټرول يوه مناسبه وسيله ده، چې د ملګرتوب او عقلايي ژوند غوندې پايډونکي خوندونه زيروي. په دې توگه هغه کړه چې کولی شي زموږ ذهني ارامي يا عقلايي خوند ډېر کړي، په اخلاقي لحاظ ښه کړه دي او هغه

عملونه چې درد او اندېښنه منځ ته راوړي په اخلاقي لحاظ بد عملونه دي، چې د کولو نه يې بايد ډډه وشي.

ورکا وايي چې د خوند پالنې پلويان خوند د ښه والي سره يو کښي بې له دې چې قانع کونکي دليلونه وړاندې کړي. دا رښتيا ده چې خوند تر يوې اندازې غوښتل کېږي خو دا سمه نه ده چې زموږ د غوښتنو هر شی به ښه وي. ډېر کره په عالمي توګه ښه کڼل کېږي خو سره له دې هم هغه خوند يا لږ تر لږه حسې خوند نه توليدوي. صداقت او رښتین توب که ان په قربانۍ او سخت کار سره ترسره کېدل شي، ښه وي. د استيپوس په پرتله د اپيکور فلسفه ډېره کره او رڼه ده، په دې چې هغه د انسان روحي او عقلايي ځانګړتياوې دواړه په نظر کې نيسي. سره له دې دی هم دغه اساسي اصل ثابتولی نه شي چې عقلايي خوند او ښه والی سره بدلېدونکي اصطلاحات دي او د يوه شي مانا لري.

د ګټورتوب فلسفه (Utilitarianism):

د ګټورتوب فلسفه په دغه نظر ولاړه ده، چې خوند او درد يوازینی هڅونکی يا محرک دی، په دې ډول چې لومړنی بې موږ هڅوي چې عمل وکړو او وروستی مو اړ کوي چې د کړنې ډډه وکړو. د دغې تيورۍ له مخې زموږ د کړو روحياتي سپړنه دغه واقعيت څرګندوي، چې موږ په ضروري ډول خوند لټوو او کوښښ کوو له درد نه ډډه وکړو. دغې تيورۍ ته روحياتي هېډونيزم وايي يانې چې هغه د انسان واقعيت شرح کوي، چې دا له اخلاقي هېډونيزم نه بيل دی، چې ذاتي انسان بايد خوند ولټوي. د ګټورتوب فلسفې په اتلسې او نولسې پېړيو کې په انگلستان کې وده وکړه.

جرمي بنتهام د پيل ټکی د روحي هېډونيزم بيان دی. د ده په نظر ټول انسانان عمل کوي، چې خوند ترلاسه کړي او له درد نه ډډه وکړي. دی وايي چې انسان ځان غوښتونکی دی هغه وخت عمل کوي چې خپله ګټه يې په کې وي. کله به دی نورو ته خدمت وکړي خو په دغه حال کې د ده هڅونکی يا محرک د نورو نه بلکې شخصي ګټه ده. دی د انسان د روحياتو په بيان کې هم خوند له ښکمرغۍ سره يو کښي او دې پايلې ته رسېږي چې د اخلاقپوهې لومړی پرنسپ دا دی: چې د انسان رښتین توب او مطلوب مقصد ښکمرغي ده يانې د خوښۍ غوښتل او د درد نه ډډه کول دي. د بنتهام په نظر خوښي د کميت له مخې اندازه کېږي. څنگه چې انسان د اروايي اړتيا له مخې خوښي غواړي او له درد نه ډډه کوي د انسان د کړو موخه دا ده: چې په دغه ډول عمل وکړي چې خورا ډېره خوښي ترلاسه

کړي. ورکا وايي چې د بنتهام د تيوري مانا دا کيږي چې موږ د خوښۍ يا نېکمرغۍ د ډېرو اندازو تر منځ ازاد يو، چې انتخاب وکړو او په دغه ډول د اخلاقي قانون مانا هغه مکلفيت چې خورا ډېره نېکمرغي وغوښتل شي په پايله کې هېډونيزم له اروايي هېډونيزم څخه راوړي.

د خورا ډېرې نېکمرغۍ پرنسيپ به فرد يا ټولني ته راجع شي. که موږ د ټولني فکر وکړو موږ اړ يو د خورا ډېرو خلکو له پاره د خورا ډېرې نېکمرغۍ کوښښ وکړو. د ټولني موخه د خورا ډېرو خلکو له پاره خورا ډېره نېکمرغي ده او يو ښه حکومت بايد دغه عام ښه والی ډېر کړي.

جان ستوارت مل تر دې اندازې د بنتهام تر نفوذ لاندې شو چې د کټورتوب فلسفه د هغه دين شو. سره له دې چې ده د بنتهام اساسي نظرونه ومنل خو دغه تيوري يې اصلاح کړه. مل د بنتهام هغه نظر رد کړ چې خوندونه له يوه او بل نه يوازې په کميت سره توپير لري. مل په دې باور و چې خوندونه په کيفي لحاظ هم سره توپير لري او ځينې خوندونه د ښکته درجې او ځينې د لوړې درجې دي. دی وايي چې يو څوک ښه گني «چې نارام انسان وي نظر دې ته چې قانع سرکوزی وي.» ۱۰۶۶

مل د خوند له کيفي تصنيف برسېره د نېکمرغۍ په ټولنيزې ځانگړتيا هم ټينگار وکړ. يو څوک بايد د خورا ډېرو خلکو له پاره خورا ډېره نېکمرغي ولټوي. اخلاقي عمل يوازې شخصي نېکمرغي نه بلکې د ټولو له پاره خورا ډېره نېکمرغي ده. د ورکا په اند مل تايدوي چې نېکمرغي يا خوښي خورا لوړ ښه والی او د اخلاقياتو معيار دی. مل په ضمني توگه د انسان طبيعت د اخلاقياتو د معيار په څېر گڼي. خو له بده مرغه هغه د انساني طبيعت پوهاوی په څرگند ډول بيان نه کړ. خو دی وايي چې رښتيني انساني طبيعت د هغه له پاره د اخلاقياتو معيار دی. دی وايي چې انسان د خپل ماهيت په تقاضا مکلف دی چې عامه ښه والی پرمخ بوزي. ورکا وايي چې داسې ښکاري چې د کټورتوب د فلسفې ټول پلويان د خوښۍ له منل شوي نورم نه په ضمني ډول خارج کيږي او انساني طبيعت ته د اخلاقياتو د معيار په شان رسېږي.

د ځان پېژندنې تيوري گانې

د بالقوه استعدادونو بشپړتوب

د ځان پېژندنې په ټولو تيوري گانو کې گډ توکی هغه نظر دی چې د فرد له پاره اخلاقي ښه والی تر هغو چې شونې وي د پټې وړتيا وده ده. هغه د يو چا د طبيعت اکمال دی ، دغه

وده په همغږۍ سره د يو چا د پټ استعداد يا وړتيا غوړېدل دي، په دغه ډول چې د هغه د طبيعت ټول توکي د طبيعي خوی په کډون په نظر کې ونيول شي.

اپلاتون

اپلاتون خپله اخلاقپوهنه د خپل علم د تيوري د ميتافزيک «له طبيعت نه اخوا» پر بنسټ جوړه کړه. د اپلاتون په نظر دا فکر يا ايډيا ده نه حسي درک، چې د شيانو جوهر په واقعي ډول درک کوي. اپلاتون منطقي گنله چې د مطلقې ښکلا او مطلق ښه توب له پاره حقيقت شته دی. په بيلو بيلو شيانو کې ښکلا او ښه توب د مطلق ښه توب او مطلقې ښکلا په «ايډيايي فورم» کې کډون او انعکاس دی. په دې ډول زموږ د حسي درک جهان د واقعي نړۍ يوازې د ايډيايي فورمونو انعکاس دی. د مخکې د پاسه ټول موجودات په يوه ايډيايي فورم کې کډون کوي. داسې هم انسان د بشريت په ايډيايي فورم کې برخه لري. زموږ عقلايي قوه موږ له عالمي فورمونو له دغې رښتيني نړۍ سره نښلوي. اپلاتون وايي چې انسان په واقع کې د خپل ذهن له لارې انسان دی. اپلاتون د خوند له اهميت نه انکار نه کوي، په دې چې انسان د هغه په اند يوازې عقلي موجود نه دی. ښه ژوند د انسان له پاره د هغه د رښتيني طبيعت وده ده، چې هم په ډېرېدونکې توگه د بشريت ايډيايي فورم دی. ښه ژوند بايد هرو مرو د ذهن او حواسو د فعاليتونو له همغږي ترکيب نه جوړ وي. د ده په نظر اخلاقي ښه توب دا دی چې له کاملې نړۍ سره د ورته کولو له پاره تر هغو چې کولی شو کوشښ وکړو، خپلو پتو وړتياوو په ځانگړې توگه د خپلې پوهې ډېرولو ته وده ورکړو. دی د انسان په ټولنيز طبيعت ټينگار کوي او په پايله کې د هغه په اند د اخلاقياتو معيار د انسان يو ډينامیک او ټولنيز طبيعت دی ځکه چې دی هلته وده کوي او د ټولني په همکارۍ سره بشپړ کيږي.

دی وايي چې په ټولني کې په همغږۍ سره ژوند کول به له انسان سره مرسته وکړي چې خپل بشپړوالي ته ورسېږي. د انسان موخه دا ده چې څومره کولی شي له بشپړ ښه توب سره ورته والی وکړي. له ډېر لوړ ښه والي سره کډون به انسان ته نېکمرغي راوړي.

ارستو

د ارستو اخلاقيات د هغه په ميتافزيک ولاړ دي، چې د اپلاتون د ايډيايي فورمونو د جلا نړۍ تيوري ردوي. سره له دې هم ارستو له اپلاتون سره په يوه نظر دی، چې دغسې حقيقت شته چې د موجوداتو د عالمي ايډياکانو يا جوهرونو سره سمون کوي. هرو مرو به

يو رښتيني شى وي چې سره زر سره زر، اس اس او انسان انسان گرزوي، خو د شيانو عالمي ايديا يا جوهر په جلا ډول شتون نه لري، خو حتي ده چې هغه واقعيت په فردي موجوداتو کې پيدا کړي. ده عالمي جوهر هسې چې په فرد کې واقعي کېږي، د موجوداتو اساسي يا اصلي فورم په نامه ياد کړ. دغه فورم به طبيعت وگنل شي، ځکه چې هغه «طبيعت» د يوه موجود د مشخصو فعاليتونو سرچينه ده.

اصلي فورمونه جلا يا په خپل ذات کې وجود نه لري خو هغه د هماغه صنف موجوداتو په هر يوه ژوندي فرد کې جوړونکي عامل دی. د بېلگې په توگه هر سړی که احمد يا محمد يا زلمی يا بل دی يو انسان دی. د بشريت جوهر يا طبيعت لري، خو بشريت په دغه ډول بېل وجود نه لري.

د دې له پاره چې په ژونديو موجوداتو کې د بدلون په واقعيت پوه شو د ارستو د فلسفې اصلي توکي يانې اصلي فورم به د ژوند په بيانولو کې وگورو. په تل بدلېدونکي موجود کې يو نه بدلېدونکی زری شته، د بېلگې په توگه که د څېړی رسېدلې ونه په نظر کې ونيسو نو په هغې کې هغه څه شته چې هغه به اساسي ډول په پرکي کې و، خو هغه سره له دې هم ترې نه توپير لري.

په ژونديو موجوداتو يا هر ژوندي موجود په وده کې اصلي جوهر ماده جوړوي دا نننی پرنسپ دى، چې د هغه موجود طبيعت د هغه مشخص موجود د ودې لامل کېږي ارستو وايي څنگه چې انسان په طبيعي لحاظ يو عقلي موجود دى د خپل طبيعي واقعيت د کشف کولو او پر هغه د پوهېدلو وړتيا لري. ښه انسان بايد د خپل رښتيني طبيعت له مخې رښتين توب ولټوي او عمل وکړي. هغه عملونه چې د انسان له طبيعت سره مناسب وي، هغه موخې يا بشپړوالي ته نږدې کوي.

سان توماس اکويناس

اکويناس په اصل کې د الهياتو عالم و او اخلاقياتو ته يې له مذهبي گوټ نه کتل. اکويناس له ارستو سره موافق و چې انساني عمل د انسان له اخبرې موخې سره په ارتباط لرلو سره راوتلی دى، ټول موجودات د خپل طبيعت له مخې د خپلو ظرفيتونو د واقعي کولو په لور ميل لري او په پايله کې کوښښ کوي خپل طبيعت ته پوره وده ورکړي، د دې له پاره چې خپلې موخې ته ورسېږي.

انسان د يوه ازاد عقلاني موجود په څېر هڅه کوي چې نه يوازې د خپل طبيعت په زور بلکې د خپل عقل او ارادې په وسيلې سره خپلې اخبرې موخې ته ورسېږي. عقل او

ازادي هغه بنسټ دی چې د انسان اخلاقيات او کړنه پرې ډډه کوي. د ځان پېژندنې په دغو تيوري گانو کې گډ ټکی دادی چې انسان يو ځانگړی طبيعت لري او اخلاقيات د دوی د کړو نه جوړ دي چې د انسان سره د هغه د طبيعت د بشپړولو په واقعي کولو کې مرسته کوي.

د حالت اخلاقپوهنه (Situation ethics):

د حالت اخلاقپوهنه د وجودي يا د شته والي فلسفې (Existentialist Philosophy) په يوه ډول بنا ده. د شته والي د فلسفې نوميالی نماينده جان پال سارتر دی. ورکا وايي چې د شته والي د فلسفې هغه ډول چې سارتر وړاندې کړی دی په الحاد بنا دی. سارتر وايي چې انسان موجوديت ته اړ شوی دی.

د طبيعت قوتونو مور له رضاييت نه پرته راوستلو. زموږ شته توب اول راځي، شته توب په ازادۍ کې. انسان کوم څه چې له ځان څخه جوړوي په خپله په هغه پورې اړه لري نه په يوه ټاکلي طبيعت کې. انسان په ازادې کې د ځان له پاره ارزښتونه ټاکي او ځنگه چې دی په ژوندانه کې وړاندې ځي، دی دغه ارزښتونه د شرايطو يا د انسان د ژوند د حال له مخي بدلوي. نو په اخلاقي لحاظ ښه عمل هغه دی چې په ازادۍ کې د واقعي حال په نظر کې نيولو سره ترسره شي. د سارتر په اند د انسان عالمي حال دا دی: چې هغه د مجبوريت له مخې په دغې نړۍ کې اوسي. هغه د دې له پاره چې ژوند وکړي بايد کار وکړي، اړينه ده چې دی د نورو په منځ کې ژوند وکړي او بيا مري.

جوزف فلېچر د سارتر اخلاقيات د حالت اخلاقيات نه، بلکې د «قانون ضد» يا بې قانونه اخلاقيات وبلل. هغه خپل سيستم وړاندې کړ چې په فکر بې د حالت اخلاقياتو يو رښتيني بيان دی. فلېچر وايي: داسې ښکاري چې له طبيعي قانون او له الهام نه اخوا مينه د اخلاقياتو د معيار ورستی ټاکونکی دی. په پايله کې مهمه دا ده چې جوتنه شي چې مينه څه شی دی؟ فلېچر هاند کوي چې د مينې د درې ډولونو په توپيرونو سره دا کار وکړي.

د فلېچر درې ډوله مينې: «مينه ورکول» (Agapee)، «ملگرتوب مينه» (Philia) او «عشقي مينه» (Eros) دي. په اخلاقي لحاظ د ښه عمل ايډيالي معيار مينه ورکول يا اکاپي دی. خو د مينې هغه دوه نور ډولونه هم زموږ په انساني چارو کې ښه ځای لري.

ورکا وايي چې د فلېچر تيوري د اخلاقياتو معيار کې د مينې په اهميت ټينگار کړی دی. دا زړه راښکونکې ده چې وويل شي چې د اخلاقياتو معيار مينه ده او دا چې دا زموږ سوچه اخلاقي مکلفيت دی چې مينه ناک چلند وکړو. خو په فلېچر نيوکه کوونکي وايي چې هغه

هېڅ کوښښ نه دی کړی چې وښيي چې مینه څه شی دی. د دوی په فکر فلېچر دغو: ایا د مینې ونډه په کوم ډول د انسان د طبیعت سره ټاکل کېږي؟ مور څنگه پوهېدلې شو چې یو عمل په «مینې» سره ترسره شوی یا نه دی شوی؟، پوښتنو ته ځوابونه ویلي نه دي.

د اخلاقیاتو د نورم د کتنې لنډیز

د مخه مو ولیدل چې اخلاقي سیستمونه له یوه او بل نه د اخلاقیاتو د معیار له مخې چې دوی یې په ښکاره یا ځنگځنیز (ضمني) ډول سپارښتنه کوي توپیر لري. خو که په څیر سره وسپړل شي نو د دغو توپرونو سره سره په دوی ټولو کې یو کله توکي ته گوته نیولی شو. دوی ټول د انسان د ښېکښې د پرمخ بیولو سره علاقه من دي او غواړي چې د انسان ژوند نور هم انساني لا ډېر د قناعت وړ او نور هم بشپړ شي. ورکا وايي چې داسې ښکاري چې ټول اخلاقیپوهان په دې اړه چې انسان څه دی، یو څه ایډیا لري، او غواړي چې مور د انسان د دغې ایډیا له مخې ژوند وکړو. د دوی د انسان فلسفه څرگنده نه ده خو دا هغه اساسي بنسټ دی، چې له مخې یې دوی اخلاقي تیوري کاني وړاندې کوي، بیا نو د اخلاقیاتو مانا داسې ښکاري چې «انسان باید د خپل طبیعت په دلیل هغسې وي کوم چې دی.» ۱۰۶۷ ان هغه تیوري کاني هم چې اخلاقیات په باندینیو عواملو بنا کوي کله چې اخلاقي پوزیویټیزم خوا نیسي اړ کېږي چې د انسان په یوې ایډیا ډډه ولگوي. دوی اړ دي چې د انسان طبیعت په اخلاقي لحاظ د ښه یا بد عمل د اساس په شان تر کتنې لاندې ونیسي.

یو عادي وگړی بد عملونه د انسان د طبیعت پر ضد کني او د انسان په انسان کېدلو غېږېږي. یو څوک باید په انساني عزت سره ژوند وکړي. هر هغه قانون یا عمل چې زموږ عزت یا زموږ انسانیټ زیانمن کوي بد یا غیر انساني گڼل کېږي.

داسې ښکاري چې زیاتره اخلاقي سیستمونه لږ تر لږه په ضمني ډول د انسان طبیعت د اخلاقیاتو معیار گڼي او دا منطقي ده وویل شي چې د اخلاقیاتو اخلاقي معیار د انسان طبیعت دی. ورکا وايي چې مهمه دا ده چې د انسان د طبیعت په اړه پوهاوی سم وي او د انسان د طبیعت یو یا بل اړخ نه بلکې ټول اړخونه په ګډه د معیار په شان وگڼل شي. د انسان طبیعت له ټولو ترکیبي توکو سره لکه عقلانیت، ازادي، ټولنیز کرکټر، یو پر بل د ډډه کولو اړیکې او نور باید پوره وپېژندل شي. انسان یو نوښتگر، ځان بدلونکی او د ځان څخه لوړ کېدونکی موجود دی. دی خپل طبیعت ته د خپل عقلانیت او د خپلو علمي نوښتونو او جوړونو له لارې رسېږي. انسان داسې هم د خپلې موخې په اړه ډینامیک دی او

تل زيار باسي چې د خان نه پورته شي. دی په دې هېڅ قانع نه دی چې داسې نور څه نه شته چې دی ورسېدلی نه شي. د هغه هیلې پای نه لري.

انساني طبيعت او تاريخ

ساينس د تېرو او کانونو عمر ټاکي او وايي چې هغه د ميلياردونو کلونو په بهير کې په خپل اساس کې بې له بدلون نه په خپل حال پاتې شوي دي. خو ژوندي عضويتونه د تکامل د تيوري له مخې بدلون او وده کوي. انسان د ودې د اوږده يون پايله ده. ايا د تکامل دغه ليکه پرې شوې او عصري انسان د لومړني انسان نه توپير کوي؟ ايا د انسان د طبيعت وده لا هماغسې روانه ده؟ دغه پوښتنه د اخلاقياتو له پاره مهمه ده.

د انسان طبيعت د انساني چلند د رښتين توب يا ناسم والي معيار دی. لومړنی انسان او اوسنی انسان دواړه انساني موجودات دي او دوی له دې اړخ نه سره يو دي، سره له دې د دوی ترمنځ ډېر توپير شته.

د انسان طبيعت ډينامیک دی. د اګنېس لېپ (Agnace Lepp) په اند دا د انسان طبيعت دی چې «له خپل طبيعت نه پرله پسې ډول پورته لار شي يا کوشن کوي، چې پورته شي نه دا چې له طبيعت څخه خان پوره بيل کړي.» ۱۰۶۸ دی زياتوي چې تر هغه ځايه چې مور پوهېږو له هغه وخت نه چې انسان هوموساپين (Homo Sapien) ياني متفکر حيوان شوی له بيالوجي نظر څخه يې بدلون نه دی کړی. هغه وزرونه نه دي پيدا کړي چې والوزي خو د هغه ذکاوت الوتکې، هوايي کبښتې گانې جوړې کړې چې له مرغيو نه چټکې الوزي. د هغه اورېدل او ليدل نور گړندي شوي نه دي، خو ذکاوت يې تليفون، تلویزيون او راډيو جوړه کړې چې د غوږونو او سترگو ساحه يې پراخه کړې ده. د هغه عضله نوره هم پياوړې او کلکه شوې نه ده خو ماشينونو د هغه قوت يو ميليون کرته ډېر کړی دی. انسان د شپې تياره رڼا کوي او نور نو د شپې او ورځې په بدلېدو محدود نه دی. دی خپل هستوگنځی تودوي او سروي په دې چې د موسمونو د بدلېدو له اغېز نه خوندي وي. د هغه عقل او ازاده اراده د دغو ټولو بدلونونو علت دی. خو د انسان دغه دوه جوړونکي توکي په اصل کې د پخوا په شان دي له هغو نه پرته انسان نه شته دی.

مور بايد پوه شو چې له بيالوژيکي او فزيکي بدلونونو څخه اخوا نور بدلونونه هم شته دي. خپلمنځي بدلونونه انسان اغېزمن کوي او کله کله د هغه پر طبيعت باندې يو څه ورزياتوي. د بېلګې په ډول د يوه انسان د ځانگړتياوو ټوليزه د هغه په واده کولو سره بدلون موندلی شي، سره له دې چې په دغو حالتو کې کوم فزيکي بدلون [نه] شته. د انسان

ځانگړی او فردي جوهر په دغې اړیکې سره بدل شوی دی او دغه بدل شوی طبیعت د واده کړې جوړې د ډبرو کړو د رښتین توب او ناسم توب ټاکي لکه د واده توب په اړیکو کې وفا یا بې وفايي. په دې توگه انسان له هغې ورځې څخه چې په دغې کړې کې هسک شوی دی، ډېر بدلون کوي او دغو ټولو بدلونونو د هغه ځانگړي طبیعت ته یو څه بدلون ورکوي.

هغسې چې د واقعیت په اړه د انسان پوهه له یوه نسل نه بل نسل ته زیاتېږي، داسې هم د انسان د لږ څرگندو او ډېرو پېچلو توکو په اړه یو دغه ډول پوهاوی ډېرېږي. د انسان په طبیعت کې پوهاوی یوه روان یون دی او د انسان ټول ساینسونه په دې اړه چې انسان څه شی دی، زموږ له پوهاوي سره مرسته کوي. د انسان د طبیعت لا ښه پوهه به موږ قادر کړي، چې د اخلاقي توب په پېچلو مسلو قضاوت وکړو.

له نورم سره د انساني عمل پرتله کول

د اخلاقي معیار له څېړلو وروسته باید د عملي مېتود د ودې مسله تر کتنې لاندې ونیسو، د دې له پاره چې اخلاقي توب یې کشف شي او په هغو سره موږ وکولی شو، انساني عمل له نورم سره پرتله کړو. په یوې ځانگړې موضوع باندې د نورم تطبیق ښه سوچ او کره قضاوت غواړي.

د دې له پاره چې دا څېړنه اسانه شي ښه به دا وي چې یو عمل د اخلاقي توب له نورم سره په خپلو ترکیبي توکو ټوټه شي. معمول دا دی چې یو انساني عمل په دغو توکو: د عمل موضوع، د عمل موخه او د عمل شرایط ووېشل شي. هغه چا چې د یوه عمل اراده یې کړې وي، د پایلو اراده یې هم کړې وي. موږ به دلته په هغو پایلو وغږېږو چې ځینې یې ښې او ځینې یې بدې دي. یوه کړنه چې د موخې یا نیت له اړخ نه ښه وي که محرک یا شرایط یې بد وي بد کېږي. د بېلگې په ډول یو چا ته چې له مالي نظر نه په سخت حال کې وي ډېرې پیسې ورکول په دغه نیت چې وهڅول شي یوه ښه او عادل قانون ته رایه ورکړي د خیر له دغه عمل نه رشوت جوړېږي.

یوه شریره انګېزه د یوه عمل ښه والی د منځه وړي. د بېلگې په ډول ځینې سخت دريځي د وطن د ازادۍ په پار د ښځو او ماشومانو په گډون عام خلک په نښه کوي. ښه نیت په بدۍ سره چې یو څوک یې عملي کوي له منځه ځي.

خو کله داسې پېښېږي چې د ډېر ښه والی له پاره بده وسیله غوره شي. د بېلگې په ډول یو لېونی غواړي یو تن ووژني. دغه تن د لېوني نه پټ شوی او لېونی ورپسې گرځي. تا ته

هغه تن مالوم دی چې چېرته پټ شوی دی. که لهبونی له تا نه پوښتنه وکړي چې هغه کس چېرته دی؟ په دغه خاص حال کې رښتیا نه ویل به د اخلاقي توب د نورم په شان د انسان د طبیعت پر خلاف تمام نه شي. د هغه لهبوني بې لارې کول چې غواړي د یوه چا ژوند له منځ نه یوسي د بدۍ عمل نه دی او نه باید د رښتین توب پر خلاف وکتل شي. یو څوک د ورته قضیو په حل کولو کې د دندو د ټکر پرنسیپ ته مخ اړولی شي. هغه وخت چې د ده دنده لکه رښتیا ویل او د یوه بې گناه سړي د ژوند ساتل په ټکر کې وي، ډېره پیاوړې دنده غلبه کوي. د بېلګې په ډول داسې وکتی چې یو مجرم د نیویارک ښار د مینهایم په برخه کې یو بم ږدي او په ښاروال باندې غبر کوي، که د هغه دغه غوښتنه ونه منله شي، په پنځو کړيو کې به بم وچول شي. داسې وکتی چې دا مجرم لاس ته ورغی او هغه د بم د ځای بنودلو نه ډډه کوي. اوس دا پوښتنه ولاړېږي چې ایا پولیس اجازه لري هغه وکړي چې حقیقت ترېنه ترلاسه کړي؟ دلته دوې دندې سره ټکر کوي. یوه دا چې هېڅوک باید په انساني ضد ډول ونه کړول شي، بله دا چې د ښار د څو میلینو انسانانو ژوند وژغورل شي. هغه وخت چې دوې متناقضې دندې ترسره کېدلی نه شي، یو څوک باید هغه ډېره مهمه غوره کړي. سره له دې هم مور باید څیر اوسو او زیار وباسو تر هغه ځایه چې شونې وي د رښتیني ژوند ستونزه د دواړو مکلفیتونو په ترسره کولو سره هواره کړو.

د دوه گون اغېز پرنسیپ:

د پخوا نه د یوه عمل د فکر شوې پایلې په قضیه کې د دوه گون اغېز پرنسیپ زموږ سره مرسته کوي چې پرېکړه وکړو چې مور ته اجازه راکوي دغه عمل وکړو یا ونه کړو. د دوه گون اغېز پرنسیپ مانا دا ده چې یو عمل دوه د مخه لیدونکې پایلې لري، چې یوه یې ښه او بله یې بده ده. د بېلګې په توګه له یوه چا نه به وغوښتل شي یا به هغه اړ کړل شي، چې یوه کړنه ترسره کړي چې په خپل ذات کې ناسمه نه ده خو د نورو له خوا د خپل بد مقصد له پاره کار ترې اخیستل کېږي. د بېلګې په ډول بدماشان به د یوه بانک چارواکي ته امر وکړي چې د پیسو صندوق خلاص کړي. د پیسو د صندوق خلاصول په اصل کې بد کار نه دی، خو هغه دوه پایلې لري، چې یوه یې ښه او بله یې بده ده. که دغه چارواکي همکاري کوي د دغې همکاري یوه پایله به د هغه د ژوند ژغورل وي، چې دا ښه کار دی. بله پایله یې بده ده، چې هغه د بانک نه د پیسو اخیستل دي. د دې کړنې ښه پایله د هغه د ژوند ژغورنه د پیسو د غلا د ناوړې پایلې نه بېخي ډېره ده او په دغه ډول ده یې له دې چې په اخلاقي لحاظ یې بد کړي وي، صندوق یې ورته خلاص کړی دی.

اخلاقي قانون

د يوې کړنې د اخلاقي ځانگړتيا ټاکل مور نه مکلف کوي چې يو عمل وکړو يا ونه کړو. مور به ومنو چې اړ يو په اخلاقي لحاظ ښه کړه ترسره کړو که غواړو ښه کسان واوسو. ورکا وايي چې داسې ښکاري چې بشریت قانع دی چې ځينې کړه به مطلق ډول منع دي، په داسې حال کې چې نور په مشروط ډول مجاز گرځول شوي دي. داسې ښکاري چې خلک د اساسي قانون په اړه يو څه وښتيا لري، چې اړ کوي يې ښه کارونه وکړي او د بدو کارو نه ډډه وکړي. هغه اساسي قانون چې د هر ايستل شوي قانون نه د مخه راځي له لرغوني مهال نه را وروسته د طبيعي قانون (Netural Law) په نامه ياد شوی دی.

د طبيعي قانون مفهوم که څه هم د بيلو فيلسوفانو له خوا ډول ډول بيان شوی دی خو په دغو ټولو تعريفونو کې يو گډ ټکی موندل کېږي او هغه دا چې انسان اړ دی د خپل رښتيني طبيعت له مخې ژوند وکړي.

د قانون مفهوم:

قانون په عمومي ډول د هغې اړتيا په مانا دی چې په يو کس باندې د دې له پاره تحميل شوی وي چې په يوه ډول عمل وکړي.

فيزيکي قانون: دا مانا لري چې يو عمل د فزيکي اړتيا له مخې وشي لکه د جاذبې قانون، د انرژۍ قانون او په عمومي ډول د طبيعت قانونه. انسان د فزيکي جسمونو په شان د طبيعت د قانونو تابع دی او ترې نه سر غړولی نه شي.

اخلاقي قانون: په ازادو انسانانو باندې اخلاقي اړتيا تې او مکلف کوي يې چې په يوه ځانگړي ډول عمل وکړي. اخلاقي قانون څه ډول ځواک دی؟ د دغه حکم تر شا څه قدرت دی چې ته بايد ځينې کړنې وکړې او ځينې بايد ونه کړې؟ دغې پوښتنې دوه ډوله ځواب ورکول کېدلی شي.

د مثبتپال ځواب:

اخلاقي مثبتپالان تاييدوي چې د اخلاقي قانون ځواک د حکومت يا ټولني له قوت څخه راوړي، چې قانون نافذ کوي. د اخلاقي ځواک په اساس کې د قانون جوړونکي اراده ده، چې د هغه له ځواک سره يوځای کېږي. د دې له پاره چې قانون په هغو کسانو تحميل کړي،

چې د جزا يا له ټولې څخه د گوښه کېدو له ډار نه ورسره موافقت کوي.

ورکا وايي چې د دغې تيوري منل يا ردول د يوه چا په نظر پورې اړه لري. خو يو څوک شايد ووايي چې د جزا ډار به کافي محرک يا ځواک وي چې خلک له قانون سره سمون ته وهڅوي. که چېرې د عزتناک ژوند له ډار نه لوړ کوم محرک نه وي، بيا به پوليس اړ وي چې د هر چا ساتنه وکړي. څنگه کېدل شي دېرش زره پوليس د نيويارک د ښار اته ميليونه وکړي وساتي؟ څوک به قانون ساتونکي وساتي؟

دی زياتوي چې داسې ښکاري چې خلک په عمومي ډول د هغو موخو په اهميت پوهېږي چې بايد د قوانينو له لارې ترسره شي او د جزا له وېرې نه بلکې دغه پوهه ده چې خلک هڅوي چې قانونونه رعايت کړي، دا مور دوهمې تيورۍ ته بيايي چې د هغې اخلاقي قانون يې پر مور تحميليوي چې هغه د ارتيا د ماهيت په اړه دی.

د وروستۍ موخې ځواب:

د اخبرې موخې پلويان تاييدوي چې ځينې وجودي موخې شته چې زموږ خپل انتخاب نه دی، بلکې هغه خپل طبيعت راباندې تپلی دی. د بېلکې په ډول داسې وگنې چې يو څوک په ځنگله کې دی او غواړې پخوا له دې چې د شپې تروږمۍ خپور شي بايد يوې کودلې ته ځان ورسوي، چې له سرو او د ارونکو ژويو له خطر نه خوندي اوسي. داسې وگنې چې د لږ مزل وروسته دغه څوک يو څلور لاري ته رسي. هلته يوه لاره کودلې ته او درې نورې لارې نامالوم لوري ته ځي. هغه اړ دی چې د خپل هدف ته د رسېدو په موخه د کودلې لار ونيسي. په دې چې دا په ده باندې اخلاقي ضرورت دی چې دغه کار وکړي. ورکا وايي چې د انسان ديناميکي طبيعت چې خپل بشپړتوب غواړي د بايدتوب (Oughtness) سرچينه ده. د انسان طبيعت د بشپړېدلو په لور يو تمايل (Tendency) دی. د انسان طبيعت د خپل بشپړتوب په يون کې د خپلو پتو وړتياوو په پلي کولو کې دی. هغه عمل چې دا پروسه پرمخ بيايي هغه د ايډيال انسانتوب په لور د انسان د ځان د ودې يوه ډيناميکه کړۍ ده.

په تاريخ کې د طبيعي قانون ايډيا:

مور د اخبرې موخې بيان وکړ چې په اساس کې يې د طبيعي قانون جوهر دی. په لرغونو کلتورونو کې دا نظر عام و، چې د ټولو قوانينو سرچينه هسک څښتن يا خدايکوتي دي. انسان د طبيعت تر قوانينو لاندې ژوند کاوه او ټولو قوانينو سپېڅلی خاصيت لاره. هر انساني قانون داسې گڼل کېده چې له هسک څښتن نه سرچينه اخلي او

په انسان باندې د هسک څښتن په ارادې سره نافذ شوی دی. د طبيعي قانون ايديا د انسان په لاس له ایستل شوي قانون څخه جلا په لرغوني يونان کې وتوکېدل. هیراکلیتوس (Heraclitus) په دې فکر و، چې د پرله پسې بدلېدونکې پېښې نه اخوا یو اسماني لاکوس (Lagos) شته چې هر څه په همرغی سره ساتي. د اپلاتون او ارستو میتافزیکي تیوري کاني اخلاقي مکلفیت د انسان له طبیعت څخه راباسي په دې چې د انسان د جوهر یا طبیعت بشپړتوب په عین حال کې د هغه موخه ده، چې دی اړ دی چې ترسره یې کړي. زینو د لومړي ځل له پاره د طبيعي قانون اصطلاح وایستله. دغه فلسفه څو پېړۍ دود وه. په سیسرو او نورو نوميالیو رومي قانونپوهانو، لیکوالو او سیاست چلوونکو یې ډېر اغېز کړی و. دغې فلسفې د یوناني فلسفو ډېر ښه توکي خپل کړي و، د هغې د ښېکښې یا ښکې تیوري د طبيعي قانون د ايديا پلي کېدل دي. ښېکښه د انسان له عقلي طبیعت سره په موافقت کې یو ټینګ او نه لړزېدونکی چلند دی.

سان اګوستین د طبیعت په قانون ټینګ ولاړ و. د هغه په اند د طبیعت قانون ابدی قانون دی، هسک څښتن نړۍ په دغه قانون سره اداره کوي. دغه طبيعي قانون د هسک څښتن په ابدی قانون کې د عقلي موجود یاني د انسان گډون دی. دیني پوهانو (Theologians) د طبيعي قانون او هم د ابدی قانون نه دفاع وکړه.

د کټورتوب او مثبتپالنې فلسفو دغه طبيعي قانون د اخلاقي مکلفیت د سرچینې په توګه رد کړو. دوی د هغه پرځای د اخلاقي مکلفیت سرچینې کټورتوب، مثبت توب قانون، د ټولني فشار او عام ذهنیت وګاڼه. د دوهې نړیوالې جګړې وروسته لسیزو د طبيعي قانون د بیا ژوندي کېدلو دوکتريونو څلر بیا تجربه کړه څه هم هغه د طبيعي قانون په شان یاد شوی نه دی. په ۱۹۴۸ کال کې د بشر د حقونو منشور چې ملګرو ملتونو وایست د انسانانو د حقونو یو لست ورکوي چې د انسان په طبیعت بنا دی او د هر مثبت قانون په وړاندې نه انکار کېدونکی اعتبار لري. رابرت جېکسن وايي «د بشریت ځینې اساسي قوانین شته دي، چې تر هر مثبت قانون څخه د اعتبار وړ دي.» ۱۰۶۹

ورګا وايي چې په دغو وختونو کې که څه هم د طبيعي قانون اصطلاح ډېره نه یادیږي خو ټولې نینې ښيي چې دغه فکر ژوندی دی او د طبيعي قانون اعتبار په ټولې نړۍ کې وار په وار په ډېرېدونکې توګه پېژندل کېږي.

د انسان په طبیعت کې د اخلاقي قانون موندل

ورګا وايي چې طبيعي قانون په اساس کې د انسان له ډینامیکي طبیعت سره د هغه د

کړو د سرچينې په شان سمون لري، د انسان د طبيعت سپړنه بايد دلته وموندله شي. طبيعي قانون يوه اخلاقي اړتيا ده چې په يوه چا باندې د هغه د خپل طبيعت له خوا تحميلېږي، چې بايد رښتيني ښه وکړي او د واقعي بدو نه ډډه وکړي. څنگه چې مور د انسان د طبيعت پلټنه کوو، چې هغه له نورو طبيعتونو نه توپير کوي. مور بايد اخلاقي اړتيا په هغو شونتياوو کې وگورو چې انسان په ځانگړې ډول له غير عضوي او حيواني طبيعتونو نه بيلوي. د انسان دغه ځانگړې شونتياوې عقلي قوه (Intellect) او اراده دي.

مور وينو چې عقلي قوه د عمل د رښتین توب سره سر او کار لري. هغه وخت چې يو واقعيت په ښکاره سره راته وړاندې شي زما عقلي قوه هرو مرو پرې رضایت ښکاره کوي. زموږ د ارادې په عمل کې هم همدغسې اړتيا ليدل کېږي. مور د يوې کړنې له پاره هغه مهال اراده کولی شو چې په هغه کې يو څه ښه توب وي.

ورکا وايي «څنگه چې اراده او عقلي قوه په مور کې دوه جلا موجوديتونه دي دا د يوه شخص ظرفيتونه دي چې په هغو سره دی رښتین توب او ښه توب لټوي. نو مور ویلی شو، چې په مور کې داسې يو اساسي قانون شته چې مور اړ کوي، چې رښتین توب وکړو او له واقعي بدې نه ډډه وکړو. خو دغه مکلفيت د فزیکي ضرورت په مانا نه کېږي ځکه چې مور په نورمال حالاتو کې ازاد يو [چې] د بېلو ښه توبونو تر منځ انتخاب وکړو. سره له دې هم دغه ضرورت يو واقعي اخلاقي ضرورت دی، چې زموږ په طبيعت کې شته دی، ځکه چې مور پوهېږو چې مور مجبور يو د خپلو اساسي قابليتونو او د عملونو او ميلونو له مخې رښتینی ښه توب غوره کړو او له واقعي بدې څخه مخ واړوو.» ۱۰۷۰

مثبت قانون:

رښتین توب چې په څرکند ډول وړاندې شي زموږ عقلي ځواک د هغه درک کوي. خو زموږ د طبيعت ډېر پېچلي واقعيتونه، موخې او اړیکې په اسانۍ نه درک کېږي او په دغه شان هغه مکلفيتونه چې د هغو نه راوړلېږي هر چا ته د منلو وړ نه وي. په پايله کې طبيعي قانون چې په اساس کې د انسان د طبيعت سره سمون لري، د ژوند په پېچلو او جزايي مسلو کې مور ته لارښوونه نه شي کولی. سره له دې چې طبيعي قانون د مکلفيت سرچينه پاتې کېږي هغه بايد د انسان په تل اوږدونکو شرايطو کې د مثبت قانون په ميکانيزم سره پلی شي.

هره ټولنه مثبت قانونونه او مقررې وباسي چې هغه په يوه مفهوم د طبيعي قانون پلي کول دي. بيا مور ویلی شو چې طبيعي قانون مور مکلف کوي د مشروع حاکمیت د عادلو

قوانينو اطاعت وکړو. د بېلگې په ډول د ترافيکي کډوډۍ د مخنيوي له پاره مثبت قانون ايستونکې اداره بايد قانون راوباسي. د طبيعي قانون شته والی مثبت قانون نه بې لږومه کوي. هغه يې بنياد په واقعيت ږدي او د عدالت په پولو کې يې د ننه ساتي. هر هغه مثبت قانون چې طبيعي قانون نقض کوي، خپل اعتبار او مشروعيت له لاسه ورکوي، په دې چې د هغه د مکلفيت قوه له طبيعي قانون نه راوزي.

د طبيعي قانون بدلون موندل يا بدلون نه موندل:

ورکا وايي چې که طبيعي قانون د بدلون وړ وي، اخلاقيات نسبي کيږي. که طبيعي قانون د بدلون وړ نه وي هغه په تل بدلېدونکې نړۍ کې د يوه باور وړ لارښود پرنيسيپ په ډول له حد نه ډېر شخ کيږي.

د مخه مو يادونه وکړه چې د انسان طبيعيت ډينامیک دی او د انسان د طبيعيت د ابديال د واقعي کولو په لور تل د پرمختگ په حال کې دی. دغه واقعيت په تاريخ کې د اخلاقي وجدان د ودې او د طبيعي قانون د ظاهري بدلون له امله دي. په عين حال کې د انسان په طبيعيت کې دغسې تلپاتې توکي هم شته چې اخلاقي قانون ته تلنوب ورکوي او د نسيپت خطر له منځه وړي. يو ماشوم چې وده کوي له خپل پلار او مور سره يې اړيکې بدلون کوي. د عمر په يوه وخت کې د مور او پلار د واکمنۍ نه ځان ازادوي. د هغه په وړاندې د مور او پلار دندې هم بدلون مومي. دوی به اړ نه وي، چې له هغه وروسته د هغه ژوند خوندي کړي. انسان د تاريخ په بهير کې له ماشومتوب نه د بالغ توب پورې بدلون کړی دی.

د هغه پوهه خورا ډېره شوې ده. هغه خپل چاپېريال اړولی دی او په دې يون کې يې په خپله بدلون کړی دی. د انسان دغسې وده د هغه د طبيعيت له امله وړاندې تللی او دا په ځانگړي ډول د هغه د عقل د برکته ده. د لومړي انسان ناپوهي د نسلونو په عقلي ځواک سره چې مدنيتونه او کلتورونه يې جوړ کړي دي، له منځ نه تللي ده. په دغه مفهوم د انسان بدلېدل او په پايله کې د طبيعي قانون بدلون د هغه د طبيعيت سره برابر دی. ورکا زياتوي چې په عين حال کې په دې ټينگار کېدای شي چې په طبيعي قانون کې هېڅ بدلون پېښ شوی نه دی. يوازې چاپېريال بدلون کړی دی، او نه بدلېدونکی طبيعي قانون ښي، چې اخلاقيات په نويو شرايطو کې څه دي. برسېره پر دې انسان د خپل طبيعيت په اړه په ډېرېدونکې کچه پوهه پيدا کوي او په پايله کې د انساني حالت په اړه د طبيعي قانون پلي کېدنه لا هم روښانه او تر پخوا ښه پېژندل شوې ده.

په دې ترتيب له يوې خوا د انسان اساسي ځانگړتياوې د بدلون وړ نه دي. مور به هېڅکله څاروي نه شو، نو اړ يو د عقلمنو، ازادو او مسؤل انسانانو غوندې په «عزت او مسوليت» سره ژوند وکړو. د بلې خوا انسان د بشریت په عقلاني او کلتوري ودې سره چې د تاريخ له سباوون نه يې تر اوسه کړی دی، په غوڅه توگه اغېزمن شوی دی. کلتوري او عقلاني وده به په اخلاقي شعور او په هغه اخلاقي قضاوت کې غبرگون ومومي، چې د هغه په تکاملي حالت باندې يې کوي. نو مور ويلی شو، ځنکه چې د انسان طبيعت هم بدلون کوي او هم يې نه کوي، داسې هم طبيعي قانون د بدلون وړ او هم د بدلون وړ نه دی.

د طبيعي قانون پوهه:

طبيعي قانون د حکومت له خوا جوړ شوی قانون نه دی چې په رسمي څېرونو کې خپور شي. جوړ شوي قانونونه حقوقي مقرري لري خلک د هغو په منلو مکلف دي او حکومت يې پلي کوي. خو اخلاقي قانون په فزيکي زور سره نه پلي کېږي، بلکې د انسانانو د شعوري او ازادې همکارۍ له لارې پلي کېږي.

طبيعي قانون يو دينامیک قانون دی په دې چې هغه د شعوري او ارادي عملونو له لارې د خپل بشپړتوب په لور هدايت کېږي. د طبيعي قانون پوهه زموږ په هغې وړتيا اړه لري چې مور خپل طبيعت وپېژنو. د انسان طبيعت يو پېچلی واقعيت دی او مور د خپل طبيعت په ټولو جزياتو او اړيکو نه پوهېږو. له بلې خوا مور د خپل طبيعت سره نېغې تجربې لرو، هغه مور ته ډېر رانږدې او په سالم ډول يې وده موندلې، او ټول کسان د انسان د مهمو وجودي موخو په اړه او داسې هم هغو ته د رسېدلو په وسيلو پوهېږي. اساسي پرنسپپ دا دی چې ښه وشي او له بدو نه ډډه وشي. دغه اساسي او لومړنی پرنسپپ په هغو مسايلو باندې چې انسان په ژوند کې ورسره مخامخ کېږي، په اسانۍ پلي کېږي.

ورگا وايي چې اخلاق پوهانو د طبيعي قانون دغه ښکاره دستورونه له لسگونو نورو ارشاداتو سره يو گڼل. دغه دستورونه دا وو: مور او پلار ته اطاعت، مشروع قانوني مقامونو ته درناوی، په واده کې وفا پالنه، له نورو سره په خبرو او پوهاوي کې رښتينتوب، د نورو د قانوني مال رعايت، د ژمنې پر ځای کول او تقوا کول. د اخلاقياتو په ډگر کې هم ځينې واقعيتونه ښکاره دي په داسې حال کې چې پېچلي واقعيتونه د هر چا له پاره د پوهېدو وړ نه وي.

ساینس د انسان پوهه گام په گام زیاتوي هغه زموږ د شته والي او له نړۍ سره زموږ د طبیعت په اړه د نورو رښتینیتوبونو موندلو له پاره دوام ورکوي. د اخلاقیاتو په اړه به زموږ پوهه نوره ډېره شي. بیا نو طبیعي قانون نور هم ښکاره کېږي او تر قانون لاندې راځي.

د طبیعي قانون بندېزونه (تحریمونه):

مثبت قانون تحریمونه یا مجازات لري. جزا په جرمه، بندي توب، د امتیاز له لاسه ورکول، یا د مجازاتو کوم بل ډول وي. ایا داسې جزا شته چې د طبیعي قانون سره مله وي؟ وارکا وایي څرگنده ده چې داسې کومه جزا نه شته که څه هم چې طبیعي قانون به زیاتره وخت د مثبت قانون په څېر لکه غلا، وژنه او په ناحقه قسم خورل د جزا سره عملي شي. سره له دې هم په ځینو حالاتونو کې د طبیعي قانون له بندیز نه غږېدلې شو. هغه کره چې د طبیعي قانون سره سمون نښي مور د خپل بشپړتوب موخې ته نږدې کوي. خو که مور د هغو پر خلاف داسې کره ترسره کړو چې مور د خپل طبیعت د بشپړ توب له موخې نه لرې کوي، مور جزا وینو چې هغه د انسان توب له لاسه ورکول دي. مور په دغه مفهوم چې د بشریت له ایډیال نه لرې کېږو لږ «انسان» کېږو.

حقوق

بشري حقونه:

وارکا وایي چې د اخلاقي مسولیت پېژندنه د انسانانو یوه ګډه تجربه ده. هېڅوک دا ادعا نه شي کولی، چې هغه په خپل وجدان کې هېڅکله د اخلاقي قانون له قوت سره مخامخ شوی نه دی. پر هغې برسېره مور د خپلې دندې په ترسره کولو کې اخلاقي پیاوړتیا حس کوو، چې له مناسبې وسیلې نه کار اخلو، چې په هغې سره مور خپل مکلفیت اجرا کوو. مور دا طبیعي ګڼو چې که مور ته د یوه ځانګړي کار د کړلو له پاره دنده راکړل شي، نو باید د دغه کار له پاره مناسبې وسیلې راکړل شي. د بېلګې په توګه د یوه ګنډونکي له پاره هرو مرو د هغه کار له پاره مناسب مواد او وسیلې ورکړل شي. اخلاقي دنده دغه ادعا لارموي چې د دندې د اجرا له پاره مناسبې وسیلې او د عمل ازادې ورکړل شي. ورکا وایي چې «دغه ادعا د حق په نامه یادېږي.» ۱۰۷۱ څنګه چې حقونه له اخلاقي دندو سره تړلي دي، هغه د اخلاقي دندې ځانګړتیاوې سره شریکې کوي. په دې توګه یو مکلفیت پر مورباندې اخلاقي ضرورت تحمیلوي یانې مور ته اخلاقي قوت راکوي چې د

دندې د پلي کولو له پاره يوه اړينه وسيله ولرو.

حق د اخلاقي ځواک په توگه تعريف کېدلی شي، چې يو څوک يې مستحق وي بايد وپې لري. حق د اخلاقي قوې په څېر د يوه بل چا عقل او ارادې ته په مراجعې سره چې هغه بايد زموږ د حق درناوی وکړي، کار کوي.

حقوق په قانون استناد کوي او د قانون له مخې په منطقي ډول پر مور باندې نافذ کېږي. بيل اخلاقي سيستمونه د خپل اخلاقي مکلفيت د تعبيرونو له مخې د حق د ماهيت په اړه بيل بيل پوهاوی لري. که د حکومت اراده د اخلاقي مکلفيت سرچينه وي، يا اخلاقيات په عام نظر او اتفاق بنا وي لکه مثبت پالان وايي بيا نو ټول حقوق د حکومت يا ټولني له خوا مور ته راګول کېږي او له هغو نه پرته نور حقونه نه وي، خو که اساسي حقوق د حکومت يا ټولني له ارادې څخه پخوا موجود وي، بيا نو داسې اساسي حقونه شته چې د حکومت نه ازاد وي او هغه حقوقي افرادو ته د ټولنيز واک له خوا ورکول کېږي.

د حقونو جوړښت:

ورګا وايي چې حق په قانون بنا دی او د هغه جوهر ځينو شيانو ته ادعا ده. د منلې شوې ترمينالوژۍ له مخې مور په هر حق کې څلور توکي موندلی شو.

۱- د حق فاعل (Subject) يو کس دی چې هغه ځينې څيزونو ته ادعا لري.

۲- د حق شرط (Term) يو بل څوک دی، چې هغه مکلف دی د حق درناوی وکړي يا ادعا رفع کړي.

۳- د حق موضوع يو شی وي چې يو څوک يې ادعا کوي.

۴- د حق سند يا قباله دليل دی، چې د حق موضوع يا شي ته د شخص ادعا پرحقه کښي. د بېلګې په توګه ته يو موټر په بيه رانيسې، ته د دغه موټر حق ترلاسه کوي. په دغې معاملې کې ته د حق فاعل کېږي. خرڅوونکی د حق شرط دی، په دې چې اړ دی موټر ته ستا دعوه ومني. موټر ستا د حق موضوع ده او تاديه شوې پيسې سند يا قباله ده، چې ستا حق پرې تکيه لري.

د يوه حق فاعل او شرط يوازې کسان کېږي. د حق موضوع مادي شيان لکه مخکه، کور او نور او غير مادي شيان لکه د اختراع ايديا او نور دي. د يوه حق سند يا قباله هغه بنسټ دی، چې د هغه حق شيان د مالک يا فاعل ادعا تاييدوي.

طبيعي حقونه، بشري حقونه:

د مخه مو يادونه وکړه چې طبيعي قانون تر هر مثبت قانون نه د مخه وجود لري. هېڅ مثبت قانون ته اجازه نه شته چې د طبيعي قانون له دستورونو سره ټکر وکړي. که داسې يو مثبت قانون ايستل کېږي چې د طبيعي قانون پر خلاف وي هغه به بې اعتبار او ناعادل قانون وي او بايد اطاعت يې ونه شي.

د طبيعي حقونو شته والی په منطقي ډول د طبيعي قانون له شته والي نه راوړي. که موږ اړ يو چې د خپل طبيعت له امله ځينې کارونه وکړو، موږ هغو وسيلو ته هم ادعا لرو، چې په هغو سره خپل مکلفيت ترسره کوو، يا په بله ژبه موږ طبيعي حقوق لرو.

خو د طبيعي حقونو درناوی تل نه دی شوی. ډېرو سياسي سيستمونو د خپلو حقوقي افرادو طبيعي حقونه تر پښو لاندې کړي دي. تاريخ د زېښناک کړو او يرغلگرو ځواکونو په وړاندې د ډېرو ولسونو مبارزې د خپلو افرادو د طبيعي حقونو د پېژندلو له پاره ثبتې کړې دي. که څه هم په دغې برخې کې له لرغوني مهال نه تر اوسه پورې ډېر پرمختگونه شوي دي، خو د طبيعي حقونو ساتنه تر اوسه هم لا ډېره نابرابره ده. داسې حکومتونه هم شته چې په ارادي او منظم ډول د خپلو افرادو طبيعي حقونه تر پښو لاندې کوي. دا په دغسې حال کې چې په ۱۹۴۸ کال د ډسمبر په لسمه نېټه د ملگرو ملتونو موسسې عمومي غونډې د طبيعي قانون عالمي اعلاميه صادره کړه، چې زياتره د طبيعي قانون د منشور په نامه يادېږي. دا منشور قانوني قدرت نه لري خو بيا هم اغېزمن دي. ځنګه چې ژوند په ټولنه کې د حقونو په دوه اړخيز درناوي بنا دی نو ځکه حقونه د هغو د ماهيت له امله محدود دي. د بېلګې په توګه هر څوک د دين د ازادۍ حق لري خو دغه ازادي يوه چا ته دا قدرت نه ورکوي، چې نور اړ کړي د هغه دين ومني.

اخلاقي قضاوت- وجدان

د واراګا په اند وجدان د يوه عمل په سم توب او ناسم توب باندې زموږ د عقلي قوې قضاوت دی. د مخه مو د اخلاقياتو د معيار بنسټ وکتلو اوس منطقي ښکاري وګورو چې دا معيار په هغو ځانګړو مسلو باندې پلي کړو، چې هره ورځ ورسره مخامخ کېږو. د دغه معيار يا نورم د پلي کېدو پايله اخلاقي قضاوت کېږي، چې د يوې کړنې سم والی يا ناسم والی ټاکي. برسېره پردې هغه دا هم ټاکي، چې که يو عمل جايز وي بايد وشي يا ترې ډډه وشي. هغه عقلي قوه چې دغسې قضاوت کوي، وجدان نومېږي. هغه په ځانګړو مسايلو باندې يوازې د ځينو هغو اخلاقي پرنسپونو پلي کول دي، چې موږ په ماشوم توب يا د عمر په بالغه دوره کې مو زده کړي او منلي دي. د بېلګې په ډول موږ منلي چې غلا ناسم کار

دی. کله چې مور په هغې کې کولی شو په اسانه یو شی پټ کړو، خو مور په اسانه حکم کوو، چې «زموږ وجدان وايي» چې شی مه پټوئ.

که پرنسیپونه ناسم وي پایلې به یې ناسمې وي. مور د خپلې ودې په یون کې په ارادي ډول په هغو اخلاقي پرنسیپونو سوچ کوو، چې په وروکتوب کې مو زده کړي، چې سم یا ناسم دي. مور د خپلې ودې په یون کې دغه اخلاقي معیارونه د خپل عقلايي درک پر بنسټ ازمیو، هغه چې سم دي منو یې او هغه چې ناسم دي بدلوو. زموږ د اخلاقي پرنسیپونو د ازمویلو جریان په پای کې په ځانګړو مسلو د اخلاقیاتو د معیار پلي کول دي. په دغې لارې سره یو څوک په عقلي ډول د اخلاقي مقررو ټولګه جوړوي. دغه کړنلاره «د یوه چا وجدان جوړېدل» نومېږي. دا د اخلاقیپوهنې دنده ده چې یو څوک وجدان د عقل پر بنسټ جوړ کړي تر څو چې سمې اخلاقي پرېکړې د خپل فکر له مخې وکولی شي.

د وجداني قضاوت سم توب:

ورګا وايي څه وخت چې مور د وجدان دندې ازمیو باید د وجدان له ځینو مفهونو سره اشنا شو، چې د هغه له عملیاتو سره سر او کار لري.

سم وجدان: زموږ د عقلي قوې هغه اخلاقي قضاوت سم دی، چې څه وخت ټول هغه استدلال چې د اخلاقیاتو له افایي نورم یا معیار سره ښکېل وي، یې له تېروتنې نه ترسره شي.

ناسم وجدان: د وجدان هغه قضاوت ناسم وي، چې په ناسم پرنسیپ بنا وي، یا سم پرنسیپونه په غلط ډول وکارول شي. په پایله کې به یوه کړنه په ناسمه اعلام شي، چې هغه ښه یا بده ده.

یقیني وجدان: دا مانا لري هغه څوک چې اخلاقي قضاوت کوي، معقول دلیل نه لري، په خپل قضاوت شک وکړي.

مشکوک وجدان: دا مانا لري هغه څوک چې اخلاقي قضاوت کوي، معقول دلیل لري، چې شونې ده چې د هغه د قضاوت سرچېه به رښتیا وي.

له دغو قضاوتونو نه مالومېږي چې سم وجدان یا ناسم وجدان به یقیني یا مشکوک وي. یقیني توب او سم توب یو شی نه دي. داسې به پېښه شي، چې د بېلګې په ډول مور ته د سپورټونو په لوبو کې د یوې پېښې په واقعیت پوره باور لرو خو وروسته به چې دغه پېښه په ټلوېزيون کې په ورو حرکت ښووله کېږي وبه وینو چې هغه تېروتنه وه.

د اخلاقو عندي معيار

ورگا وايي چې د فرد له پاره وجداني قضاوت د اخلاقي قضاوت کولو له پاره لازمشود دی. نو ځکه وجدان د اخلاقياتو عندي معيار يا نورم کڼل کېدلی شي. د يوه چا له پاره به ښه يا بد د هغه د عقلي قوې له مخې وي. ان په هغو حالاتو کې هم چې يو څوک د خپل «ډېر ښه قضاوت پر خلاف» د بل چا مشوره مني. وجدان يې دغې عملي پايلې ته رسېږي چې په اخلاقي لحاظ غوره ده، چې دغه مشوره ومنې.

دی زياتوي چې وجدان ځکه عندي معيار نومول شوی چې د يو چا قضاوت د دغو لاملونو د اغېز لاندې دی لکه د هغه عقلي وړتيا، د هغه عقلي ليد، د هغه ټولنيز شاليد، د هغه په تعصبونو چې پرې بريالی کېدای نه شي، او نور. دغه لاملونه د هغه قضاوت په دغه ډول اغېزمن کوي، چې له افابي توب نه يې منحرف کوي.

داسې ښکاري چې تعصبونه او زموږ ټولنيز او کلتوري چاپېريال زموږ په پرېکړو يو څه مهم رول لوبوي. مهمه دا ده چې په عقلائي لحاظ ازاد واوسو او د اخلاقياتو په عندي ارزونې پورې تړلې ونه اوسو، بلکې د نورو نظريو ته هم پام وکړو او تيار اوسو چې کله رېسټينوالي غوښتنه کوي، ان له خپلې عقيدې څخه هم تېر شو. موږ بايد ژور سوچ وکړو چې د تېروتنې نه ځان وژغورو او زيار وباسو چې افابي قضاوت ته څومره چې شونې وي ځان ورنږدې کړو.

د وجدان ازادي

ورگا وايي چې د فردي اخلاقياتو خورا مهم قانون حکم کوي، چې «د خپل باوري وجدان اطاعت تل وکړه». د فرد خورا ډېر اساسي حق د وجدان ازادي يانې زموږ هغه حق دی چې د خپل رېسټيني او باوري وجدان له مخې ژوند وکړو. د دې له پاره مدني ټولني جوړې شوې چې د فردونو د حق نه ساتنه وکړي او عامه ښېکښې پر مخ بوزي. په دې توگه د مدني ټولنو له مهمو دندو نه يوه د وجدان ازادي ده.

خو شونې ده چې د فردونو وجدانونه سره ټکر وکړي. دلته د مدني ټولنو مقامات له دې دندې سره مخامخ کېږي چې د خپلو حقوقي فردونو د وجدانو ټکرونه رفع کړي. د دغو ټکرونو د کولو عمومي پرنسپل دا دی، چې ډېر پياوړی او باوري حق په کمزوري او لږ يقيني حق بريالی کېږي. که يو څوک معتقد وي چې د غوښتې خورل ناسم دي او پرېکړه کوي چې دی بايد سابه وخورې. دی حق لري چې د خپل وجدان په لاره لار شي. خو دی حق نه لري چې نور په زور اړ کړي چې غوښه ونه خوري.

په پای کې ورکا وايي چې «د اخلاقي قانون سترتوب مور له خپلو ورونو سره ييوستون ته رابولي، د دې له پاره چې د هغوی ژوند نور هم ښه پراخه او د ارزښت وړ وگرځوو. که مور د نورو ښکمرغي په نظر کې ولرو، زموږ ژوند به نور هم مانا لرونکی اونور هم «انساني» وي او مور به نور هم خپلې نهيي موخې ته نږدې شو.» ۱۰۷۲

پای

اخځونه

- ۱- محمد حسن کاکړ، د پاچا امان الله واکمنۍ ته يوه نوې کتنه، ۹۷، د افغانستان کلتوري ټولنه- جرمني، پېښور ۲۰۰۵
- ۲- محمد حسن کاکړ، زما غوره ليکې، ۵۰-۵۱، د افغانستان کلتوري ټولنه- جرمني، کابل ۲۰۱۰
- ۳- محمد حسن کاکړ، طالبان او اسلامي بنسټ پالنه، ۷۸ د افغانستان کلتوري ټولنه- جرمني، کولن ۲۰۰۴
- ۴- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۸۸)
- ۵- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۳۵)
- ۶- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۳۵)
- ۷- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۳۶)
- ۸- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۳۷)
- ۹- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۳۸)
- ۱۰- اي. اي. اېچ. کار، تاريخ څه ته وايي؟، پاڼه ه، کابل ۱۹۷۰
- ۱۱- کار (۱۹۷۰، پاڼه د)
- ۱۲- کار (۱۹۷۰، ۱۱)
- ۱۳- کار (۱۹۷۰، ۲۰)
- ۱۴- کار (۱۹۷۰، ۲۱)
- ۱۵- کار (۱۹۷۰، ۵۱-۵۲)
- ۱۶- کار (۱۹۷۰، ۶۴)
- ۱۷- کار (۱۹۷۰، ۹۵)
- ۱۸- کار (۱۹۷۰، ۱۰۷)
- ۱۹- کار (۱۹۷۰، ۱۰۸)
- ۲۰- کار (۱۹۷۰، ۱۱۳)
- ۲۱- کار (۱۹۷۰، ۱۲۵)
- ۲۲- کار (۱۹۷۰، ۱۳۴)
- ۲۳- کار (۱۹۷۰، ۱۳۵)
- ۲۴- کار (۱۹۷۰، ۱۳۸)

- ۲۵- کار (۱۹۷۰، ۱۴۶)
- ۲۶- کار (۱۹۷۰، ۱۴۹)
- ۲۷- کار (۱۹۷۰، ۱۵۳)
- ۲۸- کار (۱۹۷۰، ۱۶۸)
- ۲۹- کار (۱۹۷۰، ۱۷۰)
- ۳۰- کار (۱۹۷۰، ۱۷۶)
- ۳۱- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۴۰)
- ۳۲- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۴۰)
- ۳۳- کاکړ (۲۰۱۵، ۴۷-۴۸)
- ۳۴- کاکړ (۲۰۱۵، ۴۸)
- ۳۵- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۴۸)
- ۳۶- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۴۸)
- ۳۷- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۵۴)
- ۳۸- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۵۵)
- ۳۹- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۵۶)
- ۴۰- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۵۶-۲۵۷)
- ۴۱- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۶۰)
- ۴۲- کاکړ (۲۰۱۰، ۲۶۰)
- ۴۳- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۹)
- ۴۴- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۲۷-۴۲۸)
- ۴۵- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۳۵)
- ۴۶- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۳۵)
- ۴۷- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۳۵)
- ۴۸- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۳۶)
- ۴۹- محمد حسن کاکړ، افغان، افغانستان و افغانها و تشکیل دولت در هندوستان، فارس و افغانستان، ۲۷-۲۸، کابل ۱۹۸۸
- ۵۰- کاکړ (۱۹۸۸، ۲۸)
- ۵۱- حبيب الله تيرى، پښتانه، ۳۱-۳۲، پېښور ۱۹۹۹
- ۵۲- تيرى (۱۹۹۹، ۳۲)

- ۵۳- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۴۶)
- ۵۴- معصوم هوتک، کاکړ، رڼا او دفاع، ۹۱ د ساپي د پښتو څېړنې او پراختيا مرکز، پېښور ۱۹۹۹
- ۵۵- محمد حسن کاکړ، پښتون، افغان، افغانستان، ا (الف)، د افغانستان کلتوري ټولنه- جرمني، کابل ۲۰۱۱
- ۵۶- کاکړ (۲۰۱۱، ا (الف))
- ۵۷- کاکړ (۲۰۱۱، ۲)
- ۵۸- کاکړ (۲۰۱۱، ۲-۳)
- ۵۹- کاکړ (۲۰۱۱، ۶)
- ۶۰- کاکړ (۲۰۱۱، ۶)
- ۶۱- کاکړ (۲۰۱۱، ۶)
- ۶۲- کاکړ (۲۰۱۱، ۷-۸)
- ۶۳- کاکړ (۲۰۱۱، ۳۲)
- ۶۴- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۰۰)
- ۶۵- کاکړ (۲۰۱۱، ۲۷)
- ۶۶- کاکړ (۲۰۱۱، ۲۹)
- ۶۷- کاکړ (۲۰۱۱، ۳۳)
- ۶۸- کاکړ (۲۰۱۱، ۳۳)
- ۶۹- کاکړ (۲۰۱۱، ۳۳)
- ۷۰- کاکړ (۲۰۰۵، ۶)
- ۷۱- کاکړ (۲۰۰۵، ۴)
- ۷۲- علي احمد کهزاد، افغانسان د تاريخ په رڼا کې، ۱۱۴، د اورنگ زب ژباړه، پېښور ۲۰۰۱
- ۷۳- کاکړ (۲۰۰۵، ۵)
- ۷۴- کاکړ (۲۰۰۵، ۵)
- ۷۵- کاکړ (۱۹۹۹، ۱۰۶)
- ۷۶- کاکړ (۱۹۹۹، ۱۱۰)
- ۷۷- کاکړ (۱۹۹۹، ۱۱۳)
- ۷۸- کاکړ (۱۹۹۹، ۱۱۴)

- ۷۹-کاکړ (۱۹۹۹، ۱۱۸)
۸۰-کاکړ (۱۹۹۹، ۱۱۸)
۸۱-کاکړ (۱۹۹۹، ۱۱۹-۱۲۰)
۸۲-کاکړ (۱۹۹۹، ۱۲۰)
۸۳-جان کيکن، جنگ او زموږ نړۍ، د کاکړ سريزه، ۱۴، کابل ۲۰۱۵
۸۴-بالابانس، د سقراط، افلاتون، ارستو، اپيکور او زينو په نظر بڼه انسان (۲۶-
۲۷) د کاکړ ژباړه، کابل ۲۰۱۰
۸۵-بالابانس (۲۰۱۰، ۲۷)
۸۶-بالابانس (۲۰۱۰، ۲۸)
۸۷-بالابانس (۲۰۱۰، ۲۹)
۸۸-بالابانس (۲۰۱۰، ۳۱)
۸۹-کاکړ (۲۰۱۱، ۶۹)
۹۰-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۰۴-۱۰۵)
۹۱-تېری (۱۹۹۹، ۵۱)
۹۲-تېری (۱۹۹۹، ۵۰)
۹۳-تېری (۱۹۹۹، اتلسم د هېواد مل سريزه)
۹۴-تېری (۱۹۹۹، اتلسم د هېواد مل سريزه)
۹۵-تېری (۱۹۹۹، ۲۱۹)
۹۶-تېری (۱۹۹۹، ۲)
۹۷-تېری (۱۹۹۹، ۳-۵)
۹۸-تېری (۱۹۹۹، ۱۲)
۹۹-تېری (۱۹۹۹، ۱۸)
۱۰۰-تېری (۱۹۹۹، ۱۹)
۱۰۱-تېری (۱۹۹۹، ۲۱)
۱۰۲-تېری (۱۹۹۹، ۲۱)
۱۰۳-محمد حسن کاکړ، (۱۹۹۹، ۱۱۹-۱۲۰)
۱۰۴-کاکړ (۲۰۱۱، ۲۱)
۱۰۵-تېری (۱۹۹۹، ۳۰)
۱۰۶-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۱۹)

- ۱۰۷-تېری (۱۹۹۹، ۳۰)
۱۰۸-تېری (۱۹۹۹، ۳۱)
۱۰۹-تېری (۱۹۹۹، ۳۱)
۱۱۰-تېری (۱۹۹۹، ۳۱-۳۲)
۱۱۱-تېری (۱۹۹۹، ۳۲)
۱۱۲-تېری (۱۹۹۹، ۳۸)
۱۱۳-تېری (۱۹۹۹، ۳۹)
۱۱۴-تېری (۱۹۹۹، ۴۰)
۱۱۵-تېری (۱۹۹۹، ۴۰)
۱۱۶-تېری (۱۹۹۹، ۴۰)
۱۱۷-تېری (۱۹۹۹، ۴۱)
۱۱۸-تېری (۱۹۹۹، ۴۱)
۱۱۹-تېری (۱۹۹۹، ۴۳)
۱۲۰-تېری (۱۹۹۹، ۴۳)
۱۲۱-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۰۵)
۱۲۲-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۰۵-۱۰۶)
۱۲۳-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۲۱)
۱۲۴-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۲۳-۱۲۴)
۱۲۵-تېری (۱۹۹۹، ۵۴)
۱۲۶-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۲۶)
۱۲۷-تېری (۱۹۹۹، ۵۵)
۱۲۸-تېری (۱۹۹۹، ۵۶)
۱۲۹-تېری (۱۹۹۹، ۵۸)
۱۳۰-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۳۵)
۱۳۱-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۳۶-۱۳۷)
۱۳۲-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۰)
۱۳۳-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۰)
۱۳۴-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۲)
۱۳۵-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۳-۱۴۴)

- ۱۳۶- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۴)
۱۳۷- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۵)
۱۳۸- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۰-۱۵۱)
۱۳۹- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۱)
۱۴۰- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۱)
۱۴۱- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۶)
۱۴۲- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۶)
۱۴۳- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۶-۱۵۷)
۱۴۴- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۵۷)
۱۴۵- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۲-۲۱۳)
۱۴۶- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۳)
۱۴۷- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۳)
۱۴۸- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۳)
۱۴۹- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۳)
۱۵۰- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۴)
۱۵۱- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۴)
۱۵۲- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۱)
۱۵۳- کاکړ (۱۹۸۸، ۱۰۷)
۱۵۴- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۹)
۱۵۵- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۹)
۱۵۶- تېری (۱۹۹۹، ۲۲۰)
۱۵۷- تېری (۱۹۹۹، ۲۲۰)
۱۵۸- تېری (۱۹۹۹، ۲۲۱)
۱۵۹- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۶)
۱۶۰- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۷)
۱۶۱- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۷)
۱۶۲- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۷)
۱۶۳- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۷)
۱۶۴- تېری (۱۹۹۹، ۲۱۸)

- ۱۶۵- تری (۱۹۹۹، ۲۱۸)
- ۱۶۶- کاکړ (۲۰۰۴، ۱۲)
- ۱۶۷- محمد اعظم سيستاني، ظهور افغانستان معاصر و احمدشاه ابدالي، ۷۷ پېښور ۲۰۰۷
- ۱۶۸- سيستاني (۲۰۰۷، ۷۷)
- ۱۶۹- نصرالله سوبمن، پښتانه په هند کې، ۱۳، په بلجيم کې د استوګنو افغانانو د تفاهم، مرستې او پېوستون ټولنه، لاهور ۱۳۸۰
- ۱۷۰- سيستاني (۲۰۰۷، ۷۸)
- ۱۷۱- سيد بهادرشاه کاکاخېل، پښتانه د تاريخ په رڼا کې، ۴۷۰ يونيورستي بک ايجنسي پېښور
- ۱۷۲- حبيب الله تری، د مشرق په اسمان کې د مغرب ستوري، ۴۲، د افغانستان د کلتوري ودې ټولنه، پېښور ۲۰۰۶
- ۱۷۳- تری (۲۰۰۶، ۴۲)
- ۱۷۴- غلام محمد غبار، تاريخ مختصر افغانستان، ۲۹-۳۰
- ۱۷۵- کاکړ (۱۹۸۸، ۲۸-۲۹)
- ۱۷۶- کاکړ (۲۰۱۱، ۱۴۸)
- ۱۷۷- سوبمن (۱۳۸۰، ۷۸)
- ۱۷۸- سوبمن (۱۳۸۰، ۷۸-۷۹)
- ۱۷۹- سوبمن (۱۳۸۰، ۷۹)
- ۱۸۰- سوبمن (۱۳۸۰، ۵۷۳)
- ۱۸۱- سوبمن (۱۳۸۰، ۵۸۸)
- ۱۸۲- کاکاخېل (۶۴۹)
- ۱۸۳- کاکړ (۱۹۸۸، ۵۸)
- ۱۸۴- تری (۱۹۹۹، ۱۸۸)
- ۱۸۵- تری (۱۹۹۹، ۱۹۴)
- ۱۸۶- تری (۱۹۹۹، ۱۹۵-۱۹۶)
- ۱۸۷- تری (۲۰۰۶، ۳۱)
- ۱۸۸- کاکړ (۲۰۱۰، ۱۲)
- ۱۸۹- کاکړ (۱۹۸۸، ۶۱)

- ۱۹۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۶۶)
۱۹۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۹۳)
۱۹۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۹۴)
۱۹۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۹۵)
۱۹۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۹۵)
۱۹۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۹۶)
۱۹۶-معصوم هوتک، کاکړ (۱۹۹۹، ۸۸)
۱۹۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۴۰)
۱۹۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۵۵)
۱۹۹-سيستاني (۲۰۰۷، ۱۵۱)
۲۰۰-معصوم هوتک، سل پگړی يو پرونی، ۴۲ پېښور ۲۰۰۷
۲۰۱-معصوم هوتک (۲۰۰۷، ۴۲)
۲۰۲-کاکړ (۱۹۸۸، ۸۶)
۲۰۳-کاکړ (۱۹۸۸، ۸۶-۸۷)
۲۰۴-کاکړ (۱۹۸۸، ۸۷)
۲۰۵-کاکړ (۱۹۸۸، ۸۷)
۲۰۶-سيستاني (۲۰۰۷، ۱۸۵)
۲۰۷-کاکړ (۱۹۸۸، ۹۳)
۲۰۸-کاکړ (۱۹۸۸، ۹۳)
۲۰۹-محمد ولي خلی، د افغانستان او روسي د سياسي روابطو لنډه تاريخچه، ۲۵-
۲۷ کراچي ۱۳۷۴
- ۲۰۹ الف-جلالي، د افغانستان پوځي تاريخ، ۶۵ کنساس ۲۰۱۷
۲۱۰-محمد هوتک، پټه خزانه، ۱۱۴، دوهم چاپ، کابل ۱۹۳۹
۲۱۱-محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۸۰)
۲۱۲-محمد هوتک (۱۹۳۹، ۲۰۲)
۲۱۳-محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۴۰)
۲۱۴-محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۳۶)
۲۱۵-محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۳۲)
۲۱۶-محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۸۸)

- ۲۱۷- محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۱۴)
۲۱۸- محمد هوتک (۱۹۳۹، ۱۷۲)
۲۱۹- محمد هوتک (۱۹۳۹، ۲۰۴)
۲۲۰- سيستاني (۲۰۰۷، ۸۸)
۲۲۱- جلالي (۲۰۱۷، ۶۶)
۲۲۲- فيض محمد کاتب، سراج التواريخ، ۱۱، کابل ۱۳۳۱
۲۲۳- جلالي (۲۰۱۷، ۶۷)
۲۲۴- کاکړ (۲۰۱۰، ۷۰)
۲۲۵- سيستاني (۲۰۰۷، ۳۲۶)
۲۲۶- احمدشاه بابا، د احمدشاه بابا ديوان، ۳۵-۳۶، دويم چاپ، پېښور ۱۹۹۵
۲۲۷- هېواد مل، په هند کې د پښتو ژبې او ادبياتو د ايجاد او ودې پړاوونه، ۲۵۴-۲۵۵، لاهور ۱۳۷۳
۲۲۸- هېواد مل (۱۳۷۳، ۲۵۵)
۲۲۹- هېواد مل (۱۳۷۳، ۲۶۷)
۲۳۰- روحي، ادبي څېړنې، ۳۲۸، پېښور ۲۰۰۷
۲۳۱- روحي (۲۰۰۷، ۳۲۸-۳۲۹)
۲۳۲- روحي (۲۰۰۷، ۳۳۲)
۲۳۳- الفنستون، د کابل سلطنت، ۳۲۵، د کاکړ ژباړه، کابل ۲۰۰۸
۲۳۴- عزيز الدين وکيلي، د تيمورشاه ديوان، ۲۵-۲۶، کابل ۱۳۵۶
۲۳۵- اقبال وزيری، پښتو د تاريخ په بهير کې، ۱۳۷، کابل ۲۰۱۵
۲۳۶- اقبال وزيری (۲۰۱۵، ۱۳۸)
۲۳۷- سيستاني (۲۰۰۷، ۳۵۸)
۲۳۸- سيد جمال الدين افغان، تتمه البيان في تاريخ الافغان، ۴۵، د محمد رفيق ژباړه پېښور ۲۰۰۷
۲۳۹- محمد ابراهيم اعطايي، د افغانستان پر معاصر تاريخ يوه لنډه ليکنه، ۳۸-۳۹، کابل ۱۳۸۲
۲۴۰- سيستاني (۲۰۰۷، ۳۶۰)
۲۴۱- الفنستون (۲۰۰۸، ۲۰۷)
۲۴۲- کهزاد افغان مېرني او تاريخي پېښې، ۱۳، محمد اصف صمم ژباړه، پېښور

۲۰۰۱

- ۲۴۳-کېزاد (۲۰۰۱، ۱۳)
- ۲۴۴-کاکړ (۲۰۰۸، پاڼه و) د کابل سلطنت د ژباړې سريزه
- ۲۴۵-جلالي (۲۰۱۷، ۸۴)
- ۲۴۶-جلالي (۲۰۱۷، ۹۰)
- ۲۴۷-جلالي (۲۰۱۷، ۹۷)
- ۲۴۸-جلالي (۲۰۱۷، ۱۰۷)
- ۲۴۹-جلالي (۲۰۱۷، ۱۱۵)
- ۲۵۰-جلالي (۲۰۱۷، ۱۲۸)
- ۲۵۱-جلالي (۲۰۱۷، ۱۳۷)
- ۲۵۲-جلالي (۲۰۱۷، ۱۳۹)
- ۲۵۳-جلالي (۲۰۱۷، ۱۴۱)
- ۲۵۴-جلالي (۲۰۱۷، ۱۴۳)
- ۲۵۵-جلالي (۲۰۱۷، ۱۴۴)
- ۲۵۶-جلالي (۲۰۱۷، ۱۵۰)
- ۲۵۷-جلالي (۲۰۱۷، ۱۵۱)
- ۲۵۸-جلالي (۲۰۱۷، ۱۵۱)
- ۲۵۹-جلالي (۲۰۱۷، ۱۵۵)
- ۲۶۰-جلالي (۲۰۱۷، ۱۶۷)
- ۲۶۱-کاکړ (۱۹۸۹، ۲)
- ۲۶۲-ولي خان (۱۹۹۳، ۱۶-۱۷)
- ۲۶۳-طرزی، خاطرې: د يوې دورې لنډ تاريخ، ۴ جرمني ۲۰۰۷ د کاکړ ژباړه
- ۲۶۴-کاکړ (۱۹۸۹، ۱۲)
- ۲۶۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵)
- ۲۶۶-خبري، پښتانه د کلتوري ښکېلاک په زنجیرونو کې، ۶۹، ۲۰۰۲
- ۲۶۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹)
- ۲۶۸-تېری (۲۰۰۶، ۱۲۷)
- ۲۶۹-کاکړ (۱۹۸۹، ۳۱)
- ۲۷۰-کاکړ (۱۹۸۹، ۳۳)

- ۲۷۱-جلالي (۲۰۱۷، ۲۰۱) (۲۰۱)
- ۲۷۲-کاکړ (۱۹۸۹، ۴۴)
- ۲۷۳-کاکړ (۲۰۰۱، ۷۳) ميوند د افغانستان د تاريخ څلي، دمقالو ټولگه
- ۲۷۴-طرزي (۲۰۰۷، ۲۵-۲۶)
- ۲۷۵-طرزي (۲۰۰۷، ۳۲)
- ۲۷۶-کاکړ (۱۹۸۹، ۸۵)
- ۲۷۷-کاکړ (۲۰۰۱، ۹۸) ميوند د د افغانستان د تاريخ څلي، دمقالو ټولگه
- ۲۷۸-کاکړ، د افغانستان سياسي او ډپلوماتيک تاريخ، ۱۶۷، لايډن ۲۰۰۶
- ۲۷۹-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۶۸)
- ۲۸۰-جلالي (۲۰۰۱، ۱۷۳-۱۷۴) ميوند د افغانستان د تاريخ څلي، دمقالو ټولگه
- ۲۸۱-جلالي (۲۰۰۱، ۱۷۶) پاسني اثر
- ۲۸۲-جلالي (۲۰۰۱، ۱۷۸) پاسني اثر
- ۲۸۳-جلالي (۲۰۰۱، ۱۸۴) پاسني اثر
- ۲۸۴-کاکړ (۲۰۰۱، ۸۷) پاسني اثر
- ۲۸۵-کاکړ (۲۰۰۱، ۸۷) پاسني اثر
- ۲۸۶-کاکړ (۲۰۰۱، ۸۹) پاسني اثر
- ۲۸۷-کاکړ (۲۰۰۱، ۹۱) پاسني اثر
- ۲۸۸-کاکړ (۲۰۰۱، ۹۴-۹۵) پاسني اثر
- ۲۸۹-کاکړ (۲۰۰۱، ۹۹) پاسني اثر
- ۲۹۰-کاکړ (۲۰۰۱، ۱۰۷) پاسني اثر
- ۲۹۱-کاکړ (۲۰۰۱، ۱۰۷-۱۰۸) پاسني اثر
- ۲۹۲-کاکړ (۲۰۰۱، ۱۰۹) پاسني اثر
- ۲۹۳-کاکړ (۲۰۰۱، ۱۰۹) پاسني اثر
- ۲۹۴-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۰)
- ۲۹۵-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۰)
- ۲۹۶-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۱)
- ۲۹۷-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۳)
- ۲۹۸-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۳)
- ۲۹۹-د روسي او برتانوي امپراتوري لاسوندونه، د افغانستان د شمال لوېديځې پولو

ټاکل، ۵۹ کابل ۲۰۰۹ ژباړه طاهر کاني

۳۰۰-پاسني اثر (۲۰۰۹، ۸۴)

۳۰۱-پاسني اثر (۲۰۰۹، ۸۸)

۳۰۲-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۵)

۳۰۳-زيرکيار، د ناپوهي تيارې او د پرمختگ ډېوي...، ۲۳۲ کابل ۲۰۱۶

۳۰۴-کاکړ، د ښاغلي زماني او ښاغلي سيستاني د ليکنو په هکله، (۲۰۱۵، ۵۲)

۳۰۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲)

۳۰۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲)

۳۰۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲)

۳۰۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲)

۳۰۹-کاکړ (۲۰۰۶، ۹۸)

۳۱۰-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۰)

۳۱۱-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۳)

۳۱۲-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۴)

۳۱۳-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۴)

۳۱۴-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۵)

۳۱۵-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۵)

۳۱۶-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۵)

۳۱۷-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۱۵)

۳۱۸-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۲۳)

۳۱۹-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۳۸)

۳۲۰-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۵۵)

۳۲۱-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۹۷)

۳۲۲-کاکړ (۲۰۱۱، ۲۰۶)

۳۲۳-کاکړ (۲۰۱۱، ۲۱۴)

۳۲۴-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۸)

۳۲۵-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۸)

۳۲۶-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۹)

۳۲۷-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۹)

- ۳۲۸-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۷۹-۱۸۰)
- ۳۲۹-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۸۶)
- ۳۳۰-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۸۱)
- ۳۳۱-کاکړ (۲۰۰۶، ۱۹۰)
- ۳۳۲-رستار تره کی، دیورنډ، د واحد ملت د بيلتون کرښه، ۱۱۲ کابل ۲۰۰۷
- ۳۳۳-تره کی (۲۰۰۷، ۱۱۳)
- ۳۳۴-تره کی (۲۰۰۷، ۱۲۱)
- ۳۳۵-تره کی (۲۰۰۷، ۱۲۴)
- ۳۳۶-رونا (۲۰۰۷، ۱۳۴) پاسنی اثر
- ۳۳۷-رونا (۲۰۰۷، ۱۳۴-۱۳۵) پاسنی اثر
- ۳۳۸-کاکړ (۲۰۰۷، ۱۵۱) پاسنی اثر
- ۳۳۹-کاکړ (۲۰۰۷، ۲۱۹) میوند د افغانستان د تاریخ څلی، دمقالو ټولګه
- ۳۴۰-کاکړ (۲۰۰۷، ۲۲۲) پاسنی اثر
- ۳۴۱-زیرکیار (۲۰۱۶، ۱۱۳)
- ۳۴۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۰-۴۱)
- ۳۴۳-داود جنبش، افغانستان په شلمه پېړۍ کې، ۱۹۱ د افغانستان کلتوري ودې ټولنه جرمني ۲۰۰۰
- ۳۴۴-جنبش (۲۰۰۰، ۱۹۰-۱۹۱)
- ۳۴۵-تېری (۲۰۰۰، ۴۹)
- ۳۴۶-زیرکیار (۲۰۱۶، ۱۳۴)
- ۳۴۷-کاکړ (۲۰۰۵، ۲۰)
- ۳۴۸-کاکړ (۲۰۰۵، ۲۰-۲۱)
- ۳۴۹-کاکړ (۲۰۰۵، ۲۱)
- ۳۵۰-غبار (۷۱۸)
- ۳۵۱-نبي مصداق، افغانستان په شلمه پېړۍ کې، ۱۷۸ د افغانستان د کلتوري ودې ټولنه جرمني ۲۰۰۰
- ۳۵۲-نیدرماير، افغانستان د هند ستره دروازه، ۷۴ د خوشال انځور ژباړه ۲۰۰۰
- ۳۵۳-نیدرماير (۲۰۰۰، ۷۵)
- ۳۵۴-تیخونوف، نبرد افغاني استالین، ۴۸ د عزیز اریانفر ژباړه، کابل ۲۰۱۱

- ۳۵۵-ادامک، د شلمې پېړۍ تر نيمايي د افغانستان د بهرنيو اړيکو تاريخ، د نثار احمد
صمد ژباړه ۸۳-۸۴ پېښور ۱۹۹۹
- ۳۵۶-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۷۵)
- ۳۵۷-ادامک (۱۹۹۹، ۸۱-۸۲)
- ۳۵۸-زيرکيار (۲۰.۱۶، ۱۳۹)
- ۳۵۹-ادمک (۱۹۹۹، ۸۴)
- ۳۶۰-ادامک (۱۹۹۹، ۱۹)
- ۳۶۱-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۷۶-۲۷۷)
- ۳۶۲-کاکړ (۲۰.۰۵، ۱۹)
- ۳۶۳-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۰)
- ۳۶۴-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۲)
- ۳۶۵-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۸۴-۲۸۵)
- ۳۶۶-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۸۲)
- ۳۶۷-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۸۳-۲۸۴)
- ۳۶۸-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۷۹)
- ۳۶۹-جلالي (۲۰.۱۷، ۲۷۹)
- ۳۷۰-جلالي (۲۰.۱۷، ۳۱۰)
- ۳۷۱-زيرکيار (۲۰.۱۶، ۱۹۰-۱۹۱)
- ۳۷۲-جلالي (۲۰.۱۷، ۳۱۲)
- ۳۷۳-جلالي (۲۰.۱۷، ۳۱۲)
- ۳۷۴-جلالي (۲۰.۱۷، ۳۱۴)
- ۳۷۵-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۴)
- ۳۷۶-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۴)
- ۳۷۷-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۴)
- ۳۷۸-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۶)
- ۳۷۹-سيستاني-زيرکيار (۲۰.۱۶، ۱۶۶)
- ۳۸۰-زمانې-زيرکيار (۲۰.۱۶، ۲۰.۷)
- ۳۸۱-کاکړ (۲۰.۱۵، ۱۲)
- ۳۸۲-کاکړ (۲۰.۰۵، ۲۶)

- ۳۸۳-کاکړ (۲۸، ۲۰۰۵)
۳۸۴-کاکړ (۳۰، ۲۰۰۵)
۳۸۵-کاکړ (۳۲، ۲۰۰۵)
۳۸۶-کاکړ (۳۳-۳۲، ۲۰۰۵)
۳۸۷-کاکړ (۳۳، ۲۰۰۵)
۳۸۸-کاکړ (۳۴، ۲۰۰۵)
۳۸۹-زيرکيار (۷۶۴، ۲۰۱۶)
۳۹۰-کاکړ (۳۴، ۲۰۰۵)
۳۹۱-کاکړ (۳۵، ۲۰۰۵)
۳۹۲-کاکړ (۳۶، ۲۰۰۵)
۳۹۳-کاکړ (۳۷، ۲۰۰۵)
۳۹۴-کاکړ (۳۷، ۲۰۰۵)
۳۹۵-کاکړ (۳۸، ۲۰۰۵)
۳۹۶-کاکړ (۳۸، ۲۰۰۵)
۳۹۷-کاکړ (۱۳۴-۱۳۳، ۲۰۰۵)
۳۹۸-تيخونوف (۲۰۱۱، اي پانه)
۳۹۹-تيخونوف (۵۹، ۲۰۱۱)
۴۰۰-تيخونوف (۶۰، ۲۰۰۱)
۴۰۱-تيخونوف (۶۹، ۲۰۱۱)
۴۰۲-تيخونوف (۷۸، ۲۰۱۱)
۴۰۳-تيخونوف (۸۳، ۲۰۱۱)
۴۰۴-تيخونوف (۸۶، ۲۰۱۱)
۴۰۵-تيخونوف (۹۷، ۲۰۱۱)
۴۰۶-تيخونوف (۶۸، ۲۰۱۱)
۴۰۷-تيخونوف (۱۶۱، ۲۰۱۱)
۴۰۸-کاکړ (۱۳، ۲۰۰۵)
۴۰۹-کاکړ (۴۰، ۲۰۰۵)
۴۱۰-کاکړ (۴۴، ۲۰۰۵)
۴۱۱-کاکړ (۶۹، ۲۰۰۵)

- ۴۱۲-کاکړ (۵۳، ۲۰۰۵)
۴۱۳-کاکړ (۵۳، ۲۰۰۵)
۴۱۴-کاکړ (۵۵، ۲۰۰۵)
۴۱۵-کاکړ (۵۶، ۲۰۰۵)
۴۱۶-کاکړ (۵۷، ۲۰۰۵)
۴۱۷-کاکړ (۵۷، ۲۰۰۵)
۴۱۸-کاکړ (۶۰، ۲۰۰۵)
۴۱۹-کاکړ (۶۱، ۲۰۰۵)
۴۲۰-کاکړ (۶۱، ۲۰۰۵)
۴۲۱-کاکړ (۶۲، ۲۰۰۵)
۴۲۲-کاکړ (۶۲، ۲۰۰۵)
۴۲۳-کاکړ (۶۳، ۲۰۰۵)
۴۲۴-کاکړ (۶۴، ۲۰۰۵)
۴۲۵-کاکړ (۶۷، ۲۰۰۵)
۴۲۶-کاکړ (۶۷، ۲۰۰۵)
۴۲۷-کاکړ (۷۵-۷۴، ۲۰۰۵)
۴۲۸-کاکړ (۷۷، ۲۰۰۵)
۴۲۹-طبيبي، خاطرات، ۱۳ ترجمه دري هادي شکور ۱۹۹۶
۴۳۰-ادامک (۲۳۴، ۱۹۹۹)
۴۳۱-ادامک (۳۲۵، ۱۹۹۹)
۴۳۲-ولي خان، باچا خان او خدايي خدمتگاري، لومړی ټوک، ۸۱ پېښور ۱۹۹۳
۴۳۳-کاکړ (۷۸، ۲۰۰۵)
۴۳۴-کاکړ (۸۰، ۲۰۰۵)
۴۳۵-کاکړ (۸۴، ۲۰۰۵)
۴۳۶-کاکړ (۸۵، ۲۰۰۵)
۴۳۷-کاکړ (۸۹-۸۸، ۲۰۰۵)
۴۳۸-کاکړ (۸۹، ۲۰۰۵)
۴۳۹-کاکړ (۹۳، ۲۰۰۵)
۴۴۰-کاکړ (۹۳، ۲۰۰۵)

- ۴۴۱-کاکړ (۱۲، ۲۰۰۵)
۴۴۲-کاکړ (۱۳، ۲۰۰۵)
۴۴۳-کاکړ (۱۳، ۲۰۱۵)
۴۴۴-ادامک (۱۳، ۱۹۹۹)، کاکړ (۱۳، ۲۰۱۵)
۴۴۵-کاکړ (۹۶، ۲۰۰۵)
۴۴۶-کاکړ (۹۶، ۲۰۰۵)
۴۴۷-کاکړ (۹۶، ۲۰۰۵)
۴۴۸-کاکړ (۹۸، ۲۰۰۵)
۴۴۹-کاکړ (۹۹-۹۸، ۲۰۰۵)
۴۵۰-کاکړ (۹۹، ۲۰۰۵)
۴۵۱-کاکړ (۱۰۰، ۲۰۰۵)
۴۵۲-کاکړ (۱۰۱، ۲۰۰۵)
۴۵۳-کاکړ (۱۰۱، ۲۰۰۵)
۴۵۴-کاکړ (۱۰۲-۱۰۱، ۲۰۰۵)
۴۵۵-کاکړ (۱۰۲، ۲۰۰۵)
۴۵۶-کاکړ (۱۰۳، ۲۰۰۵)
۴۵۷-کاکړ (۱۰۴، ۲۰۰۵)
۴۵۸-کاکړ (۱۰۴، ۲۰۰۵)
۴۵۹-کاکړ (۱۰۵، ۲۰۰۵)
۴۶۰-کاکړ (۱۰۶، ۲۰۰۵)
۴۶۱-کاکړ (۱۰۷، ۲۰۰۵)
۴۶۲-کاکړ (۱۰۷، ۲۰۰۵)
۴۶۳-کاکړ (۱۰۸-۱۰۷، ۲۰۰۵)
۴۶۴-کاکړ (۱۰۸، ۲۰۰۵)
۴۶۵-کاکړ (۱۰۸، ۲۰۰۵)
۴۶۶-کاکړ (۱۰۹، ۲۰۰۵)
۴۶۷-کاکړ (۱۰۹، ۲۰۰۵)
۴۶۸-کاکړ (۱۰۹، ۲۰۰۵)
۴۶۹-کاکړ (۱۱۰، ۲۰۰۵)

- ۴۷۰- کاکړ (۲۰۱۵، ۲۸، ۲۹)
۴۷۱- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۱)
۴۷۲- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۲)
۴۷۳- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۲)
۴۷۴- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۳)
۴۷۵- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۵-۱۱۶)
۴۷۶- کاکړ (۲۰۱۵، ۳۷)
۴۷۷- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۷-۱۱۸)
۴۷۸- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۸-۱۱۹)
۴۷۹- کاکړ (۲۰۰۵، ۱۱۹)
۴۸۰- ادامک (۱۹۹۹، ۱۳۹)، کاکړ (۲۰۰۵، ۱۴)
۴۸۱- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴)
۴۸۲- غبار، افغانستان در مسير تاريخ، ۸۱۲، کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴)
۴۸۳- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۵)
۴۸۴- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۵)
۴۸۵- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۷)
۴۸۶- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۷)
۴۸۷- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۹)
۴۸۸- زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۹۴)
۴۸۹- زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۹۴)
۴۹۰- زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۹۵)
۴۹۱- تيخونوف (۲۰۱۱، ۳۸۰)
۴۹۲- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳)
۴۹۳- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳)
۴۹۴- کاکړ (۲۰۱۵، ۳۲)
۴۹۵- کاکړ (۲۰۱۵، ۳۳)
۴۹۶- کاکړ (۲۰۱۵، ۳۳)
۴۹۷- کاکړ (۲۰۱۵، ۳۳)
۴۹۸- کاکړ (۲۰۱۵، ۳۳)

- ۴۹۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۳)
۵۰۰-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۵۷)
۵۰۱-تيخونوف (۲۰۱۱، ۲۸۳)
۵۰۲-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۵۲)
۵۰۳-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۵۴)
۵۰۴-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۵۶)
۵۰۵-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۵۶)
۵۰۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۸)
۵۰۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۷)
۵۰۸-خليل الله، امير حبيب الله «کلکانی»، ۱۱۶-۱۱۷، پېښور ۱۳۷۷
۵۰۹-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۸۲)
۵۱۰-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۷۸)
۵۱۱-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۲۵)
۵۱۲-خليل الله (۱۳۷۷، ۱۲۷)
۵۱۳-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۱۲)
۵۱۴-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۸۱)
۵۱۵-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۱۲)
۵۱۶-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۳۷)
۵۱۷-خليل الله (۱۳۷۷، ۱۴۲-۱۴۳)
۵۱۸-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۰۳)
۵۱۹-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۰۴)
۵۲۰-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۰۴-۳۰۵)
۵۲۱-خليل الله (۱۳۷۷، ۱۶۲)
۵۲۲-زيرکيار (۲۰۱۶، ۱۰۳)
۵۲۳-زيرکيار (۲۰۱۶، ۱۰۲-۱۰۳)
۵۲۴-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۶۴)
۵۲۵-زيرکيار (۲۰۱۶، ۸۰)
۵۲۶-زيرکيار (۲۰۱۶، ۸۲)
۵۲۷-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۱۳)

- ۵۲۸-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۱۴)
۵۲۹-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۵۶)
۵۳۰-زيرکيار (۲۰۱۶، ۴۹-۵۰)
۵۳۱-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۳۹)
۵۳۲-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۴۰)
۵۳۳-خليل الله (۱۳۷۷، ۲۱۰)
۵۳۴-خليل الله (۱۳۷۷، ۲۱۲)
۵۳۵-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۳۹)
۵۳۶-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۲۴)
۵۳۶الف-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۲۴)
۵۳۷-ادامک (۱۹۹۹، ۳۳۳)
۵۳۸-ادامک (۱۹۹۹، ۳۳۳-۳۳۴)
۵۳۹-ادامک (۱۹۹۹، ۳۳۵)
۵۴۰-ادامک (۱۹۹۹، ۳۳۶)
۵۴۱-ادامک (۱۹۹۹، ۳۴۳)
۵۴۲-ادامک (۱۹۹۹، ۳۴۳)
۵۴۳-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۴۳)
۵۴۴-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۴۳)
۵۴۵-بهند، افغانستان په شلمه پېړۍ کې، ۲۲۲-۲۲۳، جرمني ۲۰۰۰
۵۴۶-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۴۴)
۵۴۷-زيرکيار (۲۰۱۶، ۳۵۸)
۵۴۸-زيرکيار (۲۰۱۶، ۱۰۳)
۵۴۹-ادامک (۱۹۹۹، ۳۵۱-۳۵۲)
۵۵۰-ادامک (۱۹۹۹، ۳۵۲)
۵۵۱-ادامک (۱۹۹۹، ۳۵۳)
۵۵۲-ادامک (۱۹۹۹، ۳۵۳)
۵۵۳-ادامک (۱۹۹۹، ۳۵۴)
۵۵۴-تيخونوف (۲۰۱۱، ۳۹۴)
۵۵۵-تيخونوف (۲۰۱۱، ۳۹۴)

- ۵۵۶-تيخونوف (۲۰۱۱، ۳۹۵)
۵۵۷-تيخونوف (۲۰۱۱، ۳۹۶)
۵۵۸-پهاند، (۲۰۰۰، ۲۲۵)
۵۵۹-پهاند (۲۰۰۰، ۲۲۶-۲۲۷)
۵۶۰-وزيرې (۲۰۰۸، ۱۲۳)
۵۶۱-ولي خان (۱۹۹۴، ۱۸)
۵۶۲-رونا (۲۰۰۷، ۱۴۰-۱۴۱)
۵۶۳-ولي خان (۱۹۹۴، ۲۷۶)
۵۶۴-طبيبي (۱۹۹۶، ۲۹)
۵۶۵-ولي خان (۱۹۸۷، ۲۹۹-۳۰۰)
۵۶۶-جلالي (۲۰۱۷، ۳۳۸)
۵۶۷-جلالي (۲۰۱۷، ۳۴۰)
۵۶۸-جلالي (۲۰۱۷، ۳۴۲)
۵۶۹-جلالي (۲۰۱۷، ۳۴۲)
۵۷۰-جلالي (۲۰۱۷، ۳۴۳)
۵۷۱-طبيبي (۱۹۹۶، ۶۸)
۵۷۲-محمد عزيز نعيم، مقاله (پاکس پاکستانیکا)، مجاهد ولس، د جون کڼه ۱۹۹۶
۵۷۳-کاکړ (۲۰۰۷، ۳۴)
۵۷۴-کاکړ (۲۰۰۷، ۳۲)
۵۷۵-کاکړ (۲۰۰۷، ۳۴)
۵۷۶-کاکړ (۲۰۰۷، ۳۵)
۵۷۷-کاکړ (۲۰۰۷، ۳۷)
۵۷۸-کاکړ (۲۰۰۷، ۴۹)
۵۷۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۵۲-۱۵۳)
۵۸۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۵۳)
۵۸۱-کاکړ (۲۰۰۷، ۱۵)
۵۸۲-کاکړ (۲۰۰۷، ۱۷)
۵۸۳-بيري گل وزير The fakir of Ipi، ۳۰.
۵۸۴-بيري گل وزير، پاسنی اثر ۲۸

- ۵۸۵-کاکړ (۲۰۰۷، ۱۷)
۵۸۶-کاکړ (۲۰۰۷، ۲۰)
۵۸۷-کاکړ (۲۰۰۷، ۲۵)
۵۸۸-کاکړ (۲۰۰۷، ۲۶-۲۷)
۵۸۹-کاکړ (۲۰۰۷، ۲۶)
۵۹۰-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۱)
۵۹۱-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۲)
۵۹۲-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۶)
۵۹۳-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۶)
۵۹۴-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۸)
۵۹۵-کاکړ (۲۰۰۹، ۷)
۵۹۶-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۶)
۵۹۷-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۷)
۵۹۸-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۷)
۵۹۹-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۷)
۶۰۰-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۸)
۶۰۱-کاکړ (۲۰۰۹، ۴۹-۵۰)
۶۰۲-کاکړ (۲۰۰۹، ۵۰)
۶۰۳-کاکړ (۲۰۰۹، ۵۴)
۶۰۴-کاکړ (۲۰۰۹، ۵۴)
۶۰۵-کاکړ (۲۰۰۹، ۵۵)
۶۰۶-کاکړ (۲۰۰۹، ۵۷)
۶۰۷-کاکړ (۲۰۰۹، ۵۷)
۶۰۸-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۰)
۶۰۹-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۲)
۶۱۰-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۴)
۶۱۱-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۶)
۶۱۲-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۸)
۶۱۳-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۸)

۶۱۴-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۸)

۶۱۵-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۸)

۶۱۶-کاکړ (۲۰۰۹، ۶۹)

۶۱۷-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۰)

۶۱۸-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۱)

۶۱۹-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۳)

۶۲۰-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۴)

۶۲۱-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۴)

۶۲۲-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۷)

۶۲۳-کاکړ (۲۰۰۹، ۷۶)

۶۲۴-کاکړ (۲۰۰۹، ۸۴)

۶۲۵-کاکړ (۲۰۰۹، ۸۵)

۶۲۶-کاکړ (۲۰۰۹، ۸۷)

۶۲۷-کاکړ (۲۰۰۹، ۹۱)

۶۲۸-کاکړ (۲۰۰۹، ۹۸)

۶۲۹-کاکړ (۲۰۰۹، ۹۸)

۶۳۰-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۰۳)

۶۳۱-وزيري (۲۰۰۷، ۵۳)

۶۳۲-وزيري (۲۰۰۷، ۵۳)

۶۳۳-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۴)

۶۳۴-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۵)

۶۳۵-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۵)

۶۳۶-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۶)

۶۳۷-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۷)

۶۳۸-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۷)

۶۳۹-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۲۷)

۶۴۰-فراهي، افغانستان د ديموکراسۍ او ...، ۲۵۷-۲۵۸، پېښور ۲۰۰۲

۶۴۱-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۳۰-۱۳۱)

۶۴۲-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۳۱)

- ۶۴۳-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۳۲-۱۳۳)
- ۶۴۴-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۳۴)
- ۶۴۵-کاکړ (۲۰۰۹، ۱۳۴)
- ۶۴۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۸۶) د ثور کودتا
- ۶۴۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۳۷)
- ۶۴۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۳)
- ۶۴۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴)
- ۶۵۰-وزيري، د ثور پاڅون...، ۵۶-۵۵، پېښور ۲۰۰۷
- ۶۵۱-وزيري (۲۰۰۷، ۵۷)
- ۶۵۲-وزيري (۲۰۰۷، ۵۶)
- ۶۵۳-وزيري (۲۰۰۷، ۵۷)
- ۶۵۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۸)
- ۶۵۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۱)
- ۶۵۶-وزيري (۲۰۰۷، ۷۴)
- ۶۵۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۳-۲۴)
- ۶۵۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۵۹-۶۰)
- ۶۵۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۶۰)
- ۶۶۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۷۴)
- ۶۶۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۰۴)
- ۶۶۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۰۵)
- ۶۶۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۰۶)
- ۶۶۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۱۲)
- ۶۶۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۱۲)
- ۶۶۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۶)
- ۶۶۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۶)
- ۶۶۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۶)
- ۶۶۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۶)
- ۶۷۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۱۳)
- ۶۷۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۱۳)

- ۶۷۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۱۳-۱۱۴)
۶۷۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۴-۱۴۵)
۶۷۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۵)
۶۷۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۵)
۶۷۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴۵)
۱۶۷۷ الف-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۵۹)
۶۷۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۶۷)
۶۷۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۶۸)
۶۷۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۷۳)
۶۸۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۶۱)
۶۸۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۶۲)
۶۸۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۹۶)
۶۸۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۱۲)
۶۸۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۱۳)
۶۸۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۱۳)
۶۸۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۱۵)
۶۸۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۱۲۹)
۶۸۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۵۹)
۶۸۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۲۵۹)
۶۹۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۲۴)
۶۹۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۲۹)
۶۹۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۰)
۶۹۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۰)
۶۹۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۲)
۶۹۵-وزيري (۲۰۰۷، ۱۰۷-۱۰۸)
۶۹۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۶)
۶۹۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۶)
۶۹۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۷)
۶۹۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۳۸)

- ۷۰۰-وزيري (۲۰۰۷، ۱۱۱)
۷۰۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۲)
۷۰۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۳)
۷۰۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۳)
۷۰۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۵)
۷۰۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۵)
۷۰۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۵-۳۴۶)
۷۰۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۷)
۷۰۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۸)
۷۰۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۹)
۷۱۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۹)
۷۱۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۲)
۷۱۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۴۹)
۷۱۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۰)
۷۱۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۰)
۷۱۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۰)
۷۱۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۰)
۷۱۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۱)
۷۱۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۲)
۷۱۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۳)
۷۲۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۳)
۷۲۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۳)
۷۲۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۳)
۷۲۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۴)
۷۲۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۵)
۷۲۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۶)
۷۲۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵۷)
۷۲۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۶۱)
۷۲۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۰۱)

- ۷۲۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۷۷)
۷۳۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۷۹)
۷۳۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۸۲)
۷۳۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹۴)
۷۳۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹۶)
۷۳۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹۶)
۷۳۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹۷)
۷۳۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹۷)
۷۳۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۹۷)
۷۳۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۰۲)
۷۳۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۰۹)
۷۴۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۰)
۷۴۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۱)
۷۴۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۲)
۷۴۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۴)
۷۴۴-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۵)
۷۴۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۶)
۷۴۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۱۶)
۷۴۷-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۲۰)
۷۴۸-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۲۱)
۷۴۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۲۱)
۷۵۰-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۲۱-۴۲۲)
۷۵۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۲۲)
۷۵۲-وزيري (۲۰۰۷، ۱۵۷)
۷۵۳-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۸۸)
۷۵۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۱)
۷۵۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۱)
۷۵۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۷)
۵۷-وزيري (۲۰۰۷، ۱۲۹)

- ۷۵۸-وزيري (۲۰۰۷، ۱۲۹)
۷۵۹-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۰)
۷۶۰-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۰-۱۳۱)
۷۶۱-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۱)
۷۶۲-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۲)
۷۶۳-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۲)
۷۶۴-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۳)
۷۶۵-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۴)
۷۶۶-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۴)
۷۶۷-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۵)
۷۶۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۱)
۷۶۹-وزيري (۲۰۰۷، ۱۳۶)
۷۷۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۳)
۷۷۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۴)
۷۷۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۵)
۷۷۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۷)
۷۷۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۷)
۷۷۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۷)
۷۷۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۶۴-۶۵)
۷۷۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۰۷)
۷۷۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۷۰)
۷۷۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۷۰)
۷۸۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۷۹)
۷۸۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۸۰)
۷۸۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۹۳)

۷۸۳-ريچاردسن، افغانستان، ۵۷۳، درحمت اريا ژباړه، دعوت ۲۰۱۰

۷۸۴-وزيري د باچا خان اندونو او مبارزې ته لنډه کتنه، ۱۵۳ پېښور ۲۰۰۸

۷۸۵-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۲۵۹)

۷۸۶-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۲۶۱)

۷۸۷-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۲۶۱)

۷۸۸-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۲۶۳-۲۶۴)

۷۸۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۰۶)

۷۹۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۰۸)

۷۹۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۰۸)

۷۹۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۰۹)

۷۹۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۱۵)

۷۹۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۲۰)

۷۹۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۲۶)

۱۷۹۵الف-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۲۸)

۷۹۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳۳)

۷۹۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳۵)

۷۹۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳۹)

۷۹۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳۹)

۸۰۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴۰)

۸۰۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۵۳)

۸۰۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۵۶)

۸۰۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۵۶)

۸۰۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۵۷)

۸۰۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۶۵)

۸۰۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۶۶)

۸۰۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۶۶)

۸۰۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۷۰)

۸۰۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۷۰)

۸۱۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۱۹)

۸۱۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۲)

۸۱۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۳)

۸۱۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۶)

۸۱۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۷)

۸۱۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۸-۲۲۹)

۸۱۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۹)

۸۱۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۳۰)

۸۱۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۳۱)

۸۱۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۳۲)

۸۲۰-جلالي (۲۰۱۷، ۳۷۴)

۸۲۱-جلالي (۲۰۱۷، ۳۷۴)

۸۲۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۳۸)

۸۲۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۴۸)

۸۲۴-خليلزاد، استازی، ۷۲، کابل ۲۰۱۶

۸۲۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۵۱)

۸۲۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۵۱)

۸۲۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۷۷)

۸۲۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۷۸)

۸۲۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۷۸)

۸۳۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۷۸)

۸۳۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۷۹)

۸۳۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۸۲)

۸۳۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۸۷)

۸۳۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۹۳)

۸۳۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۹۴)

۸۳۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۹۵)

۸۳۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۹۶)

۸۳۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۹۷)

۸۳۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۹۹)

۸۴۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۰۲)

۸۴۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۰۲)

۸۴۲-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۱۴)

۸۴۳-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۳۹)

- ۱۴۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۰۳)
۱۴۵-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۹۳)
۱۴۶-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۰)
۱۴۷-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۱)
۱۴۸-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۲)
۱۴۹-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۲)
۱۵۰-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۳۱-۳۲)
۱۵۱-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۹۲)
۱۵۱الف-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۲۱)
۱۵۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۲۷)
۱۵۳-جلالي (۲۰۱۷، ۳۷۵)
۱۵۴-جلالي (۲۰۱۷، ۳۷۴)
۱۵۵-جلالي (۲۰۱۷، ۳۹۳)
۱۵۶-جلالي (۲۰۱۷، ۳۹۵)
۱۵۷-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۱)
۱۵۸-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۱)
۱۵۹-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۲)
۱۶۰-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۴)
۱۶۱-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۴)
۱۶۲-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۴)
۱۶۳-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۸۵)
۱۶۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۳۰۸)
۱۶۵-وزيري (۲۰۰۷، ۲۲۷)
۱۶۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۲۳)
۱۶۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۳۶)
۱۶۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۴۷)
۱۶۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۵۵)
۱۷۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۵۶)
۱۷۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۵۷)

- ۸۷۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۵۷)
۸۷۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۵۹)
۸۷۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۶۰)
۸۷۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۶۵)
۸۷۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۶۷)
۸۷۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۷۴)
۸۷۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۷۸)
۸۷۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۷۹)
۸۸۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۷۹)
۸۸۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۸۰)
۸۸۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۸۰)
۸۸۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۴۸۴)
۸۸۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۱۱)
۸۸۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۱)
۸۸۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۱)
۸۸۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۱)
۸۸۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۵)
۸۸۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۶)
۸۹۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۷)
۸۹۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۷)
۸۹۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۲۸)
۸۹۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۳۰)
۸۹۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۳۳)
۸۹۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۳۸)
۸۹۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۴۴)
۸۹۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۷۵-۱۷۶)
۸۹۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۰۷)
۸۹۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۰۷)
۹۰۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۰۸)

- ۹-۰۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۱)
۹-۰۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۲)
۹-۰۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۵)
۹-۰۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۵)
۹-۰۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۶)
۹-۰۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۷)
۹-۰۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۱۸)
۹-۰۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲۰)
۹-۰۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۹۶)
۹۱۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۹۷)
۹۱۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۹۹)
۹۱۲-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۹۹-۲۰۰)
۹۱۳-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۰۰)
۹۱۴-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۳۹)
۹۱۵-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴۰)
۹۱۶-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴۱)
۹۱۷-کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴۲)
۹۱۸-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۰۳)
۹۱۹-کاکړ (۲۰۱۵، ۲۰۵)
۹۲۰-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۶۳)
۹۲۱-کاکړ (۲۰۱۵، ۵۶۶)
۹۲۲-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۱۸۸)
۹۲۳-ريچاردسن (۲۰۱۰، ۲۲۱)
۹۲۴-کاکړ (۲۰۰۴، ۹۳)
۹۲۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۹۴)
۹۲۶-کاکړ (۲۰۰۴، ۹۵)
۹۲۷-ريچاردسن (۴۹۸-۴۹۹)
۹۲۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۰۴-۱۰۵)
۹۲۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۰۷)

- ۹۳۰-زيرکيار (۲۰۱۶، ۲۹۷)
۹۳۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۹۳)
۹۳۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۰۹)
۹۳۳-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۱۰)
۹۳۴-خليلزاد، ۱۴۱ (۱۶۲-، ۲۰۱۶)
۹۳۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۲۵)
۹۳۶-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۲۴)
۹۳۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۲۷)
۹۳۸-کاکړ (۲۲۷-۲۲۸، ۲۰۰۴)
۹۳۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۲)
۹۴۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۳)
۹۴۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۳)
۹۴۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۴)
۹۴۳-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۵)
۹۴۴-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۶)
۹۴۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۳۹)
۹۴۶-کاکړ (۲۴۳-۲۴۴، ۲۰۰۴)
۹۴۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۴۷)
۹۴۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۸۰)
۹۴۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۸۱)
۹۵۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۷۰)
۹۵۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۸۱)
۹۵۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۷۵)
۹۵۳-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۷۷)
۹۵۴-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۷۸)
۹۵۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۷۹)
۹۵۶-کاکړ (۲۷۹-، ۲۸۰)
۹۵۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۸۴)
۹۵۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۸۹)

- ۹۵۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۹۰)
۹۶۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۹۰-۲۹۱)
۹۶۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۲۹۲)
۹۶۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۰۶)
۹۶۳-ريچارډسن (۲۰۱۰، ۲۶۵)
۹۶۴-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۱۲)
۹۶۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۱۹)
۹۶۶-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۲۴)
۹۶۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۲۹)
۹۶۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۳۳)
۹۶۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۴۱)
۹۷۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۴۳)
۹۷۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۵۶)
۹۷۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۵۰)
۹۷۳-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۵۹)
۹۷۴-ريچارډسن (۲۰۱۰، ۴۵۶)
۹۷۵-ريچارډسن (۲۰۱۰، ۳۷۰-۳۷۱)
۹۷۶-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۶۶)
۹۷۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۶۸)
۹۷۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۷۰)
۹۷۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۷۱)
۹۸۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۶)
۹۸۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۷۳)
۹۸۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۷۶)
۹۸۳-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۸۳)
۹۸۴-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۸۴)
۹۸۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۸۸)
۹۸۶-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۹۵)
۹۸۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۷۵)

- ۹۸۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۸۰)
۹۸۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۸۷)
۹۹۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۸۶)
۹۹۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۹۸)
۹۹۲-کاکړ (۲۰۰۴، ۹۹)
۹۹۳-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۰۱)
۹۹۴-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۵۲-۱۵۷)
۹۹۵-کاکړ (۲۰۰۴، ۱۶۰)
۹۹۶-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۹۷)
۹۹۷-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۹۹)
۹۹۸-کاکړ (۲۰۰۴، ۴۰۴)
۹۹۹-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۴۱۰)
۱۰۰۰-کاکړ (۲۰۰۴، ۳۵۷)
۱۰۰۱-کاکړ (۲۰۰۴، ۴۲۰)
۱۰۰۲-کاکړ (۲۰۱۱، ۵)
۱۰۰۳-کاکړ (۲۰۱۱، ۲۴)
۱۰۰۴-وزيري (۲۰۱۵، ۲۲۷)
۱۰۰۵-وزيري (۲۰۱۵، ۲۲۶)
۱۰۰۶-کاکړ (۲۰۱۱، ۱۱۴)
۱۰۰۷-وزيري (۲۰۱۵، ۱۳)
۱۰۰۸-وزيري (۲۰۱۵، ۸۷)
۱۰۰۹-کاکړ (۲۰۱۰، ۷۰)
۱۰۱۰-روهې (۲۰۰۷، ۳۲۸-۳۲۹)
۱۰۱۱-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۲)
۱۰۱۲-کاکړ (۲۰۱۰، ۳۵)
۱۰۱۳-کاکړ (۲۰۰۵، ۶۹)
۱۰۱۴-وزيري (۲۰۱۵، ۲۰۴)
۱۰۱۵-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۷)
۱۰۱۶-کاکړ (۲۰۱۰، ۴۸)

- ۱۰۱۷- کاکړ (۲۰۱۰، ۴۹)
- ۱۰۱۸- احدي، انور الحق احدي، ملي مسلې، ۲۵، پېښور ۲۰۰۱
- ۱۰۱۹- احدي (۲۰۰۱، ۲۵)
- ۱۰۲۰- احدي (۲۰۰۱، ۳۶)
- ۱۰۲۱- کاکړ (۲۰۱۰، ۵۲)
- ۱۰۲۲- روهي (۲۰۰۷، ۲۶۵)
- ۱۰۲۳- مل (۲۰۱۶، ۳) جان ستوارت مل په نوي دقيقو کې، د کاکړ ژباړه، کابل ۲۰۱۶
- ۱۰۲۴- مل (۲۰۱۶، ۳)
- ۱۰۲۵- کاکړ (۲۰۰۴، ۱۲۳)
- ۱۰۲۶- کاکړ (۲۰۰۴، ۱۲۴)
- ۱۰۲۷- کاکړ (۲۰۰۴، ۱۲۴-۱۲۵)
- ۱۰۲۸- کاکړ (۲۰۰۴، ۱۲۵)
- ۱۰۲۹- کاکړ (۲۰۱۶، ۴)
- ۱۰۳۰- جان (۲۰۱۵، ۲۷) جنک او زموږ نړۍ، د کاکړ ژباړه، کابل ۲۰۱۵
- ۱۰۳۱- کاکړ (۲۰۱۵، ۲)
- ۱۰۳۲- کاکړ (۲۰۱۵، ۳)
- ۱۰۳۳- کاکړ (۲۰۱۵، ۶)
- ۱۰۳۴- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۱)
- ۱۰۳۵- کاکړ (۲۰۱۵، ۱۴)
- ۱۰۳۶- کاکړ (۲۰۱۵، ۲۲)
- ۱۰۳۷- بالابانس (۲۰۱۰، ۶)
- ۱۰۳۸- کاکړ (۲۰۱۰، ۶) هومر بالابانس
- ۱۰۳۹- کاکړ (۲۰۱۰، ۷)
- ۱۰۴۰- کاکړ (۲۰۱۰، ۷)
- ۱۰۴۱- کاکړ (۲۰۱۰، ۹)
- ۱۰۴۲- کاکړ (۲۰۱۰، ۱۱-۱۲)
- ۱۰۴۳- کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴)
- ۱۰۴۴- کاکړ (۲۰۱۰، ۱۴)
- ۱۰۴۵- کاکړ (۲۰۱۰، ۱۶)

- ۱۰۴۶-کاکړ (۱۷، ۲۰۱۰)
۱۰۴۷-کاکړ (۱۸، ۲۰۱۰)
۱۰۴۸-کاکړ (۱۸، ۲۰۱۰)
۱۰۴۹-کاکړ (۳۵، ۲۰۱۰)
۱۰۵۰-کاکړ (۴۹، ۲۰۱۰)
۱۰۵۱-کاکړ (۵۰، ۲۰۱۰)
۱۰۵۲-کاکړ (۵۱، ۲۰۱۰)
۱۰۵۳-کاکړ (۶۱، ۲۰۱۰)
۱۰۵۴-کاکړ (۷۲، ۲۰۱۰)
۱۰۵۵-کاکړ (۷۹، ۲۰۱۰)
۱۰۵۶-کاکړ (۸۹، ۲۰۱۰)
۱۰۵۷-کاکړ (۱۰۱-۱۰۰، ۲۰۱۰)
۱۰۵۸-کاکړ (۱۰۵، ۲۰۱۰)
۱۰۵۹-کاکړ (۱۰۶، ۲۰۱۰)
۱۰۶۰-کاکړ (۱۰۹، ۲۰۱۰)
۱۰۶۱-کاکړ (۱۱۰، ۲۰۱۰)
۱۰۶۲-کاکړ (۱۱۲، ۲۰۱۰)
۱۰۶۳-کاکړ (۱۱۹، ۲۰۱۰)
۱۰۶۴-کاکړ (۱۲۰، ۲۰۱۰)

۱۰۶۵- اندروس ورگا، د انسانتوب په اړه د اخلاقيوهني پرنسپيونه ۸، کابل ۲۰۱۵، د

کاکړ ژباړه

- ۱۰۶۶-ورگا (۶۳، ۲۰۱۵)
۱۰۶۷-ورگا (۸۲، ۲۰۱۵)
۱۰۶۸-ورگا (۱۰۷، ۲۰۱۵)
۱۰۷۰-ورگا (۱۱۱، ۲۰۱۵)
۱۰۷۱-ورگا (۱۲۰، ۲۰۱۵)
۱۰۷۲-ورگا (۱۴۴، ۲۰۱۵)

يادونه: په دې کتاب کې د لاندې اثارو نه هم استفاده شوې ده:

- ۱- عبدالحي حبيبي، د افغانستان لنډ تاريخ، د بېنوا ژباړه، کندهار ۲۰۱۲
- ۲- اشرف غني، فصل نا تمام تاريخ افغانستان، له انټرنېټ نه
- ۳- اعطاءالله خان، پښتانه د تاريخ په رڼا کې، پېښور ۲۰۰۴
- ۴- امير عبدالرحمن خان، تاج التواريخ، پېښور ۱۳۷۵

د ليکوال ژوند ليک

محمد اقبال وزيری په ۱۳۲۶ کال کې په سووېلي وزيرستان کې زيږېدلی دی. په ۱۳۳۵ کال کې د خوشحال خان په لېسه کې په دريم ټولګي کې شامل او په ۱۳۴۴ کال کې د خوشال خان د لېسې نه په لومړۍ درجه فارغ شو. په ۱۳۴۵ کال کې د کابل پوهنتون د طب پوهنځي کې شامل شو. په همدې کال کې د لوړو زده کړو له پاره شوروي اتحاد ته ولېږل شو. ده په ۱۳۵۲ کال کې خپلې زده کړې د مسکو په دولتي پوهنتون کې د فيلولوژۍ په څانګه کې پای ته ورسولې او د ماسټرۍ ډيپلوم يې لاسته راوړ او هېواد ته راستون شو. نوموړي په همدې کال کې د کابل په پوليتخنيک انستيتوت کې د روسي ژبې د استاد په توګه دنده پيل کړه.

په ۱۳۵۵ کال کې د محمد داود د واکمنۍ په مهال د سياسي فعاليت له کبله بندي شو. د ثور انقلاب د برياليتوب وروسته په ۱۳۵۷ کال کې د دهمزنګ د بنديتون نه خوشی شو او د افغانستان د وسله وال پوځ د سياسي چارو د عمومي رييس په توګه وټاکل شو. په همدې کال کې د افغانستان د خلک ډموکراتيک ګوند د مرکزي کوميټې او د افغانستان د ډموکراتيک جمهوريت د انقلابي شورا غړی شو. برسېره پر دې د وطن د دفاع د عالي شورا غړی، د افغانستان د خلک ډموکراتيک ګوند د مرکزي کوميټې د تيوري د کميسيون غړي او د افغانستان د خلک ډموکراتيک ګوند د مرکزي کوميټې

د عدل د ځانگي مسؤل هم شو.

د ۱۳۵۸ کال د جدي په شپږمه نېټه په افغانستان باندې د شوروي يرغل سره جوخت بيا بندي شو او د لسو کالو او درې مياشتې بند تېرولو وروسته د څرخي پله د بنديتون نه ايله شو. اوس د هالنډ په بسکلي هېواد کې د خپلې کورنۍ سره د دوردرېخت په ښار کې اوسېږي. د ده لاندې پنځه اثار د مخه خپاره شوي دي.

۱- د نور پاڅون، د کې چې بې دسيسې او شوروي يرغل

۲- د باچا خان اندونو او مبارزې ته لنډه کتنه

۳- د چخوف داستانونه: «د سراجې کور»، «د واړه سې مېرمن» او

«نومولې» سپړنه (تحليل) او ژباړه

۴- د ادبياتو تيوري

۵- پښتو د تاريخ په بهير کې

**Get more e-books from www.ketabton.com
Ketabton.com: The Digital Library**